

1985-86



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

दिसंबर 1986
अग्रहायण 1908

P.D. 1 T— AKS DPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 1986

प्रकाशन सहयोग

सम्पादन	उत्पादन
प्रभाकर द्विवेदी	मुख्य उत्पादन अधिकारी
आशीष सिन्हा	उत्पादन अधिकारी
दिनेश सक्सेना	उत्पादन सहायक
कृष्ण वल्लभ गौड़	
सुधीर कुमार पुरी	
मुख्य संपादक	सी.एन. राव
संपादक	डी.साई प्रसाद
संपादक	रती राम
प्रूफ शोधन	
प्रूफ शोधन	

मुख्य पृष्ठ

सान्तो दत्त

चंद्र प्रकाश टंडन

अलंकरण

सान्तो दत्त

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली- 110016
द्वारा प्रकाशित तथा ए.जे. प्रिन्टर्स, प्रताप भवन, 5 बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली- 110002 द्वारा मुद्रित

आभार ज्ञापन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, (एन०सी०ई०आर०टी०) अपने अध्यक्ष, केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार, के प्रति उनके मार्गदर्शन हेतु ऋणी है। परिषद् के कार्यों में गहन रुचि और सहायता प्रदान करने हेतु परिषद् अपने शासी निकाय के अन्य विशिष्ट सदस्यों के प्रति आभारी है। परिषद् उन विशेषज्ञों को धन्यवाद देती है जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इसकी विभिन्न समितियों में कार्य किया तथा कई तरीकों से अपनी सहायता प्रदान की। राज्य शिक्षा विभागों व राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों/संस्थानों/राज्य शिक्षा संस्थानों सहित वे सभी संगठन व संस्थाएं धन्यवाद की पात्र हैं जिन्होंने एन०सी०ई०आर०टी० के साथ सहयोग किया तथा उसकी गतिविधियों को कार्यान्वित करने में अपनी पूरी सहायता दी। प्रायोजित कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में यूनेस्को, यूनीसेफ, यू०एन०एफ०पी०ए०, जी०टी० जैड और ब्रिटिश काउंसिल द्वारा प्राप्त सहयोग के प्रति परिषद् अपना आभार व्यक्त करना चाहती है। परिषद् अपने स्टाफ के सभी स्तरों के सदस्यों द्वारा किये गये कार्य की भी प्रशंसा करती है, जिनके सहयोग और निष्ठा के बिना इसके कार्यक्रम सफलतापूर्वक कार्यान्वित नहीं हो सकते थे। परिषद् उन हजारों अध्यापकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और जनता के सदस्यों के प्रति सधन्यवाद अपना आभार ज्ञापित करती है जिन्होंने परिषद् के 1985-86 के प्रकाशनों व कार्यक्रमों के बारे में अपने विचार देते हुए परिषद् के विभिन्न घटकों को अनेक पत्र भेजे जोकि बेहतर कार्यनिष्पादन के लिए निरंतर प्रेरणास्रोत सिद्ध हुए।

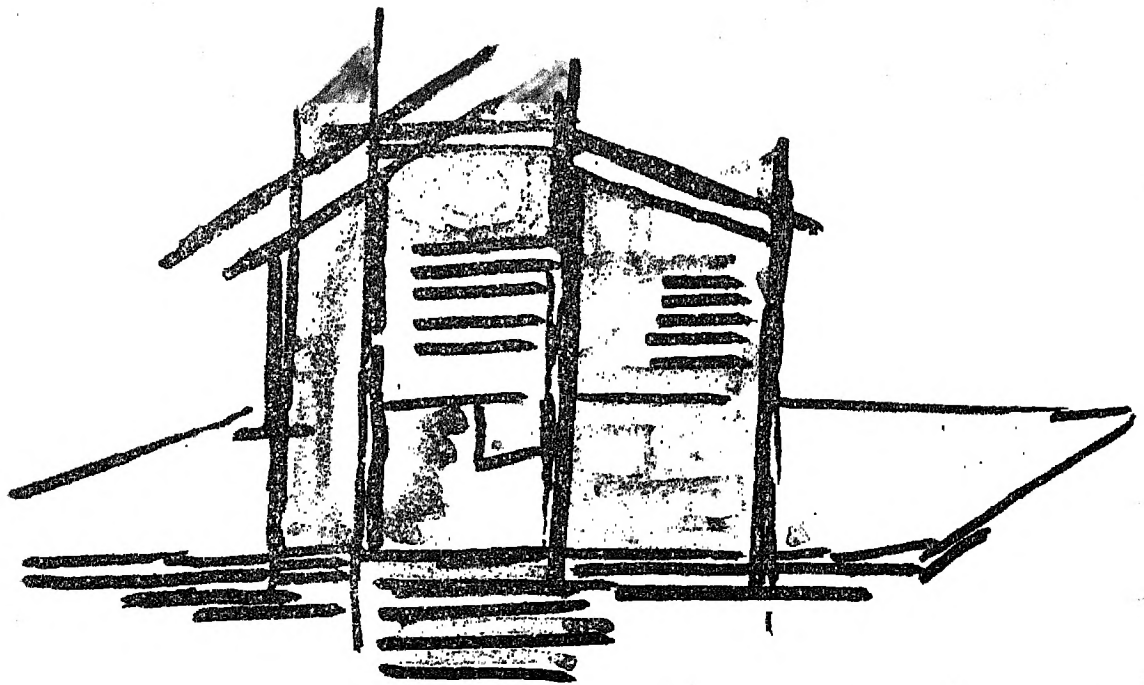
विषय-सूची

आभार ज्ञापन

1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् : भूमिका और संरचना	1
2. वर्ष की गतिविधियों पर एक विहंगम दृष्टि	8
3. स्कूल-पूर्व और प्रारम्भिक शिक्षा	16
4. समाज विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा	22
5. विज्ञान एवं गणित में शिक्षा	28
6. शिक्षा का व्यावसायीकरण	36
7. अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा एवं विस्तार सेवाएं	42
8. क्षेत्रीय शिक्षा कालेज	54
9. शैक्षिक टेक्नोलॉजी	64
10. मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़े संसाधन	72
11. नीति, अनुसंधान, नियोजन एवं प्रोग्रामन	78
12. शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन	92
13. क्षेत्र सेवा और समन्वय	98
14. प्रकाशन और प्रलेखन	106
15. अन्तर्राष्ट्रीय संबंध और सहायता	120
16. प्रशासनिक और कल्याण गतिविधियां तथा वित्त	128

परिशिष्ट

(क) व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को सहायता की योजना	132
(ख) राज्यों में क्षेत्र सलाहकारों के पते	136
(ग) 1985-86 के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की समितियां	137
(घ) 1 अप्रैल 1986 को संस्वीकृत स्टाफ बल	146



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् : भूमिका और संरचना

1 सितम्बर, 1961 को स्थापित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन०सी०ई०आर०टी०) संस्था पंजीकरण अधिनियम (1860) के तहत एक स्वायत्त संगठन है।

भूमिका और प्रकार्य

एन०सी०ई०आर०टी० मानव संसाधन विकास मंत्रालय के एक अकादमिक सलाहकार के रूप में कार्य करती है। स्कूली शिक्षा में अपनी नीतियों व कार्यक्रमों को प्रतिपादित एवं कार्यान्वित करने के लिए मंत्रालय ज्यादातर एन०सी०ई०आर०टी० की विशेषज्ञता पर निर्भर रहता है। परिषद् का सारा वित्तीय भार सरकार ही वहन करती है।

संस्था ज्ञापन-पत्र के अनुसार एन०सी०ई०आर०टी० के लक्ष्य हैं : मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा) को शिक्षा-क्षेत्र में और खासकर स्कूली शिक्षा संबंधी नीतियों एवं मुख्य कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने में सहायता तथा सलाह प्रदान करना।

कार्यक्रम और क्रियाकलाप

उपर्युक्त लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु परिषद् निम्नलिखित कार्यक्रमों और क्रियाकलापों को हाथ में लेती है:

- स्कूली शिक्षा की सभी शाखाओं में परिषद् अनुसंधान करती है, उसमें सहायता पहुंचाती है, उसे प्रोन्नत करती है और उसे समन्वित करती है,
- मुख्यतः उच्चस्तर पर परिषद् अध्यापकों का सेवा-पूर्व और सेवा-दौरान प्रशिक्षण आयोजित करती है,
- शैक्षिक पुनर्निर्माण में संलग्न संस्थाओं, संगठनों और अभिकरणों के लिए परिषद् विस्तार सेवाएं व्यवस्थित करती है,
- परिष्कृत शैक्षिक प्रविधियों, अभ्यासों और नवोत्पादों की सहायता से परिषद् विकास व प्रयोग-कार्य करती है,
- परिषद् शैक्षिक सूचना को एकत्र, संकलित, संसाधित तथा प्रसारित करती है,
- स्कूली शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के लिए परिषद् राज्यों.

राज्यस्तर की संस्थाओं, संगठनों और अभिकरणों को कार्यक्रम विकसित एवं कार्यान्वित करने के लिए सहायता प्रदान करती है, — यूनेस्को, यूनीसेफ, जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों तथा अन्य देशों की राष्ट्रीय स्तर की शैक्षिक संस्थाओं से परिषद् सहयोग स्थापित करती है,

— परिषद् दूसरे देशों के शैक्षिक कर्मचारी-वर्ग को प्रशिक्षण व अध्ययन की सुविधाएं प्रदान करती है, और

— परिषद् राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) के अकादमिक सचिवालय के रूप में काम करती है।

अनुसंधान

स्कूली शिक्षा में एक शीर्ष राष्ट्रीय संस्था होने के नाते एन.सी.ई.आर.टी. अनेक महत्वपूर्ण कार्य करती है, जैसे अनुसंधान को व्यवस्थित करना व बल प्रदान करना, शैक्षिक अनुसंधान में कर्मचारी-वर्ग को प्रशिक्षण प्रदान करना आदि।

एन.आई.ई. के विभिन्न विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज और केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) कई क्षेत्रों में अनुसंधान कार्यक्रमों जैसे पाठ्यक्रम, अनुदेशी सामग्री, बाल विकास, शैक्षिक मनोविज्ञान और मार्गदर्शन, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, अध्यापन सहायक-सामग्री, अध्यापक शिक्षा मूल्यांकन आदि की जिम्मेदारी लेते हैं:

व्यक्तियों और संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान करके तथा अकादमिक पारस्परिक क्रिया द्वारा एन.सी.ई.आर.टी. अनुसंधान को बल प्रदान करती है। पी.एच.डी. शोधप्रबंधों के प्रकाशन हेतु एन.सी.ई.आर.टी. विद्वानों को सहायता प्रदान करती है। परिषद् कनिष्ठ और वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता-वृत्तियां भी प्रदान करती है ताकि शैक्षिक समस्याओं की जांच-पड़ताल की जा सके और योग्य अनुसंधान कार्यकर्ताओं का एक दल सृजित किया जा सके। देश में शिक्षा के अनेक पहलुओं पर आंकड़े उपलब्ध कराने के लिए यह शैक्षिक सर्वेक्षण भी समय-समय पर संचालित करती है। आंकड़ों को जमा करने, उन्हें पुनः प्राप्त करने तथा उन्हें संसाधित करने के लिए परिषद् के पास एक टर्मिनल कम्प्यूटर है। अन्तर्देशीय अनुसंधान परियोजनाओं में यह अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों से भी सहयोग स्थापित करती है।

विकास

स्कूली शिक्षा में विकास क्रियाकलापों का परिषद् के कार्यों में एक महत्वपूर्ण स्थान है। इनमें उल्लेखनीय हैं स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रमों व अनुदेशी सामग्रियों का विकास तथा उनसे संबंधित समाज और बच्चों की बदलती तथा बढ़ती हुई आवश्यकताएं। शिक्षा व्यवसायीकरण और अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यक्रमों व अनुदेशी सामग्रियों का विकास परिषद् के नवोत्पादी विकासात्मक क्रियाकलापों के रूप में समाविष्ट हैं। दूसरे महत्वपूर्ण क्रियाकलाप जो इसके अधिकार-क्षेत्र में हैं, वे हैं शैक्षिक प्रौद्योगिकी और जनसंख्या शिक्षा।

प्रशिक्षण

विभिन्न स्तरों जैसे प्राथमिक-पूर्व प्रारंभिक और माध्यमिक स्तरों पर और ऐसे क्षेत्रों में जैसे व्यावसायिक शिक्षा, मार्गदर्शन और विशिष्ट शिक्षा में सेवा-पूर्व और सेवा-दौरान अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करना भी परिषद् के क्रियाकलापों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों के कार्यक्रमों में कुछ नवोत्पादी विशिष्ट विशेषताएं सम्मिलित की गई हैं, जैसे विषयवस्तु का एकीकरण और शिक्षण-क्रियाविधि, वास्तविक क्लास-रूम सेटिंग में अध्यापक-प्रशिक्षणार्थियों की दीर्घकालिक स्थानबद्धता तथा समुदाय कार्य में विद्यार्थियों व संकायों की सहभागिता। राज्यों तथा राज्यस्तर संस्थाओं के मौलिक कर्मचारी-वर्ग के प्रशिक्षण पर भी बल दिया जाता है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के अकादमिक सचिवालय के रूप में जुड़ी हुई है, जिनमें विभिन्न स्तरों पर अध्यापक शिक्षा के लिए पाठ्यविवरणों व अनुवर्ती शिक्षा का संशोधन शामिल है। अप्रशिक्षित अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करने के संचित कार्य को समाप्त करने के लिए प्रारंभिक और माध्यमिक स्कूलों के अप्रशिक्षित अध्यापकों को पत्राचार पाठ्यक्रमों द्वारा प्रशिक्षित किया जाता है।

विस्तार

एन.सी.ई.आर.टी. के शिक्षा में बृहत् विस्तार-कार्यक्रम हैं, जिनमें एन.आई.ई. के विभिन्न विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज और राज्यों के क्षेत्र सलाहकारों के कार्यालय कई तरीकों से कार्यरत हैं। परिषद् राज्यों के विभिन्न अभिकरणों एवं संस्थाओं के साथ सीधे कार्य करती है और विभिन्न श्रेणियों के कर्मचारी-वर्ग, जैसे अध्यापकों, निरीक्षकों, प्रशासकों, प्राप्तिकों, पाठ्यपुस्तक लेखकों आदि को सहायता प्रदान करने हेतु विस्तार सेवा-विभागों और स्कूलों व कालेजों के अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्रों के साथ विस्तारपूर्वक कार्य करती है। सम्मेलन, संगोष्ठियां, कार्यशालाएं और 2 प्रतियोगिताएं नियमित रूप से चलने वाले कार्यक्रमों की भांति आयोजित

किये जाते हैं। इन कार्यक्रमों को ग्रामीण और पिछड़े हुए इलाकों में करने के लिए भी खास ध्यान दिया जाता है ताकि इन कार्यक्रमों से सम्बद्ध कार्यकर्ता वहां की विशिष्ट समस्याओं को जान सकें और आवश्यक उपायों का पता लगा सकें। विकलांगों तथा समाज के लाभवंचित वर्गों के बच्चों की शिक्षा के लिए परिषद् के पास विशेष कार्यक्रम हैं। एन.सी.ई.आर.टी. के विस्तार का कार्यक्रम देश के सभी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों के लिए है।

प्रकाशन तथा प्रसार

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन स्कूली शिक्षा की सभी शाखाओं को समाविष्ट करते हैं। इनमें कक्षा 1 से 12 तक के विभिन्न स्कूली विषयों और अध्यापक शिक्षा की पाठ्यपुस्तकें, कार्यपुस्तकें, अध्यापक मार्गदर्शिकाएं, संपूरक पाठमालाएं, अनुसंधान रिपोर्टें इत्यादि शामिल हैं। अनुसंधान और विकासात्मक कार्य के बाद तैयार अनुदेशी सामग्रियां राज्यों तथा संघशासित क्षेत्रों के विभिन्न अभिकरणों के लिए आदर्श सामग्री का कार्य करती हैं और ये उन्हें ग्रहण व रूपांतरण हेतु उपलब्ध कराई जाती हैं।

शैक्षिक सूचना के प्रसार हेतु एन.सी.ई.आर.टी. पांच पत्रिकाएं प्रकाशित करती है: (1) *प्राइमरी टीचर* (अंग्रेजी और हिन्दी में) का लक्ष्य है क्लास-रूम में सीधे प्रयोग के लिए प्राथमिक स्कूल अध्यापकों को अर्थपूर्ण और प्रासंगिक सामग्री प्रदान करना, (2) *स्कूल साइंस* विज्ञान शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हेतु एक खुला मंच प्रदान करती है, (3) *दि जरनल ऑफ इंडियन एजुकेशन* चर्चा द्वारा वर्तमान शैक्षिक समस्याओं पर मौलिक और समीक्षात्मक सोचविचार के लिए मंच प्रदान करता है, (4) *दि इंडियन एजुकेशनल रिव्यू* में अनुसंधान लेख होते हैं और अनुसंधान कार्यकर्ताओं के लिए मंच प्रदान करता है और (5) *आधुनिक भारतीय शिक्षा* (हिन्दी में प्रकाशित) समकालीन समस्याओं पर शिक्षा विषयक समीक्षात्मक सोचविचार को प्रोत्साहन देने के लिए मंच प्रदान करती है तथा शैक्षिक समस्याओं एवं अभ्यासों के लिए विचारों को प्रसारित करती है।

एक कार्यालय पत्रिका, जिसे एन.सी.ई.आर.टी. *न्यूज लैटर* कहा जाता है, भी हर मास प्रकाशित की जाती है। इसके अलावा, प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा कालेज अपनी-अपनी पत्रिका प्रकाशित करता है।

मूल्यांकन और विनियम कार्यक्रम

राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से पाठ्यपुस्तकों और दूसरी सामग्रियों का मूल्यांकन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया के आधार पर किया जाता है। मूल्यांकन की क्रियाविधियों, उपकरणों व प्रविधियों को विकसित किया गया है। गुणात्मक दृष्टि से मूल्यांकन के मार्गदर्शक सिद्धांतों और प्रक्रियाओं को प्रतिपादित किया गया है। पाठ्यपुस्तकों के संशोधन में स्कूलों से फीडबैक सहायक होती है।

प्रति वर्ष एन.सी.ई.आर.टी. 750 प्रतिभा छात्रवृत्तियां प्रदान करने के लिए (जिनमें 70 अनुसूचित जातियों/जनजातियों के लिए हैं।) भारतीय संविधान के तहत मान्यताप्राप्त सभी भाषाओं में परीक्षा आयोजित करती है। वे विद्यार्थी जो सत्रांत में दसवीं कक्षा की परीक्षा में बैठते हैं, इस छात्रवृत्ति को प्राप्त करने हेतु परीक्षा में भाग लेने के योग्य हैं। पुरस्कृत विद्यार्थी विज्ञान, गणित और समाजविज्ञान में पी.एच.डी. तक अध्ययन कर सकते हैं या फिर इंजीनियरी और आयुर्विज्ञान जैसे क्षेत्रों में व्यावसायिक पाठ्यक्रम प्राप्त कर सकते हैं।

शिक्षा के गुणात्मक सुधार के अपने प्रयासों में एन.सी.ई.आर.टी. अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों जैसे यूनेस्को, यू.एन.डी.पी. और यू.एन.एफ.पी.ए. से सहायता प्राप्त करती है। इन अभिकरणों के अनुरोध पर परिषद् अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, परिसंवादों आदि में भाग लेने हेतु अपने संकाय सदस्यों को नामित करती है। विदेशी राष्ट्रों के लिए परिषद् प्रशिक्षण का प्रबंध भी करती है।

शैक्षिक नवोत्पाद और विकास संबंधी एशियाई केन्द्र के राष्ट्रीय विकास समूह (ए.सी.ई.आई.डी.) के लिए परिषद् सचिवालय का कार्य करती है। भारत सरकार द्वारा देशों के साथ हस्ताक्षरित किये जाने वाले द्विपक्षीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के जहां तक स्कूली शिक्षा के प्रावधानों का संबंध है, उन्हें कार्यान्वित करने के लिए परिषद् एक मुख्य अभिकरण के रूप में कार्य करती है। परिषद् दूसरे देशों के साथ शैक्षिक सामग्रियों का विनिमय करती है।

संरचना और प्रशासन

महापरिषद् एन.सी.ई.आर.टी. की नीति-निर्माण की संस्था है। केन्द्रीय शिक्षा मंत्री इसके अध्यक्ष हैं और सभी राज्यों तथा संघशासित क्षेत्रों के शिक्षा मंत्री इसके सदस्यों में सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, शिक्षा मंत्रालय के सचिव, विश्वविद्यालयों (प्रत्येक क्षेत्र से एक-एक) के चार कुलपति, कार्यकारी समिति के सभी सदस्य जो ऊपर सम्मिलित नहीं हैं। और ऐसे व्यक्ति (बारह से अधिक नहीं) जिन्हें अध्यक्ष समय-समय पर नामित (इनमें कम-से-कम दो स्कूल अध्यापक होने चाहिए) करें, इसके सदस्य होते हैं।

एन.सी.ई.आर.टी. की मुख्य शासी समिति है कार्यकारिणी समिति जिसके केन्द्रीय शिक्षा मंत्री अध्यक्ष (पदेन) हैं और जिसमें सम्मिलित हैं शिक्षा मंत्रालय के राज्यमंत्री (पदेन उपाध्यक्ष के रूप में), शिक्षा मंत्रालय के उपमंत्री, शिक्षा मंत्रालय के सचिव, परिषद् के निदेशक, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, स्कूली शिक्षा में रुचि रखने वाले चार शिक्षाविद् (जिनमें से दो स्कूल अध्यापक होंगे), परिषद् के संयुक्त निदेशक, परिषद्-संकाय के तीन सदस्य (जिनमें से कम-से-कम दो प्रोफेसर और विभागाध्यक्षों के स्तर के होंगे) और वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि (जोकि परिषद् का वित्तीय सलाहकार होगा)।

कार्यकारी समिति को अपने कार्य में सहायता देने के लिए निम्नलिखित स्थायी समितियां हैं :

1. कार्यक्रम सलाहकार समिति
 2. वित्त समिति
 3. स्थापना समिति
 4. भवन और निर्माण समिति
 5. शैक्षिक अनुसंधान और नवोत्पाद समिति
 6. क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों की प्रबंध समितियां
- परिषद् के मुख्यालय में हैं :-
1. परिषद् का सचिवालय और
 2. लेखा शाखा

चार वरिष्ठ पदाधिकारी जो सरकार द्वारा नियुक्त किये जाते हैं, वे हैं निदेशक, संयुक्त निदेशक, संयुक्त निदेशक (सी.आई.ई.टी.) और सचिव। संदर्भाधीन वर्ष में निम्नलिखित अधिकारियों ने ये पद संभाले:

1. डॉ. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक
2. डॉ. ए.के. जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक
3. डॉ. एम.एम. चौधरी, संयुक्त निदेशक (सी.आई.ई.टी.)
4. श्री सी. रामचन्द्रन, आई.ए.एस., सचिव, 18 फरवरी, 1986 तक
5. श्री एच.के.एल. चुघ, सचिव, 19 फरवरी, 1986 से

अकादमिक कार्यों में निदेशक के सहायतार्थ तीन/तीन हैं जिनके नाम, पद और दायित्व नीचे दिए हुए हैं:

नाम और पद
प्रो. पी.एन. दवे
डीन (अकादमिक)

प्रो. आत्मानन्द शर्मा
डीन (अनुसंधान)

प्रो. बाकर मेहदी,
डीन (समन्वयन)

दायित्व

एन.आई.ई. के विभागों में
अकादमिक कार्य को समन्वित
करना।

अनुसंधान कार्यक्रमों का समन्वयन
करना और शैक्षिक अनुसंधान व
नवोत्पाद समिति के कार्य की
देखभाल करना।

संसाधन विभागों, क्षेत्र
कार्यालयों और क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों
के क्रियाकलापों का समन्वयन
करना।

वर्ष 1985-86 में परिषद् चला रही थी:

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी
संस्थान (सी.आई.ई.टी.) क्षेत्रीय शिक्षा कालेज (4)
क्षेत्र एकक (17)

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान

मई 1984 में एन.आई.ई. के विभाग/एकक पुनर्व्यवस्थित किये गये और 1985-86 के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के निम्नलिखित विभाग/एकक थे और इनका संबंध अपने-अपने क्षेत्रों के अनुसंधान विकास, प्रशिक्षण, विस्तार, मूल्यांकन और प्रसार से था:-

1. समाजविज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.एच.)
2. क्षेत्र सेवाएं और समन्वयन विभाग (डी.एफ.एस.सी.)
3. अध्यापक शिक्षा विशेष शिक्षा और प्रसार सेवा विभाग (डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस.)
4. स्कूल-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.पी.एस.ई.ई.)
5. शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग (डी.ई.पी.सी.एंड.जी.)
6. विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)
7. मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग (डी.एम.ई.एस.एंड.डी.पी.)
8. शिक्षा व्यवसायीकरण विभाग (डी.वी.ई.)
9. नीति, अनुसंधान, नियोजन और कार्यक्रम आयोजन विभाग (डी.पी.आर.पी.पी.)
10. प्रकाशन विभाग (पी.डी.)
11. कार्यशाला विभाग (डब्ल्यू.डी.)
12. पुस्तकालय प्रलेखन व सूचना विभाग (डी.एल.डी.आई)
13. पत्रिका प्रकोष्ठ (जे.सी.)
14. अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एकक (आई.आर.यू.)

केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) का स्थापना 1984 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्कालीन शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र और शिक्षण सहायक सामग्री विभाग को एक-दूसरे में मिलाकर की गई थी ताकि देश में शिक्षा सुधार व विस्तार के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी को प्रोन्नत करने में गति लाई जा सके।

सी.आई.ई.टी., संयुक्त निदेशक की अध्यक्षता में अच्छी खासी स्वायत्तता के साथ एन.सी.ई.आर.टी. के एक अंग के रूप में कार्य करता है। अपने कार्यक्रमों व क्रियाकलापों के बारे में संस्थान के मार्गदर्शन के लिए एक सलाहकार परिषद् है। सी.आई.ई.टी. के निम्न प्रमुख प्रभाग हैं :

1. शैक्षिक प्रौद्योगिकी व प्रशिक्षण प्रभाग, टी.वी. प्रभाग और सुदूर शिक्षा विभाग (ई.टी.टी.डी.)
2. अनुसंधान, शिक्षा और समन्वयन प्रभाग (आर.ई.सी.डी.)
3. तकनीकी नियोजन, संचालन और रखरखाव प्रभाग (टी.पी.ओ.एम.डी.)

4. लेखाचित्र कला, प्रदर्शनी और मुद्रण प्रभाग (जी.ई.पी.डी.)
5. पुरालेख, सूचना व प्रलेखन प्रभाग (ए.आई.डी.डी.)
6. फिल्म और फोटो प्रभाग (एफ.पी.डी.)
7. श्रव्य-रेडियो प्रभाग (ए.आर.डी.)

क्षेत्रीय कालेज और क्षेत्र एकक

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थित हैं। इन कालेजों में निम्न कोर्स उपलब्ध हैं:

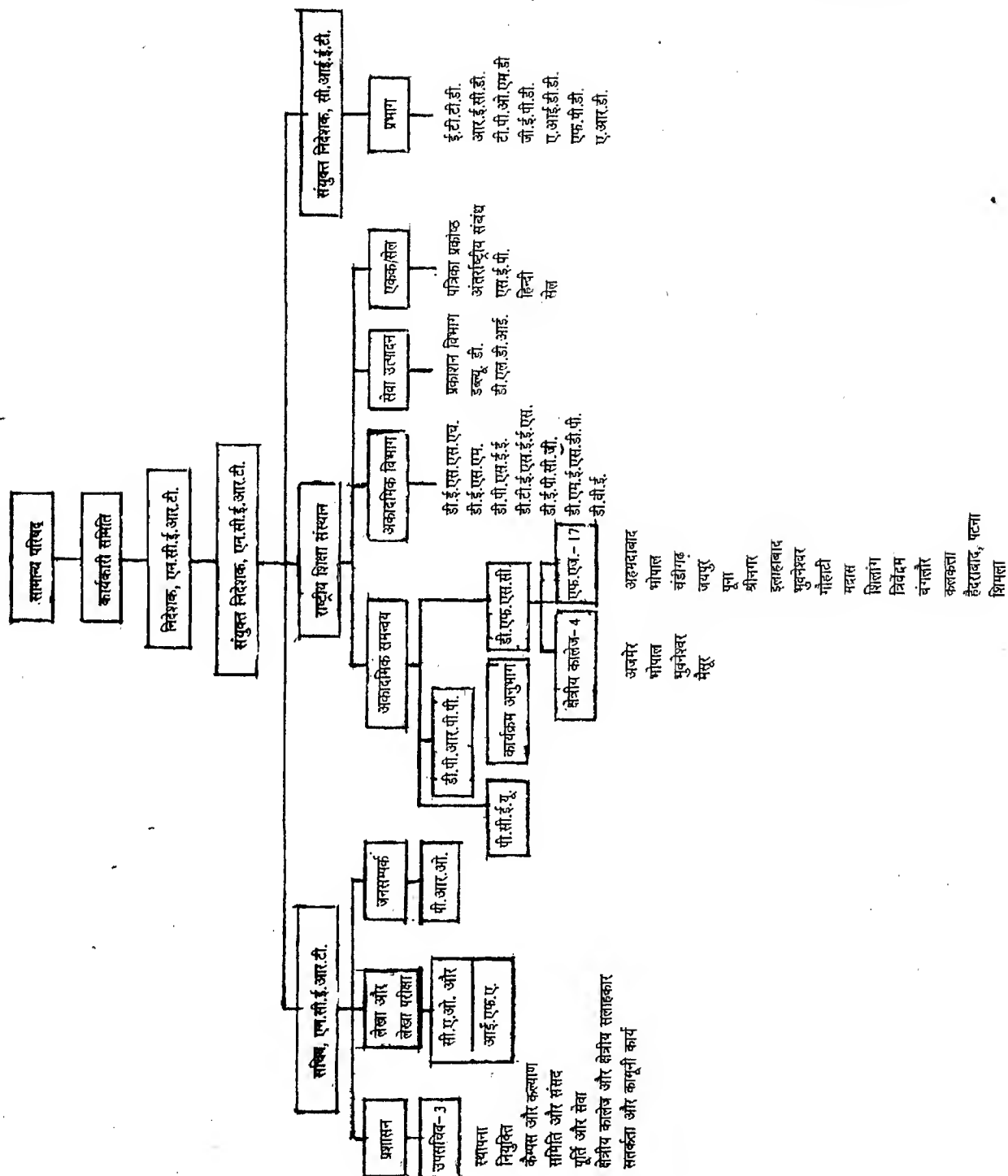
- बी.ए. (आनसी) (पास) बी.एड.
- बी.एस.सी. (आनसी) बी.एड.
- बी.एड.आर्ट्स (प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा)
- बी.एड.साइंस (प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा)
- बी.एड. (कृषि/वाणिज्य/समाजविज्ञान)
- बी.एड. (अंग्रेजी/हिन्दी/उर्दू)
- बी.एड. (ग्रीष्म स्कूल व पत्राचार पाठ्यक्रम)
- एम.एड. (प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा)
- एम.एस.-सी.एड. (भौतिकी/रसायन/गणित/जीव विज्ञान)
- पी.एच.डी. (शिक्षा)

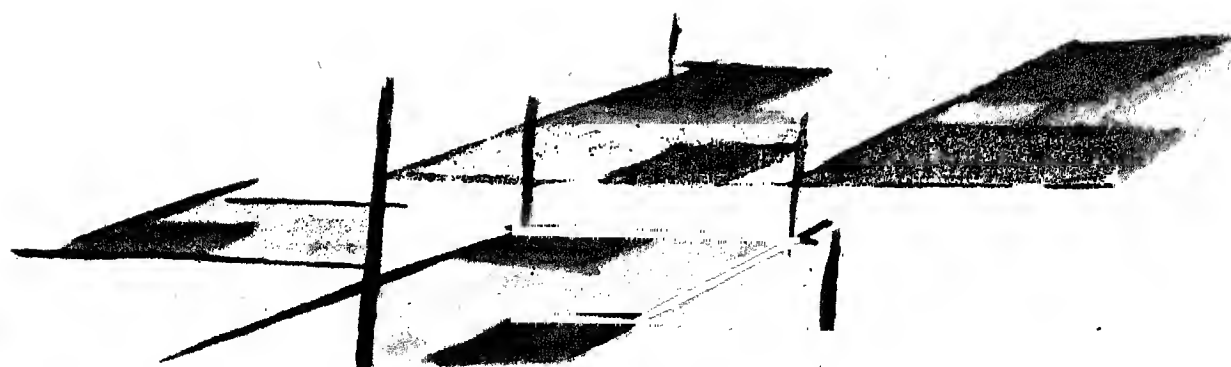
जबकि अजमेर का कालेज केवल चार-वर्षीय बी.एस.सी. बी.एड. पाठ्यक्रम प्रदान करता है, भुवनेश्वर और मैसूर के कालेज एम.एस.सी.एड कार्यक्रम प्रदान करते हैं। प्रथम जीव विज्ञानों में और दूसरा भौतिकी, रसायन और गणित में। चारों कालेजों में पी.एच.डी. कार्यक्रमों तथा साथ ही एक-वर्षीय बी.एड. और एम.एड. पाठ्यक्रमों का प्रावधान है।

ये कालेज आवासीय संस्थाएं हैं और उनमें प्रयोगशाला, पुस्तकालय और दूसरी सुविधाओं की पर्याप्त व्यवस्था है। प्रत्येक कालेज के साथ एक निर्देशन बंधुदृश्य स्कूल सम्बद्ध है जहां विकास क्रियाविधियों को वास्तविक कक्षा स्थितियों में परीक्षित किया जाता है। राज्य शिक्षा प्राधिकारियों तथा राज्यस्तर संस्थाओं, जिन्हें शिक्षा प्रणाली में अकादमिक और प्रशिक्षण निवेश प्रदान करने हेतु स्थापित किया गया है, के साथ प्रभावी तालमेल रखने के लिए निम्नलिखित स्थानों पर 17 क्षेत्र कार्यालय स्थापित किये गये हैं :

अहमदाबाद	इलाहाबाद	बंगलौर
भोपाल	भुवनेश्वर	कलकत्ता
चण्डीगढ़	गौहाटी	हैदराबाद
जयपुर	मद्रास	पटना
पुणे	शिलांग	शिमला
श्रीनगर	त्रिवेन्द्रम	

5





वर्ष 1985-86 की अवधि में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाने की ओर निर्दिष्ट गतिविधियों में परिषद् की प्रमुख भूमिका तथा देश में स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा की कोटि में सुधार के लिए परिषद् के लगातार प्रयास प्रमुख रहे। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम का ढांचा बनाने, प्रारंभिक शिक्षा के सर्वोत्तम के कार्यक्रम के संदर्भ में प्रारंभिक शैशव शिक्षा और गैर-औपचारिक शिक्षा के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण पैकेज तैयार करने, स्कूली शिक्षा की विभिन्न अवस्थाओं के लिए पाठ्यपुस्तक सामग्री व अन्य शिक्षण सामग्री तैयार करने, राष्ट्रीय एकता, शिक्षा के व्यावसायीकरण, स्कूलों में मापन और मूल्यांकन के तरीकों में सुधार की दिशा में केन्द्रित विचारों को बढ़ावा देने, शिक्षा प्रौद्योगिकी के उपयोग और अध्यापकों व अध्यापक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक योग्यता बढ़ाने की ओर निर्दिष्ट गतिविधियाँ, परिषद् के, 1985-86 की अवधि में किए गए कार्यों के कुछ महत्वपूर्ण पक्ष थे। विभिन्न राज्यों/संघ शासित प्रदेशों में कार्यान्वित की जा रही, शिक्षा के क्षेत्र में यूनीसेफ से सहायता प्राप्त परियोजनाओं, राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना तथा कम्प्यूटर साक्षरता और स्कूल अध्ययन (क्लास) परियोजना को तकनीकी सहायता उपलब्ध कराने के लिए परिषद्, केन्द्रीय समन्वयकारी एजेंसी की भूमिका भी निभाती रही।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का सूत्रण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सूत्रण में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार को तकनीकी एवं शैक्षिक सहायता उपलब्ध कराने के लिए परिषद् ने कई कार्य किए। परिषद् ने, शिक्षा नीति सूत्रण से सम्बद्ध अनुसंधान अध्ययनों की समीक्षा सहित, स्कूली शिक्षा के लगभग सभी क्षेत्रों के बारे में लगभग 25 दस्तावेज तैयार किए, बीसियों राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ और कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। इन दस्तावेजों और क्रमशः, प्रारंभिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा तथा शिक्षा व्यावसायीकरण पर हुई तीन राष्ट्रीय संगोष्ठियों की रिपोर्टें व सिफारिशों से नई नीति के प्रमुख जोरदार मुद्दों को पहचानने और उनकी प्राथमिकता तय कर सकने के लिए एक विस्तृत ढांचा तैयार करने में सहायता मिली। इनके अतिरिक्त, परिषद् के वरिष्ठ संकाय सदस्यों को, शिक्षा की नई राष्ट्रीय नीति के बारे में राष्ट्रीय मतैव्य पर पहुंचने के लिए विभिन्न राष्ट्रीय और राज्य-स्तरीय एजेंसियों द्वारा आयोजित अनेक संगोष्ठियों तथा बैठकों में भाग लेने के लिए भेजा गया।

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचा

परिषद् ने राज्य/संघ शासित प्रदेश शिक्षा प्राधिकरणों के साथ जुटकर प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम-एक ढांचा शीर्षक के एक दस्तावेज को अंतिम रूप दिया। यह दस्तावेज, राज्य, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तरों पर आयोजित संगोष्ठियों और कार्यशालाओं के द्वारा राष्ट्रीय मतैव्य पर पहुंचने के, तीन वर्षों के अथक प्रयासों का परिणाम है। परिषद् द्वारा संगठित आंतरिक संचालन दल द्वारा, पाठ्यक्रम के अभिज्ञात मसलों पर, 1985 में हुई चार क्षेत्रीय संगोष्ठियों और एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में विचार-विमर्श हुआ। इन संगोष्ठियों में की गई सिफारिशों के आधार पर बनाए गए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के ढांचे के मसौदे पर, जनवरी 1986 में हुई, राष्ट्रीय स्तर की बैठक में और विचार किया गया और इस बैठक में भाग लेने वाले विशेषज्ञों से प्राप्त सुझावों को ध्यान में रखते हुए इसमें संशोधन करके अंतिम रूप दिया गया। अंतिम रूप दिया गया यह दस्तावेज परिषद् के अध्यक्ष और मानव संसाधन विकास मंत्रालय को जनवरी 1986 में सौंपा गया। इसके बाद, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए परिषद् द्वारा शुरू किए जाने वाले कार्यक्रमों की तफसील तैयार करने के लिए 6 कार्यकारी दल बनाए गए जो क्रमशः प्रारंभिक शिक्षा, विज्ञान शिक्षा, अध्यापक-प्रशिक्षण (सेवा पूर्व एवं सेवाकालीन), व्यावसायिक शिक्षा, शिक्षा प्रौद्योगिकी और भाषाओं के अध्यापन से सम्बद्ध थे।

प्रारंभिक शैशव शिक्षा

यूनीसेफ से सहायता प्राप्त परियोजनाओं, बाल माध्यम प्रयोगशाला (सी एम एल) और प्रारंभिक शैशव शिक्षा (ई.सी.ई.) के अन्तर्गत, प्रारंभिक शैशव शिक्षा के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करने और प्रारंभिक शैशव शिक्षा में लगे अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों और पर्यवेक्षण कर्मिकों के प्रयोग के लिए प्रशिक्षण पैकेज तैयार करने से संबंधित अनेक कार्य किए गए। सी.एम.एल. परियोजना के अंतर्गत प्रारंभिक शैशव शिक्षा के लिए चित्र पुस्तकें, श्रव्य/दृश्य कार्यक्रम और स्लाइड टेप कार्यक्रम तैयार किए गए। ई.सी.ई. परियोजना के कार्य के अंश के रूप में केन्द्रीय स्तर पर, अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों के प्रयोग के लिए तीन पुस्तिकाएँ प्रकाशित की गईं, दो पुस्तिकाएँ प्रकाशनार्थ भेजी गईं और दस पुस्तिकाओं को प्रकाशन के लिए

अन्तिम रूप दिया गया। इनके अतिरिक्त, ई.सी.ई. परियोजना में भाग में लेने वाले राज्यों/संघशासित प्रदेशों ने, ई.सी.ई. केन्द्रों में दाखिल बच्चों के प्रयोग के लिए क्षेत्रीय भाषाओं में अनेक शिक्षा सामग्रियां तैयार कीं।

गैर-औपचारिक शिक्षा कार्यक्रम

गैर-औपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के लिए, सीखने-पढ़ने की उपयुक्त सामग्री तैयार करना, 1985-86 में परिषद् का एक महत्वपूर्ण कार्य बना रहा। भारत सरकार द्वारा प्रायोजित गैर-औपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत मिडिल स्तर (कक्षा 6 से 8 के समकक्ष) के लिए स्थापित गैर-औपचारिक शिक्षा केन्द्रों में भर्ती, सीखने वालों के प्रयोग के लिए शिक्षा सामग्रियों का एक पैकेज तैयार किया गया। राज्यों में कार्यान्वित गैर-औपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के मूल्यांकन के लिए, रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् और राष्ट्रीय शिक्षा नियोजन और प्रशासन संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से शुरू किए गए अध्ययन से संबंधित कार्य भी इस वर्ष में शुरू किए गए।

यूनिसेफ से सहाता प्राप्त परियोजना 'प्राथमिक शिक्षा के लिए व्यापक पहुंच (केप)' के अन्तर्गत स्थापित सीखने के केन्द्रों में भर्ती, सीखने वालों के प्रयोग के लिए परिषद् ने हिंदी में चार गुटके और गणित में तीन गुटके तैयार किए। इनके अतिरिक्त केप परियोजना में भाग लेने वाले विभिन्न राज्यों/संघ शासित प्रदेशों ने लगभग 60 गुटकों को प्रकाशन के लिए अन्तिम रूप दिया। इनमें से 30 गुटके प्रकाशित हो चुके हैं। केप परियोजना के अन्तर्गत, 1985-86 में बिहार में 93, उड़ीसा में 70 और तमिलनाडु में 73 सीखने के केन्द्र स्थापित किए गए। परियोजना के पहले चरण के बाह्य मूल्यांकन के लिए आंकड़े इकट्ठे करने का काम बड़ौदा के एम० एस० विश्वविद्यालय के, उन्नत शिक्षा अध्ययन केन्द्र ने पूरा किया। इसी प्रकार, यूनिसेफ से सहायता प्राप्त परियोजना 'सामुदायिक शिक्षा में विकास गतिविधियां और भाग लेना (डी.ए.सी.ई.पी.)' के बाह्य मूल्यांकन का कार्य पटना के ए० एन० सिन्हा सामाजिक अध्ययन संस्थान ने पूरा किया और मूल्यांकन, अध्ययन की कार्यरत 'डी.ए.सी.ई.पी.- एक मूल्यांकन' शीर्षक रिपोर्ट मानव संसाधन विकास मंत्रालय को दी।

पाठ्यपुस्तकीय व अन्य शिक्षण सामग्री तैयार करना

परिषद् की 1985-86 की गतिविधियों में प्रमुख, स्कूली शिक्षा की विभिन्न अवस्थाओं में विद्यार्थियों और अध्यापकों के प्रयोग के लिए पाठ्यपुस्तकें, पूरक पठन सामग्री और अन्य शिक्षण सामग्री तैयार करना था। इनमें से कुछ केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) के प्रगाढ़ सहयोग से तैयार की गई। प्रकाशन के लिए अन्तिम रूप से दी गई पाठ्यपुस्तकों में, दसवीं श्रेणी के लिए भौतिकी, रसायन, गणित और जैविकी की पाठ्यपुस्तकें, दसवीं श्रेणी की भूगोल की पाठ्यपुस्तक, नवीं व दसवीं श्रेणी के विद्यार्थियों के लिए अर्थशास्त्र की तीन पुस्तकें, बारहवीं श्रेणी के हिंदी कोर, पाठ्यक्रम के

लिए दो पाठ्यपुस्तकें, बारहवीं श्रेणी के चयनात्मक हिंदी पाठ्यपुस्तक के लिए दो पाठ्यपुस्तकें, बारहवीं श्रेणी के कोर पाठ्यक्रम के लिए संस्कृत की पाठ्यपुस्तकें, बारहवीं श्रेणी के अंग्रेजी (कोर पाठ्यक्रम) की एक पूरक पाठमाला और ग्यारहवीं व बारहवीं श्रेणी के लिए राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तक, प्रमुख हैं। प्रकाशन के लिए अन्तिम रूप दी गई अन्य पाठ्यपुस्तकीय सामग्री में, छठी श्रेणी के लिए उर्दू की पाठ्यपुस्तक, तीसरी श्रेणी के लिए हिंदी (दूसरी भाषा के रूप में) की पाठ्यपुस्तक और नवोदय विद्यालयों में प्रयोग के लिए छठी श्रेणी की हिंदी की पाठ्यपुस्तक शामिल हैं।

भारत की युवा पीढ़ी में, शिक्षण पैकेजों द्वारा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए परिषद् की गतिविधियों के भाग के रूप में परिषद् ने लगभग 80 दृश्य पेनलों वाली एक एलबम निकाली जिसमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित अनेक घटनाओं आदि के बारे में संक्षिप्त व्योरा भी दिया गया था। 'भारत का स्वतंत्रता संग्राम - दृश्य सामग्री और दस्तावेज' नामक प्रकाशन, पंचवर्षीय अनुसंधान परियोजना का परिणाम है और इसे भारत की स्वतंत्रता के लिए हुए शानदार संग्राम को प्रतिबिम्बित करने वाला एक जबरदस्त प्रकाशन माना गया है। संस्था के पुस्तकालयों, स्कूल के पुस्तकालयों और श्रेणी कक्षाओं में प्रदर्शन के लिए उपयुक्त, तीन विभिन्न संस्करणों में निकाली गई इस एलबम की, इसके उच्च कोटि के उत्पादन के लिए काफी तारीफ की गई है। इस एलबम का विमोचन, केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री एवं अध्यक्ष, रा० शै० अनु० और प्र० परिषद्, श्री पी० वी० नरसिंह राव ने 24 दिसम्बर 1985 को किया। 'सीखने के लिए पढ़ना' परियोजना के अन्तर्गत बच्चों के लिए पठन सामग्री तैयार करने से संबंधित गतिविधियां इस वर्ष में जारी रहीं। 1985 के अन्त तक, छोटे बच्चों और 11-14 की आयु वर्ग के बच्चों के प्रयोग के लिए 31 शीर्षक प्रकाशन के लिए प्रेस में भेजे गए।

राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा

परिषद् ने, राष्ट्रीय एकता में रुकावट बनने वाली सामग्री को पाठ्यपुस्तकों में से निकालने के इरादे से स्कूल की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन से संबंधित अपनी गतिविधियां जारी रखी। राज्यों/संघ शासित प्रदेशों के शिक्षा विभागों के सहयोग से परिषद् द्वारा तैयार किए गए मार्गदर्शनों के आधार पर विभिन्न विषय क्षेत्रों में काफी संख्या में पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा की गई। परिषद् ने नमूना आधार पर पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन भी किया और पाठ्यपुस्तकों के लेखकों और समीक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए। राष्ट्रीय एकता के विचार से पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के लिए मार्गदर्शन वाली एक पुस्तिका भी निकाली गई। परिणामस्वरूप, राष्ट्रीय एकता के इरादे से पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के कार्यक्रम को अब भाषाएं, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र और समाजविज्ञान जैसे विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकों के संबंध में एक लगातार कार्य के रूप में संस्थागत कर दिया गया है।

राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने में निर्दिष्ट एक अन्य कार्यक्रम, अध्यापकों को 15 क्षेत्रीय भाषाओं के गानों के सामूहिक गायन की कला व तकनीकों में प्रशिक्षित करने के लिए शिविर आयोजित करना, रहा है। 1985-86 में, विभिन्न राज्यों/संघ शासित प्रदेशों के स्तर की एजेंसियों के सहयोग से रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् ने, अध्यापकों को सामूहिक गायन में प्रशिक्षित करने के लिए 29 शिविर आयोजित किए। इन शिविरों में 19 राज्यों/संघशासित प्रदेशों के 1164 अध्यापकों ने भाग लिया। इन शिविरों ने और एक ऐसी पुस्तक के, जिसमें ये गाने अपनी-अपनी भाषालिपियों के व रोमन तथा देवनागरी लिपि में स्वरलिपि के साथ दिए गए हैं, और श्रव्य टेपों के, स्कूलों में प्रयोग के लिए उत्पादन और वितरण से, देश के अधिसंख्य स्कूलों में सामूहिक गायन को संस्थागत करने में सहायता मिली है।

स्कूलों में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का अध्यापन

रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् ने स्कूलों में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अध्यापन पर एक रिपोर्ट तैयार की और स्कूली शिक्षा में स्तरित अवस्थाओं के लिए, स्वतंत्रता आंदोलन के पाठ्यक्रम के लिए सामान्य ढांचा और मार्गदर्शन तैयार करने से संबंधित सिफारिशें कीं। परिषद् ने, राज्यों/संघशासित प्रदेशों को उपलब्ध कराई जाने वाली, इस प्रकार की बेमिसाल सामग्री तैयार करने की जिम्मेदारी ली। स्वतंत्रता आंदोलन का अध्ययन, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम का एक हिस्सा होगा और विभिन्न विद्याशाखाओं में होगा। इसे, भाषाओं, इतिहास, सामाजिक विज्ञान, नागरिक शास्त्र और अर्थशास्त्र के अध्ययन में शामिल किया जाएगा। रिपोर्ट में, परिषद् ने, स्वतंत्रता आंदोलन का एक स्थायी सैल बनाने का सुझाव दिया गया है, जिसमें, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डॉ० जी० सी० पाण्डे की अध्यक्षता में काम कर रहे कार्यकारी दल की सिफारिशों की विवेचना के लिए एक सलाहकार समिति हो।

परिषद् ने, स्कूली बच्चों के लिए, राष्ट्र नेताओं की जीवनियों का एक कोष निकालने का भी निर्णय किया है। रिपोर्ट में यह सिफारिश भी की गई कि 'भारत का स्वतंत्रता संग्राम—दृश्य सामग्री तथा दस्तावेज' शीर्षक वाला, रा० शै० अनु० और प्र० परि० का प्रकाशन, देश के सभी स्कूलों को उपलब्ध कराना चाहिए।

शिक्षा का व्यावसायीकरण

परिषद् ने, प्रारंभिक और माध्यमिक अवस्थाओं में, सामाजिक रूप से उपयोगी उत्पादनशील कार्य (एस.यू.पी. डब्ल्यू.) के पाठ्यक्रम के प्रभावशील कार्यान्वयन के लिए तथा उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के व्यावसायीकरण के लिए, राज्यों/संघशासित प्रदेशों को, आवश्यक शैक्षिक निवेश उपलब्ध करवाने के लिए अनेक कार्य हाथ में लिए। वर्ष 1985-86 में, परिषद् ने,

व्यावसायिक अध्यापकों को अपने-अपने व्यवसाय में ज्ञान और विशेषज्ञता को अद्यतन बनाने के इरादे से, चार अल्पकालिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। विशेषज्ञता-प्राप्त संस्थाओं में, उनके ढांचों की सुविधाओं और विशेषज्ञता का उपयोग करके, चलाए गए इन पाठ्यक्रमों के द्वारा 100 अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया। अन्य आयोजित कार्यक्रमों में, शिक्षा के व्यावसायीकरण पर, राज्य स्तर के अधिकारियों के लिए पांच अभिविन्यास कार्यक्रम और एस. यू. पी. डब्ल्यू. पर राज्य/संघ शासित प्रदेश स्तर के प्रमुख व्यक्तियों के लिए चार अभिविन्यास कार्यक्रम शामिल हैं। इनके अतिरिक्त, विभिन्न व्यवसायों से संबंधित न्यूनतम व्यावसायिक योग्यता आधारित पाठ्यक्रम, स्वयं-शिक्षक तथा प्रायोगिक हस्तपुस्तिका, कार्यालय व्यवहार का प्रश्न बैंक, उच्च प्राथमिक और माध्यमिक अवस्थाओं के लिए पूर्व-व्यावसायिक पाठ्यक्रम और एस. यू. पी. डब्ल्यू. योग्यता आधारित पाठ्यक्रम बनाने के लिए अनेक कार्यशालाएं आयोजित की गईं और अनेक व्यवसायों से संबंधित शिक्षण सामग्री भी इस वर्ष में तैयार की गई और प्रकाशित की गई।

शिक्षा-मूल्यांकन

स्कूलों में मापन और मूल्यांकन के तरीकों में सुधार लाने के लिए परिषद् ने, शिक्षा मूल्यांकन से संबंधित विचारात्मक सामग्री तैयार करना, कसौटी संदर्भित परीक्षण तैयार करना और विभिन्न विषयों के लेखकों का प्रशिक्षण करना शुरू किया। तैयार की गई सामग्री में, नवीं व दसवीं श्रेणी के विद्यार्थियों व अध्यापकों के प्रयोग के लिए अंग्रेजी की 70 बोध प्रश्नावलियां, ग्यारहवीं श्रेणी के लिए इतिहास का प्रश्न बैंक, + 2 अवस्था में व्यावसायिक विषयों के मूल्यांकन की एक योजना, छठी श्रेणी के लिए विज्ञान का प्रश्न बैंक, प्रायोगिक भूगोल के यूनिट टेस्ट और प्रश्नावलियां, उच्चतर माध्यमिक श्रेणियों के लिए जीवन विज्ञान के नमूना प्रश्न, व्यावसायिक विषय आंतरिक मूल्यांकन की एक योजना और प्राथमिक अवस्था में शिक्षार्थियों को स्कूल न जाने की प्रवृत्तियों के मूल्यांकन की एक योजना शामिल है।

परिषद् ने विभिन्न विषयों में जांच सामग्री लेखकों और विभिन्न माध्यमिक शिक्षा बोर्डों द्वारा आयोजित बाह्य परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र बनाने वालों के प्रशिक्षण के लिए 7/8 दिवसीय पांच कोर्स चलाए। इनके अतिरिक्त, परिषद् ने, माध्यमिक स्तर की बाह्य परीक्षाओं के सुधार के लिए राज्य-स्तरीय कार्मिकों के प्रशिक्षण के लिए आठ कोर्स, सशस्त्र सेना के कार्मिकों के लिए शिक्षा मूल्यांकन पर एक मास का एक प्रशिक्षण कोर्स, राज्य/संघशासित प्रदेश स्तरीय कार्मिकों के लिए शिक्षा मूल्यांकन पर एक मास का एक अखिल भारतीय प्रशिक्षण कोर्स, अल्पसंख्यक समुदायों द्वारा चलाई जा रही शिक्षण संस्थाओं के स्टाफ के लिए शिक्षा मूल्यांकन पर दस दिन का एक कोर्स और चुनिंदा पब्लिक स्कूलों के स्टाफ के लिए मूल्यांकन प्रक्रमों पर पांच दिन का एक कोर्स भी आयोजित किए।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति दिए जाने के लिए चुनाव करने के लिए दूसरे चरण की परीक्षा, रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् ने 14 जुलाई 1985 को आयोजित की। देश भर के 29 केंद्रों में रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् द्वारा आयोजित इस दूसरे चरण की परीक्षा में, अक्टूबर-नवंबर 1984 में राज्यों/संघशासित प्रदेशों द्वारा ली गई लिखित परीक्षा के आधार पर दसवीं श्रेणी के चुने गए 2849 विद्यार्थी बैठे। रा० प्र० खो० छात्रवृत्तियां दिए जाने के लिए कुल मिला कर, सामान्य वर्ग के 680 प्रत्याशी और अनुसूचित जाति/जनजाति के बच्चों के लिए आरक्षित वर्ग में से 70 प्रत्याशी चुने गए।

शैक्षिक सर्वेक्षण

परिषद् ने, उचित शिक्षा कार्यक्रम बनाने के लिए आंकड़ा आधार में सुधार लाने के लिए अपनी गतिविधियां जारी रखीं। इस वर्ष में, स्कूलों में उपलब्ध सुविधाओं से संबंधित चार अध्ययन शुरू किए गए। इनमें, माध्यमिक और उच्चतर, माध्यमिक स्कूलों की विज्ञान प्रयोगशालाओं का गहन अध्ययन असम, गुजरात, हरियाणा और तमिलनाडु राज्यों के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों की पुस्तकालय सुविधाओं और उनके उपयोग का नमूना अध्ययन, बिहार, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक और मध्यप्रदेश राज्यों के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूल भवनों का गहन अध्ययन, और उड़ीसा में, समाज के अनुसूचित जातियों जैसे कमजोर वर्गों के लिए शिक्षा सुविधाओं का सर्वेक्षण शामिल है। नमूना सर्वेक्षण करने की क्रियाविधि पर, राज्य स्तर के कार्मिकों के प्रशिक्षण के लिए चार सात दिवसीय कोर्स 1985-86 के दौरान आयोजित किए गए।

शिक्षा प्रौद्योगिकी

शिक्षा प्रौद्योगिकी और सीखने के दूरस्थ तरीकों, जैसे शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने और शिक्षा के लिए विस्तृत पहुंच बनाने के लिए रेडियो व टेलीविजन का प्रयोग, के उपयोग की ओर निर्दिष्ट अनेक परियोजनाएं और कार्यक्रम, राज्य शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थानों (एस.आई.ई.टी.) के सहयोग से केन्द्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान ने शुरू किए। सी. आई. ई. टी. ने निर्माण की दृष्टि से आकाशवाणी बंगलौर के शैक्षिक प्रसारणों के संबंध में अनुसंधान अध्ययन पूरा किया और शैक्षिक रेडियो के लिए पाठ्यक्रम तैयार करने का काम जारी रखा। इसने शैक्षिक दूरदर्शन (ई.टी.वी.) कार्यक्रमों की प्रसारण-पूर्व जांच और प्राथमिक स्कूलों के बच्चों व अध्यापकों के लिए इनसेट के माध्यम से प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों का मूल्यांकन भी प्रारंभ किया। सी.आई.ई.टी. ने, इनसेट-1 बी की सुविधाओं के प्रयोग से प्रसारण के लिए 89 शै० दूरदर्शन कार्यक्रम तैयार किए। इनमें, 5-8 वर्ष के आयु वर्ग के और 9-11 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों में से प्रत्येक वर्ग के लिए 33 कार्यक्रम और अध्यापकों के लिए 23 कार्यक्रम शामिल हैं। इसने 58 श्रव्य कार्यक्रम

तैयार किए जिनमें से 25 कार्यक्रम, उड़ीसा के बच्चों को, दूसरी भाषा के रूप में हिंदी पढ़ाने के थे।

सी.आई.ई.टी. ने राज्य/संघशासित प्रदेश स्तरीय एजेंसियों की सहायता से, राज्य स्तरीय कार्मिकों के लाभ के लिए श्रव्य तथा शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम के निर्माण पर अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। 1985-86 में आयोजित कार्यक्रमों में, शैक्षिक कार्य के लिए पांडुलिपि लिखने और श्रव्य/आकाशवाणी कार्यक्रमों के निर्माण पर एक मास का समेकित प्रशिक्षण कार्यक्रम, शैक्षिक दूरदर्शन निर्माण और तकनीकी कार्यों पर छह सप्ताह का एक प्रशिक्षण कोर्स, तकनीकी कार्य संचालन, स्क्रिप्ट लेखन और चित्रांकन पर एक मास का एक प्रशिक्षण कोर्स और ई.टी.वी. के कार्यक्रम निर्माण पर दस दिन का एक सेवाकालीन प्रशिक्षण शामिल है। अन्य आयोजित कोर्सों में, राज्यों/संघशासित प्रदेशों के अध्यापक शिक्षकों के लिए शिक्षा प्रौद्योगिकी के दो सप्ताह वाले पांच प्रशिक्षण कोर्स फोटोग्राफी पर दो सप्ताह का एक प्रशिक्षण कोर्स और दूरस्थ शिक्षा के लिए पाठ लिखने पर दस दिन के दो अभिविन्यास कार्यक्रम शामिल हैं।

अध्यापक शिक्षण

अध्यापक शिक्षण के क्षेत्र में रा० शै० अनु० प्र० परिषद् ने बी. एड. विद्यार्थियों के गुण अभिविन्यास, भारत में अध्यापकों की स्थिति और अनुसूचित जाति/जनजाति के अध्यापक प्रशिक्षुओं के आत्म प्रतिबोध और समायोजन के बीच संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन तथा उनकी उपलब्धि पर अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य जारी रखा। राज्यों में प्राथमिक अध्यापक-शिक्षकों तथा माध्यमिक स्कूल अध्यापकों की सेवाकालीन शिक्षा की स्थिति से संबंधित अध्ययन पूरा किया गया और 1985-86 के दौरान ही भारत में माध्यमिक अध्यापक शिक्षा के चौथे राष्ट्रीय सर्वेक्षण से संबंधित कार्य किए गए। सेवा-पूर्व और सेवाकालीन अध्यापक शिक्षण कार्यक्रमों के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करने के लिए कार्यशालाएं/कार्यकारी दलों की बैठकें आयोजित की गईं। जो सामग्री तैयार करने के लिए कार्यकारी दलों की बैठकें हुई, उसमें एम. एड. विद्यार्थियों के लिए अध्यापक शिक्षण की स्रोत पुस्तक, माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए स्वास्थ्य तथा शारीरिक शिक्षा की पाठ्यपुस्तक, प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षुओं के लिए पर्यावरणीय अध्ययनों से संबंधित अतर्वस्तु और तरीकों की पाठ्यपुस्तक, माध्यमिक (सकेंडरी) अध्यापक प्रशिक्षुओं के सुयोग के लिए सामाजिक विज्ञान अध्यापन की अतर्वस्तु तथा तरीकों की पाठ्यपुस्तक, अध्यापक प्रशिक्षुओं के लिए गुण अभिविन्यास शिक्षण की हस्तपुस्तिका, माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए गैर-औपचारिक शिक्षा की स्रोत पुस्तक और महाविद्यालय अध्यापन की एक स्रोत पुस्तक शामिल है।

रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् ने, भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रायोजित 'सेवारत स्कूल अध्यापकों के प्रशिक्षण को राष्ट्रीय योजना के अन्तर्गत 1986-87 के शिक्षा सत्र में लगभग 5 लाख

अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए विस्तृत कार्यक्रम डिज़ाइन तैयार किया। राष्ट्रीय एकता, शिक्षा में बच्चे की केन्द्रीयता, शिक्षण की आधुनिक विधियाँ, कार्य अनुभव, सतत और विस्तृत मूल्यांकन तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सूत्रण के लिए प्रयास के समर्थन में तैयार किए गए दस्तावेजों में बताए गए तुरंत ध्यान दिए जाने वाले क्षेत्रों के मामलों पर परिषद् ने 30 माइबूल तैयार किए। इनसेट- I बी द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं के माध्यम से विभिन्न भारतीय भाषाओं में दूरदर्शन प्रसारण के रूप में संचार माध्यमों के समर्थन की योजना भी बनाई गई।

1985-86 के दौरान परिषद् ने अध्यापकों की व्यावसायिक योग्यता सुधारने के लिए विभिन्न राज्यों में बनाए गए सतत शिक्षा केन्द्रों की गतिविधियों का समन्वय करने का काम जारी रखा, सतत शिक्षा केन्द्रों की गतिविधियों और प्रगति का जायज़ा लेने और भविष्य में रा० शि० कै० के प्रभावशाली उपयोग के लिए नीतियाँ बनाने के लिए अध्यापकों के रा० शि० कै० के समन्वयकों/अवैतनिक निदेशकों के लिए चार क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किए गए।

परिषद् द्वारा चलाए जा रहे चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, एक-वर्षीय बी० एड० कोर्स, बी० ए० एड० या बी० ए० बी० एड० डिग्री और बी० एस-सी० एड० या बी० एस-सी० बी० एड० डिग्री दिलाने वाला चार-वर्षीय समेकित अध्यापक शिक्षण कार्यक्रम और एक-वर्षीय एम० एड० कोर्स चलाते रहे। भुवनेश्वर और मैसूर के क्षेत्रों में दो-वर्षीय एम० एस-सी० एड० कोर्स भी चलते रहे। अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में चार-वर्षीय समेकित कोर्स में कुल भर्ती क्रमशः 236, 379, 489 और 344 थी जबकि बी० एड० कोर्स में क्रमशः 247, 127, 450 और 77 थी। अजमेर व भुवनेश्वर के क्षेत्रों में प्रत्येक में एम० एड० में भर्ती 20 थी जबकि भोपाल व मैसूर में क्रमशः 10 व 25 थी। भुवनेश्वर में एम० एस-सी० (एड०) जीवनविज्ञान कोर्स में 20 की भर्ती थी जबकि मैसूर में भौतिकी, रसायन और गणित में एम० एस-सी० एड० में कुल भर्ती 102 थी। इसके अतिरिक्त अजमेर, भुवनेश्वर और भोपाल में बी० एड० दिलवाने वाले शीष्मकालीन स्कूल तथा पत्राचार पाठ्यक्रम में क्रमशः 195, 582 और 220 प्रत्याशी दाखिल हुए जबकि क्षेत्रों में भुवनेश्वर के सहायता प्राप्त मणिपुर उपकेन्द्र में 185 प्रत्याशी दाखिल हुए। क्षेत्रों में न स्कूली शिक्षा से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों पर विस्तार कार्यक्रम/कार्यशालाएँ/संगोष्ठियाँ भी आयोजित कीं। अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर के क्षेत्रों में द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की कुल संख्या क्रमशः 15, 26, 15 और 35 थी। इसके अतिरिक्त प्रत्येक क्षेत्रों में स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा से संबंधित अनुसंधान अध्ययन भी किए।

नवोदय विद्यालयों को तकनीकी सहायता

प्रत्येक जिले में नवोदय विद्यालय स्थापित करने की योजना शुरू करने के लिए भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के निर्णय के

अनुसरण में परिषद् ने अधिसूच्यी व्यवस्था के तौर पर दो स्कूल, एक भुवनेश्वर (हरियाणा) में और दूसरा अमरावती (महाराष्ट्र) में, स्थापित करने की जिम्मेदारी ली। परिषद् ने, नवोदय विद्यालयों के लिए पाठ्यक्रमों की रूपरेखा भी तैयार की और इन स्कूलों में नियुक्त प्रिंसीपल और अध्यापकों के पुनर्विन्यास के लिए कोर्स आयोजित किए। इन स्कूलों में दाखिले के लिए विद्यार्थियों को चुनने के लिए परिषद् ने दाखिला परीक्षाएँ भी आयोजित कीं।

शिक्षण की दृष्टि से पिछड़े हुए अल्पसंख्यकों द्वारा चलाए जाने वाले स्कूलों के स्टाफ का प्रशिक्षण

शिक्षण की दृष्टि से पिछड़े हुए अल्पसंख्यकों द्वारा चलाए जा रहे स्कूलों के प्रबंधकों, प्रिंसीपलों और अध्यापकों के हित के लिए परिषद् के विभिन्न घटक यूनिटों ने 11 प्रशिक्षण अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए। इन कार्यक्रमों में लगभग 300 व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया गया। इसके अतिरिक्त, शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए अल्पसंख्यकों द्वारा चलाए जा रहे स्कूलों को प्रोत्साहन सहायता उपलब्ध कराने के लिए पांच विश्वविद्यालयों को स्रोत केन्द्रों के रूप में अभिज्ञात किया गया। ये स्रोत केन्द्र उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, औरंगाबाद विश्वविद्यालय, औरंगाबाद, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर और जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली में स्थित हैं।

जनसंख्या शिक्षा

राज्यों में राष्ट्रीय जनसंख्या परियोजना के कार्यान्वयन को तेज़ करने के लिए परिषद् ने उपाय शुरू किए। राज्य स्तर पर अध्यापकों और प्रमुख व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने के अलावा परिषद् ने 'कार्य और चुनौतियाँ' शीर्षक का एक प्रकाशन और जनसंख्या जागरूकता परीक्षण निकाले। इनके अतिरिक्त 'भारत में बच्चे, मेरा भविष्य' शीर्षक की एक बहुरंगी एलबम प्रकाशित की गई जिसमें जनसंख्या की स्थिति पर बच्चों की पेंटिंग थी। विचार की दृष्टि से इसके महत्व और उत्पादन की भारत और विदेश, दोनों में ही प्रशंसा की गई।

कम्प्यूटर साक्षरता

कम्प्यूटर साक्षरता और स्कूल में अध्ययन (क्लास) परियोजना के अन्तर्गत रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् व अन्य स्रोत केन्द्रों ने अनेक उन्नत स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। इन नए देसी साफ्टवेयर पैकेजों का परीक्षण किया गया और 'क्लास' परियोजना के अन्तर्गत चुने गए स्कूलों में उन्हें जारी किया गया।

शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन

शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन के क्षेत्र में परिषद् ने अपनी गतिविधियां जारी रखी। 1985-86 में की गई अनुसंधान गतिविधियों में, 'हाई स्कूलों में पढ़ने वाले अनुसूचित जाति के बालकों की मनोवैज्ञानिक विशिष्टताएं और शैक्षिक तथा व्यावसायिक नियोजन', 'शैक्षिक तथा व्यावसायिक नियोजन, जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और मनोवैज्ञानिक विशिष्टताएं, तथा 'शैक्षिक और व्यावसायिक धाराओं में विद्यार्थियों का व्यावसायिक बर्ताव और व्यावसायिक समायोजन' पर अध्ययन शामिल है। परिषद् ने शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन में अपना डिप्लोमा कोर्स चलाना जारी रखा और राज्य मार्गदर्शन ब्यूरो प्रमुखों की एक त्रिदिवसीय अखिल भारतीय सम्मेलन, व्यवसायिक अध्यापकों को मार्गदर्शन में अभिविन्यस्त कराने के लिए स्रोत व्यक्तियों की एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी एवं कार्यशाला, स्कूलों में मार्गदर्शन और परामर्श में शिक्षा प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर एक पांच दिन का पुनर्बोध कोर्स, सीखने और विकास पर तीन दस-दिवसीय समृद्धिकारक कोर्स, व्यवहार परिवर्तन तकनीकों के प्रयोग पर दस-दिन की दो कार्यशालाएं, प्रारंभिक कक्षाओं के बच्चों की सर्जन सामर्थ्य को पहचानने और बढ़ावा देने पर अध्यापक शिक्षकों के लिए एक दस-दिवसीय प्रशिक्षण कोर्स और माध्यमिक अवस्था के विद्यार्थियों में सर्जनात्मक प्रतिभा की पहचान और विकास पर एक 6 दिन का प्रशिक्षण कोर्स आयोजित किया।

असमर्थों की शिक्षा

इस वर्ष की अवधि में परिषद् ने असमर्थों की समेकित शिक्षा से संबंधित अनेक कार्य शुरू किए। वर्ष के दौरान शुरू की गई अनुसंधान गतिविधियों में से कुछ इस प्रकार हैं — विशेष शिक्षा में अनुसंधान की समीक्षा, असमर्थों के लिए समेकित शिक्षा के केस अध्ययन डिजाइन करना और श्रेणीकृत की पारिस्थिति की तथा शिक्षा उपलब्धि की असमर्थता के साथ बच्चों के समाकलन के प्रभावों पर एक सहकारी अनुसंधान परियोजना की गई अन्य गतिविधियों में, आई० ई० डी० योजना पर समन्वयकों और शिक्षा सचिवों का राष्ट्रीय सम्मेलन, विशेष शिक्षा में अनुसंधान प्रोत्साहन पर चार दिन की एक राष्ट्रीय कार्यशाला, असमर्थों के लिए सर्जनात्मक कलाओं पर पांच दिन की एक राष्ट्रीय कार्यशाला, नियमित स्कूलों में दृष्टि की खराबी वाले बच्चों के लिए शिक्षण सामग्री और विधियों के समायोजन पर पांच दिन की एक कार्यशाला और नियमित स्कूलों में सुनने की खराबी वाले बच्चों की आवश्यकताओं के उपयुक्त शिक्षण सामग्री और विधियां बनाने के लिए पांच दिन की एक कार्यशाला का आयोजन तथा असमर्थों के लिए समेकित शिक्षा के स्रोत अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए माड्यूलर शिक्षण सामग्री तैयार करना और असमर्थों के लिए समेकित शिक्षा पर प्रमुख कार्मिकों के लिए तीन मास का एक प्रशिक्षण कोर्स है।

अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा

अनु० जा०/अनु जनजा० वर्गों की शिक्षा पर अनुसंधान अध्ययनों से संबंधित गतिविधियां, परिषद् ने जारी रखीं। इनमें, 'अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शिक्षा और उनकी सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता के बीच परस्पर संबंध का एक अध्ययन,' 'उत्तर प्रदेश में दसवीं श्रेणी के अनुसूचित जाति और गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को शिक्षा उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन,' 'प्राथमिक अवस्था में जनजातीय विद्यार्थियों के कमजोर और सशक्त पहलू निर्धारित करने के लिए उनके विषयवार प्रदर्शन का अध्ययन' और जनजातीय तथा गैर-जनजातीय स्कूलों के बीच भौतिक सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन शामिल है। परिषद् ने, जनजातीय इलाकों में स्थित प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापक शिक्षकों के लिए एक-एक सप्ताह के दो प्रशिक्षण कोर्स, जनजातीय इलाकों के सेकंडरी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापक शिक्षकों के लिए एक-एक सप्ताह के दो प्रशिक्षण कोर्स और जनजातीय इलाकों में गैर औपचारिक शिक्षा के कार्यान्वयन में लगे प्रमुख कार्मिकों के लिए एक-एक सप्ताह के दो अभिविन्यास कोर्स भी आयोजित किए।

नारी शिक्षा

1985-86 में, औपचारिक तथा गैर-औपचारिक शिक्षा में लड़कियों का दाखिला बढ़ाने के लिए राज्यों द्वारा अपनाई गई नीतियों से संबंधित दो अध्ययन किए गए। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (ने०बु०द्र०) द्वारा तैयार किए गए बाल साहित्य, रा० शै० अनु० और प्र० परि० और तमिलनाडु राज्य द्वारा तैयार की गई भाषा की पाठ्यपुस्तकों व पूरक पठन सामग्री की, इन सामग्रियों में से लिंग भेद दूर करने के लिए, रा० शै० अनु० और प्र० प द्वारा तैयार की गई लिंग भेद दूर करने की मूल्यांकन कसौटी व मूल्यांकन जरूरतों के आधार पर, समीक्षा की गई। परिषद् ने, लिंग भेद दूर करने के दृष्टिकोण से, भाषाओं व अंग्रेजी की पाठ्य पुस्तकों व पूरक पठन सामग्री के मूल्यांकन के प्रमुख कार्मिकों के लिए दो अभिविन्यास कार्यक्रम और प्रारंभिक अवस्था में पाठ्यक्रम में नारी की स्थिति पर एक अन्य अभिविन्यास कार्यक्रम भी आयोजित किया।

बच्चों के लिए राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी

रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् द्वारा, राजस्थान सरकार के सहयोग से आयोजित चौथी राष्ट्रीय बाल विज्ञान प्रदर्शनी का उद्घाटन उदयपुर में राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने 16 नवंबर, 1985 को किया। प्रदर्शनी का विषय 'विकास में देशीय प्रौद्योगिकी' था। इस प्रदर्शनी में विभिन्न राज्यों/संघशासित प्रदेशों के लगभग 400 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

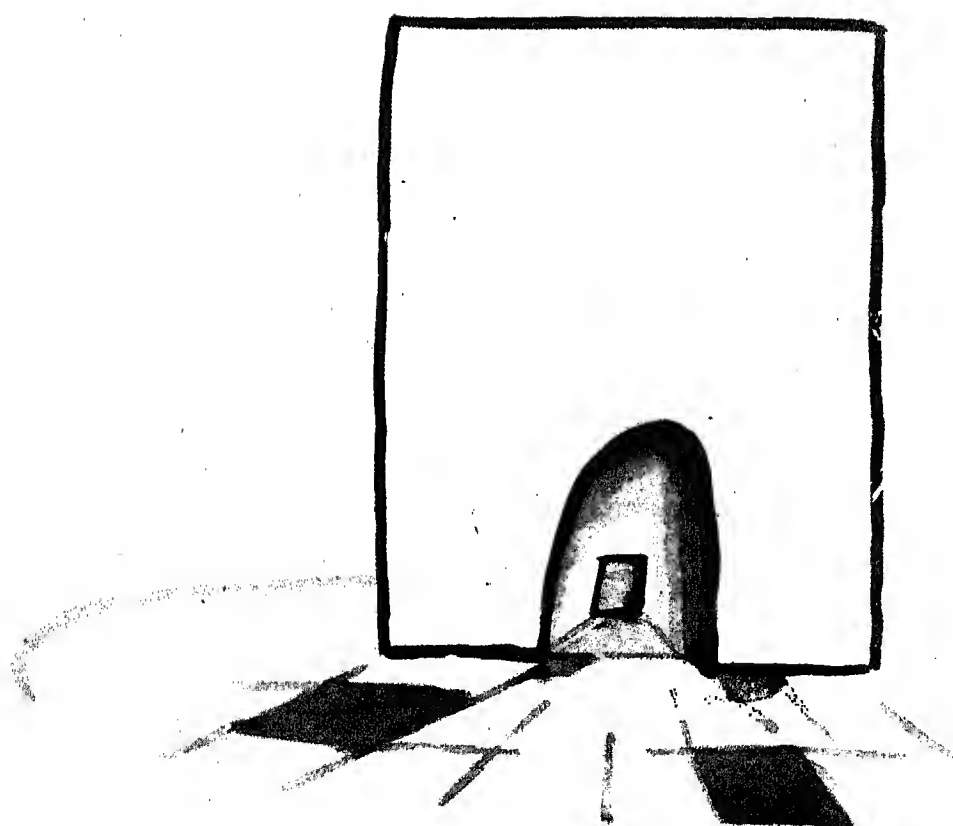
शैक्षिक अनुसंधान

रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् की शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति ने प्राथमिकता दिए जाने वाले अनुसंधान क्षेत्रों की पहचान का कार्य और स्कूली शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर आवश्यकता आधारित अनुसंधान परियोजना चलाने व प्रायोजित करने का कार्य जारी रखा। 1985-86 में नौ अनुसंधान अध्ययन पूरे किए गए। देश में योग्य शोधकार्यों का एक समूह तैयार करने के इरादे से परिषद् ने अनुसंधान क्रियाविधियों पर दो कोर्स आयोजित किए। इसने, पी-एच० डी० के शोध प्रबंधों मोनोग्राफों के प्रकाशन के लिए वित्तीय सहायता देने की अपनी योजना भी जारी रखी। इस योजना के अन्तर्गत इस वर्ष 18 प्रकाशन निकाले गए और 18 को वित्तीय सहायता देने के लिए चुना गया।

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध

स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में दुतरफे सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के अंगों के कार्यान्वयन के लिए, परिषद् एक प्रमुख एजेंसी की भूमिका निभाती रही। वर्ष 1985-86 में विभिन्न देशों से अनेक प्रतिनिधि मण्डल और विशेषज्ञ, रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् आए। परिषद् ने अनेक यूनेस्को प्रायोजित परियोजनाएं/कार्यक्रम हाथ में लिए और विकास के लिए शिक्षा नवाचारों के एशिया एवं प्रशान्त क्षेत्रीय कार्यक्रम (एपीड) के सम्बद्ध केन्द्र के रूप में तथा शिक्षा नवाचारों के राष्ट्रीय विकास दल (एन. डी. जी.) के सचिवालय के रूप में प्रमुख भूमिका निभाई।

1985-86 में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन. आई. ई.) के विभिन्न विभागों तथा रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् के अन्य घटक एककों द्वारा की गई गतिविधियों/कार्यक्रमों का विवरण बाद के अध्यायों में दिया गया है।



शैशवकालीन शिक्षा से संबंधित अनुसंधान, विकास और प्रशिक्षण, प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम और अनौपचारिक शिक्षा का नवीकरण, स्कूल-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी०पी०एस०ई०ई०) के मुख्य क्रियाकलाप हैं। यह विभाग प्रारंभिक शिक्षा के सर्वोत्कर्षण के सन्दर्भ में शिक्षा क्षेत्र में विभिन्न राज्यों और संघशासित क्षेत्रों में चल रही यूनिसेफ द्वारा सहायता-प्राप्त परियोजनाओं के कार्यान्वयन में एक केन्द्रीय, तकनीकी और समन्वयकारी अभिकरण के रूप में कार्य करता आ रहा है।

शैशवकालीन शिक्षा

शैशवकालीन शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों का विकास, स्कूलपूर्व अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों के प्रयोग के लिए अनुदेशी सामग्रियों का विकास और स्कूलपूर्व अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों व शैशवकालीन शिक्षा कार्यक्रमों में जुटे पर्यवेक्षण स्टाफ का प्रशिक्षण इस वर्ष जारी रखे गये। इन क्रियाकलापों को निम्नलिखित विशिष्ट परियोजनाओं और कार्यक्रमों के अन्तर्गत सम्पन्न किया गया।

शिशु माध्यम प्रयोगशाला (सी०एम०एल०)

यूनिसेफ सहायता-प्राप्त परियोजना के अधीन शिशु माध्यम प्रयोगशाला (सी०एम०एल०) संबंधी मुद्रण विकास, श्रव्य और शैक्षिक व मनोरंजक मूल्य की श्रव्य सामग्रियों वाले क्रियाकलापों को हाथ में लिया गया। इसी परियोजना के अन्तर्गत शैशवकालीन शिक्षा तथा साथ-ही-साथ स्कूलपूर्व अध्यापकों और अध्यापक-शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु चित्र-पुस्तकें, श्रव्य कार्यक्रम, वीडियो कार्यक्रम और स्लाइड-टैप कार्यक्रम विकसित किये गये।

दस-दस दिनों की दो कार्यशालाएं बाल-पुस्तकों की लिखावटों के विकास के लिए तथा श्रव्य कार्यक्रमों के निर्माण हेतु आयोजित की गईं। इन कार्यशालाओं में विकसित की गई लिखावटों की समीक्षा की गई और उन्हें चित्र-पुस्तकों और श्रव्य टेपों के रूप में प्रकाशनार्थ अंतिम रूप दिया गया। अन्य विकसित की गई सामग्रियों में स्कूलपूर्व गतिविधियों से संबंधित दो वीडियो कार्यक्रम थे। शैशवकालीन परियोजना में सहभागी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों को पहले निर्मित की गई कुछ स्लाइड-टैप कार्यक्रमों की प्रतियां बनवाकर प्रसारार्थ भेजी गईं।

शैशवकालीन शिक्षा (ई०सी०ई०) परियोजना

यूनिसेफ सहायता-प्राप्त शैशवकालीन शिक्षा (ई०सी०ई०) परियोजना के अन्तर्गत राज्यों को शैशवकालीन शिक्षा एकक स्थापित करने या मजबूत

करने, अध्यापक शिक्षकों और स्कूलपूर्व अध्यापकों को प्रशिक्षण देने, पर्यवेक्षकों तथा शैक्षिक प्रशासकों को शैशवकालीन शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के अनुरूप तैयार करने और 3-8 आयुवर्ग के बच्चों के लिए मौलिक अधिगम व खेल सामग्री विकसित करने हेतु सहयोग प्रदान किया गया। वर्ष 1985 में यह परियोजना 8 राज्यों—बिहार, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान, तमिलनाडु और उत्तरप्रदेश में कार्यान्वित की गई। प्रत्येक सहभागी राज्य में परियोजना के कार्यान्वयन हेतु 5 अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान और 65 शैशवकालीन शिक्षा केन्द्र लिये गये थे। 1985-86 में उत्तरप्रदेश को छोड़कर बाकी सभी राज्यों में ई०सी०ई० अध्यापकों का प्रशिक्षण पूरा किया गया। सहभागी राज्यों में परियोजना के प्रभावी अनुवीक्षण और मूल्यांकन हेतु उचित प्रोफार्मा विकसित किये गये तथा वितरित किये गये।

इस परियोजना के अधीन वर्तमान वर्ष में एक बड़ी संख्या में अनुदेशी/प्रशिक्षण सामग्रियां प्रकाशित की गईं। अध्यापक शिक्षकों के लिए तीन शीर्षक प्रकाशित किये गये और दो पुस्तिकाओं की पाण्डुलिपियां प्रेस को मुद्रणार्थ भेजी गईं। दस पुस्तिकाओं को समीक्षित किया गया और प्रकाशन के लिए उन्हें अंतिम रूप दिया गया।

ई०सी०ई० परियोजना में भाग ले रहे सभी राज्यों ने 3-8 आयुवर्ग के बच्चों के लिए प्रादेशिक भाषाओं में अनुदेशी सामग्रियों संबंधी गतिविधियां शुरू कीं। राज्यों द्वारा विकसित सामग्रियों को केन्द्रीय स्तर पर समीक्षित किया गया और प्रकाशन के लिए अंतिम रूप दिया गया। स्कूलपूर्व बच्चों में भाषायी और संख्या कलाओं के विकास के लिए पुस्तिकाओं और कार्डों के छः सेट तमिल में विकसित और प्रकाशित किये गये। उड़ीसा में अध्यापकों के लिए 11 पुस्तिकाओं का एक सेट, 22 चित्र-पुस्तकें बच्चों के लिए और पोस्टरों व कार्डों के 7 सेट ज्ञानात्मक व भाषायी कौशल की वृद्धि के लिए विकसित तथा मुद्रित किये गये। बच्चों के लिए 18 चित्र-पुस्तकें, कार्डों का एक सेट, कार्यानिष्ठादन अभिलेखबद्ध करने के लिए अध्यापकों की हैंडबुकें व प्रगति नोटबुकें का एक सेट महाराष्ट्र द्वारा विकसित एवं प्रकाशित किया गया। अध्यापकों के लिए मार्गदर्शिकाओं का एक सेट, बच्चों के लिए चार चित्र-पुस्तकें और चित्र-कार्डों का एक सेट राजस्थान द्वारा प्रकाशित किया। कर्नाटक राज्य में बच्चों के लिए 8 चित्र-पुस्तकों का एक सेट, कन्नड़ में प्रकाशित किया गया। अन्य सामग्रियां जो विकसित की गईं, उनमें शामिल हैं बिहार में विकसित एवं प्रकाशित बच्चों के लिए कार्डों का और चित्र-पुस्तक का एक सेट, मध्यप्रदेश में प्रकाशित हिन्दी में एक अध्यापक मार्गदर्शिका और उत्तरप्रदेश में बच्चों के लिए 5 चित्र-पुस्तकों का एक सेट और अध्यापक मार्गदर्शिका।

ई०सी०ई० परियोजना के अधीन चार राज्यों में ई०सी०ई० केन्द्रों के अध्यापकों के लिए पुनश्चर्चा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाए गये। अन्य गतिविधियां जो सम्पन्न की गईं, उनमें शामिल हैं ई०सी०ई० केन्द्रों में हाजिर हुए बच्चों के अभिभावकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम। इस कार्यक्रम का मुख्य ध्येय था बच्चे के विकास के लिए शैशवकालीन शिक्षा के महत्व के प्रति जागृति सृजित करना। इन कार्यक्रमों का अभिभावकों द्वारा स्वागत किया गया।

दिल्ली नगर निगम के स्कूलों में शैशवकालीन शिक्षा परियोजना

यह विभाग दिल्ली नगर निगम के दस स्कूलों में शैशवकालीन शिक्षा परियोजना के कार्यान्वयन में रत है। इस वर्ष परियोजना में संलग्न सहायकों को शैशवकालीन शिक्षा की क्रियाविधि में तथा प्राथमिक शिक्षा के आरंभिक चरणों में इन पद्धतियों को शुरू करने के लिए प्रशिक्षित किया गया। इसके अतिरिक्त पुनश्चर्चा कार्यक्रम प्रशासकों, पर्यवेक्षकों, स्कूलों के प्रमुखों और अध्यापकों के लिए आयोजित किये गये। अप्रैल 1985 में परियोजना का अनुवीक्षण शुरू किया गया और इससे संबंधित गतिविधियों के रूप में अध्यापकों के साथ मासिक बैठकें आयोजित की गईं। इन बैठकों में परियोजना स्कूलों के प्रति अध्यापकों को गतिविधि-पद्धति और बाल-केंद्रित दृष्टिकोण के अभ्यास में मार्गदर्शन प्रदान किया गया। इस परियोजना के अन्तर्गत सम्पन्न की गई गतिविधियों से परियोजना स्कूलों के शिक्षण-अधिगम, विशेषकर क्लासरूम व्यवस्था, अनुदेशी कार्यक्रमों का नियोजन तथा अध्यापकों व नौसिखियों के मध्य और साथ ही बालकों के मध्य पारस्परिक प्रभाव में सुधार आया है।

बच्चे-बच्चे तक कार्यक्रम

यह कार्यक्रम दिल्ली नगर निगम के 14 स्कूलों में कार्यान्वित किया गया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अनिवार्य रूप से प्राथमिक स्कूलों के बच्चों के साथ मिलकर काम करना होता है जिससे उन्हें स्वास्थ्य संबंधी साधारण नियमों से अवगत कराया जा सके ताकि वे न केवल अपना स्वास्थ्य सुधार सकें बल्कि अपने छोटे भाई-बहनों में भी स्वास्थ्य-सुधार ला सकें। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत सहभागी स्कूलों के अध्यापकों की वो कार्यशालाएं आयोजित की गईं ताकि उन्हें कार्यक्रम से संबंधित नियमों व दर्शन में अभिविन्यस्त किया जा सके और क्लासरूम स्थितियों के प्रयोगार्थ गतिविधिशीट विकसित की जा सके। इसके अतिरिक्त अध्यापकों के प्रयोगार्थ प्रेक्षण सारणी विकसित की गई। कार्यक्रम के सहभागी स्कूलों से प्राप्त फीडबैक ने पर्यावरणीय सफाई, बच्चों के वैयक्तिक स्वास्थ्य-विज्ञान आदि की दृष्टि से उल्लेखनीय सुधार दर्शाया।

खिलौने बनाने संबंधी राष्ट्रीय स्तर कार्यशाला

स्कूल-पूर्व तथा आरंभिक, प्राथमिक स्तरों पर अध्यापकों के मध्य खिलौनों की महत्ता और शैक्षिक खेलों और खेल द्वारा शिक्षणविधि की जागृति विकसित करने के लिए, एक पांच-दिवसीय खिलौने बनाने संबंधी

राष्ट्रीय स्तर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला की गतिविधियां चल खिलौनों के इर्दगिर्द ही केंद्रित थीं। कार्यशाला में वे 15 स्कूलपूर्व और प्राथमिक स्कूल अध्यापक उपस्थित थे जो पहले इस विभाग द्वारा एन०सी०ई०आर०टी० के क्षेत्र सलाहकारों के सहयोग से आयोजित राज्यस्तर प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार विजेता थे। इस वर्ष खिलौने बनाने की प्रतियोगिता 17 राज्यों व संघशासित क्षेत्रों में आयोजित की गई।

अनुसंधान परियोजनाएं

बच्चों के ऊपर प्रभाव के दृष्टिकोण से विभिन्न माडलों के स्कूलपूर्व अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का एक मूल्यांकन अध्ययन किया गया। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य स्कूलपूर्व अध्यापक प्रशिक्षण के विभिन्न माडलों के अन्तर्गत का परीक्षण करना था, खासकर इस दृष्टिकोण से कि विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत प्रशिक्षित किये गये अध्यापक छोटे बच्चों के साथ कैसे रहे हैं और बच्चे कैसे लाभ उठाते हैं। अनुसंधान अध्ययन ने यह प्रकट किया कि अध्यापक प्रशिक्षण और बच्चों के कार्यनिष्पादन की अवधि के मध्य एक सकारात्मक सहसंबंध था। फिर भी आंगनवाड़ी बच्चों और दो वर्ष वाले प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों से पढ़े स्कूलपूर्व बच्चों के मध्य अन्तर कोई खास नहीं था।

बाल संचार प्रयोगशाला के निमित्त दिल्ली स्थित खानपुर की पुनर्वास कालोनियों के शहरी आंगनवाड़ियों के बच्चों का एक मध्यस्थता अध्ययन हाथ में लिया गया और उसे इसी वर्ष पूरा कर दिया गया। इस अध्ययन ने यह प्रकट किया कि ध्यापपूर्वक अभिविन्यास दिये जाने पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ता उत्साहजनक स्कूलपूर्व शिक्षा कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं और बच्चों के भाषायी विकास और ज्ञानात्मक उत्पत्ति को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम

अनुसंधान और विकास गतिविधियां अनौपचारिक और समुदाय शिक्षा कार्यक्रमों से सम्बद्ध थीं तथा अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में लगे कर्मचारी वर्ग का प्रशिक्षण/अभिविन्यास इस विभाग का एक महत्वपूर्ण कार्यक्षेत्र था। प्रमुख गतिविधियों में निम्नलिखित शामिल हैं:

भारत सरकार द्वारा कार्यान्वित किये जा रहे अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम में सहायता

यह विभाग राज्यों/संघशासित क्षेत्रों द्वारा कार्यान्वित किये जा रहे अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के लिए प्रोटो-टाइप अनुदेशी सामग्रियों के विकास में संलग्न है। माध्यमिक स्तर पर अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के लिए अनुदेशी सामग्रियां अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों में प्रयोग हेतु विकसित की गईं। पैकेजों के रूप में सामग्रियों को विकसित किया गया। अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों में नौसिखियों और अध्यापकों के प्रयोगार्थ सामग्रियों को

अधिगम-पैकेज और सहायक सामग्रियों के रूप में विकसित किया गया। अधिगम के प्रति एकीकृत दृष्टिकोण का अनुसरण करते हुए इन अनुदेशी सामग्रियों का विकास किया गया। पाठ्यचर्या के विभिन्न अधिगम केंद्रों से निष्कर्ष निकाले गये। संवाद, कहानी, कविता, आख्यान और यात्रा-विवरण आदि के रूप में पाठों को विकसित किया गया। अनुदेशी सामग्रियों के पैकेज में हैं प्राकृतिक विज्ञान की तीन पुस्तकें, समाजविज्ञान की तीन पुस्तकें, भाषा की तीन पुस्तकें, गणित की तीन, नौसिखियों के प्रयोगार्थ नौ कार्य-पुस्तकें, दो अध्यापक मार्गदर्शिकाएं और एक प्रशिक्षण दीपिका। इनमें से दस शीषकों को पाठ्यचर्याओं के प्रारूप के साथ अंतिम रूप दिया गया और चार शीषक-जीवन और विज्ञान भाग- I, जीवन और विज्ञान भाग- II, भाषा सुमन भाग- III और हमारी भारती, हमारा जीवन प्रकाशित किये गये। इसके अतिरिक्त अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों के प्रयोग के लिए उर्दू में अनुदेशी सामग्रियां विकसित की गई। इनमें शामिल हैं भाषा, प्राकृतिक विज्ञान और समाजविज्ञान तथा इसकी मार्गदर्शिकाओं की द्वितीय एकीकृत पुस्तक। इनके अतिरिक्त दस पुस्तकों का एक सेट, अध्यापक मार्गदर्शिकाएं, प्रवेशिकाएं और इनकी मार्गदर्शिकाएं 1984-85 के प्रारंभ में प्रकाशित की गई।

“एन०एफ०ई०केंद्रों में प्रयुक्त अनुदेशी सामग्रियों के मूल्यांकन के लिए उपकरणों व प्रविधियों का तैयार किया जाना” नामक अनुसंधान परियोजना के अन्तर्गत गतिविधियां जारी रखी गई। इस परियोजना के अधीन हिन्दीभाषी क्षेत्रों के अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों के प्रयोगार्थ राष्ट्रीय और राज्यस्तर के विभिन्न अभिकरणों द्वारा विकसित की गई अनुदेशी सामग्रियों के मूल्यांकन के लिए कई उपकरण विकसित किये गए। इसके अतिरिक्त अध्ययन-रिपोर्ट “अनौपचारिक शिक्षा के विभिन्न दृष्टिकोणों/प्रक्रियाओं की पहचान” को अंतिम रूप दिया गया और अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम में सम्मिलित एजेंसियों में प्रसार के लिए उसे साइक्लोस्टाइल रूप में निकाला गया।

इस विभाग ने राज्य/संघशासित स्तर पर अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम में संलग्न कर्मचारियों के लिए कुछ अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये। इस वर्ष आयोजित किये गये प्रमुख कार्यक्रमों में राज्यों और स्वेच्छिक संस्थाओं से आए स्रोत व्यक्तियों के लिए 5 -दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम भी शामिल हैं। अनौपचारिक शिक्षा पर्यवेक्षकों के लिए एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, शिक्षण विज्ञान की क्रियाविधि पर एन०एफ०ई० अध्यापकों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम, शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े हुए 9 राज्यों से आए स्वेच्छिक संस्थाओं के स्रोत व्यक्तियों के लिए एक तीन-दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए गये। इनके अतिरिक्त राज्यों द्वारा चलाए जा रहे एन०एफ०ई० कार्यक्रम की समीक्षा करने तथा कार्यान्वयन अभिकरणों को पेश आ रही कठिनाइयों पर काबू पाने के लिए उपचारी पत्र खोजने हेतु अनौपचारिक शिक्षा पर एक वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया गया। इस दो-दिवसीय सम्मेलन में केंद्र-प्रायोजित

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों को कार्यान्वित कर रहे राज्यों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अनुरोध पर इस विभाग ने राज्यों द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक नियोजन और प्रशासन संस्थान के सहयोग से कार्यान्वित किये जा रहे अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के मूल्यांकन अध्ययन को हाथ में लिया है। अध्ययन के डिजाइन तथा इसके लिए अपेक्षित उपकरणों को अंतिम रूप दिया गया।

इस वर्ष अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वयन में संलग्न कर्मचारियों के प्रशिक्षण व अभिविन्यास पाठ्यक्रमों में प्रयोगार्थ अनौपचारिक शिक्षा फिल्म के उत्पादन का कार्य जारी रखा गया। सी०आई०ई०टी (एन०सी०ई०आर०टी०) के सहयोग से निर्मित फिल्म की शूटिंग का कार्य पूरा किया गया।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति व्यापक पहुंच (सी०ए०पी०इ०)

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम विकास जोकि पाठ्यचर्या, अनुदेशी/अधिगम सामग्रियों, शिक्षण और मूल्यांकन पद्धति के बारे में विकेंद्रित है, से संबंधित गतिविधियों यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजना “प्राथमिक शिक्षा के प्रति व्यापक पहुंच (सी०ए०पी०ई०)” जारी रखी गई। वर्ष 1985-86 में यह परियोजना 17 राज्यों और दो संघशासित क्षेत्रों में कार्यान्वित की गई। सभी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों में परियोजना के प्रथम चरण की गतिविधियां जिनमें प्रसंग-आधारित अधिगम सामग्रियों का विकास शामिल है, हाथ में ली गई। सम्पन्न की गई प्रमुख गतिविधियों में शामिल हैं अधिगम घटनाओं के प्रारूपों का संसाधन और इन अधिगम घटनाओं का प्रकाशन/निर्माण। लगभग 60 माइयूल संसाधित किये गये और प्रकाशन के लिए उन्हें अंतिम रूप दिया गया। इन में 30 माइयूलों को इस वर्ष प्रकाशित किया गया। इसके अतिरिक्त विभाग द्वारा केंद्रीय स्तर पर आरंभकों के प्रयोग के लिए चार माइयूल हिंदी में भी विकसित किये गये।

इस वर्ष परियोजना का द्वितीय चरण जिनमें अधिगम केंद्रों की स्थापना/ग्रहण शामिल है, शुरू किया गया। 93 अधिगम केंद्र बिहार में, 70 उड़ीसा में और 73 तमिलनाडु में स्थापित किये गये। अधिगम केंद्रों की स्थापना से संबंधित गतिविधियां उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश राज्यों ने भी शुरू कीं। 1986 के मध्य में इन राज्यों में अधिगम केंद्रों की स्थापना की संभावना है। अधिगम घटनाओं की समीक्षा एवं उन्हें अंतिम रूप देने हेतु और प्रशिक्षण सुविधाओं की क्रियाविधि में आर०डी०आर०सी०टीम सदस्यों का प्रशिक्षण देने हेतु कार्यशालाओं और पाठ्यक्रमों की एक शृंखला आयोजित की गई। केंद्रीय स्तर पर इस विभाग ने हिन्दी में चार माइयूल आरंभकों के प्रयोग के लिए भी विकसित किये। कुल मिलाकर केंद्रीय स्तर पर 25 कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम आयोजित किये गये और लगभग 170 आर०डी०आर०सी०टीम सदस्यों ने इन कार्यक्रमों में भाग लिया।

समुदाय शिक्षा और सहभागिता में विकासात्मक गतिविधियां
(डी०ए०सी०ई०पी०)

यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजना "समुदाय शिक्षा और सहभागिता में विकासात्मक गतिविधियां" के अधीन उन समूहों, जो आंशिक रूप से या सम्पूर्ण रूप से किसी भी प्रकार की शिक्षा ग्रहण करने के लिए वंचित हैं, की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शैक्षिक गतिविधियों के विकास से संबंधित गतिविधियां सम्पन्न की गईं। इस वर्ष परियोजना को 17 राज्यों और दो संघशासित क्षेत्रों में कार्यान्वित किया गया। परियोजना के तहत लगभग 80 समुदाय शिक्षा केंद्रों ने कार्य किया। नामांकन के तौर पर, प्राप्त सूचना के अनुसार ऐसे 78 केंद्रों में कुल नामांकन 10,299 था। प्रत्येक केंद्र में औसतन लगभग 132 शिक्षार्थी थे, जिसमें से 0-3 आयुवर्ग के 33, 3-6 आयुवर्ग के 32, 6-14 आयुवर्ग के 33 और 15-35 आयुवर्ग और उससे ऊपर के 34 थे। नियमित नामांकन के अतिरिक्त, प्रत्येक केंद्र में कुछ अनियमित शिक्षार्थी भी थे जो अपनी सुविधा और आवश्यकतानुसार विशिष्ट कार्यक्रमों में हाज़िर होते रहे हैं।

इस परियोजना में सहभागी राज्यों/संघशासित क्षेत्रों द्वारा बहुत सी अधिगम/मार्गदर्शक और सम्पूर्ण पाठ्य सामग्रियां विकसित की गईं। राज्यों द्वारा चलाए जा रहे अनौपचारिक व प्रौढ़ शिक्षा-केंद्रों ने कुछ प्रकाशनों को व्यापक प्रयोग के लिए अपना लिया है। विभिन्न स्तरों पर इस परियोजना के कार्यान्वयन में शामिल परियोजना कर्मचारियों के लिए एक राष्ट्रीय स्तर अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 13 राज्यों व संघशासित क्षेत्रों के 41 सहभागी उपस्थित थे। मंडलीय स्तर पर तीन क्षेत्रीय व अभिविन्यास पाठ्यक्रम परियोजना समन्वयकों, खंड विकास अधिकारियों, प्राथमिक स्कूलों के मुख्याध्यापकों और समुदाय शिक्षा केंद्रों के प्रभारियों के लिए आयोजित किये गये। इन कार्यक्रमों में 13 राज्यों और संघशासित क्षेत्रों के 187 सहभागी उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त परियोजना कर्मचारियों के लिए तीन अन्तरराज्य भ्रमण आयोजित किये गये। इस कार्यक्रम के अधीन उत्तर व पश्चिम के परियोजना समन्वयकों ने तमिलनाडु और पाण्डीचेरी के समुदाय शिक्षा केंद्रों को देखा और पूर्वी मंडल के समन्वयकों ने उत्तर प्रदेश के समुदाय शिक्षा केंद्रों को देखा जबकि पश्चिमी मंडल के समन्वयकों ने हिमाचल प्रदेश और जम्मू तथा कश्मीर के केंद्रों को देखा।

वर्ष 1984 में किये गये परियोजना के आंतरिक मूल्यांकन की रिपोर्टों को समेकित किया गया। 9 राज्यों और संघशासित क्षेत्रों ने रिपोर्टों को अंतिम रूप दिया जबकि अन्यो ने रिपोर्टों को अंतिम रूप देने के लिए गतिविधियां शुरू कीं। आंतरिक मूल्यांकन के जांच-परिणामों पर चर्चा करने के लिए तथा परियोजना के कार्यान्वयन में उचित युक्तियां खोजने के लिए विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों का राज्यस्तरीय सम्मेलन आयोजित किया गया। परियोजना का बाह्य मूल्यांकन ए०एन०सिन्हा, समाजविज्ञान संस्थान, पटना द्वारा सम्पन्न किया गया। "डी०सी०ई०पी० कार्यरत-एक मूल्यांकन" नामक मूल्यांकन अध्ययन की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।

प्राथमिक शिक्षा का नवीकरण

वर्ष 1985-86 में इस विभाग की गतिविधियों का महत्वपूर्ण पहलू था प्राथमिक शिक्षा की प्रासंगिकता और गुणात्मक सुधार के लिए पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों का नवीकरण। इसके अतिरिक्त सहायक गतिविधियों जैसे पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता संबंधी पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों के विकास की भी चल रही परियोजनाओं के अन्तर्गत जारी रखा गया।

प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या नवीकरण (पी०ई०सी०आर०)

यूनीसेफ सहायता-प्राप्त चल रही परियोजना "प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या नवीकरण (पी०ई०सी०आर०)" के अधीन विभिन्न समूहों के बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप प्राथमिक शिक्षा-पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों के नवीकरण को जारी रखा गया। इस वर्ष इस परियोजना को 17 राज्यों व 6 संघशासित क्षेत्रों में कार्यान्वित किया गया। बहुसंख्यक राज्यों ने कक्षा 5 में नई अनुदेशी सामग्रियों को लागू किया, कुछ राज्यों ने कक्षा 4 तक और शेष ने कक्षा 3 तक। जिन राज्यों ने नई अनुदेशी सामग्रियों को इस वर्ष कक्षा 5 में लागू किया वे संभवतः अपना कार्य 1986 के अंत तक पूरा कर देंगे जबकि कुछ राज्यों में परियोजना 1988-89 तक जारी रखी जाएगी। इस परियोजना के अधीन विकसित की गई पाठ्यचर्याओं और अनुदेशी सामग्रियों को अनेक राज्यों ने राज्य शैक्षिक प्रणाली में व्यापक रूप से अनुप्राणित करने हेतु कई पग उठाए हैं। कुछ राज्यों जैसे गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, सिक्किम और तमिलनाडु और संघशासित क्षेत्रों जैसे लक्षद्वीप और मिज़ोरम ने प्राथमिक स्कूलों में पी०ई०सी०आर० परियोजना के अधीन विकसित की गई कुछ सामग्रियों को अपना लिया है। हिमाचल प्रदेश और राजस्थान में पी०ई०सी०आर० परियोजना के तहत विकसित पाठ्यचर्या को आधार मानकर प्राथमिक स्तर की पाठ्यचर्याओं को संशोधित किया गया है। इस परियोजना के अन्तर्गत विकसित की गई अनुदेशी सामग्रियों को इन राज्यों ने ग्रहण कर लिया है। इस परियोजना में सहभागी सभी राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में काफी बड़ी संख्या में अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों और शैक्षिक प्रशासकों को विकासात्मक पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों की क्रियाविधि में प्रशिक्षित किया गया। केंद्रीय स्तर पर इस परियोजना के कार्यान्वयन में सम्मिलित राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में कर्मचारियों के लिए दो अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किये गये। 52 परियोजना कर्मचारी इन कार्यक्रमों में शामिल हुए। इसके अतिरिक्त राज्यों/संघशासित क्षेत्रों द्वारा विकसित की गई अनुदेशी सामग्रियों की पाण्डुलिपियों की समीक्षा के लिए इस विभाग ने 9 कार्यशालाएं/ बैठकें आयोजित कीं और प्रकाशन के लिए उन्हें अंतिम रूप दिया।

शिष्य-सीख की विशेषता और नामांकन और निरोध के संदर्भ में पी०ई०सी०आर० परियोजना के प्रभाव को मूल्यांकित करने के लिए "नामांकन, निरोध, निष्क्रियता और शिष्य उपलब्धि का एक अध्ययन"

परियोजना में सहभागी राज्यों में सम्पन्न किया गया। अध्ययन के अन्तर्गत कक्षा 1 से 4 में पढ़ाई कर रहे बच्चे गये। परियोजना स्कूलों के विद्यार्थियों तथा वे बच्चे जो साथ के परियोजना-रहित स्कूलों के हैं, दोनों की उपलब्धि का एक तुलनात्मक अध्ययन किया गया। अध्ययन के लिए तैयार किये गये टेस्ट परियोजना स्कूलों तथा साथ ही चुने हुए परियोजनारहित स्कूलों के बच्चों को दिये गये। इस परियोजना के अन्तर्गत संकलित आंकड़े वर्तमान वर्ष में संसाधित और विश्लेषित किये गये। यह अध्ययन 1986 के अंत तक पूरा हो जाने की आशा है।

पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता (एन०एच०ई०ई०एस०)

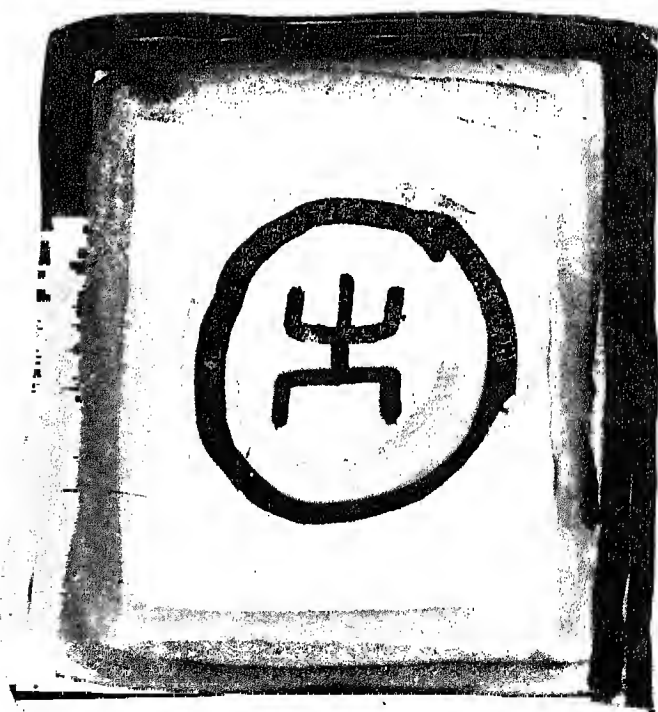
यूनीसेफ सहायता-प्राप्त चालू परियोजना "पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता" (एन०एच०ई०ई०एस०) के तहत प्राथमिक स्कूल बच्चों, अध्यापकों और स्कूल से बाहर की लड़कियों और महिलाओं के लिए पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता पर पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों के विकास से संबंधित गतिविधियां जारी रखी गईं। वर्ष 1985-86 में इस परियोजना को 9 राज्यों तथा एक संघशासित क्षेत्र में कार्यान्वित किया गया। इस परियोजना के कार्यान्वयन में प्रत्येक राज्य/संघशासित क्षेत्र के 100 प्राथमिक स्कूलों को सम्मिलित किया गया। वर्ष 1985-86 में परियोजना स्कूलों के अध्यापकों को एन० एच० ई० ई० एस० पाठ्यविवरण और अनुदेशी सामग्रियों में अभिविन्यस्त करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित की गई। इस परियोजना के अधीन अनुदेशी

सामग्रियां और प्रशिक्षण पैकेज विकसित करने के लिए अनेक कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इस परियोजना में सहभागी बहुत से राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में 1-5 कक्षाओं की अनुदेशी सामग्रियों के विकास/प्रशिक्षण पैकेजों संबंधी गतिविधियां सम्पन्न की गईं। द्वार-द्वार समुदाय सम्पर्क कार्यक्रम द्वारा समुदाय के सदस्यों को पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता संबंधी संदेश देने के लिए एक समान योजना बनाई गई। कुछ राज्यों में समुदाय सम्पर्क कार्यक्रम सम्पन्न किये गये और परियोजना एन०एच०ई०ई०एस० के अधीन विकसित पाठ्यचर्याओं और अनुदेशी सामग्रियों को राज्य प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में अनुप्राणित करने के लिए कई कारवाइयां शुरू की गईं।

अन्य गतिविधियां

इस विभाग ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रतिपादन के सन्दर्भ में प्रारंभिक शिक्षा पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की। तीन-दिवसीय संगोष्ठी अक्टूबर 31 से नवम्बर 2, 1986 तक शिलांग, मेघालय में आयोजित की गई। संगोष्ठी में 66 सहभागी उपस्थित थे।

इस विभाग ने भूटान के एक यूनेस्को सदस्य को नौ-मासीय अनुरक्ति कार्यक्रम में प्रशिक्षित किया और इण्डोनेशिया के दो यूनेस्को सदस्यों को एक दूसरे एक-मासीय अनुरक्ति कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित किया।



स्कूल स्तर पर पाठ्यचर्या के प्रतिपादन और कार्यान्वयन से संबंधित अनुसंधान एवं प्रायोगिक अध्ययन, पाठ्यविवरणों, समाजविज्ञान व मानविकी से संबंधित विभिन्न विषय क्षेत्रों की पाठ्यपुस्तकें व अन्य अनुदेशी सामग्रियों का विकास, अध्यापक शिक्षकों, अध्यापकों और स्कूल स्तर पर पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन में लगे अन्य कर्मिकों का प्रशिक्षण तथा राज्य/संघशासित क्षेत्र स्तर के अभिकरणों व संस्थाओं के सहयोग से विस्तार एवं प्रसार गतिविधियों का आयोजन समाजविज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग (डी०ई०एस० एस०एच०) की मुख्य गतिविधियों में से कुछ हैं। विभाग कुछ विशेष परियोजनाओं के कार्यान्वयन में संलग्न रहा है और राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना के कार्यान्वयन के लिए केन्द्रीय तकनीकी, समन्वयकारी और अनुवीक्षण करने वाले अभिकरण के रूप में काम आ रहा है।

इस वर्ष में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि एलबम तैयार करना एवं उसका उत्पादन पूरा करना रहा है। इस एलबम में दृश्य सामग्रियां व प्रलेख हैं जो छोटे बच्चों के मध्य भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष संबंधी जागृति को प्रोन्नत करने में परिषद् के प्रयास के रूप में भारत के स्वतंत्रतासंग्राम को उजागर करते हैं।

विभाग का दूसरा महत्वपूर्ण योगदान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 से सम्बद्ध प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा विकसित करना रहा है। मुख्य विशेषताएं निम्न प्रकार हैं।

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचे का विकास

स्कूली शिक्षा के लिए एक नया ढांचा विकसित करने की दृष्टि से एन०सी०ई०आर०टी० में 1985 के शुरू में एक आंतरिक अभ्यास किया गया जिसकी बदौलत राष्ट्रीय संगोष्ठी में चर्चाओं के लिए अनेक मामलों को पहचाना गया और फिर दिल्ली में मई 27-30, 1985 को यह संगोष्ठी सम्पन्न की गई। राष्ट्रीय संगोष्ठी की तात्कालिक अनुवर्ती कार्यवाही के रूप में पाठ्यचर्या चिंताओं वाली चार क्षेत्रीय संगोष्ठियां कलकत्ता, मद्रास, पुणे और उदयपुर में आयोजित की गईं। स्कूली शिक्षा के विभिन्न पक्षों पर बहुत से लाभकारी दृष्टिकोण और व्यावहारिक सुझाव एकत्रित किये गये। दूसरी राष्ट्रीय संगोष्ठी में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के प्रारूप को अंतिम रूप दिया गया।

इन संगोष्ठियों का विशिष्ट ध्येय राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यचर्या विषयक संयोजन करना था। कुछ मामलों जिनपर विभिन्न जगहों पर चर्चा की गई, वे इस प्रकार हैं:

- सामान्य शिक्षा की अवधि
- विकल्पी पाठ्यक्रमों की वांछनीयता अथवा प्रतिकूलता
- संगोष्ठी प्रणाली
- पाठ्यक्रमों का वर्षक्रम से बंटवारा
- समान कोर पाठ्यचर्या
- पाठ्यचर्या व्यवस्था के प्रति एकीकृत दृष्टिकोण
- विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्रों का स्थान व विस्तार
- पाठ्यचर्या सम्पादन व शिष्य मूल्यांकन

विस्तृत चर्चाओं के उपरान्त विभिन्न पाठ्यचर्या मामलों पर सर्वसम्मति से फैसला किया गया और इन पाठ्यचर्या मामलों को एक दृष्टिकोण लेख के विकास के लिए एक नये पाठ्यचर्या ढांचे के लिए इस्तेमाल किया गया।

2. पाठ्यविवरण विकास

राष्ट्रीय पाठ्यविवरण विकास के अभ्यास के समान विभिन्न स्कूल विषयों में संशोधित पाठ्यविवरणों को विकसित करने के प्रयास किये गये। योग में कक्षा 6 से कक्षा 10 तक के पाठ्यविवरण का प्रारूप और संस्कृत में कक्षा 5 से कक्षा 10 तक एक संशोधित पाठ्यविवरण विकसित किया गया।

3. अनुदेशी सामग्रियों का विकास

पाठ्यपुस्तकों, सम्पूरक पाठशालाओं और दूसरी अनुदेशी सामग्रियों का विकास इस विभाग की प्रमुख गतिविधियों में से एक गतिविधि के रूप में जारी रही। पाठ्य और अनुदेशी सामग्रियों के विवरण निम्न प्रकार हैं:

विषय	शीर्षक	कक्षा	अभ्युक्तिता
हिन्दी	काव्य संचयन भाग— II 12 वीं (मातृभाषा के रूप में)	काव्य संचयन भाग— II (इलेक्ट्रिक कोर्स)	सी.बी.एस.ई. द्वारा 1986-87 में विहित की जानी है।
	गद्य संचयन भाग— II (इलेक्ट्रिक कोर्स)		
	अभिनव काव्य भारती (कोर कोर्स)		
	अभिनव गद्य भारती		

विषय	शीर्षक	कक्षा	अभ्युक्तियां
	(कोर कोर्स) संक्षिप्त इतिहास (कोर कोर्स)		
हिन्दी	अरुण भारती भाग- III तीसरी		अरुण भारती भाग IV
द्वितीय	वर्कबुक अरुण भारती		का प्रारूप भी विकसित
भाषा के	भाग- III		किया गया है।
रूप में)	हिन्दी टैक्स्टबुक फार		
	नवोदय विद्यालय	छठी	
अंग्रेजी	सप्लीमेंट्री रीडर इन	12 वीं	सी.बी.एस.ई.कोर्स
	इंग्लिश (कोर कोर्स)		
	लेट अस एनरिच आवर		12 और पुस्तिकाओं की
	इंग्लिश (शृंखला में दो		पाण्डुलिपियों को
	पुस्तिकाएं)		विकसित करवाया गया।
संस्कृत	संस्कृत गद्य मंदाकिनी	12 वीं	सी.बी.एस.ई.कोर्स
	टीचर्स गाइड्स फार	पांचवीं से	
	संस्कृत टैक्स्टबुक	सातवीं	
	“स्वस्ति”		
उर्दू	टैक्स्टबुक आफ उर्दू	चौथी	
	फार क्लास 4		
राजनीति	इंडियन कांस्टीट्यूशन	11 वीं व	
विज्ञान	एंड गवर्नमेंट	12 वीं	
भूगोल	फिजीकल ज्योग्राफी		
	भौतिक भूगोल		
अर्थशास्त्र	इवेल्युएशन आफ	9 वीं	हमारी अर्थव्यवस्था
	इंडियन एकनोमी	10 वीं	संबंधी एक परिचय।
	भारतीय अर्थव्यवस्था		राष्ट्रीय आय लेखाविज्ञान
	प्रवेशिक सांख्यिकी		आर्थिक सिद्धांत संबंधी
			परिचय
	एलीमेंट्री स्टेटिस्टिक्स		(प्रकाशनार्थ प्रेषित)
जनसंख्या	टास्कस एंड चैलेंजेस	—	सामान्य पाठमाला
शिक्षा	पापुलेशन अवेयरनेस		
	टैक्स्ट		
	इंडिया: माई चिल्ड्रन	—	जनसंख्या स्थितियां
	माई फ्यूचर		संबंधी बाल-चित्रों
			का एलबम

उपर्युक्त अनुदेशी सामग्रियों के अतिरिक्त हिन्दी में तीन लिखाई पुस्तकों का एक सेट, संस्कृत श्लोकों के आदर्श पाठों के टेप तथा संस्कृत-पढ़ाई के चार्ट भी विकसित किये गये। परिषद् ने छात्र संस्कृत कोश,

संस्कृत में सम्पूर्ण पाठमाला (सुभाषिताओं का संकलन) और 12 स्तर के राजनीतिक विचारकों के लिए संक्षिप्त जीवनी-रूपरेखाओं (115 राजनीतिक विचारक पहचाने जा चुके हैं) के विकास-कार्य को भी हाथ में लिया है।

भारत-स्वतंत्रता संघर्ष: दृश्य एवं सामग्रियां

एक बृहत् प्रकाशन “भारत-स्वतंत्रता संघर्ष : दृश्य एवं प्रलेख” दिसम्बर 1985 में प्रकाशित किया गया। इस प्रकाशन में 82 दृश्य पैनेल हैं जो सारे काल और स्वतंत्रता-संघर्ष के विभिन्न पहलुओं और साथ ही पृष्ठभूमि के रूप में भारत पर ब्रिटिश की विजय की प्रक्रिया को समा लेते हैं। विभिन्न प्रकार के अधिकृत दृश्य, समकालीन समाचार कतरनों सहित, दृश्य पैनेलों में प्रयुक्त किये गये हैं। हरेक दृश्य पैनेल के अनुरूप एक प्रलेख पृष्ठ है जिसके लिए विभिन्न समकालीन स्रोत सामग्रियां इस्तेमाल की गई हैं।

4. अध्यापकों का प्रशिक्षण एवं अभिविन्यास कार्यक्रम

(क) अल्पसंख्यक स्कूलों के अंग्रेजी के अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

विभाग ने शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े हुए विभिन्न राज्यों के अल्पसंख्यक स्कूलों के हाई स्कूल/उच्चतर स्कूल स्तर के अंग्रेजी के अध्यापकों के लिए एक सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया। विभाग द्वारा विकसित की गई सामग्रियां और पद्धतियां सहभागियों को स्पष्ट की गईं और अंग्रेजी शिक्षण के दृष्टिकोण से इन स्कूलों की विशेष समस्याओं पर चर्चा की गई।

(ख) हिन्दी में अभिविन्यास कार्यक्रम

रांची के अध्यापक प्रशिक्षण कालेज में छोटा नागपुर खंड के मूल आदिवासी अध्यापकों के लिए हिन्दी में एक अध्यापक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्र के अध्यापकों ने भाग लिया।

(ग) अरुणाचल प्रदेश के मूल व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

डी०ई०एस०एस०एस०के अंग्रेजी संकाय ने अरुणाचल प्रदेश के मूल व्यक्तियों के लिए एक सप्ताह का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में 37 अध्यापकों और शिक्षा अधिकारियों ने भाग लिया। डी०ई०एस०एस०एस०के द्वारा अरुणाचल प्रदेश के लिए तैयार किये गये अंग्रेजी में क्लास- I के किट पर चर्चा हुई और इन सामग्रियों को प्रयोग में लाने की विधियों और प्रविधियों को स्पष्ट किया गया।

(घ) नैतिक शिक्षा में अभिविन्यास कार्यक्रम

24 से 26 अक्टूबर, 1985 को पणजी में एस०आई०ई०, गोआ में एक नैतिक शिक्षा का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। संघशासित क्षेत्र गोआ के 35 अध्यापकों ने इसमें भाग लिया। चर्चित किये गये मामले बच्चों के सामाजिक, मानसिक, नैतिक और भावात्मक विकास से संबंधित थे।

(इ) कला अध्यापक शिविर

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, उड़ीसा, कटक, डी०पी०आई०टी०, उड़ीसा, भुवनेश्वर, के सहयोग से विभाग ने 21-30 नवम्बर, 85 को बी०के०कालेज आफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स, भुवनेश्वर में एक कला अध्यापक शिविर आयोजित किया। उड़ीसा के सभी भागों से लगभग 60 कला अध्यापकों ने तथा अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं व शैक्षिक संस्थाओं से संबंधित कुछ अनुभवी कला अध्यापकों ने कई गतिविधियों जैसे कलाओं की प्रविधियों और रूपों तथा प्रायोगिक कला गतिविधियों से संबंधित व्याख्यानों, विवादों, प्रदर्शनों आदि में भाग लिया।

(घ) प्रौढ़ शिक्षा के पर्यवेक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

समाज कल्याण पंचायत निदेशालय, मध्यप्रदेश सरकार, के सहयोग से विभाग ने 7 से 11 जून, 1985 को जबलपुर में मध्यप्रदेश शासन में कार्य कर रहे प्रौढ़ शिक्षा पर्यवेक्षकों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम का ध्येय यह था कि मध्यप्रदेश राज्य में प्रयुक्त की जा रही एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा विकसित शिक्षण अधिगम सामग्रियों के आगामी प्रयोग के लिए सहभागियों को अभिविन्यास किया जाए। प्रौढ़ शिक्षा के तीनों अंगों जागृति, साक्षरता और कार्यात्मकता के अतिरिक्त अन्य अनेक पहलुओं पर चर्चा की गई। प्रायोगिक कार्य, ग्रामीण प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों का धमण और प्रदर्शन भी किये गये। कुल मिलाकर 30 पर्यवेक्षक, अधिकतर महिलाएं, पांच स्रोत व्यक्तियों सहित इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

(छ) प्रौढ़ शिक्षा क्षेत्र में कार्य कर रही महिला पर्यवेक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

समाज कल्याण पंचायत निदेशालय (म०प्र०) के सहयोग से समाजविज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग ने एक अभिविन्यास कार्यक्रम पवारखेड़ा (होशंगाबाद) में 9-15 सितम्बर, 1985 को आयोजित किया। परिपक्व द्वारा तैयार मध्यप्रदेश राज्य के प्रयोगार्थ अनुदेशी सामग्रियों के आगामी प्रयोग के लिए अभी हाल में नियुक्त महिला पर्यवेक्षकों को अभिविन्यास किया गया। प्रभावी शिक्षण हेतु सहभागियों ने शिक्षण सहायक सामग्रियां तैयार कीं और उन्हें ग्रामीण प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में प्रशिक्षित किया। कुल मिलाकर 30 सहभागी, जिनमें तीन स्रोत व्यक्ति थे, कार्यक्रम में हाज़िर थे।

5. विशेष परियोजनाएं

यह विभाग समाजविज्ञान और मानविकी क्षेत्रों में कुछ विशेष परियोजनाओं में संलग्न है। 1985-86 में निम्नलिखित परियोजनाओं के 24 अधीन कई गतिविधियां सम्पन्न की गईं।

बाल साहित्य संबंधी 23 वीं राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता

(क) यह प्रतियोगिता हर दो वर्षों के बाद आयोजित की जाती है। बाल साहित्य संबंधी 23 वीं राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता 1984-85 में आयोजित की गई। दो आयुवर्गों 5-8 और 9-15 वर्ष से देश की 17 भाषाओं में प्रविष्टियां आमंत्रित की गई थीं। लगभग 412 प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। पुरस्कार 36 थे लेकिन प्राप्त प्रविष्टियों में से केवल 21 को चुना जा सका। नकद पुरस्कार केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री कृष्ण चंद्र पंत ने 30 मई 1985 को एक समारोह में वितरित किये। अगली प्रतियोगिता 1986-87 में की जानी है।

(ख) सीखने के लिए पढ़ना

इस परियोजना के अन्तर्गत अभी तक 10 पुस्तकें अंग्रेजी में और 20 पुस्तकें हिन्दी में तैयार की जा चुकी हैं। लक्ष्य यह है कि इन पुस्तकों और इसी शृंखला की अन्य पुस्तकों के माध्यम से बच्चों के मध्य मनोरंजन और सूचना ग्रहण करने की दृष्टि से पढ़ने की अभिरुचि जागृत की जा सके।

अब तक 31 पुस्तकें, जिनमें छोटे बच्चों और 11-14 आयुवर्ग के बच्चों की पुस्तकें शामिल हैं, तैयार की जा चुकी हैं, उन्हें अंतिम रूप दिया जा चुका है और प्रेस को भेज दिया गया है।

(ग) भाषा और भाषा शिक्षण में पाठमाला-अंग्रेजी में विषयवस्तु संवर्धन सामग्रियां

इस शृंखला में विभाग... 4 पुस्तकें निकालने जा रहा है। बुक-1 "रीडिंग कम्प्रोहेन्शन" पर प्रकाशित की जा चुकी है। ये पुस्तकें अंग्रेजी के अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों को सम्बोधित हैं तथा इनका लक्ष्य अभ्यासकर्ता अध्यापक की व्यावसायिक प्रोन्नति में योगदान एवं अध्यापक निर्माण में विषयवस्तु संबंध प्रदान करना है।

(घ) विषयवस्तु व क्रियाविधि पाठ्यविवरण

बी०एड० के लिए एक अंग्रेजी विषय वस्तु व क्रियाविधि पाठ्यविवरण विकसित किया गया है जो एन०सी०टी०ई० पाठ्यविवरण के ढांचे में ठीक बैठता है।

(ङ) स्कूली पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन

विभाग राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से स्कूली पुस्तकों के लिए नमूना सर्वेक्षण करता है, इसके लिए वह परिष्कृत उपकरणों को विकसित करता है और राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत करने हेतु अनुसंधान कर्मचारियों और पाठ्यपुस्तक लेखकों को प्रशिक्षण प्रदान करता है। राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से इतिहास और भाषाओं की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन का कार्य बहुत से राज्यों में पूरा किया जा चुका है। मूल्यांकन कार्य को विस्तृत कर और विषयों जिनमें भूगोल, नागरिक शास्त्र, राजनीतिविज्ञान और समाजशास्त्र शामिल हैं, में किया जाएगा। इसीलिए इन विषयों की पाठ्यपुस्तकों के

मूल्यांकन के मानकों और उपकरणों को विकसित किया गया है और उन्हें राज्यों को भेज दिया गया है ताकि वे मूल्यांकन कार्य हाथ में ले सकें।

(घ) अंग्रेजी में बहुसंचार परियोजना

अंग्रेजी में बहुसंचार परियोजना की रचना इस दृष्टि से की गई है कि अंग्रेजी में छात्रों की वास्तविक उपलब्धियों और अपेक्षित लक्ष्यों के मध्य की शून्यता को भरा जा सके। कार्यक्रम के प्रथम चरण में ब्रिज कोर्स बुक्लेट्स (8) जिनका शीर्षक "लेट्स एनरिच आवर इंग्लिश" —

- (I) माध्यमिक स्कूल में प्रवेश पाने वालों के लिए, तथा
- (II) सेवापूर्व अध्यापकों के लिए विकसित की गई है।

(छ) अनुप्रयुक्त अनुसंधान

विभाग अपनी आवश्यकता तथा इस मकसद के लिए उपलब्ध मानव संसाधनों की सीमाओं को दृष्टिगत रखते हुए अनुप्रयुक्त अनुसंधान करता

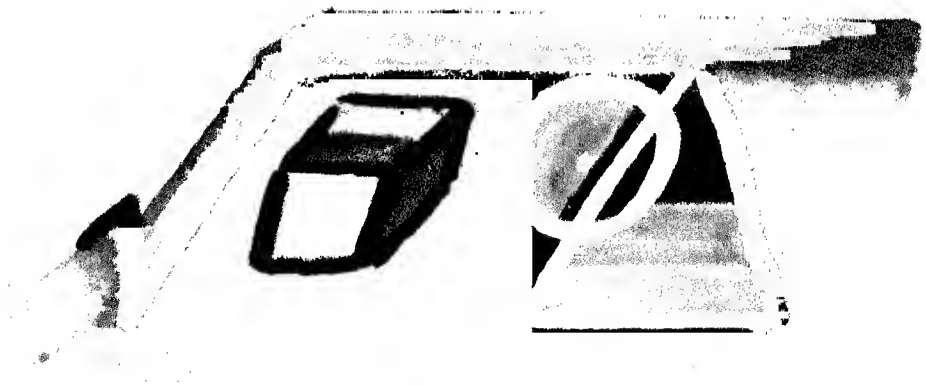
आ रहा है। ये अनुसंधान प्रायः विभिन्न राज्यों और संघशासित क्षेत्रों के स्कूलों में विभिन्न विषयों की स्थिति तथा शिक्षण के लिए प्रयुक्त अनुदेशी सामग्रियों और विधियों के सर्वेक्षण का रूप धारण कर लेते हैं।

6. परामर्श

"नव जीवन" जोकि अशिक्षित प्रौढ़ों के लिए मौलिक साक्षरता कौशलों का शिक्षण देने संबंधी अनुदेशी सामग्रियों का एक सेट है, का एक नया संस्करण तैयार करने हेतु मध्यप्रदेश राज्य के प्राधिकारियों को परामर्श प्रदान किया गया। ये सामग्रियां मूलतः डी०ई०एस०एस०एच० के स्टाफ ने मध्यप्रदेश के विशेषज्ञों के सहयोग से विकसित की थीं। ये मध्यप्रदेश के सभी प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में प्रयुक्त की जा रही हैं।

एस०आई०ई०, सिविकम, को भी प्रौढ़ शिक्षा क्षेत्र में परामर्श प्रदान किया गया।

•



विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभागा (डी.ई.एस.एम.) के लिए स्कूल स्तर पर विज्ञान एवं गणित की शिक्षा के गुणात्मक सुधार एक मुख्य चिन्ता का विषय है। डी.ई.एस.एम. निरंतर कई गतिविधियों में संलग्न है: पाठ्यचर्या संबंधी सामग्रियों का विकास, अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकों का प्रशिक्षण, विज्ञान एवं गणित शिक्षा संबंधी अनुसंधान और विस्तार गतिविधियाँ। यह "स्कूलों में संगणक साक्षरता एवं अध्ययन" (सी.एल.ए.एस.एस) परियोजना के कार्यान्वयन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर समन्वयकारी व अनुवीक्षण अभिकरण के रूप में तथा अखिल भारतीय विज्ञान शिक्षा परियोजना (ए.आई.एस.ई.पी.) और अखिल भारतीय गणित शिक्षा के लिए नोडल अभिकरण के रूप में कार्य करता है। यह विभाग विभिन्न राज्यों को पाठ्यविवरणों के संशोधन में तथा विज्ञान व गणित में पाठ्य सामग्रियों को तैयार करने में सहायता देता आ रहा है और अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों को विज्ञान व गणित शिक्षा के विभिन्न पक्षों पर प्रशिक्षित करने के लिए संस्थाओं और संगठनों की सहायता देता आ रहा है। वर्तमान वर्ष में डी.ई.एस.एम. द्वारा सम्पन्न की गई महत्वपूर्ण गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं :

1. अनुसंधान

डी.ई.एस.एम. द्वारा विकसित कम मूल्य वाला मरकरी बैरोमीटर आई.एस.आई. से अनुमोदित हो चुका है। डी.ई.एस.एम. "व्यक्तिगत रूप से मार्गदर्शित पद्धति माध्यम" (आई.जी.एस.आई.) नामक परियोजना के साथ प्रयोग जारी रखे हुए है और यह परियोजना माध्यमिक व उच्च माध्यमिक, दोनों स्तरों पर सभी विज्ञान विषयों और साथ ही साथ गणित तक फैला दी गई है। सी.एम.सी. हैदराबाद के सहयोग से विभाग ने देशज साफ्टवेयर को विकसित करने का काम हाथ में ले लिया है। प्रो. डी.एस. कोठारी तथा अन्य प्रसिद्ध वैज्ञानिकों और गणितज्ञों के मार्गदर्शन में एक परियोजना गणित प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने विषयक आवश्यक साधन जुटाने हेतु निर्मित की जा रही है।

2. प्रशिक्षण/अभिविन्यास पाठ्यक्रम

विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग ने प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजन हेतु तथा तत्संबंधी अनुवर्ती कार्रवाई के लिए असम, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और जम्मू व काश्मीर राज्यों के साथ मिलकर काम किया। इस विभाग ने

निम्नलिखित आठ पाठ्यक्रम विज्ञान अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकों के लिए आयोजित किये जो नीचे सारणी में दिए हुए हैं :

सं.	पाठ्यक्रम	अवधि	स्थान	पाठ्यक्रम सहभागियों समन्वयकर्ता की संख्या
1.	ए.आई.एस.ई.पी. के अधीन अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकों के चयन हेतु संगोष्ठी व साक्षात्कार	13-15/5/85	एन.सी.ई.आर.टी.	प्रो. छोटन सिंह 49
2.	ए.आई.एस.ई.पी. की प्रशिक्षणोत्तर कार्यशालाएं	22-31/7/85 4-14/8/85	उदयपुर हैदराबाद	" " 90
3.	ए.आई.एम.ई.पी. के अधीन यू.के. से लौटे अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकों के लिए अनुवर्ती कार्यशाला	12-24/8/85	कलकत्ता	श्री जी. एस. बदरिया 53
4.	ए.आई.एस.ई.पी. सदस्यों को प्रस्थान-पूर्व संक्षिप्ति देना	1-3/10/85	एन.सी.ई.आर.टी.	प्रो. छोटन सिंह 20
5.	अल्पसंख्यक अध्यापक कार्यक्रम	20-29/5/85	" "	प्रो. आर. एन. माथुर 23
6.	अल्पसंख्यक स्कूल अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	15-24/7/85	" "	" " 44
7.	+ 2 स्तर के हिमाचल प्रदेश के गणित व विज्ञान अध्यापकों का अभिविन्यास कार्यक्रम	15 दिन फरवरी -मार्च, 1986	शिमला	एफ.ए. (एन. सी.ई.आर.टी.) एच.पी. और डी.ई.एस.एम. के अधिकारी 81

सं.	पाठ्यक्रम	अवधि	स्थान	पाठ्यक्रम सहभागियों समन्वयकर्ता की संख्या
8.	डी.ई.एस.एम. का टैलीस्कोप प्रयुक्त करते हुए विज्ञान अध्यापकों का अभिविन्यास कार्यक्रम	8-1-86 से 11/1/86	एन.सी.ई. आर.टी. कुल	57 417

3. पाठ्यचर्या-सम्बद्ध तथा अन्य संबंधित अनुदेशी सामग्रियों का विकास

विज्ञान व गणित शिक्षा विभाग ने केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल (सी.बी.एस.ई.) द्वारा तैयार की गई 9 वीं व 10 वीं कक्षाओं की भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान और गणित की पाठ्यपुस्तकों की पाण्डुलिपियों को अंतिम रूप देने के लिए अनेक कार्यशालाएं आयोजित कीं। विभिन्न विषयों की 9 वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तकों से सम्बद्ध अध्यापक मार्गदर्शिकाओं तथा टेस्ट-विषयवस्तु के विकास के लिए भी कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

ऐसी विकसित की गई कुछ सामग्रियों को मुद्रित कर दिया गया है और इन्हें सारे देश के स्कूलों में प्रयुक्त किया जा रहा है तथा इनमें से कुछ को लक्ष्य-समूहों में प्रसारार्थ छपे/साइक्लोस्टाइल रूप में संसाधित किया जा रहा है।

इन कार्यशालाओं में सी.बी.एस.ई. विषय संयोजक और पाठ्यपुस्तकों के लेखकों की टीम को भी आमंत्रित किया गया। 9 वीं और 10 वीं कक्षाओं के वर्तमान पाठ्यविवरणों की समीक्षा करने के लिए अलीगढ़ में भारतीय भौतिकी अध्यापक संस्था (आई.ए.पी.टी.) के सहयोग से एक दूसरी कार्यशाला आयोजित की गई। संस्था के सदस्यों के रूप में इस कार्यशाला में 10 राज्यों के विज्ञान अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया। दूसरे विषयों के पाठ्यविवरणों को परखने के लिए भी ऐसी ही कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

क्लास परियोजना के अधीन दूसरे अभिकरणों द्वारा विकसित किये गये साफ्टवेयर पैकेजों की समीक्षा के लिए कई बैठकें की गईं। अनेक चुने हुए पैकेजों की प्रतिलिपियाँ बनवाकर स्कूलों को भेजी भी जा चुकी हैं।

उपर्युक्त गतिविधियों से संबंधित अन्य विवरण सारणी में दिये गये हैं।

उपर्युक्त गतिविधियों के अतिरिक्त, अलीगढ़ में जुलाई, 1985 में 9 वीं कक्षा की भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान और गणित की पाठ्यपुस्तकों के संशोधन के लिए चार कार्यशालाएं, हर विषय में एक, आयोजित की गईं। कक्षा 10 वीं की पुस्तकों के लिए विज्ञान और गणित हेतु समीक्षा समिति की बैठक भी आयोजित की गई। इस विभाग द्वारा जो अन्य विकासात्मक

1985-86 में आयोजित बैठकें/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं/सम्मेलन/कार्यदल और विकास कार्यक्रम

सं.	कार्यक्रम	अवधि	स्थान	सहभागियों की संख्या
1.	वैयक्तिक मार्गदर्शित शिक्षा प्रणाली	25-4-85 से 27-4-85	एन.सी.ई. आर.टी.	25
2.	रसायन उपसमिति बैठक	15-4-85	" "	8
3.	10 वीं कक्षा की गणित पाठ्यपुस्तक के विकास के लिए विषय विशेषज्ञ समिति बैठक	29-4-85	" "	3
4.	पाण्डुलिपि के अध्यापकों को विकसित/अंतिम रूप देने के लिए भौतिकी विशेषज्ञ समिति	2-5-85	" "	2
5.	गणित में 10 वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक तैयार करने के लिए लेखकों की बैठक	23/5/85 से 25/5/85	" "	9
6.	10 वीं कक्षा की पाठ्य-पुस्तक भौतिकी भाग- 1 हेतु अध्यापक मार्ग-दर्शिका का तैयार करना	12/6/85 से 21/6/85	" "	13
7.	10 वीं कक्षा के लिए रसायन में परिष्करण व पाठालोचन सामग्रियों हेतु राष्ट्रीय कार्यशाला	27-6-85 से 29-6-85	एन.सी.ई.आर.टी.	26
8.	कक्षा- 1 से 12 वीं चरण- 1 के लिए भौतिकी में पाठ्य-विवरणों का विकास	24-6-85 से 29-6-85	अलीगढ़	31
9.	कक्षा 10 वीं की गणित की प्रारूप-पाण्डुलिपि को अंतिम रूप देने के लिए राष्ट्रीय संगोष्ठी व कार्यशाला	28-6-85 से 1-7-85	एन.सी.ई.आर.टी.	39
10.	जीवविज्ञान में कक्षा 10	15-7-85	एन.सी.ई.आर.टी.	27

सं.	कार्यक्रम	अवधि	स्थान	सहभागियों की संख्या
	वी की पाठ्यपुस्तक का विकासपरिष्करण व पाठलोचन सामग्री को अंतिम रूप देने के लिए राष्ट्रीय कार्यशाला	से 17-7-85		
11.	भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान और गणित की पाण्डुलिपि के विकास के लिए कार्यक्रम	3/7/85	" "	6
12.	वैयक्तिक मार्गदर्शित शिक्षा-प्रणाली	15-7-85 से 19-7-85	उज्जैन	40
13.	माध्यमिक स्कूलों के लिए भौतिकी भाग- 2 की पाठ्यपुस्तकों की प्रारूप-पाण्डुलिपि की समीक्षा	19-8-85 से 24-8-85	एन.सी.ई.आर.टी.	25
14.	9 वीं कक्षा के लिए जीवविज्ञान में नई पाठ्यपुस्तिका हेतु अध्यापक मार्गदर्शिका का विकास	26-8-85 से 4-9-85	" "	32
15.	कक्षा- 1 से 12 वीं के लिए गणित में एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यविवरण के विकास की कार्यशाला	10-9-85 से 18-9-85	एन.सी.ई.आर.टी.	24
16.	9 वीं कक्षा के लिए गणित में यथार्थता आधारित टैस्ट-विषयों को तैयार करना।	11-9-85 से 16-9-85	दार्जिलिंग	32
17.	9 वीं कक्षा की जीव-विज्ञान की पाठ्यपुस्तक के लिए टैस्ट-विषयों को विकसित करने संबंधी कार्यशाला।	11-9-85 से 16-9-85	एन.सी.ई.आर.टी.	23
18.	गणित ओलंपियाड	18-9-85 से 20-9-85	" "	12

सं.	कार्यक्रम	अवधि	स्थान	सहभागियों की संख्या
19.	कक्षा 10 वीं की भौतिकी पाठ्यपुस्तक भाग- 2 को अंतिम रूप देना।	4-10-85	" "	08
20.	वैयक्तिक मार्गदर्शित शिक्षा-प्रणाली	3-10-85 से 11-10-85	स्प्रिंगडेल्स स्कूल, दिल्ली	45
21.	कक्षा 9 वीं की जीव-विज्ञान पाठ्यपुस्तक के लिए अध्यापक मार्गदर्शिका का परिष्कृत सम्पादन	15-10-85 से 18-10-85	एन.सी.ई.आर.टी.	3
22.	कक्षा 1 से 12 वीं के लिए विज्ञान/रसायन में पाठ्यविवरणों का विकास	28-10-85 से 1-11-85	" "	36
23.	उच्च माध्यमिक स्तर के लिए रसायन में नये प्रायोगिक पाठ्यक्रम पर आधारित प्रयोगशाला दीपिका व प्रायोगिक शीटों का विकास।	3-12-85 से 7-12-85	जादवपुर	28
24.	10 वीं कक्षा की नई पाठ्यपुस्तक रसायन के लिए अध्यापक मार्गदर्शिका का विकास	19-12-85 से 24-12-85	बम्बई	27
25.	पर्यावरण शिक्षा/परिस्थिति विज्ञान संबंधी	16-12-85 से 21-12-85	उदयपुर	40
		27-12-85 से 1-1-86	एन.सी.ई.आर.टी.	11
26.	10 वीं कक्षा के लिए पाठ्यपुस्तक का विकास -जीवविज्ञान का सम्पादन (हिंदी रूपांतर)	14-1-86 से 18-1-86	एन.सी.ई.आर.टी.	1
27.	10 वीं कक्षा के लिए गणित की पाठ्यपुस्तक	17-1-86 से 19-1-86	" "	4
28.	+2 स्तर पर गणित में पूरक सामग्री का तैयार करना।	28-1-86 से 1-2-86	जलपायगुरी	24

सं.	कार्यक्रम	अवधि	स्थान	सहभागियों की संख्या	सं.	कार्यक्रम	अवधि	स्थान	सहभागियों की संख्या
29.	वैयक्तिक मार्गदर्शित शिक्षा प्रणाली (आई.जी.एस.आई.)	28-1-86 से 31-1-86	धारवाड़	85	38.	कक्षा-1 से ग्यारहवीं के लिए गणित, भौतिकी, रसायन और जीवविज्ञान में पाठ्यविवरणों को अंतिम रूप देना।	3-3-86 से 6-3-86	एन.सी.ई.आर.टी.	55
30.	9 वीं कक्षा के लिए गणित में अध्यापक मार्गदर्शिका का विकास	10-2-86 से 14-2-86	एन.सी.ई.आर.टी.	18	39.	स्कूल गणित के लिए अनुप्रयोग माइक्रो को तैयार करना	17-3-86 से 21-3-86	" "	12
31.	विज्ञान संबंधी राज्यों की आवश्यकताओं की पहचान	10-2-86 से 12-2-86	" "	40	40.	"स्कूल साइंस" पत्रिका की विषयवस्तु और दृष्टिकोण में सुधार	17-3-86 से 19-3-86	" "	9
32.	9 वीं कक्षा के लिए भौतिकी भाग-1 में टैस्ट-विषयों का विकास	10-2-86 से 14-2-86	" "	24	41.	वैयक्तिक मार्गदर्शित शिक्षा प्रणाली (आई.जी.एस.आई.)	31-3-86 से 2-4-86	" "	58
33.	मिडिल कक्षाओं के लिए बीजगणित में संवर्धन सामग्री का विकास	17-2-86 से 21-2-86	हैदराबाद	18	42.	विक्लांग बच्चों को विज्ञान पढ़ाना	21-3-86 से 24-3-86	अलीगढ़	17
34.	वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर रसायन के नये विषयों पर माइक्रो का विकास	17-2-86 से	एन.सी.ई.आर.टी.	12	43.	कक्षा 10 वीं (नई पाठ्य-पुस्तक) के लिए रसायन में टैस्ट-विषयों का विकास	31-3-86 से 5-4-86	कोयम्बटूर	27
35.	रसायन में छोट और संवर्धन सामग्रियों का विकास	24-2-86 से 1-3-86	गुडगांव	28				कुल	1079
36.	विज्ञान संबंधी कार्यदल की बैठक	17-2-86	एन.सी.ई.आर.टी.	9					
37.	वृद्ध 10- दिवसीय अध्यापक अभिविन्यास कार्यक्रम-11 के लिए विज्ञान में हैडबुकों का विकास	11-3-86 से 20-3-86	दिल्ली	23					

गतिविधियां हाथ में ली गईं, उनमें 10 वीं कक्षा की गणित पाठ्यपुस्तकों की उपर्युक्त हिंदी पाण्डुलिपि को अंतिम रूप देने के साथ-साथ 10 वीं कक्षा के लिए रसायन और विज्ञान क्लब गतिविधियों में अनुसंबंधी संरचनाओं को दर्शाते हुए तीन-आयामी माडलों का विकास और भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान और गणित की पाठ्यपुस्तकों को विकसित करना शामिल है।

4. प्रसार और परामर्श

विभाग ने अखिल भारतीय विज्ञान शिक्षा परियोजना (ए.आई.एस.ई.पी.)

के तहत यू.के. में प्रशिक्षण हेतु भेजने के लिए पश्चिमी बंगाल, असम और जम्मू व कश्मीर से सदस्यों के चयन हेतु संगोष्ठी व साक्षात्कार आयोजित किया। कुल मिलाकर क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों से 20 सदस्य चुने गये, छः (भौतिकी, रसायन और जीवविज्ञान में दो-दो) तीन राज्यों से छः-छः और दो (भौतिक विज्ञानों और जैव विज्ञानों में एक-एक)।

14 वीं राष्ट्रीय बालक विज्ञान प्रदर्शनी, उदयपुर में नवम्बर, 1985 में आयोजित की गई। विभिन्न राज्यों के लगभग 400 विद्यार्थियों ने इसमें भाग लिया। माननीय श्री जानी जैल सिंह, भारत के राष्ट्रपति, ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी का मुख्य लक्ष्य था विकास में देशज प्रौद्योगिकी। देश के सभी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों (लक्षद्वीप को छोड़कर) से विद्यार्थी

प्रदर्शनी हेतु प्रदर्शित की जानेवाली सामग्रियां लाए। 20 हजार से अधिक लोगों ने प्रतिदिन प्रदर्शनी देखी।

विभाग ने वर्तमान वर्ष में अनेक संगोष्ठियां आयोजित कीं। प्रो. रीटर कैली, प्रिन्सिपल कालेज, साउथम्पटन विश्वविद्यालय, यू.के., डा. अशोक खोसला, विकासात्मक विकल्प, नई दिल्ली और डा. एम. चक्रवर्ती, महाराष्ट्र विज्ञान अकादमी, पुणे, ने इन संगोष्ठियों में वक्तव्य दिए। डी.ई.एस.एम. ने नई शिक्षा नीति तथा साथ-ही-साथ पाठ्यचर्या के प्रति नये दृष्टिकोण से सम्बद्ध क्षेत्रीय और साथ-ही-साथ राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सक्रिय भाग लिया।

विभाग के संकाय सदस्यों ने भी विभिन्न राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया। निम्नलिखित सारणी विभाग द्वारा वर्ष 1985-86 में प्रदान की गई परामर्श सेवा की सूचना प्रदान करता है।

वर्ष 1985-86 में डी.ई.एस.एम. द्वारा प्रदान की गई परामर्श सेवा का विवरण

क्र.सं. परामर्श सेवा चाहने वाली संस्था परामर्श सेवा का उद्देश्य

- युनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय, शिक्षण विकास-प्राथमिक स्तर विज्ञान शिक्षा संबंधी बैठक अधिकतम सामग्रियां-हेतु क्षेत्रीय कार्यशाला।
- एन.आई.ई.पी.ए. समन्वित योजना और औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा के मध्य सम्मिलन-सुभीते के रूप में-राष्ट्रीय कार्यशाला।
- केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड रसायन पाठ्यक्रम समिति का सदस्य
- ए.म.यू., उत्तर प्रदेश शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े हुए अल्पसंख्यक संमुदाय स्कूलों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित करना
- एस.आई.एस.ई., मध्य प्रदेश -वही-
- एन.सी.ई.आर.टी.कृत पाठ्यचर्या पर कार्य कर रहा स्कूल और राज्य शिक्षा संस्थान।
 - कुछ संकल्पना क्षेत्रों का स्पष्टीकरण
 - नये नवोत्पादी प्रक्रियाओं के प्रति स्कूलों को प्रभावित करना
 - अध्यापकों का प्रशिक्षण

5. प्रकाशन

विभाग ने विज्ञान शिक्षा से संबंधित अनेक नये शीर्षक प्रकाशित किये हैं, जिनके विवरण निम्न सारणी में दिये गये हैं:

क्र.सं. शीर्षक

प्रकाशन मास प्रकाशित की गई प्रतियों की संख्या

- रसायन-भाग II, माध्यमिक स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तक अप्रैल, 1986
- प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों व पर्यवेक्षकों के सेवा-दौरान प्रशिक्षण के लिए पर्यावरणीय शिक्षा माइयूल 1985
- भारत में पर्यावरणीय शिक्षा में शिक्षण व प्रशिक्षण (लेखक: एन.एम. भागिया और बी.डी. अवेय) -एन.ई.ई.पी.ए. द्वारा आयोजित संगोष्ठी के लिए लेख। 1985
- पर्यावरणीय शिक्षा और प्राथमिक अध्यापकों की भूमिका मार्च, 1986 (प्राथमिक अध्यापकों के लिए लेख) दिसंबर
- रसायन शिक्षण संबंधी यूनेस्को पुस्तक (योगदान प्रदान किये जाने वाले लेखकों में से एक) नवम्बर
- रसायन के विभिन्न क्षेत्रों में छः माइयूल:
 - माइयूल आरचीटैचर
 - वि. चेजेज एराउन्ड-हो एंड वाई?
 - बाउंडलेस केसेट
 - कैमिकल वेयर-हाउस
 - विजिबल साइफ एंड इनविजिबल लेबोरेटरी
 - इनएक्टिवल ल्यूसीफर
- रसायन-कक्षा 10 वीं की पाठ्यपुस्तक मार्च, 86 2 लाख
- मौलिक जीवविज्ञान-भाग-1, खंड-1 फरवरी, 86 1 लाख
- मौलिक जीवविज्ञान-भाग-1, खंड-2 अक्टूबर, 86 1.4 लाख
- आधारिक जीव विज्ञान भाग-1, खंड-1 मई, 1985 1.6 लाख
- आधारिक जीव विज्ञान भाग-1, खंड-2 दिसम्बर, 85 1.4 लाख
- सरकुलर मोशन अप्रैल, 85 2000 प्रतियां
- रिजिड बाडीरोटेशन मई, 85 " "
- काइनेटिक थ्योरी आफ गैसिज 1 -वही- " "
- काइनेटिक थ्योरी आफ गैसिज 11 -वही- " "
- थर्मोडायनेमिक्स 1 अप्रैल, 85 " "
- इलेक्ट्रीसिटी 1 मई, 85 " "
- इलेक्ट्री मैगनेटिज्म मई, 85 " "
- एप्लाइड इलेक्ट्रोमैगनेटिज्म अगस्त, 85 " "

6. स्कूलों के लिए विज्ञान उपस्कर

कार्यशाला विभाग (डब्ल्यू.डी.) विज्ञान शिक्षा में अनुसंधान, प्रोटोटाइप उपस्कर और किटों के बैच-निर्माण, शिक्षार्थियों, राज्यों व संघशासित क्षेत्रों के कार्मिकों, यूनेस्को और विदेशों के सदस्यों के प्रशिक्षण, प्रयोगशाला उपस्कर, कार्यालय उपस्कर, मोटरकारों, ग्रीष्म व शीतकालिक उपस्कर की केंद्रीय मरम्मत व रखरखाव, केंद्रीय खरीद-उपस्कर व फरनीचर भंडार-वितरण, में लगा हुआ है। स्टाफ के सदस्यों को कई अनुभागों में लगाया गया है जैसे यंत्रालय विकास, प्लास्टिक, बैल्टिंग, फिटिंग और शीट धातु, संधानशाला और गर्म धातु, चित्रकला, विद्युतलेपन, प्रकाश-विज्ञान, दस्तकारी, एकत्रण व प्रेषण, रखरखाव, इलेक्ट्रानिकी, खरीद, भंडारण और कार्यालय।

7. अनुसंधान व विकास गतिविधियां

कार्यशाला विभाग की अनुसंधान व विकास गतिविधियों में समाविष्ट थीं:

- नये उपस्कर की रचना करना
- पाठ्यचर्या में परिवर्तन के साथ पूर्व रूपांतरों का परिष्करण
- निर्माण के लिए उपकरणों की रचना करना।
- प्रोटोटाइप उत्पादन
- परीक्षण
- अंतिम रूपरेखा
- उपस्कर के प्रयोग को दर्शाते हुए किट मैनुअल का विकास
- राज्यों के साथ कार्य करते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम व संगोष्ठियां

सभी देशज पुर्जों के साथ कम मूल्य वाले शिरोपरि प्रोजेक्टर के डिजाइन में और परिष्करण इसलिए किया गया ताकि इसकी ज्वलन शक्ति और इसे ठीक से प्रयोग में लाने की सुविधाओं को बढ़ाया जा सके। एक औद्योगिक प्रोटोटाइप भी विकसित किया गया और उसे विभिन्न राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनियों में प्रदर्शित किया गया।

समीक्षा समिति द्वारा सुझाये गये परिवर्तनों को दो वर्ष पूर्व विकसित किये गये विज्ञान क्लब किट की रचना में कार्यान्वित किया गया है। नये डिजाइन के औद्योगिक प्रोटोटाइप निकाल दिये गये हैं। राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी सलाहकार समिति की सिफारिश के आधार पर एक मिनी उपकरण किट अभी हाल ही में विकसित किया गया है। स्कूली बच्चों के हल्के कार्य समय के कौशल को विकसित करने के लिए यह विशेष रूप से रचा गया है, 32 मिनी हस्त उपकरणों और उपभोग्यो वाले सेट के किट की कीमत लगभग 90 रुपये होगी। विभिन्न इलैक्ट्रानिक घटकों की पहचान हेतु उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए इलैक्ट्रानिक अवयवों से युक्त एक प्रदर्शन बोर्ड विकसित किया गया है। कम मूल्य का बैरोमीटर निकालने, टैलीस्कोप की मरम्मत व समायोजन के लिए तथा द्रव्यों में आणविक व्यवस्था

दर्शाते हुए माडलों को रूप देने संबंधी कार्यों में यह विभाग डी.ई.एस.एम. के साथ मिलकर काम करता आ रहा है।

8. प्रसार

सूचना प्रौद्योगिकी में अभी हाल के विकासों की सूचनाओं को आधुनिकतम करते हुए दो लेख सभी वरिष्ठ संकाय सदस्यों को प्रेषित किये गये। हर 2/3 मास में कम-से-कम एक लेख प्रकाशित करके यह श्रृंखला जारी रखी जाएगी। दूसरी बातों के अलावा इस पुस्तक में मिडिलस्तर पर विज्ञान की कुल गतिविधियों और किट-आइटमों के आधार पर प्रयोग स्थापित करने संबंधी प्रक्रिया भी दी गई है। "शिक्षा की चुनौती" प्रलेख में दिये गये अनेक प्रासंगिक विषयों पर, जैसे आई.आई.टी. नई दिल्ली में की गई इंजीनियरी शिक्षा नीति संबंधी राष्ट्रीय संगोष्ठी, एन.सी.ई.आर.टी. में की गई व्यावसायिक शिक्षा की राष्ट्रीय संगोष्ठी, आई.आई.टी., नई दिल्ली में किया गया उच्चतर शिक्षा में नई प्रौद्योगिकियों संबंधी सम्मेलन, आई.आई.टी. नई दिल्ली में की गई कम्प्यूटर सहायता शिक्षा की राष्ट्रीय संगोष्ठी, आई, आई, टी, नई दिल्ली में की गई प्राविधिक शिक्षा के गुण-निर्देशकों की पहचान संबंधी राष्ट्रीय कार्यशाला और रुड़की विश्वविद्यालय में किया गया स्कूल निर्माण डिजाइन संबंधी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, कई मंचों पर की गई चर्चाओं में इस विभाग ने अपना योगदान दिया।

इस विभाग ने उदयपुर में राष्ट्रीय बालक विज्ञान प्रदर्शनी में एन.सी.ई.आर.टी. की गतिविधियों से संबंधित प्रदर्शनी सामग्रियां तैयार की और उन्हें दर्शाया। इसी प्रदर्शनी को पुनः दो बार—एक एन.आई.ई. कैम्पस में और फिर बाद में विज्ञान भवन में दिखाया गया। दो माडल स्कूलों को फरनीचर से सज्जित करने तथा विज्ञान शिक्षण हेतु उपस्कर करने संबंधी प्राविधिक विशेषज्ञता प्रदान की जा रही है।

9. बैचों में उत्पादन

इस विभाग को राज्यों/संघशासित क्षेत्रों से स्कूलों की मांगें पूरी करने के लिए अनुरोध प्राप्त हुए। एक वाणिज्यिक तंत्र के अभाव में मध्यम दर्जे का उत्पादन हाथ में लिया गया है। किटों की कीमत मध्यम दर्जे की "बिना लाभ बिना हानि" आधार पर रखी गई है।

पूर्व वर्षों की भांति प्राथमिक विज्ञान किटों और विज्ञान क्लब किटों का उत्पादन जारी रखा गया। 3749 प्राथमिक विज्ञान किट बनाए गये और उन्हें मध्य प्रदेश को प्रेषित किया गया। इस प्रेषण के साथ मध्यप्रदेश क अनीपचारिक केंद्रों की कुल 7000 किटों की मांग पूरी कर दी गई। इसके अतिरिक्त विज्ञान क्लब गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर और एस.आई.एस.ई.—जबलपुर को 40-40 विज्ञान क्लब किट दिये गये।

10. प्रशिक्षण

इस विभाग ने छः आई.टी.आई. शिक्षार्थियों को विभिन्न व्यवसायों में प्रशिक्षण देना जारी रखा। इस विभाग ने राज्यों में विज्ञान क्लब गतिविधियों संबंधी स्रोत व्यक्तियों के लिए डी.ई.एस.एम. के साथ मिलकर एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। राज्यों के दो विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में स्टाफ के दो सदस्यों ने स्रोत व्यक्तियों के रूप में कार्य किया।

कैम्पस में प्रस्तावित राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र की गतिविधियों के घटक के रूप में इस विभाग ने उपकरणों के प्रयोग तथा स्थानीय बच्चों के लिए प्रयोग स्थापित करने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों को जगह प्रदान की। अफगानिस्तान से आये यूनेस्को सदस्यों को तीन सप्ताहों के लिए डिजाइन के विभिन्न पहलुओं और विज्ञान उपस्कर के उत्पादन के लिए प्रशिक्षित किया गया।

इस विभाग ने स्कूल स्तर पर इलैक्ट्रॉनिकी जागरूकता विषयक एक राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की जिसमें डी.ई.एस.एम. और शिक्षा व्यावसायीकरण के संकाय के अतिरिक्त विभिन्न राज्यसरकारों और एस.सी.ई.आर.टी. के प्रतिनिधियों व विशेषज्ञों ने भाग लिया।

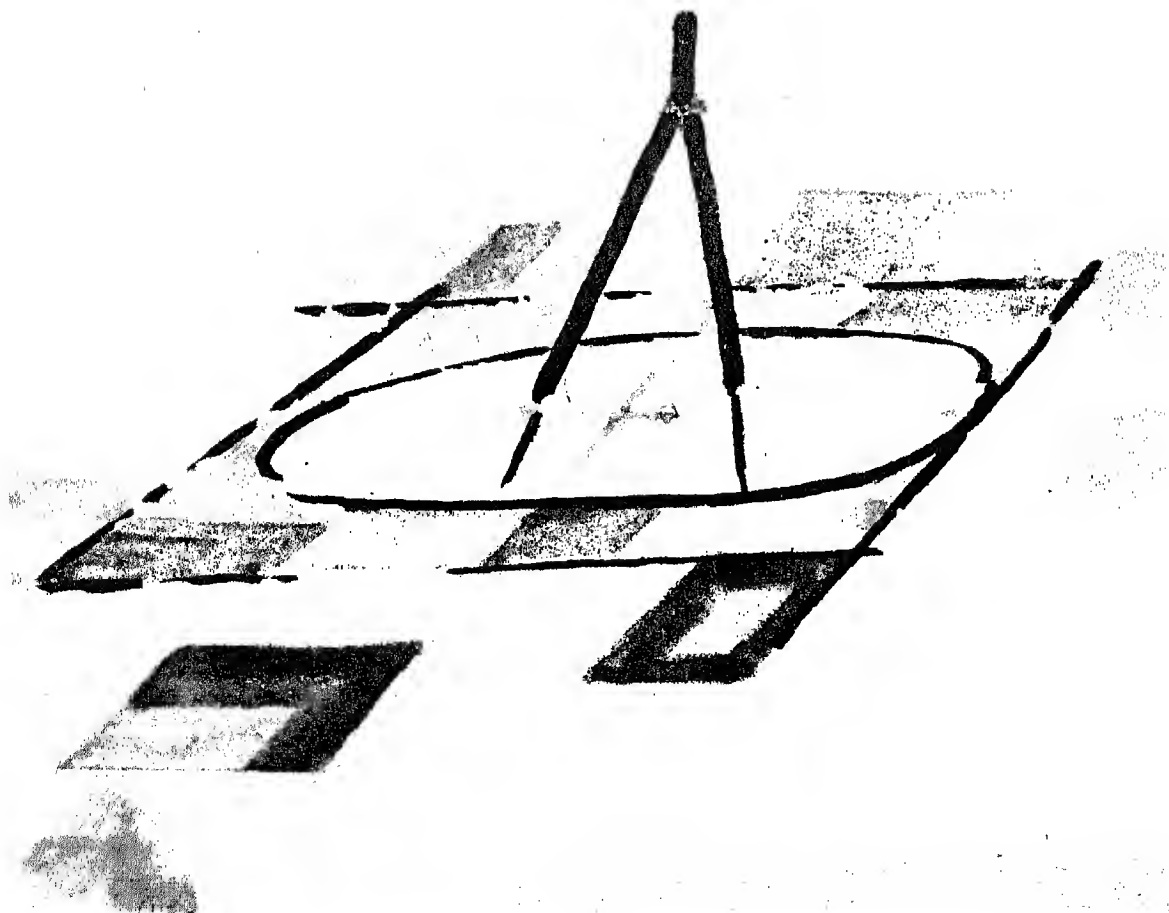
11. अध्ययन यात्राएं

सोवियत संघ के शिष्टमंडल ने इस विभाग का भ्रमण किया और इसकी

गतिविधियों का अध्ययन किया। गतिविधियों का अध्ययन करने तथा भारत में अपने तकनीकी कर्मियों की प्रशिक्षण की संभावना का पता लगाने के लिए और स्कूल विज्ञान उपस्कर की रचना, विकास और उत्पादन में विशेषज्ञता बांटने हेतु बंगलादेश से एक उच्चस्तरीय 4 सदस्य वाला शिष्टमंडल एक सप्ताह के लिए यहां आया था। इथोपिया के एक शिष्टमंडल ने इस विभाग का भ्रमण किया और विज्ञान उपस्कर के विकास का अध्ययन किया। शिक्षा मंत्रालय, कीनिया सरकार, के एक शिष्टमंडल ने इस कार्यशाला विभाग का भ्रमण किया और उन्हें स्कूल विज्ञान किटों का एक सेट भेंट किया गया। इन्डो-एफ.आर.जी. सहायता प्राप्त परियोजना के अन्तर्गत मिडिल स्कूल विज्ञान किट और प्राथमिक विज्ञान किट की रचना, विकास और उत्पादन के लिए एक जर्मन विशेषज्ञ श्री वाकर वीसर इस विभाग में आए हुए हैं।

12. मरम्मत, रखरखाव, प्रापण और भंडारण गतिविधियां

सभी कैम्पस विभागों के लिए केन्द्रीकृत प्रापण, फरनीचर व उपस्कर, भंडारण इस विभाग द्वारा देखे जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त यह कैम्पस में सभी गाड़ियों, गर्म और सर्द मौसम उपस्कर, विद्युत और इलैक्ट्रॉनिक गैजेटों आदि की मरम्मत व रखरखाव का काम भी देख रहा है। कैम्पस को सुन्दर बनाने की दिशा में भी यह महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।



राज्यों को आवश्यक अकादमिक निवेश प्रदान करना शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग (डी.वी.ई.) का बहुमुखी दायित्व है और यह विभाग इस कार्य को देश में स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर उच्चतर माध्यमिक शिक्षा तथा समाजीय लाभकारी उत्पाद कार्य व्यावसायीकरण (एस.यू.पी.डब्ल्यू.) नामक द्विकार्य वाली अभिविन्यस्त शिक्षा योजनाओं के माध्यम से सम्पन्न करता है। चूंकि यह दोनों योजनाएं भारतीय शिक्षा जगत में अपेक्षाकृत नई हैं और कार्यान्वित कर रहे राज्यों के पास अनुभव, संकल्पना, स्पष्टता और आवश्यक तैयारी की कमी है। इसलिए डी.वी.ई. द्वारा प्रदत्त अकादमिक निवेश, जिसमें मार्गदर्शन भी शामिल है, प्रचलित स्थिति में एक खास स्थान रखते हैं। इस प्रकार आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुरूप डी.वी.ई. द्वारा हाथ में ली गई प्रत्येक गतिविधि एक सुविचारित और सतर्क दृष्टिकोण की अपेक्षा रखती है। इस विभाग के मुख्य कार्यों में शामिल हैं: —

- व्यावसायिक अध्यापकों के लिए अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम
- राज्य कर्मचारियों तथा-आधार व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम
- अनुदेशी-पाठ्यचर्या संबंधी सामग्री का विकास
- विभिन्न संगठनों को परामर्श सेवा, और
- प्रकाशन व प्रसार

1. प्रशिक्षण

व्यावसायिक अध्यापकों को अपने-अपने व्यवसायों में ज्ञान व विशेषज्ञता को अद्यतन करने के लिए वर्ष 1985-86 में इस विभाग में चार अल्पकालिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये। अध्यापकों के आवश्यक व्यावसायिक कौशल को विकसित करने के लिए विशिष्ट संस्थाओं में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये और विशिष्ट संस्थाओं की ही आधारिक संरचनात्मक सुविधाओं तथा विशेषज्ञता का उपयोग किया गया। सहभागियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम काफी लाभकारी रहे क्योंकि अध्यापकों को अपेक्षित सैद्धांतिक व व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने के अतिरिक्त प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान दिये गये लैक्चरों/प्रयोगों के आधार पर संकलित की गई संदर्भ पुस्तकें भी उन्हें दी गई।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के विवरण निम्न प्रकार हैं:—

1. उद्यान विज्ञान में व्यावसायिक अध्यापकों के लिए एक अल्पकालिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम बंगलौर में 14 मई

से 10 जून, 1985 तक आयोजित किया गया। इसमें 14 सहभागी उपस्थित थे।

2. शिक्षाशास्त्र में व्यावसायिक, वाणिज्य अध्यापकों के लिए एक अल्पकालिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पुणे में 16 मई से 30 मई, 1985 तक आयोजित किया गया। इसमें 36 सहभागी उपस्थित थे।
3. इलैक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी में एक अल्पकालिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम पुणे में 10 जून से 29 जून, 1985 में आयोजित किया गया। इसमें 20 सहभागी उपस्थित थे।
4. व्यावसायिक, वाणिज्य अध्यापकों के लिए एक अल्पकालिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम हैदराबाद में 17 जून से 30 जून, 1985 तक आयोजित किया गया। इसमें 30 सहभागी उपस्थित थे।

2. विस्तार

इस विभाग ने राज्य कर्मचारियों/प्रिंसीपलों/शिक्षा अधिकारियों/अन्यों के लिए शिक्षा के व्यावसायीकरण पर पांच अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किये और चार अभिविन्यास कार्यक्रम एस.यू.पी.डब्ल्यू. विषय पर देश के विभिन्न भागों में आयोजित किये गये जिनमें सहभागियों को योजनाओं के कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों व युक्तियों के चयन हेतु तैयार की गई संकल्पना, उद्देश्यों और वार्षिक योजनाओं में प्रशिक्षित किया गया। इनके अतिरिक्त चार अभिविन्यास कार्यक्रम एस.यू.पी.डब्ल्यू. पर आयोजित किये गये। इनका विवरण नीचे दिया जाता है:

शिक्षा का व्यावसायीकरण

1. उत्तर प्रदेश के राज्य कर्मचारियों/प्रिंसीपलों/शिक्षा अधिकारियों/अन्यों के लिए शिक्षा के व्यावसायीकरण पर अभिविन्यास कार्यक्रम इलाहाबाद में 9 अप्रैल से 21 अप्रैल, 1985 तक आयोजित किया गया।
2. उत्तर प्रदेश के कर्मचारियों के लिए शिक्षा व्यावसायीकरण पर अभिविन्यास कार्यक्रम मसूरी में 31 मई से 3 जून 1985 तक आयोजित किया गया।
3. संघशासित दिल्ली के राज्य कर्मचारियों और प्रिंसीपलों तथा गृह मंत्रालय द्वारा विशेष रूप से आमंत्रित 18 सदस्यों की

- स्रोत टीम के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम दिल्ली में 16 सितम्बर से 20 सितम्बर, 1985 में आयोजित किया गया।
- पांडिचेरी के राज्य अधिकारियों और आधार व्यक्तियों के लिए शिक्षा के व्यावसायीकरण पर अभिविन्यास कार्यक्रम पांडिचेरी में 14 अक्टूबर से 17 अक्टूबर 1985 तक आयोजित किया गया।
 - आन्ध्र प्रदेश के आधार व्यक्तियों के लिए शिक्षा व्यावसायीकरण पर हैदराबाद में अभिविन्यास कार्यक्रम 17 फरवरी से 20 फरवरी, 1986 तक आयोजित किया गया।

एस.यू.पी.डब्ल्यू.

- राजस्थान के आधार व्यक्तियों के लिए एस.यू.पी.डब्ल्यू. पर अभिविन्यास कार्यक्रम उदयपुर में 8 अगस्त से 9 अगस्त, 1985 तक आयोजित किया गया।
- हिमाचल प्रदेश के आधार व्यक्तियों के लिए एस.यू.पी.डब्ल्यू. और शिक्षा के व्यावसायीकरण पर अभिविन्यास कार्यक्रम शिमला में 9 सितम्बर से 12 सितम्बर, 1985 तक आयोजित किया गया।
- मणिपुर के आधार व्यक्तियों के लिए एस.यू.पी.डब्ल्यू. पर अभिविन्यास कार्यक्रम इम्फाल में 28 फरवरी से 3 मार्च, 1986 तक आयोजित किया गया।
- मध्यप्रदेश के आधार व्यक्तियों के लिए माध्यमिक स्तर पर एस.यू.पी.डब्ल्यू. पर अभिविन्यास कार्यक्रम जबलपुर में 10 मार्च से 14 मार्च, 1986 तक आयोजित किया गया।

संगोष्ठीयां/कार्यशालाएं

- एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 6 नवम्बर से 8 नवम्बर, 1985 तक शिक्षा के व्यावसायीकरण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई।
- एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 21 जनवरी से 23 जनवरी, 1986 तक व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का मूल्यांकन विषय पर संगोष्ठी व कार्यशाला आयोजित की गई।
- संसदीय परामर्शदात्री समिति के सदस्यों के लिए व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण पर संगोष्ठी एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 22 मार्च, 1986 को आयोजित की गई।

3. विकास

निम्नलिखित कारणों की वजह से वर्ष 1985-86 में डी.वी.ई. के कार्यक्रमों में विकासात्मक गतिविधियों की शीर्ष प्राथमिकता प्रदान दी गई:

- (i) व्यावसायिक विद्यार्थियों और अध्यापकों के पास उनकी

आवश्यकताओं के अनुरूप समुचित अनुदेशी सामग्रियां नहीं हैं।

- (ii) राज्यों में प्रचलित ज्यादातर व्यावसायिक कार्यक्रमों के पाठ्यविवरण में समुचित व्यावसायिक अभिविन्यास, उद्देश्यों की स्पष्टता तथा सिद्धांत व प्रयोग के सम्मिश्रण आदि का अभाव है, जिसकी वजह से वर्तमान पाठ्यविवरण के तात्कालिक संशोधन तथा व्यावसायिक कोर्सों के लिए क्षमता आधारित माडल पाठ्यविवरण के विकास की आवश्यकता है।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए डी.वी.ई. ने कार्यशालाओं की एक शृंखला आयोजित की (क) न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्याओं के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को विकसित करने के लिए (ख) स्वतः अनुदेशी व व्यावहारिक मैनुअल के विकास के लिए (ग) कार्यालय अभ्यास में प्रश्न बैंक के विकास के लिए। इन कार्यशालाओं में विषय विशेषज्ञों, सुविज्ञों, नया क्षेत्र अनुभव रखने वाले वृत्तिविदों, राज्य कर्मचारियों, रोजगार प्रदान करने वाली एजेंसियों के प्रतिनिधियों और व्यावसायिक अध्यापकों ने भाग लिया। यह महसूस किया गया कि एस.यू.पी.डब्ल्यू. संबंधी कार्यदल की सिफारिशों के अनुसार एस.यू.पी.डब्ल्यू. को पूर्व-व्यावसायिक झुकाव प्रदान किया जाए। अतः डी.वी.ई. ने एक विशेष कार्यशाला आयोजित की जिसमें खास व्यावसायिक अभिविन्यास के साथ कई एस.यू.पी.डब्ल्यू. पाठ्यक्रम विकसित किये गये। दूसरी कार्यशाला में राज्यों के लाभ के लिए एस.यू.पी.डब्ल्यू. के कार्यान्वयन के लिए कार्ययोजना बनाई गई। कार्यक्रमों के विवरणों को नीचे देखा जा सकता है:

शिक्षा का व्यावसायीकरण

- लखनऊ में 19 अगस्त से 25 अगस्त, 1985 तक कार्यालय अभ्यास में प्रश्न बैंक की रचना पर कार्यशाला आयोजित की गई।
- हिसार में 23 अगस्त से 28 अगस्त 1985 तक डेरी उद्योग में अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल के विकास पर कार्यशाला आयोजित की गई।
- बंगलौर में 21 नवम्बर से 25 नवम्बर, 1985 तक पौधरक्षण में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास पर कार्यशाला आयोजित की गई।
- मैसूर में 28 नवम्बर से 3 दिसम्बर, 1985 तक (चरण-I) तथा 8 दिसम्बर से 17 दिसम्बर 1985 तक (चरण-II) रेशम उत्पादन में अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
- कासरगोड में 13 दिसम्बर से 17 दिसम्बर, 1985 तक बागान फसलें और प्रबन्ध में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
- एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 6 जनवरी से 10 जनवरी, 1986 तक इलैक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी में न्यूनतम

क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।

7. एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 27 जनवरी से 31 जनवरी, 1986 को पर्यटन व यात्रा प्रविधि में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
8. बंगलूर में 8 फरवरी से 12 फरवरी, 1986 तक सहयोग, विक्रयकला और भंडार रक्षण में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
9. एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 10 फरवरी से 15 फरवरी, 1986 तक पैरामैडिकल एक्सरे टेक्नीशियन में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
10. मणिपाल में 24 फरवरी से 1 मार्च, 1986 तक चिकित्सा प्रयोगशाला में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
11. एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 10 मार्च से 15 मार्च, 1986 तक आयात/निर्यात प्रक्रियाओं और प्रलेखन में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
12. जे.एन.यू. नई दिल्ली में 17 मार्च से 21 मार्च, 1986 तक प्रोटोटाइप इलेक्ट्रॉनिक किट के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
13. एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 19 मार्च से 24 मार्च, 1986 तक मोटरगाड़ी सेवा में अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल की समीक्षा के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
14. एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 29 मार्च से 4 अप्रैल, 1986 तक भवन रखरखाव में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
15. आर.सी.ई. भोपाल में लेखा परीक्षण में प्रयोग करने संबंधी मार्गदर्शक पुस्तक के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।

एस.यू.पी.डब्ल्यू.

16. चण्डीगढ़ में 24 फरवरी से 28 फरवरी 1986 तक उत्तरी राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में एस.यू. पी.डब्ल्यू. कार्यक्रम के कार्यान्वयन संबंधी कार्ययोजनाओं को तैयार करने के लिए सम्मेलन व कार्यशाला आयोजित की गई।
17. एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 24 फरवरी से 28 फरवरी, 1986 तक एस.यू.पी.डब्ल्यू. ने उच्च प्राथमिक

और माध्यमिक-स्तर के लिए पूर्व-व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की।

18. असम में 18 मार्च से 22 मार्च, 1986 तक पूर्वी राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में एस.यू.पी.डब्ल्यू. कार्यक्रम के कार्यान्वयन संबंधी कार्ययोजनाएं तैयार करने हेतु कार्यशाला आयोजित की गई।

4. परामर्श सेवाएं

किये जा रहे कार्यों में से एक कार्य के रूप में डी.वी.ई. विभिन्न राज्य सरकारों तथा अन्य अभिकरणों को चर्चा बैठकों के रूप में, संगोष्ठियों व सम्मेलनों आदि में सहभागिता के रूप में परामर्श सेवाएं भी उपलब्ध कराता है। अप्रैल से दिसम्बर तक इस विभाग ने विभिन्न संगठनों को परामर्श सेवाएं प्रदान की जिनकी सूची नीचे दी गई है:

क.स.परामर्श लाभार्थी संगठन परामर्श का लक्ष्य

- | | |
|---|--|
| 1. एस.आई.ई. गंगटोक | एस.यू.पी.डब्ल्यू. पर कार्यशाला |
| 2. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार | (क) व्यावसायीकरण पर राष्ट्रीय कार्यदल की बैठक
(ख) डब्ल्यू.जी. के लिए रिपोर्ट तैयार करना |
| 3. युवा उद्यमियों की राष्ट्रीय मंत्री, नई दिल्ली | 17-6-1985 को हुई स्वतः रोजगार पर शिक्षा समिति बैठक। |
| 4. अनुप्रयुक्त मानववंशविज्ञान अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली | 13 जून से 19 जून, 1986 तक रोजगार और बेकारी से संबंधित संकल्पनाओं, मापन और नीति मामलों संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम |
| 5. बी.आई.टी.एस.पिलानी | उद्योगों, स्कूल संयोजनों से संबंधित शिक्षा के व्यवसायीकरण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी। |
| 6. हरियाणा राज्य शिक्षा व्यवसायीकरण परिषद्, चण्डीगढ़ | 28 जून 1986 को हुई व्यावसायिक शिक्षा विषयक एस.सी.बी.ई. की द्वितीय वार्षिक बैठक। |
| 7. नेशनल एन्टरप्रायोरशिप डेवलपमेंट बोर्ड, दिल्ली। | 11 जुलाई, 1985 को कार्यकारी समिति की बैठक। |
| 8. सी.बी.एस.ई. नई दिल्ली | वाणिज्य व अन्य पाठ्यक्रमों में पाठ्यक्रम समितियां। |
| 9. आर.सी.ई., भोपाल | एम.काम.एड पाठ्यविवरण को अंतिम रूप देना। |
| 10. बिहार सरकार | राज्य में शिक्षा के व्यावसायीकरण को लागू करने के लिए तैयारियों संबंधी बैठक। |
| 11. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार | स्कूलों में कंप्यूटर साक्षरता व अध्ययन परियोजना के तार्किक अनुसरण के रूप में +2 स्तर पर |

क्र.सं. परामर्शीलाभार्थी संगठन परामर्श का लक्ष्य

	कंप्यूटर विज्ञान को मुख्य विषय के रूप में लागू करने के लिए कंप्यूटर पाठ्यक्रम समिति।
12. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार	नई शिक्षा नीति का प्रतिपादन
13. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार	व्यावसायीकरण संबंधी शिक्षा मंत्री कार्यदल समूह की बैठक का सचिवालय।
14. एन.आई.ई.पी.ए.	अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रमों और संगोष्ठियों में स्रोत व्यक्ति प्रदान किये गये।
15. उत्तर प्रदेश सरकार	+ 2 स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को लागू करना।
16. मध्य प्रदेश सरकार	1986 में + 2 स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को लागू करने के लिए उच्चस्तरीय समिति।
17. टी.टी.टी.आई., चण्डीगढ़	टी.टी.टी.आई. द्वारा व्यावसायिक/तकनीकी शिक्षा पर अनेक संगोष्ठियां आयोजित की गई।
18. श्रम मंत्रालय (डी.जी.ई.टी.)	एन.सी.वी.टी. पर सदस्यता, वॉकेरियन प्रशिक्षण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी।
19. असम सरकार	शिक्षा का व्यावसायीकरण
20. हिमाचल प्रदेश सरकार	राज्य में शिक्षा के व्यावसायीकरण और एस.यू.पी.डब्ल्यू. कार्यान्वयन हेतु तैयारी।
21. दिल्ली प्रशासन	कक्षा 12 वीं के बाद व्यावसायिक विद्यार्थी को रखना।
22. हरियाणा सरकार	एस.यू.पी.डब्ल्यू. और व्यावसायिक शिक्षा में आधार व्यक्तियों का अभिविन्यास।
23. स्कूली शिक्षा बोर्ड, हरियाणा	वाणिज्य पाठ्यक्रमों में प्रश्न बनाना।
24. आई.आई.पी.ए., दिल्ली	संगोष्ठियों व कार्य, शिक्षा और रोजगार में सहभागिता।
25. अखिल भारतीय माध्यमिक अध्यापक संस्था, हैदराबाद	संगोष्ठी और राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सहभागिता।
26. योजना आयोग	व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण संबंधी संगोष्ठी
27. अनुप्रयुक्त मानवशक्ति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	1-3-86 को शिक्षा के व्यावसायीकरण पर संगोष्ठी की गई।
28. बिहार सरकार	व्यावसायिक पाठ्यक्रम लागू करने की तैयारी।

5. प्रकाशन

अप्रैल 1985 से मार्च, 1986 तक डी.वी.ई. द्वारा अपनी विकासात्मक और अन्य गतिविधियों के गहन प्रयासों के फलस्वरूप कई प्रकाशन निकाले जोकि न केवल व्यावसायिक विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए बहुत लाभकारी है बल्कि शैक्षिक नियोजकों और प्रशासकों के लिए भी लाभकारी है। इस प्रकार

निकाले गये प्रकाशन संबंधित ग्राहकों के प्रयोग के लिए आसानी से उपलब्ध है। विभाग द्वारा अनुदेशी सामग्रियां, प्रश्न बैंक, पूरक पाठमालाएं और अन्य पाठ्यचर्या संबंधी सामग्रियां प्रकाशित की जाती हैं। अप्रैल 1985 से मार्च 1986 तक विकसित किये गये प्रकाशन नीचे दिये गये हैं :

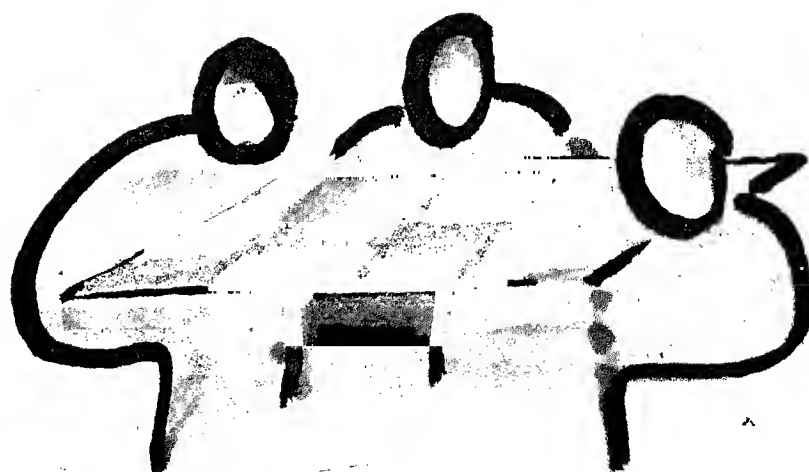
1. हाईस्कूल स्तर के लिए कार्य अनुभव के अधीन उदाहरणदर्शक पूर्व-व्यावसायिक पाठ्यक्रम (उच्च माध्यमिक स्तर के कुछ डब्ल्यू.ई. उदाहरणदर्शक सहित)
2. पाठ्यचर्या विकास और कार्यान्वयन के लिए स्कूली शिक्षा मार्गदर्शिकाओं में कार्य अनुभव।
3. संदर्भ पुस्तक-फल संस्कृति
4. संदर्भ पुस्तक- बागबानी संबंधी फसलों में प्रचार
5. अनुदेशी व प्रायोगिकी मैनुअल-डैरी पशु, प्रबन्ध
6. अनुदेशी व प्रायोगिकी मैनुअल-चारा उत्पादन, संरक्षण और खेती अपशेषों का पुनर्चक्र.
7. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल-चारे और चारे खिलाना।
8. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल-पशु, पुनरुत्पादन, कृत्रिम गर्भाधान
9. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल-दूध और दुग्ध उत्पाद
10. अनुदेशी व प्रायोगिकी मैनुअल-डैरी विस्तार और अर्थव्यवस्थाएं
11. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल-उद्यान विज्ञान
12. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल-रेशम कीड़ा, जीव विज्ञान और पालन पोषण।
13. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल-शहतूत और रेशम कीड़ा उपज संरक्षण।
14. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल-रेशम कीड़ा बीज उत्पादन प्रौद्योगिकी।
15. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल-रेशम सीलिंग, परीक्षण और कटाई।
16. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल-रेशम उत्पादन, विस्तार और प्रबंध।
17. लेखापरीक्षा में प्रयोग-1985-86
18. आशुटंकण व शिक्षण की विधियां व सामग्रियां।
19. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या-मुर्गी उत्पादन
20. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या-सूअर उत्पादन
21. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या-खेती यन्त्रकार
22. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या-कृषि रासायनिक
23. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या-पौधा संरक्षण

1985-86

24. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या—बागबानी
फसले और प्रबन्ध
25. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या—इलैक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी।

26. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या—पर्यटन
और पर्यटक मार्गदर्शिका (निर्माणाधीन)
27. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या—निर्यात
और आयात।

•



अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा एवं विस्तार सेवाएं

अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा एवं विस्तार सेवाएं विभाग (डी.टी.ई.एस.ई. ई.एस.) अध्यापक शिक्षा, महिला शिक्षा लाभवंचितों की शिक्षा और विशेष शिक्षा के क्षेत्रों में अनुसंधान व प्रायोगिक अध्ययन, शिक्षण सामग्री तैयार करने तथा प्रशिक्षण एवं विस्तार सेवाओं का काम करता आ रहा है। विभाग, अध्यापकों की अनुवर्ती शिक्षा केन्द्रों की गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिए नोडल अधिकरण के रूप में तथा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) के सचिवालय के रूप में भी काम करता है।

प्राथमिक व माध्यमिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में गुणात्मक सुधार करना विभाग की मुख्य चिन्ताओं में से एक है। विभाग की अन्य प्रमुख गतिविधियों में, अध्यापक प्रशिक्षुओं व अध्यापक शिक्षकों की अध्यापन क्षमता सुधारने की दिशा में निर्दिष्ट अनुसंधान व प्रायोगिक अध्ययन, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में संशोधन, अध्यापक शिक्षकों व अध्यापक प्रशिक्षुओं के लिए पाठ्यपुस्तक सामग्री व अन्य शिक्षण सामग्री तैयार करना और अध्यापक शिक्षकों व अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन में लगे अन्य व्यक्तियों का प्रशिक्षण शामिल है।

अनुसंधान

वर्ष 1985-86 में अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा, अनुसूचित/जनजाति शिक्षा और महिला शिक्षा के क्षेत्रों में डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस. द्वारा किये गये अनुसंधान अध्ययन नीचे दिये गये हैं :

अध्यापक शिक्षा

बी.एड. विद्यार्थियों के लिए मूल्य-अभिविन्यास से संबंधित अध्यापक शिक्षा, भारत में अध्यापकों की स्थिति, स्वतः संकल्पना अनुसूचित/जनजाति अध्यापक प्रशिक्षुओं के लिए समायोजन व उपलब्धि, माध्यमिक अध्यापक शिक्षा का राष्ट्रीय सर्वेक्षण और भारत में सेवा-दौरान शिक्षा का अध्ययन अर्थात् पांच अध्ययन हाथ में लिए गये। विभिन्न राज्यों में प्राथमिक अध्यापक शिक्षकों और माध्यमिक स्कूल अध्यापकों की सेवा-दौरान स्थिति संबंधी एक अनुसंधान अध्ययन इस वर्ष पूरा किया गया। चौदह राज्यों के एस.आई.ई.ज/एस.सी.ई.आर.टी.ज और शिक्षा कालेजों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर अध्ययन किया गया। कितने प्रकार और कितनी संख्या में कार्यक्रम

आयोजित किये गये, ग्राहकों व अध्यापकों की संख्या जो इस वर्ष शामिल थे, संबंधी आंकड़े, एकत्रित किये गये। अध्ययन की रिपोर्ट निर्माणाधीन/अन्य अनुसंधान अध्ययन पूरा होने की विभिन्न स्थितियों में हैं। चलते रहने वाली अनुसंधान परियोजनाएं नीचे दी गई हैं :

क्र.सं. परियोजना का शीर्षक

प्रधान जांचकर्ता

- | | |
|---|--------------------------------------|
| 1. बी.एड. विद्यार्थियों का मूल्य-अभिविन्यास | प्रो. एल.सी. सिंह |
| 2. भारत में अध्यापकों की स्थिति | डा. (श्रीमती) आर.के. चोपड़ा |
| 3. अनुसूचित जाति/जनजाति अध्यापक प्रशिक्षुओं की उपलब्धि के साथ स्वतः संकल्पना और समायोजन संबंधी अध्ययन | डा. (श्रीमती) आर.के. चोपड़ा |
| 4. भारत में माध्यमिक अध्यापक शिक्षा का चतुर्थ राष्ट्रीय सर्वेक्षण | प्रो. एस.सी. सिंह श्रीमती एन. समरवाल |

विशेष शिक्षा

विशेष शिक्षा क्षेत्र में विशेष शिक्षा में एक अनुसंधान-समीक्षा तैयार की गई है। इसमें डिप्लोमा, मास्टर डिग्रियों और डाक्टरेट स्तरों के 150 अध्ययन और त्रैच्छिक संस्थाओं द्वारा ली गई परियोजनाएं शामिल हैं। अध्ययन मुख्यतः समाजकार्य, मनोविज्ञान और शिक्षा विभागों और भारतीय संस्थानों समाज, बी.एम.मानसिक विकलांग संस्थान, राष्ट्रीय नेत्रहीन संस्था और ल्यूसब्रेल स्मारक संस्थान जैसी एजेंसियों से प्राप्त किये गये। समीक्षा ने सुनियोजित सहकारी अनुसंधान प्रयासों को उजागर किया। अनुवर्ती कार्रवाई और प्रसार गतिविधियों के रूप में, अनुसंधान प्रोन्नति पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली में, 8 जनवरी 11 जनवरी, 1986 तक आयोजित की गई। दो प्रमुख अनुसंधान परियोजनाएं-विकलांग और सहकारी अनुसंधान हेतु एकीकृत शिक्षा परियोजना के दो केस-अध्ययन, अशक्त एकीकरण बच्चों पर प्रभाव तथा क्लासरूम परिस्थितिकी व शिष्य उपलब्धि, नियोजित किये गये। आई.ई.डी.के. माध्यम से अनुसंधान की समीक्षा के जांचपरिणाम तथा कार्यशाला की सिफारिशें प्रसारित की गईं। ड्राप-आउट्स की अशक्तता स्थिति संबंधी दूसरा अध्ययन नियोजन की दृष्टि से खोजपरक था और वह प्रगति पर है।

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की शिक्षा

वर्ष 1985-86 में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति समूहों और जनजातीय बच्चों की शिक्षा से संबंधित चार अध्ययन जारी रखे गये। किये गये अध्ययनों में से एक की रिपोर्ट जिसका अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा और उनकी सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता के मध्य अन्तरसंबंध से है, को अंतिम रूप दिया जा रहा है। दूसरी दो परियोजनाओं की रिपोर्ट जिनका संबंध उत्तरप्रदेश की 10 वीं कक्षा के अनुसूचित जाति व अनानुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक अध्ययन और जनजातीय तथा अजनजातीय प्राथमिक स्कूलों के मध्य शारीरिक सुविधाओं के तुलनात्मक अध्ययन से है, निर्माणाधीन है। प्राथमिक स्तर के जनजातीय विद्यार्थियों के निष्पादन से संबंधित दूसरे अध्ययन की तैयारी की जा रही है। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की शिक्षा के क्षेत्र में जारी रहने वाली अनुसंधान परियोजनाएं निम्न हैं:

क्र.सं. परियोजना का शीर्षक

प्रधान जांचकर्ता

1. अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा और उनकी सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता के मध्य अन्तरसंबंध का अध्ययन श्री बी.पी. अवस्थी
2. उत्तर प्रदेश की 10 वीं कक्षा के अनुसूचित जाति तथा अनानुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का एक तुलनात्मक अध्ययन डा. बी.एस. गुप्ता
3. कमजोर और मजबूत बिन्दुओं के निर्धारण हेतु प्राथमिक स्तर के जनजातीय विद्यार्थियों का विषयवार निष्पादन डा. बी.एस. गुप्ता
4. जनजातीय और अजनजातीय प्राथमिक स्कूलों के मध्य शारीरिक सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन डा. एल.आर.एन. श्रीवास्तव

महिला शिक्षा

राज्यों द्वारा औपचारिक शिक्षा के लिए लड़कियों के नामांकन को बढ़ाने के लिए अपनाई गई विधियों और राज्यों में लड़कियों की अनौपचारिक शिक्षा के लिए अपनाई गई प्रक्रियाओं से संबंधित दो अध्ययन हाथ में लिए गये। पहले अध्ययन में लड़कियों के प्रारंभिक शिक्षा के सर्वोत्तम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मार्ग पहचाने गये। इसलिए तैयार किये गये मार्गदर्शक सिद्धांत राज्यों व संघशासित क्षेत्रों को भेजे गये। इस अध्ययन के संबंध में कुछ बिन्दुओं के स्पष्टीकरण और विचारों के परस्पर विनिमय के लिए एक द्विदिवसीय संगोष्ठी

चुने हुए अध्ययनों के प्रतिनिधियों की आयोजित की गई। बाद की परियोजना लड़कियों की अनौपचारिक शिक्षा के अंतिम और कार्यात्मक पक्षों का पता लगाने के लिए हाथ में ली गई। लड़कियों के लिए अनौपचारिक कार्यक्रम को मजबूत करने के लिए तथा सबसे ज्यादा प्रभावी महिलाएं जिन्हें राज्यों द्वारा ग्रहण/अनुसूचित किया जा सके, उनके लिए अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के लिए महिला अनुदेशकों के वास्ते प्रशिक्षण विधियां भी खोजी गई। प्रथमतः एक प्रश्नावली के माध्यम से सूचनाएं एकत्रित की गई। उसके बाद, एक द्विदिवसीय संगोष्ठी कुछ बिन्दुओं पर स्पष्टीकरण प्राप्त करने तथा परस्पर विचार-विनिमय हेतु आयोजित की गई। दोनों अध्ययनों की परियोजना रिपोर्टें निर्माणाधीन हैं।

विकासात्मक कार्यक्रम

अध्यापक शिक्षा

- (1) अध्यापक शिक्षा संबंधी एम.एड. प्रश्नपत्र के लिए स्रोत पुस्तक का विकास

अगस्त, 1985 में एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, में अध्यापक शिक्षा संबंधी स्रोत पुस्तक के लेखकों के लिए चार दिवसीय बैठक आयोजित की गई। ग्यारह लेखक बैठक में उपस्थित थे।

- (2) माध्यमिक अध्यापकों के लिए स्वास्थ्य, शारीरिक शिक्षा और मनोरंजन संबंधी पाठ्यपुस्तक का विकास

सितम्बर 1985 में ग्वालियर में लक्ष्मी बाई शारीरिक शिक्षा कालेज में एक कार्यदल बैठक की गई। इसमें 14 व्यक्ति उपस्थित थे और तैयार की गई सामग्री पर चर्चा की गई।

- (3) प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण स्तर संबंधी पर्यावरणीय अध्ययनों के शिक्षण में विषयवस्तु व क्रियाविधि पर पाठ्यपुस्तक का विकास।

इस पुस्तक, जिसका संबंध अध्यापक शिक्षकों और छात्र अध्यापकों का ज्ञान ऊंचा करने से है, को विकसित करने के लिए 10 से 13 मार्च 1986 को चार दिवसीय कार्यदल बैठक एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.), नई दिल्ली में आयोजित की गई इसमें 10 व्यक्ति उपस्थित थे।

- (4) माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण स्तर संबंधी समाजविज्ञान के शिक्षण में विषयवस्तु व क्रियाविधि पर पाठ्यपुस्तक का विकास

17 से 20 मार्च 1986 को चार दिनों के लिए एक कार्यदल बैठक आयोजित की गई, जिसमें पाठ्यपुस्तकों के आकार पर चर्चा हुई और विभिन्न अध्यापकों की विषयवस्तु तय की गई। इस बैठक में 7 विषय विशेषज्ञ शिक्षा संबंधी विश्वविद्यालय विभाग, एन.आई.ई.आर.टी. के थे। और कुछ समाजविज्ञान व मानविकी शिक्षा विभाग के संकाय के सदस्य थे। इस पाठ्यपुस्तक का लक्ष्य सामाजिक अध्ययनों के अनुदेश व्यवस्थित करने हेतु

ज्ञान और कौशल विकसित करने में छात्र अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों की सहायता करनी है।

(5) मूल्य अभिविन्यस्त शिक्षा पर हस्तपुस्तक का विकास

प्रस्तावित हस्तपुस्तक के विभिन्न अध्यायों के लिए तैयार की गई सामग्री पर चर्चा करने के लिए विशेषज्ञों की नामिका की एक कार्यदल बैठक तीन दिनों 28 से 30 जनवरी 1986 के लिए की गई। इस हस्तपुस्तक का मुख्य उद्देश्य अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या की गतिविधियों और विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों के बीच शिक्षा मूल्य को हृदयंगम करने में अध्यापक शिक्षकों की सहायता करना है। इस बैठक में चार विशेषज्ञ उपस्थित थे।

(6) माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए अनौपचारिक शिक्षा की स्रोत पुस्तक का विकास

प्रस्तावित स्रोत पुस्तक का विस्तृत आकार तैयार करने के लिए कार्यदल की बैठक जनवरी 1986 में की गई। देश में प्रारंभिक शिक्षा के सर्वोत्तम की समस्या पर काबू पाने के लिए अनौपचारिक शिक्षा की विभिन्न विधियों समझने में प्रस्तावित पुस्तक अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों के लिए सहायक होगी।

(7) कालेज शिक्षण संबंधी स्रोत पुस्तक का विकास

कालेज शिक्षण संबंधी स्रोत पुस्तक विकसित करने के लिए नई दिल्ली में 19 से 21 फरवरी, 1986 को त्रिदिवसीय कार्यदल की बैठक की गई। सदस्यों ने प्रस्तावित स्रोत पुस्तक की तैयार सामग्री पर चर्चा की जोकि क्लासरूम प्रबंध और शिक्षाशास्त्र के कुछ पक्षों में कालेज अध्यापक तैयार करने के लिए लक्षित है।

(8) संगोष्ठी पाठमालाएं कार्यक्रम

विभिन्न एस.आई.ई.डी./एस.सी.ई.आर.टी.ए. से प्राप्त माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों के प्रवेश लेखों को मूल्यांकित करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में 14-15 मार्च, 1986 को द्विदिवसीय विशेषज्ञों की बैठक आयोजित की गई। दस सर्वोत्कृष्ट नवोत्पादी अभ्यास राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चुने गये। एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में 28 अप्रैल से 30 अप्रैल 1986 को पुरस्कार विजेताओं (माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों) की त्रिदिवसीय राष्ट्रीय बैठक की गई। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेताओं ने अपने उत्पादों को सामने रखा और उन पर एन.आई.ई. के विभिन्न एककों/विभागों के वरिष्ठ संकाय सदस्यों जिन्होंने कार्यक्रम में स्रोत व्यक्तियों के रूप में कार्य किया, से चर्चा की। नवोत्पाद अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता सुधार से घनिष्ठ संबंध रखते हैं। प्रत्येक राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता को 1000/- का नकद पुरस्कार और श्रेष्ठता प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। देश में व्यापक प्रसार के लिए इन नवोत्पादों को "अध्यापक शिक्षा में विचार और अनुभव" शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाएगा।

(9) अध्यापक शिक्षा के राज्यमंडलों का राष्ट्रीय सम्मेलन

हैदराबाद में दो दिन 3 से 4 मार्च 1986 तक विभिन्न राज्यों के

अध्यापक शिक्षा राज्यमंडलों के प्रतिनिधियों का एक राष्ट्रीय सम्मेलन किया गया। वर्ष 1985-86 में अपने-अपने मंडलों की गतिविधियों और कार्यों की रिपोर्टों को प्रस्तुत किया गया और उनपर चर्चा की गई। देश में अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता सुधार की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण सिफारिशें दी गईं। इस सम्मेलन ने राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के लिए संवैधानिक स्थान के लिए भी सिफारिश की।

अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं (प्रारंभिक और माध्यमिक दोनों) से नवोत्पाद अभ्यास एकत्र करने के लिए एक प्रोफार्मा मुद्रित कराया गया और उसे सभी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं को भेजा गया। कुछ संस्थाओं से सूचना प्राप्त हुई।

विशेष शिक्षा

(1) आई.ई.डी. योजना पर शैक्षिक सचिवों और समन्वय-कर्ताओं के राष्ट्रीय सम्मेलन

एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में 7 से 11 अक्टूबर, 1985 को पांच दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आई.ई.डी. योजना के समन्वय कर्ताओं का किया गया। एन.सी.ई.आर.टी. में ही 1 फरवरी, 1986 को एक दिन का राष्ट्रीय सम्मेलन आई.ई.डी. के शैक्षिक सचिवों का किया गया। इन दोनों सम्मेलनों में 17-17 व्यक्ति उपस्थित थे। दोनों कार्यक्रम आई.ई.डी. की वकालत से संबंधित थे। योजना के कार्यान्वयन हेतु राज्यों के लिए परियोजना प्रस्ताव तैयार किये गये। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के माध्यम से विकलांगों के लिए एकीकृत शिक्षा संबंधी यूनैस्को सहायता प्राप्त परियोजना के अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के लिए राज्यों को लिखा गया।

(2) विशेष शिक्षा में अनुसंधान प्रोन्नति संबंधी राष्ट्रीय कार्यशाला

एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में 8 जनवरी, 1986 से 11 जनवरी, 1986 को चार दिवसीय यह कार्यशाला आयोजित की गई। एस.आई.ई.डी./एस.सी.ई.आर.टी. विशेष शिक्षा के लिए यू.जी.सी. द्वारा सहायता प्राप्त विश्वविद्यालय विभागों, राष्ट्रीय विकलांग संस्थानों तथा तीन अग्रगामी स्वैच्छिक संगठनों से 31 सदस्य उपस्थित थे। कार्यशाला में विशेष शिक्षा में निहायत सीमित अनुसंधान पर चिन्ता व्यक्त की गई। आई.ई.डी. कार्यक्रमों के केस अध्ययनों और एकीकरण बालकों के प्रभावों संबंधी सहकारी अनुसंधान परियोजनाएं नियोजित की गईं।

(3) अपंगों के लिए सृजनात्मक कलाओं संबंधी कार्यशाला

यह कार्यशाला कोयम्बेदूर में 31 मार्च से 4 अप्रैल, 1986 तक अर्थात् पांच दिनों के लिए आयोजित की गई और इसमें 22 सहभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अपंगों के लिए सृजनात्मक कलाओं संबंधी तैयारी का कार्य हाथ में लिया गया।

(4) नियमित स्कूलों में आंखों से विकृत बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप अनुदेशी सामग्रियों व पद्धतियों का समायोजन

एक पांच दिवसीय कार्यशाला कोयम्बेदूर में 14 अक्टूबर से 18 अक्टूबर, 1985 तक नियमित स्कूलों में आंखों से विकृत बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप अनुदेशी सामग्रियों व पद्धतियों के समायोजन हेतु आयोजित की गई। इस बैठक में आंखों से विकृत बच्चों की एकीकृत शिक्षा के लिए कार्य कर रहे विश्वविद्यालयों व संस्थाओं से 13 विशेषज्ञ उपस्थित थे। नियमित अध्यापकों के लिए निर्देशक सिद्धांत विकसित करने के लिए समायोजन अनुदेशी सामग्रियों व पद्धतियों का ढांचा निर्मित किया गया।

- (5) नियमित स्कूलों में कानों से विकृत बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप अनुदेशी सामग्रियों व पद्धतियों का समायोजन

नियमित स्कूलों में कानों से विकृत बच्चों की आवश्यकताओं के अनुकूल अनुदेशी सामग्रियां व पद्धतियां विकसित करने के लिए 14 अक्टूबर से 18 अक्टूबर, 1985 तक मद्रास में एक पांच-दिवसीय कार्यदल बैठक आयोजित की गई। नियमित स्कूलों में कानों से विकृत बच्चों को प्रथम भाषा पढ़ाने के लिए निर्देशक सिद्धांत विकसित किये गये। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थाओं से दस विशेषज्ञों ने भाग लिया।

- (6) प्रमापीय अनुदेशी सामग्री का विकास

स्रोत अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए प्रमापीय अनुदेशी सामग्री विकसित की गई और उसे डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस. के संकाय द्वारा प्रकाशन के लिए संसाधित किया गया। मनो-शैक्षिक केन्द्र के लिए भी उपकरण प्राप्त किये जा रहे हैं।

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति का शिक्षा

- (1) अनुदेशी सामग्री तैयार करने हेतु योजना समूह बैठकें :

दो योजना समूह बैठकें आयोजित की गईं— एक सिक्किम में अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के सप्ताह जनजातीय बच्चों के लिए अनुदेशी सामग्री तैयार करने हेतु तथा दूसरी तमिलनाडु के इरुला जनजातीय बच्चों के लिए पाठ्य पुस्तकें तैयार करने हेतु। दोनों बैठकें नई दिल्ली में क्रमशः दो और तीन दिनों के लिए मार्च 1986 में आयोजित की गईं। कुल मिलाकर इनमें 13 व्यक्ति उपस्थित थे।

- (2) पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन हेतु योजना समूह बैठक

जनजातीय बोलियों—हल्बी, कुदुख, गोधी, ज़ोरख, और भिल्ल (म.प्र.)—में लिखी पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के लिए यह समूह बैठक आयोजित की गई। यह बैठक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में दो दिनों के लिए 26 और 27 फरवरी 1986 को आयोजित की गई और इसमें 8 व्यक्ति उपस्थित थे।

- (3) अभिविन्यास पाठ्यक्रम के लिए पाठ्यविवरण को अंतिम रूप देने के लिए कार्यदल बैठकें

उन समस्याओं को जो अनुसूचित जातियों के शैक्षिक विकास में बाधक

हैं, पर काबू पाने के लिए अध्यापक शिक्षकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम के पाठ्यविवरण को अंतिम रूप देने के लिए दो कार्यदल बैठकें (एक प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा स्तर पर तथा दूसरी माध्यमिक अध्यापक शिक्षा स्तर पर) आयोजित की गईं। ये कार्यक्रम क्रमशः दो व तीन दिनों के लिए दिसम्बर 1985 और मार्च 1986 में किये गये। पहली बैठक में सात व्यक्ति तथा दूसरी बैठक में छः व्यक्ति उपस्थित थे। उन समस्याओं को जो अनुसूचित जातियों के शैक्षिक विकास के लिए बाधक हैं, पर काबू पाने के लिए अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के आधार पर कर्मियों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम संबंधी पाठ्यविवरण को अंतिम रूप देने के लिए दूसरी कार्यदल बैठक तीन दिनों के लिए 18 से 20 मार्च, 1986 को आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में नौ सहभागी उपस्थित थे। अनुसूचित जातियों के दृष्टिकोण से आपत्तिजनक सामग्रियों का पता लगाने के लिए पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करना ही दूसरी कार्यदल बैठक का उद्देश्य था। दूसरी बैठक पांच दिनों के लिए 17 से 21 मार्च, 1986 को की गई और इसमें नौ-सहभागी उपस्थित थे। ये सारी चार कार्यदल बैठकें एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में की गईं।

- (4) एन.एफ.ई. और स्कूल विद्यार्थियों के लिए मापदंडों को तैयार करना :

स्कूली बच्चों में जाति-भावों को दूर करने संबंधी विभिन्न निष्कर्षों पर अनौपचारिक शिक्षा व स्कूली बच्चों के लिए मापदंड तैयार करने का कार्य हाथ में लिया गया। इस संबंध में एक पांच दिवसीय बैठक 31 मार्च, 1986 से 4 अप्रैल, 1986 तक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में की गई और इसमें नौ व्यक्ति उपस्थित थे।

महिला शिक्षा

लड़कियों के लिए एन.एफ.ई. अनुदेशक तैयार करने संबंधी विधियों व पद्धतियों के विकास पर एक द्विदिवसीय संगोष्ठी 28 और 29 जनवरी, 1986 को रोहतक में आयोजित की गई। कथित उद्देश्य के लिए समुचित विधियां व सामग्रियां विकसित करने के लिए संगोष्ठी में क्षेत्रों को पहचाना गया। इसमें दस सहभागी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय स्तर पर महिला शिक्षा में रत स्वैच्छिक संस्थाओं का सहयोग प्राप्त करने एक त्रिदिवसीय बैठक 23 सितम्बर से 25 सितम्बर, 1985 को की गई। लड़कियों की अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों में सहयोग के क्षेत्र पहचाने गये।

इस क्षेत्र में किये गये कार्य के बारे में सदस्यों को जानकारी देने के लिए तथा साथ ही जनसंचार में महिला प्रस्तुतीकरण संबंधी प्रश्नों और लड़कियों की औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा संबंधी युक्तियों पर चर्चा करने के लिए महिला शिक्षा निदेशक द्वारा स्थापित स्थायी समिति की 15 अक्टूबर और 28 फरवरी, 1986 को एक-एक दिन की दो बैठकें की गईं। प्रथम बैठक में 12 सहभागी तथा दूसरी में 11 सहभागी उपस्थित थे।

लड़कियों के लिए एन.एफ.ई. अनुदेशक तैयार करने संबंधी विधियों व पद्धतियों के विकास पर एक छः दिवसीय कार्यशाला रोहत में 31 मार्च से 5 अप्रैल 1986 को आयोजित की गई। पांच क्षेत्रों में पहले से पहचाने गये माइयूल्स को कार्यशाला में विकसित किया गया। ये क्षेत्र थे :

- वैज्ञानिक मनोदशा और उपकरण विवेक
- ग्रामीण महिलाओं के लिए उदित विज्ञान व प्रौद्योगिकी
- कानूनी साहित्यिक घटक
- समुदाय सहभागिता आमंत्रण और
- शैक्षिक लक्ष्यों के लिए जनसंचार का प्रयोग। इस क्षेत्र में कार्य कर रहे अनुदेशकों की सहायता से पांच क्षेत्रों में माइयूल्स को विकसित किया गया।

एन.सी.ई.आर.टी. और तमिलनाडु राज्य द्वारा (अंग्रेजी, हिन्दी और तमिल) तैयार भाषा पाठ्यपुस्तकों/पूरक पाठमालाओं तथा एन.बी.टी. और सी.ई.टी. द्वारा तैयार बाल साहित्य में से सैक्स-प्रवृत्ति दूर करने के लिए भी एक परियोजना हाथ में ली गई। इस उद्देश्य के लिए मूल्यांकनकारी प्रक्रियाएं बनाई गई तथा सैक्स-प्रवृत्ति दूर करने संबंधी मूल्यांकन उपकरण हिन्दी और अंग्रेजी में अलग से छपवाए गये। इस विभाग द्वारा मोदीपुरम और उटकमंड में आयोजित दो कार्यशालाओं में जिसमें क्रमशः 23 और 16 सहभागी उपस्थित थे, कुल 400 पुस्तकें मूल्यांकित की गईं। 400 मूल्यांकन कार्डों का विश्लेषण तथा सारणीबद्ध करने की दृष्टि से पुनरीक्षण समूह बैठक आयोजित की गई।

लखनऊ में पांच दिनों के लिए गुणवत्ता संबंधी विषय पर पूरक सामग्री के विकास के लिए योजना समूह बैठक पांच दिनों के लिए आयोजित की गई। महिला स्थिति के अनुरूप विभिन्न पहचाने गये मूल्यां पर एक कहानी संकलन, एक छोटे उपन्यास की रूपरेखा और ग्रंथसूचियों की श्रृंखला रेखचित की गई। इस बैठक में 13 व्यक्ति उपस्थित थे।

प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रम

इन विभाग ने अध्यापक शिक्षा में लगे अध्यापक शिक्षकों और अन्य कार्मिकों के लिए अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये। इन कार्यक्रमों के बारे में विस्तृत सूचना क्षेत्रवार नीचे दी गई है :

अध्यापक शिक्षा

(i) शिक्षण माडल

इन्दौर में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय में आठ दिनों के लिए शिक्षण माडलों पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य थे (क) शिक्षण के दो माडलों में अध्यापक शिक्षकों को प्रशिक्षण देना — संकल्पना प्राप्ति माडल और जांच प्रशिक्षण माडल, (ख) इन माडलों की प्रशिक्षण विधियों की क्षमता का अध्ययन करना और (ग) अभ्यास प्रशिक्षण

कार्यक्रमों में कौन से शिक्षण माडल एकीकृत किये जा सकते हैं, उनकी परिधि का अध्ययन करना। इस अभिविन्यास कार्यक्रम में 27 माध्यमिक अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के 55 अध्यापक शिक्षक उपस्थित थे। प्रायोगिक क्षेत्र अध्ययन का एक मास्टर डिजाइन विकसित किया गया। हरेक संस्था ने 1985-86 वर्ष में अपने मास्टर प्रोजेक्टों के ढांचे के अन्तर्गत संचालित करने के लिए अपना ही डिजाइन और प्रायोगिक अध्ययन विकसित किया। बाद में मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज में तीन दिनों के लिए शिक्षण माडलों की एक कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें 30 सहभागी उपस्थित थे।

(ii) नियोजन और रचना अनुसंधान परियोजनाएं

छः-छः दिनों की दो कार्यशालाएं नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर और मिर्जा-गौहाटी में नियोजन और रचना अनुसंधान परियोजनाओं पर आयोजित की गई। इन कार्यशालाओं में क्रमशः 39 और 24 व्यक्ति उपस्थित थे।

(iii) पाठ्यपुस्तकों में अध्यापक शिक्षकों का अभिविन्यास

छः-छः दिनों के दो अभिविन्यास कार्यक्रम “उदित भारतीय समाज में अध्यापक और शिक्षा” बम्बई में (17 से 22 फरवरी 1986) और अमरावती में (31 मार्च से 5 अप्रैल 1986) प्रारंभिक अध्यापक शिक्षकों के लिए आयोजित किये गये और इनमें क्रमशः 39 और 24 सहभागी उपस्थित थे।

दूसरा अभिविन्यास कार्यक्रम “पाठ्यचर्या व मूल्यांकन” पाठ्यपुस्तक में माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए आयोजित किया गया। कार्यक्रम अक्टूबर 1985 में त्रिवेद्रम में किया गया और उसमें 20 सहभागी उपस्थित थे।

(iv) संगोष्ठी पाठमालाओं में अभिविन्यास कार्यक्रम

एन.आई.ई., (एन.सी.ई.आर.टी.), नई दिल्ली में 17 और 18 फरवरी, 1986 को एक द्विदिवसीय कार्यक्रम उत्तरी राज्यों के माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण कालेजों के संकाय के लिए आयोजित किया गया। इसमें 22 सहभागी उपस्थित थे। सहभागियों को अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में नवोत्पादों के संभावित क्षेत्रों की जानकारी दी गई।

विशेष शिक्षा

अपंगों के लिए एकीकृत शिक्षा हेतु आधार कार्मिकों का प्रशिक्षण

एन.आई.ई., (एन.सी.ई.आर.टी.), नई दिल्ली में नवंबर, 1985 से फरवरी 1986 तक अपंगों (आई.ई.डी.) के लिए स्वीकृत शिक्षा हेतु आधार कार्मिकों के लिए एक त्रिदिवसीय सेवा दौरान प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। अपंग बच्चों को शिक्षित करने के लिए तथा आई.ई.डी. कार्यक्रमों के नियोजन, पर्यवेक्षण और कार्यान्वयन हेतु उचित सक्षमताएं विकसित करने के लिए प्रशिक्षणार्थियों की सहायता की गई। पाठ्यक्रम ने अपंगों की सिद्धांत संबंधी कार्यसाधक जानकारी तथा शिक्षा-प्रयोग की जानकारी प्रदान की। इस पाठ्यक्रम में दस व्यक्तियों ने भाग लिया।

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की शिक्षा

- (i) जनजातीय क्षेत्रों में कार्य कर रहे अध्यापक शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

जनजातीय क्षेत्रों में स्थित प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के लिए इलाहाबाद और नई दिल्ली में दो एक-साप्ताहिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किये गये। जनजातीय जीवन, संस्कृति और शिक्षा समस्याओं से अध्यापक शिक्षकों को अवगत कराने के लिए पाठ्यक्रम नियोजित किये गये। आन्ध्र प्रदेश, गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र राज्यों से 27 सहभागी प्रथम पाठ्यक्रम में उपस्थित थे। द्वितीय पाठ्यक्रम एन.आई.ई. कैम्पस, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, में आयोजित किया गया जहां मिजोरम, सिक्किम, नागालैण्ड और आसाम के पांच सहभागी उपस्थित थे।

जनजातीय क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के लिए दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। पाठ्यक्रम के दौरान अध्यापक शिक्षकों को जनजातीय जीवन, संस्कृति और जनजातीय शिक्षा-समस्याओं से अवगत कराया गया। दोनों कार्यक्रम सात-सात दिनों के लिए एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में आयोजित किये गये। कुल मिलाकर दो पाठ्यक्रमों में 29 व्यक्ति उपस्थित थे।

- (ii) जनजातीय क्षेत्रों में अनौपचारिक कार्यक्रम के आधार कार्मिकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम

जनजातीय क्षेत्रों में अनौपचारिक शिक्षा के आधार कार्मिकों के लिए प्रथम अभिविन्यास पाठ्यक्रम सात दिनों के लिए जोरहट में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में असम, अरुणाचल प्रदेश, बिहार, उड़ीसा और उत्तर प्रदेश राज्यों के अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे 14 व्यक्ति उपस्थित थे। द्वितीय अभिविन्यास पाठ्यक्रम उदयपुर में आयोजित किया गया और इसमें आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के 11 व्यक्ति उपस्थित थे। ये पाठ्यक्रम जनजातीय बच्चों के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन, जनजातीय शिक्षा की समस्याओं और जनजातीय क्षेत्रों में अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों की व्यवस्था से आधार व्यक्तियों को अवगत कराने में सहायता प्रदान करते हैं।

- (iii) जनजातीय क्षेत्रों में अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों के आधार कार्मिकों के लिए पुनराभिविन्यास पाठ्यक्रम :

एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली में मध्यप्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों में अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों के आधार कार्मिकों के लिए एक पुनराभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। यह पांच दिनों का था और इसमें 16 व्यक्ति उपस्थित थे।

महिला शिक्षा

आधार व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

पाठ्यपुस्तक सामग्रियों के मूल्यांकन हेतु आधार कार्मिकों के लिए दो अभिविन्यास कार्यक्रम पांच-पांच दिनों के लिए बंगलौर और अलमोड़ा में

आयोजित किये गये। सेक्स-हुकाव को दूर करने के दृष्टिकोण से मातृभाषा, क्षेत्रीय भाषाओं और अंग्रेजी में पाठ्यपुस्तकों और पूरक सामग्रियों के मूल्यांकन हेतु आधार व्यक्तियों को प्रशिक्षण प्रदान करना इन अभिविन्यास कार्यक्रमों का उद्देश्य था। विभिन्न राज्यों और संघशासित क्षेत्रों के भिन्न-भिन्न एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टी. के लिए गये 40 आधार कार्मिक इन दो कार्यक्रमों में उपस्थित थे।

दूसरा कार्यक्रम पुरी में प्रारंभिक स्तर पर पाठ्यचर्या के माध्यम से महिला स्थिति में आधार कार्मिकों के अभिविन्यास से संबंधित था। इस कार्यक्रम की अवधि पांच दिनों की थी। इस कार्यक्रम में राज्य शिक्षा संस्थाओं/उत्तर-पूर्व क्षेत्र के एस.सी.ई.आर.टी. के 17 कार्मिक उपस्थित थे। कुछ सहभागियों ने प्रारंभिक स्तर पर पाठ्यचर्या के माध्यम से महिला स्थिति पर अध्यापक हस्तपुस्तक के लिए विषय विकसित किये।

अध्यापकों की अनुवर्ती शिक्षा के लिए केंद्र

यह विभाग अध्यापकों की अनुवर्ती शिक्षा के लिए केंद्रों संबंधी गतिविधियों को समन्वित करता आ रहा है। ये केंद्र राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में माध्यमिक अध्यापकों और प्रारंभिक अध्यापक शिक्षकों को सेवा-दौरान शिक्षा प्रदान करते रहें हैं। इन केंद्रों की अनुदान राशि 50-50 प्रतिशत के आधार पर केंद्रीय और राज्य सरकार वहन करती है।

समीक्षाधीन अवधि में कोयम्बटूर, औरंगाबाद, पटना और कलकत्ता में अवैतनिक निदेशकों/समन्वयकर्ताओं के चार क्षेत्रीय सम्मेलन किये गये। सम्मेलनों के मुख्य लक्ष्य थे (i) देश में राज्यों/संघशासित क्षेत्रों के सी.सी.ई. के गतिविधियों और प्रगति का जायजा लेना (ii) पेश आ रही समस्याओं के हल ढूँढना (iii) अनुभव और चर्चा के द्वारा सी.सी.ई. के पेश आ रही समस्याओं के हल ढूँढना और (iv) नये संदर्भ में सी.सी.ई. की भूमिका चर्चित करना और वर्तमान योजना में परिवर्तन प्रस्तावित करना।

चार सम्मेलनों व दो कार्यसमूह बैठकों के बारे में विस्तृत सूचना निम्न प्रकार है: —

- प्रथम क्षेत्रीय सम्मेलन कोयम्बटूर में 23 से 25 सितम्बर, 1985 को केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु और पांडिचेरी के सी.सी.ई. के अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकर्ताओं के लिए आयोजित किया गया। इसमें 29 व्यक्ति उपस्थित थे।
- द्वितीय क्षेत्रीय सम्मेलन औरंगाबाद में 19 से 21 नवम्बर 1985 को महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश और हिमाचल प्रदेश के सी.सी.ई. के अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकर्ताओं के लिए आयोजित किया गया। सी.सी.ई. के 26 अवैतनिक निदेशकों/समन्वयकर्ताओं ने इसमें भाग लिया।
- तृतीय क्षेत्रीय सम्मेलन पटना में 16 से 18 जनवरी 1986 को बिहार और उ.प्र. के सी.सी.ई. के अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकर्ताओं के लिए आयोजित किया गया। इसमें 43 सहभागी उपस्थित थे।

- चतुर्थ क्षेत्रीय सम्मेलन कलकत्ता में 26 से 28 फरवरी, 1986 को पूर्वी और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के सी.सी.ई.ज. के अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकर्ताओं के लिए आयोजित किया गया। इसमें 19 व्यक्ति उपस्थित थे।
- प्रथम कार्यदल बैठक "सेवा-दौरान शिक्षा अभिकरणों व मकैनिज़्म का एक अध्ययन" नई दिल्ली में 28 से 29 अगस्त, 1985 को की गई। इस बैठक में पांच सदस्य उपस्थित थे।
- द्वितीय कार्यदल बैठक "सेवा-दौरान शिक्षा अभिकरणों व मकैनिज़्म का एक अध्ययन" नई दिल्ली में 10 से 19 मार्च, 1986 को की गई। इसमें 9 सदस्यों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.)

अध्यापक शिक्षा में मानक कायम रखने तथा अध्यापक शिक्षा में पर्याप्त मानक आश्वस्त करने संबंधी प्लान योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करने और अध्यापक शिक्षा संबंधी सभी मामलों पर भारत सरकार और राज्य सरकारों को परामर्श प्रदान करने के लिए यह विभाग मई 1973 में शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के एक संकल्प द्वारा स्थापित, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के सचिवालय का कार्य करता आ रहा है। इस एन.सी.टी.ई. में चार प्रमुख अकादमिक स्थायी समितियाँ हैं— संचालन समिति, स्कूल-पूर्व और प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा समिति, माध्यमिक और कालेज अध्यापक शिक्षा समिति और शारीरिक रूप से विकलांगों और मानसिक रूप से अवरुद्धों के लिए विशेष स्कूलों के अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु समिति।

रिपोर्टाधीन वर्ष में एन.सी.टी.ई. के तत्वावधान में निम्नलिखित बैठकें/संगोष्ठियाँ/कार्यशालाएँ आयोजित की गईं:

- 26 अगस्त, 1985 को एन.सी.टी.ई. की संचालन समिति की 11 वीं बैठक
- 23 दिसम्बर, 1985 को एन.सी.टी.ई. की महापरिषद् की बैठक
- 28-30 जनवरी, 1986 को मूल्य-अभिविन्यस्त अध्यापक शिक्षा में हस्तपुस्तक विकसित करने के लिए कार्यदल की दूसरी बैठक की गई।
- 19-20 फरवरी, 1986 को कालेज शिक्षण की एक स्रोत पुस्तक तैयार करने के लिए लेखकों की नामिका की तीसरी बैठक की गई।
- 21 मार्च, 1986 को एन.सी.टी.ई. की माध्यमिक और कालेज अध्यापक शिक्षा समिति की 9 वीं बैठक की गई।
- 25 फरवरी 1986 को एन.सी.टी.ई. की विशेष स्कूल अध्यापक शिक्षा समिति की 7 वीं बैठक की गई।
- 3-4 मार्च, 1986 को एन.सी.टी.ई. का 6 वां वार्षिक सम्मेलन किया गया।

परामर्श सेवा

निम्नलिखित संस्थाओं को परामर्श सेवाएं प्रदान की गईं

क्र.सं. संस्था का नाम	परामर्श सेवा की प्रकृति
1. यूनेस्को	i) क्षेत्रीय नियोजन संगोष्ठी के लिए घर्षा और कार्य-पत्र तैयार करना और 12-24 अगस्त, 1985 को कोयम्बटूर में विशेष शिक्षा पर कार्यशाला। ii) नेत्रक्षीण अध्यापकों के लिए हस्तपुस्तक तैयार करने के लिए निर्देशक सिद्धांतों का विकास। iii) अकादमिक कार्यक्रमों का विकास।
2. नेत्र-क्षीण राष्ट्रीय संस्थान, देहरादून	i) अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रचना। ii) नेत्र-क्षीण व्यक्तियों के लिए सुविधाओं का नियोजन और रचनाकारी सर्वेक्षण।
3. मानसिक अर्न्तयावर राष्ट्रीय संस्थान, हैदराबाद	i) अकादमिक कार्यक्रमों का विकास करना। ii) स्रोत योजनाओं को विकसित करना। iii) मानसिक-क्षीणों के लिए प्राइमरी स्तर पर पाठ्यचर्या विकास के लिए डिज़ाइन तैयार करना।
4. तकनीकी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान,	पालिटेक्नीक स्टाफ के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण माडल।
5. भारतीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्था	विशेष शिक्षा के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी
6. राज्य शिक्षा संस्थान दिल्ली	शैक्षिक प्रबंध पर प्रिंसीपलों और उपप्रिंसीपलों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को रचने और नियोजित करने में सहायता को बढ़ाया गया।

प्रकाशन

वर्ष 1985-86 में डी०टी०ई०एस०ई०ई० के प्रकाशन (मुद्रित और साइक्लोस्टाइल) नीचे दिये गये हैं:

क्र० शीर्षक सं०	प्रकाशन मास	प्रकाशित की गई प्रतियों की संख्या
1. भारत में अनौपचारिक शिक्षा	मार्च, 1986	1000
2. जनजातीय क्षेत्रों में	जुलाई, 1985	500

क्र. सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	प्रकाशित की गई प्रतियों की संख्या
	अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों की पद्धतियों, संसाधनों और प्रयोगों का अध्ययन		
3.	क्लास- 2 (भाग- 1) के लिए साओरा	जून 1985	5000
4.	आधार व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट	फरवरी, 1986	200
5.	आई०ई०डी० स्कीम के समन्वयकर्ताओं के लिए सम्मेलन की रिपोर्ट	अक्टूबर, 1985	200
6.	नियमित स्कूलों में त्रेत्र-क्षीणों की आवश्यकताओं के अनुसार अनुदेशी सामग्रियों और पद्धतियों का समायोजन	अक्टूबर 1985	100
7.	नियमित स्कूलों में कान-क्षीणों की आवश्यकताओं के अनुसार अनुदेशी सामग्रियों और पद्धतियों का समायोजन	जनवरी 1986	200
8.	विशेष शिक्षा में अनुसंधान की समीक्षा।	जनवरी 1986	100
9.	स्रोत व्यक्तियों के प्रशिक्षण	प्रेस में	

क्र. सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	प्रकाशित की गई प्रतियों की संख्या
	के लिए माइयूलर अनुदेशी सामग्री		
10.	विकलांगों के लिए सृजनात्मक कला	मार्च, 1986	100
11.	उदित भारतीय समाज में अध्यापक और शिक्षा-प्रारम्भिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के लिए पाठ्यपुस्तक	प्रेस में	
12.	प्रारम्भिक अध्यापक शिक्षा में विचार और प्रयोग-संगोष्ठी वाचन पुरस्कार विजेता ख- 11 के पुरस्कृत लेख	मई 1985	500
13.	माइक्रो-शिक्षण घटकों के प्रभावकारी अध्ययन (प्रारम्भिक स्तर)	जनवरी 1985	150
14.	शिक्षण के माडल : विकासशील प्रशिक्षण विधि की ओर	नवम्बर 1985	150
15.	प्रारम्भिक स्कूल अध्यापक के लिए मनोविज्ञान	मार्च 1985	1000
16.	माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए मनोविज्ञान	प्रेस में	

विकलांग बुलेटिनों की एकीकृत शिक्षा

आई०ई०डी० बुलेटिन खंड III सं I से 4, मार्च, जून, सितम्बर और दिसम्बर 1985 की अवधि में प्रकाशित किये गये और विभिन्न संस्थाओं को भेजे गये।

समुदाय गान

जन आंदोलन के रूप में विकासशील समुदाय गान कार्यक्रम के अधीन यह विभाग भारत के सभी भागों से आए संगीत अध्यापकों के लिए समुदाय गान प्रशिक्षण कैम्प आयोजित करता आ रहा है। इस समय विभिन्न भारतीय भाषाओं से चुने गये 15 गाने अध्यापकों को संगीत विशेषज्ञों द्वारा जैसे श्री एम.बी. श्रीनिवासन (मद्रास), श्री कानू चौध (बंबई) श्री वी.सी. मौदगल्य (दिल्ली) और श्री सतीश भाटिया (दिल्ली), सिखाए जा रहे हैं। राष्ट्रीय एकता भावना को सुदृढ़ करने और सारे देश में नवयुवकों के मध्य देशभक्ति मूल्य

प्रोत्साहित करने के लिए ये कैम्प निस्संदेह राष्ट्रव्यापी आन्दोलन का एक स्रोत बन गये हैं।

1985-86 वर्ष में स्कूल प्रणाली में समुदाय-गान को संस्थानिकीकृत करने के प्रयास के रूप में तथा राष्ट्रीय एकता को प्रोन्नत करने के लिए इस विभाग ने राज्यस्तर के विभिन्न अभिकरणों व संस्थाओं के सहयोग से पूरे देश के 19 राज्यों व संघशासित क्षेत्रों के लिए 29 शिविर आयोजित किये और 1164 अध्यापकों को प्रशिक्षित किया। शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हरेक अध्यापक को यह निर्देश दिया गया है कि वह अपने स्कूल और पड़ोसी स्कूलों के कम-से-कम 1000 बच्चों को गाने सिखाएं।

इस वर्ष सारे देश के राज्यों के लगभग 140 अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों को एन.सी.ई.आर.टी. प्रशिक्षण देने में समर्थ रही है। ये प्रशिक्षणार्थी अपने-अपने राज्यों में समुदाय-गान को अधिक उत्तेजक तरीके से प्रचारित करने के लिए आधार व्यक्ति के रूप में कार्य करेंगे।

एन.सी.ई.आर.टी. सभी शिविर सहभागियों को 15 गाने वाले कैसेट, "लेट्स सिंग टुगेदर" तथा रिकार्ड वितरित कर रही है। ताकि कार्य

सरल हो जाए और आगे का प्रशिक्षण रिदम और लय से विचलित हुए बिना प्रदान किया जाए। इससे अध्यापकों को अपने कक्षा-कमरों में शिक्षण अधिगम स्थिति को विकसित करने में भी सहायता मिलती है। इस योजना के अन्तर्गत एक रिकार्ड किया हुआ कैसेट “चाइल्डहुड मैमोरीज आफ मिसेज इंदिरा गांधी” भी सभी प्राथमिक स्कूलों को वितरित किया जा रहा है। संगीत गान अभियान को बढ़ाने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. ने क्रमशः क्षेत्रीय निबन्धकर्ता-संवाहक श्री एम.बी. श्रीनिवासन, श्री वी.सी. मौदगल्य और श्री कानू घोष के पर्यवेक्षण में दक्षिणी, उत्तरी और पश्चिमी क्षेत्रों में संगीत निर्देशक नियुक्त किये हैं।

गणराज्य दिवस समारोह 1986 के दौरान डा. इकबाल के प्रसिद्ध गाने “सारे जहान से अच्छा” को सांस्कृतिक झांकी में एक शानदार समापन के रूप में समाविष्ट किया गया, जिसमें 1150 स्कूलों के बच्चों ने इस गाने को गाया और दर्शकों को उनके साथ गाना गाने में प्रेरित किया।

नवोदय विद्यालय

यह स्वीकार करते हुए कि विशेष प्रतिभा या अभिरुचि रखने वाले बच्चों को अच्छे स्तर की शिक्षा उपलब्ध कराते हुए उन्हें अधिक तेजी से आगे बढ़ने के अवसर प्रदान किये जाने चाहिए, चाहे उनकी आर्थिक स्थिति कैसी भी हो, भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने सातवीं पंचवर्षीय योजना में नवोदय विद्यालय के नाम से हरेक जिले में एक आवासीय आदर्श स्कूल खोलने का निश्चय किया। ये विद्यालय गति-नियामक संस्थाओं के रूप में कार्य करेंगे। इन विद्यालयों को स्थापित करने के मुख्य लक्ष्य हैं— साम्यता और सामाजिक न्याय के लक्ष्य को पूरा करना, राष्ट्रीय एकता को प्रोन्नत करना, प्रतिभाशाली बच्चों को अपनी पूरी प्रतिभा को विकसित करने के अवसर प्रदान करना और स्कूल सुधार के राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम को सुकर बनाना।

इस विस्तृत ढांचे के अन्तर्गत योजना के विशिष्ट लक्ष्य निम्नलिखित हैं

- खासकर ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों की पारिवारिक सामाजिक आर्थिक स्थिति की परवाह किये बिना मूल्य-स्थापना के एक शक्तिशाली अवयव, पर्यावरण के प्रति जागृति, प्रतिभाशाली बच्चों को साहसिक गतिविधियों और शारीरिक शिक्षा वाली अच्छे स्तर की आधुनिक शिक्षा प्रदान करना।
- उचित स्तर पर सारे भारतवर्ष में हिन्दी, अंग्रेजी जैसे समान माध्यम से शिक्षा की सुविधाएं प्रदान करना।
- स्तरों में तुलनात्मकता आश्वस्त करने हेतु और हमारे लोगों को समानांतर मिश्रित विरासत के प्रति सूझबूझ को सुकर करने के लिए एक समान कोर-पाठ्यचर्या प्रस्तुत करना।

- राष्ट्रीय एकता प्रोन्नत करने और सामाजिक अन्तर्वस्तु को समृद्ध बनाने के लिए प्रत्येक स्कूल के बच्चों को देश के एक भाग से दूसरे भाग में उत्तरोत्तर रूप से ले जाना।
- सजीव स्थितियों में अध्यापकों के प्रशिक्षण तथा अनुभवों व सुविधाओं के आपसी आदान-प्रदान द्वारा स्कूली शिक्षा में गुणवत्ता सुधार हेतु एक केन्द्र बिंदु के रूप में कार्य करना।

नवोदय विद्यालयों में प्रवेश छठी कक्षा से है। प्रवेश का आधार तहसील/खंड स्तर पर एक टैस्ट है, जिसमें तहसील/खंड पाठशालाओं के पांचवी पास सभी बच्चे बैठ सकते हैं। नवोदय विद्यालय में सहशिक्षा होगी और प्रथमतः ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों के लिए। अतः शहरी क्षेत्रों से प्रवेश अधिकतम एक-चौथाई तक सीमित है। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के बच्चों के लिए आरक्षण संबंधित जिले में उनकी जनसंख्या के अनुपात से इस शर्त पर रखा गया है कि किसी भी जिले में यह आरक्षण राष्ट्रीय औसत से कम नहीं है।

नवोदय विद्यालयों में शिक्षा, भोजन व आवास सहित यूनीफार्म, पाठ्यपुस्तकों, लेखन-सामग्री, घर से वापसी तक का रेल/बस किराया आदि सभी मुफ्त हैं।

इस कार्यक्रम में एन.सी.ई.आर.टी. कई तरीकों से सम्बद्ध है। पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकों व अनुदेशी सामग्रियों, सहपाठ्यचारी गतिविधियों, मूल्यांकनकारी प्रविधियों और अध्यापक शिक्षा/अभिविन्यास कार्यक्रमों को विकसित एवं परिष्कृत करने का दायित्व परिषद् को सौंपा गया। इस कार्य के लिए विषय से संबंधित विशेषज्ञों की समितियां एन.सी.ई.आर.टी. में गठित की गईं। फिर इन समितियों द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट पर इस कार्य के लिए गठित कार्यबल ने 5 अगस्त, 1985 को विचार किया। इस कार्यबल में देश के शीर्षस्थ विशेषज्ञ थे। कार्यबल द्वारा अनुमोदित अंतिम रिपोर्ट ने एक व्यापक ढांचा और निर्देशक सिद्धांत प्रदान किये।

परिषद् में एक माडल स्कूल सेल स्थापित किया गया जोकि नवोदय विद्यालयों के कार्य का अनुवीक्षण करता है और इस कार्य में परिषद् के विभिन्न विभागों को भिन्न-भिन्न तरीकों से सक्रिय रूप में सम्मिलित किया गया है।

दो नवोदय विद्यालयों—एक महाराष्ट्र में अमरावती में और दूसरा हरियाणा में रोहतक जिला झज्जर में—को शुरू करने का निर्णय लिया गया। इन स्कूलों के लिए जगहों को चुना गया और एन.सी.ई.आर.टी. के माध्यम से भवनों की मरम्मत तथा उन्हें विस्तृत करने के लिए सभी व्यवस्थाएं की गईं ताकि ये भवन नवोदय विद्यालयों के इस्तेमाल के योग्य सिद्ध हो सकें। केंद्रीय विद्यालय संगठन से अध्यापक, प्रिंसिपल सहित, प्रतिनियुक्ति पर चुने गये। माडल स्कूल सेल द्वारा इन अध्यापकों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इन स्कूलों में दाखिलों के लिए व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया। चयन टैस्ट डी.एम.ई.एस.डी.पी. द्वारा विकसित एवं संचालित किये

1985-86

गये। इन टेस्टों के आधार पर प्रत्येक स्कूल में 80 विद्यार्थी चुने गये। स्कूलों ने अपना कार्य 5 मार्च, 1986 से आरंभ किया।

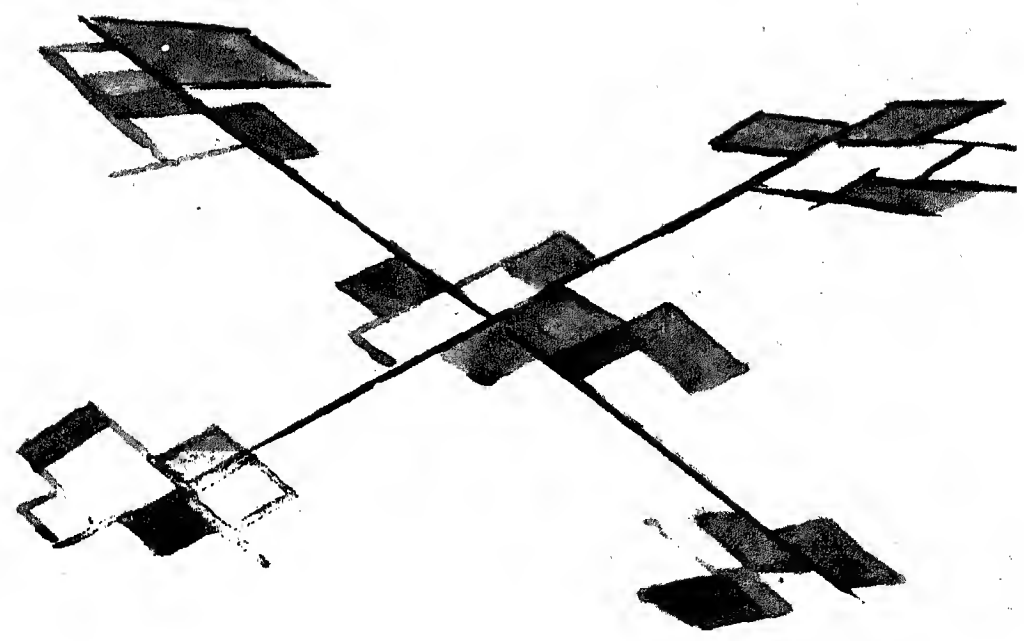
इन स्कूलों में अंग्रेजी शिक्षण हेतु विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डी.ई.एस.एस.एच. द्वारा एक विशेष पाठमाला तैयार की गई और सभी स्कूलों को भेजी गई। डी.ई.एस.एस.एच. द्वारा नवोदय विद्यालय, अमरावती, के लिए हिन्दी शिक्षण हेतु एक विशेष सेतु पाठ्यक्रम भी विकसित किया गया और सामग्रियां स्कूलों को भेजी गईं। माडल स्कूल सेल द्वारा अपने-अपने क्षेत्र सलाहकारों के सहयोग से फरनीचर और उपकरण की खरीद के लिए प्रबंध किये गये। इन स्कूलों को टी.वी. सेट और टेप-रिकार्डर भी दिये गये।

1986-87 सत्र के लिए छठी कक्षा में प्रवेशों का कार्य माडल स्कूल सेल और डी.एम.ई.एस.डी.पी. दोनों द्वारा हाथ में लिया गया। प्रत्याशियों के लिए निर्देशक-सिद्धांत, सूचना-पत्र और आवेदन-पत्र तैयार किये गये और स्कूलों को दिये गये।

दो अकादमिक स्टाफ के साथ दस सहायता स्टाफ मिलाकर यह माडल स्कूल सेल उस समय तक तदर्थ आधार पर कार्य करने के लिए स्थापित किया गया है जब तक कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा बनाई गई नवोदय विद्यालय समिति अंतिम रूप से इन स्कूलों को अपने नियंत्रण में नहीं ले लेती है।

यह सेल नवोदय विद्यालयों से संबंधित विभिन्न मामलों में भी मानव संसाधन विकास मंत्रालय को परामर्श प्रदान करता आ रहा है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने वर्ष 1985-86 के लिए अमरावती और झज्जर के इन दो स्कूलों से संबंधित भोजन व आवास, शैक्षिक खर्चों, फरनीचर, बरतनों, प्रयोगशाला उपकरण, पुस्तकालय पुस्तकों, वेतन व भत्तों तथा भवनों की मरम्मत, विस्तार और परिवर्तन पर व्यय करने के लिए 22.50 लाख (प्लान के अर्धीन) की संस्वीकृति प्रदान कर दी है। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संबंधित स्कूलों को निधियां भेज दी गई हैं।



क्षेत्रीय शिक्षा कालेज की सेवापूर्व शिक्षक-शिक्षा के प्रक्रियात्मक कार्यक्रमों का विकास चिन्ता का एक मुख्य विषय रहा है। ये सभी कालेज स्कूल स्तर पर ही पाठ्यचर्या बढ़ाने की कार्य प्रणाली, शैक्षिक मूल्यांकन और शैक्षिक प्रशासन से संबद्ध अनुसंधान एवं प्रायोगिक अध्ययनों का निष्पादन करने तथा लागू करने में लगे हुए हैं। प्रशिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों से संबद्ध अनुदेशात्मक सामग्री का विकास और स्कूली शिक्षा तथा शिक्षक-शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से संबद्ध प्रशिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रमों के अंतर्गत कालेजों के अन्य कार्यक्रमों पर भी आते हैं।

प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा कालेज अपने अधिकार क्षेत्र के अंदर आने वाले राज्यों/संघीय राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। अजमेर का शिक्षा कालेज हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश तथा संघीय राज्य चंडीगढ़ और दिल्ली की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। भोपाल का शिक्षा कालेज गुजरात, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र तथा संघीय राज्य दादर और नगर हवेली, एवं गोवा, दमन और दीव की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। भुवनेश्वर के शिक्षा कालेज के अंतर्गत असम, त्रिपुरा, मेघालय, नागालैण्ड, उडिसा, सिक्किम, त्रिपुरा, और पश्चिम बंगाल तथा संघीय राज्य अण्डमान और निकोबार द्वीप, अरुणाचल प्रदेश और मिजोरम आते हैं जबकि मैसूर के शिक्षा कालेज के अंतर्गत आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, और तमिलनाडु तथा संघीय राज्य लक्षद्वीप और पोंडिचेरी आते हैं।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर

इस कालेज में विज्ञान शिक्षा में चार वर्ष का समेकित पाठ्यक्रम, जिससे बी.एससी (आनर्स/पास) बी.एड. की डिग्री प्राप्त होती है, विशेष रूप से विज्ञान/कृषि/वाणिज्य/भाषा (अंग्रेजी/हिंदी/उर्दू) का एक वर्ष का बी.एड. पाठ्यक्रम, विशेष रूप से विज्ञान/वाणिज्य/भाषा का एक वर्ष का एम.एड. पाठ्यक्रम और ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम, जिससे बी.एड. की डिग्री प्राप्त होती है, का अध्यापन कराया जाता है। इस कालेज में शिक्षा एवं विज्ञान में पी.एच.डी करने के लिए छात्रों को रजिस्टर करने की सुविधा उपलब्ध है। 30 छात्रों ने अपना नाम रजिस्टर करवाया है पर इसे एक पाठ्यक्रम नहीं माना जा सकता।

नामांकन

1985-86 वर्ष के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकन संख्या निम्नलिखित थी:

(क) सेवा पूर्व पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष बी.एससी, (आनर्स/पास) बी.एड.	69
द्वितीय वर्ष बी.एससी, (आनर्स/पास) बी.एड.	53
तृतीय वर्ष बी.एससी, (आनर्स/पास) बी.एड.	46
चतुर्थ वर्ष बी.एससी, (आनर्स/पास) बी.एड.	68
बी.एड. (विज्ञान)	62
बी.एड. (कृषि)	35
बी.एड. (वाणिज्य)	30
बी.एड. (हिंदी)	49
बी.एड. (अंग्रेजी)	40
बी.एड. (उर्दू)	31
एम.एड. (विज्ञान/वाणिज्य/भाषा)	20
कुल जोड़	503

(ख) सेवाकालीन पाठ्यक्रम

बी.एड. (ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम) 1- समर	105
बी.एड. (ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम) 11- समर	90
कुल जोड़	195

परिणाम

1984-85 के सत्र में विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकित छात्रों के 1985 वर्ष के परिणाम निम्नलिखित थे :

पाठ्यक्रम	परीक्षार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	प्रतिशत
प्रथम वर्ष बी.एससी (आनर्स/पास) बी.एड.	76	48	63.16
द्वितीय वर्ष बी.एससी (आनर्स/पास) बी.एड.	47	45	95.75
तृतीय वर्ष बी.एससी (आनर्स/पास)	69	66	95.65

पाठ्यक्रम	परीक्षार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	प्रतिशत
बी.एड.			
चतुर्थ वर्ष बी.एससी (आनर्स/पास)	26	26	100.00
बी.एड. (विज्ञान)	72	71	98.61
बी.एड. (कृषि)	26	26	100.00
बी.एड. (वाणिज्य)	30	30	100.00
बी.एड. (हिंदी)	43	43	100.00
बी.एड. (अंग्रेजी)	27	27	100.00
बी.एड. (उर्दू)	35	32	91.43
एम.एड.	14	12	85.71

विस्तार सेवा

कालेज के विस्तार सेवा विभाग ने कालेज के अंतर्गत आने वाले राज्यों/संघीय राज्यों की आवश्यकताओं और मांगों को दृष्टि में रखकर विभिन्न क्षेत्रों में स्कूली शिक्षा से संबंधित कार्यशालाएं/संगोष्ठियाँ आयोजित कीं। 1985-86 वर्ष के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए :

क्र. सं.	कार्यक्रम का नाम	भाग लेने वालों की संख्या
1.	जनसंख्या शिक्षा पर कार्यशाला	34
2.	विज्ञान क्लव प्रयोजकों पर कार्यशाला	34
3.	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों पर राज्य स्तर कार्यशाला	20
4.	व्यवहार विज्ञान में सहसंबंधी तकनीकों पर कार्यशाला	21
5.	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों की अभिज्ञान आवश्यकताओं एवं समस्याओं पर क्षेत्रीय संगोष्ठी एवं कार्यशाला	27
6.	व्यावहारिक शिक्षण के माध्यम से माध्यमिक विद्यालय के विषयों में जनसंख्या शिक्षा के समेकन पर शिक्षक-शिक्षा का क्षेत्रीय कार्यशाला	26
7.	सहकारी विद्यालयों के प्रिंसिपलों, हेडमास्टरों और शिक्षकों का अभिविन्यास सम्मेलन	64

क्र. सं.	कार्यक्रम का नाम	भाग लेने वालों की संख्या
8.	इतिहास शिक्षण की प्रक्रियात्मक उपपत्ति पर कार्यशाला	13
9.	+ 2 स्तर रसायन पर साधन प्रचयों के विकास पर कार्यशाला	18
10.	गूगें-बहरे बच्चों के विशेष विद्यालयों में भाषा अध्ययन पर कार्यशाला	21
11.	पर्यावरण विज्ञान के प्रभावशाली शिक्षण के स्थानीय साधनों से शिक्षण के सहायक साधनों के विकास पर कार्यशाला	33
12.	आश्रम विद्यालयों पर कार्यशाला	18
13.	राजस्थान में जनजातीय शिक्षा पर पुस्तिका	15
14.	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों के शैक्षिक विकास पर क्षेत्रीय कार्यशाला	20
15.	एस.यू.पी.इ.ब्लू. फल परीक्षण के शिक्षक गाइड के निर्माण पर कार्यशाला	25
कुल जोड़		389

प्रकाशन

आलोच्य वर्ष में कालेज ने "द एजुकेशनल ट्रेन्ड्स" नामक अर्धवार्षिक शोध पत्रिका के दो अंक प्रकाशित किये। हाल में ही में स्कूल विज्ञान विज्ञान साधन पत्र का त्रैमासिक प्रकाशन शुरू किया गया है।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल में विज्ञान-शिक्षा में चार वर्ष का समेकित पाठ्यक्रम, जिसमें बी.एस. सी. बी. एड. की डिग्री दी जाती है, अंग्रेजी में चार वर्ष का समेकित पाठ्यक्रम जिसमें बी.ए., बी.एड की डिग्री दी जाती है, विशेष रूप से विज्ञान/वाणिज्य में एक वर्ष का बी.एड. पाठ्यक्रम, विशेष रूप से प्रारंभिक शिक्षा में एक वर्ष का बी.एड. पाठ्यक्रम, एक वर्ष का एम.एड. पाठ्यक्रम और ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम, जिसमें बी.एड. की डिग्री दी जाती है, का अध्यापन कराया जाता है।

नामांकन

(क) सेवापूर्व पाठ्यक्रम

1.	बी.एस.सी. बी.एड.	1 वर्ष	84
2.	बी.एस.सी. बी.एड.	11 वर्ष	75

3. बी.एस.सी. बी.एड III वर्ष	61
4. बी.एस.सी. बी.एड IV वर्ष	52
5. बी.ए. बी.एड I वर्ष	28
6. बी.ए. बी.एड II वर्ष	28
7. बी.ए. बी.एड III वर्ष	23
8. बी.ए. बी.एड IV वर्ष	28
9. बी.एड. (विज्ञान)	48
10. बी.एड. (वाणिज्य)	41
11. बी.एड. (प्रारंभिक)	38
12. एम.एड.	10
कुल जोड़ -	516

(ख) सेवाकालीन पाठ्यक्रम

1. बी.एड. (ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम) I समर	121
2. बी.एड. (ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम) II समर	99
कुल जोड़	220

परिणाम : 1985-86 सत्र के दौरान क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल में नामांकित छात्रों के 1985 वर्ष के परिणाम निम्नलिखित थे :

पाठ्यक्रम	परीक्षार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	प्रतिशतता
बी.ए., बी.एड. I वर्ष	30	29	97.00
बी.ए., बी.एड. II वर्ष	30	24	80.00
बी.ए., बी.एड. III वर्ष	28	28	100.00
बी.ए., बी.एड. IV वर्ष	20	19	95.00
बी.एस.सी., बी.एड. I वर्ष	81	77	96.00
बी.एस.सी., बी.एड. II वर्ष	65	64	98.05
बी.एस.सी., बी.एड. III वर्ष	57	56	98.7%
बी.एस.सी., बी.एड. IV वर्ष	46	42	91.3%
बी.एड. (वाणिज्य)	40	40	100.00
बी.एड. (विज्ञान)	32	31	97%
बी.एड. (प्रारंभिक शिक्षा)	37	36	97.3%
एम.एड.	09	7	

विस्तार सेवा

कालेज ने स्कूली शिक्षा और शिक्षक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षक-प्रशिक्षकों, शिक्षकों और शिक्षा प्रशासकों के प्रशिक्षण से संबद्ध अनेक अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम और कार्यशालाएं आयोजित की। 1985-86 के दौरान कालेज ने निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए:

क्र. सं.	कार्यक्रम	भाग लेने वालों की सं.
1.	बाल भारती उर्दू- I की अभ्यास पुस्तिका के निर्माण से संबद्ध कार्यशाला	18
2.	मध्यप्रदेश में + 2 स्तर पर भौतिकी के शिक्षण में लगे मुख्य व्यक्तियों का अभिविन्यास	18
3.	बी.एड. प्रवर माध्यमिक स्तर पर विज्ञान एवं गणित शिक्षा पाठ्यक्रम के विकास के निमित्त + 2 स्तर पर प्रणाली मास्टर्स तथा माध्यमिक प्रवर शिक्षकों के लिए विज्ञान एवं गणित में संगोष्ठी एवं कार्यशाला	21
4.	मध्यप्रदेश की प्रारंभिक शिक्षा के स्तर पर शिक्षकों/ शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए विज्ञान तथा गणित में संगोष्ठी एवं कार्यशाला	17
5.	गुजरात राज्य के प्रारंभिक शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए मूल्यांकन तकनीक पर कार्यशाला	04
6.	मध्यप्रदेश में एस.यू.पी.डब्ल्यू लागू करने के लिए उच्चतर माध्यमिक शिक्षक-प्रशिक्षकों तथा शिक्षकों (कैप्ट/ एस.यू.पी.डब्ल्यू) का अभिविन्यास	24
7.	मध्यप्रदेश (केवल जनजातीय क्षेत्रों के लिए) की बुनियादी प्रशिक्षण-संस्था की एन.एफ.ई. पाठ्यचर्या पर आधारित अध्यापन सामग्री का विकास	27
8.	महाराष्ट्र राज्य में वाणिज्य संगठन की अभ्यास पुस्तिका के पुनरीक्षण के लिए कार्यशाला	13
9.	मध्यप्रदेश (केवल जन-जातीय क्षेत्रों के लिए) में कक्षा- ix के अंग्रेजी शिक्षण के शिक्षकों और ज्ञान साधन व्यक्तियों के लिए अध्यापन सामग्री के उत्पादन पर कार्यशाला	67
10.	महाराष्ट्र राज्य में कक्षा- 11 की भूगोल अभ्यास पुस्तिका के निर्माण पर कार्यशाला	13
11.	नई 10+2 पद्धति के अंतर्गत मध्यप्रदेश के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में एस.यू.पी.डब्ल्यू का शिक्षण कराने वाले शिक्षकों का अभिविन्यास	23

12. मध्य प्रदेश में प्रारंभिक स्तर के विज्ञान एवं गणित के शिक्षकों/शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए संगोष्ठी एवं कार्यशाला	16
13. एम.कॉम.एड. पाठ्यचर्या का पुनरीक्षण	06
14. क्षेत्र के एक-शिक्षक विद्यालयों के शिक्षण में लगे मुख्य व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	24
15. महाराष्ट्र और गोआ के प्रारंभिक शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए पियाजेट विधि सहित अभिविन्यास कार्यक्रम	25
16. प्रयोगशाला के उपकरणों की मरम्मत और देखभाल के लिए गुजरात के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के भौतिकी शिक्षकों के लिए सेवाकालीन कार्यक्रम	16
17. महाराष्ट्र और गोवा के शिक्षकों के लिए अंग्रेजी शिक्षण विधियों में तीव्र पाठ्यक्रम	13
18. एस.यू.पी.इन्सू. शिक्षकों के लिए कार्यकारी पुस्तिका के निर्माण पर शिक्षक-शिक्षा (क्रेफ्ट/एस.यू.पी.इन्सू.) की कार्यशाला	20
19. + 2 स्तर पर वाणिज्य के शिक्षण में लगे मुख्य व्यक्तियों का अभिविन्यास कार्यक्रम	25
20. + 2 स्तर पर जैविकी के शिक्षण में गुजरात के माध्यमिक शिक्षा कालेजों के प्रणाली मास्टरों के लिए संगोष्ठी एवं कार्यशाला	03
21. मध्य प्रदेश में कक्षा 5 के अंग्रेजी के शिक्षकों तथा ज्ञान-साधन व्यक्तियों के लिए अध्यापन सामग्री के उत्पादन से संबद्ध कार्यशाला	37
22. समुदाय के साथ कार्य-क्षेत्र में शिक्षक-शिक्षा का अभिविन्यास कार्यक्रम	04
23. मध्य प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों के एन.एफ.ई. केन्द्रों के मुख्य व्यक्तियों के लिए मूल्यांकन तकनीक में अभिविन्यास	36
24. प्रारंभिक शिक्षक-शिक्षा के स्तर पर गुजराती शिक्षण की कार्यप्रणाली पर कार्यशाला	25
25. महाराष्ट्र में +2 स्तर के शिक्षकों तथा शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए जैविकी में अंतर्वस्तु समृद्धि पाठ्यक्रम	08
26. माध्यमिक शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए गुप्त ट्रेल सिद्धांत और परीक्षण निर्माण सहित अभिविन्यास कार्यक्रम	10

कुल जोड़-

513

शोध परियोजना

1985-86 के दौरान पांच शोध परियोजनाओं से संबद्ध कार्यकलाप

- पर्यावरण संरक्षण से संबद्ध पूरक पठन सामग्री के विकास की परियोजना पूरी की गई।

- “मध्य प्रदेश के जैविकी-शिक्षकों की साधन सामग्री के लिए भोपाल के फ्लोरा का अध्ययन” की परियोजना प्रगति पर है।
- “स्वच्छ जल जैविकी की शिक्षक-गुटका के निर्माण के लिए स्वच्छ जल में प्राणि का अध्ययन” की एक अन्य परियोजना पूरी कर ली गई है।
- “पश्चिमी क्षेत्र में पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षक की उपरिमुखी गतिशीलता पर शिक्षक-प्रशिक्षण (बी.एड. पाठ्यक्रम) का प्रभाव — एक तुलनात्मक अध्ययन” की परियोजना पूरी कर ली गई है और रिपोर्ट लगभग तैयार होने वाली है।
- विज्ञान में कुछ समेकित प्रक्रियाओं (वर्गीकरण, अनुमान, पूर्वानुमान, विवेचन, परिकल्पना, परिकल्पना परीक्षण, के विकास के लिए स्व-अध्ययन प्रक्रिया पर आधारित सामग्री की समता का विकास, मान्यीकरण और परीक्षण की परियोजना पूरी कर ली गई है।

विकासी कार्यक्रम

(क) अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की शिक्षा
कालेज ने समाज के कमजोर वर्ग के लड़कों को कालेज में दाखिल करने के लिए विशेष प्रावधान उपलब्ध कराने तथा राज्य के जनजाति कल्याण विभाग के साथ संपर्क स्थापित करने की पहल की। अगले सत्र में विभिन्न पाठ्यक्रमों में लगभग 160 छात्रों का दाखिला लेने की आशा है। इसके अतिरिक्त मिडिल स्कूल के स्तर पर विज्ञान का शिक्षण करने के लिए जनजातीय/स्थानीय वातावरण के हिसाब से टेप किए गए तथा चित्रयुक्त पाठ तैयार किए गए।

(ख) जन संख्या शिक्षा

(कठपुतली-कला) पर आलेख तैयार करने के लिए चार सेवाकालीन कार्यक्रम आयोजित किए गए। उपलब्ध सामग्री की जांच की जा रही है और बाद में प्रकाशित कर दी जाएगी।

(ग) शैक्षिक + 2 स्तर का व्यावसायीकरण

(1) अंग्रेजी आशुलिपि तथा टंकण और (2) बुनियादी इलैक्ट्रॉनिकी टेक्नोलॉजी के व्यावसायी पाठ्यक्रम सी.बी.एस.ई. की तरह चलते रहेंगे।

अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भाग लेना

लाहौर में 17 अगस्त से 26 अगस्त, 1985 तक यूनेस्को और पाकिस्तान के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित की गई भौतिकी शिक्षण की अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में यूनेस्को के निमंत्रण पर क्षेत्रीय शिक्षा-कालेज, भोपाल के प्रिंसिपल प्रो. जे.एस. राजपूत ने एक विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया। उन्होंने (1) “भौतिकी के शिक्षण कार्यक्रमों में उपगमन” और (2) “प्रारंभिक माध्यमिक स्तर पर भौतिकी के शिक्षण में उपगमन” पर दो

लेख प्रस्तुत किए। प्रो. राजपूत ने "भौतिकी के मात्रक" के एक सत्र की अध्यक्षता की।

डा. आर.पी. सिंह, प्रोफेसर, विज्ञान विभाग और डा. एस.पी. शर्मा, रीडर, विज्ञान विभाग ने 14 मार्च से 6 जून 1985 तक "वर्ग परियोजना के अधीन" कम्प्यूटर साक्षरता और स्कूलों में अध्ययन में अभिविन्यास के लिए संयुक्त राज्य (यू.के.) का दौरा किया।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भुवनेश्वर में चार वर्ष का समेकित पाठ्यक्रम, जिसमें बी.एस.सी. (आनर्स), बी.एड. और बी.ए. (आनर्स) बी.एड. की डिग्री दी जाती है, एक वर्ष का बी.एड. (माध्यमिक) पाठ्यक्रम, एक वर्ष का बी.एड. (प्रारंभिक) पाठ्यक्रम, एक वर्ष का एम.एड. पाठ्यक्रम, दो वर्ष का एम.एस.सी.एड. (जीव विज्ञान) पाठ्यक्रम और ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम, जिसमें बी.एड. की डिग्री दी जाती है, का अध्यापन कराया जाता है। एम.एस.सी. (जीव विज्ञान) एड. पाठ्यक्रम पूरे भारत के छात्रों के लिए है जबकि अन्य सभी पाठ्यक्रम केवल पूर्वी क्षेत्र के छात्रों के लिए हैं। इस कालेज में शिक्षा में पी.एच.डी. के लिए रजिस्टर कराने की सुविधा भी उपलब्ध है।

नामांकन

1985-86 वर्ष के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकन की स्थिति निम्नलिखित थी -

क-सेवा पूर्व पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम का नाम	नामांकन
4 वर्ष का बी.ए. बी.एड. पहला वर्ष	60
दूसरा वर्ष	55
तीसरा वर्ष	45
चौथा वर्ष	30
4 वर्ष का बी.एस.सी. बी.एड. पहला वर्ष	85
दूसरा वर्ष	80
तीसरा वर्ष	73
चौथा वर्ष	61
एक वर्ष का बी.एड. माध्यमिक विज्ञान	98
एक वर्ष का बी.एड. माध्यमिक कला	60
एक वर्ष का बी.एड. माध्यमिक वाणिज्य	18
एक वर्ष का बी.एड. प्रारंभिक कला	13

पाठ्यक्रम का नाम	नामांकन
एक वर्ष का बी.एड. प्रारंभिक विज्ञान	8
एक वर्ष का एम.एड.	23
दो वर्ष का एम.एस.सी. (जीव विज्ञान) एड.	
पहला वर्ष	19
दूसरा वर्ष	10
कुल जोड़ :-	747

ख-सेवाकालीन पाठ्यक्रम

बी.एड. ग्रीष्मकालीन स्कूल /पत्राचार पाठ्यक्रम	
माध्यमिक :	
पहला वर्ष	176
दूसरा वर्ष	243
बी.एड. ग्रीष्मकालीन स्कूल/पत्राचार पाठ्यक्रम	
प्रारंभिक -	
पहला वर्ष	75
दूसरा वर्ष	88
जोड़	582

परिणाम

विश्वविद्यालय की परीक्षाओं के बी.ए., बी.एड. भाग -III और एम.एस.सी. (जीव विज्ञान) एड. भाग -I के परिणाम 100% थे और अन्य सभी पाठ्यक्रमों के परिणाम 70% और 98% के बीच थे।

विस्तार सेवा

पूर्वी क्षेत्र के विभिन्न राज्यों के स्कूल शिक्षकों के अभिविन्यास के लिए विभिन्न स्थानों पर ग्रैर योजना के अंतर्गत 11 विस्तार सेवा कार्यक्रम और योजना के अंतर्गत 4 कार्यक्रम आयोजित किए हैं। ये कार्यक्रम निम्नलिखित हैं:

- उड़ीसा और बिहार के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों को प्रथम और द्वितीय भाषा के रूप में उड़ीसा पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए उत्पादन एवं अभिविन्यास कैम्प,
- त्रिपुरा की कक्षा 6 से कक्षा 10 तक के लिए गणित के नमूने प्रश्न तैयार करने की कार्यशाला,
- पूर्वी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के लिए शिक्षा की नई विद्या पर एक कार्यशाला,
- पूर्वी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के लिए जैविकी में अंतर्वस्तु समृद्धि कार्यक्रम,
- पूर्वी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय के लिए शारीरिक शिक्षा में अभिविन्यास पाठ्यक्रम,
- पूर्वी क्षेत्र के शोध छात्र और शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए शोध कार्यप्रणाली,

- पर्यावरण जैविकी जिसमें पश्चिम बंगाल के शिक्षकों के लिए प्रदूषण समस्याओं पर अधिक बल दिया गया,
- मेघालय के माध्यमिक शिक्षकों के लिए सामान्य विज्ञान के शिक्षण और अंतर्वस्तु की नई विद्या में अभिविन्यास कार्यक्रम,
- मिज़ोरम के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के लिए सामान्य विज्ञान में शिक्षण और अंतर्वस्तु की नई विद्या में अभिविन्यास कार्यक्रम,
- मेघालय और मिज़ोरम के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के लिए गणित की अंतर्वस्तु और शिक्षा में अभिविन्यास कार्यक्रम,
- गैर-योजना के अंतर्गत स्नातकोत्तर शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम के लिए व्यावसायी विषयों की पाठ्यचर्या के निर्माण पर कार्यशाला,
- उड़ीसा के प्रारंभिक विद्यालयों में कार्यरत अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के लिए कार्यशाला,
- बिहार के प्रारंभिक विद्यालयों में कार्यरत अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के लिए कार्यशाला,
- असम के प्रारंभिक विद्यालय में कार्यरत अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के लिए कार्यशाला और योजना के अंतर्गत उड़ीसा के प्रारंभिक विद्यालयों में कार्यरत अनुसूचित जाति के शिक्षकों के लिए कार्यशाला।

इसके अतिरिक्त इस कालेज ने उड़ीसा के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों को अंग्रेजी, भूगोल, गणित और सामान्य विज्ञान में बड़े पैमाने पर सेवाकालीन प्रशिक्षण देने की योजना अपने हाथ में ली है। माध्यमिक शिक्षा परिषद, उड़ीसा के मार्गदर्शन में गठित संपादक मंडल ने लेखकों द्वारा तैयार की गई अध्यापन सामग्री का पुनरीक्षण तथा संपादन किया। संपादित सामग्री को पुस्तिका रूप में मुद्रित किया गया। उड़ीसा के माध्यमिक शिक्षा परिषद के सहयोग से इस कालेज ने राज्य स्तर पर अंग्रेजी, भूगोल, गणित और सामान्य विज्ञान के मुख्य व्यक्तियों के लिए चार भिन्न-भिन्न स्थलों पर चार अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए। इसी कार्यक्रम के अंतर्गत मुद्रित सामग्री की सहायता से मुख्य व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया गया।

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना के अंतर्गत इस कालेज ने दो कार्यशालाएं आयोजित की हैं। ये कार्यशालाएं हैं: कलकत्ता में पूर्वी राज्यों के शिक्षा प्रोफेसरों के लिए 9-12-85 के दिन आयोजित क्षेत्रीय संगोष्ठी एवं कार्यशाला और 16-12-1985 से 20-12-1985 तक पुरी के पुरी जिला स्कूल में राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा कार्यशाला।

नवीन प्रक्रियात्मक कार्यक्रम

नवीन प्रक्रियात्मक व्यवहारों और सामाजिक दृष्टि से उपयोगी उत्पादन कार्य के एक अंग के रूप में इस कालेज के टेक्नोलॉजी विभाग ने कॉलेज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्पिट पॉट बनाने का काम अपने

हाथ में लिया है। इस उत्पादन कार्य की संरचना एवं फैब्रिकेशन टेक्नोलॉजी में 4 व्यावसायी कक्षा के छात्र भी सहायता कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त टेक्नोलॉजी विभाग ने विभिन्न स्थापनों, फर्मों और फैक्टरियों के काम में सहयोग देने की व्यवस्था की है जिनमें छात्रों को कार्य एवं प्रशिक्षण पर चार सप्ताह के लिए भेजा जाता है। इस कालेज को अध्यापकों के वर्ग परियोजना कम्प्यूटर प्रशिक्षण का एक साधन केन्द्र माना जाता है।

कालेज की वार्षिक सांस्कृतिक सप्ताह, विभिन्न छात्रावासों के वार्षिक समारोहों और छात्रों के धार्मिक एवं अन्य विशेष समारोहों के दौरान सह-पाठ्यचर्या कार्यक्रमलाप देखने को मिले हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत छात्रों का वार्षिक खेलकूद समारोह और दूसरा अंतर डी.एम.स्कूल खेलकूद समारोह है जिसका आयोजन 23-12-1985 से 26-12-1985 तक इस कालेज में किया गया। इस खेलकूद समारोह में अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर के डी.एम. स्कूलों के छात्रों ने भाग लिया। यहां तक कि इस रंगारंग समारोह में इन स्कूलों के कोच और अधिकारियों ने भी भाग लिया।

शोध कार्यक्रमलाप

इस कालेज का संकाय शिक्षा, मानविकी और विज्ञान में शोध कार्य के लिए मार्गदर्शन करता है। इस कालेज के एम.एस.सी (जीव विज्ञान) एड और एम.एड के छात्रों ने विज्ञान, गणित और शिक्षा के विभिन्न प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में अपने पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं की दृष्टि से शोध परियोजनाएं चलायी हैं।

दो शोध छात्रों ने उत्कल विश्वविद्यालय के प्रो. एम.वी. रामजी के मार्गदर्शन में वनस्पति विज्ञान में अपनी पी.एच.डी. की थीसिस जमा की थी। इन में से एक छात्र को पी.एच.डी. की डिग्री मिल भी गई है। डा. के.सी. पंडा के मार्गदर्शन में चार पी.एच.डी. की थीसिस उत्कल विश्वविद्यालय में जमा की गई हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा संकाय के अधीन लगभग बीस शोध छात्र अपनी डॉक्टरेट डिग्री के लिए कार्य कर रहे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में संकाय का सहयोग

वर्ग परियोजना के अधीन विज्ञान के प्रोफेसर डा. के.एस. राव को बी.बी.सी. माइक्रो कम्प्यूटर और साफ्टवेयर विकास में चार माह का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए मोरे हाऊस कालेज ऑफ एजुकेशन, एडिनबरा और होमर्ट ऑन, कॉलेज, कैंब्रिज, भेजा गया। अपना प्रशिक्षण पूरा करके वे जुलाई 1985 में भुवनेश्वर लौट आए। प्रो. के.एस. राव ने शिक्षकों की साधन सामग्री का अंतिम संस्करण तैयार करने के लिए नई दिल्ली में एन.सी.ई.आर.टी. के मुख्यालय में आयोजित कार्यशाला में भी भाग लिया।

भौतिकी के रीडर डा. वी.के. शर्मा ने यूनेस्को द्वारा इस्लामाबाद (पाकिस्तान) में आयोजित विज्ञान पाठ्यचर्या विकासकर्ता और शिक्षक प्रशिक्षकों की क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया। डा. शर्मा ने इस कार्यशाला में दो लेख प्रस्तुत किए। उन्होंने एन.सी.ई.आर.टी. के मुख्यालय में

माध्यमिक विद्यालय की भौतिकी भाग- 11 की पाठ्यपुस्तक की पांडुलिपि का पुनरीक्षण करने से संबद्ध कार्यशाला में भी भाग लिया। भौतिकी के रीडर डा. वी.के. शर्मा ने दो शोध पत्र प्रस्तुत किए जिनमें से एक शोध पत्र संयुक्त राज्य अमेरिका में अक्टूबर 22-25, 1985 तक नवीकरण योग्य ऊर्जा से प्राप्त हाइड्रोजन पर आयोजित द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी और दूसरा शोध पत्र जुलाई 20-24, 1985 तक ऑस्ट्रिया में आयोजित छठे विश्व हाइड्रोजन ऊर्जा सम्मेलन में प्रस्तुत किया। भौतिकी के रीडर डा. जे.कं. महापात्र ब्रिटिश काउंसिल डिप्टीजन के प्रस्ताव पर ए.आई.एस.ई.पी. में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए लंदन गए हैं।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर में चार वर्ष का बी.एस.सी.एड. डिग्री पाठ्यक्रम। चार वर्ष का बी.ए.एड. डिग्री पाठ्यक्रम, एक वर्ष का बी.एड. (माध्यमिक) पाठ्यक्रम, एक वर्ष का बी.एड. (प्रारंभिक) पाठ्यक्रम, एक वर्ष का एम.एड. पाठ्यक्रम और रसायन, भौतिकी तथा गणित में दो वर्ष एम.एस.सी. एड. पाठ्यक्रम का अध्यापन कराया जाता है।

1985-86 वर्ष के दौरान भिन्न-भिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकित छात्रों की संख्या निम्नलिखित थी:

(क) सेवापूर्व पाठ्यक्रम

एम.एस.सी.एड. (रसायन)	34
एम.एस.सी.एड. (गणित)	30
एम.एस.सी.एड. (भौतिकी)	38
एम.एड.	25
बी.एड. (माध्यमिक)	77
बी.एस.सी.एड.	299
बी.ए.एड.	115
कुल जोड़ :	548

योग्य छात्र के न मिलने के कारण, 1985-86 के दौरान बी.एड. (प्रारंभिक) में कोई नामांकन नहीं किया गया

परिणाम

1984-85 वर्ष के शिक्षा सत्र के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकित छात्रों के 1985 वर्ष के परिणाम निम्नलिखित हैं:

60

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	नामांकित छात्रों की संख्या	परीक्षार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की सं.	प्रतिशतता
1.	एम.एस.सी.एड. (रसायन) चौथा सेमेस्टर	22	22	21	95.45%
2.	एम.एस.सी.एड. (गणित) चौथा सेमेस्टर	13	13	9	69.23%
3.	एम.एस.सी.एड. (भौतिकी) चौथा सेमेस्टर	11	9	6	66.66%
4.	एम.एड. दूसरा सेमेस्टर	25	23	20	86.95%
5.	बी.एड. (माध्यमिक) दूसरा सेमेस्टर	79	79	71	89.87%
6.	बी.एस.सी.एड. आठवां सेमेस्टर	45	45	36	80.00%
7.	बी.ए.एड. आठवां सेमेस्टर	18	18	17	94.44%

सेवा-कालीन कार्यक्रम और विस्तार

आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित कार्यशालाओं/पाठ्यक्रमों संगोष्ठियों के द्वारा 1108 शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों को अभिविन्यास/प्रशिक्षण दिया गया :

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	भाग लेने वालों की संख्या
1.	कर्नाटक के नवी. और दसवीं स्तर के रसायन में प्रतिदर्श एकक परीक्षणों के विकास पर कार्यशाला	15
2.	सी.सी.ई. में उपयोग में लाने के लिए रसायन के साधन सामग्री के विकास पर कार्यशाला	21
3.	अक्षर सेना कार्यक्रम के अधीन ए.इ.ओ. और आई.ओ. के लिए अभिविन्यास कार्यशाला	66
4.	+ 2 स्तर के वाणिज्य के शिक्षकों के लिए लेख-शिक्षण पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	29

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	भाग लेने वालों की संख्या
5.	जैविकी की साधन सामग्री के विकास पर कार्यशाला	34
6.	अपंगों की समेकित शिक्षा पर अभिविन्यास कार्यशाला	25
7.	प्राथमिक शिक्षकों के लिए शारीरिक शिक्षा पर अभिविन्यास कार्यशाला	13
8.	शिक्षा की प्रतिदर्श सर्वेक्षण विधि आंध्र प्रदेश और कर्नाटक के मुख्य व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	10
9.	शोध कार्य प्रणाली में अभिविन्यास कार्यक्रम	22
10.	+ 2 स्तर के अंग्रेजी के शिक्षकों का अभिविन्यास	26
11.	शिक्षा की चुनौती पर संगोष्ठी-एक नीति परिप्रेक्ष्य	70
12.	के.बी. स्कूल के शिक्षकों के लिए अध्यापन सामग्री के विकास पर कार्यशाला	15
13.	के.बी. स्कूल के शिक्षकों के लिए रसायन की एक प्रयोगशाला पुस्तक के निर्माण पर कार्यशाला	13
14.	भाषा (मलयालम) में निदानी परीक्षण और उपचारी शिक्षण की कार्यशाला	25
15.	अंग्रेजी के मेथड मास्टर्स के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	27
16.	गणित की साधन सामग्री के विकास पर कार्यशाला	26
17.	हाई स्कूल के शिक्षकों के लिए भौतिकी की साधन सामग्री पर कार्यशाला	26
18.	जूनियर कालेजों के प्रिंसिपलों के लिए व्यावसायी शिक्षा पर अभिविन्यास कार्यक्रम	39
19.	जूनियर कालेजों के प्रिंसिपलों के लिए व्यावसायी शिक्षा पर अभिविन्यास कार्यक्रम	50
20.	जूनियर कालेजों के प्रिंसिपलों के लिए व्यावसायी शिक्षा पर अभिविन्यास कार्यक्रम	26
21.	केरल के शिक्षकों के लिए भूगोल पर अभिविन्यास कार्यक्रम	42
22.	मलयालम भाषा के निदानी परीक्षण और उपचारी शिक्षण पर अनुवर्तन कार्यशाला	14
23.	पैसूर शहर में जूनियर कालेजों के अंग्रेजी लेक्चररों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	30

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की शिक्षा

1.	प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए अंतर्वस्तु समृद्धि कार्यक्रम	40
2.	प्राथमिक विद्यालय (अपनाए गए विद्यालय) के शिक्षकों के लिए अध्यापन सामग्री पर कार्यशाला	49
3.	अपनाए गए प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए अध्यापन सामग्री के निर्माण पर कार्यशाला	60

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	भाग लेने वालों की संख्या
4.	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति विद्यालय के शिक्षकों का शिक्षा विकास	30
5.	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति विद्यालय के शिक्षकों के लिए अंतर्वस्तु समृद्धि कार्यक्रम	40
6.	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति विद्यालय के शिक्षकों के लिए अंतर्वस्तु समृद्धि कार्यक्रम	40
7.	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति विद्यालय के शिक्षकों के लिए अंतर्वस्तु समृद्धि कार्यक्रम	44

जनसंख्या शिक्षा

1.	जनसंख्या शिक्षा पर अभिविन्यास एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम	30
2.	-वही-	20
3.	जनसंख्या शिक्षा पर दृश्य सामग्री का विकास	10
4.	जनसंख्या शिक्षा पर संगोष्ठी	15
5.	आंध्र प्रदेश के प्रशिक्षकों के लिए अभिविन्यास एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम	36

कुल जोड़ : — 1108

शोध कार्यकलाप

कालेज ने स्कूली शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर कुछ शोध कार्य अपने हाथ में लिया है। कालेज में हो रहे कुछ शोध कार्यों की सूची निम्नलिखित है:

क्र.सं शोध परियोजना का नाम	प्रभारी अन्वेषक
1. क्षेत्रीय कालेज के कार्यक्रम की स्वीकृति जगहकता और प्रभाव (एरिक प्रयोजित परियोजना)	डॉ. डी.एस. बाबू डॉ. एस. दंडपाणी डॉ. एन.एन. प्रह्लाद
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर भौतिकी के प्रयोगों को करने के विद्युत दृष्टिकोण और पारंपरिक दृष्टिकोण की प्रभाविता का तुलनात्मक अध्ययन (एरिक प्रयोजित परियोजना)	डॉ. एस.जी. गांगुली श्री सी.गुरुभूर्ती

प्रकाशन

कालेज द्वारा प्रकाशित कुछ प्रकाशन निम्नलिखित हैं :

1. जनसंख्या शिक्षा-प्रशिक्षकों की गुटका
— सी शेषादरी और यू.एस. माध्यस्थ द्वारा संपादित
2. शिक्षण में इन्टर्नेशिप
— एन.वी. बंदीनारायण द्वारा संकलित और संपादित
3. शिक्षा सिद्धांत एवं व्यवहार का अध्ययन
— आर.सी.ई.एम. संकाय द्वारा लेखों और शोध-पत्रों का संकलन
4. रसायन में उद्देश्य पर आधारित शिक्षण और प्रशिक्षण
— के.एन.तांत्री, ए.एस. जनार्दन और वी. केसवन
5. रौचक-प्रयोगों के माध्यम से रसायन
6. रसायन के प्रयोगशाला तकनीक की पुस्तिका
7. मैसूर जिला के अनुसूचित जाति के बच्चों के संज्ञानात्मक एवं भाषायी कौशल के विकास की पूरक शिक्षा सामग्री
8. रसायन की अन्वेषी परियोजनाएं
— ए.एस. जनार्दन और टी.जे. वेद्यापथी द्वारा संपादित

प्रदर्शन बहु-उद्देश्यीय स्कूल

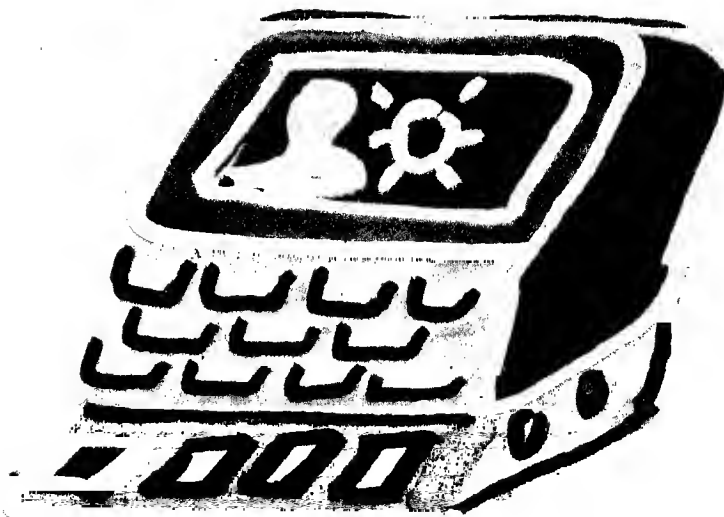
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज से संलग्न प्रदर्शन बहु-उद्देश्यीय स्कूल कालेज द्वारा विभिन्न शिक्षक-शिक्षा पाठ्यक्रमों में नामांकित किए गए शिक्षक प्रशिक्षार्थियों के लिए व्यावहारिक विद्यालय के रूप में काम करते हैं। इन स्कूलों का प्रयोग स्कूली शिक्षा और शिक्षक-शिक्षा में नवीन प्रक्रियात्मक व्यवहारों को लागू करने के लिए एक प्रयोगशाला के रूप में किया जाता है।

1985-86 वर्ष के दौरान विभिन्न प्रदर्शन बहु-उद्देश्यीय स्कूलों में नामांकित छात्रों की संख्या निम्नलिखित थी :

प्रदर्शन बहु-उद्देश्यीय स्कूल अजमेर	890
—वही— भोपाल	830
—वही— भुवनेश्वर	1145
—वही— मैसूर	956

मार्च-अप्रैल, 1985 में हुई बोर्ड परीक्षा के परिणाम निम्नलिखित थे :

स्कूल	कक्षा	परीक्षार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	प्रतिशतता
डी.एम.एस. अजमेर	xii	72	69	96
	x	71	65	93
डी.एम.एस. भोपाल	xii	23	20	87
	x	59	59	100
डी.एम.एस. भुवनेश्वर	xii	49	44	87.7
	x	89	77	87.0
डी.एम.एस. मैसूर	xii	8	7	87.5
	x	76	64	84.2



देश में शिक्षा में सुधार एवं प्रसार के लिए शैक्षिक टेक्नोलॉजी में संवर्धन की दृष्टि से मई, 1984 में एन.सी.ई.आर.टी. के शिक्षण सामग्री विभाग तथा शैक्षिक टेक्नोलॉजी केन्द्र को मिलाकर केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान की स्थापना की गई। केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान का अध्यक्ष संयुक्त निदेशक होता है और यह एन.सी.ई.आर.टी. का एक घटक है जिसे काफी स्वायत्ता प्राप्त है।

देश में शिक्षा से संबद्ध समस्याओं को हल करने में शैक्षिक टेक्नोलॉजी की महत्ता को ध्यान में रखकर केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान ने शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ती हुई मांगों के साथ ताल-मेल बैठते हुए बहु-विध कार्यक्रम अपने हाथ में लिया है। इस संबंध में विभिन्न तंत्रों/माध्यमों/कार्यक्रमों की अभिकल्पना करने, लागू करने, उत्पन्न करने तथा मूल्यांकन करने का प्रयास किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त शैक्षिक टेक्नोलॉजी के विभिन्न क्षेत्रों में सक्षमता विकसित करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, अनुसंधान कार्य और विकास कार्यक्रमलाप हाथ में लिए गए। इस संबंध में विभिन्न राज्यों, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों से सहयोग प्राप्त किया गया है। फरवरी, 1984 में भारत सरकार ने एक तीन वर्षीय यू.एन.डी.पी. परियोजना, शिक्षा के लिए इंसैट के लिए हस्ताक्षर किया। आलोच्य वर्ष के दौरान निष्पादित किए गए कुछ खास-खास कार्यक्रमलाप निम्नलिखित हैं।

अनुसंधान

केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान ने उत्पादन की दृष्टि से आकाशवाणी, बंगलौर के शैक्षिक प्रसारण से संबद्ध तीन-चरण वाला शोध अध्ययन पूरा कर लिया। धारवाड़ और टुन्कूर जिले के 50 शिक्षक और छात्रों को मूल्यांकन तकनीकी में प्रशिक्षित किया गया, यहां ऐच्छिक रूप से चुने गए 25 प्रसारण कार्यक्रमों का मूल्यांकन किया गया, प्रस्तुति कार्मिक, आलेखक, परामर्श नाभिक सदस्यों, और शिक्षा के विशेषज्ञों के भी इन्टरव्यू लिए गए। परियोजना की रिपोर्ट लिखी जा रही है। चल रहे अनुसंधान अध्ययनों के व्यापार विवरण निम्नलिखित हैं :

चल रही अनुसंधान परियोजनाएं

परियोजना का नाम	परियोजना की अवधि	शुरू करने की तारीख	प्रगति
शैक्षिक रेडियो की पाठ्यचर्या	चल रही है।	अप्रैल, 83	विशेषज्ञों की एक बैठक की गई जिसमें स्कूल प्रसारण के

परियोजना का नाम	परियोजना की अवधि	शुरू करने की तारीख	प्रगति
ई.टी.वी. कार्यक्रम का टेलीकास्ट करने के पहले का परीक्षण	एक वर्ष	अप्रैल, 85	लिए रेडियो पाठ्यचर्या को विकसित करने की परियोजना पर चर्चा की गई। यह सिफारिश की गई कि आगे हमें शिक्षकों के साथ बैठकर उनकी आवश्यकताएं मालूम करनी चाहिए। ई.टी.वी. कार्यक्रमों के प्रति बच्चों की प्रतिक्रिया जानकर इन कार्यक्रमों का परीक्षण किया गया। कुल मिलाकर सत्र कार्यक्रमों का पूर्व परीक्षण किया गया। इसके अतिरिक्त संकाय ने पैतीस कार्यक्रमों को पहले से ही देखा लिया। क्षेत्र का दौरा करके तथा क्षेत्र के अनुरोधों से प्रतिपुष्टि भी एकत्रित कर लिया गया। प्रतिपुष्टि रिपोर्टों को तैयार करके उन्हें सभी संबंधित व्यक्तियों में परिचालित कर दिया गया। प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए बनाए गए पांच ई.टी.वी. कार्यक्रमों का मूल्यांकन करने के लिए एक दिन की एक कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम नियोजकों के लाभ के लिए उत्तर प्रदेश के इन्सेट जिलों में एक श्रोता-प्रोफाइल का अध्ययन किया गया।
प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों और शिक्षकों के लिए इंसैट के शैक्षिक	एक वर्ष	अप्रैल, 85	कार्यक्रम नियोजकों के लाभ के लिए उत्तर प्रदेश के इन्सेट जिलों में एक श्रोता-प्रोफाइल का अध्ययन किया गया।

परियोजना का नाम	परियोजना की अवधि	शुरू करने की तारीख	प्रगति
कार्यक्रमों के संबंध में मूल्यांकन अध्ययन।		उड़ीसा, महाराष्ट्र और गुजरात में ई.टी.वी. कार्यक्रमों की उपयोगिता का मॉनिटर करने तथा उपयोगिता पर प्रभाव डालने वाले कारकों को मालूम करने का प्रयास किया गया। रिपोर्ट अभी लिखी जा रही है।	

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम	अवधि	स्थान	भाग लेने वालों की संख्या
1. उत्तर प्रदेश के प्रशिक्षकों के लिए शैक्षिक टेक्नोलॉजी में अभिविन्यास पाठ्यक्रम	10 जून से 22 जून, 85 तक.	केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान.	15
2. ए.बी. सामग्री विशेष रूप से टेप स्लाइड के उत्पादन के लिए शैक्षिक टेक्नोलॉजी और उसके अनुप्रयोग में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	22 जुलाई से 3 अगस्त, 85 तक.	—वही—	15
3. फोटोग्राफी में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	2 सितंबर से 13 सितंबर, 85 तक	—वही—	14
4. हरियाणा राज्य की शैक्षिक टेक्नोलॉजी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	7 अक्टूबर से 18 अक्टूबर, 1985 तक.	हिसार	24

पाठ्यक्रम	अवधि	स्थान	भाग वालों की संख्या
5. ए.बी. सामग्री विशेष रूप से चार्टों के उत्पादन के लिए शैक्षिक टेक्नोलॉजी और उसके अनुप्रयोग में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	14 जनवरी से 25 जनवरी, 1986 तक	केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान, आई. पी. विंग	19
6. मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात और गोवा के प्रशिक्षकों के लिए शैक्षिक टेक्नोलॉजी में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	3 मार्च से 14 मार्च, 1986 तक	—वही—	19
7. शैक्षिक कार्यों के श्रव्य/रडियो कार्यक्रमों के आलेखन और प्रस्तुतिकरण के लिए समेकित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम।	18 नवंबर से 18 दिसंबर, 1985 तक	केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान, नई दिल्ली।	15
8. ई.टी.वी. प्रस्तुतिकरण और तकनीकी प्रचालन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम।	छह सप्ताह	—वही—	54
9. तकनीकी प्रचालन, आलेखन और आलेखिकी में प्रशिक्षण	एक माह	केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान, नई दिल्ली।	3
10. ई.टी.वी. कार्यक्रम के प्रस्तुतिकरण में सेवाकालीन प्रशिक्षण।	10 दिन	—वही—	1
11. कश्मीर और जम्मू के विश्वविद्यालयों के लिए दूरी शिक्षा के पाठलेखन पर अभिविन्यास कार्यक्रम।	10 दिन (4 जुलाई से 13 जुलाई, 1985 तक)	कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर	30
12. इलाहाबाद, दिल्ली और कटक के पत्राचार संस्थान के ट्यूटर्स के लिए दूरी शिक्षा के पाठ-लेखन पर अभिविन्यास (कार्यशाला)	10 दिन	इलाहाबाद	35
कुल जोड़			244

विकासी कार्यकलाप

कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि	स्थान	भाग लेने वालों की संख्या	कैफियत
1	2	3	4	5
ई.टी.वी. के कार्यक्रमों के लिए गणित के कार्यक्रम संबंधी विवरणों पर चर्चा करने और सुझाव लाने पर कार्यशाला।	22 जुलाई से 27 जुलाई, 1985 तक	सियर पटना	9	
ई.टी.वी. की प्रस्तुतिकरण के लिए गणित के आलेखों को अंतिम रूप देने पर कार्यशाला	3 फरवरी से 12 फरवरी, 1986 तक	सियर लखनऊ	10	
दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों के लिए कम लागत वाली शिक्षण सामग्री पर कार्यशाला।	जनवरी, 1986 में 5 दिन	—वही—	30	कार्यशाला के दौरान भाग लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति ने कम लागत की एक शिक्षण सामग्री तैयार की।
दो फिल्मों "एस.यू.पी.डब्ल्यू" और गैर कोटीकृत स्कूलों के मूल्यांकन पर कार्यशाला	17 फरवरी से 19 फरवरी, 1985 तक	केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान, नई दिल्ली	12	प्रसारण के लिए रिपोर्ट को अंतिम रूप दे दिया गया है।
गणित की शिक्षण सामग्री के संपादन पर कार्यकारी समूह की बैठक।	दिसंबर, 85	भद्रास	8	गणित की लगभग आठ शिक्षण सामग्री का संपादन किया गया।
सिघट/एस.सी.ई.आर.टी. के समन्वय के लिए बैठक	दो दिन	केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान, नई दिल्ली	5	भर्ती, कार्यक्रम के प्रस्तुतिकरण, स्टूडियो, उपकरण आदि के संबंध में सिघट की एक अवस्थिति रिपोर्ट तैयार की गई।
टी.वी. कार्यक्रमों की प्रस्तुतिकरण पर अभिविन्यास कार्यशाला	4 दिन	—वही—	54	—
ई.टी.वी. की प्रस्तुतिकरण के लिए कार्यक्रम विवरणों के विकास पर कार्यशाला	1 दिन 10-6-85	—वही—	19	ई.टी.वी. के प्रस्तुतिकरण के लिए कार्यक्रम विवरण नामक एक प्रकाशन प्रकाशित किया गया।
दूरी शिक्षण संस्थाओं में छात्रों को दिए गए कार्यों के मूल्यांकन के लिए एक पुस्तिका तैयार करने पर कार्यशाला	3 दिन 11-14 मार्च, 1986	क्षेत्रीय शिक्षा कालेज भोपाल	8	—

कुल सं. : 155

ऊपर उल्लेखित कार्यक्रमों के अतिरिक्त गणित की शिक्षण सामग्री के नियंत्रण पर कार्यकारी समूह की एक बैठक भी अगस्त, 1985 में हुई। इस बैठक में दस लोगों ने भाग लिया जिन्होंने गणित की आठ शिक्षण सामग्री का मान नियंत्रण किया।

अध्यापन सामग्री का विकास

प्राथमिक स्तर के एक-शिक्षक विद्यालयों के लिए स्व-शिक्षण कार्डों का निर्माण:

गणित में लगभग एक हजार कार्डों को अंतिम रूप दे दिया गया है और अब ये कार्ड मुद्रण के लिए तैयार हैं।

“वैलेन्सी” पर टेप स्लाइडों का उत्पादन

ब्रोशर और गुटका के साथ वैलेन्सी टेप स्लाइड तैयार कर लिए गए हैं और उनका परीक्षण कर लिया गया है। प्रचार-प्रसार के लिए एक सौ कार्ड तैयार हो रहे हैं।

शिक्षक, प्रशिक्षक और परामर्शदों के लिए निम्नलिखित व्यौरे तैयार किए गए हैं :

- (i) (क) शिक्षण सामग्री के साथ जैविकी के 32 सचित्रों को अंतिम रूप दे दिया गया है।
- (ख) जैविकी के स्थूल चार्ट बनाए गए हैं।
- (ग) भौतिकी के 20 चार्टों पर के कलात्मक कार्यों को अंतिम रूप दे दिया गया है।
- (ii) प्राथमिक विद्यालयों के लिए तीन चार्ट बनाए गए हैं।
- (iii) एन.आई. के विभागों के लिए टेप स्लाइड/ए.वी. सामग्री तैयार करने का काम तथा राष्ट्र नेताओं के चित्र बनाने का काम भी हाथ में लिया गया।

फिल्मों का निर्माण :

1. एन.सी.ई.आर.टी. और राजस्थान के शिक्षा विभाग के सहयोगात्मक कार्यक्रम के अधीन अनौपचारिक शिक्षा पर बनाई जानेवाली फिल्म की शूटिंग पूरी की गई है।
2. सूर्य ग्रहण पर बनाई जाने वाली फिल्म की शूटिंग और संपादन का कार्य पूरा हो गया है।
3. एस.यू.पी.डब्लू पर बनायी जाने वाली फिल्म का निर्माण पूरा हो गया है।
4. अरावली पर्वत-माला के रेतीले क्षेत्रों पर बनायी जाने वाली फिल्म का आलेख, स्थान सर्वेक्षण और शूटिंग का काम पूरा हो गया है।
5. फोटोग्राफी की तकनीक पर बनायी जाने वाली फिल्म पूरी हो चुकी है।

हिंदी में फिल्मों को डब करना

“साइन्स इज.ए.पार्ट.ऑफ. लाइफ” और “एस.यू.पी.डब्लू.” की फिल्मों को डब करने का काम पूरा हो गया है।

विविध सांस्कृतिक आदान-प्रदान

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत तीन फिल्म एन.सी.ई.आर.टी. के आई.आर. एकक में भेजे गए।

एन.सी.ई.आर.टी. के लिए ई.टी.वी. कार्यक्रम और फोटोग्राफ का निर्माण करने के अलावा केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान ने प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न निर्मित फिल्मों के डुप्लिकेट प्रिंट तैयार किए। शिक्षा-विभाग, अदिस अबाबा, इथोपिया ने केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान से 30,000/- रु. लागत की सप्लाई करने का अनुरोध किया है। इससे संबंधित सभी औपचारिकताएं पूरी कर ली गई हैं। फिल्म को अगस्त, 1986 में भेज दिया जाएगा।

दूसरी भाषा के रूप में हिंदी के शिक्षण से संबद्ध ऑडियो टेप

उड़ीसा के उन बच्चों को जो स्कूलों में दो साल तक हिंदी पढ़ चुके हैं, दूसरी भाषा के रूप में हिंदी पढ़ाने के लिए पच्चीस कार्यक्रम तैयार किए गए हैं। इन श्रव्य कार्यक्रमों को उड़ीसा के कुछ खास श्रोतागण के सामने बजा कर सुनाया गया है और उससे इस बात का मूल्यांकन किया गया कि श्रोतागण कार्यक्रमों में बतायी गई कहानियों को समझ पा रहे हैं कि नहीं। यह पाया गया कि श्रोतागण कार्यक्रम की कहानियों को समझ रहे हैं। इन श्रव्य कार्यक्रमों को सुनने पर बच्चों की क्या-क्या प्रतिक्रियाएं रही हैं उन्हें रेकार्ड कर लिया गया है। अधिसंख्यक कार्यक्रम तैयार करने के संबंध में 20 विवरणों को विकसित करने के लिए उड़ीसा में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

शैक्षिक रेडियो/श्रव्य कार्यक्रम

निम्नलिखित शीर्षकों के अधीन अंठावन श्रव्य कार्यक्रम तैयार किए गए: (i) स्वतंत्रता सेनानियों का इंटरव्यू, (ii) उड़ीसा के स्कूली बच्चों को दूसरी भाषा के रूप में हिंदी पढ़ाने के श्रव्य टेप (iii) प्रशिक्षणार्थियों द्वारा तैयार किए गए कार्यक्रम।

विस्तार कार्यक्रम

कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि	स्थान	भाग लेने वालों की संख्या	कैफियत
1	2	3	4	5
गणित के शिक्षण की अंतर्वस्तु एवं विधि में शिक्षा कर्मियों का प्रशिक्षण	21 से 27 दिसंबर, 85	एस. डब्ल्यू. आर.सी. तिलोनिया	25	
बच्चों के लिए श्रव्य टेपो पर राष्ट्रीय संगोष्ठी।	2 सितंबर से 6 सितंबर, 1986 तक	एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली	47	संगोष्ठी की रिपोर्ट उपलब्ध है। रेडियो ई.टी.वी. सेल, जयपुर को स्कूलों में बांटने के लिए दिए गए जिससे कि रेडियों के कार्यक्रमों को सुन सकें।
विकसशील देश के बच्चों के लिए ई.टी.वी. पर अंतराष्ट्रीय सम्मेलन	17-21 मार्च, 1986	भारतीय विदेश व्यापार संस्थान नई दिल्ली।	16	सम्मेलन की रिपोर्ट उपलब्ध है।
शिक्षा की एक वैकल्पिक पद्धति के रूप में शैक्षिक टेलीविजन पर राष्ट्रीय कार्यशाला।	24-27 फरवरी, 1986	केंद्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान नई दिल्ली	36	—
उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग के प्रवर स्तर के प्रशासकों के लिए दूरवर्ती शिक्षा पर संगोष्ठी।	10-11 अप्रैल, 1986	शिक्षा निदेशालय, लखनऊ	50	—
			कुल जोड़ :	174

परामर्श: आलेख के संबंध में सिवर लखनऊ को परामर्श दिया गया। सिवट के लिए लगभग अस्सी आलेखों को अंतिम रूप दिया गया।

तकनीकी योजना परिचालन और अनुरक्षण प्रभाग से संबंधित कार्यक्रम

शिक्षा मंत्रालय द्वारा चलाई गई "शिक्षा के लिए इंस्टेट" परियोजना को लागू करने के लिए दिल्ली में स्थित केंद्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान के ई.टी.वी.स्टूडियो के अतिरिक्त छः इंस्टेट राज्यों में छः निर्माण केंद्र स्थापित करने की आवश्यकता थी। यह कार्य टर्नकी के आधार पर भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लि. को दिया गया और केंद्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान के ई.टी.वी. के लिए 1,49,33,688 रु. का आर्डर और छः इंस्टेट राज्यों के छः निर्माण केंद्रों के लिए 9,19,732,00 रु. का आर्डर दिया गया।

(क) ई.टी.वी. स्टूडियो और कार्यक्रम का निर्माण

केंद्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थानों के ई.टी.वी. स्टूडियो, नियंत्रण कक्ष और टेलिसीन रूम के रंगीन उपकरणों को लगाने और परीक्षण करने का काम सितंबर, 1985 में पूरा कर लिया गया। इस स्टूडियो में तीन कलर कैमरा चैन, विजन, आडियो मिक्सर और टेलिसीने चैन (एफ.ई.एल.- 60) जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं। तब से इस स्टूडियो का प्रयोग शैक्षिक टी.वी. निर्माण जिन्हें इंस्टेट के जरिए प्रसारित किया जाता है, कभी-कभी ऐसा भी होता है कि विभिन्न भाषाओं में राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर बड़े पैमाने पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम जैसे कौशल कार्यक्रम बहुत कम समय में तैयार करना पड़ा है।

(ख) सियट निर्माण केन्द्र

सभी छः सियट इन्सेट राज्यों में स्थायी स्टूडियो के भवन-निर्माण का कार्य लगभग समाप्त पर है। इन स्टूडियो में भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड को विडियो/आडियो उपकरण लगाने का काम शुरू करना है।

अन्य सभी ई.एन.जी. उपकरणों को गुजरात संचार एवं इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड ने केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान और सियट को सप्लाई किया है।

(घ) केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान का भवन

भवन को इस्तेमाल करने वाले लोगों के विचारों को ध्यान में रखकर आर्किटेक्टों ने केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान के भवन की ड्राइंग को अंतिम रूप दे दिया है।

(ग) उपकरण

केन्द्रीय शैक्षिक, टेक्नोलॉजी संस्थान और छः सियट के लिए गुजरात संचार एवं इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, बड़ौदा को 4,05,10,630,00 रु. के ई.एन.जी. उपकरणों का आर्डर दिया गया। कुछ थोड़े से उपकरणों को छोड़कर

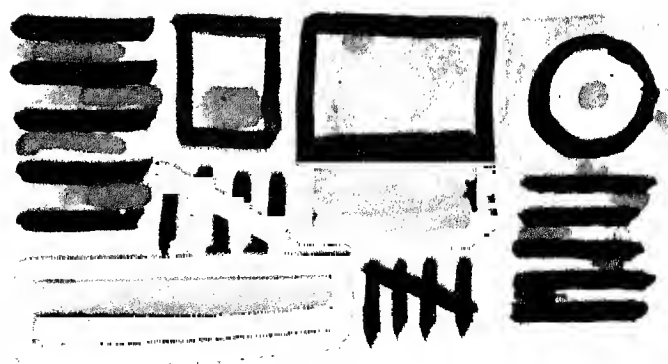
मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने 337 लाख रुपये की संशोधित अनुमानित लागत की स्वीकृति दे दी है। टेन्डरों की सूची तैयार की जा रही है।

प्रकाशन

1985-86 के दौरान केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान द्वारा प्रकाशित प्रकाशनों के ब्यौरे नीचे की सारणी में दिए गए हैं:

क्रमांक कार्यक्रम का शीर्षक	प्रकाशन का माह	प्रकाशित प्रतियों की संख्या	कैफियत
1. कीथ वारेन की पुस्तक "प्रेपरेशन फॉर अंडरस्टैंडिंग" फरवरी, 86 का हिंदी में अनुवाद करके उसे मुद्रित किया गया		27,000 प्रति	इस पुस्तक का प्रकाशन यूनिसेफ के माध्यम से किया गया।
2. भारत का स्वतंत्रता संग्राम-दृश्य	दिसंबर, 85	खर्च 10,000 रु.	केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान और डी.ई.एस. एस. एण्ड एच. ने संयुक्त रूप से परिषद की परियोजना पर एक फोलियो और एक एलबम निकाला।
3. उत्तर प्रदेश के इन्सेट जिलों का स्रोत प्रोफाइल	जुलाई, 1985	250	यह एक मिमियोग्राफित रिपोर्ट है जिसे इन्सेट की योजना से संबद्ध सभी अधिकारियों और इन्सेट राज्य के सियट में परिचालित किया गया।
4. बच्चों के लिए शैक्षिक आडियो/विडियो कार्यक्रमों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	सितंबर, 85	250	इस रिपोर्ट में 10 लेख हैं और संगोष्ठी से संबद्ध सुझाव और सिफारिशें हैं।

क्रमांक	कार्यक्रम का शीर्षक	प्रकाशन का माह	प्रकाशित प्रतियों की संख्या	कैफियत
5.	ट्रान्सपेरेंसियों की सूची	दिसंबर, 85	2500	केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान में उपलब्ध फिल्मस्ट्रिप, टेप स्लाइड और ट्रान्सपेरेंसी की सूची।
6.	विडियो कार्यक्रमों की सूची	फरवरी, 86	2500	केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान में उपलब्ध विडियो ई.टी.वी. कार्यक्रमों की सूची।
7.	विकासशील देश के बच्चों के लिए शैक्षिक टेलिविजन मार्च, 1986 पर प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन		1,000	इस रिपोर्ट में भाग लेने वाले विभिन्न देशों द्वारा चलाए गए विडियो-कार्यक्रमों और साथ इन कार्यक्रमों पर हुई वर्धाओं का उल्लेख है।
8.	"समाज के लिए तैयारी" यूनिसेफ प्रकाशन" प्रेपरेशन जून, 1986 फॉर अंडरसटैंडिंग का हिंदी का अनुवाद।		2500	छोटे बच्चों के लिए टी.वी. कार्यक्रमों के नियोजकों और निर्माताओं के लिए उपयोगी।



मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़े संसाधन

मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़े संसाधन विभाग (डी एम ई एस डी पी) के कुछ मुख्य कार्य हैं—स्कूली शिक्षा की सभी अवस्थाओं में परीक्षा सुधार की और निर्दिष्ट अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों, शैक्षणिक मूल्यांकन के लिए नवाचारी दृष्टिकोणों और नीतियों का विकास, शिक्षा नियोजन के लिए आंकड़ा आधार उपलब्ध कराने के लिए शैक्षणिक सर्वेक्षण करना, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा आयोजित करना, मुख्य कार्मिकों एवं साधन व्यक्तियों का प्रशिक्षण और विभिन्न शैक्षिक सर्वेक्षणों तथा अनुसंधान परियोजनाओं से संबंधित आंकड़ों का संसाधन।

यह विभाग, राज्यों एवं संघ शासित प्रदेशों के स्कूल/माध्यमिक शिक्षा

बोर्डों और शिक्षा विभागों/निदेशालयों के साथ मिलजुल कर अपने कार्य करता रहा है।

अनुसंधान

पुस्तकालय सुविधाओं, भवनों, प्रयोगशालाओं और कमजोर वर्ग के लिए शिक्षा सुविधाओं के सर्वेक्षण तथा कसौटी संदर्भित परीक्षणों के विकास के प्रयासों के एक हिस्से के तौर पर, डी एम ई एस डी पी, अनुसंधान के धंधों में लगा रहा है। कार्य अभी जारी है। अनुसंधान परियोजनाएं नीचे दी जा रही हैं:

डी एम ई एस डी पी की अनुसंधान परियोजनाएं

क्र.सं.	परियोजना का शीर्षक	अवधि	प्रमुख अन्वेषक	शुरुआत की तिथि	समाप्ति की तिथि
1.	2.	3.	4.	5.	6.
1.	पर्यावरणीय अध्ययनों में प्राथमिक अवस्था में कसौटी संदर्भित परीक्षणों का विकास	दो वर्ष (बढ़ाए जाने की संभावना)	श्री. प्रीतम सिंह	दिसंबर 1983	—
2.	माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में विज्ञान प्रयोगशालाओं का गहन अध्ययन	दो वर्ष	डा. के.के. राय श्री एन.के. गुप्ता	अगस्त 1985	अगस्त 1987
3.	असम, गुजरात, हरियाणा और तमिलनाडु राज्यों के उच्च और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में पुस्तकालय सुविधाओं और उनके उपयोग का नमूना अध्ययन	दो वर्ष	डा. सी.एल. कौल श्री जे.के. गुप्ता	अप्रैल 1985	मार्च 1987
4.	बिहार, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक और मध्यप्रदेश राज्यों के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूल भवनों का गहन अध्ययन	डेढ़ वर्ष	श्री पुष्पेन्द्र कुमार और श्री एस.सी. मिश्र	जनवरी 1986	जुलाई 1987
5.	उड़ीसा में समाज के अनुसूचित जातियों और कमजोर वर्गों के लिए शिक्षा सुविधाओं का सर्वेक्षण	15 मास	श्री एस.एम. भार्गव	जुलाई 1985	दिसंबर 1986

शिक्षा मूल्यांकन में प्रशिक्षण

डी.एम.ई.एस.डी.पी., वस्तुनिष्ठ विस्तृत और वैज्ञानिक मूल्यांकन प्रक्रमों के विकास की दृष्टि से; विभिन्न विषयों में मर्दों और युनित परीक्षणों के रूप में नमूना मूल्यांकन सामग्री बनाने, अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों तथा शिक्षा मूल्यांकन एवं परीक्षा सुधार में लगे अन्य कार्मिकों के प्रशिक्षण में लगा हुआ है।

अध्यापक प्रशिक्षकों, राज्य/संघशासित प्रदेश स्तर पर परीक्षण, मूल्यांकन और परीक्षा सुधार में लगे कार्मिकों तथा विभिन्न माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्डों द्वारा आयोजित परीक्षाओं के प्रश्नपत्र बनाने वालों के लिए 1985-86 के दौरान अनेक सेवा-पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इतिहास, गणित, भौतिकी, जैविकी और अर्थशास्त्र के विषय-लेखकों के लिए 7/8 दिन के पांच पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। इन पाठ्यक्रमों में 129 व्यक्तियों को परीक्षा सामग्री लेखन में प्रशिक्षित किया गया। नमूना सर्वेक्षण विधियों के सात दिन के चार प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें 78 व्यक्तियों ने भाग लिया। माध्यमिक शिक्षा के बोर्डों की बाह्य परीक्षाओं के सुधार के लिए आठ कार्यक्रम आयोजित किए गए। राजस्थान, असम, हरियाणा, बिहार, उड़ीसा और मणिपुर के 473 कार्मिकों को परीक्षा सुधार की नई तकनीकों में प्रशिक्षित किया गया। अन्य प्रशिक्षण गतिविधियों में सुरक्षा सेवा कार्मिकों के लिए एक मास का प्रशिक्षण कोर्स, एक मास का अखिल भारतीय शिक्षा मूल्यांकन प्रशिक्षण कोर्स और पब्लिक स्कूलों के लिए पांच दिन का एक मूल्यांकन कोर्स शामिल है। इन पाठ्यक्रमों में 197 व्यक्तियों ने भाग लिया।

विकास कार्यक्रम

1985-86 में डी.एम.ई.एस.डी.पी. ने अनेक विकास कार्यक्रम किए। इन कार्यक्रमों के परिणाम नीचे दिए जा रहे हैं:

दस दिन के एक कार्यक्रम में, जिसमें 13 व्यक्तियों ने भाग लिया था, अंग्रेजी की लगभग 70 बोध प्रश्नावलियाँ तैयार की गईं। इन प्रश्नावलियों को दो जिल्लों में संकलित करने और आठवीं, नवीं व दसवीं श्रेणी के विद्यार्थियों और अध्यापकों में संचारित करने के लिए इन्हें छपवाने का विचार है।

इतिहास के प्रश्न बैंक को बनाने के लिए सात दिन की एक कार्यशाला से, नवीं श्रेणी के लिए इतिहास के विभिन्न प्रकार के वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्राप्त हुए। इसमें 11 विषय विशेषज्ञों ने भाग लिया।

खुली पुस्तक परीक्षाओं पर हुई दो दिन की एक संगोष्ठी में बीस निबंध प्रस्तुत किए गए। संगोष्ठी में इस विषय के नौ मामलों पर विस्तृत चर्चा हुई। "आउटकमस आफ द सेमिनार आन ओपन बुक एक्जीबीशन" शीर्षक का एक लेख, जिसमें प्रस्तावना, मदवार सिफारिशें, अनुसंधान योग्य शीर्षक और ओ.बी.ई. (खुली पुस्तक परीक्षा) के लिए प्रश्न बनाने के लिए प्रयोग किए जाने वाले उद्देश्य शामिल थे, इस क्षेत्र में रुचिरखने वाले, भाग लेने वाले

व्यक्तियों और विशेषज्ञों में, उनके विचार जानने के लिए बांटा गया। संगोष्ठी में इक्कीस शिक्षाविदों और मूल्यांकन विशेषज्ञों ने भाग लिया।

बंगलौर में, कर्नाटक के व्यावसायिक शिक्षा यूनिट के सहयोग से एक 4 दिन की संगोष्ठी में +2 अवस्था के लिए व्यावसायिक विषयों के मूल्यांकन की एक योजना तैयार की गई। संगोष्ठी में नौ व्यक्तियों ने भाग लिया।

छठी श्रेणी के लिए विज्ञान का प्रश्न बैंक बनाने के बारे में हुई एक 7 दिन की कार्यशाला में, छठी श्रेणी की 'लर्निंग साइंस पार्ट-1' पुस्तक के सभी अध्यायों पर विविध प्रकार के लगभग 2500 वस्तुनिष्ठ प्रश्न तैयार किए गए। इन प्रश्नों के स्कूलों में संचारित करवाने का सुझाव है ताकि अध्यापकगण इनका प्रयोग, शिक्षु उपलब्धि में सुधार करने और इसके मूल्यांकन के लिए कर सकें। इस कार्यशाला में इक्कीस अध्यापकों ने भाग लिया।

आठ-दिन की एक कार्यशाला में, जिसमें 29 विषय-विशेषज्ञों ने भाग लिया, प्रायोगिक भूगोल के यूनिट परीक्षण और प्रश्नावलियाँ तैयार की गईं। इन्हें स्कूलों में संचारित करने का विचार है।

वरिष्ठ माध्यमिक श्रेणियों के लिए जीव-विज्ञानों में नमूना प्रश्न तैयार करने के लिए हुई आठ दिनों की एक कार्यशाला में, ग्यारहवीं श्रेणी के लिए जीवविज्ञान के विविध प्रकार के लगभग 3000 प्रश्न प्राप्त हुए। इस कार्यशाला में 24 अध्यापकों ने भाग लिया। इन प्रश्नों में सुधार और संपादन करके, इन्हें विद्यार्थियों और अध्यापकों के विस्तृत प्रयोग के लिए पुस्तक रूप में निकाला जाएगा।

चार और तीन दिन की अवधि की दो कार्यशालाओं के द्वारा, कर्नाटक के स्कूलों के लिए, व्यावसायिक विषयों के आंतरिक मूल्यांकन की एक योजना तैयार की गई। इसमें 34 व्यक्तियों ने भाग लिया। बाद में हुई एक बैठक में योजना को अन्तिम रूप दिया गया और एक प्रारूपी हस्तपुस्तिका तैयार की गई।

प्राथमिक स्कूल अवस्था में शिक्षुओं की वृद्धि की गैरशैक्षिक प्रवृत्तियों के मूल्यांकन के लिए योजना और क्रियाविधि तैयार करने के लिए कोयम्बतूर में छह दिन की एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में इक्कीस व्यक्तियों ने भाग लिया। योजना तैयार हो चुकी है। इसमें और सुधार करके, अन्तिम रूप देकर, स्कूलों में प्रयोग किए जाने के लिए इसे राज्य शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषदों और राज्य शिक्षक संस्थान को भेज दिया जाएगा।

परामर्श एवं विस्तार गतिविधियाँ

डी.एम.ई.एस.डी.पी., माध्यमिक शिक्षा बोर्डों, विश्वविद्यालयों और सुरक्षा सेवाओं जैसे अन्य संगठनों को परामर्श सेवाएं प्रदान करता है। 1985-86 में डी.एम.ई.एस.डी.पी. द्वारा दी गई परामर्श सेवाएं नीचे दी गई सारणी में प्रस्तुत हैं:

1985-86 में दी गई परामर्श सेवाएं

क्र.सं.	परामर्श की अपेक्षा परामर्श का अभिप्राय करने वाले संगठन	
1	2	3
1.	सुरक्षा सेवाएं, भारत (थल सेना, वायुसेना, नौसेना)	अधिकारियों और रंगस्टों आदि को प्रशिक्षण देने वाले सुरक्षा कार्मिकों को मूल्यांकन की धारणा, मूल्यांकन तकनीकों और मूल्यांकन की नई नीतियाँ बनाने और काम में लाने के बारे में प्रशिक्षित करना।
2.	अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय	अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों, टीडरों और लेक्चररों को, भौतिकी, रसायन, जैविकी, गणित, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र और अंग्रेजी के विविध प्रकार की वस्तुनिष्ठ सामग्री लिखने में प्रशिक्षित करना।
3.	मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के प्रश्नपत्र बनाने वालों को अंग्रेजी गणित, भौतिकी, रसायन और जैविकी के अच्छे प्रश्नपत्र बनाने में प्रशिक्षित करने के लिए। मध्यप्रदेश शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित हाई स्कूल परीक्षा के लिए माडल प्रश्नपत्र बनाने के लिए।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज

1984-85 से राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजनाओं का विकेन्द्रीकरण हो चुका है। संशोधित राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना के अन्तर्गत पुरस्कार के लिए, दसवीं श्रेणी के अंत में ही, दो चरणों में चुनाव किया जाता है। पहले चरण में, अक्टूबर-नवम्बर 1984 के दौरान राज्यों द्वारा, लिखित परीक्षा के माध्यम से चुनाव किया गया, जिसके आधार पर दूसरे चरण की परीक्षा के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को, तय की गई संख्या में, प्रत्याशियों की सिफारिश की गई। पुरस्कार प्राप्त करने वालों को, वांछित संख्या में चुनने के लिए, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने 14 जुलाई 1985 को दूसरे चरण में परीक्षा आयोजित की। यह परीक्षा समस्त भारत के 29 केन्द्रों में आयोजित की गई। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा आयोजित इस परीक्षा में, विदेशों में रहने वाले कुछ भारतीय विद्यार्थी भी बैठे। विवरण नीचे दिया जा रहा है :

आंकड़ा संसाधन

विभाग के आंकड़ा संसाधन पक्ष की मुख्य गतिविधियाँ, कंप्यूटर के अन्तर्निवेश माध्यम पर आंकड़ों का अंतरण, साफ्टवेयर तैयार करना और अन्ततः आंकड़ों का, क्रमपूट पर संसाधन करना, रही है। राष्ट्रीय शैक्षिक

1985 में दी गई राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृत्तियों की संख्या

श्रेणी	दूसरे चरण की परीक्षा में बैठे विद्यार्थियों की संख्या	दी गई छात्र-वृत्तियों की संख्या (सामान्य)	दी गई आरक्षित छात्रवृत्तियाँ	अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति
दसवीं श्रेणी	2849	680	70	(अनु. जाति एवं अनु. जनजाति सहित)
सूची में शामिल, छात्रवृत्ति प्राप्त व्यक्तियों की कुल संख्या (1985 में छात्रवृत्ति प्राप्त व्यक्तियों सहित)				
अवस्था	छात्रवृत्ति वालों की संख्या	प्राप्त करने स्नातक	कुल स्नातकोत्तर	कुल में से अनुसूचित जातियों को अनुसूचित जनजातियों को
1125	2917	349	83	4474
अनुसूचितजाति/जनजाति के लिए 254				

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना, 1985 के अन्तर्गत चुने गए प्रत्याशियों की संख्या दर्शाता हुआ विवरण

क्र.सं.	राज्य/संघशासित प्रदेश	नियत कोटा सामान्य	चुने गए अनु. कुल	जाति/ अनु. जनजाति	
1	2	3	4	5	6
1.	आंध्र प्रदेश	190	33	6	39
2.	असम	130	4	—	4
3.	बिहार	155	54	14	68
4.	गुजरात	165	6	1	7

1985-86 के दौरान निकले प्रकाशन

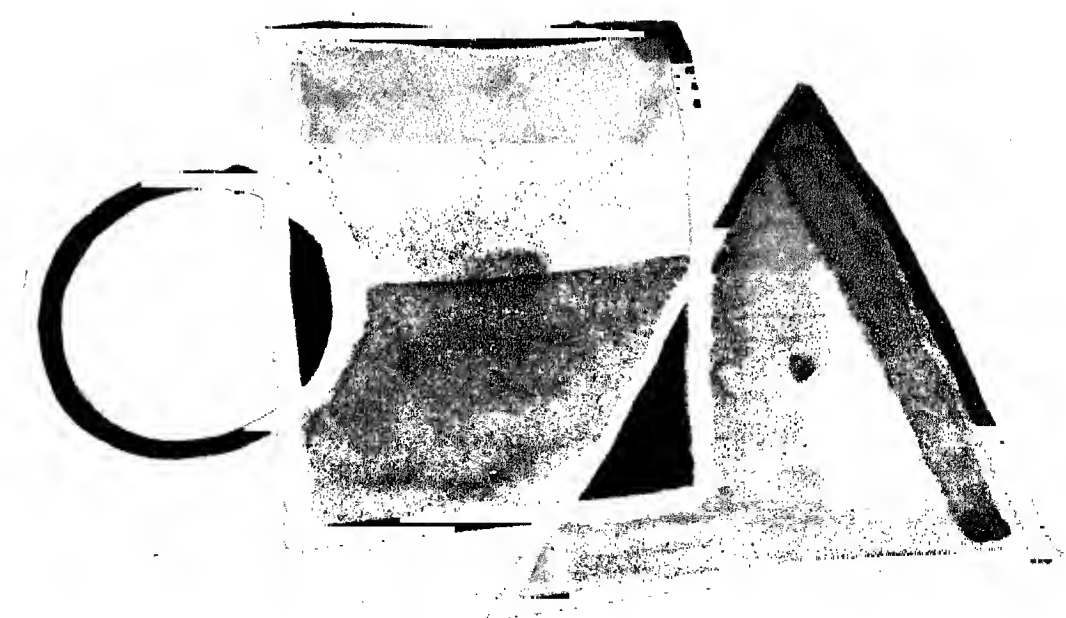
क्र.सं.	राज्य/संघशासित प्रदेश	नियत कोटा सामान्य	चुने गए अनु. जाति/अनु. जनजाति	कुल	
5.	हरियाणा	60	18	—	18
6.	हिमाचल प्रदेश	25	4	—	4
7.	जम्मू-कश्मीर	25	—	—	—
8.	कर्नाटक	140	46	4	50
9.	केरल	275	49	4	53
10.	मध्य प्रदेश	225	26	3	29
11.	महाराष्ट्र	305	148	24	172
12.	मणिपुर	25	—	—	—
13.	मेघालय	25	1	—	1
14.	नागालैण्ड	25	—	—	—
15.	उड़ीसा	110	26	2	28
16.	पंजाब	100	23	1	24
17.	राजस्थान	150	39	5	44
18.	सिक्किम	25	2	—	2
19.	तमिलनाडु	235	68	3	71
20.	त्रिपुरा	25	5	1	6
21.	उत्तर प्रदेश	445	30	1	31
22.	पश्चिम बंगाल	175	39	1	40
23.	अंडमान निकोबार द्वीप समूह	10	—	—	—
24.	अरुणाचल प्रदेश	10	—	—	—
25.	चंडीगढ़	10	4	—	4
26.	दादरा, नगर हवेली	10	—	—	—
27.	दिल्ली	55	50	—	50
28.	गोआ, दमन और दिऊ	15	2	—	2
29.	लक्षद्वीप	10	—	—	—
30.	मिजोरम	10	—	—	—
31.	पांडिचेरी	10	2	—	2
32.	विदेशों के प्रत्याशी	13	1	—	1
कुल		3188	680	70	750

अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के विभिन्न विभागों एककों की विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं से संबंधित आंकड़ों के संसाधन का कार्य किया गया जिसमें राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा के परिणामों का संसाधन और मेरिट लिस्ट बनाना शामिल है।

इन सबके अतिरिक्त निम्नलिखित कार्य भी किए गए :

1. ओमेगा सुपरस्टार नामक एक नए कम्प्यूटर सिस्टम का चुनाव तथा खरीद।
2. सांख्यिकीय विधियों और शिक्षा तथा मनोविज्ञान जैसे अनुसंधान क्षेत्रों में सहायता देना और मार्गदर्शन करना।

क्र. सं.	शीर्षक	प्रकाशन पास	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
1	2	3	4
1.	यूनिट टेस्ट्स इन इंग्लिश (कोर्स ए) दसवीं श्रेणी के लिए	अप्रैल 1985 (साइक्लोस्टाइल)	200 प्रतियाँ
2.	सैम्पल यूनिट टेस्ट्स इन इंग्लिश	नवंबर 1985 (मुद्रित)	500 प्रतियाँ
3.	नेशनल टैलेंट सर्च एक्जामिनेशन 1984-एन एप्रेजल	नवंबर 1985 (साइक्लोस्टाइल)	200 प्रतियाँ
4.	डाइग्नोस्टिक इवेल्युएशन एण्ड रेमेडिएशन फार इफेक्टिव लर्निंग	जनवरी 1985 (साइक्लोस्टाइल)	200 प्रतियाँ
5.	हैन्डबुक ऑफ इवेल्युएशन इन इकानामिक्स	अप्रैल 1985 (साइक्लोस्टाइल)	200 प्रतियाँ
6.	हैन्डबुक ऑफ इवेल्युएशन इन इंग्लिश	मुद्रणार्थ भेजी गई	—
7.	हैन्डबुक ऑफ इवेल्युएशन इन ज्योग्राफी	मुद्रणार्थ भेजी गई	—
8.	टेस्ट आइटम्स इन इंग्लिश लैंग्वेज (माध्यमिक कक्षाओं के लिए)	मुद्रणार्थ भेजी गई	—
9.	रीड, अन्डरस्टैंड एण्ड आन्सर वाल्यूम 1 (केम्प्रीहेन्सिव टेस्ट्स इन इंग्लिश)	मुद्रण हेतु तैयार	—
10.	इवेल्युएशन एट द एलिमेंटरी स्टेज (ए बुक आफ रीडिंग्स)	जनवरी 1986 (मुद्रित)	1000 प्रतियाँ
11.	एजुकेशनल इवेल्युएशन	जनवरी 1986 (साइक्लोस्टाइल)	200 प्रतियाँ
12.	डेवलपिंग यूनिट टेस्ट (बायोलॉजिकल साइंसेज)	अप्रैल 1986 (साइक्लोस्टाइल)	100 प्रतियाँ
13.	द राजस्थान स्कीम आफ कम्प्रीहेंसिव इन्टरनल असेसमेंट (ई.आर.आई.सी प्रोजेक्ट रिपोर्ट)	अगस्त 1985 (साइक्लोस्टाइल)	100 प्रतियाँ



एन.सी.ई.आर.टी. का नीति अनुसंधान नियोजन एवं प्रोग्रामन विभाग (डी.पी.आर.पी.पी.) शिक्षा की सभी शाखाओं में हो रहे अनुसंधान कार्य और नवीन प्रक्रियाओं को अपने हाथ में लेता है, सहायता करता है, संवर्धन करता है और उनका समन्वय करता है और वह अनुसंधानकर्ता के विचारों और सूचनाओं के लिए एक निष्कासन गृह का काम करता है। 1985-86 के दौरान डी.पी.आर.पी.पी. द्वारा अपने हाथ में लिए गए कुछ मुख्य कार्यक्रमों के संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित हैं :

अनुसंधान और नवीन प्रक्रियाएं

1974 में स्थापित शैक्षिक अनुसंधान एवं नवीन प्रक्रिया समिति (एरिक) अनुसंधान में सहायता प्रदान करने वाला मुख्य तंत्र है। इस समिति के सदस्य शिक्षा के सुप्रसिद्ध अनुसंधानकर्ता, एस.आई.आर.एस.सी.ई.आर.टी. के प्रतिनिधि, एन.आई.ई.आर.आर.सी.ई. के सभी विभाग/एकक अध्यक्ष होते हैं। एन.आई.ई. के विभागों और आर.सी.ई. के प्रोफेसर इसके स्थायी आमंत्रित सदस्य होते हैं।

एरिक अनुसंधान की प्राथमिकता वाले क्षेत्रों का पता लगाने में सहायता करता है और यह एन.आई.ई. के विभागों, आर.सी.ई. क्षेत्र-एकक और सियेट द्वारा ली गई अनुसंधान परियोजनाओं तथा राज्य के अन्य अनुसंधान संस्थाओं और व्यक्तिगत शोध छात्रों को भी वित्तीय सहायता प्रदान करता है। एरिक परिषद में डॉक्टरेट संबंधी कार्य के लिए फैलोशिप देना है और साथ ही देश के अन्य क्षेत्रों में किए गए शोध पत्र के प्रकाशन की भी मंजूरी देता है।

राष्ट्रीय स्वरूप के अनुसंधानों की नई नीति

अतीत में परिषद ने अपनी एरिक योजना में आवश्यक निधि समेकित आधार पर मुहैया कराकर व्यक्तिगत अनुसंधानकर्ताओं और शिक्षाविदों द्वारा केवल नियत अवधि वाली अनुसंधान परियोजनाओं में सहायता करता था। हालांकि इस प्रकार की सहायता अभी भी व्यक्तिगत परियोजनाओं में की जा रही है पर एरिक ने प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्वरूप के अनुसंधानों का निष्पादन करने का निर्णय लिया है जिससे कि इन्हें पंचवर्षीय योजनाओं के संदर्भ में नीति-निर्णयों का आधार माना जा सके। अनुसंधान निष्पादित करने की नीति के अंतर्गत निम्नलिखित बातें आती हैं।

- (i) राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियां करके दबाव वाले क्षेत्रों का पता

लगाना और पता लगायी जाने वाली समस्याओं और मामलों की सूची तैयार करना।

- (ii) बहु-विषय वाले दलों द्वारा अनुसंधान अभिकल्पनाओं को तैयार करना।
- (iii) विशेष अनुसंधान कार्य करने के लिए आवश्यक विशेषज्ञमत और सुविधाओं को प्रदान करके अनुसंधान केन्द्रों का पता लगाना।

आशा की जाती है कि समय-अंतराल में एरिक का पता कार्य-क्षेत्र इतना बढ़ जाएगा कि वह प्राथमिकता वाले तीन क्षेत्रों यानी प्रारंभिक शिक्षा का सर्वोत्करण, शिक्षा का व्यावसायीकरण और पाठ्यचर्या विकास में राष्ट्रीय स्वरूप के अनुसंधान कार्य करने लगेगा।

शैक्षिक अनुसंधान का निदर्श

एरिक ने एक निदर्श की स्वीकृति दी है जिसे अनुसंधान, विकास, वितरण और अनुकूलन निदर्श (आर.डी.डी.ए.) कहा जाता है और जो नवीन प्रक्रिया के "आरंभक" अथवा "विकासकर्ता" के परिप्रेक्ष्य पर बल देता है। इस निदर्श में शैक्षिक संस्थाएं अनुसंधान, विकास और मार्गदर्शी परीक्षण में भाग लेती हैं। आशा की जाती है कि इसे लागू करने पर यह नीति-निर्णयों के लिए शैक्षिक अनुसंधान का आधार प्रदान करेगा।

एन.आई.ई. व्याख्यान माला

एन.आई.ई. व्याख्यान माला के अंतर्गत पांच सुप्रसिद्ध वक्ताओं को "वार्ता" देने के लिए आमंत्रित किया गया। ये वार्ताएं निम्नलिखित थीं:

वक्ता	विषय	तारीख
प्रो. जे.पी. स्टोलमा, भूगोल के प्रोफेसर, कम्प्यूटर की सहायता पश्चिमी मिकागन विश्वविद्यालय से भूगोल की पढ़ाई कलामाजु गिरमगान (संयुक्त राज्य अमेरिका)		22-7-85
प्रो. वी.जे. केली, शिक्षा विभाग, साउथ एम्प्टन विश्वविद्यालय, (संयुक्त राज्य)	दसवें दशक में विज्ञान पाठ्यचर्या	31-7-85

वक्ता	विषय	तारीख
श्री सुशील दास गुप्ता, और उनकी पार्टी पश्चिम बंगाल।	"स्वतंत्रता और शांति" के गीतों पर व्याख्यान एवं प्रदर्शन।	14-8-85
प्रॉ. एन.सी.गुप्ता, शैक्षिक मनोविज्ञान के प्रोफेसर बाल स्टेट विश्वविद्यालय, मुंसी, इंडियन (संयुक्त राज्य अमरीका)	चिन्ता, स्वसंकल्पना और निष्पत्ति में भारत-अमरीकी अंतर	29-8-85
प्रो. डा. जान डब्लू डोब्रोलेवस्की	वर्ग पर्यावरण शिक्षा	21-1-96
इंस्टीट्यूट, जाल्तोनिया सोडोविस्का, ए.जी.एच, 30-059 ककाऊ, पोलैण्ड	अंतर विषयी पर्यावरण शिक्षा की नई संकल्पना और अनुभव	

पूरी की गई परियोजनाएं

आलेख्य वर्ष में पूरी की गई अनुसंधान परियोजनाओं का विवरण नीचे सारणी में दिया गया है। इस सारणी के बाद परियोजनाओं से प्राप्त हुई मुख्य-मुख्य जानकारी का संक्षिप्त विवरण दिया गया है:

शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
विभिन्न राज्यों (दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र और तमिलनाडु) में 10+2 प्रणाली के अंतर्गत पाठ्यचर्या की अवस्थिति-एक अध्ययन	डा. जी.एल. अरोड़ा एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.)
जनजातीय और गैर-जनजातीय हाई स्कूल के छात्रों की संज्ञानात्मक शैली और संज्ञानात्मक योग्यता-एक तुलनात्मक अध्ययन	बी.डे. पटना विश्वविद्यालय, पटना
जनजातीय छात्रों के अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम की विधियाँ, प्रक्रियाओं और व्यवहारों का अध्ययन।	डा. एल.आर.एन. श्रीवास्तव और डा. बी.एस. गुप्ता
जनजातीय प्रतिवेश का पढ़ाई और प्राप्त पर पढ़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने की दृष्टि से इस प्रतिवेश के स्कूल की कक्षाओं के वातावरण का विश्लेषण।	एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) डा.एस.एन. उपाध्याय
उच्चतर माध्यमिक स्तर पर भौतिकी के प्रयोगों से अपनाए गए विवृत दृष्टिकोण और पारंपरिक	मनोविज्ञान में रीडर, रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर (मध्यप्रदेश)
	डा. जी.एस. गांगोली क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर (एन.सी.ई.आर.टी.)

शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
दृष्टिकोण की प्रभावितता का एक तुलनात्मक अध्ययन।	
(महाराष्ट्र में) वाणिज्य में +2 और +2 श्री एच.वी. गोखले जी.एस. कालेज के दशरथ पर शिक्षा के व्यावसायीकरण का अध्ययन	ऑफ कामर्स एण्ड एकोनॉमिक्स, नागपुर महाराष्ट्र
प्राथमिक स्तर की समाज विज्ञान और भाषा की पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त भाषा की बोधगम्यता का अध्ययन।	डा. आई.एस. शर्मा, एन.सी.ई.आर.टी.
उत्तर प्रदेश में निराशित गृहों में रहने वाले बच्चों की मार्गदर्शन संबंधी आवश्यकताएं।	डा. साहिब सिंह बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी
कोरियासी ब्लॉक के प्रथम ग्रेड पालेबालों में अनुपानहः एक मनोमितीय अन्वेषण।	डा. गुणवंत शाह और डा. शाशिकांत शाह दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सुरत

विभिन्न राज्यों (दिल्ली गुजरात, महाराष्ट्र, और तमिलनाडु में, 10+2 पद्धति के अंतर्गत पाठ्यचर्या की स्थिति-एक अध्ययन

मुख्य अन्वेषक : डा. जी.एल. अरोड़ा।

वर्तमान अध्ययन इस उद्देश्य से की गई थी कि 10+2 पद्धति में अपनायी पाठ्यचर्या विभिन्न राज्यों में किस प्रकार लागू की जा रही है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह बात मालूम करना था कि किस हद तक एन.सी.ई.आर.टी. प्रलेख (1975-76) में दिए गए मार्गदर्शन के साथ-साथ शिक्षा आयोग (1964-66) और "राष्ट्रीय पुनरीक्षण समिति (1977-78) की सिफारिश भारत के राज्यों और संघीय राज्यों में लागू हुई है और साथ ही वास्तविक स्कूल प्रतिवेश में निर्धारित पाठ्यचर्या किस प्रकार लागू की जा रही है - इस दृष्टि से विभिन्न राज्यों में निर्धारित पाठ्यचर्या का विश्लेषण करना था।

यह अध्ययन केवल चार राज्यों यानी दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में लागू करने के प्रथम स्तर तक अर्थात् राज्य शिक्षा विभाग और विद्यालय शिक्षा परिषद तक ही सीमित रहा। अध्ययन के लिए प्रत्येक राज्य से 15-20 स्कूलों को लिया गया। अध्ययन से यह पता चला कि विचाराधीन राज्यों और संघीय राज्यों में माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर तक की स्कूली शिक्षा में पाठ्यचर्या के मुख्य-मुख्य अभिलक्षणों का अनुपालन किया जा रहा है।

माध्यमिक स्तर

(1) त्रिभाषा फार्मूला गुजरात, दिल्ली और महाराष्ट्र में तो लागू किया जा रहा है पर यह फार्मूला तमिलनाडु में लागू नहीं किया जा रहा 79

है। दिल्ली में भी इस फार्मूला को लागू करना बंद कर दिया गया है। इन राज्यों में 5 से 7 विषय पढ़ाए जाते हैं।

(2) दिल्ली और तमिलनाडु में केवल दो भाषाओं यानी मातृभाषा और अंग्रेजी में ही परीक्षाएं दी जा सकती हैं जबकि गुजरात और महाराष्ट्र में तीन भाषाएं लागू की जाती हैं।

(3) चारों राज्यों में विज्ञान और समाज विज्ञान को पाठ्यचर्या का अनिवार्य अंग माना गया है।

(4) चारों राज्यों की माध्यमिक विद्यालय पाठ्यचर्या में एस.यू.पी.डब्ल्यू. को शामिल किया गया है और इस विषय पर कोई बाहरी परीक्षा नहीं ली जाती है। एस.यू.पी.डब्ल्यू. के कार्यकलापों के लिए स्कूल में शायद ही कभी स्थानीय विशेषज्ञों का लाभ उठाया जाता है। अलग-अलग राज्यों में एक.यू.पी.डब्ल्यू. की पढ़ाई के घंटे अलग-अलग हैं।

(5) सभी राज्य स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा पर अधिक जोर दे रहे हैं। स्कूलों के प्रिंसिपलों के विचार के अनुसार चारों राज्यों के छात्र शारीरिक शिक्षा और सह पाठ्यचर्या कार्यक्रमों में काफी रुचि लेते हैं।

(6) अलग-अलग राज्यों में पढ़ाए जाने वाले विषयों की महत्ता अलग-अलग है।

(7) सभी राज्यों का यह कहना है कि छात्रों को पाठ्य पुस्तकें समय पर उपलब्ध हों जाती हैं और पाठ्य पुस्तकों के मामले में छात्रों को कठिनाई नहीं होती है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर

(1) महाराष्ट्र में +2 स्तर उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों और हिंदी कालेजों दोनों में ही लागू है जबकि शेष तीन राज्यों में यह +2 स्तर केवल उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में ही लागू है।

(2) कुछ राज्यों में पाठ्यक्रम को विभिन्न विषय-समूहों में बांट दिया गया है।

(3) चार राज्यों में कोई पाठ्यचर्या अलग-अलग है। जहां दिल्ली, महाराष्ट्र और गुजरात में व्यावसायिक विषय पढ़ने वाले छात्रों को केवल एक भाषा पढ़नी होती है वहां तमिलनाडु में छात्रों को दो भाषाएं पढ़नी पड़ती हैं।

(4) अलग-अलग राज्यों में व्यावसायिक विषयों की संख्या अलग-अलग है। जहां दिल्ली और महाराष्ट्र में वाणिज्य गुप से संबद्ध व्यावसायिक पाठ्यक्रम में सबसे अधिक विषय रखे गए हैं वहां तमिलनाडु में कृषि से संबद्ध व्यावसायिक पाठ्यक्रम में सबसे अधिक विषय रखे गए हैं।

(5) दिल्ली और महाराष्ट्र में एस.यू.पी.डब्ल्यू. और कार्य अनुभव के अधीन एस.यू.पी.डब्ल्यू. को उच्चतर माध्यमिक पाठ्यचर्या का एक विषय माना गया है।

(6) सी.बी.एस.ई. ने व्यावसायिक पाठ्यक्रम को पढ़ने वाले छात्रों के लिए सामान्य आधार पाठ्यक्रम निर्धारित किया है। इसे एक अनिवार्य विषय माना गया है जिस पर अध्यापन के कुल समय का 13.3% समय देना

आवश्यक है। महाराष्ट्र और तमिलनाडु ने इस पाठ्यक्रम को अपनी पाठ्यचर्या में शामिल नहीं किया है। गुजरात में +2 स्तर के व्यावसायिक पाठ्यक्रम में "सामान्य ज्ञान" को अनिवार्य विषय माना गया है।

जनजातीय और गैर जनजातीय हाई स्कूल के छात्रों की संज्ञानात्मक शैली और संज्ञानात्मक योग्यता
मुख्य अन्वेषक : बी.डे

यह एक मार्गदर्शी अध्ययन है जिसे परस्पर विरोधी सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में किया गया है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य जनजातीय और गैर जनजातीय हाई स्कूल के छात्रों की संज्ञानात्मक शैली, सामान्य बुद्धि और सृजनात्मक चिन्तन में सांस्कृतिक अंतर का पता लगाना था। इस कार्य के लिए प्रतिदर्श रांची के दो मुख्य समुदायों ओरांव और मुंडा से लिए गए और गैर जनजातीय प्रतिदर्श के रूप में शुरू से ही रांची में पढ़ने वाले हिंदू छात्रों को लिया गया। इस तरह प्रतिदर्श में जनजातीय समूह के 160 छात्र (पुरुष, महिला, ईसाई और सुर्मा, ओरांव और मुंडा) और गैर जनजातीय समूह के 80 छात्र (पुरुष और महिला छात्रों के सवर्ण और अनुसूचित जाति) थे।

(1) गैर जनजातीय छात्रों की अपेक्षा जनजातीय छात्र क्षेत्र आश्रितता की ओर अधिक और क्षेत्र निराश्रितता की ओर कम अभिविन्यास है।

(2) अलग-अलग नृजाति, धर्म, लिंग और जाति के छात्रों का परीक्षण लेने पर उनके द्वारा प्राप्त किए गए अंकों में कोई संगतता नहीं थी।

(3) जनजातीय और गैर जनजातीय छात्रों और छात्राओं की क्षेत्र आश्रितता में अंतर था। जहां तक क्षेत्र-निराश्रितता का संबंध है जनजातीय छात्रों और छात्राओं में कोई अंतर नहीं पाया गया है, गैर जनजातीय छात्रों और जनजातीय छात्राओं में भी यह अंतर नहीं पाया गया है।

(4) जहां तक सृजनात्मक चिन्तन का संबंध है जनजातीय और गैर जनजातीय छात्रों में कोई अंतर नहीं है।

(ग) जनजातीय छात्रों के लिए अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम की विधियां, प्रक्रियाओं और व्यवहारों का अध्ययन

मुख्य अन्वेषक : डा. एल.आर.एन. श्रीवास्तव और डा. बी.एस. गुप्ता

विभिन्न राज्यों में चल रहे अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों की उनके उद्देश्यों के साथ-साथ सक्षमता मालूम करने की दृष्टि से और किसी भी कमी को मालूम तथा उसमें सुधार लाने के लिए उपाय सुझाने के लिए स्थिति अध्ययन किया गया। अध्ययन के लिए पांच जिलों यानी आंध्र प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान और पश्चिम बंगाल के 11 जिलों से 54 केन्द्र चुने गए।

अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए :

(1) नमूने के रूप में लिए सभी पांच राज्यों में 9-14 वर्ष की उम्र के उन बच्चों की सहायता करने के लिए, जिन्होंने या तो बीच में पढ़ाई छोड़ दी

है या अभी पढ़ायी ही शुरू नहीं की है, अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम किया था।

(2) इन पांच राज्यों द्वारा चलाए जा रहे कुल 13,362 अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में से 3,323 केन्द्र जनजातीय उपयोगिता क्षेत्रों में खोले गए। इन केन्द्रों में नामांकित छात्रों की कुल संख्या, 2,29,405 थी जिनमें आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल के अनौपचारिक केन्द्रों में नामांकित 52,275 जनजातीय बच्चे भी शामिल थे।

(3) पश्चिम बंगाल के प्राथमिक विद्यालय शिक्षा निदेशालय द्वारा चलाए जा रहे केन्द्रों को छोड़कर, जिनमें पढ़ायी दिन में होती है, अन्य सभी राज्यों के अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में अधिकांशतः शाम अथवा रात को पढ़ायी जाती है।

(4) केवल पश्चिम बंगाल को छोड़कर, जहां प्रत्येक केन्द्र में दो अनुदेशक हैं, अन्य सभी राज्यों के प्रत्येक केन्द्र में केवल एक अनुदेशक है। प्रत्येक केन्द्र में या तो प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक या वहां के शिक्षित युवक पढ़ाने का काम करते हैं। पश्चिम बंगाल के कुछ केन्द्रों में कुछ अनुदेशक स्नातक हैं।

(5) अलग-अलग राज्यों में अनुदेशकों के पारिश्रमिक अलग-अलग है। पारिश्रमिक रु. 50/- प्रति मास से लेकर रु. 100/- प्रति मास तक है।

(6) पांचों राज्यों के प्रत्येक केन्द्र में नामांकित बच्चों की संख्या अधिक से अधिक 20 से 30 है। जिनमें 72% जनजातीय बच्चे हैं।

(7) सभी केन्द्रों में औसत हाजिरी 60% से अधिक थी।

(8) राज्य की किसी भी एजेंसी में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या से संबद्ध कोई रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं था।

(9) बच्चों के लिए किसी भी पाठ्यतर कार्यक्रम/खेलकूद का आयोजन नहीं किया गया।

(10) इन केन्द्रों को ठीक ढंग से चलाने में समुदाय का कोई भी सहयोग प्राप्त नहीं हुआ। विभिन्न राज्यों में प्रत्येक बच्चे पर किया गया औसत खर्च निम्नलिखित था :

आंध्र प्रदेश में — 122/- रु, गुजरात में — 75 रु, मध्य प्रदेश में — 55/- रु, राजस्थान में 33/- रु, पश्चिम बंगाल (माध्यमिक) में 57 रु, पश्चिम बंगाल (प्राथमिक) में 46/- रु था।

(11) आंध्र प्रदेश, गुजरात, राजस्थान और पश्चिम बंगाल ने अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र के लिए एक अलग पाठ्यचर्या तैयार की है जबकि मध्य प्रदेश ने केन्द्रों में प्रयोग में लाने के लिए वर्तमान प्राथमिक पाठ्यचर्या को 18 एककों में बाँट दिया है।

† (12) क्योंकि राज्यों ने अपने केन्द्रों के लिए कोई विशेष अध्यापन सामग्री तैयार की थी अतः इन केन्द्रों को काफी पहले अध्यापन सामग्री उपलब्ध नहीं करायी गई।

(13) इन केन्द्रों में बोर्ड पर लिखकर और बोलकर बच्चों को पढ़ाया जाता है।

‡ (14) पांचों राज्यों के केन्द्रों में यहां तक कि जनजातीय क्षेत्रों वाले केन्द्रों में भी पढ़ायी क्षेत्रीय भाषा में करायी जाती है। इन राज्यों को आकस्मिक खर्च के मद में से अनियमित रूप से प्रतिवर्ष 100 रु से 1200 रु तक की मंजूरी दी जाती है।

जनजातीय प्रतिवेश में कक्षा के वातावरण का अध्ययन और प्राप्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने की दृष्टि से कक्षा के वातावरण का विश्लेषण:

— मुख्य अन्वेषक डा. एस.एन. उपाध्याय

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य कक्षा के वातावरण, के तीन पहलुओं यानी व्यक्ति-व्यक्ति में आपसी संबंध, लक्ष्य अभिविन्यास और तंत्र अनुरक्षण के बारे में जानकारी प्राप्त करना है जहां यह देखने की कोशिश की गई है कि कहीं वातावरण के भिन्न-भिन्न विभागों और क्षेत्रों के साथ अध्ययन और प्राप्ति का सहसंबंध भिन्न तो नहीं है। मध्य प्रदेश के बस्तर जिले के दंतावड़, जगदलपुर, नेयानपुर, कोन्डागारोन और कंकर तहसील के जनजातीय विद्यालयों से चुने गए आठवीं कक्षा के छात्रों पर अध्ययन किया गया।

अध्ययन से निम्नलिखित बातों का पता चला: —

(1) व्यक्ति-व्यक्ति का आपसी संबंध जितना अच्छा होगा निष्पत्ति उतनी ही अधिक होगी। यही बात अंतर्भावितता और संबंधन पर भी लागू होती है पर यह शिक्षक के सहयोग पर लागू नहीं होती।

(2) लक्ष्य अभिविन्यास और इसकी दो विधाओं — कार्य अभिविन्यास और प्रतिस्पर्धा का विद्यालय की निष्पत्ति के साथ धनात्मक सहसंबंध होता है।

(3) जहां तक तंत्र अनुरक्षण और परिवर्तन पहलू का संबंध है— इसका भी छात्रों की निष्पत्ति के साथ धनात्मक सहसंबंध है। फिर भी इसकी विभिन्न विधाओं में एक समान सहसंबंध नहीं दिखलाई पड़ता। मिसाल के तौर पर व्यवस्था और संगठन की विधाओं और नवीन प्रक्रिया का निष्पत्ति के साथ कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है, नियम स्पष्टता के साथ ऋणात्मक सहसंबंध है और शिक्षक नियंत्रण के साथ धनात्मक सहसंबंध है।

(4) कक्षा के वातावरण के विभिन्न पहलुओं/विधाओं और परीक्षा (विशेष रूप से आंतरिक परीक्षा) में प्राप्त अंकों के बीच कोई ऐसा सार्थक सहसंबंध प्राप्त नहीं हुआ जो आंतरिक परीक्षा की उच्च अविश्वसनीयता को प्रदर्शित करता हो।

(5) ऐसा प्रतीत होता है कि दक्षता प्राप्त करना कक्षा के वातावरण पर निर्भर नहीं करता।

भौतिकी का प्रयोग करने में विवृत दृष्टिकोण की प्रभाविता का तुलनात्मक अध्ययन

— मुख्य अन्वेषक: डा. जी.एस. गांगुली

प्रयोगशाला में प्रयोग करते समय विवृत दृष्टिकोण, अपनाने की सिफारिश प्रो. रईस अहमद और गांगोटी ने की है। वर्तमान अनुसंधान कार्य

करने का उद्देश्य पारंपरिक विधि के साथ-साथ निर्देशित विवृत दृष्टिकोण से किए गए कुछ प्रयोगों की प्रभाविता के बारे में जानकारी प्राप्त करना है। यह अध्ययन दिल्ली के कुछ चुने हुए विद्यालयों के +2 स्तर के बच्चों पर किया गया। यह अध्ययन 92 छात्रों (66 लड़कें और 26 लड़कियों) पर किया गया।

इस अध्ययन से प्राप्त जानकारी निम्नलिखित है:

(1) निष्पत्ति परीक्षण और कौशल परीक्षण में प्रयोगशाला पारंपरिक समूह की अपेक्षा निर्देशित विवृत समूह का निष्पादन बेहतर रहा।

(2) हालांकि आमतौर पर सर्जनात्मक योग्यता दृष्टिकोण पर निर्भर नहीं करती फिर भी सृजनता के पठनप्रवाह पहलू के विकास में विवृत ढंग से किए गए प्रयोग से वृद्धि आ जाती है।

(3) निष्पत्ति परीक्षण और कौशल परीक्षण में प्राप्त औसत अंक के संदर्भ में निर्देशित विवृत समूह के उच्च बौद्धिक स्तर वाले छात्र पारंपरिक प्रयोगशाला समूह के उच्च बौद्धिक स्तर वाले छात्रों की अपेक्षा अधिक उत्तम पाए गए और निर्देशित विवृत समूह के निम्न बौद्धिक स्तर वाले छात्र पारंपरिक प्रयोगशाला समूह के निम्न बौद्धिक स्तर वाले छात्रों की अपेक्षा अधिक उत्तम पाए गए। यह भी देखा गया कि स्वयं निर्देशित विवृत समूह के और पारंपरिक प्रयोगशाला समूह के उच्च बौद्धिक स्तर के छात्रों और निम्न बौद्धिक स्तर के छात्रों में काफी अंतर है। इस तथ्य से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि दो दृष्टिकोणों अर्थात् निर्देशित विवृत दृष्टिकोण और पारंपरिक प्रयोगशाला दृष्टिकोण पर छात्रों के बौद्धिक स्तर का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(4) क्रमांक 3 के परिणामों से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि निर्देशित विवृत दृष्टिकोण और पारंपरिक प्रयोगशाला दृष्टिकोण पर छात्रों के सामाजिक आर्थिक हैसियत का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(5) क्रमांक 3 और 4 के परिणामों से यह पता चलता है कि इस परियोजना के दो दृष्टिकोणों पर छात्रों की सर्जनात्मक योग्यता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(6) निष्पत्ति परीक्षण और कौशल परीक्षण में प्राप्त औसत अंक के संदर्भ में निर्देशित विवृत समूह के लड़कों की अपेक्षा निर्देशित विवृत समूह की लड़कियों का निष्पादन अधिक उत्तम पाया गया और पारंपरिक प्रयोगशाला समूह की लड़कियाँ अधिक उत्तम पायी गईं। इससे यह भी पता चलता है कि निर्देशित विवृत दृष्टिकोण और पारंपरिक प्रयोगशाला दृष्टिकोण पर छात्रों के लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

+2 और +3 स्तर के वाणिज्य की शिक्षा के व्यावसायीकरण का अध्ययन (महाराष्ट्र)

मुख्य अन्वेषक: एच.वी. गोखले

इस अध्ययन के माध्यम से +2 और +3 स्तर के वाणिज्य की व्यावसायी शिक्षा की वर्तमान पद्धति का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है। इसके आंकड़े महाराष्ट्र के नागपुर, औरंगाबाद, पुणे और धाना जिले के छात्रों शिक्षकों और नियोक्ताओं से लिए गए हैं। अध्ययन से निम्नलिखित बातों का पता चला है:—

छात्र, शिक्षक, नियोक्ता और निशेषज्ञों ने आमतौर पर इस व्यावसायी पाठ्यक्रम को सामान्य शिक्षा के मुकाबले अधिक उपयोगी माना है। क्योंकि +2 स्तर के वर्तमान व्यावसायी पाठ्यक्रम छात्रों को नौकरी के लिए अथवा स्वयं कोई काम करने के लिए तैयार नहीं करता, अतः +3 स्तर के प्रस्तावित विशिष्ट व्यावसायी पाठ्यक्रम को, जिसमें व्यवसाय के व्यावहारिक पहलू पर अधिक ध्यान दिया गया है, अधिक उपयोगी माना गया है। संकाय के अनुसार भूमिकाओं का वर्गीकरण और संकाय के अनुसार भारती बोर्ड शिक्षा के साथ नौकरी को जोड़ने में अधिक उपयोगी सिद्ध होंगे।

प्राथमिक स्तर की विज्ञान, समाज-विज्ञान और भाषा की पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त भाषा की व्यापकता का अध्ययन

— मुख्य अन्वेषक: डा. आई.एस. शर्मा

वर्तमान अध्ययन में राजस्थान में ग्रेड तीन स्तर की विज्ञान, समाज विज्ञान और हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त भाषा की व्यापकता का पता लगाने का प्रयास किया गया है। इन तीन विषयों के पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त भाषा और ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में बच्चों की बोलचाल तथा पढ़ने लिखने की भाषा का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। विज्ञान, समाज विज्ञान और हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त भाषा की व्यापकता मालूम करने के लिए 500 (250 ग्रामीण और 250 शहरी) छात्रों पर परीक्षण किए गए।

भाषायी विश्लेषण से निम्नलिखित बातों का पता चला:—

(1) तीन पाठ्यपुस्तकों में जिस भाषा का प्रयोग किया गया है वह ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के बच्चों की भाषा से बिल्कुल मेल नहीं खाती।

(2) पाठ्य पुस्तकों, विशेष रूप से समाज विज्ञान की पाठ्य पुस्तकों में बच्चों की भाषा संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अधिक क्रियाओं का प्रयोग होना चाहिए था।

(3) जहां तक क्रिया विशेषण का प्रश्न है: विज्ञान, समाज विज्ञान और हिंदी की पाठ्य पुस्तकों में काफी समानता नजर आती है।

(4) तीन पाठ्य पुस्तकों में काफी विशेषण का प्रयोग किया गया है और ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के बच्चों की भाषा में भी काफी विशेषण का प्रयोग किया जाता है।

(5) विज्ञान और समाज विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में संमिश्र वाक्यों का प्रयोग बहुत कम हुआ है जो कि एक अच्छी बात है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के बच्चे अपनी बोलचाल और पढ़ने-लिखने की भाषा में जिस प्रकार की सरल वाक्यों का बहुतायत में प्रयोग करते हैं वहां हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त सरल वाक्य से मेल नहीं खाती। लगभग यही बात विज्ञान और समाज विज्ञान की पाठ्य पुस्तकों में प्रयुक्त वाक्यों पर भी लागू होती है।

(6) पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त संयुक्त एवं संमिश्र वाक्यों में जितनी संख्या में शब्दों का प्रयोग किया गया है वह बच्चों की बोलचाल और पढ़ने लिखने की भाषा में प्रयुक्त शब्दों की संख्या से काफी मेल खाती है।

(7) हिंदी की पाठ्यपुस्तक और अन्य दो पाठ्य पुस्तकों में काफी असंगतता है।

(8) यह देखा गया है कि पाठ्यपुस्तकों में और शहरी तथा ग्रामीण बच्चों की बोलचाल और पढ़ने-लिखने की भाषा में प्रयुक्त की गई अनेक संज्ञा, विशेषण, क्रिया और क्रिया-विशेषण अद्वितीय हैं अर्थात् इनका प्रयोग तो केवल पाठ्यपुस्तकों में किया जाता है या शहरी अथवा ग्रामीण बच्चे इनका प्रयोग करते हैं।

(9) ग्रामीण और शहरी बच्चों की बोलचाल और पढ़ने-लिखने की भाषा में प्रयुक्त वाक्यों की संख्या में तथा पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त वाक्यों की संख्या में काफी अंतर होता है।

(10) शहरी बच्चों और ग्रामीण बच्चों की भाषा में प्रयोग किए जाने वाले शब्दों में काफी अंतर होता है।

(11) ग्रामीण और शहरी विद्यालय की विज्ञान, समाज विज्ञान और हिंदी की पाठ्य पुस्तकों में प्रयुक्त भाषा की व्यापकता में काफी अंतर होता है जबकि शहरी बच्चों और ग्रामीण बच्चों की विज्ञान की पाठ्यपुस्तक की भाषा-स्कोर की व्यापकता में कोई खास अंतर नहीं होता।

उत्तर प्रदेश की निराश्रित गृहों में रहने वाले बच्चों की मार्गदर्शन संबंधी आवश्यकताएं

मुख्य अन्वेषक: डॉ. साहिब सिंह

वर्तमान अध्ययन में निराश्रित गृहों में रहने वाले बच्चों की आवश्यकताओं को मालूम करने और इन बच्चों के लिए एक मार्गदर्शन कार्यक्रम तैयार करने का प्रयास किया गया है। इस संबंध में निम्नलिखित शोध प्रश्न उठाए गए:—

(1) निराश्रित गृहों में रहने वाले बच्चों की बुद्धि निष्पत्ति, अभिरुचि और समायोजन के संबंध में उनकी क्या-क्या आवश्यकताएं हैं?

(2) ये बच्चे अपनी क्षमता का अधिक से अधिक विकास कर सकें इसके लिए उन्हें किस प्रकार का मार्गदर्शन देना चाहिए? वर्तमान अन्वेषण के प्रतिदर्श के रूप में उत्तर प्रदेश के 25 निराश्रित गृहों में रहने वाले 209 लड़कों और 201 लड़कियों को लिया गया है। इस अध्ययन में कक्षा 6, 7 और 8 में पढ़ने वाले निराश्रित गृहों के लगभग सभी बच्चों को लिया गया है। वर्तमान अध्ययन से निम्नलिखित बातों का पता चला है:

(1) निराश्रित गृहों में लगभग 20 से 30 प्रतिशत बच्चे बीमारी, सिरदर्द, थकावट, अनिद्रा और दैहिक अपंगता से पीड़ित रहते हैं। निराश्रित गृहों के लगभग एक-तिहाई बच्चों को रोग की रोक-थाम, देखभाल और उपचार की चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध नहीं होतीं।

(2) निराश्रित गृहों के लगभग आधे बच्चों को खाना, कपड़ा और आवास जैसी जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति पूरी तरह से नहीं हो पाती।

(3) निराश्रित गृह के अधिकांश बच्चों के अन्दर असुरक्षा की भावना, चिन्ता, कुंठा, बोरियत और छद्म श्रेष्ठता की भावना के कारण व्यक्तिगत और मनोवैज्ञानिक संबंध ठीक नहीं रहते। लड़कों की अपेक्षा लड़कियों पर इन तनावों का अधिक असर पड़ता है।

(4) निराश्रित गृहों का वातावरण सद्भावपूर्ण सामाजिक संबंध बनाने के लिए उपयुक्त नहीं है।

(5) निश्चय ही पाठ्यचर्या और सह-पाठ्यचर्या कार्यक्रम निराश्रित गृहों के अधिकांश बच्चों के अनुकूल नहीं होते।

(6) आमतौर पर कक्षाओं में पढ़ायी इस ढंग से नहीं होती कि वह निराश्रित गृहों के 20 प्रतिशत की आवश्यकताओं की पूर्ति करती हो। शिक्षकों को उनकी समस्याओं को हल न करने का रवैया, कक्षा में चर्चाओं की कमी, घर के लिए दिए काम को ठीक से न जांचना, कमियों को दूर करने के उपायों की कमी, और मूल्यांकन में पक्षपात करना जैसी कुछ ऐसी शिकायतें हैं जिन्हें ये बच्चे बारबार करते हैं।

(7) जहां तक पढ़ने और पढ़ाने वालों के बीच के संबंध का प्रश्न है वहां सामाजिक अंतर का प्रभुत्व हो जाता है।

(8) अधिकांश बच्चों की यही राय है कि कक्षा में पढ़ायी का वातावरण काफी घातिजनक रहता है।

(9) निराश्रित गृहों से आने वाले लगभग 20% बच्चों के पढ़ने के ढंग में व्यवस्था और तालमेल की काफी कमी रहती है। उनकी पढ़ायी काफी अनियमित ढंग से होती है।

(10) निराश्रित गृहों से आने वाले अधिकांश बच्चे व्यावसायिक मार्गदर्शन की आवश्यकता का अनुभव करते हैं।

(11) बुद्धि परीक्षण में 12 और 15 वर्ष की उम्र की लड़कियों की अपेक्षा इस उम्र के लड़कों का निष्पादन बेहतर होता है।

(12) ग्रेड स्तर (6) और (7) पर लड़कों का औसत बुद्धि प्राप्तांक लड़कियों के प्राप्तांक की अपेक्षा काफी अधिक होता है।

(13) पाठ्यचर्या के सभी विषयों के विभिन्न स्तरों पर लड़के और लड़कियों के निष्पत्ति अंक में काफी अंतर होता है।

(14) सभी ग्रेड स्तरों में लड़कियों की अपेक्षा लड़के अपना तालमेल अच्छी तरह से बैठा लेते हैं। इन बच्चों द्वारा महत्ता के क्रम में पढ़े जाने वाले विषय: हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, सामान्य विज्ञान और समाज विज्ञान।

(15) 90% से भी अधिक बच्चे सरकारी सेवा में जाना चाहते हैं। लड़कियों की रुचि नर्सिंग में जाने की होती है।

चोर्यासी ब्लॉक के प्रथम ग्रेड के बच्चों में— डिस्क्रेलकुलिया

एक मनोमितीय अन्वेषण:

मुख्य अन्वेषक: डा. गुणवंत शाह और डा. शशिकांत शाह

वर्तमान अध्ययन में (सुरत जिले के) चोर्यासी ब्लॉक के प्रथम ग्रेड के बच्चों में डिस्क्रेलकुलिया मालूम करने और इससे संबंधित संभाव्य मनोवैज्ञानिक पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने की दृष्टि से कार्य का पूरा लेखा-जोखा रखा गया है। अध्ययन का उद्देश्य डिस्क्रेलकुलिया से ग्रस्त बच्चों का पता लगाना, अंकगणित में निष्पत्ति और तीन मनोविज्ञान कारकों के बीच के संबंधों का अध्ययन करना, से अधिकतर पीड़ित रहने वाले बच्चों की वृत्ति के बारे में

अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना और प्रथम ग्रेड के बच्चों में डिस्क्रेलकुलिया को कम करने के लिए उपाय सुझाना है।

897 बच्चों से प्राप्त हुए आंकड़ों के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गए: -

(1) बच्चे पारिवारिक वातावरण, हीन भावना, अलगाव, आत्म-विश्वास की कमी आदि से संबद्ध समस्याओं से ग्रस्त पाए गए। माँ-बाप और बच्चों के बीच भी ऐसे स्वस्थ संबंध नहीं थे कि वह बच्चों को अच्छी पढ़ाई के लिए प्रेरित करता।

(2) यह देखा गया है कि अंकगणित में बच्चों की औसत निष्पत्ति काफी कम रही है। मूल्यांकन परीक्षण लेने पर यह पाया गया कि जहाँ प्राइवेट स्कूलों के बच्चों द्वारा प्राप्तांक सबसे अधिक थे वहीं जिला पंचायत स्कूलों के बच्चों द्वारा प्राप्तांक सबसे कम थे।

(3) जहाँ तक अंकगणित में प्राप्तांक का प्रश्न है, लड़कियों की अपेक्षा लड़कों की निष्पत्ति काफी अच्छी रही है। निष्पत्ति प्राप्तांक और बुद्धिलब्धि का सहसंबंध हालांकि घनात्मक था पर था काफी कम। कुछ बच्चों के बुद्धिलब्धि तो औसत से भी अधिक थे जबकि उनके निष्पत्ति प्राप्तांक काफी कम थे।

(4) मूल्यांकन का उत्तर देते समय डिस्क्रेलकुलिया के बच्चों ने दो प्रकार के व्यवहार प्रदर्शित किए पहला यह कि उत्तर पत्र पर कुछ न लिखना। (खाली छोड़ देना) और दूसरा यह कि प्रश्नों के उत्तर लिखने के बजाय प्रश्न पत्र को पूरा का पूरा उत्तर लेना। गलतियों का विश्लेषण करते समय यह पाया गया कि बिना सोचे समझे और पहले से बिना सोचे-विचारे ही उत्तर दिए गए हैं।

(5) व्यक्ति की वृत्ति से यह पता चलता है कि बच्चों की पढ़ाई में पिछड़पन आने का कारण बुद्धिलब्धि विद्यालय का वातावरण, शिक्षक की प्रवृत्ति और पारिवारिक वातावरण के अलावा और भी कुछ हैं जो बच्चों की निष्पत्ति पर काफी प्रभाव डालता है। इन सभी कारकों पर सावधानी से विचार करना है।

परियोजनाएं

आलोच्य वर्ष में इकतीस विभागीय और बारह विभागेतर की अनुसंधान परियोजनाएं चलाई गईं। परियोजनाओं की सूची नीचे दी गई है:

परियोजना का शीर्षक

मुख्य अन्वेषक

विभागीय परियोजना

उत्तर प्रदेश की दसवीं कक्षा के अनुसूचित जाति डा. बी.एस. गुप्ता

के छात्रों और गैर अनुसूचित जाति के छात्रों की

शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

प्राथमिक स्तर के जनजातीय छात्र विषय डा. बी.एस. गुप्ता

परियोजना का शीर्षक

मुख्य अन्वेषक

में कमजोर हैं और किस विषय में मजबूत यह

मालूम करने के लिए उनके विषयवार निष्पत्ति

का अध्ययन।

बच्चों की शिक्षा और उनकी सामाजिक आर्थिक डा. बी.पी. अवस्थी

गतिशीलता के संबंध का अध्ययन।

शिक्षा के अनुदेशात्मक विकास एवं सामाजिक डा. बी. मेहदी

उद्देश्यों की दृष्टि से 10+2 स्तर की पाठ्यचर्या

का मूल्यांकन एक प्राथमिक अध्ययन।

छानाबदोश जनजाति समुदाय के लिए डा. (कु.) सरोजिनी. बिसारिया

आवश्यकता पर आधारित, पारिस्थितिक

निर्धारित और परिवर्तन अभिविन्यास शिक्षा

प्रणाली

शिक्षा के व्यावसायीकरण के लिए लड़कियाँ और डा. सुरजा कुमारी

महिलाओं के स्थानीय क्षेत्रीय आवश्यकताओं

पर आधारित व्यवसायों की पहचान।

जनजातीय प्राथमिक विद्यालयों और डा. एल.आर.एन. श्रीवास्तव

गैर-जनजातीय प्राथमिक विद्यालयों की भौतिक

सुविधाओं का एक तुलनात्मक अध्ययन।

शिक्षा के व्यावसायीकरण के लिए लड़कियों और डा. (कु.) एस. बिसारिया

महिलाओं के स्थानीय क्षेत्रीय आवश्यकताओं पर

आधारित व्यवसायों की पहचान।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय विद्यालय शिक्षा डा. जी.एस. अद्या

की समस्याओं का अध्ययन।

माध्यमिक विद्यालयों गुरुकुलों तथा पारम्परिक डा. के.के. मिश्रा

संस्कृत पाठशालाओं के छात्रों की संस्कृत विद्या

की संप्राप्ति का मूल्यांकन।

शिक्षक गुटका "नो द प्लॉट एराउण्ड यू" का डा. (श्रीमती) जी.आर. घोंष

मुद्रण।

(सामाजिकता विकलांग लड़कियों सहित) डा. सुरजा कुमारी

लड़कियों की गणित में अवनिष्पत्ति के

डिटर्मिनेंट।

उपचारी उपाय के रूप में स्तर की गणित के डा. एस.सी. दास

शिक्षण में सरल विधियों और तकनीकों के

संकल्पनात्मक साधारण वृद्धियों का विश्लेषण।

संघीय राज्य दिल्ली के, विभिन्न प्रबंध के अंतर्गत डा. एस.एल. गुप्ता

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षकों को

प्रशिक्षित करने में होने वाली निजी लागत का

एक तुलनात्मक अध्ययन-शिक्षा की अर्थव्यवस्था

का एक अध्ययन।

परियोजना का शीर्षक

मुख्य अन्वेषक

अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में अध्यापन सामग्री का मूल्यांकन।	डा. (श्रीमती) एन. शुक्ला
अनौपचारिक शिक्षा के त्रिभिन्न दृष्टिकोणों/व्यवहारों की पहचान।	डा. एच.एल. शर्मा
शिलांग (मेघालय) के आस-पास के हाई स्कूल के जनजातीय बच्चों का शैक्षिक व्यावसायिक नियोजन, शैक्षणिक निष्पत्ति और चुने हुए मनोवैज्ञानिक प्राचलों एवं घर की पृष्ठभूमि से संबद्ध प्राचलों का अध्ययन।	डा. (श्रीमती) पी.एच. मेहता
शैक्षणिक एवं व्यावसायिक विषयों में छात्रों के व्यावसायिक व्यवहार और व्यावसायिक समायोजन का अध्ययन करने के लिए अनुसंधान का एक कार्यक्रम।	डा. स्वदेश मोहन और डा. निर्मला गुप्ता
(तीसरी कक्षा से पांचवी कक्षा तक) प्राथमिक स्तर के पर्यावरण अध्ययन में निकष संबंधी परीक्षणों का विकास।	डा. प्रीतम सिंह
राजस्थान के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के बच्चों की शैक्षिक सुविधाओं का प्रतिदर्श- सर्वेक्षण।	डा. एस.एम. भार्गव
शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े नौ राज्यों में प्राथमिक स्तर पर बीच में पढ़ाई छोड़ देने और आगे पढ़ाई न करने का प्रतिदर्श अध्ययन।	डा. एस.एम. भार्गव और श्री जे.एस. गेवाल
एन.एफ.ई. के केन्द्रों से संबंधित अध्ययन सामग्री के अध्यापन कौशल और विकास की पहचान।	श्री एस.एन.एल. भार्गव और श्री जे.एस. गेवाल
प्राथमिक स्तर पर प्रतिवेश दृष्टिकोण लागू करने के लिए शिक्षण कौशल और प्रशिक्षण नीति की पहचान का एक शोध अध्ययन।	डा. जे.एस. राजपूत
मध्यप्रदेश के जैविकी शिक्षकों के लिए साधन सामग्री तैयार करने के लिए भोपाल के फ्लोरा का अध्ययन।	डा. पी.के. खन्ना
स्वच्छ जल में रहने वाले जीवों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए (स्वच्छ जल जैविकी की एक शिक्षक-पुस्तिका)।	डा. (श्रीमती) चन्द्रलेखा रघुवंशी
विज्ञान में परिकल्पना निर्माण और परिकल्पना परीक्षण संबंधी योग्यताओं के विकास के लिए स्व-अधिगम प्रक्रिया पर आधारित सामग्री की सक्षमता का विकास मान्यीकरण और परीक्षण।	डा. ए. ग्रेवाल
किशोरावस्था में विज्ञान का विवेचन करने की	प्रो. एन. वैद्य

परियोजना का शीर्षक

मुख्य अन्वेषक

योजनाओं का निर्धारण और विकास।	
उच्च/उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कार्य-अनुभव/व्यावसायिक कार्यक्रम के रूप में खाद्य मशरूमों का सर्वेक्षण और संवर्धन।	डा. जी.वी. कानूनगो
उड़ीसा में जलवायु परिस्थिति तंत्र का संरक्षण।	
विभागेतर परियोजनाएं	
ग्रामीण समुदाय की महिला शिक्षा कार्यक्रम में महिला स्वास्थ्य कार्मिक के रूप में भाग लेने की संभाव्यता।	प्रो. पूर्णिमा माथुर, नई दिल्ली
मेढक जिले की लड़कियों और महिलाओं के लिए स्थानीय एवं क्षेत्रीय आवश्यकताओं पर आधारित व्यावसायों की पहचान और मेढक जिले में इन विद्यालयों का स्थान-निर्धारण।	डा. डोली शिर्नोय, हैदराबाद
पठन सुधार कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए पांचवी, छठी और सातवीं कक्षा के छात्रों का गुजराती में लिए जाने वाले मूक पठन बोध परीक्षणों का निर्माण और मानकीकरण।	डा. बी.वी. पटेल, बल्लभ विद्यानगर
+2 स्तर और पूर्व स्नातक स्तर पर हिंदी की लघु कहानियों की मूल्यांकन युक्ति और शिक्षण शशिकान्ता बोहरा, नई दिल्ली।	डा. आर.एस. शर्मा और डा. (कु.) विधि।
आंध्र प्रदेश के मदितमना बच्चों के लिए विशिष्ट डा. (श्रीमती) डोलोशेर्नोच, हैदराबाद	
शिक्षा कार्यक्रम स्कूलों और सेवाओं का मूल्यांकन संबंधी सर्वेक्षण।	
प्रतिस्पर्धा के अभिप्रेरण पर और पहल के अभिप्रेरण पर आधारित शिक्षण विधियों की सापेक्ष प्रभाविता का तुलनात्मक अध्ययन।	प्रो. एस.बी. मल्हर्, जलगाँव
गाँव के युवाओं के जीवन से संबद्ध विषयों पर आत्म अधिगम की नीतियों और विकल्प निदर्श के विकास से संबद्ध ग्रामीण समृद्धि शिक्षा परियोजना।	डा. एम.के. उपसानी, पुणे।
सर्जनात्मक प्रशिक्षण के साथ अध्यापन सामग्री में संरचना की अनोन्य क्रिया।	डा. (श्रीमती) सुदेश गाखर चंडीगढ़
सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक बंधन वाले पूर्व विद्यालय बच्चों के पूरक भाषा कार्यक्रम के विकास संबंधी नीतियां।	डा. जी. पंकजम मद्राई
कालेज के प्रतिभाशाली छात्रों का अनुवर्ती अध्ययन।	डा. गिरजेश कुमार, भुसाबाद
गांव के कामकाजी बच्चों की शिक्षा जारी रखने पर प्रयोग।	डा. एम.जी. माली, गरगोटा

परियोजना का शीर्षक

मुख्य अन्वेषक

उड़ीसा के जनजातीय स्कूल छात्रों के सामाजिक डा. गिरीश पटेल फुलबानी
मनोविज्ञान पर शिक्षा का प्रभाव।

नई परियोजनाएं

इस योजना के अंतर्गत वित्तीय सहायता देने के लिए बारह शोध
परियोजनाएं स्वीकृत की गईं परियोजना की सूची निम्नलिखित है:

परियोजना का शीर्षक

मुख्य अन्वेषक

बिभागीय परियोजना

हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, माध्यप्रदेश और उड़ीसा श्री पुष्पेन्द्र कुमार
के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक डी.एम.ई.एस.डी.पी.यू.
विद्यालयों के भवन का गहन अध्ययन।
माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में डा. के.एन. राव,
पाठ्यचर्या से संबद्ध प्रयोगशाला डी.एम.ई.एस.डी.पी.यू.
सुविधाओं का गहन अध्ययन।
माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में डा. सी.एल. कौल
चार विषयों की पुस्तकालय सुविधाओं और डी.एम.ई.एस.डी.पी.यू.
उनकी उपयोगिता का प्रतिदर्श अध्ययन।
समाज के कमजोर वर्गों की शैक्षिक सुविधाओं डा. एस.एम. भार्गव
का सर्वेक्षण। डी.एम.ई.एस.डी.पी.यू.
विद्यालयों के भिन्न और माध्यमिक स्तर की डा. सतवीर सिंह
शिक्षण सामग्री का गहन अध्ययन। डी.एम.ई.एस.डी.पी.यू.
एन.एफ.ई. की प्रशासनिक बांके का अध्ययन डा. बी. अरोड़ा
और मॉनिटरिंग तथा पर्यवेक्षण की योजना। डी.पी.एस.डी.डी.

बिभागेतर परियोजना

भारत के विकलांग बच्चों का अभिज्ञान और डा. एल.ती. त्रिपाठी
एक प्रभावी रुस्तक्षेप का विकास। गोरख विश्वविद्यालय
"बैंक ऑफ गुजराती" प्रश्न का निर्माण। डा. एस.एल. मोदी भावनगर
पूर्व-विद्यालय बच्चों की शिखा और व्यक्तित्व के श्री भूदर सिंह सुल्तानपुर
लिए उनकी सर्जनात्मक चिन्तन योग्यताओं की
युक्तियों का विकास।
मणिपुर के विद्यालयों में प्राथमिक स्तर की श्री जी.जे. गणेश्वर
गढ़ाधी बीच में छोड़ देने और आगे न पढ़ने के
कारणों का अध्ययन।

परियोजना का शीर्षक

मुख्य अन्वेषक

प्राथमिक विद्यालय के बच्चों का विद्यालय में डा. एम.वी. बुच, बड़ौदा
निष्पादन और पारिवारिक पृष्ठभूमि संबंधी
संज्ञानात्मक अभिलक्षणों का अध्ययन।
जनजाति के लोग और शिक्षा। क्षेत्रीय मुख्य स्ट्रीम हेमलता तेलसरा, विद्याभवन, जी.एस
में समेकन की प्राप्ति कालेज, उदयपुर

पी.एच.डी. थीसिस/मोनोग्राफ का प्रकाशन अनुदान

एरिक की सहायता से निम्नलिखित पी.एच.डी. थीसिस/मोनोग्राफ प्रकाशित
हुए:

शीर्षक

लेखक का नाम

प्रोग्रामिंग अनुदेश की नीति डा. एस.पी. मलिक केन्द्रीय शैक्षिक
टेक्नोलॉजी संस्थान। एन.सी.ई.आर.टी.
प्रभावी माध्यम के जरिए बेहतर शिक्षण डा. शशिकान्त शाह, सूरत (गुजरात)
निष्पत्तियों के संबंध में पठन-योग्यताओं का डा. प्रभजोत, दिल्ली।
मनोवैज्ञानिक अध्ययन।
भारत में शिक्षा के सुअवसर की समता : एक डा. सुरभी पी. पटेल,
कल्पना अधवा वास्तविकता। एन.सी.ई.आर.टी.
चिन्ता के सहसंबंध डा. आर.एस. सिंह, देवरिया,
उत्तर प्रदेश
भारतीय प्रशिक्षक के कुछ अभिलक्षण डा. जे.सी. गोयल, भूटान
उद्दीपन प्रस्तुतिकरण और व्यक्तित्व प्रत्यक्षण डा. एम.एल. गुप्ता, गोरखपुर
अद्वेता को वाचस्पति का योगदान डा. वी.एन. शेषागिरि राव, मैसूर
हाई स्कूल के छात्रों में वंचन की भावना ऊषा उपाध्याय, वाराणसी
अनुसूचित जाति के बच्चों के लिए शिक्षक और डा. एस.के. यादव, एन.सी.ई.आर.टी.
शैक्षिक योजनाएं
व्यक्तित्व और शैक्षणिक प्रायुक्तिक अनुमोदन डा. जी.एन. प्रकाश, क्षेत्रीय शिक्षा
कालेज, भोपाल डा. एन.के.एम.
त्रिपाठी, गोरखपुर
कालेजर उपलब्धक डा. एस.बी. अदाबल, इलाहाबाद
बीजगणित में निष्पत्ति और डा. सी.पी.एस. चौहान वाराणसी
संरचना
शिक्षकों में आत्म वास्तविकीकरण डा. अमूल्य खुराना, दिल्ली
बच्चों की जाति और धर्म की जागरूकता डा. रामकल्प तिवारी
बच्चों की बोली में गड़बड़ी डा. अश्विनी कुमार श्रीवास्तव, आगरा
ब्रिटेन और भारत में विशेष शिक्षा डा. एन.के. जंगीरा
दृश्यलेख समस्याएं, व्यवहार परिप्रेक्ष्य एन.सी.ई.आर.टी.

पी.एचडी थीसिस/मोनोग्राफ के प्रकाशन में परिषद की सहायता देने का अनुमोदन

शीर्षक	लेखक का नाम
प्रारंभिक विद्यालय के बच्चों में वैज्ञानिक संकल्पना की वृद्धि का अध्ययन	डा. एस.सी.आर्य, भोपाल
भाषा, समाज विज्ञान और विज्ञान के शिक्षकों का गैर शाब्दिक कक्षा अन्योन्यक्रिया प्रतिमान	डा. राकेश जैन, सागर (म.प्र.)
बच्चों की वैज्ञानिक सर्जनकता पर उनके घर और विद्यालय के वातावरण का प्रभाव।	डा. करुण शंकर मिश्र, इलाहाबाद
मुरादाबाद के विद्यालय में अनुशासन, संगठनात्मक वातावरण, लड़कें-लड़कियों के अनुपात और विद्यालय की स्थिति जैसे व्यक्तिगत कारकों के संबंध में प्रभावशाली और प्रभावहीन हाई स्कूल शिक्षकों का एक तुलनात्मक अध्ययन।	डा. योगेश कुमार गुप्ता मुरादाबाद
अनुसूचित जाति के बच्चों के लिए शिक्षक और शैक्षिक योजनाएं	डा. एस.के. यादव एन.सी.ई.आर.टी.
हिंदू और मुसलमान महिलाओं के सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधुनिकीकरण पर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।	डी.एम.ई.एस.डी.पी. एन.सी.ई.आर.टी.
कक्षा के इधोस के संदर्भ में माध्यम की प्रभाविता।	डा. उमेश सिंह, सूरत
श्री अरविन्दो अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र द्वारा विकसित "मुक्त प्रगति तंत्र" के मनोवैज्ञानिक आधार का अध्ययन।	डा. चन्द्रकान्त पटेल, गुजरात
ब्रिटेन और भारत में विशिष्ट शिक्षा: समस्या व्यवहार और परिप्रेक्ष्य का एक तुलनात्मक अध्ययन।	डा. एन.के. जंगीरा, डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस. एन.सी.ई.आर.टी.
ग्यारहवीं कक्षा में जैविकी के शिक्षण के लिए मॉड्यूलक दृष्टिकोण अपनाने का एक प्रायोगिक अध्ययन।	प्रो. डब्ल्यू.ए.झायर, मद्रास
आधुनिक हिंदी में बाल साहित्य का विकास।	डा. विजय लक्ष्मी सिन्हा जबलपुर (म.प्र.)
माध्यमिक विद्यालय के बच्चों के बुनियादी गणितीय कौशल में सुधार लाने में प्रयुक्त कुछ देशज तकनीक।	डा. कृपानाथ सिन्हा पश्चिम बंगाल
पढ़ाई संबंधी निष्पत्ति, निष्पत्ति अभिप्रेरण,	डा. अरुणिमा वत्स एन.सी.ई.आर.टी.

सर्जनात्मक कार्य और चिन्ता का जैव रसायन

सहसंबंध।

नदीन प्रक्रिया के रूप में सार्वत्रिक प्राथमिक शिक्षा। भारत के गाँवों में अपवर्जित पदार्थ का

अध्ययन।

बच्चों के स्वास्थ्य पर प्रभाव डालने वाले सामाजिक सांस्कृतिक कारक

कम लागत वाली श्रव्य दृश्य शिक्षण सामग्री और अधिक लागत वाली श्रव्य दृश्य शिक्षण सामग्री

की प्रभाविता का एक तुलनात्मक अध्ययन।

1947 से गढ़वाल डिवीजन के शैक्षिक विकास का एक मूल्यांकन अध्ययन।

गुजरात में नगरीकरण। एक भौगोलिक विश्लेषण

अनुसंधान-प्रशिक्षण

29 अक्टूबर से 5 नवम्बर, 1985 तक इस विभाग में अनुसंधान कार्यप्रणाली पाठ्यक्रम स्तर का आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम का अभिप्राय उन छात्रों की सहायता करना था जो आँकड़ा-संग्रह, उपकरण चयन, उपकरण, निर्माण, प्रतिदर्श चयन और आँकड़ा संग्रह को तैयार करने में लगे हुए थे। विज्ञापन के जरिए प्राप्त हुए 154 आवेदन पत्रों में से केवल उन बाइस छात्रों को चुना गया जो पात्रता निकष को संतुष्ट करते थे।

28 फरवरी से 7 मार्च, 1986 तक एन.आई.ई. के परिसर में अनुसंधान कार्यप्रणाली पाठ्यक्रम स्तर-III आयोजित किया गया। यह पाठ्यक्रम मुख्यतः उन शोध छात्रों के लिए था जो पी.एचडी. की डिग्री प्राप्त करने से संबद्ध शोध कार्य करने के लिए विश्वविद्यालयों में अथवा संबद्ध शिक्षा संस्थाओं में पंजीकृत थे और यह पाठ्यक्रम राज्य की शिक्षा/एस.सी.ई.आर.टी. संस्थाओं और प्रशिक्षण कालेजों में शोध अध्ययन के उन मुख्य अन्वेषकों अथवा सरकारी अन्वेषकों के लिए भी था जो आँकड़ों का विश्लेषण करने के चरण पर थे। विज्ञापन के जरिए प्राप्त हुए 49 में से केवल 20 छात्रों को उपयुक्त पाया गया, अतः उन्हें चुन लिया गया। दस छात्रों ने इस पाठ्यक्रम का अध्ययन किया। संकाय में तीन विभागीय अतिथि लेक्चरर और चार एन.आई.ई. के स्टाफ मेम्बर थे।

एरिक बुलेटिन

अनुसंधान से प्राप्त हुए तथ्यों के प्रचार-प्रसार की महत्ता को ध्यान में रखकर एरिक में 1984 से एक त्रैमासिक शोध बुलेटिन प्रकाशित करना शुरू

कर दिया। डा. ए. शर्मा और श्री सोन्ती सुब्बाराव द्वारा संकलित थे तथा एम.वी. बुच द्वारा संपादित बुलेटिन में शिक्षा में तीन अनुसंधान सर्वेक्षण से प्राप्त संक्षिप्त विवरण से प्रारंभिक शिक्षा के सर्वोत्कर्षण के क्षेत्र में अनुसंधान संबंधी संक्षिप्त विवरण दिए हुए होते हैं और इस तरह इस बुलेटिन में 1983 तक भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा किए गए सभी शोध अध्ययनों का विवरण दिया जाता है।

मार्च, 1985 में प्रारंभिक शिक्षा के सर्वोत्कर्षण से संबद्ध समस्याओं और मामलों पर हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी में किए गए सुझाव के अनुसार संक्षिप्त विवरणों को निम्नलिखित तीन शीर्षकों के अंतर्गत रखा गया है :

- (क) परिमाणात्मक लक्ष्य प्राप्त करना।
- (ख) नियोजन, वित्तीयन, मॉनिटरन और मूल्यांकन
- (ग) औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा में संबंध और समुदाय का भाग लेना।

इस संगोष्ठी में जिस चौथे क्षेत्र का सुझाव दिया गया था वह था प्रारंभिक शिक्षा के सर्वोत्कर्षण का गुणात्मक सुधार।

1985-86 के दौरान प्रकाशित किए गए दो एरिक बुलेटिनों के व्यौरे निम्नलिखित हैं:

क्र. सं.	शीर्षक	लेखक	प्रकाशन माह	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
1.	शोध बुलेटिन एरिक विशेषांक - (1) खंड-11, सं. 122. प्रारंभिक शिक्षा का सर्वोत्कर्षण।	डा. ए. शर्मा, श्री सोन्ती सुब्बाराव	(अप्रैल-सितंबर 1985)	300
2.	शोध बुलेटिन एरिक विशेषांक - (2) खंड-11, सं. 384. प्रारंभिक शिक्षा का सर्वोत्कर्षण।	डा. ए. शर्मा श्री सोन्ती सुब्बाराव	(अक्टूबर 1985 मार्च 1986)	300

इन बुलेटिनों को प्रारंभिक शिक्षा के सर्वोत्कर्षण के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्वरूप के अनुसंधान कार्य करने के लिए उपयोगी सामग्री उपलब्ध कराने की दृष्टि से प्रकाशित किया गया।

विकासी कार्यकलाप

19 से 26 नवंबर, 1985 तक 8 दिनों के लिए बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में प्रारंभिक शिक्षा के सर्वोत्कर्षण से संबद्ध अभिज्ञात

मामलों/दबाव क्षेत्रों पर अनुसंधान-अभिकल्पना विकसित करने के लिए एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। शिक्षा, मनोविज्ञान, समाज-विज्ञान, सामाजिक नृ-विज्ञान, अर्धमिति विज्ञान के विभिन्न संकायों/विभागों के डीन, प्रोफेसर और अध्यक्ष, शैक्षिक योजना और शैक्षिक वित्त से संबंधित व्यक्ति, शैक्षिक अनुसंधान और विकास के प्रशासक तथा आयुक्त और प्रसिद्ध अनुसंधानों जैसे 40 व्यक्तियों को शुरू में इस कार्यशाला में भाग लेने और कुछ चुने हुए विषयों पर अनुसंधान अभिकल्पना विकसित करने के लिए आमंत्रित किया गया। अंत में 16 व्यक्तियों जिनमें 14 बाहर के व्यक्ति थे और 2 एन.सी.ई.आर.टी. संकाय के सदस्य थे - ने भी इस कार्यशाला में भाग लिया और लगातार छः से आठ दिन तक एक साथ मिलकर के काम करके इन्होंने 14 अनुसंधान अभिकल्पना विकसित किए।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा विकसित इन शोध अभिकल्पनाओं का पुनरीक्षण ग्यारहवीं एरिक उपसमिति ने जनवरी 1986 में किया और उसने अभिकल्पनाओं का पुनः समूहन करने और उनमें सुधार लाने से संबद्ध कुछ सुझाव दिए। तदनुसार समूह की दो अभिकल्पनाओं "परिमाणात्मक लक्ष्य प्राप्त करना" और "हिमाचल प्रदेश के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के गैर नामांकित छात्रों का निर्धारण" विकसित की गई और इसे मार्च, 1986 में हुई सोलहवीं एरिक बैठक में प्रस्तुत किया गया।

समूह-II "गुणात्मक सुधार" के संबंध में ग्यारहवीं पुनरीक्षण उपसमिति ने अनुसंधान प्रस्तावों का पुनः समूहन करने का सुझाव दिया है और व्यापक अनुसंधान प्रस्ताव को तैयार करने के लिए एक उपसमिति की स्थापना की है। एरिक की सोलहवीं बैठक में इस उपसमिति की सिफारिशों का अनुमोदन कर दिया गया।

समूह-III, नियोजन, वित्तीयन, मॉनिटरन और मूल्यांकन के अंतर्गत चार अनुसंधान अभिकल्पनाएं तैयार की गईं। फिर भी ग्यारहवीं पुनरीक्षण समिति ने इन अभिकल्पनाओं को एक व्यापक अभिकल्पना में विलय करने और एरिक की सोलहवीं बैठक में प्रस्तुत करने का सुझाव दिया था। अच्छी तरह जांच पड़ताल कर लेने के बाद एरिक की सोलहवीं बैठक में भारतीय वैज्ञानिक अनुसंधान के सीनियर फेलो डा. जे.एल. आनंद के नेतृत्व में "सरकारी सहायता अनुदान की नीतियों, क्रियाविधियों और प्रतिमानों के विशेष संदर्भ में भारत की प्रारंभिक शिक्षा की वित्तीयन का क्रांतिक अध्ययन" नामक अनुसंधान अभिकल्पना को अनुमोदित कर दिया है।

समूह-IV "औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के संबंध और समुदाय का भाग लेना" के अधीन चार अनुसंधान अभिकल्पनाएं तैयार की गईं। ग्यारहवीं पुनरीक्षण उपसमिति ने इन चार अभिकल्पनाओं को एक व्यापक अनुसंधान प्रस्ताव में करके एरिक बैठक के सामने रखने का सुझाव दिया है। सोलहवीं एरिक ने उप समिति की सिफारिश मान ली है।

इसके अतिरिक्त अनेक अनुसंधान समस्याओं/संगठनों क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों और एन.आई.ई. के विभागों के साथ उनके पास उपलब्ध अनुसंधान

संकायों को मालूम करने और राष्ट्रीय स्वरूप के अनुसंधानों के लिए एरिक में कुछ पोस्ट बनाने के लिए अनुसंधान अभिरुचि के क्षेत्रों के साथ संपर्क स्थापित किए गए। अहमदाबाद के गुजरात विद्यापीठ के चार क्षेत्रीय शिक्षा कालेज और एरिक डी.पी.आर. पी.पी. ने राष्ट्रीय स्वरूप के अनुसंधान करने के लिए आउट-पोस्ट की तरह काम करने और आवश्यक सुविधाएं मुहैया करने के लिए सहमत हो गए हैं। एरिक की सोलहवीं बैठक में आउटपोस्ट को अनुमोदित कर दिया गया है।

राष्ट्रीय परीक्षण विकास पुस्तकालय (एन.टी.डी.एल.)

एन.टी.डी.एल. (i) संदर्भ परीक्षण पुस्तकालय (ii) मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का सूचना केन्द्र (iii) सभी प्रकाशित भारतीय परीक्षणों के क्रांतिक पुनरीक्षण मुहैया कराने की एजेंसी और (IV) परीक्षण विकास की रिक्तियों का पता लगाने वाला सस्थान।

एन.टी.डी.एल. एक सलाहकार समिति (एन.टी.डी.एल. की एक केन्द्रीय सलाहकार समिति) के सदस्य देश के शीर्षस्थ मनोमितिज्ञ होते हैं। इस समिति की बैठक साल में एक बार मार्च के महीने में होती है जो वर्ष भर में एन.टी.डी.एल. द्वारा किए गए कार्य का पुनरीक्षण करती है और अगले वर्ष

की कार्य योजना से संबद्ध सुझाव देती है। एन.टी.डी.एल. की केन्द्रीय सलाहकार समिति की सातवीं बैठक 24 मार्च, 1986 को हुई थी।

एन.टी.एल. बुलेटिन

एन.टी.एल. (राष्ट्रीय परीक्षण पुस्तकालय) बुलेटिन एन.टी.डी.एल. परियोजना का निरंतर चलने वाला एक कार्यकलाप है। इसने बुलेटिन नं. 20 प्रकाशित किया है: प्रिंट (III) में व्यक्तित्व परीक्षण का पुनरीक्षण।

खरीदे गए नए परीक्षण

निम्नलिखित नए परीक्षण पुस्तकालय में बढ़ाए गए हैं:

1. जीवनवृत्त विकास तालिका विद्यालय फार्म, कालेज फार्म और विश्वविद्यालय फार्म।
2. जेनसन तालिका
3. कॉपरस्मिथ कार्य तालिका
4. स्टेट ट्रेट चिन्ता तालिका फार्म वाई
5. स्टेट ट्रेट चिन्ता तालिका
(एक व्यापक ग्रंथ सूची)
6. बेल : समायोजन तालिका
(छात्र फार्म और वयस्क फार्म)

1 भूमिका

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन के जरिए शिक्षा, विशेष रूप से प्रारंभिक, माध्यमिक और प्रवर माध्यमिक स्तर की शिक्षा का गुणात्मक विकास करना शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग का एक मुख्य कार्य है। यह विभाग परामर्श और मार्गदर्शन, प्रतिभाशाली छात्र की पहचान और विकास, व्यवहार टेक्नोलॉजी तथा पाठ्यचर्या एवं अध्यापन सामग्री से संबद्ध अनुसंधान, विकास और प्रशिक्षण संबंधी कार्यकलापों को करता है। कार्यक्रमों का मुख्य केंद्र सीखने वाले की क्षमताओं और कार्य करने के सभी पहलुओं में उसके अनुकूलतम विकास और आत्म प्रत्यक्षीकरण पर होता है।

अनुसंधान

निम्नलिखित विषयों पर व्यापक अनुसंधान अध्ययन किए गए :

1. अनुसूचित जाति के हाई स्कूल के लड़कों का मनोवैज्ञानिक अभिलक्षण और शैक्षिक एवं व्यावसायिक नियोजन।

2. जनजातीय छात्रों का शैक्षिक और व्यावसायिक नियोजन, शैक्षणिक निष्पत्ति और मनोवैज्ञानिक अभिलक्षण।
3. शैक्षणिक और व्यावसायिक विषयों में छात्रों का व्यावसायिक व्यवहार और व्यावसायिक समायोजन।

कुछ अनुसंधान अध्ययन व्यवहार अपरिवर्तन, सर्जनकता और प्रतिभा और निकष संदर्भ परीक्षण जैसे विषयों पर भी किए गए। अनुसंधान परियोजनाओं में से तीन परियोजनाएं आलोच्य वर्ष में ही पूरी कर ली गईं। नीचे दी गई सारणी में पूरी हो गई अनुसंधान परियोजनाओं का संक्षिप्त विवरण और चल रही परियोजनाओं की प्रगति का विवरण दिया गया है :

प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रम

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और निर्देशन विभाग ने निम्नलिखित प्रशिक्षण/विस्तार कार्यक्रमों का आयोजन किया :

क्रम सं.	परियोजना का नाम	परियोजना की अवधि	मुख्य अन्वेषक	केफियत
1.	अनुसूचित जाति के हाई स्कूल के बच्चों का शैक्षिक एवं व्यावसायिक नियोजन के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक अभिलक्षण का अध्ययन।	2 वर्ष	प्रो. जे.एस. गौड़	रिपोर्ट लिखी जा रही है।
2.	शिलांग (मेघालय) और इसके आस-पास के हाई स्कूल के जनजातीय छात्रों के शैक्षिक एवं व्यावसायिक नियोजन, शैक्षिक निष्पत्ति और चुने हुए मनोवैज्ञानिक एवं गृह पृष्ठभूमि प्राचलकों का अध्ययन।	3 वर्ष	प्रो. पी.एच. मेहता	तदर्थ रिपोर्ट तैयार की जा रही है।
3.	+2 स्तर के शैक्षिक एवं व्यावसायिक विषयों में छात्रों का व्यावसायिक व्यवहार और व्यावसायिक समायोजन पर अनुसंधान।	3 वर्ष	डा. (श्रीमती) स्वदेश मोहन डा. (श्रीमती) निर्मला गुप्ता	आंकड़े एकत्र किए जा रहे हैं
4.	आकस्मिक प्रबंध द्वारा प्रारंभिक छात्रों के संज्ञानात्मक कार्यों और कला में व्यवहार में सुधार लाना	27 मास	श्री आर.के. शर्मा	रिपोर्ट लिखी जा रही है।
5.	निकष संदर्भ परीक्षण में वेबसीय दृष्टिकोण	2 वर्ष	प्रो. आर.के. माधुर	कार्य प्रगति पर है। वास्तविक स्कोर वितरण का एक सूत्र प्राप्त कर लिया गया है और व्यक्तियों को क्रमित संवर्गों में वर्गीकृत करने के सही अथवा गलत निर्णय की प्राथमिकता मासुप करने का सूत्र प्राप्त कर लिया गया है
6.	राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रों का पृष्ठभूमि अध्ययन (1978-80)		डी. इ.पी.सी. और जी	मिथियोप्राफित रिपोर्ट प्रकाशित कर दी गई है।

शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य ब्यूरो, माध्यमिक तथा प्रवर माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के निर्देशन के लिए उन परामर्शदों को प्रशिक्षित करना है जो कालेजों और विश्वविद्यालयों में कार्य करेंगे। यह नौ महीनों का एक पूर्णाकालिक पाठ्यक्रम है। इस पाठ्यक्रम में प्रवेश पाने की निम्नतम अर्हता द्वितीय श्रेणी में 'मनोविज्ञान' अथवा शिक्षा में मास्टर डिग्री का होना है। इस पाठ्यक्रम में छात्रों का प्रवेश अखिल-भारतीय चयन-परीक्षण के आधार पर होता है। 1985-86 के दौरान अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति के चार प्रशिक्षणार्थियों सहित 29 व्यक्तियों को यह प्रशिक्षण दिया गया। पचहत्तर प्रशिक्षणार्थियों को 325 रु. प्रतिमास का वजीफा दिया गया। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के प्रशिक्षणार्थियों के लिए अंग्रेजी और सभी सैद्धांतिक पचाँ में विशेष कोचिंग कक्षाओं की व्यवस्था की गई। विभिन्न विशेषज्ञों ने अनेक अतिथि लेक्चररों की व्यवस्था की। प्रशिक्षण कार्यक्रम के एक अंग के रूप में बम्बई और पुणे की एक शैक्षिक ट्रिप भी आयोजित की गई।

संगोष्ठी/कार्यशाला/प्रशिक्षण पाठ्यक्रम/अभिविन्यास पाठ्यक्रम/सम्मेलन

इस विभाग ने अल्पसंख्यकों द्वारा प्रबंधित विद्यालयों के लिए एक संगोष्ठी का और इन विद्यालयों के 31 शिक्षकों के लिए व्यावसायिक शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का भी आयोजन किया। विभिन्न राज्यों के विद्यालयों में निर्देशन सेवाओं की वर्तमान स्थिति का जायजा लेने और सातवीं योजना के दौरान इसके विकास पर चर्चा करने के लिए इस विभाग ने शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन के राज्य ब्यूरो के एक अखिल-भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया। राज्य स्तर के अधिकारियों में विद्यालय निर्देशन कार्यक्रमों के प्रति अभिरुचि विकसित करने के लिए आलेख्य वर्ष में एक संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 14 राज्यों/संघीय राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। विद्यालयों के निर्देशन और परामर्श में शैक्षिक टेक्नोलॉजी के अनुप्रयोग पर निर्देशन का एक पाठ्यक्रम भी आयोजित किया गया। विभाग ने सर्जनकता का पता लगाने और प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न राज्यों के प्रशिक्षकों के दो प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का, प्राथमिक/माध्यमिक प्रशिक्षकों और एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टी. व्यक्तियों के अधिगम और विकास पर 3 समृद्धि पाठ्यक्रमों का, और विद्यालय प्रतिवेश में शिक्षा में सुधार लाने की व्यवहार अपरिवर्तन तकनीक के अनुप्रयोग पर दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। 1985-86 के दौरान डी.ई.जी.सी.एण्ड.जी. द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/विस्तार कार्यक्रमों के संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित हैं -

क्रमांक कार्यक्रम

1. अल्पसंख्यकों द्वारा प्रबंधित विद्यालयों के प्रबंधकों और प्रिंसिपलों की निर्देशन सेवाओं पर एन.आई.ई. में 3 दिन की तीन संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें 69 व्यक्तियों ने भाग लिया।

क्रमांक कार्यक्रम

2. अल्पसंख्यकों द्वारा प्रबंधित विद्यालयों के व्यवसाय शिक्षकों के लिए एन.आई.ई. में 28 दिन के एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 31 व्यक्तियों ने भाग लिया।
3. भारतीय शिक्षा संस्थान, पुणे में राज्य निर्देशन-ब्यूरो के अध्यक्षों का एक तीन दिन का अखिल भारतीय सम्मेलन हुआ जिसमें 18 व्यक्तियों ने भाग लिया।
4. एन.आई.ई. में निर्देशन के अभिविन्यास व्यावसायिक शिक्षकों के ज्ञानसाधन व्यक्तियों की एक तीन दिन की संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 13 व्यक्तियों ने भाग लिया।
5. एन.आई.ई. में विद्यालयों के निर्देशन और परामर्श में शैक्षिक टेक्नोलॉजी के अनुप्रयोग पर निर्देशन में एक पांच दिन के पुनश्चर्चा-पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 20 व्यक्तियों ने भाग लिया।
6. मद्रास और उदयपुर में प्रशिक्षकों और एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टी. के कार्मिकों के लिए प्राथमिक और प्रारम्भिक शिक्षा के अधिगम और विकास पर 10-10 दिन के दो समृद्धि पाठ्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमें 57 व्यक्तियों ने भाग लिया।
7. ऐजावल में माध्यमिक प्रशिक्षकों और एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टी. के कार्मिकों के अधिगम और विकास पर एक दस दिन का सर्वजनिक पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 16 व्यक्तियों ने भाग लिया।
8. मद्रास और कलकत्ता में व्यवहार अपरिवर्तन तकनीक के अनुप्रयोग पर 10-10 दिन की दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इसमें 37 व्यक्तियों ने भाग लिया।
9. बंगलूर में प्राथमिक ग्रेड में सर्जनात्मक क्षमता को पहचानने और प्रोत्साहित करने पर प्रशिक्षकों के लिए एक दस दिन के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें 32 व्यक्तियों ने भाग लिया।
10. एन.आई.ई. में माध्यमिक स्तर की सर्जनात्मक प्रतिभा को पहचानने और विकसित करने पर एक दिन के क्षेत्रीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें 20 व्यक्तियों ने भाग लिया।

विकास परक कार्यक्रम

विभाग ने प्रतिभा को पहचानने और विकसित करने का एक निदर्श तैयार करने के लिए राष्ट्रीय स्तर की एक संगोष्ठी आयोजित की। विभिन्न समिश्र पहलुओं में प्रतिभा, सर्जनकता और गुणवत्ता को समझने के उद्देश्य से प्रतिभा के पहचान और विकास के निदर्श पर एक मोनोग्राफ तैयार किया गया है। अंतिम रूप से जब यह मोनोग्राफ प्रकाशित होगा तब प्रतिभाशाली बच्चों की शिक्षा से संबंध सभी व्यक्ति इस मोनोग्राफ में रुचि लेने लगेंगे। जन माध्यम के जरिए शिक्षकों के संचार के लिए प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के निर्देशन पर तैयार की गई सामग्री का पुनरीक्षण करने और शिक्षक की प्रतिपुष्टि के लिए निर्देशन पर दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों की हिन्दी और उर्दू में पांडुलिपियां प्रकाशन के लिए भेज दी गईं।

इस कार्यक्रम का अंग्रेजी संस्करण एन.सी.ई.आर.टी. की पत्रिका 'द प्राइमरी टीचर' के अक्टूबर, 1985 के अंक में प्रकाशित किया गया।

इनके अतिरिक्त विद्यालय प्रतिवेश में व्यवहार आपरिवर्तन तकनीक पर एक गुटका तैयार करने का कार्य हाथ में लिया गया और इस क्षेत्र के विशेषज्ञों ने आठ शीर्षकों पर लेख लिखे हैं। व्यावसायिक शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए बहु-माध्यम प्रचय के विकास पर एक योजना समूह की बैठक की गई। आलोच्य वर्ष में 'रीडिंग्स फार कैरियर टीचर्स' नामक प्रकाशन प्रकाशित हुआ। मनोविज्ञान के मद-बैंक विकास कार्यक्रम के अंतर्गत +2 स्तर के लड़कों के लिए अनेक वस्तुनिष्ठ (बडल) प्रकार के प्रश्न/मद बनाए गए।

डी.ई.पी.सी.एण्ड.जी द्वारा हाथ में लिए गए विकासपरक कार्यक्रमों की सूची निम्नलिखित है -

क्रमांक	कार्यक्रम का शीर्षक
1.	3 फरवरी से 6 फरवरी, 1986 तक एन.आई.ई. में प्रतिभा के पहचान और विकास का एक निदर्श विकसित करने के लिए विशेषज्ञ समूह की एक तीन दिन की एक बैठक की गई।
2.	जन माध्यम के ज़रिए शिक्षक के संचार के लिए प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के निर्देशन पर आवश्यकता पर आधारित सामग्री का निर्माण। 13 अप्रैल से 20 अप्रैल 1985 तक एन.आई.ई. में तैयार की गई सामग्री के पुनरीक्षण के लिए एक तीन दिन की कार्यशाला की गई जिसमें 18 व्यक्तियों ने भाग लिया। 28 अगस्त से 29 अगस्त 1985 तक शिक्षकों की प्रतिपुष्टि प्राप्त करने के लिए उदयपुर में एक दो दिन की कार्यशाला की गई जिसमें अठारह व्यक्तियों ने भाग लिया।
3.	व्यावसायिक शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए बहु-माध्यम प्रचय का विकास-अहमदाबाद में 18 दिसम्बर से 19 दिसम्बर, 1985 तक योजना समूह की बैठक हुई जिसमें 16 व्यक्तियों ने भाग लिया।
4.	विद्यालय प्रतिवेश में व्यवहार आपरिवर्तन तकनीक की गुटका का विकास-एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 31 मार्च से 2 अप्रैल 1986 तक द्वितीय संपादक मंडल की बैठक हुई जिसमें छः व्यक्तियों ने भाग लिया।
5.	भुवनेश्वर में 28 नवंबर से 5 दिसम्बर, 1985 तक +2 स्तर के मनोविज्ञान में मद बैंक के विकास का काम लिया गया। इसमें 16 व्यक्तियों ने भाग लिया।

सांख्यिकी के कुछ विषयों के शिक्षण में कम्प्यूटर प्रक्रिया सामग्री का विकास

शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन के डिप्लोमा पाठ्यक्रम के छात्रों के शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले प्रतिचयन और सांख्यिकीय अनुमिति के कुछ विषयों पर सी.बी.एल. प्रचयों के विकास के लिए माइक्रो कम्प्यूटर एप्लेन

एच.एक्स-20 का प्रयोग किया गया है। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों ने इन प्रचयों को प्रतिचयन, प्रतिचयन बंटन और सांख्यिकीय अनुमिति की उत्तम संकाचना प्राप्त करने में उपयोगी पाया है। इन सी.बी.एल. प्रचयों के विकास के अलावा आंकड़ा विश्लेषण में उपयोगी महत्वपूर्ण सांख्यिकीय उपनेमकाओं के लिए कम्प्यूटर प्रोग्राम भी विकसित किए गए। इन प्रोग्रामों का प्रयोग विभागीय तथा विभागेतर अनेक अनुसंधान परियोजनाओं के आंकड़ों का विश्लेषण करने में किया गया।

व्यावसायिक सूचना कक्ष और परीक्षण पुस्तकालय

विभाग में एक परिपूर्ण निर्देशन प्रयोगशाला है जिसके दो मुख्य अनुभाग हैं (1) व्यावसायिक सूचना कक्ष और (2) परीक्षण पुस्तकालय रोजगार एवं प्रशिक्षण निर्देशालय, श्रम मंत्रालय, भारत सरकार के राष्ट्रीय व्यवसाय-वर्गीकरण पर आधारित स्थूल समूहों में वर्गीकृत अनेक व्यवसायों से संबद्ध डाटा बेस का रख-रखाव, व्यावसायिक सूचना कक्ष करता है। यह कक्ष शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन के डिप्लोमा पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों को कार्य-जगत के बारे में सूचना प्राप्त करने। उसका अधिग्रहण, संवर्गीकरण, संरचना, कार्य-अवस्था, प्रतिपूरक, क्षतिपूर्ति प्रत्याशा आदि के कार्य में विशेष रूप से सहायता करता है।

निर्देशन-प्रयोगशाला के परीक्षण पुस्तकालय अनुभाव में विद्यालयी योग्यता, बुद्धि और संज्ञानात्मक विकास, सर्जनकता और निपुणता, अभिरुचि और प्रवृत्ति, व्यावसायिक परिपक्वता और आकांक्षाएं, व्यक्तित्व और समायोजन, आत्म-संकायन और संदर्भ आदि जैसे विभिन्न विषयों पर मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक परीक्षणों/प्रश्नावलियों का संग्रह रखा जाता है। परीक्षण प्रयोगशाला का प्रयोग शिक्षा तथा मनोविज्ञान के शोधकर्ता और ई.वी.जी. डिप्लोमा पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थी करते हैं।

परामर्श

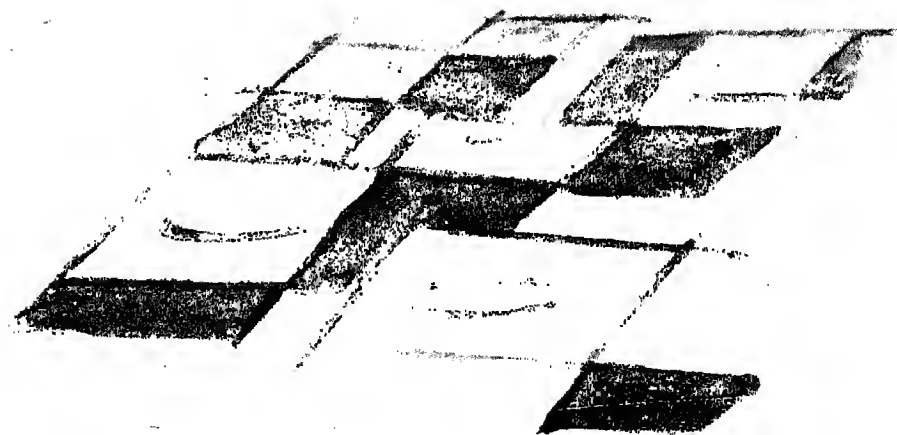
डी.ई.पी.सी. एण्ड.जी. द्वारा दिए गए परामर्श के व्यौरे नीचे दिए गए हैं:-

क्रमांक परामर्श लेने वाले संगठन	प्रयोजन	संबद्ध व्यक्ति
1.	एन.सी.ई.आर.टी.-हरियाणा निर्देशन में 4 कार्यक्रमों प्रो. पी.एच.मेहता	
2.	सामाजिक कार्य-बाल सलाहकार समिति की प्रो. पी.एच. मेहता निर्देशन क्लिनिक विभाग, बैठक दिल्ली विश्वविद्यालय	
3.	आई.सी.एस.एस.आर., अनुसंधान प्रस्तावों का प्रो. पी.एच. मेहता दिल्ली मूल्यांकन	

क्रमांक	परामर्श लेने वाले संगठन	प्रयोजन	संबद्ध व्यक्ति
4.	राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान, दिल्ली	पोषण अध्ययन में प्रतिचयन तकनीक और सर्वेक्षण विधि	प्रो. आर.के. माथुर
5.	सी.एम.सी. हैदराबाद	क्लास परियोजना के अंतर्गत कम्प्यूटर की प्रक्रिया सामग्री का मूल्यांकन	प्रो. आर.के. माथुर
6.	क्लास परियोजना	क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर में शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रो. आर. के. माथुर
7.	मनोविज्ञान विभाग मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास	समुदाय प्रतिवेश के व्यवहार अपरिवर्तन पर व्याख्यान	प्रो. बी.के. सिंह
8.	अपराध विज्ञान और न्यायालयिक विज्ञान नई दिल्ली	व्यवहार अपरिवर्तन पर अतिथि व्याख्यान	प्रो. बी.के. सिंह
9.	मनोविज्ञान विभाग, दयालबाग विश्वविद्यालय आगरा	व्यवहार-अपरिवर्तन और मानसिक स्वास्थ्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. बी.के. सिंह
10.	अपराध विज्ञान और न्यायालयिक विज्ञान, नई दिल्ली	पुलिस समुदाय संबंध पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	डा. (श्रीमती) के. भूटानी
11.	राष्ट्रीय जन-सहयोग और बाल विकास संस्थान, नई दिल्ली	व्यावसायिक निर्देशन और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम पर व्याख्यान	प्रो. (श्रीमती) सी. धर
12.	राज्य शैक्षिक एवं निर्देशन ब्यूरो, चण्डीगढ़	जिला निर्देशन परामर्शक डा. आर. के. सारस्वत के लिए पुनश्चर्चा पाठ्यक्रम	

क्रमांक	लेखक और शीर्षक	प्रकाशन मास	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
1.	मेहता, पी.एच. और माथुर, आर.के. प्रथम पीढ़ी के पढ़ने वालों और गैर प्रथम पीढ़ी के पढ़ने वालों की कुछ संज्ञानात्मक योग्यताएं और शैक्षिक निष्पत्ति का बहुचर, अध्ययन	भारतीय मनोमिति और शिक्षा पत्रिका, 17 (1 और 2) जनवरी 1 जुलाई 1986 1-16	

क्रमांक	लेखक और शीर्षक	प्रकाशन	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
2.	मेहता, पी.एच., पुस्तक समीक्षा: कालेजों और विश्वविद्यालयों में निर्देशन और परामर्श-लेखक एस.के. कोचर	भारतीय शिक्षा पत्रिका (5) जनवरी, 85, 52-55	—
3.	मेहता, पी.एच., भटनागर (ए) और सुरिन्दर कुमार: मेघालय के जनजातीय छात्रों का व्यावसायिक नियोजन	सामाजिक एवं आर्थिक अध्ययन पत्रिका में प्रकाशित की जाएगी	—
4.	मेहता, पी.एच., गोड़, जे. एस. और मोहन, एस: प्रवर विद्यालयी योग्यता वाले लड़कों की समस्याएं: भाग-1 समस्या क्षेत्र	भारतीय शिक्षा पत्रिका में प्रकाशित की जाएगी।	—
5.	मेहता, पी.एच. और गोड़ जी.एस., राज्य निर्देशन ब्यूरो के अखिल भारतीय सम्मेलन की रिपोर्ट, 1985, एन.सी. ई.आर.टी., नई दिल्ली 1985 (मेमोराण्डम)	(माइक्रोफिल्म प्रतियां)	300
6.	मेहता, पी.एच., माथुर, आर. भारतीय शैक्षिक समीक्षा के. आर. पंथ, डी: किशोरी की व्यावसायिक आकांक्षाओं के स्तर पर प्रभाव	मे प्रकाशित की जाएगी।	—
7.	मोहन, त्वदेश: व्यावसायिक शिक्षकों के लिए पाठमाला	अक्टूबर, 1985	3000
8.	सारस्वत, आर.के. दिल्ली के हाई स्कूल के छात्रों के समाधान, मूल्यों, शैक्षिक निष्पत्ति, सामाजिक आर्थिक स्थिति और सेक्स के संबंध में एक आत्म-संकल्पना। (बीसिस के उद्घूत)	भारतीय शैक्षिक समीक्षा, जुलाई 1985	—
9.	विकलांगों के शिक्षक	प्राथमिक शिक्षक अक्टूबर, 1985	
10.	धर, सी विद्यालय प्रतिवेश में महिला मनोवैज्ञानिक की भूमिका	72 वें भारतीय विज्ञान कांग्रेस के तत्वावधान में महिलाओं पर की गई संगोष्ठी की कार्यवाही में प्रकाशित की जाएगी।	



क्षेत्र सेवा और समन्वय विभाग (डी.एफ.एस.सी.) विभिन्न राज्यों/संघीय राज्यों में स्थित क्षेत्रीय शिक्षा-कालेजों और परिषद के क्षेत्र-कार्यालयों के कार्य कलापों का समन्वय करता है यह परिषद के क्षेत्र कार्यालयों के जरिए राज्यों और संघीय राज्यों के शिक्षा विभागों और अन्य संस्थाओं के साथ संपर्क बनाए रखता है और विद्यालय-शिक्षा तथा शिक्षक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से संबंध करने में सहायता करता है।

1985-86 वर्ष के दौरान विभाग ने विद्यालय शिक्षा के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में चलाए गए कुछ कार्यक्रमों की प्रगति का लेखा-जोखा रखने और आवश्यकताओं तथा समस्याओं का पता लगाने के साथ-साथ इन समस्याओं को दूर करने के लिए राज्यों/संघीय राज्यों द्वारा अपनायी गई नीतियों। दृष्टिकोणों के बारे में सूचना एकत्र करने से संबंध राज्यों/संघीय राज्यों की अन्योन्यक्रिया कार्यक्रम के अंतर्गत जिला शिक्षा अधिकारियों की छ. बैठकें कराई। परिषद के क्षेत्र कार्यालयों की राज्यों के साथ की अन्योन्यक्रिया के लिए इन कार्यालयों की भूमिका और जिम्मेवारी का भी पता लगाया गया। 21 मई से 25 मई, 1985 तक शिमला में हुई पहली बैठक में हिमाचल प्रदेश के दस जिला शिक्षा अधिकारियों ने भाग लिया। 8 से 11 जनवरी, 1986 तक भुवनेश्वर में हुई दूसरी बैठक में उड़ीसा के 14 जिला शिक्षा अधिकारियों ने भाग लिया। 21 से 24 जनवरी, 1986 तक हिसार में हुई तीसरी बैठक में हरियाणा के ग्यारह जिला शिक्षा अधिकारियों ने भाग लिया। 29 जनवरी से 2 फरवरी, 1986 तक पुणे में हुई चौथी बैठक में महाराष्ट्र के ग्यारह जिला शिक्षा अधिकारियों ने भाग लिया।

क्षेत्र कार्यालय

राज्यों और संघीय राज्यों के शिक्षा विभागों निदेशालयों तथा अन्य संस्थाओं के साथ संपर्क बनाए रखने के लिए परिषद ने 17 क्षेत्र कार्यालय स्थापित किए हैं। ये कार्यालय एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न संघटक एककों के कार्यकलापों और कार्यक्रमों से संबंध आवश्यक सूचनाएं राज्य के शिक्षा विभागों को देते रहते हैं। ये कार्यालय अपने कार्य-क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्यों/संघीय राज्यों की विशिष्ट आवश्यकताओं से संबंध सूचनाओं को एकत्रित करके एन.सी.ई.आर.टी. तथा इसके संघटक एकक को देते हैं और साथ ही ये कार्यालय प्रशिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रमों को आयोजित करने में एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न संघटक एककों की आवश्यक सहायता करते हैं। ये कार्यालय विद्यालय के अध्यापकों द्वारा हाथ में ली गई लघु क्रिया अनुसंधान परियोजनाओं के लिए निम्नलिखित सहायता उपलब्ध कराने और राज्य

शिक्षा विभाग के अनुरोध पर सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

1985-86 के दौरान क्षेत्र कार्यालयों ने एन.आई.ई. के विभिन्न विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा-कालेजों और केंद्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान को राज्यों और संघीय राज्यों में उनके कार्यक्रमों को आयोजित करने में सहायता करते हैं। ये कार्यालय राज्य/संघीय राज्य स्तर पर राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा कराने में राज्य के शिक्षा विभागों/परिषदों को आवश्यक निर्देशन और सहायता करते हैं। एक कार्य जो कि सभी क्षेत्र कार्यालयों को करना पड़ा था। वह था कार्यक्रम सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन करना जिसमें 1985-86 वर्ष के कार्यक्रमों के प्रस्तावों को अंतिम रूप दिया गया।

1985-86 के दौरान अलग-अलग क्षेत्र कार्यालयों द्वारा निम्नांकित किए गए अन्य कार्यकलापों के बारे में नीचे दिए गए हैं।

क्षेत्र कार्यालय, अहमदाबाद

अहमदाबाद में स्थित क्षेत्र कार्यालय में 1984-85 के दौरान निम्नलिखित कार्यकलाप किए गए —

- गुजरात और संघीय राज्य दादर और नगर हवेली के प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए शैक्षिक खिलौना बनाने की प्रतियोगिता और प्रदर्शनी की गई। इसमें लगभग 50 खिलौने तैयार किए गए। शिक्षा की गुणता सुधार के एक अंग के रूप में इस कार्यक्रम को टेलीविजन पर प्रसारित किया गया।
- 28 दिसम्बर, 1985 से 1 जनवरी, 1986 तक शिक्षण-सामग्री के निर्माण पर एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 30 शिक्षक और प्रशिक्षकों ने भाग लिया। इसमें 30 शिक्षण-सामग्री/निर्देश बताए गए और प्रदर्शित किए गए।
- 11 से 15 मार्च, 1986 तक शिक्षा के व्यावसायीकरण पर शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में तकनीकी क्षेत्र के 10 शिक्षक और गृह-विज्ञान के 10 शिक्षकों ने भाग लिया।
- 25 अक्टूबर, 1985 को नई शिक्षा नीति-व्यावसायिक निर्देशन की भूमिका पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। शिक्षण-सामग्री और शैक्षिक खिलौने पर भी अनेक बैठकों और प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया।
- क्षेत्र-कार्यालय ने उमरगांव तालुक की दसवीं कक्षा के अनुसूचित

- जाति अनुसूचित जनजाति के छात्रों को व्यावसायिक निर्देशन उपलब्ध कराने की शोध परियोजना को अपने हाथ में लिया। इस परियोजना के अंतर्गत निम्नलिखित कार्यकलाप किए गए:
- नारगोल में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम जिसमें उमरगांव तालुका और दादर तथा नगर हवेली के संघीय राज्य के 10 शिक्षकों ने भाग लिया।
 - 5 से 6 अगस्त, 1985 तक बल्सर जिले के चार तालुकाओं के शिक्षकों के लिए व्यावसायिक निर्देशन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। व्यावसायिक निर्देशन में 50 शिक्षकों ने प्रशिक्षण लिया।
 - 25 अक्टूबर, 1985 को इलाहाबाद में व्यावसायिक निर्देशन 'समाज के कमजोर वर्गों के लिए हमारी दायित्वबद्धता' पर संगोष्ठी। इसमें केंद्रीय विद्यालय और गुजरात विद्यालय के लगभग 100 शिक्षकों ने भाग लिया।
 - प्रश्नावली के रूप में दो निर्देशन उपकरण विकसित किए गए और 13 विद्यालयों के 199 अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों से उनके द्वारा दिए गए उत्तर प्राप्त हुए। प्रिंसिपलों और शिक्षकों की प्रतिपुष्टि की गई।
 - 1984-85 में छिलकी तालुका की दसवीं कक्षा के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों के व्यावसायिक निर्देशन देने की अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की परियोजना पूरी की रिपोर्ट प्रकाशित की गयी।

इन कार्यकलापों के अतिरिक्त क्षेत्रकार्यालय प्रायोगिक परियोजना भी लागू करता रहा। 1985-86 के दौरान सोलह परियोजनाओं की वित्तीय सहायता दी गई जिससे विद्यालयों ने मानव भूषणों को विकसित करने और भाषा तथा विज्ञान आदि के शिक्षण की उन्नत विधियों के संबंध में नवीन प्रक्रियात्मक कार्य किया है।

क्षेत्र कार्यालय, इलाहाबाद

इलाहाबाद के क्षेत्र कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित हैं : —

- 20 से 24 जुलाई, 1985 तक प्रारंभिक स्तर के विज्ञान और गणित की पाठ्यचर्या के संशोधन से संबद्ध कार्यशाला, इस कार्यशाला में 40 लोगों ने भाग लिया।
- 20 से 23 जनवरी, 1986 तक एस.आई.ई. इलाहाबाद में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के समुदायों की शैक्षिक समस्याओं का पता लगाने पर की गई कार्यशाला में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों ने भाग लिया। इसके बाद 5 से 6 मार्च, 1986 तक एक पूरक कार्यशाला की गई।

इस कार्यशाला में बुनियादी शिक्षा अधिकारी तथा अन्य संबद्ध अधिकारियों ने भाग लिया।

- 18 से 21 मार्च, 1986 तक सी.पी.आई. इलाहाबाद में माध्यमिक प्रशिक्षकों की पाठ्यचर्या पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में शिक्षक, प्रशिक्षक और शोधकर्ताओं ने भाग लिया।
- 31 मार्च से 3 अप्रैल, 1986 तक सी.पी.आई. इलाहाबाद में संगोष्ठी पाठमाला कार्यक्रम पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में प्रशिक्षकों ने भाग लिया।
- 10 से 12 दिसम्बर, 1985 तक एस.आई.ई. इलाहाबाद में शैक्षिक-प्रतिदर्श आयोजित परियोजना पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में भाग लेने के लिए प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षक आमंत्रित किए गए। संबद्ध संस्थाओं में चलाए जाने के लिए 32 प्रतिदर्श प्रायोगिक परियोजनाएं बनायी गईं।
- 11 से 14 मार्च, 1986 तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग में उर्दू के पाठ्य-पुस्तकों की समीक्षा के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- एन.सी.ई.आर.टी. के मुख्यालय के निर्देशों के अनुसार 'होप फ़र बैटर वर्ल्ड' नामक राज्य स्तर की निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- क्षेत्र कार्यालय ने शैक्षिक खिलौना बनाने की प्रतियोगिता करायी।
- उत्तर प्रदेश की एक शैक्षिक प्रोफ़ाइल 'शिक्षा-एक दृष्टि में' को जिसमें उत्तर प्रदेश की शिक्षा की स्थिति की जानकारी है, निष्पत्ति और नए प्रजोद को क्षेत्र कार्यालय ने प्रकाशित किया।

क्षेत्र कार्यालय ने प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा की प्रायोगिक परियोजनाओं की रिपोर्ट, विज्ञान एवं गणित की पाठ्यचर्या का संशोधन और बी.टी.सी. पाठ्यचर्या का संशोधित रूप प्रकाशित किया। रायल नेपाली सरकार और पश्चिम जर्मनी से आए दो-दो सदस्यों के दो शिष्ट-मंडलों ने क्रमशः 10-11 मार्च और 26-27 मार्च को इलाहाबाद के क्षेत्र कार्यालय को देखा।

क्षेत्र कार्यालय, बंगलौर

बंगलौर के क्षेत्र कार्यालय ने निम्नलिखित कार्यकलाप किए—

- बंगलौर और मैसूर डिविजन के विद्यालयों के 49 निरीक्षकों के लिए डी.एस.ई.आर.टी. बंगलौर में 10 से 12 दिसंबर, 1985 तक शिक्षा के सर्वोत्कर्षण और अक्षरसेन की सामग्री के निर्माण पर एक तीन दिन की कार्यशाला एवं अभिविन्यास कार्यक्रम किया गया।

- पूरे कर्नाटक के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के विद्यालय निरीक्षकों के लिए कर्नाटक के शिक्षा-विभाग के सहयोग से 25 से 27 फरवरी, 1986 तक विद्यालय निरीक्षकों के लिए अभिविन्यास एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया।
 - 30 जनवरी, 1986 को कर्नाटक में खिलौना बनाने की प्रतियोगिता की गई। 200-00 रुपये का एक प्रथम पुरस्कार, 100-00 रुपये का एक द्वितीय पुरस्कार और 50-50 रुपये के चार सांत्वना पुरस्कार दिए गए।
 - कर्नाटक का शैक्षिक प्रोफाइल, कर्नाटक में शिक्षा की समस्याओं और मामलों को समझने की दृष्टि से विद्यालय शिक्षा की प्रवृत्ति, भाग-1 तैयार किया गया। इस पुस्तक में राज्य की भूमि और उसकी सीमाओं, संगठन के पहले और बाद का राज्य, और जनसंख्या, साक्षरता की वृद्धि दर, जिला के अनुसार साक्षरता का ग्रामीण-शहरी तथा पुरुष और महिला बंटन के कुछ महत्वपूर्ण आंकड़ों के साथ-साथ शैक्षिक प्रशासन के विकास के व्यौर दिए गए हैं।
 - विदेशी शिष्ट मंडल विशेषज्ञों ने क्षेत्र-कार्यालय देखा। चीनी शिष्ट मंडल ने 30 अप्रैल से 2 मई, 1985 तक, पाठ्यचर्या विकास केन्द्र, मारिशस के निदेशक डा. डी.वी. वेंकटस्वामी ने 24 से 27 दिसंबर 1985 तक, क्लास के ब्रिटिश विशेषज्ञों ने 21 जनवरी, 1986 तक।
- क्षेत्र सलाहकार ने नई शिक्षा नीति के संबंध में दूरदर्शन/आकाशवाणी/प्रेस में की गई विभिन्न संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और चर्चाओं में भाग लिया।

क्षेत्र कार्यालय, भोपाल

भोपाल के क्षेत्र कार्यालय में जनजातीय शिक्षा और शिशु शिक्षा के विकास से संबंधित कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दिया गया। 1985-86 वर्ष के दौरान इस कार्यालय ने निम्नलिखित मुख्य-मुख्य कार्यक्रम किए -

- कक्षा के वातावरण में सुधार लाने के लिए प्रायोगिक परियोजनाओं को तैयार करने में जनजातीय विद्यालय शिक्षकों के लिए एक पांच दिन के अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बीस व्यक्तियों ने भाग लिया।
- शिशु शिक्षा के विभिन्न निदर्शों में ज्ञान साधन व्यक्तियों का एक दस दिन का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य ध्यान पियाजेशियन निदर्श पर दिया गया जिसमें निदानी दृष्टिकोण के अलावा बच्चों पर केन्द्रित अनेक कार्यक्रम किए जाते हैं जो बच्चे के संज्ञानात्मक विकास में सहायक होते हैं।

इनके अतिरिक्त 1985-86 के दौरान जनजातीय विद्यालयों के लिए

क्षेत्र सलाहकार मध्य प्रदेश सरकार के जनजातीय कल्याण विभाग द्वारा अंतिम रूप दिए गए 15 कार्यक्रमों का निर्देशन किया। इसके अलावा जनजातीय विद्यालयों की विभिन्न प्रायोगिक परियोजनाओं को वित्तीय सहायता दी गई।

क्षेत्र कार्यालय, भुवनेश्वर

भुवनेश्वर के क्षेत्र कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्यक्रम निम्नलिखित हैं-

- राज्य स्तर पर खिलौने बनाने की प्रतियोगिता। इस प्रतियोगिता में प्राथमिकता और पूर्व प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों ने 21 माडल रखे। प्रथम और द्वितीय पुरस्कार के अतिरिक्त चार सांत्वना पुरस्कार भी दिए गए।
- 14 से 17 जनवरी, 1986 तक और 3 से 7 मार्च, 1986 तक जनजातीय सेवाश्रमों में सार्वजनिक नामांकन और धारण पर दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें क्रमशः 26 और 15 प्रारंभिक शिक्षकों ने भाग लिया।
- 18 से 22 फरवरी, 1986 तक सार्वजनिक नामांकन और धारण पर प्राथमिकता विद्यालय के शिक्षकों के लिए प्रायोगिक परियोजना की एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में प्रारंभिक विद्यालयों के तीस शिक्षकों ने भाग लिया।
- 4 से 7 फरवरी, 1986 तक फूलबनी में माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान शिक्षकों के लिए प्रायोगिक परियोजना पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में तीस शिक्षकों ने भाग लिया।
- 18 से 22 मार्च, 1986 तक कोनार्क में शैक्षिक टी.वी. और रेडियो कार्यक्रमों के उपयोग में ज्ञान साधन व्यक्तियों और मुख्य कर्मियों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें उन्नीस शिक्षकों ने भाग लिया।
- प्रायोगिक परियोजनाओं के अंतर्गत क्षेत्र कार्यालय को 138 प्रस्ताव प्राप्त हुए जिसमें से 30 को वित्तीय सहायता देने के लिए चुना गया।

क्षेत्र कार्यालय, कलकत्ता

कलकत्ता के क्षेत्र कार्यालय द्वारा आलोच्य वर्ष में किए गए कार्यक्रम निम्नलिखित हैं :

- प्राथमिक विद्यालय के परीक्षकों के लिए खिलौने बनाने की एक वार्षिक प्रतियोगिता जिसमें 10 शिक्षकों ने भाग लिया।
- 17 से 21 फरवरी, 1986 तक विकलांग बच्चों के व्यावसायीकरण के लिए उनके पहचान और शिक्षण पर एक

अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें पंद्रह व्यक्तियों ने भाग लिया।

- 3 से 7 मार्च, 1986 तक बच्चों के पर्यावरण मनोविज्ञान और समेकित मनोवैज्ञानिक विकास पर अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 20 व्यक्तियों ने भाग लिया।
- 17 से 20 मार्च, 1986 तक बच्चों के समेकित शैक्षिक विकास पर अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 18 व्यक्तियों ने भाग लिया।

प्रायोगिक परियोजना के अन्तर्गत सात परियोजनाओं को वित्तीय सहायता दी गई। इसके अतिरिक्त क्षेत्र कार्यालय ने 'सिक्किम, पश्चिम बंगाल, अण्डमान और निकोबार द्वीप में शिक्षा व्यवस्था' नामक एक प्रकाशन प्रकाशित किया।

क्षेत्र कार्यालय, चण्डीगढ़

1985-86 के दौरान चण्डीगढ़ के क्षेत्र कार्यालय ने निम्नलिखित कार्यकलाप किए:

- 9 से 11 सितम्बर, 1985 तक प्रायोगिक परियोजना को बनाने के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के उच्चतम शिक्षकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में सप्ताह परियोजनाएं विकसित की गईं तथा उनमें सुधार किया गया।
- 26 से 27 फरवरी, 1986 तक पंजाब और हरियाणा के अनुसूचित जाति के छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाओं पर चर्चा करने के लिए कार्यकारी समूह की दो दिन की बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में विश्वविद्यालय के विभागों और अनुसंधान संस्थाओं के इस शिक्षा क्षेत्र के बारह सुप्रसिद्ध व्यक्तियों ने भाग लिया।
- 18 से 21 मार्च, 1986 तक विज्ञान शिक्षण की नवीन प्रक्रियात्मक प्रवृत्ति पर एक संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें माध्यमिक विद्यालय के पैतालिस शिक्षकों ने भाग लिया। इस संगोष्ठी की रिपोर्ट प्रकाशित कर दी गई है।

प्रायोगिक परियोजना के अंतर्गत क्षेत्र कार्यालय को 20 परियोजनाओं के प्रस्ताव प्राप्त हुए जिनमें से 15 परियोजनाएं अनुमोदित की गईं और उन्हें वित्तीय सहायता दी गई।

क्षेत्र कार्यालय, गुवाहाटी

गुवाहाटी के क्षेत्र कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित हैं:

- 16 से 20 सितम्बर 1985 तक शिक्षा के व्यावसायीकरण पर अभिविन्यास संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें बीस व्यक्तियों ने भाग लिया। इस संगोष्ठी में की गई कार्यवाही और सिफारिशों से उपयुक्त निर्देशन प्राप्त हुए। असम में इस रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया गया है।
- 28 जनवरी से 2 फरवरी, 1986 तक प्रायोगिक परियोजनाओं पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति क्षेत्रों के बी.टी.सी. और प्राथमिक विद्यालयों के अठाइस शिक्षकों ने भाग लिया।
- 28 फरवरी, 1986 को क्षेत्र कार्यालय में 1986 की खिलौना बनाने की प्रतियोगिता में असम के जीतने वाले शिक्षकों के लिए पुरस्कार वितरण समारोह किया गया। इस समारोह का आकाशवाणी से प्रसारण किया गया और दूरदर्शन ने इस समारोह पर पांच मिनट तक प्रसारण किया।
- योजना प्रलेखों, एन.ई.सी. प्रकाशनों और अन्य स्रोत सामग्री की सहायता से क्षेत्र कार्यालय ने असम शिक्षा प्रोफाइल तैयार किया। क्षेत्र कार्यालय के कार्य क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले राज्यों के ज्ञानसाधन व्यक्तियों की एक निर्देशिका भी तैयार की गई।

क्षेत्र कार्यालय, हैदराबाद

आलोच्य वर्ष में क्षेत्र कार्यालय ने परिषद के विभिन्न विभागों द्वारा आंध्र प्रदेश में आयोजित कार्यक्रमों के सफल संचालन में सहायता की। फिर भी मार्च में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों और कालेज के लेक्चररों की हड़ताल होने के कारण दो अनुसूचित कार्यक्रम नहीं चलाए जा सके।

क्षेत्र कार्यालय, जयपुर

जयपुर के क्षेत्र कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित हैं:

- 18 से 22 फरवरी, 1986 तक एक शिक्षक विद्यालयों के किटों के विकास पर एक पांच दिन की कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 18 शिक्षकों ने भाग लिया। आत्म-अधिगम, मानिटरी शिक्षक और शिक्षक-कार्यकलापों के प्रतिमान पर पहली से पांचवी कक्षा की 1/2 यूनिट शिक्षण के लिए एक नमूना किट तैयार किया गया।
- 3 से 6 मार्च, 1986 तक प्रायोगिक परियोजना की अभिकल्पना करने के लिए प्रिंसिपलों और हैडमास्टर्स के एक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें पंद्रह प्रिंसिपल/हैडमास्टर्स ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में 30 परियोजना-प्रस्तावों को अंतिम रूप दिया गया।

- 18 से 22 मार्च, 1986 तक उदयपुर और सिरोही जिले के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की छात्राओं का नामांकन न करने और बीच में पढ़ाई छोड़ देने के कारणों पर चर्चा करने के लिए एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें 16 व्यक्तियों ने भाग लिया। इस संगोष्ठी में कारणों का उन्मूलन करने की योजना तैयार की गई।

क्षेत्र कार्यालय, मद्रास

मद्रास के क्षेत्र कार्यालय के अंतर्गत तमिलनाडु और संघीय क्षेत्र पाण्डिचेरी आते हैं। 1985-86 के दौरान इस कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित हैं -

- 8 से 12 अप्रैल, 1985 तक इरोड करैकल (पाण्डिचेरी) में प्रारंभिक शिक्षा के सर्वोत्कर्षण के संबंध में प्रारंभिक विद्यालयों के अधिकार बढ़ाने से संबंधित एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें चालीस शिक्षकों ने भाग लिया।
- 4 से 8 फरवरी, 1986 तक इरोड (तमिलनाडु) में प्रारंभिक विद्यालय के शिक्षकों के लाभ के लिए पर्यावरण अध्ययन दृष्टिकोण पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 40 शिक्षकों ने भाग लिया।
- 11 से 15 फरवरी, 1986 तक कलंगनी (सालम जिला) में पर्यावरण किया गया। इस कार्यशाला में तमिलनाडु के आदि द्रविड़ संस्थाओं के चालीस शिक्षकों ने भाग लिया।
- 18 से 22 फरवरी, 1986 तक करैकल (पाण्डिचेरी) में पर्यावरण अध्ययन दृष्टिकोण पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें गैर-पी.सी.सी.आर. के चालीस शिक्षकों ने भाग लिया।
- 3 से 7 मार्च, 1986 तक तिरुनलवेली में तमिलनाडु के शिक्षकों के लिए पर्यावरण अध्ययन दृष्टिकोण पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 40 शिक्षकों ने भाग लिया।

इन कार्यशालाओं के अतिरिक्त मद्रास के क्षेत्र कार्यालय ने तमिलनाडु और संघीय राज्य पाण्डिचेरी के पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों के लिए खिलौने बनाने की प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रथम और द्वितीय पुरस्कार पाण्डिचेरी के शिक्षकों ने जीता। चार-चार सांत्वना पुरस्कार भी तमिलनाडु और पाण्डिचेरी के शिक्षकों को दिया गया।

क्षेत्र कार्यालय, पटना

1985-86 के दौरान पटना के क्षेत्र कार्यालय ने निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्यकलाप किए:

- 17 से 19 दिसंबर, 1985 तक पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के लिए शैक्षिक खिलौना के निर्माण पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में भाग लेने वाले तेईस व्यक्ति और चार ज्ञानसाधन व्यक्तियों ने अनेक अच्छे-अच्छे शैक्षिक खिलौने बनाए।
- 14 से 18 फरवरी, 1986 तक पर्यावरण के जरिये विज्ञान के शिक्षण में पलाभू जिले के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सताइस व्यक्तियों और चार ज्ञानसाधन व्यक्तियों ने भाग लिया।
- 17 जनवरी, 1986 को राज्य स्तर पर खिलौने बनाने की प्रतियोगिता की गई। 4 फरवरी, 1986 को आयोजित समारोह में प्रतियोगिता जीतने वालों को नकद पुरस्कार और प्रमाण-पत्र दिए गए।

इन कार्यों के अतिरिक्त क्षेत्र कार्यालय प्रायोगिक परियोजना लागू करने का काम भी करता रहा। कार्यालय में प्राप्त हुए 13 परियोजना प्रस्तावों में से पांच परियोजनाओं को चुना गया और उन्हें वित्तीय सहायता दी गई।

क्षेत्र कार्यालय, पुणे

पुणे के क्षेत्र कार्यालय द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यकलाप निम्नलिखित हैं:

- 19 से 24 मार्च, 1986 तक पणजी में गोवा के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए माध्यमिक स्तर के विज्ञान के शिक्षण और मूल्यांकन का एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में तैत्तालिस शिक्षकों ने भाग लिया।
- 27 से 30 मार्च, 1986 तक नागपुर में महाराष्ट्र के जनजातीय क्षेत्र के आश्रम विद्यालयों में विज्ञान पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए पर्यावरण दृष्टिकोण से विज्ञान का शिक्षण करने पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें पच्चीस शिक्षकों ने भाग लिया।
- 29 मार्च से 2 अप्रैल, 1986 तक बंबई में महाराष्ट्र के मान्यता प्राप्त प्रारंभिक विद्यालयों के कुछ चुने हुए संवर्धन पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें पच्चीस शिक्षकों ने भाग लिया।
- पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए राज्य स्तर पर खिलौना बनाने की प्रतियोगिता कराई गई जिसमें 74 लोगों ने भाग लिया।
- 2 अप्रैल, 1986 को जीतने वालों को प्रथम और द्वितीय पुरस्कार के अलावा चार सांत्वना पुरस्कार भी दिए गए।

क्षेत्र कार्यालय, शिलांग

शिलांग के क्षेत्र कार्यालय के अन्तर्गत मेघालय, त्रिपुरा और संघीय राज्य मिजोरम आते हैं। आलोच्य वर्ष में इस कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित हैं:

- एस.सी.ई.आर.टी. एजल और एस.आई.ई. अगरतला में राज्य स्तर की छिलौने बनाने की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- 10 से 16 जनवरी, 1986 तक मेघालय के शिक्षकों के लिए सामान्य विज्ञान की अंतर्वस्तु और उसके शिक्षण में की गई प्रवृत्ति पर अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजित किया गया जिसमें बीस शिक्षकों ने भाग लिया।
- 4 से 10 फरवरी, 1986 तक एम.बी.एस.ई. एजल में विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले विभिन्न विषयों के प्रश्न-पत्र बनाने की तकनीक पर प्रश्न-पत्र बनाने वालों के सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें मिजोरम एस.एस.एल.सी. परीक्षा के प्रश्न-पत्र बनाने वाले चौतीस व्यक्तियों ने भाग लिया।

ऊपर उल्लेख किए गए कार्यक्रमों के अलावा शिलांग के क्षेत्र कार्यालय ने 'मेघालय के +2 स्तर के जनजातीय छात्रों के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की सूक्ष्म-योजना' नाम की अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति पर एक शोध परियोजना पूरी की गई। 'मिजोरम के +2 स्तर के जनजातीय छात्रों के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के साधन और योजना का सर्वेक्षण' नामक एक अन्य अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति संबंधित शोध परियोजना का कार्य प्रगति पर है। इस परियोजना के जुलाई, 1986 तक पूरा हो जाने की आशा है।

क्षेत्र कार्यालय, शिमला

1985-86 में शिमला के क्षेत्र कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित हैं -

- 12 से 14 अगस्त, 1986 तक हिमाचल प्रदेश के विद्यालय प्रसारणों की प्रभाविता का अध्ययन करने के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें उन्नीस व्यक्तियों ने भाग लिया।
- 24 से 27 फरवरी, 1986 तक नवीं-दसवीं कक्षा की जैविकी की अंतर्वस्तु तथा उसे पढ़ाने की कार्यप्रणाली के दृष्टिकोण पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- 3 से 7 मार्च, 1986 तक माध्यमिक कक्षाओं में भूगोल के

शिक्षण में मानचित्र के उपयोग पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें सात व्यक्तियों ने भाग लिया।

- 26 से 28 दिसम्बर, 1985 तक हिमाचल प्रदेश के प्रवासी अनुसूचित जनजाति के प्रारंभिक विद्यालय के बच्चों को पढ़ाने की विधि पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें पांच शिक्षकों ने भाग लिया।
- 4 से 6 अप्रैल, 1986 तक हिमाचल प्रदेश में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विकास से संबद्ध मामलों को जानने के लिए सम्मेलन किया गया जिसमें उन्तीस व्यक्तियों ने भाग लिया।

क्षेत्र कार्यालय, जम्मू और कश्मीर

1985-86 के दौरान जम्मू और कश्मीर के क्षेत्र कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित हैं -

- 24 से 29 अक्टूबर, 1985 तक एस.आई.ई. श्रीनगर में हेड मास्टर्स के लिए एक दिन का अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 25 व्यक्तियों ने भाग लिया।
- 5 से 9 जुलाई, 1985 तक एस.आई.ई. श्रीनगर में प्रिंसिपलों के लिए एक चार दिन का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 25 प्रिंसिपलों ने भाग लिया।
- 10 से 12 मार्च, 1985 तक जम्मू में जम्मू और कश्मीर के विद्यालय शिक्षा परिषद के निम्नतम राष्ट्रीय कोड पाठ्यचर्या पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें पूरे राज्य के लगभग 40 शिक्षकों ने भाग लिया।
- 17 से 20 मार्च, 1986 तक एस.आई.ई. जम्मू में जम्मू और कश्मीर के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के छात्रों की शिक्षा संबंधी समस्याओं पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में विभिन्न वर्ग के चालीस अधिकारियों और शिक्षकों ने भाग लिया।
- 29 से 31 मार्च, 1986 तक एस.आई.ई., श्रीनगर में शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्या पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में पैतालिस शिक्षक और प्रशिक्षकों ने भाग लिया।

क्षेत्र कार्यालय, त्रिवेन्द्रम

त्रिवेन्द्रम का क्षेत्र कार्यालय केरल और संघीय राज्य लक्षद्वीप की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इस कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित हैं -

- 13 से 16 जनवरी, 1986 तक अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों की कार्यप्रणाली और मूल्यांकन पर

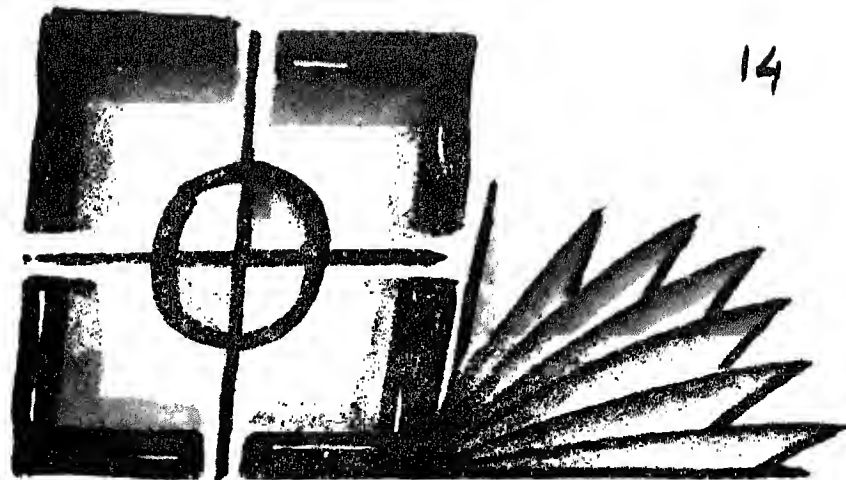
1985-86

प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बाइस शिक्षकों ने भाग लिया।

3 से 7 फरवरी, 1986 तक एस.यू.पी.डब्ल्यू. के मुख्य व्यक्तियों के प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें 34

व्यक्तियों ने भाग लिया।

17 से 21 फरवरी, 1986 तक विज्ञान के निदानी परीक्षण और उपचारी शिक्षण पर कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें अठाइस शिक्षकों ने भाग लिया।



14

परिषद् का एक अतिमहत्वपूर्ण कार्यकलाप विद्यालय स्तर के लिए पाठ्यपुस्तक, अभ्यास पुस्तिका, शिक्षक दर्शिका तथा शिक्षकों के लिए अन्य अध्यापन सामग्री, अनुसंधान मोनोग्राफ, पत्रिका आदि प्रकाशित करना है। एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन संबंधी कार्यों को प्रकाशन विभाग देखता है। परिषद् के प्रकाशनों को मोटे तौर पर निम्नलिखित संवर्गों में रखा जाता है :

1. विद्यालय पाठ्यपुस्तक, अभ्यास पुस्तिका, निर्धारित पूरक रीडर,
2. 14-17 वर्ष के आयु-वर्ग के लड़कों लिए पूरक पठन-सामग्री।
3. शिक्षक गाइड, शिक्षक-गुटका तथा अन्य अध्यापन सामग्री।
4. अनुसंधान अध्ययन और मोनोग्राफ
5. शैक्षिक सम्मेलनों की रिपोर्ट, संगोष्ठियों की कार्रवाई, पैमफलेट, बुकलेट, ब्रोशर, फोल्डर, आदि
6. शैक्षिक पत्रिकाएं।

पुस्तकालय प्रलेखन और सूचना विभाग अपनी सामान्य पुस्तकालय सेवाओं के अलावा प्रलेखन सेवा का भी काम करता है।

आलोच्य वर्ष में कुल 272 प्रकाशन प्रकाशित हुए जिसका विवरण नीचे दिया गया है :

प्रकाशन-वर्ग	शीर्षकों की संख्या
पाठ्यपुस्तक/अभ्यास पुस्तिका/निर्धारित पूरक रीडरों का प्रथम संस्करण	16
पाठ्य पुस्तक/अभ्यास पुस्तिका/निर्धारित पूरक रीडरों का पुनर्मुद्रण	161
अन्य सरकारी एजेंसियों के लिए पाठ्य-पुस्तक/अभ्यास पुस्तिका	8
अनुसंधान मोनोग्राफ/रिपोर्ट तथा अन्य प्रकाशन पत्रिका (अंक)	45
	41
कुल	271

पत्रिकाओं को छोड़कर अन्य सभी प्रकाशनों की सूची इस अध्याय के अन्त में दी गई है ।

विद्यालय सत्र 1986-87 की नई पाठ्य पुस्तक

नई पाठ्य पुस्तक से सम्बद्ध निर्णय के अनुसार एन.सी.ई.आर.टी. ने नवीं और दसवीं कक्षाओं के लिए विज्ञान और गणित की नई पाठ्य पुस्तक

तैयार करने के लिए केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् (सी.बी.एस.ई.) का सहयोग लिया । एन.सी.ई.आर.टी. ने ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं के लिये भाषा और समाज विज्ञान की नई पाठ्यपुस्तकें भी तैयार की हैं। हालांकि पिछले वर्ष नवीं और दसवीं कक्षाओं की अनेक पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं । जैसाकि पिछले वर्ष की रिपोर्ट में उल्लेखित किया जा चुका है, फिर भी आलोच्य वर्ष में दसवीं और बारहवीं कक्षाओं की कुछ नई पाठ्य पुस्तकों के साथ-साथ नवीं और दसवीं कक्षाओं की शेष नई पाठ्य पुस्तकें भी प्रकाशित की गईं जिनका विवरण नीचे दिया गया है :

नवीं कक्षा

1. भौतिकी भाग-I
2. रसायन विज्ञान भाग-I
3. बेसिक बायोलॉजी पार्ट-I वाल्यूम-II
4. आधुनिक जीव विज्ञान भाग-I , खंड-I
5. आधुनिक जीव विज्ञान भाग-I , खंड-II
6. गणित भाग-I खंड-I
7. गणित भाग-I खंड-II

दसवीं कक्षा

8. मैथेमैटिक्स पार्ट-II

ग्यारहवीं कक्षा

9. साहित्य का स्वरूप
10. फिजीकल जियोग्राफी
11. भौतिक भूगोल

बारहवीं कक्षा

12. अभिनव काव्य भारती भाग-II
13. अभिनव गद्य भारती भाग-II
14. काव्य संचयन भाग-II
15. गद्य संचयन भाग-II

लेटअस एनरिच अवर इंग्लिश माला

लेटअस एनरिच अवर इंग्लिश माला माध्यमिक विद्यालय के छात्रों और सेवापूर्व तथा सेवाकालीन शिक्षकों की भाषायी आवश्यकताओं की पूर्ति करने की दृष्टि से ही 20 पुस्तिकाओं की एक माला है । इन छोटी-छोटी पुस्तिकाओं में स्वयं अपने से पढ़ने की सामग्री होती है और इन पुस्तिकाओं का निर्माण सीखने वाले की, पढ़ने और लिखने में बुनियादी कौशल हासिल

करने, अपने शब्द संग्रह को समृद्ध बनाने और अंग्रेजी के प्रयोग सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में ज्ञान अर्जित की दृष्टि से किया गया है। अभी तक इस माला की आठ पुस्तिकाएँ प्रकाशित हुई हैं।

भारत का स्वतंत्रता संग्राम—दृश्य और प्रलेख

सम्भवतः यह अपने प्रकार का प्रथम प्रकाशन है जिसमें एक ही खंड में भारत के स्वतंत्रता संग्राम से सम्बद्ध कुछ अतिमहत्वपूर्ण एवं प्रमाणिक दृश्य एवं स्रोत सामग्री पाठक को उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है। इसमें लगभग पेंटिंग, स्केच, फोटो, समाचार-कट्टरन और 2,00,000 शब्दों के प्रलेख सहित 2,000 दृश्य सामग्री है।

प्रकाशन को दो रूपों में प्रकाशित किया गया है। एक पुस्तकालय और व्यक्तिगत पाठक के लिए जिल्दबन्ध खंड और दूसरा शिक्षण सामग्री के रूप में कक्षाओं में इस्तेमाल में आने वाला खंड। यह अलग-अलग पत्रों का एक पोर्टफोलियो होता है जिसमें से कक्षा में पढ़ाए जाने वाले विषय से सम्बद्ध पत्रों को पोर्टफोलियो में से बाहर निकालकर इस्तेमाल में लाया जा सकता है और इस्तेमाल के बाद उन पत्रों को पुनः पोर्टफोलियो में रख दिया जाता है।

हालांकि इस प्रकाशन का बुनियादी उद्देश्य एक शिक्षण सामग्री तैयार करना था पर इस प्रकाशन में कुछ ऐसी सामग्री भी दी गई है जो एक सामान्य पाठक को अन्य कहीं सामान्यतः उपलब्ध नहीं होती। मानव संसाधन विकास मंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव ने 25 दिसम्बर, 1985 को दिल्ली में इस प्रकाशन का विमोचन किया।

वितरण

गत वर्षों की तरह अभी भी परिषद् के प्रकाशनों का वितरण और बिक्री सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग के जरिए की जाती है जोकि परिषद् का राष्ट्रीय वितरक है और जिसके बिक्री केन्द्र नई दिल्ली, कलकत्ता, बंबई, मद्रास, पटना, लखनऊ और हैदराबाद में हैं जो पूरे देश की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

हां यह बात अवश्य है कि गत वर्षों की तरह परिषद् की पत्रिकाओं के वितरण और बिक्री का काम स्वयं परिषद् करता है।

ऊपर उल्लेख किए गए बिक्री और वितरण व्यवस्था के अतिरिक्त भारत के बड़े-बड़े समाचार पत्रों में परिषद् द्वारा निकाले गये विज्ञापन के आधार पर विद्यालयों और अन्य शैक्षिक संस्थाओं से परिषद् की पाठ्यपुस्तक उन्हें भेजने का आर्डर सीधे परिषद् लेता है। आलोच्य वर्ष में कुल 612 आर्डर प्राप्त हुए जिनमें से—158 केन्द्रीय विद्यालयों से, सैनिक स्कूलों से 25, तिब्बतियों के केन्द्रीय विद्यालय से 30, अन्य विद्यालयों से 37 और अरुणाचल प्रदेश के विद्यालयों तथा जिला शिक्षा अधिकारियों से 29 आर्डर सीधे प्राप्त हुये और उन पर कार्रवाई की गई। परिषद् ने 1986-87 सत्र के लिये शिक्षा निदेशालय, सिक्किम को भी पाठ्यपुस्तकें भेजी। इसके

अतिरिक्त विद्यालय शिक्षा परिषद्, हरियाणा की ग्यारहवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तकें और विद्यालय शिक्षा परिषद्, जम्मू और कश्मीर की ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकें मुद्रित की गईं और परिषद् ने अपने राष्ट्रीय वितरकों के जरिए मुहय्या कराया।

उच्चतर माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उड़ीसा को +2 स्तर की गणित की पाठ्य पुस्तकें भेजी गई हैं।

राजस्थान विश्वविद्यालय के अनुरोध पर परिषद् ने राजस्थान विश्वविद्यालय के बी.ए. के प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम में निर्धारित पुस्तक इंग्लिश रीडर—II (कोर) को मुद्रित किया और उसकी बिक्री राज्यस्थान के कुछ चुने हुए पुस्तक विक्रेताओं से करवाई।

पुस्तक मेला/प्रदर्शनी में भाग लेना

एन.सी.ई.आर.टी. ने निम्नलिखित पुस्तक मेलों/प्रदर्शनियों में अपने प्रकाशन प्रदर्शित किए :

12 वां राष्ट्रीय पुस्तक मेला	:	सितंबर—अक्तूबर, 1985 में राष्ट्रीय बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित
तीसरा राष्ट्रीय बाल पुस्तक मेला आनंद भवन, इलाहाबाद	:	नवंबर 1985 में राष्ट्रीय बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित
विज्ञान प्रदर्शनी, उदयपुर	:	नवंबर 1985 में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा आयोजित
7 वां विश्व पुस्तक मेला, प्रगति मैदान, नई दिल्ली	:	फरवरी, 1986 में राष्ट्रीय बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित
शिक्षक की बैठक—प्रदर्शनी, नई दिल्ली	:	सितंबर, 1985 में डीटीईएसईएस. एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा आयोजित
एन.आई.ई. परिसर में शिक्षा के व्यावसायीकरण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, नई दिल्ली	:	नवंबर, 1985 में शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग द्वारा आयोजित
उच्च शिक्षा में नई टेक्नालॉजी के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पुस्तक प्रदर्शनी, भारतीय टेक्नोलॉजी संस्थान, नई दिल्ली	:	नवंबर 1985 में भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा आयोजित

परिषद् ने राष्ट्रीय बुक ट्रस्ट, भारत के जरिए एन.सी.ई.आर.टी. के कुछ चुने हुए प्रकाशनों को भेजकर निम्नलिखित पुस्तक मेले/प्रदर्शनियों में भी भाग लिया :

लंदन पुस्तक मेला	—	अप्रैल, 1985
कैनाडी पुस्तक मेला, टोरंटो	—	जून, 1985
अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक समारोह और विद्यालय मेला, मजिला—1985	—	जून, 1985

मलेशिया पुस्तक मेला, 1985 — जुलाई, 1985
 16वां सिंगापुर पुस्तक समारोह — सितंबर, 1985
 और पुस्तक मेला ।
 पांचवां मास्को अन्तर्राष्ट्रीय — सितंबर, 1985
 पुस्तक मेला ।
 भारत समारोह-पेरिस — अक्टूबर, 1985
 सातवां काहिरा अन्तर्राष्ट्रीय — जनवरी-फरवरी, 1986
 पुस्तक मेला ।

बिक्री

आलोच्य वर्ष में एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशनों की रु. 3,51,67,215.25 की बिक्री हुई । विभिन्न विदेशी पार्टियों को भी 533.86 के प्रकाशन बेचे गये ।

राज्य सरकार एवं अन्य एजेन्सियों को कापीराइट की अनुमति

राज्य स्तर की अनेक एजेन्सियों ने एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में अपनी अभिरुचि दिखलाई है । नीचे दी गई सारणी में उन एजेन्सियों के नाम दिये गये हैं जिन्हें आलोच्य वर्ष में परिषद ने अपनी पाठ्य पुस्तकों और अन्य प्रकाशनों को प्रकाशित करने के लिए स्वीकरण/अनुमति करने की अनुमति दी है ।

हरियाणा,	नवीं-दसवीं कक्षाओं की एन.सी.ई. सचिव, आर.टी. की 18 पाठ्यपुस्तकों को
हरियाणा विद्यालय	स्वीकरण और प्रकाशन करने की
शिक्षा परिषद, भिवानी (हरियाणा)	अनुमति दी गई ।
हिमाचल प्रदेश,	ग्यारहवीं-बारहवीं कक्षाओं की
सचिव एन.सी.ई.आर.टी. की निम्नलिखित	
हिमाचल प्रदेश विद्यालय,	पाठ्यपुस्तकों का स्वीकरण और
शिक्षा परिषद, धर्मशाला	पुनर्मुद्रण करने की अनुमति दी
(हिमाचल प्रदेश)	गई ।

1. मैथेमेटिक्स बुक I
 2. मैथेमेटिक्स बुक II
 3. ग्यारहवीं कक्षा के लिए रंगिणी
 4. ग्यारहवीं बारहवीं कक्षाओं के लिए व्याकरण सौरभम
- मध्य प्रदेश ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं की एन.सी.ई.आर.टी. की अंग्रेजी पाठ्यपुस्तकों का स्वीकरण करने की अनुमति दी गई
- सचिव माध्यमिक शिक्षा परिषद, मध्य प्रदेश, भोपाल

1. इंग्लिश रीडर (कोर) पार्ट-1
2. इंग्लिश रीडर (कोर) पार्ट-2
3. इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर (कोर) पार्ट-1

4. इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर (कोर) पार्ट-2
5. फाइव वन ऐक्ट प्लेज
6. डियर टू ऑल द म्यूसेज
7. मॉन टॉप ऑफ द वर्ल्ड
8. 1 —द पीपुल (ग्यारहवीं कक्षा के लिए)

महाराष्ट्र

एन.सी.ई.आर.टी. की सप्लीमेंटरी रीडर फ्रीडम मूवमेंट इन इण्डिया महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक से एक वाक्य "ए फॉर्स इन माइटर और उच्चतर माध्यमिक दैन बायलेन्स" को शामिल करने शिक्षा परिषद, पुणे । की अनुमति दी गई ।

पत्रिकाओं का प्रकाशन

पत्रिका कक्ष का मुख्य कार्य परिषद की लक्ष्य — अभिविन्यस्त पत्रिकाएं निकालने की है । पत्रिका कक्ष कुछ शैक्षिक कार्यक्रम और शोध कार्यकलाप भी अपने हाथ में लेता है । पत्रिका कक्ष द्वारा प्रकाशित की गई पत्रिकाओं का विवरण नीचे दिया गया है

इण्डियन एजुकेशन रिव्यू (त्रैमासिक)

एक शोध पत्रिका है जो शैक्षिक अनुसन्धानकर्ताओं और छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है । यह भारत और विदेशों में शोध लेख, शिक्षा और संबद्ध विषय में डॉक्टरी तथा डाक्टरोत्तर अनुसंधान के संक्षिप्त विवरण, अनुसंधान टिप्पणी और शैक्षिक अनुसंधान की पुस्तकों की समीक्षा के रूप में किए गये शैक्षिक अनुसंधान से संबद्ध सूचना का प्रचार प्रसार करता है । शैक्षिक/अनुसंधान संस्थाओं द्वारा किए गए संस्थागत अनुसंधान कार्य को भी इस पत्रिका के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया जाता है ।

जनरल ऑफ इण्डियन एजुकेशन (पाक्षिक)

पत्रिका माध्यमिक/प्रवर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए है जिससे उन्हें विशेष रूप से कक्षा की पढ़ाई में और सामान्य रूप से विद्यालय के वातावरण में सुधार लाने में सहायता मिलती है । इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य विद्यालय शिक्षा की नवीन प्रक्रियाओं का प्रचार-प्रसार करना तथा बेहतर पढ़ाई के लिये शिक्षा की नवीन प्रक्रियाओं को अपनाने के लिये प्रोत्साहित करना है । किसी विशेष तथ्य की ओर विशेष ध्यान दिलाने के लिये समय-समय पर इस पत्रिका का विशेषांक भी निकाला जाता है ।

भारतीय आधुनिक शिक्षा (त्रैमासिक हिन्दी में)

पत्रिका शोधकर्ताओं और माध्यमिक/प्रवर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए है । इस पत्रिका में कक्षा सम्बन्धी समस्याओं को हल करने, शिक्षा में नवीन प्रक्रियाओं का प्रचार-प्रसार करने और विद्यालय शिक्षा से सम्बद्ध शोध कार्य करने पर बल दिया जाता है ।

स्कूल साइन्स (त्रैमासिक)

पत्रिका का उद्देश्य माध्यमिक/प्रवर माध्यमिक विद्यालयों छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। यह भारत और विदेशों में शोध लेख, शिक्षा और सम्बद्ध विषय में डाक्टरी तथा डाक्टरीोत्तर अनुसंधान टिप्पणी और शैक्षिक अनुसंधान की पुस्तकों की समीक्षा के रूप में किए गए शैक्षिक अनुसंधान से संबद्ध सूचना का प्रचार-प्रसार करता है। शैक्षिक/अनुसंधान संस्थाओं द्वारा किए गए संस्थागत अनुसंधान कार्य को भी इस पत्रिका के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया जाता है।

द प्राइमरी टीचर (त्रैमासिक)

पत्रिका प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए है जो उन्हें कक्षा संबंधी समस्याओं को हल करने और कक्षा की पढ़ाई में सुधार लाने में सहायक होती है। प्राथमिक स्तर की शिक्षा से सम्बद्ध नवीन प्रक्रियाओं के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से स्वयं विद्यालय के शिक्षकों द्वारा लिखे गए लेखों और शिक्षा सम्बन्धी समाचार और विचारों को इस पत्रिका में नियमित रूप से प्रकाशित किया जाता है।

प्राइमरी शिक्षक (हिन्दी में त्रैमासिक)

पत्रिका मुख्यतः प्राइमरी टीचर का हिन्दी संस्करण है। यह पत्रिका प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए है और इनमें प्राथमिक स्तर पर विद्यालय के वातावरण में सुधार लाने से संबद्ध तथ्यों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इससे यह स्पष्ट है कि इन लक्ष्य-अभिविन्यस्त पत्रिकाओं का बुनियादी उद्देश्य शिक्षा के संगत क्षेत्रों/स्तरों में अद्यतन जानकारी का प्रचार-प्रसार करने के अतिरिक्त विभिन्न स्तरों पर विद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाना है। आलोच्य वर्ष में इन पत्रिकाओं के निम्नलिखित अंक प्रकाशित हुए :

इंडियन एजुकेशनल रिव्यू	: जनवरी, 1985 अप्रैल, 1985 जुलाई, 1985 और अक्टूबर 1985
जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन	: नवंबर 1984, जनवरी 1985, मार्च 1985, मई 1985, जुलाई 1985, सितम्बर 1985, और नवंबर 1985 इनमें से सितंबर 1985 का अंक शैक्षिक पत्रकारिता पर विशेषांक था।
भारतीय आधुनिक शिक्षा	: जुलाई 1984, अक्टूबर 1984, जनवरी 1985, अप्रैल 1985, जुलाई 1985, और अक्टूबर 1985, जुलाई 1985, का अंक शैक्षिक पत्रकारिता पर एक विशेषांक था।

स्कूल विज्ञान

: सितंबर 1984, दिसम्बर 1984,
मार्च 1985, जून 1985,
सितंबर 1985 और दिसम्बर
1985

द प्राइमरी टीचर

: जनवरी 1985, जुलाई 1985,
अक्टूबर 1985, और जनवरी
1986

प्राइमरी शिक्षक

: जनवरी 1984, अप्रैल 1984,
जुलाई 1984, अक्टूबर 1984,
जनवरी 1985, अप्रैल 1985,
जुलाई 1985, अक्टूबर 1985,
और जनवरी 1986

1985-86, के दौरान इस पत्रिका के निम्नलिखित अंक निकाले
गये

जनवरी 1984, अप्रैल 1984,
जुलाई 1984, अक्टूबर 1984,
जनवरी 1985, अप्रैल 1985,
जुलाई 1985, अक्टूबर 1985,
और जनवरी, 1986

शैक्षिक कार्यक्रम (विकासालम्क)

पत्रिका कक्ष ने दो मुख्य परियोजनाएं न केवल शैक्षिक पत्रकारिता में (क) हैण्ड बुक और (ख) इयर बुक नामक दो बुनियादी सन्दर्भ पुस्तक विकसित करना है बल्कि विद्यालय कालेज पत्रिका तथा शैक्षिक पत्रिका के निर्माण एवं लेखन कला में शिक्षक प्रशिक्षक और पत्रकारों को अभिविन्यास के जरिए पत्रिका कक्ष का प्रस्ताव कुछ समर्थ कार्मिक को तैयार करना है जो शैक्षिक पत्रिकाओं और इस तरह विद्यालय शिक्षा के स्तर में सुधार लाने से संबद्ध क्लेश आभिविन्यास को समझने में पत्रिका कक्ष के साथ सहयोग कर सकें। आलोच्य वर्ष में पत्रिका कक्ष ने निम्नलिखित शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन किया :

शैक्षिक पत्रकारिता पर पुस्तिका का निर्माण

(1) 28 से 30 मई, 1985 तक शिक्षा संकाय, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर में शैक्षिक पत्रकारिता पर पुस्तिका की रूपरेखा तैयार करने के लिये एक प्राथमिक बैठक हुई जिसमें 8 व्यक्तियों ने भाग लिया। तदर्थ रूपरेखा पर चर्चा करने के अलावा समाचार-पत्रों में शिक्षा पर समाचार लिखना, शैक्षिक पत्रिकाएं प्रकाशित करना, शैक्षिक पत्रकारिता के लिए आवश्यक कौशल और क्षमता आदि जैसी शैक्षिक पत्रकारिता के विभिन्न दृष्टिकोणों पर चर्चा की गई।

(II) 6 से 8 नवम्बर 1985 तक निर्मला शिक्षा-संस्थान पणजी, गोवा में शैक्षिक पत्रकारिता की पुस्तिका की सामग्री तैयार करने पर एक कार्यशाला की गई। इस कार्यशाला में 21 व्यक्तियों ने भाग लिया। पुस्तिका के विभिन्न पहलुओं/शीर्षकों के अनेक पंक्तों पर चर्चा करने के अतिरिक्त निम्नलिखित तीन प्रकार के अभिविन्यास कार्यक्रम विकसित करने के लिए समूह-कार्य किया गया :

- (क) भिन्न-भिन्न पत्रिकाओं और लक्ष्यों से संबद्ध विभिन्न प्रकार के लेखों के लेखन-कार्य में शिक्षकों के लिए कौशल अभिविन्यस्त कार्यक्रम।
- (ख) अच्छे किस्म की विद्यालय/कालेज पत्रिका निकालने की कला में शिक्षकों के लिये कौशल अभिविन्यस्त कार्यक्रम। और
- (ग) विभिन्न प्रकार की पत्रिकाओं के लिये पुस्तक समीक्षा लिखने की कला में कौशल अभिविन्यस्त कार्यक्रम।

(III) 21 से 23 जनवरी 1986 तक एन.सी.ई.आर.टी. में बंगलौर शैक्षिक पत्रकारिता की पुस्तिका के लिये विकसित की जानेवाली सामग्री पर एक कार्यशाला की गई जिसमें 27 व्यक्तियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में शैक्षिक पत्रकारिता से संबद्ध लेख और शोध पत्र प्रस्तुत करने के अतिरिक्त टाइम्स ऑफ इंडिया ग्रुप के मिडिया विशेषज्ञ श्री पांत जलि सेठी द्वारा दिए गए आलोचनात्मक एवं रचनात्मक सुझावों की दृष्टि से पुस्तिका की तदर्थ रूपरेखा पर और चर्चा की गई।

(IV) 30 मार्च से 2 अप्रैल 1986 तक शिक्षा विभाग, कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर में शैक्षिक पत्रकारिता की पुस्तिका के लिए विकसित की जाने वाली सामग्री पर एक कार्यशाला की गई जिसमें 27 व्यक्तियों ने भाग लिया। पुस्तिका के विभिन्न विषयों/पहलुओं पर प्रस्तुत किये गये लेखों पर चर्चा करने के अतिरिक्त न्यू मिडिया एकेडमी के प्रो. पी.एन. गल्हन द्वारा किए गए प्रेक्षणों की दृष्टि से पुस्तिका के ब्यौरे मालूम करने के लिए समूह-कार्य किया गया।

शैक्षिक पत्रकारिता की वार्षिकी का निर्माण

(I) 27 से 29 सितंबर 1985 तक केन्द्रीय अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा संस्थान, शिलांग में शैक्षिक पत्रकारिता की वार्षिकी की तदर्थ रूपरेखा तैयार करने पर एक कार्यशाला में शैक्षिक पत्रकारिता में एक नई दिशा देने के लिए इसके विभिन्न पहलुओं पर प्रस्तुत किए गए अनेक लेखों पर चर्चा की गई।

(II) 25 से 27 फरवरी, 1986 तक राज्य शिक्षा संस्थान, पोर्ट ब्लेयर में शैक्षिक पत्रकारिता की वार्षिकी की सामग्री तैयार करने के लिए एक कार्यशाला की गई जिसमें 22 व्यक्तियों ने भाग लिया। शिक्षा के बारे में समाचार-पत्र में रिपोर्टिंग सहित शैक्षिक पत्रकारिता के विभिन्न पहलुओं से संबद्ध अध्ययन और लेखों पर चर्चा करने के अतिरिक्त नेशनल मिडिया सेंटर

के सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री उपेन्द्र वाजपेयी द्वारा प्रस्तुत किये गये तथ्यों के आधार पर वार्षिकी की तदर्थ रूपरेखा पर आगे चर्चा की गई तथा उसमें सुधार लाया गया।

अनुसंधान संबंधी कार्यकलाप

शैक्षिक पत्रिकाओं का राष्ट्रीय सर्वेक्षण

अगरत, 1985 से पत्रिका कक्ष ने शैक्षिक पत्रिकाओं का व्यापक राष्ट्रीय सर्वेक्षण करने का काम अपने हाथ में लिया है। यह दो वर्ष की परियोजना है। देश की शैक्षिक पत्रिकाएं निकालने वाली संस्थाओं से संबद्ध मूल आंकड़े एकत्रित करने और तैयारी का काम करने के अतिरिक्त विद्यालयों और कालेजों की पत्रिकाओं सहित विभिन्न शैक्षिक पत्रिकाओं के बारे में ब्यौरे तैयार करने के लिए एक प्रश्नावली तैयार की गई। यह कार्य प्रगति पर है।

पत्रिका कक्ष द्वारा हाथ में लिए शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रभाव

पुस्तिका और वार्षिकी के प्रकाशन से जहां एक ओर अच्छे स्तर की पत्रिका निकालने में सहायता मिलती है, वहां दूसरी ओर शिक्षकों, प्रशिक्षकों, अनुसंधानकर्ताओं, कार्यरत पत्रकारों के संचार कौशल और भाषा सुधारने में सहायता मिलती है। सर्वेक्षण परिणामों का भी अच्छे स्तर की पत्रिका निकालने और इस तरह शिक्षण के स्तर में सुधार लाने पर प्रभाव पड़ता है।

इन कार्यक्रमों की महत्ता अब इस बात से स्पष्ट हो जाती है कि अनेक संस्थाएं/विश्वविद्यालय पत्रकारिता और जन-संचार में शिक्षक प्रशिक्षण/प्रशिक्षण के एक भाग के रूप में शैक्षिक पत्रकारिता में एक पाठ्यक्रम की व्यवस्था करने लगे हैं। क्योंकि शैक्षिक प्रायोजना में इसका काफी प्रभाव होता है अतः शैक्षिक पत्रकारिता का कार्यक्रम सभी क्षेत्रों में काफी लोकप्रिय हो गया है। मिडिया के लोग शैक्षिक पत्रकारिता के संबर्धन और विकास में रुचि रखते हैं क्योंकि ऐसा करने से शिक्षा पर समाचार बनाने में एक अनुकूल वातावरण बनता है। पत्रकारिता विद्यालयों में लोग उतनी ही रुचि लेते हैं जितनी कि शिक्षक कालेजों में क्योंकि इन दोनों संस्थाओं का उद्देश्य प्रशिक्षण कार्यक्रम के जरिए प्रशिक्षणार्थियों के मन में भाषा और संचार कौशल की जानकारी प्राप्त करने की इच्छा जागृत करना है। विद्यालय शिक्षा से संबद्ध राज्य स्तर की एंजेन्सियों और शिक्षण संध बेहतर विद्यालय शिक्षा के एक साधन के रूप में अच्छे स्तर की विद्यालय पत्रिका प्रकाशित करने की कला और कौशल में किसी न किसी प्रकार का क्रैश अभिविन्यास कार्यक्रम चलाना चाहते हैं।

प्रलेखन

पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग (डी.एल.डी.आई.) परिषद का एक शैक्षिक जंग के रूप में काग करता है। इसके मुख्य कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों की दृष्टि से पठन-सामग्री एकत्रित और आयोजित करने के साथ-साथ उसका प्रचार-प्रसार भी करना है :

(I) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के संकाय के सदस्यों की और देश भर के शिक्षा क्षेत्र से संबद्ध छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है :

(II) शिक्षा संबंधी सूचनाओं के लिए एक वितरण केन्द्र का काम करना ।

(III) अनुसंधान और अध्ययन का संवर्धन ।

(IV) विद्यालय एवं शिक्षक प्रशिक्षण कालेज के व्यावसायिक अमला को सेवाकालीन अभिविन्यास कार्यक्रम उपलब्ध कराकर इन संस्थाओं के पुस्तकालयों में उन्नत स्तर की पुस्तकालय सेवा के जरिए शिक्षा के स्तर में सुधार लाना ।

संग्रह

31 मार्च, 1985 को पुस्तकों की संख्या 116106
1985-86 में बढ़ायी गई पुस्तकों की संख्या

(क) खरीदकर	2323
(ख) तोहफा के रूप में प्राप्त	378
(ग) दोनों को जोड़ (क+ ख)	2701
(घ) हटाई गई पुस्तक	455
(ङ) 31-3-86 को कुल पुस्तकों की संख्या	118352

निःशुल्क अथवा आदान-प्रदान से प्राप्त
पत्रिकाओं की संख्या 402
मंगाये जाने वाले समाचार-पत्रों की संख्या 16

समाचार कतरन

आलोच्य वर्ष में शिक्षा सम्बन्धी समाचारों और सम्पादकीय के लिए नियमित रूप से 16 समाचार पत्र पढ़े गए और आगे के सन्दर्भ के लिए 1358 को सम्भाल कर रख दिया गया।

प्रकाशन

1985-86 के दौरान निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किए गए :

- 1- परिग्रहण सूची (मासिक)
- 2- वर्तमान विषयवस्तु (मासिक)
- 3- नैतिक शिक्षा पर कुछ चुने हुए सार लेखक-के.एल. लुथरा और एच.एस. शर्मा
- 4- शिक्षा नीति पर कुछ चुनी हुई ग्रंथ सूची- लेखक-एच.एस. शर्मा
- 5- एस.ए.आर.सी. सदस्य की शिक्षा पद्धति का डाइजेस्ट

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एकक के पेम्पलेट

शिक्षा और संबद्ध विषयों के पेम्पलेटों को एकत्रित किया जा रहा है। विभाग 5000 पेम्पलेटों को एकत्रित कर चुका है।

प्रकाशन

1985-86 में सदस्यता	2384
1985-86 के दौरान आने वाले छात्रों को दी गई परामर्श सुविधाएं	436

कार्य के घंटे

उपभोक्ताओं की मांग की पूर्ति करने के लिए सभी काम के दिन पुस्तकालय 9 बजे सुबह से 8 बजे रात तक खुला रखा जाता है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए :-

- 1- 22-23 जुलाई, 1985 तक लखनऊ में शिक्षक प्रशिक्षण कालेज में पुस्तकालयों के विकास पर कार्यशाला ।
- 2- 8-12 जनवरी 1986 तक शांतिनिकेतन में प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण कालेज पुस्तकालयों के विकास पर कार्यशाला ।
- 3- 21-1-1986 से 25-1-1986 तक जोधपुर में राजस्थान के विद्यालय पुस्तकालय अध्यक्षा का सेवाकालीन प्रशिक्षण।
- 4- 17-22 फरवरी, 1986 के दौरान चोंगलॉग में अरुणाचल प्रदेश के विद्यालय पुस्तकालय अध्यक्षा का सेवाकालीन प्रशिक्षण।

विस्तार

श्री के.एल. लुथरा, अध्यक्ष, डी.एल.डी.आई. ने पुरालेखी अध्ययन विद्यालय, भारत का राष्ट्रीय पुरालेखागार, नई दिल्ली में 10-3-1986 को 'सूचना प्रलेखन केन्द्र और पुरालेखाकार एक तुलनात्मक अध्ययन' पर व्याख्यान दिया ।

विकास

14 फरवरी से 15 फरवरी 1986 तक एन.सी.ई.आर.टी. और राममोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन, कलकत्ता ने नई शिक्षा नीति पुस्तकालय और सूचना तंत्र पर एक-एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन संयुक्त रूप से किया ।

1985-86 के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित प्रकाशन :

क्र.सं. शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियां की संख्या
----------------	-------------	----------------------------

1	2	3	4
---	---	---	---

पाठ्यक्रम और निर्धारित सप्ताहिक रीडर

पहली कक्षा

पाठ्य पुस्तक

- | | | |
|--|-------------|----------|
| 1. बाल भारती भाग- I (पुनर्मुद्रित) | फरवरी, 1986 | 1,90,000 |
| 2. लैट अस लर्न इंग्लिश बुक (विशेष माला पुनर्मुद्रित) | मार्च, 1986 | 2,20,000 |
| 3. मैथेमेटिक्स फॉर प्राइमरी स्कूल बुक (पुनर्मुद्रित) | जनवरी, 1986 | 1,75,000 |

अभ्यास पुस्तिका

- | | | |
|--|--------------|----------|
| 4. अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग- I (पुनर्मुद्रित) | जनवरी, 1986 | 1,45,000 |
| 5. वर्क बुक फॉर लैट अस लर्न इंग्लिश बुक- I (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित) | दिसंबर, 1985 | 1,60,000 |

दूसरी कक्षा

पाठ्य पुस्तक

- | | | |
|--|-------------|----------|
| 6. बाल भारती भाग- II (पुनर्मुद्रित) | मार्च, 1986 | 1,86,000 |
| 7. लैट अस लर्न इंग्लिश बुक- II (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित) | फरवरी, 1986 | 2,05,000 |
| 8. मैथेमेटिक्स फॉर प्राइमरी स्कूल फरवरी, 1986 | | 1,38,000 |

अभ्यास पुस्तिका

- | | | |
|--|-------------|----------|
| 9. अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग- II (पुनर्मुद्रित) | मार्च, 1986 | 1,30,000 |
| 10. वर्क बुक फॉर लैट अस लर्न इंग्लिश बुक- II (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित) | जनवरी, 1986 | 1,80,000 |

तीसरी कक्षा

- | | | |
|--------------------------------------|--------------|----------|
| 11. बाल-भारती भाग- II (पुनर्मुद्रित) | दिसंबर, 1985 | 1,30,000 |
|--------------------------------------|--------------|----------|

1	2	3	4
12.	लैट अस लर्न इंग्लिश बुक (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	II फरवरी, 1986	1,56,000
13.	मैथेमेटिक्स फॉर प्राइमरी स्कूल बुक (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	1,16,000
14.	एनवायरनमेंटल स्टडीज फॉर क्लास III, पार्ट- II (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	52,000
15.	एनवायरनमेंटल स्टडीज फॉर क्लास III, पार्ट- 2 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	10,000
16.	पर्यावरण अध्ययन कक्षा- III के लिए भाग- 2 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	10,000
अभ्यास पुस्तिका			
17.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग- III (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	85,000
18.	वर्कबुक फॉर लैट अस लर्न इंग्लिश बुक III (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	1,60,000
चौथी कक्षा			
19.	बाल भारती भाग- II (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	1,10,000
20.	इंग्लिश रीडर बुक- I (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	1,30,000
21.	मैथेमेटिक्स फॉर प्राइमरी स्कूल बुक- II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	1,25,000
22.	एनवायरनमेंटल स्टडीज फॉर क्लास II, पार्ट- I (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल 1986	20,000
23.	एनवायरनमेंटल स्टडीज फॉर क्लास- 4, पार्ट- II (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	50,000
24.	चौथी कक्षा के लिए पर्यावरण अध्ययन भाग- I (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	30,000
25.	एनवायरनमेंटल स्टडीज फॉर क्लास II, पार्ट- II (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	80,000
26.	चौथी कक्षा के लिए पर्यावरण अध्ययन भाग- II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	10,000
अभ्यास पुस्तिका			
27.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग- 4, (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	1,05,000

1	2	3	4
28.	इंग्लिश रीडर बुक- I की अभ्यास पुस्तिका (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	1,85,000
पूरक पाठमाला			
29.	रीड फॉर प्लेजर बुक- I (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	65,000
पाँचवी कक्षा			
पाठ्य पुस्तक			
30.	बाल भारती भाग- I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	1,20,000
31.	स्वस्ति भाग- II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	45,000
32.	इंग्लिश रीडर बुक- II (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	1,30,000
33.	मैथेमेटिक्स फॉर प्राइमरी स्कूल्स बुक (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	1,00,000
34.	इंडिया एण्ड द वर्ल्ड (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	50,000
35.	भारत और संसार (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	20,000
36.	लर्निंग साइन्स थ्रू एनवायरनमेंट पार्ट- III (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	68,000
37.	पर्यावरण से विज्ञान सीखना भाग- III (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	8,000
अभ्यास पुस्तिका			
38.	अभ्यास पुस्तिका बाल-भारती भाग- 5 (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	1,00,000
39.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग- I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	34,000
40.	वर्कबुक फॉर इंग्लिश रीडर बुक- I (विशेष माला, पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	60,000
पूरक पाठमाला			
41.	रीड फॉर प्लेजर- II (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	85,000
छठी कक्षा			
पाठ्य पुस्तक			
42.	भारती भाग- I (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	85,000

1	2	3	4
43.	स्वस्ति भाग- II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	35,000
44.	इंग्लिश रीडर बुक- III (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	90,000
45.	मैथेमेटिक्स फॉर मिडिल स्कूल बुक- I	दिसंबर, 1985	1,05,000
46.	गणित माध्यमिक स्कूलों के लिए पुस्तक- I (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	10,000
47.	लैण्ड्स एण्ड पिपुल पार्ट- I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	50,000
48.	देश और उनके निवासी भाग- I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	20,000
49.	हिस्ट्री एण्ड सिविल्स पार्ट- I (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	54,000
50.	इतिहास और नागरिक शास्त्र, भाग- I (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	55,000
51.	लर्निंग साइन्स पार्ट- I (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	65,000
52.	आओ विज्ञान सीखें, भाग- I (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	10,000
अभ्यास पुस्तिका			
53.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग- II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	30,000
54.	वर्कबुक ऑफ इंग्लिश रीडर बुक- 3 (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	95,000
पूरक पाठमाला			
55.	संक्षिप्त रामायण (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	40,000
56.	रीडर फॉर प्लेजर बुक- III (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	45,000
57.	भारती भाग- II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	55,000
58.	स्वस्ति भाग- 3 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	10,000
59.	इंग्लिश रीडर बुक- 4 (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	75,000
60.	मैथेमेटिक्स फॉर मिडिल स्कूल्स, बुक- II पार्ट- I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	74,000

1	2	3	4
61.	गणित माध्यमिक स्कूलों के लिए पुस्तक- II भाग- I (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	10,000
62.	मैथेमेटिक्स फॉर मिडिल स्कूल बुक- II पार्ट- II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर 1985	69,000
63.	हिस्ट्री एण्ड सिविल्स पार्ट- II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर 1985	40,000
64.	इतिहास और नागरिक शास्त्र भाग- II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	38,000
65.	लैण्ड्स एण्ड पीपुल, पार्ट- II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	46,000
66.	देश और उनके निवासी भाग- II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	40,000
67.	लर्निंग साइन्स पार्ट- II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	70,000
68.	आओ विज्ञान सीखें भाग- 2 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	12,000
अभ्यास पुस्तिका			
69.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग- III (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	20,000
पूरक पाठमाला			
70.	नया जीवन (पुनर्मुद्रित)	जनवरी 1986	25,000
71.	संक्षिप्त महाभारत (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	40,000
72.	रीड फॉर प्लेजर बुक 4 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी 1985	27,000
आठवीं कक्षा			
पाठ्य पुस्तक			
73.	भारती भाग III (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर 1985	62,000
74.	स्वस्ति भाग- 4 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी 1986	11,000
75.	इंग्लिश रीडर बुक- 5 (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर 1985	50,000
76.	मैथेमेटिक्स फॉर मिडिल स्कूल बुक- III पार्ट- I (पुनर्मुद्रित)	फरवरी 1986	87,000
77.	मैथेमेटिक्स फॉर मिडिल स्कूल बुक- III पार्ट- II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर 1985	75,000

1	2	3	4
78.	गणित माध्यमिक स्कूलों के लिए पुस्तक- III भाग- II (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	12,000
79.	हिस्ट्री एण्ड सिविल्स पार्ट- III (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	35,000
80.	इतिहास और नागरिक शास्त्र भाग- III (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	17,000
81.	लैण्ड्स एण्ड पीपुल, पार्ट- III	दिसंबर, 1985	35,000
82.	देश और उनके निवासी भाग- III (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	15,000
83.	लर्निंग साइन्स पार्ट- II (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	55,000
अभ्यास पुस्तिका			
84.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग- 4, (पुनर्मुद्रित)		25,000
पूरक पाठमाला			
85.	त्रिविधा (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	32,000
86.	रीड फॉर प्लेजर बुक- 5, (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	25,000
87.	जीवन और विज्ञान (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	20,000
नवीं कक्षा			
पाठ्य पुस्तक			
88.	फोर्थ स्टेप द इंग्लिश रीडर (बी कोर्स) (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	46,000
89.	फीजिक्स पार्ट- I (पुनर्मुद्रित)	अगस्त, 1985	40,000
90.	फीजिक्स पार्ट- I (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	1,38,000
91.	भौतिक भाग- I (प्रथम संस्करण)	अप्रैल, 1985	1,60,000
92.	रसायन विज्ञान भाग- I (प्रथम संस्करण)	अप्रैल, 1985	1,60,000
93.	बेसिक बायोलॉजी पार्ट- I वाल्यूम- I	अगस्त, 1985	40,000
94.	बेसिक बायोलॉजी पार्ट- I वाल्यूम- I	जनवरी, 1986	1,40,000
95.	बेसिक बायोलॉजी पार्ट- I वाल्यूम- 2 (प्रथम संस्करण)	अक्टूबर, 1985	1,40,000
96.	आधारिक जीव विज्ञान भाग- I खंड- I (प्रथम संस्करण)	मई, 1985	1,60,000

1985-86

1	2	3	4
97.	आधारिक जीव विज्ञान भाग-I दिसंबर, 1985	1,40,000	
	खंड-1 (प्रथम संस्करण)		
98.	मैथेमेटिक्स पार्ट-I, (पुनर्मुद्रित) अगस्त, 1985	40,000	
99.	गणित भाग-I खंड-1 अप्रैल, 1985	1,40,000	
	(प्रथम संस्करण)		
100.	गणित भाग-I खंड-1 मार्च, 1986	71,000	
	(पुनर्मुद्रित)		
101.	गणित भाग-I खंड-1 अगस्त, 1985	1,60,000	
	(प्रथम संस्करण)		
102.	द स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन मार्च, 1986	45,000	
	वाल्थूम-1 (पुनर्मुद्रित)		
103.	सभ्यता की कहानी भाग-I मार्च, 1986	49,000	
	(पुनर्मुद्रित)		
104.	मैन एण्ड एनवायरनमेंट फरवरी, 1986	49,000	
	(पुनर्मुद्रित)		
105.	मनुष्य और वातावरण फरवरी 1986	52,000	
106.	इंग्लिश सप्तीमेंटरी रीडर मार्च, 1986	37,000	
	(पुनर्मुद्रित)		
नवीं और दसवीं कक्षा			
107.	सिटीजन एण्ड द गवर्नमेंट अगस्त, 1985	20,000	
	(पुनर्मुद्रित)		
108.	नागरिक और शासन (पुनर्मुद्रित) मार्च, 1986	95,000	
ग्यारहवीं कक्षा			
109.	फिफथ स्टेप टू इंग्लिश रीडर फरवरी, 1986	20,000	
	(बी कोर्स) (पुनर्मुद्रित)		
110.	फिफथ स्टेप टू इंग्लिश फरवरी, 1986	34,000	
	सप्तीमेंटरी रीडर (बी कोर्स) (पुनर्मुद्रित)		
111.	गणित भाग II (पुनर्मुद्रित) अप्रैल 1985	4,000	
112.	विज्ञान भाग II (पुनर्मुद्रित) अप्रैल 1985	6,000	
113.	मैथेमेटिक्स पार्ट II (प्रथम संस्करण) जनवरी, 1986	2,00,000	
114.	द स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन मई, 1985	16,000	
	वाल्थूम II (पुनर्मुद्रित)		
115.	इंडिया ऑन द मूव (पुनर्मुद्रित) जुलाई, 1985	8,000	
116.	भारत विकास की ओर जुलाई, 1985	15,10,000	
	(पुनर्मुद्रित)		

1	2	3	4
117.	भारत विकास की ओर फरवरी, 1986	50,000	
	(पुनर्मुद्रित)		
ग्यारहवीं कक्षा			
118.	आभिनव गद्य भारती भाग-I मार्च, 1986	55,000	
	(पुनर्मुद्रित)		
119.	अभिनव कथा भारती भाग-I मार्च, 1986	55,000	
	(पुनर्मुद्रित)		
120.	साहित्य का स्वरूप (प्रथम संस्करण) सितंबर 1985	50,000	
121.	साहित्य का स्वरूप (पुनर्मुद्रित) मार्च, 1986	30,000	
122.	काव्य संचयन भाग-I अक्टूबर, 1985	56,000	
123.	गद्य संचयन भाग-I (पुनर्मुद्रित) नवंबर, 1985	56,000	
124.	कहानी संचयन भाग-I नवंबर, 1985	62,000	
	(पुनर्मुद्रित)		
125.	I- द पीपुल (इंग्लिश रीडर) मार्च, 1986	1,50,000	
	(पुनर्मुद्रित)		
126.	फाइव वन ऐक्ट प्लेज अप्रैल, 1985	1,300	
127.	संस्कृत साहित्य परिचय मार्च, 1986	17,000	
	(पुनर्मुद्रित)		
128.	रिंगणी (पुनर्मुद्रित) मार्च, 1986	17,000	
129.	भौतिक विज्ञान भाग-I फरवरी, 1986	2,500	
	(पुनर्मुद्रित)		
130.	बायोलॉजी पार्ट I (पुनर्मुद्रित) मार्च, 1986	23,000	
131.	मैथेमेटिक्स बुक I (पुनर्मुद्रित) फरवरी, 1986	30,000	
132.	गणित भाग I (पुनर्मुद्रित) अप्रैल 1985	20,000	
133.	मैथेमेटिक्स बुक II फरवरी, 1986	25,000	
134.	एन्सिएण्ट इंडिया (पुनर्मुद्रित) अप्रैल 1985	9,000	
135.	एन्सिएण्ट इंडिया (पुनर्मुद्रित) मार्च, 1986	19,000	
136.	मेडिवल इंडिया पार्ट I फरवरी, 1986	22,000	
	(पुनर्मुद्रित)		
137.	मध्यकालीन भारत भाग-I फरवरी, 1986	19,000	
	(पुनर्मुद्रित)		
138.	पोलिटिकल सिस्टम (पुनर्मुद्रित) मार्च, 1986	10,000	
139.	एलीमेंटरी स्टैटिस्टिक्स जून, 1985	25,000	
140.	प्रारंभिक सांख्यिकी जुलाई, 1985	20,000	
141.	एवोलुशन ऑफ इंडियन इकोनॉमी मई, 1985	30,000	
142.	एवोलुशन ऑफ इंडियन इकोनॉमी मार्च, 1986	20,000	

1	2	3	4
143.	भारतीय अर्थशास्त्र विकास	जून, 1985	21,000
144.	फीजिकल जियोग्राफी (प्रथम संस्करण)	मई, 1985	22,000
145.	भौतिक भूगोल (प्रथम संस्करण)	अगस्त, 1985	16,000
146.	भौतिक भूगोल (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	8,000
147.	जनरल जियोग्राफी ऑफ इंडिया पार्ट-1 (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1985	15,000
148.	जनरल जियोग्राफी ऑफ इंडिया पार्ट-1 (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	11,000
149.	साइकोलॉजी ऐन इंट्रोडक्शन टू ह्यूमन बीहेवियर (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1985	1,500
150.	इंग्लिश रीडर II (पुनर्मुद्रित)	अगस्त, 1985	70,000
151.	फीजिक्स (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	18,000
बारहवीं कक्षा			
152.	अभिनव काव्य भारती भाग-2 (प्रथम संस्करण)	फरवरी, 1986	80,000
153.	अभिनव गद्य भारती भाग-2 (प्रथम संस्करण)	मार्च, 1986	80,000
154.	काव्य संचयन भाग-2 (प्रथम संस्करण)	मार्च, 1986	60,000
155.	गद्य संचयन भाग-II	मार्च, 1986	60,000
156.	डीयर टू ऑल द म्यूसेस (पुनर्मुद्रित)	मई, 1985	4,500
158.	ऑन टॉप ऑफ द वर्ल्ड (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	5,000
159.	संस्कृत काव्य तरंगिनी (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	15,000
160.	मैथेमेटिक्स बुक III (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	20,000
161.	मैथेमेटिक्स बुक 4 (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	18,000
161.	मैथेमेटिक्स बुक-5 (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	22,000
162.	मध्यकालीन भारत भाग-2	अप्रैल, 1985	5,000
163.	आधुनिक भारत भाग 2 (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	8,000
164.	भारतीय संविधान और शासन	अप्रैल, 1985	3,000
165.	इंडियन डेमोक्रेसी एंड वर्क	अप्रैल, 1985	4,000
166.	भारत में लोकतंत्र (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	3,000
167.	ऐन इंट्रोडक्शन टू एकोनॉमिक थ्योरी (पुनर्मुद्रित)	जून 1985	5,000

1	2	3	4
168.	ह्यूमन एण्ड एकोनॉमिक जियोग्राफी (पुनर्मुद्रित)	मई, 1985	8,000
169.	मानव एवं आर्थिक भूगोल (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	3,000
170.	भारत का भूगोल भाग-I (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	5,000
उर्दू पाठ्य पुस्तक			
छठी कक्षा			
171.	रियाजी (मैथेमेटिक्स) बुक-I (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1985	6,000
172.	उर्दू की नई किताब (न्यू बुक)	मार्च, 1986	5,000
सातवीं कक्षा			
173.	तारीख और इल्म-ए-शरियत (हिस्टरी एण्ड सिविल्स) पार्ट II (पुनर्मुद्रित)	जुलाई, 1985	2,000
आठवीं कक्षा			
174.	हिंसाब (गणित) बुक III, पार्ट-2 (पुनर्मुद्रित)	जून, 1985	2,000
नवीं कक्षा			
175.	इन्सान और माहौल (मैन एण्ड एनवायरनमेंट) (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल 1986	2,000
176.	तहजीब की कहानी (द स्टोरी आफ सिविलिजेशन) वाल्यूम-I (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1985	2,000
बारहवीं कक्षा			
177.	रियाजी (गणित) बुक-5 (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1985	2,000
अन्य राज्यों/संगठनों की पाठ्यपुस्तक/अभ्यास पुस्तिका			
178.	अभ्यास पुस्तिका अरुण भारती भाग-1 (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	28,000
179.	अरुण भारती भाग-2 (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	10,000
180.	अभ्यास पुस्तिका अरुण भारती भाग-2 (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	12,000

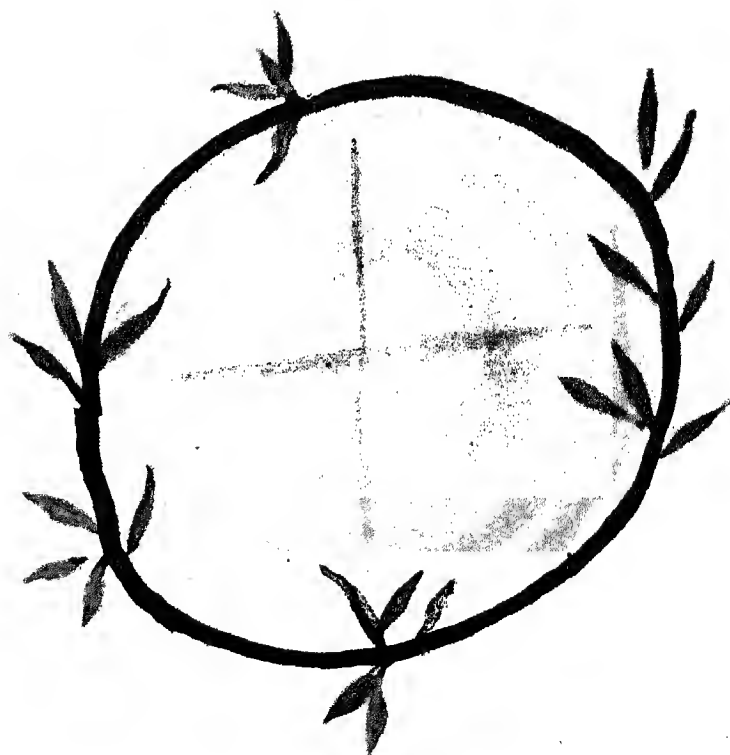
1985-86

1	2	3	4
181.	अरुण भारती भाग- 3 (नई दिल्ली)	जुलाई, 1985	30,000
182.	अभ्यास पुस्तिका अरुण भारती नवंबर, 1985 भाग- 3		30,000
183.	गद्य भारती (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	8,000
184.	काव्य भारती (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	8,000
185.	साओरा भाषा की प्रवेशिका	नवंबर, 1985	5,000
पूरक पाठमाला			
(लेट अस एनरिच आवर इंग्लिश सीरीज)			
186.	लेट अस एनरिच आवर इंग्लिश मई, 1985 बुक- 1		10,000
187.	लेट अस एनरिच आवर इंग्लिश मई, 1985 बुक- 2		10,000
188.	लेट अस एनरिच आवर इंग्लिश मई, 1985 बुक- 3		10,000
189.	लेट अस एनरिच आवर इंग्लिश मई, 1985 बुक- 4		10,000
190.	लेट अस एनरिच आवर इंग्लिश मई, 1985 बुक- 5		10,000
191.	लेट अस एनरिच आवर इंग्लिश मई, 1985 बुक- 6		10,000
192.	लेट अस एनरिच आवर इंग्लिश फरवरी, 1986 बुक- 7		10,000
193.	लेट अस एनरिच आवर इंग्लिश मई, 1986 बुक- 8		10,000
शोध मोनोग्राफ और अन्य प्रकाशन			
194.	करिकुलम लोड ऐट द स्कूल मई, 1985 लेवल-ए क्विक एप्रोच		1,000
195.	सर्कुलर मोशन टीचिंग यूनिट अप्रैल, 1985 इन फिजिक्स		2,000
196.	इलेक्ट्रिसिटी- I टीचिंग यूनिट मई, 1985 इन फिजिक्स		2,000
197.	इलेक्ट्रोमैग्नेटिज्म टीचिंग यूनिट मई, 1985 इन फिजिक्स		2,000
198.	पढ़ो औ बढो-उर्दू प्राइमर जुलाई, 1985 गाइड		1,000
199.	हिंदी व्याकरण और रचना जुलाई, 1985		5,000

1	2	3	4
200.	साइकोलॉजी फॉर एलिमेंटरी स्कूल टीचर	अप्रैल, 1985	2,000
201.	थर्मोडाइनेमिक्स- 1- टीचिंग यूनिट इन फीजिक्स	अप्रैल, 1985	2,000
202.	काइनेटिक थ्योरी ऑफ गैसेज टीचिंग यूनिट इन फीजिक्स	मई, 1985	2,000
203.	रीजिड बांडी रोटेशन टीचिंग इन फीजिक्स	मई, 1985	2,000
204.	अप्लाइड इलेक्ट्रोमैग्नेटिज्म टीचिंग यूनिट इन फीजिक्स	अगस्त, 1985	2,000
205.	काइनेटिक थ्योरी ऑफ गैसेज- II टीचिंग	मई, 1985	2,000
206.	टुआईस ए मॉडल ऑफ टेक्स्ट बुक कम्प्रीहेन्सिविलिटी	अगस्त, 1985	2,000
207.	नेशनल साइन्स एक्जीविशन	नवंबर, 1986	2,000
208.	स्ट्रक्चर एण्ड वर्किंग ऑफ साइंस मॉडल्स 1985	नवंबर, 1985	2,000
209.	रीडिंग फॉर कैरियर टीचर्स	अक्तूबर, 1985	3,000
210.	टास्क फोर्स ऑन एन.सी.ई.आर.टी.	अक्तूबर, 1985	1,000
211.	सोशली यूजफुल प्रोडक्टिव वर्क सोर्स बुक वाल्यूम- II	नवम्बर, 1985	2,000
212.	एनुअल रिपोर्ट 1984-85	दिसंबर, 1985	6,000
213.	एनुअल रिपोर्ट 1984-85	दिसंबर, 1985	1,000
214.	टास्क फोर्स रिपोर्ट ऑन एन सी ई आर टी (हिंदी)	दिसंबर, 1985	1,000
215.	सैम्पल यूनिट टेस्ट इन हिस्ट्री	नवंबर, 1985	5,000
216.	स्टडी गाइड फॉर क्लास (कम्प्यूटर लिटरेसी एण्ड स्टडीज इन साइंस)	मई, 1985	30,000
217.	हिंदी वर्तनी संबंधी सुधार मूलक नवंबर, 1985		5,000
218.	संहिता (डाटाबेस) वर्किंग मैनुअल	जनवरी, 1986	3,000
219.	मैथलेण्ड (टर्टल ग्राफिक्स) वर्किंग मैनुअल	जनवरी, 1986	3,000
220.	नेशनल करिकुलम फॉर प्राइमरी एण्ड सेकण्डरी एजुकेशन-ए-फ्रेमवर्क	जनवरी, 1986	5,000

1	2	3	4
221.	नॉन फार्मल एजुकेशन प्रोग्राम इन इंडिया	जनवरी, 1986	1,000
222.	ऑडिट रिपोर्ट 1984-85	फरवरी, 1986	500
223.	रिपोर्ट ऑफ द कमेटी ऑन एकजामिनेशन्स	फरवरी, 1986	5,000
224.	बायोकैमिकल्स एण्ड बिहैवियर्स	जनवरी, 1986	1,000
225.	इनोवेटिव प्रैक्टिसेज इन सेकण्डरी टीचर एजुकेशन इन इंडियन (1975-78) वाल्यूम -II	फरवरी, 1986	1,000

1	2	3	4
226.	टैलेण्ट एण्ड क्रिएटिविटी	जनवरी, 1986	1,000
227.	नेशनल ग्राइज कम्पीटिशन फॉर चिल्ड्रेन्स लिटरेचर	अप्रैल 1986	10,000
228.	इन्सुएन्स ऑफ कान्टिनुअल इवैलुएशन ऑन लर्निंग	फरवरी, 1986	2,000
229.	इवैलुएशन ऐट द सेकण्डरी	जनवरी, 1986	1,000
230.	कम्पेरिजन ऑफ द डेवलपमेंटल नार्मस	जनवरी, 1986	1,000



राष्ट्रीय स्तर पर स्कूली शिक्षा में अनुसंधान प्रशिक्षण और विस्तार गतिविधियों के क्षेत्र में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् विभिन्न देशों और यूनेस्को, यू.एन.डी.पी. यूनिसेफ जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ सम्पर्क बनाए रखती है। अन्य मित्र देशों के साथ दुतरफे सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों (सी.ई.पी.) के उपबन्धों के कार्यान्वयन के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् एक मुख्य एजेंसी के रूप में काम करती है। सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत, शिक्षा सामग्रियों का तथा शिक्षा पद्धति का अध्ययन करने के लिए शिक्षाविदों के दौरो का विनिमय मुख्य कार्य है। रा.शै.अनु.प्र. परिषद् अपने संकाय सदस्यों को अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों/कार्यशालाओं/सम्मेलनों/वैठकों/प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रायोजित भी करती है। स्कूली शिक्षा, अध्यापक शिक्षा और शिक्षा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में संबद्ध कार्यक्रमों के अन्तर्गत, विदेशी राष्ट्रों के लिए परिषद्, प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाती रही है। रा.शै.अनु.प्र. परिषद् की ऊपर बताई गई सामग्री गतिविधियों/कार्यक्रमों के समन्वय के लिए परिषद् का अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एकक जिम्मेदार है। यह एकक, शिक्षा नवाचारों में राष्ट्रीय विकास दल के सचिवालय के रूप में और विभिन्न देशों से अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसियों को, भारत में स्कूली शिक्षा के बारे में सूचना देने के लिए क्लियरिंग हाऊस के रूप में भी काम करता है।

दुतरफे सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

1985-86 के दौरान परिषद् ने सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत सोवियत रूस, मारीशस, वियतनाम, फिनलैण्ड, ए.आर.ई., मैक्सिको, साइप्रस और जनवादी गणतान्त्रिक कोरिया जैसे देशों के साथ शिक्षा सामग्री का विनिमय किया। इसके अतिरिक्त परिषद् ने स्पेन, नेपाल, यूनाइटेड किंगडम, पाकिस्तान, जॉर्डन, भूटान, बोटस्वाना, सऊदी अरब और डोमिनिका राष्ट्र मण्डल जैसे देशों को उनके अनुरोध पर शिक्षा सामग्री भेजी। वर्ष 1985-86 में निम्नलिखित सांस्कृतिक विनिमय हुए :

वर्ष 1984-85 के लिए भारत-मारीशस सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के उपबन्धों के अन्तर्गत, 25 अक्टूबर, 1986 को, महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट, पोर्टलुई, मारीशस के निदेशक श्री उत्तम विसुन्दयाल, अध्यापक शिक्षण, पाठ्यक्रम बनाने, दूसरी भाषा सीखने, उचित संशिक्षा से संबंधित समस्याओं पर चर्चा करने और

भारतीय भाषा, संस्कृति तथा सभ्यता के विषय के कार्यक्रम बनाने के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् पधारे।

भारत में स्कूली शिक्षा की आधुनिक दशा और विकास की प्रवृत्तियों का अध्ययन करने और संशिक्षा स्टाफ के लिए, 1985-86 के लिए भारत-रूस सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के मद 35 के अन्तर्गत, श्री म्यूरत वैफिएव, भाषाविज्ञान के डाक्टर, रूस में तुर्कमेन के चार्डसन क्षेत्र के जनशिक्षा विभाग के प्रमुख के नेतृत्व में तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल रा.शै.अनु.प्र.परिषद् में 14-23 नवंबर 1985 तक के लिए पधारा।

1983-85 (बढ़ाए गए अनुसार) के लिए भारत-ग्रीस सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के मद 3 के अन्तर्गत, व्यावसायिक शिक्षा के अध्ययन के लिये मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा भेजे गये दो सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में, रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के शिक्षा के व्यावसायीकरण विभाग को प्रोफ़ेसर डा. (श्रीमती) एस.पी. पटेल, 3-12 मार्च 1986 तक के लिये ग्रीस गई।

रा.शै.अनु.प्र. परिषद् में विदेशी आगन्तुक

सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत के अतिरिक्त रा.शै.अनु.प्र. परिषद् ने अध्ययन दौरो व अन्य कार्यक्रमों के अन्तर्गत विभिन्न देशों के शिक्षाविदों को अपने यहां बुलाया और अपने संकाय सदस्यों को अन्य देशों में भेजा। फलस्वरूप आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित दौरे हुए :

1. बैंकाक स्थित, एशिया और पौसिफिक के लिए शिक्षा के, यूनेस्को के क्षेत्रीय कार्यालय के श्री टी.एन. साव्या और डा. नामटिप 11 अप्रैल 1985 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए और संकाय सदस्यों के साथ, यूनेस्को की विभिन्न शिक्षा परियोजनाओं के बारे में विचार-विमर्श किया।
2. अध्ययन सहायताओं के उत्पादन, वितरण, अनुप्रयोग, अनुसंधान और विकास पहलुओं के संबंध में, यूनिसेफ द्वारा प्रायोजित, बीजिंग टीचिंग एण्ड सेंटर का तीन सदस्यीय चीनी प्रतिनिधिमंडल भारत में रा.शै.अनु.प्र. परिषद् सहित अनेक संस्थाओं में 23 अप्रैल से 4 मई 1985 तक के लिए आया।

3. यूनेस्को द्वारा प्रायोजित, लड़कियों की शिक्षा पर एक सात सदस्यीय क्षेत्रीय पैनल भारत में अपने अध्ययन दौरे के दौरान और 6 जून 1985 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् में आया। प्राथमिक शिक्षा में लड़कियों के कम संख्या में दाखिला लेने की समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से निपटाने के लिए सम्भावित नीतियों और तरीकों के नीति निर्धारकों, योजनाओं और समुदाय कार्यकर्ताओं के साथ अपने अनुभवों को बांटना और विनिमय करना तथा लड़कियों की शिक्षा की स्थिति के अध्ययनों की प्रगति का अध्ययन करना व पुनरावलोकन करना इस दौरे का उद्देश्य था।
4. सर्वश्री रोडजी व मेनुटन कस्टेंट परेड नामक दो इंडोनेशियाई फैलो, साक्षरता के तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में स्कूल पूर्व और प्रारम्भिक शिक्षा के विभाग में 5 जुलाई 1985 से 7 अगस्त 1985 तक चार सप्ताह के लिये रखे गए।
5. भूटान से श्री गोरी शंकर शर्मा, कार्यालय प्रबंधन के विशेष संदर्भ में रा.शै.अनु. प्र. परिषद् के कार्य संचालन के विविध पहलुओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए 15-19 जुलाई 1985 तक के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए।
6. जिम्बावे गणराज्य के पाठ्यक्रम विकास एकट्ट के लेक्चरर श्री एस.टी. मेंडिजा और विज्ञान आध्यापक श्री डब्ल्यू.एफ. मायो 20 अगस्त 1985 को रा.शै.अ.प्र. परिषद् के संकाय सदस्यों के साथ पाठ्यक्रम की चर्चा करने के लिए रा.शै.अनु.प्रा. परिषद् आए।
7. मारीशस के शिक्षा, कला एवं संस्कृति मंत्री महामहिम श्री अर्गुमि परशुराम अपने सहायकों सहित 20 सितम्बर 1985 को, अनुसंधान, पाठ्यक्रम विकास, प्रशिक्षण और विस्तार सेवाओं के क्षेत्र में रा.शै.अनु. प्र. परिषद् की गतिविधियों के बारे में चर्चा करने के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए।
8. बीजिंग के केन्द्रीय शिक्षा अनुसंधान संस्थान के निदेशक, श्री झांग फुकान और शिक्षा शोधकर्ता श्री फ्यूली 4-5 नवंबर 1985 को, शिक्षा गतिविधियों पर चर्चा और सलाह करने के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए।
9. काबुल में भारतीय स्कूल के प्रयोगशाला सहायक श्री नसीरुल्ला ने विदेश मंत्रालय के आई.टी.ई.सी कार्यक्रम के अंतर्गत 1 नवंबर 1985 से 3 महीने की अवधि के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग में प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।
10. अफगानिस्तान के 8 यूनेस्को फैलो के एक दल को 23 नवंबर से 22 दिसम्बर 1985 तक के लिए विज्ञान शिक्षा में प्रशिक्षण के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग में रखा गया।
11. नेपाल के यूनेस्को फैलो श्री एच.आर. बज्राचार्य को, शिक्षाविधियों में सुधार के क्षेत्र में उन्नत प्रशिक्षण के लिए भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में 17 नवंबर से 25 फरवरी 1986 तक रखा गया।
12. हनोई अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय के सैद्धांतिक भौतिकी विभाग के लेक्चरर और अध्यक्ष श्री दो दिन्ह थान्ह ने 17 नवम्बर 1985 से तीन सप्ताह की अवधि के लिए भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में, विज्ञान शिक्षा के एपीड विशेष तकनीकी सहयोग कार्यक्रम में भाग लिया।
13. कोरिया का जनसंख्या शिक्षा का अन्तरादेशीय चल प्रशिक्षण दल 11 से 16 नवंबर 1985 तक के लिए, राष्ट्रीय स्तर पर स्कूल में और स्कूल के बाहर, जनसंख्या शिक्षा कार्मिकों के प्रशिक्षण की योजना बना सकने और उन्हें कारगर कर सकने वाले प्रतिभागी देशों के साधन व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आया।
14. बंगलादेश एक्विपमेंट बोर्ड के चार वरिष्ठ अधिकारी, शिक्षण संस्थाओं के लिए शिक्षण उपस्कर (एक्विपमेंट) के विकास, उत्पादन, गुणवत्ता नियंत्रण और वितरण की जानकारी प्राप्त करने के लिए 1-7 दिसंबर 1985 तक के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए।
15. महामहिम डा. (श्रीमती) मार्टा क्लाकिहोवा, शिक्षा और संस्कृति की प्रथम प्रभारी उपमंत्री के नेतृत्व में एक 3 सदस्यीय चेक प्रतिनिधि मण्डल, भारत के बेसिक स्कूलों में स्कूल-पूर्व शिक्षा, बच्चों की देखभाल और शिक्षा प्रणाली की समस्याओं के अध्ययन के लिए 5 दिसम्बर 1985 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आया।
16. विकलांग बच्चों के लिए विशेष शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के अध्ययन के लिए एक पाकिस्तानी प्रतिनिधि मण्डल 3 जनवरी 1986 को रा.शै.अनु. प्र. परिषद् आया।
17. दो हथियोपियाई अधिकारी, श्री आटो खेबेडे फ्रेसेन्वेट, अध्यक्ष ई.एम.पी.डी.ए. और श्री आटो तेस्फा अलेमयेहु, ई.एम.पी.डी.ए. के मुद्रण विभाग के प्रमुख, पाठ्यक्रमों के सामान्य प्रबंधन, प्रकाशन, मुद्रण और उत्पादन के तरीकों के अध्ययन के लिए 22 दिसम्बर 1985 को, पन्द्रह दिन के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए।
18. भूटान से, बी.एड. विद्यार्थियों का एक दल परिषद् के

कार्यक्रमों/गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए 22 जनवरी 1986 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद आया।

19. नेपाल के महाराजाधिराज की सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा समिति ने अनुसंधान अधिकारी श्री आर.डी. खाती और श्री जे.आर. अधिकारी, शिक्षण संस्थाओं के प्रशासनिक और वित्तीय ढांचों तथा पाठ्यपुस्तकों के चयन के ढांचे के अध्ययन के लिए 25 जनवरी से 2 फरवरी 1986 तक के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद आए।
20. डा. मारीन वुडहल नामक एक प्रख्यात बर्तनवी शिक्षा-अर्थशास्त्री व योजनाकारक 3 फरवरी 1986 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद आए और माध्यमिक शिक्षा के व्यावसायीकरण पर एक व्याख्यान दिया।
21. बहरीन के शिक्षा मंत्री डा. अलीफखरु रा.शै.अनु.प्र. परिषद आए और संकाय सदस्यों के साथ, परिषद की शिक्षण गतिविधियों पर चर्चा की।
22. जापान के शिक्षा मंत्रालय के शिक्षा और सांस्कृतिक विनियम प्रभाग के एक अधिकारी श्री तकाओ लिजावा, एपीड के विशेष संदर्भ में, एशिया और शान्त महासागर के देशों में शिक्षा की वर्तमान स्थिति के अध्ययन के लिए 4-10 मार्च 1986 तक के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद आए।
23. भूटान का ग्यारह सदस्यीय जोंघका अध्यापकों का एक प्रतिनिधि मण्डल, परिषद के कार्यक्रमों/गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए 14 मार्च, 1986 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद आया।
24. नीपा के, शिक्षण योजना और प्रशासन के द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय डिप्लोमा कार्यक्रम में आए, बंगलादेश, जाम्बिया, तंजानिया, फीजी, घना और नामीबिया के प्रतिभागी 20 मार्च 1986 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद आए और संकाय सदस्यों से, परिषद के कार्यक्रमों और गतिविधियों के बारे में चर्चा की।

रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के संकाय सदस्यों की

विदेशों में प्रतिनियुक्ति

1. प्रो. बाकर मेहदी, डीन (समन्वयन), रा.शै.अनु.प्र. परिषद ने कुआलालम्पूर में 8-13 जुलाई 1985 तक हुई, पाठ्यक्रम विकास की यूनेस्को उपक्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।
2. डा. (कुमारी) एल.जी. सुमित्रा, रीडर, सी.आई.ई.टी. ने कुआलालम्पूर में 22 जुलाई से 2 अगस्त 1985 तक,

असुविधाग्रस्त दलों व स्कूल से बाहर की जनता के साथ काम करने वाले समुदाय कार्यकर्ताओं व अध्यापकों के लिए जन संचार माध्यमों पर हुई यूनेस्को उप क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

3. डी.ई.एस.एम. के प्रोफेसर डा. बी.डी. अत्रे और डी.पी.एस.ई.ई. की रीडर श्रीमती एस. मट्टाचार्य ने बैंकाक में 20-31 अगस्त 1985 तक, प्राथमिक स्तर विज्ञान शिक्षा के लिए शिक्षण/सीखने की सामग्री के विकास पर हुई, एपीड क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।
4. मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के प्रो.सी. शेषादि ने पाकिस्तान में 8-19 सितम्बर 1985 तक, असुविधाग्रस्त दल के लिए शिक्षा तक पहुंच में सुधार पर हुई क्रियात्मक संगोष्ठी में भाग लिया।
5. डी.टी.ई.एस.ई. के रीडर डा. बी.आर. गोयल ने सियोल (कोरिया गणराज्य) में 16-27 सितम्बर 1985 तक, अध्यापकों द्वारा शिक्षा प्रौद्योगिकी के उपयोग पर हुई एपीड क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया।
6. रा.शै.अनु.प्र. परिषद के अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक के प्रभारी प्रोफेसर, प्रो.आर.एम. कालरा, एपीड/एम.डी.जी. सचिवालय के एक मुख्य व्यक्ति के रूप में 25 सितम्बर से 2 अक्टूबर 1985 तक के लिए, अध्ययन दौर पर, थाइलैंड और फिलीपीन्स गए।
7. रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के सं. विदेशक प्रो.ए.के. जलालुद्दीन ने तोक्यो में 10-19 अक्टूबर 1985 तक, एपीड के तीसरे कार्यक्रम चक्र को, शिक्षा प्रौद्योगिकी पर हुई चौथी एशियाई संगोष्ठी में भाग लिया।
8. भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के प्रिंसिपल प्रो.जे.एस. राजपूत ने इस्लामाबाद में 19 अक्टूबर से 1 नवंबर 1985 तक, विज्ञान पाठ्यक्रम बनाने वालों तथा अध्यापक शिक्षकों के लिए हुई क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया।
9. रा.शै.अनु.प्र. परिषद के अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक के रीडर श्री ओ.पी. गुप्ता ने, बैंकाक में 22 अक्टूबर से 8 नवंबर 1985 तक, ग्रामीण इलाकों में शिक्षा के अल्पविकास के कारणों की पहचान (चरण 1) पर हुई, एपीड क्षेत्रीय अध्ययन दल की बैठक में भाग लिया।
10. चीन के प्रारंभिक और गैर औपचारिक शिक्षा के अध्ययन के लिए, यूनिसेफ से सहायता प्राप्त कार्यक्रम के अन्तर्गत, डी.पी.एस.ई.ई. के लेक्चरर श्री के. रामचन्द्रन पांच सदस्यीय

भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के साथ 25 अक्टूबर से दो सप्ताह के लिए चीन गए।

11. डी.टी.ई.एस.ई. की अध्यक्ष डा. (श्रीमती) एस. शुक्ला ने, चियांगमाई, थाईलैंड में 29 अक्टूबर से 16 नवंबर 1985 तक, शिक्षा कार्मिकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण पर हुई एपीड क्षेत्रीय तकनीकी कार्यकारी दल तथा प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया।
12. डी.ई.एस.एम. के प्रो. के.जे. खुराना और भोपाल क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के प्रो. एम.एस. खापरडे ने तोक्यो में 1-21 नवंबर 1985 तक, एशिया/प्रशान्त महासागर क्षेत्र में प्राथमिक विज्ञान शिक्षा की क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।
13. रा.शै.अनु.प्र. परिषद् की रीडर श्रीमती आर. सैनी ने तोक्यो में 6-10 नवंबर 1985 तक, एशिया/प्रशान्त महासागर संगीत सह-निर्माण कार्यक्रम-उपयोग, व भविष्यत मिचोतान के विशेषज्ञों की ग्यारहवीं बैठक में भाग लिया।
14. डी.ई.पी.सी. तथा जी.की. डा. (श्रीमती) स्वदेश मोहन ने आस्ट्रेलिया में 5-14 नवंबर 1985 तक, महिलाओं व बालिकाओं के लिए राष्ट्रीय शिक्षण तथा व्यावसायिक मार्ग दर्शन में सुधार पर हुए क्षेत्रीय प्रशिक्षण में भाग लिया।
15. मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के प्रिंसिपल प्रो. ए.के. शर्मा ने पेनांग, मलेशिया में 18 से 22 नवंबर 1985 तक, विज्ञान व गणित अध्यापन में माइक्रो कम्प्यूटर पर हुई यूनेस्को उपक्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।
16. रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के निदेशक डा. पी.एल. मल्होत्रा, पाकिस्तान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुरोध पर 13-18 जनवरी 1986 तक के लिए, विभिन्न विद्याशाखाओं में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने से संबंधित गतिविधियां बढ़ाने के अनुभवों के पारस्परिक विनिमय के लिए पाकिस्तान गए।
17. भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में भौतिकी के रीडर डा. ए.बी. सक्सेना ने, विज्ञान शिक्षण में चल दल के अन्तर्गत कोलम्बो के पाठ्यक्रम विकास केन्द्र के साधन व्यक्ति के रूप में 17 फरवरी से 8 मार्च 1986 तक कार्य किया।
18. रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के डीन (शैक्षिक) प्रो. पी.एन. दबे ने तोक्यो, जापान में 20 जनवरी से 1 फरवरी 1986 तक, प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर शिक्षा उपलब्धियों के मूल्यांकन

की प्रणाली की सूचना व अनुभवों के विनिमय के लिए, यूनेस्को आर.ओ.ई.पी., बैंकाक के सहयोग से जापान राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान संस्थान के अंतर्गत, एशिया व प्रशान्त क्षेत्र में शिक्षा उपलब्धियों पर हुई संगोष्ठी में भाग लिया।

19. डी.पी. एस.ई.ई. के लेक्चरर श्री के. रामचन्द्रन ने बांग्ला देश में 15-19 मार्च 1986 तक, प्राथमिक शिक्षा की समकालीन समस्याओं पर हुई कार्यशाला में भाग लिया।
20. रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के निदेशक डा. पी.एल. मल्होत्रा ने पेरिस में 17-21 फरवरी 1986 तक, सामान्य शिक्षा के दायरे में पर्यावरणीय या विशेष विज्ञान अध्यापन पर हुए अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।
21. रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के निदेशक डा. पी.एल. मल्होत्रा के नेतृत्व में एक तीन सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल, बांग्लादेश की तीसरी पंचवर्षीय योजना 1985-90 के दौरान उनकी शिक्षा विकास योजना तैयार करने के संदर्भ में, 11-16 सितम्बर 1985 तक के लिए बांग्ला देश गया।

यूनेस्को चल दल

1. रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के निदेशक डा. पी.एल. मल्होत्रा, एशिया में व्यावसायिक तथा तकनीकी शिक्षा के यूनेस्को चल दल के अन्तर्गत 8-22 मई 1985 तक के लिए थाईलैंड, जापान और फिलीपीन्स गए।
2. रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग के रीडर डा. पी. रायजादा, एशिया में व्यावसायिक तथा तकनीकी शिक्षा के यूनेस्को चल दल में अन्तर्गत 20-29 मई 1985 तक के लिए बैंकाक गए।

यूनेस्को एपीड संगोष्ठियां/कार्यशालाएं

रा.शै.अनु.प्र. परिषद् की डी.टी.ई.एल की लेक्चरर डा. (श्रीमती) सुदेश मुखोपाध्याय, भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के लेक्चरर डा. आई.डी. गुप्ता, रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के डी.टी.ई.ए.ई. की डा. प्रेमलता शर्मा, अजमेर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के लेक्चरर डा. एम.एस. समर और भुवनेश्वर डी.एम.एस. के श्री के.बी. रथ ने, कोयम्बूर के रामकृष्ण शिक्षा महाविद्यालय में 12-24 अगस्त 1985 तक, विशेष शिक्षा पर हुई क्षेत्रीय संगोष्ठी तथा कार्यशाला में प्रतिभागियों/पर्यवेक्षकों के रूप में भाग लिया। इस कार्यशाला में रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के डी.टी.ई.एस.के. रीडर डा. एन.के. जंगीरा, यूनेस्को परामर्शदाता थे।

यूनेस्को/एपीड परियोजनाएं

एशिया और प्रशान्त क्षेत्र के विभिन्न देशों में बहुमुखी सहयोग की एक महत्वपूर्ण क्रियाविधि एपीड है (विकास के लिए शिक्षा नवाचार का एशिया तथा प्रशान्त क्षेत्रीय कार्यक्रम)।

राष्ट्रीय विकास की समस्याओं से जुड़े हुए शिक्षा नवाचारों को करने के लिए राष्ट्रीय सामर्थ्य बनाने की दिशा में योगदान देना एपीड का प्रथम ध्येय है, जिससे कि सदस्य देशों में जनता के जीवन की कठिनाई में सुधार होता है। यूनेस्को/एपीड कार्यक्रमों के संदर्भ में रा.शै.अनु.प्र. परिषद ने निम्नलिखित परियोजनाएं/अध्ययन हाथ में लेने के लिए 1985-86 के दौरान यूनेस्को के साथ अनुबंधों पर हस्ताक्षर किए :

1. वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय ज्ञान का प्रसार, प्रायोजिक आंकड़ों का विनिमय तथा विस्तार कार्यक्रमों का विकास।
2. शिक्षा में उत्पादन कार्य शामिल किए जाने से सम्बद्ध सामाजिक-आर्थिक तथा शैक्षिक घटकों की पहचान के लिए अध्ययन।
3. असुविधाग्रस्त दलों तथा स्कूलतर जनता के साथ काम करने वाले अध्यापकों और समुदाय कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए जनसंचार माध्यमों पर अनुवर्ती कार्यशाला।
4. प्राथमिक शिक्षा में नए विकासों पर धारणात्मक प्रलेख तैयार करना।
5. अध्यापन-सीखने की सामग्री तैयार करने के लिए राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशालाओं के प्राथमिक विज्ञान (अगस्त 1985 संगठन पर एपीड क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला की अनुवर्ती कार्यवाई।
6. पर्यावरण शिक्षा, में आदि रूप बहु-माध्यमी प्रशिक्षण पैकेज तैयार करना।

यूनेस्को/एपीड कार्यक्रमों का संपर्क कार्य मुख्य रूप से दो प्राधिकरण करते हैं :-

1. यूनेस्को से सहयोग के लिए भारतीय राष्ट्रीय आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
2. शिक्षा नवाचारों के लिए राष्ट्रीय विकास दल, भारत

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

यूनेस्को, राष्ट्रमण्डल आदि द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के लिए प्रस्ताव तैयार करने के बाद में रा.शै.अनु.प्र. परिषद, भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सहायता करती है। इस संबंध में संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है :-

1. अक्टूबर-नवंबर 1985 में सोफिया (बल्गेरिया) में हुए यूनेस्को के आम सम्मेलन के तैयारी सत्र में यूनेस्को के ड्राफ्ट कार्यक्रम और 1986-87 के बजट (दस्तावेज 23 सी/5) पर विचार

किया गया। रा.शै.अनु.प्र. परिषद द्वारा यूनेस्को के ड्राफ्ट कार्यक्रम और बजट पर दी गई टिप्पणियों/सुझावों पर, 21 सितंबर 1985 को, यूनेस्को से सहयोग के लिए भारतीय राष्ट्रीय आयोग के अठारहवें सत्र में विचार किया गया।

2. विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उचित शुरुआत के परिप्रेक्ष्य में प्राथमिक शिक्षा के सार्विकरण और पुनर्नवीकरण से संबंधित, जेनेवा में 16 से 25 अक्टूबर, 1984 तक हुए अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन की सिफारिश संख्या 74 पर अनुवर्ती कार्यवाई करने का सुझाव रा.शै.अनु.प्र. परिषद ने दिया।
3. रा.शै.अनु.प्र. परिषद ने, निकोसिया (साइप्रस) में 23 से 26 जुलाई 1984 को हुए, राष्ट्रमंडल शिक्षा मंत्रियों के नवें सम्मेलन की रिपोर्ट का अध्ययन किया और सिफारिशों पर अनुवर्ती कार्यवाई करने का सुझाव देते हुए, शिक्षा मंत्रालय को अपनी रिपोर्ट दी।

एन डी जी के अन्तर्गत गतिविधियां

एपीड के संदर्भ में भारत सरकार ने शिक्षा नवाचारों के लिए एक राष्ट्रीय विकास दल (एन.डी.जी.) बनाया। एशिया और प्रशांत क्षेत्र के 25 देश एपीड में आ चुके हैं। भारत में एपीड के सम्बद्ध केन्द्रों के रूप में राष्ट्रीय स्तर के 6 संगठनों, क्षेत्रीय स्तर की दो संस्थाओं और राज्य स्तर की 6 संस्थाओं को मान्यता प्राप्त है।

एन.डी.जी. का सचिवालय रा.शै.अनु.प्र. परिषद के अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक में स्थित है। शिक्षा नवाचारों को तेज करने तथा समन्वय एवं वित्तियरिंग हाउस के रूप में काम करने के लिए एन.डी.जी. का सचिवालय मुख्य रूप से जिम्मेदार है। एन.डी.जी. और एपीड के बारे में पृष्ठभूमि की सूचना देते हुए एक पैम्फलेट छपा गया है जिसे विस्तृत रूप से प्रचार के इरादे से राज्यों तथा संगठित प्रदेशों की विभिन्न संस्थाओं और संगठनों में भेजा गया। एन.डी.जी. पर एक पारदर्शियों का सैट भी तैयार किया गया है।

1985-86 के दौरान एन.डी.जी. सचिवालय ने 'एजुकेशनल इन्वैशन' (शिक्षा नवाचार) शीर्षक के त्रैमासिक समाचार पत्रक का जनवरी-मार्च 1985 का अंक प्रकाशित किया। इस समाचार पत्र के अप्रैल-जून 1985 के अंक की पाण्डुलिपि मुद्रण के लिए भेजी जा चुकी है। एन.डी.जी., विभिन्न शिक्षा विकास खण्डों (सामान्य शिक्षा, गैर औपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, कृषि शिक्षा, ग्रामीण विकास आदि) में शिक्षा नवाचारियों के लिए एक मंच उपलब्ध कराता है जहां वे मिल सकते हैं और विकास के लिए शिक्षा नवाचारों पर क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय संगोष्ठियां आयोजित करके नवाचारी विचारों और अनुभवों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। आलोच्य वर्ष में एन.डी.जी. सचिवालय ने चण्डीगढ़ के तकनीकी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान में 17 से 20 दिसंबर 1985 तक, विकास के लिए शिक्षा नवाचारों पर एक क्षेत्रीय संगोष्ठी (उत्तरी क्षेत्र) आयोजित की। इस संगोष्ठी में जम्मू व कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़, दिल्ली और उत्तर प्रदेश

राज्यों/संघशासित प्रदेशों के व्यक्तियों को भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। विभिन्न शिक्षा विकास खण्डों के 35 शिक्षा नवाचारियों ने संगोष्ठी में भाग लिया। गोष्ठी में सामान्य शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, कृषि शिक्षा और ग्रामीण विकास में शिक्षा नवाचारों पर 25 प्रलेख प्रस्तुत किए गए और उन पर चर्चा हुई।

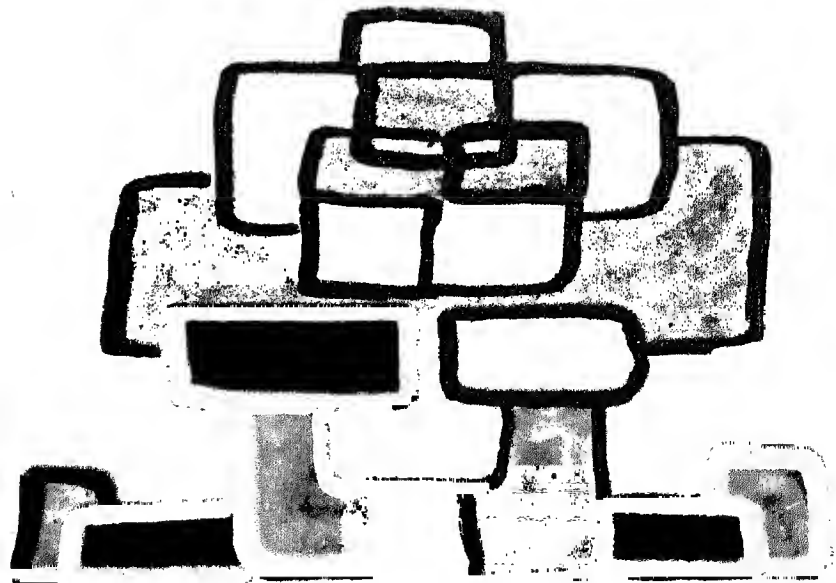
एन.डी.जी. बैठक

एन.डी.जी. की सामान्य सभा की, 31 जनवरी 1986 को हुई बैठक में, उत्तर प्रदेश के निम्नलिखित संगठनों की एपीड का सम्बद्ध केंद्र बनाने पर सहमति हुई :

1. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश, लखनऊ
2. साक्षरता सदन, लखनऊ

इन संगठनों के एपीड से सम्बद्ध केन्द्र के रूप में यूनेस्को से मान्यता का अनुमोदन प्राप्त करवाने के लिए आवश्यक कार्रवाई की जा रही है।

बैठक में प्रभावी अन्तरा खण्ड, अन्तरा राज्य और अन्तः राज्य सहयोग और समन्वय के लिए एन.डी.जी. के पूरक विकास दल के रूप में, प्रत्येक राज्य तथा संघशासित प्रदेश में शिक्षा नवाचारों के लिए एक राज्य विकास दल (एस.डी.जी.) बनाए जाने की जरूरत महसूस की गई और आशा व्यक्त की गई कि इस संबंध में प्रत्येक राज्य इसकी शुरुआत करेगा। प्रत्येक एस.डी.जी. में, सामान्य शिक्षा, गैर औपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, स्वास्थ्य व परिवार कल्याण शिक्षा, कृषि शिक्षा, ग्रामीण विकास, समाज कल्याण आदि जैसे विभिन्न शिक्षा विकास खण्डों में, प्रत्येक राज्य/संघशासित प्रदेश की कुछ अग्रणी संस्थाएं और संगठन शामिल होंगे। यह प्रस्ताव है कि सभी एस.डी.जी. के अध्यक्षों का, एन.डी.जी. की सामान्य सभा में प्रतिनिधित्व हो। इस प्रकार एस.डी.जी. के बनाने में एन.डी.जी. काफी विस्तृत आधार वाला बनेगा जिसमें सभी राज्यों तथा संघशासित प्रदेशों के प्रतिनिधि होंगे। आशा की जाती है कि यह व्यवस्था देश में नवाचारी प्रक्रियाओं के उचित उद्दीयन में सहायक होगी और विकास के लिए शिक्षा नवाचारों के क्षेत्र में अन्तरा खण्डीय और बहुखण्डीय समन्वयन तथा सहयोग के लिए उपयुक्त जरिया उपलब्ध कराएगी।



परिषद् के नियमों, विनियमों और प्रक्रमों के अनुसार, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के सचिवालय ने अपनी गृह व्यवस्था का कार्य करना जारी रखा।

प्रशासनिक और कल्याण गतिविधियाँ

वांछित सूचना नीचे दी जा रही है :-

स्टाफ कल्याण के उपाय के तौर पर परिषद् ने अपने कर्मचारियों के लिए खेल-कूद की सुविधाएं उपलब्ध कराना जारी रखा।

पांचवां अन्तरा-क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय और राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) टूर्नामेंट मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में 9.12.1985 से 12.12.1986 तक आयोजित कराया गया। इसमें क्रिकेट, वालीबाल, बास्केट बाल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, टेनिस और फुटबाल की प्रतियोगिताएं हुई। खेलों में 175 से अधिक खिलाड़ियों ने भाग लिया। उन्होंने इसमें गहरी रुचि दिखाई और वे बन्धुत्व की भावना से खेलें। टूर्नामेंट काफी सफल रहा।

दिल्ली में परिषद् के कर्मचारियों की जोरदार मांग को ध्यान में रखते हुए, विभिन्न वर्गों के 104 और स्टाफ क्वार्टर बनाने के प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग को रु. 1.05 करोड़ की राशि दी जा चुकी है। इन क्वार्टरों के लिए, के.लो.नि.वि. के वरिष्ठ वास्तुकार से नक्शे बना कर डी.यू.ए.सी. व दिल्ली विकास प्राधिकरण के अनुमोदन के लिए प्रस्तुत किए। कार्य शीघ्र शुरू होने की संभावना है। आवासियों और स्टाफ के हित के लिए राष्ट्रीय शिक्षक संस्थान के प्रांगण में 24 दुकानों और एक समुदाय भवन वाला विपणन संकुल (शॉपिंग कम्प्लेक्स) बनाया जाएगा। के.लो.नि.वि. को रु. 16,40,300.00 की राशि दी जा चुकी है। काम जल्दी शुरू करवाने के इरादे से, इस मामले में के.लो.नि.वि. के पीछे पड़े हुए हैं। एन.आई.ई. अतिथि गृह में एक लिफ्ट तथा दस और कमरे उपलब्ध कराने के लिए के.लो.नि.वि. द्वारा किया जा रहा निर्माण कार्य शीघ्र ही पूरा होने की संभावना है।

एन.आई.ई. प्रांगण में बांगों और हरे मैदानों आदि के विकास के लिए, के.लो.नि.वि. से कुछ और पम्प लगवा कर बिना छने पानी की आपूर्ति में राहत दिलवाई गई है।

1985-86 के दौरान आंतरिक कार्य अध्ययन एकक ने निम्नलिखित अध्ययन किए :

1. पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरण शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम पुनर्नवीकरण, समुदाय शिक्षा और भाग लेना, प्रारंभिक शैशव शिक्षा और प्राथमिक शिक्षा के लिए विस्तृत

पहुंच पर यूनिसेफ की पांच परियोजनाओं के लिए लिपिकवर्गीय पदों को जारी रखने के लिए अध्ययन।

2. रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के मुख्यालय में चपरासियों के अतिरिक्त पदों की आवश्यकताओं पर अध्ययन रिपोर्ट, जिसका पहला मसौदा, परिषद् के अधिकारियों द्वारा अन्तिम प्रगति रिपोर्ट प्राप्त होने पर अन्तिम रूप दिए जाने और स्वीकार किए जाने के समय तैयार था।
3. रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के मुख्यालय में दफ्तरियों के अतिरिक्त पदों की आवश्यकताओं के मूल्यांकन के लिए अध्ययन।
4. ऊपर मद सं (1) में बताई गई यूनिसेफ परियोजनाओं में से कुछ के लिए पैकिंग करने वालों के पद बनाने के लिए एक अलग अध्ययन किया गया और रिपोर्ट दी गई।
5. अजमेर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में चौकीदारों के अतिरिक्त पदों की आवश्यकताओं के लिए अध्ययन।
6. रा.शै.अनु.प्र. परिषद् मुख्यालय में, सचिवालय प्रशिक्षण और प्रबंधन संस्थान द्वारा आयोजित प्रबंधन के उन्नत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षुओं के एक दल द्वारा, लेखा शाखा के स्टाफ मूल्यांकन के अध्ययन से यह एकक सम्बद्ध रहा। इस रिपोर्ट के आधार पर, वरिष्ठ लेखा अधिकारी और लेखा अधिकारी (प्रत्येक 1) के अतिरिक्त पद बनाने के लिए एक रिपोर्ट अलग से बना कर दी गई।
7. संयुक्त निदेशक (परिषद् सचिवालय), संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. तथा सचिव, रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के कार्यालयों में निजी सचिवों के पदों की आवश्यकताओं के मूल्यांकन के लिए अध्ययन।
8. भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के लिए चौकीदारों के अतिरिक्त पदों की आवश्यकताओं के लिए अध्ययन किया गया। इसकी रिपोर्ट हालांकि, अभी तैयार हो रही है।

एकक द्वारा पिछले वर्षों में किए गए विभिन्न अध्ययनों, विशेषकर प्रकाशन विभाग के और परिषद् सचिवालय में हिंदी के पदों की आवश्यकताओं के अध्ययनों पर अनुवर्ती कार्रवाई की गई।

ऊपर बताए गए अध्ययन करने के अलावा, आई.डब्ल्यू.एस.यू. ने रिकार्ड प्रबंधन तथा कार्य निपटाने में देरी रोकने के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किए। रिकार्ड प्रबंधन के लिए एकक ने, एन.आई.ई. के विभागों तथा परिषद्-सचिवालय के विभागों के कार्यक्रमों/गतिविधियों से संबंधित

129

130

1985-86

रा.शै.अनु.प्र. परिषद के स्टाफ के कर्ज और अग्रिम राशि (पेशगी) का भुगतान और वसूली

स्कूटर, कार पेशगी	1,70,176.00	स्कूटर, कार पेशगी	6,81,195.00
साइकिल पेशगी	44,318.00	साइकिल पेशगी	75,942.00
पंखा पेशगी	5,640.00	पंखा पेशगी	26,400.00
भवन निर्माण पेशगी	19,80,645.00	भवन निर्माण पेशगी	27,59,088.00
उत्सव पेशगी	3,12,961.00	उत्सव पेशगी	5,38,095.00
बाढ़ पेशगी	50,940.00	बाढ़ पेशगी	2,300.00
स्थानांतरण पर वेतन और		स्थानांतरण पर वेतन और	
यात्रा भत्ता पेशगी	29,609.00	यात्रा भत्ता पेशगी	30,264.00
स्थायी पेशगी	6,700.00	स्थायी पेशगी	6,700.00
निधियां और संचयी जमा योजना			
सा.भ.नि.	1,09,80,844.00	सा.भ.नि. चालू खाता	23,61,373.00
अं.भ.नि.	7,81,648.00	टी- 39	40,37,143.00
सं.ज.यो.			63,98,516.00
		अं.भ.नि. चालू खाता	9,32,362.00
			6,73,839.00
			16,06,201.00
		सं.ज.यो.	2,129.00
जमा			
बचत धन और सुरक्षा जमा	5,63,402.00	बचत धन और सुरक्षा जमा	1,15,191.00
साइंस किटों के लिए प्राप्त पेशगी	15,75,000.00	साइंस किटों के लिए प्राप्त पेशगी	19,04,175.00
जमानत का धन	1,58,986.00	जमानत का धन	95,000.00
अन्य जमा	25,85,841.00	अन्य जमा	4,73,614.00
सामूहिक बीमा योजना	4,21,408.00	सामूहिक बीमा योजना	2,90,175.00
सा.भ.नि., अं.भ.नि. निवेश		सा.भ.नि., अं.भ.नि. निवेश	
(टी 39 खाते से)	24,61,400.00	(टी 39 खाते से)	72,62,580.00
अल्पकालिक निवेश		अल्पकालिक निवेश	11,49,00,000.00
(टी 39 खाते से)	11,49,00,000.00		
सा.भ.नि., अं.भ.नि. बचत खाते		टी 39 को निधि का अंतरण	80,53,179.00
टी 39 को निधि का अंतरण			
(टी 39 खाते से)	80,53,179.00		8,30,974.00
उचलत	49,397.00	उचलत	8,30,974.00
विप्रेषित धन राशि			
सा.भ.नि., अं.भ.नि. विप्रेषण	1,23,394.00	सा.भ.नि., अं.भ.नि. विप्रेषण	1,22,954.00
डी.जी.बी., जी.बी.नि. विप्रेषण	82,342.00	डी.जी.बी., जी.बी.नि. विप्रेषण	79,735.00
विविध विप्रेषण	62,045.00	विविध विप्रेषण	56,892.00
उपकार्यालय विप्रेषण	47,49,299.00	उप कार्यालय विप्रेषण	38,75,863.00
आयकर विप्रेषण	5,80,438.00	आयकर विप्रेषण	5,74,158.00
मृत्यु सहायता योजना	36,708.00	मृत्यु सहायता योजना	30,978.00
टी.सी.एस. विप्रेषण	2,78,759.00	टी.सी.एस. विप्रेषण	2,77,331.00
आवधिक विप्रेषण	5,94,96,000.00	आवधिक विप्रेषण	6,17,94,000.00
पारवहन गत निधि	2,42,000.00	घटा-पारवहनगत निधि	25,40,000.00
	592,54,000.00	अंतिम शेष	592,54,000.00
		हाथ रोकड़ व बैंक राशि	11,94,26,290.00
		पारवहनगत निधि	25,40,000.00
		टी 39 बचत खाते में रोकड़	12,19,601.00
कुल जोड़ :	52,07,78,027.00	कुल जोड़ :	12,31,85,891.00

परिशिष्ट— 'क'

व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को सहायता की योजना

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ने शिक्षा और शिक्षा नवाचारों के क्षेत्र में स्वैच्छिक प्रयासों के महत्व को हमेशा से मान्यता दी है। देश में शिक्षा के रूपान्तरण के लिए, व्यावसायिक शिक्षा संगठनों का, संस्थाओं और अध्यापकों/शिक्षकों के साथ गहरा सम्पर्क एक अच्छा उत्प्रेरक है। इसे ध्यान में रखते हुए रा.शै.अनु.प्र. परिषद, शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय में प्रचलित योजना के अनुसार पिछले कुछ वर्षों से व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को वित्तीय सहायता देने की योजना चलाती आ रही है। योजना के मुख्य विवरण, वर्तमान स्थिति में, इस प्रकार हैं :

उद्देश्य

योजना के मुख्य उद्देश्य निम्नांकित हैं :

1. शिक्षा, विशेष रूप से स्कूली शिक्षा में सुधार के लिए स्वैच्छिक प्रयासों को बनाए रखना और बढ़ावा देना।
2. व्यावसायिक प्रकृति की, उत्तम कोटि की पत्रिकाओं को प्रोत्साहन देना, जो शिक्षा नवाचारों के प्रचार में सहायक हों।
3. शिक्षा में, स्वैच्छिक संगठनों के माध्यमिक से विस्तार कार्य का बढ़ावा देना।

पात्रता की शर्तें

संगठन

1. कोई भी व्यावसायिक शिक्षा संगठन (पी.ई.सी.) रा.शै.अनु.प्र. परिषद से योजना के अन्तर्गत अनुदान प्राप्त करने का पात्र तब ही होगा जबकि यह ऐसा हो :-
(क) सोसायटी पंजीकरण अधिनियम (1860) का अधिनियम XX1 के तहत पंजीकृत सोसायटी; या जिन मसलों से रा.शै.अनु.प्र. परिषद का वास्ता हो और/या जो रा.शै.अनु.प्र. परिषद के कार्यों में सहायक हो और रा.शै.अनु.प्र. परिषद के उद्देश्यों के प्रवर्धन में लाभकर हो।
(ख) शिक्षा साहित्य का उत्पादन, जिसमें व्यावसायिक पत्रिकाएं तो शामिल हों लेकिन पाठ्यपुस्तक सामग्री नहीं।
(ग) शिक्षा प्रदर्शनियां, यदि उनका संबंध शिक्षा नवाचारों से या स्थानीय प्रकृति के अन्य शिक्षा विकासों में हो।
2. सामान्यतः निम्नलिखित के लिए कोई अनुदान नहीं दिया जाएगा :-
(क) संगोष्ठियां, कार्यशालाएं, विशेषकर जिस प्रकार की रा.शै.अनु.प्र. परिषद आयोजित कर सकता है या कर रहा है।

(ख) अनुसंधान परियोजनाएं

अनुदान का परिमाण

संगठनों को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् पर बहुत अधिक निर्भर होने से बचाने के लिए इस योजना के अन्तर्गत अनुदान केवल निम्नलिखित के अनुसार साझे के आधार पर ही दी जाएगी :-

1. रा.शै.अनु.प्र. परिषद् द्वारा दिया जाने वाला, सहायता अनुदान सामान्यतः वर्ष के दौरान की गतिविधि पर होने वाले खर्च 60 प्रतिशत से अधिक नहीं होगा।
2. खर्च के शेष 40 प्रतिशत की व्यवस्था संगठन के स्वयं ही अन्य स्रोतों, जैसे अन्य संगठनों से प्राप्त अनुदान या बिक्री से आय, पत्रिकाओं के चंदों या विज्ञापनों से करनी होगी। इन स्रोतों से होने वाली आमदनी यदि 40 प्रतिशत से अधिक हो जाती है तो परिषद का हिस्सा तदनुसार कम हो जाएगा।
3. यदि किसी कारण से वर्ष के दौरान परिषद का अनुदान खर्च को स्वीकार्य 60 प्रतिशत राशि से अधिक हो जाता है या अन्य स्रोतों से यह कम हो जाता है तो अधिक दी गई राशि या तो अगले वर्ष के अनुदान से वसूल कर ली जा सकती है या समायोजित की जा सकती है।

उदाहरण

यदि किसी गतिविधि पर वास्तविक खर्च रु. 1700.00 हुआ है, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद का अनुदान रु. 1500 है और अन्य स्रोतों से आय रु. 900.00 है।

(क) खर्च का 60 प्रतिशत = रु. 1020.00

(ख) अन्य स्रोतों से आय के मुकाबले खर्च = 800.00 अधिक (रु. 1700- रु. 900)

वसूली की राशि: अनुदान में (क) या

(ख) में से जो कम हो वह घटाकर

रु. 1500-800= रु. 700

आवेदन का तरीका

1. सभी पी.ई.ओ. को चाहिए कि परिशिष्ट में दिए गए आवेदन पत्र को हर तरह से पूरा भर के, दो प्रतियों में अपना आवेदन दें।
2. प्रत्येक कार्यक्रम या गतिविधि के लिए अलग-अलग आवेदन दिये जाने चाहिए।

3. प्रत्येक आवेदन के साथ निम्नलिखित दस्तावेज होने चाहिए :-
(क) संस्था/संगठन को विवरण-पत्रिका (प्रोस्पैक्टस) या इसके उद्देश्यों और गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण
(ख) संगठन का संविधान
(ग) उपलब्ध अद्यतन वार्षिक रिपोर्ट की प्रति
(घ) पत्रिकाओं/अन्य सामग्री के प्रकाशन के लिए अनुदान के लिए अनुरोध के मामलों में पत्रिकाओं के पूर्ववर्ती अंको/पूर्ववर्ती प्रकाशनों की प्रतियाँ।
(ङ) संगठन के पिछले वर्ष के लेखा परीक्षित लेखा विवरण के साथ निम्नलिखित प्रपत्र में उपयोग प्रमाणपत्र, जिस पर संस्था के अध्यक्ष/सचिव तथा लेखापरीक्षकों (सनदी लेखापालों आदि) के हस्ताक्षर हों।

“रा.शै.अनु.प्र. परिषद् द्वारा.....के लिए संस्वीकृत अनुदान के बारे में के लेखे का सत्यापन वाउचरों की सहायता से कर लिया है और प्रमाणित करता हूँ कि वे सही हैं और जिस कार्य के लिए अनुदान दिया गया था उसके लिए उसका इस्तेमाल किया गया।”

इसी प्रकार फार्म में एक अलग उपयोग प्रमाण पत्र और/या जिस कार्य के लिए अनुदान दिया गया था, शुद्ध रूप से उस पर हुए खर्च का विवरण।

ऊपर बताए गए दस्तावेजों के अभाव में कोई भी अनुदान संस्वीकृत नहीं किया जा सकता।

सामान्य

1. पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए अनुदान के मामले में पी.ई.सी. को रा.शै.अनु. और प्र. परिषद् का एक विज्ञापन बिना शुल्क के, पत्रिका में देना होगा।
2. वार्षिक सम्मेलनों के मामले में, संगठन को रा.शै.अनु. और प्र. परिषद् के कुछ प्रतिनिधियों को सम्मेलन के साथ सम्बद्ध करना चाहिए।
3. अनुदान में से पूर्ण रूप से या काफी हद तक अर्जित परिसम्पत्तियों का रिकॉर्ड, संस्था/संगठन को रखना चाहिए। ऐसी परिसम्पत्तियों को, अनुदान दिए गए कार्य के अलावा किसी और कार्य के लिए, रा.शै. अनु. और प्र. परिषद् की पूर्व संस्वीकृति के बिना न तो बेचना चाहिए, न ऋणग्रस्त करना चाहिए और न प्रयोग करना चाहिए। यदि किसी भी समय संस्था/संगठन का वजूद ही खत्म हो जाए तो ऐसी सम्पत्तियाँ वापस रा.शै.अनु. और प्र. परिषद् की लौट जाएंगी।
4. लेखे और समर्थक दस्तावेज, भारत के नियंत्रक महालेखा परीक्षक द्वारा उनकी इच्छानुसार परीक्षण जांच के लिए उपलब्ध होने चाहिए।

5. यदि कुछ कारणों से रा.शै.अनु. और प्र. परिषद् को यकीन हो जाए कि जिस कार्य के लिए अनुदान दिया गया था उसके लिए प्रयोग नहीं किया गया तो अनुदान वापस लिया जा सकता है और आगे के लिए अनुदान बंद किया जा सकता है।
6. रा.शै.अनु. और प्र. परिषद् द्वारा अनुमोदित और सहायता प्राप्त कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में संगठन को बेहद मितव्ययता बरतनी चाहिए।
7. अनुदान के लिए आवेदन, रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के सचिव को दिए जाने चाहिए।

आवेदन पत्र

(तीन प्रतियाँ दी जानी हैं)

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को
सहायता की योजना

नोट : जो आवेदन अधूरे प्राप्त होंगे !उनपर गौर नहीं किया जाएगा।
(आवेदक द्वारा भरे जाने के लिए)

1. संस्था/संगठन का नाम
2. संस्था/संगठन का संक्षिप्त इतिहास और इसके उद्देश्य तथा गतिविधियाँ
3. क्या भारतीय सोसाइटीज़ पंजीकरण अधिनियम, 1860 (1860) का अधिनियम (XXI) या फिलहाल लागू किसी अन्य नियम के अन्तर्गत पंजीकृत?
4. क्या संस्था के कम से कम 50 सदस्य दर्ज हैं?
5. केन्द्र/राज्य सरकारों के विभागों और/या केन्द्र/राज्य सरकारों द्वारा स्थापित संस्थाओं से चाहे गए अनुदान का विवरण और आवेदन में जिस कार्य के लिए वित्तीय सहायता मांगी गई है उसके लिए संस्वीकृत/संभावित संस्वीकृति की राशि।
6. कार्यक्रम गतिविधि का विस्तृत वर्णन, जिसके लिए सहायता का अनुरोध किया गया है— अनुमानित खर्च, खर्च की अवस्थाएं— पुनरावर्ती और गैरपुनरावर्ती खर्च अलग-अलग बताते हुए।
7. अतिरिक्त सूचना, यदि कोई हो तो,
प्रमाणित किया जाता है कि आवेदन में दी गई सूचना, मेरी पूरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सही है।
प्रमाणित किया जाता है कि जिन गतिविधियों के लिए इस आवेदन में वित्तीय सहायता का अनुरोध किया गया है, केन्द्र/राज्य सरकार या उनके द्वारा स्थापित किसी संस्था को किसी भी अन्य योजना के अन्तर्गत नहीं आती।

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने, पी.ई.ओ को वित्तीय सहायता की

रा.शै.अनु.प्र. परिषद की योजना को ध्यानपूर्वक पढ़ लिया है और उसके उपबंधों का पालन करने का वचन देता हूँ।

हस्ताक्षर

(पूरा नाम बड़े अक्षरों में)

पद

पूरा पता

संगठन की सील

नोट : आवेदन हर प्रकार से पूर्ण होना चाहिए और योजना के पैरा 4 में बताए सभी दस्तावेजों से समर्थित होना चाहिए।

पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए 1985-86 में व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् द्वारा दिया गया अनुदान

क्र.सं	संगठन का नाम	पत्रिका का नाम	संस्वीकृत राशि
1	2	3	4
1.	भारतीय मनोमापी और शिक्षा अनुसंधान संस्था, पटना विश्वविद्यालय, आफ साइकोमेट्री पटना	"इंडियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एंड एजुकेशन"	रु. 5000.00
2.	विज्ञान शिक्षा उन्नति संस्था, 3, फर्स्ट ट्रस्ट लिंक स्ट्रीट, मादवेलिपकम, मद्रास-28	"जूनियर साइंटिस्ट"	रु. 4500.00
3.	एस.आइ.टी.यू. शैक्षिक अनुसंधान परिषद, 3, फर्स्ट ट्रस्ट लिंक रोड, मादवेलिपकम, मद्रास-28	"एक्सपेरिमेंट्स इन एजुकेशन"	रु. 3000.00
4.	विकलांगों के लिए समर्पित शिक्षा, पुनर्वास और अनुसंधान केंद्र, एस-601, स्कूल ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092	"इंडियन जर्नल ऑफ इंटेग्रेटेड एजुकेशन"	रु. 4000.00
5.	अखिल भारतीय विज्ञान अध्यापक संस्था, द्वारा स्कूल पूर्व शिक्षा विभाग रा.शै.अनु.प्र. परिषद, नई दिल्ली-16	"विज्ञान शिक्षक"	रु. 4000.00
6.	गणित अध्यापन सुधार संस्थान, 25 फर्म रोड, कलकत्ता.	"इंडियन जर्नल ऑफ मैथेमेटिक्स टीचिंग"	रु. 4000.00
7.	भारतीय अंग्रेजी भाषा अध्यापक संस्था 3, फर्स्ट ट्रस्ट लिंक स्ट्रीट, मादवेलिपकम, मद्रास-28	"जर्नल ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज टीचिंग"	रु. 4000.00
8.	भारतीय स्कूल-पूर्व शिक्षा संस्था,	"बालक"	रु. 2500.00
9.	भारतीय भौतिकी संस्था द्वारा-टाटा आधारभूत अनुसंधान संस्थान होमी भाभा मार्ग, बंबई-400005	"फिजिक्स न्यूज"	रु. 5000.00

1985-86 में संगोष्ठियां/सम्मेलन आयोजित करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को रा.शै.अनु.प्र. परिषद द्वारा दिए गए अनुदान

क्र.सं	संगठन का नाम	आशय	संस्वीकृत राशि
1	2	3	4
1.	भारतीय शिक्षा नियोजन एवं प्रशासन संस्था, 17-बी, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-16.	"नई शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्यों पर संगोष्ठी"	रु. 5000.00
2.	भारतीय सामाजिक विज्ञान अकादमी, ईश्वर सरन डिग्री कालेज, इलाहाबाद	"राष्ट्रीय उद्देश्यों और जन संचार माध्यमों की राष्ट्रीय संगोष्ठी"	रु. 5000.00
3.	केन्द्रीय भवन निर्माण अनुसंधान संस्थान, रुड़की 247667	"अफ्रीकी-एशियाई देशों लिए स्कूल भवन पर अंतराष्ट्रीय सम्मेलन"	रु. 40000.00
4.	भारतीय अनुप्रायुक्त मनोविज्ञान प्रतिभा खोज और इसके अकादमी, बनारस हिंदू विश्व-विद्यालय, वाराणसी-221005	सम्मेलन और कार्यक्रमबद्ध सीखने तथा शिक्षा के विकास पर स्तर के विशेष संदर्भ में शिक्षा मनोविज्ञान में वर्तमान अनुसंधान की स्थिति एवं समस्याओं पर चर्चा	रु. 5000.00
5.	भारतीय पर्यावरण समिति (योजना एवं वास्तुकला स्कूल) पो.आ.बाक्स सं. 7033 इन्द्रप्रस्थ मुख्य डाकघर, नई दिल्ली-2	पर्यावरण शिक्षा पर अंतराष्ट्रीय सम्मेलन	रु. 5000.00
6.	द फ्रेंड्स एट आर्काइव्स ग्रुप भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व	उत्तर-पूर्व भारत में 16वीं से 19 वीं शताब्दी के मध्य	रु. 6000.00

1985-86

1	2	3	4
1.	जनपथ, नई दिल्ली	तक की भाषाओं तथा साहित्य में भारतीय इतिहास के स्रोत पर संगोष्ठी	
7.	विकलांगों के लिए समेकित	समेकित शिक्षा में विकलांग	रु. 4000.00

1	2	3	4
	शिक्षा, पुनर्वास और अनुसंधान केन्द्र, एस- 601, स्कूल ब्लाक शकरपुर, दिल्ली- 92	बच्चों के लिए शिक्षण सामग्री के बारे में चर्चा करने के लिए चौथा वार्षिक सम्मेलन	

परिशिष्ट ख

राज्यों में क्षेत्र सलाहकारी के पते

		दूरभाष				दूरभाष	
		कार्यालय	निवास			कार्यालय	निवास
1.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु प्र. परिषद) 3.6.69 बी/7 हैदराबाद	35873	227207	10.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु प्र. परिषद) एम.आई.जी-161 सरस्वती नगर, नवाहर चौक, भोपाल	64465	76014
2.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु प्र. परिषद) जू नारंगी रोड साहेब तिल्ला, गुवाहाटी-781024	87003		11.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु प्र. परिषद) 138/2, गोआ, दमन व दिऊ कोठरुड कर्बे मार्ग पुणे	447314	447314
3.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु प्र. परिषद) कंकरबाग, पत्रकारनगर, पटना	53243	53243	12.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु प्र. परिषद) मैघालय, मिजोरम, और त्रिपुरा बायस रोड, लैटुमसरा शिलांग	26317	
4.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु प्र. परिषद) कोठी नं. 23 सैक्टर-8 ए, चण्डीगढ़	26923	26923	13.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु प्र. परिषद) होमी भाभा छात्रावास, आर.सी.ई. प्रंगण, भुवनेश्वर	50516	52224
5.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु प्र. परिषद) 1-बी, चंद्र कालोनी, ला कालेज के पीछे, अहमदाबाद	445992	445992	14.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु प्र. परिषद) 55-बी, यशपथ, तिलक नगर, जयपुर	40265	40265
6.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु प्र. परिषद) हिमरस, सकुलार रोड, शिमला-171001 (हि.प्र.)	4548	4548	15.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु प्र. परिषद) 32, हिंदी प्रचार समा स्टीट टी नगर, मद्रास	443414	72939
7.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु प्र. परिषद) 57, रावलापोरा, श्रीनगर-190005	77170		16.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु प्र. परिषद) 555-ई, ममफोर्ड गंज इलाहाबाद	52212	2131
8.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु प्र. परिषद) 621, एट्टी फुट रोड 11, ब्लाक, राजाजी नगर, बंगलौर	350006	350006	17.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु प्र. परिषद) पी-23, सी.आई.टी. रोड स्कीम-55, कलकत्ता	245310	361510
9.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु प्र. परिषद) एस.आई.ई. भवन, पूजापुरा, त्रिवेन्द्रम	64389	64948		पश्चिम बंगाल, अंडमान व निकोबार द्वीप समूह तथा सिक्किम		

परिशिष्ट ग

1985-86 के लिए रा.शे.अनु. और प्र. परिषद् की समितियाँ

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के सदस्य (सामान्य सभा)
(परिषद् के नियमों के नियम 3 के अन्तर्गत)

- | | | |
|---|---|---|
| 1. शिक्षा मंत्री अध्यक्ष-पदेन | 1. श्री पी.वी. नरसिंह राव केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री शास्त्री भवन, नई दिल्ली। | 17. शिक्षा मंत्री, महाराष्ट्र, बम्बई। |
| 2. अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-पदेन | 2. डा. (श्रीमती) आर. माधुरी शाह अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली। | 18. शिक्षा मंत्री, मणिपुर, इम्फाल। |
| 3. सचिव, शिक्षा मंत्रालय-पदेन | 3. श्री आनंद स्वरूप, सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली। | 19. शिक्षा मंत्री, मेघालय, शिलांग। |
| 4. भारत सरकार द्वारा, प्रत्येक क्षेत्र के लिए एक के आधार पर मनोनीत, विश्वविद्यालयों के चार कुलपति | 4. श्री कान्ति चौधरी, कुलपति, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर। | 20. शिक्षा मंत्री, कर्नाटक, बंगलौर। |
| | 5. प्रो. एम.एन. दास, कुलपति, उत्कल विश्वविद्यालय, बाणी विहार, भुवनेश्वर। | 21. शिक्षा मंत्री, उड़ीसा, भुवनेश्वर। |
| | 6. डा. आर.एस. मिश्रा, कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ। | 22. शिक्षा मंत्री, नागालैण्ड, कोहिमा। |
| | 7. प्रो. बी.सी. कुलंदनीस्वामी, कुलपति, अन्ना विश्वविद्यालय, मद्रास। | 23. शिक्षा मंत्री, पंजाब, चण्डीगढ़। |
| 5. प्रत्येक राज्य सरकार/संघशासित प्रदेश का एक-एक प्रतिनिधि | 8. शिक्षा मंत्री, आंध्र प्रदेश, हैदराबाद। | 24. शिक्षा मंत्री, राजस्थान, जयपुर। |
| विधायक जो राज्य/संघशासित प्रदेश का शिक्षा मंत्री (या उसका प्रतिनिधि) होना चाहिए और दिल्ली के मामले में मुख्य कार्यकारी पार्षद (या उनका प्रतिनिधि) | 9. शिक्षा मंत्री, असम, दिसपुर। | 25. शिक्षा मंत्री, तमिलनाडु, मद्रास। |
| | 10. शिक्षा मंत्री, बिहार, पटना। | 26. शिक्षा मंत्री, त्रिपुरा सरकार, अगरतला। |
| | 11. शिक्षा मंत्री, गुजरात, अहमदाबाद। | 27. शिक्षा मंत्री, सिक्किम, गंगटोक। |
| | 12. शिक्षा मंत्री, हरियाणा, चण्डीगढ़। | 28. शिक्षा मंत्री, उत्तर प्रदेश, लखनऊ। |
| | 13. शिक्षा मंत्री, हिमाचल प्रदेश, शिमला। | 29. शिक्षा मंत्री, पश्चिम बंगाल, कलकत्ता। |
| | 14. शिक्षा मंत्री, जम्मू व कश्मीर, श्रीनगर। | 30. मुख्य कार्यकारी पार्षद, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली। |
| | 15. शिक्षा मंत्री, केरल, त्रिवेन्द्रम। | 31. शिक्षा मंत्री, गोआ, दमन व दिऊ सरकार, पणजी (गोआ)। |
| | 16. शिक्षा मंत्री, मध्य प्रदेश, भोपाल। | 32. शिक्षा मंत्री, मिजोरम, ऐज़ाल। |
| | | 33. शिक्षा मंत्री, पांडिचेरी सरकार, पांडिचेरी। |
| | 6. कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्य, जो ऊपर शामिल नहीं हुए हैं | 34. श्रीमती सुशीला रोहतगी राज्य मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली। |
| | | 35. डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली। |
| | | 36. प्रो. डी.एस. कोठारी, कुलाधिपति, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली। |
| | | 37. डा. सी.एल. आनंद, सय कुलपति, उत्तर पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय, लोअर लच्छूमीरो, शिलांग- 793001 (मेघालय) |

38. श्री एच.एल. बब्बर, प्रिंसीपल, एन. डी.एम.सी. नवयुग स्कूल, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली।
39. श्री डी.पी. सिंह, प्रिंसीपल, नेतारहाट स्कूल, नेतारहाट, वाया रांची- 835218
40. डा. ए.के. जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।
41. प्रो. (श्रीमती) एस. शुक्ला, अध्यक्ष, अध्यापक, शिक्षा विभाग, विशेष शिक्षा एवं विस्तार सेवाएं, रा.शै.अनु. प्र. परिषद
42. डा. ए.के. शर्मा, प्रिंसीपल, क्षेत्रीयशिक्षा महाविद्यालय, मैसूर।
43. डा. जी.एल. अरोड़ा, रीडर, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, रा.शै.अनु. प्र. परिषद
44. ————
45. श्री एल.एस. नारायणन, वित्तीय सलाहकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
46. अध्यक्ष, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली।
47. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नेहरू हाउस, बहादुरशाह जेफर मार्ग, नई दिल्ली।
48. निदेशक, केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो (स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक) निर्माण भवन, नई दिल्ली।
49. उप महानिदेशक, कृषि शिक्षा प्रभारी, भा.कृ.अनु. परिषद, कृषि मंत्रालय, डा. राजेन्द्र प्रसाद मार्ग, नई दिल्ली।
50. प्रशिक्षण निदेशक, प्रशिक्षण तथा
- तथा रोजगार महानिदेशालय, श्रम मंत्रालय, नई दिल्ली- पदेन
- (च) योजना आयोग शिक्षा विभाग के प्रतिनिधि नई दिल्ली- पदेन
8. ऐसे अन्य व्यक्ति जिन्हें भारत सरकार समय-समय पर मनोनीत करना चाहे, छ: से अधिक नहीं। इनमें से कम से कम चार, स्कूल अध्यापक होने चाहिए।
51. शिक्षा सलाहकार, योजना आयोग, योजना भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली- 110001
52. प्रो. टी. सुब्बाराव, प्रिंसीपल, तकनीकी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान, मदरास।
53. प्रो. पी.बी. कुलकर्णी, प्रिंसीपल, तकनीकी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान, चण्डीगढ़।
54. श्री तुषार कांजीलाल, मुख्याध्यापक, रंगबेलिया हाई स्कूल डाक. रंगबेलिया, 24 परगना पश्चिम बंगाल
55. श्री मुहम्मद हुसैन आब्दी, राजकीय शिक्षा शास्त्रीय संस्थान, इलाहाबाद
56. श्री डेनिस डिसूजा, मुख्याध्यापक, संत फिलोमेना बालक हाई स्कूल, पुत्तूर, सीला डी.के., कर्नाटक
57. श्रीमती विनोदनी शाह, प्रिंसीपल, श्री आर.पी. पटोदिया कन्या हाई स्कूल, सुरेन्द्र नगर, जिला सुरेन्द्र नगर, गुजरात।
58. सचिव, भारतीय स्कूल प्रमाणपत्र परीक्षा परिषद प्रगति हाउस, तीसरा तल, 47-नेहरू प्लेस, नई दिल्ली।
59. श्री सी. रामचन्द्रन, सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।
- कार्यकारिणी समिति
1. परिषद के अध्यक्ष, जो कार्यकारिणी समिति के पदेन अध्यक्ष होंगे।
1. श्री पी.वी. नरसिंह राव, मा.सं.वि. मंत्री, मा.सं.वि. मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।

2. (क) शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री, जो कार्यकारिणी सभिति के पदेन उपाध्यक्ष होंगे।
- (ख) शिक्षा मंत्रालय में उपमंत्री, रा.शै.अनु.प्र. परिषद के अध्यक्ष द्वारा मनोनीत
- (ग) परिषद के निदेशक
- (घ) शिक्षा मंत्रालय के सचिव-पदेन
3. अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग- पदेन
4. स्कूल शिक्षा में अनुभूत रुचि रखने वाले चार शिक्षाविद (जिनमें से दो, स्कूल अध्यापक होने चाहिए), अध्यक्ष द्वारा मनोनीत
5. परिषद के संयुक्त निदेशक
6. अध्यक्ष द्वारा मनोनीत, परिषद की संकाय के तीन सदस्य, जिनमें से कम से कम दो, प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्षों के स्तर के होने चाहिए
2. श्रीमती कृष्णा साही, मा.सं.वि. राज्य मंत्री, मा.सं.वि. मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
3. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
4. डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, रा.शै.अनु. प्र. परिषद, नई दिल्ली।
5. श्री आनंद स्वरूप सचिव, मा.सं.वि. मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
6. प्रो. यशपाल, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली- 110001
7. प्रो. डी.एल. कोठारी, कुलाधिपति, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
8. डा. सी.एल. आनंद, सम-कुलपति, उत्तर पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय, लोअर लक्ष्मीपर, शिलांग- 793001 (मिपलब)।
9. श्री एम.एल. बबबर, प्रिंसीपल, एन.डी.एम.सी. नवयुग स्कूल, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली।
10. श्री डी.पी. सिंह, प्रिंसीपल, नेतारहाट स्कूल, नेतारहाट- बाया- रांची- 835218
11. डा. ए.के. जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, नई दिल्ली।
12. प्रो. (श्रीमती) एस. शुक्ला, अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, विशेष शिक्षा एवं विस्तार सेवाएं, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, नई दिल्ली।
13. डा. ए.के. शर्मा, प्रिंसीपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर- 590066
14. डा. जी.एल. अरोड़ा, रीडर, डी.ई.एस.एस. एण्ड एच, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, नई दिल्ली।
7. शिक्षा मंत्रालय के एक प्रतिनिधि
8. वित्त मंत्रालय से एक प्रतिनिधि, जो परिषद का वित्तीय सलाहकार होगा
15. श्री बाई.एन. चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (स्कूल), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
16. श्री एल.एस. नारायणन, वित्तीय सलाहकार रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
17. सचिव, रा.शै.अनु.प्र. प. परिषद, नई दिल्ली

स्थापना समिति

(परिषद के विनियम 10 के अधीन)

1. निदेशक, रा.शै.अनु.प्र. परिषद, अध्यक्ष
2. संयुक्त निदेशक, रा.शै.अनु.प्र. परिषद
3. अध्यक्ष द्वारा मनोनीत, शिक्षा मंत्रालय से नामित व्यक्ति
4. अध्यक्ष द्वारा मनोनीत चार शिक्षाविद, जिनमें से कम से कम एक वैज्ञानिक हो
5. अध्यक्ष द्वारा मनोनीत, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय से एक प्रतिनिधि
6. अध्यक्ष द्वारा मनोनीत, दिल्ली के राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान से एक प्रतिनिधि
7. परिषद के शैक्षिक तथा गैर शैक्षिक स्टाफ में से, विनियम के परिशिष्ट में बताए अनुसार अपने-अपने वर्ग में से एक-एक चुनकर दो प्रतिनिधि
1. डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद अध्यक्ष
2. डा. ए.के. जलालुद्दीन संयुक्त निदेशक, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद
3. श्री बाई.एन. चतुर्वेदी संयुक्त सचिव (स्कूल), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
4. प्रो. एच.सी. खरे, गणित तथा सांख्यिकी विभागाध्यक्ष इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद- 211002
5. प्रो. एम.एम. पुरी, राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर, जी- 16, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
6. डा. एस. आनंदलक्ष्मी, निदेशक, लेडी इरविन कालेज, सिकन्दरा रोड, नई दिल्ली।
7. प्रो. एम.आई. सावादती वरिष्ठ प्रोफेसर भौतिकी तथा अभिषद के सदस्य, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़
8. डा. एस.एन. दत्ता प्रिंसीपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर
9. प्रो. एस.एच. खान, प्रोफेसर, डी.पी. एस.ई.ई., रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली।
10. श्री जे.एस. सक्सेना रीडर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर

- | | | | | |
|--|--|---|------------|--|
| 8. वित्तीय सलाहकार, रा.शै.अनु.प्र. परि नई दिल्ली | 11. श्री एम. एस. बिष्ट, भंडारपाल वर्ग । रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, नई दिल्ली | 3. के.लो.नि.वि. के मुख्य इंजीनियर या उनका प्रतिनिधि | सदस्य | डा. एम.सी. जोसेफ, मुख्य इंजीनियर (निर्माण), के.लो.नि. विभाग, श.कृ. पुरम, नई दिल्ली |
| 9. सचिव, रा.शै.अनु.प्र. परि. | 12. श्री एल.एस. नारायणन वित्तीय सलाहकार, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद मा.सं.वि. मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली। | 4. वित्त मंत्रालय (निर्माण) का एक प्रतिनिधि | सदस्य | श्री एम.आर. राव, सहा. वित्त सला. (निर्माण), वित्त मंत्रालय (निर्माण), निर्माण भवन, नई दिल्ली। |
| | 13. सचिव-सदस्य सदस्य संयोजक रा.शै.अनु. और प्र. परिषद | 5. रा.शै.अनु. और प्र. परि. के परामर्शदाता वास्तुकार | सदस्य | श्री आई.डी. रस्तोगी, वरिष्ठ वास्तुकार, के.लो.नि. विभाग, (एन. डी. जेड-iv) (कमरा नं. 426), ए विंग, निर्माण भवन, नई दिल्ली। |
| | | 6. परिषद के वित्तीय सलाहकार या उनका प्रतिनिधि | सदस्य | श्री मनमोहन सिंह, वित्तीय सलाहकार रा.शै.अनु. और प्र. परि., शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली। |
| | | 7. शिक्षा मंत्रालय द्वारा नामित | सदस्य | श्री बाई.एन. चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (स्कूल), शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली। |
| | | 8. प्रख्यात सिविल इंजीनियर | सदस्य | श्री आर.ए. खमानी, मुख्य इंजीनियर, दिल्ली विकास परिषद, नई दिल्ली। |
| | | 9. प्रख्यात विद्युत इंजीनियर (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत) | सदस्य | श्री आर.डी. जान, मुख्य इंजीनियर, कावेरी भवन, एफ ब्लॉक, नवां तल, कैम्पेगीज रोड, बंगलौर। |
| | | 10. कार्यकारिणी समिति का एक सदस्य (समिति द्वारा मनोनीत) | सदस्य | प्रो. जे.एस. राजपूत प्रिंसीपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, श्यामला हिल्स, भोपाल |
| | | 11. सचिव, रा.शै.अनु. और प्र. परि. | सदस्य-सचिव | श्री सी. रामचन्द्रन, आई.ए.एस. सचिव, रा.शै.अनु. और प्र. परि. |

वित्त समिति

(परिषद के नियम 62 के अधीन)

- | | |
|---|--|
| 1. रा.शै.अनु.प्र.परिषद के निदेशक (पदेन) | 1. डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, रा.शै.अनु.प्र. परिषद, नई दिल्ली। |
| 2. वित्तीय सलाहकार (पदेन) | 2. श्री एल.एस. नारायणन, वित्तीय सलाहकार, रा.शै.अनु.प्र. परिषद, मा.सं.वि. मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली। |
| 3. संयुक्त सचिव (स्कूली-शिक्षा) मा.सं. वि. मंत्रालय | 3. श्री बाई.एन. चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (स्कू.शि.), मा.सं.वि. मंत्रालय (शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन, नई दिल्ली। |
| | 4. श्री जे. वीरा राघवन, सलाहकार (शिक्षा), योजना आयोग, योजना भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली। |
| | 5. डा. वी.पी. दत्त, चीनी तथा जापानी अध्ययन विभागाध्यक्ष, कला संकाय भवन, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली। |
| 4. सचिव, रा.शै.अनु. और प्र.परि. सदस्य आयोजक | 6. सचिव, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, नई दिल्ली। |

भवन एवं निर्माण समिति

- | | | |
|---|-----------|--|
| 1. निदेशक, रा.शै.अनु. और प्र. परि. पदेन | अध्यक्ष | डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, रा.शै.अनु. प्र. परि. |
| 2. संयुक्त निदेशक, रा.शै.अनु. और प्र. परि. पदेन | उपाध्यक्ष | डा. ए.के. जलालुद्दीन, संयुक्त सचिव रा.शै.अनु.प्र. परि. |

कार्यक्रम सलाहकार समिति

- | | |
|---|-----------|
| 1. निदेशक, रा.शै.अनु. और प्र. परि. | अध्यक्ष |
| 2. संयुक्त निदेशक, रा.शै.अनु. और प्र. परि. | उपाध्यक्ष |
| 3. प्रो. एस. शुक्ल, अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 33 छात्र मार्ग, दिल्ली- 110007 | सदस्य |
| 4. प्रो. सी.एल. कुंडू, शिक्षा संकाय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) | -वही- |
| 5. प्रो. एन. मल्ला रेड्डी शिक्षा संकाय, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद। | -वही- |
| 6. प्रो. एस. नारायण राव, मनोविज्ञान विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति। | -वही- |

- | | | | |
|---|-------|---|-------|
| 7. प्रो. (श्रीमती) एस. जैदी; शिक्षा संकाय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़। | —वही— | 29. अध्यक्ष, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परि. नई दिल्ली- 16. | —वही— |
| 8. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, महेन्द्र, पटना- 6 | सदस्य | 30. अध्यक्ष, शिक्षा मनोविज्ञान, परामर्श एवं मार्गदर्शन विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, नई दिल्ली- 16. | —वही— |
| 9. निदेशक, राज्य शिक्षा संस्थान, सोलन (हिमा.प्र.)। | —वही— | 31. अध्यक्ष, नीति अनुसंधान नियोजन एवं कार्यक्रम विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. | —वही— |
| 10. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एस. सी.ई.आर.टी.) मेघालय, भवखार मुख्य मार्ग, शिलांग- 2 | —वही— | 32. अध्यक्ष, पुस्तकालय प्रलेखन एवं सूचना विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. | —वही— |
| 11. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर (राजस्थान) | —वही— | 33. अध्यक्ष, क्षेत्र सेवाएं एवं समन्वय विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, नई दिल्ली- 16. | —वही— |
| 12. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 6, डी. पी.आई. ग्रांगण, कालेजरोड, मद्रास | —वही— | 34. अध्यक्ष, मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण एवं आंकड़ा संसाधन विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. | —वही— |
| 13. प्रिंसीपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर (राजस्थान)। | —वही— | 35. अध्यक्ष, कार्यशाला विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. | —वही— |
| 14. प्रिंसीपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)। | —वही— | 36. अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. | —वही— |
| 15. प्रिंसीपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर (उड़ीसा)। | सदस्य | 37. संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. | —वही— |
| 16. प्रिंसीपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर (कर्नाटक)। | —वही— | 38. डा. के.वी. राव, प्रोफेसर, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. | सदस्य |
| 17. प्रो. ए.एन.महेश्वरी, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर- 570006. | —वही— | 39. डा. (कु.) एस.के. राम, प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. | —वही— |
| 18. प्रो. के.सी. पण्डा, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर (उड़ीसा)। | —वही— | 40. डा. (श्रीमती) आर. मुरली धरन, प्रोफेसर, स्कूल-पूर्व एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. | —वही— |
| 19. प्रो. एन. वैद्य, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर (राजस्थान)- 305001. | —वही— | 41. डा. (श्रीमती) एस.पी. पटेल, प्रोफेसर, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. | —वही— |
| 20. प्रो. एस.टी.वी. गोविंदाचार्यन्, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, श्यामला हिल्स, भोपाल (म.प्र.)। | —वही— | 42. डा. वी.के. सिंह, प्रोफेसर, शिक्षा मनोविज्ञान परामर्श एवं मार्गदर्शन विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. | —वही— |
| 21. डा. डब्ल्यू.ए.एफ. हापर, क्षेत्र सलाहकार, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नं. 32, हिंदी प्रचार सभा मार्ग, टी नगर, मद्रास- 600017 (तमिलनाडु)। | —वही— | 43. श्री के.एन. हिरियन्निया, प्रोफेसर, मापन मूल्यांकन, सर्वेक्षण तथा आंकड़ा संसाधन विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. | सदस्य |
| 22. डा. आर.पी. कथूरिया, क्षेत्र सलाहकार, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद एम.ई.जी.- 161, ब्लाक सं. 6 सरस्वती नगर, जवाहर चौक, भोपाल- 402017 (म.प्र.)। | सदस्य | 44. डा. ओ.एस. देवल, प्रोफेसर, केन्द्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. | —वही— |
| 23. डा. के.एल. जोशी, क्षेत्र सलाहकार, रा.शै.अनु.परिषद लक्ष्मी भवन बिल्डिंग, कोठी नं. 209/1 व 210/1 आरा मिल के पास, संजावली शिमला- 171001 (हिमा.प्र.)। | —वही— | 45. डा. पी.एम. पटेल, प्रोफेसर, कार्यक्रम विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. | —वही— |
| 24. डा. डी.के. भट्टाचार्य, क्षेत्र सलाहकार, रा.शै.अनु.परि., बायस रोड, लैतमुखड़ा, शिलांग- 793003 (मेघालय) | —वही— | 46. प्रो. डी.एस. रावत, अध्यक्ष, एस.ई.पी.एकक रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. | —वही— |
| 25. अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16 | —वही— | 47. डा. आर.एम. कालरा, अध्यक्ष, आई.आर.एकक, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. | —वही— |
| 26. अध्यक्ष, विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, नई दिल्ली- 16 | —वही— | | |
| 27. अध्यक्ष, स्कूल पूर्व तथा प्रारंभिक शिक्षा विभाग रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16 | सदस्य | | |
| 28. अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा तथा विस्तार सेवाएं विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16 | —वही— | | |

48. प्रो. आई.एस. चौधरी, प्रभारी प्रोफेसर, पी.सी.ई. एकक, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. -वही-
49. डा. आर.पी. सिंह, अध्यक्ष, पत्रिका सैल रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. सदस्य
50. सचिव, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. -वही-
51. मुख्य लेखापाल, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. -वही-
52. श्री एच.के.एल. चुग, उप सचिव, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. -वही-
53. श्री जी.आर. दास, उपसचिव, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. -वही-
54. श्री टी.एस. शर्मा, जन सम्पर्क अधिकारी, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, नई दिल्ली- 16. -वही-
55. श्री एन. रमेशन, उप सचिव, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. -वही-
56. श्री पी.एस. महलवाल, विशेष अधिकारी, सी.आई.ई.टी. रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. सदस्य
57. श्री एस.के. आनंद, विशेष अधिकारी, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. -वही-
58. श्री आर.पी. सेठ, विशेष अधिकारी, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. -वही-
59. ले. कर्नल एम.एल. मंडारी, बी.एस.ओ., रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. -वही-
60. श्री के.एच. सक्सेना, प्रभारी/अध्यक्ष, माडल स्कूल यूनिट, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. -वही-
61. डा. कुलदीप कुमार, प्रोफेसर, डी.ई.पी.सी. एण्ड जी, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. -वही-

शैक्षिक अनुसंधान एवं नवाचार समिति

1. डा. वाई. रवि, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आलिया प्राथमिक स्कूल प्रांगण, आंध्र प्रदेश खेलकूद परिषद के सामने, हैदराबाद ।
2. डा. (श्रीमती) टी. ठाकुर, प्रिंसीपल, राज्य शिक्षा संस्थान, जोरहाट (असम)
3. डा. मार्थ एन. मुखर्जी, प्रोफेसर, भारतीय संख्यिकीय संस्थान, सनसनबाल मार्ग, नई दिल्ली ।
4. डा. टी.बी. नायक, निदेशक, जनजातीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, गुजराती विद्यापीठ, अहमदाबाद (गुजरात)
5. प्रो. ए.एल. नागर, दिल्ली स्कूल इकानामिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।
6. प्रो. आगा अशरफ अली, डीन एवं अध्यक्ष, स्नातकोत्तर शिक्षा विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, हजरतबाल, श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर) ।

7. प्रो. (श्रीमती) वी. अग्रवाल, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (म.प्र.) ।
8. डा. आर. श्रीनिवासन, प्रोफेसर, शिक्षा लक्ष्मी महाविद्यालय, गांधीग्राम, जिला मडुरै, तमिलनाडु ।
9. डा. बी.के. राम बर्मन, वरिष्ठ प्रोफेसर, समाज विकास परिषद, 53, लोदी एस्टेट, नई दिल्ली ।
10. प्रो. बी.आर. काम्बले, अध्यक्ष, इतिहास विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर, महाराष्ट्र ।
11. डा. के.सी. षण्डा, प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुनेश्वर ।
12. डा. एस.टी.वी.जी. आचार्यलु, प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल ।
13. डा. (श्रीमती) अमृत कौर, प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर ।

विद्या समिति

1. निदेशक, रा. शै. अनु. और प्र. परिषद अध्यक्ष
2. संयुक्त निदेशक, रा. शै. अनु. और प्र. परिषद उपाध्यक्ष
3. डीन (विद्या) संयोजक
4. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. सदस्य
5. डीन (अनुसंधान) -वही-
6. डीन (समन्वय) -वही-
7. अध्यक्ष, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग
8. अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग
9. अध्यक्ष, शिक्षाव्यावसायिकरण विभाग
10. अध्यक्ष, भाषन मूल्यांकन सर्वेक्षण तथा आंकड़ा संसाधन विभाग
11. अध्यक्ष, स्कूल पूर्व तथा प्रारम्भिक शिक्षा विभाग
12. अध्यक्ष, शिक्षा मनोविज्ञान परामर्श एवं मार्गदर्शन विभाग
13. अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा तथा विस्तार सेवाएं विभाग
14. अध्यक्ष, नीति अनुसंधान नियोजन एवं कार्यक्रमण विभाग
15. अध्यक्ष, कार्यशाला विभाग
16. अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग
17. अध्यक्ष, क्षेत्र सेवाएं एवं समन्वय विभाग
18. अध्यक्ष, पुस्तकालय प्रलेखन एवं सूचना विभाग
19. श्री आर.सी. सक्सेना, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम.
20. डा. अनिल विद्यालंकार, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम.एच.
21. डा. (श्रीमती) एस.पी. पटेल, प्रोफेसर, डी.वी.ई.
22. डा. प्रीतम सिंह, प्रोफेसर, डी.एम.ई.एस. एण्ड डी.पी.
23. कुमारी आई. जलानी, प्रोफेसर, डी.पी.एस. एण्ड डी.ई.
24. डा. आर.के. माथुर, प्रोफेसर, डी.ई.पी.सी. एण्ड जी.
25. डा. के.एन. सक्सेना, प्रभारी प्रोफेसर, माडल स्कूल सैल
26. डा. एन.मल्लरेड्डी, प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद (आंध्रप्र.)
27. डा. सुरेश शुक्ल, प्रोफेसर, शिक्षा, अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

विभागीय सलाहकार बोर्ड

1. शिक्षा मनोविज्ञान परामर्श तथा मार्गदर्शन विभाग (डी.ई.पी.सी. एण्ड जी.) के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

- | | |
|---|--------|
| (1) डा. (श्रीमती) पेरिन एच. मेहता प्रोफेसर एवं अध्यक्ष | संयोजक |
| (2) डा. (श्रीमती) सी. घर, प्रोफेसर | |
| (3) डा. आर.के. माधुर, प्रोफेसर | |
| (4) अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा तथा विस्तार सेवाएं विभाग | |
| (5) अध्यक्ष, मापन मूल्यांकन सर्वेक्षण एवं आंकड़ा संसाधन विभाग | |
| (6) अध्यक्ष, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग | |
| (7) डा. (कुमारी) एम.डी. बंगाली, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षा विभाग बम्बई विश्वविद्यालय, कालिना प्रांगण, बम्बई | |
| (8) डा. एस. नारायण राव प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, एस.डी. विश्वविद्यालय, तिरुपति (आं.प्र.) | |

2. अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा तथा विस्तार सेवाएं (डी.टी.ई.एस. ई.ई.एस.) विभाग के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

- | | |
|---|--------|
| (1) डा. आर.सी. दास प्रोफेसर एवं अध्यक्ष | संयोजक |
| (2) डा. (कुमारी) एस. बिसारिया, प्रोफेसर | |
| (3) डा. एल.आर.एन. श्रीवास्तव, प्रोफेसर | |
| (4) डा. एन.के. जंगीरा, रीडर | |
| (5) अध्यक्ष, विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग | |
| (6) अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग | |
| (7) अध्यक्ष, शिक्षा मनोविज्ञान परामर्श एवं मार्गदर्शन विभाग | |
| (8) प्रो. दुर्गानन्द सिन्हा निदेशक, ए.एन. सिन्हा सामाजिक विज्ञान संस्थान, पटना | |
| (9) डा. (कुमारी) यशु वेग नेगता, अध्यक्ष, विशेष शिक्षा विभाग, एस.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय बम्बई | |

3. शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग (डी.वी.ई.) के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

- | | |
|---|--------|
| (1) डा. ए.के. मिश्रा प्रोफेसर एवं अध्यक्ष | संयोजक |
| (2) डा. पी. रायजुदा, रीडर | |
| (3) डा. जी. गुरु, रीडर | |
| (4) अध्यक्ष, विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग | |
| (5) संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. | |
| (6) अध्यक्ष, स्कूल-पूर्व एवं प्रारम्भिक शिक्षा विभाग | |
| (7) अध्यक्ष, मापन मूल्यांकन सर्वेक्षण एवं आंकड़ा संसाधन विभाग | |
| (8) डा. यू.सी. उपाध्याय सहायक महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि भवन, डा. राजेन्द्र प्रसाद मार्ग, नई दिल्ली-110001 | |
| (9) प्रो. बज किशोर प्रबन्धन विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद (आं. प्र.) | |

- (10) डा. एल. फड़निस, डीन, गृह विज्ञान महाविद्यालय, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय धारवाड़
- (11) प्रो. ए.एल. जैन, तकनीकी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान, चण्डीगढ़।
- (12) प्रो. वी. रामलिंगस्वामी, उप महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली।

4. विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.) के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

- | | |
|--|--------|
| (1) डा. बी. गांगुली, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष | संयोजक |
| (2) डा. बी.पी. आत्रेय, प्रोफेसर | |
| (3) छोटन सिंह, प्रोफेसर | |
| (4) श्री आर.सी. सक्सेना, प्रोफेसर | |
| (5) डा. वे. मित्रा, रीडर | |
| (6) अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग | |
| (7) संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. | |
| (8) अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा तथा विस्तार सेवाएं विभाग | |
| (9) अध्यक्ष, स्कूल-पूर्व एवं प्रारम्भिक शिक्षा विभाग | |
| (10) प्रो. एल.एन. व्यास, वनस्पति विज्ञान विभाग, एम.एल.एस. विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) | |
| (11) प्रो. आर.सी. मेहरोत्रा, रसायन विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर | |
| (12) प्रो. एस.पी. पुरी, भौतिकी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़। | |
| (13) प्रो. एन.पी. सिंह, गणित विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली-110016. | |

5. स्कूल एवं प्रारम्भिक शिक्षा विभाग (डी.पी.एस.ई.ई.) के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

- | | |
|--|--------|
| (1) डा. पी.एन. डुबे प्रोफेसर एवं अध्यक्ष | संयोजक |
| (2) डा. के.जी. रस्तोगी, प्रोफेसर | |
| (3) श्रीमती ए. खन्ना, प्रोफेसर | |
| (4) कुमारी आई.मलानी, प्रोफेसर | |
| (5) डा. एस.डी. रौका, प्रोफेसर | |
| (6) अध्यक्ष, विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग | |
| (7) अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी शिक्षा विभाग | |
| (8) अध्यक्ष, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग | |
| (9) अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा तथा विस्तार सेवाएं विभाग | |
| (10) संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी संस्थान | |
| (11) प्रो. सत्यभूषण, राष्ट्रीय शिक्षा नियोजन एवं प्रशासन संस्थान, एन.आई.ई. प्रांगण, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-110016 | |
| (12) डा. सच्चिदानन्द, अध्यक्ष, नृविज्ञान एवं समाज विज्ञान विभाग, ए.एन. सिन्हा सामाजिक अध्ययन संस्थान, गोलघर के पास, पटना-800001 (बिहार)। | |

- (13) श्री आई.एस. गौड़, अतिरिक्त निदेशक (बैसिक),
शिक्षा निदेशालय, इलाहाबाद (उ.प्र.) ।

6. सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस. एण्ड एच.) के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

- | | |
|--|--------|
| (1) श्री बी.एस. पारख, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष | संयोजक |
| (2) डा. अनिल विद्यालंकार, प्रोफेसर | |
| (3) डा. जी.एल. अरोड़ा, रीडर | |
| (4) डा. एच.एल. बछोतिया, लेक्चरर | |
| (5) अध्यक्ष, विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग | |
| (6) अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा एवं विस्तार सेवाएं विभाग | |
| (7) अध्यक्ष, मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण एवं आंकड़ा संसाधन विभाग | |
| (8) प्रो. के.एस. गिल, प्रोफेसर, अर्थशास्त्र, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर (पंजाब) । | |
| (9) प्रो. आर.एन. घोष, केन्द्रीय अंग्रेजी तथा विदेशी भाषाएं संस्थान, हैदराबाद (आ. प्र.) । | |
| (10) प्रो. नामवर सिंह, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, न्यू महरौली मार्ग, नई दिल्ली । | |

7. क्षेत्र सेवाएं तथा समन्वय विभाग के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

- | | |
|--|--------|
| (1) डा. बी.एस. श्रीकांतिया, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष | संयोजक |
| (2) डा. विक्रमजीत सिंह, प्रोफेसर | |
| (3) डा. बुल्क लैंग, निदेशक, रा.शै. अनु. प्र. परि., मेघालय | |
| (4) डा. एस.सी. दास, निदेशक, राज्य.शै.अनु.प्र.परि. भुवनेश्वर (उड़ीसा) | |

8. कार्यशाला विभाग के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

- | | |
|--|--------|
| (1) डा. पी.के. भट्टाचार्य, रीडर एवं अध्यक्ष | संयोजक |
| (2) श्री अनु बशर, तकनीकी अधिकारी | |
| (3) श्री आर.आर. शर्मा, तकनीकी अधिकारी | |
| (4) श्री वेद रत्न, प्रोफेसर, विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग | |
| (5) श्रीमती एस. भट्टाचार्य, रीडर, स्कूल-पूर्व एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग | |
| (6) श्री एस.एन. रे, लेक्चरर, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग | |
| (7) प्रो. एन.के. तिवारी, यांत्रिकी इंजीनियरी विभाग, भारतीय प्रयोगिकी संस्थान, नई दिल्ली-110016 | |
| (8) श्री एच.एन.पी.पोद्दार, प्रभारी वैज्ञानिक, कार्यशाला, राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला | |

9. मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण तथा आंकड़ा संसाधन विभाग (डी.एन.ई. एस.डी.पी.) के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

- | | |
|---|--------|
| (1) डा. एच.एस. श्रीवास्तव प्रोफेसर एवं अध्यक्ष | संयोजक |
| (2) डा. ए.डी. बनर्जी, रीडर | |
| (3) श्री जे.पी. अग्रवाल, रीडर | |
| (4) डा. सी.एल. कौल, लेक्चरर | |
| (5) अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी शिक्षा विभाग | |
| (6) अध्यक्ष, विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग | |

- (7) अध्यक्ष, शिक्षा मनोविज्ञान, परामर्श एवं मार्गदर्शन विभाग
(8) डा. आर.एन. मेहरोत्रा, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 36 छात्र मार्ग, दिल्ली
(9) प्रो. पी.के. राय, एच-1456, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली ।

पुस्तकालय सलाहकार समिति

- | | |
|---|---------|
| (1) डीन (शैक्षिक) | अध्यक्ष |
| (2) प्रो. (श्रीमती) रेचिन एच. मेहता अध्यक्ष, डी.ई.पी.टी. एण्ड जी. | सदस्य |
| (3) प्रो. एच.एस. श्रीवास्तव अध्यक्ष, डी.एम.ई.एस.डी.पी. | सदस्य |
| (4) प्रो. पी.एन. दुबे, अध्यक्ष, डी.पी.एस.ई.ई. | सदस्य |
| (5) प्रो. ए.के. मिश्रा, अध्यक्ष, डी.टी.ई. | सदस्य |
| (6) प्रो. बी. गांगुली, अध्यक्ष डी.ई.एस.एम. | सदस्य |
| (7) श्री जयपाल नागिया, अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग | सदस्य |
| (8) प्रो. (श्रीमती) आर्दश खन्ना, डी.टी.ई.एस.ई. एण्ड ई.एस. के अध्यक्ष का प्रतिनिधि | सदस्य |
| (9) प्रो. पी.के. भट्टाचार्य, अध्यक्ष, कार्यशाला विभाग | सदस्य |
| (10) वरिष्ठ व्यावसायिक (उप-पुस्तकालयाध्यक्ष) पुस्तकालय प्रलेखन एवं सूचना विभाग | सदस्य |
| (11) श्री एफ.सी. कटियाल, व्यावसायिक सहायक, पुस्तकालय संघ के प्रतिनिधि | सदस्य |
| (12) अध्यक्ष, पुस्तकालय प्रलेखन एवं सूचना विभाग | संयोजक |

पत्रिका सेल के लिए सलाहकार समिति/सम्पादन मंडल

- | | |
|---|---------|
| (1) डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, रा.शै.अनु.प्र.परिषद् | अध्यक्ष |
| (2) श्री वी. राघवन सलाहकार (शिक्षा), योजना आयोग, योजना भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली-110001 | सदस्य |
| (3) प्रो. सत्य भूषण, कार्यकारी निदेशक, राष्ट्रीय शिक्षा नियोजन, प्रशासन संस्थान, एन.आई.ई. प्रांगण, नई दिल्ली-110016 | सदस्य |
| (4) डा. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन, संयुक्त शिक्षा सलाहकार (संस्कृति), शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली-110001. | सदस्य |
| (5) प्रो. एम.आर. मिश्रा, पूना विश्वविद्यालय, पुणे | सदस्य |
| (6) प्रो. रशीदुद्दीन खान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय न्यू महरौली मार्ग, नई दिल्ली-110054 | सदस्य |
| (7) प्रो. एल.एस. कोठारी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007 | सदस्य |
| (8) प्रो. दुर्गानन्द सिंहा, निदेशक, ए.एन. सिन्हा समाजिक अध्ययन संस्थान, पटना-800001 | सदस्य |
| (9) प्रो. आर.एन. घोष, सी.आई.ई.एफ.एल. हैदराबाद-500007. | सदस्य |
| (10) प्रो. नामवर सिंह, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, न्यू महरौली मार्ग, नई दिल्ली | सदस्य |
| (11) डीन (शैक्षिक) | पदेन |
| (12) डीन (अनुसंधान) | सदस्य |
| (13) डीन (समन्वय) | सदस्य |

सदस्य
सदस्य
सदस्य
सदस्य
मंयोजक

प्रसारण समिति

अथवा
संस्थ
—वही
—वही
—वही
—वही
संस्थ
—वही
—वही
—वही
—वही
—वही
—वही
—वही
—वही
—वही

विद्या विस्तार एवं नमन्वय सधिरि

समस्त

—वही—
—वही—
—वही—
—वही—
सदस्य
—वही—
—वही—

कला शिक्षा समिति

अध्यक्ष
सदस्य
सदस्य
३९ सदस्य
सदस्य
सदस्य
महाराष्ट्र
सदस्य
सदस्य
सदस्य
सदस्य
सदस्य

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

1.4.1986 को, रा.शै.अनु.प्र. परिवार का संस्वीकृत स्टाफ बल

क्र.सं.	स्टाफ की शैक्सी	शैक्षिक	शैक्षिक (लिपिक वर्गसि)										कुल
			वर्ग 'ए'	वर्ग 'बी'	वर्ग 'सी'	वर्ग 'ए'	वर्ग 'बी'	वर्ग 'सी'	वर्ग 'ए'	वर्ग 'बी'	वर्ग 'सी'	वर्ग 'डी'	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	
1.	परिचय मुख्यालय	286	2	3	26	106	585	77	104	258	378	1825	
2.	डॉ.शि.म., अजमेर	66	27	46	1	6	43	4	4	40	83	320	
3.	डॉ.शि.म., कोपाल	62	25	46	1	6	43	4	5	38	82	312	
4.	डॉ.शि.म., पुणेनगर	75	29	62	1	6	40	4	4	42	90	353	
5.	डॉ.शि.म., मैसूर	85	25	49	1	6	47	4	5	39	78	339	
6.	लेव सहायकार कार्यालय	32	—	—	—	—	54	—	—	18	36	140	
	कुल योग	606	108	206	30	130	812	93	122	435	747	3289	

वर्ग बार सार	किस्मतार ह्याफ का सार	कुल योग
वर्ग 'ए'	729	
वर्ग 'बी'	360	920
वर्ग 'सी'	1453	972
वर्ग 'डी'	747	650*
	3289	747
		3289

It is in the Lessons:—
 When the palace is a wild of lust,
 And the country is a wild for hunting. . . .⁶⁰

Elsewhere, a couplet from the *Li Ki* issues a warning:

He who loves hunting and women,
 Brings his state to ruin.⁶¹

Numerous examples might be given of those who were virtuous in restraint; and of those, on the other hand, who erred by excess in hunting. T'ai K'ang (2188 B.C.) gave himself to the chase and other pleasures; and, had he not been the grandson of the great Yu, it is said, his subjects would have revolted against him. Like unto him was Hou I, who was murdered when he returned from a long hunt. Ch'ong T'ang (1766 B.C.), however, was noted for benevolence to men and animals, and was credited with the institution of good sportsmanship and proper regulations in hunting.⁶² Confucius, it is said, would not shoot a sitting bird.

Among the objects of the chase were the wild goose or duck, boar, deer, wild ox, wolf, fox, and hare. Nets, dogs, and bows and arrows were used in hunting. On the "great hunts" of the chiefs, nets were fixed to the ground by stakes, and beaters drove the animals into them. Fires, too, were sometimes set, so as to drive animals to certain spots, that they might be shot easily.⁶³ One of the odes of Ch'ing depicts the daring of Shuh at the "grand chase," and also shows something of the accouterments employed by men of importance:

Shuh has gone hunting,
 Mounted in his chariot and four.
 The reins are in his grasp like ribbons,
 While the two outside horses move [with regular steps] as dancers do.
 Shuh is at the marshy ground;—
 The fire flames out all at once,
 And with bared arms he seizes a tiger,
 And presents it before the duke.
 O Shuh, try not [such sport] again;
 Beware of getting hurt.⁶⁴

⁶⁰ *Ibid.*, III, 78 f. From *The Sacred Books of the East*, edited by F. M. Müller (The Clarendon Press).

⁶¹ *Ibid.*, xxvii, 433.

⁶² Hirth: *op. cit.*, pp. 39, 42, 47.

⁶³ Legge: *Chinese Classics*, IV, Pt. I, *Prolegomena*, 148.

⁶⁴ *Ibid.*, IV, Pt. I, 129.

Hunting, in Biot's phrase, is the "image of war" and serves, in part, as a preparation for war. It is a common Western view that the Chinese were wholly pacific. The fact is, however, that their early history was marked by many clashes between feudal princes. Whether the Chinese have greater physical vitality, or less, than other peoples,⁶⁵ may be left to others to debate; but it is certain that they have survived many disasters, wars, pestilences, and barbarous slaughters. It would be possible to compile volumes of "heroic traditions" about "excellent archers" and the barbarities of war, in which strength, skill, and savage impulse triumphed over the higher, if less frequently extolled, faculties of man. In legendary days, before Yao and Shun, training for hunting and war, which alternately claimed their attention, began at an early age: "From early childhood they were taught to ride on sheep, to draw the bow and shoot birds and rats; when half grown they would shoot foxes and hares as game for food. Having grown to become soldiers, they would thus become excellent archers, when they were all supplied with armors on horseback. In easy times they would follow their cattle and live on the chase, but in times of trouble every man was trained to fight in battle and ready to make raids on other lands. This was their natural disposition. For distant fight their weapon was the bow and arrow; for close fight they used swords and small spears."⁶⁶ Ho, the father of Confucius, we are told, was "a soldier of great prowess and daring bravery," a veritable Samson, famed for having caught and held a falling portcullis while his companions were making their escape. More awe-inspiring to his enemies, perhaps, was Hsi Wang, credited at one time with the destruction of 30,000 literati and 600,000 other inhabitants of a city; and on another occasion, with the slaughter of 400,000 women who belonged to his army camp. Douglas reminds us that the Oriental delights in round numbers. It is a common human trait. Hence appropriate allowance may be made for exaggeration in respect to Hsi Wang's exploits.⁶⁷

Passing from the days of primitive legends, when "every man was trained to fight" in the field, systematic preparation for war developed. The Pi Yung, an institution credited by some to the Chou dynasty, was, according to certain authorities, "merely a field of military exercise"—the Campus Martius of China.⁶⁸ Military examinations and degrees were established by decree in 702 A.D. Those who passed were classified as Ming Ching and Chin Shih. In the eleventh century, a military school was founded and staffed with instructors. Kao Tsung, in the next century, established competitive examinations in arch-

⁶⁵ Smith: *Chinese Characteristics*, pp. 144 ff.

⁶⁶ Hirth: *op. cit.*, p. 168.

⁶⁷ *Ibid.*, p. 229; Douglas: *op. cit.*, pp. 102 f.

⁶⁸ Biot: *op. cit.*, pp. 37 ff.; Shryock: *op. cit.*, p. 67; Kuo: *op. cit.*, p. 16.

ery, and "sanctioned" a military school in the capital. A little later military degrees were instituted in the army on the frontiers. Under the Ming dynasty, the military examinations, which had been "regarded as useless" by the Mongols, were re-established; they were conducted under "the high deputies of the ministry of war," but were not held "with much regularity" until 1506.⁶⁹

So important in early feudal society was the business of war and ability to use its instruments, that the bow and arrow were regarded as symbols of power. A gift of these weapons to a prince by his sovereign "invested him with the power of punishing throughout the states within his jurisdiction all who were disobedient to the royal commands. . . ." Such a present was considered "a tribute to the merit of the receiver."⁷⁰ *Shu King*, one of the most ancient Chinese books, makes clear that military punishment of a feudal lord by the sovereign is simply the execution of "the punishment appointed by Heaven." The preparation for the battle, the advice, encouragement, and threats of the king to his followers, are described in a supposedly contemporary record. From it one may infer the types of training which were necessary for the army about the time of K'hi, the son of Yu (2197-2189 B.C.): "If you, the archers on the left, do not do your work on the left, it will be a disregard of my orders. If you, the spearmen on the right, do not do your work on the right, it will be a disregard of my orders. If you, charioteers, do not observe the rules for the management of your horses, it will be a disregard of my orders. You who obey my orders, shall be rewarded before . . . my ancestors, and you who disobey my orders, shall be put to death before the altar of the spirits of the land, and I will also put to death your children."⁷¹

In *The Book of Poetry*, which contains contributions from 1766 B.C. to 586 B.C., one finds a laudatory description of the equipment of the prince of Lu, "unwaning, unfallen, unshaken, undisturbed," who will extend "the limits of the east, even the states along the sea." To him the tribes of Hwai will offer alliance, and all will offer allegiance: "Our prince's chariots are a thousand, and in each are the two spears with their vermilion tassels, and the two bows with their green bands. His footmen are thirty thousand, with shells on vermilion strings adorning their helmets. So numerous are his ardent followers, to deal with the tribes of the west and north, and to punish those of King and Shu . . . that none of them will dare to withstand us."⁷²

The Royal Regulations, compiled about 179-157 B.C., give a glimpse of the

⁶⁹ Kuo: *op. cit.*, pp. 44 f., 51, 56.

⁷⁰ Müller: *op. cit.*, III, 267. From *The Sacred Books of the East*, edited by F. M. Müller (The Clarendon Press).

⁷¹ *Ibid.*, III, 76 f. From *The Sacred Books of the East*, edited by F. M. Müller (The Clarendon Press).

⁷² *Ibid.*, III, 344 f. From *The Sacred Books of the East*, edited by F. M. Müller (The Clarendon Press).

preparation of the scholar-soldier for service in war. "If any expedition of war were contemplated, orders were given to the Grand Minister of Instruction to teach the scholars the management of the chariot and the wearing of the coat of mail.

"In the case of all who professed any particular art, respect was had to their strength. If they were to go to a distant quarter, they had to display their arms and legs, and their skill in archery and charioteering was tested. All who professed particular arts for the service of their superiors, such as prayer-makers, writers, archers, carriage-drivers, doctors, diviners, and artisans . . . were not allowed to practise any other thing, or to change their offices. . . ." ⁷³

Biot's paper (1843) on the "Manners of the Ancient Chinese according to the She King," describes the make-up and conduct of a Chinese military force under the Chou dynasty:

"The principal element of a Chinese army was the chariot drawn by two or by four horses. It carried 3 mailed warriors, the officer to whom it belonged being in the middle. He had on his right his esquire, who passed to him his arms; and on his left the charioteer. A troop of soldiers followed the chariot to protect it. The term chariot was then a collective name like lance in our middle ages. The Li Ki reckons for every chariot 3 mailed warriors, 25 footmen in front and at the sides to guide the horses and the chariot, and 72 light-armed foot-soldiers following. . . . The number in the official list was never complete.

"The sovereign never marches without a guard of 2,500 men, called *sze*. Every dignitary or great officer had an escort of 500 men called *leu*. To employ our military terms, *sze* was a regiment and *leu* a battalion. Six *sze*, or 15,000 men, formed an ordinary army. They distinguished the soldiers on the left wing and the right, according to the division long used in the marching and encampments of the Tartar hordes. An army was divided into three troops. . . . The chief of each corps had his place in the middle of it.

"The chariot of the sovereign, or of the commander-in-chief, had four or six horses, yoked abreast. When there were four horses, which was the ordinary number, two of them were yoked to the pole, and two to the transverse bar of the chariot. The horses were covered with mail, or protected at the sides by bucklers. Those of the commanders had golden bits, with a small bell at each side of the bit. The reins were richly adorned and led through rings of leather on the backs of the horses. The sides of the chariots were covered with boards as a defense against the arrows of the enemy. They were adorned in the inside with mats of bamboo, or embroidered carpets. The axle-trees of the chariots of the chiefs were wrapped round with green silk, or with leather, probably to

⁷³ *Ibid.*, xxvii, 18, 235. From *The Sacred Books of the East*, edited by F. M. Müller (The Clarendon Press).

strengthen them. The pole was also covered with leather, painted in 5 colors.

"The princes and regular warriors wore helmets. Those of the princes of the blood were adorned with a plume of red silk. The regular warriors had a sword, two lances (or spears) and two bows. The scabbards of the chiefs' swords were adorned with precious stones, or with other ornaments. The spears were of three kinds: *maou*, which was 4 meters long . . . and the *kih*, 16 cubits. These were set up in the war chariots. The javelin was 6 cubits 6 in. long, and was used by the foot-soldiers. All the lances had red pendants or streamers.

"Like the hunting bows, those used in war were of wood adorned with green silk. The bows of the chiefs had ornaments of ivory. There were also bows of horn, or strong as horn, which discharged several arrows at once. To preserve the bows, they were kept in cases of tiger skin, or of ordinary leather. Every case contained two bows, and they were closely fitted to bamboos, to hinder them from being warped by the damp. The bow-cases and the quivers were made of the skin of some marine animal called *yu*, which may have been a seal.

"The mailed warriors had bucklers, and battle-axes with handles of wood. The foot-soldiers were usually armed only with javelins and spears. . . . Besides the war-chariots, there followed the army carriages laden with sacks of baggage, and drawn by oxen. These sacks had one or two openings, and contained provisions. The chariots were unloaded, and arranged around the place of encampment. Then the feeble watched the baggage, while the strong advanced against the enemy.

"The expeditions against the indigenous tribes of the center, the west, and the north, were made in the 6th moon, the time of the year corresponding to the end of May and the beginning of June. They marched 30 *le* per day, about 11 kilometres, if we value the *le* at 1,800 cubits of 10 centimetres each. For a grand army of 300 chariots, 10 chariots formed the advanced guard.

"On the banners were figures of birds and of serpents. There were attached to them little bells and ribbons. On the royal standard there was the image of the sacred dragon. The princes of the blood, and secondary chiefs or viceroys had broad pennons or flags. One pennon, formed of an ox-tail upon a pole, was placed behind in the chariot of the chief of a squadron.

"The warriors wore colored cuisses, and buskins on their legs. . . . The commandant of a *corps d'armée* had the title *K'ee Foo* or of *Shang Foo*. Several odes designate the general by the name of 'the illustrious man'—meaning the Prince, the Dignitary.

"The drum gave the signal for departure, for attack, and for retreat. Large drums were covered with the skin of a fish called *t'ou*. . . . Before the battle, the warriors excited one another by mock combats. They leaped, ran, and threatened one another with their weapons. . . ."

According to an ode, "King Wan causes the assault of a fortified city, and his soldiers ascend the wall by means of hooked ladders. He takes some prisoners and punishes them as rebels, proportioning their chastisement to the gravity of their offense. He causes one ear of his captives to be cut off, and in contenting himself with this punishment he passes for a just and humane man. In the State of Loo . . . the army, returned from an expedition, is assembled in the parade-ground. . . . They present to the prince the ears that have been cut off; they bring the captive chiefs in chains before the judge, by whom they are condemned by regular sentence. Like the tribes of America, the Chinese . . . made very few prisoners; they put the vanquished chiefs to death, and released the common soldiers after cutting off one of their ears, as a mark of dishonour, or that they might recognize them if they met with them again." ⁷⁴

It is a far cry from these harsh practices of warfare to the ideal principles of the *Doctrine of the Mean* and the pacifism of Taoism and Buddhism. "A state," says the Tao Teh King, "may be ruled by measures of correction; weapons of war may be used with crafty dexterity; but the kingdom is made one's own only by freedom from action and purpose. . . . I have three precious things which I prize and hold fast. The first is gentleness. . . . Gentleness is sure to be victorious even in battle, and firmly to maintain its ground. Heaven will save its possessor, by his very gentleness protecting him. . . . A master of the art of war has said, 'I do not dare to be the host to commence the war; I prefer to be the guest [i.e.] to act on the defensive. . . .' There is no calamity greater than lightly engaging in war. To do that is near losing the gentleness which is so precious. . . ."

He who in Tao's wars has skill
Assumes no martial port;
He who fights with most good will
To rage makes no resort.
He who vanquishes yet still
Keeps from his foes apart. . . .⁷⁵

Some rulers professed Taoism, and most of them, after the Christian era, were followers of Confucius. It seems, however, in the light of history, that the doctrines did not go further in reducing war than did Christian doctrine in Christian states.

The feudal aristocracy of China patronized sports. As in ancient Rome and in western Europe during the Middle Ages, contests in swordsmanship were practiced. Even in the days of Huang Ti such combats are said to have been

⁷⁴ Legge: *op. cit.*, IV, Pt. 1, *Prolegomena*, 154 ff.

⁷⁵ Müller: *op. cit.*, XXXIX, 100 f., 110 ff. From *The Sacred Books of the East*, edited by F. M. Müller (The Clarendon Press).

known, but authentic details are lacking. Yueh Kien, or "Delight in the Sword-Fight," tells us that King Wan of Kao delighted in a gladiatorial fight, staged for his benefit, in which "more than three thousand men, masters of the weapon, appeared as his guests . . . fighting together before him day and night." Of this he was never weary, and it continued for three years. His kingdom began to decay from neglect; other states had designs upon it; but still he did not improve his ways, until instructed by Kwang Zze that such behavior was unworthy of the son of Heaven.⁷⁰ Swordsmanship reached a high point between 618 and 1127 A.D., and many styles were developed. Thereafter it fell into gradual decay.

Wrestling is commonly ascribed by the Chinese to the earliest period of their athletic development—indeed to the days of Huang Ti. Under the Ch'in and the Han dynasties (255 B.C.–265 A.D.) wrestling was commonly employed in the army and became a popular exercise as well. This popularity increased from 265 to 618, and exhibition matches were arranged twice a year. As its rôle as entertainment grew, wrestling declined in importance, however, and became almost "unknown," till it was revived somewhat by Mongolian and Tibetan influence in North China.⁷¹

The gentle art of jiu-jitsu, made popular by the Japanese, seems to have had an earlier counterpart in China, from which the modern science may have developed.⁷² Boxing, or "fisting and gripping," was practiced in China, and was "once a part of military training." Believed to have developed out of wrestling, the earliest "reliable" references to boxing run back to the seventh century B.C., when it was reputedly stressed by Kuan Chung, a minister of Duke Huan (685–645 B.C.). Only after 527 A.D., however, when Buddhidharma came to China, and used it as a daily exercise, was boxing extensively developed. In the tenth century, the manly art entered upon a golden age, and was made still more intricate by the expansion of Buddhidharma's "Eighteen Arahats" to 72, and then over 170, movements. Ten rules for training stressed systematic habits, self-discipline, vegetable diet, sexual restraint, and prohibition of stimulants. Under Mongol rule (1280–1368) boxing was extensively developed by monks rather than by townsmen. The Ming dynasty (1368–1644) saw the development of the "internal" system by Chang San Fung, which emphasized defensive and endurance tactics, in contrast to Buddhidharma's "external" system which had stressed the offensive. A noteworthy exception in the history of Chinese boxing is found in the fact that by the seventeenth century there were boxers even among the ablest literary scholars. Both internal and external

⁷⁰ *Ibid.*, XI, 186–91.

⁷¹ Hoh: *op. cit.*, pp. 3, 12 f., 17, 30.

⁷² Giles, H. A.: *op. cit.*, pp. 137 f.

systems are used to-day, and boxing is said to have been accepted as a good thing by all classes of people.⁷⁹

The boxing of Buddhist monks of the Shao Lin monastery, developed, it is said, as a means of defense, seems to have had something in common with jiu-jitsu. Giles translates the term "boxing" "for convenience sake," but explains that it included "la savate, wrestling, quarterstaff, and even spear-play." As in boxing in Siam to-day, all strokes, grips, kicks, and punches were allowed! The *Topography of Ningpo* describes "the art of self-defence," which is twofold, as "exoteric and esoteric." "The exoteric style was that which was so greatly in vogue at Shao Lin, and consists chiefly in striking the adversary, and then by an acrobatic bound placing oneself out of reach. This style, however, often lays the striker open to serious risks. The esoteric style was that handed down by . . . Chang Sung Ch'i, and consists in opposing the adversary, but not letting fly unless actually compelled by stress of circumstances, and without giving any loophole of attack. This is the better style of the two."⁸⁰

The skill of several "boxers" was widely heralded. Tales were told of the modest, unassuming Chang who, in the twelfth century, when the fame of monkish boxers had spread throughout the realm, was drawn into a bout with priests in a wine shop. Before agreeing to a contest, he made them certify that he would not be held responsible if any were killed. "This being settled, Chang folded his arms, and sat down on the ground. A priest then . . . came skipping around him, with a view to getting in a kick; Chang however slightly inclined his body and . . . let fly. The priest shot through the window like a ball, and fell so heavily outside that he was nearly killed."⁸¹

Similar to Chang, perhaps greater, was Pien Ch'eng, if the tale of his prowess may be trusted. That it was customary to embellish the feats of skill, as the chroniclers did those of kings and favorites, may be assumed. The following description conveys some idea of how "boxing" was regarded and how it was practiced in the sixteenth century. "Boxing seems to be an accomplishment of no real value in serious warfare. At the same time, inasmuch as a study of this art in its elementary stages involves flexibility of the arms and legs, together with activity of the body, I have included it for the sake of completeness. In boxing, the body must be quick to move, the hands quick to take advantage, and the legs lightly planted but firm, so as to advance or retire with effect. In the . . . flying leap of the leg lies the skill of the art; in turning the adversary upside down lies its ferocity; in planting a straight blow with the fist lies its

⁷⁹ Hoh: *op. cit.*, pp. 8, 13 f., 18 f., 30 f.; Liu: "Physical Education Movement in China," *Jour. Health and Phys. Educ.*, III, 62.

⁸⁰ Giles, H. A.: *op. cit.*, p. 135.

⁸¹ *Ibid.*, p. 136.

rapidity; and in . . . deftly holding the adversary face upwards lies its gentleness." ⁸²

Giles refers to an early pastime known as "butting," said to have been practiced two or three centuries before Christ. Some credit its introduction to 221 B.C. About 108 B.C., "a grand display of butting was organised under Imperial patronage." This sport, in which the participants covered their heads with ox heads and butted their antagonists like bulls, provided plenty of "smashed heads, broken arms" and "blood running in the palace yard." Nevertheless, emperors themselves sometimes participated in it, as did Chuang Tsung.⁸³

Football (*ts'u chu*), a kicking game played "with a round ball in a square field," was among the early sports of the Chinese, being attributed by some, like everything good, to the Yellow Emperor, Huang Ti, who used it to cultivate alertness on the part of soldiers. Though such an early ascription may be open to doubt, football, it seems, had become a part of military preparation, or at any rate a sport of military men, in the third and fourth centuries B.C. A book on it is said to have existed at the time of the Han dynasty (206 B.C.-221 A.D.). An early historian declared that, in the third century B.C., Lin Tzu was a rich and powerful city, and that "there were none among its inhabitants who did not perform on the pipes, . . . fight cocks, race dogs, dice, or play football." *Ts'u chu* continued in popularity till the end of the Ming dynasty, but disappeared under the Manchus.

Numerous referenees to football are to be found. The ball was of leather and at first was stuffed, but later it was inflated so as to carry well when kicked. There were two or three types of play. In one game the ball was kicked over a net stretched between two poles, "several tens of feet in height"; in another, the object was to kick the ball through a hole, more than "a foot in diameter," in skins or cloth stretched between poles—something like football in Siam today, in which the ball is kicked through circular wreaths of flowers. A third game, which is somewhat obscure, seems more like the clever play of a juggler. In it the player performed remarkable feats with the ball, using "shoulders, back, breast, and belly, to take the place of his feet" and "making the ball run around his body without dropping." The score was counted by major and minor points, gained in various ways. An elaborate terminology, such as "ace," "deuce," and "tray," was used by the players. Seventy types of kicking were recognized; eleven conditions were indicated under which kicking was not permitted; and all play was forbidden in ten specified cases, for example, on windy days, after wine, and when the ground was wet.

Emperors and other famous personages played football. The sport seems to have been staged frequently for the amusement of monarchs, even when they

⁸² *Ibid.*, p. 137.

⁸³ *Ibid.*, pp. 132 f.; Gardiner: *Athletics of the Ancient World*, p. 15.



OTBALL IN CHINA

(A. Giles, *Adversaria Sinica*, 1, 92)

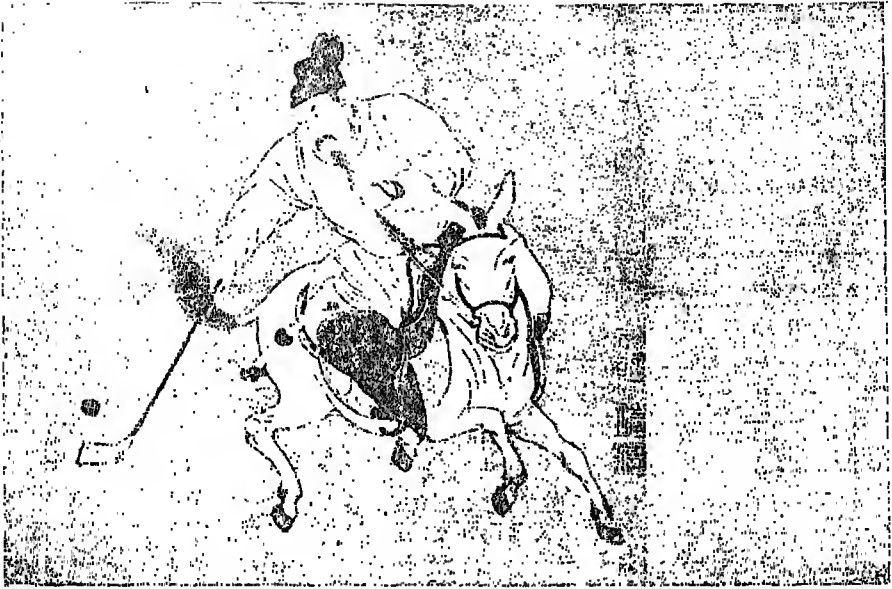
did not participate. Near the end of the Eastern Han dynasty, the emperor gave himself up to archery, riding, and football to such an extent that literary studies were not attended to as before. Hsi Tsung, the *Mirror of History* says, was infamous for his constant devotion to football, cockfighting, and polo, and was not to be restrained. One of his ministers who reproved him for his pursuits, which savored so little of due propriety, was put to death. Wang Ch'i Sou, "a man of great talent," was skilled in the "nine branches of learning," and had a reputation in football that spread throughout the realm. "K'ung Kuei, a descendant of Confucius," is also credited with great skill in the game. Emperor Ch'eng Ti (32-6 B.C.) was fond of football and played it himself; when some of his officers suggested that it was "physically exhausting and also unsuitable to the Imperial dignity," he replied, "We like playing; and what one chooses to do is not exhausting." A philosophy of the value of football, and a parallel between playing the game and life, are found in the poetry of Li Yu, who lived about 50-130 A.D.:

But there must be determination and coolness,
Without the slightest irritation at failure . . .
And if all this is necessary for football,
How much more so for the business of life! ⁸⁴

Polo, a game developed, according to an eminent authority, "by Iranian tribes of Central Asia" near the beginning of the Christian era, is believed to have been introduced into China early in the seventh century. It is referred to definitely in 709 or 710 A.D., and was probably learned from the vanquished Tartars. Polo ponies were brought in from Khotan in 717.⁸⁵ The game was soon played by emperors, though the practice was disquieting to staid ministers. One of them gave his emperor three good reasons why he should not play, one being that it "is destructive of all ceremony between sovereign and subject." The emperor, it is said, sighed over the excellent memorial a long time. Again, a certain official was threatened with flogging if he did not cease teaching the emperor to play polo. Still they played. Everybody of importance, it is said, learned polo. In 1163, the emperor was so fond of the game that he ordered the grounds to be covered with "oiled cloth well sprinkled with sand" in case of rain. Under the T'ang dynasty, ladies learned to play polo on donkeys. A mortuary image of a mounted woman polo player, recovered from a Chinese grave, is in the Field Museum. In 881, the emperor compelled four candidates for official positions to play at polo, and gave the best post to the victor. The Kitan Tartars are said to have been the greatest polo players, but

⁸⁴ Giles, H. A.: *op. cit.*, pp. 93 f.; Hoh: *op. cit.*, pp. 4, 21, 30.

⁸⁵ Giles, H. A.: *op. cit.*, p. 94; Laufer: "The Early History of Polo," *Polo*, VII, 13 f.; Chait: "Relics of a Royal Sport in China," *Internat. Studio* (Nov., 1928), xci, 33 ff.



POLO IN CHINA attributed to Ch'in Ying
(Courtesy, *Asia*, June, 1923, xxiii, 431)

the Nu Chen Tartars upheld the custom that had been established. The following description gives some idea of the manner of play and the equipment:

"The players mounted . . . well-trained ponies, and each one was provided with a . . . club, of a good many feet in length, and shaped at one end like the crescent moon. They were then divided into two teams, the object of contention to both sides being a ball. Previously, at the south end of the ground, two poles had been set up, with boarding in between, in which a hole had been cut, having a net attached to it in the form of a bag. That side which could strike the ball into the bag, were the winners. Some say that the two teams were ranged on opposite sides of the ground, each with its own goal, and that victory was gained by driving the ball through the enemy's goal. The ball itself was as small as a man's fist, made of a light but hard wood, and painted red."⁸⁶

Other active sports were popular in ancient China, at least at periods when military arts were of some importance. Tug-of-war exhibitions had considerable vogue under the Tang dynasty. Swinging was popular among ladies of the court. A variant form, "water swinging," in vogue in the Sung period, sometimes involved somersault dives from a boat. Other water sports are believed to be of early origin, because of necessity in naval warfare, but their early history is admittedly obscure. An author of the eleventh century says that boys

⁸⁶ Giles, H. A.: *op. cit.*, pp. 97 f.; Hoh: *op. cit.*, pp. 22 f.

of South China learned to tread water at seven, float at ten, and dive at fifteen years of age. Boating is traced back to the "Age of the Seven States," 481-221 B.C.⁸⁷

A Chinese game, *ch'ui wan*, in some respects similar to golf, was played by soldiers under the Sung dynasty. Hui Tsung (1101-1126) is credited with being an enthusiast. Tees, holes marked by flags, balls of hardwood, and a club with bamboo shaft and a hardwood head, were necessary for playing. Any number might play. The rules covered such matters as choosing the order of hitting, positions and types of hitting, scoring, and the twenty-one penalties.⁸⁸

The hilarious, manly sports of polo, football, and boxing, though indulged in by some emperors and others of the nobility in spite of official reproof and secret disapproval on the part of those who held to a staid tradition, are scarcely to be considered representative of Chinese physical culture. Nearer to its norm were the contests in archery, their best-loved achievement, in which shooting was joined with music, signifying the union of body and mind in perfect accomplishment. Archery, of course, was an approved part of military preparation. In the reign of T'ai Tsung (627-650) shooting from horseback was a regular part of a soldier's training, replacing the "archery ceremony" of the Chou period. Extraordinary skill was sought; shooting at a willow leaf became a popular test.⁸⁹

For polite entertainment of one's guests the game of *T'ou Hu*, "pitch-pot," was highly esteemed. Rules of propriety were nicely prescribed for it, and the arrows were pitched while music played. From the description following, it is evident that behavior at the game was more important than winning:

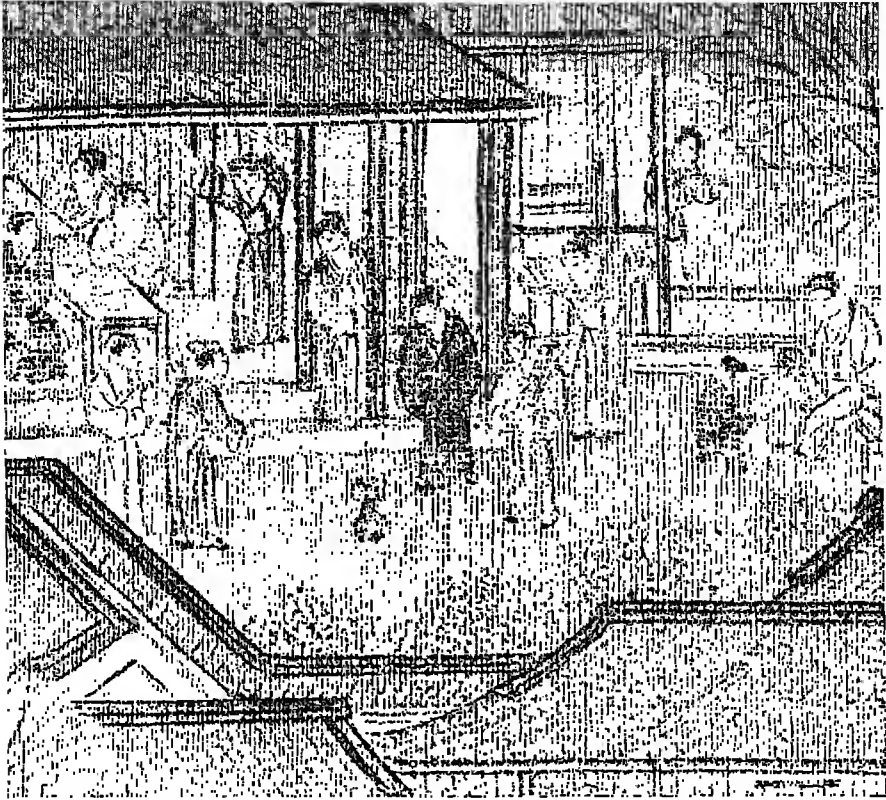
"The host having bowed, and received the arrows for himself, advances to the space between the two pillars. He then retires, and returns to his station, motioning also to the guest to go to his mat for pitching. . . .

"The superintendent of the archery comes forward, and measures the distance of the pot from the mats, which should be a space of the length of two and a half arrows. He then returns to his station, sets forth the stand for the tallies, and with his face to the east, takes eight counters and stands up. He asks the guest to pitch, saying, 'When the arrow goes straight in, it is reckoned an entry. If you throw a second without waiting for your opponent to pitch, it is not reckoned.' The victor gives the vanquished a cup to drink; and when the cups of decision have been dispatched, the superintendent begs to set up what he calls 'a horse' for the victor. If he sets up one horse, then a second, and finally a third, he begs to congratulate the thrower on the number of his horses. He asks the host to pitch in the same way, and with the same words.

⁸⁷ Hoh: *op. cit.*, pp. 24 ff.

⁸⁸ *Ibid.*, pp. 27 f.

⁸⁹ *Ibid.*, pp. 19 f.



PLAYING PITCH-POT a detail from Ch'ing Ming, *Spring Festival on the Yellow River*

(Courtesy, The Metropolitan Museum of Art, New York)

"He orders the cithern-players to strike up 'The Fox's Head,' with the same interval between each repetition of the tune. . . .

"When the superintendent announces to them on the left and right that the arrows are all used up, he requests them to pitch again. When an arrow enters, he kneels, and puts down a counter. The partners of the guest are on the right, and those of the host on the left.

"When they have done pitching, he takes up the counters, and says, 'They have done pitching, both on the left and right; allow me to take the numbers.' He then takes the numbers two by two, and leaves the single counters. After this he takes the single counters, and gives the announcement, saying, 'Such and such a side has the better by so many doubles, or naming the number of the singles.' If they are equal, he says, 'Left and right are equal.'

"He then orders the cups to be filled, saying, 'Let the cup go round,' and the cup-bearer of the successful side replies, 'Yes.' Those who have to drink all

kneel, and raising their cups with both hands, say, 'We receive what you give us to drink.' The victors also kneel and say, 'We beg respectfully to refresh you.'

"When this cup has gone round, according to rule, the superintendent asks leave to exhibit the 'horses' of the victorious side. Each 'horse' stands for so many counters. He who has only one 'horse' gives it to him who has two, to congratulate him on his superiority. . . .

"The number of the counters varies according to the place in which they kneel when playing the game. Each round is with 4 arrows. If the game be in the chamber, there are 5 sets of these; if in the hall, 7; if in the courtyard, 9. The counters are 1 cubit 2 inches long. The neck of the pot is 7 inches long; its belly, 5; and its mouth is $2\frac{1}{2}$ inches in diameter. It contains a peck and 5 pints. It is filled with small beans, to prevent the arrows from leaping out. It is distant from the mats of the players, the length of $2\frac{1}{2}$ arrows. The arrows are made of mulberry wood, or from the zizyphus, without the bark being removed.

"In Lu, the young people taking part in the game were admonished in these words, 'Do not be rude; do not be haughty; do not stand awry; do not talk about irrelevant matters; for those who stand awry, or speak about irrelevant matters, there is the regular penal cap.'"⁹⁰

The ancient Chinese gave much attention to the subject of health, and the bearing of cleanliness and exercise upon it. To what extent this concern influenced practice is unknown; but among scholars and the devout, admonition to moderation in all things did not fall on deaf ears. In Zu Hsing, *The Conduct of the Scholar*, it is stated that the scholar "keeps his person free from stain, and continually bathes and refreshes his virtue."⁹¹ An officer, serving the son of Heaven, "washed his hands five times a day" and combed his hair with a comb of wood or ivory; after bathing, he stepped from the tub onto a straw mat, washed his feet with hot water, and dried himself, using two towels.⁹²

Health gymnastics were developed at an early date in China. The system of exercises termed *Kong Fu*, practiced about 500 A.D. by Buddhist monks and taught to others as a means to physical and spiritual health, was attributed by Tamo, its expositor, to the Yellow Emperor, Huang Ti, 2698 B.C. According to this doctrine, illnesses are due to internal stoppages and to the cessation of function of organs, which if taken in time, can be rectified by certain free exercises—sitting, kneeling, bending, lying, standing—all combined with proper prescribed respiratory training. Five types of breathing were associated with the

⁹⁰ Müller: *op. cit.*, xxviii, 397 ff. From *The Sacred Books of the East*, edited by F. M. Müller (The Clarendon Press). G. Montell gives many details in an article, "T'ou Hu—The Ancient Chinese Pitch-pot Game," *Ethnos* (1940), v, 70-83.

⁹¹ Müller: *op. cit.*, xxviii, 407.

⁹² *Ibid.*, xxviii, 5.

various forms of exercise in different positions. The similarity between Kong Fu, which is still followed by some in China, and the Swedish system is obvious. The assertion, however, that Ling borrowed his ideas from Kong Fu, through a French translation by Amiot, has been proved by Mehl-Wien to be unfounded.⁹³

Since fish was an important article of food, fishing was a necessary form of labor. For many, it was also, doubtless, a source of recreation and enjoyment. Chinese literature abounds in references to fishing in many forms. Though fishing probably went back to earliest Chinese history, the first specific note of it is credited to 1122 B.C. The spear, hook, dredge, trap, line, rod, nets of many kinds, and boats were employed, and cormorants were trained to catch fish. Nets made of fine bamboo rods were seemingly in commonest use, but such wholesalc methods were disapproved by some. Confucius is said to have fished with a line, but not with nets.⁹⁴ Chinese men of letters, at times, would stir the heart of Izaak Walton. One of the odes of Wei would lure him to the Ho:

The waters of the Ho, wide and deep,
Flow northwards in majestic course.
The nets are dropt into them with a plashing sound,
Among shoals of sturgeon, large and small. . . .⁹⁵

As to hunting, it must be reckoned primarily a noble sport, though common folk must have hunted small birds and animals for food. A domestic ode portrays the wife seeking to rouse her drowsy husband to go afowling:

Get up, husband, here's the day.
.
Shake off slumber, and prepare
Ducks and geese to shoot and snare.
All your darts and line may kill
I will dress for you with skill.⁹⁶

There appears to have been no systematic concern for the play and physical improvement of the masses of China. For them the exercise of labor left little leisure for recreation. Even in the late nineteenth century, it seemed to a Western observer that the children of the lower classes had relatively few games. The emphasis on propriety of behavior and a long-standing tradition of bookish education probably had much to do with restricting play activities.⁹⁷ Never-

⁹³ Bogeng: *Geschichte des Sports*, I, 119 ff.

⁹⁴ Legge: *op. cit.*, IV, Pt. I, *Prolegomena*, 148 f.; Radcliffe: *Fishing from the Earliest Times*, pp. 449 ff.

⁹⁵ Legge: *op. cit.*, IV, Pt. I, 96 f.

⁹⁶ Laurie: *Historical Survey of Pre-Christian Education*, p. 155.

⁹⁷ Smith: *Village Life in China*, pp. 243 ff.; Carus: *Chinese Life and Customs*, pp. 64 ff.

theless, in light of the recognized universal tendency to play, it is an error to generalize broadly on observations relative to the paucity of games in some localities. Hoh's listing shows that there were many common games.⁹⁸ Shuttlecock, the national game, was of great antiquity. The bird was usually struck with the sole of the shoe, but might be played with the hand under certain circumstances: Flying kites, which were made to represent animals, birds, insects, men, serpents, ships, flower baskets, and the like, was a popular diversion, indulged in by young and old. Fighting kites (whose strings were supplied with bits of glass, so that one competitor might cut the string of another) and musical kites (equipped with metallic strings, so as to make music like an aeolian harp) were interesting variations, which show great ingenuity in development of the sport. A game of uncertain origin, similar to Western handball, except that "dribbling" the ball any number of times was permitted before striking it against the wall, was also played by Chinese children. The "eight graceful exercises," originated by Yo Fei (1102-1141) are also said to have been in use by many classes in China.⁹⁹

A word may be added concerning the physical education of girls. In some families of the better sort girls were occasionally educated, but their training was pre-eminently that of propriety and literary and social graces rather than of the body. The slim, willow waist and the tiny foot, much admired, were scarcely compatible with vigorous physical life. Of all the manifold reasons that have been suggested for foot-binding, Giles held that the real one was sensual—to make the thighs large.¹⁰⁰ Whatever may have been the original source of a custom going back to the tenth century and probably long before that, it is evident that in certain respects women were weakened and made useless, except for ornamental and domestic purposes. So, at least, many Chinese came to think. A woman noted for ability in football; court ladies who played polo; and others who enjoyed the pleasures of swinging—these scarcely represent the general pattern of physical sports for women in old China. Indeed, it seems that apart from such exceptional cases, the physical exercise of girls came chiefly through dancing, which was, with music, a part of a polite education of accomplishments. Since the middle of the nineteenth century a new life of Chinese women has been coming into being; in the twentieth it has achieved a marked degree of maturity. In 1906, a revolutionary appeal in Hunan declared against the practice which compelled "200 million" women to be maimed, simply to be "nice" in appearance. The vigor of sentiment and the practical arguments of revolutionaries clash harshly, naturally, with the views of a feudal society in which women were highly regarded for decorative

⁹⁸ *Op. cit.*, chap. 3.

⁹⁹ Liu: *op. cit.*, loc. cit., III, 17 ff.

¹⁰⁰ Giles, H. A.: *op. cit.*, pp. 280 ff.

value. The "wasp-waisted," "pale-cheeked" woman is no longer admired. She has given way to the athletic type, better fitted to endure the storm and stress of China's new age.¹⁰¹

¹⁰¹ Liu: *op. cit.*, *loc. cit.*, III, 19 ff.

IN THE INDUS VALLEY

EARLY INDUS CIVILIZATION

Since 1922 a highly developed pre-Aryan civilization has been discovered, which compares favorably with that of the Nile and Mesopotamia. Mohenjo-Daro, on the Indus River, and Harappa, some four hundred miles distant, represent a culture, believed to have been general throughout the Sind and the Punjab; it may have extended into the valleys of the Jumna and the Ganges. These cities, which flourished five thousand years ago, appear to have had some intercourse with those in Mesopotamia.¹

As in Egypt, Mesopotamia, and China, the ancient civilization of northern India was conditioned by the Indus River, which created a fertile valley conducive to the development of agriculture, and provided a ready means of transport. The river was at once a source of benefits and a menace to the city. Houses were built on firm foundations and terraces, which from time to time were raised to keep pace with the rising level of the plain, resulting from annual inundations. After an existence estimated at five hundred years, Mohenjo-Daro was abandoned, probably because of floods or the shifting of the river's bed—though other factors, pestilence and war, may have occasioned decline and removal.²

Whether the creators of Mohenjo-Daro were indigenous folk or came from elsewhere, is in doubt. That they were Vedic-Aryans has been suggested; that they may have derived from a common stock with Sumerians and proto-Elamites is another theory. Neither view is supported by anthropological or other evidence, says Marshall. Since few skeletal remains have been discovered, and these may have been slaves or prisoners, the answer to the question must wait upon further discoveries.³

¹ Marshall: *Mohenjo-Daro and the Indus Civilization*, I, 91 ff., 102 ff.

² *Ibid.*, I, 1, 6 f., 103; Mackay, E.: *The Indus Civilization*, pp. 15 f.; Mackay, D.: "Mohenjo-Daro and the Ancient Civilization of the Indus Valley," *Ann. Rep. Smithsonian Institution*, 1932, Pt. 1, 434 f.

³ Marshall: *op. cit.*, I, 42, 107; Mackay, E.: *op. cit.*, pp. 11 f.; Mackay, D.: *op. cit.*, *loc. cit.*, pp. 436 f.

Though its authors are obscure, the culture of the Indus Valley proclaims its advancement in numerous ways. Mohenjo-Daro, which covered almost a square mile, implies a country able to produce food on a large scale, and also with adequately developed transport. Specimens of wheat and barley were found at Mohenjo-Daro. These, with melons, dates, pork, mutton, beef, poultry, turtles, tortoises, fresh and dried fish and shellfish, made up the diet, supplemented by milk—and perhaps also by many vegetables and fruits. Wild animals—such as the mongoose, shrew, black rat, several kinds of deer, Indian bison, rhinoceros, tiger, bear, monkey, and hare—were known, and some of them were used for food. Domesticated animals included the dog, sheep, zebu, buffalo, camel, and elephant—possibly also the pig and horse.⁴

The Indus civilization was marked by an extensive scene of industry. Cotton was used for clothing; spinning was practiced, apparently both in rich and poor families. As to the use of wool, there is some difference of opinion. Such metals as tin, lead, copper, bronze, silver, and gold were in use. Copper and bronze had largely superseded stone for various weapons, tools, and certain household utensils. Most household vessels, however, were of earthenware, made upon the wheel. Among the common domestic articles were spindle whorls, molds, dippers, ladles, flesh rubbers, needles, bodkins, leather-cutters, combs, razors, awls, knives, spoons, reamers, saws, adzes, axes, chisels, sickles, drinking cups, and dishes of many kinds. An object of chipped chert is believed to have served as a plowshare. The weapons of war and hunting included spears, daggers, axes, bows, arrows, maces, and slings; but there is no evidence of swords, shields, helmets, or greaves.⁵

Numerous bangles, carriages, bracelets, necklaces, anklets, girdles, and other articles testify to a love of personal adornment, and ingenuity in its manufacture. The art of the Indus is most characteristically represented by small square seal-amulets, evidently a common possession. Stone and terra cotta figurines of animals, chiefly children's playthings, are also plentiful; human representation is much less so. Most distinctive are a bronze dancing girl from Mohenjo-Daro and two statuettes found at Harappa. These last are excellent in design and execution. The bronze, though something like a caricature, is a spirited portrayal of a dancing nautch girl.⁶

Knowledge of the religion of the pre-Aryan folk is relatively limited, since no temple has been identified and no cemeteries unearthed. Other materials related to religion are not numerous. A number of figurines, however, are believed to be "effigies of the great Mother Goddess" or some local variant, whose worship is widespread and ancient in India. A male god, seated like a Yogi and

⁴ Marshall: *op. cit.*, I, 27 ff.; Mackay, E.: *op. cit.*, pp. 174, 188 f.

⁵ Marshall: *op. cit.*, I, 29 ff., 35 ff.; II, chaps. 24-5; Mackay, E.: *op. cit.*, pp. 121 ff., 173 f.

⁶ Marshall: *op. cit.*, I, 43 ff.; III, Plate xciv, 6-8; Mackay, E.: *op. cit.*, pp. 106 ff., 161 ff.

surrounded by four beasts (rhinoceros, tiger, elephant, and buffalo) may represent a pre-Aryan prototype of the Siva of later date. The prominent featuring of animals, such as crocodiles, buffalos, tigers, and bulls on many small square seals, often associated with cult objects, prompts the thought that Indus gods were worshiped in animal forms. Marshall judges these elements of the pre-Aryan religion "so characteristically Indian as hardly to be distinguishable from still living Hinduism"—at least that part of it "which is bound up with animism and the cults of Siva and the Mother Goddess . . . still the two most potent forces in popular worship."⁷

Like the civilization itself, the language or languages must have been pre-Aryan. Since Dravidian culture was very widely spread over northern India, Dravidic was quite probably one of the tongues spoken. Nonalphabetic writing, similar to the pictographic scripts of Egypt, Mesopotamia, and China, was in use by the people of the Indus. This implies a significant step forward in education, the details of which can only be surmised. Though thus far undeciphered, 396 signs, chiefly seal inscriptions, have been distinguished. These are highly conventionalized and scarcely suggest the objects that may have been represented originally. Early Brahmi script is believed to have been derived from this pre-Aryan pictographic writing. No clay tablets have been found; presumably, writing was chiefly on leaves, bark, parchment, or other materials readily destroyed.⁸

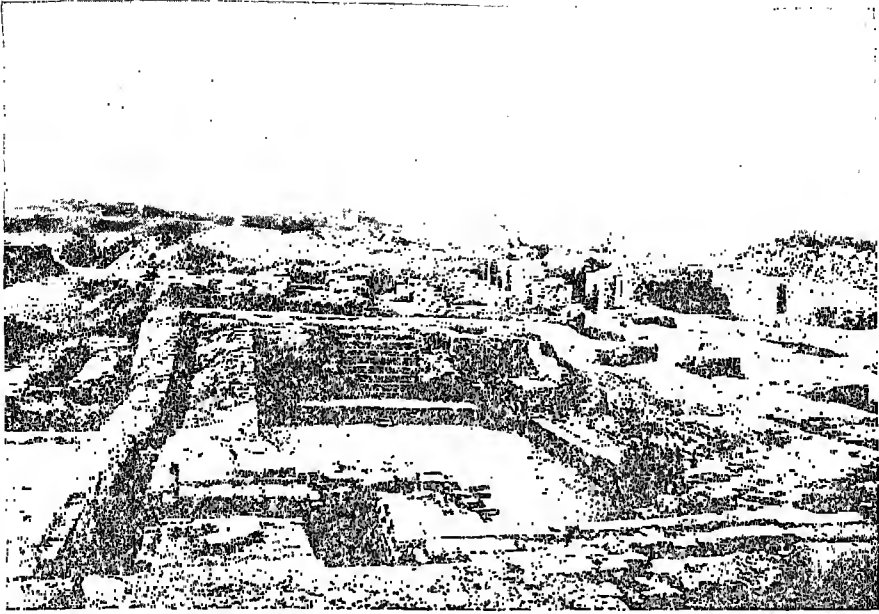
The most remarkable features of this ancient Indus culture were its architecture, wells, baths, drainage systems, and public and private dust bins. There is evidence, too, that Mohenjo-Daro was built according to a plan.⁹ Small houses (two rooms) as well as those of palatial size were built of burnt brick. Well-paved baths are found in private houses, both on ground and upper floors. The prevalence of well-constructed roomy houses, baths, wells, and excellent drainage systems suggests that "ordinary townspeople enjoyed . . . a degree of comfort and luxury unexampled in other parts of the then civilized world." Marshall believes that ". . . in no city of antiquity was so much attention paid to this matter of bathing as in Mohenjo-Daro."¹⁰ The ubiquitous bathing facilities may point to a religious sanction supporting cleanliness. The Great Bath, most unique of all the structures unearthed, was 180 by 108 feet overall. Whether it was merely for pleasure or served a religious purpose is uncertain. While the latter is a probability, the Great Bath may have served the public much as did the bathing establishments of Rome. The tank itself, measuring approximately 39 by 23 feet, was excellently constructed. Its brick

⁷ Marshall: *op. cit.*, I, vii, 49 ff., chap. 18, Plate XII, 17; Mackay, E.: *op. cit.*, chap. 3.

⁸ Marshall: *op. cit.*, I, 39 ff.; II, chaps. 22-3.

⁹ Mackay, E.: *op. cit.*, pp. 21 f.

¹⁰ *Op. cit.*, I, vi, 75.



THE GREAT BATH, MOHENJO-DARO

(By permission of Arthur Probsthain, copyright, Government of India, from J. Marshall, *Mohenjo-Daro*, 1, Pl. viii)

walls, about $4\frac{1}{2}$ feet thick, with waterproof backing, seem to have been surrounded with an ambulatory approximately 15 feet wide. The basin was sunk about 8 feet below the court level. At each end a flight of paved steps, covered with timbers, led down to the water. Just at the foot of the stairs a broad platform, 16 inches high and 39 inches broad, ran across the ends of the pool, presumably to accommodate children or others for whom deep water was dangerous. The pool may have been filled from a great well in a near-by room. A covered drain provided easy removal of the water. Associated with the Great Bath, apparently, were a row of eight small bathrooms, each having a stairway leading to a room above. These, it is believed, may have served members of a priestly order. Another building is thought to have been a hot-air bath; vertical chases about $1\frac{3}{4}$ feet deep in its walls may have distributed hot air to the walls and floors of rooms above.¹¹

Where wildlife was plentiful in field and stream, hunting and fishing might well be expected. Shooting antelope with arrows is depicted on amulets. Small balls have been found, proper for bow or sling, which may have been used in hunting birds. Dogs of several types are shown in models; some of them were apparently used for hunting. Game birds were probably used for fighting. That

¹¹ *Ibid.*, 1, 24 ff., chap. 10; Mackay, *loc. cit.*, pp. 55 ff.

fishing was a common occupation is evident from numerous forms of fishhooks, the remnant of a fishing net, and net weights. What may have been a fishing boat is depicted on a seal.¹² In view of the many evidences of fishing in pre-Aryan India, it is interesting to note the scarcity of references thereto in the *Rig-Veda*, where fish is mentioned once.¹³ In Sanskrit literature after 800 B.C., references to fish, fishermen, hooks, and nets are of more frequent occurrence.¹⁴

Games and toys of the Indus folk are known to us through a variety of objects, made of clay, stone, bone, shell, faience, bronze, and other material. Some were apparently made by children; others suggest the skill of toy specialists. Of children's toys there were rattles, whistles, marbles, chairs, bake pans, and various models of birds, animals, and male and female human figures. Toy animals were sometimes mounted on wheels or had stick legs; some were made with movable joints and heads. Balls of various sizes and ornamentation, made of clay, shell, and stone; and pieces of ivory or bone (varying in length from one and a fraction to more than three inches), which were probably used for throwing in games of chance, have been recovered. Cubical numbered dice, two game boards, and several pieces generally thought to be gamesmen, make it clear that in respect to amusements the people of the Indus civilization had much in common with those of other early lands.¹⁵

ARYAN CULTURE IN INDIA

RISE OF ARYAN DOMINION Views as to the relation between Aryan and pre-Aryan origins in India vary sharply. The Indus culture has been called Vedic-Aryan; others hold the Indus and the Vedic cultures "incontestably" related. Again, the common view has been that Aryan culture came from the outside; a rival theory holds that it was indigenous. The time of arrival of Aryans on the scene is naturally also disputed. Langdon believes Aryan origins in India are "far more ancient than history" admits, and that Indian Aryans may be "the oldest representatives of the Indo-Germanic race." A more common view is that Vedic culture appeared in India about the middle of the second millennium B.C.¹⁶ as the result of a southward migration of Aryan peoples. In keeping with this theory the rich territory, whose fertility, crops, flora,

¹² Mackay, E.: *op. cit.*, pp. 139, 186 ff.; Mackay, E. J. H.: *Further Excavations at Mohenjo-Daro*, I, 286, 290, 341, 356, 366, 435, 471 f., 641; II, Plates LXXXIX, A, XCI, 23-4, XCIII, 14.

¹³ Grassmann: *Rig-Veda*, x, 68.

¹⁴ Radcliffe: *Fishing from the Earliest Times*, pp. 48 f.; Macdonell: *Sanskrit Literature*, pp. 143, 217, 294.

¹⁵ Marshall: *op. cit.*, I, 39; Plate XIII, 3-6; II, 549-61; III, Plates CLIII-CLV; Mackay, E. J. H.: *op. cit.*, I, 557-78; II, especially Plates LXXI, LXXVII-LXXXI, CV-CVI, CIX, CXL, CXLII.

¹⁶ Marshall: *op. cit.*, I, 110 ff.; II, 432; Venkateswara: *Indian Culture through the Ages*, pp. 9, 12 ff.

and fauna seemed so remarkable to Megasthenês,¹⁷ was forcibly taken from the aboriginal dwellers, who for centuries offered stubborn resistance.

Political history, according to Hindu tradition, goes back to 3000 B.C., but the earliest reasonably certain date is the beginning of the Saisunaga dynasty about 600 B.C.¹⁸ The preaching of Buddha (late sixth century B.C.); the invasion of India by Alexander (327 B.C.); Chandragupta (321–296 B.C.) and his grandson Asoka (c. 264–227 B.C.), who espoused Buddhism; the journeys of Fa Hien down the Ganges in the first decade of the fifth century A.D. and the travels of Hsuan Tsang in the second quarter of the seventh; the first Moham-medan invasion (664) and the establishment of Mohammedan sway in the thirteenth century—all these provide welcome definite anchorages in an otherwise highly uncertain chronology.

Much of the uncertainty of early Indian history is due to lack of written records. The earliest literature, the *Rig-Veda*, of great yet not definitely dated antiquity, seems to have been composed during the second millennium and was fairly crystallized by 1000 B.C. Writing, as noted, was known to the early Indus civilization. *Brahmi* script, fully developed apparently by 500 B.C., may have derived from the early Indus writing. At first used chiefly for business, writing is mentioned in a casual manner in Buddhist texts. Though Megasthenês (c. 300 B.C.) commented on the absence of writing among Hindus, Strabo says they wrote upon cloth but did not commit their laws to writing. Gautama encouraged his followers to learn his teachings in their vernacular and rebuked those who suggested that his works be put into Sanskrit. Buddhist texts were written down about the first century B.C. Brahmins were more reluctant than Buddhists to commit their intellectual treasures to writing, but by the seventh century A.D. learned works were commonly in written form.¹⁹

Whether Aryan civilization came from without or was indigenous, the *Rig-Veda* reflects the mingling of two peoples, a dark aboriginal folk and a fairer complexioned stock of tall, vigorous marauders who looked with contempt on the darker, against whom they were commonly arrayed in a struggle for dominion, though they also fought amongst themselves. The light-skinned conquerors were in a tribal stage of development. Caste was unknown. The father was warrior, priest, herder, and farmer.²⁰ Women enjoyed a position of

¹⁷ McCrindle: *Ancient India as Described by Megasthenês and Arrian*, pp. 30 ff., 159 ff.

¹⁸ Smith: *Early History of India*, pp. 9, 27.

¹⁹ *The Geography of Strabo*, xv, 1, 66–7; Marshall: *op. cit.*, I, 39 ff.; II, chaps. 22–3; Müller: *The Sacred Books of the East*, xii, 201; xx, 150 f.; Venkateswara: *op. cit.*, pp. 148 f., 213; Macdonell: *op. cit.*, p. 17; Davids: *Buddhist India*, chap. 7; Keay: *Ancient Indian Education*, pp. 12, 37, 155.

²⁰ Dutt, R. C.: *Ancient India*, pp. 4 ff.

some freedom and dignity. Animistic in religion, the early conquerors worshipped nature forces, such as Agni (fire), Indra (thunder), Rudra (lightning), and the *Maruts* (storm gods).²¹

Though the new arrivals in the Indus Valley were vigorous and warlike, the hot climate, rainfall, and rich soil, conducive to agricultural life and an accumulation of wealth that made extended leisure possible, exerted a powerful influence upon them. Specialization of labor grew. Castes emerged and gradually exhibited a marked rigidity. The vigorous primitive religion, breathing a spirit fit to inspire the hearts of warriors, gave way to a contemplative, abstract religion, which undertook to expound the origin of all things, order the affairs of men, and show the relation of all to an ultimate goal. According to this architectonic scheme of things, Brahma, universal spirit, is the beginning and the end of all. The ultimate reunion of the soul with Brahma, after numerous reincarnations, is the distant goal of existence. Brahmanic theory recognized different levels of maturity in all things. Each individual has its beginning and its end. Being and nonbeing, integration and disintegration, birth and death, are the rhythmic pulsations of the cosmic order. Each thing occupies some point in the cycle of existence, higher or lower according to degree of maturity. Human life is only a higher point in that cycle. But individuals are not equally mature spiritually. According to their degrees of maturity, certain types are recognized: the masses, selfish, chiefly concerned with getting; a nobler few, less selfish, sensitive to duty, but keen for the rewards of fame and power; superior souls, numerically still more limited, whose spiritual capacity enables them to grasp the scheme of things entire, and whose passion is love and wisdom.²²

Caste was not a ready-made system but the result of centuries of social evolution, involving a struggle of rival groups for dominion. Warriors were doubtless supreme in early days; but with more settled life, an intellectual caste claimed, and ultimately established, dominion, and assigned the stations of all below it. Brahmanic theory did not create divisions but rationalized, supported, and sought to render inviolate certain more or less natural cleavages. The source of *varna* (caste) and its meaning have been variously explained.²³ Originally it may only have differentiated Aryan conquerors and the conquered aboriginal population. *Brahmans* were poets and singers in early days, not members of a fixed priestly order. *Kshatriya*, designating the strong, was later applied to a soldier class. Eventually, however, *varna* indicated groups within the Aryan conquerors. The *Dharma Sastras* designate four castes: *Brahman*,

²¹ Müller: *op. cit.*, xxxii, 14, 53, 81, 419, *passim*; xlvii, 1, 6, 8, *passim*; Griswold: *The Religion of the Rig Veda*, pp. 80-208.

²² Goomaswamy: *The Dance of Siva*, pp. 6 f., 10 f.; Pratt: *India and Its Faiths*, pp. 72-90.

²³ Dutt: *op. cit.*, pp. 68 f., 431 f., 673; cf. Senart: *Caste in India*, pp. 89-206; Davids: *op. cit.*, chap. 4; Griswold: *op. cit.*, pp. 45-52.

Kshatriya, *Vaisya*, and *Sudra*, the first three of which could perform religious ceremonies and study the *Vedas*. Buddhism was a significant protest on the part of the *Gautama*, born a *Kshatriya*, against the encroachments of caste regulations and ceremonialism of Brahmanism. Just as the four rivers that fell into the Ganges lost their names when they mingled with it, so those who accepted Buddha ceased to be *Brahman*, *Kshatriya*, *Vaisya*, or *Sudra*. With the rise of Buddhism even *Sudras* in some instances founded dynasties. Buddhist influence was great during the millennium, 250 B.C.–800 A.D., and left its impress on a modified Hinduism which superseded it.

Megasthenês, Strabo, Diodorus, and Arrian give various accounts of castes in India,²⁴ but the *Laws of Manu*, formulated about 200 A.D., though based on earlier works,²⁵ contain a more significant statement of the laws of caste. Duties are prescribed for all according to their origin from the mouth, the arms, the thighs, and from the feet of the "resplendent one."

"To *Brahmanas* he assigned teaching and studying the *Veda*, sacrificing for their own benefit and for others, giving and accepting of alms.

"The *Kshatriya* he commanded to protect the people, to bestow gifts, to offer sacrifices, to study the *Veda*, and to abstain from attaching himself to sensual pleasures;

"The *Vaisya* to tend cattle, to bestow gifts, to offer sacrifices, to study the *Veda*, to trade, to lend money, and to cultivate land.

"One occupation only the lord prescribed to the *Sudra*, to serve meekly even these other three castes." ²⁶

The superiority of the *Brahman* is everywhere stressed. His very birth "is an eternal incarnation of the sacred law," which he is to fulfill. Whatever exists belongs to the *Brahman*. Because of "the excellence of his origin" a *Brahman* is entitled to everything. The name of a *Brahman* must signify "auspicious"; of a *Kshatriya*, "protection"; of a *Vaisya*, "thriving"; and of a *Sudra*, "service." ²⁷ Of value to the *Brahman*, doubtless, was the injunction that others should give to him. "Charity to Brahmins" was a constant theme of Hindu writings.²⁸

Megasthenês and Arrian say the military caste was well paid and equipped. When "not in service," Strabo says, they spent their time in idleness and drinking, but were ever ready to march on an expedition.²⁹ Megasthenês was speaking of the court of Chandragupta, a prince famed for the splendor of his

²⁴ Strabo, xv, 1, 39–41, 46–9; Diodorus of Sicily, II, 40–1; Arrian: *Indica*, 11–2.

²⁵ Macdonell: *op. cit.*, pp. 260 f., 428.

²⁶ Müller: *op. cit.*, xxv, 24. From *The Sacred Books of the East*, edited by F. M. Müller (The Clarendon Press).

²⁷ *Ibid.*, xxv, 25 ff., 35, 55.

²⁸ Dutt: *op. cit.*, pp. 683 f.

²⁹ McCrindle: *op. cit.*, p. 43; Strabo (Jones), xv, 1, 47; Arrian, 12.

court and the excellent organization of his government. Soldiers were not everywhere so liberally supported. *Manu* provided that *Kshatriyas* who had "fallen into distress" might subsist by certain lower occupations, but "must never arrogantly adopt the mode of life" of superiors.⁸⁰

Vaisyas and *Sudras*, according to *Manu*, must perform the work prescribed for them, for to allow them to neglect their duties "would throw this whole world into confusion." The *Vaisya* must keep cattle, know the value of articles of trade, the soil, the sowing of seeds, weights and measures, the wages of servants, and the rules of business, so as to "increase his property in a righteous manner." The highest duty of a *Sudra* is to serve *Brahmans*; if he always does so, is gentle in speech, free from pride, and a good servant, he will attain a higher caste in the next life. Articles needed for sacrifices might be taken at pleasure by a *Brahman* or *Kshatriya* from a *Vaisya* or *Sudra*. For hope of a better fate in the next life, one must submit to the rules of caste in this: "It is better to discharge one's own appointed duty incompletely than to perform completely that of another; for he who lives according to the law of another caste is instantly excluded from his own."⁸¹

It is evident that the priestly legislators devised laws for the preservation of their privileges. A *Brahman*, though ignorant, was declared "a great divinity"; though he "committed all possible crimes," he was on no account to be punished with death, but men of all other castes might "suffer capital punishment"; even though he engaged in mean occupations, yet he "must be honoured in every way." Let no one, not even a king, anger him for any reason, for the *Brahman* can "instantly destroy him together with his army and his vehicles." *Kshatriyas* and *Brahmans* must work together; neither prospers without the other; "being closely united, [they] prosper in this world and in the next."⁸² *Vaisyas* were permitted religious knowledge and might perform sacrifices. *Sudras*, however, except in rare instances, had no religious knowledge nor were admitted to sacrifices. A priestly rule declared that "the ears of a *Sudra* who listens, intentionally, when the *Veda* is being recited are to be filled with molten lead. His tongue is to be cut out if he recite it."⁸³ *Pariahs* (outcasts) had no rank in the social organization.

Agricultural labor was highly respected in the earliest days and was celebrated in song and ceremonial. Merry, yet reverent, was the chant at the beginning of planting: "Fasten the ploughs, spread out the yokes, and sow the seed on this field which has been prepared. Let the corn grow with our hymns; let

⁸⁰ Müller: *op. cit.*, xxv, 422 f.

⁸¹ *Ibid.*, xxv, 327, 400 f., 423, 432 f. From *The Sacred Books of the East*, edited by F. M. Müller (The Clarendon Press).

⁸² *Ibid.*, xxv, 320, 397 ff.

⁸³ Davids: *op. cit.*, p. 118; Dutt: *op. cit.*, p. 173.

the scythes fall on the neighbouring fields where the corn is ripe.”³⁴ A stamp of degradation, however, was put by the priestly class upon many forms of labor, as may be seen in the *Dharma Sastras* and in *Manu*. Workers in leather, goldsmiths, sellers of arms, blacksmiths, weavers, dyers, washermen, and oil manufacturers were declared impure, along with prostitutes, drunkards, liars, liquor-vendors, eaters of dogs, and other evildoers. Under such discouragement it may seem remarkable that industry developed as it did. Weaving, spinning, dyeing, carpentry, preparing skins and fabrics for clothing, manufacturing plows, wagons, carts, and implements of war—the bow and arrow, swords, spears, and armor—were considerably advanced. There were at least eighteen guilds at the time of Buddha. Artisans of these groups belonged to the *Vaiśyas*, as did the farmers; since the work of some of them was indispensable, they were well cared for by the state. Such was the case of armorers and shipwrights in the time of Chandragupta.³⁵

The position of women changed from time to time. In days of primitive simplicity, they “joined in the worship, and helped in the performance of the ceremonies.” The wife of Rama, often named as the ideal woman, and certain poetesses and philosophers show that women of high social station might be distinguished for learning. Buddha wanted a maiden “accomplished in writing and in composing poetry . . . well versed in the rules of the *Sūtras*.”³⁶ His wife is said to have asked why a veil was necessary, if her character and behavior were correct. According to Megasthenes women still enjoyed much liberty in his day; and Strabo says that wives of *Brahmans* studied philosophy with their husbands.³⁷ The sphere and duties of women as wives and mothers were, however, held always in highest regard. The popular view that learned women would die widows or meet with some other calamity, was no encouragement to take risks, though exceptions appeared.³⁸ Priestly philosophers expounded a philosophy of female subjection and inferiority. “Women, at all times,” says *Manu*, “have been inconstant. . . . Infidelity, violence, deceit, envy, extreme avarice, a total want of good qualities, with impurity, are the innate faults of womankind.” That such a creature should never be free, *Manu* provided: “In childhood a female must be subject to her father, in youth to her husband, when her lord is dead to her sons; a woman must never be independent.” “Though destitute of virtue, or seeking pleasure elsewhere, or devoid of good qualities, yet a husband must be constantly worshipped as a god by a

³⁴ Dutt: *op. cit.*, p. 40.

³⁵ *Ibid.*, pp. 680 ff.; Rawlinson: *Intercourse between India and the Western World*, p. 53.

³⁶ Venkateswara: *op. cit.*, pp. 110 ff.

³⁷ Strabo, xv, 1, 66.

³⁸ Ward: *Account of the Writings, Religion, and Manners, of the Hindoos*, I, 194 ff.; Coomaraswamy: *op. cit.*, pp. 82–102.

faithful wife . . . for that reason alone [she will] be exalted in heaven.”³⁹

EDUCATION

Intellectual training The home was the school, the mother the teacher, to about the age of five. Then, under a professional teacher, the elements of reading, writing, word study, grammar, arithmetic, and certain psalms and prayers were learned. According to the *Grhya Sutras*, a Brahman was initiated at the eighth year at the earliest, the sixteenth at the latest, into Vedic studies. The respective ages for Kshatriyas were the eleventh and the twenty-second years; and for Vaisyas, the twelfth and the twenty-fourth. Initiation was marked by a stricter regimen, a ceremonial feast, shaving, bathing, wearing a specially made garment, taking a staff, a new name, and binding with a sacred girdle. The Brahman's symbolic girdle was of sacred grass; the Kshatriya's, a bowstring; the Vaisya's, a thread of wool.⁴⁰

Intellectual training centered in religious teaching; its purpose was to understand the Vedas, practice pious mortification, gain knowledge of law and philosophy, develop veneration for one's natural and one's spiritual father, and so attain harmony with Brahman.⁴¹ Higher learning was chiefly a prerogative of Brahmins, though Kshatriyas and Vaisyas were entitled to study the Vedas, and Manu provided that “in times of distress” a student might learn the Veda from non-Brahmins. There were also several women of learning who became teachers in early Buddhist times.⁴² Among Kurus and Panchalas, in early days, warriors learned the Vedas;⁴³ the Licchavis, too, though a military clan, were lovers of fine arts and the sons often went to distant countries for education. King Videha was instructed in law by four sages; and his son was educated at Taxila, a great seat of learning.⁴⁴

When fully developed, higher education comprised linguistics, literature, theology, religion, philosophy, science, and law—drawn from the Vedas and commentaries thereon, the Laws of Manu, and the Six Angas. A Brahman family specialized, as a rule, in a particular Veda. The study of one Veda alone might occupy eight to twelve years; if the whole range of sacred literature and commentaries were attempted, it would require almost a lifetime.⁴⁵

Educational organization was quite informal. Some teachers taught in their

³⁹ Müller: *op. cit.*, xxv, 195 f. From *The Sacred Books of the East*, edited by F. M. Müller (The Clarendon Press); Woody: *A History of Women's Education*, 1, 5 f.

⁴⁰ Venkateswara: *op. cit.*, pp. 69, 113-8.

⁴¹ Müller: *op. cit.*, xxv, 24, 74; Venkateswara: *op. cit.*, pp. 70, 96 ff., 162 ff.

⁴² Müller: *op. cit.*, xxv, 73; Venkateswara: *op. cit.*, pp. 111 ff., 220 f., 293 f.; Coomaraswamy: *op. cit.*, pp. 84 f.; Keay: *op. cit.*, pp. 80 ff.

⁴³ Dutt: *op. cit.*, pp. 128, 432 f.

⁴⁴ Law: *Ksatriya Clans in Buddhist India*, pp. 68 f., 148 f.; Venkateswara: *op. cit.*, pp. 166-71.

⁴⁵ Müller: *op. cit.*, xxv, 74 f.

own houses, or were followed by students to forest hermitages; others discoursed at court on learned matters, including winds, droughts, rains, and epidemics.⁴⁶ As higher education became more specialized, small groups of priests (three to twenty-one, it is said) gave instruction in colleges, *parishads*. Buddhist monasteries also became famed centers of learning. Nalanda, most renowned, drew thousands of students from India and from abroad. Certain centers became distinguished for specialization: Taxila, in medicine; Benares, in theology; and Ujjain, in astronomy.⁴⁷

The study of literature was at first a process of committing to memory by oral repetition. When writing had come into use, it was usually taught by tracing characters in the sand, later upon leaves of palm and plane trees. Hindu psychology of learning in certain respects foreshadowed that of the present day: "Good instruction must be given without unpleasant sensations"; a teacher must "use sweet and gentle words." Discipline, accordingly, was customarily mild. Manu provided, however, that in case of necessity "a wife, a son, a slave, a pupil, . . . who have committed faults, may be beaten with a rope or a split bamboo, but on the back part of the body only, never on a noble part. . . ." ⁴⁸

Physical culture Though a doctor felt two decades ago that he could "almost say positively . . . that we [Indians] are the sickest nation in the world to-day," and found the reasons therefor in climatic conditions, social and religious customs, and a certain reflective tendency, there was a marked concern for health in ancient India, and many sports and amusements were commonly enjoyed. After the tenth century A.D., however, a marked decline in physical education began, paralleling India's subjection to foreign rule. During the past hundred years, due chiefly to Western influences and the rise of Indian nationalism, physical education under both civil and military control has taken a new lease of life as a mass movement—especially since 1920.⁴⁹

Health and physical culture were not sought through formal provisions among primitive Aryan conquerors. In Vedic hymns there were, however, constantly reiterated praise and supplication for food, strength, health, valiant heroes, and long life;⁵⁰ and the compulsions of life-activities provided sufficiently, doubtless, for physical exercise amongst the soldiers, farmers, and other lower industrial workers such as the *Sudras*, for whom nothing was provided

⁴⁶ Strabo, xv, 1, 65-6; Diodorus, II, 40.

⁴⁷ Venkateswara: *op. cit.*, pp. 82 f., 159 ff., 227 ff.; Dutt: *op. cit.*, pp. 175 ff.

⁴⁸ Müller: *op. cit.*, xxv, 306. From *The Sacred Books of the East*, edited by F. M. Müller (The Clarendon Press); Venkateswara: *op. cit.*, pp. 37, 83, 100.

⁴⁹ Gray: "Physical Education in India," *Am. Phys. Educ. Rev.*, xxiv, 376; Andrews: "Physical Education in India," *Jour. Health and Phys. Educ.*, iv, 10 ff.; Thomason: "Physical Education in India," *Mind and Body*, xxxv, 497 ff.

⁵⁰ Müller: *op. cit.*, xxxii, 108, 211, 347; XLVI, 277, 360, 376, 380, *passim*.

save training in the craft pursued by the father.⁵¹ Megasthenês does mention a passive exercise, a massage: "Their favourite mode of exercising the body is by friction, applied in various ways, but especially by passing smooth ebony rollers over the skin."⁵² Later literature placed great emphasis on diet and other physical care during the early years at the hands of the mother. A stricter regimen in respect to personal habits, washing, early retiring and rising, was prescribed for youth after initiation. Both Hindus and Buddhists imposed restrictions as to certain foods, partly for physical and mental effects, partly for ceremonial reasons. Fasting was stressed by Buddhists, especially, in order to restrain animal nature and to stimulate mental activity.⁵³

Early rising, cleansing the teeth, rinsing the mouth, bathing in cold water once or even thrice daily were common features of Brahmanic and Buddhist systems of physical regimen. *Manu* prescribed bathing in the morning for *Brahmans*, and warned against bathing naked and taking baths immediately after meals and in pools which were not perfectly well known. Bathing, as a ritualistic cleansing, was prescribed for ascetics to atone for unintentional injuries to other living creatures.⁵⁴ Water and its cleansing and refreshing qualities occupied a place of importance in Indian life, owing largely doubtless to the hot climate and the accessibility of great rivers. When the summer has come, Aryuna says to Krishna, "Come, let us go" to the river Jumna and "sport there with our friends."⁵⁵ Provisions for oil baths are mentioned in the time of Chola I (c. 1023 A.D.). In Buddhist monasteries walking was a prescribed exercise; and pools were provided for bathing, to which the members were summoned each morning by a bell. Throwing water at, or chasing, each other in the water, or other sportive amusements, were not permitted. Special rules were promulgated for using and cleansing the hot bath. A steam bath was allowed to rheumatic sufferers. Separate bathing places were prescribed for men and women.⁵⁶

The prohibitions laid by Buddha upon exercises, games, and amusements are an index to the pastimes common in India at that day: "games with eight pieces and ten pieces, and with tossing up, hopping over diagrams formed on the ground, and removing substances from a heap without shaking the remainder"; dice, trapball, drawing figures, throwing balls, blowing trumpets, plowing contests, tumbling, imitating windmills, guessing games, chariot races, shooting matches, marbles, mimicking others' actions, riding elephants and

⁵¹ Keay: *op. cit.*, pp. 57, 77 ff.; Venkateswara: *op. cit.*, pp. 91, 155, 200 ff., 308 f.

⁵² McCrindle: *op. cit.*, p. 70.

⁵³ Venkateswara: *op. cit.*, pp. 105 ff., 191 ff.

⁵⁴ Müller: *op. cit.*, xxv, 136, 149, 152 f., 210; Schleyer: *Bäder und Badeanstalten*, pp. 3 ff.

⁵⁵ Dutt, M. N.: *Mahabharata*, *Adi Parva*, p. 300.

⁵⁶ Müller: *op. cit.*, xiii, 44, 157 f.; xvii, 35, 56; xx, 102-10, 114 f., 296 ff., 367 ff.; Venkateswara: *op. cit.*, pp. 232, 238, 278.

horses, swordsmanship, races with elephants, horses and carriages, running, wrestling, boxing, and enticing girls to dance.⁵⁷

Yoga, unique Indian development, a systematic discipline of mind and body, involved numerous exercises in posture (*asana*) and regulated control and exercise of breathing, preferably performed in the open air at morning. To master with safety and benefit the intricacies and difficulties of Yoga required the instruction of experts. Breathing exercises were held especially valuable to those engaged in mental labor. When fully developed, Yoga included as many as eighty-four different postures, considered best. Thirty-two have been called useful for "this world." Fifteen are commonly recognized to-day. Though usually regarded merely as an extreme asceticism, Yoga was, at its best, a science of health, based on a philosophy of physical and mental control pointing toward the golden mean. According to Gautama, "There are two extremes which must be shunned. The one is a life of pleasure devoted to desire and enjoyment. That is base and ignoble, unworthy, unreal, and is the way of destruction. The other is a life of self-mortification, gloom, and torture. This is unworthy, unreal, and leads to nothing. The middle way of wise temperance and recollectedness is the way which ascends the mount of vision."⁵⁸

Among the early warring Aryans in India the training for warfare was probably a rather informal but universal apprenticeship for all men. Non-Aryan girls, too, it is said, "joined the army in large numbers," but we know nothing of their training at that time or at later dates when certain women are reported to have "gloried in the military profession."⁵⁹ Megasthenes speaks of a host of women accompanying the army; and of the king's hunting, surrounded by women, armed as if for a campaign, some on horses, others on elephants and in chariots.⁶⁰

That more or less formal contests at arms may have been held, even in the early days, is suggested by certain Vedic allusions.⁶¹ In any case, as specialization of functional classes developed, the training of soldiers became more formal, extensive, and clearly defined. In the time of Gautama Buddha, who is said to have neglected "manly exercises" which sons of Kshatriyas commonly delighted in, military arts included fighting on horses and elephants and in chariots, archery, riding, walking, running, jumping, wrestling, swimming, and boxing. Dancing, also, was a part of early training. In the second century B.C.

⁵⁷ Müller: *op. cit.*, xvii, 348 f. From *The Sacred Books of the East*, edited by F. M. Müller (The Clarendon Press).

⁵⁸ Krishnayya: "The Yoga Asanas," *Jour. Health and Phys. Educ.*, iv, 56; Bernard: *Hatha Yoga*, p. 6; Schmidt: *Fakire und Fakirtum im Alten und Modernen Indien*; Müller: *op. cit.*, xiii, 94; Macdonell: *op. cit.*, pp. 398 f.; Venkateswara: *op. cit.*, pp. 141, 143.

⁵⁹ Venkateswara: *op. cit.*, pp. 57, 66, 294.

⁶⁰ McCrindle: *op. cit.*, pp. 38, 72 f.; Strabo, xv, 1, 55; Rawlinson: *op. cit.*, p. 67.

⁶¹ *Rig-Veda*, iv, 42, 5; Keay: *op. cit.*, pp. 60 f.

military arts included forming various arrays, columns, and counter columns, heavy fighting, fist fighting, fighting with branches, the uses of the bow and the sword. According to one authority, a prince's training included such military arts as archery, elephant training, care and training of horses, battle formations, use of the lance, jumping, running, and crossing rivers.⁶² Among the accomplishments recommended in the early Christian era as part of training for youth between five and sixteen years of age, were gymnastics, playing on musical glasses, dancing, swordstick combats, training cocks, quail, and rams for fighting, and teaching birds, such as parrots and starlings, to sing.⁶³ Polo was apparently introduced into India at the time of the Mohammedan conquest, and was extremely popular at the Mogul court in the sixteenth century. Since then it declined and all but disappeared, save on the borders near Burma and at a few places on the upper Indus, where it was played by commoners.⁶⁴

It is not without interest that when functions had become specialized and castes clearly differentiated, literature reflected the fondly cherished view that all good gifts came from *Brahma* and his servants the priests. The *Mahabharata*, a great epic poem which grew by accretion through many centuries, had apparently achieved definite form by the fifth century B.C. According to this epic portrayal, the earth was once bereft of warriors, but *Kshatriya* women consorted with *Brahmans* and thus arose a race of *Kshatriyas* of greater power and ability. Drona, a *Brahman*, not a *Kshatriya*, is charged by Bhishma to teach princes the science of arms and meanwhile to enjoy the luxury of the Kuru household and receive the obedience of all Kurus. And Drona taught the sons of Pandu the use of all weapons, the bow, the club, the sword, the lance, the spear, the dart, and how to fight in chariots and on elephants and horseback. But of his pupils, Aryuna excelled them all; in bowmanship there was not his equal. To test their profit from his teaching, Drona held an examination in marksmanship, in which the object was to sever with an arrow the head of an artificial bird which he had placed as target in a tree top. All pupils but Aryuna see everything, the bird, the teacher, the tree. Aryuna, however, attention fixed only on the head he is to aim at, sees neither teacher, tree, nor even the body of the bird—and so he brings it down! Having completed the training of his pupils, Drona requests the king to hold a public competition to be viewed by all orders of society. Accordingly a great display of horsemen, charioteers, bowmen, fighters on elephants, swordsmen, was held in an arena, constructed by special order of the king. Thereafter, satisfied that all were now thoroughly accomplished in arms, Drona asks for his *dakshina*, payment for his services—nothing less than that his pupils seize Drupada, the king of Panchalas, and

⁶² Venkateswara: *op. cit.*, pp. 170, 174 f., 199.

⁶³ Radcliffe: *op. cit.*, p. 49.

⁶⁴ Laufer: "The Early History of Polo," *Polo*, vii, 44.

bring him captive before him. This heroic labor, Aryuna dutifully fulfilled.⁶⁵

The philosophy of power politics in the *Mahabharata* is Machiavellian and modern. A king should always extend his powers, avoiding his own faults, watching for faults of others. His own resources should be carefully concealed. The killing of an enemy, strong or weak, is always praiseworthy. If a king is weak, he should pretend to be blind and deaf, not noticing faults of others when he is not able to punish them. One must gain the confidence of one's enemies, then spring upon them like a wolf. Destroy enemies by every means: by arts of conciliation; by money; by fomenting disunion among them. By this jackal political science ". . . the timid, by exciting their fears, the courageous by the arts of conciliation, the covetous by gift of wealth, and the inferiors and the equals by the exhibition of prowess . . ." will be brought to subjection.⁶⁶

The duties, virtues, and rewards of *Kshatriyas*, set apart by religion and custom as the protectors of society, were formulated more authoritatively in the *Laws of Manu*. A king, says *Manu*, though defeated by foes who are stronger than he, "must not shrink from battle, remembering the duty of *Kshatriyas*. Not to turn back in battle, to protect the people, . . ." is the greatest happiness. Those who "fight with the utmost exertion and do not turn back, go to heaven." Those who are "slain in battle," while turning back in fear, are condemned to bear the sins of their masters. Awards and booty come to the good *Kshatriyas*. Chariots, horses, elephants, parasols, money, grain, cattle, women, "all sorts of marketable goods and valueless metals belong to him who takes them . . ." singly; and what is taken jointly is to be divided among the soldiers. Always he must be prepared. "Let him be ever ready to strike, his prowess constantly displayed. . . . Of him who is always ready to strike, the whole world stands in awe; let him therefore make all creatures subject to himself even by the employment of force."⁶⁷

The warlike spirit of the *Laws of Manu* harks back to the warrior's way of thinking and acting, portrayed in the earliest Vedas. *Indra* is the god of thunder, storm, and warlike fury. *Indra* protects his Aryan worshipers in war. "He subdues the people who do not perform sacrifices for the benefit of . . . Aryans. He flays the enemy of his black skin and kills him and reduces him to ashes." "O destroyer of foes! collect together the heads of these marauding troops, and crush them with thy wide foot!"⁶⁸ Another poem describes the preparation for war, the weapons and armor: chariots, horses, bows, quivers,

⁶⁵ Dutt, M. N.: *op. cit.*, pp. 88, 190-203.

⁶⁶ *Ibid.*, pp. 203 ff.

⁶⁷ Müller: *op. cit.*, xxv, 230 ff., 238, 397 ff., 419. From *The Sacred Books of the East*, edited by F. M. Müller (The Clarendon Press).

⁶⁸ Dutt, R. C.: *op. cit.*, p. 54.

and the poisoned arrows. "We will win cattle with the bow. . . . The string of the bow when pulled . . . whispers words of consolation to [the archer]. . . . The quiver is like the parent of many arrows. . . . The expert charioteer stands on his chariot and drives his horses wheresoever he will. . . . The horses raise the dust . . . and career over the field. . . . They do not retreat, but trample the marauding enemies under their feet. The arrow is feathered. . . . Well pulled and sent by the . . . string, it falls on the enemy. Wherever men stand together or are separate, there the shafts reap advantage. . . . We extol the arrow which is poisoned, whose face is of iron. . . ." ⁶⁹

The martial spirit that should pervade the breast of *Kshatriyas* is poetically portrayed by Bharavi, who points out that peace and submissiveness do not befit the warrior:

Cast off thy sloth, assume thy native power,
And, manlike, deal destruction to thy foe!
Not kings, but hermits seek seclusion's bower,
Forget their wrongs, and meekly bend in woe.

If mighty men, whose treasure is their fame,
Like thee consent their manhood to degrade,
Then woe to warrior's pride and warrior's name,
And honour, courage, chivalry be dead! ⁷⁰

The connection between religion and war is suggested by the following, in which the bow, "truly . . . the nobleman's strength," is blessed at the royal inauguration: "Mitra's thou art—Varuna's thou art . . . may he slay Vritra by thee! . . . may he slay by thee his spiteful enemy!" ⁷¹

The horse and war chariot, so indispensable to the conquering Aryans, both in war and in the chariot races of which the Indians were deeply enamored, occupy a large place in the earliest literature and in the later. Harnessing the two bays to the chariot that will carry the hero, prayers for strong fellows, chariots, horses, and reins, are recurrent themes of many Vedic hymns.⁷² Religious sanctions appear in elaborate ceremonials held in connection with the war chariot and in sprinkling the horses with water: "Thou art Indra's thunderbolt; . . . the chariot is indeed a thunderbolt, and the sacrificer is Indra. . . . Thou art Indra's thunderbolt;—a winner of wealth, for the chariot is indeed a winner of wealth;—may this one win wealth by thee!—wealth means food: may this one gain food by thee. . . ." ⁷³

⁶⁹ *Ibid.*, pp. 60 f.

⁷⁰ *Ibid.*, p. 764.

⁷¹ Müller: *op. cit.*, xli, 88 f.

⁷² *Ibid.*, xxxii, 14, 82, 337, *passim*.

⁷³ *Ibid.*, xli, 18. From *The Sacred Books of the East*, edited by F. M. Müller (The Clarendon Press).

Lore dealing with the business of war grew with its growth and ultimately found expression in written form. *Dhanur-Veda*, meaning bow and science, gives numerous fanciful details of equipment and its uses. Brahma is said to have fashioned three bows from one bamboo. There were also bows of horn and ivory. They should be three and one-half or four cubits long. There were also bows for throwing pellets. Arrows about two cubits in length were tipped and feathered and were hung in a quiver on the back. The archer was to be equipped with protective thimbles of leather or other material to save his fingers and with a sleeve to protect the left arm. The novice must have a teacher, that he may learn to string and unstring the bow properly, draw the string, and take aim. He must practice throwing the bow in the air and catching it, and he must be able to draw with either hand. In addition to archery, such matters as wrestling, heavy staves (bludgeons equal to the length of both arms plus the body's width), shields, spears of several kinds, clubs, horses, elephants, camels, cows, and chariots are mentioned as agencies of war. Men engaged both in single combats and in massed assaults of infantry, horsemen, and charioteers, each group against a similarly organized opponent. The long heavy staff was used skillfully in warding off and in giving blows. Wrestling, primitive and brutal, with apparently no holds barred, emphasized skill in footwork, moving about the opponent, drawing in the neck if the antagonist tried to get a hold on it, avoiding being thrown on the back, and allowing the adversary to seize a foot. A wrestler should be able to walk on his hands and do somersaults. Kicking, hitting with closed or open hands, and butting with the head were allowed.⁷⁴

It is said that a chivalrous code of fighting came ultimately to prevail amongst Kshatriyas. According to this standard, women, children, and the deranged were immune to attack. Likewise one should not attack an unarmed person, a lone charioteer who had lived through an encounter, one who declined fighting or gave himself up to the victors, those who were fearful, turned their backs and ran away, or who were already overcome by another fighter.⁷⁵

Archery seems to have been the most loved implement of war and the chase. A hymn of the *Rig-Veda* pleads that the bow may bring spoils and oxen, success in battle, fear to the foe, and victory over the whole world.⁷⁶ Shooting seems at times to have been systematically taught. Of the Kurus and Panchalas it is said, "The relations and friends of the king and all the warriors of the nation learnt archery and riding and driving the war chariot from their early youth. . . ." ⁷⁷ In the time of Buddha, the Licchavis, a Kshatriya clan, "were

⁷⁴ Ward: *op. cit.*, II, 381 ff.

⁷⁵ *Ibid.*, II, 390.

⁷⁶ Longman and Walrond: *Archery*, p. 1.

⁷⁷ Dutt, R. C.: *op. cit.*, p. 128.

hardy and active, ardent and strenuous in their military training, so that their enemies could have no chance of getting them at a disadvantage. They were fond of manly sport such as hunting . . . " but, on one occasion when they came upon the Buddha seated at the foot of a tree, they "threw away their bows and arrows. . . ." The Sakyas had "a school of archery at Kapilavastu where . . . [they] were trained."⁷⁸ Archery was expertly taught at Taxila.⁷⁹

The Mallas clan was a martial race devoted to the "manly sport" of wrestling.⁸⁰ Strabo refers to some tribes who had the custom of giving virgins as prizes to the victors in boxing.⁸¹ Arrian says that girls were exposed by their fathers in public, to be selected by the victor in wrestling, boxing, running, or any other manly exercise.⁸²

Little of an exact character is to be learned from Megasthenês, Strabo, and other early writers regarding the training of Indian soldiers. The hints they offer, however, enable us to infer something of their exercise. At the time of Megasthenês, the soldiers of Chandragupta were maintained at the king's expense, just as were elephants, horses, chariots, and other equipment. All military affairs appear to have been under one governing body, of which there were six divisions, admiralty, transport, infantry, cavalry, war chariots, and elephants. All arms and animals were kept in armories and stables of the king. Chariots on the march were drawn by oxen; and the horses were led by halters, that they might be fresh when the battle began. Besides the charioteer, there were two fighting men to a chariot. The elephants carried four men, a driver and three archers.

Of the training of horses and the skill of charioteers, Megasthenês reported:

"When it is said that an Indian by springing forward in front of a horse can check his speed and hold him back, this is not true of all Indians, but only of such as have been trained from boyhood to manage horses; for it is a practice with them to control their horses with bit and bridle, and to make them move at a measured pace and in a straight course. They neither, however, gall their tongue by the use of spiked muzzles, nor torture the roof of their mouth. The professional trainers break them in by forcing them to gallop round and round in a ring, especially when they see them refractory. Such as undertake this work require to have a strong hand as well as a thorough knowledge of horses. The greatest proficient test their skill by driving a chariot round and round in a ring; and in truth it would be no trifling feat to control with ease a team of four high-mettled steeds when whirling round in a circle."⁸³

⁷⁸ Law: *op. cit.*, pp. 64 f., 185.

⁷⁹ Venkateswara: *op. cit.*, p. 156.

⁸⁰ Law: *op. cit.*, p. 171.

⁸¹ Bk. xv, 1, 66.

⁸² *Indica*, 17.

⁸³ McCrindle: *op. cit.*, pp. 89 f.

From descriptions of equipment of the army, something may be inferred as to the training of soldiers of the several classes. Megasthenès says that Chandragupta's army numbered 400,000, which may have included, besides the regular fighting forces of infantry, cavalry, chariots, and elephants, the buglers, grooms, gong-ringers, drivers, mechanics, foragers, and sutlers who were all necessary for its comfort and conduct.

"The foot-soldiers carry a bow made of equal length with the man who bears it. This they rest upon the ground, and pressing against it with their left foot thus discharge the arrow, having drawn the string far backwards: for the shaft they use is little short of being three yards long, and there is nothing which can resist an Indian archer's shot—neither shield nor breastplate, nor any stronger defence if such there be. In their left hand they carry bucklers made of undressed ox-hide, which are not so broad as those who carry them, but are about as long. Some are equipped with javelins instead of bows, but all wear a sword, which is broad in the blade, but not longer than three cubits; and this, when they engage in close fight (which they do with reluctance), they wield with both hands, to fetch down a lustier blow. The horsemen are equipped with two lances like the lances called *saunia*, and with a shorter buckler than that carried by the foot-soldiers. But they do not put saddles on their horses, nor do they curb them with bits like the bits in use among the Greeks or the Kelts, but they fit on round the extremity of the horse's mouth a circular piece of stitched raw ox-hide studded with pricks of iron or brass pointing inwards, but not very sharp: if a man is rich he uses pricks made of ivory. Within the horse's mouth is put an iron prong like a skewer, to which the reins are attached. When the rider, then, pulls the reins, the prong controls the horse, and the pricks which are attached to this prong goad the mouth, so that it cannot but obey the reins."⁸⁴

Houen Tsang described the armed forces of Siladitya II, ruler of northern India. The military are selected from the bravest of the people, and, "as the sons follow the profession of their fathers, they soon acquire a knowledge of the art of war." Their business is to protect the frontiers and punish the rebellious. The tactics of the various branches of the army in battle are as follows:

"The elephants are covered with strong armour, and their tusks are provided with sharp spurs. A leader in a car gives the command, while two attendants on the right and left drive his chariot, which is drawn by four horses abreast. The general of soldiers remains in his chariot; he is surrounded by a file of guards, who keep close to his chariot wheels.

"The cavalry spread themselves in front to resist an attack, and in case of defeat they carry orders hither and thither. The infantry, by their quick move-

⁸⁴ *Ibid.*, pp. 220 f.

ments, contribute to the defence. These men are chosen for their courage and strength. They carry a long spear and a great shield; sometimes they hold a sword or sabre, and advance to the front with impetuosity. All their weapons of war are sharp and pointed. Some of them are these—spears, shields, bows, arrows, swords, sabres, battle-axes, lances, halberds, long javelins and various kinds of slings. All these they have used for ages.”⁸⁵

The hunters of whom early authorities speak, who cleared the fields of the tigers, boars, deer, birds, snakes, scorpions, and caught elephants and trained them for the army, undoubtedly had a physical apprenticeship to their task and learned to master the bow, the spear, and the club at an early age.⁸⁶ It is not to be assumed, however, that hunting was not followed by others besides those for whom it was an occupation. Even Brahmins at times engaged in the chase for profit;⁸⁷ and kings and nobles hunted for pleasure, if not for more utilitarian reasons. The Kuru princes, having the consent of their tutor, Drona, set out in their chariots on a hunting expedition. In the time of Chandragupta, says Megasthenês, the king left his palace to judge causes, to perform sacrifices, and to engage in the chase, being attended in hunting by armed women in chariots, on horses, and on elephants. He himself hunted from the back of an elephant, and sometimes shot animals with arrows from a platform.⁸⁸ King Asoka, who espoused Buddhism, published certain edicts which dealt disapprovingly with pastimes of kings, such as hunting. “Hundreds of thousands of living beings were killed every day,” he records, for the table of the king; but he, after he had gained “true intelligence,” found the proper pastime in philanthropy and religion.⁸⁹

Hunting elephants was a difficult undertaking, “a task of immense labour,” says Megasthenês,⁹⁰ requiring a vast amount of experience, bravery; and skill. Training them for riding, plowing, and military use also required patience, special knowledge, and skill, though the animals were reputedly docile. Strabo describes the Indian method of hunting and taming elephants:

“The chase of the elephant is conducted as follows: they dig a deep ditch round a treeless tract about four or five stadia in circuit and bridge the entrance with a very narrow bridge; and then, letting loose into the enclosure three or four of their tamest females, they themselves lie in wait under cover in hidden huts. Now the wild elephants do not approach by day, but they make the

⁸⁵ Dutt, R. C.: *op. cit.*, pp. 580 f.; Strabo, xv, 1, 66.

⁸⁶ Strabo, xv, 1, 41; Diodorus, ii, 39, 40; McCrindle: *op. cit.*, pp. 42, 84; Dutt, R. C.: *op. cit.*, pp. 272 f.; Rawlinson: *op. cit.*, pp. 52 f.

⁸⁷ Davids: *op. cit.*, p. 94.

⁸⁸ McCrindle: *op. cit.*, p. 72; Dutt, M. N.: *op. cit.*, p. 192.

⁸⁹ Dutt, R. C.: *op. cit.*, pp. 462, 465.

⁹⁰ McCrindle: *op. cit.*, pp. 136 f.

entrance one by one at night; and when they have entered, the men close the entrance secretly; and then, leading the most courageous of their tame combatants into the enclosure, they fight it out with the wild elephants, at the same time wearing them down also by starvation; and, once the animals are worn out, the boldest of the riders secretly dismount and each creeps under the belly of his own riding-elephant, and then, starting from here, creeps under the wild elephant and binds his feet together; and when this is done, they command the tamed elephant to beat those whose feet have been bound until they fall to the ground; and when they fall, the men fasten their necks to those of the tamed elephants with thongs of raw ox-hide; and in order that the wild elephants, when they shake those who are attempting to mount them, may not shake them off, the men make incisions round their necks and put the thongs round at these incisions, so that through pain they yield to their bonds and keep quiet. Of the elephants captured, they reject those that are too old or too young for service and lead away the rest to the stalls; and then, having tied their feet to one another and their necks to a firmly planted pillar, they subdue them by hunger; and then they restore them with green cane and grass. After this the elephants are taught to obey commands, some through words of command and others through being charmed by tunes and drum-beating. Those that are hard to tame are rare; for by nature the elephant is of a mild and gentle disposition, so that it is close to a rational animal; and some elephants have even taken up their riders who had fallen from loss of blood in the fight and carried them safely out of the battle, while others have fought for, and rescued, those who had crept between their fore-legs. And if in anger they have killed one of their feeders or masters, they yearn after him so strongly that through grief they abstain from food and sometimes even starve themselves to death.

“. . . Nearchus says that in the hunt for them foot-traps also are put at places where tracks meet, and that the wild elephants are driven together into these by the tamed ones, which latter are stronger and guided by riders; and that they are so easy to tame that they learn to throw stones at a mark and to use weapons; and that they are excellent swimmers; and that a chariot drawn by elephants is considered a very great possession, and that they are driven under yoke like camels.”⁹¹

Dancing in ancient India was intimately associated with religion, its music, and ceremonials. One of the earliest Vedic hymns addressed to Aurora likens her to a dancer, gay in a dress of many colors.⁹² “Worship the Maruts with a

⁹¹ Strabo, xv, 1, 42, 43. Trans. by H. L. Jones. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.; Arrian, 13.

⁹² Grassmann: *op. cit.*, II. 02.



SIVA

(Courtesy, Philadelphia Museum of Art)

song . . . O ye dancers, with golden ornaments, . . . take care of us, ye Maruts, for your friendship lasts for ever.”⁹³ Numerous passages from their early literature show the Indian people’s love of dancing and its integral rôle in religion. The figure of the dancer from Mohenjo-Daro and works of religious and other forms of art, show likewise the antiquity and the persistence of the love of rhythmic movement. The myriad forms of the dance of Siva celebrate with ecstasy “primal rhythmic energy,” and become in time, however crude and unconscious its first manifestations may have been, the “image of the activity of God.”⁹⁴ Siva, indeed, is Nataraja, the Lord of Dancers, one of whose dances represents his fivefold, godlike powers: creation, embodiment, preservation, destruction, and release.⁹⁵ The death dance itself, Venkateswara⁹⁶ says, is a symbol not of a final destruction, but of a transformation.

Dancing and music formed a part of youth’s education in the time of Gautama and Goyame. Nevertheless, dancing was soon to fall into disfavor, perhaps because of growing stratification of society, professionalization of dancing, and its relegation to a low class of people who, because of excesses and irregularities said to have been common amongst them, were compelled in some places to dwell outside the city with other low elements of society.⁹⁷ Religious literature and law reflect this growing antagonism. Among the pastimes prohibited to Buddhist monks was entertainment by dancing girls.⁹⁸ The *Laws of Manu* put dancers, singers, liquor-dealers, cruel men, heretics, gamblers, and “those following forbidden occupations” all in one category, which the king should “instantly banish from his town.”⁹⁹ *Samvarta*, a more recent work, listed dancers with leather-workers and washermen as impure.¹⁰⁰

Despite the strictures of sacred books and legalistically religious minds, dancing continued to exert its popular appeal. Men danced and women danced; but dancing was by professional folk and lower social elements, not for respectable Hindu women or those of the Mohammedan faith.¹⁰¹ Dances were of two classes, religious and profane. There were court dancers, temple dancers, and doubtless many who had no such favorable connections. Girls in the temple service were sometimes instructed in reading, writing, music, dancing, and singing. Under the Cholas of Tanjore, endowments made provision for four hundred temple dancers, whose duties also included music and

⁹³ Müller: *op. cit.*, xxxii, 402. From *The Sacred Books of the East*, edited by F. M. Müller (The Clarendon Press).

⁹⁴ Coomaraswamy: *op. cit.*, p. 56.

⁹⁵ *Ibid.*, p. 59.

⁹⁶ *Op. cit.*, pp. 28, 224, 271.

⁹⁷ *Ibid.*, pp. 170, 174, 200.

⁹⁸ Müller: *op. cit.*, xvii, 349.

⁹⁹ *Ibid.*, xxv, 381.

¹⁰⁰ Dutt, R. C.: *op. cit.*, pp. 659 f.

¹⁰¹ Hambly: *Tribal Dancing*, pp. 64 ff.

drama.¹⁰² Temple women sometimes danced twice daily, once for their own sins, again for those of others.

Outside the court and temple circles, professional dancers and musicians served the fancy of men of wealth, by whom they were engaged to provide entertainment for guests. Grove describes such dancing, as observed in modern times: "In Bombay, the Asiatic Capua, the dancing-women, with their lithe figures and their languid eyes, remind us of the beautiful women of Greece. When a nautch takes place the young girls, at a signal given by the host, appear with bare feet. The music is generally monotonous, and the nautchees sing while they dance; in fact, the song is considered the chief part of the entertainment. They mostly express the passion of love with all the vicissitudes attendant on it—joy and fear, hope and jealousy, fury and delight; and every look, every attitude, every arm movement has been studied and exquisitely mimics the story. All dancing songs are not love songs, and occasionally some are introduced descriptive of incidents of Eastern life, such as war or the chase. The nautchees soon tire of their exertions, and generally several sets are hired for an entertainment ready to relieve one another. While they go through their gyrations the guests recline at their ease on couches, propped up with cushions, eating sweetmeats and fruit and drinking wines served by attendants." ¹⁰³

Besides such dances of an exhibitional character, numerous special dances may still be seen in parts of India, which are survivals of aboriginal customs. Such, for example, is the Khassia dance, described by Grove, in which the marriageable girls display themselves and choose, or are chosen by; "suitable" men: "A well-brought-up Khassia maiden of the superior class is taught that the perfection of dancing is to go round in a circle with the smallest possible amount of movement; not even an eyelid is to be lifted, her hands are to hang down by her side, and her feet are to be rigidly placed together, knees and ankle-bones touching each other. In this position she wriggles round the circle with a curious heel-and-toe motion—occasionally solemnly and slowly pirouetting round. The men amply compensate for the unexcited quietude of the girls; they jig, they leap, they hop, they wave arms, legs, umbrellas and knives about in the wildest confusion, accompanying their movements with the most savage war-whoops. . . ." ¹⁰⁴

¹⁰² Venkateswara: *op. cit.*, p. 295.

¹⁰³ Grove: *Dancing*, pp. 344 ff.; cf. Hambly: *op. cit.*, pp. 21 f.

¹⁰⁴ Grove: *op. cit.*, pp. 348 f.

EMPIRE IN IRAN

RISE AND FALL OF PERSIAN POWER

The history of Medo-Persian greatness is brief. At the middle of the ninth century B.C. certain barbarous tribal folk, troublesome to their more civilized neighbor, Assyria, were brought under her subjection. Two centuries and a half later (606 B.C.), however, the tribes of the plateau having become united, Media and Babylonia became masters of the proud city of Nineveh. For half a century Media and Babylon lived peaceably with their two great neighbors, Lydia and Egypt. But peace, like calm preceding a storm, was not for long. On the southern marches of Media, a prince rose in revolt among the neighboring Persians, who till now had accepted the sway of Median kings.¹ Cyrus, characterized as "humane in disposition," "eager for knowledge," and "ambitious of honour,"² was an intelligent, energetic, capable ruler. As head of the Persians he led them to victory over Media (550 B.C.), Lydia (546 B.C.), and Babylon (538 B.C.). Cyrus died (529 B.C.) but his successors brought Egypt, Armenia, Afghanistan, and the Indian Punjab under Persian sway. Darius and Xerxes made a protracted effort to force the Persian yoke on the reluctant Greeks, but were unsuccessful. Defeat at Plataea (479 B.C.) ended Persian hopes of conquering Hellas; they returned to Asia and, in 331 B.C., their Empire was destroyed by Alexander.

The organization and government of the Empire was probably the greatest achievement of Persian genius. Cyrus and some of his successors governed with a good deal of wisdom, albeit with severity. The kingship was hereditary; and the king's will was law. Disobedience, it is said, was punished by cutting off the head and arms.³ Government was more centralized than it had been elsewhere.⁴ Babylonia and Assyria had been rather loose organizations, mere aggre-

¹ *The History of Herodotus*, I, 123-30.

² Xenophon: *Cyropaedia*, I, 2, 1.

³ *The Geography of Strabo*, xv, 3, 17.

⁴ Sayce: *Ancient Empires*, pp. 247 ff.

gations of petty kingdoms which sometimes warred against each other without the approval of the "king of kings." Assyria had advanced, however, by dividing old kingdoms into satrapies under officers named by the king. The Persians extended and perfected this practice. Religion, customs, and laws of conquered peoples were left alone, but allegiance to the Great King was maintained through the payment of tribute, money, horses, and men. In each of the twenty provinces, a satrap governed, supported by a council and a general of the army. Check upon the satraps was constantly maintained through the "King's Ear," a royal secretary; the "King's Eye," a special agent of the king, investigated local governments from time to time, was armed with military authority, and could depose a satrap if necessary.⁵

Plato speaks highly of the degree of freedom which existed at certain times among the Persians, and says that the nation grew strong because of this "communion of soul."⁶ Some degree of integration of mind may have resulted from a religion whose sacrificers were not permitted to pray for themselves alone, but "for the welfare of the king, and of the whole Persian people."⁷ Too much stress should not be put upon this community of mind and of religion, however; for, though many accepted the religion of the Great King, the primary bond of union was one of steel; and when Persian rule was broken by Alexander, the union of peoples that had been effected by force, and held by force, readily disintegrated.

Linguistically, racially, religiously, the ruling class in India and the founders of the greatest empire before Alexander were related. Vedic literature and the sacred books of the Persians show that the ancestors of the creators of Brahmanism and Zoroastrianism once worshiped the same natural elements, wind and water, earth and sky, moon, sun, and fire.⁸ "Unto Agni, son of the God Ormazd! Unto thee, O Agni, thou son of Ormazd, be grace, for thy worship, praise, propitiation, and glorification." As the ancient composers of the Vedas sang in praise of warrior, herdsman, and tiller of the soil, so, too, the poets of the Zend-Avesta celebrated the triumph of man over nature, of the good spirit over the bad, and of cultivation, which drives out the demon horde:

When the corn grows, the demons hiss;
When the shoots sprout, the demons cough . . .

From this common Indo-Iranian stock⁹ those who dwelled in the high plateau of Iran developed, in the course of many centuries, a religion far different from Brahmanism. Zoroastrianism, so called from Zarathustra (dated

⁵ Herodotus, III, 89-97.

⁶ Laws, III, 694.

⁷ Herodotus, I, 132.

⁸ *Ibid.*, I, 131-2; Strabo, xv, 3, 13-6.

⁹ Müller: *The Sacred Books of the East*, iv, lvi-lxxxiii.

variously from the ninth to the seventh century), who is credited with formulating and crystallizing its teachings, was developed in Media by the Magi. After the conquest of Media by Cyrus, it became the official religion of the Persian rulers.

The central characteristic of Zoroastrianism or Mazdaism lies in the conception of a struggle between Ormazd—creator of all things, whose attributes are light, truth, goodness, life, wisdom, virtue, and purity—and Ahriman, the spirit of evil, sloth, death, decay, and darkness, who arose out of the conflict of forces when Ormazd created the world. All life is a struggle between the forces of good and those of evil. With one or the other men must ally themselves. Religion is, therefore, an individual matter. "Man, according to his deeds, belongs to Ormazd or to Ahriman."¹⁰ This conception of choice between good and evil was the highest point to which the thought of the Medes and Persians rose. Mazdaism offered hope to the vigorous, struggling, striving individual—a blest eternity in the Abode of Song, where Ormazd dwelled with his angels; but the slothful and the evildoer would fall at death from a bridge into a nether world of torment. In its philosophical formulation Mazdaism must have been appreciated chiefly by its priestly creators, royalty, and nobility. The masses, who probably understood little of the conception of Mazda, must have continued to follow the primitive persuasions of their ancestors.

As a religion of activism, Mazdaism made a strong appeal to the soldier-folk whom Cyrus and Darius led to the founding of a mighty empire. By them its sway was extended, much as Christianity was extended by Constantine and Charlemagne, and as Mohammedanism was carried by the sword of Mohammed's followers. Certain texts of Mazdaism were like mottoes on their standards as they marched into battle: "Victory-making, army-governing, endowed with a thousand senses; power-wielding, power-possessing, and all-knowing; who sets the battle a going, who stands against armies in battles, who, standing against armies in battle, breaks asunder the lines arrayed. The wings of the columns gone to battle shake, and he throws terror upon the centre of the havocking host. He can bring and does bring down upon them distress and fear; he throws down the heads of those who lie unto Mithra, he takes off the heads of those who lie unto Mithra."¹¹

The activism of Mazdaism was not limited to the field of battle. Instead of inviting men to idleness and reflection, it invited them to labor. Mazda is the god of "wide pastures" as well as of warfare. The irrigator, plowman, and harvester were all engaged in acts of righteousness; for he who labored "with his

¹⁰ *Ibid.*, iv, lxxiv. From *The Sacred Books of the East*, edited by F. M. Müller (The Clarendon Press).

¹¹ *Ibid.*, xxiii, 128. From *The Sacred Books of the East*, edited by F. M. Müller (The Clarendon Press).

right arm and his left, with his left arm and his right" helped to subjugate the kingdom of darkness and death, and promoted the kingdom of life and light.¹²

Apart from religion, Persia contributed little to the culture of the world. Art and architecture were borrowed from her neighbors, Assyria and Babylon. Of her early literature, except the *Avesta*, we know little. In later centuries, of course, Firdausi, Sadi, Hafiz, Nizami lent luster to the Persian name. In commerce Persians were not distinguished; being busy fighting and ruling, they neither bought nor sold, as Strabo says, nor concerned themselves with markets.¹³ From numerous early references to the gods' concern for agriculture, one might expect that it would have flourished; but such was not the case. The religion of the bow and spear transcended that of the plow and reaping hook, promising easier rewards. According to Herodotus, Cyrus promised his people that, if they would follow him, they would enjoy innumerable pleasures and "never condescend to any slavish toil."¹⁴ A certain contempt for useful labor developed in privileged military circles, as pernicious in effect as that which marked the feudal aristocracy of western Europe at a later date. Moreover, in that high, arid plateau, where, in Strabo's fantastic phrase, lizards could not cross the streets of Susis fast enough at noonday to avoid being burned to death,¹⁵ agriculture could not flourish generally (though in parts the temperature was mild and the valleys fertile) save by persistent, painstaking encouragement; and wealth, which might have been used for constructive development of the land, was squandered on the more heroic, exciting, dazzling project of conquering Europe as well as Asia. Persian military greatness was shortly blasted and eclipsed by the feats of another war lord. Probably no greater efforts have ever been expended for so little of lasting value.

Notwithstanding the futility of their ambitious empire-building, the Persians were an able, cheerful, rather carefree, pleasant, high-minded folk, whose private life reveals certain attractive features. Herodotus pictures them as ready to adopt foreign customs (even the "unnatural lust" of the Greeks), non-idolatrous in their worship, friendly and affectionate to those of their own rank, always ready to celebrate birthdays with a feast, and to make decisions in weighty matters only after double consideration—first when drunk, second when sober, or vice versa! To defile rivers,¹⁶ tell lies, speak of anything that was unlawful to do, pray for one's self alone, and kill one's parents, were to them blameworthy. Less estimable, however, were their tendency to hold themselves "greatly superior in all respects to the rest of mankind," their religious persuasion that it was necessary to kill animals, and the subjection of women.

¹² Jackson: *Persia Past and Present*, pp. 25, 246.

¹³ Strabo, xv, 3, 19.

¹⁴ Bk. I, 126.

¹⁵ Bk. xv, 3, 10.

¹⁶ *Ibid.*, xv, 3, 16.

Polygamy and concubinage were quite common, says Herodotus.¹⁷ The place of women was wholly domestic, the care of their children, to the age of five at least, their greatest concern. Sadi's estimate of women in the thirteenth century was still that of the ancient world: "Take your wife's opinion, and act in opposition to it"; "Choose a fresh wife every spring . . . for the Almanack of last year is good for nothing."¹⁸

PERSIAN EDUCATION

MORAL AND INTELLECTUAL Informal moral training, whether in the home or at a place of exercise, was emphasized in ancient Persia. Earliest influences were those of the mother, or her assistants in the case of the wealthy, for Persian boys were not seen by their fathers until they were five years of age. The purpose of this training, both in childhood and adolescence, was to inculcate certain habits and ideals, "piety in thought, word and action," that one might be a useful servant of the state.¹⁹ The habit of obedience was fixed from the very outset; of equal importance was the habit of truthfulness, which impressed Herodotus as one of the three aspects of education between the ages of five and twenty years. Xenophon says that the Persians sought to insure by education that their citizens should not "be inclined to any action that is bad and mean."²⁰

About the age of five, according to Herodotus and Strabo,²¹ or at seven, as Plato says, speaking of the princes,²² Persian boys began to receive a more systematic training, under teachers who were their "wisest men." There were no schools, however, in the usual sense, and little instruction of a literary character. For the lower class there was none, even of an elementary sort; and for wealthy and noble families, education seems to have been moral and physical rather than mental, being based upon direct teaching and examples of individuals rather than books. Strabo says that instruction at the age of five involved myths, the deeds of gods and the noblest men, rehearsed with and without singing. As for the Magi,²³ their wisdom was at first passed on by word of mouth. Ultimately, however, their knowledge of astrology, laws and customs, philosophy, medicine that was closely allied to primitive magic, and knowledge of the unseen world in general, was reduced to written form; thereafter, Magian education required the mastery of their sacred books, a part of which are known to us as the Zend-Avesta. The priests were the only formal teachers,

¹⁷ Bk. I, 131-40.

¹⁸ Costello: *The Rose Garden of Persia*, p. 94.

¹⁹ Modi: *Education among the Ancient Iranians*, pp. 44 ff.

²⁰ *Cyropaedia*, I, 2, 3.

²¹ Herodotus, I, 136; Strabo, xv, 3, 18.

²² "First Alcibiades," *Dialogues of Plato*, IV, 541.

²³ Ragozin: *The Story of Media, Babylon, and Persia*, pp. 268 ff.

and since they were differentiated into several classes, education must have varied somewhat also. In the early medieval period, under the Sassanids, the nobles, too, learned at their hands, to "read, write, [and] reckon"; and the "wealthier townsmen," the merchants, were probably also taught.²⁴

PHYSICAL CULTURE Persian society was made up of three classes, priests, soldiers, and industrials (farmers, tradesmen, and mechanics)—though class lines were not rigidly fixed. For the latter, the poorer sort, knowledge and manual skills must have been acquired by a natural apprenticeship in the family, since children generally pursued the occupations of their fathers.²⁵ A plow with a share, a yoke, a whip for the oxen, a stone mortar, a mill for grinding corn by hand, and a spade for digging, are named as tools used by husbandmen.²⁶ Practice in their use probably constituted the chief part of training on the land. Physical culture of a more extensive and elaborate sort was primarily military in character, a phase of the apprenticeship to arms, designed to render the soldier class effective in the task of empire-building.

Our knowledge of Persian physical training is rather unsatisfactory, since there are but scattered references to it, and these are by foreign writers, Herodotus, Xenophon, Strabo, whose reporting often deviates from approved canons of historical writing, and must be constantly subject to discount. Xenophon's *Cyropaedia*, while it professes to describe the education of young Cyrus, and has been credited with varying degrees of significance as a portrait of Persian education,²⁷ is primarily an idealized portrait of Spartan education. Naturally, since Sparta and Persia both designed education for military ends, there was much in common between them, but Xenophon's portrayal was propaganda for a scheme of society and education which he admired; and while there is doubtless something of fact in the *Cyropaedia*, it is difficult to divine where fact leaves off and fancy begins. Fortunately, Persian religious books provide information on certain points and impart a degree of authenticity to the general portrait of ideals and practices in ancient Iran.

Somewhat akin to the Greek, the Persian ideal included the welfare of soul and body. Zoroaster prayed for victorious thinking, speaking, and acting, and Mazda gave him "fountains of manliness," strength of arms, keen sight, health, and sturdiness of the entire body. His pious followers likewise prayed first for heaven—the soul's welfare—and next for health and physical strength.²⁸ In harmony with this desire Persian leaders laid heavy stress on physical education. The three ends of training, says Herodotus, was "to ride, to draw the

²⁴ Huart: *Ancient Persia*, pp. 153 f.

²⁵ Modi: *op. cit.*, pp. 52 f.

²⁶ Müller: *op. cit.*, IV, 170.

²⁷ Letourneau: *L'Évolution de l'Éducation*, pp. 404 f.; Lauric: *Historical Survey of Pre-Christian Education*, p. 202; Forbes: *Greek Physical Education*, p. 94.

²⁸ Müller: *op. cit.*, XXIII, 238 f.; XXXI, 236.

bow, and to speak the truth." Even being the father of many sons, which was encouraged by annual prizes, was put second "to prowess in arms."²⁹ Darius enumerated among his greatest achievements—things that future generations ought to know—that he excelled all others as horseman, archer, and hunter. In the next breath, however, he strains our credulity by adding, "I could do everything."³⁰ Though his boasting must be discounted, it reveals the pattern of physical skills most prized by a nation bent upon conquest—a pattern in which a king might be expected to excel.

The importance of the horse in Persian life could scarcely be exaggerated. In war, hunting, and polo its rôle was central. So much were Persians accustomed to move from place to place on horses that a common measure of distance was a day's journey on horseback. The devout prayed to Mithra for his own health, but at the same time begged strength and speed for his horses, that he might destroy his enemies completely.³¹ He whose prayers to the goddess of Fortune were acceptable, was promised the reward of "horses swift and loud-neighing" and a swift, light chariot in battle.³² Darius set up a monument to his horse, maintaining that he gained sway over Persia by virtue of his horse and groom.³³

The soldiers' training was severe and long, though accounts vary somewhat as to its duration, and one must make allowance for the speculations of the Greeks. Herodotus says that from the fifth year to the twentieth they were taught to ride and use the bow; Strabo adds hurling the javelin to the list and spreads the period of training from five to twenty-four. Xenophon divides training into two periods: first, up to sixteen or seventeen; then an additional ten years of guard duty, hunting, and continued practice with bow and javelin which the men had learned as boys. According to Xenophon only those participated in this sort of training whose families were able to maintain them without putting them to labor. Strabo has the soldiers perform service in the army, both infantry and cavalry, between the ages of twenty and fifty. Xenophon makes the full-grown men spend twenty-five years after their second period of training subject to the orders of magistrates for military or other service in the interest of the state.³⁴

The daily regimen, says Strabo, began with rising before dawn, and mustering in one place, as if to arm or to go hunting. Here they were divided into companies of fifty, each under a leader who put them through a race over a course thirty to forty stadia in length. Toughness was developed through watching herds, staying on guard all night, exposure to heat, cold, and rain, and

²⁹ Herodotus, I, 136; Strabo, xv, 3, 17.

³⁰ Strabo, xv, 3, 8.

³¹ Müller: *op. cit.*, xxiii, 122.

³² *Ibid.*, xxiii, 273.

³³ Herodotus, iii, 88.

³⁴ *Ibid.*, I, 136; Strabo, xv, 3, 18-9; *Cyropaedia*, I, 2, 8-13, 15.

practice in crossing swift streams while keeping their clothes and weapons dry. According to Strabo's account the king gave prizes to encourage youth to excel in the exercises of the pentathlon. A certain amount of industrial labor and skill apparently was included in this early training of boys, for in the evening they are said to have worked at planting trees, cutting and collecting roots, and making armor, lines, and nets.³⁵

Diet was simple and limited. Each day, when at home, their meals were of bread, cakes of barley, stewed or roasted meat, cardamom, salt, and water. Youth were expected to forage for wild fruits and nuts while on excursions away from home. Xenophon has it that the older youth, when hunting, might eat the flesh of wild animals they had killed; Strabo, however, who may be thinking of the younger boys, says they were not to eat the meat of wild animals taken in the chase, but were to bring their bag home.³⁶

The education of young Cyrus, doubtless embellished considerably by his biographers, may be taken as an idealized pattern of a princely Persian's education. Herodotus says that when grown to manhood he was "the bravest and most popular of all his compeers."³⁷ Xenophon,³⁸ who refers to Cyrus as "most princely," modest, obedient, fond of horses and able to manage them, "assiduous in practising the warlike exercises of archery, and hurling the javelin," and fond of the chase, has described his education, showing the stress laid on skill in shooting, riding, and hunting:

"Thus he became more quiet, but was still in society extremely agreeable; for in whatever exercises he and his equals used to emulate each other, he did not challenge his companions to those in which he knew himself superior, but in those in which he felt himself inferior, he was the first to commence declaring that he would perform better than they. Accordingly, he would begin vaulting upon the horse, shooting with the bow, or hurling the javelin on horseback, while he was yet scarcely able to sit on a horse; and, when he was outdone, he was the first to laugh at himself; and as, on being unsuccessful, he did not shrink from attempting again the things in which he had failed, but assiduously employed himself in endeavouring to do them better, he soon attained an equality with his companions in horsemanship, and, by his love of the exercise, soon left them behind."³⁹

A glance at the Persian army and its equipment tells us something of physical skills needed by those who filled its ranks. The *Vendidad* mentions the

³⁵ Strabo, xv, 3, 18.

³⁶ *Ibid.*; *Cyropaedia*, I, 2, 8, 11, 16.

³⁷ Bk. I, 123.

³⁸ *Anabasis*, I, 9.

³⁹ *Cyropaedia*, I, 4, 4-5. From Xenophon's *Cyropaedia*, or *Institution of Cyrus*, and *The Hellenics*. Trans. by J. S. Watson and H. Dale. George Bell & Sons, London, 1891.

javelin, knife, club, bow, quiver, shoulder belt and thirty brass-headed arrows, sling, thirty slingstones, cuirass, hauberk, tunic, helmet, girdle, and greaves as the implements of war.⁴⁰ These are mostly duplicated in the description of equipment by Herodotus, who says that Persian corselets were metal-plated like the Egyptian, and their tunics and trousers were leathern. Strabo mentions rhomboid-shaped wicker shields. Their deadliest weapon was the arrow, which they commonly discharged from a kneeling position with such effectiveness that the enemy was often beaten, or in any case thrown into confusion, before much hand-to-hand conflict could take place. Archers were assisted by swift-moving cavalry which outflanked and surrounded the enemy forces, or pursued them when they took to flight.⁴¹ The army under the Sassanids had its chief strength in cavalry, both Persian and that of the tributary peoples. These knights commonly had for offensive equipment lances six feet long, bows and arrows, short straight swords, maces, axes, lassos, spears, and daggers. The chief strength of the Persian cavalry was always the bow, it is said; while that of their tributaries was in the spear, sword, and dagger. The infantry, at least at this time, was not very important; its members were but little trained in military skills and were armed only with wicker shields covered with skins. A reserve was provided of trained elephants, whose use had been learned from the Indians. They were also capable in siege-craft, which they are said to have learned from the Romans.⁴²

In the Iranian mythology, hunting is traced back to Tahmurath, descendant of Hushang, first king of the oldest dynasty, who is credited with having taught his people to weave, keep domestic animals, and to train the snow leopard and falcon for use in hunting.⁴³ Whatever the merit of the myth, which is similar to that of many other peoples, hunting was as old as their earliest history and continued to be a favorite sport, of the privileged classes at least, when Persia rose to leadership of the empire. Probably because it was both useful as preparation for war and also destroyed many obnoxious animals, it constituted a part of the regular training of Persian youth.

Although Xenophon was a great enthusiast for hunting, the rôle which he credited to it as a schooling for war amongst the Persians can scarcely have exceeded the reality. "They attend to hunting," he says, "as a matter of public interest, and the king, as in war, is their leader, hunting himself, and seeing that others do so; because it seems to them to be the most efficient exercise for all such things as relate to war. It accustoms them to rise early in the morning,

⁴⁰ Müller: *op. cit.*, iv, 169.

⁴¹ Herodotus, I, 71, 135; VII, 61; Strabo, xv, 3, 18-9; Rawlinson: *Five Great Monarchies*, III, 238-43.

⁴² Huart: *op. cit.*, pp. 149 ff.

⁴³ *Ibid.*, p. 206.



BAHRAM GUR HUNTING

(Courtesy, The Metropolitan Museum of Art, New York)

and to bear heat and cold; it exercises them in long marches, and in running; it necessitates them to use their bow against the beast that they hunt, and to throw their javelin, wherever he falls in their way; their courage must, of necessity, be often sharpened in the hunt, when any of the strong and vigorous beasts present themselves; for they must come to blows with the animal if he comes up to them, and must be upon their guard as he approaches; so that it is not easy to find what single thing, of all that is practised in war, is not to be found in hunting." ⁴⁴

Skill in hunting was a standard by which to measure kingly quality, whether in India, Egypt, Assyria, China, or Persia. It is not surprising, therefore, that Xenophon portrayed Cyrus as possessed of the greatest fearlessness and skill in hunting, so swiftly destroying all the wild animals in the paradise that the supply was not adequate to exercise his prowess. Seeing this, he besought his grandfather to allow him to hunt with others outside the park. Accordingly, Astyages, having learned of his desire to hunt abroad, "sent him out with his uncle, and sent some older persons on horseback with him, as guards upon him, to take care of him in the rugged parts of the country, and in case any beasts of the fiercer kind should show themselves. Cyrus, in consequence, was very earnest in inquiring of those that attended him, what beasts he was not to approach, and what sort of animals he might confidently pursue. They told him that bears had destroyed many that had ventured to approach them, as well as lions, wild boars, and leopards, but that stags, antelopes, wild sheep, and wild asses, were harmless creatures. They told him, likewise, that he must guard against rough places not less than the beasts; for that many men, with their horses, had been carried headlong over precipices. Cyrus attended to all these instructions very readily; but, as soon as he saw a stag leap forth, forgetting all that he had heard, he pursued, regarding nothing but which way the animal fled; and his horse, taking a leap with him, fell somehow upon his knees, and very nearly threw him over his neck. However Cyrus, though with difficulty, kept upon his back, and the horse got up again. When he reached the open ground he hurled his javelin, and struck the stag down, a fine large animal; and he was most highly delighted. But his guards, riding up to him, reproved him, told him into what danger he had run, and said that they must complain of him. Cyrus, having alighted from his horse, stood and listened to this with much uneasiness; but, hearing a shout, he sprang on his horse, as in a sort of enthusiasm, and seeing before him a boar advancing, he rode forward to meet it, and taking a good aim with his javelin, struck the boar in the forehead, and brought it down. But now his uncle, seeing his rashness, began to reprove him. Cyrus however, notwithstanding his uncle was finding fault with

⁴⁴ *Cyropaedia*, I, 2, 10. From *Xenophon's Cyropaedia, or Institution of Cyrus, and The Hellenics* Trans. by J. S. Watson and H. Dale. George Bell & Sons, London, 1891.

him, begged that he would allow him to carry off the beasts that he had taken, and to present them to his grandfather." ⁴⁵

Hunting was practiced both in open territory and in closed hunting parks or paradises, which were well stocked with lions, tigers, boars, stags, peacocks, pheasants, wild asses, gazelles, and ostriches. When hunting, the king was accompanied by a great retinue, frequently including even musicians. The bow and arrow were the favorite weapons for the chase, and fabulous stories are told of the accuracy with which they were used.⁴⁶ Nets, clubs, and spears were also used; and dogs for hunting were imported from India. The traditional sport had notable followers of royal blood as late as Chosroes II (590 A.D.) who is represented in contemporary sculptures as hunting the stag and the wild boar, assisted by beaters who drive the game toward him, while he is entertained by a company of harpists.⁴⁷

In a nation dominated by warriors, approved sports were military or served some warlike end. Fishing, so commonly linked in modern times with hunting as a sport, had no place in Persia save as an occupation of commoners. "To fish" meant "to hunt fish"; and a fisherman was one who made his living by hunting and disposing of fish. For such a purpose the net was the only proper instrument. Herodotus ⁴⁸ tells the fable, credited to Cyrus, of the piper who sought unsuccessfully to entice fish by his piping, but caught a great haul when he resorted to a net. Radcliffe says that native Persian has no word for "fish-hook," and there is no evidence of angling being practiced either in ancient or modern Persia.⁴⁹

Competing with hunting in popularity among the warriors of ancient Persia was chugan or polo, from a Tibetan word *pulu*—a light ball of willow root. This ancient game, between which and golf, cricket, hurling, *chicane* of Languedoc, and *calcio* of Florence, a kinship has been claimed,⁵⁰ has been credited by certain historians to some time before the beginning of history, and by others more specifically to about 600 B.C., when heroic Siyawush and his Persian players astounded Afrasiab, king of Turania, with their remarkable equestrian skill and dexterity with *gui* (ball) and *chugan* (stick). Firdausi drew the picture:

Now when the bright sun made the distance clear,
And showed its face from heaven to all the land,

⁴⁵ *Ibid.*, I, 4, 7-9. From Xenophon's *Cyropaedia*, or *Institution of Cyrus*, and *The Hellenics*. Trans. by J. S. Watson and H. Dale. George Bell & Sons, London, 1891.

⁴⁶ Nizami: *The Haft Paikar*, I, 48 ff.; Firdausi: *Shāhnāma*, VI, 382 ff.

⁴⁷ Julian the Emperor, p. 198; Huart: *op. cit.*, pp. 33, 76 f., 145 f., 197; Jackson: *op. cit.*, p. 222; Modi: *op. cit.*, pp. 12 ff.

⁴⁸ Bk. I, 141.

⁴⁹ *Fishing from the Earliest Times*, pp. 50 f.

⁵⁰ Ousley: *Travels*, I, 346.

The prince went from his palace to the Ground
 To play at polo. Garsiwaz came up
 And drove the ball, which Siyawush pursued
 And caught it fairly with the polo-stick,
 While his opponent only found the dust.
 The ball struck by the prince was seen no more:
 Thou wouldst have said: "The sky hath drawn it up!" ⁵¹

Discounting the early legends, Laufer credits polo's origin, about the beginning of the present era, to "Iranian tribes of Central Asia," whence it was carried into Persia and later into China.⁵² Though certain of its derivative forms became the games of commoners, polo was originally a sport so hard and hazardous as to be thought worthy of kings and nobility. Naturally its expensive equipment made it the privilege of men of wealth. A host of traditions, apocryphal stories, and poetic utterances told of its royal associations. Hystaspes, half-legendary king of Persia, is represented by Firdausi as wielding his *chugan* so well that:

The warriors paused, not one could see the ball,
 His stroke had made it vanish in mid air! ⁵³

Allegorical interpretation of the universe, creation, life, fate, destiny—in short, the whole of human *Tun und Streben*—runs through Persian literature on polo. As 'Ārifī says:

Before I speak of the present state of things I
 must speak of the Glorious Creator . . .
 By Him the ball of the sphere is circling around
 the polo stick of the new moon . . .
 By His wisdom are set in action the polo stick
 of Fate and the ball of Destiny. . . ⁵⁴

An oft-told story ran that, upon Alexander's succession to the throne, the Persian monarch (with no flattering intention) sent him a ball and polo stick with which to play. Alexander accepted, reading a fair meaning in the gift—that the ball was for him the earth and he, himself, the stick to drive it.

Under the Parthians, who came to power in Persia after Alexander, little is known of polo. Throughout the Sassanid dynasty, however, the game flour-

⁵¹ *Shāhnāma*, II, 292. Trans. by A. G. Warner and E. Warner. Courtesy of George Routledge & Sons, Ltd. and Kegan Paul, Trench, Trübner & Co., Ltd., London.

⁵² Laufer: "The Early History of Polo," *Polo*, VII, 13. For an excellent treatment of polo see Carl Diem, *Asiatische Reiterspiele*, Deutscher Archiv-Verlag, Berlin, 1942.

⁵³ *Shāhnāma*, IV, 350.

⁵⁴ Greenshields: *The Ball and the Polo Stick*, p. 5.

ished. Ardashir, its founder (226 A.D.), reputedly excelled in hunting and polo. Shapur, the son of Ardashir (241-272), is said to have revealed his kingly lineage by the unabashed recovery of a polo ball which fell right at the sovereign's feet. Bahram Gur, famed for his prowess in archery and hunting, is said to have been accomplished also in horsemanship and polo—everything, in fact, "useful or necessary for kings." At the end of the Sassanian period, perhaps earlier, ladies of the court are said to have played at polo with great skill. Under the Mohammedans, who for some time were too busy with warfare, polo apparently fell into disuse, but by the ninth century it had gained popularity among them as it had under the Sassanians. Harun-al-Rashid, still a mere boy, was described as unable to reach or hit the ball with a polo stick. In the twelfth century polo was popular at Constantinople, where Manuel Comnenus and his nobles were enthusiastic players. The conquering Tamerlane is credited with introducing a novel feature at Damascus, where his warriors used enemy heads for the game of *gui* and *chugan*.⁵⁵

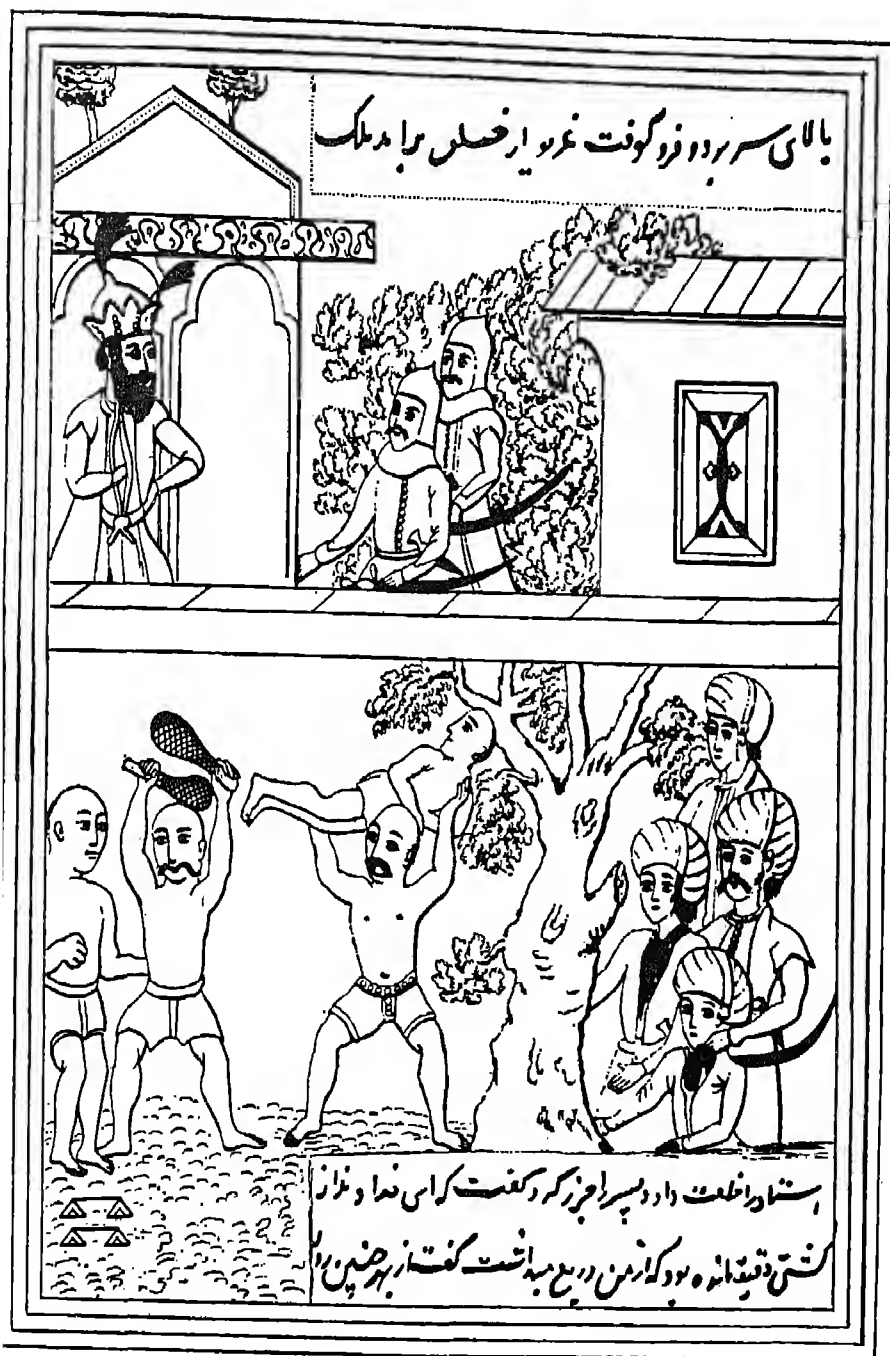
The ancient game, like the modern in all essential features, involved two opposing teams which, contending for the ball, sought to drive it through a goal (*mil*), using a long-handled mallet. The head of the stick varied: at times it was curved and spoonlike, so as to catch the ball; again there were crescent-shaped and straight transverse heads. Stone goal posts, nine feet high and twenty-four feet apart, still stand at Isfahan; the field (*maidan*) there measured 1,680 feet by 510 feet. The number of players was sometimes great, but four or six on a side probably constituted matches as a rule.

Persian traditions, recorded in their literature, are filled with heroic battles, feats of horsemanship, archery, and conquests of wild beasts in hunting. Of less warlike contests, little is said. Strabo⁵⁶ has it, however, that the king gave prizes to victors in running and the other contests of the pentathlon, but the nature and extent of such events is left obscure. Perhaps through contact with her neighbors wrestling gained ground in Persia. However that may be, as described by modern travelers it seems to have become a complex science. Ouseley shows two wrestlers being instructed by a master in some of the "tricks by which an antagonist may, without a blow, be extended backwards on the ground."⁵⁷ In the entire range of this Persian "jiujitsu" there were said to be 360 different ways by which to vanquish one's opponent. In this connection Ouseley relates the story of a master of wrestling who had taught his protégé every trick save one. The neophyte, becoming proud, insultingly challenged his teacher to a match before the governor. The contest was arranged; but,

⁵⁵ Ouseley: *op. cit.*, I, 345-55; Sykes: *Ten Thousand Miles in Persia*, chap. 29; Modi: *op. cit.*, pp. 20 ff.; Brown: *Polo*, chap. 1; Huart: *op. cit.*, pp. 143, 154; Jackson: *op. cit.*, p. 266.

⁵⁶ Bk. xv, 3, 18.

⁵⁷ *Op. cit.*, I, 234 ff.



A MASTER ABOUT TO THROW HIS PUPIL

(W. Ouseley, *Travels in Various Countries of the East*, 1, Pl. xiii)

alas for the vain youth, all his skill and vigor could do nothing against the one trick which his master held in reserve. Completely undone, he was lifted bodily in the air above his master's head and hurled to the ground. The tale recalls the "house of strength" described by Buckingham in his *Travels in Assyria, Media, and Persia*. These gymnasia or athletic clubs, of which there were four or five at Shiraz and many others, he says, at Isfahan, Kermanshah, Teheran, and even Bokhara and Samarkand, were once subsidized by the government; but at the time of his visit, this was no longer true, and much of the support came from the public, which was attracted thither by the startling feats of skill that were performed. Champions went from place to place and challenged local talent. The skill and power of one of these, Melek Mohammed, who caught his opponent "by a single grasp, whirled him in the air, and threw him so violently on the ground that he expired on the spot," recall the scene of the professor of wrestling and his puffed-up pupil.⁵⁸

Though dancing was characteristic of primitive Aryan life, and Xenophon says that Cyrus, though growing old, "made the usual sacrifices" and "led the dance among the Persians according to the practice of the country . . . as he had been accustomed,"⁵⁹ there is no reference to dancing as a part of the education of Persian youth. In this, as in other matters, Xenophon may have had his eye on Sparta. However that may be, dancing had a strong hold in some circles. Certain Persian dance movements were introduced into Greece. A Persian dance, similar to one of the Cossacks, in which the dancer squats and alternately thrusts the legs forward horizontally, was known as *oklasma* to the Greeks, whose artists depicted it on certain vases about the fourth century B.C. Rumi, thirteenth century Persian poet, declared that he who knows "the power of the dance" knows God. The whirling dervish dances of his day, Sachs believes, must run back to primitive motifs thousands of years old in central Asia.⁶⁰

With the development of Persian society, as in other Oriental civilizations, dancing appears to have become exhibitional in character and was associated with professional entertainers, generally of a low social status. Grove⁶¹ asserts that "the religion of the country" sought to suppress dancing and even the records of it, but noted the continuance of professional dancing in great cities and also of certain dances of peasants in remote regions. Other modern observers of Persian life have commented on the prevalence of exhibition dancing, provided by professional entertainers. Some of the exhibitions at the

⁵⁸ Buckingham: *op. cit.*, II, 38-40.

⁵⁹ *Cyropaedia*, VIII, 7, 1.

⁶⁰ Sachs: *World History of the Dance*, pp. 4, 29 f., 42, 142; Keller: "An Oriental Dance on an Attic Vase," *Bul. Fogg Museum of Art*, IX, 56 ff.

⁶¹ *Dancing*, p. 350.

"house of strength," described by Buckingham, were a mixture of wrestling, dancing, and acrobatics:

"At the sound of a drum and guitar, the men began to exercise themselves with large clubs held across their shoulders, moving in a measured dance: they next began to jump, and then stoop to the ground, as if about to sit, springing up again suddenly on their legs: they next swung one foot for a considerable length of time, and then the other; after which there was violent jumping and dancing, and afterwards a motion like swimming on the earth, by placing their breasts nearly to touch the soil, then drawing their bodics forward, and rising again, some even in this position bearing a man clinging fast to their loins. They next began to walk on their hands, with their feet in the air, falling from this position hard on the ground, turning head over heels in the air, and, last of all, wrestling with each other. All these feats were performed to measured tones of music; and each encounter of the last description was preceded by the recital of a poem, in order to encourage the combatants, which was done by the master of the place."⁶²

Ouseley also reported dances, frequently acrobatic in nature, at the "houses of strength," in which boys, dressed in women's clothing, imitated dancing girls. Another "very extraordinary dance," which reminded him of the ancient Roman Salians, was performed by eighty or a hundred athletic men, accoutered with swords and knives and accompanied by music and a chant in praise of Mohammed.⁶³ Jackson reports dancing exhibitions somewhat like nautch dances of India, performed by handsome effeminate boys, and suggests that it may have been such as these whom Zoroaster's teaching condemned.⁶⁴

Ceremonial cleansing and healing by incantation, with fees to the priests graduated according to the wealth and station of the person served, were provided in the sacred books of Persia. Numerous regulations concerning ablution of the face and hands, under various circumstances, appear in the Pahlavi texts. In certain cases propitiation required that the body and the clothes be thoroughly washed.⁶⁵ Apart from ritualistic cleansing, however, a superstitious regard for elements, such as fire, earth, and water, was prevalent in Persia and led to extraordinary efforts to keep them from pollution. Strabo says that the Persians neither bathed nor washed themselves in rivers, nor permitted pollution of them in any way. Elsewhere, however, Strabo casually drops a hint as to bathing: speaking of the intensity of the heat, he observes that cold water placed in the sun is quickly warmed for bathing. The taboo on bathing in

⁶² Buckingham: *op. cit.*, II, 36 f.

⁶³ Ouseley: *op. cit.*, I, 190; III, 170 f., 402; Browne: *A Year amongst the Persians*, pp. 119 f., 320.

⁶⁴ Jackson: *op. cit.*, pp. 52 f.; Müller: *op. cit.*, IV, 100 ff.

⁶⁵ Müller: *op. cit.*, IV, 84 f., 129 ff., 138 ff.; V, 259, 278, 293, 307, 333, 347.

rivers did not apparently interfere with the exigencies of war, since Strabo informs us that youth were trained "to cross torrential streams" in preparation for it, which implies learning how to swim. Herodotus says, however, that many of the barbarians lost their lives at Salamis because "they did not know how to swim."⁶⁶ Presumably the Magi were most meticulous about such taboos; a modern scholar asserts that the priests once overthrew a king because he built bathhouses, thus promoting the pollution of water.⁶⁷ The case, of course, does not establish a rule, but it shows the fanatical attitude of the priesthood and the extremes to which a principle might be carried before orthodoxy gave way to a more enlightened conception of sanitation. In modern Persia, Buckingham reported, the baths were "of a superior kind."⁶⁸

⁶⁶ Herodotus, viii, 89; Strabo, xv, 3, 10, 16, 18; Modi: *op. cit.*, p. 37.

⁶⁷ Müller: *op. cit.*, iv, xc.

⁶⁸ *Op. cit.*, I, 172, 185 ff., 349 f.; II, 65.

3

EMPIRES OF THE SEA

Minos is the first to whom tradition ascribes the possession of a navy. He made himself master of a great part of what is now termed the Hellenic sea. . . . [later] the Hellenes likewise began to build navies and to make the sea their element. THUCYDIDES

ISLAND EMPIRE

CRETAN DOMINION

THE PEOPLE AND THEIR CULTURE A renowned traveler observed that the Greeks did not generally agree about their traditions.¹ Lacking exact history, they referred variously to the Pelasgians, "Peoples of the Sea," who by one account were a pre-Arcadian folk; by another, dwellers at the foot of Athens' Acropolis; and again, expellers of the Minyans from Lemnos.² Herodotus reported vestigial survivals of a "Pelasgic race" who still spoke a barbarous (i.e., non-Hellenic) tongue he could not understand.³ Thucydides says that Pelasgians, the most widespread of pre-Hellenic tribes, gave their name to various districts.⁴ Homer gives a place to the "stout Pelasgians" from Larissa, and elsewhere notes them among the many-tongued peoples of Crete.⁵ Diodorus says that migrating Pelasgians found a haven in Crete, being the first outsiders to mix with indigenous Cretans.⁶

Certain modern scholars, partly in harmony with Hellenic tradition, find the perplexing Pelasgians a pre-Hellenic folk originally of northern Greece, some of whom were driven by invading Achaeans to the hills of Thessaly (perhaps about 2000 B.C.) and others to piracy on the sea. Some link them with Tyrrhenians, Lydians, Etruscans, and other peoples of the Mediterranean and its borders, as did the Greek historians.⁷ As for the Eteo-Cretans, a non-Hellenic folk who, Diodorus and Strabo report, claimed to be the oldest population of

¹ Pausanias's *Description of Greece*, ix, 16, 7.

² *Ibid.*, i, 28, 3; vii, 2, 2; viii, 1, 4; 4, 1.

³ *The History of Herodotus*, i, 57.

⁴ Thucydides, i, 3.

⁵ *The Iliads of Homer*, ii, 747-9; *The Odysseys of Homer*, xix, 244.

⁶ Diodorus of Sicily, v, 80.

⁷ *The Cambridge Ancient History*, ii, 12, 476; Burn: *Minoans, Philistines, and Greeks*, pp. 58 ff., 132 f.; Glotz: *The Aegean Civilization*, p. 39; Herodotus, i, 57; Thucydides, iv, 109.

the Island sprung from the very soil, they are known to-day as members of the long-headed Mediterranean race which held sway before the advent of Indo-Europeans (the short-headed Achaeans and Dorians), who gradually mixed with them and rose to dominion. As for physical appearance the primitive Cretans were small, slender-waisted, athletic, and wiry. They are commonly represented with long hair, but with faces smooth-shaven.⁸

What the great river valleys were to the peoples of Egypt, Mesopotamia, India, and China, the sea was to the early Cretans—challenger and benefactor. Strabo⁹ noted that the islanders were once rulers of the sea. Cretan Minos, Thucydides says,¹⁰ was the first who created a navy, gained possession of most Hellenic waters, conquered the Cyclades and colonized them, and then sought to clear the sea of pirates. It seemed to Aristotle¹¹ that the Island, with one extremity near the Peloponnesus and the other reaching out to Rhodes and the Asian coast, was designed for dominion. Hence it was that Minos was able to create "the empire of the sea." Modern history and archaeology support the ancient authors' view that Cretan culture was made "possible only by the sea." With Crete as center, the eastern Mediterranean became the first great mixing bowl of early cultures of many lands.¹² Situated here, the neolithic Aegeans occupied a position of unsurpassed importance at the crossroads of the highways of the sea, reaching from the cities of the Nile to the mainland of Europe and to the little islands of the Aegean which lie like steppingstones to Asia Minor and the civilization of the fertile valleys beyond. In Crete, their island home, stone tools and weapons were soon laid aside, and a great bronze age culture arose, whose "ninety cities" were to "crown the famous shore."¹³

Though there are still many uncertainties, more is known to us to-day of that "Golden Age" which preceded historic Sparta and Athens than was known to the Greeks themselves. But until Schliemann dug up ancient Ilium, Tiryns, and Mycenae (1870-1884)¹⁴ and Evans¹⁵ bared the famous town of Knossos (1900-1905), little was known, save what Greek tradition vaguely told, of the great pre-Hellenic Aegean civilization centering on the Island of Crete and reaching out to numerous points of the Mediterranean basin. Thanks to them, their associates and successors, one may speak to-day with fair assurance of certain aspects of a bronze age civilization which arose on a base of neolithic cul-

⁸ Diodorus, v, 64; *The Geography of Strabo*, x, 4, 6; Glotz: *op. cit.*, pp. 57 ff.; Hall: *Aegean Archaeology*, pp. 34 f., 258; Mosso: *The Dawn of Mediterranean Civilization*, chap. 26.

⁹ Bk. x, 4, 17.

¹⁰ Bk. i, 4.

¹¹ *Politica*, ii, 10.

¹² Hall: *op. cit.*, pp. 259 f.; Mosso: *op. cit.*, p. 282; Glotz: *op. cit.*, pp. 5, 44.

¹³ *Od.*, xix, 243-4.

¹⁴ Schuchhardt: *Schliemann's Excavations*, pp. 6-15.

¹⁵ *The Palace of Minos at Knossos*, i, v-vii.

ture, five or six millennia before our era. In the development of this civilization four main periods are recognized: a neolithic age, 6000?-3000 B.C.; Early Minoan, 3000-2100 B.C.; Middle Minoan, 2100-1500 B.C.; and Late Minoan, 1500-1200 B.C. In respect to metals, the Minoan civilization of Crete passed through a transition Chalcolithic period, 3000-2400, and the bronze age, about 2400-1200.¹⁶

Crete had developed extensive trade, built its first palaces, and reached an advanced state of culture in many respects by 2000 B.C. After 1700 a vigorous expansion took place, culminating in the "Golden Age" of Cretan culture, about 1580-1400.¹⁷ Thereafter, Crete lost her leadership following an apparently cataclysmic destruction of Knossos, when Minos, according to ancient story, conducted a disastrous punitive expedition against Sicily.¹⁸ If this was the occasion of the collapse of Knossos, other forces may have been operative: rapid expansion, with an attendant weakening of the native stock and spreading thin of policing power; growth of a population, whose food in some degree depended on supplies from Egypt; rise of Mycenae, whose lords would naturally desire to eliminate the middlemen of Crete; development of a burdensome bureaucracy; excessive refinement, delicacy, and vice,¹⁹ to which prosperous civilizations are commonly heir: decay of martial spirit and prowess, following centuries of internal harmony; and the introduction of mercenary service in place of that of native sons. Internal revolution, advanced by Evans as the cause, is discounted by others. Invasion from the mainland seems a more reasonable explanation.²⁰

While Cretan society is known but imperfectly, certain tendencies in social development are clear. From the large clan of the third millennium B.C. the smaller family had developed at the height of Cretan power. Women occupied a place of considerable importance and freedom. The pre-eminent cult of the Mother Goddess, whose priestesses they were, suggests the central position of women. There was no harem. Glotz infers a certain equality in marriage, which must be within the clan. Kinship was determined by reference to the mother. Spinning, weaving, and grinding corn were common occupations, and doubtless most employments were domestic, but women also made pottery, drove chariots, engaged in the bull-grappler's art, went hunting, and attended exhibitions and festivals.²¹

Authority in early Cretan society was probably marked by an extreme local-

¹⁶ *Ibid.*, I, 32 ff.; Glotz: *op. cit.*, pp. 20-8.

¹⁷ Glotz: *op. cit.*, pp. 42 ff., 48 f.; Burn: *op. cit.*, pp. 48 f., 72, 83.

¹⁸ Herodotus, VII, 170-1; Diodorus, IV, 79.

¹⁹ Athenaeus, XIII, 602.

²⁰ Evans: *op. cit.*, II, Pt. II, 755 ff.; Burn: *op. cit.*, pp. 85, 96 ff.; C.A.H., II, 442 f.; Hall: *op. cit.*, p. 260.

²¹ Glotz: *op. cit.*, pp. 131 ff., 143 ff., 175.

ism, power being in the hands of tribal chiefs. Gradually, however, after centuries of growth, a degree of centralization emerged, cities being ranged against each other. Ultimately one of these, Knossos, gained supremacy. Her kings, whom tradition preserved in Minos, wielded an authority supported by a religious sanction, and each was at once ruler, priest, lawgiver, and judge.²²

Archaeological investigations show that occupational activities reached a high state of development before the collapse of Cretan power, and later, for a time, at Mycenae and other centers of Aegean civilization. Though soil fit for cultivation was found only in small plots, and implements were rather crude, agriculturists grew barley and wheat and developed the olive, the vine, and many fruits. Bee culture and poultry-raising were also known. Of domesticated farm animals there were cattle, sheep, goats, and swine. Horses were in use in the late Minoan Age, about the same time they were brought into Egypt. Hunting and fishing supplemented the products of the soil. Certain natural resources were plentiful; those lacking, such as metal and stone of various kinds, were readily made good from near-by islands, Egypt, and more distant lands. Boat-building was indispensable to these island traders; native cypress was available for their craft, and cedar could be obtained from Lebanon. Copper came from Cyprus, and tin from distant Britain through Iberian ports. Iron was unknown till brought by the Dorians at the end of the Minoan Age. Manufactured goods reveal a thriving industrial scene of woodcutters, carpenters, founders, engravers, artists, sculptors, potters, armorers, builders, and masons, whose products were locally consumed or exchanged in trade. The Palace of Minos had its own extensive workshops.²³

Out of primitive markets a large urban population gradually developed. Some communities were agricultural centers, while others developed industries and commerce. Homer speaks somewhere of ninety, elsewhere of a hundred, cities and a multitude of men. A host of communities have been excavated, the list of which already exceeds Homer's. Many of them had large populations. Evans thought Knossos might have had a population of 100,000. In such thriving cities, money, weights, measures, a numeral system, and writing were perfected as the needs of this world of traders expanded. By 2000, extensive trade had developed in the Aegean civilization; only at the decline of Cretan-Mycenaean power in the thirteenth century did trade with Egypt disappear. This commerce was carried by an extensive network of sea routes, connecting with well-developed roads on the Island of Crete. One of the most important, suited for wheeled traffic, ran north from Phaestos to the city of Knossos.²⁴

²² *Ibid.*, pp. 147 ff.

²³ Mosso: *op. cit.*, chap. 24; Glotz: *op. cit.*, pp. 52, 154, 161 ff., 172 ff., 188, 191 ff., 224, 389, *passim*.

²⁴ Evans: *op. cit.*, II, Pt. II, 572-8; Burn: *op. cit.*, pp. 72, 84 f., 146; Mosso: *op. cit.*, p. 116; Hall: *op. cit.*, pp. 211-32; Glotz: *op. cit.*, pp. 138 f., 185.

INTELLECTUAL CULTURE Diodorus ²⁵ credited the origin of letters to the Muses, children of Zeus who had been nurtured by the priestly Cretan Curetes in a cave of Mt. Ida. The Phoenicians, he judged, borrowed and changed them, and received unearned credit for the invention of others. Though a half century ago Schlicmann ²⁶ found no evidence of writing at Mycenae, and the belief was expressed that there was no evidence of a written language in Cretan-Mycenaean culture, Evans' discoveries shortly showed that there had been an extensive use of writing which was "of indigenous and specifically Cretan origin"; and that not one but several scripts were distinguishable, one of which had been common to all Crete, the other a palace script of Knossos. Though Cretan is similar in some respects to Egyptian and other early pictographic scripts, experts differ as to their relationship and influence upon each other. Evans believes, however, that the Cretan was "essentially of home growth." ²⁷ Knossos' burning had had the happy result of firing and thus preserving clay tablets that would otherwise have been destroyed. With their goods, Cretan traders carried their writing to distant places; Iberian script, Evans ²⁸ believed, had been influenced by Cretan. Even after Knossos' loss of supremacy, the Island folk seem to have continued the use of writing, but its employment declined under the Achaeans, who appear to have had slight need of it.²⁹

Though the stylus was commonly used, a few inscriptions in ink have been found. Hall supposes that pens and ink "must have been regularly used," and that papyrus was probably "imported from Egypt" and used for longer documents; but these have not survived. Clay tablets were presumably used chiefly for briefer matters, "accounts, bills, lists," and perhaps letters. The Cretan language, neither Semitic nor Indo-European, and the script still remain puzzles, though a few peculiarities of Cretan names and certain words are known through survivals in historic times.³⁰ The Cretan numerical system is understood; Hall remarks, "We can count in Minoan cyphers though we do not know how to pronounce their names." ³¹ The far-flung Cretan business world and the evident use of writing and a numerical system suggest the necessity of some sort of formal schooling. A room, thought to be a schoolroom, has

²⁵ Bk. v, 70, 74.

²⁶ Mycenae, p. 336.

²⁷ Evans: *Scripta Minoa*, I, 236-44; Hall: *op. cit.*, pp. 211 f., 216 ff., 222. Dr. Bedrich Hrozný's claim to having deciphered the Cretan script and that of Mohenjo-Daro has aroused great interest, but doubt is entertained as to the soundness of his conclusions. See, for example, the review of his *Die Älteste Geschichte Vorderasiens und Indiens* (Prague, 1943) and *Kretas und Vorgriechenlands Inschriften, Geschichte und Kultur* (Stuttgart, Prague, 1943), by A. E. Kober, *Am. Jour. of Archaeol.* (Oct.-Dec., 1946), I, 493-5.

²⁸ *Scripta Minoa*, I, 99.

²⁹ Tsountas and Manatt: *The Mycenaean Age*, pp. 291 f.

³⁰ Glotz: *op. cit.*, p. 387.

³¹ Hall: *op. cit.*, p. 217.

been unearthed, but it is open to question. Glotz thinks, however, that since writing was so very common, "schools and writing-masters must have existed all over Crete."³²

PHYSICAL CULTURE AND AMUSEMENTS The last palace at Knossos reveals in its art, vast stores of weapons, and tablets giving an account of the stock, a lively concern with the equipment of war. The panoramic Shield Fresco on the great stairway, depicting the military parade, was later imitated at the palace of Tiryns when power had shifted to the mainland. Armed forces on the Island were probably not large. While at first constituted of natives, contingents being supplied by local chiefs who recognized the sway of Knossos, mercenaries were later employed to some extent at least. Part of these were evidently Negroid, and may have served as a palace guard. War galleys were doubtless of great importance in an island empire. Clay models of boats appear in the early Minoan period. Many types are depicted throughout the centuries of Cretan power, but, being miniature, there are no full, detailed replicas. Some were equipped, however, with mast, sails, fixed rudders, and oars, even as many as twenty-eight pairs. Figures, interpreted as seated or squatting rowers, are found on seals as early as the third millennium.³³

For defensive armor early Cretan soldiers had unwieldy, wide, towerlike shields, long enough to cover all but the head and feet. On the steatite chieftain goblet found at Hagia Triada only the heads are visible. These shields were a wooden framework, covered with skins. Later many variations occur: one, somewhat shorter, rounded at the ends, narrower in the middle, resembling in shape an "S" or an hourglass; another, narrow, semicylindrical; and a very small, circular, metal-covered shield, not native to Crete, but introduced from Asia and Cyprus. Cretan soldiers did not wear greaves, though these were a part of equipment in Mycenaean days. Helmets of leather or skin, sometimes covered with metal plates, and others wholly of metal were used, but were more common at Mycenae than on the Island. There the helmet was more often used by athletes, acrobats, and hunters than by soldiers. Corselets were used to some extent in Mycenaean days, but not commonly in Crete. Offensive equipment, more extensive and perfect, included the bow and arrow, spear, dart, dagger, and sword. The sling, commonly used by neighboring peoples, does not seem to have been employed by the Minoans.³⁴ Spears were made variously, both for close fighting and for throwing, the war spears or javelins being generally five to six feet long. Hunting spears were slightly longer. Bronze early supplanted flint for arrows and for spearheads. Cretan metal daggers were first of copper, then of bronze, but iron was unknown before the Dorian invasions. In

³² *Op. cit.*, pp. 778 f.

³³ Evans: *Palace of Minos*, II, Pt. I, 220-52; Pt. II, 755; IV, Pt. II, 520 f., 785 ff.

³⁴ *Ibid.*, II, Pt. I, 344.

the manufacture of metal weapons Cretan armorers reached a high degree of perfection, joined with artistic embellishment. Mycenaean overlords seem to have depended on Cretan sources, for some time at least, for fine weapons, and other near-by and distant powers imported Cretan arms and then imitated them.

About the sixteenth century, when Crete was entering upon her "Golden Age," "thoroughbred horses" and chariots were introduced from Syria. From that time on they took a prominent place in war, and were also used in hunting, both on the Island and later in the Peloponnesus. The palace in Knossos was well supplied not only with entire chariots but also with an extensive array of parts, ready for assembling or for repairs.³⁵

Judging from archaeology and from early literature, the bow seems to have been a most characteristic weapon. Mycenaeans and Cretans used it in war and in the chase. Tradition said that Apollo invented the bow and taught the Cretans its use; hence archery was "especially cultivated by the Cretans," and the bow itself was called Cretan.³⁶ Plato³⁷ credited archery with a prescribed place in Cretan education in his day. Pausanias thought the Cretans "the only Greek people" accustomed to use the bow, and spoke of a grave of Cretan bowmen at Athens. In historic times Lacedaemon had Cretan bowmen in her service, while Rome employed "a corps of Cretan archers" in the conquest of Greece.³⁸

Of all sports, hunting was doubtless closest to the heart of Cretan and Mycenaean warriors, just as it was closely linked with the soldier class in other lands. A country abounding in wild life—deer, boars, lions, wolves, wild fowl—provided plentiful opportunities. Numerous artistic portrayals of hunting scenes have come to light. Most remarkable for their artistry are those on the bronze swords, inlaid with gold and silver, discovered by Schliemann at Mycenae. Hunters of the most dangerous animals, as commonly represented, are armed just like soldiers. The wild boar, lion, and deer were their choicest prey. Boar-hunting was practiced in early Cretan times, but at the close of the Minoan Age the sport was much more common on the mainland than on the Island. Boar-hunting scenes were a favorite theme of artists at Tiryns. A spirited scene from a Vaphio tomb represents a hunter spearing a long-tusked boar which is charging him in a headlong leap. The cups of Vaphio show that nets were also employed in hunting. Dogs, both male and female, which look like greyhounds, were used in hunting animals and birds. Large cats seem to have been trained for use in taking wild birds and smaller animals. Certain hunting

³⁵ *Ibid.*, I, 16; II, Pt. I, 155, 244; Pt. II, 576 f.; IV, Pt. I, 250 f.; Pt. II, 785-871; Tsountas and Manatt: *op. cit.*, pp. 191-216; Clotz: *op. cit.*, pp. 84-101.

³⁶ Diodorus, v, 74.

³⁷ Laws, I, 625.

³⁸ Pausanias, I, 23, 4; 29, 6; IV, 8, 3; VII, 16, 1.



HUNTING SCENES, SWORDS OF MYCENAE

(Courtesy, Professor C. A. Robinson, from G. W. Botsford and C. A. Robinson, *Hellenic History*, Rev. Ed., Pl. 7, The Macmillan Company, New York, 1948)

scenes in which the cheetah is shown pursuing ducks in water filled with lotuses, parallel Egyptian scenes closely.³⁹

Lion-hunting is commonly portrayed in late Minoan art, especially in remains found on the mainland. On a dagger blade from Mycenae four hunters, armed like soldiers with shields, bows, and spears, are engaging three lions, one of which turns on his pursuers. In many instances the beast himself is shown as hunter seizing his prey. In several lifelike scenes two lions are fighting for possession of a stag they have brought to ground.⁴⁰ Minoan hunters are also shown taking the semiwild great horned sheep by means of a lasso. A terrifying looking wild goat, the *agrimi*, was also an object of the chase.

Deer were common in Crete from early times, apparently, and furnished an entrancing subject for chase-inspired artists. Common red deer and the dappled deer are represented. Cretan artistic remains depict women engaging in hunting as did mythical Atalanta. Represented as Artemis or Dictynna, they are shown armed with bow and arrow, with quiver on the left shoulder, and dressed sometimes in hunting outfits such as were worn by men. A fresco from Tiryns represents women driving a chariot in a hunting scene. Deer-hunting in a chariot in full career is shown on a gold signet ring from a grave at Mycenae.⁴¹ Though the use of the chariot in stag-hunting is commonly depicted, the nature of the terrain makes it reasonable to suppose that the artists were led into exaggeration by the attractiveness of the theme. Probably only the southern plain of Mesara on the Island, and the plain of Argos, were well adapted to the use of such a vehicle in hunting.⁴²

Bull-grappling was highly developed in the Minoan Age. Believed by Evans⁴³ to have had its prototype in western Asia as early as 2400 B.C., evidences of it are found in Crete about 2100 B.C. or earlier. From the eighteenth century to the end of Cretan power, bull-grappling contests were a favorite theme of mural decorators and producers of a great variety of small art objects, jewelry, statuary, vases, cups, and seals, who reached their height of perfection in Crete's "Golden Age." When northern invaders first came to Knossos they must have looked in amazement at the marvelous frescoes on her palace walls. Under Mycenaean leaders these sports were carried to the mainland, or in any case were frequently represented at Mycenae, Vaphio, and Tiryns. The bull-baiting or hunting scenes depicted in Atreus' tomb at Mycenae are thought to be the work of Cretan artists using Cretan materials, though the work was probably done on the mainland. With the rest of Minoan culture, bull-grappling declined at the coming of the Dorians and all but disappeared. Its influ-

³⁹ Gardner: *New Chapters in Greek History*, p. 66.

⁴⁰ Perrot-Chipiez: *Histoire de l'Art dans l'Antiquité*, VI, 779 ff.

⁴¹ Schliemann: *op. cit.*, p. 223; Evans: *Palace of Minos*, IV, Pt. II, 824.

⁴² Evans: *Palace of Minos*, I, 720; IV, Pt. II, 569-90.

⁴³ *Ibid.*, I, 15, 189 f.

ence may be reflected, however, in a modified form in Thessalian bull-fighting, involving horsemanship, which was so famous as to invite comment from Roman writers such as Pliny and Suetonius.⁴⁴ Memory of the Cretan sport was also kept alive in the traditions of Theseus' exploits with the Minotaur and the sacrifice of the bull of Marathon.⁴⁵

Although the bull-grappling scenes have much in common, Evans convincingly distinguishes two varieties: one represents hunting wild, or semiwild creatures in more or less rugged, open terrain; another, a more formalized, perfected acrobatic performance which took place in an arena and had generally a religious ceremonial connotation. Such ceremonial grappling of sacred animals is depicted as early as the third millennium.⁴⁶ Early representations show the bull decorated with sacral coverings, blankets, or nets. In later times ceremonial exhibitions were viewed from grandstands in which the shrine of the Mother Goddess, "Our Lady of the Sports," had a central position. Performing acrobats, both male and female, may have been regarded as servants of the Goddess Mother who presided over them. The religious significance of the events is often indicated by certain conventional "Sacral Knots" and also, in some instances, by the presence of a deity, altar, and a long-robed sacrificing priest who plunges a dagger into the animal's neck. Save for these sacrificial scenes, where the priest, not the torcador, slew them, the animals were not slain—a feature which differentiates Minoan contests from Roman and Spanish beast fights of historic and present times.⁴⁷

The famous Taureador Frescoes, which Evans placed not later than the sixteenth or fifteenth century, show the great perfection of Cretan mural decoration. An excellent restoration shows a gigantic, spotted, horned bull in full career, a male acrobat head over heels in a somersault over his back; and two female acrobats, one with her arms over the bull's horns, the other standing behind the animal holding outstretched arms to assist the vaulter as he comes to ground. The logical order of this "act" seems to be (1) seizure of the horns of the approaching bull, (2) a high swing in air as the animal tosses his head, (3) a backward somersault, landing on the bull's rump, and (4) a final leap to the arms of the assistant. This and similar stunts, Evans notes, have been called "impossible" by a modern expert "steer-wrestler." Many other artistic representations show athletes doing the "impossible": thus, certain gems from Mycenae show wrestlers apparently lifting bulls completely from the ground.⁴⁸

These spectacular exhibitions were obviously most dangerous, and witnessing them evidently thrilled large audiences. They challenged the skill of many an

⁴⁴ *Natural History* (Rackham), viii, 182; *Claudius*, 21.

⁴⁵ *Pausanias*, i, 24, 1; 27, 10; iii, 18, 16.

⁴⁶ Evans: *Palace of Minos*, II, Pl. 1, 260; III, 204, 223 f.

⁴⁷ *Ibid.*, III, 207, 226 f.

⁴⁸ *Ibid.*, III, 212 ff., 222, 231 f.



BULL-GRAPPLING ACROBAT

(A. Evans, *The Palace of Minos at Knossos*, III, Fig. 296, Macmillan & Co., Ltd., London, 1932)

artist who lavished his pains no less, perhaps even more, on representing the animals than the human performers. Yet the acrobats do not come off badly, whether in the frescoes or in statuettes. Of the latter, the most perfect specimen is found in a figurine of a youthful bull-leaper, executed in ivory pieces, ingeniously joined together. The excellence of this piece, in particular, led Evans to think that such "well-set arms and shoulders and strongly developed pectoral muscles" betokened a "careful physical training. . . ." ⁴⁰

As to who the performers were, no one knows. Some have thought them cap-

⁴⁰ *Ibid.*, III, 429.

tives, trained and forced to participate in dangerous exhibitions to please the caprice of their sovereign captors. The foremost authority admits that this may have been the case, but maintains that there is not the slightest evidence that they were captives. Perhaps there was a special class of bullfighters. The sport seems to have been in their blood. Evans believes the performers, both men and women, may have represented the best element of society, even as noble Spaniards and Roman emperors once entered the arena. Acting under a religious sanction and under the very eyes of the Mother Goddess, they represent a "glorification of athletic excellence," quite as Athenian artists delighted in showing Greek athletes as an embodiment of physical perfection. The rôle of women as performing acrobats, who are distinguishable from the boys chiefly by their striped sheath, their white color, curls, ribbons, and necklaces, harmonizes with their high social and religious station, which is reflected in the pre-eminence of the mother cult. Evans suggests that it may not be without significance that in historic Sparta, which was close to Minoan cultural influences, girls took a public part in athletics.⁵⁰

Bull-grappling of a purely acrobatic type exhibited on festive occasions may have developed from ruder, utilitarian practice in throwing, roping, or otherwise catching wild animals; just as to-day one may see western cowhands rope animals on the range, or watch a like performance at professional rodeos. Scenes in which evidences of a "hunting" motif appear are found on cups from Vaphio, dating from the early fifteenth century or perhaps a little earlier. Credited to Cretan artists, these golden cups, which were found near Sparta in 1889, are among the finest specimens of the goldsmith's art, possessing a graceful naturalness and ease of line that shame the art of post-Mycenaean days. These scenes have been interpreted as episodes in "the capture of wild or half-wild bulls,"⁵¹ and also as "scenes of bull-grappling rather than of bull-hunting."⁵² There may be something of both in them. Perhaps the artist seeks to represent the capture of wild creatures, to be trained for use in the arena. The same sort of expert grapplers are represented as in the ceremonial performances of the arena, but the terrain seems to be rocky, rugged, open country with some vegetation; and the taking of the beasts is marked by accidents. One scene seems to represent a "drive," bringing the animals into a heavy rope net stretched between two trees. Halted momentarily by the net, the grapplers try to take the bulls by the horns. One missed, apparently, and fell, or was tossed headlong, arms extended and feet in air, just escaping being trampled; another is being gored and tossed head over heels by the plunging beast, or perhaps he

⁵⁰ *Ibid.*, I, 2; III, 231 f.

⁵¹ *Ibid.*, III, 177; Gardiner: *Athletics of the Ancient World*, p. 11; C.A.H., II, 455; Gardner: *op. cit.*, p. 70.

⁵² Hyde: *Olympic Victor Monuments*, p. 4.

has locked legs around the animal's horns, so as to prevent being gored to death. Behind these figures another bull is tangled in the net, while a third gallops off. The second cup exhibits a less exciting scene, which may be the taking of a wild bull by use of a decoy cow and a lasso. Likewise appearing to represent the taking of wild animals is an engraved onyx gem, on which a grappler leaps to seize a bull's horns while he is drinking.⁵³

Though a generation ago it was confidently asserted that Mycenaeans were not fishcaters,⁵⁴ evidence shows that fish was an article of diet in the Minoan Age. Fish vertebrae have been found in a palace storeroom pot at Knossos. A fisherman with his catch, one of them a large fish like the Skaros, considered the finest of fish in the days of Pliny,⁵⁵ is represented on an engraved gem from Knossos. A Phylakopi vase shows four fishermen swinging along jauntily carrying their take in their hands. On fragments from Melos a well-dressed woman is represented sitting on a rock, pulling up a fishing net.⁵⁶

Somewhat closer akin to later conceptions of athletics are various remains depicting boxers and wrestlers. Evans interprets certain fragments of athletic group reliefs from the palace at Knossos as remnants of "a group of two wrestlers,"⁵⁷ though there can be no absolute certainty as to the type of sport represented. Boxing contests are more clearly depicted on a steatite rhyton, the so-called "Boxer Vase," dating from about 1600 B.C., found at Hagia Triada in 1901. Boxing is also shown on seals and on a fragment of steatite pyxis, found at Knossos and belonging to the same period. This sport, as well as bull-grappling, is represented in a theatral area, commonly associated in Cretan art with religious symbols. Evans regards the Minoan theater as definitely "a religious institution," and includes boxing and wrestling among the sacral sports. If held in the theatral areas excavated at Phaestos and Knossos, four to five hundred spectators could have witnessed such contests.⁵⁸

The contestants are generally girdled by a tight belt around an abnormally small waist. Some wear helmets, others are without them. A cestus is indicated in some instances.⁵⁹ The helmeted boxers in the upper zone of the "Boxer Vase" appear to represent heavier, adult contestants, while those below, who are smaller and unhelmeted, may be boys or young men. Contestants are shown in conventional attitudes: the victor, aggressive, with left arm extended for defense, the right drawn back ready for a blow; the vanquished, either

⁵³ Evans: *Palace of Minos*, III, 177-232, 428 ff.; IV, Pt. I, 21 f., 39 ff.; Mosso: *The Palaces of Crete and Their Builders*, pp. 211-25; Tsountas and Manatt: *op. cit.*, pp. 51, 227 f., 352; Glotz: *op. cit.*, pp. 293 ff.

⁵⁴ Tsountas and Manatt: *op. cit.*, pp. 69, 334.

⁵⁵ *Natural History* (Rackham), IX, 29.

⁵⁶ Evans: *Palace of Minos*, I, 555 f., 677; III, 40, 43.

⁵⁷ *Ibid.*, III, 497 ff.

⁵⁸ *Ibid.*, I, 690; IV, 22; Glotz: *op. cit.*, p. 289.

⁵⁹ Evans: *Palace of Minos*, I, 688 ff.; Gardiner: *op. cit.*, pp. 12 f.

brought to his knees or to a sitting or prone position, with feet thrown high in the air. The well-developed muscles of the legs, arms, and shoulders of the competitors suggest a thorough athletic training.

Somewhat akin in spirit to the boxing scenes are certain representations of a more serious event, a combat of armed men. Of these the most realistic portrayal of a gladiatorial contest is found on a gold signet ring from Mycenae. Four men are engaged: one, already down, sits with dejected air, half supporting himself with left hand on the ground; another, wearing a plumed helmet or cap, is armed with a semicylindrical shield and spear; between them, engaged in a fight with heavy daggers, are two combatants, one of whom, just going down, is about to receive the fatal thrust.⁶⁰

A Greek myth told that Idean Heracles, one of five brothers, set a race for the others and crowned the winner with wild olive.⁶¹ Running contests may have been held, but evidence so far reported thereon is slight. Sealings found at Kato Zakro in eastern Crete show figures, apparently female, holding their arms as though running.⁶²

Early Cretan religion was primitive and largely indigenous, though there was some borrowing, doubtless, from neighboring peoples. In any case, numerous similarities exist between Cretan, Egyptian, and Babylonian ideas, practices, and objects of worship. Among Cretans certain trees (olive, palm, pine), high places, pillars, caverns, rocks, heavenly bodies, the sea, sacred animals, and birds, were often held sacred. Kinship or identity of men and animals was acknowledged. A mural fragment found at Mycenae shows human figures masked in donkey heads, marching as though in a procession.⁶³ A host of cult objects—the double axe, cross, swastika, holy water, altar, dove, and bull—played an important rôle, indicating a highly developed symbolism which is understood but imperfectly to-day.

The most prominent feature of Cretan religion was the pre-eminent cult of the Great Mother, symbol of fruitfulness, patroness of war, hunting, fishing, navigation, games of chance, and contests of skill and daring, queen of earth and heaven, mistress of creation and dissolution. As chaste virgin she is Britomartis, as mother, Dictynna—so named because she is said to have invented nets (*dictya*) for hunting.⁶⁴ The male principle, though less prominent and apparently a later development, was commonly symbolized by the bull and humanly embodied in Minos. A great deal of space at the palace of Knossos was given over to his majesty's priestly functions. Libations, lustrations, private

⁶⁰ Schliemann: *op. cit.*, p. 223; Evans: *Palace of Minos*, I, 691 ff.; III, 500, 502.

⁶¹ Pausanias, v, 7, 7.

⁶² Hogarth: "The Zakro Sealings," *Jour. Hellenic Studies*, xxii, 78, fig. 6; Glotz: *op. cit.*, p. 293.

⁶³ Perrot-Chipiez: *op. cit.*, vi, 886.

⁶⁴ Diodorus, v, 76.

and public sacrifices (some of blood, others bloodless), music, games, dancing, and processions were among the chief acts of worship, judging from artistic remains that have been preserved.

Music and the pipes to make it, according to Hellenic genealogy of the gods, were inventions of Athena, child of Zeus and Hera, whose marriage was celebrated in the Isle of Crete.⁶⁵ The genealogy may be worthless, but music and its kindred art, dancing, were of great antiquity in Crete, and were prominent in the worship of Dictynna, who had much in common with Athena. Homer placed Ariadne's dancing ground in "broad Knossos." It is amongst the Phaeacians that Demodocus' song and soulful lyre inspired the twinkling dance of youthful feet; there, too, the sprightly capering ball dance was staged to charm Ulysses.⁶⁶

Music and dancing played a prominent rôle in Cretan life, and both, like sports, were intimately associated with religion. At times they appear as a simple, spontaneous expression of Cretan peasant life. A beautiful steatite vase from Hagia Triada is believed by Mosso⁶⁷ to represent harvesters singing and dancing as they return from the fields. The war dance, according to an ancient legend, had been instituted by the godlike Curetes, who also gave men knowledge of hunting, agriculture, law, and social concord.⁶⁸ Cretan dancing was lively, acrobatic feats being linked with it. Athenaeus says ". . . lively dances are called Cretan."⁶⁹ The theatral arcas at Knossos and Phaestos were like a "religious institution," the pillar of the Great Goddess occupying a central position in the grandstands. There, amid a throng of worshipers, the goddess looked down on dancing, musical entertainments, and thrilling sporting festivals, filled with boxing and bull-grappling events. Music and dancing appear commonly in the festivals of the Great Mother. Women played a central rôle in Cretan religion and in its ritual dancing.⁷⁰ A fragment from Knossos shows beautifully dressed women apparently performing a processional dance in an enclosed grove of sacred olives. Their uplifted arms suggest adoration or entreaty. Looking on the scene is a remarkable host of upwards of five hundred figures, male and female.⁷¹ On a gold signet ring from Isopata four women, in a setting of flowers, are performing a ceremonial dance, lifting their arms in adoration toward a small figure of the Great Goddess approaching from on high. The all-seeing eye of deity surveys all from the background.⁷²

⁶⁵ *Ibid.*, v, 72-3.

⁶⁶ *Il.*, xviii, 536-49; *Od.*, viii, 502-22.

⁶⁷ *Palaces of Crete*, pp. 166 ff.

⁶⁸ *Diodorus*, v, 65.

⁶⁹ *Bk.* v, 181.

⁷⁰ Mosso: *Palaces of Crete*, chap. 14.

⁷¹ Evans: *Palace of Minos*, iii, 66 f.

⁷² *Ibid.*, iii, 68.

A gold ring from Mycenae represents devotees offering gifts to the goddess, seated under a sacred olive tree. A ceremonial picking of fruits, with attendant dancing, appears on rings from Vaphio and Mycenae.⁷³ An "arm-in-arm dance" is depicted in a terra cotta group from Palaikastro—three female dancers around a central figure playing the lyre. Before the musician is the sacred dove.⁷⁴ Group ritual dancing appears to be always represented by women only. In legends, as given by Greek writers, males and females united in the dance of Ariadne. The ritualistic, labyrinthine crane dance, which Theseus is said to have performed at Delos with youths and maids he had saved from the Cretan Minotaur and was bringing back to Athens, was held round an altar of horns,⁷⁵ such as Cretan remains show was in common use at sacrificial dances in prehistoric days. Solo dancers appear, however, in religious rôles: the ecstatic male dancer before the altar of the Goddess, shown on a steatite rhyton from Knossos; and a leaping, gesticulating, female dancer on a gem from Vaphio.⁷⁶

In very early times Cretans had reed instruments, the syrinx, the salpinx, and the sistrum. The instruments most commonly represented in religious ceremonies are the flute and lyre. At the sacrifice of a bull, on a Hagia Triada sarcophagus, a youth is playing the double flute. A female dancer on a small gem from Vaphio holds a single flute in one hand.⁷⁷ The lyre, represented by an ancient legend as the invention of Cretan Apollo,⁷⁸ was known in several forms, with three, four, and even seven strings as later in classical times.⁷⁹

Sanitary arrangements of Cretan palaces had been brought to a high state of perfection by experts in hydraulic engineering. Water was brought by conduits from near-by hills, and remarkable wells about thirty-three feet deep were also dug and walled up with terra cotta cylinders nearly two feet long, each constructed of three sections joined together. Water was also carried down stairways by runnels, built with easy parabolic curves to slow the current; and traps were placed at certain points to catch sediment, thus ensuring a good supply of clean rain water. Water pipes were constructed with tapering sections to guard against collection of sediment in them.⁸⁰

Besides certain basins evidently designed for ceremonial lustrations, as in the Throne Room,⁸¹ there were remarkably ingenious provisions for physical cleanliness. The Caravanserai, a sort of hostel where travelers may have put up

⁷³ Glotz: *op. cit.*, pp. 236 ff.

⁷⁴ Mosso: *Palaces of Crete*, pp. 282 f.

⁷⁵ Photarch: *Theseus*, 21; *Pausanias*, ix, 40, 3.

⁷⁶ Evans: *Palace of Minos*, II, Pt. II, 614; III, 69.

⁷⁷ *Ibid.*, III, 39, 69.

⁷⁸ *Diodorus*, v, 74.

⁷⁹ Evans: *Palace of Minos*, III, 66-80; Mosso: *Palaces of Crete*, pp. 309-23; Glotz: *op. cit.*, p. 291.

⁸⁰ Evans: *Palace of Minos*, III, 252 ff.

⁸¹ Mosso: *Palaces of Crete*, pp. 64 ff.; Glotz: *op. cit.*, pp. 117 f., 263 f.

as they arrived at Knossos by road from Phaestos, had provisions for foot baths and complete tubbings. Inside and outside entrances to the foot bath suggest its public character.⁸² This foot basin was about six feet by four, and was deep enough to bring the water near the knees. Stone slabs around it and projecting somewhat over it, provided seats for bathers. Careful provisions were made for filling, emptying, and also for overflow.

Near to the foot bath was a room with tubs. Minoan bathtubs were of clay, beautifully decorated with painted designs. Considerably longer at the top than at the bottom, their length accommodated the ordinary Cretan man or woman comfortably; some tubs were apparently provided with crossbars to sit on. The rim of the tub was higher at the head than at the foot. The room just off the Queen's "Great Hall" at the Palace of Minos had a beautiful clay tub, whose upper rim sloped gently up from the foot to about twenty inches in height at the head. There is no evidence of a sink to carry off waste water from the bathroom, a negligence quite in contrast to the elaborate facilities for filling and emptying the foot basin. The toilet room, however, was equipped with a sink, and the latrine was flushed with water. At Tiryns the bath was wainscoted with wood and floored with a solid block of limestone, in which a gutter carried the water to stone piping running through the wall. At Mycenae, also, the bathroom had a sink.⁸³

Swimming is represented on fragments of a tall silver rhyton, probably of Cretan workmanship, found in the Fourth Shaft Grave at Mycenae. It is part of a remarkable siege scene, certain features of which recall Hesiod's *Shield of Heracles*—"men fighting in warlike harness," and women on "well-built towers," weeping and tearing their cheeks.⁸⁴ Below the scene of fighting are naked swimmers, who are using a frog kick and breast stroke. Fragments of inlay work on a blade from a tomb at Vaphio also depict nude swimmers. While inferences regarding style of swimming must be somewhat uncertain, because of the nature of the evidence, the position of the legs and the upper part of the body suggest a flutter kick and a hand-over-hand side stroke, somewhat similar to that shown on the coin of Abydos.⁸⁵

For quiet leisure hours Minoan folk had games of chance, some evidently played indoors, others outside. The first family of Knossos had a beautifully inlaid game board, about three feet long and more than half as wide, constructed of ivory, gold, silver, rock crystals, and imitation lapis lazuli. This board, which may have covered a box which held the men used in playing it, is assigned to the first half of the second millennium, but may have continued

⁸² Evans: *Palace of Minos*, II, Pt. I, 116-23.

⁸³ *Ibid.*, III, 385 f.; Tsountas and Manatt: *op. cit.*, pp. 48 f.; Glotz: *op. cit.*, pp. 116 ff.

⁸⁴ *Op. cit.*, 237.

⁸⁵ Evans: *Palace of Minos*, III, 89-98, 127; Tsountas and Manatt: *op. cit.*, pp. 212 ff.; cf. Mehl: *Antike Schwimmkunst*, Plates 4-6; Thomas: *Swimming*, p. 139.

in use in the late Minoan Age. The game almost certainly involved the throwing of dice or pebbles and the moving of pieces—similar, in some respects, to backgammon, Greek *polis*, Roman *latrunculi*, and Egyptian board games. Conically shaped ivory pieces were perhaps moved from one end of the board to the other, where there was a goal or “citadel,” as Evans sought to interpret it. Sunray symbols on the base of these “men,” similar to symbols used in Cretan script, suggest a religious association with the cult of the Minoan Mother Goddess, much as in other lands games of chance have been associated with religious ideas and practices.⁸⁶

Likewise associated with religious antecedents, perhaps, and recalling the suitors’ game on the oxhide at the palace gate⁸⁷ and the “pavement games” of Roman days⁸⁸ was a game, traces of which, more or less perfectly preserved, have been found in the Queen’s “Great Hall” of Knossos, at the central palace at Mallia, the “Kavusi Table,” and at the theatral areas in Knossos and Plaeastos. A painted stucco fragment, in Evans’ opinion, represents youths playing such a “pavement game.”⁸⁹ The chief features of the game, as inferred from the several remains, were: a number of cups hollowed out in a stone slab or table, the number of which ranged from ten to thirty-nine. Generally they were arranged round a circle, but at the theatral areas they approximated a square. The best example, discovered at Mallia, was on a heavy slab about three feet in diameter, occupying a permanent position on a terrace. The cups, in this instance, were thirty-four in number, ranged around the entire circumference of the table. One of these, being somewhat larger, gave the circle a bulge at one point. The smaller cups were all of the same size, but in the center of the table was a larger cup, about six inches across and a little more than three deep. While the Mallia slab has been called a sacrificial table by some, who think the cups designed for offerings—libations, grain, cakes—Evans holds that it fits the pattern of the pavement games found elsewhere, though this does not preclude its having derived from some religious prototype.⁹⁰

Widely divergent judgments have been expressed regarding the relationship between Cretan physical contests and the athletic festivals of Greece. A view, once widely held, denied Cretan influence. Gardiner thought there was “no evidence in Crete of anything from which Greek athletics could have developed.”⁹¹ In 1930 he expressed a like view: “. . . there is not a particle of evidence to connect with Crete the origin of the great athletic festivals of

⁸⁶ Evans: *Palace of Minos*, I, 471–85; *Scripta Minoa*, I, 221, no. 107 a; Falkener: *Games Ancient and Oriental*, pp. 9–111.

⁸⁷ *Od.*, I, 175–7.

⁸⁸ Falkener: *op. cit.*, pp. 364 ff.

⁸⁹ *Palace of Minos*, III, Plate xxv.

⁹⁰ *Ibid.*, III, 390–6.

⁹¹ Gardiner: *Greek Athletic Sports and Festivals*, p. 11.

Greece." ⁹² Hyde recognized that "love of sport existed in Crete" as elsewhere, but contrasted it with the radically different world of Homer and the "atmosphere of true athletics." ⁹³ At variance with these views, Glotz, reflecting a growing tendency to revise upwards the previous estimates of Minoan influence, contended that the feature of Cretan life which is most original—their love of "gymnastic and musical contests" accompanying their festivals—is precisely the one which distinguishes the Greeks also; that "there is as direct a connexion" between the boxing matches at Hagia Triada and the games given by Achilles and Alcinoos as there is between the games described by Homer and the Olympic games. Minoan contests at religious festivals gave "birth to a national athletic tradition." "The theatre and palaestra of Hellas," Glotz concluded, "did no more than develop the legacy of the pre-Hellenes." ⁹⁴ Ridington, who sought to test the validity of the thesis that Greek athletic festivals were a development from Cretan prototypes, came to agree substantially with Glotz, finding a "notable influence" exerted by Cretan culture. "Detail after detail" combine to build up a picture "till it seems that many of the basic elements of the Greek athletic festival were contributed to by the Minoan-Mycenaean culture." ⁹⁵

THE MYCENAEAN AGE

FUSION OF MINOAN AND HELLENIC CULTURE Opinions differ as to when Greeks first came to the Peloponnesus. ⁹⁶ Unacquainted with exact history, they were apt to boast of an ancient tradition, saying that they had dwelled in their mountains before the moon was born. It is thought that Greeks may have entered the Peninsula to some extent about two thousand years before the Christian era; not till about 1500, however, or perhaps a little later, is there evidence of Achaeans moving into the lower Peloponnesus from northern regions above the Spercheus. These blond or brown-haired invaders gradually constituted themselves a ruling aristocracy. It may have been they who brought about the destruction of Knossos. In any case the Achaeans had gained mastery of certain centers of former Cretan power by the thirteenth century; in 1223 B.C., according to records of Memphthal, they reached out as far as the African coast, and assisted the Libyans in an attack on Egypt. Out of this mixture of Cretan and Achaeans elements, the Mycenaean civilization evolved. Leadership passed from Knossos to Mycenae, in the plain of Argos; there ruled the Achaean hosts

⁹² *Athletics of the Ancient World*, p. 14.

⁹³ Hyde: *op. cit.*, p. 7.

⁹⁴ Glotz: *op. cit.*, pp. 289, 392.

⁹⁵ Ridington: *The Minoan-Mycenaean Background of Greek Athletics*, pp. 86 f.

⁹⁶ Cf. C.A.H., II, 473 ff.; Bury: *A History of Greece*, pp. 5 ff., 44 ff.; Jardé: *The Formation of the Greek People*, pp. 73 ff.

in that heroic "golden age," whose glories are thought by some to be reflected in part in Homeric verse. Wide differences of opinion exist, however, as to what is to be seen in the Homeric poems. Carpenter holds that Homer reflects "the only world which he knows," that is, "the late eighth and the seventh century," but recognizes that older elements may have entered into his work.⁹⁷ Bury, on the contrary, thinks Homer describes the life of the Mycenaean Age rather than that of his own day.⁹⁸

After the fall of Knossos, Minoan culture approaches its eventide. Mycenae's Achaean lords, whose praises Homer sings, bask for a time in the sun of an older civilization. Theirs is a cruder, more lawless age, despite its reflected glory. War and piracy are their most engaging and profitable occupations. The last great act in their heroic drama, the expedition against Priam's rich city of Troy, appears to a recent historian as the final phase of an economic struggle. The grandiose accomplishment of Troy's destruction is the final heroic gesture of Achaean power.⁹⁹ The time of the Trojan war is uncertain. Greeks assigned it dates ranging from the early thirteenth to the early twelfth century. Burn thinks shortly before 1100 is a likelier date. Glotz prefers "about 1280," and maintains that the struggle may have spread over two centuries as well as one.¹⁰⁰ Though dates are problematic, more agreement is found as to the aftermath of the struggle. The Achaeans had extended themselves too far and spent themselves, as Knossos had done before. A protracted struggle must have weakened them. Petty quarrels were evident during the war, according to Homer's account; localism triumphed after it. Shortly after 1200 evidences of decline began to appear in Mycenaean culture. The Dorians, on the march southward, seem to have met only momentarily successful resistance. Powerful Mycenae, Tiryns, and other Achaean strongholds went down in flames. At the end of the eleventh century the darkness of the Greek Middle Ages was falling. Not for many centuries would another civilization of great brilliance arise, in Attica, and shed its light throughout the Mediterranean world.

CHARACTER OF SOCIETY REFLECTED IN HOMER This was pre-eminently an age of violence, despite some achievements in the arts of peaceful industry.¹⁰¹ The lines of Hesiod fit them well:

Their thoughts were bent on violence alone,
The deeds of battle and the dying groan. . . .¹⁰²

⁹⁷ *The Humanistic Value of Archaeology*, p. 72.

⁹⁸ *C.A.H.*, II, 513 f.; cf. Glotz: *op. cit.*, p. 393; Tsountas and Manatt: *op. cit.*, p. 338; Comperz: *Greek Thinkers: A History of Ancient Philosophy*, I, 28.

⁹⁹ Glotz: *op. cit.*, pp. 219 f.; Keller: *Homeric Society*, pp. 308 f.

¹⁰⁰ Burn: *op. cit.*, pp. 51 f.; Glotz: *op. cit.*, pp. 53, 226, 405; cf. Carpenter: *op. cit.*, p. 67.

¹⁰¹ Keller: *op. cit.*, p. 190.

¹⁰² Davies: *Hesiod and Theognis*, p. 32.

The Achaeans had conquered the Cretans, partly at least because of superiority of their arms.¹⁰³ Piracy upon their neighbors of the sea continued to be one source of wealth. The strong triumphed over the weak. While Odysseus was away the suitors made themselves at home in his abode and consumed his wealth. Only at his return were matters righted, when the long-suffering master loosed his "bitter arrow"—

Right at Antinous; and struck him just
As he was lifting up the bowl, to show
That 'twixt the cup and lip much ill may grow.¹⁰⁴

At length, when the men were all "laid prostrate," the unfaithful women were strung up.¹⁰⁵ Thus order in the patriarchal domain was re-established.

The city was built upon conquest. Government sustained the power of victors over vanquished, and assured continuance of the fruits of victory. In the state, as in the household, government was by the strongest. The king, the strongest of all heads of houses, is recognized, even when among strangers, by his physical and mental alertness. Atrides assures his guests they wear "the portraiture of Jove-sustain'd and sceptre-bearing kings."¹⁰⁶ There may be bickering and criticism among those who wish to rule, but the principle is urged, and circumstances dictated its acceptance, that:

We must not all be kings. The rule is most irregular,
Where many rule. One lord, one king . . . and he,
To whom wise Saturn's son hath giv'n both law and empery
To rule the public, is that king.¹⁰⁷

Though the ultimate appeal was to force, the unwritten law of *dike* and *themis* (what has been "pointed out" and "established") exercised restraint over action, and constituted a standard for judgment when wrongs were committed—a standard determined by, and in the interest of, the rich and powerful. Below the king ranged the nobles, *hetairoi*, commoners, and slaves. The nobles—simply lesser kings—were treated with consideration by their chief. In the assembly they constituted the *gerontes* or council. The *hetairoi*, closely associated with the nobility and serving them in a more or less professional capacity, might be noble foreigners, offspring of better families of the common

¹⁰³ Jardé: *op. cit.*, p. 74.

¹⁰⁴ *Od.*, xxii, 11–4. Though Chapman's version leaves something to be desired, Lawton's query, whether "prose is the proper form into which to translate a poem," is well-taken. See Lawton: "Womanhood in the *Iliad*," *Atl. Mo.*, lxxi, 800. The passages quoted have been compared with generally approved prose versions, such as Butcher and Lang, *The Odyssey of Homer*; and Lang, Leaf, and Myers, *The Iliad of Homer*.

¹⁰⁵ *Od.*, xxii, 598–602.

¹⁰⁶ *Ibid.*, iv, 77–8.

¹⁰⁷ *Il.*, ii, 172–5.

people, or slaves who, for faithful service, had been raised to positions of trust. The commoners, though underprivileged, could attend the assembly (agora) and express their opinions—as Thersites did, though to no avail.¹⁰⁸ Slaves, commonly held by all who could afford them, were as a rule the women and children of foreigners, taken by force in war or bought like any other goods. Though without rights, except those granted by the caprice of masters, the treatment of slaves seems to have been mild. If the master willed it, a slave might marry, beget slave children, receive rewards for faithful service, and even buy a slave.¹⁰⁹

Though nobility of character and loveliness are ascribed to certain women of Homer, their position was one of inferiority, as in other patriarchal and feudal societies. A woman was “not a person, but a thing . . . a perpetual minor.”¹¹⁰ A double standard required chastity of her before marriage, but not of the man. The wife had more rights than her husband’s concubines, but she and they were both a sort of property: the wife was generally paid for and wed with ceremony; concubines, like slaves, were taken by force as prizes of war or as reward for skill. A woman’s value was unblushingly computed as so many cattle; she was disposed of by her master like any other property. To appease sulking Achilles, sacred tripods, horses, gold, goodly caldrons are offered, and besides:

Sev’n Lesbian ladies he shall have . . . the most select,
And in their needles rarely skill’d, whom, when he took the town
Of famous Lesbos, I did choose; who won the chief renown
For beauty from their whole fair sex. . . .¹¹¹

Moreover, if victory be theirs at Troy, Achilles with

. . . that princely hand of his
Shall choose him twenty Trojan dames. . . .¹¹²

Even if defeated they return from Troy, Achilles shall have his choice of three daughters, richly dowered with seven cities.

Homer’s society knows of industry and commerce, but these are scarcely the business of heroes. Amid the waters

. . . of the sable sea there lies
An isle call’d Crete, a ravisher of eyes,

¹⁰⁸ *Ibid.*, II, 194–210.

¹⁰⁹ Mahaffy: *Social Life in Greece*, pp. 44 ff., 57 ff.; Keller: *op. cit.*, pp. 264 f., 273, 279.

¹¹⁰ Keller: *op. cit.*, p. 243; Lawton: *op. cit.*, *loc. cit.*, LXXI, 784–801; Seymour: *Life in the Homeric Age*, chap. 4; Mahaffy: *op. cit.*, pp. 52 ff.; St. John: *History of the Manners and Customs of Ancient Greece*, I, 369–81.

¹¹¹ II., IX, 132–5.

¹¹² *Ibid.*, IX, 141–2.

Fruitful, and mann'd with many an infinite store;
 Where ninety cities crown the famous shore,
 Mix'd with all-languag'd men.¹¹³

Homer's Greeks are given credit for agriculture and other attributes of settled life. The primitive Cyclops, however, have neither councils, councilors, nor laws; they are a race—

Of proud-liv'd loiterers, that never sow,
 Nor put a plant in earth, nor use a plow,
 But trust in God for all things. . . .¹¹⁴

Neither is commerce pursued in the Cyclops' isle. They take no delight—

In brave vermilion-prow-deck'd ships; nor wrights
 Useful, and skilful in such works as need
 Perfection to those traffics that exceed
 Their natural confines, to fly out and see
 Cities of men, and take in mutually
 The prease of others. . . .¹¹⁵

In contrast to the lawless Cyclops, Homer's Achaeans had beans, peas, lentils, wild asparagus, onions, wheat, and barley, which, with the flesh of sheep, cows, pigs, and goats, furnished the staples of diet. Grapes, olives, figs, apples, pears, plums, pomegranates, and such products as milk and honey were highly prized. Wine, generally diluted, was the common drink. To supplement the larder, recourse was had to the wild-life of land and sea. Boar, deer, and hare were plentiful, and hunting seems to have been common, for sport if not for necessity. Fishing was also a source of food, and a regular employment of commoners. Remains discovered by the archaeologists show that various kinds of sea food were eaten.¹¹⁶

Like other early peoples, the Greeks attributed many of their accomplishments to a legendary source. Aeschylus tells us that Prometheus first taught them to yoke animals for drawing and riding, harness horses to chariots and bring them to the rein, and to plow the "wine-dark" sea in "canvas-winged" ships. Whether taught by such a mythical pedagogue or no, Homer's Achaeans knew the use of horses, mules, and oxen. Horses were prized for riding, driving, and for drawing the war chariot, while mules were worked on farms. Oxen were the mainstay on the land, however, and so important an element of wealth

¹¹³ *Od.*, xix, 240-4.

¹¹⁴ *Ibid.*, ix, 168-70.

¹¹⁵ *Ibid.*, ix, 194-9.

¹¹⁶ *C.A.H.*, II, 462; Seymour: *op. cit.*, chap. 7; Keller: *op. cit.*, p. 30; *supra*, p. 209.

that "ox" became a common unit of value. Plowing was done with a crude instrument, which appears to have been shod with iron, about the time of the Spartan invasion. Mention of the "thrice ploughed field" suggests that once over with such an imperfect tool was not enough to do a good job. Grain was cut with the sickle; it was threshed by driving oxen over it.

No degradation was associated with agriculture. On the contrary, plowing and harvesting were noble occupations, worthy even of men of great estate. Odysseus boasts to one of the suitors that he can best him, whether at plowing, mowing, or in the thick of battle. This, of course, is poetry. On the estates of great nobles, work was performed mostly by slaves, supplemented more or less by hired labor. The lot of hired workers was poor, doubtless, compared with other elements of society. Achilles would prefer it only to holding sway over all the dark, dank realms of death.¹¹⁷

The work of craftsmen was much sought after and well esteemed. Hephaestus, a god, is a cunning blacksmith. Fine workmanship was highly approved, and certain skillful-handed nobles are mentioned. Chief dependence, however, must have been put on the labor of others—skilled slaves, gained through war or purchase, and free artisans who worked for hire.¹¹⁸

Cosmological conceptions of Homer's Greeks were rather crude. To Zeus, son of Cronos and Rhea, belongs the broad heavens; to Demeter, the earth; to Poseidon, the sea; to Hades, the murky realm below. Earth, resting on water, is surrounded by the flowing stream of Oceanus; over all is the sky, upheld by the pillars of Atlas, across which is driven the chariot of the sun, which plunges at evening into ocean's stream. Beneath the earth lay the dim realms of Hades, the spirit afterworld; and below that, Tartarus.

Though marked by traces of primitive animism, the religion of the Achaeans transcends it. A product of long development, it embodies elements of Minoan civilization, primitive conceptions of the Hellenic conquerors, and influences from Egypt and the East. As in Babylonia, Egypt, and other lands, where certain local gods came gradually to enjoy a more general acceptance than others, so it was among the Greeks. The *Iliad*, the *Odyssey*, and the *Theogony* of Hesiod reveal that the company of the gods has been reduced to a sort of system—a rather loose one, indeed, which permits of variety, turmoil, and even a suggestion of revolt.¹¹⁹

Heavenly government reflects earthly rule: Zeus reigns as monarch, as Agamemnon holds sway among the lords of earth; like an earthly potentate he calls assemblies and presides. He has learned to divide and rule; his wife, Hera, and Athena, Apollo, Artemis, Poseidon, Ares, Aphrodite, Hermes, Demeter,

¹¹⁷ *Od.*, xi, 641–6.

¹¹⁸ Seymour: *op. cit.*, chaps. 9–10; Keller: *op. cit.*, pp. 84, 97 ff.

¹¹⁹ Seymour: *op. cit.*, p. 413.

Hephaestus, and others have important spheres of influence. Reminders of animism and a certain localism, are the sacred hills, doves, trees—the "Oak of Zeus" at Dodona, the olive of Delos—and honors paid to the rivers, Cephissus, Scamander, and Spercheus.¹²⁰ But Zeus does not abide in the oak; and the river-gods and nymphs have relatively slight importance.

The gods are made in the likeness of men: they eat, drink, marry, and have issue; at times, they behave like brawling children; like feudal lords, they drive chariots and are wounded in battle. Though in most respects they are magnified men, there are other differences: the gods are immortal, live at ease, and feast on nectar and ambrosia; moreover, from their abode on high Olympus, they exert an influence against which mere humans strive in vain. Surrounded by such a company of supernatural agencies, the Greeks' fatalism, which they expressed in various ways, is not surprising. Says the ghost of Patroclus, "For me hath yawned that destiny grievous which at the very hour of my birth for me was appointed." "The Gods can raise, and throw men down, with ease";¹²¹ "He that fights with Heav'n hath never long to live."¹²² It was often necessary, therefore, to learn the will of the gods by means of omens and the casting of lots.

Probably the most significant difference between the religion of the Greeks and that of early Oriental peoples lies in the fact that in Hellas is found neither authoritative sacred book, priestly caste, commandment, creed, nor dogma; neither revelation, inspired holy founder, nor religious reformer; neither reward in heaven nor punishment in hell. Homer's gods act disgracefully on many occasions; they think in a bemuddled fashion like men. Their common passions and vices led Gladstone to remark that not one in the whole lot could compare favorably with the herdsman Eumaeus. At a later period, doubt arose as to the propriety of permitting youth to learn about the scandalous lives of Homeric deities.¹²³

The standard of the good life was determined not by appeals to holy books and priestly decrees, but by *dike* and *themis*—what has been "pointed out" and "established." These are enforced by men rather than by gods. Fear of the jealous anger of the gods at human fortune was real enough, but nemesis does not weigh very heavily with the fighting men of Homer.¹²⁴ Man's religious integrity, in a narrower sense, lay in the performance of ceremonies, not in the profession of belief. His duties to the gods were numerous, but the common man in his household, the king in the palace, and the soldier in the field might act as their own priests; for the gods were not far off, and neither occult wis-

¹²⁰ Pausanias, I, 17, 5; 37, 3; VII, 21, 2; VIII, 23, 5.

¹²¹ Od., xvi, 278.

¹²² Il., v, 387.

¹²³ Plato: Republic, II, 378.

¹²⁴ Keller: *op. cit.*, pp. 115, 289 ff.

dom, acquaintance with unknown tongues, nor secret formulae such as develop in the hands of exclusive, hereditary, priestly organizations, were necessary to propitiate them. Priests there were, indeed, but they were secondary to civil authorities and were chosen by lot or by vote. Though certain reverence was due them, as the official representatives of the deities, they were servants of the state, not its masters.¹²⁵

Greek graves bear evidence of a belief in an afterlife, and literature is full of allusions to it, but the conception of ascetic living as a preparation for it was to them foreign. Hades' realm was dark and gloomy, indeed, and Achilles preferred life as a mere hireling rather than "hold sway over all the dead," but Hades held no punishment for evildoers. It was the destiny of all.

EDUCATION, INTELLECTUAL AND PHYSICAL. Minoan civilization made extensive use of writing; it was known also for a time at Mycenae and other mainland centers. A marked decline occurred, however, as the unity of Minoan culture disintegrated under the sway of the northern conquerors.¹²⁶ Writing seems to have become nearly a "lost art" in Greek lands. Homer's heroes have been called "chivalrous" but "illiterate."¹²⁷ In casting lots each hero marked his own, but no one recognized the mark on the drawn lot save Ajax himself, whose mark it was.¹²⁸

Under the circumstances formal education either was nonexistent or of very slight importance. Life and education were one. An apprenticeship to life's activities, which gave all needed knowledge and skill, might be gained at home or at a neighboring court. By fabled account, Asclepius and Achilles were sent to Chiron, the centaur, physician of the soul and body, who taught them and brought them ". . . to the highest degree of health, by exercising them in hunting, in journeys on mountains, in the race, in sleeping on grassy beds, in eating rustic food, and in drinking river water."¹²⁹ Education at court befitted the social status of the recipient. The aged Phocnix, addressing Achilles, recalls his services as mentor, while employed by Pelcus at the court of Atreides, to bring up the young prince to wisdom in speech and skill in action:

I, whom thy royal father sent as ord'rer of thy force,
When to Atreides from his court he left thee for this course,
Yet young, and when in skill of arms thou didst not so abound,
Nor hadst the habit of discourse, that makes men so renown'd.
In all which I was set by him, I instruct thee as my son,

¹²⁵ Seymour: *op. cit.*, chaps. 14-6; Keller: *op. cit.*, chap. 3; Hyde: *Greek Religion and Its Survivals*, chap. 1.

¹²⁶ C.A.H., II, 437, 463, 508; Hall: *The Oldest Civilization of Greece*, pp. 138 ff.; Tsountas and Manatt: *op. cit.*, pp. 291 f.; *supra*, p. 216.

¹²⁷ Burn: *op. cit.*, pp. 129, 199.

¹²⁸ *Il.*, VII, 153-68.

¹²⁹ Maximus Tyrius, *disc.* 18.

That thou might'st speak, when speech was fit, and do, when deeds
were done,

Not sit as dumb, for want of words, idle, for skill to move.¹³⁰

Such training included all that befitted "manly youth" in a day when the chief virtue was bravery and the noblest ambition was to attain renown in war.¹³¹ Homer's "verses are full of mighty shields, shining helmets, long spears, and beautiful chariots, of brave men slaughtering, and of cowards that are slain." ¹³² For the use of these one must be prepared:

His sharpened spear let every warrior wield,
And every warrior fix his brazen shield;
Let all excite the fiery steeds of war,
And all for combat fit the rattling car.¹³³

Phoenix also looked after the food and drink of his charge, and was like a father to him. Conversation, reciting favorite ballads of wandering rhapsodes, and playing a simple instrument made a part of such a courtly education. Achilles is represented as "singing the deeds of men." He was also taught the uses of herbs by Chiron, which later he communicated to Patroclus. The flute, shepherd's pipe, cithara, and other simple instruments were used. Paris played the lyre. Wandering minstrels were specially skilled, and were looked to for entertainment. Music and singing were constantly associated with dancing, and both with religious ceremonies.

Children were the objects of marked affection; fathers wanted many, sons especially. There appears to have been no exposure of children, as there was later at Sparta and Athens. The boy attended feasts with his father, listened to heroic recitals, and gradually absorbed an acquaintance with custom which had the force of law. Girls, in a similar way, learned the duties of women. By such association with elders youth seem to have acquired certain manual skills: a prince is mentioned who built his chariot, Odysseus built his bed, and Paris his palace. Nausicaa, though a princess, washed clothing; Helen and Penelope, though queens, engaged in carding, spinning, weaving, and other domestic pursuits.

Both boys and girls played many games. Nausicaa and her assistants played at ball on the shore.¹³⁴ Girls and boys danced together.¹³⁵ Other games, such as tops, draughts, knucklebones, were common for young children. When they grew older, physical exercises and sports of great variety occupied an ever larger

¹³⁰ *Il.*, ix, 417-23.

¹³¹ *Ibid.*, vi, 476-85; Burn: *op. cit.*, p. 247.

¹³² *Maximus Tyrius*, diss., 13.

¹³³ *Ibid.*, quoting *Il.*, ii, 382.

¹³⁴ *Od.*, vi, 139.

¹³⁵ *Il.*, xviii, 539.

place in the life of boys, but did not assume a systematic character. These sports were running, jumping, archery, horsemanship, hunting, hurling the spear and the discus, swimming, and driving the chariot—exercises which more or less directly gave a foretaste of military life. Pindar's portrayal of Achilles suggests that, in the case of precocious youth, at least, the transition from childhood games to the sport of hunting came very early:

In Phillyra's house a flaxen boy,
Achilles oft in rapturous joy,
His feats of strength essay'd.
Aloof, like wind, his little javelin flew:
The lion and the brinded boar he slew,
Then homeward to old Chiron drew
Their panting carcasses.
This, when six years had fled.
And all the after time
Of his rejoicing prime,
It was to Dian and the blue-eyed Maid
A wonder, how he brought to ground
The stag without or toils or hound:
So fleet of foot was he.¹³⁶

Hunting seems to have been both a necessity and a sport among Homer's Achaeans. It was necessary to kill certain wild beasts that were inimical to man; moreover, the spoils of the chase were a welcome supplement to the food supply. Certain legendary heroic names were associated with noted exploits in hunting with spear, bow, and club. Homer's heroes hunt in Hades, just as in life they had been famed for their destruction of wild beasts:

Mighty Orion . . . was hunting there
The herds of those beasts he had slaughter'd here
In desert hills on earth. A club he bore,
Entirely steel, whose virtues never wore.¹³⁷

Dogs were specially bred to hunting, being particularly serviceable in taking the deer, lion, and wild boar. "Dog-leader" is sometimes used as a synonym for hunter.¹³⁸

Fishing was common among folk of lower station, but was chiefly an occupation rather than a sport. The haul was used by them for food, but not generally

¹³⁶ Cary: *Pindar in English Verse*, pp. 139 f.

¹³⁷ *Od.*, xi, 775-8.

¹³⁸ Seymour: *op. cit.*, p. 358; Keller: *op. cit.*, pp. 29 f.

by those of higher position, unless necessity compelled it. Spears, lincs, hooks, and nets were evidently commonly employed in fishing.¹³⁹

The religion of Homer's Achaeans was intimately associated with everyday affairs. To them no high revelation was given. They were a vigorous, active people. When not engaged in conflict, they generally turned to games of rivalry for recreation. With these games religion was as closely joined as it was with the other activities of life. The gods themselves were the declared founders of gymnastic sports, the companions and competitors of mortal men. Their prowess, indeed, was greater than that of mortals, and therefore much honored of men. Odysseus admits that, though better than those around him, he could not have competed with Heracles or Eurytus, who dared contend with the immortal gods. The alleged divine authorship of their games suggests, if it does not prove, the great antiquity of Hellenic sports. Hermes, according to one tradition, was the originator of gymnastic training.¹⁴⁰ Heracles, Theseus,¹⁴¹ and Apollo also were among the founding fathers. Apollo invented not only the lyre and the sort of music produced by it, says Diodorus,¹⁴² but also the bow and how to use it. The "Hymn to Apollo" bears testimony to his reputation and the homage rendered to his name:

I will remember and not be forgetful of archer Apollo,
Who by the gods is dreaded within Zeus' halls as he enters.¹⁴³

Apollo was also fond of the discus. Zeus challenged the other gods to a tug of war with a golden chain, to demonstrate his superiority against their united strength. Heracles was taught wrestling by Autolycos, son of Hermes. Thus in sport, as in other affairs, it is evident that the world of gods was not far from that of men.

Further evidence of the connection of Homeric sports with religion and life is found in the funeral games in honor of Patroclus. Such games, and also musical contests in honor of dead heroes, were common among the Greeks, and are generally accepted as the prototypes of later periodic festivals of sport, religious ceremony, dance and song. Thus the great athletic festivals originated in funeral games for particular heroes, but were subsequently celebrated in honor of deities.¹⁴⁴

The Homeric poems portray the ideal of Achaean aristocracy, whose primary function is leadership in war. Sports practiced by this class reflect its interests

¹³⁹ Radcliffe: *Fishing from the Earliest Times*, pp. 63-85.

¹⁴⁰ Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 16; Diodorus, v, 74.

¹⁴¹ Pausanias, I, 39, 3.

¹⁴² Bk. v, 74.

¹⁴³ Lawton: *Classical Greek Literature*, p. 53.

¹⁴⁴ Cardiner: *Greek Athletic Sports and Festivals*, pp. 27 ff.; Hyde: *Olympic Victor Monuments*, pp. 9 ff.; *infra*, pp. 365 f.

and physical skills, without which war could not be successfully conducted. Achaean sports, though spontaneous, serve an eminently practical end. In the games of the *Iliad*, warriors have a day off from bloody conflict with the enemy, and seek not only to honor the dead Patroclus but to cheer their mourning spirits with the gay rivalry of sport. In friendly yet energetic competition in "distressful," dangerous sports between comrades in arms, the edge is kept keen for genuine conflict in which there will be no quarter. This ideal of a life of conflict and conquest is ever close to the hearts of Greeks. Only by successful performance of strenuous, dangerous deeds, can men of this aristocratic, heroic world preserve their memory green. Pindar's beautiful metallic verse embodies this ideal:

Deeds without danger wrought
Neither in hollowed ships nor among men
Are honored: but if aught
Of glory be thro' peril sought
Many remember then.¹⁴⁵

The eulogies customarily bestowed upon things Greek should not obscure the fact that the beautiful may be linked with the ugly and savage in man's nature.¹⁴⁶ The funeral celebration arranged by Achilles reveals a noble, touching tenderness for his friend. For his opponent, however, whose corpse he madly tramps upon, there is only contempt and brutal treatment:

Hector lies slaughter'd here
Dragg'd at my chariot, and our dogs shall all in pieces tear
His hated limbs. Twelve Trojan youths, born of their noblest strains,
I took alive; and, yet enrag'd, will empty all their veins
Of vital spirits, sacrific'd before thy heap of fire.¹⁴⁷

The games following the cremation of Patroclus included the chariot race, boxing, wrestling, running, fighting with spears, discus-throwing, archery, and hurling the spear. Nestor, though too old to take part in games, boasts that, when young, not one could best him in boxing, wrestling, running, spear-throwing; and only Actor's sons outdid him in the chariot race.¹⁴⁸ Similar games followed the death of Achilles. Some have professed to see in the five sports named by Nestor a Homeric pentathlon, foreshadowing that of later times. This is clearly an exaggerated, erroneous interpretation. The exercises named are not the same as those later included in the pentathlon (wrestling, running,

¹⁴⁵ Lawton: *Greek Literature*, p. 147.

¹⁴⁶ *Ibid.*, pp. 9 f.

¹⁴⁷ *Il.*, xxiii, 17-21.

¹⁴⁸ *Ibid.*, xxiii, 551-9.

jumping, and throwing the diseus and javelin). In the Homeric contests, moreover, there is an air of informality which ill comports with the fixed order of the Great Games of a later day.¹⁴⁹

Of all Homeric sports chariot-racing is the most expensive and aristocratic; one must be rich enough to equip himself with horses and chariots. To competitors in this event the most attractive prizes are offered: the first, "a lady . . . gen'rally praiseful, fair and young, and skill'd in housewif'ries of all kinds fitting," and a large tripod; second, a young mare in foal; third, a caldron fair and bright; fourth, two talents of fine gold; and fifth, a great new urn. The contest is select; only five compete. Achilles himself will not make an entry: his horses are of a superior strain, and he doubts not that he would simply take back again the prizes offered. So to the others he proclaims:

You then that trust in chariots, and hope with horse to crown
Your conqu'ring temples, gird yourselves; now, fame and prize stretch for,
All that have spirits.¹⁵⁰

Old Phoenix, Achilles' tutor, is named to judge the race, the course of which is on the open plain—turning round an old stump and two white stones. Youthful Antilochos, who later disputes decisions and offers to fight if denied the second prize, is given a few hints by Nestor on how to drive. Thus runs his garrulous speech, as he tells how cleverness will outrun mere speed and power:

But go on, show but thy art and heart
At all points, and set them against their horses' heart and art;
Good judges will not see thee lose. A carpenter's desert
Stands more in cunning than in pow'r. A pilot doth avert
His vessel from the rock, and wrack, tost with the churlish winds,
By skill, not strength. . . .¹⁵¹

As to the stones which mark the course's turning—

When near to these the race grows, then as right
Drive on them as thy eye can judge; then lay thy bridle's weight
Most of thy left side; thy right horse then switching, all thy throat,
Spent in encouragements, give him, and all the rein let float
About his shoulders; thy near horse will yet be he that gave
Thy skill the prize, and him rein so his head may touch the nave
Of thy left wheel; but then take care thou runn'st not on the stone
(With wrack of horse and chariot) which so thou bear'st upon.¹⁵²

¹⁴⁹ Gardiner: *Greek Athletic Sports and Festivals*, pp. 359 ff.; *infra*, Chap. XII.

¹⁵⁰ *Ibid.*, xxiii, 262-4.

¹⁵¹ *Ibid.*, xxiii, 289-94.

¹⁵² *Ibid.*, xxiii, 313-20.

Boxing, "that rough game," is the next attraction. For the victor, "a laborious mule" is offered; for the loser, "a round cup." Epëus, tall "man-mountain" and braggart that he is, lays hands on the mule, claiming him as his own before a blow is struck, and challenges all others:

Now let some other stand
 Forth for the cup; this mule is mine, at cuffs I boast me best. . . .
 Who stands forth, I'll burst him, I will bray
 His bones as in a mortar. Fetch surgeons enow to take
 His corse from under me.¹⁵³

Epëus knew whereof he boasted. So did his comrades in arms, apparently, for all were silent till, at last, Euryalus stood up, who once had bested all the Thebans at the funeral games of Oedipus. These, then, clad for the match with girdles and ox-hide thongs, fell to with might and main. Not all the encouragement and tricks taught Euryalus by Tydides could save him, when—

. . . breast oppos'd to breast,
 Fists agaiust fists rose, and they join'd, rattling of jaws was there,
 Gnashing of tecth, and heavy blows dash'd blood out ev'rywhere.
 At length Epëus spy'd clear way, rush'd in, and such a blow
 Drave underneath the other's ear, that his neat limbs did strow
 The knock'd earth, no more legs had he; . . .
 About whom rush'd a crowd of friends, that through the clusters bore
 His falt'ring knees, he spitting up thick clods of blood, his head
 Totter'd of one side, his sense gone; when, to a by-place led,
 Thittler they brought him the round cup.¹⁵⁴

So ended the "manly" sport. Hard upon it followed "painful" wrestling, no unimportant part of warlike training, in a day when man met man in hand-to-hand encounter. Two prizes, a tripod worth twelve oxen, and a woman worth only four, inspire the hearts of Ajax and Odysseus who measure power and cunning. They wrestle standing, not upon the ground:

. . . forth they stepp'd, catch elbows with strong hands,
 And as the beams of some high house crack with a storm, yet stands
 The house, being built by well-skill'd men; so crack'd their backbones,
 wrinch'd
 With horrid twitches; in their sides, arms, shoulders, all bepinch'd,
 Ran thick the wales, red with the blood, ready to start out. Both
 Long'd for the conquest and the prize; yet show'd no play, being loth

¹⁵³ *Ibid.*, xxiii. 582-8.

¹⁵⁴ *Ibid.*, xxiii. 596-609.

To lose both. Nor could Ithacus stir Ajax; nor could he
 Hale down Ulysses, being more strong than with mere strength to be
 Hurl'd from all vantage of his sleight. Tir'd then with tugging play,
 Great Ajax Telamonius said: "Thou wisest man, or lay
 My face up, or let me lay thine; let Jove take care for these."
 This said, he hois'd him up to air; when Laertiades
 His wiles forgat not, Ajax' thigh he strook behind, and flat
 He on his back fell; on his breast Ulysses. Wonder'd at
 Was this of all; all stood amaz'd. Then the much suff'ring man,
 Divine Ulysses, at next close the Telamonian
 A little rais'd from earth, not quite, but with his knee implied
 Lock'd legs; and down fell both on earth, close by each other's side,
 Both fil'd with dust; but starting up, the third close they had made,
 Had not Achilles' self stood up, restraining them, and bade:
 "No more tug one another thus, nor moil yourselves. . . ." ¹⁵⁵

The contest is declared a draw; the prizes will be equal.

The poet does not spare his men! Odysseus proceeds at once to compete with Ajax and Antilochos in running. In this match the conception of sportsmanship, whether it be that of the gods, of men, or of the poet, seems a little below par. If Odysseus wins, it is because Minerva, divinely capricious, chooses to make "light his limbs"—an excellent description of the sensation, by the way—and makes his victory doubly probable, if not certain, by tripping Ajax, causing him to fall amid the filth of the funeral slaughter. Antilochos, moreover, makes us feel that it's not a genuine race at all: it was "fixed" in advance by the fact that the gods favor older men. All get prizes. Antilochos, who well employs his tongue, gets the third prize doubled by judicious praise of Achilles.

The combat of armed men, spear-throwing, hurling the *solus*, and the archery contest are said to be later additions to the *Iliad*. The armed combat, according to representations on the Clazomenae sarcophagus, the Amphiaras Vase, and the Dipylon Vase, was a feature of the funeral games. In the games given by Achilles the combat in armor is entered only by Ajax and Diomed. Somewhat like the wrestling match, though both contestants "put looks on so austere, and join'd so roughly" that many feared the outcome, the event is terminated abruptly without a decision. Nevertheless, the sword from Thrace is bestowed on Diomed, and both dine generously at Achilles' tent.

Casting the weight, here simply a natural pig of stone and metal, is also a skill closely allied to primitive warfare, and clearly a popular sport. There are four contestants, but one prize, the weight itself, which Polypoetes flings so far beyond the rest that all around stand up and cheer.

¹⁵⁵ *Ibid.*, xxiii, 617-37.

Hurling the spear, which should have proved a beautiful event, turns out dull indeed, for Agamemnon and Meriones announce themselves as entrants, whereat Achilles, declaring none worthy to match the son of Atreus, awards him first prize, "a caldron new," and gives a lance to Meriones. The archery contest, whose object is to shoot a dove without touching the string which binds her to a pole, is won by Meriones, who succeeds in piercing the dove on wing amongst the clouds, after Teucer (who shot first, but, unlike Meriones, made no vow "to Him that rules the bow") had missed her, but cut the string.

Thus ended the games, whose rich prizes honored Achilles' generosity and the memory of his friend; and whose portrayals embellished the name of the poet or poets that gave them. What would Londos, Nurmi, Louis not do for such press agents—and for gods so attentive to mortals!

The care expended by Homer on the funeral games of Patroclus suggests both the importance of sports and the rôle of primitive rites among early Hellenes. References to such ceremonial games performed in the dim ages of mythology were common currency in later historic times. Plutarch ¹⁵⁶ says that Minos instituted games in honor of Androgeos. Pausanias says funeral games were first celebrated for Azas, son of Arcas; Pelias was thus honored; and Mecisteus took part in those for Oedipus at Thebes.¹⁵⁷ The games in honor of Achilles by his mother, Thetis, were said to have excelled all others.¹⁵⁸

Besides the sporting contests just described, numerous references in Homeric poetry and other literature deepen the conviction that the early Greeks were genuinely fond of physical competition. That they believed themselves superior to others, or that they were so depicted in their art, is not surprising. What people does not think itself more cultured, more skillful, than its neighbors? Almost any festal occasion that offered opportunity for recreation and entertainment was devoted to sport, music, and dancing. Individual prowess of many sorts, quite apart from formal contests, is often acclaimed. At the return of Odysseus, the boxing match with Irus and the contest with the bow are put on impromptu.¹⁵⁹ Trick horseback riding, leaping from back to back of four horses in full career, is mentioned in the *Iliad*.¹⁶⁰ Swimming and boating ¹⁶¹ though not mentioned as part of athletic competitions were doubtless common among people who had so many opportunities for them. Both warm and cold

¹⁵⁶ Theseus, 16.

¹⁵⁷ Pausanias, viii, 4, 5; v, 17, 9; i, 28, 7.

¹⁵⁸ Od., xxiv, 122-8.

¹⁵⁹ *Ibid.*, xviii, 50-139; xxi. Whether Odysseus' feat was to shoot through twelve axheads, or through the holes in which the helms of the axes were inserted, has been debated.—Haynes: "Odysseus' Feat of Archery," *Am. Jour. Archaeol.*, vi, 487.

¹⁶⁰ Bk. xv, 625-30.

¹⁶¹ Od., viii, 46-7, 345; x, 100; Gardner: "Boat-races among the Greeks," *Jour. Hellenic Studies*, ii, 90 f.

baths are familiar features of the domestic life of Homer's Greeks.¹⁶² Rivers and the sea, however, provided the earliest facilities for bathing and swimming. Myth tells of Lcander who swam the Hellespont nightly to his beloved Hero. Odysseus, when tempests destroyed his tipsy craft, swam wrestling with the sable seas to reach the Phaeacians' strand.¹⁶³

The arrival of a stranger at the court of Alcinous, which some have thought to place in Crete, causes the Phaeacian king to order a feast with games and music.¹⁶⁴ The Phaeacians boast of their athletic prowess—until Odysseus has exhibited his—longing to give the visitor a show of their superiority in boxing, wrestling, leaping, running, and discus, that he may long remember it and carry their fame back home with him. Odysseus, too, is urged to show his skill; for, says Phaeacian Laodamas, none can prove his worth so well as by the strenuous arts of foot and hand. Odysseus at first modestly declines; then, stung by the taunt that he is only a seafaring merchant, unfit for noble, manly sports, he rebukes his accuser, seizes a stone, heavier than any yet thrown, and hurls it far beyond the best of them. Finally, his "spleen up," he challenges each and all, save Laodamas ("for he's mine host, and who will fight, or wrangle, with his friend?"), to compete with him in any sport "in use with men." The Phaeacian king thinks quickly and adroitly shifts the talk from manly sports to feasts, music, dancing, baths, and other features of luxurious life, in which the Phaeacians know no peer.

Dancing is a highly cultivated art amongst the Phaeacians, so spectacular in its evolutions, speed, and precision, that Odysseus is amazed at their twinkling feet, which moved so "swift, and fine, and beat the air so thin, they made it shine."¹⁶⁵ He is ready to grant them superiority in it at once, but is still to be entranced by a superb performance of an acrobatic ball dance by Halios and Laodamas:

Then the rich-wrought ball,
That Polybus had made, of purple all,
They took to hand. One threw it to the sky,
And then danc'd back; the other, capering high,
Would surely catch it ere his foot touch'd ground,
And up again advanc'd it, and so found
The other cause of dance; and then did he
Dance lofty tricks, till next it came to be
His turn to catch, and serve the other still.

¹⁶² Krause: *Die Gymnastik und Agonistik der Hellenen*, 1, 624.

¹⁶³ *Od.*, v, 486, 504-5.

¹⁶⁴ *Ibid.*, viii, 48 et seq.

¹⁶⁵ *Ibid.*, viii, 372-3.

When they had kept it up to either's will,
 They then dane'd ground tricks, oft mix'd hand in hand,
 And did so gracefully their change command,
 'That all the other youth that stood at pause,
 With deafning shouts gave them the great applause.¹⁶⁶

These sports were practiced by folk of high degree. Commoners did not compete with their betters. Alcinous of the Phaeacian court sends fifty-two youth "chosen from the throng," the best at oars, to launch a ship, while others go to prepare a feast in honor of Odysseus. The "sceptre-bearing" kings are invited to feast and prove themselves in manly games.¹⁶⁷ Men who go avoyaging for cargoes and gain, and are concerned with favoring winds, are in a class apart from men "fit for contentions noble," says Euryalus.¹⁶⁸ That common folk had competitions among themselves, in imitation of their betters, there is no reason to doubt, though note is seldom taken of them. Homer sings of the great and for the great; reference to inferiors is often contemptuous, or they are ignored altogether. It may be that the boxing match between Irus and Odysseus justifies the conjecture that contests were arranged at times by nobles for their inferiors.¹⁶⁹ The evidence, however, is slight. The quarrel begun by Irus is really quite impromptu; the suitors, wishing to see some sport, egg on the opponents and promise favors to the winner.¹⁷⁰ The informal and spontaneous character of sports often appears, but there are distinctions; some are truly aristocratic, others of a humbler sort. While Achilles nurses his anger the leading men stalk about refusing to fight. Meanwhile, other folk—

. . . yet pleas'd their hearts
 With throwing of the holéd stone, with hurling of their darts,
 And shooting fairly on the shore. . . .¹⁷¹

In such an aristocratic, regal sport as chariot-racing, commoners do not appear. Class distinctions are reflected in Homeric sport, as they are in other departments of life. Centuries later, when democracy had made some impress on the Hellenic world of sports, Alexander still thought it unworthy of royalty to compete with common men.

¹⁶⁶ *Ibid.*, viii, 509-22.

¹⁶⁷ *Ibid.*, viii, 44 et seq.

¹⁶⁸ *Ibid.*, viii, 210-23.

¹⁶⁹ Manning: "Professionalism in Greek Athletics," *Class. Weekly*, xi, 74.

¹⁷⁰ *Od.*, xviii, 51-68.

¹⁷¹ *Il.*, ii, 685-7.

DORIAN DOMINION

THE INVASION

The bronze-age civilization which had centered at Knossos and Mycenae appears to have been profoundly disturbed about the twelfth century by migrations from the north. The Heraclids, as ancient legend put it, were returning to reclaim the heritage of Heracles. To this southward migration, which embraced Thessalians and Aetolians as well as Dorians, the name "Dorian" invasion is commonly given. Although, according to Greek accounts, the invasion occurred in 1104 B.C., the entire movement actually covered centuries. Evidence of infiltration is found as early as the fifteenth century in some localities, but the most destructive conquest seems to have occurred about the middle of the eleventh century.¹ Its effects are attested in many ways. The naturalness of Cretan-Mycenaean art gives way to crude "Geometric"; swords and other articles of iron become more common, bronze implements less so; new modes of clothing and adornments appear; communication is broken down; and the universal character which distinguished Cretan-Mycenaean civilization at its height is supplanted by a localism, evident in the varieties of Geometric art.² In short, Mycenaean culture declines, probably from internal decay as well as from external forces, and is followed by an age of darkness which continues until about the eighth century.

Prior to the seventh century lies the shadowland of many legends. The fascinating tale told by Pausanias about the Messenian wars,³ built upon the accounts of Rhianus of Bene and Myron of Priene, is scarcely more satisfying than the mythical account of the Dorian invasion and the rise of Argolis, Sparta, and Messenia, according to which three great-grandsons of Hyllus

¹ Thucydides, I, 12; *The History of Herodotus*, I, 56; *The Cambridge Ancient History*, II, 519, 525.

² C.A.H., II, 521; Jardé: *The Formation of the Greek People*, p. 75.

³ Pausanias's *Description of Greece*, IV, 6-23.

(Temenus, Aristodemus, and Kresphontes) conquered the lower Peloponnesus and divided it by lot, Argolis falling to Temenus, Messenia to Kresphontes, and Sparta to the twin sons of Aristodemus who had just died. What is truth, what romance, in the tale of those laborious struggles whose heroes are let down safely by eagles' wings to the bottom of an abyss and escape from dark caverns by holding fast to foxes' tails?

Though one may distrust many details in the story of struggles that went on from the eleventh century to the seventh, and though the heroic embroidery and the doings of the gods may be discounted or entirely cast aside, the major consequences are sufficiently clear. What Knossos and Mycenae had been to the bronze-age civilization, Argos and Sparta became to the Dorian culture, which arose upon its ruins. But before Sparta established her iron sway over the Peloponnesus, the separatist tendencies, so ubiquitous at the end of the Mycenaean Age, produced scores of petty sovereign city-states. From the eleventh century to the eighth this divisive localism was at its height. Only gradually, by dint of great effort, Sparta rose to supremacy. The Achaeans first gave way before the Dorians or quasi-Dorians in the plain of Argos; to the south, on the River Eurotas, they established themselves at Sparta and ultimately conquered the Achaean stronghold of Amyclae, which "offered a long and not inglorious resistance"; and finally the town of "Helos by the sea."⁴ By the middle of the eighth century, Sparta was mistress of Laconia. Westward, across the ridges of Tygactus, lay fertile Messenia, whose subjection was brought about after two bitter, stubborn wars in the eighth and seventh centuries.⁵ On this eminence of military power, extending throughout the lower Peloponnesus, Sparta stood till the fourth century, but not without the need of constant vigilance to put down revolts of the conquered populations. Then, after the battle of Leuctra (371 B.C.), as if to give the lie to the proud boast that Spartan women had never seen the smoke of enemy campfires, Theban Epaminondas ravaged their territory, even to the Eurotas and the environs of Sparta herself,⁶ and refounded Messenia as a further means of weakening Spartan power.⁷

SPARTAN SOCIAL INSTITUTIONS

When Polybius and Plutarch attributed the many centuries of Spartan law and order to Lycurgus, they honored a name traditionally revered ever since the Greeks began to write their history.⁸ Whether Lycurgus ever existed, whether

⁴ *Ibid.*, III, 2, 6-7; *Jardé: op. cit.*, pp. 122 f.

⁵ *Jardé: op. cit.*, pp. 117 f.; *Bury: A History of Greece*, pp. 127 f.

⁶ *Xenophon: Hellenics*, VI, 5, 28; *Plutarch: Agesilaus*, 31.

⁷ *Pausanias*, IV, 26.

⁸ *Polybius: The Histories*, IV, 81; *Plutarch: Lycurgus*, 29; *Agesilaus*, 33.

his was a legendary name with which patriots associated certain aspects of their history, is open to question.⁹ But though the reputed Lawgiver of Laconia be elusive, the character of Sparta's society and government during the centuries of her greatest power is fairly clear. Tradition said that Lyeurgus lived about 855 B.C., and formed the nicely articulated system which came to be a symbol of oppression to enemies and a name to conjure with among later admirers and students of politics. It is evident, however, that Spartan society was a result of a long process of growth and not simply the embodiment of a design. A conspicuous feature of Laconian society, its stratification, was the result of conquest by the Dorian invaders. Because of the stubborn resistance of the inhabitants of Helos, they were reduced to serfdom. Hence, according to a common version, originated the designation "Helots," subsequently applied to other villages that fell subject to the conquerors' capricious will.¹⁰ Their number, fluctuating from time to time, is not definitely known, but probably doubled as a result of the Messenian wars and exceeded the masters' ten to one.¹¹

Hatred of the conquerors was intense and often flared into revolt. The Third Messenian War (464 B.C.), a revolt of Messenian Helots, lasted many years. Apropos of Cinadon's conspiracy against the Spartans, Xenophon says that Helots would willingly have eaten their Spartan lords alive.¹² Thucydides¹³ declares that Spartan institutions were designed chiefly to keep the Helots down. By means of the Crypteia, Spartan youth spied upon Helots and did away with them; the ephors swore to make war upon them; and trickery was employed to betray their ablest members. Thus the Spartans announced on one occasion that those Helots who claimed they had rendered great service to the state would be freed. Thus chosen, about two thousand crowned themselves and went to the temples; soon after, however, these were done away with, and no one ever learned how they were destroyed.¹⁴

The Helots tilled the soil at the behest of their masters. By their labor Spartan citizen-soldiers were left free to devote themselves to public affairs. In war, Helots at times served their masters personally. Herodotus¹⁵ says that, at the battle of Plataea, each Spartan was attended by seven Helots. Sometimes they were permitted to fight as light-armed, or even as heavy-armed, soldiers. For bravery they might be granted liberty; but if the story told by Thucydides be true, many must have feared "freedom" as a dubious gain. Manumission, executed by the state, was apt to be resorted to when soldiers were scarce. As time

⁹ Bury: *op. cit.*, p. 135.

¹⁰ Pausanias, III, 20, 6.

¹¹ C.A.H., III, 538, 567; Müller: *The History and Antiquities of the Doric Race*, II, 44 f.; Wilkins: *National Education in Greece*, p. 12.

¹² *Hellenics*, III, 3, 6.

¹³ Bk. IV, 80.

¹⁴ *Ibid.*; Plutarch: *Lycurgus*, 28; Plato: *Laws*, I, 633.

¹⁵ Bk. IX, 29.

went on and the aristocracy of free citizens dwindled, the Helots and the Perioeci were turned to more and more for warriors. Sending Helots to war was one way to get them away from Laconia! The army Brasidas led to Thrace included seven hundred heavy-armed Helots; and Agesilaus took two thousand newly enfranchised men on an expedition to Asia.¹⁶ Cleomenes enfranchised the best Perioeci, organizing four thousand of them as heavy infantry; Helots, too, who could pay five Attic minas were freed, and two thousand of them were armed.¹⁷

Above the Helots were the Perioeci, distributed in many localities throughout Laconia, and derived probably from pre-Dorian groups which submitted more readily to the demands of their conquerors.¹⁸ Perioeci were not serfs. They had certain privileges, served as heavy-armed troops under Spartan command, and exercised local control in their communities; but they had no voice in the determination of policy in Laconia. As a part of the subject population, they submitted to Spartan demands while Spartan strength compelled it, but were always ready to seize any favorable opportunity for revolt. A general uprising occurred among them when Epaminondas invaded Laconia after the battle of Leuctra.¹⁹

At the apex of the social pyramid were the Dorian conquerors, who had reduced pre-Dorians to the status of Helots and Perioeci. These Spartiates were citizens; they constituted the Spartan state. This relatively small group perfected and long maintained its hold upon the conquered by iron discipline of its members rather than by virtue of numbers. Plutarch says that nine thousand lots were assigned to genuine Spartan citizens by Lycurgus; Herodotus places the figure at eight thousand at the time of Thermopylae, while Aristotle says there were less than one thousand at the Theban invasion.²⁰ At the conspiracy of Cinadon, Xenophon says,²¹ only forty Spartans were to be seen in the market place, compared with four thousand others.

Polybius²² was of the opinion that Lycurgus, by judicious mixture of monarchy, aristocracy, and democracy, provided a constitution which safeguarded liberty longer at Sparta than had elsewhere been known. Aristotle,²³ however, found many flaws in the Spartan constitution. However one may judge it, good or bad, the system served the interest of a small class of conquerors, who sought

¹⁶ Thucydides, iv, 80; Xenophon: *Hellenics*, iii, 4, 2.

¹⁷ Plutarch: *Cleomenes*, 11, 23.

¹⁸ Herodotus, ix, 28; Isocrates: *Panathenicus*, 177-81; C.A.H., v, 3 f.; Laistner: *A Survey of Ancient History*, pp. 129 f.

¹⁹ Plutarch: *Cinon*, 16; Agesilaus, 32; Grote: *A History of Greece*, i, 478.

²⁰ Plutarch: *Lycurgus*, 8; Herodotus, vii, 234; Aristotle: *Politica*, ii, 9; Laistner: *op. cit.*, p. 350.

²¹ *Hellenics*, iii, 3, 5.

²² *Bk. vi*, 10.

²³ *Politica*, ii, 9.

the preservation of their power and privileges amid a host of subjugated Helots and Perioeci.

The constitution of Sparta was democratic in a limited sense: at the age of thirty, every male Spartan became a member of the Apella, the assembly, which gave voice on war, peace, manumission of Helots, and other public matters. But the Apella enjoyed only a limited freedom: none could speak save the officials, those specially invited, and those approved by the magistrates. Moreover, though Lycurgus provided that the people should have the final decision,²⁴ this popular sovereignty was modified by Theopompus and Polydorus, so that, if the people voted "crookedly," their decision might be reversed by those above them. The Apella did not initiate policies, but approved or rejected them without modification, and was, as Grote says, "an inoperative formality."²⁵ But if the Apella's power was neutralized in this way, the common citizens gained real influence through the growth of the Ephorate—five men elected by the Apella, each for one year. The ephors had great power and often exercised it tyrannically.²⁶ They could convoke the Apella, pass upon complaints, control education, judge the conduct of men, levy and collect fines, perform judicial functions in many civil matters, and even cause the arrest of kings.

Aristocratic aspects of Spartan government were embodied in the Gerousia and the dual kingship. The Gerousia consisted of twenty-eight gerontes and the two hereditary kings, i.e., one member from each of thirty obes into which the three original tribes were divided. Its members, except the kings, were elected by acclamation in the Apella. Tenure was for life, but only old men of sixty were eligible for election. Life tenure in the Gerousia was recognized as a weakness by Aristotle, who pointed out that "the mind grows old as well as the body."²⁷

The dual kingship was at once a source of dissension and a guarantee against successful despotism, the ambition of one being a check upon the other. Its origin is obscure, but probably may be traced to the two chief families, those of Eurysthenes and Procles, sons of Aristodemus. The kings were high priests of religion, dispensers of justice in important matters, and leaders of armies. In making war they were at first supreme, but it became customary, as their power diminished and that of the Ephorate was augmented, for them to gain the approval of the ephors for military undertakings. Ultimately their powers were so completely overshadowed by the Ephorate that, though they continued to enjoy honors, wealth and privileges, they were little better than hereditary generals who, even on campaigns, were accompanied by two of the ephors.²⁸

²⁴ Plutarch: *Lycurgus*, 6.

²⁵ Grote: *op. cit.*, I, 473.

²⁶ Aristotle: *Politica*, II, 9.

²⁷ *Ibid.*

²⁸ Herodotus, VI, 56–8; Xenophon: *Constitution of the Laedæmonians*, 15; Aristotle: *Politica*, II, 9; Grote: *op. cit.*, I, 469 ff.; Abbott: *A History of Greece*, I, 203 ff.

The Spartan system at one time provided for a limited element of communism. Whether or not a Lysurgus or some other imposed these features, it is certain that they became real, and that they represented a drastic change in Spartan life. This change probably occurred, not in the ninth century, when Lysurgus was said to have lived, but shortly before the beginning of the sixth century.²⁹ It came when the Spartans by force of arms had extended their sway to Messenia and had thereby become great holders of land and masters of a vastly increased serf population. Wealth and established power are conducive to conservatism. This "lovely moment" of wealth and power the Spartan masters sought to seize and to hold fast. The *Eunomia*, the system of authoritative law which later opinion associated with Lysurgus, was the means by which dominion was to be preserved at the expense of strict self-discipline.

In the eighth and seventh centuries, Spartan society was brighter, more charming and hospitable, than it became in the sixth century and thereafter; the differences between Sparta and Athens, so much stressed by later writers, were a result of centuries of development.³⁰ Noted for hunting-dogs, horses, horsemanship—as well became a warlike, conquering people—and for its beautiful women (though one may distrust the voice of the oracle and the poet), this earlier age contrasted sharply with its successor, especially in respect to patronage of music and poetry. Thaletas of Crete, Aleman, Terpander of Lesbos, and Tyrtacus, though not natives of Sparta, found her in the seventh century a patroness of their talents. Terpander, it is said, was invited to Sparta; there he taught music, and was oft a winner at the Pythian games. Aleman, from Sardis probably, was noted for his parthencia, choral songs for maidens. Tyrtacus, reputedly a lame schoolmaster sent by Athenians upon request, became the inspirer of Spartan soldiers with his warlike songs, during the second Messenian War, and a guide to good citizenship through his stern, stately *Eunomia*. One of his marching songs appeals thus to the soldier:

O youths of our populous Sparta,
Ye children of citizen fathers,
Thrust forward your shield in the left hand,
Unterrified lift ye the lances,
Nor be of your lives over-cautions,
For 'tis not the tradition of Sparta! ³¹

This age of culture passed away. Spartan soldiers continued to sing songs around the campfire, and 'tis said that those who sang them best were rewarded with a bit of meat, but Sparta ceased to be a patroness of arts. The cultural de-

²⁹ C.A.H., III, 562; Laistner: *op. cit.*, pp. 131 f.

³⁰ Thucydides, I, 70; II, 35-46; *Lyra Graeca*, I, 27; Laistner: *op. cit.*, pp. 128 f., 153; Jardé: *op. cit.*, pp. 76 f.

³¹ Lawton: *Classical Greek Literature*, pp. 88, 125 f.; Wright, W. C.: *A Short History of Greek Literature*, pp. 74, 93, 105 f.

cine of Sparta seems to harmonize with the reforms of Lycurgus, and it may be that its cause is to be found partly in them and the conditions that called them forth. Sparta became a great military barracks; her laws and her customs "were those of a garrison"; her sole virtue, that of courage in war.³²

The Spartan system of discipline, attributed by Herodotus, Xenophon, Plutarch, and others to Lycurgus, was unique, differing even in certain respects from the Cretan, which it most resembled and from whence Lycurgus was said to have borrowed it.³³ The essential features of this social discipline were: an allotment of land to each citizen, sufficient to sustain him and enable him to contribute his share to the *syssitia* or public mess; prescription of a common diet (limited in quantity, so that one might feel hunger and have appetite for what otherwise would be unpalatable) and common, simple dress; restriction of active citizenship to those who observed the prescribed Spartan discipline and contributed their share to the mess; prohibition of the pursuit by citizens of any common or mechanical occupation, thus securing their devotion to public matters and weaning them from personal concern; withdrawal of gold and silver from circulation, and the substitution of iron money of great weight and of little value; prohibition of traveling and residing abroad, that none might contract a preference for foreign manners, views of government, or the "habits of ill-educated people"; provision that no strangers should be admitted to Sparta save for good reason, since with them would come strange words, feelings, ideas, and other novelties that might prove destructive to the harmony of the state; the institution of compulsory marriage, and the encouragement of such freedom that children might be produced by those who were thought fit to beget and to bear them; the public examination of the newborn and the rejection of those deemed unfit to become citizens; and finally, that all regulations might be faithfully observed by each new generation, the provision of a strict, common discipline—physical, mental, and moral—designed differentially so as to benefit both young men and maidens. Houses, moreover, were to be simple, that none might know luxury at home, or seek to show themselves better than others. Prohibitions were not for Spartans alone. Helots and Periocci were enjoined to dance only vulgar dances and sing ridiculous songs, being warned against the use of songs and dances of freemen. Helots, when ordered by Theban invaders to sing the songs of Alcman and Terpander, are said to have refused because their masters had forbidden it.³⁴ The phrase "freemen's choirs and freemen's games" ³⁵ reminds us that a line separated the slave from the freeman in other parts of Greece, though not so sharply as at Sparta.

³² Wilkins: *op. cit.*, p. 9; Aristotle: *Politica*, II, 9.

³³ Herodotus, I, 65; Xenophon: *Lacedaemonians*, I, 2; Plutarch: *Lycurgus*, 4; Pausanias, III, 2, 4; Aristotle: *Politica*, II, 10.

³⁴ Plutarch: *Lycurgus*, 28.

³⁵ Aristophanes: *The Frogs*, 56.

SPARTAN TRAINING

ITS CHARACTER AND PURPOSE The *Eunomia* of Lycurgus gave meticulous attention to the training of youth. Aristotle, though critical of certain aspects of this regimen, approved of the Lacedaemonian solicitude for it—especially because it was considered a state function. In the public character of education may be seen a reflection and a symbol of Spartan life. Since everything was for the collective, rather than for the individual, education was public rather than private. Sparta trained youth to obedience to the laws, and made them submissive like colts that are broken. Thus she became famous as a “subduer of men.” Lycurgus is said to have advised against building walls round the city, saying that a city is best fortified if it has a wall of men rather than of brick.³⁶ It is the strength of free men, trained in fidelity to law, of which Demaratus boasts to Xerxes: “For though they be free men, they are not in all respects free; Law is the master whom they own, and this master they fear more than thy subjects fear thee. Whatever he commands they do; and his commandment is always the same: it forbids them to flee in battle, whatever the number of their foes, and requires them to stand firm, and either to conquer or die.”³⁷ Fidelity to law, as well as sadness, shines through the “teardrops of Simonides,” who thus bears testimony to the effectiveness of Spartan training:

Go, stranger, and to Lacedaemon tell
That here, obeying her behests, we fell.³⁸

All Spartan training was for a vocation—that of the soldier. To them the words of the poet might be applied:

From their first youth unto their utmost age,
Appointed the laborious wars to wage.

In time of peace, everything was sacrificed to prepare for war. Even the smallest matters were not neglected. After eating and drinking, says Plutarch, every man walked home “without a torch,” so that he might habitually march boldly and fearlessly in the darkness.³⁹ They contrived ingeniously to make life in war-time more attractive than in peace. When engaged actively in war their exercises were easier, their diet less strict, and their officers more lenient; thus, it was said, they were the only people who found relaxation in war. Even in games, the Spartan aim was not recreation or personal enjoyment, but fitness

³⁶ Plutarch: *Lycurgus*, 19; *Agesilaus*, 1.

³⁷ *Herodotus*, vii, 104.

³⁸ *Ibid.*, vii, 228.

³⁹ *Lycurgus*, 12.

for war. Victory at Olympia was a high reward, indeed, but chiefly because it conferred the right to distinction in war. A Lacedaemonian, being asked what he had gained by his Olympic conquest, replied: "I shall stand in front of my King when I fight our enemies."⁴⁰ Success in war depended more upon individual skill and courage in hand-to-hand fighting than to-day. Physical strength and courage constituted, therefore, the primary ideals of Spartan training. To attain them they sacrificed certain other ends. Aristotle declared that Lacedaemonians brutalized their children by severe exercises which were calculated to heighten courage, but they failed to attain their goal.⁴¹ Looking back to primitive practices of other lands, where physical prowess and courage were developed chiefly for war, one notes a close resemblance between them and those of Sparta. St. John observed that the spirit of Spartan training was "precisely the same" as that of certain warlike Indian tribes which produced numerous examples of "patience, fortitude, and magnanimity, together with . . . force, agility and suppleness of body. . . ."⁴²

On the intellectual side, Spartan training seems to have been little beyond the primitive. The matter is rather obscure, however, and the evidence divergent. The judgments of those who were enemies of Sparta stress her brutal, unintellectual character; others, such as the "Laconizers," praise her uncritically and without stint. Plato's Hippias says that Spartans listened gladly to genealogies, tales of heroes, the settlement of tribes, and the founding of cities, but that "many of them know not, so to say, even how to reckon."⁴³ Isocrates⁴⁴ declares that the Spartans were so backward in education and general culture that they did not even learn letters, and that they would only be able to understand certain writings provided someone interpreted them. Plutarch says, however, that of "reading and writing" the Spartans had just "enough to serve their turn." He also informs us that Lycurgus introduced Homer into Sparta; and that "books and treatises," not deemed necessary to practical education, were "banned from the country."⁴⁵ Modern writers are scarcely more in agreement: one holds it "probable that most Spartans could read and write";⁴⁶ another, that "writing . . . was never generally taught at Sparta";⁴⁷ and still another, that "music, art, and literature counted for nothing . . ." unless in some way they served the practical ends of the state.⁴⁸ Wilkins, however, thinks that the "constant references in Herodotus, Thucy-

⁴⁰ *Ibid.*, 22.

⁴¹ *Politica*, viii, 4.

⁴² St. John: *History of the Manners and Customs of Ancient Greece*, I, 270.

⁴³ *The Works of Plato* (Cary, Davis, and Burges), IV, 219 f.

⁴⁴ *Panathenaicus*, 209, 251.

⁴⁵ Plutarch: *Lycurgus*, 4, 16; *The Ancient Customs of the Spartans*, 4.

⁴⁶ Dobson: *Ancient Education and Its Meaning to Us*, p. 17.

⁴⁷ Müller: *op. cit.*, II, 322.

⁴⁸ Forbes: *Greek Physical Education*, pp. 13 f.

dides, and Xenophon to written letters and treatises, without the slightest hint of any difficulty in reading them," and the practice of "communication between the Spartan authorities at home and their generals and ambassadors," must be interpreted to imply the possession of literary knowledge.⁴⁹ It seems probable that, though some literary training may have been gained, it was not provided for in an extensive or systematic manner, since time and effort devoted to physical training left slight opportunity for scholastic learning. At best, only a low level of intellectual culture prevailed, even if one interpret generously Plutarch's phrase, "enough to serve their turn."

Though letters apparently had little place in it, Spartan education was not entirely devoid of mental training. It is certain that, although Spartans knew little arithmetic, and though they may have been unable to read or appreciate the speeches of Isocrates, they prized and zealously cultivated an intellectual keenness, which, clothed in Laconic speech and scornful of sophistry, drove to the heart of a matter like a Spartan spear. The pithy speeches of Spartans led an admirer to say that one might regard intellectual exercise as even more characteristic of Spartans than physical.⁵⁰ Physical discipline was accompanied, moreover, by a marked stress on moral, religious, and aesthetic elements, which rendered Spartan training somewhat less narrow than might appear at first glance. Recital of passages from Homer, chanting the stirring poems of Tyrtaeus, performing the evolutions of religious and military dances, and repeating the well-conned phrases of the Lycurgan code (not to be reduced to writing),⁵¹ constituted an important and potent education of heart and mind which was not less essential to the soldier than the discipline of physical powers. Plutarch believed that instruction in music and verse was not less careful than the cultivation of proper habits in speaking. Music and physical, military training were joined harmoniously. As Terpander said:

There both the spear and music meet
And justice walks along the street.⁵²

Their songs stirred the spirit and inflamed men's minds with desire for action; the style was severe and restrained; and the thought, serious and elevating. There was praise in them for heroes who were happy; derision for cowards who were miserable; boasts as to what men would do and of what they had done. At a festival, three choirs, the old men, the youth, and the boys, intoned an ancient litany. The choir of old men solemnly proclaim:

We once did deeds of prowess and were strong young men.

⁴⁹ Wilkins: *op. cit.*, pp. 39 f.

⁵⁰ Plutarch: *Lycurgus*, 20.

⁵¹ *Ibid.*, 13.

⁵² *Cf. Lyra Graeca*, I, 33.

The young men reply:

We are so now . . . behold and see.

And the boys chime in:

We shall be . . . mightier men by far. . . .

Pindar saw the union of wisdom in council, conquest in action, and joy in rhythmic expression, as the ideal of Spartan life and training:

Councils of wise elders here,
And the young men's conquering spear
And dance, and song, and joy appear.⁵³

Of the union of music, dancing, and physical training, which provided religious, ethical, and social education, Grote says:

"The training in which a Spartan passed his life consisted of exercises warlike, social, and religious, blended together. While the individual, strengthened by gymnastics, went through his painful lessons of fatigue, endurance, and aggression—the citizens collectively were kept in the constant habit of simultaneous and regulated movement in the warlike march, in the religious dance, and in the social procession. Music and song, being constantly employed to direct the measure and keep alive the spirit of these multitudinous movements, became associated with the most powerful feelings which the habitual self-suppression of a Spartan permitted to arise, and especially with those sympathies which are communicated at once to an assembled crowd. Indeed the musician and the minstrel were the only persons who ever addressed themselves to the feelings of a Lacedaemonian assembly. Moreover the simple music of that early day, though destitute of artistical merit and superseded afterwards by more complicated combinations, had nevertheless a pronounced ethical character."⁵⁴

It is evident that Spartan education—physical, moral, and mental—looked toward a practical end: military dominion. From this vocational training, preparation for business was entirely excluded. Sparta was ruled by citizen-soldiers, not by businessmen or industrials. Lycurgus is said to have forbidden Spartans to engage in vulgar, mechanical trades. Helots did all necessary, laborious work; money-making was regarded as servile. Men under thirty "did not go into the market place at all," and it was thought improper for older men to loiter there, since they could be more fruitfully employed at the places of exercise and conversation, discussing matters of public import, instructing others, and being instructed themselves.⁵⁵

⁵³ Clough: *Plutarch's Lives*, I, 113. Courtesy of Little, Brown & Company, Boston.

⁵⁴ Grote: *op. cit.*, I, 512.

⁵⁵ Plutarch: *Lycurgus*, 24-5.

PHYSICAL EDUCATION OF GIRLS Spartan training of the citizen-soldier was based, in the first place, upon a unique concern for the training of girls, that they might become mothers of stalwart sons. Though details of this training are not known, Plutarch describes the general provisions designed by Lycurgus to achieve that perfection of women which would be most serviceable to the military state:

"The truth is, he took in their case, also, all the care that was possible; he ordered the maidens to exercise themselves with wrestling, running, throwing the quoit, and casting the dart, to the end that the fruit they conceived might, in strong and healthy bodies, take firmer root and find better growth, and withal that they, with this greater vigor, might be the more able to undergo the pains of childbearing. And to the end he might take away their over-great tenderness and fear of exposure to the air, and all acquired womanishness, he ordered that the young women should go naked in the processions, as well as the young men, and dance, too, in that condition, at certain solemn feasts, singing certain songs, whilst the young men stood around, seeing and hearing them. On these occasions, they now and then made, by jests, a befitting reflection upon those who had misbehaved themselves in the war; and again sang encomiums upon those who had done any gallant action, and by these means inspired the younger sort with an emulation of their glory. . . . Nor was there anything shameful in this nakedness of the young women; modesty attended them, and all wantonness was excluded. It taught them simplicity and a care for good health, and gave them some taste of higher feelings, admitted as they thus were to the field of noble action and glory."⁵⁶

Though the organization for girls' training was somewhat less exacting than that for boys (they dwelled at home rather than in public barracks), they were associated in herds (*agelai*) for the purpose of training, as were the boys, but separate from them, and had their special gymnasia (*dromoi*) where they exercised in running, wrestling, jumping, dancing, hurling the javelin and discus, and playing ball.⁵⁷ It was asserted, though on dubious authority, that they also practiced the panceration.⁵⁸ Girls also learned to swim and ride horseback, and at times entered horses in the races. At the festival of Hyacinthia girls took a prominent part and participated in races on horseback.⁵⁹ Cynisca, daughter of Archidamus, was "fond of the Olympic games, and was the first woman who bred horses and won an Olympic victory." After her, "other women, chiefly Lacedaemonian," won victories at Olympia, but none were more famous than

⁵⁶ Clough: *Plutarch's Lives*, I, 101 f. Courtesy of Little, Brown & Company, Boston.

⁵⁷ Grasberger: *Erziehung und Unterricht im Klassischen Altertum*, III, 503 ff.; Krause: *Die Gymnastik und Agonistik der Hellenen*, I, 31 ff.; II, 688 f.

⁵⁸ Krause: *op. cit.*, I, 55.

⁵⁹ Nilsson: *Griechische Feste von Religiöser Bedeutung*, p. 137; Freeman: *Schools of Hellas*, p. 30; Forbes: *op. cit.*, pp. 28 ff.

Cynisca.⁶⁰ One of these, Euryleonis, won a two-horse chariot race, and a statue was erected in her honor.⁶¹

Spartan Lampito boasts that she can jump and kick her buttocks,⁶² an exercise known to other lands besides Sparta. According to Pollux⁶³ one Spartan girl could do the trick a thousand times, and it was recorded on her tomb. This exercise, which the Spartans called βίβασις, was regarded as belonging to dancing, both "boys and girls practising it diligently for strengthening the legs."⁶⁴

Running was practiced by girls as well as by boys. Theocritus⁶⁵ pictures a band of 240 maidens, the flower of the land, who anoint themselves and run by the River Eurotas. In honor of Dionysus Colonatas a special race was run at Colona by eleven women, called Dionysiades.⁶⁶ At Olympia there was a special festival, the Heraea, for women, at which there were two choruses—the Hippodamia and the Physcoa—and races of girls of various ages. Pausanias describes them: "The virgins are not all of the same age; but the youngest run first, the next in age run next, and the eldest virgins run last of all . . . their hair hangs down, they wear a shirt that reaches to a little above the knee, the right shoulder is bare to the breast. The course assigned to them . . . is the Olympic stadium; but the course is shortened by about a sixth of the stadium. The winners receive crowns of olive and a share of the cow which is sacrificed to Hera; moreover, they are allowed to dedicate statues of themselves with their names engraved on them."⁶⁷ A unique, black-figured Attic vase, which shows three women in a running race, is believed to represent "the eldest of the three sets of maidens who raced in honor of Hera at Elis," as Pausanias described them, though certain details of dress do not agree with his account.⁶⁸

Girls marched in religious processions, participated in choruses, and danced at certain festivals. At times young men and maidens danced together. Aris-
tophanes portrays the dance. Thus runs the Laconian chorus:

Leave Taygety, an' quickly
Hither, Muse Laconian, come.
Hymn the Gude o' braw Amyclae,
Hymn Athana, Brassin-dome.
Hymn the Tyndarids, for ever

⁶⁰ Pausanias, III, 8, 1.

⁶¹ Ibid., III, 17, 6.

⁶² Aristophanes: *Lysistrata*, 81-2.

⁶³ *Onomasticon*, IV, 14, 102.

⁶⁴ Grasberger: *op. cit.*, I, 34; Krause: *op. cit.*, I, 398.

⁶⁵ *The Idylls*, 18.

⁶⁶ Pausanias, III, 13, 7.

⁶⁷ Pausanias, V, 16, 2-3. Trans. by J. G. Frazer. Courtesy of Macmillan & Co., Ltd., London, and The Macmillan Company, New York.

⁶⁸ Kyle: "The Maidens' Race on Attic Vases," *Am. Jour. Archaeol.*, VI, 53.

Sportin' by Eurotas river.
 Noo then, noo the step begin,
 'Twirlin' licht the fleecy skin;
 Sae we'se join our blithesome voices,
 Praisin' Sparta, loud an' lang,
 Sparta wha of auld rejoices
 In the Choral dance an' sang.
 O to watch her bonnie dochters
 Sport alang Eurotas' waters!
 Winsome feet for ever plyin',
 Fleet as fillics, wild an' gay,
 Winsome tresses tossin', flyin',
 As o' Bacchanals at play.⁶⁹

Lycurgus is said to have ordained that maidens should march in processions and dance at certain feasts while the young men looked on. Whether they danced naked, or only scantily dressed, has been disputed. It seems probable that they were not entirely unclad. Grasberger holds that the girls were attired in a *chiton*—somewhat longer than the boys' garment—which, slit at the side, permitted free exercise of the limbs and showed the thighs. Hence the reference to "thigh-showers."⁷⁰

How long girls were given physical training is unknown, but Plato, who follows the Spartan system in certain respects, and may have done so in this, would continue physical training for women to the age of twenty, except those who married earlier.⁷¹ Spartan girls may have begun exercises about seven, as did boys,⁷² and one may infer that they continued gymnastics in public until marriage.

Spartan efforts in respect to the physical culture of women were a source of pride on their own part, and of ridicule, at times, at the hands of their neighbors. Spartan women are said to have been "the most beautiful in all Greece."⁷³ Gorgo, wife of Leonidas, is said to have boasted that only Spartan women brought forth men.⁷⁴ Athenian audiences would find the Spartan ideal of female physical perfection humorous. Aristophanes, doubtless, did not fail to raise a laugh at Spartan expense, when he made *Lysistrata* say of Lampito:

O the sweet girl! how hale and bright she looks!

Here's nerve! here's muscle! here's an arm could fairly throttle a bull!

⁶⁹ Aristophanes: *Lysistrata*, 1296-313. Trans. by B. B. Rogers. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁷⁰ Clough: *op. cit.*, I, 101; Perrin: *Plutarch's Lives*, I, 246 ff.; Grasberger: *op. cit.*, III, 504.

⁷¹ Laws, VIII, 833.

⁷² Forbes: *op. cit.*, pp. 31 f.

⁷³ Müller: *op. cit.*, II, 292.

⁷⁴ Plutarch: *Lycurgus*, 14.



A GIRL RUNNER

Vatican, Rome (Courtesy, The Metropolitan Museum of Art, New York)

To which the buxom lass replies:

Weel, by the 'Twa, I think sac.

An' I can loup an' fling an' kick my hurdies.⁷⁵

As to whether physical training of girls made them brave and serviceable to the state, there is a difference of opinion. Both favorable and unfavorable judgments may be partly true. Philostratos expressed a common opinion when he said that "Laconia became so great in war" because of her procedure in respect to the physical training of girls, who, united with men similarly trained, gave birth to sturdy children.⁷⁶ On occasion Spartan women showed initiative and courage. Cratesicleia and the wife of Panteus died bravely.⁷⁷ When Pyrrhus attacked Sparta, it is said that Archidamia went to the senate with a sword in hand, asked whether the men thought the women should survive the ruin of Sparta, and refused, on behalf of all the women, to be sent away to safety. Then the women and girls helped the older men dig a trench and sink the wagons, and sought to encourage the young men to fight bravely as befitted Spartans.⁷⁸ After the disastrous battle of Leuctra, it is said that Spartan women surpassed the men in putting on a brave front at the news of defeat and the death of their relatives. Soon there came a break, however. With the invasion of Laconia, which followed upon defeat at Leuctra, Plutarch reports that Agesilaus was profoundly distressed because of the chaos into which Sparta fell—the old men angry and critical of the state of affairs, and the women unable to keep still, being quite distracted at the noise of shouting and the sight of the enemies' fires.⁷⁹ Aristotle's judgment may be open to question, since he disapproved of the freedom which Laconian women enjoyed. Of the effect of Spartan discipline on the courage of women, and its serviceability when put to the extreme test of war, he says: "Even in regard to courage, which is of no use in daily life, and is needed only in war, the influence of the Lacedaemonian women has been most mischievous. The evil showed itself in the Theban invasion, when, unlike the women in other cities, they were utterly useless and caused more confusion than the enemy."⁸⁰ Plato, too, speaks disapprovingly of the lack of state regulation of the life of women at Sparta.⁸¹

PHYSICAL TRAINING OF BOYS Although the public exercises of Spartan girls are said to have been promotive of marriages, and thus useful to

⁷⁵ *Lysistrata*, 78-82. Trans. by B. B. Rogers. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁷⁶ Philostratos; *Concerning Gymnastics*, 27.

⁷⁷ Plutarch: *Cleomenes*, 38-9.

⁷⁸ Plutarch: *Pyrrhus*, 27.

⁷⁹ *Agesilaus*, 29, 31.

⁸⁰ *Politics*, II, 9. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press); cf. Müller: *op. cit.*, II, 298 f.

⁸¹ *Laws*, VI, 781.

the state, it appears that this incentive was insufficient. Sparta had to resort to discrimination against those not married by the age of thirty, refusing them permission to witness public processions and the dances of young men and maidens, compelling them to march scantily clad around the market place in winter, and denying them such marks of respect as were commonly paid to married men.⁸² But in spite of all efforts to encourage the breeding of citizen-soldiers, and the exemption from military service of fathers of three sons, the number of Spartan citizens declined, as may be judged from the testimony of Xenophon, Aristotle, and others. Perhaps the system of property distribution was at fault. Aristotle stated that, at the time of the Theban invasion, Spartan citizens numbered only one thousand; in his opinion "the want of men was their ruin."⁸³

Children were looked upon as property—of the state, not of the parents—and the latter were to beget children for the state. Acrotatus, when he returned bloody and triumphant from battle, was urged by the old men to take to himself Chilonis and beget "brave sons for Sparta."⁸⁴ Women might be "lent" by old or childless husbands to other men to beget children; but it does not appear that the exchange could be initiated by women who desired excellent offspring. With this freedom in the marriage relation, it is said that amongst Spartans adultery was unknown.⁸⁵

At the birth of the child, the state asserted its right of judgment. The infant was taken before certain "tryers"—elders of the tribe in which it was born—who ordered it to be brought up, if strong and well formed, and assigned it one of the shares of land; but, if puny and misshapen, they caused it to be exposed on Mount Taygetus, since it was deemed inconsistent with public welfare to preserve it. In case of exposure, or "putting away," the child might be taken and reared by Helots or Periocci.⁸⁶ whose labor supported the Spartan military establishment.

Up to the age of seven the boy remained at home; even there, attention to physical strength and courageous temper was apparently uppermost. Mothers bathed the newborn child in wine, it is said, rather than water, to temper and test its body, and excluded swaddling bands, plentiful, dainty food, and all such care as would tend to develop weakness, fear, and peevishness. At this period, the boy might go to his father's mess, where, seated on a low stool, he received a "half share without any vegetables" and listened to the conversation. Though early training must have been chiefly in the mother's hands, since the father was compelled to spend much time in public pursuits, the instance of Agesi-

⁸² Plutarch: *Lycurgus*, 15; Müller: *op. cit.*, II, 294 ff.

⁸³ *Politica*, II, 9.

⁸⁴ Plutarch: *Pyrrhus*, 28.

⁸⁵ Plutarch: *Lycurgus*, 15; Xenophon: *Lacedaemonians*, I, 7-9.

⁸⁶ Plutarch: *Lycurgus*, 16.

laus, who is said to have ridden a stick-horse before his children, suggests that the father's influence in home-training was not lacking.⁸⁷

At the age of seven the sons of Spartan citizens, rich and poor alike,⁸⁸ entered the agoge, a system of public, compulsory training, by virtue of which they were to become citizens. Failure to submit to this discipline resulted in loss of "all future honours."⁸⁹ Only the heirs apparent were exempt from the harsh rule of the agoge; they might submit to it, however, if they chose, as apparently Cleomenes, Leonidas, and Agesilaus did.⁹⁰ Besides sons of citizens, certain Helots (Mothaces as they were called) were admitted to the agoge at times as "foster-brothers" of young Spartans. Their number, however, was probably never large. If they finished the training, they were free, and might even attain full citizenship in some cases. Lysander, Callicratidas, and Gylippus are said to have arisen from this class.⁹¹ Even foreigners might send their children for a Spartan education. Xenophon is said to have been persuaded by Agesilaus to bring his sons to Sparta that they might learn the best of all things, "how to obey, and how to command."⁹²

Upon entering the agoge at seven, boys were enrolled in "herds" or *bouai*, each under a prefect or herd-leader, *bouagor*. These "herds" were grouped in larger troops or companies (*agelai*) for certain purposes, and each company was under one of the best of the prefects.⁹³ If each "herd" had 64 boys, as Freeman thinks, the number in a company would be 256, following Kahrstedt's opinion that there were four "herds" in each company.⁹⁴ Certain age groups were recognized in the agoge: "herd-children," the youngest, aged eight; "preparatory-youngsters," nine; "youngsters," ten; "preparatory boys," eleven; and "boys," twelve. From thirteen to fourteen, they were known as "preparatory-ephebi" (*melleirens*); and from fourteen to twenty, as "ephebi" (*eirens*).⁹⁵ The younger *eirens* were sometimes called *sideunai*; the older lads who were "just entering on manhood,"⁹⁶ were called "ball-players" (*σφαίρις*) perhaps because their chief sport was ball-play. This game, carried on with great enthusiasm, is said to have "resembled a battle rather than a diversion."⁹⁷

⁸⁷ Müller: *op. cit.*, II, 288, 308.

⁸⁸ Plutarch: *Lycurgus*, 16; Aristotle: *Politica*, IV, 9.

⁸⁹ Xenophon: *Lacedaemonians*, III, 3.

⁹⁰ Plutarch: *Agesilaus*, 1-2; Müller: *op. cit.*, II, 308 f.

⁹¹ Athenaeus, VI, 271; Clough: *op. cit.*, IV, 474; Xenophon: *Hellenics*, V, 3, 9; Freeman: *op. cit.*, pp. 15 ff.

⁹² Plutarch: *Agesilaus*, 20.

⁹³ Xenophon: *Lacedaemonians*, II, 11.

⁹⁴ Müller: *op. cit.*, II, 310; Freeman: *op. cit.*, p. 18; Forbes: *op. cit.*, p. 22.

⁹⁵ Forbes, *op. cit.*, pp. 20 f., holds that the old notion that *melleiren* was applied from eighteen to twenty and *eiren* from twenty to thirty (cf. Abbott: *op. cit.*, I, 212; Gruber: *op. cit.*, III, 58 ff.) is incorrect; Busolt-Swoboda: *Griechische Staatskunde*, II, 695 ff.

⁹⁶ Pausanias, III, 14, 6.

⁹⁷ Müller: *op. cit.*, II, 309 f.

The direction of the *agoge* was placed in the hands of a *paidonomos*, one of "the noblest and best men." This inspector of boys and their training was appointed by the ephors, and had authority to bring the boys together, take charge of them, and with the assistance of "whipbearers," to "punish them severely in case of misconduct." Xenophon comments soberly that "modesty and obedience" were "inseparable companions at Sparta."⁹⁸ The *paidonomos* continued to exercise some control, though less absolute, over the older youth, and under certain circumstances might turn them over to the ephors to be fined.⁹⁹ Immediate supervision of a company was placed in the hands of one of the ablest *eirens*, so that a leader was never lacking among the boys, even though no adult was present.¹⁰⁰

Training the youth of Sparta was the duty of all citizens. If no particular work was appointed, the men went to watch the boys at their exercises, to teach them something, or to learn something themselves from those who were older and wiser.¹⁰¹ While the ephors, the *paidonomos*, *eirens*, and "herd-leaders" had special functions of supervision and direction, in their absence any adult citizen might punish a youth for misconduct. Likewise the practice, common in Sparta as well as in Crete, of having adult citizens of good character act as "inspirers" of particular youths,¹⁰² though liable to abuse, was promotive of social education, and gave to all citizens the work that is commonly done by paid teachers, or by fathers in societies where the family plays an important rôle. The relationship between "inspirer" and "hearer" was one of affection and mutual understanding, recognized by the state.¹⁰³ Kings had their "inspirers" and "hearers" as well as any of the "peers": Lysander was the "inspirer" or "lover" of Agesilaus;¹⁰⁴ Cleomenes III was the "hearer" of Xenares.¹⁰⁵ The responsibility of an "inspirer" was great; the social significance of the practice is suggested by the fact that, in case of faults, the "inspirer" might be punished¹⁰⁶ instead of the "hearer" who had committed them, on the assumption that the one most closely concerned with the boy's education was responsible for his failure in any aspect of manly behavior.

Clothing was extremely simple and limited, so that the body might be hardened. Dress and bedding were inspected frequently by the ephors.¹⁰⁷ It is said that boys were allowed one garment each year.¹⁰⁸ Sandals would soften the feet,

⁹⁸ Plutarch: *Lycurgus*, 17; Xenophon: *Lacedaemonians*, II, 2.

⁹⁹ Xenophon: *Lacedaemonians*, IV, 6.

¹⁰⁰ *Ibid.*, II, 10-1.

¹⁰¹ Plutarch: *Lycurgus*, 24.

¹⁰² Xenophon: *Lacedaemonians*, II, 10, 12-3; VI, 1-2.

¹⁰³ Plutarch: *Lycurgus*, 17.

¹⁰⁴ Plutarch: *Agesilaus*, 2.

¹⁰⁵ Müller: *op. cit.*, II, 301.

¹⁰⁶ Plutarch: *Lycurgus*, 18.

¹⁰⁷ *Athenaeus*, XII, 550.

¹⁰⁸ Plutarch: *Customs of the Spartans*, 5.

hence they sought to harden them by going barefoot. Thus they would be able to climb hills and descend inclines more readily and with less danger; and boys who had learned to leap, jump, and run barefoot would be more nimble than those shod with sandals. Likewise, having just one garment a year, boys would grow up toughened to variations in temperature.¹⁰⁹

The food at their public meals was so plain that "Spartan diet" became a byword. Barley meal, wine, cheese, figs or dates, meat (generally pork), and fish are mentioned as the compulsory contribution to the common meals. These, together with Spartan broth and special gifts at the time of religious sacrifices and after successful hunting trips, made up their diet. Cooks were hereditary in Sparta, which may account for the fact that cooking continued to be bad. Good cooks were not wanted. The famous Mythaecus, whose palatable concoctions were compared with the art of Phidias, was ordered to leave Sparta as soon as he came.¹¹⁰ Spartan soup was so unappetizing, it was said, that only a plunge in the Eurotas could make it palatable.¹¹¹ A Sybarite who had been in Sparta and had eaten at the public mess, is said to have declared: "It is no wonder that Spartans are the bravest men in the world; for anyone in his right mind would prefer to die ten thousand times rather than share in such poor living."¹¹²

The diet of boys was in harmony with this same principle of simplicity; but they could supplement their spare rations by stealing, which was to make them more resourceful foragers and better fighters. Xenophon describes their practice thus: "As to the food, he required the prefect to bring with him such a moderate amount of it that the boys would never suffer from repletion, and would know what it was to go with their hunger unsatisfied; for he believed that those who underwent this training would be better able to continue working on an empty stomach, if necessary, and would be capable of carrying on longer without extra food, if the word of command were given to do so: they would want fewer delicacies and would accommodate themselves more readily to anything put before them, and at the same time would enjoy better health. He also thought that a diet which made their bodies slim would do more to increase their height than one that consisted of flesh-forming food."¹¹³ At the time of Agis, in accord with this strictness of diet, young Spartan warriors were ordered to present themselves naked before the ephors every ten days, and

¹⁰⁹ Xenophon: *Lacedaemonians*, II, 3-4; Plutarch: *Lycurgus*, 16.

¹¹⁰ Maximus Tyrius, diss. 7.

¹¹¹ Plutarch: *Lycurgus*, 12; Müller: *op. cit.*, II, 285; Cicero: *Tusculan Disputations*, v, 34.

¹¹² *Athenaeus*, IV, 138. Trans. by C. B. Gulick. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹¹³ Xenophon: *Lacedaemonians*, II, 5-6. *Scripta Minora*, trans. by E. C. Marchant. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

those who were sturdy and strong, as a result of their gymnastics, were praised. If rolls of fat or any other sign of flabbiness betrayed indulgence and laziness on the part of any one, however, he was at once judged and beaten for his laxity.¹¹⁴

Life in the Spartan agoge was hard. The boys were all subjected to the same regimen and discipline, did their exercises, and played games together, their whole education being a continuous practice in prompt and perfect obedience, in harmony with the demands of the collective group. The members of a "herd" looked to their leader, obeyed his commands, and patiently submitted to whatever punishment he decreed. As they grew older, physical training became more strenuous. Their hair was cut short, they went unshod, and generally played naked. After twelve years of age they seldom had baths, wore no tunic, and slept on beds of reeds which they gathered along the Eurotas. These they broke off without the aid of knives. In winter, for greater warmth, they mixed thistledown with the rushes.¹¹⁵

Closely allied with the discipline of the agoge, as a means of developing unflinching courage and endurance, were the institutions of public flagellation and the *Crypteia*. The whip had a prominent place in Spartan training. Youths were beaten if they stole so awkwardly as to be detected.¹¹⁶ Flagellation even to the point of death at the altar of Artemis Orthia was regularly and religiously performed; and youths vied with each other for the honor of proving themselves best in this test of hardness and endurance at the altar.¹¹⁷ It was said that "Lacedaemonians were the most superstitious of all the Greeks."¹¹⁸ However that may be, a religious superstition lay at the root of this practice which is said to have been established by Lycurgus as a substitute for human sacrifice, so that the altar might be wet with human blood as the oracle had bidden. Pausanias describes the ordeal thus: "The priestess stands by them holding the wooden image. It is small and light; but if the scourgers lay on lightly because a lad is handsome or noble, then the image grows so heavy in the woman's hands that she can hardly hold it, and she lays the blame on the scourgers, saying they are weighing her down. . . ." ¹¹⁹

The *Crypteia* likewise served to harden Spartan youths by vigorous exercise under conditions of exposure and small supply of provisions; at the same time, it helped to keep the Helots in subjection. The vicious brutality of the system, as reported by the Lacedaemonian in Plato's *Laws* and as represented by

¹¹⁴ Athenaeus, xii, 550.

¹¹⁵ Plutarch: *Lycurgus*, 16.

¹¹⁶ Xenophon: *Lacedaemonians*, II, 8-9.

¹¹⁷ Plutarch: *Lycurgus*, 18.

¹¹⁸ Pausanias, III, 5, 8.

¹¹⁹ Pausanias, III, 16, 10. Trans. by J. G. Frazer. Courtesy of Macmillan & Co., Ltd., London, and The Macmillan Company, New York; Lucian: *Anacharsis*, 38; Cicero: *Tusculan Disputations*, II, 14.

Plutarch, though he is unwilling to ascribe it to Lysurgus, may be exaggerated.¹²⁰ It seems to harmonize, however, with the intention of the Spartan peers who would stop at nothing in their effort to harden future soldiers and hold in subjection a conquered population.¹²¹ Plutarch gives this description of the Crypteia: "The magistrates from time to time sent out into the country at large the most discreet of the young warriors, equipped only with daggers and such supplies as were necessary. In the day time they scattered into obscure and out of the way places, where they hid themselves and lay quiet; but in the night they came down into the highways and killed every Helot whom they caught. Oftentimes, too, they actually traversed the fields where Helots were working and slew the sturdiest and best of them."¹²²

Though Spartan training was chiefly physical and gave more attention to gymnastics than other Greek systems of education, there was less athletic specialization in it than might be expected. Such specialization was not allowed to compete with that purpose which mattered most—specialization for war. Aristotle, though critical of the brutality in Spartan training, reported that it did not fall into the error of making specialized athletes.¹²³ Xenophon thought that one could not easily find "healthier or handier" men than those of Sparta, since their exercises developed legs, arms, and neck equally well.¹²⁴ Plutarch relates that a Spartan, overcome by a wrestler from another country, remarked that his adversary was only a "cleverer wrestler," not a better man. A similar point of view is reflected in the attitude of Agesilaus toward a growing love of horse racing. This became a common sport after the Persian wars. At Sparta as at Athens it was indulged in by wealthy families rather than by all citizens. There were many Spartan winners at Olympia.¹²⁵ To show them that winning such a contest was no proof of manly virtue, but only of wealth and extravagant expense, Agesilaus had his sister enter a chariot at the Olympian Games.¹²⁶

In the places of exercise, no one was permitted to be idle; and the oldest man present was charged to see that the tasks assigned should not be too easy, but hard enough for the food allotted, so that none might grow fat.¹²⁷ Professional teachers, *sophronistes*, *gymnastes*, and *paidotribes*, such as were employed at Athens, were unknown at Sparta; but the *Bideoi*, a board of five, had imme-

¹²⁰ Müller, *op. cit.*, II, 40 ff., says that the Crypteia could not have amounted to legalized "assassination" of the Helots, otherwise Plato would not have given that name to his system of inspection by picked bodies of young men. Cf. Plato: *Laws*, I, 633; VI, 763; Plutarch: *Lysurgus*, 28; Krause: *op. cit.*, II, 674 f.

¹²¹ Thucydides, IV, 80.

¹²² *Lysurgus*, 28. Trans. by B. Perrin. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹²³ *Politica*, VIII, 4.

¹²⁴ *Lacedaemonians*, V, 9.

¹²⁵ Krause: *op. cit.*, II, 670 ff.

¹²⁶ Plutarch: *Agesilaus*, 20; *Pausanias*, III, 8, 1.

¹²⁷ Xenophon: *Lacedaemonians*, V, 8.

diate oversight of gymnastic exercises, and arranged the ephēbic contests. Hoplomachoi, gladiators who publicly exhibited and taught their skill at arms, were not at first permitted at Sparta, probably because their training was not thought useful in battle; but it seems that they were introduced in the late second or early third century of the Christian era.¹²⁸ Then, of course, professionalism engulfed Sparta as well as the rest of the Graeco-Roman world.¹²⁹ Not only at home, but on campaigns, the law required all Spartans to practice gymnastic regularly; consequently they took greater pride in themselves and had more dignity of bearing than other men. It was also provided that after the passage of youth, the men should wear their hair long so that they would look taller and be more impressive and terrifying to their enemies. It was the privilege of the warrior to comb his hair before going into battle. Herodotus describes the astonishment of the Persians at Thermopylae when they saw the Lacedaemonians grooming themselves and practicing gymnastics before beginning battle.¹³⁰

Though the state system was hostile to athletic specialization, all kinds of physical contests seem to have appealed to the Spartans as to other Greek peoples. Zeus proposes a physical competition between himself and the rest of the gods—a tug of war with a golden chain.¹³¹ Among the exercises and games of the Spartans were running, fighting, boxing, wrestling, pancration, hunting, riding, throwing the stone and javelin, dancing, archery,¹³² and playing ball. Devotion to such sports and exercises was great, and the success of Spartans in them was remarkable. It has been said, indeed, that "Dorian Peloponnesus was the cradle" of festal athletic games; "the first victors at Olympian games, after these were recorded, were nearly all Dorians, or at least Peloponnesians," and "from the 15th to the 50th Olympiad most of them were Spartans."¹³³

Walking, the most natural exercise of the lower extremities, was not regarded by the Greeks as a part of gymnastics, but it was a popular means of refreshment for the sick, weak, and old. Running, however, was among the earliest and most favored sports and assumed many forms—the stade-race, the *diaulos* (double race), the race in armor (important for military training), the torch-

¹²⁸ Krause: *op. cit.*, II, 677; Plato: *Laches*, 183; Forbes: *op. cit.*, p. 26.

¹²⁹ Forbes: *op. cit.*, pp. 40 f.

¹³⁰ Xenophon: *Lacedaemonians*, XI, 3; XII, 5-6; Herodotus, VII, 208-9; Plutarch: *Lycurgus*, 22.

¹³¹ Seymour: *Life in the Homeric Age*, p. 400.

¹³² Although archery is included among the "regular exercises of the Spartans" (Forbes, *op. cit.*, p. 25), there is some difference of opinion as to the extent of its use. Homer's heroes were capable bowmen, and Apollo was said to have instructed Heracles in the use of the bow. In later times, however, shooting the bow is believed by some to have been "entirely excluded from the realm of gymnastic," save in Crete and certain other states. Against the Messenian light infantry, Sparta is said to have employed Cretan archers. Krause: *op. cit.*, I, 599 f.; Pausanias, I, 23, 4; 29, 6; IV, 8, 3; VII, 16, 1.

¹³³ Krause: *op. cit.*, II, 660 f.

race, and the long race (δολύχος). The simplest race, the stadion or dromos, had a prominent place as a separate contest at the great public festivals, where it was the most ancient event,¹³⁴ and it also formed a part of the pentathlon. The δολύχος was seven, twelve, or even twenty-four stades long—a great test of speed and endurance. Pausanias says that Ladas, a Lacedaemonian, the swiftest runner of his time, won the Olympic crown in the long race, but died on the way home after the games.¹³⁵

The prominent rôle of running at Sparta is suggested by the fact that gymnasia were at first nonexistent, but all exercises were performed in the open where the racecourse (δρόμος) was laid out. Pausanias says, "The Lacedaemonians give the name of the Course to the place where the youths are still in the habit of practising running."¹³⁶ In his day two gymnasia had been erected on the course. That running, wrestling, jumping, and throwing the discus and javelin constituted the chief elements of Spartan gymnastics is suggested by their numerous victories in the pentathlon and in separate contests at Olympia.¹³⁷ The victor in the men's pentathlon, at the Eighteenth Olympiad, was Lampis, a Spartan.¹³⁸ In the Thirty-eighth Olympiad, when the boys' pentathlon was instituted, Eutelidas, a Spartan, carried off the wild olive.¹³⁹ Pausanias refers to twenty-four stade-race victors at Olympia; seven winners of the double race; five victors in the long race; and twelve winners of the race in armor. Of these, it appears, a half were Laconians, among whom were such famous runners as Akanthos and Ladas, victors in the long race; and Chionis or Anchionis, who won the stade-race four times in succession and was thrice victor in the double race.¹⁴⁰

Wrestling was one of the most popular contests. In the funeral games of Patroclus, it held an honored place. The origin of wrestling was pushed back to mythical times, and various accounts were given of it. Diodorus says that Hermes was the originator of wrestling schools; and Autolykos, son of Hermes, was said to have taught Heracles the art of wrestling.¹⁴¹ Pausanias, however, says that Theseus invented the art of wrestling; before his time victory had depended more upon size and strength than upon science.¹⁴² According to Philostratos¹⁴³ wrestling was developed for its utility in war. Spartans were renowned for wrestling, and had many victors at Olympia, among them

¹³⁴ Pausanias, v, 8, 6.

¹³⁵ *Ibid.*, iii, 21, 1.

¹³⁶ *Ibid.*, iii, 14, 6.

¹³⁷ Krause: *op. cit.*, ii, 662, 666 ff.

¹³⁸ Pausanias, v, 8, 7.

¹³⁹ *Ibid.*, v, 9, 1.

¹⁴⁰ Hyde: *Olympic Victor Monuments*, pp. 191 ff.; Krause: *op. cit.*, i, 339 ff.; ii, 669.

¹⁴¹ Diodorus of Sicily, v, 75; Apollodorus: *The Library*, ii, 4, 9.

¹⁴² Bk. i, 39, 3.

¹⁴³ *Concerning Gymnastics*, 11.

Heracles.¹⁴⁴ In the Eighteenth Olympiad, Eurybatos, a Lacedaemonian, was winner in wrestling; in the Thirty-seventh, prizes were offered for boys in wrestling, and Laconian Hipposthenes was the victor.¹⁴⁵ It was regarded as a special reproof to the coward that any Lacedaemonian would be ashamed "to be matched with him in a wrestling bout."¹⁴⁶ Though Xenophon says that Spartans were skilled in all kinds of wrestling, there seems to have been no highly specialized training, at least in early days. Plutarch¹⁴⁷ says that they did not have special masters to teach wrestling, because they wished Spartan boys to excel in courage rather than in clever tricks. Even in the days of Philopoemen, it is said that he did everything he could to discourage professional wrestling, and put aside all thought of engaging in it himself, because of its uselessness to prepare men for war.¹⁴⁸

Boxing originated from the most natural form of hand-to-hand fighting with bare fists, and was one of the most ancient and favored of Greek sports. The contention that they invented it, however, is just another instance of the habit, which they shared with other peoples, of considering themselves the originators of all that seemed to them good. Early Cretan civilization, as we have seen, developed boxing¹⁴⁹ before the rise of the Greek states.

In the Homeric description of heroic days, boxing held an honored place. Mythology told of the gods who contended in the manly sport. Apollo had conquered Ares at Olympia; Tydeus was victor in boxing at the Nemean games; Heracles was instructed in the art of boxing by Harpalykos, son of Hermes.¹⁵⁰ Pollux, son of Spartan Tyndareus, was said to have won the boxing match at Olympia, in the days before "the unbroken tradition of the Olympiads" began.¹⁵¹ Philostratos declared that boxing was encouraged for its value in war: "Boxing is an invention of the Lacedaemonians, and once found acceptance among the barbarian Boeotians. It was best practiced by Polydeuces, on which account the poets sang his praises. The ancient Lacedaemonians boxed, however, for the following reason: they had no helmets, and they considered that fighting with such was not according to the customs of the country; but the shield took the place of the helmet, if one understood how to carry it. In order, then, to parry blows directed at the face, and when they came to withstand them, they practiced boxing and sought, in this manner, to harden the face."¹⁵²

¹⁴⁴ Müller: *op. cit.*, II, 315; Pausanias, v, 8, 4.

¹⁴⁵ Pausanias, v, 8, 7 and 9.

¹⁴⁶ Xenophon: *Lacedaemonians*, ix, 4.

¹⁴⁷ *Moralia*, III, 403.

¹⁴⁸ Plutarch: *Philopoemen*, 3.

¹⁴⁹ *Supra*, pp. 209 f.

¹⁵⁰ Krause: *op. cit.*, I, 498.

¹⁵¹ Pausanias, v, 8, 4 and 6.

¹⁵² Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 9.

Theocritus paints a vivid picture of the boxing match between Pollux and Amycus, a contest between scientific skill and brute strength: "Then Amycus came on furiously, making play with both hands; but Pollux smote him on the point of the chin as he charged, maddening him the more, and the giant confused the fighting, laying on with all his might, and going in with head down. . . . But the son of Zeus stepped now this side, now that, and hit him with both fists in turn, and checked his onslaught, for all his monstrous strength. Like a drunken man he reeled beneath the hero's blows, and spat out the red blood, while all the princes shouted together, as they marked the ugly bruises about his mouth and jaws, and saw his eyes half closed by puffy flesh. Next Pollux began to tease him, feinting on every side, and at last, seeing that he was now quite bewildered, he got in a smashing blow just above the middle of the nose beneath the eyebrows, and laid the bone of his forehead bare. Stretched on his back the giant fell amid the flowers; but he rose again, and the fighting went on fiercely. They mauled each other hard, laying on with the weighted thongs; but the giant was always busy with his fists on the other's chest and outside his neck, while Pollux, the invincible, kept on smashing his opponent's face with cruel blows." ¹⁵³

Notwithstanding the early prominence of boxing among Lacedaemonians, Freeman declares that it was "forbidden to the young Spartan"—and the pancration also—because it developed "a few particular muscles at the expense of the others." ¹⁵⁴ Such an inference, based on statements of Plutarch and Aristotle, ¹⁵⁵ may be open to doubt, though Philostratos also supports the view when he says that "in the course of time . . . [the Lacedaemonians] gave up boxing, and likewise the pancration. . . ." ¹⁵⁶ Krause maintains that no Spartan was victor in boxing and pancration at the sacred games, and argues that if they had practiced these, they would certainly have produced winners. ¹⁵⁷ Perhaps Spartans were only forbidden to engage in such competitions at the great games, where it would be unseemly for a Spartan to yield to an opponent. Philostratos must have had this in mind, for he states that they held it "disgraceful to participate in such contests, in which there was danger that, if a single one should yield, Sparta would be open to the reproach of cowardice." ¹⁵⁸ This prohibition may have been responsible for a decrease in boxing at Sparta. Krause ¹⁵⁹ says that "in later times" the Ionians, in contrast to the Dorians,

¹⁵³ Theocritus: *Idylls*, xxii, 87-111, from F. A. Wright, *Greek Athletics*, p. 36, quoted by permission of the author; cf. Apollonius: *The Argonauts*, II, 30-97.

¹⁵⁴ Freeman: *op. cit.*, p. 26.

¹⁵⁵ *Politica*, viii, 4; *Lycurgus*, 19.

¹⁵⁶ Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 9.

¹⁵⁷ *Op. cit.*, I, 55; II, 666.

¹⁵⁸ Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 9.

¹⁵⁹ *Op. cit.*, I, 499.

gave attention to boxing, and he wonders that the fame of Dorian ancestors in the art was not sufficient incentive to cause Spartans to devote themselves to it. Although the decline of boxing may have been real, popular opinion seems to have continued to associate the "painful" art with Spartan training. Plato says that the Laconizers of his day thought to imitate the Spartans by going about in short cloaks "with their ears bruised" and with the cestus bound on their arms, being "always in training."¹⁰⁰

Though Lycurgus is said to have prohibited contests which involved the stretching forth of one's hand,¹⁰¹ it does not appear that Müller, Freeman, Krause, and others are justified in their assertion that the pancration was not practiced at Sparta.¹⁰² Spartan Heracles, according to tradition, was credited with victory in the pancration at Olympia in the days before the "unbroken tradition of the Olympiads" began.¹⁰³ Gardiner holds that the "primitive rough and tumble," the forerunner of the pancration, "unrestricted by law and unrefined by science, was allowed and encouraged as a test of endurance and a training for war,"¹⁰⁴ but that Spartans were forbidden to enter such events with others at Olympia. Jüthner's view is to the same effect.¹⁰⁵ This contest, which was a combination of wrestling, boxing, kicking, gouging, and all natural efforts to overcome an opponent, is said to have been invented for its usefulness in war, and this was "demonstrated at Thermopylae when the Laedaemonians, their lances and swords broken, fought with their naked hands."¹⁰⁶ Elsewhere Philostratos says, "The Lacedaemonians themselves explain that they do not practice these types of contest for the purpose of competition, but merely for the purpose of hardening, and this is entirely in harmony with their flagellation, for a law among them prescribes lashing at the altar."¹⁰⁷ The following description of the pancration has been preserved: "Those who engage in the pancratium . . . employ a wrestling that is hazardous; for they must needs meet blows on the face that are not safe for the wrestler, and must clinch in struggles that one can only win by pretending to fall, and they need skill that they may choke an adversary in different ways at different times, and the same contestants are both wrestling with the ankle and twisting the opponent's arm, to say nothing of dealing a blow and leaping upon the adversary; for these things are all permissible in the pancratium—anything except biting and gouging. The Lacedaemonians, indeed, allow even these, because, I suppose, they are

¹⁰⁰ Plato: *Protagoras*, 342. The weighted cestus, known to later Roman times, was not worn in the early Greek games.—Hyde: *op. cit.*, p. 235.

¹⁰¹ Plutarch: *Lycurgus*, 19.

¹⁰² Müller: *op. cit.*, II, 315; Freeman: *op. cit.*, p. 26; Krause: *op. cit.*, II, 666.

¹⁰³ Pausanias, V, 8, 4 and 6.

¹⁰⁴ Gardiner: *Greek Athletic Sports and Festivals*, p. 435.

¹⁰⁵ Jüthner: "Gymnastik," *Real-Encyclopädie*, VII, Pt. II, 2041.

¹⁰⁶ Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 11.

¹⁰⁷ *Ibid.*, 58.



THE PANCRATION C. 550-500 B.C.

(Courtesy, The Metropolitan Museum of Art, New York)

training themselves for battle, but the contests of Elis exclude them, though they do permit choking."¹⁶⁸

For a nation whose education aimed primarily at preparation for war, throwing the discus furnished excellent training, since throwing stones or other missiles was common in warfare. Likewise hurling the javelin was of great importance to a people who still looked to the spear as their first weapon in war and in the chase.¹⁶⁹

Spartan training is said to have more nearly approximated war itself than anything practiced elsewhere in Greece.¹⁷⁰ A common exercise of the Spartans, and one which provided the most direct preparation of the citizen-soldier, was organized fighting. To this they were early inured. Plutarch tells us that the old men, when inspecting the boys' performances, as they were charged to do, often encouraged them in quarrels and fights so as to have an opportunity to discover their various capacities in respect to bravery, boldness, and aggressiveness in the face of danger.¹⁷¹ Organized fighting, in which the free range of the rough-and-tumble panchration apparently was permitted, was

¹⁶⁸ Philostratus: *Imagines*, II, 6. Trans. by A. Fairbanks. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁶⁹ Kranse: *op. cit.*, I, 439 ff., 465 ff.; Grasberger: *op. cit.*, I, 327 ff.; II, 168 ff.

¹⁷⁰ Müller: *op. cit.*, II, 320.

¹⁷¹ *Lycurgus*, 16.

arranged for, as well as individual contests. Certain officers, the *bidiacans*, were charged with arranging athletic contests and "especially the games at the Plane-Tree Grove" or *Platanistas*. This spot, surrounded by water, was approached by two bridges. The fight is said to have followed rules laid down by Lycurgus; but apart from certain preliminary regulations, it seems to have been a rough-and-tumble, free-for-all fight. Before the contest the two competing groups of boys offered sacrifices to the war-god Enyalios, and staged a fight between two boars, the result of which was said to foretell the outcome of the coming battle. The next day they entered the grove by the bridges, the choice of which being determined by lot. Pausanias pithily summarized the method of fighting: "In fighting they strike, and kick, and bite, and gouge out each other's eyes. Thus they fight man against man. But they also charge in serried masses, and push each other into the water."¹⁷²

The fight of the boys at the Plane-Tree Grove had a counterpart in contests for young men. Xenophon explains how these young men were divided into groups and were matched in valorous strife to attain a high degree of manly perfection: "The Ephors . . . pick out three of the very best among them," who are known as *hippagretai*. "Each of them enrolls a hundred others, stating his reasons for preferring one and rejecting another. The result is that those who fail to win the honour are at war both with those who sent them away and with their successful rivals; and they are on the watch for any lapse from the code of honour. . . . And they are bound, too, to keep themselves fit, for one effect of the strife is that they spar whenever they meet. . . ."¹⁷³

Among the more or less undirected activities, hunting ranked high as a peacetime sport because of its value in keeping men fit for war. In the great kingdoms of the East, it has been noted, hunting was a royal sport for the same reason. By this standard every Spartan "peer" was a king in that he enjoyed the royal pastime. The labor of those held in subjection, and the prohibition against work on the part of Spartan citizens, left youths and adults free to enjoy the chase, though hunting was engaged in chiefly by those who had passed the age of twenty.¹⁷⁴ The rugged, wooded terrain of the Peloponnese was an excellent hunting ground, where boars, deer, bears, wild goats, and other game were plentiful.¹⁷⁵ Laconian hunting dogs were famous throughout the Hellenic world. One is reminded of Argos, Odysseus' hunting hound, who

¹⁷² Pausanias, III, 11, 2; 14, 8-10. Trans. by J. G. Frazer. Courtesy of Macmillan & Co., Ltd., London, and The Macmillan Company, New York; Lucian: *Anacharsis*, 38; Krause: *op. cit.*, p. 676; Nilsson: *op. cit.*, pp. 402 ff.

¹⁷³ Xenophon: *Lacedaemonians*, IV, 3-6. *Scripta Minora*, trans. by E. C. Marchant. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁷⁴ St. John: *op. cit.*, I, 212; Bogeng: *Geschichte des Sports*, II, 592; Baumeister: *Denkmäler des Klassischen Altertums*, I, 709 ff.

¹⁷⁵ Pausanias, III, 20, 4.



ATTACKING A WILD BOAR c. 460 B.C.

(Courtesy, The Metropolitan Museum of Art, New York)

Never missed in deepest woods the swift game to pursue
If once it glanced before his sight, for every track he knew.

Hunting dogs were shared to a certain extent in Laecdaemon. According to Xenophon, one invited the master to a hunt, who, if he were engaged, sent his dogs anyway.¹⁷⁶ Provision was also made for sharing food, in order that the needs might be met of those who were belated in the fields when hunting and when they had nothing at hand to eat.¹⁷⁷ The excellence of hunting must have been a great attraction to Xenophon who took up his residence in Laecdaemon. The *Cynegeticus*, a treatise on hunting commonly credited to Xenophon, though the authorship is disputed,¹⁷⁸ sets forth in enthusiastic fashion

¹⁷⁶ *Lacedaemonians*, vi, 3.

¹⁷⁷ *Ibid.*, vi, 4.

¹⁷⁸ Marchant: *Xenophon Scripta Minora*, xli-xliii.

the techniques of the chase and a philosophy of hunting as a phase of education as well. To Xenophon it seemed that game and hounds were a gift of the gods. These they bestowed upon men; and men, by giving heed to hounds and hunting, "excelled greatly and were admired for their virtue."¹⁷⁹ Youth are charged, therefore, "not to despise hunting or any other schooling. For these are the means by which men become good in war and in all things out of which must come excellence in thought and word and deed." The very first thing, "therefore, that a young man just out of his boyhood should take up is hunting, and afterwards he should go on to the other branches of education, provided he has means."¹⁸⁰

"All men who have loved hunting have been good," thought Xenophon; so, too, have some women!¹⁸¹ The Spartan lawgiver understood the value of hunting, as Xenophon says, and provided that those who had passed the time of youth and were ready to fill great public offices should continue their preparation by practicing hunting, "in order that they might be able to stand the fatigues of soldiering as well as the younger men."¹⁸² It was in accord with ancient Spartan philosophy of practicality that Philopoemen, though physically able to excel in wrestling, shunned the expert training of the wrestling ground when told that the diet, sleep, exercises, and generally regular habits of professional athletes were out of keeping with the difficult and irregular demands made upon the soldier; and when he had nothing else to do, sought to develop strength and endurance by hunting and by work on his farm.¹⁸³ Xenophon recommends especially hunting on horseback, where the country is fit for it and big game is available, for in this way one becomes accustomed "to use his weapons properly on horseback" while "riding at top speed over all sorts of country."¹⁸⁴

The value of hunting as military training is explained at some length: ". . . the advantages that those who have been attracted by this pursuit will gain are many. For it makes the body healthy, improves the sight and hearing, and keeps men from growing old; and it affords the best training for war. In the first place, when marching over rough roads under arms, they will not tire: accustomed to carry arms for capturing wild beasts, they will bear up under their tasks. Again, they will be capable of sleeping on a hard bed and of guarding well the place assigned to them. In an attack on the enemy they will be able to go for him and at the same time to carry out the orders that are passed along,

¹⁷⁹ Xenophon: *On Hunting*, I, 1-5.

¹⁸⁰ *Ibid.*, I, 18; II, 1. *Scripta Minora*, trans. by E. C. Marchant. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁸¹ *Ibid.*, XIII, 18.

¹⁸² *Lacedaemonians*, IV, 7.

¹⁸³ Plutarch: *Philopoemen*, 4.

¹⁸⁴ Xenophon: *On the Art of Horsemanship*, VIII, 10.

because they are used to do the same things on their own account when capturing the game. If their post is in the van they will not desert it, because they can endure. In the rout of the enemy they will make straight for the foe without a slip over any kind of ground, through habit. If part of their own army has met with disaster in ground rendered difficult by woods and defiles or what not, they will manage to save themselves without loss of honour and to save others. For their familiarity with the business will give them knowledge that others lack. Indeed, it has happened before now, when a great host of allies has been put to flight, that a little band of such men, through their fitness and confidence, has renewed the battle and routed the victorious enemy when he has blundered owing to difficulties in the ground. For men who are sound in body and mind may always stand on the threshold of success. It was because they knew that they owed their successes against the enemy to such qualities that our ancestors looked after the young men. For in spite of the scarcity of corn it was their custom from the earliest times not to prevent hunters from hunting over any growing crops; and, in addition, not to permit hunting at night within a radius of many furlongs from the city, so that the masters of that art might not rob the young men of their game. In fact they saw that this is the only one among the pleasures of the younger men that produces a rich crop of blessings. For it makes sober and upright men of them, because they are trained in the school of truth (and they perceived that to these men they owed their success in war, as in other matters); and it does not keep them from any other honourable occupation they wish to follow, like other and evil pleasures that they ought not to learn. Of such men, therefore, are good soldiers and good generals made. . . ." ¹⁸⁵

It has been said that, "in early times at least," "riding was one of the principal occupations of the youths of Sparta." ¹⁸⁶ Though the evidence for this belief is held to be "slight" and "untrustworthy," ¹⁸⁷ it is said that youth rode on gaily decked horses at the festival of Hyacinthia; ¹⁸⁸ and the select band of three hundred youths were called *hippagretai*, "cavalry." ¹⁸⁹ Strabo ¹⁹⁰ noted, however, that these Spartan "knights" did not keep horses. These discordant views leave doubt as to the extent of the rôle riding may have played in Spartan training. Doubtless the importance of horsemanship varied from time to time. Krause states that "Sparta was not entirely without cavalry," and points out that Hipparchos was teacher of youth in the art of riding. ¹⁹¹ Plutarch cred-

¹⁸⁵ Xenophon: *On Hunting*, xii, 1-9. *Scripta Minora*, trans. by E. C. Marchant. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁸⁶ Müller: *op. cit.*, II, 310.

¹⁸⁷ Wilkins: *op. cit.*, p. 23.

¹⁸⁸ *Athenaeus*, iv, 139.

¹⁸⁹ Xenophon: *Lacedaemonians*, iv, 3.

¹⁹⁰ *The Geography*, x, 4, 18.

¹⁹¹ Krause: *op. cit.*, II, 672.

ited Lysurgus with introducing a particular arrangement of the Spartan cavalry, the *oulamos* being a troop of fifty horsemen in quadrilateral formation. Xenophon says that the cavalry watched the enemy from positions commanding the widest view.¹⁰² The pre-eminence of foot soldiers in Spartan military organization, however, must have caused riding to be less stressed than other exercises, for practicality was a first principle at Lacedaemon. The low estimation of cavalry in Spartan armies is recognized by Müller, though he credits riding with having been an important part in the training of youth.¹⁰³ Athens first formed a cavalry corps in the middle of the fifth century; and Sparta formed one in 424.¹⁰⁴ Sparta is said to have raised a force of four hundred horsemen and archers, "contrary to their usual custom"; later they had only six hundred cavalry as opposed to six thousand heavy-armed troops.¹⁰⁵ Xenophon expressed the view that such fame as the Lacedaemonian cavalry achieved dated "from the introduction of foreign cavalry"; and he therefore recommended a foreign contingent elsewhere as a means of economy and as a stimulus to rivalry in efficiency.¹⁰⁶ It seems, however, that the weight of Spartan horsemen did not bulk heavily. At the battle of Leuctra the Theban horse were in good trim, but Sparta's cavalry was in a "very inefficient condition," since the "richest," "weakest," and "least spirited" were on horseback and were "at once defeated."¹⁰⁷

Probably no physical exercises assumed so many forms in Greece as did dancing. These may be classified as religious and profane, the latter including gymnastic, theatrical, and folk dances. There are also the dances of war and the dances of peace.¹⁰⁸ Theatrical dancing may be further classified as comic, tragic, and satiric. Though the numerous categories serve to call attention to the varied character of dancing and its significant rôle in Greek life, difficulties arise, since there is much overlapping of terms; what is called profane is not without its religious connection, and different names are often used by ancient authors for the same dances.¹⁰⁹ Certain dances which were intimately associated with significant aspects of Spartan life may be noted briefly. Like many other elements of Sparta's civilization, her dances bore a marked resemblance to the Cretan. Strabo²⁰⁰ says, indeed, that the usual dance practiced in Lacedaemonia, the measures used, the songs sung, and many other customs, are commonly called Cretan, just as though they had come from Crete.

¹⁰² Plutarch: *Lysurgus*, 23; Xenophon: *Lacedaemonians*, xii, 2.

¹⁰³ Müller: *op. cit.*, II, 253.

¹⁰⁴ Busolt-Swoboda: *op. cit.*, I, 344; Krause: *op. cit.*, I, 589.

¹⁰⁵ Thucydides, IV, 55; Xenophon: *Hellenics*, IV, 2, 16.

¹⁰⁶ *The Cavalry Commander*, IX, 3-4.

¹⁰⁷ Xenophon: *Hellenics*, VI, 4, 10-3.

¹⁰⁸ Plato: *Laws*, VII, 815.

¹⁰⁹ Krause: *op. cit.*, II, 822 ff.

²⁰⁰ Bk. X, 4, 18.

Among the dances having a religious significance were the chorus at the Gymnopaedia; the chorus at the Caryae, in which Spartan maidens performed each year "their national dance" in honor of Artemis;²⁰¹ the parthenia, the chorus of maidens, said to have been "exceedingly grave and solemn";²⁰² and the *hyporchema*, a lively dance accompanied by songs, which was performed by the Spartans around the flaming sacrifice in honor of Apollo.²⁰³ Nowhere were music, dancing, and gymnastics more perfectly united than in the Gymnopaedia, a festival which was mainly athletic, and held in highest esteem by the Spartans.²⁰⁴ Nothing was permitted to interfere with their performance; even when word of the calamitous defeat at Leuctra had been received, the ephors would not permit interruption of the chorus.²⁰⁵ To participate in it was an honor; to be excluded from witnessing it was one means of disgracing the men who, though of marriageable age, were yet unwed.²⁰⁶ At the beginning of the choral dance various exercises, especially those of wrestling and the pancration, were initiated; and these were followed by the Pyrrhic dance. Choruses of old men, youth, and boys participated in the Gymnopaedia, dancing naked, and singing the songs of Aleman, Thaletas, and other famous poets.²⁰⁷

Dancing was a prominent feature also in the three-day festival of Hyacinthia, religiously observed by Spartans in honor of Hyacinthos, whom Apollo was said to have killed accidentally by a throw of the discus.²⁰⁸ Its beginning, marked by great restraint and solemnity, was followed at the middle of the second day by numerous events, music, dancing, and athletics, which were observed by many people. Athenaeus describes it: "Boys with tunics girded high play the lyre or sing to flute accompaniment while they run the entire gamut of the strings with the plectrum; they sing the praises of the god in anapaestic rhythm and in a high pitch. Others march through the theatre mounted on gaily adorned horses; full choirs of young men enter and sing some of their national songs, and dancers mingling among them go through the figures in the ancient style, accompanied by the flute and the voice of the singers. As for the girls, some are carried in wicker carts which are sumptuously ornamented, others parade in chariots yoked to two horses, which they race, and the entire city is given over to the bustle and joy of the festival. . . ." ²⁰⁹

²⁰¹ Pausanias, iii, 10, 7; Lucian: *Of Pantomime*, 10; Krause: *op. cit.*, pp. 831 f.

²⁰² Müller: *op. cit.*, ii, 336.

²⁰³ St. John: *op. cit.*, i, 389; Müller: *op. cit.*, i, 357 f.; Krause: *op. cit.*, ii, 825 f.; Athenaeus, xiv, 630.

²⁰⁴ Pausanias, iii, 11, 9; Lucian: *Of Pantomime*, 12; Nilsson: *op. cit.*, pp. 140 ff.

²⁰⁵ Xenophon: *Hellenics*, vi, 4, 16; Plutarch: *Agesilaus*, 29.

²⁰⁶ Plutarch: *Lycurgus*, 15.

²⁰⁷ *Ibid.*, 21; Krause: *op. cit.*, ii, 829 f.; Müller: *op. cit.*, ii, 334, 344; Athenaeus, xiv, 630-1.

²⁰⁸ Pausanias, iii, 10, 1; 19, 3-5; iv, 19, 4.

²⁰⁹ Athenaeus, iv, 139. Trans. by C. B. Gulick. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

Dancing and music, closely associated at Sparta, constituted an important phase of moral and physical education, and were carefully regulated by the state. Music was chiefly choral, and thus contributed to the unity which Sparta so much desired. Probably few individuals studied music, or gained a scientific knowledge, but "without learning" it, Aristotle says, they were good judges of it.²¹⁰ Both music and dancing were intimately connected with war and religion. "Indeed," as one authority says, "the march of the Spartans and Cretans had, on account of its musical accompaniment, some resemblance to a dance."²¹¹ Of all Spartan dances connected with war, the Pyrrhic dance in armor was pre-eminent. There was no agreement as to its origin, save that it was most ancient. Certain authorities traced it to Athena, some to Achilles, others to Castor, and still others to Pyrrhichos, a Cretan, or as others would have it, a Laconian. In fact, the mimic war dance was common to primitives, and some form of it was probably danced by the various Greek peoples.²¹² The Pyrrhic dance had the same name as the expert armed combatant (πυρρικός). It was quick and light in movement and was accompanied by the flute. Though not danced everywhere the same, the dancers generally imitated the action of defense (avoiding blows and missiles, giving way, leaping aside, rising up, falling down), and the mode of attack (hurling the javelin, giving blows, thrusting, shooting the bow).²¹³ Athenacus says that at Sparta boys "from five years of age on" were thoroughly instructed in it.²¹⁴ It formed a part of the Gynmopaedia. Long after the Pyrrhic dance had ceased to have serious significance in other Greek states, the Spartans still danced it "as a warlike exercise."

The *hormos* is said to have been the most beautiful of all Spartan gymnastic dances. Young men and maidens participated in it, contrasting masculine courage and feminine grace. Though performed without weapons, the youths vied with each other in vigorous warlike movements, while the maidens followed with modest, graceful steps which were thought to befit them.²¹⁵

The *bibasis*, a gymnastic exercise in favor at Sparta and practiced by boys, girls, and women, is generally considered a part of dancing.²¹⁶ In this, the dancer sprang into the air and sought to strike the buttocks with the heels as often as possible. Müller mentions the *dipodia*, *deimalea*, *ithymbi*, *bryallicha*, *hypogypones*, *menes*, *tyrbasia*, and the *mimelic* dance, all of which he regards as Laconian, but little is known of them save the name.²¹⁷ An acrobatic "ball

²¹⁰ *Politics*, viii, 5.

²¹¹ Müller: *op. cit.*, ii, 339.

²¹² Lucian: *Of Pantomime*, 7-12, 18; Krause: *op. cit.*, ii, 836, 840 f.; *supra*, pp. 31, 211.

²¹³ Plato: *Laws*, vii, 815; Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 19.

²¹⁴ Bk. xiv, 631; cf. Müller: *op. cit.*, ii, 343.

²¹⁵ Krause: *op. cit.*, ii, 842; Lucian: *Of Pantomime*, 12.

²¹⁶ Krause: *op. cit.*, ii, 842; *supra*, p. 245.

²¹⁷ *Op. cit.*, ii, 345 ff.

dance," such as was noted in Homer, was said by some ancient authorities to have been originated by Lacedaemonians.²¹⁸

National songs and dances were the guarded heritage of Spartan citizens. The Helots, however, were forbidden to use such "noble" songs and dances; instead, they were often compelled to sing songs and dance dances of a vulgar and ludicrous character.²¹⁹ Though the national dances were generally marked by dignity and solemnity, even in the most solemn choruses of pagan Sparta there were elements which might be thought inimical to "female delicacy."²²⁰

The name "ballplayers" (σφαίρις) was applied to Spartan youths who were "just entering on manhood,"²²¹ presumably because ball-play was their chief exercise. Hippasus is said to have claimed that Lacedaemonians were "pioneers" in ball-playing "as in all gymnastic exercises."²²² Though Timocrates the Laconian was credited with a book on ball-play, only fragmentary references have been preserved, and neither the rules of the game nor the number of players are known to us. Nevertheless inscriptions show that there were yearly contests in the *dromos*, in which teams participated under the direction of the *Bideoi*, the same board that managed the contest in the Plane-Tree Grove. These matches seem to have taken place between teams composed of "about fifteen representatives of the obes." Victory was probably decided by matching the teams "in pairs in successive rounds until only one unbeaten team remained."²²³

Daily bathing seems to have been a part of Spartan physical regimen, but warm baths were in early times prohibited. Plutarch mentions bathing in the River Eurotas as an appetizer; his reference to the slight knowledge of "baths and unguents" doubtless refers to warm baths.²²⁴ That river bathing was not merely an occasion for washing, but also for swimming, is a reasonable assumption. The Plane-Tree Grove contest was marked by an effort of each team to push its opponents into the water,²²⁵ and suggests that the boys must have been able to take care of themselves. There is, however, no definite reference to instruction in swimming at Sparta, and some have doubted the prevalence of swimming there.²²⁶ The lack of systematic instruction need not be so interpreted, however. Since Spartans did not favor professional gymnastic instruc-

²¹⁸ Athenæus, I, 14.

²¹⁹ Plutarch: *Lycurgus*, 28; Müller: *op. cit.*, II, 39, 349 ff.

²²⁰ St. John: *op. cit.*, I, 386 ff.

²²¹ Pausanias, III, 14, 6; Müller: *op. cit.*, II, 309 f.

²²² Athenæus, I, 14.

²²³ *Ibid.*, I, 15; Tod: "Teams of Ball-Players at Sparta," *Ann. Brit. Sch. at Athens*, x, 75; Lucian: *Anacharsis*, 38; Krause: *op. cit.*, I, 301 f.; Grasberger: *op. cit.*, I, 86.

²²⁴ *Lycurgus*, 10, 12, 16; *Customs of the Spartans*, 2; Alcibiades, 23; Xenophon: *Hellenics*, v, 4, 28; Müller: *op. cit.*, II, 283; Krause: *op. cit.*, I, 625; Mehl: *Antike Schwimmkunst*, pp. 45 f.

²²⁵ Pausanias, III, 14, 8.

²²⁶ Cramer: *Geschichte der Erziehung*, I, 270.

tors, but relied on the older and more skilled boys to teach the younger, swimming may also have been learned in a similar informal fashion.²²⁷ Krause holds that the Greeks were at all times ready swimmers; certainly those dwelling on the rivers and the coast were quite at home in the water which they were forced to encounter both in peace and war. That the Spartans "practiced themselves in swimming," Krause believes "certain." Freeman, too, maintains that the daily plunge in the Eurotas taught them swimming.²²⁸ Numerous passages in ancient history show that swimming often stood the Greeks in good stead. Herodotus says that at Salamis only a few Greeks died, for "they were able to swim," and those not killed outright by the enemy escaped from the sinking vessels by swimming to Salamis.²²⁹ Thucydides relates that a detachment of Spartans, blockaded on an island by the Athenians, offered a high price for corn, wine, and cheese that could be brought in, and promised freedom to any Helots who would bring in such food supplies. In connection with these efforts many swam in through the harbor, dragging by a cord skins filled with poppy-seed, linseed, and honey until they were observed, and precautions were taken against their daring exploits.²³⁰

FAILURE OF SPARTAN EDUCATION Strict conformity with a fixed pattern of life was assiduously cultivated at Sparta by that class which had gained power and sought to preserve it. Having completed his reforms, Lycurgus is said to have forbidden any change in the constitution until he should return from Delphi.²³¹ No slight deviation was to be permitted lest such indulgence should lead to greater changes. Spartans are said to have opposed changing the number of strings on the lyre; ²³² a cook who knew anything except approved Spartan cookery was not tolerated; even changing the rules of ball-play deserved punishment. Was it not from his admiration of Spartan fixity that Plato suggested that the people of his small state should always play the same games? ²³³

That Spartan training was commonly regarded as the main source of power is suggested by the fact that Agis and Cleomenes, seeking to restore Sparta, endeavored to do so by re-establishing the ancient Lycurgan system of training; ²³⁴ and Philopoemen, when he wished to humble and destroy her, abolished the constitution of Lycurgus, and compelled the Spartans to bring up their children according to the Achaean fashion.²³⁵ That the system of train-

²²⁷ Mehl: *op. cit.*, p. 55.

²²⁸ Freeman: *op. cit.*, p. 26; Krause: *op. cit.*, I, 625, 630 f.

²²⁹ Bk. VIII, 89.

²³⁰ Thucydides, IV, 26.

²³¹ Plutarch: *Lycurgus*, 29.

²³² Plutarch: *Customs of the Spartans*, 17.

²³³ *Laws*, VII, 797.

²³⁴ Plutarch: *Agis*, 4-6; *Cleomenes*, 11.

²³⁵ Plutarch: *Philopoemen*, 16; *Pausanias*, VII, 8, 5.

ing was important and powerful is not to be denied; but systematic training is not the sole integrating force in any society. When other foundations had been destroyed, Spartan education, no matter how perfectly designed and faithfully carried out, could not really restore the city to its onetime power.

What results are creditable to the Spartan system? Modesty of demeanor appears to have been one result, if one may trust the assertions of admirers, ancient and modern.²³⁶ Health, rugged beauty, agility, and physical endurance were certainly attained in generous measure. That Spartan training was brutalizing seems certain also, although Müller²³⁷ holds to a contrary view. That a lack of independence of thought and action (save in a narrow range) and of intelligent imagination must have resulted from such a tight-laced system, seems inevitably true. The basic condition of freedom being denied, no critical philosophy of life or education arose. Spartans, however, gave a practical demonstration of a philosophy of both, which powerfully influenced the thinking of those Greeks who did seek to reconstruct human society nearer to the heart's desire.

Since loyalty to a system, and determination to preserve it unchanged, conditioned all their efforts, it was inevitable that Spartan success could only be temporary. All things change; nevertheless, for hundreds of years, Sparta was a marvel to all observers for her seemingly unchanging ways. After Plataea, she had not the adaptability nor the political intelligence to take advantage of the pre-eminence she had won by war.²³⁸ She continued in splendid isolation, and impressed many observers by her firm control within her own borders. Polybius²³⁹ thought she had the best government and the greatest power up to the time of Leuctra; but when change set in thereafter, she had more trouble and disorder than any other city knew. When circumstances changed around her, she was unable to meet them intelligently, yet could not escape their impact. Plutarch declared that, like a human body, she suffered from having "followed all the while too strict and severe a regimen; a single error turned the scale and brought down the entire prosperity of the city."²⁴⁰

Despite long, rigorous, ascetic training, Spartan citizens became weak and greedy. The prohibitions against changing the constitution, and other efforts to seize the present moment and hold it fast, were all in vain. Xenophon, Sparta's admirer, noted that, whereas once her citizens were compelled to live at home, in his day the best among them wished nothing more than to live abroad as governors of some foreign state. Yet no other Greek state wished to see Lacedaemon

²³⁶ Xenophon: *Lacedaemonians*, III, 3; Freeman: *op. cit.*, p. 27.

²³⁷ *Op. cit.*, II, 321.

²³⁸ Bury: *op. cit.*, p. 323.

²³⁹ Bk. IV, 81.

²⁴⁰ Plutarch: *Agésilas*, 33. Trans. by B. Perrin. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

regain supremacy, for whereas the Spartans once sought pre-eminently to be worthy rulers, they were now more anxious "to exercise rule than to be worthy of it." Such, Xenophon adds, is their fate, for "they obey neither their god nor the laws of Lycurgus."²⁴¹ The equality which Lycurgus had sought to impose in order that the state might be stable, gave way at length to inequality of wealth, by virtue of the purchase of land and the influx of wealth from the outside.²⁴² An old Laconic proverb ran: "Sparta will fall by love of wealth, naught else." Lycurgus had given the opinion that Lacedaemonians would prevail against their enemies "by continuing poor, and not coveting each man to be greater than his fellow."²⁴³ In Xenophon's day, however, they boasted of their possessions, whereas formerly they had feared to possess gold. And with wealth, luxurious living became the fashion. The number of citizens declined to less than a thousand, says Aristotle, although large families were encouraged by military exemptions offered to fathers who had three sons. Even recruiting citizens from Perioeci and Helots was not sufficient to stay the process of disintegration.²⁴⁴

Courage of a kind the Lycurgan discipline did indeed develop. Herodotus attributes beautiful speeches to men of Lacedaemon on the subject of independence, liberty, and courage.²⁴⁵ Plutarch says that Sparta's enemies for a time credited her with an "irresistible courage."²⁴⁶ Spartans certainly were not cowards; most of them, doubtless, preferred to be "mourned at the mill" and "mourned at the mess," as Aleman says,²⁴⁷ rather than be conquered. Archilochus, to be sure, is credited with the view that it were better to throw one's shield and run away than die upon the field; for—

A better buckler one can soon regain,
But who can get another life again?

But he was soon ordered from the city. Aristotle comments critically on the value of various kinds of courage, and concludes that the Spartans had only an inferior kind, the virtue of courage in war. As long as they were at war, they kept their power, but when they attained empire they fell, for they had learned nothing of the arts of peace.²⁴⁸ Her soldiers and generals failed in the larger field of empire, though on the banks of the Eurotas they had done well. Polybius remarks that Lacedaemon, having long contended for the hegemony

²⁴¹ Xenophon: *Lacedaemonians*, xiv, 5, 7.

²⁴² Plutarch: *Lycurgus*, 30; *Agis*, 3. The communism, Bury thinks (*op. cit.*, pp. 134, 535), was "only superficial."

²⁴³ Plutarch: *Lycurgus*, 19.

²⁴⁴ Xenophon: *Lacedaemonians*, xiv, 3; *Athenaeus*, iv, 142; Aristotle: *Politica*, ii, 9.

²⁴⁵ *Ib.* vii, 135-6.

²⁴⁶ Plutarch: *Pelopidas*, 17.

²⁴⁷ *Lyra Graeca*, i, 95.

²⁴⁸ *Politica*, ii, 9.

of Greece, finally won it but was able to hold it uncontested scarcely twelve years.²⁴⁹

In war, which was the chief thing in which Spartans wished to excel, they were eminently successful for a time. Aristotle says, however: "It is notorious that the Lacedaemonians themselves, while they alone were assiduous in their laborious drill, were superior to others, but now they are beaten both in war and gymnastic exercises." For their superiority lay not just in the "mode of training" but in the fact that "they trained them when their only rivals did not."²⁵⁰ War, the Spartans' vocation, was their own undoing. Agesilaus was reproached for having made the Thebans formidable foes by his constant excursions against them.²⁵¹ By constant warring with each other the Greeks weakened themselves. The words of Agesilaus are weighty: "O Greece, how many brave men hast thou destroyed; who if they had been preserved to so good a use, had sufficed to have conquered all Persia." To Sparta's sons, as to those of another "heroic age," the words of the poet aptly apply: "These dread battle hastened to their end."²⁵²

²⁴⁹ Bk. 1, 2.

²⁵⁰ *Politics*, viii, 4. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press).

²⁵¹ Plutarch: *Lycurgus*, 13.

²⁵² Davies: *Hesiod and Theognis*, p. 33.

ATHENS

THE SOCIAL SCENE

THE PEOPLE AND THEIR RESOURCES By one of their popular traditions, related by Herodotus and fondly dwelt upon by great orators and others, the Athenians credited themselves with being the "most ancient nation in Greece," the only people who had "never changed their abode."¹ Attica had always been inhabited by the same people; she alone, free from "savage monsters," had "brought forth man" who had "justice and religion," while other lands had produced all kinds of animals, wild and tame.² There were, of course, conflicting tales.

Modern archaeology and history show that neolithic man dwelt anciently at Athens and elsewhere in Attica, as in other parts of Greece, and left his trace in arrowheads, stone axes, and other implements. To the original inhabitants, who spoke a barbarous (*i.e.*, a non-Hellenic) tongue, the ancients gave the name Pelasgians. Instead of remaining pure, however, as the story of autochthony would have it, there was infiltration; and some of the great families later traced their origin to Messenia and to Phoenicia. The tales of Egyptian Cecrops, Cretan Minos, the legend of Ion, the evidence of language, Mycenaean remains in Attica,³ the iron weapons, and the Dipylon pottery of the period, all indicate the infiltration of influences from the outside—the touch of Cretan and Mycenaean civilization and that of the conquering Dorians. The last of these was potent enough to establish the Hellenic tongue among the native population—a change which Herodotus infers must have taken place.⁴ A new art, the "Geometric," took the place of Mycenaean, as has been

¹ *The History of Herodotus*, vii, 161; *Thucydides*, i, 2; ii, 36; *Isocrates: Panegyricus*, 23; *Panathenaicus*, 124.

² *Plato: Menexenus*, 237.

³ *The Cambridge Ancient History*, ii, 459; iii, 572 f., 596.

⁴ *Bk. i*, 57-8; v, 76.

noted, and continued down to the sixth century. That the invading forces generally adjusted themselves gradually and rather peacefully among the native population seems probable: in any case, no such rift between conqueror and conquered is reflected in political institutions as in Laconia; nor is there evidence of a cataclysmic break between the old and the new cultures in Attica, as in the remains found in Argolis, Laconia, and Thessaly.⁵

Despite all evidence to the contrary, however, Athenians boasted of their autochthonous character, and claimed a certain cultural superiority—on which orators based persuasive propaganda during the Peloponnesian War. But if they were a pattern to others rather than imitators; if their government was liberal, and not for the few; if they enjoyed ease and recreation, while others devoted themselves to vigorous training; if they were open to foreign influences, whether of persons or of ideas; if they were a school for all Hellas; if they were quick to invent, plan, and execute, “bold even beyond their power,” and ready to go abroad while the Spartans loved to stay at home⁶—if, indeed, they did possess these and other fair traits in a greater degree than the Lacedaemonians, they did so as a result of the interaction of many forces throughout several centuries. From the time of the Dorian invasion till the sixth century, it is generally believed, there was more similarity than difference between the cultures of Laconia and Attica.⁷ Sparta had not then achieved that austere isolation which was to draw both derision and admiration from her neighbors; nor had Athens put on those refinements of art and letters which in the fifth and fourth centuries were to be her greatest distinction.

Geography and climate were important factors in preparing the later greatness of Athens. As Egypt was made by her river; as Crete, over the ever-ready Aegean and Mediterranean waters, was enabled to send her gifts of civilization far and wide; so Athens, because of her fortunate geography—a proportionately long seacoast, numerous inlets, and low-sloping beaches that were inviting to early navigators who pulled their boats ashore—seemed destined to be receptive to commercial and cultural advances from the south and east, to a degree not to be expected of less accessible parts of the Greek world. The most mountainous regions and those least accessible to the sea, in Hellas as well as in other countries, were culturally the most backward. At Athens the open invitation to adventure on the sea must have profoundly affected the temper and achievements of the peoples that shared it; this fact, taken in conjunction with the

⁵ Burn: *Minoans, Philistines, and Greeks*, pp. 33 ff., 229 f.; Glotz: *The Aegean Civilization*, pp. 18, 47, 50, 53 ff., 201, 279, 292; Hall: *Aegean Archaeology*, pp. 17, 21; C.A.H., III, 571-7; Jarde: *The Formation of the Greek People*, pp. 151 ff.; Whibley: *Companion to Greek Studies*, pp. 228-34.

⁶ Thucydides, I, 70; II, 37-41.

⁷ Jarde: *op. cit.*, pp. 76, 166; Bury: *A History of Greece*, p. 342; Laistner: *A Survey of Ancient History*, pp. 128 f., 153.

relatively small amount of tillable land (though some areas were very fertile), the unnavigable rivers, and the mountains which made traffic by land with many cities either inconvenient or impossible at that immature industrial epoch, predisposed them in general to a career of colonization and foreign commerce. By the beginning of the sixth century Athens was already gaining superiority over her neighbors as a center of industry and commerce.⁸

Climatic influences were no less favorable than those of land and sea. Clear and stimulating, neither tropical nor extremely cold at any time, the climate of Attica enticed her people to a life of freedom out of doors, and made unnecessary heavy, unhygienic clothing. Small wonder that her poets sang her praises, and her soldiers and athletes won her fair renown. In that rare atmosphere Athenians stepped lightly, "as on wings uplifted."⁹ Aristophanes is said to have credited his wit to the influence of Attic air!

Though chiefly a maritime city, Athens was also an outlet for an agricultural community. It is obvious, however, that while the fertile plains of Attica lay back of the city, most of her territory was scarcely capable of affording a living. Attica must have seemed poor in comparison with the fabulously fertile valleys of Mesopotamia.¹⁰ The poverty of Attic soil impressed Thucydides;¹¹ Solon found the land scarcely rich enough to support those who worked upon it;¹² Plato,¹³ however, thought it as fertile as any in the world, though it had once been better. Productivity differed, doubtless, with time and place. Farming with the primitive implements that were characteristic of Greek agriculture was laborious in any case; and hardships fell frequently upon husbandmen, owing to recurrent war.

The chief sources of Attica's agricultural wealth lay in olive groves and vineyards. Barley and wheat were grown; the former, the staple food of the peasants, capable of thriving even in very thin soil, led by a wide margin. In the fourth and fifth centuries grain was imported chiefly from the Euxine and other prime grain producing regions—a fact that affected profoundly the foreign policy of Athens.¹⁴ In contrast with the meat-eating heroes of Homeric fame, Athenians depended chiefly on cereals and vegetables. Barley, wheat, oil, and wine were staples of diet. These were supplemented by millet, spelt, onions, garlic, beans, peas, leeks, mushrooms, lentils, lupines, spinach, lettuce, cabbage, radishes, asparagus, turnips, and many fruits and nuts. Cheese, various kinds of

⁸ Jardé: *op. cit.*, pp. 149 f.; Lot: *The End of the Ancient World*, p. 61; Bury: *op. cit.*, pp. 1 ff.

⁹ Euripides: *Medea*, 831.

¹⁰ Herodotus, I, 193; Jardé: *op. cit.*, p. 150; C.A.H., IV, 26.

¹¹ Bk. I, 2.

¹² Plutarch: *Solon*, 22.

¹³ *Critias*, 111.

¹⁴ Laistner: *op. cit.*, p. 288.

fish, oysters, snails, mussels, turtles, poultry, wild game and birds—such as hare, wild boar, deer, bear, ducks, geese, partridges, pigeons, quails, thrushes, black-birds—some beef, pork, goats' flesh, mutton, and honey gave further variety to Athenian fare.¹⁵ Considering its importance in Athenian diet and in commerce, it is not surprising that the olive was associated with religion—was regarded, indeed, as a sacred gift of Athena herself. The vine was traced back to Dionysus. Moreover, great statesmen, such as Solon and Pisistratus, sought to encourage the cultivation of olives; and Athenian ephorbi swore to protect vineyards and olive groves, barley and wheat—the richest sources of agricultural wealth.¹⁶

Other natural resources Attica did not lack. Her mountainous regions (almost half her territory), though unadapted to agriculture, provided timber for ships, houses, and fuel, as well as pasturage for goats and sheep, and harborage for birds and game. Quarries provided limestone, travertines, and Pentelic marble for public buildings and statuary; clay of the best quality for ceramics came from the base of Hymettos. The silver mines of Laureion, after the sixth century, were among the chief sources of Athenian economic pre-eminence.¹⁷

POLITICAL INTEGRATION AND DECLINE Before the coming of Hellen, son of Deucalion, there was no unity, it was said, among the peoples of Greek lands. There were Danaïans, Argives, Achaeans, but not Greeks; the very conception of Hellenes apart from barbarians had not arisen.¹⁸ Particularism reigned within Attica herself in prehistoric times.¹⁹ Unification, when it ultimately came about, was credited by Athenians to Theseus, much as Spartan hegemony was traced to Lycurgus. To us, however, the labors attributed to each of them seem to have been the work of many—the product of time, not the work of a moment.²⁰ The unification of rival communities of Attica under the leadership of Athens, though not definitely dated, was a gradual process, beginning as early as 1000, perhaps, and attaining its consummation near the beginning of the seventh century B.C. Prior to that time, localism was supreme; village warred against village till at length common interests brought them together, first in combinations of close-lying villages (as in the Tetrapolis of Marathon) and finally in a union with Athens. Politically considered, Athens and Attica became almost synonymous, though the memory of divisive localism was reflected in the fifth-century feast of *Synokia*, unification. Attic unity

¹⁵ Blümner: *The Home Life of the Ancient Greeks*, pp. 206 ff.; Gulick: *Life of the Ancient Greeks*, pp. 143 ff.; Davis: *A Day in Old Athens*, pp. 174–81.

¹⁶ Plutarch: *Solon*, 23; *Alcibiades*, 15; *Dio Chrysostom*, xxv, 3.

¹⁷ Glotz: *Ancient Greece at Work*, pp. 127 ff.; Jardé: *op. cit.*, pp. 146 f.; Laistner: *op. cit.*, p. 153.

¹⁸ *Thucydides*, I, 3.

¹⁹ *C.A.H.*, III, 578.

²⁰ *Ibid.*, III, 580; Bury: *op. cit.*, p. 166.

was somewhat more perfect than that of any other Greek state. There were neither sharp stratification of the population, military overlords, nor subjugated peoples, as at Sparta. Of course, *synoikismos* did not equalize all citizens; in fact, it consolidated the power of the landed aristocracy, whose efforts had brought it about.²¹ The political power of once powerful villages withered away, however, being merged in the sovereignty of Athens; and men of Thoricus, Icaria, Marathon, Cephisia—men of the hills, the coast, the plain—became Athenian citizens.

Government rang all the changes from monarchy to democracy. The earliest form was a primitive monarchy, whose kings had military, religious, and judicial functions. By the seventh century, monarchy was giving way before the wealthy landed Eupatrids who, jealous of the kingship, created an aristocratic republic. Kingship became elective for one year (683 B.C.); a *polemarch* was chosen to have charge of military affairs because some kings had proved weak in warfare; and an *archon eponymos* was named as chief magistrate. *Thesmothetae*—the six junior archons—named a little later, held office for one year. The Council of Areopagus, composed of those who had served as archons, was the aristocratic and autocratic guardian of law and order, its members serving for life.²²

Private wealth at Athens was as significant as the common lot at Sparta. An archon, on taking office, proclaimed that no one should suffer diminution of possessions during his administration.²³ Euripides' *Medea* reminds us of the power of wealth:

Gifts even win, 'tis said, the gods,
Stronger than many words with men is gold.

Though blood and wealth first ruled the Attic land, their sway was disturbed at the outset by struggles among the wealthy themselves, and again, by the discontent of poor peasants and the rising power of the *thetes* (hired laborers), whose importance increased in proportion as Athens' sea power, industry, and commerce developed and coinage supplanted barter. Would-be tyrants showed their heads. Draco's code (621 B.C.), though it sought to diminish the uncertainty of life and property, and became a byword for severity, did not improve the situation fundamentally. An important legal distinction was made, indeed, between accidental and intentional killing. Far from easing the condition of the poor, however, Draco put into writing—what was doubtless practiced before—that the insolvent debtor's person should be at the disposal of his creditor.²⁴ The struggle between the landed aristocracy and those enslaved by debt

²¹ C.A.H., III, 586.

²² Aristotle: *Atheniensium Respublica*, 3; C.A.H., III, 590 ff.; Jardé: *op. cit.*, p. 160.

²³ Aristotle: *Ath. Resp.*, 56.

²⁴ C.A.H., IV, 28 f., 33 ff.

increased in intensity. At length, in 594 B.C., with the consent of both parties, Solon was named archon and arbitrator-extraordinary between "the good and base." Wellborn, indeed, but not of the richest sort, his sympathy lay doubtless with the "good," who "in wealth were glorious and great." He scorned, however, the cruelty and greed of the wealthy who oppressed the poor, who had "no share in anything." For the poor extremists, likewise, whose "cravings knew no bound" and who wished a redistribution of land, he had contempt. Between these two extremes Solon saw himself,

Turning at bay like wolf among the hounds.

According to certain fragments, Solon's reforms brought immediate relief by the cancellation of mortgages and the freeing of enslaved debtors:

Dark Earth, thou best canst witness, from whose breast
I swept the pillars broadcast planted there,
And made thee free, who hadst been slave of yore.
And many a man whom fraud or law had sold
Far from his god-built land, an outcast slave,
I brought again to Athens. . . .²⁵

Remoter consequences flowed from the prohibition of loans secured by the debtor's person.²⁶ Numerous other reforms were credited to Solon: a new coinage, favorable to Athens' commercial advantage;²⁷ prohibition or restriction of certain exports and the encouragement of others; establishment of a system of weights and measures; limitation on the growth of large estates; provision that estates of Eupatrids were no longer indivisible; granting citizenship to alien craftsmen who settled permanently at Athens; levying a penalty on those who had no trade; and protection of slaves against reckless brutality of masters. Of far-reaching importance was the gift of political rights to *thetes*, permitting them a voice in the assembly and in choosing magistrates, though they were not eligible for office; and the establishment of courts of justice (*heliaea*) for all citizens, even *thetes*. To this, Aristotle believed, "the masses . . . owed their strength most of all, since, when the democracy is master of the voting-power, it is master of the constitution."²⁸

Solon wrote his laws and departed. Tranquillity did not long prevail, however, for moderate measures could not restrain individual and class rivalries. Anarchy prevailed in 590 and 585 B.C. At length the struggle culminated in

²⁵ Aristotle: *Ath. Resp.*, 12. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press).

²⁶ *Ibid.*, 6.

²⁷ *C.A.H.*, iv, 39 f.

²⁸ *Ath. Resp.*, 9. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press).

temporary peace under the tyrant Pisistratus who supported the landless hill men against those of the coast and the plain.²⁹ The constitution of Solon remained unchanged. Pisistratus rewarded his landless followers at the expense of the men of the plain, giving many a son of "aches and pains," who had tilled the stony upland soil, reason to be grateful to him. Under Pisistratus and his sons, peace and economic prosperity at home, and good relations with neighbors, were joined with literary and artistic advancement. Homer was edited and published "authoritatively"; competitions in epic recitals were incorporated in the Panathenian festival; Anacreon, Simonides, and other poets and artists made Athens famous as a patron of the arts.

The tyranny of Pisistratus and his sons formed a transition from the aristocratic government of Solon's day to the democracy of Cleisthenes, 510 B.C. Later generations credited numerous reforms to Cleisthenes. Those generally ascribed to him included a reform of the basis of citizenship by which the "maritime multitude"—commercial and industrial folk—could be taken into the political life of the city; the organization of a Council of Five Hundred in place of the Solonian Council of Four Hundred; the grant of the powerful weapon of ostracism to the mass of citizens; and extension of the right to hold offices, save the very highest, to those who had previously been excluded.³⁰ The first of these reforms was basic in importance. Citizenship no longer depended on membership in the *genos*. Clan and phratries henceforth had only social and religious rather than political significance. Attica was divided into administrative *demes*, registration in which constituted citizenship; and *deme*-membership was to be inherited. One *deme* or several made up a *trittyes*, of which there were thirty in all Attica. Each of the ten tribes were composed of three *trittyes*, one of which was urban, another coastal, while a third was from the inland.³¹ Old loyalties and associations were thus disrupted; the noble and base in blood, the rich and poor, those from inland, from the coast, and Athens herself were mixed together, and the unification of Attica acquired a meaning it never had before.

Democracy, which Xenophon³² so disdained, had not reached its zenith in the reforms of Cleisthenes; that would come with the years. The two lower classes of citizens were still excluded from the archonship, but in 487 B.C. sortition supplanted election, thus giving opportunity to the poor. Although changes in the army,³³ following naturally upon political reforms, were democratic in tendency, the growing importance of the ten generals (chosen by each

²⁹ *Ibid.*, 14-6; C.A.H., IV, 60-82.

³⁰ Aristotle: *Ath. Resp.*, 21-2; Grote: *A History of Greece*, I, 563, 565; II, 386 f.; Bury: *op. cit.*, p. 214.

³¹ Aristotle: *Ath. Resp.*, 21; C.A.H., IV, 141 ff.; V, 5 f., 102; Bury: *op. cit.*, pp. 211 ff.

³² *Polity of the Athenians*, I, III.

³³ C.A.H., IV, 154 f.; Aristotle: *Ath. Resp.*, 22.

of the ten tribes) shows the strength of the aristocratic element which persisted despite the rising tide of democracy to which events other than constitutional changes gave an impetus. Salamis (480) and Plataea (479) encouraged democracy; the "maritime multitude," the "authors of the victory of Salamis," would scarcely permit privilege to be restored.³⁴

Under the leadership of Themistocles, Athenians rebuilt their walls, and proceeded rapidly to ascendancy in Hellenic affairs through leadership in the Delian League—a naval confederacy founded to combat the Persian menace—which was transformed gradually (478–454 B.C.) into an empire with over 260 tributary cities.³⁵ As commerce and naval power were conducive and necessary to empire, and maritime folk were the reservoir of democratic tendencies, growth of democracy and empire went hand in hand. Pericles offered Athenians empire on the seas, which neither "great king nor any nation" could withstand; ³⁶ at the same time, he encouraged the lower classes politically. The aristocratic Areopagus was divested of political powers (enforcement of laws, punishment, censorship), which were given to the people, represented in the Council of Five Hundred, popular law courts, and the Assembly. Service as *archon* was put on a paid basis, and, it appears, *zeugitai* (200-measure men) and *thetes* (hired men) were soon admitted to membership. Payment for judges in the people's courts was also introduced.³⁷

The building of empire led inevitably to conflict with Sparta; scarcely had it become a reality when its disintegration began, which ended in dissolution at the close of the Peloponnesian War (404 B.C.). Athens destroyed her walls and joined Sparta's League. Spartan rule proved worse than Athens' selfish sovereignty, however. After a brief trial of it, Thebes gained leadership (371 B.C.), which lasted no longer than Epaminondas. When he fell (362 B.C.), sway passed to Macedonian Philip, whom Epaminondas taught the latest arts of war. At Chaeronea (338 B.C.) Philip triumphed, despite all that Demosthenes' patriotic eloquence could stir against him. Under Alexander, Greek cities, which had proved unable to rule themselves, were led on a heroic adventure that was to make them rulers of the Nile and Mesopotamia. Alexander's hot young dream vanished at his death; but it had paved the way for a far-flung extension of Hellenic culture, if not of power. Macedonian, Seleucid, and Ptolemy sought prestige through force and cunning; but all, at last, were drawn under Roman sway.

Meantime, Athens, having left behind her dreams of empire, secured her liberty as best she could from Egypt and from Rome. Within this "freedom"

³⁴ Grote: *op. cit.*, II, 386.

³⁵ Jardé: *op. cit.*, pp. 296 f.; Bury: *op. cit.*, pp. 331, 340.

³⁶ Thucydides, II, 62.

³⁷ Oman: *History of Greece*, pp. 269 f.; Bury: *op. cit.*, pp. 347 ff., 427.

she devoted herself to petty problems of local government and extending her empire of the mind. After the Peloponnesian War, Athens moved toward bankruptcy, contributed to by the ruinous expenses of war, numerous increasing internal drains on the treasury, and an injurious system of tax-farming. There were, however, certain periods of considerable prosperity.³⁸ Other momentous changes were taking place. Progressive bankruptcy of the state was paralleled by growth of personal fortunes. Agriculture never recovered from the destruction of the war. Countrymen poured into town and engaged in industry and commerce. Farm land fell into the hands of absentee owners. Citizen farmers decreased; slave labor, in some degree, took their place.³⁹ The gulf between rich and poor widened. Luxury supplanted simplicity in Athenian life. Population declined from the fourth century; in the second, according to Polybius, towns of Greece were desolate and the land barren. The lack of men was ascribed to a lack of children; folk wanted money and ease rather than work; wanting these, they avoided marriage; or if married, had few children.⁴⁰ Citizen-soldiers were replaced by professionals. Athletic training, once a part of the education of citizen-soldiers, became a profession, an end in itself.

POPULATION, CLASSES, AND LABOR Though unification of Attica under Athenian leadership was accomplished by the beginning of the seventh century, economic class conflicts persisted and were a source of continual internal disorder. The constitution was "oligarchical"; the poor were "serfs of the rich" and had no "share in anything"; loans were secured by the debtor's person. Solon recognized four classes on the basis of wealth: *pentacosiomedimni* (500-measure men); *hippes* (knights, 300 measures); *zeugitae* (200 measures); and *thetes* (paid laborers). The political divisions at the time of Pisistratus—plainmen, shoremen, and hillmen—were rooted in economic interests.⁴¹ The lot of those sold into slavery for debt was improved by Solon's reforms, and the poorer citizens became more powerful as the fifth century wore on to its close. While this leveling of citizens was taking place, another cleavage in the population was developing. Attica was becoming half slave and half free.

Athens' citizen population at the time of Pericles has been estimated variously as 100,000, or even 170,000.⁴² Perhaps a fifth succumbed during the Plague, whose agonies Thucydides portrayed.⁴³ Besides citizens there were

³⁸ Aristotle: *Ath. Resp.*, 28; *Politica*, II, 7; *Thucydides*, VII, 28; Xenophon: *Memorabilia*, II, 7, 2; Rostovtzeff: *Social and Economic History of the Hellenistic World*, I, 95 f.; II, 628 ff., 1135 f.; III, 1329, 1354, 1604 f.; Busolt-Swoboda: *Griechische Staatskunde*, II, 1236 ff.; Glotz: *Ancient Greece at Work*, pp. 147 f.; Laistner: *op. cit.*, pp. 292 f.; Breasted: *Ancient Times*, pp. 396 f.

³⁹ Glotz: *Ancient Greece at Work*, pp. 199, 202 f.

⁴⁰ Lot: *op. cit.*, p. 67.

⁴¹ Aristotle: *Ath. Resp.*, 2, 7, 13.

⁴² Boeckh: *Public Economy of Athens*, pp. 36, 77; Bury: *op. cit.*, p. 408.

⁴³ Bk. II, 47-54.

thirty or forty thousand metics (foreigners), a class that rose rapidly after the Persian War. Slavery, limited at first, increased rapidly during the fifth century. Trade and industry, requiring more laborers, purchased slaves and trained them for various specialized jobs.⁴⁴ Slaves were recruited from war captives, criminals, foundlings, and by slave raids. Athens became an important market, and her slave population may have numbered 80,000 or even 120,000.⁴⁵ Slaves were usually the property of individuals; but some were owned by the state. Their employments were mainly domestic and industrial, in mines and quarries; some were employed in agriculture.

The condition of those without citizenship (metics, freedmen, and slaves) was, in certain respects, favorable, compared with those in other Greek states. Metics were an important element at Athens. Though they seldom gained citizens' rights, were taxed heavily, could not hold real property, and were subject to war service and other burdens, they had considerable personal liberty and sometimes became prominent in Athenian affairs.⁴⁶ Slaves, too, enjoyed some consideration; in fact, they may have been better off than some "poor citizens of many an oligarchic State. . . ." ⁴⁷ Xenophon ⁴⁸ says they sometimes lived luxuriously, were excessively licentious, independent, and dressed just like free citizens. Aristophanes ⁴⁹ refers to the shiftless servants whom the master fears to whip—at least in war. The slave could accumulate money and buy his freedom, or be freed for faithful service.

The cheapness of supplies, competition of numerous free laborers, metics, and slaves kept wages at a low level. Ordinary labor might earn six to ten cents a day; skilled artisans received as much as twenty cents.⁵⁰ Other employments were paid proportionately poorly; but musicians, actors, and *hetairai* were more richly rewarded.

Less is known of the condition of the poor than of the rich, whose exploits were gilded by the tongues of poets. Although in early times no citizen was so poor as to be without some trade or business, or be compelled to disgrace "the state by begging," later, particularly after the calamities of war, the poor increased in number, and a system of poor relief was instituted, with charitable institutions and free shelters supported at state expense. Public expenditures for building, in the Age of Pericles, may have been undertaken to alleviate un-

⁴⁴ Mahaffy: *Social Life in Greece*, pp. 57-62.

⁴⁵ C.A.H., v, 11; Glotz: *Ancient Greece at Work*, p. 198; Boeckh, *op. cit.*, p. 77, estimated slaves in Attica at 365,000.

⁴⁶ Whibley: *op. cit.*, pp. 435 f.; Laistner: *op. cit.*, pp. 284 f.

⁴⁷ Glotz: *Ancient Greece at Work*, pp. 196 f.; St. John: *History of the Manners and Customs of Ancient Greece*, III, 18.

⁴⁸ *Athenians*, I, 10-1.

⁴⁹ *Clouds*, 4-6.

⁵⁰ Glotz: *Ancient Greece at Work*, pp. 166, 174; Boeckh: *op. cit.*, pp. 116-23.

employment.⁵¹ According to Aristotle, a law provided that persons having less than three minas, who were crippled and unable to work, were, upon public examination, to have "two obols a day from the State for their support."⁵²

Conditions of labor were often bad, but self-interest of owners operated against brutal and complete neglect of workers. At the mines of Laureion, men worked in ten-hour shifts. In small shops conditions were better than in mines, but hours were longer, probably from morning light till sunset. Aristophanes pictures workers stirring at an early hour: "As soon as the cock sends forth his morning song, they all jump out of bed, blacksmiths, potters, leather-dressers, shoe-makers, bathmen, flour-dealers, lyre-turners, and shield-makers; they slip on their shoes and rush off to their work in the dark."⁵³ An anonymous bid for labor reform may be recognized in this plain-spoken couplet:

Six hours a day to tiresome tasks are quite enough to give.
The plain signs following after say distinctly *zethi*—live! ⁵⁴

Labor—certain types of it—was held worthy of free men. Socrates approves the smell of honest toil "which every free man loves."⁵⁵ In early times manual work was proper for a citizen. Solon sought to bring trades into good repute, and caused the Areopagus to scrutinize everyone's source of livelihood and whip the idle.⁵⁶ This view of labor and citizenship contrasted sharply with Sparta's conception. To Cleomenes, Hesiod was only the fit singer of Helots.⁵⁷ Ultimately, of course, increase of wealth and slavery encouraged idleness at Athens and undermined respect for labor. Free citizens had become only a minor element in the producing class in the fourth and fifth centuries.⁵⁸ Wealth became the measure of a man. Private gymnasia and baths,⁵⁹ as well as luxurious houses, were common appurtenances of men of fortune.⁶⁰ An Athenian audience could appreciate the speech of Jason:

For I knew
How every friend deserts the impoverished man.⁶¹

⁵¹ Boeckh: *op. cit.*, p. 486; St. John: *op. cit.*, III, 69 f., 79, 89; Robinson: *History of Greece*, p. 152.

⁵² *Ath. Resp.*, 49.

⁵³ Glotz: *Ancient Greece at Work*, pp. 278 ff. Trans. by M. R. Dobie. Kegan Paul, Trench, Trübner, London, 1926.

⁵⁴ Lawton: *The Soul of the Anthology*, p. 128. Courtesy of Yale University Press, New Haven.

⁵⁵ Xenophon: *Symposium*, II, 4.

⁵⁶ Plutarch: *Solon*, 22.

⁵⁷ Symonds: *Studies of the Greek Poets*, I, 162.

⁵⁸ Laistner: *op. cit.*, p. 285; Whibley: *op. cit.*, p. 435.

⁵⁹ Xenophon: *Athenians*, II, 10.

⁶⁰ Mahaffy: *op. cit.*, pp. 258 ff.; Brcasted: *op. cit.*, pp. 350 f.

⁶¹ Lawton: *Three Dramas of Euripides*, p. 133.

Agricultural labor was in best repute, praised by poets and philosophers.⁶² It escaped to some extent the debasement of slavery, which was not a very economical form of labor.⁶³ Hesiod, gifted singer who weaned the muse from heroes and taught her to speak of mundane matters, the struggle of the poor peasant against the crafty rich of the city, proclaimed: "Before excellence the immortal gods have placed toil and labor."⁶⁴ Idleness, not work, disgraces man. He who works is loved of gods and men. When to plow, prune, sharpen sickles, get fodder, winnow grain, cut grapes, build a house, geld boars and bulls, and other homely duties are set down. "Strip to sow and strip to plough and strip to reap" is the advice of Ascrea's rustic poet; again,

The work-deferrer never
Sees full his barn, nor he that leaves work over,
And still is gadding out.⁶⁵

All of which is good for his health and for his wealth. Centuries later, a lingering refrain of Hesiod's paeon to rustic labor may be detected in old Archippos on his way to Hades:

Sons, win your subsistence with the plough,
And be ye faithful to the hoe, as now.⁶⁶

Although poet and philosopher diligently extolled agricultural labor, it is evident that the rustic's lot was a hard one. Some lost their land and fell into slavery. Hesiod clearly advises that one should make the best of a hard life. His cruel Boreas, making "the old man round as a wheel," suggests a life under harsh conditions of nature; and the warning to "princes," that the deathless gods note "all those who oppress their fellows with crooked judgments," implies that tillers of the soil already felt the oppression of the landed nobles.⁶⁷

EDUCATION AT ATHENS

PHASES OF DEVELOPMENT Education is the process and product of changes produced in man by the interaction of his original nature and all aspects of the environment in which he lives. The habitat of the Athenians, everyday activities, political development, relation with neighbors, class alignments and interests, traditions, and many other factors, operating informally, determined the character of Athenian society in broad outline, and constituted

⁶² Aristotle: *Oeconomica*, I, 2; Xenophon: *Oeconomicus*, xv-xvi.

⁶³ Glotz: *Ancient Greece at Work*, pp. 199, 202 f., 211; St. John: *op. cit.*, II, 273; III, 25 f.

⁶⁴ Symonds: *op. cit.*, I, 181.

⁶⁵ Davies: *Hesiod and Theognis*, p. 41.

⁶⁶ Lawton: *Anthology*, p. 79.

⁶⁷ Jardé: *op. cit.*, pp. 160 ff.; Bury: *op. cit.*, p. 107.

a general frame of limitations within which education, in the more restricted scholastic sense, developed.

Athenian education, in this narrower sense, followed no single pattern. Changing conditions—social, political, economic—effected transformations in education which followed, more or less fitfully, in their wake. Broadly considered, three major periods are observable, which may be designated as Native Athenian, Transitional, and Cosmopolitan. These are not separated by cataclysmic changes; each, however, exhibits marked contrasts in respect to its central characteristics when fully matured. The Native Athenian, essentially provincial and self-sufficient, runs from earliest times (First Olympiad, 776 B.C.) to the emergence of Athens after the Persian War (479 B.C.) as empire-builder, center of wealth and commerce, rich in tributary cities, whirlpool of political changes, patron of arts, science, and philosophy. The Transition, a period of marked changes (notably, an increased stress on individual freedom, modification of institutions, decline of moral standards, and the emergence of critical educational philosophy), is clearly distinguishable by the middle of the fifth century, and continues till the end of Athenian national greatness and the success of Macedonia at Chaeronea (338 B.C.). Tendencies of the Transition prepared the way for, and survived to some extent in, a Cosmopolitan epoch (338 B.C. to 529 A.D.) distinguished by the disappearance of state service as the *leitmotif* of education, and preoccupation with philosophical speculation and literary attainments. Athens became a cultural Mecca, looked to longingly by intellectuals, and visited by all who could afford the luxury of foreign study. Macedonia and Rome made obeisance to her intellectual dominion, later shared with Alexandria. Christendom, too, despite fitful fluctuations in respect to views of pagan letters and philosophy, stood in her debt, and tolerated the existence of pagan institutions of learning till 529 A.D.

CHANGING VIEWS OF ATHENIAN CULTURE Prior to 1870, it was customary to think of Greek civilization as a sudden development, a unique cataclysmic phenomenon of human history. Thanks to numerous discoveries since Schliemann and Evans began their work, this view has changed somewhat, and we see Athenian intellectual and aesthetic achievements, not as a meteor flashing through the sky, but as the maturing culture of a people that owed much to other climes and times.⁶⁸ With the gradual subsidence of this view, the "glory that was Greece," though glorious indeed, tends more and more to appear as a normal, accountable phase of social evolution.

The phenomenal interpretation, which offered startling contrasts between Greek society and others, was so universally and persuasively set forth as to gain general acceptance. Felton wrote: "The orient . . . required a thousand

⁶⁸ Hyde: "The Religion of Greece," in Montgomery, *Religions of the Past and Present*, p. 257.

years for what Greece accomplished in a century."⁶⁹ It is true that Athens made rapid progress "in a century," but it is equally clear now that back of that development lay thousands of years of social evolution. To Hegel, Greece was "a point of light in history." If one look to a certain class at Athens, and to superior elements in that class at a certain period, the view is sustained; but other Greek states, and Athens, too, prior to the Enlightenment, scarcely shone with more brilliance than many other peoples at similar periods of development. Some observers found an "instinct" for knowledge, truth, and beauty in the "Greeks," and held that they were "first smitten with the passion for truth."⁷⁰ Aristotle, however, accorded priority in intellectual inquiry, mathematics, and science, to the priests of Egypt.⁷¹ Most modern histories of education, written in accord with the cataclysmic interpretation of Greek history, took little or no notice of preceding developments as relatively unimportant. Drever thought the Greek, "as compared with other races, was imaginative, intensely intellectual, endowed with a fine sense of proportion, harmony, and restraint, and intensely 'human,' to use a term . . . to describe what was probably most characteristic of all. . . ." ⁷² What of Hindu, Chinese, Hebrew, Egyptian intellect, imagination, and "humanity"? William T. Harris declared: "In the beginning Greece is only aesthetic, worshipping beautiful individualities, the gods of Olympus. From the beginning it prizes its athletic games as a sort of worship of the beautiful by realizing gracefulness and physical freedom in the body."⁷³ Apart from the question whether the gods were always "beautiful individualities," this view of athletics stresses too exclusively aesthetic appreciation of the athlete, and appears to overlook the utilitarian military purpose which physical training served at Athens—not to mention the more strictly military ends of Sparta. War was a brutal, bloody business, "conducted without mercy" by Greek cities as well as by "barbarians," ⁷⁴ and education was used to prepare mind as well as body for it. Isocrates maintained that even Homer had been given such a great place in education so that his constant praise of heroic fighters might stir up later generations to emulate them.⁷⁵

Much stress has been laid on the view that Greek education was unaffected by caste, which so permeated Oriental society.⁷⁶ While no one would maintain that social cleavages in the Orient and in Greece meant precisely the same thing, the social stratification of freemen, noncitizens, and slaves should not

⁶⁹ *Ancient and Modern Greece*, I, 417.

⁷⁰ Butcher: *Some Aspects of the Greek Genius*, pp. 1 f.

⁷¹ *Metaphysics*, I, 1.

⁷² Drever: *Greek Education*, p. 9.

⁷³ Preface, Davidson's *Education of the Greek People*, p. viii.

⁷⁴ Jurdé: *op. cit.*, pp. 259 f.

⁷⁵ *Panegyricus*, 159.

⁷⁶ Felton: *op. cit.*, I, 417.

be forgotten when speaking of Athenian education. As for Sparta, we have seen how meticulously the Spartiates trained themselves so as to maintain their power, and denied education to the conquered. Even the greatest of Athenian philosophers were unable to transcend, in theory, these class limitations of Greek experience and tradition. The Hellenic horizon was also restricted in regard to cultural potentialities of neighboring peoples and of women. Athenian education reveals an exalted self-esteem and contempt for neighbors, a "narrowness" and "exclusiveness," not only toward "barbarians," but often toward other Greek cities as well.⁷⁷ In regard to the intellect of women, Athens was normal rather than phenomenal; for, in practice (notwithstanding Plato's divergence), Athenian wives and daughters were about on a plane with those of many Oriental societies.

Far from underestimating the importance of Athenian education, the foregoing only serves to call attention to certain limitations of it; and emphasizes the fact that it was not inhumanly perfect, destitute of connection with ordinary social purposes, or completely out of harmony with educational development in the rest of the ancient world, as the phenomenal interpretation of Greek culture led many to believe.

CENTRAL TENDENCIES OF ATHENIAN EDUCATION Certain central tendencies in Athenian education are observable in earliest practice and, though modified by social changes, color later theory: the ideal of state service; the harmony of mental, physical, aesthetic, and moral development; the cleavage between liberal education for those who could enjoy leisure and practical training for those compelled to do "ignoble" work.

Emphasis on service to the state permeated Athenian education as the norm of practice until the defeat of her political aspirations, and then was continued as an ideal. This was by no means narrow: it included the training of mind, body, moral integrity, and fidelity to the gods. Though one need not take Pericles at face value when he extols the virtues of Athenian life and contrasts them with the faults of others, there is persuasiveness in his assertion that the Athenian does not neglect public affairs because he takes care of private business; and that those so employed also have "a very fair idea of politics." The state they have created, he would have us believe, is proof of the excellence of the Athenian system, for it excels even the fairest reports of it when put to a severe test. For such a city men died; and all who live should be glad to labor in her service.⁷⁸ Individual life and happiness were as nothing compared with the supreme end, service to the state. Fidelity to the city, defense of temples and public property, obedience to laws and magistrates, and honor to the religion of their fathers were promised on oath by the *ephebi*. The ideal of indi-

⁷⁷ Mahaffy: *op. cit.*, pp. 342 ff.

⁷⁸ *Thucydides*, II, 40-1.

vidual sacrifice, that the state might live, approximated the religious devotion and ascetic self-denial of a later age. Athenians served their city, as did the Spartans; the central difference lay in their conception of discipline that was to prepare them for such service.

Historian, philosopher, and statesman joined in praising early Athenian education for national ends. The comic poet, too, a critic of foibles of the Transition and joker at its expense, drew, in retrospect, a picture of sturdy excellence of body, moral integrity, and modesty that once prevailed. With an eye on his audience, Aristophanes tells again and again of the old fighting patriotism:

Mine was then a life of glory,
Never craven fear came o'er me
Every foeman quailed before me
As across the merry waters,
Fast the eager galleys bore me.

What profit was there in such patriotic training? The answer is:

Therefore we did batter down
Many a hostile Median town.
And 'twas we who for the nation
Gathered in the tribute pay. . . .⁷⁹

Aristophanes' weaklings were products of the watery, new education, whereas his stalwart heroes were—

Trained in music and palaestra, freemen's choirs and freemen's games.⁸⁰

This "discipline rare," which once flourished at Athens, was always modest and decent, cultivated respectful concern for elders, stressed simple clothing and food, and employed the old music and manly exercises. This good old discipline, which taught "heroes of old to be hardy and bold," can even now be restored. If it is, the result will be as of yore:

Your chest shall be white, your skin shall be bright,
Your arms shall be tight, your tongue shall be slight,
And everything else shall be proper and right.⁸¹

State-centered education was weakening at the Transition. All things were "just ready to burst with liberty," as Plato said; even horses and donkeys walked in the streets like freemen! It was hard for heirs to wealth and goodly names

⁷⁹ Aristophanes: *Wasps*, 1091-9. Trans. by B. B. Rogers. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁸⁰ Aristophanes: *The Frogs* (Murray), p. 56.

⁸¹ Aristophanes: *Clouds*, 1009-14. Trans. by B. B. Rogers. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

to continue that self-denial and simplicity which had marked provincial Attic society. It was impossible, apparently, for the greatly increased body of citizens, the democracy of which Pericles boasts, to attain to the standards which an aristocracy had prized. After the Transition, social and economic changes combined with the waning of political power to weaken further and finally destroy the *raison d'être* of state education. Palaestra and gymnasium became centers of training for professional athletes instead of citizen-soldiers; and an intellectualism, individualistic rather than socially centered, ultimately supplanted the physical, moral, and aesthetic training of the earlier age.

A second ideal of Athenian education, a "balance of moral, mental, physical, and aesthetic development," gave a breadth to the state-centered training of citizens that differentiated it significantly from the citizen-training of Lacedaemon. The Athenian, like the Spartan, would be a soldier, but something more. Athenians owed much to the freer, more varied character of their institutions, which sought to liberate, rather than simply mold all in conformity with a rigid, narrow pattern. Plato portrayed this many-sided education: the discipline of the family; the music school for harmony and rhythm; gymnastic training, to make the body a fit servant of the mind, and to incline men to valor; and a study of the laws, to acquaint them with the requirements of social life.⁸² Due allowance must be made, of course, for the fact that the authors of this ideal formulation and of others, were, by virtue of their own education, scarcely qualified as unbiased judges. The degree of success achieved in harmonizing aesthetic, intellectual, physical, and moral elements must be judged by the results. If, as Thucydides reported Pericles' view, Athenians did indeed enjoy what they themselves produced, and also what came from others; if they relished a degree of leisure unknown amid the laborious toil of Lacedaemon; if their devotion to public affairs did not preclude those of private life; if love of physical excellence was joined with an equal delight in the creations of the mind; and if many were, in fact, "qualified for the most varied kinds of action"—a "graceful versatility"—such an achievement deserves acclaim.⁸³ "Moderation in all things," "of nothing too much"—these philosophic formulae well express the ideal aimed at with some success, for a time, at Athens. "Man was a whole to the Hellenes," Freeman wrote, "and one part of him could not be sound if the other parts were not."⁸⁴ Though too inclusive as given, since not all Greeks understood or achieved it, the statement may properly be taken as an epitome of the cultural ideal of Athenian citizens at their best.

A third tendency of Athenian education, the cleavage between liberal education and utilitarian training, existed to some extent even in early days, and

⁸² Protagoras, 325-6.

⁸³ Thucydides, II, 38-42.

⁸⁴ *Schools of Hellas*, pp. 279 f.

grew with the deepening differentiation of economic status. Solon's law, which required a father to teach his son a trade, was designed to keep an increasing population from idleness, stimulate trade, and supplement insufficient products of Attic agriculture.⁸⁵ As time went on, however, the widening gulf between rich and poor, absentee ownership, the prevalence of slave labor, and specialization in industry brought manual labor into disrepute. It became increasingly the lot of those outside the ranks of citizenship and of those citizens who were unable to escape from the laborious tasks which poverty imposed. The law of Solon became of no avail. Training for mechanical jobs came to be regarded as unworthy, servile, though philosophers continued to praise agriculture as worthy of free men. Liberal training itself, which theoretically, at least, was the lot of all freeborn youth—fitting them for the duties of their station—was in practice proportional to the economic status of the family. Plato says of it: "This is what is done by those who have the means, and those who have the means are the rich; their children begin to go to school soonest and leave off latest."⁸⁶ Demosthenes contrasts education of the rich and of the poor: "I then, Aeschines, had the advantage as a boy of attending the schools which became my position, and of possessing as much as one who is to do nothing ignoble owing to poverty must possess." But "you [Aeschines] . . . what has been your fortune when compared with this?—the fortune, thanks to which you were brought up as a boy in the depths of indigence, in close attendance upon the school along with your father, pounding up the ink, sponging down the forms, sweeping the attendants' room, occupying the position of a menial, not of a free-born boy! . . ." ⁸⁷

Philosophers stressed the principle of cleavage between liberal education and practical training which had been developing as a concomitant of the differentiation between upper and lower economic strata. "To be always seeking after the useful does not become free and exalted souls," says Aristotle.⁸⁸ Plato, too, praised arithmetic "if pursued in the spirit of a philosopher, not of a shop-keeper."⁸⁹ The theory of liberal studies was applicable to an economic class that could afford the leisure and employ the means; without them such culture could not be attained. Σχολή (leisure) came to mean school. Both implied wealth. The sausage-seller, lowly in origin, trained in the *agora*, knew nothing beyond his letters—and of them little "and that badly."⁹⁰ The rest of the

⁸⁵ Plutarch: *Solon*, 22.

⁸⁶ Protagoras, 326. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

⁸⁷ *On the Crown*, 257-8. From *The Public Orations of Demosthenes*, translated by A. W. Pickard-Cambridge (The Clarendon Press); Bryant: "Boyhood and Youth in the Days of Aristophanes," *Harvard Studies in Class. Philol.*, xvi, 108.

⁸⁸ *Politica*, viii, 3.

⁸⁹ *Republic*, vii, 525.

⁹⁰ Aristophanes: *The Knights*, 188-9.

laborious crew that toiled long hours⁹¹ probably fared no better in the culture of the mind.

INSTITUTIONS

Women and education of the home The earliest education of children was conditioned by the status of women at Athens, which bordered upon Oriental seclusion. Women did not participate in the intellectual, social, or political life of men; they were completely lacking in independence—perpetual minors.⁹² Though they took part in religious celebrations, attended tragic performances in the theater (but not comedies), went shopping occasionally, and, if unmarried, marched in the Panathenian Procession, they were neither permitted to attend the banquets of men nor to view the greatest athletic festival held at Olympia.⁹³ Widely divergent generalizations have been made, nevertheless, of ancient woman's sphere. Lawton concluded that "woman was to them an inferior, indispensable indeed, but only as the bearer of the man-child. The wife was not even a sharer in the lighter diversions of men. To the banquet came only the despised flute-players and dancing-girls, the playthings and the property of men. The true social club was the gymnasium or youths' palaestra: and here nothing feminine appeared at all."⁹⁴ Felton, recognizing that "purity of manners," "wise administration of the house," and "quiet and modest demeanor" were the chief female virtues at Athens, and that women were not as prominent as in Dorian communities, judged them "happy, respectable, and powerful in the sphere of domestic life"; their education, though not intellectual, imbued their minds "with the spirit of the national poetry, religion, and even the fine arts"; while "experience of life" prepared them to be the wise companions of men.⁹⁵

Numerous poetic allusions reflect popular ideas concerning women, and harmonize with what is known of their actual social status. The Greek, like the Hebrew, traced man's infelicity and his inglorious fall to woman, Pandora. To this "beautiful evil" Zeus and his divine assistants gave wiles, beauty, desire, skill in domestic work, and a canine mind.⁹⁶ Yet Hesiod admits that there is "no nobler prize than a woman, if she be good . . ."; and, again, "nought else worse than a bad one." "Buy thou a woman, not wed her, that she may follow the oxen,"⁹⁷ is his utilitarian advice; a house, an ox, and a woman appear to be

⁹¹ Glotz: *Ancient Greece at Work*, p. 278.

⁹² Becker: *Charicles*, p. 464; Woody: "The Fair Sex in Greek Society," *Research Quarterly*, x, 62-71.

⁹³ Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 17; Wright, F. A.: *Greek Athletics*, p. 25; Mahaffy: *op. cit.*, p. 325.

⁹⁴ Lawton: *Classical Greek Literature*, p. 148; Whibley: *op. cit.*, p. 520.

⁹⁵ Felton: *op. cit.*, I, 432 f.

⁹⁶ Hesiod: *Works and Days*, 60-105; Symonds: *op. cit.*, I, 168 f.

⁹⁷ Lawton: *Greek Literature*, p. 64; *Successors of Homer*, pp. 66 f.

on the same plane.⁹⁸ Simonides seems to have been faithful to the Hesiodic pattern in his cynical classification of female nature as like mud, salt water, swine, fox, dog, donkey, weasel, mare, and monkey; only a few are like bees, capable and industrious.⁹⁹ Woman's sphere was in the home. "I hate the gadding woman," says Theognis. With evident concern a visitor inquires of the husband whose wife has gone out of the house: "Great Zeus! What has she to do out?" In Syracuse, a law forbade a free matron to go abroad after sunset, lest she thereby confess herself an adulteress; in daytime, she must be accompanied by one maid, at least, and have permission of the Supervisor of Women.¹⁰⁰ Solon's law was to the same effect.¹⁰¹ "Tis hard, you know, for women to get out," says Calonice, for one must mind a husband, another wake her servant. This one must put the child to sleep, that one wash him, and another "give him pap."¹⁰²

Marriage was generally arranged by parents for reasons of convenience. The best marriageable age for girls was from sixteen to twenty, though marriage was often earlier. Divorce was easy for men and, under certain circumstances, compulsory. For women it was more difficult and less common, though for unfaithfulness and harsh treatment, they could leave their husbands and return with their property to the care of their fathers or nearest male relatives.¹⁰³

The work of women varied with the times. In Homeric society women of noble birth served in many capacities. Washing, baking, grinding, weaving, and embroidery were among their employments. Penelope wove all day and unraveled her web at night. For the rustic family, Hesiod set a day for weaving:

On this let careful woman's nimble hand
Throw first the shuttle and the web expand.¹⁰⁴

In later times, women of rich families depended on slaves or servants for most of the work of their sphere. In this domestic domain their power was rather complete, though Xenophon would have them instructed at marriage by their husbands.¹⁰⁵ In turn, they became the instructors of their children, the boys till ready for the palaestra, the girls until marriage. Training for any profession was rare, certainly, though Agnodice is said to have contrived by stealth

⁹⁸ *Works and Days*, 405.

⁹⁹ Symonds: *op. cit.*, I, 281 ff.; Lawton: *Greek Literature*, pp. 101 f.; Wright, F. A.: *Greek Social Life*, pp. 19 ff.

¹⁰⁰ Athenaeus, XII, 521.

¹⁰¹ Plutarch: *Solon*, 21.

¹⁰² Aristophanes: *Lysistrata*, 15-9.

¹⁰³ Blümner: *op. cit.*, pp. 134 ff.; Becker: *op. cit.*, p. 473; St. John: *op. cit.*, II, 4; Gulick: *op. cit.*, chap. 9; Hesiod: *Works and Days*, 695-705; Whibley: *op. cit.*, pp. 519 f.

¹⁰⁴ Davies: *Hesiod and Theognis*, p. 53; Clotz: *Ancient Greece at Work*, pp. 15 f.

¹⁰⁵ Oeconomicus, VII, 4-43; Woody: *A History of Women's Education*, I, 10 ff.; St. John: *op. cit.*, II, 35.

to get a knowledge of medicine, built up a practice, and helped open the practice of midwifery to women at Athens.¹⁰⁶ The profession of skilled entertainers—musicians, jugglers, dancers, acrobats—seems alone to have been open to girls, but to those of a different social order.

How did women regard their lot? Most of them doubtless accepted it as a natural condition; but others, in the course of time, probably fretted at subjection. Economic changes that gave greater freedom to some women, the decay of patriarchal society, the views disseminated by certain philosophers, and the experience of intellectual opportunity on the part of a few women must have aroused serious concern as well as ridicule. There did indeed occur "a general stir about the position of women."¹⁰⁷ There is a conscious, pointed lament, if not a note of revolt, in Tereus: "We women are nothing—happy indeed is our childhood, for then we are thoughtless; but when we attain maidenhood, lo! we are driven away from our homes, sold as merchandise, and compelled to marry and say 'All's well.' "¹⁰⁸ Medea echoes:

Of all created things endowed with soul
And sense, we women are the wretchedest.¹⁰⁹

It seems certain that *Lysistrata* and the *Ecclesiazusae*, which ridicule the notion of woman's independence, must have owed their popularity to the existence of an audience well-acquainted with the disturbing question.

Though certain women at Athens became educated, few became famous. Lesbos produced a Sappho; Thebes, an Erinna and Corrinna; Diotima, Socrates says, taught him the "theory of love"; Aspasia of Miletus, concubine and wife of Pericles, drew a brilliant circle of men and women around her and is said to have taught Socrates rhetoric.¹¹⁰ Pericles, however, although he delighted in her, seems to have held to the old Athenian ideal. In any case, Thucydides puts in his mouth praise of those women least spoken of, whether "for good or for evil among men."¹¹¹

Education of an Athenian child to the end of the sixth year was in the home, in care of the mother, or of a nurse, usually a slave. The newborn was washed in tepid water and oil, and wrapped in swaddling clothes. On the fifth or the seventh day the Amphidromia was celebrated, the child was carried around the hearth, and the door was decorated with an olive wreath for a boy or a fillet of wool for a girl—provided the father, in whose hands lay the sole right of expo-

¹⁰⁶ St. John: *op. cit.*, I, 115; Abbott: *Society and Politics in Ancient Rome*, pp. 78 f.

¹⁰⁷ Mahaffy: *op. cit.*, pp. 274, 283.

¹⁰⁸ Davis: *op. cit.*, p. 36. From W. S. Davis, *A Day in Old Athens*, Allyn and Bacon, Boston, 1914.

¹⁰⁹ Lawton: *Three Dramas of Euripides*, p. 119.

¹¹⁰ C.A.H., v, 389; St. John: *op. cit.*, II, 43.

¹¹¹ Bk. II, 45.

sure, authorized by law at Athens, had not decided, for one reason or another, to do away with the child.¹¹² On the tenth day family and friends joined in a happy festival, offered gifts to the child, and gave it a name. Exposure, when practiced, probably fell most heavily on females, the illegitimate, and the deformed. Economic factors were doubtless often decisive. Athenian families wanted children, but not too many. Numerous divisions of family wealth might be disastrous.

In poor or modestly situated families, mothers nursed their children, but wet nurses were commonly employed by the wealthy. Lacedaemonian women were in demand,¹¹³ for they had a reputation for ability to manage children and form modest manners.¹¹⁴ The day of aloofness to childish demands for attention had not yet come in Athens. Nurse or mother handled and dandled, sang, and told stories of "once upon a time" to engage the infant mind. Though philosophers disapproved of it,¹¹⁵ stories of spirits, the "evil eye," the princess who ate children, and other bugaboos—as well as heroic legends of a past as old as the race itself—were related to wheedle or frighten infants into being "good." Proper behavior was secured by appeal to the slipper or more painful agencies, if necessary, for in the Athenian family it was axiomatic that manners make the man.

In spite of reliance on fright and corporal punishment, despite the cruelty of infanticide, there was a marked warmth of parental affection in the Athenian household, and parting brought deepest sorrow. Love and heartbreak at the death of a little son are poignantly set forth in Zonas' "Appeal to Charon":

When the child of Kinyras stands
At the ladder, extend thy hands,
O Charon gloomy of face,
And set him in his place.
He slips in the sandal-bands:
And across those pebbly sands,
Barefoot, he fears to go.¹¹⁶

Besides physical care and moral, mental, and aesthetic influence of mothers and nurses, home education included numerous playthings and games which provided release of natural drives to activity. Most of them were similar to those of the present day. Pollux mentions a host of games, many of which were played by children, others engaged in by boys of school age. Grasberger has

¹¹² Becker: *op. cit.*, pp. 217 ff.; Blümner: *op. cit.*, pp. 78 ff.; St. John: *op. cit.*, I, 118 ff.

¹¹³ Plutarch: *Alcibiades*, 1.

¹¹⁴ St. John: *op. cit.*, I, 134 f.

¹¹⁵ Plato: *Laws*, x, 887.

¹¹⁶ Lawton: *Anthology*, p. 45.



A GIRL SWINGING

(Courtesy, The Metropolitan Museum of Art, New York)

classified the distinctly physical games (other than genuine gymnastics) according to their emphasis on hopping and jumping, running or catching, aiming and throwing.¹¹⁷ The child's rattle (credited to Archytas), gocarts, whips, tops, hoops for rolling, whirligigs, kites, hobbyhorses, swings, seesaws, carved animals, swords, shields, bows and arrows, were all popular. Pets—dogs, goats, geese, ducks, monkeys, cocks—enlivened the scenes of play. Numerous games with balls, blindman's buff, hide-and-seek, knucklebones, *mora*, tug of war, duck and drake, tossing and spinning coins, running, jumping, skipping the rope, standing or hopping on a greased skin filled with liquid, shooting beans or pebbles, walking on stilts, tossing in a blanket, cockfighting, leapfrog, flying a beetle with a thread, guess-who-hit-you—all these appear to have been popular tests of fleetness, accuracy, poise, strength, and cunning. Of all games the many types of ball-playing were probably most favored.¹¹⁸ Though little is known of the manner of play, the few hints given by ancient authors point to simplicity. There is much truth in the saying that "the Greeks danced everywhere and on any pretext."¹¹⁹ Of the host of dances mentioned by Athenaeus¹²⁰ and others, some were perhaps learned informally by children at an early age, though special training would be given later to select groups.¹²¹

Among the clever feats, enjoyed by boys and girls and adults also, was a game played with five pebbles (*πεντάλιθα*), which were tossed from the palm of the hand and caught on the back of it.¹²² Games of skill and calculation, such as *kottabos*, *khalkismos*, and *polis* or *petteia* (somewhat like checkers or chess), though commonly played by adults, doubtless found precocious imitators among children.¹²³

The education of girls was carried on, as a rule, only in the household, and was limited to what mothers and nurses were able to convey, although Teos is named as an exception, where girls attended school with the boys.¹²⁴ Dancing and perhaps music were permitted for some girls in well-to-do families. A few seem to have known how to read and write; but modest behavior and some acquaintance with mythology and heroic tales, joined with practical knowledge

¹¹⁷ *Erziehung und Unterricht im Klassischen Altertum*, I, 28-98; Pollux: *Onomasticon*, IX, 101 et seq.; *passim*.

¹¹⁸ Pollux, IX, 103-7; Grasberger: *op. cit.*, I, 84-96.

¹¹⁹ Vuillier: *History of Dancing*, p. 7.

¹²⁰ Bk. XIV, 628-31.

¹²¹ Ussing: *Darstellung des Erziehungs- und Unterrichtswesens bei den Griechen und Römern*, pp. 58-64; Baumeister: *Denkmäler des Klassischen Altertums*, II, 778 ff.; Richter: *Spiele der Griechen und Römer*, chap. 1; Becker: *op. cit.*, pp. 222 ff.; Plummer: "Toys and Games for Children among the Ancient Hellenes," *Am. Phys. Educ. Rev.*, III, 157-69; Fuld: "Physical Education in Greece and Rome," *Am. Phys. Educ. Rev.*, XII, 2 ff.; Blümmer: *op. cit.*, pp. 89-97.

¹²² Pollux, IX, 126.

¹²³ Athenaeus, I, 16-7; xv, 666-7; Becker: *op. cit.*, pp. 349-55.

¹²⁴ Whibley: *op. cit.*, p. 505.



A YOUTH WITH HOOP AND COCK C. 470-460 B.C.
(Courtesy, The Metropolitan Museum of Art, New York)

of household tasks, such as spinning, weaving, sewing, and embroidery, must have been the chief content of their training.¹²⁵ Brightly colored dolls of wax or clay, doll houses, tables, and dishes were among a girl's prized possessions till her wedding day, when she offered them to one of the marriage deities, just as a boy dedicated to Hermes the "companions of his childhood day."

Girls, if inclined to physical activity, no doubt shared many of their brothers' games while the boys were small. But beyond these games of childhood modest Athenian girls of the citizen-class did not go. It was not for them to vie with mythical Atalanta in hunting and running¹²⁶ or with Spartan maidens in public physical contests. Plato¹²⁷ recognized that his radical proposal that women should exercise in the palaestra would excite ridicule. Xenophon's ideal wife would get enough exercise from mixing flour, kneading dough, shaking and folding clothes, and walking about superintending her servants, to bring a proper glow to her cheeks and give her health.¹²⁸ Some women at Athens were expertly trained physically, but they were recruited from foreigners, slaves, and *hetairai*, and were far removed from the circle of modest Athenian women. Remarkable feats of poise, skill, grace, and daring were credited to these professional folk. Socrates marveled at their dancing, juggling, and vaulting through hoops set with bristling swords—a feat which no man present would have risked.¹²⁹

Exercise for the body; music for the soul Greeks commonly regarded Homer as "the educator of all Hellas." In some dim past his poems were said to have been carried by Lycurgus to Sparta.¹³⁰ The Greeks became the people of a book, first, by committing Homer to memory, later by more critical study of him. Though seven cities, chiefly Ionian, dispute the honor of his nativity, Athens seems first to have subjected his poetry to an authoritative recension, said to have been made under Pisistratus.¹³¹

When literary institutions for youth first arose at Athens is unknown. Geography, which favored the development of her commerce, had ultimately a kind influence on cultural affairs as well. Letters, probably first introduced in connection with trade, must have preceded systematic schools; and some time must have elapsed before letters were employed to reduce poetic utterance to a written form which could take the place of oral instruction. Whenever they may have been first established, the increase of literary activity and the publica-

¹²⁵ Xenophon: *Oeconomicus*, vii, 4-43; Becker: *op. cit.*, p. 465; Blümmner: *op. cit.*, p. 129.

¹²⁶ Ovid: *Metamorphoses*, viii, 329 et seq.; x, 560 et seq.

¹²⁷ Republic, v, 457.

¹²⁸ *Oeconomicus*, x, 10-1.

¹²⁹ Xenophon: *Symposium*, ii, 8-11; Becker: *op. cit.*, pp. 101 ff.; Hermann: *Lehrbuch der Griechischen Privatalthümer*, p. 507; Baumeister: *Denkmäler*, 1, 249, 585.

¹³⁰ Plutarch: *Lycurgus*, 4.

¹³¹ Wright, W. C.: *A Short History of Greek Literature*, pp. 22 f.



WOMEN LAYING AWAY CLOTHES by Douris, c. 470 B.C.
(Courtesy, The Metropolitan Museum of Art, New York)

tion of laws in the seventh and sixth centuries imply the existence of some sort of formal instruction. Schools may well have originated in the Ionian islands where literary activity first became common. Herodotus¹³² refers to a school of 120 boys at Chios about 494 B.C. Pausanias¹³³ mentions one at Astypalaea, a little earlier, with about sixty boys. Tyrtaeus (c. 640 B.C.), who encouraged the Spartans with his heroic strains, was said, on dubious authority, to have been a lame schoolmaster from Athens.¹³⁴ The laws attributed to Solon, if the record be true, show the existence of schools, and imply a public

¹³² Bk. vi, 27.

¹³³ *Description of Greece*, vi, 9, 6.

¹³⁴ Wright, W. C.: *op. cit.*, p. 74.

interest in them sufficient to demand some public regulation. Teachers of boys were required to open their schoolrooms not before sunrise and close them before sunset. No persons older than the boys were allowed to enter the school while pupils were present—except the teacher's son, brother, or daughter's husband—on pain of death. Places of exercise were also safeguarded. Superintendents of gymnasia were, under no condition, to allow persons who had reached the age of manhood to enter contests of Hermes along with boys. A gymnasiarch who failed in this respect was subject to the penalties fixed by law for seducing freeborn youth. Moreover, every choregus, appointed by the people, was to be over forty years of age.¹³⁵

A balance of mental and physical education was sought at Athens. The palaestra (παλαίστρα, wrestling place) and the music school (διδασκαλειον, place of instruction) were to give that training in music and literature for the soul and exercise for the body which was thought essential for freeborn youth. At his seventh year a boy was permitted to enter school; he might continue there a long or a short period, depending on the wealth and wishes of his parents, up to the age of fifteen or sixteen.¹³⁶ Both palaestra and music school were private institutions, though Troezen is said to have provided Athenian refugees with free education.¹³⁷ They were not compulsory in the present sense of the term, though Plato¹³⁸ says that the laws required the father to have his sons taught music and gymnastic; and a law, credited to Solon, required all boys to learn to swim and to know their letters. Enforcement of the laws regarding safeguards of morals was under the jurisdiction of the Areopagus until its powers were curtailed, and the laws themselves fell into neglect.¹³⁹

The laws did not create state schools, but they probably proved a stimulus to private masters. Many teachers, perhaps most of them, came from cities other than Athens. Schools differed in quality according to the character and attainments of their proprietor-masters. Fees varied likewise, but were low in all elementary schools; this, and the fact that foreigners and slaves were so commonly engaged in teaching, caused it to be regarded as a low, menial occupation. Demosthenes taunted Aeschines: your father was a slave in an elementary school and "wore shackles and a wooden halter"; "you taught letters; I attended school."¹⁴⁰ The poverty and servile status of schoolmasters were proverbial. Lucian portrayed the great folk of this world as so reduced in circumstances in

¹³⁵ Aeschines: *Timarchus*, 9-12.

¹³⁶ Becker: *op. cit.*, p. 234; Whibley: *op. cit.*, p. 510; Forbes: *Greek Physical Education*, p. 82.

¹³⁷ Plutarch: *Themistocles*, 10; Herodotus, VIII, 41; Boeckh: *op. cit.*, p. 121.

¹³⁸ *Crito*, 50.

¹³⁹ Whibley: *op. cit.*, p. 504; Becker: *op. cit.*, pp. 228 f.

¹⁴⁰ *On the Crown*, 129, 265.

Hades that they must either sell fish or teach letters for a living, insulted by everyone like worthless slaves.¹⁴¹

When a son of good Athenian family went to school or to the gymnasium, he was in charge of a *paidagogos*, a slave who was perhaps worthless for other work, yet of as good character and manners as could be obtained by the parents. Solon thought the office of *paidagogos* important enough to receive attention in his laws.¹⁴² His duties were to oversee the boy's behavior, habits of eating, dressing, walking, attitude toward elders, relation with lovers, and to punish him if necessary,¹⁴³ so as to further in every way that modest behavior which parents had sought to form in the household. The *paidagogos* carried his charge's books, musical instruments, and whatever was needful at the palaestra or the music school, and either remained there or returned thither to bring him home again.

The schoolmaster's domain was probably extremely simple, as a rule, though the room or portico of more "respectable" masters was well furnished. A high-backed chair for the teacher, low stools or benches for pupils, a reading stand, manuscripts, tablets, stylus, ferules, lyres, flutes, instrument cases, and the master's rod or strap are among the equipment generally mentioned or depicted in artistic remains. Decoration, simple in the extreme, was provided by representations of Apollo and the Muses; statues of Hermes adorned the places of physical exercise. A degree of informality was the rule: pets brought to school might be looked after by the *paidagogos*, while the boy had his turn with the master.¹⁴⁴

School discipline was probably severe; some hold that it was "lax," however, since the social inferiority of the master would permit him to use little "real authority." Freeborn youth, with the prestige of breeding and perhaps of wealth behind them, would doubtless be contemptuous of the poor, ignoble, sometimes incompetent teacher, possibly incapacitated by age or other infirmity.¹⁴⁵ It seems fair to assume, however, that boys had respect for the rod and cat-o'-nine-tails in the hands of a competent person. Plato states that if a boy does not obey, "he is straightened by threats and blows, like a piece of warped wood."¹⁴⁶ The savagery of Lamprikos, who, at the mother's request, beats his pupil till "he's as mottled as a water snake" (while it may be some-

¹⁴¹ Menippus, 17.

¹⁴² Aeschines: *Timarchus*, 10.

¹⁴³ Plato: *Protagoras*, 325-6; *Lysis*, 208; Xenophon: *Constitution of the Lacedaemonians*, II, 1.

¹⁴⁴ Gerhard: *Auserlesene Griechische Vasenbilder*, Pt. IV, Plates CCLXXVI, CCLXXVIII-CCLXXIX.

¹⁴⁵ Bryant: *op. cit.*, loc. cit., XVIII, 109; Wright, F. A.: *Greek Athletics*, p. 71; Becker: *op. cit.*, p. 229.

¹⁴⁶ *Protagoras*, 325. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

what discounted), is probably not sheer fantasy, but in keeping with measures sometimes used in Athenian schools. Freeman ¹⁴⁷ holds, however, that the reference to "gags and fetters" could not hold true for Athenian schools. A "Schoolmaster's Valedictory" which makes reference to—

The ferule that beside him lay
Wherewith boys' silly heads to tap,
His skull-cap, slippers, leathern strap . . . ¹⁴⁸

doubtless gives proper prominence to the "emblems of his trade," whether Callon taught at Athens or elsewhere in the Hellenic world where the cult of letters had made its way. Mahaffy ¹⁴⁹ says there were "no eloquent protests against corporal punishment" among the Greeks. Plato, however, set forth the doctrine that one should ". . . not use compulsion, but let early education be a sort of amusement . . ."; and that ". . . knowledge which is acquired under compulsion obtains no hold on the mind." ¹⁵⁰ Life changed, of course, and school discipline likewise. Those who tend to credit all changes in pedagogical mores to the influence of doctrines would, perhaps, trace the impudence of the schoolboy who will suffer no punishment but, himself, beats the tutor's head with a writing tablet ¹⁵¹ to the "soft" pedagogy of Plato's times.

Plato's *Protagoras* gives an account of what music school and palaestra sought to accomplish: "At a later stage they send him to teachers, and enjoin them to see to his manners even more than to his reading and music; and the teachers do as they are desired. And when the boy has learned his letters and is beginning to understand what is written, as before he understood only what was spoken, they put into his hands the works of great poets, which he reads at school; in these are contained many admonitions, and many tales, and praises, and encomia of ancient famous men, which he is required to learn by heart, in order that he may imitate or emulate them and desire to become like them. Then, again, the teachers of the lyre take similar care that their young disciple is temperate and gets into no mischief; and when they have taught him the use of the lyre, they introduce him to the poems of other excellent poets, who are the lyric poets; and these they set to music, and make their harmonies and rhythms quite familiar to the children, in order that they may learn to be more gentle, and harmonious, and rhythmical, and so more fitted for speech and action; for the life of man in every part has need of harmony and rhythm. Then they send them to the master of gymnastic, in order that their bodies may

¹⁴⁷ *Op. cit.*, p. 98.

¹⁴⁸ Lawton: *Anthology*, p. 81. Courtesy of Yale University Press, New Haven.

¹⁴⁹ *Old Greek Education*, p. 39.

¹⁵⁰ *Republic*, vii, 536. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

¹⁵¹ Plautus: *The Two Bacchises*, 438-49.

better minister to the virtuous mind, and that the weakness of their bodies may not force them to play the coward in war or on any other occasion. This is what is done by those who have the means, and those who have the means are the rich; their children begin education soonest and leave off latest. When they have done with masters, the state again compels them to learn the laws, and live after the pattern which they furnish, and not after their own fancies; and just as in learning to write, the writing-master first draws lines with a style for the use of the young beginner, and gives him the tablet and makes him follow the lines, so the city draws the laws, which were the invention of good law-givers who were of old time; these are given to the young man, in order to guide him in his conduct whether as ruler or ruled; and he who transgresses them is to be corrected, or, in other words, called to account, which is a term used not only in your country, but also in many others."¹⁵²

Education stressed conduct, letters, literature and music, gymnastic exercises and games. The place of arithmetic in schools is open to doubt, and has been variously represented. The citharist, Davidson thought, "taught the elements of arithmetic," using "pebbles, a box of sand, or an abacus" to facilitate learning.¹⁵³ Freeman's conclusion was that "simple arithmetic, with, probably, the weights and measures, and the outlines of the calendar, were taught by the letter-master. . . ." ¹⁵⁴ The statement is open to doubt, however, as regards usual practice at the period when greatest stress was laid on character, and liberal, rather than practical, instruction was most favored.¹⁵⁵ Socrates recommended arithmetic, emphasizing "what was useful"; ¹⁵⁶ Plato endorsed it, not for its practical value, though that is great, but as a preliminary to dialectic, and to quicken the mind.¹⁵⁷ With such high authority behind it, arithmetic, like certain other studies, may have claimed more of schooltime than in earlier days when character, letters, and music were supreme. Drawing and painting, too, had gained some place by the fourth century.¹⁵⁸

Instruction in "music" included reading and writing; the poetry of Homer, Hesiod, Theognis, Solon, Alcman, Tyrtaeus, Pindar, Aeschylus, Euripides; possibly, too, the fables of Aesop; singing, playing upon the seven-stringed lyre, and later, sometimes, the flute. The latter was open to objection, however, because it excluded the voice, distorted the face, and stirred the emotions unduly. Similarly, Phrygian and Lydian music, though they crept in, were thought

¹⁵² Protagoras, 325-6. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

¹⁵³ Davidson: *Aristotle and Ancient Educational Ideals*, p. 77.

¹⁵⁴ *Op. cit.*, p. 103.

¹⁵⁵ Whibley: *op. cit.*, p. 508.

¹⁵⁶ Xenophon: *Memorabilia*, iv, 7, 8.

¹⁵⁷ *Republic*, vii, 536; *Laws*, v. 747.

¹⁵⁸ Aristotle: *Politica*, viii, 3.



THE MUSIC SCHOOL by Douris

(G. Perrot and C. Chipiez, *Histoire de l'Art dans l'Antiquité*, ix, 551)

to be effeminate and of immoral influence, while the simple Dorian was favored for its supposed effect on manly, moral character. In the old music school, reading, writing, and music were sometimes taught by the lyre-master or citharist; but an elementary teacher of letters, reading, and writing, the *grammatistes*, was commonly employed.¹⁵⁹

Instruction was given individually and also collectively. Reading, writing, and the lyre were probably taught individually, whereas singing might be imparted collectively. Instruction on the lyre was probably not begun till the age of about twelve or thirteen. In reading, the alphabetic-syllabic method seems to have been employed. An Attic terra cotta, probably indicative of school practice, contains the syllables of *αα*, *βαα*, *γαα*, *δαα*, etc. Rhythm came to be employed to facilitate learning, judging from the metrical alphabet of Callias of Athens.¹⁶⁰

In teaching writing, copies were set, probably traced out faintly by the master in sand or on wax tablets, then followed and filled in by the pupil. Plato's statement that "the writing-master first draws lines" and makes the pupil follow them is somewhat obscure, and may be variously interpreted.¹⁶¹ Writing was followed by dictation, first of simple words and phrases, then by extracts from approved authors. Memorization of long passages, even the whole of an author, was common practice. Homer was the indispensable first book,

¹⁵⁹ Whibley: *op. cit.*, pp. 507, 509; Freeman: *op. cit.*, p. 50.

¹⁶⁰ Athenaeus, x, 453; Freeman: *op. cit.*, pp. 88 ff.

¹⁶¹ Protagoras, 326; Freeman: *op. cit.*, pp. 85 ff.

if one may trust the oft-told story that Alcibiades beat a schoolmaster for not having a copy of Homer in his school.¹⁶² Xenophon makes Niceratus say that his father wanted to make him a good man, and so compelled him to learn the whole of Homer by heart—which, he assures us, he still can recite.¹⁶³ The fact that Athenian prisoners at Syracuse reputedly gained their liberty by reciting passages from Euripides suggests thorough memorizing in the days of their youth.¹⁶⁴

Much that has been said of the music school is true of the palaestra, which was also a private institution, yet subject to public regulation.¹⁶⁵ The palastras mentioned in *The Polity of the Athenians* were apparently private wrestling places or gymnasia, built by the rich for the sake of greater privacy, and not institutions for the physical education of boys.¹⁶⁶ Of fees, little is known, but Athenaeus¹⁶⁷ mentions a fee of one *mina*, about four pounds, which presumably covered the entire course of instruction.

While there is a difference of opinion about the matter, some holding that palaestra and music school were probably distinct, and that the training of the one preceded that of the other, the weight of evidence seems to favor the conclusion that both branches of education began at the same age, about the seventh year, and continued, at least for those who wished and could afford it, till about fifteen.¹⁶⁸ Just how the day was divided is uncertain. Activities of the music school may have occupied the morning hours and physical exercises the afternoon.¹⁶⁹ Perhaps there was no hard and fast rule; the order for some pupils may have been reversed. This would occasion no difficulty since there was much individual instruction in the music school, and few pupils appear to have been present at a time. Artistic remains show some coming from their physical exercises to the music master; others will go to the palaestra after they have had their turn with the citharist. In Lucian's portrayal of the school day's routine (of later date), early rising is followed by a visit to the music school, the palaestra, and then music school again after a bath and a light meal.¹⁷⁰

Palaestra and music school may have been in the same place; if not, they were conveniently enough located so that both could be attended by the same pupils. In small villages and towns the palaestra was probably nothing more

¹⁶² Plutarch: *Alcibiades*, 7.

¹⁶³ *Symposium*, III, 5.

¹⁶⁴ Plutarch: *Nicias*, 29.

¹⁶⁵ Aeschines: *Timarchus*, 9-11.

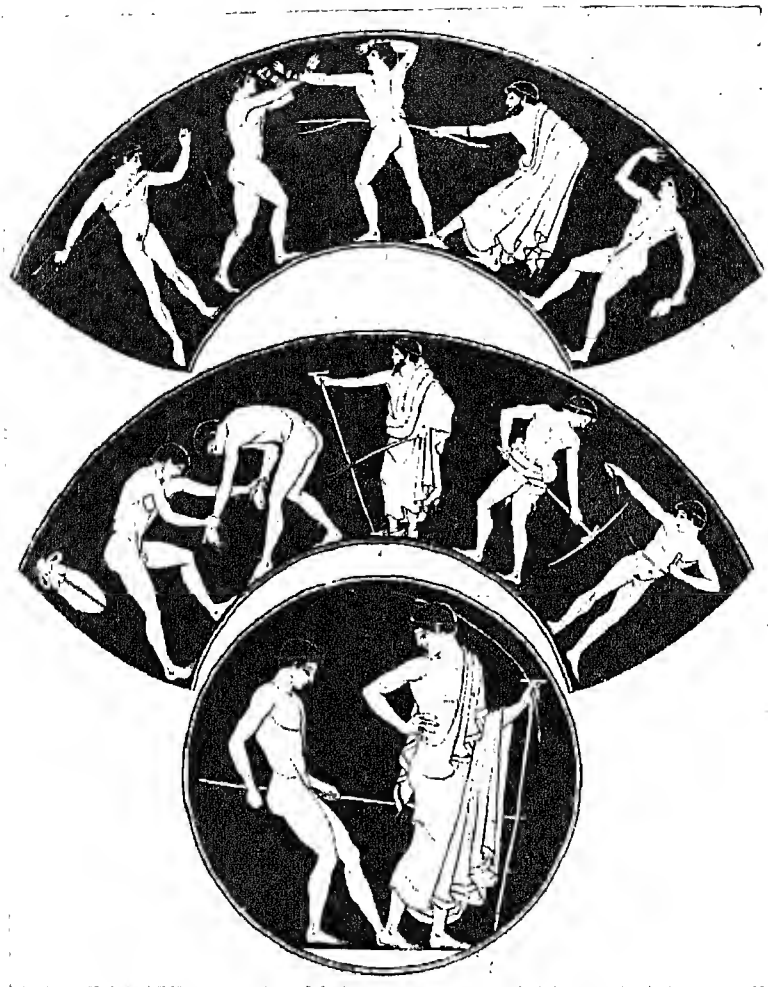
¹⁶⁶ Xenophon: *Athenians*, II, 10; Forbes: *op. cit.*, pp. 80 f.

¹⁶⁷ Bk. XIII, 584.

¹⁶⁸ Cf. Grasberger: *op. cit.*, I, 239 ff.; Freeman: *op. cit.*, pp. 50 ff.; Forbes: *op. cit.*, pp. 60 f.; Mahaffy: *Old Greek Education*, p. 25; Wilkins: *National Education in Greece*, p. 65; Blümner: *op. cit.*, p. 115.

¹⁶⁹ Richter: *op. cit.*, p. 29; Whibley: *op. cit.*, p. 506.

¹⁷⁰ *Amores*, 44-5.



THE PALAESTRA

(F. W. E. Gerhard, *Auserlesene Vasenbilder*, iv, Pl. cclxxi)

than a playground, where the boys turned naturally to some contest or other as a release from the restraints imposed by intellectual pursuits. Aelian pictures boys enjoying a tug of war on the playground after school. In larger centers, in later years at least, the palaestra became a more elaborate, systematic institution. It was generally an enclosed space,¹⁷¹ having a sanded floor, open to air and sunlight, and located, as occasion permitted, near running water, which furnished natural bathing and swimming facilities. At Athens, where such nat-

¹⁷¹ Girard: *L'Éducation Athénienne*, p. 186.

ural bathing facilities were not numerous, artificial facilities had to be provided.¹⁷² When fully developed, the palaestra furnished privacy, protection against bad weather, a dressing room, storage space for oil, sand, specially constructed baths, perhaps also a place for dust with which to sprinkle and rub the body, and a dromos or racecourse, though some lacked this feature.¹⁷³ Equipment included pickaxes for loosening the ground for jumping, halteres to facilitate the jump and for use in connection with "gesticulation," discs and javelins for boys of various ages, strigils for scraping the body, chains or tapes for measuring the jump, thongs for binding the hands in boxing, and caps to protect the head and ears.¹⁷⁴ Statues of Hermes and Heracles furnished decoration, betokening the constant association of religion and Greek games. Hermes, legendary founder of systematic gymnastic training and the palaestra itself—though another account credited Theseus with initiating scientific wrestling and systematic teaching of it—naturally occupied a central place.¹⁷⁵

The paidotribe (paidotribes, boy rubber), the proprietor of the palaestra, directed the exercises and games of the boys. He was assisted by flute-players, since many exercises were conducted with music. Of his capacities little is known in the early period. Some were doubtless moderately or poorly qualified; others had a great reputation. The palaestras of Taureas, Timcas, and Siburtios were probably widely known. Some parents, it seems, thought more about the selection of a physical trainer than they did about a teacher for the mind.¹⁷⁶ According to Philostratos, the paidotribe's function was to "show all kinds of wrestling holds that exist, specifying the opportune moment, the degree of effort, and the extent of the movement; further, how one is to defend himself, or how one can overcome the defense of the other. . . ." But as for the purging of humors and other scientific matters, "The paidotribe will either not understand that at all, or, if he should have some knowledge, he will apply it improperly for boys. . . ." ¹⁷⁷ He was then, according to Philostratos, much less informed and skilled than the gymnast; but we may think of him, at best, as one who was something of a specialist, understanding different physical constitutions and the exercises suited to them; how to develop beauty, strength, health, and the power of will; perhaps acquainted with dietary matters to some extent; and above all, a man to whom parents would entrust their boys for that training which was to make their bodies serve their minds, that they might not through physical weakness act like cowards in war or at any other time.¹⁷⁸

¹⁷² Richter: *op. cit.*, p. 28.

¹⁷³ Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 56; Grasberger: *op. cit.*, I, 245 f.

¹⁷⁴ Freeman: *op. cit.*, pp. 130 ff.

¹⁷⁵ Pausanias, I, 39, 3; Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 16.

¹⁷⁶ Plato: *Protagoras*, 313.

¹⁷⁷ Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 14; Grasberger: *op. cit.*, I, 263 f.

¹⁷⁸ Plato: *Protagoras*, 326.

Since the paidotribe received boys who were quite young, and kept some at least till about fifteen, one infers that the exercises were graded somewhat to suit the development of the boys. Two general groups are distinguishable, "boys" seven to eleven, and "youths" eleven to fifteen years of age. On festival days, such as the Hermaca, however, the boys and youths were allowed to come together.¹⁷⁹ Aristotle says it is "an admitted principle, that gymnastic exercises should be employed in education, and that for children they should be of a lighter kind, avoiding severe diet or painful toil, lest the growth of the body be impaired."¹⁸⁰ He makes it clear, however, that the "admitted principle" was often infringed by the premature training of boys for the Olympian Games. Carriage and posture, with other matters pertaining to deportment becoming gentlemen's sons, were doubtless stressed in the palaestra. "Gesticulation," movements of the body, chiefly the upper extremities, designed as preliminary training for dancing and other gymnastic contests, particularly boxing, had a prominent place. Leapfrog, climbing a rope, tug of war, playing various games with balls, running, and jumping must also have belonged to the program for small boys. Even the javelin and discus, scaled down for youngsters, may have been used to some extent.¹⁸¹ Running, jumping, wrestling, throwing the javelin and discus were the chief exercises of the palaestra.¹⁸² The more strenuous exercises—wrestling, boxing, and pancration—made up the heavier parts of the program, at least for those who would enter public competitions. Boxing for boys was established at Olympia in 616 B.C.¹⁸³ While little can be said of swimming, it was commonly practiced, and may have been taught generally.¹⁸⁴ That it was regarded as necessary for general education, is suggested by the proverbial description of an uncultured person as one who knew neither swimming nor his letters. Though swimming may not have been as universal as the proverb suggests,¹⁸⁵ certain references¹⁸⁶ seem to indicate that its use was regarded as a commonplace. When artificial bathing facilities had become general, in private houses as well as in public institutions, swimming baths were commonly associated with them. Even women, who had no part in the life of the palaestra and gymnasium, are represented in swimming and shower baths on vase paintings of the late sixth century B.C. Bathing establishments naturally varied extensively in regard to facilities, depending on time and location, and whether

¹⁷⁹ Grasberger: *op. cit.*, I, 256; Plato: *Lysis*, 206; *Charmides*, 154.

¹⁸⁰ *Politica*, viii, 4. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press).

¹⁸¹ Freeman: *op. cit.*, p. 130; Richter: *op. cit.*, p. 29.

¹⁸² Grasberger: *op. cit.*, I, 298-383; Becker: *op. cit.*, pp. 85 f., 87 f.

¹⁸³ Pausanias, v, 8, 9.

¹⁸⁴ Grasberger: *op. cit.*, I, 376 ff.

¹⁸⁵ Thomas: *Swimming*, p. 88.

¹⁸⁶ *Herodotus*, vii, 176; viii, 89; *Thucydides*, iv, 25; vii, 25; Plato: *Republic*, v, 453; Pausanias, ii, 35, 1; iv, 35, 9.

constructed prior to the advent of Roman influence. Polybius speaks of differentiation of facilities for the "more genteel people" so that they might bathe privately.¹⁸⁷

Though dancing has been considered a part of elementary schoolwork by some, the opposite conclusion has been reached by many others. "In the regular system of education at Athens," says Freeman, "the boys learned only to sing and play, not to dance."¹⁸⁸ The fact that Socrates took instruction in dancing at an advanced age implies that it was not a part of general education in his youth. For a select group of boys, however, dancing would become an important part of education, if they were chosen by agents of the choregus of any of the ten tribes to be trained at his expense for the public festivals in which cyclic dancing had a prominent place. During the Transition and thereafter new dances came from abroad; likewise Greek dancing went abroad to influence others.¹⁸⁹

At the regular school festivals, such as the *Musea* and *Hermaea*, pertaining to the music school and the *palaestra* respectively, there may have been some dancing, since festivals, religious celebrations, and dancing were generally closely associated by the Greeks. At the *Hermaea*, after religious rites, we may fancy the boys in festive dress, devoting themselves happily to the holiday, playing their favorite games. Thus we may leave them, just as Socrates is said to have found them as he entered a newly erected *palaestra* and engaged Lysis in conversation: "Upon entering we found that the boys had just been sacrificing; and this part of the festival was nearly at an end. They were all in their white array, and games at dice were going on among them. Most of them were in the outer court amusing themselves; but some were in a corner of the *Apodyterium* playing at odd and even with a number of dice, which they took out of little wicker baskets."¹⁹⁰

The gymnasium From about fourteen or sixteen years of age, the training of music school and *palaestra* having come to an end, the sons of well-to-do Athenian families enjoyed a greater degree of liberty to the end of the eighteenth year. In any case this period had a definite termination, when systematic ephêbic training had been established for the nineteenth and twentieth years.¹⁹¹ During this interval almost exclusive attention was given to

¹⁸⁷ Schleyer: *Bäder und Badeanstalten*, pp. 26 f.; cf. *infra*, pp. 311, 314, 649-53; Sears: "A Greek Bath," *Am. Jour. Archaeol.*, viii, 216-26; Polybius: *The Histories*, xxx, 29.

¹⁸⁸ *Op. cit.*, p. 147; cf. Graves: *History of Education*, i, 163; Gulick: *op. cit.*, p. 84; Blümner: *op. cit.*, p. 320; Whibley: *op. cit.*, p. 510; Lucian: *Of Pantomime*; Scott: *Dancing in All Ages*, pp. 34-77; Vuillier: *op. cit.*, pp. 4-31.

¹⁸⁹ Keller: "An Oriental Dance on an Attic Vase," *Bul. Fogg Museum of Art*, ix, 56 ff.; Kraemer: "A Greek Element in Egyptian Dancing," *Am. Jour. Archaeol.*, xxxv, 125-38.

¹⁹⁰ Plato: *Lysis*, 206. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press); Grasberger: *op. cit.*, i, 256.

¹⁹¹ *Infra*, pp. 317 f.

physical sports and exercises under special instructors at a public gymnasium. The poorer sort, though they may have managed to get some training at the palaestra and music school, were now compelled by economic circumstances to enter some remunerative occupation of the workaday world.¹⁹² They were free, of course, to go to the public gymnasium and to exercise there, but fees would be charged for special instruction.¹⁹³ Of course, youths who were fortunate enough to be selected by the gymnasiarch for the *lampadedromia* (torch race) and those chosen by the choregus for the cyclic dances, would have a certain period of free training at the expense of the leaders of the respective liturgies.¹⁹⁴ Considering the fees for special "coaching" and the hours of labor, it seems doubtful whether youth of this age group, who were compelled to work, could participate to any great extent in the training of the gymnasium. Since public gymnasia were created by the city-state, were supervised by the gymnasiarch, and could be visited by all citizens, they must be regarded as evidence of recognition of public responsibility for physical education. There was, however, no compulsion save that which may have derived from social approval or disapproval and the imminence of war, in which, in the course of time, every male must be prepared to take part.

To the time of Pericles there were at least two public gymnasia, the Academy and the Kynosarges, both said to have been built in the time of Solon. A third, the Lyceum, though it is called the oldest and credited by some to Solon's time, is by others believed to be of later date, perhaps the Periclean age.¹⁹⁵ All were situated outside the city. The Academy, on the River Cephissus, under the patronage of Athena, was for freeborn Athenian boys, as was also the Lyceum, sacred to Apollo, located to the east of the city on the Ilissus. The Kynosarges, a shrine of Heracles, under the brow of Lycabettus, was for some time devoted to the sons of Athenian fathers by foreign mothers.¹⁹⁶ This distinction seems to have fallen into disuse by the fifth century, however. Themistocles, whose mother was a foreigner, is said to have helped undermine the old custom by getting a number of full-blooded youths to go with him to the Kynosarges for exercise.¹⁹⁷ Socrates seems to have visited it without attracting any special attention. Other public gymnasia were added in the course of time: the Ptolemeion, named for its founder and located near the agora; the gymnasium of

¹⁹² *Infra*, p. 328.

¹⁹³ Freeman: *op. cit.*, p. 142.

¹⁹⁴ Whibley: *op. cit.*, p. 408.

¹⁹⁵ Krause: *Theagenes oder Wissenschaftliche Darstellung der Gymnastik, Agonistik und Festspiele der Hellenen*, p. 123; *Die Gymnastik und Agonistik der Hellenen*, 1, 90; Forbes: *op. cit.*, p. 83.

¹⁹⁶ Pausanias, 1, 19, 3; Petersen: *Das Gymnasium der Griechen nach Seiner Baulichen Einrichtung*, p. 16.

¹⁹⁷ Plutarch: *Themistocles*, 1.

Hermes; the Diogeneion, in the center of the city; and another built by Hadrian. Of these, the Diogeneion and the Ptolemeion were reserved for the ephebi.¹⁹⁸ Besides the public gymnasia there were others, built privately. The author of *The Polity of the Athenians* (c. 425 B.C.), who had scant sympathy with the rising tide of democracy, noted that the rich, aristocratic citizens had suffered an eclipse by the "people," who built themselves "palaestras, dressing-rooms, and bathing establishments" at public expense, of which the "mob gets the benefit . . . rather than the select few or the well-to-do." But he added, "Rich men have in some cases private gymnasia and baths with dressing-rooms. . . ." ¹⁹⁹

The training of the gymnasium (for those fifteen to eighteen years of age) continued the exercises of the palaestra in a more strenuous fashion and perfected them. But in addition to these, youth now attended to riding, driving, the torch race, the race in armor, and hunting—though the latter was less encouraged in Athens than at Sparta, especially after wild game had become scarce. For riding there were special academies and, of course, special fees, which made it a sport for those who could afford to pay.²⁰⁰ Rowing, swimming, and dancing in the public chorus were also a part of the education of many youths of this age. A knowledge of the laws was required, Plato ²⁰¹ says, but we hear nothing of systematic instruction.

Instruction in the gymnasium was given by paidotribes and gymnasts and their assistants.²⁰² The distinction between paidotribe and gymnast was, doubtless, the result of many years' development and a tendency to refinement of specialization, which was inevitable when professionalism had become deeply rooted in the athletic world. Many athletes took up physical training of youth as a profession, after their own career as contenders for prizes had come to an end. To term one's self a "gymnast" may have become a fad, when the name had once been introduced "shortly before Plato's time." ²⁰³ Both terms seem at first to have been used rather loosely. In the course of time, however, certain distinctions between them were clearly recognized: the paidotribe had care of general physical training; the gymnast was an expert who trained youth for particular gymnastic contests. By the time of Galen and Philostratos, it would appear that the gymnast had come to be regarded as a scientific trainer, one who knew the "art of the paidotribe," something of medicine, and was also competent to deal with many questions pertaining to diet and health. Of

¹⁹⁸ Pausanias, I, 2, 4; 17, 2; 18, 9; Dumont: *Essai sur l'Éphébie Attique*, I, 208.

¹⁹⁹ Athenians, II, 9-10.

²⁰⁰ Petersen: *op. cit.*, pp. 4 f.

²⁰¹ Protagoras, 326.

²⁰² Krause: *Theagenes*, pp. 234 ff.

²⁰³ Forbes: *op. cit.*, pp. 90 f.

course, as Philostratos pointed out, many gymnasts did not truly know, or wisely practice, this complete science of gymnastic.²⁰⁴

The gymnasiarch, the chief official of the gymnasium, had general charge of its exercises and discipline, and directed the festivals.²⁰⁵ He was one of those respected, wealthy citizens, appointed by each of the tribes to select and train runners to represent them in the torch races (hence also sometimes designated as *lampadarch*) and at such festivals as the Panathenaea and Hephaestea. Since all this must be done at his personal expense, and the cost for such training might be as much as twelve hundred drachmas, the performance of such a public service was possible only for men of wealth. *Xystarches*, *kosmetes*, *sophronistes*, and many other functionaries assisted in the work of the gymnasium in connection with later ephebic training.²⁰⁶ *Epistatai*, charged with supervision of the building and material equipment, had considerable responsibility, since a law prescribed that anyone who stole a cloak, oil cask, or any equipment worth more than ten drachmas from a gymnasium should be punished by death.²⁰⁷

Although there is no precise, contemporary description of a public gymnasium at Athens, fragmentary references in Greek authors and the detailed picture drawn by Vitruvius, at the time of Augustus, have been used to reconstruct a plan of this Greek institution.²⁰⁸ Many points are doubtful, of course, and different interpretations are given of Vitruvius' text. Each gymnasium, moreover, must have had certain peculiarities, as did those of Pergamos and Ephesos. The gymnasium at Eretria, dating not earlier than the first century B.C., was "the simplest form" and had just the "bare essentials"—"an open space for exercising and porches or rooms about it for retiring."²⁰⁹ Though many of the various facilities described by Vitruvius are known to have existed in Plato's day, the Roman's arrangement of them may follow some model (Naples, perhaps) that he had in mind. His picture, doubtless, is complete rather than the actual gymnasium of five hundred years before.²¹⁰ Following the reproduction,²¹¹ certain features may be noted. The entire space, 360,000 square feet, is enclosed

²⁰⁴ Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 14, 54; Grasberger: *op. cit.*, 1, 265.

²⁰⁵ Petersen: *op. cit.*, p. 15.

²⁰⁶ *Infra*, pp. 321 ff.

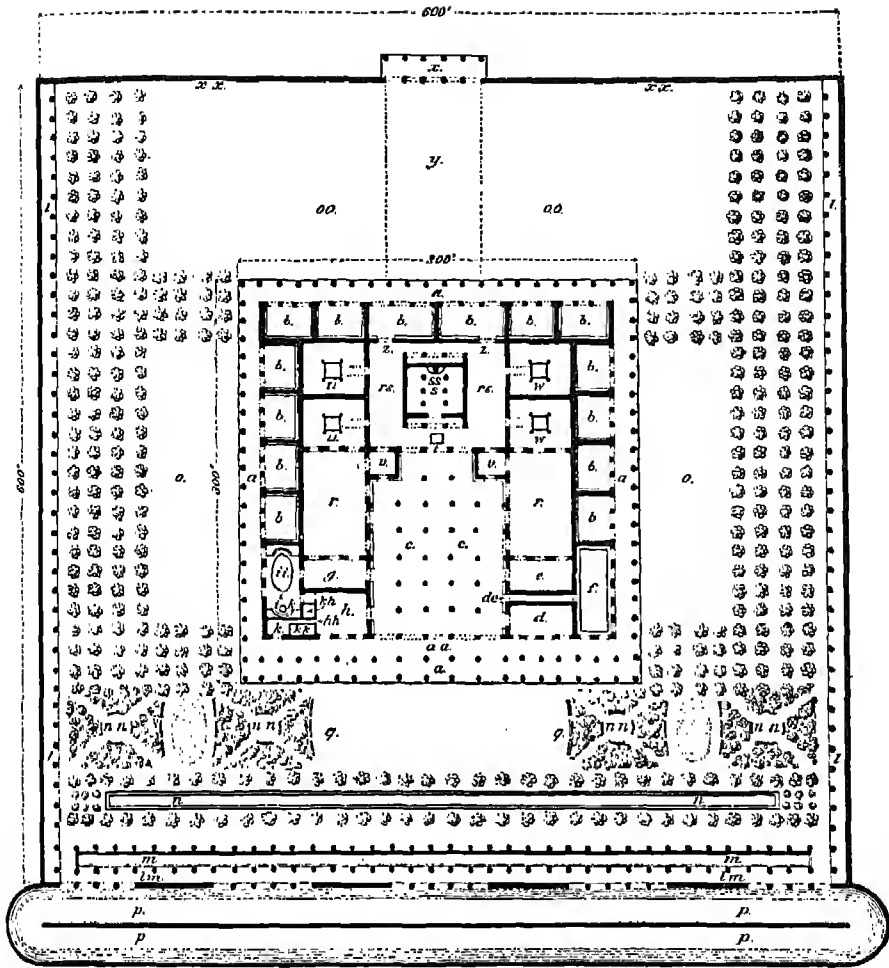
²⁰⁷ Demosthenes: *Timocrates*, 736.

²⁰⁸ Petersen: *op. cit.*, pp. 1-56; Krause: *Gymnastik*, 1, 80-131; Baumeister: *Denkmäler*, 1, 609-14; Becker: *op. cit.*, pp. 293-309; Gardiner: *Greek Athletic Sports and Festivals*, pp. 467-500.

²⁰⁹ Richardson: "The Gymnasium at Eretria," *Am. Jour. Archaeol. and Fine Arts*, XI, 154 ff.

²¹⁰ Krause: *Gymnastik*, 1, 93 f., 98 f.; Gardiner, *op. cit.*, p. 489, holds that the gymnasia daily frequented by Athenians probably "resembled the Vitruvian type more closely than did the gymnasia of Olympia and Delphi. . . ."

²¹¹ P. 313.



PLAN OF A GYMNASIUM

(C. Petersen, *Das Gymnasium der Griechen*, p. 57)

on three sides by walls 600 feet in length; on the fourth is a stadium (p)²¹² so arranged as to permit numerous spectators to witness athletic events. From the entrance in the north wall (x x) a passageway (y) leads to the heart of the gymnasium, the palaestra—a square structure, in this instance, the entire circumference of which is 1,200 feet. Three single porches are formed by the peristyles on the north, east, and west sides (a); the fourth, a double porch (aa), furnishing protection against stormy weather, is on the south. Within

²¹² This deviates from the gymnasia at Athens which had no stadia attached to them.—Petersen: *op. cit.*, p. 20.

the single porches are numerous *exedrae* (b), comfortable, roomy halls where philosophers and their hearers may gather for discourse. Centrally located, facing the double porch on the south, is the spacious *ephebeum* or *apodyterium* (c c), the chief exercise hall for wrestling and the pancration. Here the youths undress and put their clothing into bags or under coarse coverings for protection from dust. Around the walls are seats for spectators. Two small corner rooms (v) in the *apodyterium* may be for the safekeeping of gymnasium equipment. To the right and left of the *apodyterium* are two commodious, open inner courts (r) which may have served for ball-play, and as an aid to better illumination of interior spaces. Just on the right of the entrance to the *ephebeum* is the *koryceum* (d), named, perhaps, from the large bag or ball stuffed with meal, seeds, or sand, which hung from the ceiling and served boxers and pancratiasts in developing quickness of hand and firmness of footing.²¹³ According to another view, however, the room may have been used for bags, sacks, or baskets, in which food and drink were brought for refreshment after exercise.²¹⁴ Next to the *koryceum* is a passage (dc) leading from the *ephebeum* to the cold bath or *lutron* (f) with a swimming tank.²¹⁵ Beyond the passage is the *konisterium* (e) where various kinds of fine sand or dust are kept for sprinkling the body.²¹⁶ On the left of the *ephebeum* is the oil storage or *elaiothesium* (g); and adjoining it conveniently the *tepidarium* or *aleipterion* (h), a heated room where, before or after exercise, one may be massaged and rubbed with oil by the *aleiptes*. From the *aleipterion* a passage (h h) leads to a room (k) where fuel is perhaps received, and which servants can enter directly from outside. The space (kk) may be for storing fuel for the furnace (kh), which heats water. Another passage leads from the *aleipterion* past the heater to a hot-air bath or *laconicum* (i k), the sweat bath (i), and warm swimming tank or tubs (ii).

In keeping with the religious associations of sports, each great gymnasium at Athens recognized a particular deity to whom it was sacred, and around whose shrine the gymnasium itself grew up. The innermost room, a sanctuary (s), has a statue of the deity (ss), and at the entrance an altar (t) for sacrifices. Around the temple are sacred precincts (rs) that separate it from other rooms (u) and (w)—living quarters for those employed in the baths, and for those who served in the temple, with the necessary kitchens, equipment, and storage space. From the sacred precincts one may pass (z) to the *exedrae* (b) and thence through the porch to large open spaces (oo), which were probably used for dangerous

²¹³ Cf. Krause: *Gymnastik*, I, 103; Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 57; Gardiner: *op. cit.*, p. 492.

²¹⁴ Petersen: *op. cit.*, pp. 37 ff.

²¹⁵ Lucian: *Lexiphanes*, 4-5; cf. *Stabian baths, Pompeii*, *infra*, p. 653.

²¹⁶ Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 56.

sports such as hurling the discus and javelin, shooting the bow, and also for military maneuvers on foot and horse. The smaller open spaces to right and left of the palaestra (o) were probably used for jumping, ball games (usually carried on out of doors by the Greeks), tug of war, and other favorite games. South of the palaestra is an open, sand-covered, rectangular space (q) probably devoted to wrestling, pancration, and possibly boxing. Flanking this on both sides are pleasant walks, hedged in by grassplots, plane trees, olives, and elms (n n). Near to these to the south is the open-air racecourse (n) surrounded by trees. Parallel to it, just inside the southern extremity of the gymnasium, is a double peristyle (lm) that connects the east and west colonnades and protects the twelve-foot wide xystos (m), depressed one and a half feet below the surrounding area, where athletes exercise under cover in inclement weather. Along the east and west walls, single peristyles (l) face pleasant gardens set with trees.²¹⁷

Ephebic training A fourth phase of education for sons of Athenian parents began at the end of the eighteenth year and continued through the twentieth. The origin of this institution, the Ephebic College, has been a subject of dispute. Till recently it was credited with great antiquity. Girard²¹⁸ assigned it to the fifth century. Dumont²¹⁹ held that the ephebic institution lasted for eight hundred years, but recognized that no history existed of the early centuries. Mahaffy²²⁰ had a fairly clear idea of the contrast between early informal practices and the later official system, though later researches have made the distinction much clearer.

The generally accepted view now is that the systematic institution of ephebic training arose in the late fourth century, though there were certain earlier practices similar to those of the later Ephebic College. These may have been the basis upon which more systematic training evolved. There is some ground for the evolutionary view. It was, indeed, an ancient custom for the state to educate the sons of those citizens who died in war, to present them publicly, and send "them to their several duties" in full armor clad.²²¹ If, however, systematic ephebic training, as later organized, had been in existence, special care for war orphans would have been superfluous. It is clear, moreover, that when definite provision had been made for general ephebic training, the old custom in respect to orphans appears to have fallen into disuse.²²² The very lack of recognition of the existence of such an institution as the Ephebic College on the part of Plato, Xenophon, Isocrates, and others suggests that it may not have

²¹⁷ Petersen: *op. cit.*, pp. 54 ff.

²¹⁸ *Op. cit.*, pp. 271-309; Freeman: *op. cit.*, pp. 210-20.

²¹⁹ *Op. cit.*, I, 33 f.

²²⁰ *Old Greek Education*, pp. 73 ff.

²²¹ Thucydides, II, 46; Plato: *Menexenus*, 248-9.

²²² Bryant: *op. cit.*, *loc. cit.*, XVIII, 88.

existed in their day. The argument *ex silentio* has been carefully reviewed and sifted.²²³ Silence is generally not very impressive evidence, but it may be significant under certain circumstances. In this case it is all but universal, and men who might be expected to praise such an institution, or recommend it as a model, or at least as a partial fulfillment of their ideal, do not in any way indicate knowledge of its existence. Xenophon, in fact, represents Socrates as saying that "... because military training is not publicly recognised by the state, you must not make that an excuse for being a whit less careful in attending to it yourself."²²⁴ This implies that military training, to Socrates' day at least, was an individual responsibility, and harmonizes with the fact that orphans were made an exception by the state. Thucydides²²⁵ represents Pericles as saying that the Athenians, in contrast to their enemies, prefer not to train themselves laboriously for war. Isocrates' remarks, too, imply the nonexistence of systematic training: "... although we seek to rule over all men, we are not willing to take the field ourselves, and although we undertake to wage war upon, one might almost say, the whole world, we do not train ourselves for war but employ instead vagabonds, deserters, and fugitives who have thronged together here in consequence of other misdemeanours, who, whenever others offer them higher pay, will follow their leadership against us."²²⁶

Besides the training of orphans, there are also early references to the service of young men as *peripoloi* (patrols), but the service is not known to have been definitely limited to a certain age group; there is no proof of its being systematic military and gymnastic training; it was not compulsory; and it may not have been viewed as a regular element of a citizen's education. Another practice, sometimes pointed to as evidence of the antiquity of ephebic training, is the soldier's oath of allegiance, referred to by Plutarch²²⁷ in the time of Alcibiades. But the oath, even granting its great antiquity, would not prove the existence of systematic ephebic training. In fact, the treatment of orphans, the reference to *peripoloi* service, and the soldier's oath seem to conform with a pattern of individual initiative rather than a paternalistic state régime of compulsory, military training. These features were the forerunners of systematic training in the Ephebic College; they may, indeed, have suggested it when changes in the political and military life of Athens made a modification in education seem desirable to many.

²²³ Wilamowitz-Moellendorf: *Aristoteles und Athen*, I, 191 ff.; Busolt-Swoboda: *op. cit.*, I, 577; Bryant: *op. cit.*, loc. cit., xviii, 84 f.; Forbes: *op. cit.*, pp. 113 ff.

²²⁴ *Memorabilia*, III, 12, 5.

²²⁵ Bk. II, 39.

²²⁶ Isocrates: *On the Peace*, 44. Trans. by G. Norlin, The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

²²⁷ *Alcibiades*, 15.

Certain other facts, apart from these traditional usages, bear upon the origin of systematic military training. Athens, from a military standpoint, had declined markedly by the latter half of the fourth century. The "Social War" which ended in defeat (355 B.C.) proved she could not force her sway upon her confederates. Many became alarmed. Orators condemned her decadence. A movement for reform arose. Philosophers recommended ways and means whereby to strengthen the city by systematic training for defense. Particularly, after the battle of Chaeronea (338 B.C.) and the death of Philip, Athens was moved to take practical steps, paternalistic in character, designed to rehabilitate her military power. It has been persuasively argued that Plato²²⁸ fathered the Ephebic College. Xenophon's suggestions²²⁹ may also have had some effect. Taking all evidence into consideration, Wilamowitz concluded that it was "the demands of the Socratics, which the demagogues now sought to carry out in their fashion."²³⁰ Whether the propaganda for such an innovation was so influential or not, definite legalization of systematic training was attempted that was to prepare citizens for military service and rectify the situation which Isocrates²³¹ so scathingly criticized. The law establishing the ephebic system has been generally attributed to Epicrates, a wealthy citizen who may also have given something to support the institution. The earliest recovered inscription regarding the ephebi is from 334-333 B.C.²³² and concerns youths who were in their second year of training. Forbes believes the sum total of "evidence . . . is enough to convince even the most prejudiced person that there was no ephebia prior to 335."²³³

The establishment of systematic, compulsory ephebic training, provided by the state, marked the termination of reliance upon strength and loyalty developed through individual freedom, initiative, and choice. What life in a corrupt, selfish society no longer could confer, was now to be attempted by state officials. What Athenians had boasted did not exist among them; what, in better days, they had condemned in Lacedaemon²³⁴—they now imitated in some degree. The ephebic institution represents an effort to produce by a paternalistic system of education the strength and virtues of military efficiency. As an inscription stated, the people, being concerned for the training of the ephebi, ". . . enjoined by law that they should become acquainted with the

²²⁸ *Laws*, vi, 760.

²²⁹ *The Cavalry Commander; On the Art of Horsemanship; Cyropaedia*, i, 2, 4; *Memorabilia*, iii, 5, 21-8.

²³⁰ Wilamowitz-Moellendorff: *op. cit.*, i, 194.

²³¹ *On the Peace*, 44.

²³² Wilamowitz-Moellendorff: *op. cit.*, i, 193 f.; Busolt-Swoboda: *op. cit.*, ii, 1189; Bryant: *op. cit.*, loc. cit., xviii, 86.

²³³ *Op. cit.*, p. 119.

²³⁴ Freeman: *op. cit.*, p. 220.

land, the fortresses, and the borders of Attica, and . . . perform in arms the exercises appertaining to war. . . ." ²³⁵

Entrance to citizenship and ephobic training is described by Aristotle. The franchise, in his time, was open to all sons born of Athenian parents. At the age of eighteen they were enrolled among the demesmen, who voted on oath as to the candidates' age and parentage. If found younger than the law required, they were sent back to the boys; if parentage was not satisfactory, accusations were brought, the accused having the right to appeal to the court for a decision. If the court decided against a boy, he was sold as a slave; otherwise, he must be admitted to enrolment without further obstacle. When youths had passed these examinations, their fathers, assembled by tribes, nominated three men, over forty years old and most fit to have charge of the ephebi. From the nominees the Assembly chose one from each tribe to act as guardians to superintend everything, in conjunction with a director selected from the Athenian citizenry at large. In their charge the youths visited the temples, and then went to the Piræus and garrisoned Munychia and Acte. Two trainers and assistants were named also by the Assembly to instruct them in fighting in heavy armor, the use of bow, javelin, and catapult. Guardians received a drachma, and the youths four obols each, their allowance being paid to the guardian, who purchased necessary provisions for the common mess. After thus training for a year, the ephebi had a military parade, and were armed by the city with shield and spear at a public ceremony in the theater. So equipped, the youth patrolled the country and occupied certain fortresses, being for the time exempted, with a few exceptions, from taxes and court actions. After these two years of training the young men assumed their places in the ranks of citizens. ²³⁶

A knowledge of Athenian law seems to have been required of those who were registered as citizens. When youth have done with schoolmasters, Plato says, "the state again compels them to learn the laws"; ²³⁷ and Aeschines says that "as soon as the young man has been registered in the list of citizens, and knows the laws of the state, . . ." ²³⁸ the lawgiver speaks to him directly rather than through another. Since we hear nothing of systematic instruction, acquaintance with laws may have been acquired informally, and by actual visitation of the courts.

The oath of allegiance, often credited to the time of Solon, which before the organization of ephobic training had been taken at the age of eighteen, was now administered at the beginning of the second year of training, at the time

²³⁵ Forbes: *op. cit.*, p. 127.

²³⁶ Aristotle: *Ath. Resp.*, 42.

²³⁷ Protagoras, 326.

²³⁸ Timarchus, 18. *The Speeches of Aeschines*, trans. by C. D. Adams. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

when the city gave arms to the cadet who was about to go out to patrol the country and occupy the fortresses. The pledges, taken on oath, make clear the association of piety, patriotism, and property: "I will never disgrace these sacred arms, nor desert my companion in the ranks, but will fight for the temples and public property, alone and with others. I will leave my fatherland, not less, but greater and better, than I received it. I will obey those who may at any time be in power, and both the existing laws and those which the people may unanimously make, and, if any one seeks to annul the laws or does not obey them, I will not allow him, but will defend them both alone and with others. I will honor the religion of my fatherland; let the gods, Agrauios, Enyalios, Ares, Zeus, Thallo, Auxo, and Hegemone bear witness."²³⁹

While too little is known of it to permit satisfactory generalization, the discipline of youth in the gymnasium and while on preliminary military service must have varied from time to time, depending upon the officers in charge of them. It was supposed to be strict; but while we hear of "slaves" and "a measureless amount of ills" at the hands of gymnasiarchs,²⁴⁰ there is some indication of laxity or, at least, exceptions to the general rule. Demosthenes' account of an Athenian youth's experiences while on duty with the patrols (*peripoloi*) somewhat prior to the establishment of compulsory ephebic training, is illuminating. Abusive language, assaults, drunkenness, and other disorderly acts on the part of Canon's sons, when reported to the general, were only rebuked "with stern words"; which, far from being effective in restraining them, were followed that very night by a repetition of their outrageous conduct.²⁴¹

That some degree of youth organization developed is suggested by the ephebic officers. In the time of Hadrian, when the ephebi were divided into groups, each division (*systemna*) had a leader from its own number, the *systemmatarches*. There were also from time to time, ephebic gymnasiarchs, chosen perhaps from the youths themselves, or from the teachers whose duty was to provide oil and other things necessary for the physical exercises of the ephebi. Other indications of youth organization are found under the Empire, when the college group was patterned upon the larger society outside—the student-citizens having their officials, such as archons, generals, *astynomes*, *thesmothetae*, heralds, chosen from the "best" families—the rich, the prominent.²⁴²

The exercises of the ephebic organization were physical, military, religious, and, in later times especially, intellectual. Mere mention of officials of the col-

²³⁹ Pollux, viii, 105; Grasberger: *op. cit.*, iii, 29 f.; Dumont: *op. cit.*, i, 9 f.; Taylor: "The Athenian Ephebic Oath," *Class. Jour.*, xiii, 499.

²⁴⁰ Plato: *Axiochus*, 8.

²⁴¹ Demosthenes: *Against Conon*, 3-5.

²⁴² Dumont: *op. cit.*, i, 220 ff., 231 ff., 306 ff.

lege reveals its devotion to physical culture and specifically military exercises. These included the maneuvers of fighting in armor, throwing the javelin, archery, the use of the sling, catapult, and *kestrosphendone*,²⁴³ marches, running in various forms, wrestling, boxing, swimming, rowing, riding, driving the chariot, and the *pancratation*.²⁴⁴ The *ephebi* had contests of their own and received prizes; they competed also in the public games, although it is seldom possible to identify the winners from the College.²⁴⁵ In the third century of the Christian era, gymnastic contests of the same sort were still carried on, but certain military exercises had disappeared.²⁴⁶

It is certain that the intellectual pursuits pertaining to a liberal education formed a part of the education of the *ephebi*; but it is impossible to distinguish their intellectual activities from the studies pursued by others who were not members of the *Ephebic College*.²⁴⁷ Plutarch²⁴⁸ names letters, geometry, rhetoric, and music as the studies of youth at Athens. "Letters," a broad term, included a wide range of studies: grammar, language, and philosophy. Youth attended lectures of the *Academics*, *Stoics*, *Peripatetics*, and other philosophers.

Considering the close association of patriotism, religion, and athletic festivals, it is not surprising that the members of the *Ephebic College* devoted considerable time to religious ceremonials. Religion, piety toward the gods, and defense of the temples were a part of civic duty. Throughout the year the life of the *ephebi* reflected this religious character as they participated in numerous celebrations. Even when the advancement of critical philosophy and other influences had combined to undermine ancient religious beliefs and practices, youths went through with ancient forms punctiliously, and even added new ones. Pre-eminent among these were the great public *Eleusinian* and *Dionysian* festivals; celebrations in honor of the great military achievements of their forefathers at *Marathon*, *Munychia*, *Salamis*, and *Plataea*; the *Epitaphia*, celebrated as a great Memorial Day in honor of all warrior dead; the *Theseia*, in honor of the Athenian hero. Other ceremonial occasions were peculiar to the college itself: exercises at entering and leaving; festivals in honor of *Artemis Agrotere*, *Castor and Pollux*, the *Diogeneia*, the *Disoteria*, and the *Ptolemaia*. These festivals continued to be honored under the Empire, but with diminished importance. In addition, Roman festivals, such as the *Germania*, *Philadelphia*, *Adriania*, the *Antonia*, and several others were honored. Cyclic dances and athletic contests, such as the *stade-race*, *double stade-*

²⁴³ Polybius, xxvii, 11; Livy, xlii, 65.

²⁴⁴ Grasberger: *op. cit.*, iii, 92 ff.

²⁴⁵ Dumont: *op. cit.*, i, 214 f.

²⁴⁶ *Ibid.*, i, 236 f.

²⁴⁷ *Ibid.*, i, 240-8; Grasberger: *op. cit.*, iii, 334-462.

²⁴⁸ *Symposiasts*, ix, 1.

race, torch races, boat races, wrestling, pancration, and fighting in armor, in which the ephebi demonstrated the prowess gained by their training, played a prominent rôle in these religious celebrations.²⁴⁹

General relations of the ephebi to the state were in charge of the Senate, the Court of Areopagus, the Board of Generals (*strategoi*), and the gymnasiarchs. While military training was stressed, the relation of the generals to the work of the college was particularly close, certain activities of the ephebi being associated with the *strategoi* of special branches of the military service—the navy, the heavy-armed infantry, and the cavalry. More directly the administration of the college was in the hands of the *kosmetes* (director or president) and the *sophronistai*, one chosen from each tribe.²⁵⁰ The latter, “moderators” or “discipline masters,” appear to have had everything under their care, but were themselves subject to the authority of the Senate and *kosmetes*. Besides supervision of morals and instruction, each had to purchase supplies for the common mess.²⁵¹ Though the duty of looking after everything would seem to have been onerous, there were compensations, for the *sophronistes* was paid by the state and honored by the tribe if he performed his duties with faithfulness and energy. Not long after systematic ephebic training had been established, the number of ephebi became greatly reduced and the need for a *sophronistes* from each tribe disappeared. The office was discontinued, but was reintroduced in the reign of Hadrian, and continued to function till the college ceased to be.

The *kosmetes*, the head of the institution, was a magistrate elected from the “general body of Athenians,” subject to a careful scrutiny to test his fitness for the office.²⁵² He held the position for one year and gave an account of his service on leaving office. Though no salary is mentioned, the *kosmetes* was commonly honored by the state and the ephebi themselves at the end of his service. Since he was of a prominent family,²⁵³ salary would be of little moment compared with the honor. His duties were numerous; in fact not a single act was performed by the ephebi without his being associated with it. The *kosmetes* had general charge of their intellectual and physical exercise, preserved order, superintended health and morals, led public parades to the Piræus and to other fortresses, and presided at religious festivals and at the presentation of the ephebi at the theater. At times he was particularly interested in furthering physical and military exercises. Shortly before the end of the second century B.C., the *kosmetes* was permitted to choose his staff. Unlike the *sophronis-*

²⁴⁹ Dumont: *op. cit.*, I, 260–305.

²⁵⁰ *Ibid.*, I, 165–206; Grasberger: *op. cit.*, III, 462–85; Forbes: *op. cit.*, pp. 141 ff.

²⁵¹ Aristotle: *Ath. Resp.*, 42.

²⁵² *Ibid.*; Dumont: *op. cit.*, I, 166.

²⁵³ Dumont: *op. cit.*, I, 170 f.

tai, who ceased to function when the college shrank to a mere shadow of its earlier self, the *kosmetes* continued throughout its entire existence.²⁵⁴

Eight additional functionaries of the college are named prior to the Empire: *paidotribes*, *hoplomachos*, *akontistes*, *toxotes*, *aphetes* and *catapultaphetes*, *grammateus*, and *hyperetes*. Sixteen other new titles appear in the first century, a large number of them being assistants to the officials already named.²⁵⁵ To the various masters, regardless of specialty, general terms were often applied, *didaskaloi* or *paideutai* (teachers, educators).²⁵⁶

While the *kosmetes* was concerned with the general direction of the college and with its relations to the state, the *paidotribes*, not to be confused with the trainer of a boys' palaestra, had specific charge of its internal affairs. His position was superior to theirs. Though in the day of Aristotle there were two *paidotribes* in the Ephêbic College, the number decreased soon to one; assistants (*hypopaidotribai*) were appointed, however, in case of necessity, in the first century B.C.²⁵⁷ While the list of known *paidotribes* is brief, it is certain that, unlike the *kosmetes*, they served for many years and were reappointed. Two of them together, Ariston and Abaschantos, directed the college for nearly a century. At the beginning of the Empire, it became customary to appoint the *paidotribe* for life.²⁵⁸

The military character of the college at its beginning is reflected in the prominent position of the *hoplomachos*, teacher of heavy-armed fighting, who was next in rank to the *paidotribe*, and at times actually above him.²⁵⁹ Under the Empire, however, when military instruction became perfunctory, the *grammateus* and the *hegemon* were occasionally listed above him, though he continued to have great importance. The *hoplomachos*, whose office appears in many other states besides Athens, but was disapproved of by the Spartans,²⁶⁰ occupied his position for many years, was sometimes reappointed, and, at the time when Abaschantos was *paidotribe*, was given the title for life.²⁶¹ His duties were to teach the whole art of fighting in armor, how to wear the helmet and the cuirass, and how to use shield, lance, and sword; how to fight in single combat and how to maneuver in mass; in short, everything except instruction in using the javelin, bow, and catapult, for which special instructors were provided. In fact, the *hoplomachos* caused youth to simulate "the various opera-

²⁵⁴ Forbes: *op. cit.*, p. 135.

²⁵⁵ Dumont: *op. cit.*, pp. 165 f.; Grasberger: *op. cit.*, III, 477 f.

²⁵⁶ Dumont: *op. cit.*, I, 175 ff.

²⁵⁷ Forbes: *op. cit.*, pp. 136, 138.

²⁵⁸ Dumont: *op. cit.*, I, 181 f.

²⁵⁹ *Ibid.*, I, 185 f.; Forbes: *op. cit.*, p. 139.

²⁶⁰ Dumont: *op. cit.*, I, 187 ff.

²⁶¹ Grasberger: *op. cit.*, III, 143 f.

tions of war," and "claimed even to teach strategy and to discourse on military affairs," although this "was not his special function."²⁶²

The use of the javelin was taught by a special instructor, the *akontistes*.²⁶³ Though Pausanias²⁶⁴ asserts that the Cretans were the only Greeks accustomed to use the bow, it was given a place in the military instruction of *ephebi*. Plato²⁶⁵ recommended it, with the javelin and sling, as part of the training for young people, boys and girls. The instructor in archery, the *toxotes*, is mentioned in *ephebic* inscriptions of the third century B.C., but, like the teacher of the javelin, he is not mentioned in inscriptions of 39 B.C. and thereafter.²⁶⁶ The use of the catapult was taught by the *aphetes* or *catapultaphetes*. Though important while military training was the dominant interest of the college, this position seems to have fallen vacant in the last century B.C.²⁶⁷ When the positions of *akontistes*, *toxotes*, and *aphetes* disappear from the records, one need not infer that all exercises pertaining to them ceased altogether; but considering the perfunctory character of military training, its noncompulsory status, and the small number attending to it, these special exercises were left to the *hoplomachos*, the only military instructor remaining, if they were performed at all. The functions of the *grammateus* (secretary) and the *hyperetes* (servant) are suggested by their titles, but beyond that little is known.²⁶⁸

Many of the new officials of the college, under the Empire, were merely assistants to those previously named, such as the assistant *paidotribe* (*hypopaidotribes*); assistant *kosmetes* (*hypokosmetes* or *antikosmetes*); assistant secretary or recorder (*hypogrammateus* or *antigrammateus*). Promotion from an assistantship and from other lower positions to higher ones was practiced, save where hindered by too great a degree of specialization.²⁶⁹

Of other new functionaries little is known. The *hegemon* seems to have been one who marched at the head of the *ephebic* corps when they were on parade or attended some public ceremony; the *prostates*, too, found in later inscriptions, judging from his title and the prominence of his position on *ephebic* rolls, may have shared some duties previously performed by the *kosmetes*, and probably presided at certain ceremonies. The *hypozaoros* (chaplain), one of the latecomers, had charge of the elaborate, formal, religious observances,

²⁶² Dumont: *op. cit.*, I, 186; Plato: *Laches*, 181-2; *Euthydemus*, 272-3.

²⁶³ Dumont: *op. cit.*, I, 190; Gräber: *op. cit.*, III, 477.

²⁶⁴ Bk. I, 23, 4.

²⁶⁵ *Laws*, VII, 794.

²⁶⁶ Dumont: *op. cit.*, I, 192.

²⁶⁷ *Ibid.*, I, 191; Forbes: *op. cit.*, p. 141; on development of the catapult, Tarn, *Hellenistic Military and Naval Developments*, pp. 103 f.

²⁶⁸ Dumont: *op. cit.*, I, 165, 193; Gräber: *op. cit.*, III, 477.

²⁶⁹ Dumont: *op. cit.*, I, 205 f.

which were given much attention in the last period of the college's existence. Like the *akontistes*, the *kestrophylax* was a specialist, his duty being to teach the art of throwing with a sling a short bolt or arrow tipped with metal. Though at first low in rank, his specialty was in high favor, apparently, at certain times.²⁷⁰

Plato and Galen stressed the importance of medical knowledge and the assistance of doctors for the *paidotribe*, if physical training was to be really beneficial to health. Philostratos,²⁷¹ too, laid emphasis on the relation of gymnastics to medical science, and the need for adjusting exercises to individual constitutions and states of health. The *iatros*, medical adviser of the college who appears near the end of the second century A.D., represents the accommodation of practice to theory, and suggests the great concern for health that had taken hold of those who could afford the luxury of worrying about it.

Among lesser newcomers were the *didaskalos* (music teacher)—not to be confused with *didaskaloi*, teachers in general, or with teachers of boys in the music school; the *lentiarios*, who had oversight of ephebic apparel; the *kap-sarios*, bath attendant, who looked out for the bather's clothes; and the *thyroros*, janitor, i.e., doorman. The *xystarches*, although not a regular official of the college, was nevertheless associated with its work, since he had charge of the *xystos*, the covered place of exercise, where the ephebi performed in bad weather. He was generally a man of prominent family, but could be named from the ephebi themselves. Other titles, for example, the *epimeletes* and the *hypotaktes*²⁷² are obscure, though Dumont regards the latter as the head of a *taxis*, one of the classes into which the ephebi were divided.²⁷³ The title *hieronikes* appears to have been applied to those ephebi who had conquered in the four great Greek athletic festivals.²⁷⁴

The *gymnasia*, the *Ptolemeion* in which the college library was located, and the *Diogeneion*, were reserved for ephebi; but prior to their erection, the older *gymnasia*, doubtless, were used by members of the college. Under the Empire the *Ptolemeion* ceased to be mentioned in the ephebic records;²⁷⁵ while the *Diogeneion* was seemingly the center of military and physical exercises, and a general meeting point for the ephebi. The director of the *Diogeneion* and his staff—caretaker, assistant *paidotribe*, master of fighting in armor, secretary and his assistant, *kestrophylax*, music teacher, *hegemon*, and doorman—are mentioned in certain inscriptions of the second Christian century. This staff, dis-

²⁷⁰ Polybius, xxvii, 11; Livy, xlii, 65, 9; Dumont: *op. cit.*, I, 196 f., 199 f., 234.

²⁷¹ Concerning *Gymnastics*, 14-5, et *passim*.

²⁷² Dumont: *op. cit.*, I, 203; Forbes: *op. cit.*, pp. 164, 168.

²⁷³ *Op. cit.*, I, 310.

²⁷⁴ *Ibid.*, I, 203; Suetonius: *Nero*, 25.

²⁷⁵ Dumont: *op. cit.*, I, 209.

tinct from that of the college itself, seems to have had charge of younger boys (*mellephchai*) about to enter the ranks of *ephebi*.²⁷⁶

With the decline of Athenian military power, under the dominion of Macedon and of Rome, there was little or no excuse for military training. Near the close of the fourth century, *ephebic* training was reduced to one year and ceased to be compulsory, partly because the financial plight of the state made it impossible to continue the provision wholly at public expense.²⁷⁷ As a result, while once there had been upwards of a thousand cadets, the number declined to a mere twenty or thirty. Foreigners began to be admitted in the second century, and within less than a hundred years they were more numerous than native youth.²⁷⁸ The number of native-born youth alone would scarcely have kept the institution alive.

These changes affected the program of exercises profoundly. When military efficiency on the part of Athenian youth had been the dominant *raison d'être* of the college, there had been little time for devotion to literary studies. At one time, before philosophy had been accepted as a proper study for youth, the Arcopagus had summoned two Athenians for attending philosophical lectures and having no visible source of livelihood.²⁷⁹ But with the passing of military power, physical training for military efficiency became more and more a perfunctory matter, often a mere entertainment or exhibition, and gave way to gymnastics and literary pursuits. Exercises and games did indeed continue; but the original spirit and purpose of athletics were dead.²⁸⁰ In Cicero's time, even the military training of the *ephebi* seemed, to a Roman at least, "far from rigorous," and the "system of exercise for young men in gymnasiums," ridiculous.²⁸¹ A constantly increasing stress is noted on literary and philosophical studies. An inscription in the last quarter of the second century B.C. shows that throughout the year the *ephebi* were regularly attending philosophical lectures in the Ptolemaion, Lyceum, and Academy.²⁸² Finally, it became unnecessary to enroll among the cadets; one might attend the lectures of rhetoricians, philosophers, and grammarians without that formality. Moreover, on leaving college, it became customary for the *ephebi* to make a gift of a hundred books to the college library in the Ptolemaion.²⁸³ With the development of intellectual facilities of various kinds, to which the name University of Athens has been

²⁷⁶ Forbes: *op. cit.*, pp. 168, 176 f.

²⁷⁷ Busolt-Swoboda: *op. cit.*, II, 1191; Dumont: *op. cit.*, I, 66 f.

²⁷⁸ Forbes: *op. cit.*, pp. 154, 159 ff., 173; Freeman: *op. cit.*, pp. 219 f.

²⁷⁹ Athenaeus, IV, 168.

²⁸⁰ Dumont: *op. cit.*, I, 234 ff.; Philostratus: *Concerning Gymnastics*, 2, 44-5.

²⁸¹ Cicero: *De Re Publica*, IV, 4.

²⁸² Forbes: *op. cit.*, p. 158.

²⁸³ Freeman: *op. cit.*, p. 219; Walden: *The Universities of Ancient Greece*, pp. 38 ff.

applied, we are not immediately concerned, beyond the fact that it was the outgrowth of the union of multifarious literary and philosophical studies that flowered in the age of Athenian enlightenment with the once exclusively physical and military system of training, established and prescribed for youth of the ephebic age. Ultimately, in the institution which had been pre-eminently a place for physical training, studies triumphed to such an extent that to turn from them to athletic contests was a matter of reproach—a deviation even punished by the masters. Libanius, in the fourth century, boasted that never while he was in Athens did he “engage in a game of ball.” In a letter he tells a father that he punished his son because he forsook his books and “became a sprinter.” Himerius, too, warned the boys against “playing ball” and “practising athletics” and other frivolities.²⁸⁴

It has been said that when two Greeks met they founded a gymnasium. While this may seem merely a fanciful exaggeration, there can be no doubt of Greek devotion to physical culture. Pausanias²⁸⁵ mentions the gymnasium as one of the earmarks of a city. Excavations show that baths and gymnasia were central features of Hellenized Oriental cities. Even such an Egyptian city as Thebes had its Greek sports and gymnasium. Studies in schools and also the extensive development of clubs reveal the pervasive influence of Greek culture. The range of Greek authors read in Egyptian schools was wide, including “Homer, Demosthenes, Euripides, Menander, Plato, Thucydides, Aristophanes, Isocrates, Xenophon”; and to this fact is traceable the fortunate preservation of many works, especially Menander.²⁸⁶ The spirit and purpose of gymnastic training was of course practical and professional, for professionalism overran all the Hellenistic world.²⁸⁷

The Ephebic College, when intellectual pursuits had balanced its original military exclusiveness, represented a union of mental and physical exercises which took place in or near the gymnasium. The ephebic organization at Athens is known from inscriptions to have been in existence until 262 or 266 A.D. Since it was then in a flourishing condition, and there is no reason to think it came to a cataclysmic end, it is probable that it may have continued to the end of the third century or even longer.²⁸⁸ The vitality of the Greek influence and institutions, beyond Hellas, is well illustrated in the proliferation of the

²⁸⁴ Walden: *op. cit.*, pp. 319, 325.

²⁸⁵ Bk. x, 4, 1.

²⁸⁶ Oldfather: *The Greek Literary Texts from Greco-Roman Egypt*, p. 74; Milne: “Egyptian Nationalism under Greek and Roman Rule,” *Jour. Egy. Archaeol.*, xiv, 227; Bell: “Hellenic Culture in Egypt,” *ibid.*, viii, 142–50; “The Historical Value of Greek Papyri,” *ibid.*, vi, 234–46; Westermann: “Entertainment in the Villages of Graeco-Roman Egypt,” *ibid.*, xviii, 16–27.

²⁸⁷ Gardiner: “A School in Ptolemaic Egypt,” *Class. Rev.*, xlii, 211 ff.

²⁸⁸ Dumont: *op. cit.*, I, 2 f.; Forbes: *op. cit.*, p. 178.

Ephebic College in faraway lands, to which the armies of Alexander and other forces had carried Greek practices. Though there were numerous differences as to details—age of admission, length of course, the government of the institution—the college made a place for itself for a time at Alexandria, Massilia, Antioch, Jerusalem, and even by the distant rivers of Babylon. The latest specific reference to an ephebic institution comes from Alexandria (c. 323 A.D.), and urges the cadets “to put their best foot forward in their gymnastic exhibition.”²⁸⁹

The education of labor Solon’s law, to the effect that “no son who had not been taught a trade should be compelled to support his father,” and that the Areopagus should “examine into every man’s means of livelihood and chastise those who had no occupation,”²⁹⁰ may have given a certain “dignity to all the trades” in his day. Ultimately, however, the divisive influence of a competitive system, combined with the growth of slavery and other factors, brought manual labor into discredit as something fit only for slaves or for citizens who were too poor to afford the luxury of idleness. While Pericles is credited with saying that those engaged in business have a fair notion of politics,²⁹¹ the low regard in which manual occupations came to be held generally by intellectuals and gentlemen is well known. Xenophon set forth the incompatibility of the life of the citizen with the “illiberal arts” of the worker: “. . . to be sure, the illiberal arts, as they are called, are spoken against, and are, naturally enough, held in utter disdain in our states. For they spoil the bodies of the workmen and the foremen, forcing them to sit still and live indoors, and in some cases to spend the day at the fire. The softening of the body involves a serious weakening of the mind. Moreover, these so-called illiberal arts leave no spare time for attention to one’s friends and city, so that those who follow them are reputed bad at dealing with friends and bad defenders of their country. In fact, in some of the states, and especially in those reputed warlike, it is not even lawful for any of the citizens to work at illiberal arts.”²⁹² Aristotle called “those arts vulgar which tend to deform the body, and likewise all paid employments, for they absorb and degrade the mind.” Mechanics and tradesmen should not be citizens, since their life is “ignoble and inimical to virtue.”²⁹³ Plato, too, would permit no citizen to be an artisan. Neither should

²⁸⁹ Forbes: *op. cit.*, p. 256; chap. 7 of Professor Forbes’ work has given an excellent account of ephebic institutions in Greek cities and in others to which Greek influence spread.

²⁹⁰ Plutarch: *Solon*, 22. Trans. by B. Perrin. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.; Jardé: *op. cit.*, p. 166.

²⁹¹ Thucydides, II, 40.

²⁹² Xenophon: *Oeconomicus*, IV, 2–3. Trans. by E. C. Marchant. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

²⁹³ *Politica*, VII, 9; VIII, 2. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press).

an artisan be permitted to be rich, though he should have enough to buy himself tools.²⁹⁴

The gulf between rich and poor, slave and free, had a major educational significance. "School" and leisure were interdependent; a Greek proverb ran, "There is no leisure for slaves."²⁹⁵ The slave, of course, did not participate in the education of the citizen; but citizens, also, were clearly limited in respect to educational opportunities,²⁹⁶ if poverty prohibited payment of fees for instruction in the palaestra, music school, and gymnasium. Even the Ephebic College became exclusive, aristocratic, and noncompulsory with the city's financial and political decline.

For those without leisure, whether slave or free, apprenticeship to life's labor stood in the place of a more extensive, generous education. Long hours and hard conditions of labor left little energy to be spent in liberal training of mind or body. In early days occupations were traditional or even hereditary, and sons learned by a natural apprenticeship the trade of the father.²⁹⁷ The work of a statuary was thus learned by Socrates. A more formal apprenticeship developed, however, when technical specialization made it more and more necessary. Xenophon had observed the great degree of specialization in the industries of great cities, where a single, special task, e.g., in shoe manufacture, might suffice to occupy a person and give him maintenance.²⁹⁸ Moreover, "If one wants to make a man a shoe-maker, a mason, . . . one sends him to a master who can teach him." Xenophon explains that a colt should be put out for breaking, and the terms of the agreement should be "put in writing," just as when one "apprentices his son to a profession."²⁹⁹ Plato³⁰⁰ mentions the craftsman who may be teaching his craft to others besides his own sons. Carpentry and medicine are noted as not only practiced but also taught.³⁰¹ The training of slaves for their duties in its service was undertaken by the state, and also by private persons for profit.³⁰² Apprenticeship to sculptors, painters, and other craftsmen is attested by artistic remains.³⁰³

The principle of learning to do by doing, an apprenticeship "in sport and in earnest" to what one would do when grown up, was recognized by Plato³⁰⁴

²⁹⁴ *Laws*, viii, 846; *Republic*, iv, 421.

²⁹⁵ Aristotle: *Politica*, vii, 15.

²⁹⁶ Plato: *Protagoras*, 326.

²⁹⁷ *Ibid.*, 328; *Republic*, v, 467.

²⁹⁸ *Cyropaedia*, viii, 2, 5.

²⁹⁹ *Art of Horsemanship*, ii, 2; cited incorrectly in Freeman, *op. cit.*, p. 44, and Anderson, "Some Facts Regarding Vocational Training among the Ancient Greeks and Romans," *Sch. Rev.*, xx, 194, as Revenues.

³⁰⁰ *Republic*, iv, 421.

³⁰¹ *The Works of Plato* (Cary, Davis, and Burges), iv, 471.

³⁰² Aristotle: *Politica*, i, 7; Whibley: *op. cit.*, p. 420; St. John: *op. cit.*, iii, 26.

³⁰³ Glotz: *Ancient Greece at Work*, pp. 277 ff.

³⁰⁴ *Laws*, i, 643.

as sound. Vocational training was not for everybody, however, for Plato was convinced that no artisan should be a citizen, and that vocational training was scarcely worthy of being called education.³⁰⁵

Though numerous allusions show that training was commonly gained through apprenticeship, there are few specific records of apprenticeship agreements. Those recovered pertain not to Athens but to Egypt, whither Greek culture spread. Westenmann mentions "nine pure apprentice contracts," five for weaving and one each for "nail-making, flute-playing, short-hand writing, and hair-dressing." The master-workman is called *didaskalos* (teacher) and the apprentice *mathetes* (pupil). Neither the state nor guilds appear to have regulated the apprenticing of youth to masters, but the parties to a contract of apprenticeship were subject to a fine if the terms of agreement were not fulfilled. The length of apprenticeship varied, in the case of weaving, "from one to five" years. Holidays, the amount to be paid, the provision of food and clothes, fines for absence from work, and provision for making up time lost by absence, were generally specified in the contract. The exact age at which apprenticeship began probably varied, but in two contracts it seems to have been entered upon when the youth was about thirteen.³⁰⁶

For the laboring class one hears of no physical sports or exercises. Organized play is a compensation, developed for those who, one way or another, have escaped from the natural exercise of toil. Those who labored long in mine, quarry, or mill had little or no surplus energy to give to other physical exercises. For them labor was enough—indeed, too much—and they lightened it by chanteys of boatmen, songs of the vintners, flailmen, and grinders at the mill. Even beggars lightened their labor with the song of the crow:

Or a well-kneaded loaf or an obolos give,
Or what you will, for the crow must live.³⁰⁷

³⁰⁵ *Ibid.*, I, 644; VIII, 846; Anderson: *op. cit.*, *loc. cit.*, xx, 194.

³⁰⁶ Westenmann: "Vocational Training in Antiquity," *Sch. Rev.*, xxii, 601-10; "Apprentice Contracts and the Apprentice System in Roman Egypt," *Class. Philol.*, ix, 295-315.

³⁰⁷ St. John: *op. cit.*, III, 92.

FREEMEN'S GAMES

FORCES AND IDEALS INFLUENCING ATHLETICS

Physical exercises and contests were to the privileged class of citizens what "ignoble" labor was to the poor and the slave. Manly sports prepared the citizen for the exercise of his most important vocation, that of soldier. "The practical character of Greek sports indicates a nation of warriors," says Gardiner, who credits the rise of athletics to prominence to the influence of the northern invaders.¹ Taken altogether Greek athletic sports ". . . formed a complete and adequate training for what was to an ancient citizen the chief business of life—war."² Like other Greeks most Athenian citizens looked forward to the life of the soldier. At the middle of the fifth century, Athens had a standing army of about twenty-five hundred hoplites, one thousand cavalry³—aristocratic and exclusive—and a fleet of three to four hundred ships.⁴ One hundred and eighty Athenian ships took part at Salamis, each with eighteen fighting men on deck.⁵ The citizen might be called for active service between twenty and fifty years of age, and for garrison duty till sixty. The hoplite, heavily armed, must be strong, indeed, to carry all his equipment—helmet, cuirass, greaves, shield, spear, and sword.⁶ Victory, then, depended much upon personal courage and prowess in hand-to-hand fighting,⁷ for which physical training in

¹ *Greek Athletic Sports and Festivals*, pp. 8 f.; *Freeman: Schools of Hellas*, p. 57.

² Wright: *Greek Athletics*, p. 42.

³ Tam, *Hellenistic Military and Naval Developments*, pp. 55 f., discusses the relatively unimportant rôle of cavalry in Greek warfare, apart from Thessaly and Macedonia.

⁴ Gulick: *Life of the Ancient Greeks*, pp. 190 f.; Tucker: *Life in Ancient Athens*, pp. 193 f.; Tam, *op. cit.*, p. 124, suggests that in dealing with Greek fighting ships we should think of "a glorified racing eight" rather than our usual conception of a war vessel. The comparison should not be stressed too much, however. A trireme might have a total personnel of about two hundred men, including oarsmen, navigators, and men under arms.—Tucker: *op. cit.*, p. 198.

⁵ Plutarch: *Themistocles*, 14.

⁶ Wright: *op. cit.*, pp. 42-55.

⁷ Tam: *op. cit.*, p. 3.

contests afforded the best conditioning. Plutarch maintained that the Thebans beat the Spartans because they were better wrestlers. The names of famous early athletes were associated with military events. Milo of Croton, who won twelve prizes at Olympia and Delphi, fought against Sybaris in 511 B.C. Phayllus, likewise of Croton, thrice victor at the Pythian Games, fought against the Persians.⁸ Philostratos held that ancient athletes who took part in eight or nine Olympiads were also "adapted to heavy military service and fought about the walls, by no means without success therein but rather distinguished by prizes and trophies, regarding war as preliminary practice for gymnastic, and gymnastic as preliminary training for war."⁹

Certainly nothing explains more directly their preoccupation with athletics than the fact that the Greek states were constantly engaged in war, a "seasonal occupation," as Tarn says,¹⁰ ranging from petty struggles among themselves to major conflicts against outsiders. Undoubtedly the early prominence of Sparta, whose success in physical sports and prowess in war were commonly associated as cause and effect, had a stimulating influence on physical training at Athens. It is also worthy of notice that the conflict with Persia, the greatest threat to their freedom the Greeks had faced, produced a remarkable enthusiasm for athletics at Athens. The greatest vogue of physical culture is said to have been reached between the Persian and Peloponnesian wars.¹¹ When military strength waned, leaders urged systematic training of Athenian youth for war.

The influence of war is evident on every side. It is prominently reflected in Greek art, religion, poetry, history, athletics. Many Athenian men of letters, Aeschylus, Sophocles, Thucydides, Xenophon, and Socrates, played also the rôle of fighting men. Plutarch found no virtues more worthy of praise than those of the excellent soldier, the character he loved best to portray. Sport held the mirror up to this prominent aspect of Athenian life. The Greeks were not inoculated with the quiet, contemplative philosophy of the Hindu; the ascetic ideal of early Christianity was incomprehensible to them in the period of their greatness. It has been suggested that the infrequency of references to sheep in Greek literature may be due to the fact that the lamb, "dumb before her shearers," was not a Hellenic ideal.¹² Instead of flight from life, the Greek chose to live to fight and fight to live. Archilochus might leave his shield behind him and celebrate the fact poetically, but he died in battle, and his poetry generally breathes the warlike spirit of the Greeks:

⁸ *The History of Herodotus*, viii, 47; *Pausanias's Description of Greece*, x, 9, 1.

⁹ Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 43.

¹⁰ *Op. cit.*, pp. 2, 8.

¹¹ Gardiner: *op. cit.*, pp. 4, 107 f.; Wright: *op. cit.*, p. 27; Bondurant: *Ancient Athletics*, p. 7.

¹² Lawton: *The Soul of the Anthology*, p. 20.

My spear is bread, white kneaded bread,
 My spear's Ismarian wine.
 My spear is food and drink and bed,
 With it the world is mine.¹³

Aeschylus celebrates the ubiquitous, heroic ideal of warlike activity, which runs continuously, with but few dissenting notes, from Homer till the voice of Greek spokesmen is mute:

Their life was in shafts of ash and of elm, in bright plumes fluttering wide,
 In lance and greaves and corslet and helm and heart of seven bulls' hide.¹⁴

Specific and direct, as well as general and implied, recognition of sports as a training for war is not wanting. Tyrtacus, reputed lano schoolmaster of Athens who stirred the Spartans with his warlike verses, extolled sport not for its own sake but for war. Speed in running, skill in wrestling, strength, beauty, kingly power, eloquence, fame—these are of no avail unless one is "a man of mettle in fight." ¹⁵ Ischomachos, though devoted to business and directing the work of his farm, says: "After this, I usually mount my horse and go through exercises, imitating as closely as I can the exercises needed in warfare." ¹⁶ Socrates is represented as recommending physical training pre-eminently for its value in war. To Epigenes he says there is no excuse for being in bad physical condition. He needs training just like any athlete training for Olympia. "Or do you count the life and death struggle with their enemies, upon which, it may be, the Athenians will enter, but a small thing? Why, many, thanks to their bad condition, lose their life in the perils of war or save it disgracefully: many, just for this same cause, are taken prisoners. . . . Many, again, by their bodily weakness earn infamy, being thought cowards." ¹⁷

Solon, whom Lucian represents conversing with Anacharsis about the value of athletics, expresses the state's interest in physical culture as training for war: "Accordingly we devise elaborate gymnastic exercises, appoint instructors of each variety, and teach one boxing, another the pancratium. They are to be habituated to endurance, to meet blows half way, and never shrink from a wound. This method works two admirable effects in them: makes them spirited and heedless of bodily danger, and at the same time strong and enduring. Those whom you saw lowering their heads and wrestling learn to fall safely and pick themselves up lightly, to shove and grapple and twist, to endure

¹³ Wright: *op. cit.*, p. 45.

¹⁴ *Ibid.*, p. 47.

¹⁵ *Ibid.*, p. 46.

¹⁶ Xenophon: *Oeconomicus*, xi, 17.

¹⁷ Xenophon: *Memorabilia*, iii, 12, 1-2. Trans. by E. C. Marchant. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

throttling, and to heave an adversary off his legs. Their acquirements are not unserviceable either; the one great thing they gain is beyond dispute; their bodies are hardened and strengthened by this rough treatment. Add another advantage of some importance: it is all so much practice against the day of battle. Obviously a man thus trained, when he meets a real enemy, will grapple and throw him the quicker, or if he falls will know better how to get up again. All through we are reckoning with that real test in arms; we expect much better results from our material if we supple and exercise their bodies before the armour goes on, so increasing their strength and efficiency, making them light and wiry in themselves (though the enemy will rather be impressed with their weight).

"You see how it will act. Something may surely be expected from those in arms who even without them would be considered awkward customers; they show no inert pasty masses of flesh, no cadaverous skinniness, they are not shade-blighted women; they do not quiver and run with sweat at the least exertion, and pant under their helmets as soon as a midday sun like this adds to the burden. What would be the use of creatures who should be overpowered by thirst and dust, unnerved at sight of blood, and as good as dead before they came within bow-shot or spear-thrust of the enemy?"¹⁸

With the rise of professional soldiers and the various improvements in warfare consolidated by the Macedonians—such as the increased use of cavalry, light-armed soldiers, and archers—the amateur citizen-soldier ceased to play an important rôle.¹⁹ The two systems, the amateur and the professional, were put to the test, and the latter won at the battle of Chaeronea. From that time onward physical education of the city-state lacked the most significant social purpose that had sustained it in preceding centuries.

Dangerous exploits are in themselves satisfying to primitive, natural instincts of those who perform them, and they are commonly approved and admired regardless of whether they serve a useful purpose. The Greeks idealized dangerous, "painful," manly exercises, apart from their utilitarian value as preparation for war. The terms "laborious," "painful," "contest," "struggle" are constantly associated with their sports. Much of their life was spent participating in, or observing, contests of physical strength and skill. The heroic exploits of Theseus and Heracles embodied this ideal. Courageous men court danger; they do not merely face it when it is inevitable. Theseus "refused to make his journey by sea," the easier way, and chose the dangerous way by land, no part of which was "clear nor yet without peril from robbers and miscreants."²⁰ He

¹⁸ Lucian: *Anacharsis*, 24-5. From *The Works of Lucian of Samosata*, translated by H. W. Fowler and F. G. Fowler (The Clarendon Press).

¹⁹ Tarn: *op. cit.*, pp. 8 ff., 21, 43 f., 50 ff.

²⁰ Plutarch: *Theseus*, 6.

went out of his way to meet Phaca, the Crommynion sow, so that it might not seem that he performed all his exploits because of sheer necessity. Alexander was admired for proving that he could ride the most unmanageable horse. His father wept for joy at his success, seeing in his courage, stubborn will, and skill, a proof that he must find a larger empire for his sway.²¹ Success in sport was an earnest of success in life. Parallels between games and life are constantly drawn by the Greeks. "The world is all a stage, life is a sport: away with earnest and learn to play the game, or bear thy pains."²² The uncertainties of the outcome of athletic contests are similar to the vicissitudes of life: ". . . to pronounce any one happy . . . while he is still living and running the risks of life," said Solon, "is like proclaiming an athlete victorious and crowning him while he is still contending for the prize."²³ Themistocles was told by faint-hearted, procrastinating Eurybiades, who thought to check his impatience, that "those who start too soon get a caning" at Olympia; to which Themistocles rejoined, "But those who lag behind get no crown."²⁴ To refuse to play the game, no matter how painful or laborious, was to rebel against life itself. Facing the element of danger enhanced the worth of every act. Pindar never wearies of singing of deeds of peril and "paths of dang'rous fame," where "trembling cowards never tread. . . ." ²⁵

In addition to idealization of the hazardous and "painful," the Greeks felt a deep appreciation of physical beauty, especially if joined with the glorious vigor of youth. Parmenides sings of—

Youth that art mated with charioteers and companions immortal,

Coming to us on the coursers that bear thee, to visit our mansion. . . .²⁶

Tyrtæus proclaims: "It is a shame for an old man to lie slain in the front of the battle, his body stripped and exposed. . . . But to the young all things are seemly. . . ." ²⁷ "For beautiful boys there is no punishment when they do wrong" also expresses the idealization of physical beauty, so conspicuously associated with paedophilia.²⁸ Preference for the aesthetic is nowhere more evident than in matters pertaining to physical beauty. Wealth and power, however, are not excluded. They, too, are beautiful to the Athenian.²⁹ The Greek generally was no lover of the ascetic ideal of poverty. Love of beauty might find

²¹ Plutarch: Alexander, 6.

²² Butcher: *Some Aspects of the Greek Genius*, p. 172.

²³ Plutarch: Solon, 27. Trans. by B. Perrin. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

²⁴ Plutarch: Themistocles, 11.

²⁵ West: *Odes of Pindar*, "First Olympian," str. 6; Lawton: *Classical Greek Literature*, p. 147.

²⁶ Bakewell: *Source Book in Ancient Philosophy*, pp. 12 f.

²⁷ Gardiner: *op. cit.*, p. 88.

²⁸ The Cambridge Ancient History, iv, 491; Gardiner: *op. cit.*, p. 99.

²⁹ Mahaffy: *Social Life in Greece*, p. 327.

expression in the simplest concrete object and in the highest intellectuality, the love of the true and the good, according to Plato's views in the *Phaedrus* and the *Symposium*. The evidence of this appreciation of harmony comes, of course, primarily from artists, poets, and philosophers, whereas stress on military values as the goal of physical education is uppermost in the minds of statesmen.

Notwithstanding numerous references to the ideal of youthful strength and beauty, one need not hold that every Greek went into raptures over nude figures, nor "that ugliness was then an actual exception."³⁰ To do so would be to forget certain important limitations that have already been noted in Athenian life and education. Neither should we allow ourselves to translate effects into causes. Games and sports first gained their place on very realistic grounds, long before philosophers, poets, and sculptors voiced appreciation of the beauty which they did so much to foster. Moreover, in attempting to judge the results of physical education by the art of the Greeks, one must not forget that artists, as well as others, often tend to touch up their subjects.³¹ Greek art imitated nature, but also idealized it. It was said that Zeuxis combined the best parts of several bodies because no single body could be perfect enough in every respect.³² Artistic remains have often been less subjected to scientific doubt than other kinds of sources with which historians deal. Mahaffy wisely advised that one should "not exaggerate the matter" when trying to judge Greek physical beauty. "Very few boys really equalled the ideal types of the sculptor. . . ." ³³

Just as the Greeks extolled the virtues of youth, vigor, and beauty, and sought to hold them fast, so they shrank from old age and physical enfeeblement. Longing for death, so characteristic of early Christian ascetics and still found in Christian theory, was utterly foreign to them. Socrates' cheerful anticipation of death is an exception to the general rule; and he, of course, had already lived his life. The Greeks, generally, would not have sympathized with a modern poet's plea:

Grow old along with me,
The best is yet to be. . . .

At best they viewed death fatalistically and faced old age with as much stoical endurance or indifference as they could muster. The "grievous" destiny dawns, even as it has been appointed. The inevitability of one's end, however, instead of causing him to shrink from life, impels him, as Pindar says in the "First Olympian," to fill to the utmost its bright hour:

³⁰ *Ibid.*, p. 326.

³¹ Wright: *op. cit.*, p. 106.

³² Venturi: *History of Art Criticism*, pp. 42, 44.

³³ Mahaffy: *Old Greek Education*, p. 29.

Yet since all of mortal Frame
Must be number'd with the Dead,
Who in dark inglorious Shade
Wou'd his useless Life consume,
And with deedless Years decay'd,
Sink unhonour'd to the Tomb? ³⁴

A fatalistic view of death was not without some justification. A recent careful study shows that the average expectancy of life was only twenty-nine years, whereas to-day it is over fifty-seven for men and sixty-one for women.³⁵ Frequent wars, unsanitary conditions, the primitive character of medical knowledge, took a heavy toll of youth especially. A study of 2,022 inscriptions shows the age groups sixteen to twenty and twenty-one to twenty-five years to be hardest hit, while children, one to five, were in third place.³⁶

It has been said that the Greeks were always young. Certainly they longed to be. Perhaps it was an earnest clinging to life that caused some of them to continue to "play the game" despite encroachments of the years. The ancient athletes, according to Philostratos, were apt to "grow old late" and took part in contests sometimes for eight or nine Olympiads;³⁷ in later days of decadence, however, contestants could not stand the strain.³⁸ Theophrastus would dissuade old men from dancing and the contests of the palaestra.³⁹ But obviously some seem to have persisted. Socrates took up dancing at an advanced age. Ephudion, "the game old man," fought the pancration with young Ascondas, says Aristophanes.⁴⁰ Plato mentions "the wrinkled old men who have anything but an agreeable appearance when they take to gymnastics."⁴¹ Some corroboration of the participation in sports by old men is also found in artistic remains.⁴²

It would be difficult to think of Greek art without nude Greek athletes. Football suits, tennis pants, and even bathing suits are scarcely conducive to artistic appreciation of the excellent physique developed by modern sports. Greek artists were more fortunate. Just when Greek athletes began to go nude is uncertain, but Thucydides says that Lacedaemonians "were the first who in their athletic exercises stripped naked and rubbed themselves over with oil. But this

³⁴ "First Olympian," str. 6.

³⁵ Richardson: *Old Age among the Ancient Greeks*, p. 234.

³⁶ *Ibid.*, pp. 231 f.

³⁷ *Concerning Gymnastics*, 43.

³⁸ *Ibid.*, 2.

³⁹ Richardson: *op. cit.*, p. 41.

⁴⁰ *Wasps*, 1190-3.

⁴¹ *Republic*, v, 452. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

⁴² Richardson: *op. cit.*, pp. 107 f.

was not the ancient custom; athletes formerly, even when they were contending at Olympia, wore girdles about their loins, a practice which lasted until quite lately." ⁴³ Pausanias says that Orsippos was the first who won a race at Olympia, running without a girdle, either by accident or design.⁴⁴ The gymnasts at Olympia, according to Pausanias and Philostratos,⁴⁵ wore a cloak while performing their duties, until the discovery of Pherenike's deception caused the promulgation of a decree that they must appear unclad. The practice of competing nude doubtless grew gradually, and was not followed in all contests alike. Vase painters commonly depicted the girdle in the seventh century, and then gradually omitted it. Sculptors generally represented charioteers draped, but exceptions occur.⁴⁶ The barbarians of Asia, according to Thucydides, still continued to wear girdles when engaging in contests of boxing and wrestling. Herodotus observed that Lydians and barbarians generally held it a mark of disgrace "even to a man, to be seen naked." ⁴⁷ Plato says that "not long ago" the Hellenes also believed that "a naked man was ridiculous and improper." Though he himself went so far as to propose physical training for men and women, he recognized that such an innovation would excite ridicule, just as nudity of men had once done.⁴⁸ Having become accustomed to nudity, the benefits of which were so obvious, the Greeks naturally prided themselves on sturdy, sun-tanned bodies—a distinction which set them off from their barbarian neighbors. Agesilaus sought to show his soldiers how inferior were the delicate, white, effeminate bodies of their adversaries.⁴⁹

Emphasis on proportion and moderation is characteristic of the Athenian athletic ideal, in contrast with the one-sidedness of training in Lacedaemon.⁵⁰ That the mean is superior to either extreme became a common judgment. Theognis says: "Avoid excess; the mean is best." The theory of the mean, as applied to educational matters, is of course a product of the age of enlightenment. It appealed to the minds of philosophers, doubtless, as a prophylactic against the evils of professionalism that were beginning to appear. It must be understood, then, not as a description of what was, but as a guide to what ought to be. Socrates is said to have avoided excessive gymnastic exercises.⁵¹ Though he recognized the practical utility of physical training for war, he had also a

⁴³ Thucydides, I, 6. From Thucydides, translated by B. Jowett (The Clarendon Press).

⁴⁴ Bk. I, 44, 1; Krause: *Olympia oder Darstellung der Grossen Olympischen Spiele*, pp. 339 ff.

⁴⁵ Concerning Gymnastics, 17; Pausanias, v, 6, 7-8; vi, 7, 2.

⁴⁶ Hyde: *Olympic Victor Monuments*, p. 48.

⁴⁷ Bk. I, 10.

⁴⁸ Republic, v, 452. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

⁴⁹ Plutarch: *Agesilaus*, 9.

⁵⁰ Forbes: *Greek Physical Education*, p. 10; Freeman: *op. cit.*, pp. 279 f.; Davidson: *Education of the Greek People*, pp. 22 f.

⁵¹ Grote: *A History of Greece*, III, 430.

profound appreciation of the beautiful for its own sake. "It is a disgrace," he said, "to grow old through sheer carelessness before seeing what manner of man you may become by developing your bodily strength and beauty to their highest limit."⁵² This beauty lay essentially in proportion. Socrates noted that long-distance runners had thick legs and narrow shoulders, while gladiators and wrestlers had broad shoulders and small legs. He recommended dancing because no part of the ". . . body remained idle; neck and legs and hands together, one and all were exercised. That is how a man should dance, who wants to keep his body light and healthy."⁵³ Athletic exercises, moderately employed, are useful to men, but they are evil when carried to excess, said Aristotle; and he observed that Olympic victors, though they had gained prizes in youth, were rarely able to win them as men also, the early excessive training having "exhausted their constitutions."⁵⁴

The highest general utility of physical culture, its function as governor that regulates the health of the body on which everything we do depends, was stressed by Socrates: ". . . in everything that men do the body is useful; . . . even in the process of thinking, in which the use of the body seems to be reduced to a minimum, it is matter of common knowledge that grave mistakes may often be traced to bad health. And because the body is in a bad condition, loss of memory, depression, discontent, insanity often assail the mind so violently as to drive whatever knowledge it contains clean out of it."⁵⁵

While the state encouraged sport for the sake of military ends, and poets, artists, and philosophers extolled the dangerous, heroic, strong, and beautiful as attractive in themselves, the original and basic impetus to sports lay, as Philostratos said, within man's nature.⁵⁶ The conspicuous love of sports is pre-eminently an indication of the strength of the drive to activity, the will to life, to superiority, to victory, to power, that was characteristic of the Greeks. Similar primitive, natural tendencies, varying in intensity, existed in other ancient nations, as we have seen, but various factors—geographic, climatic, social, political⁵⁷—led the Greeks to indulge in sportive, physical activity to a degree unknown to less accessible, less mobile, less democratic societies of the Orient.

This strong drive to activity, to life, linked men to the gods. The essence of the gods is power, superiority. The stronger, the more active, the more cunning are superior men. Religion reflects the life of a people; in it their aspira-

⁵² Xenophon: *Memorabilia*, III, 12, 1-5. S. Trans. by E. C. Marchant. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁵³ Xenophon: *Symposium*, II, 17. Trans. by O. J. Todd. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁵⁴ *Politica*, VIII, 4.

⁵⁵ Xenophon: *Memorabilia*, III, 12, 5-6. Trans. by E. C. Marchant. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁵⁶ *Concerning Gymnastics*, 16.

⁵⁷ Jüthner: "Gymnastik," *Real-Encyclopädie*, VII, Pt. II, 2035.

tions are revealed. An essentially religious nature is evident in Greek sports.⁵⁸ The origin of athletic contests, and even training for them, is credited to various gods and demigods—Prometheus, Hermes Enagios, the maid Palaistra, Theseus, Heracles—but, of course, the Greeks did not always agree about their own traditions.⁵⁹ Athletic festivals were first held in religious veneration of the dead. The Greeks fancied their gods playing, just as they themselves loved to do, except that they were more powerful, swifter, surer to win. Deities pursue such a royal sport as hunting, and also a democratic pastime like fishing.⁶⁰ "Painful" contests raised man's stock of heroic virtue to a higher level and brought him closer to the gods. To win victories in sport was godlike; on occasion it brought men honors commonly accorded to the gods. Herodotus tells of a certain Philip, "an Olympian victor," the "handsomest Greek of his day," for whom a temple was erected and divine honors appointed.⁶¹ Generally, however, Greeks did not look favorably on such high fortune, since they remembered that the gods could both raise and throw men down with ease. Plutarch says that someone advised Diagoras, who had himself been crowned at Olympia, and had seen his sons and grandsons victors: "Die now, Diagoras; thou canst not ascend to Olympus."⁶² Youth seems immortal, however; and play is the mirror of youth. Pindar, singer of victors, seems to see in men at play some kinship with the agelessness of the gods:

So they take their delight, whenever the games are appointed.

One would believe them to be immortal and ageless for ever. . . .⁶³

ATHENIANS AT PLAY BEFORE THEIR GODS

The union of sport and religion in festivals, wherein the Muses also had a part, had a definite bearing on the movement for unification within various Greek city-states and also throughout the nation. This relation is shown both in local and national athletic festivals. Though Athens was by no means most renowned for athletic prowess, her delight in festivals seems to have exceeded others, judging from the number of them and the amount of time devoted to them. Besides these there were many beyond her borders,⁶⁴ in which Athenians might participate as onlookers and as contestants, even as citizens from elsewhere came to share the sportive hospitality of Athens. Mommsen⁶⁵ has made

⁵⁸ Lawton: *Successors of Homer*, pp. 133 ff.

⁵⁹ Pausanias, I, 39, 3; Theocritus: *The Idylls*, 24; Philostratus: *Concerning Gymnastics*, 16; Forbes: *op. cit.*, p. 7.

⁶⁰ Butcher: *op. cit.*, p. 263.

⁶¹ Bk. v, 47.

⁶² *Pelopidas*, 34.

⁶³ Lawton: *Successors of Homer*, p. 134.

⁶⁴ Nilsson: *Griechische Feste von Religiöser Bedeutung*, *passim*.

⁶⁵ *Feste der Stadt Athen im Altertum*, *passim*.

up from a host of sources an extensive calendar of Athenian festivals that are known to us. Apart from various monthly sacrifices and ceremonies, he mentions forty festivals—some of them, the country Dionysia, for example, being observed independently in practically every village of Attica—ranging from the one-day Feast of Kronos, at the year's beginning, to the Diisoteria which came at its close. Of some of these little is known except the name; there may have been many others of which even that bare record has been lost. About seventy days of the year⁶⁶ are said to have been devoted to celebrations. These were to the Greeks days of rest, recreation, patriotism, and religious devotion, as Sundays and various national holidays are to peoples of the modern world. The "holy festivals," says Plato, were ordained of the gods, who pitied the laborious toils of men and sought thereby to "alternate rest with labour."⁶⁷

To catalogue all the known festivals would be tedious and unprofitable, but a rough, twofold classification may be noted: first, festivals consisting of religious processions, sacrifices, feasting, drinking, and competitions in music, dancing, recitation, dramatic performances; and second, those whose religious and artistic features are known to have been combined with athletic contests. To the first category belong: the festival of Kronos, celebrated on July 12, marked by the feasting together of masters and servants in honor of the divinities of heaven and earth, Kronos and Rhea;⁶⁸ the Synocchia, in commemoration of the unification of Athens, attributed to Theseus,⁶⁹ and held in honor of him and Athena; the Thesmophoria, a joyous, five-day women's festival, held in October in honor of Demeter, for which a solemn nine-day preparation was required; the Lenaea, one of many lesser feasts in honor of the wine press, celebrated in January with drinking of new wine, a great banquet, and dramatic competitions; and the Great Dionysia, a March festival of five days or more, in which contests were held in boys' and men's choruses, tragedies, and comedies.⁷⁰ In the second category, in which athletic events had a place, were many of the most famous festivals and others less well known; the Panathenaea; the Heraclea at Marathon and in the Kynosarges at Athens; Eleusinia; Oschophoria; Thesea; Epitaphia; the Apaturia, with which were associated the Prometheus and the Hephaestia; the country Dionysia; Munychia; Aiantea; the Athenian Olympia; Bendidea; and the Diisoteria.

The administration of public sacrifices and the taking of auspices were lodged, according to Aristotle, in the hands of Commissioners of Public Worship (*hieropoiei*), elected by lot by the Assembly. Ten others, similarly chosen,

⁶⁶ Whibley: *Companion to Greek Studies*, p. 324.

⁶⁷ *Laws*, II, 653. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

⁶⁸ Mommsen: *op. cit.*, pp. 32 ff.

⁶⁹ Thucydides, II, 15.

⁷⁰ Mommsen: *op. cit.*, pp. 35 ff., 308 ff., 372 ff., 428 ff.

known as Annual Commissioners, had charge of certain sacrifices and administered all the quadrennial festivals, save the Panathenaea. These included the festival of Deios, which Athens had taken under her care, Brauronia, Heraclea, Eleusinia, and the Hephaestia.⁷¹ Ten Commissioners of Games (*athlothētai*), also chosen by lot, after passing an examination, served four years. Their duties were to take charge of the Panathenian procession, the contests in music and gymnastics, and the horse races; and to provide the new peplos for Athena, as well as prize oil and vases for the victorious contestants.⁷²

Little is known of the physical contests associated with these festivals, save the Panathenaea. The Heraclea at Marathon and in the Kynosarges at Athens were midsummer festivals. At the Marathonian, gymnastic contests were held and the victors well rewarded.⁷³ Whether athletic contests were conducted at the Kynosargean Heraclea, or Diomea,⁷⁴ is doubtful. The Eleusinian ceremonies were celebrated each year,⁷⁵ partly in Athens, partly in Eleusis. Though not a national festival, they drew such vast crowds from abroad as to give the appearance of a Hellenic festival.⁷⁶ Occupying altogether about two weeks' time, they were marked by an assemblage of the people in Athens, addresses, purifications, feasting, fasting, sacrifices, the procession of the holy child Iachus to Eleusis—with dancing, games, and other aids to merriment. At Eleusis itself three to four days were devoted to celebrations, the most important feature being the dramatic unfolding of the Great Mysteries. The Eleusinian contests may have merited the claim to greater antiquity than those of Olympia itself. At any rate, an ancient *halteres*, belonging perhaps to the early sixth century, suggests a long tradition of competitive sports at Eleusis. The contests of the festival have been placed after the Mysteries by some; Mommsen, however, holds they must have preceded them.⁷⁷ The order may have varied at different periods. The program included gymnastic contests and horse races, the victors receiving as prizes certain measures of corn or barley at the hands of the Eleusinian priests.⁷⁸ Pindar names two who had conquered at Eleusis: Epharmostus in wrestling and Herodotus of Thebes, in the chariot race.⁷⁹

The Oschophoria, Thesea, and the Epitaphia were closely associated, and all took place in October. At the Oschophoria two youths from each tribe, and from the better families, raced in pairs from the temple of Dionysius to Athena

⁷¹ Aristotle: *Atheniensium Respublica*, 54; Mommsen: *op. cit.*, pp. 325 f., 340 f.

⁷² *Ath. Resp.*, 60, 62.

⁷³ Mommsen: *op. cit.*, p. 167; Pindar: "Olympian" ix, str. 4; xiii, ep. 5.

⁷⁴ Aristophanes: *The Frogs*, 650-1.

⁷⁵ Mommsen: *op. cit.*, pp. 184, 244 f.

⁷⁶ Blümner: *The Home Life of the Ancient Greeks*, p. 378.

⁷⁷ *Op. cit.*, p. 184; Blümner: *op. cit.*, p. 382.

⁷⁸ Mommsen: *op. cit.*, pp. 190, 197.

⁷⁹ "Olympian" ix, str. 4; "Isthmian" i, ant. 4.



THE FOOT RACE

Antikensammlungen, Munich (Courtesy, Professor C. A. Robinson, from G. W. Botsford and C. A. Robinson, *Hellenic History*, Rev. Ed., Pl. 21, The Macmillan Company, New York, 1948)

Skiras, bearing vine branches laden with grapes. The ten winners were rewarded with a fivefold drink (*pentaploa*) of wine, honey, cheese, barley, and oil.⁸⁰ These races preceded the *Thesca*, a yearly festival primarily for Athenian youth, commemorating the home-coming of Theseus, first established about 475 B.C. when the bones of Theseus were brought from Skyros to Athens.⁸¹ This festival was marked by a procession, sacrifices, a great, free feast for citizens, and many gymnastic contests—the long race, stade-race, double race, wrestling, boxing, pancration, race in heavy armor, hoplomachy, and throwing the javelin. The contests were arranged by groups according to age—a first, second, and third class for Attic boys, a fourth open to non-Attic youth as well, and a fifth class for men. The long race, race in heavy armor, javelin-throwing, and the contest in hoplomachy were entered apparently by older youth and the men. Only Attic victors are recorded for the first three classes; but in the fourth and fifth there were foreign victors, though few in number.⁸² Besides these there were horse races and other cavalry competitions for several classes—in one record, a chariot race—and torch races for boys, youth, and men. The ceremonies of the *Epitaphia*, in honor of those fallen in battle, concluded the *Thesca*⁸³ and included similar exercises—foot races, a race in armor, torch races for youth and men, and military exhibitions—besides sacrificial and musical ceremonies.

The *Apaturia* was a three- or four-day festival about October 19 to October 21, celebrated generally in Attica as well as in Athens, at which was held a feast of the phratrics where newborn children of citizens were presented before Zeus and Athena and legitimized. Closely associated with the *Apaturia* were the musical contests and torch races in honor of Hephaestus, in which the celebrants, dressed in their best, lighted torches at the hearth on which the sacred sacrifice was burning, and sang praises to the god of fire. Similar honors were paid to Prometheus.⁸⁴

Throughout the winter, beginning with November, little attention was given to strictly athletic events; but festivals of a musical and dramatic character were numerous.⁸⁵ In December, and also later in some places, when country folk had little to do, the "lesser" or country *Dionysia* were celebrated by villages and individual families throughout Attica, as elsewhere in Hellas. At these village festivals there were choral and dramatic contests and such rural sports as ἀσκήλασμός—trying to stand on one leg on an oiled wine sack.

April was a month of renewed activity, particularly on the sea. The Del-

⁸⁰ Athenaeus, xi, 495-6; Mommsen: *op. cit.*, p. 283.

⁸¹ Mommsen: *op. cit.*, p. 289.

⁸² *Ibid.*, pp. 294 ff.

⁸³ *Ibid.*, pp. 305 ff.

⁸⁴ *Ibid.*, pp. 327 ff., 339 ff.

⁸⁵ Gardner and Jevons: *A Manual of Greek Antiquities*, pp. 291 ff.

phinia, held on April 6, was sacred to Apollo and Artemis. At the Munychia, held on April 16 in honor of Artemis, and the Aiantea, named for Ajax and celebrating the victory at Salamis, there were boat races in the harbor and a procession; then a trip to Salamis, marked by a procession, sacrifices to Zeus, a boat race in honor of Ajax in specially constructed boats owned by the state,⁸⁶ a long race between youth of Salamis and youth of Athens, and torch races.⁸⁷ The Athenian Olympia, established by the Pisistratids, when the building of a temple to Olympian Zeus was begun, likewise fell in April. These games, equestrian and gymnastic in character, probably lapsed for a time, for Athens' resources declined and she was compelled to curtail festival as well as other expenses; but with the completion of the temple by Hadrian they were revived and extensively developed.⁸⁸ In May and June the sports calendar drew to a close with the Bendidea and the Diisoteria. The Bendidea, a festival in honor of the Thracian goddess Bendis, introduced in Athens about the time of Pericles, included processions by day, a novel, outlandish torch race on horseback in the evening, and revels at night.⁸⁹ The rites of Diisoteria, in honor of Zeus Soter, seem to have been celebrated partly at Athens but chiefly at the Piræus, where a boat race by the ephēbi was a prominent feature.⁹⁰

Towering above all Athenian festivals in magnificence, variety of display, and cultural and political significance was the Great Panathenaea, symbolizing the unification of the Attic land and its inhabitants under the hegemony of Athens. The festival, held quadrennially in the third year of the Olympiad, lasted from July 21 to July 29. Though credited to Theseus, the Great Panathenaea was instituted or, in any case, greatly extended and perfected at the time of Solon and Pisistratus.⁹¹ A less imposing festival of Athena, of earlier origin, the Little Panathenaea, continued to be held in the years between celebrations of the great festival. It is doubtless an outgrowth of these ancient "Athenian games" that we see in the Great Panathenaea, said to have been begun in 566 B.C. Solon, it is known, had encouraged athletics by establishing rules for gymnasia and by awarding prizes of five hundred drachmas to Olympian victors, and smaller ones to victors in less famous games.⁹² Pisistratus, like many another tyrant, attached great importance to religious festivals. Ambitious for the commercial advancement, wealth, power, and leadership of Athens, he took under his care the old Delian festival, a religious event of great

⁸⁶ Gardner: "Boat-races at Athens," *Jour. Hellenic Studies*, II, 316; Dumont: *Essai sur l'Éphébie Attique*, I, 274 ff.

⁸⁷ Mommsen: *op. cit.*, pp. 463 f.

⁸⁸ *Ibid.*, pp. 465 ff.

⁸⁹ *Ibid.*, pp. 488 ff.

⁹⁰ *Ibid.*, pp. 524 ff.; Dumont: *op. cit.*, I, 291.

⁹¹ Pausanias, VIII, 2, 1; Plutarch: *Theseus*, 24; Mommsen: *op. cit.*, pp. 41 ff., 153; Hyde: *op. cit.*, pp. 17 f.

⁹² Gardiner: *op. cit.*, p. 74.

moment to all Ionians since ancient days, purified the sanctuary, and established the quadrennial festival, introducing equestrian contests for the first time. Language and literature kept pace with religion as unifying influences. Understanding the significance of cultural matters, and hoping therein also to make Athens the leader, Pisistratus is said to have provided for the first time an authoritative edition of the Homeric poems and caused their recitation to be made a regular part of the Great Panathenaea. In the Periclean age the Odcon was erected, designed especially for the musical contests.

The program of the Great Panathenaea in the fourth century devoted three days to musical contests, which Pericles is said to have instituted;⁹³ two, to gymnastic contests; one, at least, to equestrian events; one, to Pyrrhic dances and the manly beauty contest; one, to torch races, night revels, sacrifices, a great feast, and the magnificent Panathenian procession in which a new peplos was carried to the virgin goddess of the Acropolis; and another, the ninth day, to a regatta.

Victors were rewarded with various gifts: oil from the sacred olives; vases, often decorated with likenesses of Athena and a scene of the contest in which victory was gained; silver and gold, in the case of musical contests;⁹⁴ and an ox for victors in Pyrrhic dances.⁹⁵ The value of prizes varied naturally with the contests, ranging from one amphora of oil (the second prize in the contest of throwing the javelin on horseback) to 140 amphorae, which was first prize for the chariot race with grown horses. First prizes were generally five times the value of the second.⁹⁶ The oil was requisitioned by the *archon* from the groves of sacred olives at the rate of three-fourths of a pint for each plant, and turned over to the treasurers who gave it to the Commissioners of the Games, by whom it was adjudged to the victors.⁹⁷

That the athletic contests for boys and men existed in the sixth century and included the usual contests of the Olympian festival is shown by early prize vases. Later, by the fourth century, contests for boys, youths, and men were distinguished. The contests for boys and youths and the oil prizes were as shown in Table I in the early fourth century.

In the third century and the second, the events listed in Table II, open to

⁹³ Mommsen: *op. cit.*, p. 153; Plutarch: *Pericles*, 13.

⁹⁴ Aristotle: *Ath. Resp.*, 60.

⁹⁵ Blümner: *op. cit.*, p. 374.

⁹⁶ Whibley: *op. cit.*, p. 325; Mommsen: *op. cit.*, pp. 70, 85.

⁹⁷ Aristotle: *Ath. Resp.*, 60.



BOYS WRESTLING

National Museum, Athens (Courtesy, The Metropolitan Museum of Art, New York)

TABLE I EVENTS AND PRIZES FOR BOYS AND YOUTHS ⁹⁸

Boys			Youths		
Events	First Prize	Second Prize	Events	First Prize	Second Prize
Stade-race	[50]	10 Amphorae	Stade-race	60	12 Amphorae
Pentathlon	30	6 "	Pentathlon	40	8 "
Wrestling	30	6 "	Wrestling	40	[8] "
Boxing	30	6 "	Boxing	40	8] "
Paneration	40	8 "	[Paneration	50	10] "

TABLE II CONTESTS FOR BOYS, YOUTHS, AND MEN ⁹⁹

Boys	Youths	Men
Long race	Stade-race	Long race
Stade-race	Pentathlon	Stade-race
Double stade-race	Wrestling	Double stade-race
Wrestling	Boxing	Horse race
Boxing	Paneration	Pentathlon
Paneration		Wrestling
		Boxing
		Paneration
		Hoplite contest

boys, youths and men, are believed to have occurred in the order indicated, beginning with the long race for boys and following through to the hoplite contest for men.

While the contests of the gymnasium were no respecters of wealth, the sports of the turf favored the long purse. In Homeric times equestrian events

⁹⁸ Mommsen: *op. cit.*, p. 70.

⁹⁹ *Ibid.*, pp. 70 f.

were associated with nobility and wealth. The four-horse and two-horse chariot races and the simple horse race were evidently a favorite pastime of the aristocratic element of Athenian society in the sixth century B.C., judging from the Panathenian amphorae; and though Solon may have sought to discourage such great devotion to it,¹⁰⁰ the love of the turf seems to have triumphed over gymnastics, as far as families of means were concerned. During the Transition period the popularity of the racecourse seems to have been extremely high. That this had something to do with depleting the palaestra and gymnasium seems quite probable; it may well be, too, that the morals of luxury-loving, spendthrift youth were undermined more effectively at the racecourse than in the circles of the new learning. That it contributed to the financial ruin of families, Aristophanes informs us in inimitable fashion. Old Strepsiades tells over the tale of indebtedness, incurred by his son for horses, chariots, and wagers, and solemnly concludes:

A galloping consumption caught my fortunes.¹⁰¹

At the Panathenian festival equestrian contests were evidently very popular, one day, or perhaps two, being given to them. That they increased in fame is attested by the number of wealthy and noble folk who came from abroad to participate in them. Even a few foreign women entered the races. In the second century B.C., when equestrian events sometimes numbered as many as twenty-four or more, the program for foreign visitors seems to have been more or less independent—a "contest within a contest." The number as well as the quality of folks from abroad seems to have varied from time to time; the splendor of races fluctuated sympathetically, a somewhat restricted program being offered when Athenians were more to themselves.¹⁰²

Military displays and contests were prominent features of the local program. Though cavalry was not a strong branch of Athenian forces, at one time the well-to-do citizens furnished horses for the army, and the Council examined the condition of the cavalry.¹⁰³ These competitions must have had a serious significance in the fourth century, as a stimulus to interest in the cavalry forces of the city; but later, when Athenian military power was a thing of the past, they were nothing more than a show to delight the spectators. Indicative of the strength of the military tradition is the prominence of the *apobates*, a race which seems generally to have been first on the program,¹⁰⁴ though the order of the events varied. The *apobates*, associated with Attica and Boeotia, and tracing its origin back to Erechtheus, was a chariot race in which several teams participated, each consisting of a charioteer and a warrior. The latter, armed

¹⁰⁰ Gardiner: *op. cit.*, p. 74.

¹⁰¹ *Clouds*, 74.

¹⁰² Mommsen: *op. cit.*, pp. 86, 88 ff., 153.

¹⁰³ Aristotle: *Ath. Resp.*, 49.

¹⁰⁴ Mommsen: *op. cit.*, p. 95.

with triple-crested helmet and a small round shield, mounted and dismounted from the chariot at full speed. The finish of the race appears to have been unusual in that, having dismounted, the several warriors raced to the goal, while the charioteers themselves contended, there being thus two winners, a charioteer and an *apobates*.¹⁰⁵

A splendid military display seems to have been provided by the *anthippasia*, a mass contest in which the cavalry of five tribes opposed that of the other five, the prize going to the best tribe or to its leader. Xenophon, zealous propagandist for improvement of cavalry, gives an account of the *anthippasia* as it ought to be conducted: "When the Hippodrome is the scene of the display, the right plan would be that the men should first be drawn up on a front broad enough to fill the Hippodrome with horses and drive out the people standing there. In the sham fight when the regiments pursue and fly from one another at the gallop in two squadrons of five regiments, each side led by its commander, the regiments should ride through one another. How formidable they will look when they charge front to front; how imposing when, after sweeping across the Hippodrome, they stand facing one another again; how splendid, when the trumpet sounds and they charge once more at a quicker pace! After the halt, the trumpet should sound once more, and they should charge yet a third time at top speed; and when they have crossed, they should all range themselves in battle line preparatory to being dismissed, and ride up to the Council, just as you are accustomed to do. I think that these manoeuvres would look more like war and would have the charm of novelty. It is unworthy of his high rank that a cavalry commander should gallop at a slower pace than the colonels, and ride in the same way as they do." ¹⁰⁶

From the sixth to the fourth century B.C. the Panathenian Games seem to have been held at Echelida, a deme near the Piraeus; but about 338 the gymnastic contests took place in the splendid Panathenian stadium built under Lycurgus. From Xenophon's account of the *anthippasia*, it appears that equestrian events were still held at times in the hippodrome at Echelida.¹⁰⁷

Prizes for equestrian victors exceeded greatly those for gymnastic events, possibly because the maintenance of horses and chariots was expensive, and also because the prizes must be commensurate with the quality of noble, even royal, contestants. Even though liberal, the prizes certainly never covered expenses; for that reason, probably, the racecourse continued to be for those Athenians and foreigners who could afford to indulge luxurious tastes, and there was no host of professional equestrian contenders running from place to place to pick up prizes, a practice which grew more and more among pro-

¹⁰⁵ *Ibid.*, pp. 89 ff.; Hyde: *op. cit.*, pp. 272 ff.

¹⁰⁶ Xenophon: *The Cavalry Commander*, III, 10-3. *Scripta Minora*, trans. by E. C. Marchant. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁰⁷ *Ibid.*, III, 11; Mommsen: *op. cit.*, pp. 84, 97 f.

fessional boxers and wrestlers. A few figures, gleaned from the third and second centuries B.C., are significant of the intrusion of professional athleticism and the decline of general participation of Athenians in the gymnastic contests. Of "some sixty victors" whose native lands are recorded, only seven came from Athens, five of whom won the pancration.¹⁰⁸

Though the equestrian events varied considerably from time to time, the following program, although clearly not complete, shows the order and the character of six of the contests and the prizes awarded in the early fourth century.

TABLE III EQUESTRIAN EVENTS, AND PRIZES¹⁰⁹

Events	First Prize	Second Prize
Colts: chariot race	40	8 Amphorae
Horses: chariot race	140	40 "
War horses: race	16	4 "
War horses: chariot race	30	6 "
Chariot procession	4	1 "
Javelin contest on horseback	5	1 "

Next in the order of events, on the seventh day, came Pyrrhic dances, performed to the stirring notes of the flute, simulating the movements of warlike encounter and symbolizing the triumph of Athena and the Olympian gods over their enemies. These dances, which were perhaps instituted in the sixth century, following earlier Spartan usage, were given a place in both the "little" and the "great" Panathenaea. From about the time of Pisistratus, it seems, the Pyrrhic contests were engaged in by groups of eight against eight, at first in two, and later in three, age-classes—boys, youths, and men—each group of eight being selected, equipped, and led by a choregus, as was the cyclic chorus. The prize to the winners of each class was an ox worth one hundred drachmas, destined for sacrifice and perhaps led by the victors in the great procession on the following day. Whether each age-class contest took place separately or whether all three were performed simultaneously is uncertain, but the combined action would most vividly realize the purpose of the dance, i.e., portrayal of conflict on the field of battle.¹¹⁰

Contests in manly vigor and beauty (εὐανδρία) followed the Pyrrhic dances on the seventh day. There seems to have been different types of Euandria, peaceful and military, one for "old men" another for younger men.¹¹¹ The prizes, too, may have reference to two different contests, one prize being an ox worth a hundred drachmas, and another, a shield.¹¹² These contests in manly

¹⁰⁸ Mommsen: *op. cit.*, p. 83.

¹⁰⁹ *Ibid.*, p. 85.

¹¹⁰ *Ibid.*, pp. 99 f.

¹¹¹ Xenophon: *Memorabilia*, III, 3, 12; *Symposium*, IV, 17; Mommsen: *op. cit.*, pp. 102 f. A beauty contest for women is revealed by inscriptional evidence, but in Arcadia, not Athens.—Ringwood: *Agonistic Features of Local Greek Festivals*, p. 7.

¹¹² Aristotle: *Atth. Resp.*, 60; Mommsen: *op. cit.*, p. 101.



HORSEMEN, PANATHENIAN PROCESSION

(From a photograph in the author's collection)

beauty and vigor, like the Pyrrhic dances, were liturgies, performed under the direction of wealthy citizens and paid for by them.¹¹³ The religious bearing of the contest is seen in the fact that the victors bore consecrated olive branches in honor of Athena.

Following the *εὐανδρία* there was another liturgical event, a torch race, under the direction of gymnasiarchs, the prize for the winner being a water jar worth thirty drachmas. The torch races began, apparently, in the evening and were followed by night revels, singing, and dancing.¹¹⁴

Probably the stateliest moment achieved by any Greek festival is the Panathenian Procession. In this, the crowning event of the nine-day festival, the whole of Athens and her realm seem to move forward—those who have competed, lost, and won: young men, old men, women, and girls; citizens and metics; armed men on foot, on horseback, and in chariots; musicians, choruses, *archons*, and other officials of the city. Under the amiable eyes of Zeus and the whole company of the gods, all move forward to make a great sacrifice, and to present the goddess with a new dress, woven by matrons and

¹¹³ Blümner: *op. cit.*, pp. 374 f.

¹¹⁴ Euripides: *Children of Hercules*, 777–84; Mommsen: *op. cit.*, pp. 101, 103 ff.; Blümner: *op. cit.*, pp. 375 f.

daughters of her city, and borne in procession to Athena in her temple. There she stands, flanked by the priest and the Attic maidens with sacred vessels—a scene made vivid on the frieze of the Parthenon, and recalled by Ovid:

'Twas now the Feast when each Athenian maid
Her Yearly homage to Minerva paid;
In canisters, with garlands cover'd o'er,
High on their head, their mystic gifts they bore. . . .¹¹⁵

Aristophanes tells us that the test of the old education, worthy of freemen, was not—

Who can make a fine oration?

Instead—

It was, who can row the best?¹¹⁶

Participation of the *ephebi* in boat races was a part of certain Athenian festivals.¹¹⁷ On the final day of the Great Panathenaea, following the procession, feasting, and revelry, a regatta was held—an event added perhaps in the time of Themistocles and symbolic of Athenian ambitions on the sea. Little is known of the contest, but competition was by tribes, each presumably being represented by a ship. There were at least two prizes: the first, three hundred drachmas, or three oxen of that value, plus a sum of two hundred drachmas—the allowance for a feast; the second, two hundred drachmas. An *ephebic* relief of the Roman imperial period, dug up at Athens, depicting a boat race, torch race, and wrestling, may refer to the Panathenian contest; or it may be associated with the Munychia.¹¹⁸ Pausanias mentions a ship near the Areopagus “made for the procession at the Panathenian festival.”¹¹⁹ If the mind's eye were to follow the comic poet Plato, in his allusion to the tomb of Themistocles on the promontory of the Piraeus, one might catch a glimpse of merchantmen—

And watch the galleys as they race below.¹²⁰

PROFESSIONALISM AND THE DECLINE OF ATHLETICS

It has been noted that physical training was originally closely associated with service to the state. The flood tide of interest in it came with the rise of Athens

¹¹⁵ *Metamorphoses* (Dryden), II, 711 et seq.

¹¹⁶ *Wasps*, 1094–8. Trans. by B. B. Rogers. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹¹⁷ Dumont: *op. cit.*, I, 274 ff.; Gardner: “Boat-races among the Greeks,” *Jour. Hellenic Studies*, II, 90–7; “Boat-races at Athens,” *ibid.*, II, 315 ff.

¹¹⁸ Dumont: *op. cit.*, I, 274; Mommsen: *op. cit.*, pp. 145 f.

¹¹⁹ *Bk. I*, 29, 1.

¹²⁰ Clough: *Plutarch's Lives*, I, 268.

to leadership in the world; the ebb began with her waning and decay. Just as success in the Persian wars and imperialistic expansionist ambitions had stimulated interest in physical training, so the Peloponnesian struggle, defeat, and subsequent contraction of Athens' sphere in the century following brought inattention to physical training and contempt for the soldierly ideal. For when the city had lost its independence, when it came at length to rely on the Pax Romana, what son of Athens could take seriously the ideal of military service on her behalf? The citizen-soldier had been replaced by the mercenary. The social purpose was lost; the individual became an end in himself. Amateur athletics went out; professional athletics came in. The decline of attention to physical fitness in the Transition was noted disapprovingly by Xenophon: Athenians "not only neglect to make themselves fit, but mock at those who take the trouble to do so."¹²¹ Horses and chariots became more popular with the rich and aristocratic than the grueling exercises of the gymnasium. Isocrates declared that public festivals had become extravagant, ostentatious, empty shows in contrast to the "sane moderation" that previously characterized them.¹²² The new intellectualism also offered serious competition. Aristophanes observed that the desire of all in the state was to "harangue" and "debate," and consequently the palaestras were "deserted and empty."¹²³ The disgruntled author of *The Polity of the Athenians* complained that "citizens devoting their time to gymnastics and to the cultivation of music are not to be found in Athens . . ." ¹²⁴ as they were in the old days before the advent of democracy. Modern archaeologists corroborate these views, having found evidence of the decline in the fact that artistic remains of the latter part of the fifth century and the fourth show less and less attention to the exercises of the palaestra and more to "conversation scenes." ¹²⁵

Professionalism negated the ideals of early Athenian physical culture. Those ideals, doubtless, had never been fully realized. There was, from the very beginning, an element in athletics which, carried to excess, proved destructive. The hero-worship, accorded to the successful athlete of Pindar's day and earlier, led ultimately to the sacrifice of everything for the sake of success. Instead of harmony of development and general excellence in many sports, professionalism required specialization in particular sports for the sake of winning. This produced a one-sidedness previously unknown. Socrates noted the overdevelopment of the legs of runners and of the upper part of the bodies of boxers. Artis-

¹²¹ *Memorabilia*, III, 5, 15.

¹²² *Areopagiticus*, 53.

¹²³ *Frogs*, 1069-70.

¹²⁴ *Op. cit.*, I, 13.

¹²⁵ Manning: "Professionalism in Greek Athletics," *Class. Weekly*, XI, 76; Forbes: *op. cit.*, p. 89.

tic portrayals of athletes in the preprofessional period often do not in themselves indicate the sport in which the subject is engaging, unless symbolically by a thong for a boxer, discus and *halteres* for other sports;¹²⁶ but later statues show clearly the specialty of the athlete by his exaggerated characteristics. The seated bronze figure of a boxer by Apollonius, of the first century B.C.; the Farnese Heracles by Glycon, about 200 A.D.; and the mosaic figures of boxers in the baths of Caracalla—all show the effects of overspecialization. Galen's "Exhortation à l'Étude des Arts" calls attention to the brutalizing effect of the professional tendency. Of boxers and pancratiasts, he says, their "faces are disfigured and hideous to see . . . their limbs dislocated or broken," their eyes out of their sockets.¹²⁷ Pausanias cites the brutal practices of Sostratus, the pancratiast, and Lcontiscus, a wrestler.¹²⁸

Specialization changed also the habits of athletes. Philostratos says that the athletes of ancient days ate barley bread, unleavened wheaten bread, and other simple foods.¹²⁹ Vegetables, cheese, figs, and a limited amount of meat and wine seem to have been a part of their diet.¹³⁰ Dromicus of Stymphalus¹³¹ and Pythagoras of Samos were credited, near the middle of the fifth century, with the discovery of the potency of a meat diet, and thenceforth the use of flesh in excessive quantities became common. Euripides declared the athlete a "slave to his jaw, and a victim of his belly." Athenacus related fabulous tales concerning the capacity of famous athletes for food, and concluded: "In fact, it is no wonder that these men became gluttons; for all who go in for athletic contests are taught to eat heartily in connexion with their gymnastic exercises."¹³² Philostratos looked with profound contempt upon the elaborate regulation of the diet of athletes, which made them fastidious yet voracious eaters, disinclined to activity, and utterly unfit for anything. Thus, for example, directions concerning the use of pork, prescribed "that pigs on the sea-coast are to be considered unusable, on account of the sea garlic of which the shores and the sand dunes are full; also to avoid those from near the rivers because they eat crayfish; and, for a strict diet, to use only those fattened on cornelian cherries and acorns."¹³³ Galen doubtless had the overstuffed professional boxers, wrestlers, and pancratiasts in mind when he said that most forms of exercise ". . . make men lazy, slow-witted, and fond of sleep." "Many wrestlers become so fat that

¹²⁶ Pausanias, v, 26, 3; 27, 12.

¹²⁷ Daremberg: *Oeuvres de Galien*, I, 40 f.

¹²⁸ Bk. vi, 4, 1-3.

¹²⁹ *Concerning Gymnastics*, 43.

¹³⁰ Cardiner: *Athletics of the Ancient World*, p. 101; Blümner: *op. cit.*, pp. 303 f.

¹³¹ Pausanias, vi, 7, 10.

¹³² Athenacus, x, 413. Trans. by C. B. Gulick. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹³³ *Concerning Gymnastics*, 44.

they have difficulty in breathing. . . ." They would not make good soldiers, or good servants of the state in any way. "You might sooner trust pigs than them." ¹³⁴

Professionalism involved, as a matter of necessity, a high development of the trainer's art. Many athletes doubtless employed their experience to good advantage and became trainers, as did Iccus, winner of the pentathlon at Olympia, who became "the best trainer of his day." ¹³⁵ In early times the trainers had been nothing more than experienced, successful athletes. But with specialization and the development of medical and dietetic aspects of training, Philostratos says it became necessary, in order to improve athletics and safeguard the athletes, that trainers have a scientific preparation. These "scientific" experts became equal in importance to the athletes themselves, in fact, were often given credit for the victories of their protégés. ¹³⁶ Trainers and those whom they trained eventually gained a monopoly in the world of competitive sports. Amateurs had little chance of success against them. ¹³⁷ Athletics had become a career. Only at Olympia, where strict rules were enforced, did the repute of amateurism survive for long, despite the rising tide of professionalism and attendant pot-hunters. There "the contests remained under fairly honest management." ¹³⁸

In the course of time, as training became more and more complex, much was made of strict observation of set rules. To this highly developed system, combined with newfangled dietetic and medical notions, often little understood and irrationally followed, Philostratos traced the degeneration of athletics in his day. Boys were often excessively trained too early and thereafter were good for nothing—a practice which Aristotle condemned. ¹³⁹ Most injurious, some thought, was a system of exercises which was developed and then followed slavishly, without due regard to individual requirements. Cerenos, from Naukratis, one of the best wrestlers of his day, Philostratos says, was killed by this stupid system, as applied by his trainer. ¹⁴⁰ The fourfold series of exercises which have wrought such disaster, Philostratos describes as follows:

"By tetrads is to be understood a cycle of four days, on each of which something different takes place. On the first, the athlete is prepared; on the second, intensively engaged; on the third, given over to recreation; and, on the fourth, moderately exerted. The preparatory training is, however, an energetic, short and rapid movement, which arouses the athlete and prepares him for the com-

¹³⁴ Wright: *op. cit.*, p. 117.

¹³⁵ Pausanias, vi, 10, 5.

¹³⁶ *Concerning Gymnastics*, 13-5, 20-3, 53-4.

¹³⁷ *Real-Encyclopädie*, II, Pt. II, 2050.

¹³⁸ Manning: *op. cit.*, loc. cit., xi, 77.

¹³⁹ *Politics*, viii, 4.

¹⁴⁰ *Concerning Gymnastics*, 54.

ing exertion; the intensive, an irrefutable test of the inner strength of constitution; the recreation, the period in which movement is again systematically resumed; the day of moderate exertion teaches escape from the opponent, but if he himself flees, not to relax. And since they plod through this entire method of training systematically, and always repeat the tetrads, they deprive their science of intelligent understanding in respect to the condition of the athlete to be trained."¹⁴¹

How are these evils to be overcome? True science in place of pseudo science is the only hope. Philostratos seems to think well enough of the profession of gymnasts, but they who represent it must rise to superior heights. Training must become more truly scientific if athletics are to be rid of the ruinous evils and if stadia are to "flourish as a result of proper training."¹⁴²

Hero-worship of successful athletes; the increase of athletic festivals that engaged the attention of idle spectators; the augmented value of the purse awarded;¹⁴³ the perfection of training (ten months' preparation—one month in Olympia—was required); luxurious habits of an age of decadence; centering the athlete's attention upon himself rather than on some useful, social end; and the competition of cities for successful athletes¹⁴⁴—all these combined to produce contempt for earlier standards of sportsmanship and morality. Sport must have been a lucrative business to Theagenes of Thasos, who took fourteen hundred prizes.¹⁴⁵ Victories were bought and sold. Inscriptions reveal that there was corruption in the lesser local festivals in the third century before Christ.¹⁴⁶ Olympia itself was not untouched. Pausanias cited numerous cases of fines imposed on bartering athletes. The first instance, which occurred in the Ninety-eighth Olympiad (388 B.C.), reflects the spread of professional venality. Strenuous efforts were made to discourage the evil. The Zanes, statues of Zeus set up out of fines collected from offenders, were for the purpose of warning athletes that "an Olympic victory is to be gained, not by money, but by fleetness of foot and strength of body."¹⁴⁷ Aristophanes observed the growing weight of gold in sports:

Wealth can see, my boy!
For Wealth is always highly sympathetic
With literary games, and games athletic.¹⁴⁸

¹⁴¹ *Ibid.*, 46-7.

¹⁴² *Ibid.*, 13, 53-4.

¹⁴³ *Real-Encyclopädie*, II, Pt. II, 2050; Gardiner: *Athletics of the Ancient World*, pp. 100, 111.

¹⁴⁴ Pausanias, VI, 13, 1; 18, 6.

¹⁴⁵ *Ibid.*, VI, 11, 2-5.

¹⁴⁶ Ringwood: *op. cit.*, pp. 8 f.

¹⁴⁷ Pausanias, V, 21.

¹⁴⁸ *Plutus*, 1159-63. Trans. by B. B. Rogers. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

Plato represented the soul of Atalanta choosing the body of an athlete for the next incarnation, because of the rewards that come to such a one.¹⁴⁹

Writing many centuries later, when professionalism and venality had risen to proportions undreamed of by a more modest age, Philostratos (c. 170-245) gave vent to a bitter indictment of athletic practices: ". . . the wreath of Apollo or Poseidon, for which the gods themselves strove mightily, one can sell unpunished and purchase unpunished; . . . only among the Eleans is the olive-crown according to ancient belief still inviolable. As for the rest of the contests, however, I will mention among many examples the following one, which explains everything. A boy was victorious in wrestling at the Isthmian Games, after he had promised one of his opponents 3,000 drachmas for the victory. When they entered the gymnasium the next day, the one demanded his money; the other, however, declared that he owed him nothing, for he had conquered against his will. Since that settled nothing, they had recourse to an oath, and, arrived in the sanctuary of the Isthmian god, the one who had sold the victory swore he had sold the god's contest and that 3,000 had been promised him. And he made this confession with a loud voice, without the least hesitation. The truer the affair, even though witnesses were not lacking, the more ungodly and infamous it is. He swore to it, however, on the Isthmus, and in the face of Hellas. What then may not occur in Ionia, or in Asia, to the disgrace of the games. Of this corruption, I can not acquit even the trainers themselves. They come, of course, to training provided with money, make loans to athletes at a higher interest rate than is customary among merchants at sea, and take no concern for the honor of the athletes, but advise them to buy and sell and seek only their own advantage, whether it be in profitable loans to those who are inclined to buy, or in collecting after a successful deal. So much may be said concerning the haggling traders; for they hawk, as it were, the ability of the athletes, while they take good care of their own advantage."¹⁵⁰

When athletics had become a lucrative career for which specialized training was required, the decision to be or not to be an athlete seems to have been weighed with care like any other momentous business choice. An expert trainer was supposed to know what sports a particular physique was good for, and could thus give valuable vocational guidance.¹⁵¹ An interesting letter, dating from about 257 B.C., contains an inquiry about the probability of success on the part of a young athlete who is under training at a palaestra in Alexandria. The chief question is, Will he win? If the gymnast "is sure that the boy will win a victory, . . . [he is to] go on training him, otherwise not to incur useless ex-

¹⁴⁹ Republic, x, 620.

¹⁵⁰ Concerning Gymnastics, 45.

¹⁵¹ Ibid., 25-6, 28.

pense or keep the boy from his letters. . . ." Hierocles answers, "Only the gods can be certain if the boy will win," but he is "promising" and "with the help of the gods" may turn out to be a winner.¹⁵²

Extreme emphasis on training to win seems to have been fraught with inimical consequences to health. Even in the day of Hippocrates (460-377 B.C.) athleticism had been carried to such an extent that he called attention to the danger to health of "a perfect condition," that "highest pitch" of excellence sought by professional athletes. Since they cannot improve, and "cannot remain" at the same pitch of perfection, "the only possible change is for the worse."¹⁵³ The mind of athletes suffered as well as the body. Galen, once a surgeon for professional gladiators, advised definitely against entering athletics as a profession, for he held that the mind is superior to the body, and athletes of his day did not even enjoy the blessings of the body, having forgotten the ancient principle of moderation in all things. "Athletes have never enjoyed the goods of the soul . . . for, far from knowing whether their soul is rational they do not even know they have one."¹⁵⁴

Given a certain degree of professional specialization, organization for the sake of professional benefits is apt to appear. Ultimately those who entered athletics as a career formed guilds, clubs, or associations, generally with Heracles as patron deity, and gained through them certain exemptions and privileges. The organization of athletes had gone far by the middle of the last pagan century. A document of 41 B.C. shows that Antony, on a visit at Ephesus, was requested by his gymnastic trainer and an official "of the corporation (σύνοδος) of the victors in the sacred games to confirm that body in the enjoyment of its traditional privileges, such as exemption from military service and civil burdens, together with the prerogatives attached to the festival of the games itself." The request was granted and authorized to be inscribed on a brazen tablet.¹⁵⁵ By the first century of the Christian era athletic guilds had become common. In the time of Hadrian, the Synod of Heracles, one of the most renowned organizations, originally established at Sardis, had its headquarters at Rome,¹⁵⁶ whence it appears to have directed athletic affairs throughout the Roman world, often sending its officials, who were the most famous athletes of the day, to officiate at various local athletic festivals. The relations of minor local associations to that at Rome are uncertain. The numerous, powerful unions were evidently effective in promoting the continuance and increase of privileges which had been begun in the pre-Christian era. Suetonius notes that

¹⁵² Gardiner: "A School in Ptolemaic Egypt," *Class. Rev.*, XLIV, 211 f.

¹⁵³ Hippocrates: *Aphorisms*, I, 3.

¹⁵⁴ Daremberg: *op. cit.*, I, 35.

¹⁵⁵ Kenyon: "A Rescript of Marcus Antonius," *Class. Rev.*, VII, 477.

¹⁵⁶ *Real-Encyclopädie*, II, Pt. II, 2057.

Augustus "maintained the privileges of the athletes and even increased them."¹⁵⁷ One of the most substantial encouragements to athletes was the right to pensions. By the middle of the third century, in the time of Gallienus, an allowance of 180 to 200 drachmas per month was due to any athlete who triumphed in the Sacred Games and made application for the benefit, this being secured by Roman law. Some athletes were so fortunate as to draw more than one pension.¹⁵⁸

Though the poetry of Homer and of Pindar is full of encomia for winning athletes, the inscriptions concerning early winners are, nevertheless, exceedingly simple, with little or no boasting of record-breaking. According to Philostratos, however, many athletes of ancient days won contests in as many as eight or nine Olympiads.¹⁵⁹ Under the increased strains of professionalism, the athletes, beset by numerous ills, appeared not to last so long as a rule, though there were, naturally, individual exceptions. Galen says few reached old age.¹⁶⁰ But, if they did not last many years, the professionals often hung up notable series of victories in a short time. Their tendency to boastfulness, and the volatility of athletic associations, in sharp contrast to the modest demeanor of earlier days, enable us to know something of their spectacular achievements.¹⁶¹ Demostratos, whose greatest athletic honors began in the days of Marcus Aurelius, enjoyed the citizenship of nine noble cities, including Alexandria, Athens, and Sparta. He was a marvelous athlete, having won crowns in Italy, Greece, Asia, and Africa. Twenty victories as a boy, and forty-eight when he had become a man, were credited to him in the Sacred Games. Numerous offices were showered on him; for some, it seems, he was not too abashed to ask. He was *xystarches* at the Capitolia and at certain provincial festivals; and the office of priest of the Synod of Rome was given him and his sons to enjoy. They, too, proved to be marvelous athletes and honored their father with a statue at Sardis. Similar to his was the career of Aselepiades of Alexandria. He was victor at Olympia; holder of the cherished title "Periodoncikes"; high priest of the Synod of Rome; chief guardian of the Great Serapis; citizen of Alexandria, Hermopolis, Puteoli; and councilor of Naples, Athens, Elis, and other cities. Aselepiades publicized himself as "pankratiast invincible, immovable, unrivalled," and took great pains to set his record straight. "I neither challenged any nor did any one in my time dare to challenge me, nor did I divide the crown with any nor did I decline a contest, or enter any protest, nor did I abandon any contest nor take part in any contest to please royalty, nor did

¹⁵⁷ Augustus, 45; *infra*, p. 751.

¹⁵⁸ Gardiner: *Athletics of the Ancient World*, p. 113.

¹⁵⁹ Concerning *Gymnastics*, 43.

¹⁶⁰ Daremberg: *op. cit.*, I, 38.

¹⁶¹ Keil and Premerstein: *Bericht über eine Reise in Lydien*, pp. 19 ff.

I gain a victory in any new fangled games but in all the contests for which I ever entered my name I was crowned in the actual ring and was approved in all the preliminary trials." ¹⁶²

Just when the athletes were riding the crest of the wave of popularity, they and their organizations began to decline. They were naturally dependent upon the support of society and the favor of emperors. When Roman society began to give way before internal weakness and decay; when it faced in vain invasions from without; when Christianity, with its propaganda of ascetic disregard for the body and its furious attack upon the decadent morals of Rome, had gained the upper hand, and Roman government had become, at least nominally, Christian—then athletics were doomed to abolition. A decree of Diocletian and Maximian freed a victor (who won honestly) in three Sacred Games from all ordinary duties of citizenship. This seems to have been the last guarantee of privileges. Varazdates, an Armenian who won a boxing match in the 291st Olympiad, is the last known record of Olympia. Eight years later (393 A.D.) Theodosius the Great abolished the Olympian festival. With the discontinuance of the Great National Games, the basic support of professional athletics was removed. ¹⁶³

Occasional reference has been made to criticism of athletics. ¹⁶⁴ Even at an early date, in the opinion of some at least, an exaggerated importance was attached by Greeks to physical prowess. On this favorable soil of preoccupation with games, professionalism gradually developed till it became clearly recognizable in the latter half of the fifth century. Ultimately it was powerful enough to drive out of the ring all amateur sport, finally invading even Sparta, "which resisted it longer than any other country." ¹⁶⁵ A number of poets, essayists, philosophers, physicians, soldiers, ¹⁶⁶ statesmen, from early times till the height of professionalism was reached under the Empire, gave expression to the low esteem in which they held mere physical excellence, although they regarded physical culture as an essential part of a free man's education. The similarity of criticism throughout the ages is striking, yet significant differences appear. Though seven hundred years separated them, the criticism of Xenophanes and Galen had much in common: both held the excellence of the athlete to be of an inferior sort, undeserving of the honors and rewards bestowed upon it. Xenophanes (c. 530 B.C.), however, criticized the "useless and unprofitable . . . idea of athleticism" from the standpoint of consequences to the city-state, whereas Galen deplored the evil effects of professional athletics

¹⁶² Gardiner: *Athletics of the Ancient World*, p. 112. By permission of The Clarendon Press, Oxford.

¹⁶³ *Real-Encyclopädie*, II, Pt. II, 2053; *infra*, p. 399.

¹⁶⁴ *Supra*, pp. 288 f., 352.

¹⁶⁵ Forbes: *op. cit.*, pp. 40 f.

¹⁶⁶ *Infra*, pp. 431 f., 436 f., 442 ff., 453 f., 456 ff., 632 f.

on the mind and body of the individual. Xenophanes, who attacked many a received opinion and custom of the Hellenic world, thus put himself on record against even the favored heroes of Olympia:

"Nay, if a man should win victory by the swiftness of his feet, or in the pentathlon, where stands the precinct of Zeus by the streams of the Pisêas at Olympia; or in wrestling, or because he hath skill in painful boxing, or in that dread contest which they call the pancratium, he would be more illustrious to look upon, in the eyes of his fellow-citizens, and he would win a conspicuous front seat at the contests, and would have bread from the public store, given by the city, and a present to be an heirloom for ever; yea, even if he won with horses, all these things would fall to his lot, though he be not so worthy as I. For my art is better than the strength of men and of horses. But there is no sense in all these opinions, and it is not right to prefer strength to good wisdom. Not though a man rise up among the people as a good boxer, or good at the pentathlon, or in wrestling, or even in swiftness of foot, which has preference among all men's deeds of strength in the contest—not for that reason can a city enjoy better laws. Small must be any joy that comes to a city for this, if a man wins in a contest beside the banks of the Pisêas; for that cannot fatten the storehouses of a city." ¹⁶⁷

A century and a half later much the same criticism was expressed by Isocrates, who reflected in wonder and amazement that those who had established the great athletic festivals "should have thought the prowess of men's bodies to be deserving of so great bounties," ¹⁶⁸ but had not provided any reward for those who had trained their minds for the service of their fellow men. If all the athletes were to become twice as strong as they are now, the world would not be a whit better; but if just one man should gain true enlightenment, all who chose to do so might profit by his wisdom. Euripides, too, product of the enlightenment that was sweeping over Athens, echoed in the *Autolycus* the views of Xenophanes. Though himself trained as an athlete, his attack is more vehement, due, perhaps, to the fact that he lived in an age of decline after the Peloponnesian War and was witness to a more advanced stage of athleticism:

Of all the thousand ills that prey on Hellas
Not one is greater than the tribe of athletes;
For, first, they never learn how to live well,
Nor, indeed, could they; seeing that a man,

¹⁶⁷ *Athenaeus*, x, 414. Trans. by C. B. Gulick. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.; Bowra, "Xenophanes and the Olympic Games," *Am. Jour. Philol.*, lxx, 257-79, examines various interpretations that have been given to these early criticisms.

¹⁶⁸ *Panegyricus*, 1.

Slave to his jaws and belly, cannot hope
 To heap up wealth superior to his sire's.
 How to be poor and row in fortune's boat
 They know no better; for they have not learned
 Manners that make men proof against ill luck.
 Lustrous in youth, they lounge like living statues
 Decking the streets; but when sad old age comes,
 They fall and perish like a threadbare coat.
 I've often blamed the customs of us Hellenes,
 Who for the sake of such men meet together
 To honor idle sport and feed our fill;
 For who, I pray you, by his skill in wrestling,
 Swiftmess of foot, good boxing, strength at quoits,
 Has served his city by the crown he gains?
 Will they meet men in fight with quoits in hand,
 Or in the press of shields drive forth the foeman
 By force of fisticuffs from hearth and home?
 Such follies are forgotten face to face
 With steel. We therefore ought to crown with wreaths
 Men wise and good, and him who guides the State,
 A man well-tempered, just, and sound in counsel,
 Or one who by his words averts ill deeds,
 Warding off strife and warfare; for such things
 Bring honor on the city and all Hellenes.¹⁶⁹

Plato, too, in his ideal Republic would have none of the professional athletic training, for it makes men sleepy, dull, of poor health, slaves to a certain regimen, and quite incompetent to defend the state.¹⁷⁰ Similar criticism, mixed with biting sarcasm and an emphasis on a discipline of the spirit that will enable man to conquer in the greatest of all encounters, beside which the physical contests of athletes sink into pettiness, is attributed to Diogenes by Dio Chrysostom in the "Isthmian Discourse" and in "The Real Athlete." Being in Corinth, when the Isthmian Games were in progress, Diogenes roused the wrath of those around him by placing a crown of pine on his own head. To their protest against this impious act, and their assertion that he had won no crown, he replied:

"Many and mighty antagonists have I vanquished, not like these slaves who are now wrestling here, hurling the discus and running, but more difficult in every way—I mean poverty, exile, and disrepute; yes, and anger, pain, desire,

¹⁶⁹ Symonds: *Studies of the Greek Poets*, II, 92 ff.; cf. *Athenaeus*, x, 413.

¹⁷⁰ *Republic*, III, 404.

fear, and the most redoubtable beast of all, treacherous and cowardly, I mean pleasure, which no Greek or barbarian can claim he fights and conquers by the strength of his soul, but all alike have succumbed to her and have failed in this contest—Persians, Medes, Syrians, Macedonians, Athenians, Lacedaemonians—all, that is, save myself. Is it I, then, think you, that am worthy of the pine, or will you take and bestow it upon the one who is stuffed with the most meat? Take this answer, then, to those who sent you and say that it is they who break the law; for they go about wearing crowns and yet have won in no contest; and add that I have lent a greater lustre to the Isthmian games by having myself taken the crown, which ought to be a thing for goats, forsooth, to fight over, not for men." ¹⁷¹

Diogenes lamented, moreover, "that men contended with one another in punching and kicking, but that no one showed any emulation in the pursuit of virtue." ¹⁷² To a crowned runner, being carried on the shoulders of enthusiastic fans, he declared that, though victorious, he was none the less inferior to the wild beasts, and that many of the swiftest were the most cowardly. As for winning the two-hundred-yard dash, he asked: ". . . What does that amount to? . . . For you certainly have not become one whit more intelligent for having outstripped your competitors, nor more temperate now than you were, nor less cowardly, nor are you less discontented, nor will your wants be less in the future or your life freer from grief and pain." And, though you are "fastest on foot of all the Greeks," you are "not faster than rabbits . . . nor deer. . . . I do not believe that you can outstrip even a fox." "As he spoke to the man in this vein," Chrysostom declares, "he made the business of foot-racing seem cheap in the eyes of many of the bystanders and caused the winner himself to go away sorrowing and much meeker." ¹⁷³

¹⁷¹ Dio Chrysostom, ix, 11-3. Trans. by J. W. Cohoon and H. L. Crosby. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁷² Diogenes Laërtius: "Life of Diogenes," 4.

¹⁷³ Dio Chrysostom, ix, 14-8, 20. Trans. by J. W. Cohoon and H. L. Crosby. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

NATIONAL FESTIVALS

THE ORIGIN AND PURPOSE OF THE GREAT GAMES

In the origin and development of the great national games of Greece three basic, formative factors are distinguishable, closely interwoven and functioning interdependently: a spontaneous delight in physical contests and an intense admiration of excellence therein; the ancient, traditional, religious practice of funeral games; and a sense of kinship and desire for unity that was never completely realized.

From the beginning to the end of their history, archaeological and literary remains show the Greeks preoccupied with sports—first spontaneously and without methodical arrangement, then according to orderly design. In their earliest history, when the use of letters was still limited or nonexistent, one sees their approval of excellence in physical contests in the graphic portrayal of such events. With the rise of literature, one hears the ecstatic acclaim of those who, at the funeral games of Patroclus, watch with bated breath the test of talents of swift runners, skilled wrestlers, cunning charioteers. When games have been organized and have become a fixed, recurrent business on the Greek calendar, the praise of physical prowess in stately moving rhythm becomes a business too, immortalizing at a stroke the sacred contest, noble dumb brutes, the manly victors, and the gifted pen as well. "Water of all elements is best; gold, of all metals; but of heroic, lordly contests, wherein the crown is won by manly merit, there is none greater than the Olympian Games." Such is the motif of Pindar's opening ode in praise of horseman Hiero, tyrant of Syracuse, victor at Olympia in 476 B.C. Eight years later, when to his already numerous conquests he added victory in the four-horse chariot race, we hear the paean of Bacchylides, "Cean nightingale":

Glory went with them, and triumph victorious,
As by wide-swirling Alpheus onward they sped,



FUNERAL SCENES *Dipylon Vase, 8th century*
(Courtesy, The Metropolitan Museum of Art, New York)

And the name of Deinomenes' son they made glorious
With garlands of victory wreathing his head.¹

Love of sports, acclaim of heroes living, and festive honors to them dead, are found in constant association in early Greek mythology. Whatever may have been the original factors in the development of funeral games, whether they were "a substitute for human sacrifice," or a memorial to a struggle for power, as has been suggested²—and both may have been true in one place and another—it is certain that they reflect an attitude thoroughly Greek. The doleful, Christian thought, "in the midst of life we are in death," was poles apart from the cheerful Greeks who, in the face of death, asserted the will to life and enjoyment. On this sturdy stock of natural impulse expressing itself in funeral games, there was ultimately engrafted a higher religious veneration and patriotic devotion. Strabo says that in Trojan times there were no games of the crown, or, if there were, they had no wide recognition: "Homer does not mention any of these, though he mentions another kind—funeral games."³ Gardiner⁴ holds that, despite the obscurity of their beginning, "there is no reason for discrediting the universal tradition" which traced the athletic festival to funeral games. Hyde says, "Even the athletic games were religious in origin and spirit, always associated with the worship of gods and heroes, and were among the strongest Pan-Hellenic influences, making not only for nationality, but also for a broader religion than that of tribe or city."⁵

The transition from early funeral practices to the great athletic festival was a gradual process, halting, hesitant, like the growth of social unity itself. Though the pattern is not the same in every case, the central tendency seems rather clear. The great man, successful as leader, renowned as fighter, a hero to those around him, is honored fittingly by games at his death; if great enough, the returning anniversary of his death becomes a fixed, memorial occasion; if his descendants are, like their ancestors, continually successful, contiguous peoples are brought under their sway, perhaps are amalgamated with them, accept their mores and think, in time, of a common (mythical) ancestor; the circle of festive celebrants at the recurrent rites is increased, and the tale of famous deeds as well. The process continues. A conventional myth, a convenient, serviceable story of the past grows up, crediting real fact to mythical causes: the ancestor is said to have had a certain number of sons from whom

¹ Way: *Odes of Bacchylides*, III, ant. 1. Courtesy of Macmillan & Co., Ltd., London, and the Macmillan Company, New York.

² Gardiner: *Greek Athletic Sports and Festivals*, pp. 31 f.; Hyde: *Olympic Victor Monuments*, p. 14.

³ *The Geography of Strabo*, VIII, 3, 30. Trans. by H. L. Jones.

⁴ *Op. cit.*, p. 27.

⁵ Hyde: "The Religion of Greece," in Montgomery, *Religions of the Past and Present*, p. 253.

sprang the several branches of the present folk; the tribal hero has become the accepted progenitor of a whole people. At this point the hero is commonly credited with divinity, inherited or acquired. In such a case the celebration of his heroic, manly competence is at once a religious service to the gods.

Consider for a moment how legendary history accounted for the origin of the Greeks; and how a branch of that people associated honor to the gods, and the remembrance of their real or fancied ancestors, with a story of the conquest of power and the founding of the Olympic Games. The Greeks accepted a mythical Hellen from whose offspring came Ionians, Aeolians, Achaeans, Dorians.⁶ The Dorians themselves traced their three tribes back to Dyman, Pamphylius, and Hyllus, who, by one story, were said to be the sons of Aegimius, Dorian king, in Thessaly. Great families often try to link themselves with great past events and personages, real or mythical, and so increase their fame. When the fame of Heracles, who was credited variously with Cretan, Hellenic, and Phoenician origins, had begun to be great in Greek cities,⁷ the ruling family of Argos hitched their chariot to his rising star. By a modification of the story of Dorian ancestry, the tribe of Hyllus was traced back to Heracles, who was said to have fought for Aegimius against the Lapiths, for which he was rewarded with one-third of Aegimius' kingdom. When Heracles died, his son Hyllus was adopted by Aegimius; Heracles' grandchildren, sons of Hyllus, sought but failed to gain control of the domain that had been allotted Heracles; but his three great-grandchildren, of whom Temenus (head of the royal house in Argos) was one, resumed the effort and were successful, conquering all the Peloponnesus save Arcadia with the assistance of a one-eyed Aetolian, Oxyllus, whom they set up as lord of Elis. Such was the fantastic reconstruction of history.

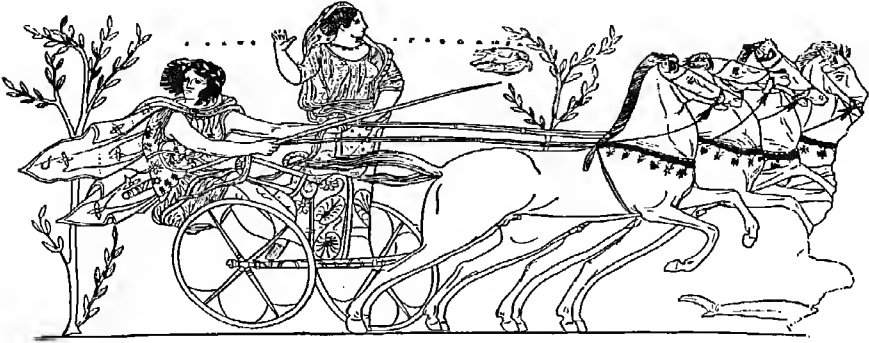
Now the Greeks often raised men to heroic stature, and their greatest heroes were commonly credited with godlike attributes. Heracles, at first a mighty man, the personification of unlimited strength and unflinching courage, gradually took on the character of a god and was honored as such, especially by athletes. A host of tales, often conflicting, were told of his exploits and the founding of the Olympian Games. Of the worship of Heracles among the Agyreians, Diodorus says, "Every year with the utmost zeal they hold games which include gymnastic contests and horse-races," to which come bond and free, for they also teach their servants to worship him.⁸ So great was his prowess that Zeus himself sought his aid against the giants. The two, Zeus and Heracles, were famed in legend as originators of the Olympian Games. Heracles, accord-

⁶ Jardé: *The Formation of the Greek People*, p. 56; Bury: *A History of Greece*, pp. 79 f., 106.

⁷ Gardner and Jevons: *A Manual of Greek Antiquities*, pp. 88, 157; *supra*, pp. 210, 233, 273.

⁸ Diodorus of Sicily, iv, 24.

ing to one legend, set his brothers to run races, crowned the victor with wild olive, decreed the contests should be held quadrennially, and called them by the name Olympic. The descendants of Heracles set up an altar for him and



PELOPS AND HIPPODAMIA AS VICTORS

(From Furtwängler-Reichold, *Griechische Vasenmalerei*, ser. 2, Pl. 67, Verlag F. Bruckmann, Munich, 1904-1932)

held games at Olympia.⁹ Pindar, in the "Tenth Olympian,"¹⁰ celebrates the story of Heracles' conquest of Pisa, the measuring of the ground with his foot, and the establishment of games in memory of the event. Diodorus says that after he had performed his various labors, Heracles established the Olympian Games in honor of Zeus, decreed the crown for a prize and won all the contests himself "without opposition," for "no one was bold enough to contend with him."¹¹ Zeus, likewise, was said to have wrestled there with Kronos for his kingdom, and celebrated his victory with games in which Apollo, Hermes, Ares, and others were contestants. Pelops, a Lydian, driven from Sipylus by Ilus, conquered Oenomaus in a chariot race by trickery and bribery, married Hippodamia, and acquired Pisa and Olympia. The previous unsuccessful suitors, who had lost their lives where he had been successful, he honored as heroes by a monument and sacrifices every year.¹² Pelops is said to have celebrated the Olympian Games more magnificently than any who had gone before him; and he, in turn, came to be honored by the Eleans more highly than any other heroes, just as they honored Zeus more than any other god.¹³ Pindar, his mind on glorious past events at Olympia, says:

⁹ Pausanias's *Description of Greece*, v, 7, 7-9; 8, 1.

¹⁰ Str. 2 et seq.

¹¹ Bk. iv, 14.

¹² Pausanias, v, 1, 7; 7, 10; vi, 21, 9-11.

¹³ *Ibid.*, v, 8, 2; 13, 1.

And his portion assured hath Pelops still
 Where the priests the blood of the sacrifice spill;
 And unto his tomb resorteth the throng
 Of strangers from far who have heard his story.
 From his grave-mound his spirit beholdeth the glory
 Of the mighty Olympian strife of the strong
 In the course that from Pelops its name hath ta'en,
 Wherein be contending the swift to run
 And the thews that be mighty in wrestling-strain.¹⁴

Strabo, who rejects the story of Heracles as founder, as "not much faith is to be put in" it, holds the games were founded by the Aetolians.¹⁵ Oxylus, to whom it was said the Heraclids had given Elis as a reward for his aid in the conquest of the Peloponnesus, reputedly celebrated the Olympian Games; but after him they were discontinued, till revived, according to various accounts, by Iphitus of Elis, Cleosthenes of Pisa, and Lycurgus of Sparta. Pausanias says he saw a discus at the temple of Hera, on which was cut the decree of truce which the Eleans proclaimed at the Olympian festival.¹⁶

Thus run certain legends about Olympic beginnings prior to historic times. There were many and often conflicting stories; for, as Pausanias remarks, "not a few tales of wonder may be heard in Greece."¹⁷ One and another, singly or collectively, they reflect the mixture of spontaneous love of physical contests, honor to dead heroes, a memory of territorial conquests, and the conquest of power by Zeus himself, in the Greeks' fanciful account of their greatest festival.

The destructive, divisive tendency among the Greek states is evident in the almost continuous warfare that marked their history. To their Persian enemies, it seemed extraordinary, as Mardonius said, that the Greeks "who spoke one language" almost invariably resorted to arms in settling their disputes. This divisive tendency, however, was not without a rival. Some sentiment favoring unity existed, and several factors were promotive of it, though they were never able to conquer the forces of a divisive character. Among the influences for unity were religion, common language and literature, similar social customs, and, not the least important, a devotion to sports that brought them together in frequent meetings, to compete in, and be spectators and admirers of, the same contests. One story of the founding of the Olympic contests reflects this view of the influence of the games on Greek unity: when the Argonauts were returning to their homes, Heracles is said to have proposed taking ". . . oaths

¹⁴ Way: *The Odes of Pindar*, "Olympian" 1, str. 4. Courtesy of Macmillan & Co., Ltd., London, and The Macmillan Company, New York.

¹⁵ Bk. viii, 3, 30. Trans. by H. L. Jones.

¹⁶ Bk. v, 4, 4; 20, 1; Plutarch: *Lycurgus*, 1.

¹⁷ Bk. v, 10, 1.

among one another to fight at the side of anyone of their number who should call for aid; and that, furthermore, they should choose out the most excellent place in Greece, there to institute games and a festival for the whole race. . . ." ¹⁸ Isocrates says that the founders of the Great Games justly deserve high praise for their institution, for thereby peace and harmony were restored to a land harassed by struggles and disease. ¹⁹ Strabo says, owing to the games, the Eleans enjoyed profound peace and increased in numbers, while others were continually engaged in war. ²⁰

It would be difficult to name more powerful forces for unity than Homer and the Great Games. While frequent wars are a conspicuous feature of Greek history, it is even more remarkable to find the arbitrament of war set aside or postponed out of respect for the traditional festival of athletics and religion. While Leonidas was dying at Thermopylae, the Greeks without interruption went on with the usual ceremonies at Olympia. "Dorians, Ionians, folk of Athens, Sparta, and Thebes, despite their rivalries and hatreds, and in the midst of their most desperate wars, forgot for a moment, at the time of the festivals, their ancient quarrels, and at this pacific rendez-vous at which all gathered, spent a few days in happy harmony." ²¹ The "Truce of God" proclaimed at Olympia, the Isthmian truce, and similar periods of respite from war, enjoined in connection with the Pythian and Nemean festivals, were a gain, though of brief duration, to peoples so plagued with fratricidal struggles, even though the decreed cessation of hostilities might occasionally be of no avail, or be manipulated for political ends, and was sometimes infringed when it was inconvenient to observe it: as, for example, when Argive Pheidon seized control of Olympia by force; when Spartan Agesilaus invaded Corinth in the course of the Isthmian Games; and again, when Lacedaemonians attacked Lepreum during the Olympian truce. ²²

Quite apart from the periodic cessation of war, the Great Games furnished an excellent occasion for colonial Greeks to return to the homeland, and thus helped to keep alive a sense of common origin. The tie of common play among children and men, it is often observed, brings together even those who have little else to share. The influence of joint sportive festivals among the Greeks was great, partly in their own right, partly because they reinforced other cohesive tendencies: thus they provided the occasion, not for contests of athletes alone, but of artists, musicians, poets, orators, writers; and were the gathering place of people from all walks of life, royalty and common men, rich and

¹⁸ Diodorus, iv, 53. Trans. by C. H. Oldfather. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁹ *Panegyricus*, 43.

²⁰ Bk. viii, 3, 33.

²¹ Diehl: *Excursions Archéologiques en Grèce*, p. 206.

²² Strabo, viii, 3, 33; Pausanias, iii, 10, 1; Thucydides, v, 49.

poor, ignorant and learned. If the Olympian festival and others of national renown were not the most basic and powerful of unifying influences, and if, in the long run, they proved weaker than the forces operating against them, they constituted at least an unmistakable symbol of a unity temporarily achieved, and of an ideal whose permanent realization some Greeks were wise enough to see was the indispensable key to the continuance of Greek political integrity. They were to all Hellas a symbol of kinship and unification, as the Panathenian festival was to Athenians. The latter was realized; but the unity of Hellas fell short of fulfillment.

The importance attached to the national festivals, the political significance of the events, and faith in their potentialities may be read in the fact that Philip and Alexander both took advantage of the Olympian and Pythian festivals to consecrate their hold on Greece and unify it under their hands. Philip's horses and chariots won victories at Olympia as early as 356 B.C.; he caused the Philippeum to be built there after his victory at Chaeronea.²³ Alexander, though no athlete in the Greek sense, and unwilling to enter contests with heterogeneous competitors,²⁴ recognized the importance of the festival, caused "Olympic games" to be celebrated at Dium, Agae, and elsewhere, and attached great significance to the victories of others. The Ptolemies, in their day, were ardent supporters of the Olympian Games; and Roman emperors, too, despite the low estimation of Romans for the Greek athletic ideal, regarded the great festivals as symbols of all Greece. At the Isthmian Games, in 196 B.C., Flamininus announced the freedom of Greece from Macedonia. Mummius, having destroyed the city of Corinth and subjugated Greece, dedicated at Olympia twenty-one gilded shields and a bronze statue of Zeus, from the spoils of the Achaean war, said to have been the first offering dedicated by a Roman in a Greek sanctuary.²⁵ The conquest of peace and unity, which Greece had been unable to achieve by rational, willing coöperation of her cities, had come in a superficial, equivocal sense by violence from without; Olympia, sacred shrine of free Greeks, and symbol of their common desire for peace and unity throughout centuries, was the scene where their weakness was memorialized in the solemn, bloodstained sacrifices of their conquerors.

The festivals were at once aristocratic and democratic. In origin aristocratic and exclusive, they became in the course of time more inclusive and democratic, reflecting the modification of Greek society by rising democratic tendencies which appeared in the midst of an aging aristocracy. The element of democracy is evident in the fact that all sorts of people came to Olympia, and all of proved Hellenic origin, rich or poor, of noble or common stock, were eli-

²³ Pausanias, v, 20, 10.

²⁴ Plutarch: *Alexander*, 4.

²⁵ Pausanias, v, 10, 5; 24, 4, 8.

gible to enter the contests. So great was the prestige of the games, particularly at Olympia, that the highest as well as the lowest might take pride in a victory crowned with the pale wild olive. Pindar held nothing among men more pleasant than the games, and victory in them the greatest any one could win. "For he that hath attained his heart's desire forgetteth death."²⁶ The praise of victory, ubiquitous in Homer, continued unabated in later centuries; most Greeks would have agreed with Homer's Phaeacian that—

. . . whoever he be, for a hero no glory is greater
Than whatever with hands, or again, with his feet he accomplish! ²⁷

There were, of course, a few dissenting voices among thinkers and men of action, who recognized that the growing tendency to athletic specialization was of no value to the state. Alexander, who declared he would be willing to compete in running at Olympia if he could run against kings, was certainly not in harmony with the old Greek tradition; he reflects, moreover, that aloofness toward athletic contests which was beginning to appear and continued to increase in proportion as the games became a field for professionals.²⁸ Philopoemen condemned and discouraged the pursuit of professional athletic training as useless.²⁹ Epaminondas held that soldiers ought not to be trained just like wrestlers, but by military exercises.³⁰

Though one may speak of the democracy of the games, it was obviously limited. There was freedom, of course, for all Greeks to enter the contests; on the other hand, wealth and social position had an important bearing on success in the world of sports, and are constantly associated with the games in Greek literature. Menander reflects the common notion of relationship between high birth and manly sport:

Maybe this boy here
Was born above our station. Reared 'mongst working-folk
He will despise our doings, his own level seek
And venture on some action suiting noble birth:
Will go a-lion-hunting; carry arms; or run
A race at games.³¹

In so far as natural talent could emerge and prove its excellence without hindrance, the games were indeed democratic. Plato, however, makes it clear ³²

²⁶ Way: *The Odes of Pindar*, "Olympian" viii, str. 4.

²⁷ Lawton: *Classical Greek Literature*, p. 146.

²⁸ Plutarch: *Alexander*, 4.

²⁹ Plutarch: *Philopoemen*, 3.

³⁰ Plutarch: *Apophthegmata*, "Epaminondas," 3; Nepos: *Epaminondas*, 2.

³¹ *The Arbitrants*, 103-8. Trans. by F. G. Allinson. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

³² Protagoras, 326.

that wealth and family affected adversely the equality of opportunity. The games were an exhibition and public test of that which education in home towns had produced,³³ plus intensive training at Olympia. Education in "music and palaestra" at Athens depended on the ability of the family to provide teachers and trainers. Certain public gymnasia were open to all citizens, and the Kynosarges to half-breeds; but money was needed to provide the service of special instructors. The most skillful teachers would offer the best instruction and receive the best pay. For a brief time the Ephêbic College was free, but Athens sent few winners to the games at that period. At Sparta, under the laws of Lycurgus, the influence of wealth was apparently negated, at least for a time, but it appears that Spartan regimentation, with its emphasis on military arts, only gave a temporary advantage to Sparta and ultimately reduced her superiority in physical contests. From the early eighth century to 576 B.C. her victories topped all others to an extraordinary degree—if the records preserved are to be taken without too great discount. Then they came to an end. Prior to the reforms of Lycurgus, aristocracy and wealth must have had a decided influence in determining who would be best fitted for a contest, as in other states where aristocratic institutions prevailed. The arts and athletics of the more liberal type seem to have flourished together and declined together, attaining the highest level in the seventh and sinking to a low ebb in the fifth century.³⁴ This seems to harmonize with Aristotle's judgment of the benumbing, narrowing effect of the rigid, one-sided Spartan system.³⁵

Thus it would appear that victories at Olympia were chiefly the triumphs of an aristocracy of wealth and family, which enjoyed sufficient freedom in which to grow. Both Spartan rigor and Athenian middle-class luxury and ease were in the long run detrimental. The Old Oligarch's complaint that the new democracy at Athens cares little for noble sports, and Aristophanes' thrusts at the flat-diested, glib-tongued products of the new education, both point to the influence of social change on the athletic tradition.³⁶

The aristocracy of wealth and family that supported the old tradition was joined, of necessity, in the case of gymnastic events, with a genuine physical excellence decreed by nature. In horse racing and chariot contests, however, wealth sufficient to support a luxurious taste was the chief determiner. Agesilaus tried to demonstrate that winning chariot races at Olympia proved one's wealth only, not his excellence,³⁷ but equestrian sports continued to enjoy an aristocratic position, long after professionalism had invaded gymnastic contests and

³³ Gardner: *New Chapters in Greek History*, p. 268.

³⁴ Gardiner: *op. cit.*, p. 57.

³⁵ *Politica*, viii, 4.

³⁶ *Supra*, pp. 288, 352.

³⁷ Plutarch: *Agesilaus*, 20.

made them too ignoble for the participation of men of rank. It is significant that Philip of Macedon, kings of Egypt, and lesser royalty were pleased to have their entries of horses and chariots at Olympia. The wealth required to keep equipment and to train horses formed a barrier which separated effectively the nobler from the humbler sort, whose sports had become highly technical and professional. Cavalry events were not professionalized, for one reason, because even the good purses offered would not begin to support a stable. This must be kept in mind in reading Olympian history; for it, as well as other great festivals, reflects the gulf that existed in Greek society—a gulf that widened and deepened.

The two aristocratic elements—wealth and family, and superior natural physical endowment—are both celebrated in the matchless, immortal odes of Pindar and Bacchylides, whose rivalry for the honor of singing the victors' praises at the national festivals did not go unrewarded. Pindar was of aristocratic Theban family, and lived at the courts of Syracuse and Agrigentum. This "god-like bird of Zeus," who could ill endure the chatter of those he held less gifted, was well supplied from rich men's means. The singer of decaying aristocracy, Pindar had no sympathy for the rising tide of democracy that eddied round him,³⁸ though he once roused the anger of his Theban mother by singing the praises of "violet-crowned," glorious Athens, "bulwark of Hellas." Throughout the odes run constant encomia upon the noble, distinguished lineage, the heroic deeds or glorious victories achieved by the forbears of the victors whom he celebrates: they are hospitable to strangers, schooled in chivalry, occupied in noble pursuits, wiser than others, and ever warlike.³⁹ The sportsman's features and his deeds are not less worthy than his family's past. Pindar's athletic ideal is, of course, thoroughly in keeping with the old Greek tradition—more than that, it is almost universal in the world of sport wherever professionalism has not laid the hand of death. He does not tire of admiring the athlete, comely to look upon, whose looks are not belied by his performance, which causes the name of his fatherland to be proclaimed by the heralds. He was, after Homer, the most gifted singer of "a man fair-fighting," "ring-craft that shifteth its balance fast never falling," that the world has ever known. He saw every essential attribute of the great athlete, the aristocrat of nature, favored by Fate divine "with deftness of hand, with lighthness of limb, with valour's light in his eyne. . . ." "The gifts that by Nature's self be given are ever the best. . . ." "Victory by aid of toil" is ever acclaimed; but mere training is decried, in athletes as well as in poets. Courage to face danger towers above all other

³⁸ Bury: *op. cit.*, pp. 306 f.; *The Cambridge Ancient History*, iv, 512; Botsford and Sihler: *Hellenic Civilization*, p. 32.

³⁹ Way: *The Odes of Pindar*, "Olympian" xi, ep.; Butcher: *Some Aspects of the Greek Genius*, pp. 153 f.

excellence, and is celebrated in many passages: "Of man is the trial the one proof-test." ⁴⁰ In praise of Arcesilas of Cyrene, winner in the chariot race, 462 B.C., he sings:

. . . Mid those twoscore
Drivers, who mid the throng
Were hurled to earth, thou with a heart undaunted
Didst drive unscathed thy chariot on. . . .⁴¹

Nowhere is the valorous aspect of the athletic ideal more fitly expressed than in the "Sixth Olympian": "if aught of glory be thro' peril sought many remember then." It leads, indeed, to that "honor," "sweet rest," and praise, "far beyond envy," that is "stored for victors at Olympia." ⁴²

It is evident that a practical purpose was served by the national games. They constituted the goal of, and gave significance to, one of the essential aspects of Greek education; indeed, from a realistic point of view, they were a part of that training.⁴³ The festivals differed from many modern sport gatherings,⁴⁴ having a serious origin and purpose rather than mere amusement as their end; but, though differing in details, they had much in common with the mass sport festivals that are zealously promoted in certain modern national states. They were to the Greeks, as they are to modern warlike peoples, "almost a duty towards the fatherland," as Diehl has said, "to which these exercises gave an élite of good soldiers and valorous citizens." ⁴⁵ "With such men," it was said of Olympian victors, "there is no need of walls." The victorious athlete was indeed welcomed home from Olympia like a conquering general coming home from war.

THE OLYMPIC GAMES

Various legends credited the establishment of the Olympian festival to Heracles, Zeus, and Pelops.⁴⁶ These fanciful reconstructions of history, though full of contradictions, take on a realistic color in the light of modern archaeological discoveries that point to Olympia as a site of festivals celebrated cen-

⁴⁰ Way: *The Odes of Pindar*, "Olympian" viii, ep. 1; vii, ep. 1; ix, str. 4; ep. 4; ant. 4; ii, str. 5; iv, ant. 1.

⁴¹ Way: *The Odes of Pindar*, "Pythian" v, ant. 2. Courtesy of Macmillan & Co., Ltd., London, and The Macmillan Company, New York.

⁴² *Ibid.*, "Olympian" xi, ant.; Lawton: *op. cit.*, p. 147.

⁴³ Gardner: *op. cit.*, p. 268; Gardiner: *op. cit.*, pp. 1 f.

⁴⁴ *C.A.H.*, iv, 509.

⁴⁵ *Op. cit.*, p. 207.

⁴⁶ *Supra*, pp. 366 f.; Diodorus, iv, 14, 53; Pausanias, v, 7, 6-10; vi, 21, 9-11.

turies before the accepted First Olympiad, 776 B.C. Olympia was a sacred place at least as early as the tenth or eleventh century, as many votive offerings testify.⁴⁷ "Olympia, . . . the port frequented by the Cretan sailors, worshipped the old deities of Mount Ida, Kronos, and Rhea, before it was consecrated to Zeus and Hera," and these pre-Hellenic Aegean-Cretan people were noted for their love of gymnastic and musical festivals.⁴⁸ The palaestra of the Greeks, in Glotz's opinion, "did no more than develop the legacy of the pre-Hellenes." "In the religious festivals and funerary ceremonies there were contests which were to give birth to a national athletic tradition. . . ." ⁴⁹ This view is plausible; though it does not help to fill the years prior to 776 with a chronicle of athletic development, it harmonizes with the legendary accounts that associated Olympia's gymnastic origins with Heracles from Ida in Crete, and it enables us to view differently the practices that once seemed to distinguish the Greeks so sharply from their neighbors of historic times.

Early in the eighth century, when islands of relative peace, quiet, and civilization were beginning to emerge from the sea of chaos that came with the Dorian invasion and swept Aegean-Cretan and Mycenaean strongholds to destruction, Olympia was still nothing but a local festival, of less repute than the festival of Delos. But Olympia gained sway rapidly in the Peloponnesus, drew contestants from thence in the course of a dozen Olympiads, and by the end of a century, had gained recognition in the rest of Greece and the colonies.⁵⁰ Though her greatest prestige was not attained until the sixth century, it was then so great that other national festivals of the crown were officially recognized. Olympia remained the greatest national celebration in the Greek calendar, however, until the games were abolished by Theodosius I, in 394 A.D. In 426, the temple at Olympia was burned.⁵¹

According to Pausanias and Strabo the administrative control of the Olympian festival was from the beginning in the hands of the Eleans, though the Pisatans, aided by Argive Pheidon, seized control for a time.⁵² This account, based on "the ancient writings of the Eleans," was doubtless a priestly chronicle, agreeable to the ears of the Eleans, since it credited them with original control. Xenophon, however, denied that original control was theirs,⁵³ and this view has been accepted by modern scholars who hold that original control

⁴⁷ Gardiner: *Athletics of the Ancient World*, p. 33; Hyde: *op. cit.*, pp. 14, 16.

⁴⁸ Glotz: *The Aegean Civilization*, pp. 296 f., 392. Trans. by M. R. Dobie and E. M. Riley. Courtesy of Kegan Paul, Trench, Trübner & Co., Ltd., London.

⁴⁹ *Ibid.*, p. 289. Courtesy of Kegan Paul, Trench, Trübner & Co., Ltd., London.

⁵⁰ C.A.H., III, 547; Gardiner: *Athletics of the Ancient World*, p. 34.

⁵¹ Baumeister: *Denkmäler des Klassischen Altertums*, II, 1061.

⁵² Pausanias, V, 4, 5-6; 8, 5; 9, 4-6; Strabo, VIII, 3, 33.

⁵³ *Hellenics*, III, 2, 30; VII, 4, 28.

must have been exercised by the Pisatans and then by the invading Actolians, the Eleans of later time. The transition of power involved a struggle, ended, it was said, on the advice of the Delphian Oracle⁵⁴ and by the joint efforts of Iphitus of Elis and Cleosthenes of Pisa, with whom Lycinus was also later associated. From the dual administration of Iphitus and Cleosthenes came the two Hellanodicae, officials of the games, who wore purple robes signifying their royal origin. Dual administration, however, was beset with difficulties; in the fifth century the Eleans, aided by the Spartans, gained complete authority, which they maintained to the end.⁵⁵ At the time of Plataea the two officials were replaced by nine Hellanodicae, chosen by lot, each probably representing a tribe of Elis. The nine were divided into three groups: one had charge of the pentathlon; a second looked after the equestrian events; and the third directed other gymnastic contests. When the tribes of Elis increased to twelve, the Hellanodicae also numbered twelve; later, when the tribes were reduced to eight, and again increased to ten (108th Olympiad), the number of officials followed these fluctuations.⁵⁶

The Hellanodicae were the executive officers of the Olympic Council, which originally probably represented local villages. Though the functions of the Council must have varied from time to time, it was the court of appeal, controlled the erection of new buildings, and approved the erection of victors' statues. The Hellanodicae were compelled to undergo a ten months' period of instruction by the Nomophylakes, after which they took an oath before the statue of Zeus in the Council House, being sworn to secrecy in matters pertaining to accepted and rejected candidates, and to upright judgments.⁵⁷ Delegates from Elis were said to have gone to Egypt to find out whether her wise men could suggest any improvement in administration of the games. They were advised that since Eleans were the judges, no Elcan should be a competitor.⁵⁸ In the 102d Olympiad, one of the Hellanodicae won the chariot race; in consequence, the Eleans ruled that henceforth no horses of judges were to be entered.⁵⁹ Judges might be punished and fined, if an appeal against their judgments was successful.⁶⁰ Besides these chief authorities there were, of course, many lesser officials, trumpeters, heralds, and, in the Christian era, official guides (*exegetae*), who took care of the vast concourse of visitors.

The Olympian festival, held at the second or third full moon following the

⁵⁴ Pausanias, v, 4, 6; Krause: *Olympia oder Darstellung der Grossen Olympischen Spiele*, p. 37.

⁵⁵ Gardiner: *Greek Athletic Sports and Festivals*, pp. 46, 116.

⁵⁶ Pausanias, v, 9, 4-6; Krause: *op. cit.*, pp. 126 ff.

⁵⁷ Pausanias, v, 24, 9-10; Krause: *op. cit.*, pp. 130 f.

⁵⁸ *The History of Herodotus*, II, 160.

⁵⁹ Pausanias, vi, 1, 4-5.

⁶⁰ *Ibid.*, vi, 3, 7.

summer solstice, lasted five days at the time of Pindar,⁶¹ the fourteenth or fifteenth of the month being the high point of the celebration.⁶² Xenophanes, speaking of Olympic contests, mentions the foot race, pentathlon, wrestling, boxing, pancration, and horse racing.⁶³ Jumping, discus, and javelin would be included in the pentathlon. Foot races were of many kinds—stade-race, double race, long race, armed race, and torch race.⁶⁴ Views concerning the order of events in the pentathlon and the method of determining the victor vary considerably. The order may have been changed from time to time, though there is a strong probability of a fair degree of consistency. The best evidence seems to support the following order: running, jumping, discus, javelin, wrestling. But there is admittedly much uncertainty. Wrestling, in any case, seems certainly to have held the last place on the program of gymnastic contests.⁶⁵ Though the fantastic view was once held that to be crowned in the pentathlon one must win in all five of the contests, it has been more convincingly argued that victory in three out of five events determined the winner, and "in case of a tie account was taken of second and third places."⁶⁶ Probably no question has occasioned more controversy than the records made in the jump. Philostratos says that the *halteres* was invented by pentathletes for use in jumping, to give "wings" to the athlete and enable him to bring his feet "firmly and gracefully to the ground."⁶⁷ Despite their use, however, the records of Phaëllus, who jumped fifty-five feet at Delphi, and of Chionis who leaped fifty-two (or fifty-four feet and eight inches by another calculation) at Olympia, have occasioned much speculation as to the reliability of the accounts and the method of jumping. Gardiner came to the conclusion that Phaëllus' record jump was no more to be taken seriously than the feat of Milo who ate a whole four-year-old heifer.⁶⁸ Diels thought the record must be explained as "a three-fold jump."⁶⁹ Hyde, reviewing the evidence and the various theories that had been advanced, concluded that Gardiner's convictions regarding the falsity of the records were ill founded, and that the evidence "points conclusively to a multiple jump," probably a "hop, hop, jump."⁷⁰

While wrestling and the pancration have been commonly contrasted, one being represented as a test of skill and science, the other as a trial of brute

⁶¹ Way: *The Odes of Pindar*, "Olympian" v, ant. 1.

⁶² Krause: *op. cit.*, p. 69; Gardiner: *Greek Athletic Sports and Festivals*, pp. 194 f.

⁶³ Athenaeus, x, 414.

⁶⁴ Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 3-8; Gardiner: "Notes on the Greek Foot-race," *Jour. Hellenic Studies*, xxiii, 261-91; *Greek Athletic Sports and Festivals*, pp. 270-94.

⁶⁵ Gardiner: *Greek Athletic Sports and Festivals*, pp. 363 f.

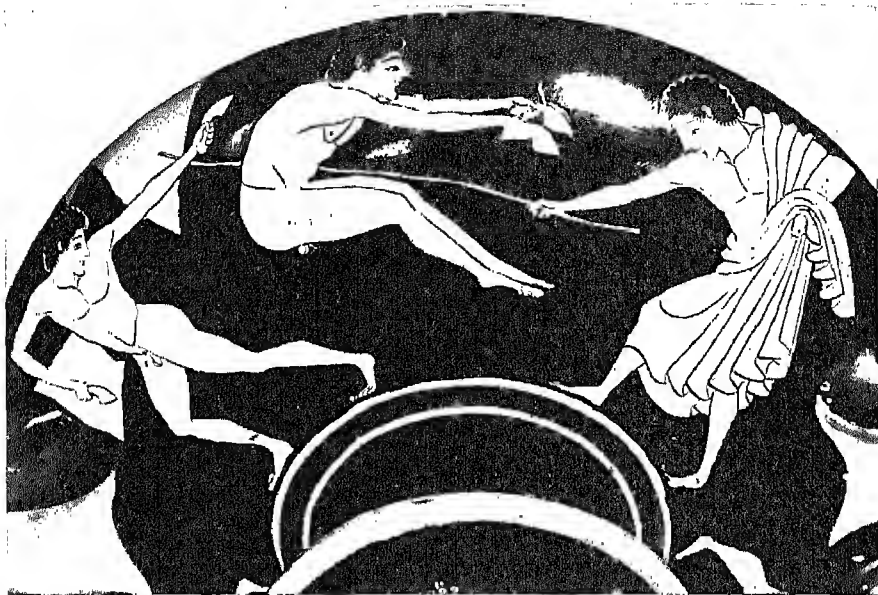
⁶⁶ Gardiner: "The Method of Deciding the Pentathlon," *Jour. Hellenic Studies*, xxiii, 69.

⁶⁷ *Concerning Gymnastics*, 55.

⁶⁸ "Phaëllus and His Record Jump," *Jour. Hellenic Studies*, xxiv, 80.

⁶⁹ "Ancient Long Jump," *Am. Jour. Archaeol.*, iv, 539.

⁷⁰ "The Pentathlon Jump," *Am. Jour. Philol.*, lxx, 406 f., 417.



JUMPING WITH HALTERES

Museum of Fine Arts, Boston (Courtesy, The Metropolitan Museum of Art, New York)

strength, Gardiner holds that the pankration was itself a "contest of skill," and "there is no ground" for so contrasting the two events.⁷¹ Though Arrichion was killed in the pankration, certain ancient authors thought it even less dangerous than wrestling. Various other descriptions and the condemnation of it by Galen, however, have doubtless given rise to the general notion of its brutality. The fact that it included elements of boxing as well as wrestling, and that the struggle was carried on both standing and on the ground until one should acknowledge himself vanquished,⁷² would also lend credence to the view that it was a more serious test. In wrestling, a "fair fall" was acknowledged if a contestant's "knee, hip, back, or shoulder" touched the ground. Three falls were necessary, i.e., the "best of five bouts," to win the crown. Tripping was permitted. Various hand and arm holds, neck holds, body holds, the arm lock, cross-buttock, and flying mare were evidently employed, but holds below the waist were not permitted.⁷³ The following description of the pankratic victory of Arrichion in the Fifty-fourth Olympiad⁷⁴ shows some of the features of the contest which set it off from wrestling and support its reputation for brutality.

"Accordingly the antagonist of Arrichion, having already clinched him around

⁷¹ "The Pankration and Wrestling," *Jour. Hellenic Studies*, xxvi, 12.

⁷² Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 9, 21.

⁷³ Gardiner: "Wrestling," *Jour. Hellenic Studies*, xxv, 14-31, 263-93.

⁷⁴ Cf. Pausanias, viii, 40, 2; Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 21.

the middle, thought to kill him; already he had wound his forearm about the other's throat to shut off the breathing, while, pressing his legs on the groins and winding his feet one inside each knee of his adversary, he forestalled Arrichion's resistance by choking him till the sleep of death thus induced began to creep over his senses. But in relaxing the tension of his legs he failed to forestall the scheme of Arrichion; for the latter kicked back with the sole of his right foot (as the result of which his right side was imperilled since now his knee was hanging unsupported), then with his groin he holds his adversary tight till he can no longer resist, and, throwing his weight down toward the left while he locks the latter's foot tightly inside his own knee, by this violent outward thrust he wrenches the ankle from its socket."⁷⁵

The beginning of the sacred truce, reputedly re-established by Iphitus,⁷⁶ which by the middle of the fifth century probably extended for three months rather than one, was announced by the Eleian heralds, first in their own land and then in all Hellenic cities. As soon as the truce was proclaimed, contestants, official representatives, and visitors of all sorts traveling to Olympia were under the protection of the god, and no one was permitted to invade the sacred territory.⁷⁷ Those who transgressed the Olympian truce were subjected to judgments and penalties. Though sometimes honored in the breach rather than in observance, especially by Lacedaemon, its general effectiveness, particularly when Olympian prestige was at its height, was admittedly great. A fine of two minas for every hoplite was imposed on Sparta because of her invasion of the sacred territory and seizure of Lepreum during the Peloponnesian War. Upon her failure to pay, the Eleans refused her admission to the games and sacrifices.⁷⁸ An Athenian, Phrynon, who was robbed by Macedonian soldiers while on his way to the Olympic festival, received full restitution from the king and an apology, to the effect that the soldiers had not known of the beginning of the sacred truce.⁷⁹

The regulations administered by the Hellanodikae at Olympia were numerous, precise, and generally strictly enforced. It was the business of these officials, who represented the chief judge of contests, Zeus himself, to ascertain the fitness of would-be contestants for the crown in respect to Hellenic parentage, age, physical condition, freedom from pollution by manslaughter, and from failure to perform any obligations owing to the Olympian god.⁸⁰ Evi-

⁷⁵ Philostratus: *Imagines*, II, 6. Trans. by A. Fairbanks. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁷⁶ Pausanias, v, 20, 1; 4, 5.

⁷⁷ Strabo, VIII, 3, 33; Krause: *op. cit.*, pp. 35 ff.; Gardiner: *Greek Athletic Sports and Festivals*, pp. 43, 201 f.; Gardner: *op. cit.*, p. 273.

⁷⁸ Thucydides, v, 49-50.

⁷⁹ Krause: *op. cit.*, p. 41.

⁸⁰ Philostratus: *Concerning Gymnastics*, 25; Gardiner: *Greek Athletic Sports and Festivals*, p. 46.

dence of age and parentage must have been often unsatisfactory. Did Alexander, son of Amyntas, prove himself an Argive by such a genealogical account as Herodotus records?⁸¹ Was it proof of his age, or the influence of a powerful friend, Agesilaus, that caused the Hellanodicae to admit an oversized Athenian to the boys' contests?⁸² Giving false information, if discovered, was severely punished. Contestants must announce their intention to compete by a specified date, and a tardy appearance was punished by fine and exclusion from the games. Apollonius, surnamed Rhantes, was punished for late arrival, it being shown that he had taken time on the way to Olympia to make a little money at games held in Ionia.⁸³ Those who satisfied the officials as to these requirements must also make a sacrifice, and take an oath before Zeus Horkios that they would not use illegal tactics to win (to which fathers, brothers, and trainers must also swear), and that they had faithfully trained for the contests as prescribed. Olympic contestants were required to train for ten months,⁸⁴ one month's training being under the eyes of the Hellanodicae at Elis. Philostratos gives an idea of their strictness in the early third century A.D. They prescribed such training as seemed to them best, having themselves been trained for their service; and even the trainers were threatened with the lash if anything happened contrary to the rules. There was, indeed, no disputing their decrees, for to resist them meant disbarment from the games.⁸⁵ Training in wrestling at Elis was so severe a trial of ability that the rules expressly permitted a crown to be awarded without an "actual contest."⁸⁶ Having concluded training, when they were about to leave for the Olympic contests, the athletes were admonished by the Hellanodicae as follows: "If ye have laboured so hard as to be entitled to go to Olympia and have banished all sloth and cowardice from your lives, then march boldly on; but as for those who have not so trained themselves, let them depart whithersoever they like."⁸⁷

Once enrolled for a contest, the athlete had no choice but to go through with it, or be shamed as a coward and punished, as was Sarapion, from Egypt, who became frightened the day before the pancration and ran away.⁸⁸ Physical unfitness, apparently, was not considered an adequate excuse. Thus, Theagenes, who entered his name in both boxing and the pancration in one Olympiad, but found himself so worn out after the first contest that he could not go on with

⁸¹ Bk. v, 22; viii, 136-7.

⁸² Xenophon: *Hellenics*, iv, 1, 39-40; Plutarch: *Agesilaus*, 13.

⁸³ Pausanias, v, 21, 13-5.

⁸⁴ *Ibid.*, v, 24, 9; Krause: *op. cit.*, pp. 132 ff.

⁸⁵ Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 54.

⁸⁶ *Ibid.*, 11.

⁸⁷ Philostratos: *The Life of Apollonius of Tyana*, v, 43. Trans. by F. C. Conybeare. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁸⁸ Pausanias, v, 21, 18.

the second, was fined two talents, one for the god, and another to be paid to Euthymus whom, the judges held, he had wronged.⁸⁹

Though the laws of Olympia punished venality severely, and officials were charged to be ever watchful, the evil crept in and increased. Philostratos traced its increase at the Great Games to the growth of professionalism, the habit of expensive, luxurious living, "Sicilian gluttony," and even to the trainers: "Some sell even their honor, as I believe, because they need much; others must buy themselves an easy victory, because they lead a luxurious life." Doubtless, too, excessive public adulation of victors caused many to desire a victory at any cost. Philostratos, however, regarded the games at Olympia as an exception to the rule: ". . . only among the Eleans is the olive-crown according to ancient belief still inviolable."⁹⁰ He goes on to cite what happened at the Isthmian Games. Considering the number of violations of Olympic rules, related by Pausanias and others, the statement of Philostratos means only that, relatively speaking, Olympia maintained the ancient ideal of sportsmanship with more success than others; indeed, the list of offenders does not seem large, considering the centuries of Olympian contests.

When venality was detected, the fact was published abroad; and a provision required the setting up of Zanes, bronze statues of Zeus, out of the fines imposed, so that contestants who came to Olympia could see them and be warned against like errors. Six were put up in the Ninety-eighth Olympiad, when Eupolus bribed his three opponents in boxing. These are said to have been the first fines imposed for such dishonesty. Verses were inscribed on one statue to the effect that an Olympic victory must be gained by fleetness and strength, not by money; another declared it was set up as "a terror to athletes who transgress"; a third praised the Eleans for their punishment of crooked athletes. Collecting the fines was sometimes difficult, as this instance shows: An Athenian pentathlete was fined for bribery in the 112th Olympiad; the Athenians asked for remission of the fine, which being refused, they neither paid nor attended the games, until compelled by an oracular voice from Delphi to do so. Six more Zanes were added—with verses, Pausanias says, no better than those on the punishment of Eupolus! Two others were erected in the 178th Olympiad for bribery in a wrestling match; again, in the 226th Olympiad, two boxers from Egypt increased the list of Zanes. The Eleans, Pausanias thought, should have been specially honorable in the games of Olympian Zeus, since they were under Elean jurisdiction; but an Elean father, wanting his son to win, bribed a father from Smyrna; this being known, both fathers were fined, rather than the sons.⁹¹

⁸⁹ *Ibid.*, vi, 6, 5-6.

⁹⁰ Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 45.

⁹¹ Pausanias, v, 21.

Sometimes athletes sold their abilities to cities which wished to increase their fame by having Olympic victors. Sotades, a Cretan, once victor in the long race, was bribed by Ephesus at the 100th Olympiad to proclaim himself an Ephesian, for which the Cretans banished him. Astylus, a Crotonian, victor at three Olympiads, allowed himself to be proclaimed a Syracusan to please Hiero, for which his townsmen made his house a gaol and took down his statue. Dicon, a Caulonian, many times a victor, sold himself to the Syracusans. Lichas, a Lacedaemonian, once entered his chariot under the name of Thebes, and for this he was whipped. Numerous other instances might be cited to show the spread of the golden blight at the Olympic and other great games. Virtue was not without her triumphs, however: Antipater of Miletus refused the bribe offered his father by the Syracusans to persuade him to proclaim himself from Syracuse, and set up a statue on which were inscribed his Milesian origin and the fact that he was the first Ionian to dedicate a statue at Olympia.⁹²

A strict law imposed the penalty of death on married women who attempted to witness the Olympian Games, or even to cross the River Alpheus on forbidden days. Virgins were not hindered from observing the contests, however, according to Pausanias,⁹³ but this is thought at least open to question.⁹⁴ Two exceptions to the rule against women may be noted: the Priestess of Demeter Chamyne, a woman designated by the Eleans, who sat on a white altar opposite the Hellanodicae and witnessed the contests; and Pherenike of Rhodes, daughter of Diagoras, the boxer. Pherenike was the only woman who transgressed the law and yet escaped punishment. Her husband being dead, she disguised herself as a trainer and came with her son Pisirodus to the contests. When he was victorious, she became excited, leaped over the barrier which marked the space reserved for trainers, and in so doing exposed herself and betrayed her sex. Notwithstanding the seriousness of the offense, she was exempted from the punishment of being thrown from the Typaeon rock because of the renown of her family, which had furnished many Olympic victors.⁹⁵

The prohibition against women may be accounted for as a survival of an ancient religious taboo, antecedent to Dorian dominion. It was, in any case, out of keeping with Dorian practice in Lacedaemon and in other Dorian cities

⁹² *Ibid.*, vi, 2, 2, 6-7; 3, 11; 13, 1; 18, 6; Krause: *op. cit.*, pp. 144 ff., 270, 285, 291; Hyde: *Olympic Victor Monuments*, pp. 33 f.; Gardiner: *Greek Athletic Sports and Festivals*, pp. 134 f., 174.

⁹³ *Bk.* vi, 20, 9.

⁹⁴ Krause: *op. cit.*, pp. 54 ff.; Gardiner: *op. cit.*, p. 275; Gardiner: *Greek Athletic Sports and Festivals*, p. 47; Hyde: *Olympic Victor Monuments*, p. 49. Pausanias says, too, regarding the altar of Zeus, that maidens might ascend to a certain point; and women as well, "when they are not excluded from Olympia," i.e., when contests were not being held.—*Bk.* v, 13, 10.

⁹⁵ Pausanias, v, 6, 7-8; Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 17.

such as Cyrene,⁹⁶ though it harmonized with Athenian discrimination against women.

A concession to women of wealth and rank was made in that they could enter horses and chariots at Olympia, though they could not themselves enter the contest. Those who took advantage of the opportunity were chiefly Lacedaemonians. Cynisca, daughter of Archidamus, was the first and the most famous woman, who won a victory in the four-horse chariot race at Olympia. A shrine was erected in her honor at the Plane-Tree Grove, and a memorial in stone of chariot, horses, charioteer, and a likeness of Cynisca herself was put up at Olympia.⁹⁷ Xenophon says that Agesilaus advised Cynisca to enter her horses at Olympia, so as to prove that victory in such matters depended on wealth and not necessarily on merit.⁹⁸ Euryleonis was also a winner with a two-horse chariot at Olympia. Macedonian women followed the Dorian fashion, and Belistiche was victor in the 129th Olympiad. Berenike Euergetis, wife of Ptolemy III, is also recorded as an Olympic winner.⁹⁹

Though excluded from witnessing the contests in honor of Olympian Zeus, women had a festival of their own, athletic and religious in character, in honor of Hera. Her temple, of wood, stone, and sun-dried brick, more ancient than any other whose foundations remain at Olympia, is believed to date back at least to the tenth or eleventh century.¹⁰⁰ Like the men's contests, Hera's festival was traced back in legend to great antiquity, Hippodamia being credited with its institution in gratitude for her marriage with Pelops. Two choruses, the Physcoa and the Hippodamia, were under the direction of sixteen women, representing originally sixteen ancient cities of Elis. The matrons wove a robe for Hera every four years, and with their assistants conducted the Heraean Games, in which virgins of three age groups participated. These girls, with hair hanging down, dressed in a short shirt leaving the right shoulder bare to the breast and reaching a little above the knees, ran a course about one-sixth less than the length of the Olympic stadium. Victors were crowned with wild olive, received a share of a sacrificial cow, and were permitted to dedicate their statues in Hera's temple. Whether the marble statue of a girl runner, in the Vatican Museum, should be referred to the Heraean contests at Olympia, as many have thought, is open to question.¹⁰¹

In legendary lands and times the Greeks won prizes of more or less value in athletic contests. The prizes at the games in honor of Patroclus were commensurable in value with the merit of the dead and the generosity and dignity of

⁹⁶ Krause: *op. cit.*, p. 214; *supra*, pp. 244 ff.

⁹⁷ Pausanias, III, 8, 1; 15, 1; VI, 1, 6; Krause: *op. cit.*, p. 316.

⁹⁸ Agesilaus, IX, 6; Plutarch: Agesilaus, 20.

⁹⁹ Pausanias, III, 17, 6; V, 8, 11; Krause: *op. cit.*, pp. 57 f., 258, 287.

¹⁰⁰ Hyde: *Olympic Victor Monuments*, p. 16; Gardner: *op. cit.*, p. 283.

¹⁰¹ Pausanias, V, 16; Hyde: *Olympic Victor Monuments*, pp. 49 f.; *supra*, p. 247.

the giver, and were offered to victors and to vanquished.¹⁰² In early historic times, too, at festivals both of local and of wide renown, prizes of tangible value continued to be the rule. Only in the great national games of the crown did a slight, sacred symbol, a wreath of wild olive, laurel, parsley, or pine, become the sole, official reward for merit.¹⁰³ Dorian influence, which raised a local festival to national importance, also established the practice of giving a wreath as symbol of victory. In the earliest Olympiads prizes of real value must have been given as at other games. The substitution of the olive crown at Olympia may have been gradual; but, despite conflicting myths about its coming into use, it is generally held that it was given at the Seventh Olympiad, after the Pythian oracle had advised it, and was won in running by Daicles, a Dorian from Messenia.¹⁰⁴ Numerous other myths were associated with the wild olive. Heracles was said to have crowned his winning brother with it, and brought it first to Greece from the land of the Hyperboreans; it was said to have first sprouted on the banks of the Alpheus; Heracles, by another account, once leaned his club of wild olive against a statue of Hermes, and it struck root and flourished again.¹⁰⁵

"Now on one, now on another, doth the grace that quickeneth look favourably," says Pindar.¹⁰⁶ On the head of the one thus favored, bound with a woolen fillet, was placed a wreath of wild olive, cut with a golden sickle by a boy whose parents were living, from the sacred "Olive of the Fair Crown," which stood within the Altis near the temple of Zeus. An imitation of the same crown adorned the head of the statue of Zeus, supreme judge of contests. In early times the seventeen crowns lay ready for the prospective winners on a tripod of bronze; later, on a magnificent table of ivory and gold. Whether the crown of victory was awarded immediately after each contest, or all of them together on the last day, the sixteenth of the festal month, has been disputed. Pausanias and others mention certain events which imply an immediate ceremony. Practice may have varied from time to time; but an immediate award seems most probable.¹⁰⁷

Though a crown was the only award, various customary honors were the lot of the victor. In his right hand, he received a palm from the Hellenodik;¹⁰⁸ he heard his name, that of his father, and that of his country and city pro-

¹⁰² *Supra*, pp. 226 ff.; Krause: *op. cit.*, p. 169; Hyde: *Olympic Victor Monuments*, pp. 18 f.

¹⁰³ Pausanias, viii, 48, 2.

¹⁰⁴ Müller: *The History and Antiquities of the Doric Race*, II, 314; Krause: *op. cit.*, pp. 158, 262.

¹⁰⁵ Pausanias, II, 31, 10; v, 7, 7-8; 14, 3.

¹⁰⁶ Pater: *Greek Studies*, pp. 297 f.

¹⁰⁷ Pausanias, v, 11, 1; 12, 5; 15, 3; 20, 1-2; 21, 14; Krause: *op. cit.*, pp. 162, 164 f.; Gardiner: *Greek Athletic Sports and Festivals*, pp. 200 f.

¹⁰⁸ Pausanias, viii, 48, 2-3; Plutarch: *Theseus*, 21; *Symposiacs*, viii, 4; Krause: *op. cit.*, p. 168; cf. Tarbell: "The Palm of Victory," *Class. Philol.*, III, 264-72.

claimed by the herald; above all arose the shouts of the multitude and the acclaim of his friends; and not less sweet was the song of a gifted singer, "sung in the victor's supper-room or at the door of his abode, or with the lyre and the pipe as they took him home in procession through the streets, . . . or in a temple where he laid up his crown. . . ." ¹⁰⁹ Moreover, on the last day, he ate at the table of Zeus, as it were, when the Eleans feasted all victors at the Prytaneum; ¹¹⁰ if he liked, he might dedicate the sacred wreath, the instruments of his contest—discus, javelin, chariot, *halteres*—to the god of games; and he, his friends, relatives, or fellow citizens were free to put up at Olympia a personal statue, which would long remain as witness of his great day. To these monuments to personal triumph, Pausanias, in 173 A.D., and others in later years, returned to read the fascinating human story of Olympia.

For the vanquished, lucky perhaps to be alive, there was little or nothing to do but "slink homeward with scant sympathy, indeed thankful to be ignored," for Olympia honored the victor alone with a wreath.¹¹¹ Alcibiades boasts to the Athenians that in the chariot races he won first prize and also placed second and fourth, having entered seven chariots in one contest, more than any private individual theretofore; ¹¹² Kallias, too, is said to have taken the prize in the horse race and also finished second in the four-horse chariot race; ¹¹³ but though second and fourth might be mentioned as an honor, no prize was connected with it.

Victories "without dust," i.e., without an actual contest, were not unknown. A tardy arrival or failure to appear might give the crown to the opponent. Thus Heraclides was crowned in boxing because his opponent Apollonius of Rhantes came late.¹¹⁴ Sometimes an entrant became frightened because of the reputation of his opponent and withdrew, thus acknowledging himself vanquished without a contest.¹¹⁵ By a mythical account, Heracles was declared victor in "all the contests . . . without opposition."¹¹⁶ A crown was occasionally won because an announced contestant, worn out with an earlier contest, was unable to meet his opponent. Thus Dromeus gained the crown for the first time in the pancration at the expense of Theagenes.¹¹⁷ Excellence shown during the training period at Olympia could also win in certain cases. Though the award of a crown in the pancration without a contest was extraordinary, Philostratos says that training for wrestling at Olympia was so severe a trial that the rules

¹⁰⁹ Pater: *op. cit.*, p. 297.

¹¹⁰ Pausanias, v, 15, 12.

¹¹¹ Krause: *op. cit.*, pp. 164, 169 ff.; Lawton: *op. cit.*, pp. 144 f.

¹¹² Thucydides, vi, 16.

¹¹³ Herodotus, vi, 122.

¹¹⁴ Pausanias, v, 21, 12-4.

¹¹⁵ *Ibid.*, v, 21, 18.

¹¹⁶ Diodorus, iv, 14.

¹¹⁷ Pausanias, vi, 11, 4.

expressly permitted a victory therein without a contest, awarding the crown "to the best training—indeed, for training alone."¹¹⁸

Though Olympia safeguarded athletics against commercialism by awarding simply a symbolic wreath, Olympic heroes were not left long without other rewards. Solon encouraged Athenian athletes by a gift of five hundred drachmas to Olympic victors and fed them at public cost at the Prytaneum.¹¹⁹ Crotonians reputedly offered lavish prizes to entice athletes to their city and thus "dim the glory" of the Olympic festival.¹²⁰ At Rome public maintenance was provided for Olympic victors and others.¹²¹ Less tangible, though more spectacular, honors might come to an athlete if his city chose to erect a statue, greet him with a great procession, perhaps breach its walls for his triumphal entry, or even establish religious rites in his name.¹²² Such gifts and extraordinary honors did much, doubtless, to encourage professionalism and a mercenary spirit. It is not strange that many came to want money above all else.¹²³ Though slight in the sixth century, compared with later times, these evils were sharply criticized by Xenophanes. Aristophanes wittily punctured the old belief that games were played for love of sport. His audiences well knew that "Wealth can see, my boy!" Euripides castigated the evil which had grown to formidable proportions in the fourth century. By the time of Galen and Philostratos professionalism and pot-hunting had brought ruin to athletics, though Olympia, despite numerous cases of venality, continued to award the crown until her honors to Olympic Zeus were cut off forever.¹²⁴

PYTHIAN, ISTHMIAN, AND NEMEAN GAMES

After a long history, when the concern over organized athletics had spread and a single great festival no longer sufficed, Olympia became the model for other festivals of national scope. By the early sixth century four national festivals had been recognized, the Pythian, Isthmian, and Nemean games having been instituted on a basis comparable to the Olympian.¹²⁵ None of these, however, achieved fame equal to Olympia.

From a religious and cultural standpoint the Pythia were second only to Olympia; in horse and chariot races they vied with Olympic events, but athletically they were probably inferior not only to Olympia but also to the

¹¹⁸ *Ibid.*; Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 11.

¹¹⁹ Plutarch: Solon, 23; Aristides, 27.

¹²⁰ Athenaeus, xii, 522.

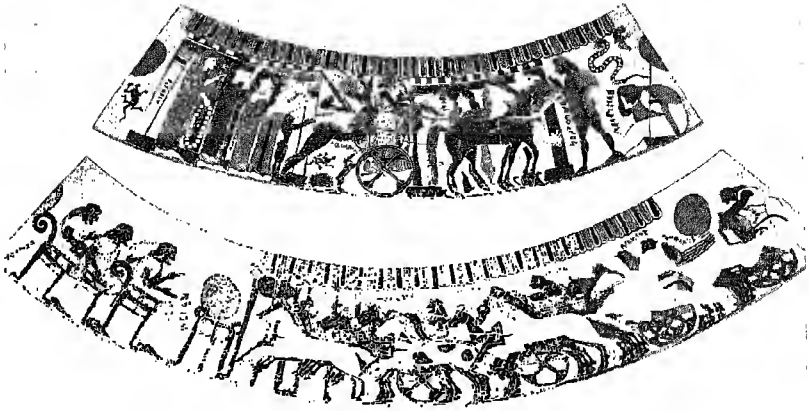
¹²¹ Suetonius: Augustus, 45; *infra*, p. 751.

¹²² Hyde: *Olympic Victor Monuments*, pp. 37 ff.

¹²³ Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 45.

¹²⁴ *Supra*, pp. 354 f.

¹²⁵ *Real-Encyclopädie*, vii, Pt. II, 2042.



A FOUR HORSE CHARIOT RACE 6th century B.C.

Berlin Museum (Courtesy, The Metropolitan Museum of Art, New York)

Nemean and the Isthmian festivals.¹²⁶ Competitions in music gave the Pythia their greatest fame. There, since ancient times, the Hymn to Apollo was rendered in honor of the god's combat with the Python.¹²⁷ Ovid recalls the event, and the establishment of memorial games:

Though every shaft took place, he spent the store
Of his full quiver; and 'twas long before
Th' expiring serpent wallow'd in his gore.
Then, to preserve the fame of such a deed,
For Python slain, he Pythian games decreed.¹²⁸

Long celebrated as an octennial music festival,¹²⁹ the Pythia were reorganized in 582 B.C., after the ten-year Sacred War which arose out of the competing interests of Crissa, Cirrha, and Delphi.¹³⁰ Under the jurisdiction of the Amphictyonic league, they were administered by its council, the Hieromnemes, composed of two members from each of the twelve tribes, which had charge of all details pertaining to the holy place. The new festival, celebrated

¹²⁶ Gardiner: *Greek Athletic Sports and Festivals*, p. 209; Hyde: *Olympic Victor Monuments*, pp. 24 f.

¹²⁷ Strabo, ix, 3, 10.

¹²⁸ *Metamorphoses* (Dryden), i, 21.

¹²⁹ Krause: *Die Pythien Nemeen und Isthmien*, p. 29.

¹³⁰ Grote: *A History of Greece*, i, 783.

quadrennially in the third year of each Olympiad, in the month of August, included gymnastic contests and chariot races on the Olympian pattern,¹³¹ as well as musical events. Though little is known of the order of events, or the number of days devoted to the festival, the musical contests which were oldest and most important must have preceded gymnastic competitions, while equestrian contests followed them.¹³² Just as prizes of value had been replaced by the olive wreath at Olympia, so at Delphi the reward of victory, after the festival's reorganization, was a crown of laurel and the symbolic palm.¹³³ The branches for the crown were to be cut from the Vale of Tempe by a boy whose mother and father were still living—again following Olympic precedent. The regulations governing the Pythian contests are little known, but it seems that, as at Olympia, failure in respect to promptness might exclude a contestant.¹³⁴ Doricus, son of Diagoras, reputedly won a crown without a contest,¹³⁵ though Heliodorus¹³⁶ says that such an award was not permitted. Krause infers from these similarities to Olympian practice that other regulations introduced at Olympia were probably taken over by Delphi.¹³⁷ Just when the Pythian festival came to an end is unknown. In the 195th Pythiad the victor in tragedy was a Byzantine, Clemens; the Pythian Panegyric was mentioned at the time of the Emperor Julian; and it may well be that the festival continued till about 394 A.D., when the Olympic contests came to an end.¹³⁸

The Isthmian Games, reputed by legend to have been founded by Theseus,¹³⁹ and reorganized about 582 B.C., were of less consequence as a religious festival than the Pythia, and of less importance athletically than the Olympic and Nemean festivals.¹⁴⁰ The earliest rites at the Isthmia were of a religious character, in honor of Melicertes. Their origin, like those at Olympia and Delphi, was shrouded in myths, the Isthmia being held by some to have antedated even Olympia, the Pythia, and the Nemea. According to one account the festival was first held by Poseidon and Helios; Castor had won the foot race; Calais the *diaulos*; Orpheus the contest with the cithara; Heracles the pancration; Polydeuces the boxing match; Peleus, wrestling; Telamon, throwing the discus; and Theseus the race in armor. The festival was also credited with equestrian contests in which Ncleus and Phaeton were victors, and a boat race

¹³¹ Krause: *Die Pythien*, p. 20.

¹³² *Ibid.*, pp. 41 f.

¹³³ Pausanias, x, 7, 5; Krause: *Die Pythien*, pp. 49 f.

¹³⁴ Plutarch: *Symposiacs*, vii, 5, 1.

¹³⁵ Pausanias, vi, 7, 2.

¹³⁶ *Aethiopian History*, iv.

¹³⁷ *Die Pythien*, p. 47.

¹³⁸ *Ibid.*, pp. 53, 94 f.

¹³⁹ Plutarch: *Theseus*, 25.

¹⁴⁰ Krause: *Die Pythien*, pp. 182 f.; *Real-Encyclopädie*, vii, Pt. II, 2042; C.A.H., III, 556.

wherein the Argo won the award.¹⁴¹ Gardner says that of all the greater festivals ". . . the Isthmia alone probably included boat-racing."¹⁴²

The frequency of the Isthmian festival, prior to its reorganization, is undetermined. The celebration may have been quite irregular; or it may have been an octennial event, as were other great festivals in early times. As reorganized, however, the Isthmia occurred every other year, in late April or early May, during the first and third years of each Olympiad.¹⁴³ The festival was celebrated in honor of Poseidon, whose temple on the Isthmus was surrounded by forests of pine.¹⁴⁴ Several days were probably occupied by the contests.¹⁴⁵ Gymnastic and equestrian events were included, and possibly boat races as well. Though musical events are not definitely known before the third century B.C., they probably existed from the very beginning. The order of events at the festival is unknown, but Livy tells us that the games were "regularly opened with a ritual chant. . . ." ¹⁴⁶ Poetry, plays, and painting at one time or another were included among the events. Nero gained the crown as citharist and herald, though the manner of his winning was extraordinary.¹⁴⁷ Winners of the staderace for men and boys are known; likewise, victors in the long race, wrestling, and boxing for men and boys, the pancration for men and youths, and the pentathlon. There were doubtless other gymnastic contests, but specific information is lacking in the scattered references that have been preserved. Equestrian events, similar to those at Olympia and Delphi, seem also to have had a place at the Isthmia, though only a few victors are known to us.

Though prior to the third century the Isthmian festival was little known, in later centuries its fame was noised abroad. The relative importance of Olympic and Isthmian games in Solon's time may be surmised from the fact that one hundred drachmas were decreed for Isthmian victors, and five hundred for those crowned at the Elean festival.¹⁴⁸ After the Persian War the Isthmia shared the heightened value that Greeks generally attached to Panhellenic festivals; nevertheless, Corinthians themselves appear to have had little athletic prestige, and their games did not draw as many great athletes from distant parts as did the Olympic and the Nemean. Isthmian popularity was greatest with Athenians, Aeginetans, Thebans, and other neighbors. Despite her inferior athletic stand-

¹⁴¹ Krause: *Die Pythien*, pp. 170 ff.

¹⁴² "Boat-races among the Greeks," *Jour. Hellenic Studies*, II, 92; *supra*, p. 351.

¹⁴³ Krause: *Die Pythien*, pp. 182, 184. The time has been disputed. Gardiner, *Greek Athletic Sports and Festivals*, p. 214, holds with others that the Isthmia were held in the second and fourth years of the Olympiad.

¹⁴⁴ Strabo, VIII, 6, 22.

¹⁴⁵ Krause: *Die Pythien*, p. 192; Gardiner: *Greek Athletic Sports and Festivals*, pp. 220 f.

¹⁴⁶ Livy, XXXIII, 32.

¹⁴⁷ Philostratus: *Apollonius of Tyana*, IV, 24; Krause: *Die Pythien*, pp. 189 ff.

¹⁴⁸ Plutarch: *Solon*, 23.

ing, however, the crowds that came to Corinth were so great as to excite comment by Strabo, Livy,¹⁴⁹ and others, and may have exceeded all festivals in size. This drawing capacity must be credited above all to the accessibility of the city of Corinth to merchants and to better accommodations for visitors. Dio Chrysostom says that "... when the time for the Isthmian games arrived," and everybody went to the Isthmus "to see the athletes and to gormandize," Diogenes went down also "... to make a study of the pursuits and ambitions of men. . . ." ¹⁵⁰ Athenians especially had a high regard for the Isthmia—perhaps in connection with the legend that Theseus had made an agreement with the Corinthians by which a place of honor for Athenian representatives should be set aside as large as the fully stretched sail of the ship on which they came.¹⁵¹ In light of this popularity of the Corinthian festival, it is interesting to recall that Socrates was said never to have left Athens save when he went on military service and again when he attended the Isthmian Games.¹⁵² Aristophanes, in *The Peace* (421 B.C.), depicts the bubbling spirits of common folk at the prospect of a return to the ways of peace:

What are you scribbling?
Marking out a place
To pitch your tent in, at the Isthmian games.¹⁵³

Occasionally an ancient author conveys a vivid impression of popular reactions to the games and victorious athletes. Dio Chrysostom has described the enthusiasm with which a victor at Corinth was welcomed by the crowds. Diogenes, he says, "... saw a person leaving the race-track surrounded by a great mob and not even walking on the earth, but being carried shoulder high by the throng, with some following after and shouting, others leaping for joy and lifting their hands towards heaven, and still others throwing garlands and ribbons upon him. . . ." ¹⁵⁴ Diogenes, not so much impressed by physical feats, is said to have put a crown on a horse's head because it had "won in kicking." ¹⁵⁵ Though we are told that Diogenes thus caused many to ridicule the athletes, and that certain people actually went away without seeing the rest of the contests, his influence seems to have been of slight avail in breaking the

¹⁴⁹ Strabo, viii, 6, 20; Livy, xxxiii, 32.

¹⁵⁰ Dio Chrysostom, viii, 6-7; ix, 1. Trans. by J. W. Cohoon and H. L. Crosby. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁵¹ Plutarch: *Theseus*, 25.

¹⁵² Plato: *Crito*, 52.

¹⁵³ *The Peace*, 879 ff. Trans. by B. B. Rogers. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁵⁴ Dio Chrysostom, ix, 14. Trans. by J. W. Cohoon and H. L. Crosby. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁵⁵ *Ibid.*, ix, 22.

Hellenic habit of excessive laudation of victorious athletes. Notwithstanding his views, Corinth would continue to welcome contestants and their supporters. It was both a pleasant and a profitable performance.

Due to the site of the Isthmian Games, commercialism seems to have been more pronounced than at any other national festival. It is probably not by chance that the worst instance of venality cited by Philostratos occurred at Corinth.¹⁵⁶ Perhaps, too, for this reason the Romans, famed for practicality and business, found a congenial atmosphere on the Isthmus. Under Roman rule the festival gained greater prominence. In 228 B.C. they were admitted to the Isthmian Games. Flamininus announced there, in 196 B.C., the freedom that Rome granted to Greek cities.¹⁵⁷ Even when the city was destroyed by Mummius, the Isthmian festival was not discontinued, though, for the time being, its direction was in the hands of the Sicyonians.¹⁵⁸ Caesar re-established the city, and the games were even more popular than before.¹⁵⁹ Nero competed at Corinth and boasted of his liberality to the Greeks. At the time of Julian, the Isthmia had taken on somewhat the character of Roman festivals, great sums being spent on animal combats. The festival may have continued to about the end of the fourth century, when the Olympian and Pythian contests also came to an end.¹⁶⁰

Like other national festivals the celebration at Corinth, when it had been officially established, brought with it a moment of peace. Pausanias¹⁶¹ cites the existence of a sacred truce at the Isthmia, even in legendary days. In historic times the truce was sometimes violated, as when Agcsilaus invaded Corinth and took charge of the games then in progress.¹⁶² Each Hellenic state was supposed to send a delegation (*theoria*) to the Isthmian as to other national festivals; but Elis neither sent representatives nor permitted Elean contestants to enter the lists at Corinth, a circumstance which still held true in the time of Pausanias, and for which various legendary reasons were assigned.¹⁶³

Little is known of the Isthmian regulations, but they probably followed the Olympic pattern. Pausanias says that a person might compete as many as three times in one day; Cleitomachos, a Theban, won in wrestling, boxing, and the pancration.¹⁶⁴ Of the judges little is known, but they were Corinthians,¹⁶⁵ ex-

¹⁵⁶ Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 45.

¹⁵⁷ Livy, xxxiii, 32.

¹⁵⁸ Pausanias, ii, 2, 2.

¹⁵⁹ Krause: *Die Pythien*, pp. 180 f.

¹⁶⁰ *Ibid.*, pp. 53, 181.

¹⁶¹ Bk. v, 2, 1.

¹⁶² Xenophon: *Hellenics*, iv, 5, 1-2.

¹⁶³ Pausanias, v, 2, 2-5.

¹⁶⁴ Bk. vi, 15, 3; Krause: *Die Pythien*, p. 194.

¹⁶⁵ Way: *The Odes of Pindar*, "Nemean" ii, str. 5.

cept for a few occasions when administration passed temporarily into other hands, as when the city of Corinth was destroyed. The judges themselves wore crowns while performing their functions,¹⁶⁶ and might serve more than once. The great liberality of entertainment of friends and of strangers, mentioned by Plutarch,¹⁶⁷ implies that the rôle of judge could only be played by wealthy men. Corinthian victors were crowned with parsley or pine, and like other winners at national games, received a palm branch from the judges. According to some of the ancients the crowns were first made of wild celery or parsley, and later of pine. It is most probable, however, that pine was first employed; later, parsley was used for a time; but afterwards, it was supplanted by the original pine.¹⁶⁸ Pindar refers to the victor crowned with wild celery.¹⁶⁹ It is said that Timoleon's soldiers, marching against the enemy, were met by mules laden with parsley. This they thought a bad omen, for the plant was commonly used to decorate graves of the dead. Timoleon reminded them, however, that the Isthmian crowns were made of the same thing, and commanded them to be of good courage and to twine wreaths for themselves, for the load of parsley was a clear augury of the victory that would be theirs.¹⁷⁰ In Roman times, certainly, pine came into its own again. Plutarch says it had recently come into use; but also that it had been the original reward of victory, and was only now restored to its ancient honor. A Corinthian coin from the time of Verus shows that pine was used. Writers of imperial times generally speak of it as the award for victory; Lucian speaks only of the crown of pine at the Isthmia, and it was used, presumably, till the festival was at an end.¹⁷¹

In many ways the development of the Nemean festival, though less well known, parallels the stories of Olympia, Delphi, and Corinth. Held in honor of Nemean Zeus, and associated mythologically with funeral rites and the slaying of the Nemean lion, the games were celebrated in the valley of Nemea, which lay between Cleonae and Phlius, about 120 stadia from Argos and 80 from Corinth.¹⁷² There was the grave of the boy Opheltes, who, according to legend, was killed by a serpent while his nurse sought water to slake the thirst of Argive soldiers, whom Adrastus was leading against Thebes.¹⁷³ There, too, was the tomb of Lycurgus, father of Opheltes. The chief feature of the sacred place was the cypress-surrounded temple of Nemean Zeus—a sanctuary which,

¹⁶⁶ Dio Chrysostom, ix, 13.

¹⁶⁷ Symposiasts, viii, 4, 1.

¹⁶⁸ *Ibid.*, v, 3, 1-3; Krause: *Die Pythien*, pp. 197, 199 ff.

¹⁶⁹ Way: *The Odes of Pindar*, "Nemean" iv, str. 11; "Isthmian" ii, ep. 1.

¹⁷⁰ Plutarch: *Timoleon*, 26.

¹⁷¹ *Anacharsis*, 9; Krause: *Die Pythien*, p. 203.

¹⁷² Strabo, viii, 6, 19.

¹⁷³ Apollodorus: *The Library*, iii, 6, 4.

though it had suffered the ravages of time and was bereft of its images, was still "worth seeing" in the time of Pausanias. Fifteen furlongs distant, in Mount Tretus, was the cave of the Nemean lion.¹⁷⁴

Gymnastic contests, according to tradition, were instituted in honor of the dead boy. Legend had it that Adrastus, who first celebrated the games, won the horse race; Eteocles, the stade-race; Tydeus, the boxing match; Amphiaraios, throwing the discus and jumping (or the chariot race, ἀμαρτῆ, according to another reading); Laodokos, at throwing the spear; Polynecikes, in wrestling; and Parthenopaïos in archery.¹⁷⁵

When the Nemean Games were first celebrated is unknown, but Pausanias¹⁷⁶ speaks of victories at Nemea before the time when records were kept. Though certain Greek myths placed their origin before the First Olympiad, as early as the tenth century B.C. or even before,¹⁷⁷ there is nothing of authentic history. In the sixth century the enthusiasm for athletics, which stimulated the founding of national games elsewhere, may have caused the Nemean festival to be raised to Panhellenic rank. From the first Nemead, 573 B.C., after which records were kept, the games seem to have had an uncertain career, and less is known of them even in this historic period than of other national festivals. They continued under the Empire, however, and were celebrated at Argos.¹⁷⁸ Livy¹⁷⁹ called the Nemea "most popular" of all the games. In the reign of Hadrian they gained renewed renown, and may have continued, like other national games, till the time of Theodosius.¹⁸⁰

By virtue of geographical location, the Nemean festival came naturally under the jurisdiction of Cleonae. Her management was often disputed by Argos, however, and about 460 B.C. control of the games passed to that city, whose tyrants gave them increased reputation, much as Pheidon of Argos brought renown to the Olympic Games, reorganized in the early sixth century. Though, save for brief intervals, the Nemean presidency was held by the Argives till the festival succumbed, there was a struggle over it, and the games were sometimes celebrated both by Argos and Cleonae.¹⁸¹ Thus Aratus, leader of the Achaean League, drew Cleonae into it and re-established the games under its control, claiming the right from ancient custom. The Argives, against whom he was fighting, continued, however, to celebrate at Argos. Thus, in this instance, the

¹⁷⁴ Pausanias, II, 15, 2-3.

¹⁷⁵ *Ibid.*, x, 25, 7; Apollodorus, III, 6, 4.

¹⁷⁶ Bk. VI, 13, 8.

¹⁷⁷ Krause: *Die Pythien*, p. 115.

¹⁷⁸ Polybius: *The Histories*, v, 101; *Real-Encyclopädie*, VII, Pt. II, 2042.

¹⁷⁹ Bk. XXXIV, 41.

¹⁸⁰ Krause: *Die Pythien*, p. 119; *Olympia*, p. 50.

¹⁸¹ Krause: *Die Pythien*, pp. 108 ff.

games not only failed to promote peace and order, but were, in fact, a source of conflict between cities. For the Achaeans, refusing to recognize the truce proclaimed by the Argives for the safe passage of athletes to and from the festival, seized those who went through Achaeon territory and sold them as captured enemies.¹⁸² Notwithstanding the efforts of Aratus, however, the control of the games passed finally from the hands of Cleonac.

Though the site of the Nemean Games has not been fully excavated, a stadium, gymnasium, and hippodrome may be assumed as indispensable for the equestrian and gymnastic contests. A theater for musical contests is also indicated by Plutarch's casual reference to it, when Philopoemen attended the competition of minstrels in 205 B.C.¹⁸³ The order of events is uncertain, but probably followed the Olympic pattern. As elsewhere, musical contests may have preceded gymnastic and equestrian events. The variety of Nemean contests outdid Olympia itself, since musical, gymnastic, and equestrian competitions were included. In athletic events Nemea was second only to Olympia, and it is probable that most, if not all, Olympic contests were represented.¹⁸⁴ The stade-race, wrestling, pentathlon, and pancration for youths and men; and boxing, two-stade-race, the long race, and the race in armor are known events. The race in armor at Nemea was reputed to be especially old. Pausanias mentions an armed race for men at the winter celebration.¹⁸⁵ Competitions for younger persons were differentiated for youth (ἀγένοιαι) and boys (παῖδες). There was also a four-stade-race (δρόμος ἑπταστήδων), variously interpreted as a race for boys and as a boys' horse race. This race for boys is said to have been re-introduced by Hadrian at the winter Nemean Games.¹⁸⁶ Equestrian contests are mentioned at the founding of the games. Though there are few records of such events, Alcibiades, Chromios, and Xenarches are known victors.¹⁸⁷

After their establishment as a national festival, the Nemean Games were held in the second and the fourth year of each Olympiad.¹⁸⁸ At its height the festival must have occupied more than one day, and may have lasted for several.¹⁸⁹ Livy mentions one day of the festival only, at the time when the victorious Roman, Quintus, presided over them; but by this he may have meant the chief day of the festival. One day would scarcely have sufficed for the entire celebration, which included musical, gymnastic, and equestrian contests, and was, according to Livy, "the most popular" festival. Moreover, Livy speaks

¹⁸² Plutarch: *Aratus*, 28.

¹⁸³ Plutarch: *Philopoemen*, 11; Pausanias, viii, 50, 3.

¹⁸⁴ Krause: *Die Pythien*, pp. 133 f., 138.

¹⁸⁵ Bk. II, 15, 3; Philostratus: *Concerning Gymnastics*, 7.

¹⁸⁶ Pausanias, vi, 16, 4; Krause: *Die Pythien*, pp. 136 ff.

¹⁸⁷ Krause: *Die Pythien*, pp. 148, 150, 163.

¹⁸⁸ *Ibid.*, p. 127.

¹⁸⁹ Gardiner: *Greek Athletic Sports and Festivals*, p. 225.

specifically elsewhere of a Nemean festival which was interrupted by a sudden foray of the Romans. Philip, he says, left the festival long enough to punish the invaders, and then returned to celebrate the remainder of the games.¹⁹⁰

Little is known of the rules governing Nemean contests. Pausanias tells of Creugas, a boxer from Epidamnus, who was given a crown, though dead, while his antagonist, who had intentionally killed him, was expelled from the games as punishment. This parallels the decision of the Hellanodicae at Olympia, who crowned Arrichion in death.¹⁹¹ It may be that, in other respects, Nemean rules were similar to those of Olympia. Victors were crowned with wreaths of wild celery or parsley, and received a branch of palm. The judges of the contests, perhaps twelve in number, were first of all from Cleonae, then from Argos, after the Argives had gained control. They wore somber mourning, befitting a celebration in honor of the dead.¹⁹²

As a political purpose lay back of the national festival, and the Argives who controlled the games played a prominent rôle in Greek affairs, it was customary for the more important states to send impressive embassies to Argos. A Truce of God was proclaimed, as at other national festivals, permitting athletes, embassies, and other visitors to pass unmolested to and from the games during the sacred month. As has been noted, however, the truces were sometimes ignored, if it suited the purpose of some Greek city to do so. The Nemean truce was not exceptional in this respect. Xenophon says that on certain occasions a truce seems to have been "unjustly" proclaimed by the Argives as a means of protection against enemies; but, he says, the oracles approved of its being ignored by invaders when invoked for such a purpose.¹⁹³

INFLUENCE, FAILURE, AND DECLINE OF NATIONAL GAMES

The athletic habit grew; like begot like; the Olympian, Pythian, Nemean, and Isthmian festivals were a common heritage of all the Greeks, and where Greek culture went, its religious cults and festivals went also. Krause¹⁹⁴ thought the great number of Olympian and Pythian festivals a reliable proof of the respect which the Asiatic-Hellenic world continued to feel for the institutions of old Hellas. They were at least a symbol of kinship with a great past, which even the influence and power of Rome's empire could not quite obliterate.

The great national games had many imitators. Though most of these lesser festivals are but little known, save through an inscription, a coin, or a brief

¹⁹⁰ Livy, xxvii, 31; xxxiv, 41.

¹⁹¹ Pausanias, viii, 40, 2-5.

¹⁹² Krause: *Die Pythien*, p. 141.

¹⁹³ *Hellenics*, iv, 7, 2; v, 1, 29.

¹⁹⁴ *Die Pythien*, p. 84.

literary reference, others left records enough to show the renown which once was theirs. Their origin, as in the case of the great national festivals, was commonly associated with the worship of gods, sometimes with honors to great heroes who had acquired godlike status. Though usually celebrated annually, some of the local festivals were quadrennial; a number of them vied with the national games in solemnity. The management of local festivals was similar to that of the Panhellenic Games, at least for the last three centuries of the Pagan era and a like period of the Christian.¹⁹⁵ Many of the lesser festivals known to us were called Olympian or Pythian. Krause found evidence of only three lesser Nemea and the same number of Isthmia. Of local Olympian festivals, however, at least twenty-six are known;¹⁹⁶ and of local Pythian games, twenty-eight.¹⁹⁷ The wide dispersion of the Pythia is probably due chiefly to the general acceptance of the cult of Apollo and the renown of the Delphian Oracle. The prestige of the Olympian cult, the antiquity of its festival, and the reputation of the games held at Elis doubtless encouraged Olympic imitators. The fact, too, that Hadrian took to himself the name Olympian, may have affected the choice of designation, since cities might wish to honor the imperial person. Though little is known of the origin of these lesser festivals, some were designated as Sacred Games, the title being conferred by the Emperor in imperial times. The Olympic Games at Antioch, whose renown attracted considerable attention on the part of contemporary writers, were established about 45 A.D. by permission of the Eleans themselves, and continued till 521.¹⁹⁸

Though some of the lesser Olympia may have been a sincere tribute to a great Greek tradition, the festivals were often a testimony to the desire of Roman and provincial rulers to capitalize a revered institution and attract favorable attention to themselves. The spirit, certainly, was no longer Greek but Roman. Leaders in the provinces vied with one another in the magnificence of their shows. Aemilius Paulus celebrated games in Macedonia; Antiochus sought to surpass him and proclaimed widely the games to be held at Daphne. Polybius thus describes the imposing procession which opened the festival:

"It was headed by five thousand men in the prime of life armed after the Roman fashion and wearing breastplates of chain-armour. Next came five thousand Mysians, and immediately behind them three thousand Cilicians armed in the manner of light infantry, wearing gold crowns. Next came three thousand Thracians and five thousand Gauls. They were followed by twenty

¹⁹⁵ Ringwood: *Agonistic Features of Local Greek Festivals*, pp. 3 ff., 9, 11.

¹⁹⁶ Krause: *Olympia*, pp. 202-35.

¹⁹⁷ Krause: *Die Pythien*, pp. 53-85, 146 f., 207 ff.

¹⁹⁸ Krause: *Olympia*, pp. 207 ff.

thousand Macedonians of whom ten thousand bore golden shields, five thousand brazen shields and the rest silver shields. Next marched two hundred and fifty pairs of gladiators, and behind them a thousand horsemen from Nisa and three thousand from Antioch itself, most of whom had crowns and trappings of gold and the rest trappings of silver. Next to these came the so-called 'companion cavalry,' numbering about a thousand, all with gold trappings, and next the regiment of 'royal friends' of equal number and similarly accoutred; next a thousand picked horse followed by the so-called 'agema,' supposed to be the crack cavalry corps, numbering about a thousand. Last of all marched the 'cataphract' or mailed horse, the horses and men being . . . in complete mail," and numbering about fifteen hundred. All these wore purple surcoats, embroidered "with gold and heraldic designs. Next came a hundred chariots drawn by six horses and forty drawn by four horses, and then a chariot drawn by four elephants and another drawn by a pair, and finally thirty-six elephants in single file with their housings."

Polybius felt the difficulty of giving an adequate description of the other parts of the procession, but gave the "main features":

"About eight hundred young men wearing gold crowns made part of it as well as about a thousand fat cattle and nearly three hundred cows presented by the various sacred missions and eight hundred ivory tusks. The vast quantity of images it is impossible to enumerate. For representations of all the gods and spirits mentioned or worshipped by men and of all the heroes were carried along, some gilded and others draped in garments embroidered with gold, and they were all accompanied by representations executed in precious materials of the myths relating to them as traditionally narrated. Behind them came images of Night and Day, of Earth and Heaven, and of Dawn and Midday. The quantity of gold and silver plate may be estimated from what follows. The slaves of one of the royal 'friends,' Dionysius, the private secretary, marched along carrying articles of silver plate none of them weighing less than a thousand drachmae, and six hundred of the king's own slaves went by bearing articles of gold plate. Next there were about two hundred women sprinkling the crowd with perfumes from golden urns, and these were followed by eighty women seated in litters with golden feet and five hundred in litters with silver feet, all richly dressed. Such were the more remarkable features of the procession.

"When the games, gladiatorial shows, and beast-fights, which lasted for the thirty days devoted to spectacles, were over, for the first five succeeding days every one who chose anointed himself in the gymnasium with saffron ointment out of gold jars: of those there were fifteen, and there were the same number of jars with ointment of cinnamon and spikenard. On the succeeding days oint-

ments of fennugreek, marjoram, and orris were brought in, all of exquisite perfume. For banqueting there were sometimes a thousand tables laid and sometimes fifteen hundred, all furnished with the most costly viands." ¹⁹⁹

The athletic festivals, which grew out of ancient funeral customs and were associated with great events and personages of Greek history, are among the most significant indications of an aspiration for a larger unity than that of the city-state. That aspiration was never fully realized. Just as there was no salvation for the city-state itself in the cult of physical excellence, as we have seen in the case of Sparta and Athens, so, too, national athletic festivals, though they brought Greeks from all parts together, did not provide that which was necessary to Panhellenic solidarity and continued growth. Instead of focusing attention on matters essential to the welfare of the state, the athletic festival encouraged the cult of physical excellence to the point of professionalism, made successful competition an end in itself, and provided a magnificent entertainment for an increasing idle, luxury-loving class of society. Where political intelligence and capacity for social coöperation were unequal to the feat of rising from the level of city-state interests to that of Panhellenic requirements, one must have faith in magic to expect that larger unity to be gained by the pleasant means of athletic congresses. Panhellenic festivals, at best, provided a useful emotional basis for a larger unity—by no means unimportant; but beyond that they could not go. It is significant that the political thought of Plato and Aristotle did not rise above the ideal of the small city-state.²⁰⁰

The decline and ultimate decay of the Greek festivals were conditioned chiefly by (1) the loss of Greek freedom, (2) the growth of Roman power, (3) professionalism and commercialism, and (4) by the gradual rise of Christian will to the point of supremacy. The real significance of the athletic festival disappeared when Greek states lost their independence, even though they might continue to enjoy liberty in local affairs, and the emperors encouraged the festivals for one reason or another. Flamininus might use the occasion of the Isthmia to decree the Greeks' freedom from Macedonian rule, as he did in 196 B.C.; Mummius might honor Zeus and, at the Isthmia in 146 B.C., celebrate the "unity of Greece" after Corinth had fallen; but these were empty phrases, a mockery of liberty. The trend toward greater consolidation and unification continued to grow; under Constantine, it strangled what remained of city-state freedom. Even so, the athletic festivals might have continued under the patronage of Roman emperors had there not been another factor. Hadrian persecuted Christians and praised and promoted the pagan festivals. But Christianity grew in power and prestige throughout three centuries, despite all persecution

¹⁹⁹ Polybius, xxx, 25-6. Trans. by W. R. Paton, The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

²⁰⁰ *Infra*, pp. 432-58, 470.

and contempt. Under Constantine it became the official religion. A faith that had suffered persecution now appealed, through church leaders, to its imperial exponents for fanatical action against paganism. The ascetic disregard for the body which had characterized the Christian cult, and its natural opposition to pagan shrines and ceremonies, were now translated into effective instruments against those chief symbols of pagan culture—the shrines of the gods and their accompanying festivals. The sacred temple at Delphi was despoiled by Constantine, and its ornaments were removed to Constantinople.²⁰¹ The policy of Constantine was mild, however, compared with that of later emperors. Theodosius I moved energetically against heresy within the church, and laid about him lustily against opponents without. Pagan sacrifices were forbidden, temples closed, and sacred properties were confiscated.²⁰² The Olympic festival, greatest remaining symbol of pagan religion and culture, was abolished in 393. The temple of Olympia was destroyed later, whether by order of Theodosius II or by the Goths is uncertain.²⁰³ The end of Olympia symbolizes the eclipse of paganism by the rising Christian star rather than the demise of Greek culture. What was vital in that culture found other tenements. The spirit of the festivals had long been anything but Greek; commercialism, professionalism, and Roman exhibitionism had made them a mockery of the Greek ideal. Outlanders rather than Greeks had long been most numerous amongst contenders and victors. The last known victor was Armenian instead of Greek—Varazdates, who took the prize in boxing at the 291st Olympiad, 385 A.D.

²⁰¹ Gibbon: *The Decline and Fall of the Roman Empire*, II, 23 f.

²⁰² *Ibid.*, II, 599 f.

²⁰³ *The Cambridge Medieval History*, I, 113.

HEALTH GYMNASTICS

While physical training was being turned aside from its original social purpose to serve increasingly the ends of professionalism and entertainment,¹ a deviation in another direction was also taking place. From being the pastime of youth and a symbol and proof of manly vigor, physical sports were to become the crutch of old age, a physician to the injured and the diseased.

Essentially the growth of health gymnastics was stimulated by two sets of factors, scientific and social in character: the increase of scientific medical knowledge; and socio-economic changes which gave rise, as has been noted,² to a class of wealthy, idle folk who were deprived of the normal exercise that labor had once afforded in a more primitive, natural state of society.³ For this class inadequate exercise and increased luxuries of the table meant ill health. Physical exercises, designed to suit the individual's state of health, were to become a substitute for the normal, vitalizing exercises of an earlier time. Plato's clear insight and forthright statement enable us to see the evil consequence of idle, luxurious living. When "intemperance and diseases" increase in a state, doctors and lawyers begin to see their own importance and put on "airs." Sharply disapproving of "Syracusan dinners, and the refinements of Sicilian cookery," he declared it is a proof of "a bad and disgraceful state of education" that even those who profess to "have had a liberal education" ". . . require the help of medicine, not when a wound has to be cured, or on occasion of an epidemic, but just because, by their lives of indolence and luxury, men fill themselves like pools with waters and winds, compelling the ingenious sons of Asclepius to give diseases the names of flatulence and catarrh. . . ." ⁴

¹ *Supra*, pp. 351-62.

² *Supra*, pp. 281, 283.

³ Crosby: "The Quest of Health in Ancient Greece," *Univ. of Pa. Lectures*, IV, 309.

⁴ *Republic*, III, 404-5. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

The use of gymnastics as an auxiliary of medicine, diet, and hygiene may be distinguished as early as Herodikos (somewhat after the first half of the fifth century) and Euryphon, leader of the Cnidian school of physicians, who expounded and applied it. Its rise to a position of prominence kept pace with the decline of society. Its progress is best known to us through the work of physicians, philosophers, and literary folk, such as Hippocrates (460 B.C.), Erasistratos (c. 300 B.C.), Plato (427 B.C.), Aristotle (384 B.C.), Plutarch (c. 46 A.D.), Galen (131 A.D.), Philostratos (c. 170), Aretaeus (latter half of the second century A.D.), and others. Herodikos himself was a paidotribe from Selymbria, "of a sickly constitution," as Plato says, who, "by a happy combination of training and doctoring,"⁶ prolonged his own life, as he believed. Health gymnastics arose from the union of the science of the paidotribe and gymnast with that of the physician, and subsequently attained a position of importance as a phase of medical practice. This was the beginning of a long dispute on the part of physicians and gymnasts as to the relation of the several sciences, medicine, gymnastics, hygiene, and dietetics to each other and the proper scope of each. Into the various meanings assigned to these terms during the interval between Hippocrates and Galen it is not necessary to enter, but it may be noted that Galen maintained that gymnastics (whose scientific character he stressed more than his forerunners, and which he sharply distinguished from the professional training of athletes) is a part of hygiene, and hygiene in turn is subordinate to medicine. In so doing he accepted essentially the meaning and relationships recognized by Hippocrates, but employed the term hygiene in place of dietetics.⁷

The basic principle of health gymnastics was necessity of balance between nourishment and energy expended. Energy spent must be restored by appropriate food; superabundant nourishment must be expended by physical exertion, if one would avoid evil consequences to health.⁷ Health gymnastics implied, therefore, attention to the regulation of diet and of exercise and the adaptation of both to the constitution and circumstances of the individual person. The principle of functional necessity was also recognized and seems to have formed the basis of many recommendations by experts on health exercises. Its formulation is one of the significant proofs of the advancement of medical thinking and observation among the Greeks. Hippocrates stated the principle thus: "All parts of the body which are designed for a definite use are kept in health, and in the enjoyment of fair growth and of long youth, by the fulfil-

⁶ *Ibid.*, III, 406. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

⁷ Egger: *Begriff der Gymnastik bei den Alten Philosophen und Medizinern*, pp. 99 ff.

⁷ *Real-Encyclopädie*, VII, Pt. II, 2054; Gomperz: *Greek Thinkers: A History of Ancient Philosophy*, I, 288.

ment of that use, and by their appropriate exercise in the employment to which they are accustomed." ⁸ Disuse leads to ill health, imperfect development, and premature aging.

Bathing, which in a simple fashion had been constantly associated with the exercises of the palaestra and the gymnasium, was included along with games in the array of the physician's remedies. But instead of mere washing at a fountain or basin, as youth are shown doing in various early artistic remains, bathing became a matter of great concern, requiring elaborate provision for hot and cold water, vapor baths, swimming baths, equal or superior in importance to the provisions for exercise. Bathing establishments began to play an important rôle in the life of all Athenians. Aristophanes notes the tendencies of the new day which lead youth to ". . . haunt the baths, and shun the manlier Games!" ⁹ The author of the *Polity of the Athenians* says that baths, gymnasia, and dressing rooms had been built at public expense for the populace, whereas the rich had exclusive private establishments.¹⁰

Like other peoples, the Greeks were naturally concerned with their health. Ailments afflict man both under natural, primitive conditions and in more highly developed, artificial society. Though Hellas occupied a favorable position climatically, it is obvious that, even in early times, there were numerous ills, and people resorted to primitive doctors for the performance of miraculous cures. Gardner cites marvelous "cures by Apollo and Asclepius": a certain man had but one good eye; the other was but an empty socket. While he slept, he dreamed that the god mixed a salve and poured it in. When day came, he saw with both eyes! Hermodicus of Lampsacus was paralyzed. While he slept, the god told him to carry the biggest stone he could get into the hall. He went out and "brought in the stone which still lies before the hall." The early miraculous cures of the Asclepiads, which both modern and the later Greek physicians would call charlatany, were gradually supplanted to some extent by remedies more in harmony with the age of enlightenment. Asclepius, as founder of medicine, continued to be ranked as the very head of the Pantheon; he was described by such terms as μέγας (great), σωτήρ (savior), κύριος (master), and even Zeus, but he now recommended physical exercise, cold baths, bare feet.¹¹ Hippocrates, a member of the Asclepiads at Cos, became the great authoritative founder of the tendency, and laid the basis of scientific medicine, of which health gymnastics was a branch.

Galen, who had a knowledge of the various Greek philosophical systems before he took up the study of medicine, declared that "the good physician is a

⁸ Comperz: *op. cit.*, I, 315.

⁹ *Clouds*, 1054.

¹⁰ *Bk. II*, 10.

¹¹ Gardner: *New Chapters in Greek History*, pp. 358, 370 ff., 378.

philosopher.”¹² It need not follow that good philosophers are also good physicians, but many philosophers gave advice regarding health. Socrates, Plato, Aristotle, Plutarch, and many others exhibit great concern for, and keen insight in respect to, problems of health, diet, and exercise. Socrates, Xenophon says, advised his friends to learn everything possible “from those who know”; however, “everyone should watch himself throughout his life, and notice what sort of meat and drink and what form of exercise suit his constitution, and how he should regulate them in order to enjoy good health. For by such attention to yourselves you can discover better than any doctor what suits your constitution.”¹³ With regard to the best health of the master, Aristotle advised that he ought sometimes to “rise while it is still night; for this helps to make a man healthy and wealthy and wise. . . .”¹⁴ Early rising was the general custom at Athens. The Assembly, the jury courts, and the Council of Five Hundred, as well as the festival plays at the theater, began with the dawn.¹⁵ The tendency of the new age to pay attention to the factors of basic importance for health is reflected not only in the study of bodily conditions, quantity and kind of food, appropriate exercises, and the like, on the part of doctors, paidotribes, and gymnasts, but also in advice concerning the construction of houses. Thus Aristotle says: “With a view to well-being and health, the house ought to be airy in summer and sunny in winter. This would be best secured if it faces north and is not as wide as it is long.”¹⁶ The city of his day had ten commissioners who regulated the disposal of sewage, fixed building restrictions, and looked after removal of bodies “of those who die in the streets.”¹⁷

Hippocrates’ concern with exercise and diet in relation to health, and their adaptation to types of individuals and their various states, is evident in many passages of his treatises. A few direct quotations will best exhibit the quality of medical insight in his day, which was to constitute a pattern of thinking for centuries to come. “Some exercises,” he says, “are natural and some violent.” Even “sight, hearing, voice and thought” are discussed among the “natural exercises.” “The nature of sight is as follows. The soul, applying itself to what it can see, is moved and warmed. As it warms it dries, the moisture having been emptied out. Through hearing, when noise strikes the soul, the latter is shaken and exercised, and as it is exercised it is warmed and dried. By all the thoughts that come to a man the soul is warmed and dried; consuming the moisture it

¹² Daremberg: *Oeuvres de Galien*, I, 1 ff.

¹³ Xenophon: *Memorabilia*, IV, 7, 9. Trans. by E. C. Marchant. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁴ *Oeconomica*, I, 6.

¹⁵ Davis: *A Day in Old Athens*, p. 11.

¹⁶ *Oeconomica*, I, 6. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press).

¹⁷ *Atheniensium Respublica*, 50.

is exercised, it empties the flesh and it makes a man thin. Exercises of the voice, whether speech, reading or singing, all these move the soul. And as it moves it grows warm and dry, and consumes the moisture.

"Walking is a natural exercise, much more so than the other exercises, but there is something violent about it. The properties of the several kinds of walking are as follows. A walk after dinner dries the belly and body; it prevents the stomach becoming fat for the following reasons. As the man moves, the food and his body grow warm. So the flesh draws the moisture, and prevents it accumulating about the belly. So the body is filled while the belly grows thin. The drying is caused thus. As the body moves and grows warm, the finest part of the nourishment is either consumed by the innate heat, or secreted out with the breath or by the urine. What is left behind in the body is the driest part from the food, so that the belly and the flesh dry up. Early-morning walks too reduce [the body], and render the parts about the head light, bright and of good hearing, while they relax the bowels. They reduce because the body as it moves grows hot, and the moisture is thinned and purged, partly by the breath, partly when the nose is blown and the throat cleared, partly being consumed by the heat of the soul for the nourishment thereof. They relax the bowels because, cold breath rushing into them from above while they are hot, the heat gives way before the cold. It makes light the parts about the head for the following reasons. When the bowels have been emptied, being hot they draw to themselves the moisture from the body generally, and especially from the head; when the head is emptied sight and hearing are purged, and the man becomes bright. Walks after gymnastics render the body pure and thin, prevent the flesh melted by exercise from collecting together, and purge it away.

"Of running exercises, such as are not double and long, if increased gradually, have the power to heat, concoct and dissolve the flesh; they digest the power of the foods that is in the flesh, making the body slower and more gross than do circular runnings, but they are more beneficial to big eaters, and in winter rather than in summer. Running in a cloak has the same power, but heating more rapidly it makes the body more moist but less tanned, because this is not cleansed by meeting the rush of pure air, but remains in the same air while it is exercised. So this kind of running is beneficial to those who have a dry body, to those who have excess of flesh which they wish to reduce, and, because of the coldness of their bodies, to those who are getting on in years. The double course, with the body exposed to the air, dissolves the flesh less, but reduces the body more, because the exercises, being concerned with the inner parts of the soul, draw by revulsion the moisture out of the flesh, and render the body thin and dry. Running in a circle dissolves the flesh least, but reduces and contracts the flesh and the belly most, because, as it causes the most rapid respiration, it is the quickest to draw the moisture to itself.

"Swinging the arms, for persons of dry flesh, and when jerky, is inexpedient, as it causes sprains, in the following way. The body having been warmed, this swinging makes the skin considerably thinner, but contracts the flesh less than running in a circle, and empties the flesh of its moisture. Sparring and raising the body heat the flesh least, but they stimulate both body and soul, while they empty the body of breath. Wrestling and rubbing give exercise more to the exterior parts of the body, but they warm the flesh, harden it and make it grow, for the following reason. Parts that are naturally hard are compressed by rubbing, while hollow parts grow, such as are veins. For the flesh, growing warm and dry, draws to itself the nourishment through the passages, and then it grows. Wrestling in the dust has effects like to those of ordinary wrestling, but it dries more because of the dust, and it increases flesh less. Wrestling with the fingers reduces and draws the flesh upwards; the punch-ball and arm exercises have like effects. Holding the breath has the property of forcing open the passages, of thinning the skin, and of expelling therefrom the moisture.

"Exercises in dust differ from those in oil thus. Dust is cold, oil is warm. In winter oil promotes growth more, because it prevents the cold from being carried from the body. In summer, oil, producing excess of heat, melts the flesh, when the latter is heated by the season, by the oil and by the exercise. In summer it is exercise in dust that promotes growth more, for by cooling the body it prevents its being heated to excess. But in winter dust is chilling, or even freezing. To remain in the dust after exercise in summer benefits by its cooling property, if it be for a short time; if it be for long, it dries the body to excess and renders it hard as wood. Rubbing with oil and water softens the body, and prevents its becoming over-heated."¹⁸

Hippocrates divided the year into the usual four seasons, specified the time of the beginning of each, and recommended suitable diet and exercise. In winter, which may be taken here as an example, there should be one meal a day, unless one has "a very dry belly," in which case there should be a light luncheon also. Food should be "warming" and "drying" in character; wheat bread, rather than barley, and roasted instead of boiled meats are recommended. Drink should be slightly diluted dark wine, limited in amount. Vegetables should be limited in amount, and be warming and drying in effect. The same is true of barley water and barley gruel. As for physical habits they ought to be as follows: "Exercises should be many and of all kinds; running on the double track increased gradually; wrestling after being oiled, begun with light exercises and gradually made long; sharp walks after exercises, short walks in the sun after dinner; many walks in the early morning, quiet to begin with, increasing until they are violent, and then gently finishing. It is beneficial to sleep on a

¹⁸ Hippocrates: *Regimen*, II, 61-5. Trans. by W. H. S. Jones. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

hard bed and to take night walks and night runs, for all these things reduce and warm; unctions should be copious. When a bath is desired, let it be cold after exercise in the palaestra; after any other exercise, a hot bath is more beneficial. Sexual intercourse should be more frequent at this season, and for older men more than for the younger. Emetics are to be used three times a month by moist constitutions, twice a month by dry constitutions, after a meal of all sorts of food; after the emetic three days should pass in slowly increasing the food to the usual amount, and exercises should be lighter and fewer during this time. Emetics are beneficial after beef, pork, or any food causing excessive surfeit; also after excess of unaccustomed foods, cheesy, sweet or fat. Further, it is better to take an emetic after drunkenness, change of food or change of residence. One may expose oneself confidently to cold, except after food and exercise, but exposure is wise in early-morning walks, when the body has begun to warm up, in running, and during the other times, though excess should be avoided. For it is not good for the body not to be exposed to the cold of winter, just as trees that have not felt winter's cold can neither bear fruit nor themselves be vigorous. During this season, take also plenty of all sorts of exercise. For there is no risk of excess, unless fatigue-pains follow; this is the sign that I teach laymen, and the reason I will now proceed to explain. As the season is cold and congealed, animals too have the qualities of the season. So the body perforce warms up slowly under exercise, and only a small part of the available moisture is excreted. Then the time devoted to exercise is little, and that devoted to rest is much, as in winter days are short and nights are long. For these reasons neither the length nor the character of the exercise can be excessive. So in this way should this season be passed, for forty-four days, from the setting of the Pleiads to the solstice."¹⁹

To athletes Hippocrates offered a special word of advice, warning them against overtraining, for the peak of training cannot be prolonged. Since the athlete cannot improve further and cannot stand still, he must perforce change for the worse. "For this reason it is an advantage to reduce the fine condition quickly, in order that the body may make a fresh beginning of growth," but reduction must not be carried too far.²⁰ Of athletes' training in winter, he says they should "both run and wrestle." In summer they ought to "wrestle but little and not run at all" but should walk "a good deal in the cool." "Such as are fatigued after their running ought to wrestle; such as are fatigued by wrestling ought to run. For by taking exercise in this way they will warm, brace and refresh best the part of the body suffering from fatigue. Such as are attacked by

¹⁹ *Ibid.*, III, 68. Trans. by W. H. S. Jones. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

²⁰ Hippocrates: *Aphorisms*, I, 3. Trans. by W. H. S. Jones. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

diarrhoea when training, whose stools consist of undigested food, should reduce their training by at least one-third and their food by one-half. For it is plain that their bowels cannot generate the heat necessary to digest the quantity of their food. The food of such should be well-baked bread crumbled into wine, and their drink should be as undiluted and as little as possible, and they ought not to walk after food. At this time they should take only one meal each day, a practice which will give the bowels the greatest heat, and enable them to deal with whatever enters them. This kind of diarrhoea attacks mostly persons of close flesh, when a man of such a constitution is compelled to eat meat, for the veins when closely contracted cannot take in the food that enters. This kind of constitution is apt sharply to turn in either direction, to the good or to the bad, and in bodies of such a sort a good condition is at its best only for a while. Physiques of a less firm flesh and inclined to be hairy are more capable of forcible feeding and of fatigue, and their good condition is of longer duration. Such as throw up their food the day after, whose hypochondria are swollen because of the undigested food, are benefited by prolonging their sleep, but apart from this their bodies should be subjected to fatigue, and they should drink more wine and less diluted, and at such times partake of less food. For it is plain that their bellies are too weak and cold to digest the quantity of food. When people are attacked by thirst, diminish food and fatigue, and let them drink their wine well diluted and as cold as possible. Those who feel pains in the abdomen after exercise or after other fatigue are benefited by resting without food; they ought also to drink that of which the smallest quantity will cause the maximum of urine to be passed, in order that the veins across the abdomen may not be strained by repletion. For it is this way that tumours and fevers arise.”²¹

Plutarch, famed as philosopher and moralist, reflects the great concern of his day for personal happiness and health. Health of body, however, is not his sole concern; for glory is unstable, beauty fades, health is easily impaired, strength wanes under the assaults of old age and disease, and, in any case, is inferior to that of many lower animals. For these reasons men should prize philosophy above all things, for it is to the mind what medicine is to the body. But, though learning is “immortal and divine,” “it is not proper, either, to overlook the exercise of the body. . . .” Children must be sent to the paidotribes for the cultivation of good, graceful carriage and for the improvement of their strength, “for sturdiness of body in childhood is the foundation of a hale old age.”²² Just

²¹ Hippocrates: *Regimen in Health*, 7. Trans. by W. H. S. Jones. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

²² Plutarch: *The Education of Children*, 8, 10. *Moralia*, trans. by F. C. Babbitt et al. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

as one should learn in fair weather that which will be useful in stormy, so habits of good order and temperance should be formed in youth, for they will be the best security in old age. Following Plato, however, Plutarch warns against too much physical exercise, since, if carried to the point of weariness and drowsiness, it will be inimical to study. It is most important that boys be exercised in throwing the javelin, archery, and hunting, which are valuable for warfare, since the wealth of the vanquished becomes the spoil of the victors. War offers too severe a test for those who have grown up indoors; one trained in military exercises is superior to those who have been given highly specialized training in wrestling, but are left ignorant of war. If someone objects that this advice is all very well for freeborn children of the rich only, Plutarch says he would wish education to be for all alike. He knows, of course, that the poor may be unable to avail themselves of that which he has set forth as desirable. They must, however, blame their misfortune, not him who gave good advice; they must provide the best education they can, within the limit of their means.²³

Elsewhere Plutarch recommends attention to the study of medicine as a liberal art, "inferior to none in elegance, distinction, and the satisfaction which it yields . . .," and able to repay all efforts by giving her devotees health.²⁴ Of diet, Plutarch has read that a thin one is best for the body; yet he advises a less rigorous course, saying simply that one ought to avoid excess in meat and drink. At a feast one should remember Philip's advice to leave a 'corner for cake'; one should not act like the stingy and greedy, who keep themselves under when at home, but enjoy the costly fare of another man's table "as though they were engaged in ruthless foraging in an enemy's country," and are next day rewarded for their immoderation with indigestion.²⁵ Solid food, such as meat, cheese, dried figs, boiled eggs, should be eaten sparingly, for they clog the digestive system. It were better to eat no meat at all, but since custom is almost second nature, and it is hard to deny one's self these, they should be only a foundation for other things that are "thin" and "light"—herbs, fowl, fish—and more conducive to health.²⁶ Particularly to be avoided are those foods and drinks that persuade to more eating and drinking when one is neither hungry nor thirsty.²⁷ Milk should be used as a food, not as a drink. Wine, the most beneficial of drinks, should be taken in moderation, diluted with water. In addition, water should be drunk, at least two or three glasses a day, to weaken the wine. When fatigued after work, physical or mental, water is better than wine.²⁸ Discourse

²³ *Ibid.*, 11.

²⁴ *Advice about Keeping Well*, 1. *Moralia*, trans. by F. C. Babbitt et al. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

²⁵ *Ibid.*, 7.

²⁶ *Ibid.*, 18.

²⁷ *Ibid.*, 6.

²⁸ *Ibid.*, 19.

at meals and afterwards on light and merry subjects, history, poetry, natural philosophy, till digestion be well under way, is held to be beneficial, and may be used as restraint to brutish appetite by taking one's mind off eating. Though Plutarch does not share the views of professional trainers and gymnasts who would ban all books and intellectual things at meals, he recognizes that strenuous mental effort should be shunned. One should not try to "solve the Indian problem" at dinner; neither is logic a fit dessert; it may even give one a headache. To follow the gymnasts, however, and go to the extreme of avoiding all serious intellectual discussion, would render one, like the athletes, "as glossy and blockish as the pillars in a gymnasium."²⁹

To those who pride themselves on taking a cold bath after exercise, Plutarch says it "is ostentatious and juvenile rather than healthful." A warm bath is more conducive to health and is an aid to digestion. However, ". . . when nature affords us a sense of a moderate and comfortable condition in our body, the bath had better be left alone." A gentle anointing by the fire is a preferable way to secure warmth of body. Sunshine is good, if the temperature of the air permits.³⁰

Physical exertions for a man of learning should be light. For the scholar's exercise Plutarch recommends reading aloud and speaking. For the exercise of the voice "increases the warmth, tones down the blood, clears out every vein, opens every artery, and does not permit of any concretion or solidifying of superfluous fluid like a sediment to take place in the containing organs which take over and digest the food." Even when the scholar goes traveling or stops at an inn, he should not be silent, though those around him laugh at his performance; "for where it is not disgraceful to eat it is certainly not disgraceful to take exercise. . . ." When one has finished reading or speaking, "before going to walk, one should make use of rubbing with oil in a warm room," which makes the "flesh supple" and in general properly disposes the spirits if it be not carried beyond "what is agreeable to the senses and not discomforting."³¹

Emetics and physic should not be regularly employed, though occasionally they may be necessary. Plato held the same view.³² The best way, says Plutarch, is to avoid the occasion for them by light eating, occasional fasting, and drinking water for a few days. "Periods of fasting according to a fixed schedule," however, are to be avoided as contrary to nature.³³ Health of mind and body is not to be secured by sloth, idleness, or abstention, but by a balance between activity and repose and an alternation of physical and mental exertion. For, in

²⁹ *Ibid.*, 16, 20.

³⁰ *Ibid.*, 17.

³¹ *Ibid.*, 16. *Moralia*, trans. by F. C. Babbitt et al. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

³² *Timaeus*, 89.

³³ *Keeping Well*, 22, 24.

Plutarch's opinion, Plato was right in saying "that there should be no movement of the body without the mind or of the mind without the body, but that we should preserve, as it were, the even balance of a well-matched team . . ." ³⁴ "Eating not unto satiety, labouring not unto weariness, and observance of chastity, are the most healthful things." ³⁵ This nice adjustment the scholar and the man of public affairs can manage by reason, for they are not circumscribed and hindered by those inconveniences which sordidness and poverty force upon those who are compelled to do bodily labor. For these sons of toil there is apparently no remedy in Plutarch's *Advice about Keeping Well*.

Philostratos' treatise *Concerning Gymnastics* is devoted to athletes and athletic training rather than to exercises for the aged, diseased, or ordinary persons. For this special class, while he treats most extensively the types of physical constitution that are fitted by nature to succeed in particular contests, and lays great stress on careful examinations by scientifically prepared trainers, ³⁶ he makes certain observations that are closely akin to the recommendations of those who, like Plutarch and Galen, wrote for men of everyday affairs. Respecting the luxurious tendencies in eating he is no less caustic than Plutarch. There are evil moral consequences as well as physical. Fancy foods are harmful; wine is detrimental. "Over-feeding will be betrayed by the pendulous brow, panting breath" and fullness of cavities at the collar bones and in the groins. Wine drinkers have a "thick paunch." Those who are gluttons at the table, as well as those who are immoderate in the enjoyment of sexual pleasures, are worthless for the athletic trainer, for they can never "carry off a wreath at a contest." ³⁷ Still, he gives recommendations as to how they are to be handled, as well as those who are of a nervous temperament. ³⁸ Sun treatment is urged as valuable, but must be used according to the natural temperament of the athlete, whether phlegmatic or choleric. ³⁹

Galen of Pergamum, thoroughly educated by travel and study of the liberal arts as a preliminary to medicine, had a firsthand acquaintance with the training of gladiators, but exhibits a marked contempt for athletes and professional fighters. This is but natural, for he saw that the extremes of their training, the unnaturalness of their life, were neither conducive to health of the mind nor of the body, despite the prodigious physical feats which they were able to perform. The best physical exercises from the standpoint of health, he maintained, are those which delight the mind while they engage the body. Coursing and

³⁴ *Ibid.*, 27.

³⁵ *Ibid.*, 15. *Moralia*, trans. by F. C. Babbitt et al. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

³⁶ *Op. cit.*, 26-42.

³⁷ *Ibid.*, 47-8.

³⁸ *Ibid.*, 53-4.

³⁹ *Ibid.*, 58.

hunting are so excellent, from this point of view, that they must have been invented by good philosophers! But they offer insuperable difficulties for ordinary men in business or public affairs: much time and plenty of money.

Galen, who has a sympathetic eye for "even the poorest," selects ball-play as the best of sports because it is "so democratic," demands "no nets, nor weapons, nor horses, nor hounds: all it requires is one small ball." Naturally, as the instance of Dionysius of Syracuse shows, ball-play was also used by those who could afford the most expensive play.⁴⁰ Other exercises are too violent, or demand too much or too little of one or another part of the body; and no sport is healthful which exercises the physical parts unequally. The game with a small ball, contrary to most others, requires that one be something of a runner, something of a wrestler, leaper, dodger. Moreover, one must be quick of eye and quick of mind. "Thought by itself makes a man thin," but joined with the exercise and rivalry of this sport, "it is of the very greatest benefit."⁴¹ Most exercises have an opposite result: "they make men lazy, slow-witted and fond of sleep. The competitions of the wrestling school tend to make people corpulent rather than to train them in virtue."⁴² But a ball game so quickens mind and body, so trains one to attack and seize every opportunity, to take from the opponent and to keep what one has gained, that Galen thinks it the best training even for generals, the very essence of whose business is to be "an expert thief" and "an expert guardian." One of the chief virtues of the game with the small ball is that it can be played for violent exercise, and just as easily for light. The origin of ball-play was ascribed variously to Lydians, Corcyraeans, Sicyonians, and Lacedaemonians.⁴³ Three types of games, which made use of somewhat different balls, seem to have been common: one game was played with the *harpastum*, a small, hard, stuffed ball; another with the *folis* or *sphaira*, a lighter ball, stuffed with feathers, which was passed from player to player while they were running; and in the game of *trigon*, the players threw balls to each other.⁴⁴ Those too old or too young for other games, and also persons who are convalescing, can engage in ball-play to good advantage. One worn out in some part by labor can rest that part by attending to a particular phase of ball-play: those whose legs are wearied can let them rest, while they exercise the upper extremities by throwing and catching; but if the upper extremities are tired, there can be more emphasis on running and less on throwing.⁴⁵ Not the least advantage of ball-play is the fact that one engages in it with

⁴⁰ Wright: *Greek Athletics*, p. 114; Cicero: *Tusculan Disputations*, v, 20.

⁴¹ Wright: *op. cit.*, p. 116.

⁴² *Ibid.*, p. 117.

⁴³ *The History of Herodotus*, i, 94; Pliny: *Natural History*, vii, 205; *Athenaeus*, i, 14.

⁴⁴ Banmeister: *Denkmäler des Klassischen Altertums*, i, 247 ff.; *Real-Encyclopädie*, ii, Pt. 11, 2832 et seq.; *Athenaeus*, i, 15; *infra*, pp. 666 ff.

⁴⁵ Wright: *op. cit.*, pp. 119 f.



YOUTHS PLAYING BALL

National Museum, Athens (Courtesy, The American School of Classical Studies, Athens)

no fear of those dire consequences—lameness, dislocations, broken blood vessels, ruptures, and even death itself—which so frequently occur in other sports.

Ball-play, of course, pertains chiefly to one aspect of the entire science of hygiene. Galen regards physical exercise as one branch of hygiene, and hygiene is a part of the whole science of medicine. A brief reference to his views on other aspects of hygiene are therefore in place. Chief among his works pertaining to feeding and care of the body are these: *On the Powers of Foods*; *The Good and Bad Juices of Foods*; *Of an Attenuated Diet*; *Of the Knowledge and Cure of Mental Affections*; *On the Preservation of Health*; and *Whether the Preservation of Health Depends on Medicine or Exercise*. There is also a commentary on Hippocrates' treatise on diet. In his treatise *On the Powers of Foods*, Galen indicated the need for a new work on the subject, based on reason and experience, which would set forth the values and effects of different foods on the various types of individuals and under certain circumstances. Wheat, barley, oats, millet, rice, beans, vetches, lupines, and the seeds of poppy, hemp, and flax are discussed, and the several kinds of food prepared from them. Similar treatment, on an extensive scale, is devoted to all sorts of fruits and vegetables and to foods derived from the animal kingdom. The effect of various articles of food and drink on the fluids of the body, their vitiation and restoration, is explained in the work on *The Good and Bad Juices of Foods*. In the treatise on *Attenuated Diet*, its utility is especially noted in certain diseases, such as gout, dyspnoea, and other chronic ailments, where it is sometimes valuable as a cure, again as an ameliorative.

In the work on *Mental Affections*, which concerns the relation of the mental and moral self to the physical, various emotional states and mental habits are discussed which bear on a happy, contented life. Anger, intemperance of

various kinds, quarrelsomeness, jealousy, ambition, inordinate desire for wealth and power, extreme partisanship in scientific matters, hastiness in conclusions, all these and many of their like, are condemned, whether they arise from nature, as in the case of some individuals, or from faulty education, as in others. Here, in the moral and intellectual realm, as in the physical, moderation is the principle which must steadfastly be observed.

In the treatise on *Preservation of Health* and in the one dealing with the dependence of health on medicine and exercise, Galen gives his most systematic view of the interrelation of medicine, exercise, and diet. Health is due to all of them; one cannot stand without the others. All three constitute the whole science of medicine. Health arises from two sets of factors: those that promote it positively and those that assist it by negating the power of disease. The environment—air, water, foods, natural, appropriate exercise of mind and body, and the like—if favorable, provides the best basis for health, for such proper conditions facilitate the performance of natural functions, which is the *sine qua non* of health. Irregularities and inadequacies in the environment, which tend to frustrate or distort the natural performance of function, lead to ill health. These factors (diet and exercise) must vary according to age and constitution; and they must also be in harmony with one's social condition. Those who are bound to labor incessantly in a condition of servitude, without regularity of refreshment and recreation, are peculiarly disposed to disease. In childhood, nursing, education, diet, and the formation of proper health habits are important. Exercises occupy a more prominent place in the years of adolescence and up to maturity. Many types of friction, varying according to time of day, season, and locality, are recommended both as a remedy and as preparatory exercises for the more strenuous work of the gymnasium. The varieties of exercise in the gymnasium and their proper ends are explained; likewise the effect of different types of bathing, hot and cold. The phenomena of fatigue and weakness, arising from a variety of causes, are examined and the optimum treatment of each is recommended. The fifth book of Galen's treatise on *Preservation of Health* is devoted to the hygiene of those advanced in years, discusses the diseases most to be apprehended, the diet most advantageous in certain diseases and for certain temperaments, and the exercises appropriate to those of waning strength. Of all that he has to say of exercise, however, probably nothing is more truly representative of his views of its relation to health than the treatise on *Exercise with the Small Ball*, wherein he sets forth the universality of its usefulness.

A profound faith in the efficacy of physical exercise in treating certain diseases is found in the pages of Aretaeus, who lived in the latter half of the second century. In his treatise *On the Cure of Chronic Diseases*, the use of hal-

teres and jumping is recommended when treating "cephalaea."⁴⁶ In cases of vertigo, exercises which cause distention of the neck and vigorous exercises with the hands are recommended, as well as "raising the head, to exercise the eyes at *chironomy*," *zeitonomía*, a measured swinging of the arms, throwing quoits, boxing, and running. But exercises with both large and small balls are bad; in fact, such exercises "occasion vertigo."⁴⁷ In cases of gonorrhoea "every attention is to be paid to diet"; gestation, walks, and gymnastic exercises are to be permitted and encouraged, since they are warming in effect.⁴⁸ In coeliacs the diet and habits of life should be kept moderate. Plenty of sleep at night, walking in daytime, vociferation, and "gestation among myrtles, bays, or thyme" for the beneficial effect it has on the digestion, are recommended, as well as gymnastic exercises, rubbing, *chironomy*, and use of the *halteres* in connection with exercises of the chest and abdomen.⁴⁹ *Elephas* (elephantiasis) is to be treated with a plain wholesome diet, easily digested. Care must be taken of hours of sleeping, walking, and place of habitation. Such exercises as running, tumbling, use of the leather bag, and vociferation are to be employed, but with due moderation. Clothing must be clean, both to please the eye and also because dirty clothing irritates the skin.⁵⁰ On the treatment of epilepsy, Aretaeus offers the following regimen:

"Promenades long, straight, without tortuosities, in a well ventilated place, under trees of myrtle and laurel, or among acid and fragrant herbs, such as calamint, penny-royal, thyme, and mint; so much the better if wild and indigenous, but if not, among cultivated; in these places, prolonged gestation, which also should be straight. It is a good thing to take journeys, but not by a river side, so that he may not gaze upon the stream (for the current of a river occasions vertigo), nor where he may see anything turned round, such as a rolling-top, for he is too weak to preserve the animal spirits (*pneuma*) steady, which are, therefore, whirled about in a circle, and this circular motion is provocative of vertigo and of epilepsy. After the gestation, a gentle walk, then rest so as to induce tranquillity of the agitation created by the gestation. After these, the exercises of the arms, their extremities being rubbed with a towel made of raw flax. Not much oil [is] to be used in the inunction. The friction [is] to be protracted, and harder than usual for condensation, since most of them are bloated and fat: the head to be rubbed in the middle of the process, while the patient stands erect. The exercises of the neck and shoulders, *chironomy*, and the others mentioned by me under the treatment of Vertigo,

⁴⁶ Aretaeus, *The Extant Works of*, p. 461.

⁴⁷ *Ibid.*, p. 467.

⁴⁸ *Ibid.*, p. 489.

⁴⁹ *Ibid.*, p. 492.

⁵⁰ *Ibid.*, p. 497.

with sufficient fulness of detail; only the exercises should be sharper, so as to induce sweat and heat, for all these attenuate. During the whole of his life he should cultivate a keen temper without inascibility."⁵¹

To attempt to appraise precisely the success of Greek health gymnastics would be a fruitless if not an impossible task; its popularity is not to be disputed, however. Remarkable results were often claimed. Plato says that Herodikos "dying hard, by the help of science," "struggled on to old age" by virtue of his "invention of lingering death."⁵² Plutarch tells of Laomedon, the Orchomenian, who, on the advice of his physician, formed the habit of running long distances to rid himself of a disease of the spleen, and so far regained health by virtue of this regimen of labor and exercise that he was able to enter the games and "became one of the best runners of the long course."⁵³ Hysmon is said to have made himself sound in health by practicing the pentathlon.⁵⁴ Numerous other instances might be cited; for it is common knowledge that careful attention to physical condition and adaptation of food and exercises to it produce remarkable changes in health. Galen says he restored countless persons to health simply by the use of gymnastic exercises.⁵⁵

The rise of health gymnastic and the expansion of medical practice did not take place without arousing much distrust of doctors and contempt for their achievements. The philosophic mind, which looked to social values, could not fail to ask, *Cui bono?* Of what significance is it to preserve mere existence, if life itself is useless, has no end beyond itself? The popular mind, too, which could understand neither the old medicine nor the new, would take more delight in the marvelous miracles of priestly medicine men than in the prosaic, unspectacular science of Hippocrates. Crosby says that "of the many words in Greek associated with *pharmaka*, medicines, most are either uniformly or usually of bad significance"; and he believes that this indicates a mistrust of the practitioners of medicine.⁵⁶ It may well be true that the Greeks, who had been favored by a generous nature with conditions propitious to health, were skeptical about a science which sought to provide by rule that which had once been taken for granted. There was, at any rate, considerable spoofing at the learned, or not so learned, doctors' expense. Perhaps some had suffered from their ministrations, for even the most up-to-date medical men could not always be successful. Then, too, charlatans must have frequently claimed more than their "science" could be expected to perform. A profession whose members were re-

⁵¹ *Ibid.*, pp. 471 f.

⁵² *Republic*, III, 406. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

⁵³ Plutarch: *Demosthenes*, 6.

⁵⁴ Pausanias's *Description of Greece*, VI, 3, 9-10.

⁵⁵ Euler: *Encyklopädisches Handbuch des Gesanten Turnwesens*, I, 362.

⁵⁶ *Op. cit.*, loc. cit., IV, 315.

warded in princely fashion, in some instances at least, would scarcely fail to attract a certain proportion of "wind bags and street corner prophets" who sought to effect cures by "purifications" and "incantations." Such failures, whether for good and sufficient reason or not, or for lack of knowledge, provided excellent targets for witticisms, and the jokesmiths were not slow to recognize it. Thus Nicarchos jibes at the medic who even kills marble Zeus:

Yesterday Marcos the doctor was called to Zeus, there, over the way.
 --Even tho' marble he be, and Zeus, his funeral is today.⁵⁷

But against the jibes of literary dilettantes, we may properly note their praise as well. One need not go far to find high praise for the physician. The encomium is doubtless intended for those true sons of Asclepius, not for those who are doctors in name only: "One man practiced in medicine verily outweigheth many other men."

⁵⁷ Lawton: *The Soul of the Anthology*, p. 127.

IN UTOPIA

EMERGENCE OF CRITICAL PHILOSOPHY

The Homeric poems, Hesiod's *Theogony* and *Works and Days* constituted the Greeks' storehouse of intellectual, moral, and aesthetic values until fundamental social and educational changes undermined and transformed them. Indeed, it has been said, "Homer was, to his own and later times, history, geography, genealogy, religion, morals, politics. . . ." ¹ While this is true, in general, modifications took place in Athenian conceptions as society changed and intellectual life was broadened and deepened. Amid these changes, of course, certain old elements persisted: freedom from religious authoritarianism and asceticism. Greek minds continued to parry the authoritarianism of a priestly order and inspired holy book, though Orphism threatened for a time to engulf the Greek mind and bring it under the sway of authoritarian, religious absolutism.² Against such a tendency the philosophic influence of Xenophanes, Heracleitus, Parmenides doubtless served as an antidote, though Pythagoreanism, tending to unite mysticism and science, was difficult to withstand.³ Euripides, too, added his weight against belief in divine perfection, teaching instead that—

If gods be strong and wicked, man, though weak,
May prove their match by willing to be good.⁴

Religious asceticism, like authoritarianism, so common in the Orient, found no firm footing among the Greeks, though Orphism appealed strongly to many

¹ Keller: *Homeric Society*, pp. 183 f.

² Reinach: *Orpheus*, p. 88; Gomperz: *Greek Thinkers: A History of Ancient Philosophy*, 1, 80 ff.

³ Gomperz: *op. cit.*, 1, 123 ff.; Reinach: *op. cit.*, p. 97; Bury: *A History of Greece*, pp. 319 ff.

⁴ Lawton: *Classical Greek Literature*, p. 225.

in the sixth century, gained prestige when received by Onomacritus and Pythagoras, and was encouraged by Pisistratus and his sons. On the whole, however, the Greeks continued to think of gods as good and bad;⁵ held that men might be even better than gods; clung to certain notions of beauty and joyousness in their religion, quite incompatible with asceticism; and took little stock in judgments, rewards, and punishments hereafter—though these concepts were fostered by Orphism. Hades, of course, was dreary enough, but only somewhat more dolorous than life. "Earth is full of evils and the sea is full," says Hesiod.⁶ "Though the meanest life is better than death, Hades is no punishment. Both good and bad, the greatest heroes and the meanest men, have to face this 'destiny grievous.'" Close to the Greek mind and heart, no doubt, though it is a pleasanter picture than the earlier Greeks contrived, is Pindar's portrayal of the dead who amuse themselves with horse races, athletics, and the lyre.

Though the Greeks lacked a religious authoritarianism, which might have imposed order on the realm of the gods and orthodoxy on the minds of men; and though they avoided religious asceticism, and had no teaching priesthood, they were nonetheless religious. Even when philosophy had taken on some maturity, it was still unsalutary for one to publish his disbelief in the gods, to disparage public worship, or to desist from it. This religious attitude was most clearly manifested by faithful attention to conventional, public worship, conducted by priests designated by civil authority, and by the prominence of the religious motif in athletic festivals.

In time, of course, both religion and athletics came in for criticism. Though the change was a slow one, religion and morals of the early days ceased to have their wonted significance. The seventh and sixth centuries, and the later ones even more, witnessed many economic, political, and social changes, tending toward wider distribution of privilege and power that once had pertained only to men of wealth and station. These changes, broadly educative for an increasing class of people, were important, since increased economic well-being for more and more people brought greater opportunity for leisure and contemplation. The significance of leisure is obvious. Those who labor constantly with their hands have little time or energy to devote to affairs of the mind. Aristotle attributed the foundation of mathematical arts to the leisure of the Egyptian priesthood.⁷ Numerous factors operating powerfully at Athens made her in reality the School of Hellas, and ultimately, in a sense, a University of Mankind. A critical philosophy emerged, differentiated from religion and theology, and critically disposed toward them. Xenophanes faced the fact

⁵ Burns: *Greek Ideals*, pp. 90 ff.

⁶ *Works and Days* (Evelyn-White), 101.

⁷ *Metaphysica*, i, 1.

that men had created gods in their own image. Homer and Hesiod represented the gods at times as disgraceful, dishonest, adulterous, thieving. He, however, professed belief in "One god, supreme among gods and men; resembling mortals neither in form nor in mind."⁸ The theater, by dramatizing the gods and bringing mythology before one's very eyes, tended to make serious belief in them more difficult. History undermined the authority of traditions. Euripides paraded the most inhuman aspects of the old gods, showed them irrational, petty, childish, futile—on the whole inferior to men and women—and voiced an aspiration for a higher conception:

O Thou
That bearest earth, Thyself by earth upborne,
Whoe'er Thou art, hard for our powers to guess,
Or Zeus, or Nature's law, or mind of man,
To Thee I pray, for all the things of earth
In right Thou guidest on Thy noiseless way.⁹

As the city-state became progressively the instrument of the good life for a greater number of men, it took on an ever larger significance, required more service, and a sort of loyalty hitherto unknown. Indeed, as the state became thoroughly a part of Hellenic consciousness, service to it became the most vital religion of the citizen. "Man versus the State" was a concept unknown to the Greek. In the state he was complete, was enabled to enjoy a rational existence.¹⁰ Plato, logically enough to men of his generation, regarded "service of the laws" as "also the service of the Gods. . . ." ¹¹ To defend the city and preserve the vineyards was synonymous with religion itself. Man losing his identity in the state was no more difficult for Greeks than losing one's self in God was to the early Christians. Aristotle declared: ". . . men should not think it slavery to live according to the rule of the constitution; for it is their salvation." ¹² Devotion to the state seems to have reached a degree of self-denial, which might well compare with the ascetic self-negation of religious fanatics: "Their bodies they devote to their country as though they belonged to other men; [and] . . . their mind . . . is most truly their own when employed in her service." ¹³

Ultimately, critical philosophy would reach far beyond mere criticism of

⁸ Bakewell: *Source Book in Ancient Philosophy*, p. 8.

⁹ Lawton: *op. cit.*, p. 225.

¹⁰ Butcher: *Some Aspects of the Greek Genius*, p. 52.

¹¹ *Laws*, vi, 762. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

¹² *Politica*, v, 9. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press).

¹³ *Thucydides*, i, 70. From *Thucydides*, translated by B. Jowett (The Clarendon Press).

concepts of the old religion. It would deny, too, the legitimacy of man's worship of the state and his identification of himself with it. Man would become an end in himself, or seek some otherworldly goal, when the pomp and power of the city waned and withered away. Its vulnerability and destruction would prove its imperfection, its unworthiness as arbiter of life and death. Then men would find their answer to the age-old question, "What is the end of man?" in complete absorption in personal desires; or, perchance, not wholly satisfied with that, would dream of a City of God.

In the decline of pagan gods who delighted in feats of athletic prowess, and the contemporary emergence of the notion of the superiority of mind; in the decay of the powerful, political state and the rise of an otherworldly Utopia, offering escape from the toils, hardships, and miseries of earth, are to be found the central reasons for the decline of the athletic spirit, the cult of body worship, and the parallel rise to prominence of ascetic disregard for the beauty and strength of the physical self and disparagement of the worth of athletic attainments. In other countries religion and warfare had been basic conditioners of physical sports. Greece was no exception to the rule. Critical philosophy, which undermined the old religion, sounded the knell of the old athleticism as well. Between the spirit of the author of the hymn to Apollo, who sings—

There they do honor to thee with boxing, dancing and singing—

and that of Xenophanes and Euripides there is a world of difference.

EDUCATIONAL RECONSTRUCTION

Education at any moment is limited fundamentally by the economic, social, political institutions which man has set up. All may be modified from time to time both by blind forces and by intelligent insight. Fundamental changes in the social framework render the old educational pattern outmoded, undermine it, make it appear incongruous and unserviceable, and condition the formation of a new pattern in harmony with the new age. The "new education" may offer to solve the problems of the new order. It may do so in some measure; it may fail to do so; it may facilitate changes already in process. Much depends on the degree of conscious application of attention to the problems that matter most.

The "new education" at Athens was many-sided. Like "new education" everywhere, it was in many ways harmonious with dominant tendencies in the changing social scene which gave it birth. At its worst and for most people it was but a concession to the demands of new generations that sought happiness, fame, wealth, luxury, power, and sank social duty in individual desire. At its

best, in the hands of a few, the new education gave impetus to a critical examination and rational reconstruction of society, which was to save it from disintegration by correcting basic errors which had been incorporated in it in the long, blind processes of its evolution.

Viewing education as a means of adjusting an individual more or less comfortably to the life of his day, the new education, at its worst, was more or less successful, and Athenians jogged on their way more or less gaily to the banks of Lethe. Viewed as a means to social stability, the new education, even at its best, was ineffective. Conservative hands were not able to turn the clock back, despite their pleasing pictures of a happy, golden yesterday when everything was decent and in good order. Radical reformers, on the other hand, with eyes fixed on the future, were not able, for all their wit, to lead selfish, ignorant, practical politicians to adopt radical remedies for radical social ills, but had to content themselves with drawing the mental blueprints of Utopia. The work of these builders of more stately social mansions, though of little practical importance in their day, has had uncommon significance for all who have thought subsequently on politics and education.

The roots of the new education, so far as its serious efforts at reconstructing the life of man are concerned, run back to the dawn of Greek enlightenment, the rise of critical questioning which, in the course of time, was to invade the material and the immaterial world, bringing great consequent shock to men and necessitating revision of their notions of all things. Of first-rate importance was the acid of doubt thrown on traditional ideas and mores by Xenophanes' critical attack on the folly of excessive adoration of victorious athletes. No less harsh was his condemnation of religious views. A comparative method enabled him to see that gods had been constituted by men in their own likeness. Such a view of deity was unduly limited, distorted, and would not suffice. In place of anthropomorphic polytheism he set the view that God is One, unlike men in mind and body. The disintegrative effect of this critical spirit on religion was obviously inescapable. Aeschylus might strive to give old religious ideas a modern dress and make them palatable to a changing world, but Euripides, distinctly modern, knew that a reconciliation of the old and new was impossible, and declared roundly: "If gods do evil, then they are not gods." Inevitably the gods melt into unity, their human features vanish, they make way for the Vortex of Leucippus, the Nous of Anaxagoras, the air of Anaximenes. "There is no Zeus. Young Vortex reigns, and he has turned out Zeus"—so say the philosophers and emancipated youth.¹⁴ In the earth itself Xenophanes sees a process of change going on rather than unchanging fixity. Fossils on mountain

¹⁴ Aristophanes: *Clouds*, 1470.

tops reveal marine life that once was in the sea. The mountains will sink into the sea again, and men will disappear. "And this change happens to all worlds."¹⁵

The bright gleam of reason's aurora also shines through Hecataeus of Miletus who had seen the ridiculousness of many conflicting traditions: "I have written everything down as it appeared to me to be true; for manifold and laughable are the sayings of the Hellenes, as they seem to me."¹⁶ So far had the tendency to doubt old explanations gone by the time of Herodotus, that it had even claimed a part of the mind of the Father of History. For though, in general, he was inclined to accept the tall story and let it go at that, he appears occasionally as a positivist of the new age, requiring that a story told by the poet or some other authority be reasonable or capable of verification. He knows no river called Ocean, hence supposes that some poet must have invented it; he balks at the story of the Arimaspi, who were said to be born with but one eye; he doubts whether the Magi actually caused a storm to abate—it may have done so of its own accord. These and similar doubts arise occasionally in a mind that is on the whole piously humble toward ancient truth and finds no difficulty in the tale of giant ants of India, larger than foxes but smaller than dogs.¹⁷

One may recognize in this critical movement an effort to reduce the chaotic world of primitive myth to order, giving a more exact account of cause and consequence. The vast inclusive realm of mythical explanation is constantly diminished as enlightenment advances and the realm of scientific fact proportionately increases. Leucippus, in his work *On the Order of the Universe*, had already broken with the primitive world of caprice when he announced: "Nothing happens without a cause, but everything with a cause and by necessity."¹⁸ From this it is not a long step to the idea of control. Luck or caprice, said Democritus, "seldom measures swords with wisdom. Most things in life quick wit and sharp vision can set right." The greatest Greek philosophers would one day make an effort, by "quick wit and sharp vision," to set things right in politics and education. The new intellectualism, though it undermined faith in old traditions, inspired faith in human reason and made men see the Golden Age in the future rather than in the past.

The new movement, which tended to reduce the capricious world of the gods and material things to order on the basis of common principles, also lent encouragement to a unifying, inclusive view of life which brought man into harmony with, and made him a part of, nature. This philosophic naturalism was

¹⁵ Bakewell: *op. cit.*, p. 11.

¹⁶ Gomperz: *op. cit.*, I, 255 f.

¹⁷ *The History of Herodotus*, III, 102, 116; Gomperz: *op. cit.*, I, 271.

¹⁸ Gomperz: *op. cit.*, I, 317.

formulated by the Stoic school. Zeno (c. 300 B.C.) held that "the chief good was confessedly to live according to nature; which is to live according to virtue, for nature leads us to this point." "For our individual natures are all parts of universal nature. . . ." Plants and animals live according to nature, pursuing what is appropriate to them. Man, too, must live according to nature's direction. "And as reason is given to rational animals, . . ." living according to reason is necessary for men.¹⁹

Of this philosophic naturalism there were two widely different interpretations: one, agreeable to aristocratic sensibilities and prejudices and serviceable to men of might who make cities, states, and empires, and label their laws "right"; another, acceptable to the temper of rising democracy and serviceable to its devotees. According to the first view, nature made some slaves and others free.²⁰ Plato, too, having no love for the democratic tendencies of his day, would make an intellectual elite the rulers of his ideal state, while others, less endowed by nature, would be warriors and artisans. Other writers, more in harmony with social and political tendencies of the new day, saw in the law of a common nature a sure indication of equality, at once a vindication of the claims of common men to a place of importance in the world as masters of their destiny and a key by which their chains might be unlocked. The rhetorician, the poet, the romanticist, and the religionist were most inclinable to this view. "Nature has enslaved no man," says Alcidas. Laws and conventions are the tyrants of mankind, and compel men to do what is against nature, against reason. Slavery gives the lie to nature. Euripides declares:

The name alone is shameful to the slave;
In all things else an honest man enslaved
Falls not below the nature of the free.

In nature all are kin. Barriers of race, of bond and free, and of nationality were all to sink into Lethe; men were to prepare the way for a common humanity, a universal culture.

A new age implies new, or re-educated teachers. What the greatest minds brought forth and gave to a few, ultimately reached the ears of many through popular teachers, whose lectures and conversations were attended by youth who could pay for the luxury of learning, or thinking they learned something.²¹ To these popular teachers the term sophist (wise man) was applied. In general the sophists have been assigned a questionable character and mercenary habits. The demoralization of Athenian society has indeed been credited by some to their subversive teaching. Thus Davidson says, ". . . it may be fairly enough

¹⁹ Diogenes Laërtius: *The Lives and Opinions of Eminent Philosophers*, vii, 52-3.

²⁰ Aristotle: *Politica*, i, 5.

²¹ Plato: *Sophist*, 233; Grote: *A History of Greece*, iii, 427.

said that they largely contributed to demoralize Athens. . . ." ²² Such, too, was the general picture drawn by Aristophanes who contrasted—

. . . the Discipline rare which flourished in Athens of yore . . . ²³

with that offered by the "red-haired things of unknown breed"—the wandering sophists who came from many lands. This new teacher empties the gymnasium and palaestra, crowds the baths and lecture rooms, and produces dire results—

. . . to begin, a cold pallid skin,
Arms small and chest weak, tongue practised to speak . . .
And your mind he'll prepare so that foul to be fair
And fair to be foul you shall always declare. . . . ²⁴

Plato's view is not fairer. The sophist hunts young men, professes to teach virtue, gets "a round sum," is pre-eminently a disputer and teacher of disputation about things seen and unseen, and seems to have a knowledge of all things, but is in reality only an imitator. ²⁵

To accept such views of the sophists and their influence would place too much weight on the laughing contempt of the skillful, witty Aristophanes, whose own tongue and pen were not incapable of sophistical deception. Though serious, aristocratic Plato criticized sophists for taking fees, his own school, the Academy, was reputedly founded on land purchased with money given by rich friends for his ransom, was aided financially by wealthy patrons (Dion, for example), and may have been further supported by fees, either fixed or left to the choice of students. ²⁶ Plato's complaints against the sophists because they received fees scarcely seem to merit the importance sometimes granted them. In fact, paying fees to teachers was not itself novel to Athenians. The old Athenian music school and the palaestra had been conducted by privately paid teachers. If there was any novelty in the practice of the sophists, it lay in the higher cost of their "higher" learning.

The notion of the sophists' destructive capacity seems to rest on an exaggerated view of the power of words to change the character of men and their society; it overlooks the deep-rooted tendencies in society itself, and vastly oversimplifies and glosses over the processes of social change. ²⁷ It credits with an extraordinary power the teaching of a disorganized group of teachers, who

²² Aristotle and Ancient Educational Ideals, p. 101; cf. Grote's summary of complaints against them, *op. cit.*, III, 404.

²³ *Clouds*, 960 *et seq.*

²⁴ *Ibid.*, 1017-21. Trans. by B. B. Rogers. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

²⁵ *Sophist*, 222-3, 225-6, 233-4; *Laches*, 186; *Protagoras*, 328.

²⁶ *Laërtius*: Plato, 14; *Gomperz*: *op. cit.*, II, 269 ff.

²⁷ Grote: *op. cit.*, III, 427; cf. Jaeger: *Paideia: The Ideals of Greek Culture*, I, 286-331; Windelband: *History of Philosophy*, pp. 87-94.

taught no common body of knowledge or opinion, and who, since their livelihood depended on their students, must have taught views more or less acceptable to the day rather than highly subversive doctrines. It seems more realistic to think that the sophists were more or less keen observers of the changing world around them; that they were both good and bad, shallow and profound; that they brought certain insights into this world of change to their students; that they were willing to sell their educational wares to those who wanted to attain success; that they went along with the tendencies of the new day, and were ready to ride the rising tide; and that they sometimes had an exaggerated opinion of their own importance—an overestimate too readily accepted by others.

Essentially the new learning represented an extension of education on a higher and broader plane than had been known by the old order. It was informative, critical, destructive, and constructive. The sanctions of the old mores that comfortably fitted the old city were giving way. Athens was coming of age intellectually. Age, with its decrease of physical power, sobers the joyous enthusiasms and checks the reckless energies of youth. Thought of the future and dreaming of the past become more characteristic; and vigorous action less so. Athens was soon to be a nonentity in military and political affairs; intellectually, she was on the threshold of a school of higher learning, whose influence would penetrate to all corners of the world.

The new learning at its best, notwithstanding novelties, reflected a characteristic of education in old Athens: a concern with secular affairs. That which had once motivated action was now the central motif of Greek thought. As life had centered in the city (*polis*), the science of government (politics) and the relation of the individual to the social collective were to be the central problems of philosophy. Protagoras, reputedly the most individualistic of the sophists, was concerned with preparation for practical affairs, public and private, that one might "learn to order his own house in the best manner," and "be best able to speak and act in affairs of the state."²⁸

In a world of change, while some men are satisfied with specifics for the moment, others seek general principles, valid for all time. The best minds that were devoted to education sought soberly a firm basis, some fixed principles, by which to test all things, and thus make possible the attainment of the good life by man and by society. Some turned to science, religious mysticism, and ascetic discipline; others thought that true knowledge and individual integrity, arrived at under the conditions of the greatest intellectual freedom, provided that basis. To know one's self, to govern one's desire, to distinguish between knowledge and opinion, constituted the best that men could hope for. Many

²⁸ Gomperz: *op. cit.*, I, 413.

found the basis for a settled social order in a return to some tested pattern of the past, or in an idealized pattern of contemporary neighboring states. Others, a few, sought a radically reconstructed social order, utilizing certain elements of past experience joined with innovations that were designed to correct essential errors of the past. While all the intellectual builders had more or less in common, they were often poles apart. Pythagoras represented the tendency to combine mysticism, asceticism, and science. Socrates explored the individualistic approach to the problem. Xenophon preferred the conservative patterns of the past. Plato and Aristotle, indebted directly and indirectly, like Xenophon, to Socratic teaching, examined more critically and comprehensively past and present experience, and set forth widely varying views of the ideal state.

Men looking for Utopia gaze both backward and forward. Radical reforms often embody tested, conservative features. Great importance has been credited to one who, influenced by the pervasive Orphism of his day, combined religious mysticism and asceticism with the most notable contributions to science. While Pythagoras, who was born in Samos and flourished in the sixth century B.C., was renowned for his investigations in mathematics, astronomy, music, and medicine,²⁹ his insight into political and other affairs seems to have been also significant. Accounts of his life are frequently contradictory, uncritical, and doubtless warped by the biases of later centuries. He is said to have visited Egypt, Crete, Chaldaea, and Syria, imbibing the wisdom of their learned men and being initiated into religious mysteries. After returning to Samos and finding affairs there incompatible with philosophic pursuits, he removed to Crotona. There he established a brotherhood, credited variously with three hundred to six hundred members, and exerted a great influence in the world of learning and in political life as well.³⁰

Considerable importance attaches to Pythagoras as the early formulator and disseminator of certain doctrines more fully developed by later philosophers. Music, he held, purges the passions; and he is said to have demonstrated the soundness of the theory.³¹ In this and the doctrine of moderation one recognizes the theories of the mean and of *katharsis*, later developed by Plato and Aristotle.³² Pythagoras also recognized the value of eugenic mating, the necessity of restraint of sexual appetite, and the doctrine of transmigration of souls.³³ In everything the unifying principle is number,³⁴ which has a mystical significance; hence the all-embracing character of mathematical study. Since order, harmony, number, and proportion pervade the universe, they should also ob-

²⁹ Laërtius: *Pythagoras*, 11.

³⁰ *Ibid.*, 3, 15; Iamblichus' *Life of Pythagoras*, 6-7; Comperz: *op. cit.*, 1, 101.

³¹ Iamblichus, 25.

³² *Protagoras*, 326; *Politics*, VIII, 6-7.

³³ Iamblichus, 31; Laërtius: *Pythagoras*, 4, 12.

³⁴ Comperz: *op. cit.*, 1, 103 ff.

tain in human society; each individual should find his place in a harmonious relationship as unchanging as the celestial realms. While the Pythagorean table of opposites—Limited, Unlimited; Unity, Plurality; Rest, Motion; Light, Darkness—and many other central ideas were sharply combated by scientists of the Heraclitian stamp, idealists of the Socratic-Platonic school, and later the Neo-Platonists, found great satisfaction in them. Plato's doctrines of metempsychosis, rule by a philosophic class, communism of property, importance assigned to mathematics and music, the equality of women and men in the circle of philosophers,³⁵ and mystical elements in much of his thinking closely parallel Pythagorean thought and practice, and suggest a definite indebtedness or that both drew from the same source. On the religious side, certainly, both were influenced by Orphism.³⁶

Physical exercise was given a prominent place in the Pythagorean discipline.³⁷ Exercise, food, and repose ought to be in proper proportion to each other; on this the health of the body depends. The Pythagoreans were credited by the ancients as the first who devoted themselves to a careful study of diet in relation to medicine; thus they attended to the body that it might, through proper food and exercise and avoidance of superfluous desires and manifold varieties of food, always be in the same condition, never too lean, never too fat.³⁸ It is said that they disapproved of hunting, but devoted themselves to running, wrestling, pantomimic gesticulation, and jumping with the *halteres*.³⁹ To what extent the conspicuous success of athletes from Crotona at Olympia should be credited to Pythagorean influence is open to question. Crotona was renowned for its salubrious climate and the health of its people; Milo, a Pythagorean, undoubtedly attracted the attention of the athletic world to his city by his athletic fame.⁴⁰ Pythagoras himself was even credited with being the first to train athletes on a meat diet; others say, however, that this was another man. It was likewise said by Eratosthenes that Pythagoras was the first who practiced scientific boxing; and that he once sought to enter the boys' boxing contest at Olympia, but, being rejected, entered that of the men and won the crown.⁴¹

Besides his influence on later intellectual affairs, a marked importance attaches to the religious and moral teachings of Pythagoras. To read his *Life* by Iamblichus is to be impressed with the view that ethical teaching and religious asceticism bulked more heavily than his scientific work. Of course, one must

³⁵ Seventeen women belonged to the circle of Pythagoras.—Iamblichus, 36.

³⁶ Reinach: *op. cit.*, p. 88; Gomperz: *op. cit.*, I, 123-52; II, 369 f.

³⁷ Iamblichus, 21.

³⁸ *Ibid.*, 31, 34.

³⁹ *Ibid.*, 21.

⁴⁰ The *Geography of Strabo*, VI, 1, 12.

⁴¹ Laërtius: *Pythagoras*, 12, 25; Gardiner: *Greek Athletic Sports and Festivals*, pp. 58, 126.

not forget the bias of the Christian era. The religious bent, however, was in harmony with the Orphic tendencies that swept Greece in the sixth century and caused men more and more to give attention to personal happiness and salvation rather than to social welfare, whether by means of religion or an individualistic, self-centered philosophy which aimed at personal perfection. Though Pythagoras and his followers were concerned with political affairs from time to time, his teaching and manner of life both emphasize the importance of a life of self-denial, apart from the rest of the world. Pythagoras seems, even in the sixth century, to have sensed the futility of the struggle for wealth and power, the ends for which the state expends itself. The state cannot attain his ends; he aims at the harmony, integrity, and perfection of man, which can only be accomplished by creating within the great society a smaller, more perfect one, wherein everything is made subservient to the soul's welfare. This perfection can be attained only by the most rigorous discipline. Pythagoras is the first great ascetic leader of the West who imposed a severe discipline on himself and a band of followers, anticipating the thought and practice of Christian ascetic societies centuries later.

Pythagorean asceticism appears in the rule of silence imposed on neophytes for five years, the provision for common property, and the injunctions against meat, certain fish, beans, and all aspects of luxurious life.⁴² Luxury, he held, is the first evil that comes into homes and into the city; insolence and destruction follow.⁴³ Every effort must be made to thwart its hold on men. Nothing should be done whose end is pleasure—for nothing leads into error so surely. No one should be permitted to do just what he pleases; hence the necessity of rigorous government and a strict education. The punishment of desire is a necessary means to perfection. Sumptuous food, he held, ought to be introduced at dinners and then hastily removed to punish the appetite. Indeed, a distinctly Orphic doctrine appears in the dogma that since "we came into the present life for the purpose of punishment, it is necessary that we should be punished."⁴⁴

Despite numerous ways in which the Pythagorean community anticipated Christian asceticism, there were certain important differences. It has been compared with medieval orders of chivalry.⁴⁵ Pythagorean asceticism was markedly active; that of the early Christians chiefly passive. Probably the most conspicuous difference lay in the Pythagoreans' devotion to cleanliness, recognition of physical culture as a means to excellence, and their faith in the virtue of the mean—excellent prophylactics against the extremes that Christian asceticism

⁴² Laërtius: *Pythagoras*, 8, 18-9; *Iamblichus*, 24.

⁴³ *Iamblichus*, 30.

⁴⁴ *Ibid.*, 18, 31.

⁴⁵ Gomperz: *op. cit.*, 1, 99.

was to reach. In the golden words of the philosopher an old Greek ideal survives:

Follow a cleanly, simple mode of life, . . .
Be not neglectful of thy body's health;
But measure use in drink, food, exercise—
; I mean by "measure" what brings no distress.⁴⁶

Socrates, born of humble parentage, seems to have been democratic in his dealing with all men. Though favorably inclined neither to the democracy of Athens nor to her oligarchs,⁴⁷ he was a loyal citizen and participated in certain military expeditions. Giving up his work as statuary, he assumed the rôle of teacher. He demanded no fees from his pupils, lived extremely simply, and held all wealth and nobility of birth in low esteem.

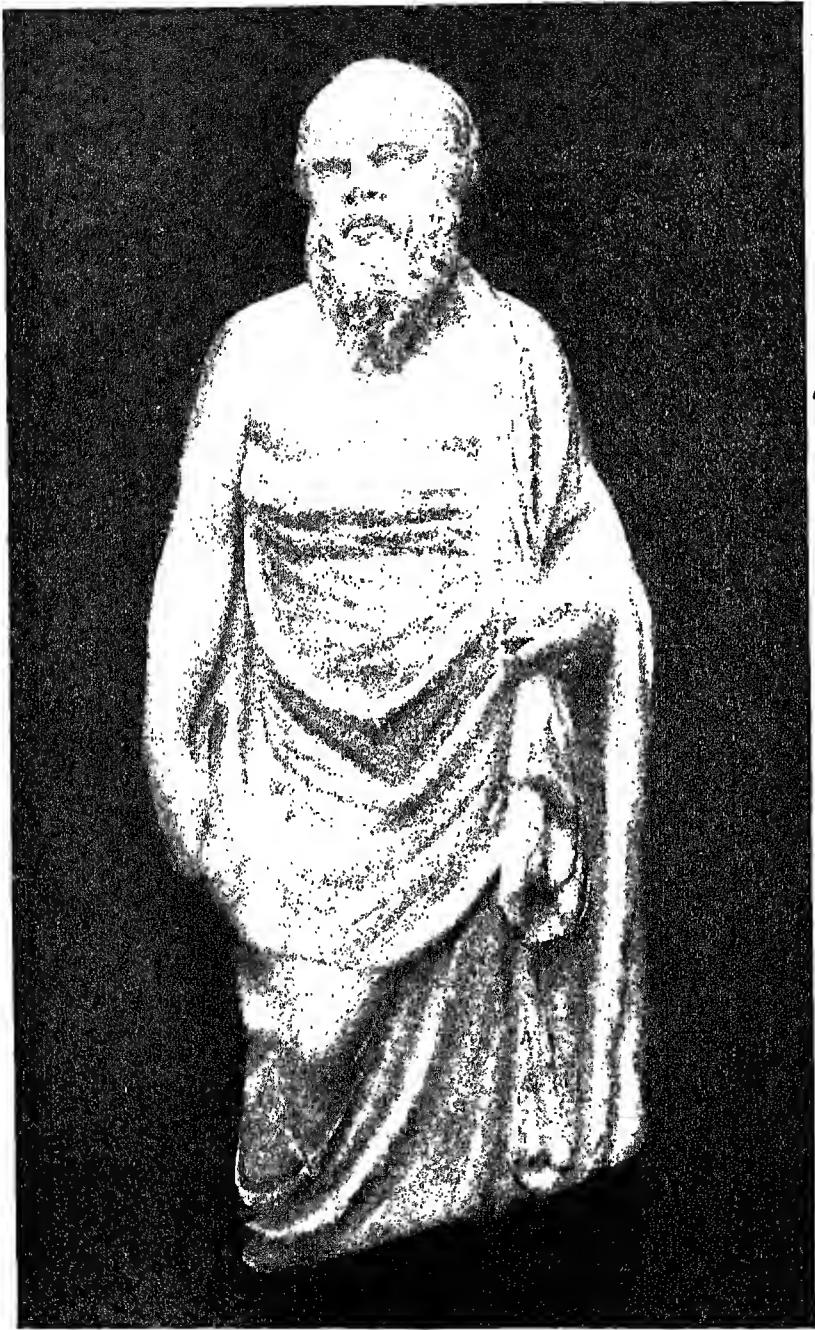
There is one good, knowledge, which Socrates claimed he sought constantly; and there is one evil, ignorance. There is one chief virtue, namely, avoidance of excess. An essential to this end is self-knowledge. "Self-control," he said, "is an exact science, and when discovered the whole world may become virtuous." Socrates' only wisdom, he said, lay in knowing that he did not know. This, if true, would be refreshing in the Athenian hothouse of opinion. Though he exhibits a tenacity of mind and leads others to accept his views, there is no appeal to any court save that of reason. While our knowledge of the method and content of Socrates' teaching rests on something less than satisfactory grounds, he is represented by Plato, Xenophon, Aristophanes, and other contemporaries as interested in all problems of human life, which he investigated by engaging men in conversation, drawing out their opinions, leading them to examine, compare, and to discriminate between the sound and unsound—between appearance and valid conception. In the use of this conversational dialectic, he is represented as diabolically clever in deception, a "shrewd Attic quibbler," one who can make the "worse appear the better reason," as Aristophanes declared.

Though Socrates was tried and put to death on the complaint of Melitus that he was disloyal to the gods and corrupted the youth of Athens, posterity has consistently held a highly favorable view of him, taken largely, of course, from the testimony of his pupils. Indeed, the Athenians themselves are said to have repented of their action against him, condemned his enemies, and erected a statue in his honor.⁴⁸ Whether this be true or not, if one-tenth of the

⁴⁶ Davidson: *op. cit.*, p. 58.

⁴⁷ Grote: *op. cit.*, III, 462.

⁴⁸ Laërtius: *Socrates*, 23; Windelband: *op. cit.*, pp. 94 ff.; Jaeger: *op. cit.*, II, 13-76; Ueberweg: *History of Philosophy*, I, 80-8; Gomperz: *op. cit.*, II, 117 f.; Grote: *op. cit.*, III, 481 ff.



SOCRATES

(Courtesy, Professor C. A. Robinson, from G. W. Botsford and C. A. Robinson, *Hellenic History*, Rev. Ed., Pl. 72B, The Macmillan Company, New York, 1948)

keenness, skill in questioning, and wise judgments given were really his, one must see that he was truly a gadfly that stung men's minds to activity. His contribution to the "new education" lay in this stimulus to a critical treatment of human problems, a lead which Plato and Aristotle followed up and in many ways carried to a greater degree of perfection.

Socrates was not solely concerned with intellectual culture. It is said that he gave close "attention also to the training of the body, and was always in excellent condition himself."⁴⁰ In this, as in other matters, the rule was "nothing to excess." He is said to have had great physical endurance, but he shunned excessive gymnastic training, because such training required that men eat heavily. Beauty, harmony, and proportion, both of mind and of body, should be striven for. Indeed, he said, ". . . it is a disgrace to grow old through sheer carelessness before seeing what manner of man you may become by developing your bodily strength and beauty to their highest limit. But you cannot see that, if you are careless; for it will not come of its own accord."⁵⁰ This beauty lay essentially in proportion. Socrates pointed out that, in his day, runners of the long-distance race had muscular legs and narrow shoulders, while boxers and wrestlers had broad shoulders and small legs. Dancing he recommended, because "by distribution of the toil throughout my limbs I seek to give an even balance to my body."⁵¹ Physical culture improved women as well as men. Socrates was profoundly impressed by the physical skill developed by girls in dancing, acrobatics, and juggling, as well as by the fact that they exhibited courage in performing dangerous feats which no man could match. By their exhibition he was moved to suggest that "woman's nature" was "nowise inferior to man's."⁵²

The general utility of physical culture and its highest purpose, as the governor which regulates the health of the body on which everything one does depends, were stressed by Socrates: "For in everything that men do the body is useful; and in all uses of the body it is of great importance to be in as high a state of physical efficiency as possible. Why, even in the process of thinking, in which the use of the body seems to be reduced to a minimum, it is matter of common knowledge that grave mistakes may often be traced to bad health. And because the body is in a bad condition, loss of memory, depression, discontent, insanity often assail the mind so violently as to drive whatever knowledge it contains clean out of it. But a sound and healthy body is a strong protection

⁴⁰ Laërtius: *Socrates*, 7.

⁵⁰ Xenophon: *Memorabilia*, III, 12, 8. Trans. by E. C. Marchant. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁵¹ Xenophon: *Symposium*, II, 17-8.

⁵² *Ibid.*, II, 8-13.

to a man, and at least there is no danger then of such a calamity happening to him through physical weakness. . . ." ⁵³ The interrelations of diet, exercise, medicinal aid, and health seem to have been clear to Socrates; one must learn everything possible from others who have knowledge, but everyone can be a better judge of his requirements than any physician.

For a soldier and an Athenian citizen, physical training for war was accepted as axiomatic. Socrates' views on this matter were not exceptional, judging by Xenophon's account. He explained to Epigenes that there was no justification for his bad physical condition. He needed training just like any athlete training for Olympia. The life-and-death struggle with Athens' enemies must be prepared for; one must be able to defend her, and also able to save his own life and not play the part of a coward. ⁵⁴

Certain principles credited to Socrates, but which may or may not have been his, were accepted also by his pupil, Plato, who undertook to blueprint Utopia—something that Socrates never attempted, perhaps because he placed little faith in schemes of government, external regulations, but fixed his trust in self-knowledge and self-control. Plato, unlike his master, was an aristocrat. He is said to have traveled widely and was educated in Megara, Egypt, Cyrene, Sicily, and in Italy, where he made contact with Pythagoreans whose doctrines may have influenced his views on the importance of number, re-embodiment of the soul, rule by philosophers, relation of music and astronomy, and various other matters. ⁵⁵ Plato is said to have been trained in gymnastics by Ariston of Argos, and to have wrestled at the Isthmian Games; he was of robust physique, fought in three campaigns, and at Delium showed conspicuous valor. ⁵⁶

The facts concerning Plato's aristocratic background may well be remembered in the light of his preference for government by an aristocratic, intellectual elite, his high regard for the soldier class, his contempt for the "men of business, stooping as they walk," and the low station of artisans in his ideal society. He had no faith in the capacity of the masses to attain to such high virtue as Socrates had in mind, was contemptuous of Athenian democracy, ⁵⁷ and believed in a rigid system of governmental control. Plato was, of course, a many-sided genius. In educational theory alone he presented widely divergent views, notably in the *Republic*, product of his early years, and in the *Laws*, composed at the close of his career. In both of these works it is necessary to examine certain central features of the society he envisaged in order to understand the rôle which he assigned to education.

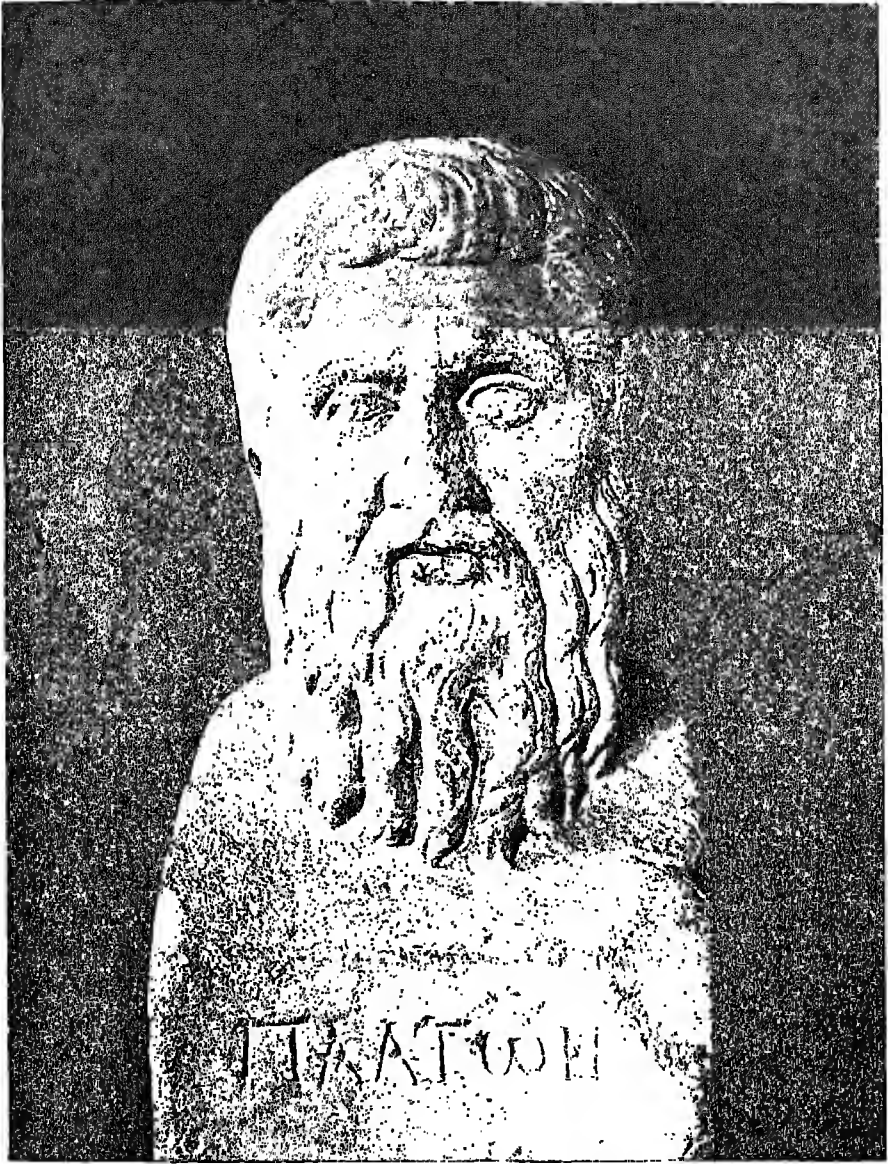
⁵³ Xenophon: *Memorabilia*, III, 12, 5-7; IV, 7, 9. Trans. by E. C. Marchant, The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁵⁴ *Ibid.*, III, 12, 1-2.

⁵⁵ Laërtius: *Plato*, 8; *Plato: Republic*, VII, 530; Gomperz: *op. cit.*, II, 250 ff.

⁵⁶ Laërtius: *Plato*, 5, 10.

⁵⁷ *Ibid.*, 17; *Plato: Republic*, VIII, 558.



PLATO

(H. Brunn and P. J. Arndt, *Denkmäler Griechischer und Römischer Skulptur*, Pl. 5)

While Socrates stressed the attainment of true knowledge and virtue as the chief end, Plato emphasized the establishment of justice as the supreme goal. To establish justice is to avoid injustice; to avoid injustice, one must know whence it arises. In a simple, primitive, healthy society, in which men were concerned with the satisfaction of primal needs—food, shelter, clothing—injustice did not exist. As society grew, however, in complexity, wealth, and luxury, division of labor was necessary and new occupations appeared—tradesmen, entertainers, doctors, lawyers, warriors, and the like—with injustice as a concomitant of the “relations of these citizens with one another.”⁵⁸ The increase of lawyers and doctors in a state is an evil symptom: one points to lack of a sense of justice on the part of citizens; the other to luxury, intemperance, and resultant increase of disease. War is found “to be derived from causes which are also the causes of almost all the evils in States . . .”⁵⁹ i.e., it is occasioned by the struggle for territory and commerce which the demand for luxurious living entails.

The worst government is that which offers the greatest liberty to be a dicast, a soldier, something or nothing, just as one fancies, regardless of capacity, and which dispenses “a sort of equality to equals and unequals alike.”⁶⁰ It arises from immoderate pursuit of wealth on the part of the oligarchic rulers of the state, for “the love of wealth and the spirit of moderation” cannot exist together in citizens of the same state.⁶¹ That is to say, the rulers sell out the interests of the commonwealth for the sake of private gain, thus proving their unfitness to rule. The city falls into decay or faces revolution because of the struggle for gain on the part of citizens from the lowest to the highest and the weakening that ensues. It is, of course, necessary to recognize human nature for what it is, and there are many who “will not be satisfied with the simpler way of life. . . .”⁶² But since those who are not satisfied with the simpler life have proved themselves incompetent and dangerous rulers, it is desirable to set up certain restraints and controls in a reconstituted society, so that each and every sort of work will be done by those who are best fitted by nature and perfected by training; and in particular it is necessary to place the guidance and the protection of the state in the hands of those who are pre-eminently qualified to serve its ends, and are by nature and training least inclined to use it for their personal gain.

There are essentially three great classes of employment in society, the work

⁵⁸ *Republic*, II, 372.

⁵⁹ *Ibid.*, II, 373; III, 404–6. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

⁶⁰ *Ibid.*, VIII, 558.

⁶¹ *Ibid.*, VIII, 555.

⁶² *Ibid.*, II, 372. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

of artisans and husbandmen, that of soldiers, that of rulers. Corresponding to these are certain types of human capacity, best suited to them, and three classes in society, for society is the individual writ large: the first, chiefly physical, ruled by appetite, whose virtue is strength; the second, great of heart, ruled by passion, whose virtue is courage; the third, intellectual, the virtue of which is wisdom. Men and women, regardless of sex, should be assigned to the rôle of producer, soldier, and ruler, according as they possess one capacity or another. When each person is in his right occupation, and each class does its work—the intellectual ruling, the courageous protecting, and the strong producing and getting wealth to support themselves and the others—then justice will prevail in the state.⁶³

Of the selection and training of artisans and husbandmen Plato has little to say, though he alludes to the meanness of the "useful arts";⁶⁴ for sake of efficiency and order, however, each must have an occupation and be trained for that alone,⁶⁵ presumably by apprenticeship to the task. The members of this lowest order of society can apparently be readily selected, for they have iron in their system, are without spirit, and have no mark of intellectual capacity.⁶⁶ The differentiation of the two higher classes, soldiers (auxiliary guardians) and rulers (chief guardians), is a more painstaking process, not completed till the age of twenty, when some (potential philosophers) are selected for advanced education. All above the husbandmen and artisans will be reared simply, live like soldiers, have no property of their own, eat at a common mess, and receive only enough pay to cover fundamental needs; they will be educated from seven to eighteen in music and gymnastic, and from eighteen to twenty in military gymnastics, to make them serviceable to society rather than to themselves.⁶⁷

While there is a marked adherence to old Athenian education from seven to eighteen, consisting as it did of music and gymnastics, Plato introduces a number of important strictures. The poets must be purged of evil stories that depict the gods as immoral and thus promote immorality in the young. Poetry, however, which instills a martial spirit, such as certain passages in Homer, is approved pabulum for future guardians.⁶⁸ Music also comes under censorship because "any musical innovation is full of danger to the State, and ought to be prevented"; for "when modes of music change," the state changes with them.⁶⁹ Ionian and Lydian harmonies are banned, but Dorian and Phrygian are re-

⁶³ *Ibid.*, iv, 434.

⁶⁴ *Ibid.*, viii, 522.

⁶⁵ *Ibid.*, ii, 370.

⁶⁶ *Ibid.*, iii, 415.

⁶⁷ *Ibid.*, iii, 416-7.

⁶⁸ *Ibid.*, ii, 376-83; iii, 386-7; 389-90.

⁶⁹ *Ibid.*, iv, 424. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

tained, since they are conducive to temperance and courage; likewise, the flute and other "curiously-harmonized instruments" are excluded, while the lyre, harp, and shepherd's pipe are approved.⁷⁰

Music and gymnastic are approved, not as ends in themselves nor because one trains the soul and the other the body, but because "both have in view chiefly the improvement of the soul."⁷¹ Either one by itself produces distortion. Music, pursued alone, produces effeminacy, "a feeble warrior." Gymnastic, if carried on exclusively, produces hardness and ferocity; Plato is convinced that the "mere athlete becomes too much of a savage. . . ." ⁷² The defense of the ideal state cannot be entrusted to athletes, for their exercise "is but a sleepy sort of thing, and rather perilous to health. Do you not observe that athletes sleep away their lives, and are liable to most dangerous illnesses if they depart, in ever so slight a degree, from their customary regimen?" Therefore, "a finer sort of training will be required for our warrior athletes, who are to be like wakeful dogs, and to see and hear with the utmost keenness; they will have to endure many changes of water and also of food, of summer heat and winter cold, and yet they must not be liable to break down in health." ⁷³ Neither professional athletic training nor health gymnastics ⁷⁴ would be of service to the state. For, ". . . in gymnastics . . . if a man works hard and is a great feeder, and the reverse of a great student of music and philosophy, at first the high condition of his body fills him with pride and spirit, until he is twice the man that he was." Then, after a while, if he never pursues the Muses, even the intelligence which was in him grows feeble, dull, blind, and he becomes "like a wild beast, all violence and fierceness, and knows no other way of dealing. . . ." ⁷⁵

Plato contents himself in the *Republic* with establishing guiding principles in respect to music and gymnastic. There is no need for going into details about dances, hunting, gymnastic, and horse racing, he says, "for these all follow the general principle, and there will be no longer any difficulty in discovering them." ⁷⁶ A more definite indication of what his preferred gymnastic would be is found in Plato's leaning toward the Spartan system of military discipline, though he would avoid some of its excesses, and in his assertion that "the really

⁷⁰ *Ibid.*, III, 399.

⁷¹ Plato: *Timaeus*, 88.

⁷² *Republic*, III, 410-1. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

⁷³ *Ibid.*, III, 404. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

⁷⁴ *Ibid.*, III, 406.

⁷⁵ *Ibid.*, III, 411. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

⁷⁶ *Ibid.*, III, 412. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

excellent gymnastic," which "is twin sister" to the simple musical education he has described, is "military gymnastic."⁷⁷ This is always associated with the strictest simplicity and leanness of diet; for, just as simplicity in music produces "temperance in the soul," so simplicity of gymnastic is the source of "health in the body." Even the children are to be taken on expeditions, that they may see all of war and be of assistance to their elders. They must not become soft; for they are to be members of a military class, and they must learn to do by observing and doing.⁷⁸

Plato has profound doubts about human goodness; he sees how little reason and justice is ordinarily exhibited by men. If they had the powers of a Gygian ring, they would do injustice for their own gain, for all believe in their hearts "that injustice is far more profitable . . . than justice. . . ." ⁷⁹ In the myth of Er, the first one to choose, who had a choice of the entire range of lots in a new life, selected immediately the greatest tyranny; for his virtue was only habitual, and "he had no philosophy" to guide him.⁸⁰ The implication is clear; only philosophy can be a guide to wise choice. The ideal state cannot be established, justice cannot be made sure, until philosophers are kings, or kings philosophers. Hence, philosophers are to rule the Republic. Such is Plato's conclusion. The true students of philosophy should have a vocation.⁸¹ Admiration is expressed for the Lacedaemonians, the truly best philosophers; theirs was the type of "primitive philosophy."⁸² In Plato's ideal state the primitive philosopher in man must be discovered and prepared by education for his true vocation.

The philosophers will be but "a very small remnant," ⁸³ akin by nature to that best element which avoids the dishonest, everyday political world, being unable successfully to oppose "the madness of the multitude." They are lovers of all knowledge, curious to learn, quick and capable in apprehending truth. Though not anxious to rule (which is a good sign), they will be persuaded to do so, recognizing their obligation to society.⁸⁴ Selected for their love of, and quickness in the apprehension of, knowledge, which can be best observed and judged, not by forcing them to study, but by letting them engage in it as "a sort of amusement," thus revealing their true bent, they must be trained from twenty to thirty in arithmetic (which he asserts makes the quick quicker and improves the dull), geometry (for all who have studied it are quicker than

⁷⁷ *Ibid.*, III, 404.

⁷⁸ *Ibid.*, V, 467.

⁷⁹ *Ibid.*, II, 360.

⁸⁰ *Ibid.*, X, 619. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

⁸¹ *Ibid.*, V, 473; VII, 535.

⁸² *Protagoras*, 342-3.

⁸³ *Republic*, VI, 496.

⁸⁴ *Ibid.*, V, 475-6; VII, 520.

those who have not), and astronomy and music, not in their practical but in their theoretical aspects. To these, dialectic is to be added, by whose aid alone one can learn absolute truth.⁸⁵ This thorough study of the quadrivium, it is explained, will correlate what has been studied earlier in a sporadic fashion. It is not to begin till after the intensive gymnastic training (about eighteen to twenty), for the two or three years passed in that "training is useless for any other purpose; for sleep and exercise are unpropitious to learning; and the trial of who is first in gymnastic exercises is one of the most important tests to which they are subjected."⁸⁶ From thirty to thirty-five, philosophy will be studied.⁸⁷ Then, for fifteen years, they may be put into any office, tested and tempted in the world of experience. After fifty, the select few, who have passed all tests with distinction, will devote the rest of their lives to government and philosophical studies.

Among Plato's significant innovations was the idea of essential equality of talents in men and women. Women might be weaker, but some of them possessed talents appropriate to philosophers, others the courage of the soldier,⁸⁸ still others, just like most men, were only fit to be artisans and husbandmen. All women worthy of the education of guardians should study "music and gymnastic and also the art of war, which they must practise like the men."⁸⁹ Though many will think it ridiculous to see "women naked in the palaestra, exercising with the men, especially when they get old . . . wearing armour and riding upon horseback," Plato would have women strip and exercise, and share the toils of war and the defense of the country.⁹⁰ That innovations respecting women's education were not entirely theoretical, is suggested by the report that a number of distinguished women were in the Pythagorean community, and two women attended Plato's school.⁹¹

Plato's theory of universal truth must be stated briefly. It is his answer to the individualistic opinionativeness of the day. Protagoras' doctrine, "Man is the measure of all things," was taken by some to mean, "What appears to each man to be true, is true for each man." Such a doctrine would doubtless be flattering and agreeable to most men in an age of extreme democracy which sought to equate equals and unequals. Obviously, the thesis might as well be interpreted

⁸⁵ *Ibid.*, vii, 526-7, 532.

⁸⁶ *Ibid.*, vii, 537. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

⁸⁷ *Ibid.*, vii, 539.

⁸⁸ *Ibid.*, v, 456.

⁸⁹ *Ibid.*, v, 452. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

⁹⁰ *Ibid.*, v, 457. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

⁹¹ Iamblichus, 36; Laërtius: *Plato*, 31.

to mean man collectively.⁹² Socrates seems to have given it the broader meaning. The "knowledge" of an individual may be shown to be really only opinion. Truth must be sought through a critical, dialectical process whereby false, unsound, superficial opinions can be detected and discarded, leaving the heart of sound knowledge. Plato's truth transcends the relativism of the sophists. It is unique, fixed, eternal. True reality is defined as perfect ideas, abstractions, universals, "patterns fixed in nature" that have always existed and always will continue.⁹³ Truth does not lie in our sensations, for all senses are inaccurate and deceive us. Truth dwells in a world all her own,⁹⁴ transcends the world of obscurity, sense perception, and opinion, and is scarcely apprehensible by men, but may be partially grasped through examples and pursued through the use of dialectic. Education is the process whereby opinions, perceptions, unrealities (the things men have been in the habit of calling real), which Plato compares to shadows cast on the back wall of a cave in which men are held prisoner, may be seen to be unreal and be supplanted by knowledge of reality, i.e., by knowledge of the original, perfect, universal forms by which the shadows were cast.⁹⁵ This genuine, perfect knowledge, this sole reality, the philosopher-rulers of the state must strive for. Obviously the dull, dim-eyed, slow-witted among the inhabitants of the Republic must take an easier road.

Plato's *Laws*, written at the very close of his life, depicts a society in some respects milder and mellower than the *Republic*, though in others as harsh and rigid as its forerunner. This social order is a "second best," a rather conservative scheme, which the philosopher thought attainable, while not denying the radical innovations of the ideal Republic.⁹⁶ The setting is in Crete; the characters are a Cretan, a Spartan, and an old Athenian—through whom Plato speaks. The *Laws* shows the unmistakable influence of Cretan and Spartan institutions. There is a notable strictness of government and rigidity of education. Certain contrasts with the *Republic* give an idea of the social, economic, and political framework in which education operates. The idea of rule by philosophers is set aside in favor of a government, something between a monarchy and a democracy, in which all citizens participate to some extent, but not equally—a government constituted of monarchical, aristocratic, democratic, and even tyrannical elements. A college of twelve censors (having impeachment powers over lesser officials), elected guardians of the law, hereditary and elected priests, a council of 360, a minister of education, paid teachers, and a

⁹² Cf. Comperz: *op. cit.*, I, 455 ff.; Windelband: *op. cit.*, pp. 94 ff.

⁹³ Plato: *Cratylus*, 389; *Parmenides*, 132; *Meno*, 72, 81-6; cf. Windelband: *op. cit.*, pp. 116-31; Jäger: *op. cit.*, II, 160-73; Ueberweg: *op. cit.*, I, 115-28.

⁹⁴ *Republic*, x, 596 et seq.

⁹⁵ *Ibid.*, VII, 515 et seq.

⁹⁶ *Laws*, v, 739.

multitude of lesser officials are assigned a place. The theory of absolute ideas, so prominent in earlier dialogues, seems to have lost its hold on Plato. Dialectic through which philosophers of the Republic had been trained is in disrepute.⁹⁷ The religious note is strong; orthodoxy is safeguarded by rigidly controlled education and by numerous laws against heresy. The freethinker and the political innovator are taboo. There is to be no communism. Riches and poverty are to be avoided by numerous restrictions. The territory is to be divided into 5,040 lots, one for each citizen, and these are to be grouped in twelve regions. The same discrimination respecting mean occupations and commerce is still maintained. No citizen may be an artisan, but some form of toil, other than that of artisans, is approved of as conducive to health and restraint of passion.⁹⁸ Some attention is given to the principles governing the training of artisans. Slavery is a "necessary" institution. It will work best if the slaves are of different stock; they should be treated well, not just for their own sake, but more because of the master's self-interest, for "man is a troublesome animal."⁹⁹

Education is to be compulsory for all citizens, male and female, the children being "regarded as belonging to the state rather than to their parents."¹⁰⁰ Schools for music and gymnastic are to be set up in town and in the country, taught by foreigners who are to be paid for the service. A minister of education, at least fifty years old and the father of children, is to be elected by the magistrates to serve five years. For this post, "the greatest" of "all the great offices of state," that citizen will be chosen from the body of guardians of the laws who is "in every respect the best."¹⁰¹

Education, though the "fairest thing" men have, may take a wrong course, but it can be reformed. What is the purpose of this all-important process? Just as there are several orders of interests, those of the soul, those of the body, and those pertaining to money-making,¹⁰² one must discriminate between two types of education. That which really deserves the name is "education in virtue from youth upwards, which makes a man eagerly pursue the ideal perfection of citizenship, and teaches him how rightly to rule and how to obey." Training which "aims at the acquisition of wealth or bodily strength, or mere cleverness apart from intelligence and justice, is mean and illiberal, and is not worthy to be called education at all."¹⁰³ Good education "makes good men,"

⁹⁷ *Ibid.*, vii, 820; x, 891; xii, 965; Gomperz: *op. cit.*, iii, 246 ff.

⁹⁸ Plato: *Laws*, viii, 841, 846.

⁹⁹ *Ibid.*, vi, 777. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

¹⁰⁰ *Ibid.*, vii, 804.

¹⁰¹ *Ibid.*, vi, 765-6.

¹⁰² *Ibid.*, v, 743.

¹⁰³ *Ibid.*, i, 644.

and "good men act nobly, and conquer their enemies in battle. . . ." ¹⁰⁴

Education should be carried on in an active way, should be an apprenticeship through play to what one will do in later life: ". . . he who would be good at anything must practise that thing from his youth upwards, both in sport and earnest, in the particular way which the work requires; for example, he who is to be a good builder, should play at building children's houses; and he who is to be a good husbandman, at tilling the ground; those who have the care of their education should provide them when young with mimic tools. And they should learn beforehand the knowledge which they will afterwards require for their art. For example, the future carpenter should learn to measure or apply the line in play; and the future warrior should learn riding, or some other exercise for amusement, and the teacher should endeavour to direct the children's inclinations and pleasures by the help of amusements, to their final aim in life. The sum of education is right training in the nursery. The soul of the child in his play should be trained to that sort of excellence in which when he grows up to manhood he will have to be perfected. . . ." ¹⁰⁵

Prenatal care is recognized as highly important. Rapid growth without exercise is the source of much evil to the body. Expectant mothers should be vigorously active, and children, though too young to walk, should have the exercise of motion, being carried about till the end of the third year. From then till six, children "will require sports, . . ." such "natural modes of amusement which they find out for themselves when they meet." At six boys and girls should be separated, the boys living together and the girls together. The boys will now go to teachers to learn horsemanship, the bow, the javelin, the sling, and the use of heavy arms. Stress is laid on the cultivation of ambidexterity. Girls are to learn the use of weapons too—"if they do not object." Thus will all, "boys and girls alike," be sound of hand and foot and "not spoil the gifts of nature by bad habits." ¹⁰⁶

Education is of two kinds, music and gymnastic. The superintendent of education must observe the established laws; citizens are charged to look after youth and punish them if they do wrong, or else "incur the greatest disgrace." ¹⁰⁷ At ten the study of letters, including reading, writing, poetry, and the law, begins and continues for three years. ¹⁰⁸ The lyre is taken up at thirteen

¹⁰⁴ *Ibid.*, I, 641. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

¹⁰⁵ *Ibid.*, I, 643. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

¹⁰⁶ *Ibid.*, VII, 793-5. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

¹⁰⁷ *Ibid.*, VII, 809.

¹⁰⁸ Cf. *Protagoras*, 325-6.

and continued for three years, avoiding a great complexity and variety of rhythms.¹⁰⁹ Arithmetic, mensuration, and astronomy complete intellectual education, being taught to "the many" in a general way, utilizing games as in Egypt to make learning "a pleasure and amusement." Mental learning, Plato says elsewhere, cannot be successfully forced, whereas compulsory physical exercise does no harm.¹¹⁰ Only "a few" are to pursue these studies "in a strictly scientific manner. . . ." ¹¹¹

Gymnastic has its *raison d'être* in the nature of man, which delights in motion and rhythm. This branch of education consists of two main elements: gymnastic exercises and dancing. Man, having a sense of rhythm, invented dancing which, with melody, constitutes the whole choral art. One who is properly educated will sing and dance well. Dancing is of two kinds, noble and ignoble. The latter (Bacchic dances and the like) are not suitable for citizens at all. Of the noble, there are two types: for war, the Pyrrhic, which imitates giving and avoiding blows, leaping up and falling down, using the bow and the javelin; for peace, the Emmeleiai, which are natural, graceful, and symbolic of prosperity and order.¹¹²

Gymnastic training is chiefly military drill, archery, hurling weapons, using the light shield and heavy arms, military evolutions, logistics, encampments, and everything belonging to horsemanship.¹¹³ Wrestling, which is closest to the military art, is to be practiced for this reason, and not for its own sake.¹¹⁴ Hunting is praised and recommended because it simulates war. But there are several kinds of hunting; that of animals, birds, and fish; that of men; that of armies; and that of robbers. Youth are warned against being ensnared by a love of fishing or fowling and against robbing, for these are unworthy of free-born youth. Only the chase of land animals, "which is carried on with horses and dogs and men's own persons," is recommended for the future citizens, because this involves running down, throwing, striking, and seizing with one's hands.¹¹⁵

Training of a military or semimilitary sort is supplemented by recreations that serve the same end. "Every city which has any sense, should go out to war at least for one day in every month," more, if thought fit, without regard to heat or cold, summer or winter. Everyone—men, women, and children—should go out in mass, having games and tournaments, "imitating in as lively a manner

¹⁰⁹ *Laws*, vii, 810.

¹¹⁰ *Republic*, vii, 536.

¹¹¹ *Laws*, vii, 817-9.

¹¹² *Ibid.*, vii, 814-6.

¹¹³ *Ibid.*, vii, 813.

¹¹⁴ *Ibid.*, vii, 814.

¹¹⁵ *Ibid.*, vii, 823. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

as they can real battles." For wrestlers, boxers, and pancratiasts train for their matches, and should not citizens do the same? "Will the legislator not . . . ordain that every day the soldiers shall perform lesser exercises without arms, making dancing and all gymnastic tend to this end; will he not require that they shall practise some gymnastic exercises, great or small, as often as every month; and that they shall have contests one with another in every part of the country, seizing upon posts and lying in ambush, and imitating in every respect the reality of war; fighting with boxing-gloves and hurling javelins, and using weapons somewhat dangerous, and as nearly as possible like the true ones, in order that the sport may not be altogether without fear, but may have terrors and to a certain degree show the man who has courage and the man who has not; and that the honour and dishonour which are assigned to them respectively, may prepare the whole city for the true conflict of life? If any one dies in these mimic contests, the homicide is involuntary, and we will make the slayer, when he has been purified according to law, to be pure of blood, considering that if a few men should die, others as good as they will be born; but that if fear is dead, then the citizens will never find a test of superior and inferior natures, which is a far greater evil to the state than the loss of a few." ¹¹⁶

Only warlike contests are to be practiced and rewarded with prizes; all others are to be given up. Military exercises are selected on the principle that "the most military of all qualities is general activity of body, whether of foot or hand." For escape from and capturing enemies, "quickness of foot is required; but hand-to-hand conflict and combat need vigour and strength." ¹¹⁷ Hence there must be races in armor (graded for boys, youth, and men), single and double races, the horse course, distance race, race in heavy armor, another in still heavier armor, and a race for the archers. Other contests include, "instead of wrestling," "conflicts in armour of one against one, and two against two, and so on up to ten against ten," and skilled persons are to determine the winners in these matches. ¹¹⁸ A military pancration is to be established in which bows, shields, javelins, and stones, thrown by hand and with slings, are the weapons. ¹¹⁹ Since the chariot is of but little use in war, such races are not approved; but prizes for colts and horses, as well as contests between archers and javelinmen in armor on horseback, are to be established.

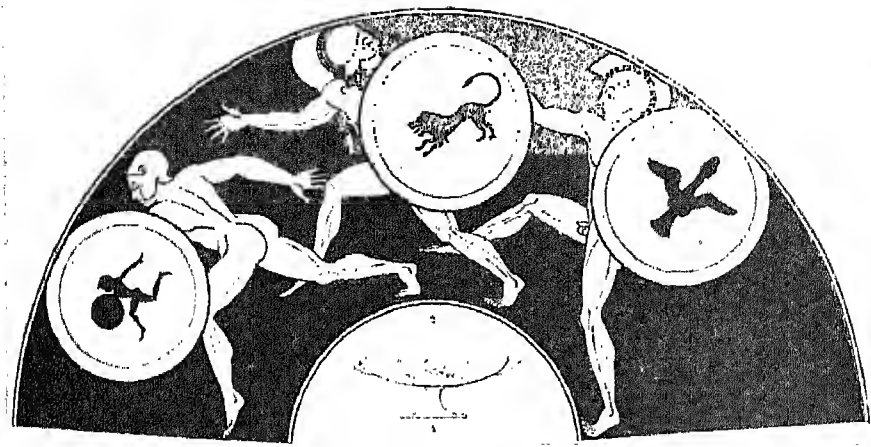
The laws pertaining to physical education apply to women as to men: "Both

¹¹⁶ *Ibid.*, VIII, 829-31. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

¹¹⁷ *Ibid.*, VIII, 832. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

¹¹⁸ Cf. *Laches*, 178-80. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

¹¹⁹ *Laws*, VIII, 834.



THE RACE IN ARMOR vase painting, 5th century

Berlin Museum (Courtesy, The Metropolitan Museum of Art, New York)

go through the same exercises. I have no sort of fear of saying that gymnastic and horsemanship are as suitable to women as to men. . . . And . . . nothing can be more absurd than . . . men and women not following the same pursuits . . . for thus the state, instead of being a whole . . . is reduced to a half. . . ." ¹²⁰ Elsewhere Plato says: "While they are yet girls they should have practised dancing in arms and the art of fighting—when they are grown-up women, applying themselves to evolutions and tactics, and the mode of grounding and taking up arms; if for no other reason, yet in case the whole people should have to leave the city and carry on operations of war outside, that the young who are left to guard and the rest of the city may be equal to the task; and, on the other hand (what is far from being an impossibility), when enemies, whether barbarian or Hellenic, come from without with mighty force and make a violent assault upon them, and thus compel them to fight for the possession of the city, great would be the disgrace to the state, if the women had been so miscrably trained that they could not like birds fight for their young. . . ." ¹²¹

Women's physical recreation, like the men's, is in military sports. Girls must compete naked in the stade, double stade, horse course, and long race from thirteen to eighteen, and may do so when older. Till married, women are also to take part in the armed combat, one against one, two against two, and so on, as do the men; women are not compelled to participate in the contests on

¹²⁰ *Ibid.*, vii, 804-5. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

¹²¹ *Ibid.*, vii, 813-4. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

horseback, but may do so if they like and their early training has become a habit with them.¹²²

Plato, the innovator, expresses fear of innovations, in the *Laws* as he did in the *Republic*. Once laws are fixed, they must remain. Even changes in gymnastic, music, and dancing would inevitably undermine the laws: therefore, music and gymnastic shall be kept in "their original form";¹²³ and "no one in singing or dancing shall offend against public and consecrated models, and the general fashion among the youth, any more than he would offend against any other law," under pain of punishment "by the guardians of the laws, and by priests and priestesses."¹²⁴ Games, too, have an effect on the permanence and stability of the state. Children who are permitted to make innovations in their games will want to make changes in laws and institutions when they grow up. Therefore, plays and games must remain the same, since "he who changes the sports is secretly changing the manners of the young, and making the old to be dishonoured among them and the new to be honoured. And I affirm that there is nothing which is a greater injury to all states than saying or thinking thus."¹²⁵

Plato has depicted a thorough, military education. Yet it arises from necessity, he says, and is aimed at peace, not conquest. Neither an individual nor a state should wrong another, and they should not be wronged by others. Our state can attain the first, he says, but it cannot be guaranteed freedom from wrong by others. Therefore, the state must prepare for war while it is at peace. Nevertheless, Plato emphasizes the evils of war, even the evils of victory for the victors, and argues that ". . . every man of us should live the life of peace as long and as well as he can."¹²⁶ Though war is the "aim and object" of Cretan and Spartan institutions, Plato holds that lawgivers should aim to reconcile classes and individuals within the state rather than promote the destruction of one by the other. Civil war is, of course, more to be feared than external, but "war, whether external or civil, is not the best, and the need of either is to be deprecated; but peace with one another, and good will, are best . . . [and] no one can be a true statesman . . . who looks only, or first of all, to external warfare; nor will he ever be a sound legislator who orders peace for the sake of war, and not war for the sake of peace."¹²⁷

¹²² *Ibid.*, viii, 834.

¹²³ *Republic*, iv, 424.

¹²⁴ *Laws*, vii, 800. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

¹²⁵ *Ibid.*, vii, 797. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

¹²⁶ *Ibid.*, vii, 803. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).

¹²⁷ *Ibid.*, i, 628. From *The Works of Plato*, translated and edited by Benjamin Jowett (Oxford University Press).



ARISTOTLE

(H. Brunn and P. J. Arndt, *Denkmäler*, Pl. 378)

It was Plato's good fortune to have as pupil the greatest mind in antiquity. Aristotle's biographer says that he had thin legs, small eyes, a lisping tongue, and was inclined to foppish dress.¹²⁸ It seems to have been unimportant; more significant was his ingenuity and industry in seeking the relation of effects and causes, organizing and assaying the knowledge of his day, formulating the laws of thought and canons of poetry and eloquence, investigating the ways of animals, explaining the mysteries of the soul, and detailing the proper ordering of a household. Indeed, as a literary wit of later days declared, Aristotle knew even the nature of an oyster's soul.¹²⁹

Aristotle was born at Stagira, studied under Plato, tutored Alexander, and established a famous school of philosophy at the Lyceum in Athens, where he taught for many years. Shortly before his death he fled from the city under a charge of impiety, saying that Athens must not be permitted to sin twice against philosophy.¹³⁰ Deeply concerned with the problems of everyday life, Aristotle turned his critical eye upon the past and the social, political turmoil around him, and examined them in the light of philosophic schemes for improvement. From the crucible of his thought there came forth thoughtfully formulated principles of the good life for man and for the state, which, though obviously marred by many prejudices and the inadequacies of his science, have been highly significant in political and educational thinking to the present day.

There are certain similarities between Aristotle's views and those of Xenophon and Plato; thus he recognizes certain strong points in Spartan and Cretan institutions, though he censures other aspects of these commonwealths. Unlike them he puts greater trust in democratic government, and has less faith than they in rigid forms and unalterable prescriptions. Plato's doctrine of universal ideas is rejected. Both democracy and oligarchy (as they exist) are criticized: for the sons of an oligarchic class live in luxury and become the worst enemies of the state; and the adherents of democracy think of nothing but freedom to do as they like and let the majority rule.¹³¹ Aristotle regards tyranny, oligarchy, and pure democracy as perversions of the three true forms of government, the monarchical, aristocratic, and constitutional, respectively.¹³² The best government would be a wise, benevolent monarchy, ruled by one so much better than any other as to be unique, "a god among men";¹³³ under circumstances as they are, however, a constitutional government, in which all citizens (but not all persons) share, is, for practical purposes, the best

¹²⁸ Laërtius: *Aristotle*, 1-2.

¹²⁹ Lucian: *Sale of Creeds*, 26.

¹³⁰ Laërtius: *Aristotle*, 7; Gomperz: *op. cit.*, iv, 24.

¹³¹ Aristotle: *Politica*, iv, 13; v, 9; vi, 7; Windelband: *op. cit.*, pp. 132 f.; Ueberweg: *op. cit.*, 1, 157 f.

¹³² *Politica*, iii, 7; iv, 2.

¹³³ *Ibid.*, iii, 13, 17.

attainable, for thus may be combined some advantageous features of oligarchic and democratic rule.¹³⁴ Here, as elsewhere, Aristotle applies the doctrine of the mean. Too much diversity is an evil, a cause of disintegration; but there may also be too much unity in the state. Both extremes are to be avoided. The mean is best. Spartan government was excellent in that it combined elements of monarchy, aristocracy, and democracy.¹³⁵

Aristotle would locate his commonwealth in a healthful, temperate climate, for climate influences the nature of men. A cold, inhospitable one makes men spirited, but unintelligent, unskilled, and incapable of rule; a hot climate is conducive to intelligence and inventiveness but occasions a lack of spirit, and makes men liable to subjection; while a temperate climate, combining both spiritedness and intelligence, makes men fit to rule. The land must be well watered, adequate to support life, and accessible by land and sea, yet easily defended. All land is to be the property of the state, but half of it will be assigned to citizens for private use, each citizen having one share in the city itself and another share on the frontier, thus securing his interest in defense against enemies. The population must be large enough to perform all work necessary for the welfare of the state, yet not so large but that it "can be taken in at a single view."¹³⁶

Artisans are not to be citizens in the "best form of state." Citizens must not do "illiberal" work.¹³⁷ Their shares of land and certain freely provided services make it possible for them to live a life of leisure, which is necessary for those who devote themselves to the good life of the state. Priests, magistrates, soldiers, and other citizens have their meals in common.¹³⁸

The labors of society are productive, protective, deliberative, and directive. Slaves, public and private, are to cultivate all lands held by the state or by individuals, and do all other productive work of an "illiberal" sort. They ought to be unspirited folk, preferably of a foreign race—naturally inferior to their masters. Protective, directive, and deliberative functions belong to the master-class, the citizens—"those who carry arms"—with a certain exception.¹³⁹ Naval force was associated, in Greek experience, with the rise of lower orders to prominence; excepting marines, Aristotle would have it drawn from the non-citizen Perioeci and husbandmen.¹⁴⁰ The younger men begin at twenty-one years to perform active military and civil duties; while older ones act as legisla-

¹³⁴ *Ibid.*, iv, 8-9, 11.

¹³⁵ *Ibid.*, ii, 1-6.

¹³⁶ *Ibid.*, vii, 4-5, 7, 10-1. Compare Plato's view of the effect of habitat, winds, heats, waters, foods, on the nature of man—*Laws*, v, 747—and that of Hippocrates—"Airs, Waters, Places," *Hippocrates*, i, 137.

¹³⁷ *Politica*, iii, 5; vii, 9.

¹³⁸ *Ibid.*, vii, 10, 12.

¹³⁹ *Ibid.*, iv, 13.

¹⁴⁰ *Ibid.*, vi, 7; vii, 6.

tors, judges, and priests, and progressively enjoy contemplative leisure, as befits those who are capable of the highest happiness.¹⁴¹

Aristotle turns often to the "experience of ages" past, "for almost everything has been found out, although sometimes . . . not put together. . . ." ¹⁴² The *Politica* is a well-informed book, a more conservative treatise on the state than Plato's *Republic*, perhaps because Aristotle approached the political life of man through a study of the constitutions of 158 cities. He does more, however, than collect and set forth old facts and institutions. Those features of the past that are given place in his best attainable state are utilized because they are in harmony with certain principles of man's nature. Sound or unsound, these were inevitably colored by experience and observation that had sharp limitations. Nevertheless, the method speaks eloquently of the scientific outlook of the philosopher, even when his hypotheses seem most at variance with recognized facts of to-day.

Aristotle, like others before him, attempted to fix upon some valid, ultimate good.¹⁴³ But whereas Socrates held knowledge, and Plato, justice, to be the end, the highest good, Aristotle says that happiness is the chief and final end, encompassing all immediate and lesser ones. This, of course, does not deny the importance of the others. Indeed, "no government can stand which is not founded on justice." ¹⁴⁴ Happiness is an end, good in itself for all men, never a means, hence more final than those immediate ends that are also means. Knowledge, justice, and music and arithmetic are useful to man, for they and many other things are means to the chief end, happiness—which is the valid final end both for man and for the state. Politics, the science of government, is the master science, for it includes and directs all others, that they may be serviceable to the attainment of the chief end, individually and collectively.¹⁴⁵

Happiness, of course, is a broad term, is variously interpreted, and may be misunderstood. Its many meanings and implications—prosperity, independence, security, good birth, plenty of friends, plenty of children, happy old age, health, beauty, good stature, athletic ability, fame, honor, luck, and virtue—are all recognized.¹⁴⁶ But to be serviceable as a formula of the greatest good, the true end of man and society, a more scientific conception of happiness must be formulated. Aristotle finds the key to happiness is the performance of function, the activity that properly (naturally) belongs to anything. Observing

¹⁴¹ *Ibid.*, vii, 9.

¹⁴² *Ibid.*, ii, 5. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press).

¹⁴³ *Ethica Nichomachea*, i, 1.

¹⁴⁴ *Politica*, vii, 14.

¹⁴⁵ *Ethica*, i, 2, 7.

¹⁴⁶ Aristotle: *Rhetorica*, i, 5.

that the goods of a flute-player and a carpenter are playing the flute and building houses, Aristotle raises the question: What is the function of man, as a man? "Is he born without a function?"¹⁴⁷ Do feet and hands have functions, while man as a whole is without them? If man has many functions, which one distinguishes him from the vegetable kingdom and from the animal, and makes him man?

Nutrition and growth are functions common to the whole animate world.¹⁴⁸ Sensation, too, is common to lower animals and man. The rational function, however, is that which distinguishes man from other living things. It is the activity of soul, of the rational element of the soul, one should say, for the soul is both irrational (impulsive) and rational (capable of reason and self-direction). To act in accord with reason, then, is man's particular function, his highest good. The good life is a life of activity in accord with reason. Neither knowledge nor a state of mind are synonymous with the good life. It is not "the most beautiful" or "the strongest" who are crowned at Olympia, but those who enter the lists.¹⁴⁹

Man cannot live alone, save for a brief time and in an incomplete sense. He "is by nature a political animal";¹⁵⁰ and the state is the creation, the result of this nature. Its function is to promote and direct well the several activities proper to man: those of nutrition and growth, of sensation, and of reason. In this way the state makes possible the good life, the highest happiness of which man is capable. When it so functions, the state may be said to be happy, for it fulfills its end. Nonfunctioning is failure to live according to the principles of man's nature, is a denial of nature; it signifies unhappiness for man, individually and collectively.

In individual man, where nature is not perverted, the rational soul rules the irrational soul and the body, making the virtuous life possible; so, in the state, there is good order and happiness when those in whom the rational element exists direct, and are masters of, those in whom it does not exist at all (slaves), or is incomplete or undeveloped, as in women and children. Some men are slaves by nature. They are destined to be and "deserve to be slaves."¹⁵¹ Others "are by nature free," marked to rule, by virtue of the kind of soul implanted in them. It is right and just for them to rule over beasts and inferior men. "Man" is the "most essential" of all possessions. Hunting and war are both natural acts of acquisition, establishing dominion of the superior over the inferior, and hence "naturally just."¹⁵² The relation of the master to the slave is

¹⁴⁷ *Ethica*, I, 7; *Magna Moralia*, I, 3-5.

¹⁴⁸ *Ethica*, I, 7; Galen: *On the Natural Faculties*, I, 7.

¹⁴⁹ Aristotle: *Ethica*, I, 8.

¹⁵⁰ *Politica*, I, 2.

¹⁵¹ *Ibid.*, VII, 14.

¹⁵² *Ibid.*, I, 8.

not only good and proper for the master; it is also best for the slave, since it promotes the only activity of which he is capable. In the interest of economy and for the sake of character, the master should rise earlier and retire later than the slave. Anything that would diminish or destroy the slave's efficiency must be avoided. "Work, punishment, and food" are the necessary elements for the life of the slave, but good usage will always serve the master's self-interest.¹⁵³

In the household, women and children are fitted by nature for subjection to the male, somewhat as slaves are to their masters, since they have no faculty for self-rule or direction. For the virtue of a woman, Aristotle holds, contrary to Plato, is not the same as that of a man; hers lies "in obeying," and that of a man "in commanding."¹⁵⁴ Aristotle thinks that throughout the animal kingdom, though the female has some qualities more strongly developed than the male, she is less complete, less courageous, weaker, more impulsive, and the "differentiation is the most obvious in the case of human kind. . . ." ¹⁵⁵ From the differences in capacities implanted in slaves and artisans of all kinds (who were once all slaves, and in many states still are), Aristotle concludes that a state composed of such would be impossible, for a state exists for the good life, not for mere life.¹⁵⁶

Though from "one point of view," war is natural and just, establishing the dominion of the superior over the inferior, Aristotle does not believe that men should pursue war for the purpose of enslaving those who do not deserve (by nature) to be slaves.¹⁵⁷ Rather than striving for dominion over its neighbors by war, the state should provide against its own enslavement and maintain its sway only for the good of the governed. To establish tyranny, to rule unjustly is unlawful, for there may be might without right. Those who praise the Spartan legislator who made "conquest and war his sole aim," do so unwisely; for, though the Lacedaemonians were "trained to meet dangers" and "gained great power," "they are not a happy people" now that their empire is broken up. Such military states are safe only when at war; they fall when they gain empire, losing their temper like unused iron, for the chief virtue of war is unserviceable in times of peace. "Facts, as well as arguments, prove that the legislator should direct all his military and other measures to the provision of leisure and the establishment of peace." The inferior in art and in nature exists for the service of the superior. "Men must be able to engage in business and go to war," but

¹⁵³ Aristotle: *Oeconomica*, I, 5-6; Glotz: *Ancient Greece at Work*, p. 200; Butcher: *op. cit.*, pp. 73 ff.; St. John: *History of the Manners and Customs of Ancient Greece*, III, 1 ff.

¹⁵⁴ *Politica*, I, 5, 13.

¹⁵⁵ *Historia Animalium*, IX, 1. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press).

¹⁵⁶ *Politica*, III, 5, 9.

¹⁵⁷ *Ibid.*, I, 8; VII, 14.

the one is for the sake of leisure and the other for the sake of peace. The legislator must so educate that citizens will have the virtues requisite to the good life in leisure and in peace, for it is a disgrace for men to show excellent qualities in action and in war, and "when they have peace and leisure to be no better than slaves." ¹⁵⁸

Observation of nature and reflection upon the past have led Aristotle to recognize another principle, that of change. Hippodamus introduced the idea of planning cities, and proposed to honor those who discovered anything new that would be useful to the state. Planning implies change. "Great caution" is necessary, however, for laws command obedience only through habit, and too great readiness to make changes "enfeebles the power of law." Still, politics is an art, and change is as necessary in this as in any other; only thus has improvement come about. Moreover, considering the rational principle toward which men strive, it is natural for man to "desire the good . . . not merely what their fathers had. . . ." ¹⁵⁹ The chief questions are, therefore, who should make changes, all or only a few; and how extensive should changes be.

The study of politics, planning a more perfect state, inevitably embraces education. Education is a branch of politics. Nothing provides more surely for the permanence of governments than education, if rightly instituted, since the best laws can accomplish little unless youth are trained and educated "in the spirit of the constitution." To this end, the principles of education and of politics must be in harmony. Moreover, since the state has one purpose, the attainment of the good life for its citizens, education to that end must be the same for all. Since an individual belongs not to himself but to the state, the state alone may direct and determine what education is to be. Athens has done badly in respect to this, permitting families to decide for themselves; Lacedaemon has done well, making education a function of the government. All educational matters—the stories children are to hear, the pictures and statues they may see, their plays, what they may witness at the theater, what they may do and say, with whom they may associate—are placed under the directors of public education. ¹⁶⁰ For what is experienced first is apt to remain with us; the things that give us pain or pleasure, the things we love and those we hate—all these are rudders by which youths are steered to a virtuous, happy life. ¹⁶¹

The periods of education, and the elements appropriate to each, are determined by nature herself. The physical body, the irrational soul, and the rational soul develop in due order; hence concern for the body must come first, training of the irrational self next, and the education of reason last, though that of

¹⁵⁸ *Ibid.*, II, 9; VII, 15. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press).

¹⁵⁹ *Ibid.*, II, 8.

¹⁶⁰ *Ibid.*, V, 9; VII, 17; VIII, 1.

¹⁶¹ *Ethica*, X, 1.

the body and the appetites is ultimately "for the sake of the reason."¹⁶²

Since it is futile to speak of ultimate ends without considering means thereto, education of the rational soul must wait upon that of the body. Education can accomplish nothing without a good physical stock on which it may be engrafted; hence the legislator is concerned with the physical qualities of the children of citizens. This goes back to eugenic mating, the time when mating should occur, and other related matters. Women ought to marry at eighteen, men at thirty-seven. Athletes and others too, who engage in physical labor that is excessive and of only one kind, are not suited to be citizens or the fathers of citizens, "any more than the valetudinarian or exhausted constitution." The mean between the two is preferred. Neither the very young nor the old are fit to produce children, healthy in mind and body. Women, while bearing children, should exercise their bodies daily (walking to the temples is recommended), but their minds should be at rest. Diet should be nourishing.

No child that is deformed shall live. When there is an excess of children, abortion is to be practiced.¹⁶³ In the first years of life nature decrees that physical growth is of paramount importance; hence chief attention must be to nutrition, exercise, and inuring the body to cold by a gradual process. Milk is the best food, as the habit of animals and warlike peoples show. To five years of age, the child will have no studies, no tasks, for these might hinder normal growth. Crying and screaming are good physical exercise; childish amusements, too, are good, if not overdone, vulgar, or effeminate. Children should not be left with slaves. On the moral side, all care should be taken to prohibit any speech or action in their presence that has a taint of meanness.

From five until seven, while they are still at home, children are to "look on at the pursuits which they are hereafter to learn."¹⁶⁴ Since woman's rôle is sedentary and in the household; since she is not a citizen, although a free person; and since she is subject to her husband, and is "the proper possession of all freemen,"¹⁶⁵ the education of girls will be only in the family, and for its duties, in accord with the political principles laid down for the state, which exclude women from any directive function therein.¹⁶⁶

Formal education after seven falls into two periods: the first, to the age of puberty; the second, from puberty to twenty-one.¹⁶⁷ Here again, the training of the body takes precedence over that of the soul, for Aristotle holds that body and soul are closely interlinked, and mental faculties are affected by movements

¹⁶² *Politicā*, vii, 15.

¹⁶³ *Ibid.*, vii, 16.

¹⁶⁴ *Ibid.*, vii, 17. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press).

¹⁶⁵ *Oeconomica*, i, 2, 3.

¹⁶⁶ *Politicā*, i, 13; ii, 5.

¹⁶⁷ *Ibid.*, vii, 17.

and states of the body. Indeed, he agrees with physiognomists that movements, form, and proportion of the body reveal the character of the soul.¹⁰⁸ Since practice should precede theory, youth are to be turned over "to the trainer, who creates in them the proper habit of body, and to the wrestling-master, who teaches them their exercises."¹⁰⁹ Till fourteen or fifteen they should engage in lighter exercises, "avoiding severe diet or painful toil," the heavier being postponed till nearer manhood, "lest the growth of the body be impaired." Dancing, running, jumping, throwing the javelin and discus would be included among these lighter exercises, but Aristotle is content to state principles and omit details. The principle of the mean must be adhered to, for, as he says,¹⁷⁰ excessive or deficient exercise injures strength, just as too little or too much food and drink is inimical to health. The evil of excessive, severe, early training, Aristotle believed, had been proved by the fact that of Olympic victors not more than two or three ever won prizes both as boys and men. Hence the "athletic habit" is not to be encouraged. Even the Lacedaemonians, wise in some respects, erred in giving too much attention to "laborious exercises," thinking thereby to make their citizens courageous. In reality, however, they only brutalized them; besides, Lacedaemon was not successful in war because of her severe training, but because her rivals gave slight attention to such training. That which "is noble, not what is brutal, should have the first place; no wolf or other wild animal will face a really noble danger; such dangers are for the brave man."¹⁷¹

The period of light physical training is to be followed by three years devoted to study, during which little attention will be given to gymnastics. Respecting the education that is appropriate, Aristotle says there is much doubt and dispute. Men disagree as to the relative stress on moral and intellectual education; they also differ "about the things to be taught."¹⁷² To decide the question, one must keep in mind the goal of the citizen's life, and determine upon educational principles that are in harmony therewith. A key is found in an earlier distinction between occupations that are liberal and those that are illiberal. "Any occupation, art, or science, which makes the body or soul or mind of the freeman less fit for the practice or exercise of virtue, is vulgar; wherefore we call those arts vulgar which tend to deform the body, and likewise all paid employments, for they absorb and degrade the mind." Even some liberal arts are proper for a free man only to a certain degree, for if one is too devoted to them, or aims at "perfection in them," they become illiberal. Children ought, therefore, to "be taught those useful things which are really neces-

¹⁰⁸ *Physiognomonica*, 2, 4; *Philostratos: Concerning Gymnastics*, 25 et seq.

¹⁰⁹ *Aristotle: Politica*, viii, 3.

¹⁷⁰ *Ethica*, ii, 2.

¹⁷¹ *Politica*, viii, 4; *Ethica*, iii, 6, 7. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press).

¹⁷² *Politica*, viii, 2.

sary, but not all useful things. . . ." "To be always seeking after the useful does not become free and exalted souls." ¹⁷³

Agriculture, which is highly praised by Aristotle in the *Oeconomica*, and is recommended because "it does not make men's bodies unserviceable, as do the illiberal arts," but, on the contrary, "conduces greatly to bravery," rendering men "adventurous against the foe," ¹⁷⁴ does not appear in the *Politica* as a field for training or education—presumably because even such dignified and beneficial labor is to be performed in the ideal state by public and private slaves. It is admitted, of course, that the "good man" may learn the craft of an inferior, but only for his "own occasional use"; if it goes beyond that, there will cease to be any distinction between masters and slaves.¹⁷⁵ In addition to gymnastics, reading, and writing, music and drawing are recommended. Reading and writing are necessary in many ways. Drawing, too, while it may be useful in making purchases, is to be taught "because it makes them judges of the beauty of the human form." ¹⁷⁶ Music is approved as a means to "intellectual enjoyment in leisure," which is liberal and noble. Aristotle is often at pains to controvert the idea that education is play: the beginning of education is bitter, the end sweet; "learning is no amusement, but is accompanied with pain." But music is a serviceable amusement, a sweetener of toil—not an amusement for its own sake, but a means to an end—which is to youth what the rattle is to the baby; it ought to be employed, therefore, for Aristotle thinks that youth "will not, if they can help, endure anything which is not sweetened by pleasure. . . ." ¹⁷⁷

Music, moreover, serves a grater, a remoter end; it is conducive to virtuous character of the soul, just as gymnastic gives a certain character to the body. This alone would be sufficient justification for the use of music in the education of the young. There is an affinity in our souls for various rhythms. By choosing the right music we can set the best chords of the soul vibrating. Only those melodies should be employed that produce an ennobling, harmonious effect. Remarkable perfection of execution, such as is acquired for professional purposes, is to be shunned, of course, for this makes music an end in itself, not a means of improvement. In explaining this use of music, Aristotle has recourse again to the theory of the mean.¹⁷⁸ The virtuous life is a mean between extremes. As music exerts an involuntary influence over the soul by virtue of the

¹⁷³ *Ibid.*, VIII, 2-3. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press).

¹⁷⁴ *Op. cit.*, I, 2. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press); in contrast with this view of the warlike qualities of countrymen and commoners, cf. Aristophanes: *The Peace*, 441 et seq.; *Achamians*, 509 et seq.

¹⁷⁵ *Politica*, III, 4; VII, 9.

¹⁷⁶ *Ibid.*, VIII, 3.

¹⁷⁷ *Ibid.*, VII, 5. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press); Laërtius: *Aristotle*, 11.

¹⁷⁸ *Ethica*, II, 2, 6.

affinity spoken of, those modes of music must be avoided that have extreme effects, such as the Phrygian, which is too exciting, and the "so-called Mixolydian," which is conducive to sadness. Dorian, the mean between these extremes, is recognized as "manliest" and best, and should therefore be taught to youth, though for very young children and men of advanced age, the Lydian is held to be appropriate and useful.¹⁷⁹

Instruments must be chosen on the same principle: the flute and the harp are rejected, the latter partly for its difficulty, the former because it distorts the face, hinders the use of the voice, "is too exciting," and is not "expressive of moral character." Those instruments alone may be used which "will make intelligent students of music. . . ." ¹⁸⁰

The rôle of music is also important in connection with purgation—catharsis—of the irrational soul. Just as physical play and exercise in the palaestra furnish an outlet for animal spirits and are conducive to dignified, manly bearing, so the purgation of the irrational soul by music is conducive to the virtuous life, providing an agreeable, harmless outlet for the passions. When purgation rather than instruction is the purpose, other modes and instruments may be employed; thus the flute, though condemned for instruction, is permitted when the purpose is "relief of the passions."¹⁸¹ Purgation may also be effected by means of tragedy which, through imitation of life, arousing fear and pity, provides by vicarious experience a "catharsis of such emotions."¹⁸² Through these and music the emotions are cultivated and brought under subjection to the rational soul.

What would provide the education of the rational soul is largely a matter of speculation, for the treatise on politics is incomplete. Mind and ability to think were little known in his day, but Aristotle calls "mind" that by means of which the soul judges and thinks. Until soul thinks, mind is not anything real. Thinking, which is both judgment and imagination, is viewed as of many types: art, science, practical reason, intuitive reason, and philosophic, contemplative wisdom, the key to "perfect happiness." Development of mind, in light of Aristotle's functional conception of it, would logically be expected to be exercise of the rational soul in thinking and judging.¹⁸³

When boyhood with its lighter gymnastic exercises is past, and when three years have been devoted to study of an intellectual and moral nature, youth on

¹⁷⁹ *Politica*, viii, 7.

¹⁸⁰ *Ibid.*, viii, 6. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press).

¹⁸¹ *Ibid.*

¹⁸² Aristotle: *De Poetica*, 6.

¹⁸³ *De Anima*, i, 3; ii, 2; iii, 3-4; *Ethica*, vi, 3-7, 11; x, 7; Davidson: *op. cit.*, pp. 198 f; Wilkins: *National Education in Greece*, pp. 160 ff.; Wright: *A Short History of Greek Literature*, p. 402.

the threshold of manhood should have three years of continuous physical training—hard exercises and strict diet. From this period (eighteen to twenty-one) study is specifically excluded on the ground that “men ought not to labour at the same time with their minds and with their bodies; for the two kinds of labour are opposed to one another. . . .”¹⁸⁴ The harder exercises of this period would presumably include wrestling, riding, shooting, marching, and other military exercises, though details are not given in the *Politica*. Elsewhere, however, Aristotle recognizes the all-round athlete as most beautiful, both swift and strong—one who is good at running, able at wrestling, clever at boxing, and able to combine the two last as a good pancratiast.¹⁸⁵ One would expect these to be part of the citizen’s training; but keeping in mind Aristotle’s criticism of the excesses, brutality, and ultimate ineffectiveness of Lacedaemonian practice, none of them would be overdone, or become an end in themselves in his ideal state. It seems certain that this training would be under the care of competent gymnasts and sufficiently realistic to enable men to take up active military duties at twenty-one. That gymnastic exercises should be continued by the older men is clear from the reference to a freeman’s agora, whence all trade, mechanics, and husbandmen are excluded—a place where the magistrates will congregate to witness the performances of young and old.¹⁸⁶

Physical training, as Aristotle would have it, should serve the education of a citizen whose end is not conquest but the virtuous life. Too great stress on military life, as in Lacedaemon, or on physical prowess, as in the case of professional athletes, is repeatedly condemned as incompatible with the ultimate goal. In connection with aesthetic and moral training, and in order that the highest happiness might be attained, Aristotle saw the need of a science of gymnastics. Great improvements had been made in this art, setting aside ancient traditional usage.¹⁸⁷ He distinguishes between the paidotribe and the gymnast. The one is a trainer, the other a scientist who understands the whole range of the art of gymnastic from its lowest elements to the highest—one who “considers not only the suitableness of different modes of training to different bodies, but what sort is absolutely the best . . . and also what common form of training is adapted to the great majority of men.”¹⁸⁸ This science aims at health, or harmony of body,¹⁸⁹ and calls to its assistance, at times, the science

¹⁸⁴ Aristotle: *Politica*, viii, 4. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press).

¹⁸⁵ *Rhetorica*, I, 5.

¹⁸⁶ *Politica*, vii, 12.

¹⁸⁷ *Ibid.*, ii, 8.

¹⁸⁸ *Ibid.*, iv, 1. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press); Philostratos: *Concerning Gymnastics*, 14; Chryssafis: “Aristotle on Kinesiology,” *Jour. Health and Phys. Educ.*, I, 14 ff.; “Aristotle on Physical Education,” *ibid.*, I, 3 ff.

¹⁸⁹ Aristotle: *De Anima*, I, 4.

of medicine, as has been noted in the discussion of health gymnastics. Yet health is more than freedom from disease; for it is that harmonious physical state which includes size, proportion, beauty, and strength, and makes it possible to use the body generously, without having "to abstain from everything or nearly everything that men do."¹⁹⁰ For this harmony of health, beauty, and strength, the training of the all-round athlete is best, making him swift, strong, and fit "for the exertion of warfare" in his prime.

Xenophon, a contemporary of Plato and a member of the Socratic group, gave some attention to a portrayal of his ideal education. Though his talents as soldier, horseman, huntsman, and writer of descriptive prose seem to have outweighed his critical, philosophical capacity, his work merits attention as an example of another pattern of Athenian reaction at a time when changes were making rapid headway in social and educational affairs. Like Plato, Xenophon exhibits no sympathy with the current tendencies of Athenian democracy. His thought is of a conservative, rather uncritical pattern; he has scarcely been touched, save superficially, by the enlightenment of science and philosophy that shines so often through the pages of Plato and Aristotle. His mind is that of a self-sufficient, religious country squire, ambitious adventurer, boastful soldier, who, in retirement on his estate, devoted himself to writing prolifically and often skillfully, particularly when dealing with subjects of which he was a master. It has been well said that Xenophon is most the philosopher when "he least affects the title."¹⁹¹ What he offers on education is neither original, scientific, nor constructive; nor is it faithful, critical, historical reporting. Xenophon sees that Athenian society is adrift from its ancient moorings. He has not the wit of Aristophanes to hold it up to ridicule; nevertheless, the only way to right it and stabilize it is to revert to thoroughly tested patterns.

Notwithstanding a host of differences, Xenophon is at times in agreement with Plato and Aristotle. He believes, for example, that much evil has arisen from too free an economy at Athens, and he follows a popular intellectual tendency of the day in seeking the remedy—security and stability—in stricter control of many aspects of life. Not only education, but the merchant marine, mines, and other economic agencies ought to be nationalized and strictly controlled, to the end "that every Athenian may receive sufficient maintenance at the public expense."¹⁹² Like the Greeks generally, Xenophon thought constantly in terms of war; hence physical education should be above all concerned with preparation of the soldier.¹⁹³ The Laconizing tendency of the day, from

¹⁹⁰ *Rhetorica*, I, 5. From *The Works of Aristotle*, translated by J. A. Smith and W. D. Ross (The Clarendon Press).

¹⁹¹ Gomperz: *op. cit.*, II, 119; Laërtius: *Xenophon*, 11–3.

¹⁹² Xenophon: *Ways and Means*, III, 14; IV, 33.

¹⁹³ *Memorabilia*, III, 12.

which Plato and Aristotle were not free, though they examined Spartan institutions in a more critical spirit and often rejected them, found in Xenophon a hearty friend. His ideal education is really the ancient Laconian system, credited to Lycurgus. He had seen it; he had lived at the Court of Agesilaus, had served with his forces against Athens and Thebes at Coronea (394 B.C.), and had been given an estate at Scillus by the Spartan leader; and he had sent his sons to be educated under the Spartan system. Xenophon's praise of Spartan discipline appears in the guise of a historical novel, the *Cyropaedia* or the education of Cyrus the Persian Prince, in the *Constitution of the Lacedaemonians*, and in many other minor essays. While the *Cyropaedia* is sometimes drawn upon for glimpses of Persian education and doubtless incorporates some features of Persian training with which he had had an opportunity to become familiar, it is of uncertain value in that connection. Neither is it a faithful portrayal of Spartan education, for Xenophon has taken liberties with fact, excising what does not please him, mixing Spartan and Persian, and utilizing the Persian setting for the portrayal of his ideal.¹⁹⁴ The *Constitution of the Lacedaemonians*, likewise, is not a straightforward account of Spartan institutions, but a panegyric devoted chiefly to those aspects of Lacedaemon which seemed to Xenophon most worthy of admiration, embodying, as he thought, the "utmost limit of wisdom."¹⁹⁵

Xenophon's keenest observations are drawn from horsemanship, country life, warfare and the chase. Impressed by the fact that cattle obey herdsmen, and horses their grooms, while men conspire against those who attempt to govern them, he points to monarchy as the best agency by which men may be brought to obedience and orderly action. Using Cyrus as the model, Xenophon seeks to demonstrate that rule over men is by no means impossible of attainment, provided one goes about it in the right way. The key to Cyrus' success lies in his natural endowments (handsome person, generous nature, ambition, courage, devotion to learning) and in his training "in conformity with the laws of the Persians."¹⁹⁶ This education differs from that of other states. While elsewhere families are allowed to train their own children as they please (Athenian practice is his target) and the states make laws to punish those who commit crimes, the Persians "provide from the beginning, that their citizens shall not be such as to be inclined to any action that is bad and mean."¹⁹⁷ This is the way they do it: They have a "Freeman's Square"¹⁹⁸ near the government buildings, whence all trade is banned so as not to disturb the life of those who

¹⁹⁴ Gomperz: *op. cit.*, II, 130 ff.; Wright: *op. cit.*, p. 322.

¹⁹⁵ *Op. cit.*, I, 2.

¹⁹⁶ Xenophon: *Cyropaedia*, I, 1, 6; 2, 1-2.

¹⁹⁷ *Ibid.*, I, 2, 3.

¹⁹⁸ Cf. Spartan system, *supra*, p. 243, and Aristotle's freeman's agora.—*Politica*, VII, 12.

are being instructed. In it there are four divisions, one for boys, one for youths, another for those of maturity, and a fourth for men beyond military service. Here the youths, save those who are married, spend the night in light armor. All, youth and men, must be there every day. Each division has twelve officers, corresponding to the number of tribes, the men selected being those who are thought best capable of cultivating the highest virtues in the several age groups.

Under such schoolmasters, "the boys attending the public schools, pass their time in learning justice. . . ." ¹⁹⁹ Letters and music, in which Xenophon had himself been trained, seem to be of no moment in his ideal education. The day is spent chiefly in deciding cases, disputes, and accusations among the youth, and fixing punishments, so that they may know what is right and what wrong. The boys learn self-control by seeing their elders practice it; obedience by observing that of their own officers to those who are superior to them; temperate living by not eating with mothers, but with teachers, and having little to eat—bread, cress, and river water forming their diet. With this training in temperance, obedience, and justice is combined shooting and hurling the spear, until they are sixteen or seventeen, at which time they are enrolled among the young men.

After being promoted, these youths spend the nights doing guard duty for ten years; during the day they are at the command of the authorities for any service to the state. Several times a month half of this youthful garrison, armed with bows, arrows, sabre, light shield, and two spears, is taken hunting by the king. The expense of these expeditions is borne by the government, since hunting is the best training for war, accustoming the men to early rising, fatiguing journeys, endurance of hunger, cold, and heat, courageous facing of hazards, and the use of weapons. Those left at home, for the time being, perform service for the government, and devote themselves to practicing those exercises they have begun as boys and engaging in competitive contests. Prizes are given to the victors; but honors are bestowed also on the officers in charge of them and on those who previously taught them as boys. ²⁰⁰

When ten years have thus passed, youths are promoted to the ranks of mature men, where they serve for twenty-five years. These perform services for the government, some acting as magistrates at home; and when necessary, they take the field, armed with corselet, a round shield, and sabre. At the end of this service, being a little over fifty years of age, they become "elders," elect all officers, and administer justice. ²⁰¹

Such is the "Persian" system, described by Xenophon. Into it may enter the sons of all the Persians who can afford to have them educated. Hence it is

¹⁹⁹ Xenophon: *Cyropaedia*, 1, 2, 6.

²⁰⁰ *Ibid.*, 1, 2, 10-2.

²⁰¹ *Ibid.*, 1, 2, 13-4.

a system for those who have wealth, presumably only for the nobility; it is the only path by which one may rise to positions of trust and distinction. Commoners, it seems, are trained as common soldiers, targeteers, bowmen, slingers.²⁰² Pheraulas speaks of the training of commoners "to walk and run under heavy burdens"—a training of endurance, hunger, and thirst so severe that the weight of arms borne later is like the "lightness of wings. . . ." ²⁰³

Xenophon's ideal prince, of course, had a broader experience than that provided by these schools of justice, for he went to visit the court of his grandfather, Astyages, ruler of the Medes. There he saw manners and morals less primitive, less severe and exemplary, he thought, than those he had known at home. After a few years, during which he learned to ride and helped his grandfather win a battle with the Assyrians, he was recalled to Persia by his father to complete the regular curriculum of Persian boys. In this course he excelled all others; when he had completed a year with the boys and ten more with the young men, he was chosen to lead an army of forty thousand into Media to assist his uncle, Cyaxares. Having addressed his chosen men on the excellence of their military training and charged them to employ it now for the end for which it was designed,²⁰⁴ he personally consulted the gods and omens; for, it seems, his father had also trained him in soothsaying, so that he could not be imposed on by those professing the art.

The rest of Cyrus' education is that of life itself, the life of a leader of soldiers who practices on the field the skills and virtues acquired in training. In lulls before and after battle, he prepares his men and keeps them fit in mind and body by drill, competitive sports, hunting expeditions, and sham battles.²⁰⁵ The rôle of physical exercise for the soldier is thus described: "Cyrus also took care that they should never go in to their dinner or supper without previous exercise; for he either led them out to hunt, and gave them exercise in that way, or contrived such sports for them as would make them exert themselves; or, if he happened to want anything done, he so managed it, that they should not return without hard exercise; for this he judged to be of service, in order to make them eat with pleasure, and to render them healthy and able to undergo labour; and labour he judged to be of use in making them more gentle one towards another, because even horses, that labour jointly together, stand likewise more contentedly together. And certainly with regard to facing the enemy, those who are conscious of having duly exercised themselves, are inspired with more boldness." ²⁰⁶

²⁰² *Ibid.*, I, 5, 5; II, 1, 16.

²⁰³ *Ibid.*, II, 3, 14.

²⁰⁴ *Ibid.*, I, 5, 7-14.

²⁰⁵ *Ibid.*, II, 1, 20-2, 29; 3, 17-21.

²⁰⁶ *Ibid.*, II, 1, 29. From *Xenophon's Cyropaedia, or Institution of Cyrus, and The Hellenics*. Trans. by J. S. Watson and H. Dale. George Bell & Sons, London, 1891.

Xenophon's references to hunting are numerous. He contrasts the good it produces in men with the evil that comes from the sophists—an inferior sort of huntsmen who hunt money and young men and make them worthless.²⁰⁷ The



RABBIT HUNTERS

(From Paul Monroe's slide collection)

Cynegeticus, a treatise on hunting, whose authorship has been disputed, but was credited by Plutarch, Arrian, and other ancients to Xenophon,²⁰⁸ ascribes the origin of the sport to the gods who gave it to men; and all men, from mythical followers of the chase to Xenophon's day, who received this good gift and made use of it, turned out to be the best men, most useful to their country.²⁰⁹ The gift of prowess in hunting seems to be the chief determiner of excellence. Even a few women in mythical times, such as Atalanta and Procris, were good, for they derived this excellent boon from Artemis.²¹⁰ Therefore Xenophon charges the young not to despise hunting. It is "the first pursuit" a young man just out of boyhood should take up.²¹¹ Ten books of this treatise are given over to a practical, masterly, detailed description of the nets, weapons, and dogs that are necessary and best for hunting hare, deer, fawn, and wild boar.

Xenophon's philosophy of hunting is expounded at some length. Its chief advantages are that it gives health to the body, sharpens vision and hearing, keeps men young, and is the best military training. Hunters will not be wearied

²⁰⁷ *Ibid.*, II, 4, 19-21; VIII, 1, 34; Xenophon: *On Hunting*, XIII, 1-2, 9.

²⁰⁸ Marchant: *Xenophon Scripta Minora*, p. xliii; Wright: *op. cit.*, p. 323.

²⁰⁹ Xenophon: *On Hunting*, I, 1-5.

²¹⁰ *Ibid.*, XIII, 18.

²¹¹ *Ibid.*, II, 1.

by marches over rough terrain, since they have been inured to the labor of carrying weapons on long tramps in the chase. They can sleep on hard beds, take orders and fulfill commands, and they will be forward in attacking enemies, for all these they have done in hunting. Endurance, sureness of foot, ingenuity in tight situations, and confidence will be theirs; a small band of huntsmen-fighters may even be able on occasion to save the day already lost by larger forces. For soundness of body and of mind are the first steps toward success. Because they knew what hunting would give to their young men, Xenophon says, the ancients would neither prohibit the chase even over fields of growing grain, nor allow night-hunting for some distance around the city which would seriously limit the amount of game. In short, they recognized that sobriety and uprightness were more to be derived from hunting than from any other pursuit to which youth are inclined. If the objection is raised that by giving themselves to hunting, men will be kept from other legitimate pursuits, Xenophon demurs: the best men in private, domestic affairs are those who first fit themselves for service to their city; and if hunting gives the best training for public service, providing good generals and good soldiers, it is also the best for private life.²¹²

Xenophon's preference for the discipline of the past and the virtues of the gentleman farmer, huntsman, and horseman, which he sets over against the intellectual learning offered by teachers of the new day, is also given full rein in his treatises *On the Art of Horsemanship*, *The Cavalry Commander*, and the *Oeconomicus*. The *Oeconomicus*, treating of the management of an estate, portrays Xenophon's ideal home of the country squire, his virtues and those of his wife. Here again one meets the views found in Aristotle and elsewhere, derived from the ancient, aristocratic tradition of the Eupatrids of early Attica, that agriculture is the noblest occupation for freemen, fit even for a gentleman, while the crafts are not. It is pleasant and profitable for those who understand it; it teaches good nature and good manners. It makes men more valorous and produces the best citizens.²¹³ It is significant that the name Ischomachos, which Xenophon gives to his gentleman farmer, means "great fighter." Although praise is showered on the nobility of agriculture, Ischomachus seems to get his exercise from going to and from the town, overseeing and directing the work of the farm, making suggestions for improvement where he can, while the work is done by paid men or servants. For recreation, after this business, he mounts his horse and goes through exercises imitating as nearly as possible those "needed in warfare," avoiding "neither slope nor steep incline, ditch nor watercourse," but taking care not to lame the horse. And Xenophon adds, with

²¹² *Ibid.*, XII, 1-19.

²¹³ Xenophon: *Oeconomicus*, VI, 10; XV-XVI.

his usual emphasis on the virtue of meager fare, that luncheon is "just enough to get through the day neither empty-bellied nor too full."²¹⁴ For the wife of this pattern of agricultural, military, and gastronomic perfection, who is taught by her husband, there is nothing in life but the inside of a house with her man; she prays to the gods that she may learn from her teacher, make herself better than a slave, know what pertains to her proper sphere, be obedient and discreet,²¹⁵ teach and superintend the servants, and direct the making of clothes and the preparation of food. Xenophon reads sermons in pans; with truly religious devotion he bows before the troops of pots which, like choric dancers, take their proper place around the altar.²¹⁶ Small wonder that he thinks the little lady will have no time for trying to make herself taller or rosier, and will have no need for physical culture other than what she gets from making her rounds of inspection, mixing dough, and folding clothes.²¹⁷

In the *Art of Horsemanship*, which, like some of his other works, may have been written as a guide for his sons,²¹⁸ Xenophon deals with the qualities to look for in a horse, when to put him out to be broken, how to feed, clean, saddle, bridle, and mount him, and the best kind of ground for the stable yard. Moreover, he discusses the best exercises to perform on horseback, and how the horseman is to be armed—for the treatise is based on the assumption that the horse is to be bought and trained for war.

The *Cavalry Commander*,²¹⁹ written when war was anticipated between Athens and Thebes (c. 365 B.C.), treats of the religious duties of the leader of cavalry, for none can succeed unless he "work with God." The qualities and training of the cavalry commander, how he should drill the young men under him,²²⁰ the feeding and training of horses, the standards that ought to obtain in those approved for service by the Council, and the public exhibitions of the cavalry on festal occasions for the purpose of pleasing and impressing the spectators, are set forth in considerable detail. If any leader wonders how he may best secure the loyalty of his men, Xenophon gives good advice, saying that one must show "himself more capable than they of doing whatever he requires of them."²²¹ Those who may feel that this is a difficult and endless training are reminded that it is less severe than that undergone by those who wish victory in a gymnastic contest; and the victories to which it leads are eminently "more glorious" and profitable than victory in a boxing match, since the gods

²¹⁴ *Ibid.*, XI, 17-8; *Memorabilia*, III, 14.

²¹⁵ *Oeconomicus*, VII, 22 et seq.; X, 1.

²¹⁶ *Ibid.*, VIII, 20.

²¹⁷ *Ibid.*, X, 2, 10-1.

²¹⁸ Marchant: *op. cit.*, p. ix.

²¹⁹ *Op. cit.*, IX, 8-9.

²²⁰ *Ibid.*, I, 17-20.

²²¹ *Ibid.*, VI, 4-6.

crown such triumphs with the happiness of states. Hence Xenophon does not think that "any art should be more assiduously cultivated" than those pertaining to war. One must either work for a living or get it from those who do. Xenophon never hesitates to cast his vote for those who by "a long apprenticeship" enable themselves "to live at the expense of much stronger folk."²²²

Since the goal of so much educational thought from Socrates to Aristotle was fitness for war, the question naturally arises whether the views of the Socratic school had any effect on military training at Athens. As definite propaganda for a better cavalry, it has been suggested that Xenophon's treatise may have been influential; in any case, Athenian cavalry gave a better account of itself at Mantinea a few years later.²²³ Moreover, since systematic military training of youth from eighteen to twenty had probably not yet been generally provided for by the government in Plato's day, but was being maintained at public cost by 334 B.C. (only shortly after his death), some powerful influences must have been at work in the meantime to effect the change. Among the intellectual forces that may have been effective, those of the Socratic group were conspicuous, and the present view of the most competent authorities is that the Ephebic College was the offspring of the Socratic school, particularly of Plato's *Laws*.²²⁴

²²² *Ibid.*, viii, 7-8. Xenophon: *Scripta Minora*, trans. by E. C. Marchant. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

²²³ Marchant: *op. cit.*, p. xxix.

²²⁴ *Supra*, p. 317; Wilamowitz-Moellendorff: *Aristoteles und Athen*, i, 194; Forbes: *Greek Physical Education*, pp. 104 f.

RETROSPECT

Life and culture varied much in Greek states. On the northern frontier, Thessaly, a tightly landlocked state, was noted in peace for the produce of her fertile farms, in war for famous cavalry, rather than for mental and physical culture or for victories in the games. Thebes was renowned for wrestling, which was said to have brought her victory in battle, as she was for the odes of her poetic son, but the fame of Pindar is doubtless more permanent than that of the wrestler or even that of the warrior Epaminondas. Sparta, it has been observed, became a byword for military strength and unchanging institutions. Athens' greatest achievement lay in the many-sidedness, breadth, and depth of her culture, which, in many respects unmatched by that of predecessors and contemporaries, was to provide a powerful intellectual, aesthetic, and moral stimulus in centuries to come.

Educational development at Athens, considered socially and individually, mentally and physically, was a most important event in Greek history—indeed, in world history. Something like an Athenian type of education did, in fact, hold true in other Hellenic states, excepting notably Crete and Sparta,¹ there being generally some provision for music, letters, and gymnastic. But Athens alone, preserving a marked degree of balance between the intellectual and physical, was to become the School of Hellas, the School of Rome, and, in our own era, the University of Mankind. After the subsidence of the Athenian cult of physical and mental excellence, during a thousand years of ascetic, religious disapproval, it bloomed again like a hardy millennial in western Europe when humanists discovered that for which they were groping in Athenian thought and practice, laboriously drawn up out of a long-neglected past and exhibited by Erasmus, Ascham, Elyot, and a host of others. The conception of what properly belonged to the culture of mind and of body was, for centuries thereafter, little more than a variation upon the Athenian theme. And that ideal

¹ Freeman: *Schools of Hellas*, pp. 76 f.

lives to-day, though certain significant modifications have been made in its implications, owing to an extensive development of science and the advent of social and political conditions that the Greeks never knew or fancied.

Athenian ideals and attainments in physical culture form an impressive chapter of the past, a past which is, for all its antiquity, a living presence. These were significant not only in themselves, but for their bearing on the aesthetic achievements of Athens. The excellence of her art is said to be traceable to a long-continued, ubiquitous association with the living model. This, though important, was not the sole determiner. Though Spartans, according to tradition, first stripped the body for physical contests, the innovation wrought no aesthetic magic. Other factors at Athens—a difference in genius, in temper, a larger enjoyment of life, and a broader, more flexible ideal, flourishing under the greater freedom of cultural and political institutions—combined to school the masters and their men who were to give concrete embodiment to the Greek ideal of beauty. Some who have studied the art of the great temple in honor of Zeus at Olympia, where the greatest of all national festivals was held, have been at pains to explain why artistic execution at the most sacred shrine of the Greeks not only did not excel but did not equal that of the structures and adornments which commemorate in the Parthenon the greatest festival of Athens. Gardner says of the Olympian remains: "Indeed, an ordinary student of art will find, in an hour's study of these figures, faults which in our day an inferior sculptor would not commit. And, what is still worse to a modern eye, the figures are not only faulty, but often displeasing, and the heads have a heaviness which sometimes seems to amount to brutality, and are repellent, if not absolutely repulsive. . . . In fact, the composition as well as the execution is of provincial character. . . . The clearest result . . . is the perception how far Phidias was in advance of his predecessors in the construction of groups and in all qualities of design, and how superior were the Athenian stonecutters in knowledge of their craft to those of other parts of Greece."²

But, though her intellectual and artistic attainments made all the world her debtor, Athens suffered a political fate which differed little in the last analysis from that of her sister states. Neither physical fitness nor intellectual, aesthetic, and political qualities, cultivated in palaestras, gymnasia, and in the school of life, which Pericles so much extolled, were competent to preserve her. If her appearance on the horizon of political greatness was meteoric, her decline was also swift. Unification within her borders was accomplished more successfully than in other states. Economic, social, and political readjustments during a century and a half increased her integrity and promised greater stability. After Plataea it seemed that she was destined to take the next step, bringing the

² Gardner: *New Chapters in Greek History*, pp. 280 f.

Greek states together in a national union. Her maritime position invited to empire; and her leadership in the war not only impressed others but gave Athens herself a conscious pride, confidence, and ambition for achievement transcending anything she had known before. Pindar, a Theban, might with justice sing the praises of a—

Mighty city, her brow wreathed with violets, glorious Athens,
rampart of Greece, city illustrious, truly divine.

But "great evils" were in store for Athens and the rest of Greece. For though she had unified her neighbors and had then turned the Confederacy of Delos into a limited Athenian Empire (but not without arousing enmity and suspicion),³ she was not able to bring Sparta and Corinth and their adherents into unity with her, nor could she subject their interests to her own. From 460 to 404 B.C., save for an interval of thirteen years, Athens sought by force and by cunning to maintain her empire. Pericles attempted to bring about an association of the Greek states under Attic leadership about 448 B.C., which, had it succeeded, would have translated the temporary, fitful coöperation of the years of common danger in the Great War with Persia into a settled, permanent arrangement. The Congress of the Greeks was to decide about restoring the sacred precincts violated by the Persians, pay united homage to the gods, and fix upon ways and means for security on the sea.⁴ All Greek cities, so the persuasive Delphic oracle ran, were to send their first fruits to Eleusis, and Athens was to make sacrifices to Demeter for all the Greeks. But Periclean magic did not work. The strength, pride, jealousy, and independence of Greek cities made national union impossible, as it had done before and would continue to do. It was in some respects, indeed, "a sublime project" and "truly liberal," but its sublimity was limited by a selfishness which other Greek cities well knew and feared.⁵ Those who had seen how Athens used her headship of the Delian League would hesitate to join an imperial league which was to preserve the status quo. From this solemn failure Athens went on within a few years to wage a great and, it seems, unnecessary war—hoping to maintain her privileged, profitable position by force against the will of Corinth, Aegina, Sparta, and other cities—from which she would emerge in a state of ruin. Truly, as the departing Spartan ambassador said that day was ". . . to the Hellenes the beginning of great sorrows."⁶

Economic rivalry was fundamentally involved in this failure of integration,

³ Plutarch: *Pericles*, 12.

⁴ *Ibid.*, 17.

⁵ Jardé: *The Formation of the Greek People*, pp. 283, 287 f.; Bury: *A History of Greece*, pp. 366 f.; Laistner: *A Survey of Ancient History*, pp. 250 f.

⁶ *Thucydides*, 11, 12.

though other sources supplied fuel to the conflagration that swept the Greek cities. For, as Athens gained supremacy after the Persian Wars, she pinched Aegina and Megara, and her lengthening shadow fell athwart the path of interest of neighboring Corinth, likewise favorably situated for commercial expansion overseas. At the beginning of the Peloponnesian War, Corinth was the leading spirit in uniting other malcontents—Aegina, Megara, Sparta—against her Athenian competitor. Jardé concludes, after a careful survey, that Athens could have avoided war “if she had not made Corinth uneasy by her policy of expansion.”⁷ The prophecy credited to Solon, “Never by doom of Zeus or will of the blessed gods shall our city be destroyed . . . but by the citizens themselves . . . devoting themselves to wealth, . . .” was to have a belated and perhaps unexpected manner of fulfillment. Intelligence had proved unequal to the task of discriminating between true and apparent interest, between greater interest and a lesser one. So passion reigned in place of reason and made its intoxicating appeal to the “law of nature.” For nearly thirty years the pestles of war pulverized the cities of Greece. Aristophanes portrays the enthusiasm with which the commoners anticipate release from war’s heavy burdens, planning a holiday with boxing, wrestling, pancration, races, tricks, and games of every kind.⁸ But the Peace of Nicias (421 B.C.), which was to last for fifty years, lasted scarcely two.

When at length the Peloponnesian War ended, Athens and other cities knew impoverishment and destruction from which they never recovered. The population of Attica never regained the level (about 315,000) it is believed to have reached about 431 B.C. Depopulation became acute in the late third century and continued to the time of Augustus.⁹ Polybius declared, in the second century, that towns were deserted, the country barren. Strabo said, a century later, that Thebes was scarcely a village even, and most cities of Boeotia were in a similar condition. Messenia was largely deserted; Laconia, too, had a small population and only about thirty towns, in sharp contrast with earlier centuries.¹⁰ Wars and general uncertainty were neither conducive to population increase nor to prosperity. There were times of some prosperity, to be sure, and certain personal fortunes might flourish, but Athens, though she was the cultural center of the world, was sometimes said to be a “‘hungry’ city, living on good air and hopes.”¹¹

Notwithstanding remarkable achievements, there were also notable failures on the part of the Greeks. They could, on occasion, put to death or drive out

⁷ *Op. cit.*, p. 311.

⁸ *The Peace*, 894-904.

⁹ Rostovtzeff: *Social and Economic History of the Hellenistic World*, I, 95 f.; II, 1135 f.; III, 1329, 1604 f.

¹⁰ *The Geography of Strabo*, VIII, 4, 11; IX, 2, 5.

¹¹ Rostovtzeff: *op. cit.*, II, 628 ff.; III, 1354.

their wisest and best, as the fate of Socrates and the banishment of Aristides show.¹² Too often the worse triumphed over the better. Deep-rooted, fatalistic distrust and fear of too great superiority or success are revealed in the old saying: "Let no man fly to Olympus, nor try to marry Aphrodite."

The greatest of all failures, shared by other Greek cities as well as Athens, was the inability to find the next step in political integration, which would have transcended the limits of the city-state. Unification of Attica under Athens was effected, and a world of commerce, colonies, and wealth of varied character lay at her feet. Attic Greek spread and replaced Ionic as a common language.¹³ A marked degree of cultural unity began to appear in Greek cities. Isocrates declared that "Hellenes" meant "no longer a race but an intelligence," and indicated those possessed of a common culture rather than a "common blood."¹⁴ In centuries to come, this Hellenic culture would leave its impress in distant countries on schools, gymnasia, clubs, and other aspects and agencies of social life.¹⁵ But Athens never gained a clear vision of national unity, save on a selfish, imperialistic pattern. Nor was the intellectual groundwork laid for such a union. Plato and Aristotle sought indeed a more perfect integrity and stability, based on a rational plan; but they envisaged only a better small city, and even their ideal city-states were divided within themselves. The Greek world and subsequent ages as well suffered heavily for the failure of Athenian leadership to heed sufficiently the sinister warning:

Cruel are the wars of brethren.

Euripides might have faith in the power of words to—

. . . do what e'er is done by conquering swords,

but Athens, like other Greek cities, continued to put her trust in hoplites and horses. It has been remarked how much the world gained when the Athenians banished a general and made a historian. More such translations might have profited both Athens and the rest of the world. The stress on the military aspects of education, proposed in the ideal commonwealths of Plato and Aristotle, not to mention Xenophon, in whom one scarcely expects a vaulting intelligence, shows that the greatest minds had by no means escaped from the realm where reigns the "law of nature" and the strong triumph over the weak.

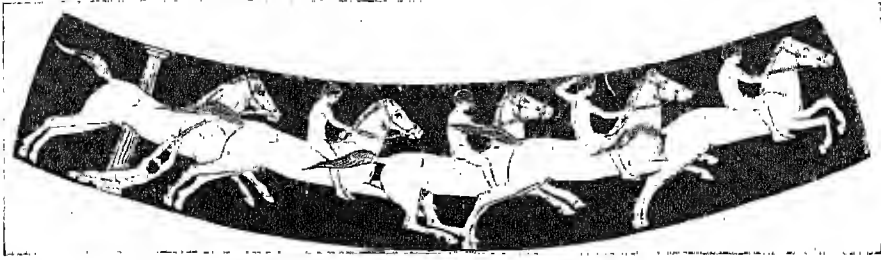
The cynic indeed dreamed of being a citizen of the world and living a life of reason, but return to nature, denial of one's own city, renunciation of pleas-

¹² Plutarch: *Aristides*, 7.

¹³ Jardé: *op. cit.*, pp. 233 f.; Laistner: *op. cit.*, pp. 357 f.

¹⁴ *Panegyricus*, 50.

¹⁵ *Supra*, pp. 326 f., 329.



THE HORSE RACE vase painting, 5th century B.C.

Museum of Ancient Minor Arts, Munich (Courtesy, The Metropolitan Museum of Art, New York)

ure, a beggar's wallet and a beggar's bed were, to say the least, hard conditions, save, perhaps, for the poor, the foreigner, the outcast, and the slave. Few would choose that road voluntarily. Zeno, founder of Stoicism, conceived of an integrated world community, having a common life and government.¹⁶ But to most of the Hellenistic world some sort of speedy deliverance through faith would make a stronger appeal than self-denial or the long, hard path offered by systematic, rational reconstruction. Such a faith, assuaging the pains of reality, a religion was to offer, when Athens, Sparta, Macedon, and Rome had failed to provide peace, plenty, security and, in general, a normal functioning for the whole man.

Democritus is said to have been "concerned at heart," for, with the greatest pains, his fund of insight into nature's kingdom was still so small. If, in his realm of study, there were grounds for the dictum, "Truth dwelleth in the deep," and the observation that "reality is shut out from human ken," how much more might Athenian statesmen and educational leaders have recognized their inability to give adequate account of the vast area of individual and collective conduct? Some have held that progress of the critical philosophy went too far, and had much to do with, or was even chiefly responsible for, the disintegration of Athenian life. A clearer understanding of the nature of the social life cycle and a better knowledge of the rôle that intelligence, or lack of it, might play in social integration and disintegration would enable us to see that the critical spirit was neither too profoundly nor too generally encouraged and developed. The intellectual insights in the politico-educational domain, even had they been applied, were too meager, not too great; and even the greatest were not always wise enough, as were Democritus and Socrates, to know that they did not know. Falling short of reality, they dogmatized about the nature of man and his society, taking shapes and shadows for truth itself. The unfun-

¹⁶ Plutarch: *On the Fortune of Alexander*, 6.

472 [EMPIRES OF THE SEA]

ished task of Athenian intellectuals is in no small degree still before us; for we have neither learned how to educate free men nor how to build them a city, a state, a world, in which their whole being may know the "good" life, and the fruits of mind and body be husbanded for themselves and for their posterity.

4

EMPIRE OF THE EAST AND WEST

*S*ome races wax, others wane; in brief space the tribes of men change, and,
like relays of runners, pass from hand to hand the torch of life. LUCRETIVS

PRE-ROMAN FOUNDATIONS

THE SEAT OF EMPIRE

Of the waxing and waning of Rome's culture there are many stories. Romans themselves saw various types of history come and go: the thin, dry chronicle of Quintus Fabius Pietor; the rhetorical, uncritical *Annales*, composed by Gnaeus Gellius; the critical history of Polybius, preoccupied with proportion, continuity, cause, and effect; the monument that Livy reared, to tell the grandeur of Rome's past; and the history of Orosius, written in the dolorous days of a dying Empire, to prove pagan errors and Christian rectitude.

Livy casts doubt upon Rome's early history: her founding is an obscure story because of "great antiquity," rarity of early writing, and the destruction of records. The early traditions, "suitable rather to the fictions of poetry than to the genuine records of history," he neither affirms nor denies. He does relate them, however; Romans, if any people, should be permitted to blend things human and divine; others may accept the tale of Rome's descent from Mars, just as they submit to her sovereignty. Of a later time (322 B.C.) Livy says frankly, as does Cicero, it is impossible to know the false from true, since families have corrupted records to make sure their fame.¹ Despite this uncertainty, traditional history, as received from Livy "who never lieth," Diodorus, Dio Cassius, and others, was seldom questioned before the seventeenth century. Since then, the tendency to doubt, encouraged by Beaufort, Niebuhr, Mommsen, and others, has reduced the old tradition to "ruins."² Under such a cloud of doubt, one would be inclined to follow Dante's injunction, "Abandon every hope, ye who enter," were it not that amid the "ruins" of an old tradition painstaking hands have reared a more substantial structure.

¹ Livy, I, preface; VI, 1; VIII, 40; Cicero: *Brutus*, 16.

² Homo: *Primitive Italy and the Beginnings of Roman Imperialism*, p. 2; Duff: *A Literary History of Rome*, p. 645.

That Italy became the seat of empire, and Rome first made East and West the limits of her sway³ depended in no slight degree on geographical position. Strabo observed her "insular" location, "securely guarded" by the sea; her northern boundary, "fortified by almost impassable mountains"; her harbors "few," but "capacious and admirably situated," offering opportunity for operations, defensive and offensive, and the "reception of abundant merchandise."⁴ Just as Italy occupied the strategic center of the Mediterranean, Rome, athwart the Tiber, a scant score of miles inland, had ready access to the best port, Ostia, and commanded the natural highway to the heart of Italy. Livy noted especially this central location, "singularly adapted by nature for the increase of a city"; and the "commodious river," bringing inland products to the sea and commerce from abroad, yet unpropitious to attack by foreign fleets.⁵

Stretching with Sicily across the center of the landlocked sea, Italy enjoyed a varied climate. The Apennines gave rise to numerous lakes and streams; foothills and plains invited tillage of the soil, promising food for man and beast. Melting Alpine snows fed steadier streams and made the Po valley the richest of all Italy. Italians seemed destined by geography and climate to be herdsmen and husbandmen, and such they were till lure of conquest beckoned beyond the sea. Cato, Varro, Columella, Strabo, and Pliny portray a many-sided culture of field and garden crops and the breeding of beasts and fowls. Wheat, grapes, olives—major sources of agricultural wealth—were supplemented by flax, hemp, alfalfa, vetch, farrago of barley, oats, fenugreek, bitter vetch, chickling vetch, clover, lupines, beans, lentils, chick-peas, cress, rue, asparagus, onions, scallions, turnips, garlic, leeks, allheal, elecampane, cucumbers, gourds, caper, beets, parsley, skirret, radish, lettuce, dill, mustard, cabbage, parsnips, artichokes, sorghum, figs, quinces, jujubes, apples, peaches, plums, pears, apricots, sorb apples, and cherries. Walnuts, chestnuts, almonds, and pine-cone seeds were also used for food. Cows, sheep, goats, and pigs provided food and clothing. Horses were bred for the army, the road, and the circus. Donkeys, mules, and oxen were the usual draft animals on the farm. The culture of bees and birds of many kinds was extensively developed to supply the table.⁶ Fish of many kinds, salt, sponges, and shellfish—source of purple dyes—were taken from the encircling sea.

Many of Italy's products were introduced from abroad when Rome became mistress of the Mediterranean. Sorghum came from India; peaches from Persia; and cherries from Pontus. Olives were known to Columella in ten varieties. Pliny judged Italy first in olive culture, the Licinian being best. Though citrus

³ Dionysius of Halicarnassus, *The Roman Antiquities* of, 1, 3.

⁴ *The Geography of Strabo*, vi, 4, 1.

⁵ Bk. v, 54.

⁶ Frank: *An Economic Survey of Ancient Rome*, v, 138-68.

fruit was yet unknown, Columella⁷ says that Italy learned to raise the fruits of almost all the world.

In respect to subterranean wealth, Italy's advantages were less marked, but the island of Elba had iron ore which was turned into iron objects of all sorts. Strabo says that ore was brought to the mainland for processing. Copper came from Campania and elsewhere.⁸ Extensive manufacture of bronze articles had developed by the last century of the pagan era.

PRIMITIVE AND ETRUSCAN CULTURES

The people who mastered Italy were a mixture of diverse stocks; their culture, the result of a fusion which had been going on for several millennia. Palcolithic man, hunter and fisher, lived almost wholly in caves, perhaps about 10,000 B.C. He flaked stone for implements, and used horn, bone, and possibly wood and leather. His food, clothing, and ornaments came from wild animals; agriculture, domestic animals, and even crude pottery were to him unknown. Neolithic culture in Italy dawned slowly, bringing polished stone tools and weapons, a sewing needle, crude dark pottery, and a few domestic animals. Round or oval huts, with a central basin to catch rain, became common, though cave-dwelling continued.⁹ The men who made this culture have been called "Ligurians," since they survived in that area to historic times. These "Mediterraneans," precursors of the Indo-Europeans, were dark and short of stature. They probably knew no social unit beyond the family. They inhumed their dead. At the end of the fourth millennium B.C., they were still hunters and herders, probably unacquainted with agriculture, without metal implements, ignorant of writing and the use of sailing ships for commerce.¹⁰

Copper gradually supplemented stone implements in the third millennium. Hard upon it came the age of bronze. Indo-European infiltrations, probably from the Danube area in the third and second millennia, built "pile-dwellings" on northern lake margins and the "Terremare" settlements in the Adige and Po valleys. By the end of the second millennium their culture was spread over most of Italy. These invaders practiced cremation, used bronze and the potter's wheel, tended crops, built compact villages, and apparently assimilated the conquered natives, judging from the mixture of Aryan and non-Aryan linguistic elements, diverse marriage rites, and mortuary customs.¹¹

The Villanovan "iron-age" culture, result either of another infiltration or

⁷ *Of Husbandry*, III, 8; V, 8; Pliny: *Natural History*, xv, 3; Gibbon: *The Decline and Fall of the Roman Empire*, I, 103.

⁸ Strabo, v, 2, 6; Diodorus of Sicily, v, 13; Pliny: *Natural History*, xxxiv, 2.

⁹ Peet: *The Stone and Bronze Ages in Italy and Sicily*, pp. 37 ff., 88 ff.

¹⁰ Homo: *op. cit.*, pp. 25 ff., 68; Peet: *op. cit.*, p. 109; Frank: *Roman Imperialism*, p. 1;

Sandys: *Companion to Latin Studies*, p. 27.

¹¹ Peet: *op. cit.*, pp. 283, 320 ff., 362, 510; Sandys: *op. cit.*, p. 31.

fusion of "Terremare" and "Ligurian" peoples, arose probably about the eleventh or tenth century, and continued to the close of the sixth, giving way before the Etruscans in the late ninth. Differing little from their precursors, save in the extensive use of iron and a less concentrated village community, the Villanovans left their impress on the shores of lakes in Tuscany, in the Alban hills, and in "Rome itself."¹²

Etruscan origins were disputed in ancient times. Herodotus told of an exodus from Lydia, under Tyrrhenus, across the sea to the Umbrians. Dionysius discounted the Herodotean account, however, because of marked differences between Etruscan and Lydian tongues, customs, and institutions, and held to an Italic origin.¹³ Neither the Asiatic nor the Italic theory has been proved. The dispute fluctuates between these poles to this day. Niebuhr opposed the Asiatic thesis and suggested a Danubian origin, to which Mommsen also subscribed.¹⁴ This view, further developed by Helbig, regarded Etruscan as an outgrowth of the earlier Terremare and Villanovan cultures. Recently the Asiatic theory has swung into favor, partly on the ground that Etruscan luxury, architecture, tombs, metallurgic skill, use of matronymics, divination, physiognomy, dress, and other traits point to Eastern kinship rather than to a slow evolution from Italian and Danubian sources. While final solution must wait upon decipherment of Etruscan inscriptions or additional archeological evidence, it seems probable that Etruscan culture was a hybrid, produced by the mingling of Terremare and Villanovan elements with infiltrations from Asia Minor or other Eastern centers.¹⁵

The time of these Eastern infiltrations has been assigned variously from the eleventh century to the ninth. After some two centuries or more, the Etruscans invaded Latium in the seventh century; their kings—Tarquin the Elder, Servius Tullius, Tarquin the Proud—made Rome their seat of Empire. From Latium they pressed into Campania, founded Capua, Nola, and other smaller cities. In the late sixth century Etruscan power expanded northward into the Po valley and along the Adriatic coast, north and south of the Po delta.¹⁶

Dionysius says that Latins, Umbrians, and others in Italy were once all called Etruscans by the Greeks, and Rome an Etruscan city. Their power, famed from the Alps to the Sicilian straits, reached its height by the end of the sixth

¹² Randall-MacIver: *Villanovans and Early Etruscans*, pp. 3, 39, 91.

¹³ Dionysius, I, 30; *The History of Herodotus*, I, 94.

¹⁴ Niebuhr: *Römische Geschichte*, pp. 62 ff.; Weege: *Etruskische Malerei*, pp. 65 ff.; Mommsen: *History of Rome*, I, 150 ff.; *The Cambridge Ancient History*, IV, chap. 12; VII, chap. 12.

¹⁵ Randall-MacIver: *Etruscans*, pp. 7 f., 105; cf. Cary: *History of Rome*, p. 22; Fell: *Etruria and Rome*, pp. 7 f., 18.

¹⁶ Randall-MacIver: *Villanovans and Early Etruscans*, p. 3; *Etruscans*, pp. 13 f., 18 ff.; *Homo: op. cit.*, pp. 101, 105 f., 111, 115; Fell: *op. cit.*, p. 22.

century, and crumbled rapidly in the fifth.¹⁷ Etruscan hegemony at Rome was the first step toward Italian unity. Based primarily on superior armed force and aggressive leadership, it was probably to some extent mixed with peaceful penetration. The conquerors established themselves a ruling class, and used the conquered to labor on the land, delve in mines, row galleys, build fortresses, and to serve in war. Failing to assimilate the vanquished, they prepared the way for revolt against their sway.¹⁸

Progressive weakening of Etruscan power—reflected in the revolt of Latium at the end of the sixth century, the loss of Campania, the Po region and, finally, Southern Etruria—was probably due to a decline of the military spirit that had inspired expansion, the increase of luxury and pleasure, and struggles between the ruling class and subjugated peoples. Of crucial importance was the failure to develop a larger political unity which might call individual cities to each other's defense. The federation of twelve cities had primarily a religious significance. United action, or even assistance by a powerful neighbor, Caere, might have saved Veii (396 B.C.). Failure to learn union was suicidal; politically incompetent to take the next step, Etruria bowed to Roman rule.¹⁹

ETRUSCAN INFLUENCE ON ROMAN CULTURE

In many ways Etruria's culture influenced Roman development. The superior Etruscan military pattern seems to have served the Romans as a model.²⁰ City-building was given a powerful impetus. Latium, occupied by nomadic, pastoral folk, who knew nothing but tribal villages at the Etruscan invasion, had learned consolidation into cities by the end of Etruscan sway. Even the scattered settlements on the Seven Hills may have been first welded into a city by Etruscan leadership. In any case, Rome's hegemony had been established under Tarquin the Proud before he was driven out by the Latin revolt.²¹ Inside the rising cities, a busy life went on. Rome became a walled city; the Cloaca Maxima was made the outlet for a system of drainage; the port at Ostia, Rome's exit to the sea, was improved. Stone replaced wood in building and fortification. Mines were exploited; metallurgy was highly developed. Etruscans wrought both bronze and iron more extensively and skillfully than had the

¹⁷ Dionysius, I, 29; Livy, I, 2; Randall-MacIver: *Etruscans*, p. 5.

¹⁸ Homo: *op. cit.*, pp. 42 f., 61, 100, 115; Fell: *op. cit.*, pp. 23, 25 f.

¹⁹ Randall-MacIver: *Etruscans*, pp. 147 ff.; Fell: *op. cit.*, pp. 131 f., 135 ff., 168 f., 172, 174; Homo: *op. cit.*, pp. 153 f., 159 f.

²⁰ Randall-MacIver: *Etruscans*, p. 20; Homo: *op. cit.*, p. 61; Fell: *op. cit.*, pp. 23 ff.; *infra*, p. 493.

²¹ Frank: *History of Rome*, pp. 14 ff., 26; Homo: *op. cit.*, pp. 112 ff.; Cary: *op. cit.*, pp. 23, 38 f.

Villanovans. Outside the cities, too, industrious effort drained the marshes and facilitated the transition from pastoral to agricultural pursuits.²²

Wide differences of opinion exist as to the creative capacity of the Etruscans. One authority holds that, for all their "great ability," they were "fundamentally lacking in initiative."²³ Another calls Etruscan rock-tomb frescoes only "indifferent imitations of Greek painting"; in stone sculpture, too, he says, they had no hope of "attaining the proficiency of the Greeks."²⁴ Randall-MacIver considers it essential to recognize two phases of development: first, "a long and important" one, in which the outside influence exerted on the Etruscans was not Greek but "near-Asiatic"; and a second period, from the sixth century onward, when Hellenic influence was obviously of great moment, and Athenian pottery and probably also artisans came in extensively. Respecting Etruscan and Greek influence on Roman sculpture, he believes, far less was derived from the Greeks than from the Etruscans.²⁵

Etruscan use of writing is assigned by some to the late eighth or early seventh century; but the origin of the alphabet and the relationship of the Etruscan tongue are still obscure. The alphabet, by one account, has been commonly traced to the Greek city, Cumae. This Chalcidian alphabet, modified by the Etruscans, left its influence in Latium and elsewhere in Italy and supplanted the parent Greek.²⁶ Another theory, discounting dependence on the Greeks, holds that the Etruscan alphabet was a "variant" of one "also used by the Greeks," but was brought by the Etruscan invaders "as an already completed and familiar instrument. . . ." ²⁷ The relationship of the Etruscan tongue is more of a problem than the alphabet. Though theories vary, the tendency to-day is to assign its origin to some pre-Hellenic language or languages of Asia Minor, perhaps Lydian, Lycian, Phrygian, Mysian, or Hittite.²⁸ While it has been inferred that there was little Etruscan literature, the argument *ex silentio* is unsound. Certain Latin writers do mention Etruscan literature and education. Varro refers to an Etruscan author of tragedy; others speak of songs of wit, raillery, and buffoonery, traced back to Etruscan Fescennium; there is mention of histories and also of certain religious, ritualistic books, written presumably at a late date.²⁹

²² Homo: *op. cit.*, pp. 109 f., 113, 117; Fell: *op. cit.*, p. 25.

²³ Fell: *op. cit.*, p. 137.

²⁴ Cary: *op. cit.*, p. 19.

²⁵ Randall-MacIver: *Etruscans*, pp. 103 f., 106 f., 116.

²⁶ Fell: *op. cit.*, pp. 19 f.; Homo: *op. cit.*, p. 37; Cary: *op. cit.*, p. 23.

²⁷ Randall-MacIver: *Etruscans*, pp. 81, 121 f.; Dennis: *Cities and Cemeteries of Etruria*, I, xlvii-li; Müller: *Die Etrusker*, I, Beilage II; II, Beilagen I and II.

²⁸ Randall-MacIver: *Etruscans*, pp. 120 f.; Homo: *op. cit.*, p. 59.

²⁹ Varro: *On the Latin Language*, v, 9, 55; Livy, VII, 2; Dionysius, I, 21; Censorini *De Die Natali Liber*, xvii; Müller: *op. cit.*, II, 293-9; Dennis: *op. cit.*, I, lx-lxi; Randall-MacIver: *Etruscans*, p. 123; Johnstone: *Etruria Past and Present*, pp. 176 f.

There are certain fragmentary references to Etruscan education. Livy mentions Marcus Fabius, who had been schooled at Caere and was thoroughly acquainted with the Etruscan tongue; and he adds that, in early times, Roman youth were commonly instructed in the learning of Etruria, as they later were in Greek.³⁰ The Etruscans, by Livy's account, were greatly devoted to religious ceremonies and excelled in the conduct of them.³¹ Etruscan occult wisdom was credited to a marvelous Tages, a child in appearance but an old man in prudence, who, being plowed up by a farmer in Tarquinium, imparted his learning to an assembled crowd, and then died. His teaching, treasured by soothsayers, formed the basis of their science of divination, which, in Cicero's day, existed in many books³² known as *Etrusca disciplina*. Religious lore, ritual, and its administration lay in the hands of sacerdotal, patrician families, and was passed on from father to son.³³ Sometimes men of inferior station were instructed in priestly practices, as was Attius Nevius because he had shown unusual promise in divination.³⁴ Certain noble women also cultivated this mysterious lore, as Livy says of Tanaquil.³⁵ Under the sway of Rome, a decline occurred, apparently, in the cultivation of occult knowledge in Etruscan families. To prevent its loss, the Roman Senate is said to have decreed that six sons of selected families should be sent to study divination under Etruscan priests.³⁶ Cicero, recognizing their superiority in such matters, provided in his Laws that "prodigies and portents" should be passed upon by Etruscan diviners "if the Senate so decree," and that Etruria should "instruct her leading men in this art."³⁷

The names and functions of many deities suggest Rome's debt to Etruria. From mighty Tinia (Jupiter), who heads the hierarchy, speaks in thunder, and has power to hurl three different bolts of lightning, down to the lowliest deities, a marked parallelism of functions and often of names appears: Uni (Juno), Menvra (Minerva), Nethuns (Neptune). Voltumna and Hortā are associated with gardens. A number of kindly gods, the Penates, Fortuna, Ceres, Genius, Jovialis, and Pales rule the flocks and fields and man's own destiny.³⁸ Certain Roman practices, too, appear to have been derived from Etruscan rites. Mantus, horrible of face, winged, armed with a great hammer and, at times, a sword, carries off the dead to the lower world. Thus he long continued to be depicted, when in Rome slain gladiators were dragged from the arena. Human

³⁰ Bk. ix, 36.

³¹ *Ibid.*, v, 1.

³² Cicero: *On Divination*, I, 33; II, 23; Müller: *op. cit.*, II, 23 ff.

³³ Müller: *op. cit.*, II, 3, 299.

³⁴ Dionysius, III, 70.

³⁵ Bk. I, 34; Deunis: *op. cit.*, II, 179.

³⁶ Cicero: *On Divination*, I, 41.

³⁷ *Op. cit.*, II, 9.

³⁸ Müller: *op. cit.*, II, 1-195.

sacrifice seems to have been common in Etruria. To Mania, mother of the dead, boys were sacrificed. It was said that 307 Roman captives were once slaughtered as a sacrifice by the Etruscans. Human sacrifice at Rome is believed to be Etruscan in origin.³⁹

The names and functions of many Etruscan and Roman gods suggest either a common origin, extensive borrowing, or both. The strictness of authoritarian, priestly control, the authority of occult books, reliance on divination, indulgence in human sacrifice, and a generally fearful, gloomy outlook suggest a closer relationship with Oriental religions than with Greek. The "practice of divining by the livers of sheep" points directly to Chaldaea. "Models of clay livers from Mesopotamia" correspond "exactly" to the "bronze model of a liver" found at Piacenza.⁴⁰ Certain sections of the organ were assigned to the various gods; a diseased part indicated a god's displeasure. Foretelling events by the flight of birds and reading the heavens also formed a part of the priestly craft of ancient Etruria, which was taken over by Roman *haruspices*.

ETRUSCAN GAMES

Herodotus informs us that the Lydians claimed to be the inventors of all the games common to them and the Greeks excepting "tables." At the time of a great famine, so the tale ran, they resorted to games to help them endure its hardships, playing on one day continuously, so as not to feel hunger, and eating the next while abstaining from games. "In this way they passed eighteen years," but to no avail.⁴¹ Were one to lend an ear to the story and its sequel—the exodus of Lydians to the Umbrians—the sports of Etruscans, which are so variously depicted in tombs and on ornamental goods, might be regarded simply as the continuation and development of those brought by the invaders from their homeland. But though it may be justifiable to trace many of them to such a source, it must be remembered that Attic influence was strong from the fifth century on, and the Etruscan and Attic elements constantly intermingled.⁴²

Knowledge of Etruscan sports comes chiefly from remains found in tumuli, none of which, it is generally believed, antedate 700 B.C. Up to that time, Etruscans buried in trenches; and commoners continued to do so. In the same tumuli some tombs go back to this early date, while others are not older than the fourth century B.C.⁴³ That which is depicted in tomb paintings and elsewhere is, of course, neither all Etruscan nor does it represent all of Etruscan life. Art in a class society commonly depicts primarily the doings of the master

³⁹ *Liby*, vii, 15; Müller: *op. cit.*, ii, 20 ff.

⁴⁰ Randall-MacIver: *Etruscans*, p. 125.

⁴¹ *Herodotus*, i, 94.

⁴² Randall-MacIver: *Etruscans*, pp. 37 f.

⁴³ *Ibid.*, p. 57.

class; in this case, the sports that amused the aristocratic ruling class while at leisure and those exercises associated with the religious practices of that class are extensively portrayed. Only occasionally are the commoners—the conquered natives—depicted, as in the decorations on a bronze vessel (c. 500 B.C.), which show the returning plowman, a worker dragging a pig, and boar and rabbit hunters.⁴⁴ The heavy-armed soldiers, too, are probably Italic peoples, who by this time had come to form a great part of Etruscan armies.

The Etruscan aristocracy associated sport with religious and funereal rites, as did the Greeks; Müller⁴⁵ is of the opinion, however, that the religious element was even more serious than among the Greeks. The people of Veii were offended at the impiety of a great noble who interrupted the annual games and made off with his slaves—the performers—because of his displeasure at not being chosen chief priest by the twelve states.⁴⁶ Games were entered upon with as much concern and precision as the taking of auspices and the making of sacrifices. An omission of games, commission of the slightest error, or a deviation from the traditional order of their performance were such serious matters that repetition from the very beginning was felt to be necessary to make amends.

Music is all but universally associated with religion. Music and musical instruments, which were credited by Herodotus to the Lydians, along with all sorts of games, are commonly featured in Etruscan tombs and mentioned by ancient authors. Artistic remains suggest that the flute, Phrygian double pipes, the syrinx with multiple pipes, and other wind instruments were commonly employed. The lyre is also represented. The Etruscan trumpet, used for war, in processions, and at sacrifices, funerals, and athletic contests, was perhaps even more celebrated, being commonly considered the Etruscans' own invention. Music of the flutes accompanied sacrifices, processions, the festal meal, dancing, and boxing; men beat slaves, bakers kneaded, and hunters went on the chase to their music.⁴⁷

Music had a place also in scenic entertainments or plays, and these were joined with religion. Etruscans were famed, apparently, for their *ludi scaenici*, as they were for occult religious knowledge, both of which were drawn upon by their rude Roman neighbors. Livy asserts that Rome, having been visited by a terrible pestilence, sought to propitiate the gods and sent to Etruria for actors (364 B.C.), who danced to the music of flutes, exhibiting graceful movements in the Tuscan fashion.⁴⁸ Thus the histrionic art is said to have been inaugurated

⁴⁴ *Ibid.*, p. 21.

⁴⁵ *Op. cit.*, II, 197.

⁴⁶ *Livy*, V, 1.

⁴⁷ Randall-MacIver: *Etruscans*, pp. 23 f.; Müller: *op. cit.*, II, 200 ff.

⁴⁸ *Bk.* VII, 2.

at Rome, the term *histrionics* itself being derived from *hister* which in the Etruscan tongue corresponded to *ludio* in Latin.

Fighting between armed men was a custom of many early peoples. Athenaeus, for example, cites Poseidonius, who credited it to the Celts; Hermippus, who thought Mantineans invented it; and Ephorus, to the effect that Arcadians and Mantineans practiced it, the latter having instituted "regular courses of instruction in fighting under arms." Cassander is said to have honored royal dead by "a contest of single fighters which was entered by four of his soldiers." ⁴⁹ Athenaeus thus describes the Celtic custom:

"The Celts sometimes have gladiatorial contests during dinner. Having assembled under arms, they indulge in sham fights and practise feints with one another; sometimes they proceed even to the point of wounding each other, and then, exasperated by this, if the company does not intervene, they go so far as to kill. In ancient times . . . when whole joints of meat were served the best man received the thigh. But if another claimed it, they stood up to fight it out in single combat to the death. Others, again, would collect silver or gold, or a number of jars of wine from the audience in the theatre, and having exacted a pledge that their award would be carried out, they would decree that the collection be distributed as presents to their dearest relatives; they then stretched themselves on their backs over their shields, and someone standing near would cut their throats with a sword." ⁵⁰

Such contests among peoples constantly engaged in war are readily understood. There were contests of *hoplomachy* among the Greeks. Contests to the death among medieval European knights had a similar *raison d'être*. War, religious worship, honor to the dead, and the desire to prove one's skill and courage are among the chief elements that provided their sanction. Nowhere in the ancient world, however, were gladiatorial combats so extensively known and so systematically prepared on a grand scale as in Italy.

Gladiatorial combats were commonly thought to be indigenous to Etruria, where they were long fostered by the master class and associated with funerals and other religious rites. Fully armed gladiators are frequently represented on the walls of tombs and on urns; and Müller holds that the use of gladiatorial combats at funerals goes back to Etruscans, or, in any case, such a bloody mode of appeasing the dead must, among a people so long devoted to human sacrifices, have seemed a proper oblation to the Manes.⁵¹

From Etruria gladiatorial contests spread wherever Tuscan arms prevailed and became common throughout Italy. Athenaeus,⁵² following Nicolas of

⁴⁹ Athenaeus, iv, 155.

⁵⁰ *Ibid.*, iv, 154. Trans. by C. B. Gulick. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁵¹ Müller: *op. cit.*, II, 224; Dennis: *op. cit.*, I, 71; II, 175.

⁵² *Bk. iv*, 153.

Damascus, says that the Romans borrowed from Etruscans the habit of staging shows of fighting men, not only at festivals and theaters, but also at banquets. Moreover, a Tuscan term, *lanista*, continued to be used at Rome to designate the trainer or superintendent of gladiators. Such combats were said to have become even more common in Campania than in Etruria; and their employment for entertainment at feasts was improved upon. Strabo⁵³ says the luxury of the Campanians went so far that, when entertaining distinguished guests at supper, they arranged the number of pairs of gladiators to comport with their guests' distinction. Capua long continued to be a great training center for gladiators. Throughout Italy these contests became a common mode of entertainment. Vitruvius, telling how the forum should be constructed, says that, "because the custom of giving gladiatorial shows in the forum has been handed down from our ancestors," we must "in the cities of Italy" proceed on such a plan as will give a view of the spectacle, unhindered by columns so far as possible.⁵⁴ The oldest known kind of equipment for gladiators was the Samnian. The Campanians, according to Livy's account,⁵⁵ outfitted their gladiators in armor of the Samnites out of scorn for their enemies, and this practice was taken over by the Romans.⁵⁶

That hunting is a sport suitable to warriors, and that killing dangerous beasts has commonly been considered particularly fitting for royalty is well known. Hunting was a popular sport in Etruria, if one may judge from artistic remains found in many tombs. Naturally, artistic representation may merely depict the setting of a mythical tale; again, it may portray a bit of life in other lands. It is obvious, however, that hunting themes must have been pleasing to the taste of Etruscan patrons.⁵⁷

Boar-hunting, judging from its common representation, seems to have been a favorite sport of the Etruscans; it may, moreover, have had a religious significance. Macrobius, referring to boar hunts, says that the animal was a symbol of winter; hence boar-hunting may be shown on sepulchral walls to represent that season of the year when annual *parentalia* were held to honor the dead.⁵⁸

Certain hunting scenes, like other features of Etruscan life and art, have a distinctly Oriental atmosphere, resembling particularly Egyptian and Assyrian art. The stag hunt, the archers on foot and horseback, the spearmen, the man-lion fight, the lion-bull fights—depicted on bowls at Caere and Praeneste, about 670 B.C.—are quite Asiatic in spirit and execution. Along with hunting and

⁵³ Bk. v, 4, 13; Müller: *op. cit.*, II, 223.

⁵⁴ Vitruvius on *Architecture*, v, 1, 1-2.

⁵⁵ Bk. ix, 40.

⁵⁶ Baumeister: *Denkmäler des Klassischen Altertums*, III, 2096.

⁵⁷ Dennis: *op. cit.*, II, 175.

⁵⁸ *Ibid.*; Macrobius, I, 21.

fighting certain peaceful aspects of pastoral life are depicted—horses and cattle grazing in the fields, and a gardener pruning trees under his master's watchful eye.⁵⁹ A lively portrayal of life along the coast depicts boats, fowlers, fishermen, and divers.

Gymnastic exhibitions and the sports of the circus are commonly shown on Etruscan remains, and their employment at Rome is said to have come first from Etruria. In these exercises the Etruscans are obviously often imitators of the Greeks, or, at least, their art reflects a Greek connection. Boxers are depicted frequently. The contenders were probably of an inferior class, providing entertainment for the nobility. Unlike Greek contestants, Etruscan athletes are generally portrayed clad, as they were later in Rome.⁶⁰ But certain scenes, doubtless more Greek than Etruscan in spirit, depict nude boxers, wrestlers, and other contestants. Music probably accompanied many events, if not all. Athenacus⁶¹ says that the Etruscans conducted boxing matches to the music of the flute.

The spirit of sport scenes in the Tomba del Colle Casuccini at Chiusi is similar to that conveyed by events portrayed in Egyptian tombs; besides, there are certain Greek features. Here are boxers; a woman dancing and shaking castanets; a nude youth wearing a crested Greek helmet, executing the dance in armor; a grown man, likewise unclad, exercising with the *halteres*; wrestlers or tumblers, directed by a paidotribe with his wand. Excellent representations of wrestling are found in the Tomba degli Auguri⁶² and in the Tomba della Scimia at Chiusi. In the first of these, naked, heavy-bodied, bearded figures, with widespread legs, seize each other by the hands; in the second, one contestant has the opponent over his shoulder and, holding the neck firmly with one hand and an arm with the other, is ready to toss him head over heels. The boxers, depicted in the Scimian tomb, have heavy, Asiatic features, are likewise bearded, and wear a narrow belt about their waists; with hands protected by laced thongs, they begin the fray with one hand open, the other clenched.⁶³ The decoration of the Tomba delle Bighe at Corneto, quite Greek in character, portrays circus events, boxing, wrestling, hurling the discus, Pyrrhic dancers, armed youths on horseback, and a young man who is preparing to jump with a pole, perhaps to mount a horse. The figures, excepting the equestrians, paidotribes, and agonothetae, are unclad.⁶⁴

Italy was suitable for horse-breeding; and horses were known there before the Etruscans appeared on the scene. The new, aristocratic master class, con-

⁵⁹ Randall-MacIver: *Etruscans*, pp. 29 ff.

⁶⁰ Müller: *op. cit.*, II, 220.

⁶¹ Bk. IV, 154.

⁶² Weege: *op. cit.*, Plates 91, 93 and 94.

⁶³ Dennis: *op. cit.*, II, 323 f., 332 f.

⁶⁴ Weege: *op. cit.*, Beilage II; Gardiner: *Athletics of the Ancient World*, pp. 119 ff.

stantly engaged in war, seems to have done much, however, to develop the stock and train horses for various purposes. That the sports of the circus flourished in ancient Etruria is shown by many sources. Extensive remains of chariots and bridle bits are found in the tombs; and chariot racing and other equestrian events are extensively portrayed on their walls. Circus scenes may represent the games held in honor of the dead; in one scene a man and a woman appear to be saying farewell at the *spina*, which may symbolize the soul's completion of its race. The Tomba Golini at Orvieto suggests that Etruscans went to the afterworld in a chariot, their speediest mode of transit on earth.⁶⁵

An eminent authority holds that the Tuscan horse races were quite Greek; ⁶⁶ their artistic portrayal is evidently Greek in spirit, being done by Greeks or by natives trained on Greek models; but it is not necessary to infer Greek origin of the events themselves, which were natural enough in such a social setting. Whatever the facts may be regarding their origin and the amount of Greek influence, it is certain that Etruria became famous for equestrian entertainments. Fabulous tales were associated with them. According to an old Roman legend, a quadriga ran away with the driver from the games at Veii, and did not stop until they had reached the Capitol at Rome.⁶⁷ Horses and chariots (and also boxers) were sent for from Etruria at the time of Tarquin, according to Livy,⁶⁸ and the solemn Great Roman Games were thereafter celebrated annually. The participation of Etruscans at the Circus in Rome seems to have been common. Porsena, by one account, made a truce with the Romans on one occasion in order to take part in their circus games; moreover, he was given the victor's crown. Caecina, a friend of Augustus, is said to have sent a four-horse chariot from Volaterrae to Rome. Etruscan nobles outfitted their entries for the Roman races, but, unlike the Greeks, they did not themselves drive.⁶⁹

Four-horse chariots were of course preferred, but two-horse teams and single horse races were also common. The Tomba del Colle Casuccini contains excellent portrayals of charioteers, there being, in one race, three *bigae* (two-horse chariots) with drivers in tunics, white skull caps, and reins around their bodies. One of the *bigae* is just finishing the race, a winner.⁷⁰ The Tomba delle Bighe shows many equestrian events, the harnessing of teams to chariots, the race itself, youths preparing to mount, armed boys on horseback, and the assembled company of spectators.⁷¹ In the Scimian tombs, besides charioteers,

⁶⁵ Dennis: *op. cit.*, II, 54 ff., 176; Fell: *op. cit.*, p. 29.

⁶⁶ Müller: *op. cit.*, II, 221.

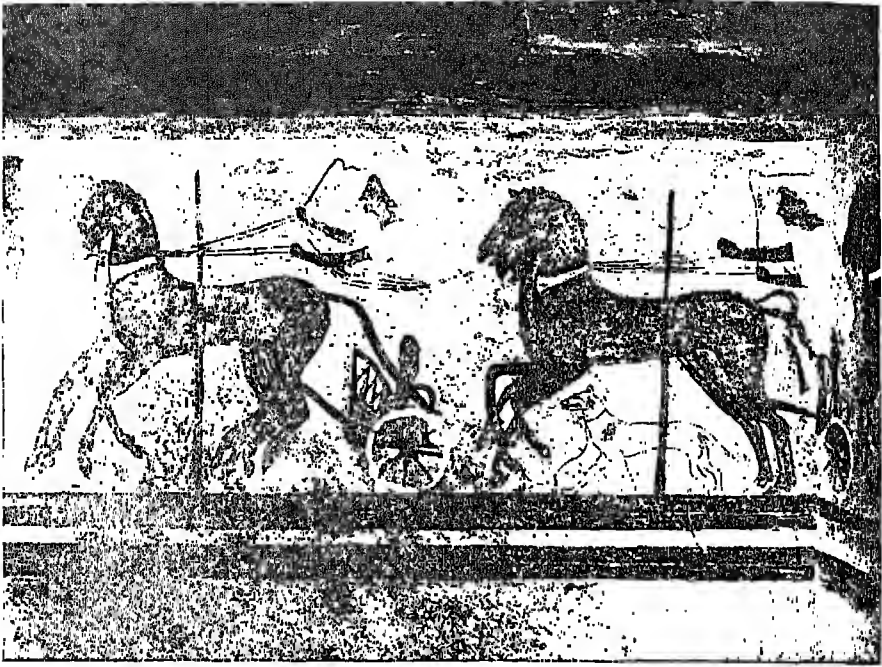
⁶⁷ Plutarch: *Publicola*, 13; Pliny: *Natural History*, VIII, 65.

⁶⁸ Bk. I, 35.

⁶⁹ Pliny: *Natural History*, X, 34; Müller: *op. cit.*, II, 222.

⁷⁰ Weege: *op. cit.*, Plate 97.

⁷¹ *Ibid.*, Beilage II.



TWO-HORSE CHARIOT RACE

(F. Weege, *Etruskische Malerei*, Pl. 97, Max Niemeyer Verlag, Halle, 1921)

one sees races on horseback, the riders sitting "side saddle," one with a bow, the other holding a poised lance.

The Etruscan circus, as shown in numerous reliefs, had features similar to those later known at Rome, notably the *spina* with its row of obelisks or cone-shaped figures. Since the races themselves were taken thither from Etruria, it is probable that the Roman circus was patterned after the Etrurian.⁷² Livy says that Tarquin first marked out the Circus, called Maximus, space being set aside for senators and knights, so that they might put up seats for their accommodation.⁷³ Tarquin, it is assumed, would probably have built at Rome something similar to what he knew in his Tuscan home. Since no remains, other than pictorial, have been found, the structures in Etruria were probably of wood, as was the first one at Rome, which had seats supported on a scaffolding twelve feet high. Moreover, the *Tomba delle Bighe* at Corneto shows patrons seated on rude platforms, apparently wooden, with a canopy over their heads.

Dancing and music had a prominent part in the *ludi scaenici*, and both were associated with religion. To judge from artistic representations, dancing was

⁷² Dennis: *op. cit.*, II, 175.

⁷³ Bk. I, 35; Dionysius, III, 68.

also a favorite form of entertainment. When used for such a purpose, the performers were doubtless inferiors and slaves. Both male and female youth are shown dancing, with elaborate gesticulation, in the decorations of the *Tomba del Triclinio*.⁷⁴ Boys and men engaged in the dance in armor, bearing shields, swords, and lances, imitating the movements of war. The *Tomba della Scimia* at Chiusi gives some conception of accoutrements of a Pyrrhic dancer, who, equipped with double-cockaded helmet, shield, cuirass, greaves, and a wavy wand, moves to the music of the double flutes. Though there is no agreement on the matter, the dance of the *salii*, which combined both singing and dancing and followed a certain rhythm set by a leader, as did the band of armed dancers in Etruria, is believed by some scholars to have been borrowed from the Etruscans, or to have been influenced by them in this respect at least.⁷⁵ Choral dances seem to have had no place among the Etruscans.

The remains of upper-class Etruscan culture show that the position of women was less secluded than at Athens; on the other hand, their place was by no means comparable with that of Spartan women. The wives and daughters of a luxury-loving, ruling class probably enjoyed much leisure, depending on slaves or servants for work.⁷⁶ An urn on which a reclining girl is portrayed, surrounded by a number of figures with scrolls, is interpreted by Dennis to indicate that the girl died before finishing her education; ⁷⁷ this interpretation, however, is open to doubt. The mother's genealogy seems to have been given careful attention, judging from records that have come down to us.⁷⁸ Dennis credits women of Etruria with great respect and honor, basing his judgment on certain well-known facts: children took the mother's name as well as the father's; her sepulchre was even more splendid than her husband's; in some instances, at least, she had expert knowledge of religious mysteries (Tanaquil, for example) and perhaps some knowledge of letters; and she is portrayed sitting with men at dinner. It may be true, as Dennis believes, that Etruscan society had a strong influence on Rome in respect to the position of women.⁷⁹ Banquets were ubiquitous, judging from the tomb records and the testimony of ancient authors. Athenaeus says that Etruscans prepared sumptuous tables twice a day, and nude slave girls served at them. Fell, however, thinks that this is not supported by evidence. Poulsen, too, avers that "not a single naked handmaid" is found in Etruscan paintings.⁸⁰ While much that is reported

⁷⁴ Weege: *op. cit.*, *Tafel* 31.

⁷⁵ Müller: *op. cit.*, II, 218; Baumeister: *op. cit.*, III, 1547; Fowler: *The Roman Festivals of the Period of the Republic*, pp. 36 ff.; Dennis: *op. cit.*, II, 332.

⁷⁶ Dennis: *op. cit.*, I, lii; II, 53, 58.

⁷⁷ *Ibid.*, II, 179.

⁷⁸ Randall-MacIver: *Etruscans*, pp. 34 f.

⁷⁹ Dennis: *op. cit.*, I, lxiv, 310; II, 162 f.

⁸⁰ Athenaeus, IV, 153; Fell: *op. cit.*, p. 140; Poulsen: *Etruscan Tomb Paintings*, p. 33.

about Etruscan debauchery by Athenaeus and others may be exaggerated, it is generally recognized that a great decline occurred in Etruscan life after Etruria had gained supremacy, and extravagant luxuries and loose morals of the fourth and third centuries overstepped the stricter bounds of propriety of the sixth and fifth.⁸¹

Women are shown in many banquet scenes, but the representations are sometimes open to widely different interpretations. Thus, at a dinner scene of the *Grotta Querciola*, the sole woman present is considered a *hetaera* by Dennis; the wife of the man, by Gerhard; and "afflicted mother" being comforted by her son, by Mrs. Gray.⁸² Athenaeus cites Aristotle to the effect that the "Tyrrhenians dine in company with their women, lying back under the same robe."⁸³ Other scenes certainly represent women in less compromising society. Fell⁸⁴ refers to a scene in the *Tomba dei Vasi Dipinti*, which he interprets as "a family" dining in Elysium as in life. Women also attended public games, as may be seen from the paintings at Chiusi, Tarquinii, and Corneto. In the *Tomba delle Bighe* women are shown, seated with men on slightly elevated, backless benches; all exhibit an attentive interest in the sportive events before them.

The pattern of Etruscan origins and development, while significant in itself as the portrait of a people who strove for dominion and speedily decayed when it had been gained, takes on added importance from the fact that Etruscan influence on Roman culture was many-sided and far-reaching. In military organization, agricultural improvement, city-building, engineering and architectural construction; in religious practices, superstition, and divination; in music, the theater, luxurious banquets, and entertainments; in gladiatorial combats, circus performances, and athletic contests; in the formation of guilds, artistic creation, and education—in all of these, in varying measure, the Etruscans are acknowledged to have left their imprint on the life of those who, when the Tuscan tide receded, were to make a more successful effort at the unification of Italy, and were to extend their dominion even to those shores from whence the Etruscan builders are believed to have come.

⁸¹ Fell: *op. cit.*, pp. 142 f.

⁸² Dennis: *op. cit.*, I, 309.

⁸³ Bk. I, 23.

⁸⁴ *Op. cit.*, p. 141; Weege: *op. cit.*, *Tafel* 66.

EARLY ROMAN CULTURE

FROM LOCALISM TO THE UNIFICATION OF ITALY

The early folk of Latium had no accurate knowledge of their origin. Though traditions varied, Rome's founding was placed about the middle of the eighth century. The Trojan tale and those of Mars, Rhea Silvia, Romulus, Remus, and the Sabine women were told and retold in great detail.¹ Neither Livy nor Dionysius were very successful in separating fact from fancy. Archaeological research has discredited certain traditions, but confirms the ancient view that Rome was not a city of great antiquity. The first settlements in Latium were not much earlier than 1000 B.C. These pastoral folk of Latium dwelt in small villages. The Latin League probably depended originally on ties of blood and religion.² How these tribal communities (which, according to Pliny, numbered fifty-three) came to unite, the Latins did not know. Probably they coalesced in the seventh and sixth centuries under the pressure of expanding Etruscan power, forming ten or twelve cities on sites most capable of defense. Rome, most favorably situated, had become by the end of the sixth century, or early fifth, the chief city for almost a third of Latium. Etruscan rule at Rome, lasting perhaps two generations, came to an end with the expulsion of Tarquin the Proud, dated traditionally about 509 B.C.³

Florus compared Rome's political life to that of man: the kingship, "infancy"; to the consulship of Appius Claudius and Quintus Fulvius (212 B.C.), "youth"; to Augustus Caesar, "manhood"; and after Caesar, "old age."⁴ Rome's nonhereditary monarchy was the instrument of a superior class, the

¹ Livy, I, 1 et seq.; Florus: *Epitome of Roman History*, I, 1; Sallust: *War with Catiline*, 6; Virgil: *Aeneid*, I; Ovid: *Fasti*, III, 59-86, 197-228.

² Pliny: *Natural History*, III, 9; Dionysius of Halicarnassus, *The Roman Antiquities* of, IV, 49; V, 61; Diodorus of Sicily, VIII, fr. 3; Homo: *Primitive Italy and the Beginnings of Roman Imperialism*, pp. 77 f.

³ Livy, I, 60; Homo: *op. cit.*, p. 159; Frank: *Roman Imperialism*, pp. 3 f., 13 ff.; Cary: *History of Rome*, pp. 30 f., 39.

⁴ Florus, introduction.

Patricians—older settlers, possessed of large estates and pride in family names. An inferior order, Plebeians, was made up of tradesmen, merchants, and poor peasants. Both Patricians and Plebeians were enrolled in three tribes, subdivided into thirty *curiae*, which may have represented diverse racial elements, or perhaps only geographical, administrative areas.⁵ The *Comitia Curiata*, the curial assembly, approved a new king nominated by the Senate, pledged obedience to him, and convened at his call to vote on certain matters. The Senate, drawn from Patrician families, was the real source of authority; for though its functions were advisory during a king's reign, the new monarch was named by the Senate through its *interrex*. Royal power covered matters terrestrial and celestial. Men and money were at his command; war and peace hung on his decision; he promulgated laws and could take auspices, but many religious functions were assigned to others whom he chose from Patrician families.

After the kings were expelled, two consuls, chosen annually, functioned till the end of the Republic. Though their powers were "truly regal," Romans dated the origin of their liberty from this time.⁶ In reality, of course, the revolt against kingship was by and for the nobility. Since only Patricians could be consuls, and Plebeians suffered numerous other disabilities, a conspicuous feature of the first two and a half centuries of the Republic was the class struggle. As early as 494 Plebeians demanded redress against unjust arrest, imprisonment, and other evils; when these were not met, they threatened "secession," refusing to enter the army unless promised by consular officers and Senate that they should have authority to name two Plebeian tribunes, annually, who should be spokesmen of the commoners. The number was gradually increased to ten, and their powers vastly extended. An important gain was made when the laws were codified and published (traditionally, in 451 B.C.), thus reducing the likelihood of arbitrary action.⁷ Even more significant was the successful demand for the right of intermarriage, the restraint of which Canulcius condemned.⁸ The financial officers (*quaestores*) were increased to four, the office was opened to Plebeians, and soon thereafter (409 B.C.) three were elected.⁹ The consulship was closed to Plebeians, however, till 366 B.C. After 342 B.C. a Plebeian was chosen each year.¹⁰ In 351 the censorship was opened to Plebeians;¹¹ since the censors had already taken over the making of Senate lists

⁵ *Homo: op. cit.*, pp. 117 f.; *Cary: op. cit.*, pp. 52, 55 f.

⁶ *Livy*, II, 1; *Cicero: The Republic*, II, 30-2.

⁷ *Livy*, III, 31-4.

⁸ *Ibid.*, IV, 1-6.

⁹ *Ibid.*, IV, 43, 54.

¹⁰ *Ibid.*, VI, 42; VII, 1, 32; *The Cambridge Ancient History*, VII, 529.

¹¹ *Livy*, VII, 22.

(c. 366), the path to the Senate was clear, the Ovinian Law (c. 312 B.C.) having directed the censors to choose the best men from every rank.¹²

The struggle for improved political status was paralleled by efforts for economic relief. Laws were passed against usury, fixing maximum interest at 1 per cent (357 B.C.); ten years later it was reduced to 0.5 per cent; five years thereafter, proposals were made to abolish usury entirely.¹³ In line with this was an act (about 321 or 326 B.C.) for the relief of the debtor's person from distraint.¹⁴

Changes in economic and political status were interrelated with others. Rome's wars of expansion had far-reaching consequences. Success in war required more soldiers; Plebeians were drawn upon; and with their service came demands. The Republic's army retained the Centuriate classification, established under Etruscan kings. This Centuriate army gradually became a political assembly, the *Comitia Centuriata*, which grew in power while the old *Comitia Curiata*, dominated by Patricians, declined. The influential *Centuriata* soon were able to name censors and even consuls. Moreover, since classification depended on having wealth enough to equip one's self for a particular service, an aggressive, better-to-do Plebeian could improve his status. Meantime, the *Comitia Tributa*, a tribal assembly presided over by the tribunes of the people, grew in importance in the fourth and third centuries and came to rank with the *Comitia Centuriata* as a legislative body by 287 B.C.¹⁵ Another path to power opened: the dictatorship, which had been instituted at an uncertain date and was at first filled only by Patricians, was ultimately accessible to Plebeians, Gaius Marcius Rutulus being the first commoner to hold such power.¹⁶

While Plebeians were rising in importance, the Patricians were declining numerically, partly because wars had taken a heavy toll, perhaps, too, by reason of refusal to marry commoners. Of fifty-three Patrician families named in the fifth century, only twenty-nine appear in the fourth. By 300 B.C. the proportion of Patricians to Plebeians may have been "less than one in twenty."¹⁷

Almost two and a half centuries of warfare marked Rome's history between the expulsion of Etruscan kings and the unification of Italy. The cities of Latium, which had aided Rome's revolt, formed a Latin League and made a treaty with Rome about 493 B.C. In a century and a half of intermittent wars, however, the League was destroyed (338 B.C.), certain Latin cities were incor-

¹² C.A.H., VII, 522 f.

¹³ Livy, VII, 16, 27, 42.

¹⁴ *Ibid.*, VIII, 28; C.A.H., VII, 544 ff.

¹⁵ Frank: *op. cit.*, p. 64.

¹⁶ Livy, II, 18; VII, 17.

¹⁷ Cary: *op. cit.*, p. 107.

porated with Rome, and others were made dependent. While establishing supremacy in Latium, Rome also faced her onetime sovereigns, the Etruscans, and the common enemy of both Rome and Etruria—the Gauls. Near-by Veii, a city comparable to Rome, was conquered in 396 B.C.; further conquest of Etruscan territory was facilitated by Gallic inroads which pushed even into Rome (387 B.C.). In the middle of the fourth century, after Rome had defeated Tarquinii and Falerii and weaned away friendly Caere, a forty-year truce was imposed (351 B.C.) which left Rome relatively free to turn on sturdier opponents, the Samnites.

While she was engaged with Etruria, Rome had a treaty with the Samnites (354 B.C.); but when the Etruscans were weakened and a truce established, Rome scrapped the treaty (343 B.C.), and joining with Capua, began a series of wars against the Samnites. The first phase of the Samnian War (343–341 B.C.) was indeterminate; the second (325–304 B.C.) gave Rome access to the Adriatic, a firm hold on Apulia, and alliances with the cities of Umbria and Picenum; the third (298–290 B.C.) consolidated and extended the gains of the second, and made Rome mistress from the Arnus to the Greek areas of southern Italy. So destructive had been the struggle that Pyrrhus, crossing Samnium a little later, asked “whether the country had ever been inhabited.” Two centuries later a Samnite referred to Rome as a den of wolves which “devour the peoples of Italy.” Shortly after the Samnian struggle, by assisting the Greek city of Thurii (282 B.C.), the Romans drew on themselves retaliation by powerful Tarentum, thus beginning a conflict which soon brought the Greek cities under Roman sway (272 B.C.).¹⁸

Over a path cleared by iron and blood and strewn with broken pledges, Rome had moved steadily toward military and political hegemony. As mistress of all Italy, Rome gained recognition from distant Egypt in 273 B.C. With near-by Carthage, however, Rome was soon to enter a conflict which would end her provincial existence and decide the lordship of the western Mediterranean.

Was there a clear-cut plan and purpose in Rome's wars which unified Italy? Livy saw the Samnite War as a struggle to decide mastery of Italy; that was, indeed, its consequence. Later historians, too, credited Romans with such foresight; but that the ultimate outcome was foreseen is doubtful. The Samnian wars appear as struggles between powerful, growing peoples, striving for immediate ends; such, too, seem the others, rather than the elements of a grand design for sovereignty.¹⁹ Instead of singleness of purpose, there was a conflict of rival forces in Rome: one class, already satisfied, wished to enjoy its privileges without further risk; another, underprivileged, hoped for gains from successful

¹⁸ *Homo: op. cit.*, pp. 189, 208 f.

¹⁹ *Frank: op. cit.*, p. 46.

war. The conservative Senate, thinking of "scores of treaties," "honorable traditions," "orderly conduct of state affairs," war levies, and the potential losses of unsuccessful war, was disinclined toward expansionist adventures; the Plebeians, however, knowing little of past treaties, hoping for booty, land and colonization, low-priced grain, home improvements, were "more eager for empire" and readier for the risks of war.²⁰ After the conquest of Veii, Etruscan Juno was not the only thing removed; all wealth, even the gods and their offerings were taken to Rome. Soldiers were given land; increased wealth brought influence, and Plebeians soon gained access to "the highest office of State."²¹ Fruits of successful conquest whetted the appetite. The alliance with Thurii, leading to the Tarentine War, was opposed by the Senate; the Plebeian Assembly, however, which had gained legislative competence in 287 B.C., approved. Later, when the Mamertines sought Rome's support, the granting of which brought conflict with Carthage, the Senate, foreseeing danger, did not sanction it; the commons approved it, however, because of the "plunder" which all might gain.²²

The conquered peoples lost their sovereignty, but Rome's sway freed Italy from internal wars, and made all more secure against outside encroachments. The conquered cities did not all enjoy equally dependent status. Rome divided them, giving unequal privileges.²³ Some were annexed, receiving certain rights of citizenship; others were associated with Rome, being bound by separate, special agreements.²⁴ Rome also planted colonies, drawn from various cities. These settlements provided trustworthy defenders of strategic points, gave land to those sent out, and probably made for greater unity.²⁵

Rome's expansion brought impressive gains in territory and population. Her primitive villages, where men dwelt in caves and huts, each comprised but a few square miles and a few thousand inhabitants.²⁶ Territory increased to about 2,400 square miles at the middle of the fourth century; to 4,200 at the destruction of the Latin League (338 B.C.); to 10,700 by the end of the century; and to 31,700 in 280 B.C. After the Tarentine War, territory amounted to over 48,000 square miles. There were now probably about three-quarters of a million men able to bear arms. Rome may have had 100,000 population, and Tarentum and Capua, 60,000 to 70,000, respectively.²⁷ Slavery, which existed to some extent in Etruscan days, had grown appreciably. A 5 per cent tax on

²⁰ *Ibid.*, pp. 64 ff.

²¹ Livy, v, 22; Frank: *op. cit.*, p. 21.

²² Polybius: *The Histories*, I, 10-1.

²³ Homo: *op. cit.*, p. 241.

²⁴ *Ibid.*, p. 223; C.A.H., VII, 658 ff.; Cary: *op. cit.*, pp. 127 ff.

²⁵ Appian: *Civil Wars*, I, 23, 35; Frank: *op. cit.*, pp. 18, 35 ff.

²⁶ Varro: *On Agriculture*, III, 1; Homo: *op. cit.*, p. 84; Mommsen: *History of Rome*, I, 61.

²⁷ Homo: *op. cit.*, pp. 186, 223, 243 f.; Mommsen: *op. cit.*, I, 122 f.; Cary: *op. cit.*, pp. 121, 136.

manumissions was fixed in 357 B.C.²⁸ Slavery's rôle in Roman life, however, was relatively slight before the foreign wars.

CHARACTER AND DESTINY OF THE PEOPLE

Latin literature and modern writers discover diverse desires on the part of the Roman people: they swing between the poles of rest and activity; extol pursuit of gain and the enjoyment of leisure; they praise war and the arts of peace. They distinguish themselves in war and build an empire; they attain distinction in agriculture, first among the peaceful pursuits of man. These diverse tendencies were doubtless present at the beginning of Roman life. The primitive peasant, busy amid flocks and fields, left his plow and seized his pike when it served his interest. If, having gained something by war, conquest became a habit, the Roman often turned back wistfully to contemplate the peaceful, rustic life—the happiness once possessed. Virgil, though called to praise war-like achievements, is a more persuasive exponent of tranquil, rustic joys:

Happy are they, beyond man's lot, if aware of the blessing,
Husbandmen, to whom, remote from clashing of armies,
Earth, repaying her debts, accordeth an easy existence.²⁹

Ovid recalls a time when Janus was guardian of peace and knew naught of war; when men had not put Justice to flight, when uncut forests and pasturing herds were known at Rome.³⁰ Horace asks,³¹ Who knows a better place than the country—

Where churlish Care breaks less the thread of sleep?

There he portrays—

The sturdy farmers of the ancient days,
Content with little, when their grain was stored,
Relieving by a festal time their frames
And hearts that toiled in hope of rest at last. . . .³²

Martial acquires fame at Rome and even sits at Caesar's table, but he also sings of—

A fertile farm, one hearth the whole year through,
No strife, a tranquil spirit, coatless ease,

²⁸ Mommsen: *op. cit.*, I, 389.

²⁹ Lawton: *Classical Latin Literature*, p. 160.

³⁰ *Fasti*, I, 243 et seq.

³¹ *Epistles*, I, 10.

³² Lawton: *op. cit.*, p. 18.

Vigorous muscles in a healthy frame,
Informal social ties and simple fare. . . .³³

Respecting Rome's martial character modern historians followed the ancients. Romans seemed, as Polybius³⁴ said of the Peloponnesians—

Aye vexed with toil, their spears never at rest.

Their warring progress impelled apologists to read a warlike destiny in tales of a hazy past. Ovid makes Romulus address his father thus: "Umpire of war, . . . we name the beginning of the Roman year after thee. . . ." Mars was to be revered in Latium, for the sword gave "a fierce race empire and glory."³⁵ Livy tells of the hind fleeing to the Gauls, the "wolf of Mars" turning to the Romans—a portent of destiny. The gods had willed that Rome should rule the world: so let them cultivate war, and teach their sons that no human power can withstand Roman arms. Janus' temple, open in war, closed in peace, was shut but twice after Numa's day, says Livy, after the First Punic War and after the battle of Actium.³⁶ At the height of imperial power, Horace prays: "Be still in war supreme."

Romans portrayed their wars as a fight for liberty. In war one must be victor; to be vanquished is to be enslaved. Others can endure slavery; but the Roman people are assured liberty. The Romans, Florus says, took up arms first to secure liberty, then to increase their bounds, afterwards to defend their allies, and ultimately to gain "glory and empire."³⁷ That all peoples had an equal right to independence did not occur to the Romans. Their empire was founded on a belief in Latin race supremacy. The "immortal Gods" willed it.³⁸ Virgil promises endless sway:

Neither a limit in time nor yet of power I assign them:
Empire endless I grant.³⁹

The superior race must establish its sway, "sparing those who submit, but crushing in battle the haughty." Florus recounted the exploits of those who, "after sanguinary encounters, taught submission to savage races who had hitherto been free and were, therefore, impatient of the yoke." Cato destroyed the "resistance of the Celtiberians, the flower of Spanish manhood. . . ." Gracchus punished the same people and destroyed "a hundred and fifty cities."⁴⁰

³³ *Ibid.*, p. 275.

³⁴ Bk. v, 106.

³⁵ Ovid: *Fasti*, iii, 59-86.

³⁶ Bk. i, 16, 19; x, 27.

³⁷ Bk. i, 3.

³⁸ Cicero: *Philippic* vi, 7; Chapot: *Roman World*, p. 418.

³⁹ Lawton: *op. cit.*, p. 168.

⁴⁰ *Florus*, i, 33. Trans. by E. S. Forster. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

The prospect of plunder also motivated Rome's wars. "War and pillage" were common among the seminomadic dwellers of Latium. Quintus Fabius, preparing to lead forces into Etruria, wanted to enrich all his soldiers.⁴¹ Promise of plunder, Polybius says,⁴² led the Plebeians to favor aid to the Mamertines. Cicero traced provincial hatred of Roman officers to their "lust for plunder."⁴³ Mithridates credited the Romans with "one inveterate motive for making war upon all nations," a "deep-seated desire for dominion and for riches."⁴⁴ Rome's poet-philosopher declared that the quest for goods had stirred up from the depths mighty tides of war.⁴⁵

Superior physical strength and bravery were commonly ascribed to the Italians. Polybius thought them naturally superior to Phoenicians and Africans; but if their courage and strength often gave them success, they relied too constantly "on force" in all undertakings, even making a fault of "daring and violence," which sometimes brought them "signal defeats."⁴⁶ Tales of heroic exploits, proving soldierly courage in this "civilizing" of others, fill many pages of Roman history. Florus relishes Marius' campaign against the Teutons: "What a defeat he inflicted upon them, ye heavenly powers. . . !" Even when faced by Pyrrhus' elephants, Roman soldiers died with wounds only on their chests and a "threatening mien" on their faces. "How easy were it for me to win the empire of the world if I had an army of Romans. . . !" Pyrrhus exclaimed. The eulogist portrayed the Romans as superior in honor as well as in bravery, for they "knew that the only true victory is that which is won with untainted honour and unimpaired dignity." Though "glorious," "honourable," "illustrious," "humane," "upright," and "high-minded" were fit terms to describe the wars against Africans, Macedonians, Sicilians, Spaniards, Gauls, Thracians, Armenians, because these were the proof of "imperial greatness," the historian found it "deplorable" and "disgraceful" when Roman warlike might and spirit were turned upon slaves and gladiators and even upon themselves.⁴⁷

Though Roman readiness for war is a common theme, there are exceptions. Polybius says that Romans were slow to enlist for the war in Spain, because of reports of constant battles and great losses. This "fit of cowardice" was so extensive that there were neither enough officers nor men; when Scipio volunteered, however, others were ashamed and enrolled for the campaign.⁴⁸

⁴¹ Livy, x, 25; *Homo: op. cit.*, p. 72.

⁴² Bk. 1, 11.

⁴³ Cicero: *On the Manilian Law*, 22.

⁴⁴ Sallust: *Letter of Mithridates*, 5.

⁴⁵ Lucretius: *De Rerum Natura*, v, 1435.

⁴⁶ Bk. 1, 37; vi, 52.

⁴⁷ Florus, I, 6, 13, 34, 38, 47. Trans. by E. S. Forster. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁴⁸ Bk. xxxv, 4.

Cicero's philosophy of conflict expressed a general view of the Romans. Nature gives dominion to the best. Mind governs the lower, less worthy tendencies in man. Masters rule slaves. Men able to govern themselves cannot justly be enslaved; but peoples inferior by nature are properly brought under the dominion of the superior.⁴⁹ Cicero defends the "justice of war," when undertaken to "reclaim property" and if "proclaimed beforehand."⁵⁰ It must not be begun without provocation, and reparations must first have been demanded.⁵¹ Those who preside over affairs and determine upon action are as serviceable to the country as those who fight, for by their wisdom war may be avoided or ended. Wisdom in decision is better than courage in battle, but one must not avoid war because of an aversion to fighting; and when making war, it should appear that there is "no other view but peace."⁵²

Nothing outranked duty to country, in Cicero's opinion. Who would not gladly die in her service? But the Roman code of fighting was strict; one should not fight unless he had taken the soldier's oath. Cato's son, who had been dismissed from service, stayed on in the army through love of military life. Cato protested that he must take a second oath, for the first one having been annulled, it was not lawful for him to engage the enemy.⁵³

A conflict between those who favored war and those inclined toward peace is revealed in speeches during the Punic wars. The spokesmen for peace explain that peace creates and preserves wealth; war spends and destroys it. Those who direct affairs should not arouse the people to war, unless it can be proved really advantageous. Is it not absurd to seek success in a foreign war before we have first set our own city's affairs in order? It would be well, at least, to avoid all "appearance of beginning war" and to "seem forced rather to defend oneself against aggression." Lentulus argues, however, that war preserves our own possessions and wins others', but peace destroys even what previous wars had gained. We must treat our own people worthily; but the enemy must be humbled.⁵⁴ Reverberations of these arguments—the gains of war, the demoralizing effects of peace—continue long after Rome's conquests had ended. It seems to have become a theme of school essays. Valor in war had enabled Rome to grow, pull down Sicily and Carthage, and then seize "the whole world at once." Later she grew feeble and "gave loose rein to peace"; and "a long, heavy peace is the ruin of the sons of Romulus."⁵⁵

⁴⁹ *Republic*, III, 25; *Philippic* VI, 7.

⁵⁰ *Offices*, I, 11.

⁵¹ *Republic*, III, 23.

⁵² *Offices*, I, 23.

⁵³ *Ibid.*, I, 11, 17.

⁵⁴ *Dio's Roman History*, XIII.

⁵⁵ Sulpicia's "Complaint on the Condition of the State and the Times of Domitian," formerly credited to Ausonius.—Appendix to *Ausonius*, v.

War is ever more tempting to those who anticipate gains than to those who have already won them. That state which sees no more profitable fields to conquer is apt to view force merely as a means to restrain aggressors who would disturb the enjoyment of its gains. Praise of peace, on the basis of the *status quo*, arose in Rome. Ovid, amid the ease and plenty of post-Actian days, proclaimed: "Come, Peace, thy dainty tresses wreathed with Actian laurels . . . abide in the whole world . . . [and] thou shalt be unto our chiefs a glory greater than war. May the soldier bear arms only to check the armed aggressor. . . ." ⁵⁶

Certain Romans, though they praised Rome's "glorious" feats of arms, understood the aftermath of conquest. Would it not have been better to be satisfied with Sicily and Africa, or even with dominion of Italy, than to grow so great and be ruined by one's own power? What has caused "domestic strife but excessive prosperity"? It has debased "the morals of the age," and the state is "engulfed in its own vices as in a common sewer." ⁵⁷ This is *post factum* wisdom; it is for the few, not the many. For most Romans, doubtless, the choicest epitaph would have been like that of Scipio Barbatus:

. . . a man both wise and valiant, . . .
 Consul, censor and aedile he became among you,
 Taurasia, Cisauna, and Samnium he conquered,
 Reduced Lucania wholly, and hostages exacted.⁵⁸

The Romans were an eminently practical, methodical, unimaginative people, excelling in deeds rather than in ideas. Thus they judged themselves. Sallust says that "the best citizen preferred action to words." ⁵⁹ Virgil granted his city pre-eminence in affairs of empire, but conceded that others could "mould more deftly the breathing bronze" and excel in creative arts. Among the examples of Roman inferiority some would include part of Virgil's own poetry. Of course, opinions vary widely: Niebuhr judged the *Aeneid* a "misdirected thought" from beginning to end; Comparetti, on the other hand, viewed it as the greatest poem ever written. However one may rate a particular poem, many would agree that "conscious study of style, direct imitation of Hellenic models, even slavish translation, came first of all." ⁶⁰ Indebtedness to Hellas is everywhere evident—Homer in Virgil, Menander in Terence, Plato in Cicero—yet, despite all this, there is a Roman stamp, a practical aspect in Cicero and Caesar, not

⁵⁶ *Fasti*, I, 709-24. Trans. by J. G. Frazer. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁵⁷ *Florus*, I, 47.

⁵⁸ Lawton: *op. cit.*, p. 17.

⁵⁹ *Catiline*, 8-9.

⁶⁰ Lawton: *op. cit.*, pp. 6, 155.

to be found in anything Greek; and who can match the great poem of Lucretius?

Even in empire-building, his greatest accomplishment, the Roman's "practical common-sense and lack of imagination" were outstanding traits. "The Roman had no subtle and far-reaching programme of foreign policy . . . did not look beyond the morrow."⁶¹ In various other fields the Romans were borrowers rather than creators. Cato declared that, like sheep, they followed readily the lead of others.⁶² Their early religion was a prosaic, primitive animism. Greek myths were borrowed and associated with Roman deities; certain Greek cults were taken over directly. Practical arts, too, in which they became most renowned, they first learned from others, inventing "little or nothing" on their own initiative.⁶³ The primitive peasants knew nothing of the sea and commerce, and, as some think, little of war. Army organization, fortifications, and improved methods of fighting were learned from Etruria and Hellas.⁶⁴ The Greeks brought to Italy, also, the cultivation of olives and vineyards and a modification of the Phoenician alphabet, and furnished models for sculpture, ceramics, and architecture. It is said that play is an index to the bent of a people. All peoples play, of course, but some more joyously and creatively. In this domain, too, Romans borrowed from Etruscans and Greeks, not only public amusements, but children's games as well.⁶⁵

The relative lack of creative accomplishment may be due partly to the fact that man individually "counted for little in the Roman world."⁶⁶ Perhaps, too, the Romans were unfortunate in coming after the Greeks, with whom, to their disadvantage, they have been constantly compared. It was natural that they should turn to those who had gained predominance in creative arts. What might have happened had they developed more independently?⁶⁷ No one can say. There seems to have been a deep-rooted preference for active rather than contemplative life. Cicero, though he thought literary affairs suited his nature best, returned to them only because he saw no place in the Senate or forum for his former activities; because times were evil, and only study could ease his mind or bring surcease of sorrow.⁶⁸ Musonius is thoroughly Roman when he says that neither men nor women should devote themselves wholly to philosophy. Is it strange that such a people should have become more famous for

⁶¹ Homo: *Primitive Italy and the Beginnings of Roman Imperialism*, pp. 255 f. Trans. by V. G. Childe. Courtesy of Kegan Paul, Trench, Trübner & Co., Ltd., London.

⁶² Plutarch: *Cato*, 8.

⁶³ Paul-Louis: *Ancient Rome at Work*, p. 5.

⁶⁴ Frank: *op. cit.*, p. 3; Cary: *op. cit.*, p. 18.

⁶⁵ McDaniel: *Roman Private Life*, p. 143.

⁶⁶ Paul-Louis: *op. cit.*, pp. 20 f.

⁶⁷ Abbott: *Society and Politics in Ancient Rome*, pp. 161 ff.

⁶⁸ Cicero: *Letters to His Friends*, iv, 3-4; v, 15; *Letters to Atticus*, iv, 18.

baths, aqueducts, amphitheatres, gigantic shows, their empire, legal codes, and roads than for charting the highways of the mind?

Preoccupation with material possessions, a deep concern with business success, Horace thought, had been prejudicial to intellectual effort. Roman boys learned in school to divide an *as* into a hundred parts, and knew well what remained if one *uncia* were taken from five. With this love of gain dyed in the soul, as it were, who could hope for poems worthy of cedar oil and polished cypress?⁶⁹ Attitudes towards getting, having, and spending conformed to a certain pattern; not all wealth was highly regarded. There was contempt for one who squandered an inheritance and one who leaped from poverty to riches. Cato ridiculed a man who sold his seaside estate, for he had swallowed easily what the sea could not.⁷⁰ Scipio dealt generously with his family, but was regarded as exceptional; for Romans, being "excessively particular" about money, were not inclined to "pay a single talent before the appointed day."⁷¹ Landed wealth was eminently respectable; petty business was decried. Commerce on a grand scale, however, was "not so despicable"; and a man who stepped from it into "an estate" justly deserved praise.⁷²

Rome's wars were justified as a defense of property and as a means of getting the property of others. Though the aristocracy deprecated the vulgar pursuit of wealth, they went after it if ventures promised large returns. Excessive wealth produced a love of luxury that ultimately infected "most of the people"—a weakness which even Cato's measures could do little to rectify. It is hard, said he, to save a city where "a fish sells for more than an ox."⁷³ Lucilius (180-103 B.C.) depicts the vulgar spirit of contemporary Rome—the bustle from dawn till dark, competitiveness, craft, deception. His pattern of virtue is a fit summary of the early Roman ideal:

Man's virtue is to know each thing's true worth,
What's good or bad, useless, dishonest, base:
To know the limits in our quest of gain,
To pay the proper honor unto wealth,
To grant to office that which is its due,
To be the foe of evil men and deeds,
To count one's country's welfare first of all,
And next our parents'; after that our own.⁷⁴

⁶⁹ *Art of Poetry*, Wickham's *Horace*, pp. 356 f.

⁷⁰ Plutarch: *Cato*, 8; *Sulla*, 1.

⁷¹ Botsford, G. W., and Botsford, L. S.: *The Story of Rome*, p. 148.

⁷² Cicero: *Offices*, I, 42.

⁷³ Plutarch: *Cato*, 8, 18.

⁷⁴ Lawton: *op. cit.*, p. 61.

EARLY ROMAN EDUCATION

Educational development, broadly considered, falls into two main types.⁷⁵ The first, the old Roman education, continued relatively unchanged to about the middle of the third century B.C., when Rome's conquests spread beyond Italy. The second type, the "new" education, was a fusion of Roman and Hellenic elements gradually perfected after this time. In the process of mutation from the first type to the disintegration of the second, several more or less distinct stages appear: the purely Roman, to 240 B.C.; a transition from the old to the new, dating from about 240 B.C., when Andronicus translated the *Odyssey*, to 55 B.C., the date of Cicero's *De Oratore*; vigorous maturity of the perfected Hellenized Roman pattern, 55 B.C. to 95 A.D., when Quintilian's *Institutio Oratoria* appeared; and a decline, slight at first, then more and more pervasive, until Roman education was supplanted by a Christian pattern. Such a periodization, though useful, should not be overemphasized or interpreted so strictly as to obscure the fact that life moves in a continuous stream, and certain elements of old patterns survive amid the new. Some persist, indeed, long after the dissolution of Roman polity.

THE FAMILY AND EDUCATION Perhaps as early as 1000 B.C. the family had emerged from the gens.⁷⁶ Though the gens name still remained, the family became the most important educational agency. The family tie was strengthened by religious belief: souls of the dead lived on, haunting burial places and requiring sustenance. Children provided for the departed spirits, which, if cared for, guarded the living. To be without descendants was, under such circumstances, a curse.

Authority of the paterfamilias over his household was extensive. At birth the child was laid before him to be taken up and admitted to family membership or to be refused and exposed. The Twelve Tables gave the father power of life and death over his son; he might even sell him, but after the third sale the son was freed from paternal control. Neither age, rank, offices, nor honors released a son from filial bonds.⁷⁷

Woman's sphere was one of subjection: in girlhood, to her father; in marriage, to her husband; if unmarried at her father's death, she was commonly under the guardianship of an older brother. About the age of twelve a girl might marry. Marriage was strictly guarded. Though the Canuleian Law (445 B.C.) legalized intermarriage, it scarcely succeeded in destroying Patrician exclusive-

⁷⁵ Marquardt: *Das Privatleben der Römer*, p. 81.

⁷⁶ Cary: *op. cit.*, p. 14.

⁷⁷ Botsford: *op. cit.*, p. 93; Cicero: *Caecina*, 34; Gibbon: *The Decline and Fall of the Roman Empire*, III, 682 f.; Johnston: *The Private Life of the Romans*, pp. 29 ff., 76 f.

ness.⁷⁸ Marriages were arranged by heads of families; a girl's consent was unnecessary. Though *confarreatio* symbolized union of body and soul, it was not a union of equals. The wife was legally under the hand of her husband, who could "with the approval of the family council" inflict physical punishment or even take her life.⁷⁹ Though her property and earnings became her husband's, the wife shared in his estate, her inheritance being controlled by a guardian, according to her husband's will.

Despite numerous restraints, Roman women enjoyed a more dignified status than did those of Greece. The mother cared for her children's education, lived with the rest of the family rather than in a separate apartment, ate with her husband and guests, shared in conversation (save for intellectual and political matters of which she was supposedly ignorant), and participated in certain religious affairs. Her behavior was marked by gravity and reticence; light accomplishments were inconsistent with the age. The long-established custom of kissing her kinsfolk was conducive to sobriety. Drinking is said to have been punished no less severely than adultery.⁸⁰ Roman writers warm to the theme of wifely industry, rectitude, and courage. Lucretia is busy at her wool, late at night; with "manly courage" she chooses to die rather than live dishonored.⁸¹ Horace portrays the labors of rural domestic life:

. . . a modest wife that plays her part—
That keeps her house, her children rears—
Like Sabine wife, or like the sun-tanned wife
Of some industrious Apulan,
Piles up old faggots on the sacred hearth
'Gainst coming of her toil-worn man,
And, shutting in the wattled pound the cattle,
Milks their distended udders dry,
And, drawing from the cask wine of the year,
Prepares the meal she does not buy. . . .⁸²

In contrast with this picture of domestic seclusion, certain women were credited with courageous action and an influence on public affairs. Hersilia persuaded the Sabine king to pardon the Romans.⁸³ Veturia and Volumnia so

⁷⁸ Livy, IV, 3-4; Cary: *op. cit.*, p. 118, n. 2.

⁷⁹ Aulus Gellius, *The Attic Nights*, x, 23; Abbott: *op. cit.*, p. 52.

⁸⁰ Gellius, x, 23; Tertullian: *Apology*, vi, 3-6; Dill: *Roman Society in the Last Century of the Western Empire*, p. 163; Fowler: *Social Life at Rome in the Age of Cicero*, pp. 143 ff.

⁸¹ Ovid: *Fasti*, II, 847; Livy, I, 57-9.

⁸² Horace: *Epode* II. Trans. by A. F. Murison. Courtesy of Longmans, Green & Co., Inc., New York.

⁸³ Livy, I, 11; Ovid: *Fasti*, appendix, pp. 407 f.; Plutarch: *Romulus*, 19.

influenced Coriolanus' actions that the men of Rome praised them and erected a temple to "female Fortune" as a monument.⁸⁴ In the time of Camillus, women gained public esteem by voluntarily giving their ornaments to make up for a shortage of gold. As a reward the Senate set aside an old custom and provided that "thereafter, when women died, a suitable eulogy should be spoken over them, as over men."⁸⁵

There were certain exceptions to the rule of feminine dignity and propriety. Even the solemn duties of Vesta's temple did not make all sober and severe. Postumia was suspected of unchastity because her dress was more gay, her manners less reserved, than befitted a virgin. Though acquitted, she was ordered to refrain in the future from indiscreet mirth and to dress with more regard for sanctity than for elegance.⁸⁶ During the First Punic War, the Plebeian aediles fined a woman of rank because of arrogant language inconsistent with the dignity of Roman conduct.⁸⁷

The old Roman ideal survived (at least in letters) amid the social turmoil of the late Republic and the Empire, contrasting sharply with the degradations of the new age. Lucretius Vespillo portrays his wife as true, obedient, kind, gracious, sociable, friendly, industrious at spinning, faithful in religion, not given to magic, unostentatious, and caring for her husband's mother as for her own.⁸⁸ Claudia's epitaph reflects the old ideal:

Her husband she did love with all her heart.
Two sons she bore him. . . .
Of gentle speech she was, and gracious mien.
She kept her house, span wool. All's said. Farewell.⁸⁹

Life in early Rome was marked by severe simplicity. Little clothing was needed because of mild climate and a life of vigorous exercise. The farmer in the field often wore nothing but a loincloth; for household wear a tunic, reaching to the calf, or shortened by the use of a belt, sufficed. A toga was necessary only for public affairs and formal occasions. Cato mentions a tunic three and one-half feet in length, stout wooden shoes, and a blanket, as the proper amount of clothing to be issued "every other year" to farm hands.⁹⁰ Clothing was made in the household from homespun wool, woven on crude looms by the women and girls or by slaves under their direction. Even under the Empire

⁸⁴ Livy, II, 40; Plutarch: *Coriolanus*, 33, 37.

⁸⁵ Plutarch: *Camillus*, 8.

⁸⁶ Livy, IV, 44.

⁸⁷ Gellius, X, 6.

⁸⁸ Fowler: *op. cit.*, pp. 160 ff.

⁸⁹ Lawton: *op. cit.*, p. 17.

⁹⁰ Cato: *On Agriculture*, 59; Johnston: *op. cit.*, pp. 176, 179.

domestic production, though no longer a necessity, was still practiced to some extent. Augustus, who sought to restore somewhat the integrity of a bygone age, had his daughter and granddaughters learn to spin and weave.⁹¹

Diet followed the rule of simplicity, vegetables and cereals being most common; food was often eaten cold. Water, the common drink, was mixed with wine if available. Wheat, bread, "after-wine," "wind-fall olives," "fish-pickle and vinegar," oil, and salt, Cato says, should be strictly meted out by the master to his field workers.⁹² Service was provided by members of the family until household slaves became cheap and plentiful. Professional cooks were unknown in Rome before 174; bakeries did not appear till about 171 B.C.⁹³

The primitive Roman house and its furnishings were crude. All domestic activities were carried on in a large room, the atrium. An opening in the center let the smoke out and light and rain in. Windows were at first unknown; there was only one door. A place for the fire, implements for spinning, weaving, and cooking, a strongbox for valuables, and pallets for sleeping were the chief furnishings.⁹⁴

Glimpses of old Roman education, though somewhat meager and unsatisfactory, may be gained from later writers. Due allowance must be made, of course, for exaggeration and idealization, apt to be indulged in by those who look back at a receding age whose passing they deplore.

Early Roman education centered in the family. Life dictated the curriculum. Mothers and fathers were the teachers: the mother, in respect to the duties of little women; the father, in affairs pertaining to the farm, the army, the forum, and religion. Though education was by the family, it was for the state. Calvus, when offered the office of military tribune, urged the people to accept his son, brought up under his own discipline, whom he would dedicate to the commonwealth in his stead.⁹⁵ Cicero accepted the old purpose and recommended that knowledge which would make men "useful to the State." This is the noblest function of wisdom, for nothing is higher than one's duty to the state. Those who serve their country are assigned a place of rest in the Milky Way.⁹⁶ Plutarch cites, as proof of the nobility of Cato the Younger, that he "chose a public career" rather than the pursuit of riches.⁹⁷ Though for the state, education was not supported or controlled by it. The Romans, unlike the Greeks, never wanted a uniform "system of education," officially ordained and estab-

⁹¹ Suetonius: *Augustus*, 64.

⁹² On *Agriculture*, 56-8.

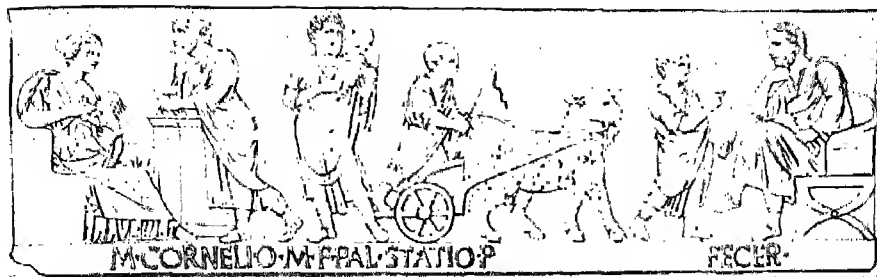
⁹³ Mommsen: *op. cit.*, III, 123; Fowler: *op. cit.*, pp. 32, 39.

⁹⁴ Sandys: *Companion to Latin Studies*, pp. 217 f.; Johnston: *op. cit.*, pp. 133 ff.

⁹⁵ Livy, V, 18.

⁹⁶ Cicero: *Republic*, I, 20; VI, 16; *Offices*, I, 6, 17.

⁹⁷ Cato the Younger, 19.



ROMAN FAMILY LIFE AND EDUCATION

(Archäologische Zeitung, XLIII, Pl. 148)

lished by law. This feature Cicero held to be best,⁹⁸ but Polybius criticized it as a weakness of Roman institutions.

What was the "old ancestral discipline" of the Roman Republic? We know it chiefly through sources from the late Republic and Empire. Pliny⁹⁹ informs us that "in the olden time" Roman youth learned by the precept and example of their elders how they should act and what they should in due time transmit to their own children. Cato (234-149 B.C.) was present while his wife washed and dressed their child, whom he taught himself rather than turn "such a priceless thing as education" over to a slave-schoolmaster. To this end he wrote out the history of Rome "in large characters," so that the boy might learn the ancient traditions of his country; and at a proper age he tutored him in Roman law.¹⁰⁰ Even when the "new education" had begun to flourish, the father still often assisted in his son's education. Aemilius Paulus trained his sons in the "ancestral discipline" to which he had been accustomed, adding Greek learning which had then become popular.¹⁰¹ Cicero, having had an unsatisfactory master for his boys, gave them lessons himself.¹⁰² Horace credited his good repute to his father who, though he had but a little farm, took his son to Rome for the best possible education, went with him daily to lectures, and was ever present to keep him safe from shameful deed or breath of scandal.¹⁰³ Suetonius says that even Augustus taught his grandsons "reading, swimming, and the other elements of education. . . ."¹⁰⁴

In early times Roman mothers generally nursed their children, but wet nurses were sometimes employed. Though it was less common in her day, Cato's wife bathed, dressed, and nursed her own son, and even some of her

⁹⁸ Republic, iv, 3.⁹⁹ Letters, viii, 14.¹⁰⁰ Plutarch: Cato, 20.¹⁰¹ Plutarch: Aemilius Paulus, 6.¹⁰² To Atticus, viii, 4.¹⁰³ Horace: Satires, i, 6.¹⁰⁴ Augustus, 64.

slaves' babies.¹⁰⁵ The diet of children was simple and spare in early days, as was that of the whole family. There was then no danger of "immature children" eating "a great deal" and sleeping "too much"—practices which Varro thought bad for their health.¹⁰⁶ The mother's concern went beyond physical care. As the first teacher and moral guide, her influence or that of some kinswoman was of paramount importance, according to Tacitus: "In the good old days, every man's son, born in wedlock, was brought up not in the chamber of some hireling nurse, but in his mother's lap, and at her knee. And that mother could have no higher praise than that she managed the house and gave herself to her children. Again, some elderly relative would be selected in order that to her, as a person who had been tried and never found wanting, might be entrusted the care of all the youthful scions of the same house; in the presence of such an one no base word could be uttered without grave offence, and no wrong deed done. Religiously and with the utmost delicacy she regulated not only the serious tasks of her youthful charges, but their recreations also and their games. . . . The object of this rigorous system was that the natural disposition of every child, while still sound at the core and untainted, not warped as yet by any vicious tendencies, might at once lay hold with heart and soul on virtuous accomplishments, and whether its bent was towards the army, or the law, or the pursuit of eloquence, might make that its sole aim and its all-absorbing interest."¹⁰⁷

The moral influence of fathers and mothers became weaker, doubtless, under the pressure of great social changes, but Cornelia, Aurelia, and Atia are said to have educated their own children, the Gracchi, Caesar, and Augustus. In certain families this influence persisted under the Empire. Marcus Aurelius says that he owed to his mother "piety and beneficence," abstinence from evil deeds and thoughts, and simplicity of living.¹⁰⁸ Cato is said to have been as careful of speech in his son's presence as he would have been before the Vestal Virgins. In keeping with old Roman practice he never bathed with his son, being ashamed to appear naked.¹⁰⁹ Marcus Aurelius¹¹⁰ credited to his father his modesty and manliness, and to his grandfather "good morals" and control of his temper.

The purpose of education in ancient Rome was thus to preserve the *mos maiorum*, to bring up youth according to an established pattern of life. As Ennius said:

¹⁰⁵ Plutarch: *Cato*, 20.

¹⁰⁶ Gellius, iv, 19.

¹⁰⁷ Tacitus: *A Dialogue on Oratory*, 28. Trans. by W. Peterson. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁰⁸ *The Meditations of the Emperor*, 1, 3.

¹⁰⁹ Plutarch: *Cato*, 20.

¹¹⁰ *Meditations*, 1, 1-2.

The commonwealth of Rome is founded firm
On ancient customs and on men of might.¹¹¹

In the formation of the future worthy father and citizen, obedience, piety to the gods, respect for law, physical health, strength, dexterity, good physical carriage, modesty in speech and behavior, practical ability, confidence in one's powers and the destiny of Rome, and native intelligence were all highly prized.¹¹²

The source of authority in all things pertaining to education lay in the powers of the father. If he accepted a child, it was given a name on the ninth day, if a boy; on the eighth, if a girl. The *dies lustricus*, significant of religious purification and dedication, was celebrated by an offering in the household or at a temple. To guard against enchantments a *bullā* was hung about the neck, to be worn by boys till manhood and on certain occasions afterwards; by girls, until marriage.¹¹³ Not until manhood was the name officially registered.

To about seven years of age boys and girls were educated in the home, learning correct habits in manners and speech under the mother's care. Cicero thought that women, more than men, were apt to "preserve the ancient language unaltered"; and that rules for speaking Latin were unnecessary, since "the teaching given to children conveys" that in the home.¹¹⁴ Reading, writing, and elementary arithmetic were also taught in the home.¹¹⁵ The daughter's education usually came to an early end because of marriage. In spinning, weaving, and other housewifely arts she was duly instructed, "learning to do by doing." Horace portrays the countryman's wife, gracing his house with her children, piling the hearth with logs, drawing wine, and preparing the meal. Shutting the cows in the fold and milking them were also among her labors.¹¹⁶ Cato's recipes for making cakes and preserving fruits suggest other phases of domestic economy¹¹⁷ which girls must have learned betimes.

GAMES AND EXERCISES OF YOUTH It has been said that the Greeks were always children, the Romans always men. At best it is only a half-truth. Though life in the Roman household, with its emphasis on duties, manners, correctness of speech, *pietas* and *gravitas*, may appear somber, subdued, and even severe, the cries of children at their play may be heard, if one but listen. When Quintilian expressed his approval of "play in the young" as "a sign of a

¹¹¹ Cicero: *Republic*, v, 1. Trans. by C. W. Keves. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹¹² Marquardt: *op. cit.*, pp. 89 ff.

¹¹³ *Ibid.*, pp. 83 f.

¹¹⁴ *On Oratory*, III, 12-3; *Brutus*, 74.

¹¹⁵ Johnston: *op. cit.*, p. 84.

¹¹⁶ *Epode* II.

¹¹⁷ Plutarch: *Cato*, 25.

lively disposition,"¹¹⁸ he seems to be noting an observation made from life, not a bookish theory.

On the *dies lustricus* a ceremony of purification was performed, and friends, parents, and others of the household gave toys to the infant—miniature implements, axes, sickles, swords, half-moons, flowers—which were sometimes strung and hung about the neck. These toys, collectively called *crepundia*, were thought to have a magic charm against evil spirits—but children knew nothing of this till they grew older! Besides *crepundia*, dolls, wagons, carts, tops, balls, hoops, hobbyhorses, and stilts were common playthings of the young.¹¹⁹ Pet animals and birds—dogs, cats, goats, geese, quails, doves, ducks, crows, pigeons, and even mice and monkeys, all helped to while away the long hours of childhood.

Roman children had a host of games, many of them common to other ancient lands and to primitive peoples the world over. Most of them, probably, were played by girls as well as boys, though not all. Among the physically less active were various games with dolls, nuts, knucklebones, "odd and even," "guess how many," tossing coins, dice, and many board games, the prototypes of checkers, chess, and backgammon. Cicero says that from antiquity the Romans had a proverb which they used to commend one's integrity: "He is one with whom you might play odd and even in the dark."¹²⁰ A favorite game with astragals, requiring much skill, was to toss up five and catch as many as possible on the back of one's hand. They were also thrown from the hand or a box, like dice, each of the various combinations having a special designation—the lowest, "Vulture," the highest, "Venus." So common were games with nuts that *nuces relinquere* (to take leave of nuts) was a common expression to denote the end of childhood.¹²¹ Ovid mentions many games played by children with nuts. Six games are known to us. In one, several nuts were laid on the ground, and the player, trying to touch one or more of them, rolled another down an inclined board. Another game (*ludus castellorum*) consisted of laying three nuts together and throwing a fourth so as to lie upon them without moving them apart, the winner taking all. Again, a triangle, marked off with several parallel lines, was drawn upon the ground, and players threw or rolled nuts so as to cause them to touch as many lines as possible and yet remain within the delta. Another game was to toss nuts a certain distance into a dish or hollow cavity.

Children have played the "king game" in many lands. As Romans played it, a "king" was chosen by lot, who then commanded the others to do whatever

¹¹⁸ *The Institutio Oratoria*, I, 3, 10.

¹¹⁹ Sandys: *op. cit.*, pp. 176, 227; Johnston: *op. cit.*, pp. 78, 82 f.; McDaniel: *op. cit.*, p. 67.

¹²⁰ *Offices*, III, 19; Ovid: *The Walnut Tree*, 73–86.

¹²¹ Marquardt: *op. cit.*, p. 839.

pleased him. Again, a winner in other group games seems to have been chosen king. Horace alludes to the custom when he speaks of schoolboys at their game, who say:

Do right the thing and you'll be king.¹²²

Among the more active games were: seesaw; hide-and-seek; skipping stones; rolling hoops, with trinkets attached to warn the unwary; blindman's buff; whipping tops; riding stick-ponies; walking on stilts; building houses; driving goats or other pets, hitched to little carts; and various games with balls. Rolling the "Greek hoop" seems to have been considered a bit effeminate, unfit for older boys at any rate.¹²³ Virgil's pen picture of boys at their tops fits almost any age and any land:

Just as at times a top, set a-twirl by the stroke of a whip-lash,
Boys urge onward through vacant courts in widening circles,
Deeply intent on the sport; impelled by the cord it is driven
Round its bewildering track, while over it stand the untutored
Throng of beardless boys admiring the musical box-wood,
Giving their minds to the stroke. . . .¹²⁴

Ball games, involving throwing up into the air, passing from one to another, striking with the hand against wall and ground, and bowling on the ground—a prototype of *boccia* of to-day¹²⁵—became popular in Italy, but the time of origin of each and the rules for playing are for the most part obscure. The *pila* was a small ball; the *pila paganica* was larger and stuffed with feathers or similar material; the *follis* was still larger and inflated.¹²⁶ In early times, when exercise for military values was most stressed, ball-play must have been much less prominent than in the late Republic and under the Empire, when it became a common means of warming up for the bath,¹²⁷ and was a popular activity in every gymnasium.

As years advanced, more serious purposes were served by the games of youth: there was constantly a concern for *mens sana in corpore sano*, not for the sake of beauty, not for the satisfaction of the individual, but that the citizen might be serviceable in military affairs. To this end the most primitive and natural exercises known to man—hunting, running, jumping (height and distance), wrestling, boxing, throwing the stone, the ball and the pike, and riding horse—

¹²² *Epistles*, I, 1; Marquardt: *op. cit.*, p. 838.

¹²³ Horace: *Odes*, III, 24.

¹²⁴ *Aeneid*, VII, 378–83. Trans. by H. H. Ballard. Courtesy of Charles Scribner's Sons, New York.

¹²⁵ McDaniel: *op. cit.*, p. 68.

¹²⁶ Ramsay and Lanciani: *A Manual of Roman Antiquities*, pp. 486 f.

¹²⁷ Martial: *Epigrams*, VII, 32.

back—were employed, constituting a premilitary training for older boys and young men. To these were added also exercising with sword, shield, and spear, on foot and on horseback. For this training the *Campus Martius* was set off along the Tiber, where youths and men might exercise every day. The early Romans knew no other places of exercise, whether of work or play, than the woods and farms and the Field of Mars.

Hunting and fishing were at first necessary to man's livelihood; he continued hunting when he became shepherd and farmer in order to save his flocks and crops and as a sport for leisure. Hunting is among the earliest named sports of Roman youth. The wild boar and smaller game were abundant. Romulus and Remus were said to have roamed the hills and dales for game, thus perfecting their strength and courage by encounters with wild beasts and by attacking robbers.¹²⁸ Tarquin, when seeking the crown, was said to have sent his predecessor's sons, who were almost grown up, away on a hunting trip.¹²⁹ Horace, looking back longingly to "early generations of mankind," portrayed convincingly the lure of hunting: "And then when the wintry months of Jove the Thunderer gather storms and snow, he either drives this way and that with his pack of dogs the wild boars into the toils set for them, or spreads on smooth pole the wide-meshed nets to catch the greedy fieldfares, or sets snares for the timid hare and the crane from over seas, sweet prizes."¹³⁰

Swimming was a necessity for Roman soldiers and was presumably learned early by those who dwelled on Tiber's banks. Horatius, famed for prowess as fighter and swimmer, may well have been one of the heroes whose deeds were sung around the festive family board. Fathers taught their sons this pleasant, useful art. Cato, who sought to keep up old Roman practices, brought up his son to "swim lustily through the eddies and billows of the Tiber."¹³¹ Augustus, likewise, is said to have taught his grandsons swimming.¹³² In respect to bathing the Romans felt a modesty unknown to the Greeks. Cicero speaks of the well-established custom that ". . . sons grown up to manhood do not bathe along with their fathers, nor sons-in-law with their fathers-in-law."¹³³ Younger sons, one infers, did bath and swim with their fathers.

Though they had no sports or competitions peculiarly their own, girls evidently learned to swim, in some cases, at least, if credence be given to various references to Cloelia's swimming the Tiber with other girls. Accounts of her

¹²⁸ Livy, I, 4-5.

¹²⁹ Ibid., I, 35.

¹³⁰ Epode II, From *Horace for English Readers*, translated by E. C. Wickham (The Clarendon Press).

¹³¹ Plutarch: *Cato*, 20.

¹³² Suetonius: *Augustus*, 64.

¹³³ *Offices*, I, 35.

feat vary. Plutarch says that the girls "were seized with a desire to swim away" from their captors, despite "the depth and whirl of the strong current"; and he adds that "some say" Cloelia "crossed the stream on horseback, exhorting and encouraging the rest as they swam."¹³⁴

Music and dancing ill comported with Roman gravitas. Though they played some part in Roman life, they had no such place in the education of early Roman youth as they occupied among the Greeks. It has been said that the Latins were "as nearly strangers to the Muses as any people well can be."¹³⁵ Some rudimentary songs, however, children may well have learned to repeat and imitate, since they were not excluded from the meals of their elders, and sons were even taken by their fathers when they dined out with friends. Cicero says of these old songs that it was a custom for "guests at table to sing one after the other to the accompaniment of the flute in praise of the merits of illustrious men."¹³⁶

Both music and dancing were in early days chiefly associated with religious cults, funeral processions, triumphs, games, and other public affairs. The fact that these came to Rome from Etruria and later from Greece probably accounts, in no small degree, for Roman aloofness. Romans accepted dancing as a part of the *Ludi Magni*, the so-called Great Roman Games, and men, youth, and boys took part, armed with helmets, swords, and lances. These, however, were special occasions. They viewed with awe the religious processions and rites of the *Fratres Arvales*; and the sacred martial dances of the *Salii*, the Priests of Mars, who each year bore the sacred shields and chanted the *Salviorum Carmina* on the Kalends of March and following days.¹³⁷ But they did not join in these ritualistic movements and hymns. Dancing and music continued, even in later times, to be associated with a life unworthy of the good and noble. Sallust complains that Sempronia could "play the lyre and dance more skilfully than an honest woman need. . . ." ¹³⁸ Dancers are reckoned by Cicero among others who follow mean professions.¹³⁹ Cicero thought highly of Socrates, but must have blushed to think of his learning to dance!

The gymnastic training of the Greeks seemed ridiculous to the Romans.

¹³⁴ Plutarch: *Publicola*, 19. Trans. by B. Perrin. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.; Livy, II, 13; Dio, XLV, 31; Florus, I, 4.

¹³⁵ Lawton: *op. cit.*, p. 16.

¹³⁶ *Tusculan Disputations*, IV, 2. Trans. by J. E. King. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.; Brutus, 19; Plutarch: *Roman Questions*, 33.

¹³⁷ Marquardt: *op. cit.*, p. 835; Fowler: *The Roman Festivals of the Period of the Republic*, pp. 35 ff.; Ramsay and Lanciani: *op. cit.*, pp. 381 f.

¹³⁸ *Catiline*, 25.

¹³⁹ *Offices*, I, 42.

Though they adopted the gymnasium when they grew older and turned to a more luxurious life, many of the most steadfast citizens could not contain their contempt. Tacitus vents disapproval of the shift from practice in "arms of legitimate warfare" to the exercises of the gymnasium.¹⁴⁰ Cicero, too, long before him, had expressed contempt for the absurd Greek system of training in gymnasia—such a ludicrous preparation for the burdens and dangers of war! The objection of Romans to gymnasia was doubtless due, in part, to their aversion to exposure of the body, for, as Ennius says: "Shame's beginning is the stripping of men's bodies openly."¹⁴¹

The young play games; the old mostly look on at them. If there be some truth in the saying, "Romans were always men," it seems to find partial support in the fact that they gave themselves so readily and consistently to watching the public games of the circus and amphitheater, and so little to participation in competitive sports, and then chiefly to those useful in war.

Public games of the circus are traced back, though somewhat vaguely, to the earliest days of Rome, but they continued in relatively moderate proportions during the early centuries of the Republic. At the end of the Republic, however, sixty-six days were given to games. Romulus is said to have arranged games in honor of Equestrian Neptune and called them *Consualia*, proclaiming them to neighboring towns, attracting among others the Sabines, whose women were then taken.¹⁴² Etruscan Tarquin, having had a victory over the Latins at Apiolae and taken great booty, is said to have celebrated games with more splendor than the former kings, laid out the Circus Maximus, provided places where knights and senators could erect seats for themselves, and brought horses and boxers from Etruria. These games, *Ludi Magni* or *Ludi Romani*, were afterwards celebrated annually. Capitoline Games were ordered exhibited by Camillus (390 B.C.), and a special *Collegium* was created to care for their performance, in honor of Jupiter who had protected the citadel of the Romans against danger. The Plebeian Games were first celebrated in 220 B.C.¹⁴³ The Apollinarian Games, the first fixed, annual festival in honor of a Greek god, were instituted during the struggle with Hannibal (212 B.C.) in order to gain victory, the Romans being assured that, if the games were properly performed, Apollo would destroy the enemy. According to another account these games were set up to combat a pestilence. They were at all events made permanent, in 208 B.C., in an effort to counteract such an epidemic.¹⁴⁴

¹⁴⁰ Tacitus: *Annals*, xiv, 20; Varro: *On Agriculture*, ii, introduction.

¹⁴¹ Cicero: *Tusculan Disputations*, iv, 33; *Republic*, iv, 4.

¹⁴² Livy, i, 9; Fowler: *Roman Festivals*, pp. 206 ff.; Johnston: *op. cit.*, p. 244.

¹⁴³ Livy, i, 35; v, 50; xxiii, 30; Wissowa: *Religion und Kultus der Römer*, pp. 111 f.; Fowler: *Roman Festivals*, pp. 215 ff.

¹⁴⁴ Livy, xxv, 12; xxvii, 23; Wissowa: *op. cit.*, pp. 239 ff.; Fowler: *Roman Festivals*, pp. 179 f.

THE SCHOOL OF LABOR ON THE LAND The life of the shepherd "is the treble," and the farmer "plays the accompaniment," says Varro.¹⁴⁵ The Roman boy's education was attuned with these two occupations of the land as soon as he left his mother's care. While little is known of the life of herdsmen and farmers before the Punic War, a glimpse of it may be gained from later Roman writers. Tending the herds must have occupied many a youth's long days, for the *terra Italia* was filled with "a great abundance of cattle," and was said, by one account, to have derived its name from an old Greek word *ἰταλοί*, meaning oxen; by another, from *vituli*, meaning bullocks. So great was early Italy's concern with herds that wealth was judged in terms of cattle, and fines were fixed at so many oxen and sheep.¹⁴⁶

Near the end of the Republic, Varro set forth certain requirements for herdsmen, young and old. The head herdsman must be literate, he says, "for one who does not know his letters is not fit for the place . . ." since he cannot keep correct account of his master's cattle.¹⁴⁷ Physical qualifications are stressed considerably, being differentiated for various types of work. "For herds of larger cattle older men, for the smaller even boys; but in both cases those who range the trails should be sturdier than those on the farm who go back to the steading every day. Thus on the range you may see young men, usually armed, while on the farm not only boys but even girls tend the flocks. The herdsmen should be required to stay on the range the entire day and have the herds feed together; but, on the other hand, to spend the night each with his own herd. They should all be under one herd-master; he should preferably be older than the rest and also more experienced, as the other herdsmen will be more disposed to take orders from one who surpasses them in both age and knowledge. Still, he should not be so much older that his age will prevent him from being as able to stand hard work; for neither old men nor boys can easily endure the hardships of the trail and the steepness and roughness of the mountains—all of which must be encountered by those who follow the herd, and especially herds of cattle and goats, which like cliffs and woods for pasturage. The men chosen for this work should be of a sturdy sort, swift, nimble, with supple limbs; men who can not only follow the herd but can also protect it from beasts and robbers, who can lift loads to the backs of pack animals, who can dash out, and who can hurl the javelin. . . ." ¹⁴⁸

Individual land ownership had been established at an early date. The beginning of agricultural pursuits, like many other useful arts of peace, was credited

¹⁴⁵ *On Agriculture*, I, 2, 16.

¹⁴⁶ *Cellius*, XI, 1; *Varro: On Agriculture*, II, 1, 9-10.

¹⁴⁷ *On Agriculture*, II, 10, 10.

¹⁴⁸ *Varro: On Agriculture*, II, 10, 1-3. Trans. by W. D. Hooper, rev. by H. B. Ash. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

to Numa, who sought to lead his people from warlike habits to the ways of peace, ". . . that they might be subdued and softened along with the soil they tilled."¹⁴⁹ To the time of the Punic wars, farming was still the all but universal peacetime occupation of Roman men, and senators drove their own oxen. Even in later days, when most labor had come to be looked upon with contempt, agriculture was praised as a worthy occupation for "a well-bred man."¹⁵⁰ Our ancestors put the countryman ahead of those who lived in cities, says Varro, and wisely so.¹⁵¹ When Romans wanted to praise a man, Cato tells us, they called him a "good husbandman" or "a good farmer," and thought this the "greatest commendation."¹⁵² For one's declining years rural labors were eminently fit, thought Cicero: "I come now to the pleasures of husbandmen, with which I am excessively delighted"; for these are not checked by "old age" and are best suited "to the life of a wise man," for they relate "to the earth, which never refuses command, and never returns without interest that which it hath received. . . ." ¹⁵³

The farm's hard labor was the school which strengthened body, limb, and hand.¹⁵⁴ The countryman worked for seven days and went to town on market days, *nundinae*, to sell his products, see friends, and learn of news. His farm was very small, perhaps as little as a half acre or as much as five; but with a primitive plow—"a tree trunk with a forked branch," in its earliest form—sickles, and axes, which were his chief implements, even so small a farm must have been enough to occupy the owner and perhaps an assistant or two.¹⁵⁵ Spelt, barley, and millet, the grains first cultivated, were supplemented by wheat about 450 B.C. The vine and the olive were so extensively grown in Varro's day that he asks: "Is not Italy so covered with trees that the whole land seems to be an orchard?" ¹⁵⁶

Horace, whose father's farm was a poor one, looked back with a wistful eye at the happy activities of the farmer, free from the "yoke of usury," far from "the insolent portals of the great"; plowing and reploting his ancestral acres; "wedding" the poplar and the vine; watching the lowing herds; pruning trees and grafting better stock; storing the freshly squeezed honey; clipping the passive sheep; and, in autumn, gathering the fruit of vine and tree.¹⁵⁷

Cato followed farming "in earnest when he was young and poor," learning

¹⁴⁹ Plutarch: Numa, 16-7; Livy, I, 19.

¹⁵⁰ Cicero: *Offices*, I, 42; Varro: *On Agriculture*, III, 1, 4-5.

¹⁵¹ *On Agriculture*, II, introduction.

¹⁵² *On Agriculture*, introduction, p. 3.

¹⁵³ Cicero: *On Old Age*, 15.

¹⁵⁴ Lucretius, V, 1360.

¹⁵⁵ Johnston: *op. cit.*, pp. 355, 365; Paul-Louis: *op. cit.*, pp. 51, 54.

¹⁵⁶ Varro: *On Agriculture*, I, 2, 6-7.

¹⁵⁷ *Epode* II.

to cultivate the stony soil of the Sabine country.¹⁵⁸ He is said to have regarded "farming and frugality" as the only paths to wealth—paths which he knew thoroughly and followed successfully. Farming, like other phases of life, had changed in some respects when he wrote his treatise on agriculture. Large farms had become common; slave labor was the rule, though some free labor was at times employed. Cato's directions as to kinds of work to be done, when and how, doubtless give an insight into farm activities with which he had been familiar in his youth.

Cato would choose a farm with "good, and naturally strong soil," well-watered; good, healthful climate, not beset by storms; and plenty of buildings. It should be at the foot of a mountain, facing southward, and preferably near a good town, on the sea or a navigable stream, or a good well-traveled road. There should be a plentiful supply of laborers. The farmer must have good neighbors and be able in certain seasons to secure voluntary assistance and hired labor.¹⁵⁹

The owner is advised to look carefully into the condition of everything about the farm, and check upon the way in which all work has been performed: "When the master arrives at the farmstead, after paying his respects to the god of the household, let him go over the whole farm, if possible, on the same day; if not, at least on the next. When he has learned the condition of the farm, what work has been accomplished and what remains to be done, let him call in his overseer the next day and inquire of him what part of the work has been completed, what has been left undone; whether what has been finished was done betimes, and whether it is possible to complete the rest; and what was the yield of wine, grain, and all other products. Having gone into this, he should make a calculation of the labourers and the time consumed. If the amount of work does not seem satisfactory, the overseer claims that he has done his best, but that the slaves have not been well, the weather has been bad, slaves have run away, he has had public work to do; when he has given these and many other excuses, call the overseer back to your estimate of the work done and the hands employed. If it has been a rainy season, remind him of the work that could have been done on rainy days: scrubbing and pitching wine vats, cleaning the farmstead, shifting grain, hauling out manure, making a manure pit, cleaning seed, mending old harness and making new; and that the hands ought to have mended their smocks and hoods. Remind him, also, that on feast days old ditches might have been cleaned, road work done, brambles cut, the garden spaded, a meadow cleared, faggots bundled, thorns rooted out, spelt ground, and general cleaning done. When the slaves were

¹⁵⁸ Plutarch: *Cato*, 25; Fowler: *Social Life*, p. 177.

¹⁵⁹ Cato: *On Agriculture*, 1, 4.

sick, such large rations should not have been issued. After this has been gone into calmly, give orders for the completion of what work remains; run over the cash accounts, grain accounts, and purchases of fodder; run over the wine accounts, the oil accounts—what has been sold, what collected, balance due, and what is left that is saleable; where security for an account should be taken, let it be taken; and let the supplies on hand be checked over. Give orders that whatever may be lacking for the current year be supplied; that what is superfluous be sold; that whatever work should be let out be let. Give directions as to what work you want done on the place, and what you want let out, and leave the directions in writing. Look over the live stock and hold a sale. Sell your oil, if the price is satisfactory, and sell the surplus of your wine and grain. Sell worn-out oxen, blemished cattle, blemished sheep, wool, hides, an old wagon, old tools, an old slave, a sickly slave, and whatever else is superfluous. The master should have the selling habit, not the buying habit.”¹⁰⁰

A man with great estates did not do the work himself, but secured a trustworthy, capable slave to act as his overseer or *vilicus*. Such a steward must be a good manager, indeed, if he would measure up to Cato's requirements: “The feast days must be observed. He must withhold his hands from another's goods and diligently preserve his own. He must settle disputes among the slaves; and if anyone commits an offence he must punish him properly in proportion to the fault. He must see that the servants are well provided for, and that they do not suffer from cold or hunger. Let him keep them busy with their work—he will more easily keep them from wrongdoing and meddling. If the overseer sets his face against wrongdoing they will not do it; if he allows it, the master must not let him go unpunished. He must express his appreciation of good work, so that others may take pleasure in well-doing. The overseer must not be a gadabout, he must always be sober, and must not go out to dine. He must keep the servants busy, and see that the master's orders are carried out. He must not assume that he knows more than the master. He must consider the master's friends his own friends. He must pay heed to anyone to whom he has been bidden to listen. He must perform no religious rites, except on the occasion of the *Compitalia* at the cross-roads, or before the hearth. He must extend credit to no one without orders from the master, and must collect the loans made by the master. He must lend to no one seed-grain, fodder, spelt, wine, or oil. He must have two or three households, no more, from whom he borrows and to whom he lends. He must make up accounts with the master often. He must not hire the same day-labourer or servant or caretaker for longer than a day. He must not want to make any purchases without the knowledge of the master, nor want to keep anything hidden from the master. He must have no

¹⁰⁰ Cato: *On Agriculture*, 2. Trans. by W. D. Hooper, rev. by H. B. Ash, The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

hanger-on. He must not consult a fortune teller, or prophet, or diviner, or astrologer. He must not stint the seed for sowing, for that brings bad fortune. He must see to it that he knows how to perform all the operations of the farm, and actually does perform them often, but not to the extent of becoming exhausted; by so doing he will learn what is in his servants' minds, and they will perform their work more contentedly. Also, he will be less disposed to gad about, will be in better health, and will enjoy his sleep more. He must be the first out of bed, the last to go to bed. Before then he must see that the farmstead is closed, that each one is asleep in his proper place, and that the stock have fodder.

"See that the draft oxen are looked after with the greatest care, and be somewhat indulgent to the teamsters to make them look after their stock with more pleasure. See that you keep your ploughs and ploughshares in good condition. Be careful not to plough land which is *cariosa* [wet on surface, dry below] or drive a cart over it, or turn cattle into it; if you are not careful about this, you will lose three years' crop of the land on which you have turned them. Litter the cattle and flocks carefully, and see that their hoofs are kept clean. Guard against the scab in flocks and herds; it is usually caused by underfeeding and exposure to wet weather. See that you carry out all farm operations betimes, for this is the way with farming: if you are late in doing one thing you will be late in doing everything. If bedding runs short, gather oak leaves and use them for bedding down sheep and cattle. See that you have a large dunghill; save the manure carefully, and when you carry it out, clean it of foreign matter and break it up. Autumn is the time to haul it out. During the autumn also dig trenches around the olive trees and manure them. Cut poplar, elm, and oak leaves betimes; store them before they are entirely dry, as fodder for sheep. Second-crop hay and aftermath should also be stored dry. Sow turnips, forage crops, and lupines after the autumn rains." ¹⁰¹

The occupational groups, said to have been organized into guilds in the reign of Numa—"musicians, goldsmiths, carpenters, dyers, leather workers, curriers, braziers, and potters"—had probably been developing under the Etruscan kings. The scene of industrial activities, many of which had been learned from the Etruscans, probably changed slowly and not very extensively before the Carthaginian wars.¹⁰² Romans continued to be almost wholly agricultural, and farmers were doubtless the artificers of their own crude implements in early days. Even in Cato's time and Varro's, though it was recognized that some manufactured goods, iron implements, pottery, and some textiles must be purchased, as much as possible was to be produced on the farm so that

¹⁰¹ Cato: *On Agriculture*, 5. Trans. by W. D. Hooper, rev. by H. B. Ash, The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁰² Plutarch: *Numa*, 17; Fell: *Etruria and Rome*, pp. 70 f.; Paul-Louis: *op. cit.*, p. 67.

all workers would be kept busy.¹⁶³ Artisans, whether in towns or on the farms—when these became extensive and carried on industries themselves¹⁶⁴—were mostly slaves or freedmen. Cato, who turned to all sorts of schemes to make money, is said to have bought "districts given over to fullers, pitch factories . . ." and purchased young slaves to be "trained like whelps or colts." Moreover, he lent money to some of his slaves that they might purchase boys to be trained and resold or kept for Cato's own service.¹⁶⁵ Little is known of the artisan's training in early days save that it was accomplished by active apprenticeship. At a later time, systematic instruction was employed "in at least some of the industrial arts."¹⁶⁶

THE DISCIPLINE OF ARMS Though Numa is said to have sought to divert his people from fighting to the ways of peace, the life of Romans continued to be divided between the fields of Ceres and those of Mars. Of them it might be said, in Homer's phrase, they were—

From youth to age, appointed the laborious wars to wage.¹⁶⁷

Thus, the games of childhood were followed by the hardening exercise of rustic labor and the discipline of arms. Farming was consistently praised as the best nursery of "the bravest men and the sturdiest soldiers."¹⁶⁸

Though Romans did not employ the modern, hard-worked term "propaganda," their ideals, institutions, deeds of heroes, and letters of great men acted as a powerful preparative of the Roman mind for war, its discipline, its glory, its inevitability. Later Christian writers might scoff and frown with contempt on Roman martial virtues and the warrior's love of public applause; they might urge, at their pleasure, that man's piety should not be seen of man, but the pagan Roman reveled in struggle and the subsequent triumph.

Warlike ability, physical sturdiness, readiness for discipline, and obedience to commands are among the most common traits singled out by biographers, historians, and tellers of tales to prove the greatness of Roman leaders. Like the work of a cartoonist, of course, their pictures may often bear slight resemblance to reality, but the effect on a people's mind was doubtless profound. Ovid draws the portrait of Romulus and Remus "exercising their naked bodies in the sunshine," trying their strength of arms with gloves and javelins and throwing heavy stones.¹⁶⁹ Corvus was on an easy footing with his soldiers, and in-

¹⁶³ Cato: *On Agriculture*, 135; Varro: *On Agriculture*, I, 22; Fowler: *Social Life*, pp. 217 ff.

¹⁶⁴ Varro: *On Agriculture*, I, 2, 21-3; Marquardt: *op. cit.*, pp. 160 f.

¹⁶⁵ Plutarch: *Cato*, 21.

¹⁶⁶ Anderson: "Some Facts Regarding Vocational Training among the Ancient Greeks and Romans," *Sch. Rev.*, xx, 197 f.

¹⁶⁷ Plutarch: *Marcellus*, 1; *Numa*, 16; *Livy*, I, 19.

¹⁶⁸ Cato: *On Agriculture*, introduction.

¹⁶⁹ *Fasti*, II, 365 et seq.

spired them by his example, because he performed all duties of the lowest: in military sports he met every competitor who offered, conquering and being conquered with equanimity.¹⁷⁰ Marcellus gained his name, 'tis said, because of his experience as a "man of war," his fondness of it, his "sturdy body" and "vigorous arm."¹⁷¹ The physical strength and courage of Jugurtha, the Numidian outsider, which were developed by devotion to foot races, hurling the javelin, and hunting wild beasts, made him a great fighter and endeared him to Scipio and his men.¹⁷²

Distinction in war was the path to greatness and service in the state. Fabius Maximus, understanding that "wars must be many," "trained his body for the wars" and his tongue "as an instrument of persuasion. . . ." ¹⁷³ Cato wanted young men to get red, not pale; to use their feet on the march, their hands in conflict; to shout louder in battles than they snored in bed. Of a fat man, he said: "Where can such a body be of service to the state. . . ?" ¹⁷⁴ Cicero declared, "It is glorious to fall when leading an army," and noted that "philosophers mostly die in their beds." ¹⁷⁵ While he recognized that the ends sought through intelligence and reason were more important than those gained "by bodily strength," he maintained that a young man's chief title to fame came from military achievements, and pointed to the example of ancestors who "were almost always waging wars." ¹⁷⁶

To inspire them in their preparation for deeds of war, Roman youth heard told and retold the heroic exploits of days gone by. That of Horatius Coeles, who held back the foe while the bridge was cut behind him and then plunged in full armor into the Tiber, was an old, familiar favorite. Polybius, telling the tale once more, remarks: "Such, if I am not wrong, is the eager emulation of achieving noble deeds engendered in the Roman youth by their institutions." ¹⁷⁷

If Roman boys of later centuries had a more fastidious taste and required something other than the homespun sagas of earlier days, they did not need to go unsatisfied, for nothing in Roman literature could compare with Virgil's portrayal of war's feverish preparation:

Hitherto calm and unmoved, Ausonia blazed into fury.

Some set out for the plains on foot; high raised on their horses,

¹⁷⁰ Livy, vii, 33.

¹⁷¹ Plutarch: *Marcellus*, 1.

¹⁷² Sallust: *War with Jugurtha*, 6.

¹⁷³ Plutarch: *Fabius Maximus*, 1.

¹⁷⁴ Plutarch: *Cato*, 9. Trans. by B. Perrin. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁷⁵ *De Finibus Bonorum et Malorum*, ii, 30.

¹⁷⁶ *Offices*, ii, 13.

¹⁷⁷ Bk. vi, 55.

Others stormed on through clouds of dust; all calling for weapons;
 Some with slippery lard fell to polishing buckler and javelin,
 Rubbing them smooth and bright, or whetting the edge of their axes.
 Gladly their standards they raised and heard the blare of the trumpet.
 Five great cities were ringing aloud with the music of anvils
 Forging new arms; Atina the strong and Tibur the haughty,
 Ardea, old Crustumerium, too, and castled Antemnae.
 Helmets they hollowed to cover their heads; into frames for their bucklers
 Withes of willow they bent, and brazen breastplates they fashioned;
 Others on burnished greaves laid plates of flexible silver:
 All their devotion to sickle and share, all love for the furrow,
 Yielded to this; their fires retempered the swords of their fathers;
 Thundered the trumpets of war; sped swiftly the watchword of battle;
 Nervously one from the wall was snatching a helmet; another
 Yoked his whinnying steeds to the car, and in shield and in corselet
 Triple with gold was clad, and girt with the sword he had proven.¹⁷⁸

Even in later years of the Republic, when expensive domiciles and all their pertinent luxuries had become common among the rich, the old pattern of hard physical discipline of the army still found loyalty. Marius' early life was "temperate and in harmony with the rearing which the ancient Romans gave their children," and he "lived with the common soldiers in frugality and endurance. . . ." ¹⁷⁹ He was conspicuous for diligence, honesty, military skill, courageous spirit in war, and ambition for glory. "Naturally virile and fond of war" and trained "in military rather than in civil life," he strove even against infirmities and a tendency to corpulence in old age and went daily to the Campus Martius. There he exercised "with the young men and showed that he was still agile in arms and capable of feats of horsemanship. . . ." He is said to have entered upon a campaign late in life, so that he might personally "give his son a military training." ¹⁸⁰ Cato taught his son to throw the javelin, fight in armor, ride horseback, box, "swim lustily," and "to endure heat and cold." Aemilius Paulus also trained his sons in the "ancestral discipline," not willing to leave it to Greeks who were invading the precincts of hunting and horsemanship in his day. ¹⁸¹ Cato the Younger avoided the luxurious dress that had become fashionable in his day, and strengthened his body by strenuous exercises, habituating himself to withstand heat and cold with uncovered head,

¹⁷⁸ *Aeneid*, vii, 623-40. Trans. by H. H. Ballard. Courtesy of Charles Scribner's Sons, New York.

¹⁷⁹ Plutarch: *Caius Marius*, 3, 7. Trans. by B. Perrin. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁸⁰ *Ibid.*, 2-3, 7, 34; Sallust: *Jugurtha*, 63; Ilme: *History of Rome*, v, 61 f.

¹⁸¹ Plutarch: *Cato*, 20; *Aemilius Paulus*, 6.

and to travel on foot in all seasons.¹⁸² With the end of conquests, however, military exercises and strict discipline of youth appear to have declined. Pliny notes, in melancholy vein, that though in olden time youth "were inured from boyhood to service in the camp" and learned to command by being made to obey, there was in his own day "neither command nor obedience."¹⁸³

The army in early times was small, having three regiments, each a thousand strong, supported by about three hundred cavalry. The whole of it was made up of Patrician landowners. Servius, however, increased the army, including all citizens who had property, and raised the cavalry to eighteen centuries, composed of the wealthiest men. Below these were five classes, determined on the basis of wealth, which ranged from one hundred thousand asses for those of the first class to eleven thousand for the fifth.¹⁸⁴ There were eighty centuries of the first class; twenty centuries each of the second, third, and fourth; and thirty centuries of the fifth class. All classes were divided into *juniors*—the abler-bodied, aged from seventeen to forty-six years—and *seniors*, ranging from forty-seven to sixty years of age. The junior soldiers went into the field; the seniors were to defend the city at home. Below these five classes were five centuries, two of which included artisans, smiths, and carpenters; two others, horn-blowers and trumpeters; and one, made up of unarmed men who served to fill up depleted ranks and function as scouts.¹⁸⁵

The first-class centuries were armed with helmets, round shields, greaves, and corselets for defense; for offense they had swords and a long spear. The second class had a buckler in place of the shield and wore no corselet, but otherwise was the same as the first. The third class differed from the second in having no greaves; the fourth had only the long spear and a javelin; and the fifth was equipped with stones and slings. The two lowest classes had no armor for defense. Soldiers of these early days were property owners. Furnishing their own equipment and serving without pay, classification on the basis of wealth was of practical significance. Later, when small farmers declined and slaves were used on the land, Marius raised volunteers without respect to class, and assigned lands to his soldiers. Thus was forged a powerful, dangerous instrument for personal aggrandizement, since an army of men who had little or nothing were willing to fight for the best "paymaster," even though he might lead them against their own country.¹⁸⁶

The earliest army probably engaged chiefly in hand-to-hand fighting. The Servian, however, fought in a mass formation, similar to the Macedonian phalanx. This being rather cumbersome and inflexible, the legion was later

¹⁸² Plutarch: *Cato the Younger*, 5.

¹⁸³ *Letters*, VIII, 14.

¹⁸⁴ Livy, I, 43.

¹⁸⁵ Sandys: *op. cit.*, pp. 458 f.

¹⁸⁶ Frank: *op. cit.*, pp. 260 f.

divided into maniples, small units that could function more or less independently.¹⁸⁷ It was characteristic of the Romans that, in their effort to succeed in war, they were ever ready to learn from their enemies. With studied care, in the light of their own experience, they modified equipment and organization until they built up the most formidable infantry of the ancient world. Having built "a good military organization and a sound system of national tactics," says Oman, they had the "surest basis for a sustained career of conquest."¹⁸⁸

Horsemanship was an important branch of military training for the aristocratic element of the army. Horses, selected for their natural fitness and spirit, were specially trained for army service in Varro's day.¹⁸⁹ Pliny says that his uncle, when he was commander of a troop of horse, published a treatise on the *Art of Using a Javelin on Horseback*.¹⁹⁰ Though at the time of the Carthaginian wars the cavalry had become well armed after the Greek fashion, Polybius says, in earlier times their equipment for defense and offense was poor. They had then "no cuirasses but fought in light undergarments," which made it easy to mount and dismount swiftly, but exposed them "to great danger in close combat, as they were nearly naked."¹⁹¹ Their lances, too, were unserviceable, in his judgment, being too slender, pliant, and easily broken. Very imperfect, also, were their round bucklers of oxhide, too light for service in attack, and readily rotted by exposure to the rains.

Service in the Roman army was not a matter of choice but of compulsion. Servius completed his census, having expedited it by means of a law which threatened imprisonment and death to those not rated. To the third century B.C., only those citizens settled in the colonies were exempted from conscription, and they were already on perpetual duty.¹⁹²

The discipline of the Roman army was severe. The sentry who nodded and failed to observe the approaching Gauls was thrown down from the citadel, with manifest approval on the part of all.¹⁹³ Sallust says that "in time of war punishment was more often inflicted for attacking the enemy contrary to orders, or for withdrawing too tardily when recalled from the field, than for venturing to abandon the standards or to give ground under stress. . . ." ¹⁹⁴ Punishment of units which had been at fault might even be decimation. The severity of discipline, or rather the willingness to bear "galling discipline," com-

¹⁸⁷ Livy, viii, 8; Chapot: *op. cit.*, pp. 77 f.

¹⁸⁸ Oman: *The Art of War in the Middle Ages*, pp. 63 f.; Polybius, vi, 25; Cary: *op. cit.*, pp. 124 f.

¹⁸⁹ Varro: *On Agriculture*, ii, 7, 15-6.

¹⁹⁰ Letters, iii, 5.

¹⁹¹ Bk. vi, 25.

¹⁹² Livy, i, 44; Homo: *op. cit.*, p. 231.

¹⁹³ Livy, v, 47.

¹⁹⁴ Catiline, 9. Sallust, trans. by J. C. Rolfe. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

bined with persistence, rigorous training, and refusal to admit defeat, was doubtless a weighty factor in the conquest of imperial power.¹⁹⁵ Obviously, one must not credit too much to the effect of mere harsh discipline. Other peoples, also, had plenty of it. Hannibal is said to have beaten and crucified a guide in order to terrify all others, because he had mistaken Casinum for Casilinum and thus had misdirected the general.¹⁹⁶

Fear of severe punishments is doubtless a great deterrent to undesired behavior. Roman military success, however, must, to a much greater degree, be traced to arduous training in certain games and exercises, selected for their military value. Romans of early centuries doubtless enjoyed their exercises, but there is no hint of recognition of personal enjoyment, or the cultivation of grace and beauty, as valid purposes.¹⁹⁷ The contests portrayed by Virgil are Greek rather than Roman in spirit.¹⁹⁸ To run, jump, ride, fence, swim, wrestle, throw the spear, hurl the stone or discus, box, hurl the spear on horseback, and hunt were useful in gaining health, strength, agility; and these, in turn, were necessary to the successful warrior. It was proper, therefore, that boys and young men should practice them. Tullus Hostilius, successor to Numa, was credited by historians with instituting "all military discipline" and the art of war, and "wondrously" training "the soldiers of Rome. . . ." ¹⁹⁹ The *Campus Martius* was early set aside and dedicated to public use. Here the army, horse and foot, was assembled by Servius.²⁰⁰ Throughout the coming centuries Roman youth and men would gather, practice themselves in warlike games, and cultivate skill in the use of weapons. The *Campus* was thus the Romans' first gymnasium; the fathers themselves, their sons' first gymnastic teachers. The father taught his son manly exercises and the use of arms, even as he inducted him by active apprenticeship into the labors of the farm and the duties of law and religion. Though Romans learned from the Greeks many things pertaining to war, they always were contemptuous toward Greek physical training. Caesar encouraged his troops, saying "the world you hope to win" will not cost much blood, for "you will meet an army enlisted from the training-schools of Greece, enfeebled by the practice of the wrestling-ground, and scarce able to carry the weight of their arms. . . ." ²⁰¹

So highly did the Romans prize training, they gave the same term to exercise and to army—*exercitus*. Polybius traced the strength of the Romans not only

¹⁹⁵ Frank: *op. cit.*, p. 356.

¹⁹⁶ Livy, xxii, 13.

¹⁹⁷ Johnston: *op. cit.*, p. 238; Showerman: *Rome and the Romans*, p. 374.

¹⁹⁸ *Aeneid*, v.

¹⁹⁹ Florus, i, 1.

²⁰⁰ Livy, i, 44; ii, 5.

²⁰¹ Lucan: *The Civil War*, vii, 269 et seq. Trans. by J. D. Duff. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

to the fact that theirs was a citizens' army with natural physical superiority to begin with, but to their training which was carried to a higher degree of perfection than that of their enemies.²⁰² This training was acquired in ways already mentioned and also by early, active service in the field. Cicero, in praise of Pompey, says that he "left school and the studies of boyhood to join his father's army and study war in a serious campaign against formidable foes"; he had command of a large army even "in early manhood," learning warfare not from the instructions of others "but from the commands he held himself. . . ." ²⁰³ Early maturity in military affairs was a common phenomenon of Roman life, for it was gained from a training which was, in large part, life itself.

Not only at home, but in the field, intervals between actual movements and engagements were filled with strenuous training. Livy gives an account of Scipio's program for his soldiers and sailors during the stay at Carthage: "On the first day the legions under arms performed evolutions through a space of four miles; on the second day he ordered them to repair and clean their arms before their tents; on the third day they engaged in imitation of a regular battle with wooden swords, throwing javelins with the points covered with balls; on the fourth day they rested; on the fifth they again performed evolutions under arms. This succession of exercise and rest they kept up as long as they staid at Carthage. The rowers and mariners, pushing out to sea when the weather was calm, made trial of the manageableness of their ships by mock sea-fights. Such exercises, both by sea and land, without the city, prepared their minds and bodies for war." ²⁰⁴

FORMAL SCHOOLING Prior to 1000 B.C. the Italic peoples probably had no knowledge of letters, but about the eighth or early seventh century Greeks are believed to have introduced the alphabet at Cumae. In the sixth century writing was still rare, limited to political and religious documents of importance.²⁰⁵ Cicero, Livy, and Dionysius thought they had seen "original texts" of fifth century treaties; and Polybius translated an old treaty with Carthage, credited to the first year of the Republic. Whether these texts were so old is doubtful. The publication of the Laws, commonly dated 451-450 B.C., is put as late as 300 or 200 B.C. by some scholars.²⁰⁶ Certainly there was little writing prior to 290 B.C.—neither history, poetry, nor literary prose.²⁰⁷ If schools existed before the Carthaginian wars, they had little material. Cicero's statement—"We learned the Law of the Twelve Tables in our boyhood as a

²⁰² Bk. vi, 52.

²⁰³ *Mauilian Law*, 10. Cicero: *The Speeches*, trans. by H. G. Hodge. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

²⁰⁴ Livy (Spillan and Edmonds), xxvi, 51; Polybius, x, 20.

²⁰⁵ Homo: *op. cit.*, pp. 9, 66, 98; Lawton: *op. cit.*, p. 13; Cary: *op. cit.*, p. 14.

²⁰⁶ Livy, III, 31-2, 34; Cicero: *Republic*, II, 36; Gellius, xx, 1; Cary: *op. cit.*, p. 47.

²⁰⁷ Frank: *op. cit.*, pp. 59 f.

required formula"—suggests that the Law may have been a "first reader" in the early schools.²⁰⁸

References to schools, *ludi*, are few; they come from a much later date, and should be taken with caution. Plutarch's assertion that Romulus and Remus were taken to Gabii "to learn letters and the other branches of knowledge"²⁰⁹ seems but a pleasing fiction. Tanaquil is said to have given Servius Tullius "a liberal education."²¹⁰ Virginia, the victim of Appius Claudius' plot, was taken as she was entering the forum, where there were schools of letters.²¹¹ A teacher at Falerii (394 B.C.), who had the pleasant habit of taking his boys to walk beyond the town for the sake of play and exercise, on one occasion sought to deliver them to the Roman commander, and with them the entire city.²¹² Camillus, pitching his camp before the city of the Tuscans (382 B.C.) noted, along with other signs of peaceful activity, the humming of pupils' voices at their lessons.²¹³ Marcus Fabius (310 B.C.) had been educated at Caere and was well acquainted with the Etruscan language and writing—according to Livy, a common accomplishment among Romans at that time.²¹⁴

The fragmentary references to early elementary schools have been variously interpreted. Wilkins was uncertain about there being "any public schools at Rome" in the early Republic; Laurie, however, found no reason to doubt that many elementary schools existed.²¹⁵ After the Twelve Tables were published, there was, certainly, a real reason for acquiring an ability to read, and this was doubtless increasingly gained in schools. In better families, however, boys would continue to be taught the rudiments at home. Not till after Livius Andronicus had come to Rome and had Latinized the *Odyssey*,²¹⁶ was there enough literary matter to require extensive, specialized services of schoolmasters. The training of life, even in later times, often interfered with formal scholastic education, and apparently was held in higher regard, as Cicero's praise of Pompey, who left off the "studies of boyhood" to enter the school of military affairs, suggests.²¹⁷

APPRENTICESHIP TO LAW The family, farm, army, and the forum were at once phases of life and instruments of education. Romans held their constitution to be superior to those of other states, being the product of many

²⁰⁸ Cicero: *Laws*, II, 23, 59; Lawton: *op. cit.*, p. 14.

²⁰⁹ Plutarch: *Romulus*, 6.

²¹⁰ *Florus*, I, 1.

²¹¹ *Livy*, III, 44.

²¹² *Ibid.*, V, 27; *Dio*, VI, 24; Plutarch: *Camillus*, 10; *Florus*, I, 6.

²¹³ *Livy*, VI, 25; Plutarch: *Camillus*, 38.

²¹⁴ *Bk. IX*, 36.

²¹⁵ Wilkins: *Roman Education*, p. 8; Laurie: *Historical Survey of Pre-Christian Education*, p. 342.

²¹⁶ *Infra*, p. 572.

²¹⁷ Cicero: *Manilian Law*, 10.

rather than the work of one man.²¹⁸ Polybius praised it for its combination of despotic, aristocratic, and democratic features.²¹⁹ Cicero regarded Roman law as the foundation of intellectual training for men in all the affairs of public life; for in its Twelve Tables was comprised the whole "science of government," surpassing the learning of all philosophers, "both in weight of authority, and in plenitude of utility." Since Rome seemed to him pre-eminently "the seat of virtue, empire, and dignity," her "spirit, customs, and discipline" should be the "first objects of study," for "as much wisdom must be thought to have been employed in framing such laws, as in establishing so vast and powerful an empire."²²⁰

Training in knowledge of the law and the conduct of public and private affairs was gained by a direct apprenticeship under the father's hands, or, in his absence, under the care of "some person of years and dignity." The son of a senator attended with his father the sessions of the Senate. "Thus," says Pliny, "they were taught by that surest method of instruction, example, how far the right of proposing any law to the Senate extended; what privileges a senator had in delivering his opinion; the powers of senators who are magistrates, and the independence of the rest; where it is proper to yield, and where to stand firm; how long to speak, and when to be silent; how to distinguish conflicting motions, and how to discuss an amendment. In a word, they learnt by this means the whole conduct of a senator."²²¹

With the growth of the state and numerous other changes in Roman life, training of youth for public life was more and more relegated to the schools. Cicero, Tacitus, Pliny, and others were in agreement that the old training was superior to the new. Cicero complained that "this generation of ours is ignorant of law."²²² The virtue of the old system, said Tacitus, lay in the fact that "they carried on their studies in the light of open day, and amid the very shock of battle, under conditions in which any stupid or ill-advised statement brings prompt retribution in the shape of the judge's disapproval, taunting criticism from your opponent—yes, and from your own supporters expressions of dissatisfaction."²²³ Pliny declared that pleading before the *centumviri* gave him more "fatigue than pleasure"; the causes were "generally trivial and jejune"; those who pleaded were "impudent fellows, and the majority actually obscure young men," who had just migrated "from the schools, to practise declaiming.

²¹⁸ Cicero: *Republic*, II, 1.

²¹⁹ *Bk. vi*, 11–8; cf. *Homo: Roman Political Institutions from City to State*, pp. 123 f.

²²⁰ *On Oratory*, I, 44.

²²¹ Pliny: *Letters*, VIII, 14. Trans. by W. Melmoth, rev. by W. M. L. Hutchinson. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.; cf. *Gellius*, I, 23.

²²² *On Oratory*, I, 10.

²²³ Tacitus: *On Oratory*, 34. Trans. by W. Peterson. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

. . ." ²²⁴ Even the time for pleading a case was measured out, an hour or two, or even a half of that, as though one could tell in advance how much time a cause required. ²²⁵

RELIGION, A PHASE OF LIFE AND EDUCATION Religion pervaded every aspect of early Roman life. Its hold upon youth was first fixed by the father, to whom obedience and honor were due. Youth learned to honor age; greater deference was shown to family men than to others. It was an old custom that young men should escort older men home. ²²⁶ Religion and morals were taught by example, by an apprenticeship in religious acts that were constantly performed in connection with all affairs, private and public. It had little to do with attendance at temples, for, though these later acquired importance, in early years there were none. ²²⁷

The Romans were, in Sallust's phrase, *religiosissimi mortales*. Cicero thought them superior to all others in religious affairs; in this, Polybius concurred. It was their firm conviction that they were divinely destined to lead the world. Believing themselves the special beneficiaries of divine favor, it is not surprising that they were "lavish in their offerings to the gods. . . ." ²²⁸

Rome's earliest religion was a primitive animism. A spirit, a moving force, *numina*, dwelled in everything. Its good will must be cultivated by appropriate, propitiatory rites to secure the safety, prosperity, and final happiness of man. To the indigenous animism were added, from time to time, various gods, religious practices, and beliefs from outside sources—particularly in time of pestilence or other disasters. Thus the *ludi scaenici* were brought from Etruria in 364 B.C.; and the cult of Apollo was established during the Punic War. ²²⁹

Religious practices reflected Roman utilitarianism. Religion was essentially a practical business, a contractual relationship, established between men and spiritual powers. ²³⁰ The Roman asked not for spiritual improvement, but for prosperity in his undertakings and health to carry them through. To secure the approval of the gods, he was formal, scrupulous, businesslike, giving freely, even generously, what custom had decreed. "I give, and you give." Such was the spirit of his dealing with invisible powers. With the commercial outlook, however, there was mingled awe, fear, and reverence; these were indeed due to those greater than himself. The prescribed ceremonies, which were his obligation, were of long standing and were enjoined by pontifical authority. To make innovations would be dangerous, impious.

²²⁴ *Letters*, II, 14.

²²⁵ *Ibid.*, VI, 2.

²²⁶ *Gellius*, II, 15.

²²⁷ Cf. *Plutarch*: *Numa*, 8; *Wilkins*: *op. cit.*, p. 10.

²²⁸ *Sallust*: *Catiline*, 9; *Polybius*, VI, 6; *Livy*, V, 54.

²²⁹ *Livy*, VII, 2; XXV, 12; XXVII, 23.

²³⁰ *Showerman*: *op. cit.*, pp. 288 f.



SUOVETAURILIA

(J. von Falke, *Greece and Rome*, p. 290)

In trivial affairs, as in the most important, man's dependence on other forces was recognized. Marriage was a solemn necessity. Childless men were considered accursed. By marriage one ensured successors, protection of one's burial place, and offerings to the hovering spirit. When taking such a momentous step the gods must be propitiated by proper ceremonies.²³¹

To an agricultural and pastoral people the security of boundaries and the safety and fertility of plants and animals meant much. Boundaries were sacred. The "religion of Numa" condemned to the underworld one who molested boundary markers, *termini*; and a man forfeited his life for killing an ox. Every task of the herds and fields was entered on with due ceremony. After the "sacred feast" "begin the spring ploughing . . ." is Cato's instruction.²³² To purify the land, the *suovetaurilia* (sacrifice of pig, sheep, and bull) is prescribed, so that success may crown labor, while sickness, barrenness, and ruin may be averted, and the issue from flocks and fields may be plentiful. When thinning a grove, a certain formula must be repeated, and a pig sacrificed.²³³ For the health of cattle, specified amounts of foods must be offered and eaten. Women may neither take part nor see the ceremony performed. Utmost nicety must be observed in all ceremonies. Certain trees must be grafted in the dark of the moon, in the afternoon, when there is no south wind. In doctoring an ox, both doctor and ox must fast, and both must stand.²³⁴ Labor was forbidden

²³¹ Dill: *Roman Society from Nero to Marcus Aurelius*, pp. 256 f., 488; Johnston: *op. cit.*, p. 41.

²³² On Agriculture, 50; Paul-Louis: *op. cit.*, pp. 50 f.

²³³ Cato: On Agriculture, 139, 141.

²³⁴ *Ibid.*, 40, 71, 83.

on certain days; but some tasks—such as draining land, hedging grain fields, vining water, burning briars, dipping sheep, and setting snares for birds—were permitted even on holy days.²³⁵

War's uncertainties were too serious to face without the gods' approval. The making of war lay in the hands of the *Fetiales*, a priesthood of Numa, who called the gods to witness and invoked numerous evils on themselves and the country if they began war unjustly.²³⁶ Military successes were credited to the gods and celebrated with appropriate ceremonies and games, sometimes promised in advance. Camillus solemnly vowed Great Games and the repair of Mother Matuta's temple upon the capture of Veii. After the Gauls' invasion, the temples were restored and purified, and Jupiter was honored by the Capitoline Games.²³⁷

An eminent scholar identifies Roman *religio* first of all with "awe, nervousness, scruple," meaning much the same as we do by superstition; and secondly, with the methods and rituals by which the spirits were appeased and fears were eased.²³⁸ The service of superstition to the state was believed to have been great. Plutarch thought one should not be incredulous about fabulous tales of Rome, considering that the state would not have risen to such power "had it not been of a divine origin, and one which was attended by great marvels."²³⁹ Numa had tamed the "fierce and warlike tempers" by "sacrifices, processions, and religious dances"; by "strange apparitions of divine beings and threatening voices," he had subdued and humbled their minds.²⁴⁰ Polybius held that a scrupulous fear of the gods, "superstition," carried to such lengths that nothing could "exceed it," was the very thing which maintained "the cohesion of the Roman State." It was useful, he held, as a check on the tickle, lawless multitude which needs to be checked by invisible terrors and pageantry; the ancients were wise in introducing and cultivating such fears; moderns were "rash and foolish in banishing such beliefs."²⁴¹

Whether or not superstitious beliefs and practices were thus consciously founded, fostered, and rendered effective, it is certain that they pervaded Roman society and motivated much of its activity. Later, of course, a Lucretius might find all superstitions odious; Plutarch might think it ridiculous that Romans should believe that a statue spoke;²⁴² but faith in capricious, super-

²³⁵ Columella: *Of Husbandry*, II, 22; Virgil: *Georgics*, I, 268 et seq.

²³⁶ Plutarch: *Numa*, 12; Frank: *op. cit.*, pp. 8 f.

²³⁷ Livy, V, 19, 50; xxx, 27; Plutarch: *Camillus*, 5.

²³⁸ Fowler: *Social Life*, p. 319.

²³⁹ *Romulus*, 8.

²⁴⁰ Plutarch: *Numa*, 8. Trans. by B. Perrin. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

²⁴¹ Bk. VI, 56.

²⁴² *Coriolanus*, 37-8.

natural interference in all matters, great and small, was all but universal in early days and continued widespread even in the period of greatest enlightenment. A few examples give a hint of this aspect of the Roman mind. The custom of driving a nail in the *cella* of Jupiter's temple was revived because of "great disasters."²⁴³ When seenie plays, introduced from Etruria to combat a pestilence, were interrupted by a flood of the Tiber, the people were terrified, deeming it a sign of the gods' displeasure.²⁴⁴ In the war with Veii, the Delphic oracle advised that the waters of the Alban lake must be prevented from joining the sea; otherwise Veii could not be taken. Priests directed ceremonies, accordingly, and sought to divert the waters.²⁴⁵ Another tale of Veii forecast victory for the one who should cut up the entrails of a certain victim.²⁴⁶ A man was warned by Jupiter that he must go to the magistrates, tell them that actions of a dancer in previous games had displeased the god, and cause the games to be repeated on a splendid scale; otherwise the city would be in danger. The man hesitated, and shortly lost a son; still delaying, he was stricken with paralysis; then, terrified, he was carried to the magistrates, to whom he told what Jupiter had commanded. Having discharged this duty, he was healed and walked away.²⁴⁷ Appius Claudius lost his sight because he directed the Potitian family, which attended Heracles' altar, to teach the rites to outsiders. The whole Potitian family, thirty grownups and their offspring, died within a year. Such portentous events, Livy thought, ought to make people slow to change the established mode of religious rites.²⁴⁸ A multitude of remarkable prodigies in Italy and at Rome during the Punic wars, Livy reports, were expiated with "full-grown victims," and supplications were ordered to those deities that had shrines in Rome.²⁴⁹

The encouragement of superstitions had its reward. Inured for centuries to belief in magic, the Roman populace was ready, when circumstances favored, to accept other magic than that which leaders held valid. As the Punic wars wore on, a veritable passion for superstitious rites, chiefly from abroad, took hold of Rome.²⁵⁰ Roman rites fell into disuse; hosts of women sacrificed and offered prayers in public to strange gods in ways unusual. Finally, in order to get rid of these superstitions, the Senate ordered the surrender of all works on divination, prayers, and rituals, and forbade further public sacrifices according to novel, foreign rites.²⁵¹ The Senate itself was inconsistent, discouraging

²⁴³ Dio, LV, 10, n. 2.

²⁴⁴ Livy, VII, 2-3.

²⁴⁵ Plutarch; *Camillus*, 4.

²⁴⁶ Livy, V, 21.

²⁴⁷ *Ibid.*, II, 36-7.

²⁴⁸ *Ibid.*, IX, 29.

²⁴⁹ *Ibid.*, XXIV, 10.

²⁵⁰ *Ibid.*, XXV, 1.

²⁵¹ *Ibid.*

and again encouraging new worships, such as the *Ludi Tarentini*, approved in 249 and 207 B.C.²⁵²

Roman religion, originally a primitive animism, developed a more or less marked anthropomorphism. Jupiter ruled the heavens; Mars, war; Neptune, the sea; Mercury, commerce; Vulcan, the smithy; Ceres, grain; Janus, the changing year; Terminus, boundaries; Minerva, weaving, spinning, and arts of learning; Luna, the moon; Liber, fields; Flora, vegetables and flowers; Bona Dea, agriculture; Silvanus, woodlands; Pales, Lupercus, and Faunus, herds and herdsmen; Pomona, orchards; Saturn, the sown seed; Ops and Consus, the gathered crops. Robigus, a bad god, if not propitiated, would mildew crops. Vesta, special goddess of the hearth, and other spirits, lares and penates, constituted the focus of the domestic cult. The lares were guardians of roads, crossroads and common property boundaries, and were honored at festivals, Compitalia or Laralia, participated in by all of the district dwellers, free and unfree.²⁵³ Travelers commended themselves to the protection of the *lares viales*. Public lares and penates were also worshiped.²⁵⁴ Of the host of deities which ruled the much-partitioned Roman universe, many were native, others foreign, the latter element increasing as Rome became the center of the Mediterranean world.

Etruria, "mother of superstition," had a profound influence on Rome. Menerva, Losna, and Aplu are generally accepted as prototypes of Minerva, Luna, and Apollo. The Roman use of auspices has been called a "purely Etruscan element"; Romans appear to have trusted Etruscan ability to read signs and portents—a very serious, meticulous business—more than they did their own.²⁵⁵

The chief religious institutions were credited traditionally to Numa, who established the calendar of festivals, named the first *flamines*, and was himself first of the priests.²⁵⁶ The machinery of the state cult was ruled by a supreme pontiff (*Pontifex Maximus*), subordinate *pontifices*, and *flamines* who presided over the cults of special deities. The chief *flamines* were those of Jupiter, Mars, and Quirinus. The *Salii*, dancing priests of Mars, had charge of twelve sacred shields, which they carried every March through the streets while they performed their dance; the *Salii Collini* directed the worship of Quirinus, the deified Romulus; the *Fetiales* were guardians of peace and war; the *Augures* explained the will of deities when auspices were taken; and the *Quindecimviri* had care of the Sibylline books. The *Fratres Arvales*, one of the oldest

²⁵² Cary: *op. cit.*, p. 273.

²⁵³ Cato: *On Agriculture*, 5.

²⁵⁴ Wissowa: *op. cit.*, pp. 145-54; Fowler: *Roman Festivals*, pp. 136, 309, 335 ff.

²⁵⁵ Livy, xxvi, 23; Cicero: *Laws*, II, 9; *On Divination*, I, 41; Müller: *Die Etrusker*, II, 2 f.;

Fell: *op. cit.*, pp. 51 f.

²⁵⁶ Plutarch: *Numa*, 3, 9 et seq.

religious bodies, had as its first members the twelve sons of the foster mother of Romulus, Acca Larentia. All services of male gods were in the care of men. In the cults of Vesta, Juno, Ceres, and other goddesses, women took part. Six virgins, each serving Vesta for thirty years, lived in quarters by her temple and tended the holy fire. In later times numerous, new, foreign cults encouraged the service of women.²⁵⁷ This state cult, though criticized as a "hard, narrow, unexpansive system of abstraction and personification," which aimed in legalistic fashion to control all nature, man, and social relations, gained great hold upon the people, and, revived and perfected under Augustus, continued to the end of the Empire. Doubtless numerous festivals associated with Roman religion—the *Ludi Romani* in honor of Jupiter, the Saturnalia, the Cerealia and Lupercalia, designed to secure the safety and prosperity of herds and grain—were close to the hearts of the people, gave an opportunity for merrymaking, and contributed much to its hold upon them. The priestly colleges still met in the time of Theodosius; and certain of the oldest festivals, such as the Lupercalia, were still celebrated in the late fifth century.²⁵⁸ Pagan cults and pagan games offered the most persistent resistance to Christian efforts to reform the ancient world.

²⁵⁷ Abbott: *op. cit.*, p. 78; Sandys: *op. cit.*, pp. 152 f.; Johnston: *op. cit.*, pp. 396 ff.

²⁵⁸ Dill: *Last Century*, pp. 74 f.

GROWTH AND DECAY OF EMPIRE

TRANSITION FROM REPUBLIC TO EMPIRE

Roman adventures beyond Italian shores (264 B.C.) inaugurated a period more reliably dealt with by early historians. Polybius, a Greek who was taken to Italy (167 B.C.), became intimately acquainted with Scipio Aemilianus, espoused Rome's cause, and spread on a broad canvas the story of her conquests. Livy also told the tale of those adventurous years more fully and reliably than that of the early Kingdom and Republic. Diodorus, Dionysius of Halicarnassus, Sallust, Lucan, Suetonius, Tacitus, Dio Cassius, Ammianus Marcellinus, Florus, Ausonius, Claudian, Spartianus, Capitolinus, Lampridius, Pollio, Tertullian, Jerome, and others embroidered the old story of Rome's beginning, the vicissitudes of the dying Republic and the early Empire, and depicted the lengthening shadows cast by Rome's setting sun. Theirs is a record of expansion by conquest and the subjection of other peoples, decay of self-government at Rome, and gradual social disintegration, from which, despite heroic efforts, no one was wise enough to save the Roman state. Besides this, it is a record of metamorphosis by which the crude culture of a primitive people, crossed with that of Hellenic cities, emerged as the crowning achievement of man in the Mediterranean world.

Having consolidated Rome's control over Italy, Romans developed aspirations for a wider domain, and popular leaders pointed out the advantages of empire to the Roman populace. This tendency, as it grew, eventually showed up the duplicity of the formulae of the priestly fetial board whose business had been to place Rome's cause in a favorable light, and that of her enemies in an unfavorable one.¹ Rome's imperialism and the *Pax Romana* were made possible by the destruction of other imperial forces, first of all Carthage and then other powers ringing the eastern Mediterranean. Her progress toward this

¹ Frank: *Roman Imperialism*, pp. 8 f.

end, described as "slow but implacable as a phenomenon of nature,"² was frequently marked by ruthlessness toward others, as witness the destruction of Carthage (146 B.C.), the atrocities of Galba in Spain (151 B.C.), the plundering and enslavement of citizens of Epirus (167 B.C.). There were also cleverness, persistence, courage, heroism, and occasional examples of magnanimity, exemplified in the decree of freedom to the Greeks. Polybius, though friendly to the Romans, says that they had a way of extending their sway over others while "appearing to confer a benefit" on them. Of the Third Punic War, he says the Romans had long made up their minds to it, and were only watching for "a suitable opportunity and a pretext that would appeal to foreign nations."³

The unification of Italy, consummated in 272 B.C., was followed shortly by efforts to extend Rome's sway beyond the sea. The struggle for empire began with the first clash with Carthage (264-241 B.C.), which gave Rome Sicily, then Sardinia and Corsica. The destructive Hannibalic War (218-202 B.C.) ended in victory for Scipio Aemilianus, at Zama, with vassalage for Carthage, loss of her war fleet, and tribute to be paid to Rome. The Third Carthaginian War (149-146 B.C.) fulfilled Cato's fear-inspired injunction, "Carthage must be destroyed," and left Rome mistress of the western Mediterranean. During the last half century of the Carthaginian wars, Rome was engaged from time to time with Eastern powers as well. Macedonia, which had been in league with Hannibal in the Second Punic War, was turned upon at its close, defeated at Cynoscephalae, and made subject to Rome (197 B.C.). Philhellenism was strong in Rome at the time, and the Greeks, having favored Rome against Philip of Macedon, were given their freedom for the moment by a proclamation of the Senate, read at the Isthmian Games in 196 B.C.⁴ Philip's ally, Antiochus the Great of Syria, next fell before the legions of the Scipios (190 B.C.), and gave Rome mastery to the River Halys. A third possible contender for sway, Egypt, long friendly toward Rome, came under Roman tutelage (168 B.C.) after the Senate intervened on her behalf against Antiochus IV. Two decades later (146 B.C.), the philhellenic bias of the Senate having subsided in favor of a return to the old Roman policy of ruling those they had conquered, the Greeks, who had been favored during the Roman-Macedonian conflict, were reduced to subjection. After the Achaean War, Corinth was destroyed.⁵ In the brief space of 118 years Rome had added to her domain all the Mediterranean world—had become the crucible in which was to be mixed a cosmopolitan culture. Later conquests in Gaul, Britain, and elsewhere ex-

² Homo: *Primitive Italy and the Beginnings of Roman Imperialism*, p. x.

³ *The Histories*, xxxvi, 2; xxxi, 10.

⁴ *Ibid.*, xviii, 45-6; Frank: *op. cit.*, pp. 150 f.

⁵ Frank: *op. cit.*, pp. 190 ff.; Cary: *History of Rome*, pp. 210, 222 f., 252 f.

tended her territory, but brought nothing of moment to the culture of imperial Rome.

Having grasped potential wealth and power of empire the Roman future doubtless seemed bright to most observers. But to one of those who had helped bring these things to pass, the destruction of Carthage brought forboding: Scipio is reported to have said to Polybius, ". . . some day the same doom will be pronounced upon my own country."⁶

Ancient authors viewed the growth of empire variously, but generally regarded it as a fulfillment of destiny. The gods willed that Rome should rule other nations; she was of "divine origin"; she must not forget her destiny. Florus, recounting the achievements of seven hundred years, declared that "Valour and Fortune" had "competed to establish the Roman empire." Tacitus and others seem to have accepted the Empire as a "desperate necessity."⁷

Livy⁸ credits Hannibal with the wise observation that no great state is able to remain long at rest. Dionysius⁹ understood the historic process by which the conquest of Italy emboldened Rome to go on to conquer Sicily, Sardinia, Corsica, Carthage, Macedon, Greece, and proceed even to universal dominion. Dio¹⁰ believed that jealousy and fear, shared by both Rome and Carthage, led to war. Polybius noted the economic factors back of this restless striving, leading to new wars. Aid to the Mamertines, a forerunner of the Punic struggles, was urged by military leaders as a means of profit to the Roman people. Again, the financial interests of the equites, whose members enjoyed the income from contracts given out by the censors, were a powerful influence in foreign affairs; for everyone was interested in these contracts and the work they involved, and hence all elements tended to support each other wherever threatened by a common danger from abroad.¹¹ There is some truth in Polybius' interpretation, doubtless, but the unity of Roman decisions seems overdrawn. Certainly there were at times serious differences in respect to foreign policy; this is reflected in Cato's credo, "Carthage must be destroyed," and Nasica's dictum, "Carthage must be spared."¹²

Two widely divergent views are held respecting Roman imperial development: first, that it came about as a result of "the execution of grandiose 'plans' boldly conceived"; second, that empire resulted from steps, taken blunderingly,

⁶ Polybius, xxxviii, 21-2; Appian: *Punic Wars*, 132.

⁷ Lawton: *Classical Latin Literature*, p. 297; Florus: *Epitome of Roman History*, I, introduction; Cicero: *Philippic* vi, 7; Plutarch: *Romulus*, 8; Virgil: *Aeneid*, vi, 847 et seq.

⁸ Bk. xxx, 44.

⁹ *The Roman Antiquities*, I, 3.

¹⁰ *Roman History*, xi, 1-3.

¹¹ Polybius, I, 11; vi, 17-8.

¹² Plutarch: *Cato*, 27.

which led to consequences unforeseen by the Roman Senate, which was slow, unimaginative, and fearful of adventures into unknown paths. Probably the Romans were neither as stupid as the second view suggests nor as superior as the first implies. But the view that Rome moved gradually and somewhat blindly into imperialism seems more reasonable than that there was an aggressive, consistent, planned program of foreign expansion. Romans probably regarded their wars as "preventive" and "defensive," as other imperial powers have done; that any Roman thought frankly of imperial power before the Punic wars seems improbable.¹³ In the Second Punic War, Hannibal's determined pursuit of a war policy was indubitably a major obstacle to peaceful relations. The "democratic reformers" of the "Gracchan decade" were probably not aggressive imperialists, but they might have been forced into war, had they lasted longer, in order to secure improvements at home. In this "they differed but little from the senate." In the end, however, ". . . the free Roman people stumbled on falteringly and unwittingly into ever increasing dominion . . ." whose burden reduced them to servitude.¹⁴ Rome's empire in the eastern Mediterranean may have been "even more the product of a chapter of accidents" than in the West. Had Greeks been united, the Romans would not have attempted their conquest, and could hardly have succeeded if they had.¹⁵

As to the influence of trade rivalries and financial interests on expansion in the second century B.C., there is wide difference of judgment. Mommsen, Mahaffy, and Wilamowitz hold that these factors played a leading rôle in determining foreign policy. Others maintain that Rome's treaty with Carthage (348 B.C.), lack of archaeological evidence of imports, Rome's inactivity against pirates prior to 67 B.C., and the belated improvement of the port of Ostia (42 A.D.), suggest that she was insignificant as a trader, and make it unreasonable to hold that commercial interests ". . . directed the foreign policies of the senate in the second century B.C., much less that it secured the destruction of Corinth and Carthage."¹⁶ Frank estimates that foreign "collections and contracts" of the financial houses (*publicani*) in 150 B.C. amounted to only about 1 per cent of the wealth of the *equites*; that this was insignificant compared with investments in land at home; and that therefore the interest of the *equites* in foreign expansion in the second century was much less than is commonly believed. Their influence became a determining factor in the next cen-

¹³ Homo: *op. cit.*, pp. vii-viii, 259 f., 349; Frank: *op. cit.*, p. 120.

¹⁴ Frank: *op. cit.*, pp. 257, 358.

¹⁵ Cary: *op. cit.*, p. 224.

¹⁶ Frank: *op. cit.*, pp. 277 f., 283 f., 286; Chapot: *Roman World*, p. 27; Mommsen: *History of Rome*, iv, 400 ff.

tury, however, largely because the Gracchan Law (123 B.C.) gave them improved status, and opened to them more extensive operations for the state.¹⁷

While Rome's dominion in Italy had generally gained approval, her management abroad fell short of it, for the fair dealing which she had exhibited toward conquered peoples at home was often lost sight of in the provinces. In Spain, for example, Roman generals frequently disavowed "treaty obligations," and the Senate was too apt to assent "to their double-dealing."¹⁸ Moreover, whereas the Italian peoples gave military service, the provinces rendered tribute. The milch cow was far away, but Roman arms were long. Provincial governors and their aides recouped old losses and were ever alert for new gains. Besides collecting legal tribute, exemptions from supplying grain and quartering troops, the sale of "justice," and other devices were employed to enrich Romans who went to the provinces. Chief of the private profiteers were the tax gatherers, *publicani*, who collected as much beyond official allotments as they could, purchased grain at low cost and sold it at fabulous prices, and lent money at extortionate rates to oppressed provincials. Naturally, there were good as well as bad provincial agents. It was, of course, as far as many peoples were concerned, merely a substitution of one despotism for another, for Carthage was also a harsh master. Rome, however, was stronger than Carthage, and once her military machine had riveted the shackles, neither the periods of greatest disorder between rival domestic factions, which marked the demise of the Republic, nor even the faults and weaknesses of the worst emperors were the occasion of a single conquered people's regaining its liberty. The lot of the Greeks was somewhat happier than that of others, doubtless because of their cultural attraction for many Romans. Though they lost independence through Rome's conquest, they enjoyed a degree of peace unattainable while they fought amongst themselves. After the destruction of Corinth, Greek cities retained local government, trade between them was free, and Greek leagues were re-established for religious purposes.

The domestic effect of Rome's wars of conquest was felt in numerous ways. Economic consequences were inescapable, the damage done irreparable. A flood of grain, first from Sicily, later from the East, destroyed the well-being of Roman grain farmers, forced land out of the hands of small owners, and increased the holdings of large owners, who turned the land to grazing and vineyards. Etruria, though less injured than other farming regions in the Hannibalic War, first impressed Tiberius with the need for reforms. Marius raised six

¹⁷ Frank: *op. cit.*, pp. 292 f.

¹⁸ Cary: *op. cit.*, pp. 184, 186.

thousand men for his support in Etruria. The worst havoc struck southern Italy, where upwards of two million acres were laid waste and fell into the hands of the state. Land being a drug on the market, attempts were made to lease it for grazing, which required less manpower.¹⁹

There were other deficits; the cost of victories was great. The number of legions almost doubled after the battle at Cannae, money and slaves were contributed by the wealthier people, and coinage was depreciated. Spain, which had been conquered, had to be held; and holding it cost the state for two centuries more than it was able to take out. Though there were unprofitable ventures like Spain, victory in Africa and the East gave Rome an economic monopoly which she could exploit.²⁰ The chief problem became how best to divide the fruits of victory. Would the Romans be wise enough to devise a policy for the rational employment of their gains so as to strengthen the commonwealth?

Victories over Carthage and the Eastern powers gave great confidence to the Romans; internal tensions and violence, however, soon brought them to despair. The Senate's position was for a time greatly enhanced, and that of Plebeians, who had risen to political equality with Patricians (287 B.C.), was diminished.²¹ According to Sallust, "Affairs at home and in the field were managed . . . [by] a few men" who had the "treasury, the provinces, public offices, glory and triumphs . . . [while] the people were burdened with military service and poverty."²² But the prestige of the oligarchy of the Senate was short-lived; its rule was soon threatened by ominous forces, for foreign wars brought military leaders a prominence hitherto unknown. Varro received the thanks of the Senate for his services at Cannae, because he had not despaired of the Republic. Victorious generals brought money to their soldiers and new wealth to the treasury, and also enhanced private financial interests which, in turn, supported and sought to influence public affairs. Pompey's policy was in reality that of "Italian speculators" who gained influence in the government and swayed its destiny.²³ Looking back, it seemed to Florus that the age of conquests had been "golden, glorious," but that which followed was one of "iron and bloodshed," bringing the murder of the Gracchi and Drusus, wars against slaves and gladiators, and the struggles of Marius and Sulla, Pompey and Caesar. Extravagance and "profuse largesses," due to increased wealth, armed

¹⁹ Fell: *Etruria and Rome*, pp. 161 ff.; Frank: *op. cit.*, p. 130.

²⁰ Cary: *op. cit.*, pp. 163, 178; Frank: *op. cit.*, p. 129.

²¹ Frank: *op. cit.*, pp. 111, 132; Homo: *Roman Political Institutions from City to State*, p. 134.

²² *War with Jugurtha*, 41. Sallust, trans. by J. C. Rolfe. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

²³ Chapot: *op. cit.*, p. 31; Frank: *op. cit.*, pp. 314 ff., 324 f.

Caesar and Pompey with "fatal torches" which lighted flames and destroyed the Republic.²⁴ War's successes brought military despotism. In the days of Marius, if not before, the real power of the state lay in the army; the civil wars were a struggle for its control, enjoyed for a day by a Sulla, a Pompey, a Caesar, who gained an empire but reduced the Roman people to servitude.

Certain developments leading to this loss of liberty require attention. Power lay theoretically in the people's hands, but in reality in the Senate, whose prestige had been enhanced by the wars. Most pressing of domestic concerns was the need for more free farmers, fewer slaves, distribution of land, and adjustment of Rome's relations with her Italian allies. The aristocratic, oligarchic Senate was satisfied with the *status quo*. The Licinian Law, which aimed to restrict the rich to five hundred acres of public land and a limited number of cattle and sheep to be pastured thereon, had been ineffective. Public lands, greatly increased by the wars, fell into the hands of a few nobles (hardly two thousand, by one account), unconcerned with anything but their own interests. Tiberius Gracchus, however, a noble who saw danger in such maldistribution of wealth, hoped to remedy the situation by rousing the dispossessed to a struggle on their own behalf. It was easy enough to find a following when he put the situation so boldly and bluntly: "The wild beasts that roam over Italy . . . have every one of them a cave or lair to lurk in; but the men who fight and die for Italy enjoy the common air and light, indeed, but nothing else; houseless and homeless they wander about with their wives and children. And it is with lying lips that their imperators exhort the soldiers in their battles to defend sepulchres and shrines from the enemy; for not a man of them has an hereditary altar, not one of all these many Romans an ancestral tomb, but they fight and die to support others in wealth and luxury, and though they are styled masters of the world, they have not a single clod of earth that is their own."²⁵

Tiberius was elected tribune in 133 B.C. and secured an enactment similar to the Licinian Law, but was murdered by senators when he sought re-election. Gaius Gracchus, a brother, continued as tribune the same struggle ten years later. Recognizing that nothing could be done as long as the Senate's power remained supreme, Gaius sought to enhance the financial interests of the *equites* by securing them privileges as collectors of taxes in the provinces. The discontented allies, who had borne the burdens of war without having the rights of citizenship, were to be won over by that boon. Amid the disorders which followed, the reformer was slain in 121 B.C. The chief net results of reforms, therefore, were: an improved position of the *equites* at the expense of

²⁴ Florus, I, 34, 19; 47, 12.

²⁵ Plutarch: *Tiberius Gracchus*, 9-10. Trans. by B. Perrin. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.; Florus, II, 1-3.

the senators; retention by the nobles of great estates, while the landless men were still landless; increase of the number of slaves on the land; and continued lack of citizenship of the allies.²⁶

Of greatest moment for the future were the frustration of democratic procedure by the powerful nobility and the lesson in violence which the people were not slow in taking to heart. Increasingly they now turned to military men, rather than magistrates and laws for alleviation of injustices. Marius, a man of the people and a brilliant commander, was named by the assembly to replace Metellus, the Senate's general who had been fighting Numidian Jugurtha in north Africa. Having concluded the Jugurthine War, Marius became Consul again, and shortly after added to his renown by defeating the Germans and the Cimbrians (102 B.C.), who had long threatened northern Italy. Though successful in military affairs, Marius was less adept at politics; the Senate gained control once more, and reforms still waited. There were significant changes, however; for Marius put the pauperized people to work—in the army—breaking with the long-established property classifications, and establishing a professional, highly trained, military force, whose members had nothing to lose and were ready to follow the best paymaster. Pay for army service had been begun as early as the siege of Veii.²⁷

The unrest of the Italian allies, the solution of whose problems had failed when Gaius Gracchus was slain, meanwhile increased. In 90 B.C., after the murder of Drusus who had become the champion of their cause, the Italians of the south and central regions formed a separate government. Civil war between Rome and Italica followed, resulting in a belated granting of citizenship by Rome (88 B.C.).

The remaining days of the Republic were marked by struggles between rival generals—conflicts which mocked the term "self-government." Sulla, who had just led Roman armies against the allies, was ordered by the Senate to take a command in Asia Minor; the people chose their favorite, Marius. Being without an army, Marius escaped to Africa, while Sulla gained passage of a law to the intent that the assembly must have the Senate's approval in the future, else it could not vote. On Sulla's departure for Asia Minor, Marius returned from Africa, placed himself at the head of a force, did execution on his opponents in the Senate, and was re-elected Consul in 86 B.C. At Sulla's return, the armies of the people at home were defeated one by one; Sulla became Dictator (82 B.C.), meted out "justice" to his enemies in the people's party, and stripped all power from the people's assembly and tribunes, transferring it to the Senate.

²⁶ Ihne: *History of Rome*, v, 10 f.; Cary: *op. cit.*, pp. 293 f.; Frank: *op. cit.*, pp. 251 f.; Homo: *Political Institutions*, p. 153.

²⁷ Livy, iv, 59; Mommsen: *op. cit.*, iii, 413.

Uprisings of discontented slaves also plagued the Romans. Slave revolts, while not a novelty, took on a seriousness which they did not have in earlier days. In Sicily, some sixty thousand led by Eunus (135-132 B.C.) defied Roman arms successfully for a time. In 103 B.C. a second rising under Athenio had to be put down in Sicily.²⁸ Thirty years thereafter, Spartacus, a Thracian gladiator, escaped from the training school at Capua, raised and armed seventy thousand malcontents, and long resisted forces sent against him (73-71 B.C.).²⁹ These events had a profound effect: the Sicilian revolts were partially responsible for serious efforts at reform in the day of the Gracchi; that of Spartacus added fuel to fires already burning in Rome and helped to "precipitate a political crisis."³⁰

The gains of the Senate, sealed only by Sulla's force, did not long stand. Pompey, victorious in Spain, was elected Consul (70 B.C.), having won popular support by promising repeal of Sulla's drastic legislation. Fulfilling his promise brought him greater power. In 67 B.C. he was given a large fleet to clear the pirates from the Mediterranean; speedily succeeding in this, he was given command of forces in Asia Minor, whence he returned in triumph, 61 B.C.³¹ To secure land for his victorious soldiers and sanction for his acts in the East, he needed the Senate's stamp of approval. To this end, Pompey, the popular soldier; Crassus, a wealthy man, who knew that political ambition must be backed by a purse long enough to support an army; and Caesar, ambitious, friendly to the people, a good sport among inferiors, vigorous against opponents, quick to anticipate, judge, execute, and more aggressively expansionist than others Rome had known, formed a triumvirate which, though private, brought the government into their hands.³² Caesar was elected Consul (59 B.C.), requited Pompey, secured certain land reforms, and was made provincial governor of Gaul and Illyricum.³³ In eight years the Gauls were conquered, and vast territories from the Rhine to beyond the Channel were made subject to Rome. Caesar, now ready to return, was a candidate for his second consulship; the Senate, fearful of returning victorious generals, opposed his re-election, gave Pompey command of home forces, and ordered Caesar to lay down the command of his Gallic army. Caesar refused and marched on Rome (49 B.C.). Pompey, knowing his forces unequal to Caesar's, fled from Italy to Greece; there he marshaled part of his men, while others still occupied Spain. Caesar, having been chosen Consul, turned first to Spain and defeated Pompey's followers; thence he crossed back to Greece, and overcame Pompey at Pharsalus

²⁸ Florus, II, 7.

²⁹ Appian: *Civil Wars*, I, 116; Plutarch: *Pompey*, 21; *Crassus*, 8-11; *Florus*, II, 7-8.

³⁰ Cary: *op. cit.*, p. 365; Mommsen: *op. cit.*, III, 102, 309 ff., 380 ff.; IV, 357-64.

³¹ Mommsen: *op. cit.*, IV, 400 ff.

³² Plutarch: *Caesar*, 2; Suetonius: *Julius*, 19-20; *Dio's Roman History*, XLIV, 38; Frank: *op. cit.*, pp. 329, 341, 344; Mommsen: *op. cit.*, IV, 503 ff.

³³ Frank: *op. cit.*, chap. 17; Mommsen: *op. cit.*, V, 38-95.

(48 B.C.), thus ending a struggle which Lucan called "legality conferred on crime."³⁴ When Caesar returned to Rome three years later, after successes in Asia Minor and north Africa, he became permanent Dictator. Everything lay in Caesar's lap; honors were heaped upon him; but he was praised most roundly, it was said, when he refused a diadem at the Lupercalia. By mildness toward those who had opposed him, by quieting the fears of the Senate and the people, and by magnificent spectacles to divert them, Caesar sought to win the Romans.³⁵

The Senate, whose incompetence and selfishness had been a major factor in bringing affairs of state to such a pass, was now more than ever a hollow mockery. Subservient to its masters, it had been enlarged at will by Sulla to six hundred and then by those whom Caesar honored. Caesar's murder (44 B.C.) introduced no new principle into Roman affairs; it continued faithfully the pattern of violence begun in the days of the Gracchi. The assassination of Cicero, bright symbol of an expiring age, followed the next year. In his death, though it has been called "a costly but necessary assurance of peace," the ablest voice of political reason was stilled.³⁶

Unfortunately, peace did not come; the civil war for power went on. Octavian, Caesar's adopted son, joined Antony and Lepidus to form a new triumvirate; which, having increased its resources by confiscation of property and its security by murdering its opponents, continued the struggle against the last supporters of the Republic, Brutus and Cassius, and defeated them at Philippi, 42 B.C. The contest then narrowed to a struggle between Lepidus, Antony, and Octavian, the latter being finally victorious at Actium, 31 B.C.

The question was now whether the rule of one could cope with those problems which the leaders of the people and of the Senate had failed to solve. For the difficult task a new organization was about to be created. Octavian, adept at politics, conciliated the Senate and maintained many republican forms, being advised to let it appear that "full authority" lay in the Senate. Similarly, in the time of Julius, the Senate had solemnly granted him "permission to do whatever he wished . . . in order that he might seem to be acting with some show of legal authority."³⁷ Augustus, in fact, possessed power equal to Diocletian's, but for a time it seemed politic to preserve old forms.³⁸

Certain restraints on freedom, however, were thought necessary: in some cities, the people were not to have "authority in any matter," nor "convene in

³⁴ *The Civil War*, I, 1 et seq.

³⁵ Plutarch: *Caesar*, 61; Dio, XLII, 30-3; XLIII, 14-8, 22-4, 45; XLIV, 6.

³⁶ Lawton: *op. cit.*, p. 71; Chapot: *op. cit.*, p. 34.

³⁷ Dio, XLII, 20; LII, 31. Trans. by E. Cary. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

³⁸ Homo: *Political Institutions*, pp. 218 f.; Frank: *op. cit.*, pp. 348 f.

any assembly," for no good would come of it; in Rome, too, they were not to convene "in any meeting . . . to transact business."³⁹ The Senate might appear to be a power, but in reality it was not. Government resided in him who ruled the army, and continued so till the end, though in later centuries the army itself made and unmade emperors on numerous occasions.⁴⁰

For an historic moment during the first two centuries of the Empire, the people of Rome experienced a degree of peace theretofore unknown. Many of the early imperial masters had "redeeming features." Even Domitian seemed praiseworthy compared with later emperors.⁴¹ Government suffered, of course, from the incompetence and recklessness of Caligula (37-41 A.D.) and Nero (54-68 A.D.); the crimes of Domitian's "reign of terror" made happy the lot of one whose fate it was to die in his prime without witnessing them.⁴² The Pax Romana was disturbed by occasional threats of civil war, as at the beginning of Vespasian's reign; by frontier wars; by Claudius' conquest of Britain; by the destruction of Jerusalem (70 A.D.); by war on the Dacians (101-106) and the Parthians (115-117); and by an effort to hold back the Germans in the reign of Marcus Aurelius. Still, in comparison with the bloody struggles from the days of the Gracchi to the time of Augustus, this was peace;⁴³ for the frontier wars were far from Rome, provincials chiefly made up the distant armies, and those at home felt no premonition of disasters that were to come.

A century of assassination, revolution, and civil war followed Marcus Aurelius. Internal decay and disorder invited intrusion of outside forces. Rome could not protect her conquered territories—Greece, Gaul, Spain, Africa, and even parts of Italy; soon she would be unable even to protect herself. After a century of portentous events, Diocletian (284-305) restored order by dint of heroic effort and despotic measures, and sought, though unsuccessfully, to provide for its continuance by creating two emperors (*Augusti*), to be supported by two Caesars who would come to power immediately at the termination of any reign. An army of governmental officials was created to administer the vast imperial machinery. To support such a bureaucracy and the army required vast increases in expenditure, heavier taxes, and more expert collection; and these, combined with fixed prices for commodities and labor, were ruinous to all kinds of business. Men sought freedom from such burdens, but were compelled by laws to follow their wonted occupations, having become in fact little better than slaves of the state. Rome's internal weaknesses were formidable in-

³⁹ Dio, *LI*, 30.

⁴⁰ Chapot: *op. cit.*, pp. 66 f.; Lot: *The End of the Ancient World*, pp. 8 ff.

⁴¹ Ammianus Marcellinus, *XVIII*, 4, 5.

⁴² Tacitus: *Agricola*, 44-5.

⁴³ Dill: *Roman Society from Nero to Marcus Aurelius*, p. vi; Cary: *op. cit.*, p. 663; Chapot: *op. cit.*, pp. 51 f.

dced; yet, outwardly, her defenses were "never more complete than in A.D. 330. . . ." ⁴⁴

Constantine (324-337), victorious in the race to seize power after Diocletian's death, made Constantinople his capital. In the West the Empire struggled on uncertainly for two hundred years, witnessing increasing incursions of northern peoples, now generally superior to any force the Empire could muster. Many barbarians had long been settling on lands within imperial borders, and had been used to bolster up declining military forces, even to provide officers. Theodosius' success (379-395) in reuniting the Empire and restoring order was outwardly imposing, but by no means indicated new strength on the part of Rome; on the contrary, such power as it exhibited came largely from the vigorous barbarians whom Theodosius was able to employ in the Empire's services.⁴⁵ Claudian praises the Vandal, Stilicho, who has "dispersed the darkness that enshrouded our empire," "restored its glory," saved civilization, and enabled the poet to sing again of war and victory—"a Roman song to Roman ears."⁴⁶ Under Theodosius' two sons, Honorius and Arcadius, the Empire was again divided. Honorius, having destroyed his father's able friend, Stilicho, saw the victorious Goths sweep into Rome in 410. In rapid succession Gaul, Spain, Africa, and Britain were lost to the western Goths, Vandals, Burgundians, Angles, and Saxons; even Italy, tiny remnant of a powerful Empire, was faced by invasion of the Huns (450-453), and Rome was taken by a resurgent wave of Vandal forces from Africa in 455. Twenty years later (476) the Germans displaced the last Roman emperor, Romulus Augustulus, and gave power to their leader, Odoacer, who ruled with nominal approval from Constantinople. Barbarians themselves then struggled for the reins of government at Rome, simulating earlier factional wars of the Romans. Theodoric the Great dispossessed Odoacer of his seat (493); but the kingdom of the eastern Goths was in turn destroyed by the forces of Justinian in his efforts to reconstitute a united Empire.

Meanwhile, Rome, once the persecutor of Christians, emerged as a Christian tower of strength, to which men turned for refuge. The "City of God" was to be eternal, as pagan Rome had been alleged to be. Constantine turned to the fortress and found Christianity elastic enough to bless his arms and lead him, as he thought, to victory in 312; Christianity, in turn, won recognition. This gain in respectability made membership in the church attractive to many who had shunned it when it was a despised "subversive" movement. Men of ability, both Roman and "barbarian," were drawn increasingly to the work of organ-

⁴⁴ Cary: *op. cit.*, pp. 735, 747; Lot: *op. cit.*, pp. 20 ff.; Frank: *An Economic Survey of Ancient Rome*, v, 302 ff.; Thorndike: *The History of Medieval Europe*, pp. 70 ff.

⁴⁵ Lot: *op. cit.*, p. 198.

⁴⁶ Claudian: *The Gothic War*, preface, 1-2; 36; On Stilicho's Consulship, II, 116-30.

ization and government in this ecclesiastical state which rose phoenix-like from the ruins of the secular order.

ATROPHY OF SELF-RULE

Polybius observed that all things are subject to mutation and decay, there being two sets of factors in the process, internal and external. Established supremacy, "uncontested sovereignty," and extended prosperity render life more extravagant, increase rivalries, encourage "purse-proud display,"⁴⁷ and condition the process of disintegration. Significant changes in the pattern of life began to appear when Rome turned to foreign conquests. The process of change became rapid, moving like a flood in the last century of the Republic. Externally, Rome grew stronger, wealthier, more magnificent; internally, however, decay made headway in political, economic, social, and religious life.

Mental anguish and despair were felt by many as the clash of warring factions foretold the Republic's end. Cicero gave the toga pura to his son at Arpinum, his native town, for "Rome is no longer ours." In respect to the contest between Pompey and Caesar, he says, men everywhere are "gloomy and dejected."⁴⁸ Pompey, he confesses sadly, "has always won in a bad cause, but fails in the best. . . ." "Absolute power is what he and Caesar have sought . . . not . . . the happiness and honour of the community." "We are beaten, ruined and utterly captive."⁴⁹ At the death of Cicero's daughter Tullia (45 B.C.), Sulpicius Rufus suggests a melancholy consolation: "She and the Republic passed away together." Many cities and states have crumbled, famous men have perished, Rome's imperial sway has been "terribly impaired," and the "provinces have been shaken to their foundations."⁵⁰ The note of sadness and despair continues even amid the fanfare of empire. Livy⁵¹ respects the piety of Augustus, who restoreth the temples; but the times are bad, and neither the evils nor the remedies are enduring; there is consolation, however, in the reflection that in writing of Rome's great past one can withdraw from the calamities which have long been witnessed.⁵² Tacitus, bitter and contemptuous as he looked back to the breakup of free government, declared that at Rome consuls, senators, and knights plunged into slavery—the greater the rank, "the more eager" the hypocrisy.⁵³ Uneasiness, uncertainty, and distrust affected

⁴⁷ Bk. vi, 57.

⁴⁸ Showerman: *Rome and the Romans*, p. 104.

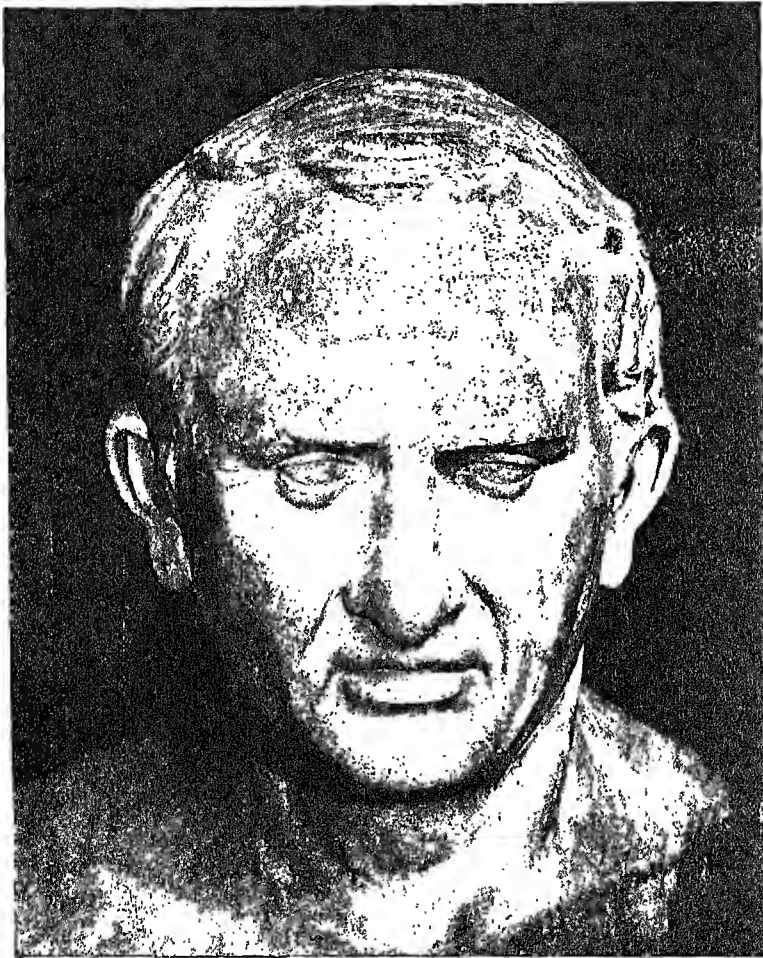
⁴⁹ Cicero: *Letters to Atticus*, vii, 23, 25; viii, 11. Trans. by E. O. Winstedt. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁵⁰ Cicero: *Letters to His Friends*, iv, 5. Trans. by W. G. Williams. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁵¹ Bk. iv, 20.

⁵² *Ibid.*, i, preface.

⁵³ *Annals*, i, 7.



CICERO Vatican, Rome

(Courtesy, The Metropolitan Museum of Art, New York)

all; none could safely speak openly, honestly, their true opinions; even to do so privately was dangerous. Dio credited this solemn speech to Cato of Utica, when sending his son to Caesar: "I, who have been brought up in freedom, with the right of free speech, cannot in my old age change and learn slavery instead; but for you, who were both born and brought up amid such a condition, it is proper to serve the divinity that presides over your fortunes."⁵⁴

The processes of democratic government, whose stabilization was accom-

⁵⁴ Dio, XLIII, 10-1; XLII, 27-8. Trans. by E. Cary. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

plished by the law of 287 B.C. that equalized Patrician and Plebeian, had been slowly undermined during the foreign wars; the evidence of decline is writ large amid the violence which met the reformist efforts of the Gracchi and Drusus. Back of this political metamorphosis were deep-seated economic and social changes: decline of the once sturdy, free, agricultural class; growth of slavery; concentration of wealth, both of landed nobles and equites; the movement of rural folk into the city; and the increase of a city proletariat, dependent and undependable. This gulf between a small, independent, rich class and a large, dependent poor one would ultimately split the state and destroy it in civil war.

Numerous indications of danger appeared, apart from the increase of violence substituted for lawful action. Corruption grew; politics degenerated to a petty game.⁵⁵ Bribery and force reduced self-government to naught. Leaders organized those with votes to sell. Antibribery laws (67 B.C.) were of little avail; all consular candidates (54 B.C.) were indicted for bribery. Varro tells of the arrest of a man caught stuffing "the ballot-box."⁵⁶ The qualifications of a politician may be inferred from the fact that Cicero's son ran successfully for the aedileship at Arpinum, presumably because he was his father's son, hail fellow well met, had a reputation for athletic prowess, and was able to carry a load of liquor. Support of candidates was sought from ballplayers, who came to have great popularity with the amusement-loving populace, as inscriptions at Pompeii show. Places of amusement became the best barometers of public opinion; of three places where it could be gauged—public discussions, voting in assemblies, and at plays and games—playhouses and gladiatorial games were the best. Though Cicero "despised" the applause given to popularity-hunting citizens at the games, he regarded it not "as applause, but as a judgment," when it came from the highest, the middle, and the lowest.⁵⁷ Naturally, those who sought popular approval gained it more and more by lavish entertainment.⁵⁸

Local government continued to some extent for a time under the Empire. Augustus preserved the "shadow of a free state" at Rome, allowing election of magistrates, but Tiberius (14-37) wiped out the semblance of government by the people.⁵⁹ Outside of Rome local government maintained a show of life longer than at the capital. A lively interest in politics persisted at Pompeii. Even women, though not voters, sometimes proposed candidates.⁶⁰ The second century, of course, saw a greater decline of self-government; the imperial régime absorbed local powers, and little dignity remained to make an office attractive. The chaos of municipal financial affairs in an age of luxury and reck-

⁵⁵ Fowler: *Social Life at Rome in the Age of Cicero*, pp. 130 ff.

⁵⁶ On Agriculture, III, 5, 18; Abbott: *Society and Politics in Ancient Rome*, pp. 104 f.

⁵⁷ *Philippic* I, 15; Abbott: *op. cit.*, pp. 14 f., 100 f., 114, 201 f.

⁵⁸ Rostovtzeff: *The Social and Economic History of the Roman Empire*, p. 33.

⁵⁹ Tacitus: *Annals*, XIII, 28; Breasted: *Ancient Times*, p. 618.

⁶⁰ Abbott: *op. cit.*, pp. 10, 19.

less spending deterred many who might have sought a public post; besides, one's private fortune was heavily taxed to provide lavish entertainments which the public had come to expect of officeholders. Since there was little to gain and much to lose, men increasingly avoided that for which they had once been ambitious. At Malaca, in the reign of Domitian (81-96), the magistrate in charge of elections was empowered to add names himself if candidates were not sufficient, and these candidates could then nominate others. As it had been earlier in Rome, so too in local towns it became impossible to preserve self-government. Men of ability and ambition went to Rome to win imperial favor and position. Even on petty, local matters the advice of the Emperor was sought.⁶¹ Certain republican forms and practices were kept up in the second century, but local magistracies were nonexistent, or became mere titles at the end of the third. Even the fiction of senatorial approval, observed since Augustus, was ignored after 282; the faint afterglow of Roman freedom was completely obscured by the frank despotism of Diocletian.⁶²

During the civil wars men had become distrustful of self-rule; the chaos of those days made them ready to submit to the authority of anyone who would relieve them of responsibility. Moreover, despite evil and brutality credited to Augustus, there were improvements in administration, which gave grounds for soaring popular confidence. Besides, Augustus was lavish with games.⁶³ Many were ready to forget or forgive his deeds in the civil war for what he accomplished when he came to power. His long reign of forty-four years was an important factor. Many who had known the Republic died with it; the new generation knew it chiefly by tradition—a tradition of its most horrible days.⁶⁴ If there were those, then, who mourned the death of the Republic, there was no lack of others who sang the virtues of one-man rule. "Thine age, Cæsar," says Horace, "has brought back plenteous crops . . . restored the standards . . . closed the gate of Janus Quirinus . . . put a bridle in the mouth of license . . . banished vices and recalled the old ways of life. . . ." ⁶⁵ In distant provinces men vowed to sacrifice all for the welfare of Augustus and his children.⁶⁶ His praises were engraved upon enduring stone: "Providence has marvellously enriched and adorned human life by giving us Augustus . . . our saviour, the benefactor of mankind . . . making wars to cease and order to reign everywhere." ⁶⁷

⁶¹ Pliny: *Letters*, x, 17 A-24.

⁶² Cary: *op. cit.*, pp. 739 ff.; Dill: *op. cit.*, pp. 246 ff.

⁶³ Suetonius: *Augustus*, 28-45, 62, 67-72; Chapot: *op. cit.*, pp. 41 f.; Showerman: *op. cit.*, pp. 416 f.

⁶⁴ Dio, LVI, 43-5.

⁶⁵ Odes, iv, 15. From *Horace for English Readers*, translated by E. C. Wickham (The Clarendon Press).

⁶⁶ Oath of Paphlagonians, 3 A.C., Botsford, *Source-book of Ancient History*, pp. 467 f.

⁶⁷ Chapot: *op. cit.*, p. 41.

Senators vied with each other in proposing extraordinary honors at his death: consuls should celebrate his birth with *Ludi Martiales*; tribunes should care for the Augustalia; his cortège should pass through the triumphal gate, led by the Victory Statue; children of the best families were to sing dirges; iron rings, instead of gold, were to be worn the day of his funeral. The people, it was said, had done well to refuse to allow him to return to private life: "a democracy could never accommodate itself to interests so vast, but . . . leadership of one man would be most likely to conserve them. . . ." Besides, ". . . who would not choose to be safe without trouble, to be prosperous without danger. . . ?" ⁶⁸

Ecstasy over one-man rule was destined to be rudely disturbed. Peace, prosperity "without danger," and safety "without trouble" were precarious and fleeting. There were capable, sympathetic rulers from Augustus to Majorian, but government from first to last was more or less constantly disrupted by assassination: seven of the first twelve died by violence; and conspiracy dogged the heels of even the ablest in the first two centuries,⁶⁹ though these were the best years the Empire knew. The old mores could not be recalled; evils increased instead of declining. The private vices of Augustus were reputedly enormous, while publicly he sought to restore religion and restrict vice. Tiberius (14-37), though able, was suspicious, encouraged informers, prosecuted many for treason, and was credited with monstrous cruelties and immoralities.⁷⁰ Caligula (37-41) made the virtues of Augustus and Tiberius shine with renewed splendor, for he killed the wealthiest, confiscated their estates, and was himself assassinated. Romans had a foretaste of their disgrace and insecurity under capricious one-man rule, when Caligula made his horse a priest and consul, and wished the people had only one neck, that he might cut off all in one stroke!⁷¹ Claudius (41-54), though considered little better than an imbecile, was generally kind, liberal-minded and well-intentioned toward his people; but he governed under the influence of his freedman, Pallas, had his wife, Messalina, killed, and was himself poisoned by Agrippina.⁷² Nero (54-68), though well educated and restrained for a time by Seneca, left such a record of evil and so little of good that his name became synonymous with infamy.⁷³ Galba was assassinated; Otho took his own life; Vitellius (69) filled Rome with feasting, riot, and massacre during his scant year's rule, and was killed by Vespasian's troops.⁷⁴ Vespasian (70-79) restored somewhat the tar-

⁶⁸ Dio, LVI, 39-40, 46. Trans. by E. Cary. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.; Suetonius: Augustus, 100.

⁶⁹ Dill: *op. cit.*, p. 40.

⁷⁰ Suetonius: Tiberius, 41-5, 54-63.

⁷¹ Dio, LIX, 5, 10, 13, 14; Suetonius: Caligula, 22-42.

⁷² Suetonius: Claudius, 39, 44.

⁷³ Dio, LXI, 3-LXIII, 29; Suetonius: Nero, ~~passim~~.

⁷⁴ Suetonius: Galba, 19-20; Otho, 11; Vitellius, 11.

nished imperial reputation, enjoyed a mild, constructive rule, and died a natural death, with a wisecrack on his tongue. Though credited with promoting learning, he revived the laws against philosophers when some of them sighed for the Republic, and caused Helvidius Priscus to be put to death.⁷⁵ Titus (79-81), though generally kindly, was also credited with cruelty and high-handed action.⁷⁶ Romans thought him fortunate in having a short reign. Domitian (81-96) sought to restrict licentiousness and even to enforce Augustus' laws on marriage. Suetonius thought his vices about equal at first to his virtues; later he turned all to vice, and was finally stabbed by one of his freedmen.⁷⁷ Nerva (96-98) compensated in some degree for the evils of Domitian; and the distinguished character and abilities of Trajan (98-117), Hadrian (117-138), Antoninus Pius (138-161), and Marcus Aurelius (161-180) gave the Empire more than four score years of orderly government. Commodus (180-192), however, vied with the worst emperors and emptied the treasury on beast fights and gladiatorial shows; Pertinax, in his brief reign (January to March, 193), was compelled to raise funds by selling at auction the possessions of his predecessor.⁷⁸

THE BURDENS OF EMPIRE

The evils of reckless private capitalism, at the end of the Republic, were conspicuous. One of the worst faults was corrected under Augustus by a census providing a more exact basis for provincial tax collection.⁷⁹ Tax-farming, though still employed to some extent, was carefully scrutinized and gradually came to an end; but government officials, too, proved harsh taskmasters. Increased regulation of life meant, of course, an increase of bureaucracy. Augustus created agencies for the care of buildings, roads, aqueducts, the Tiber, and grain distribution; for selecting senators, and to review the *equites*. The censorship was revived, the number of praetors increased.⁸⁰ Ultimately, this bureaucracy became a menace. The mechanism of government was so vast and intricate in the third and fourth centuries that it was a master rather than a servant, especially when emperors, raised up by the soldiers' choice, had little or no education or experience to prepare them for the onerous problems demanding solution.⁸¹

It is one of the most impressive facts of the imperial period that, notwithstanding the extent of power and the greatness of material resources, there was

⁷⁵ Suetonius: *Vespasian*, 15, 18, 23-4.

⁷⁶ Suetonius: *Titus*, 6-9.

⁷⁷ Suetonius: *Domitian*, 3, 10-2, 14-7; *Ammianus*, xviii, 4, 5; Cary: *op. cit.*, p. 611.

⁷⁸ *Dio*, lxxiii, 9, 10, 14, 16-8; lxxiv, 5.

⁷⁹ Cary: *op. cit.*, p. 509; Fowler: *op. cit.*, pp. 95 f.

⁸⁰ Suetonius: *Augustus*, 37.

⁸¹ Paul-Louis: *Ancient Rome at Work*, p. 230; Rostovtzeff: *op. cit.*, pp. 459 ff.; Cary: *op. cit.*, p. 743.

a conspicuous lack of continuity of policy, a failure to make government function so as to secure the well-being of the people. There were able, heroic men; there were individual and temporary successes; but, reviewing the period from Nerva (96-98) to Alexander Severus (222-235), Frank concludes that there were "very few intelligent plans though much honest endeavor. . . ." ⁸² One of the greatest evils lay in the tendency to get everything into imperial hands. Confiscation of property was pushed rapidly by Septimius Severus (193-211). Frank holds it probable that Septimius Severus "dealt the fatal blow to the Empire" by confiscating and centralizing the ownership of vast estates in the government. Imperial ownership injured agriculture, which was already badly off; increased wealth of the treasury made it even more attractive spoil to those of the army who might succeed to imperial sway, and thus encouraged the ". . . anarchy of the next fifty years." ⁸³ From the middle of the third century there were continual disruptions and increasing awareness of insecurity. Business suffered, and many began to hoard money. Lot, speaking of the Council of State of Diocletian's day, pays tribute to the "praiseworthy" spirit of his twelve hundred edicts which aimed to end fraud and protect the workers, the weak, and the poor against the rich; but there was no originality, they merely repeated "old decisions." Aurelian, Diocletian, and Constantine, able as they were, recouped the losses of the third century and restored imperial finance and administration to a degree of order ". . . nearly as good as in the first century . . ."; but their heroic measures only delayed, and could not avert, the ultimate disaster of succeeding centuries. ⁸⁴ Diocletian's plan to fix prices and wages (301) ended in failure, not necessarily because it was erroneous in principle, but because of errors in detail, rigidity, and oversimplification. ⁸⁵

By the middle of the third century various means were employed to meet the growing costs of government—depreciation of coinage, compulsory labor, levying of goods. Under Nero there was already some depreciation, the denarius being reduced from 3.90 to 3.41 grams; while the aureus weighed 7.40 or 7.60 grams, in contrast to 8.18 at the time of Caesar. Degeneration continued under the Antonines and reached lower levels in the time of Septimius Severus. Diocletian and Constantine restored coinage to a sound basis, but coin continued to be scarce, and soldiers were paid increasingly in kind. Lack of money to pay expenses led ultimately to greater dependence on barbarian soldiers. ⁸⁶

Taxation was an old problem; it grew with each increase of governmental functions. In the days of Camillus (446-365 B.C.) taxes had caused grumbling;

⁸² *Economic Survey*, v, 88.

⁸³ *Ibid.*, v, 84 f.; Rostovtzeff: *op. cit.*, pp. 362 f.

⁸⁴ Lot: *op. cit.*, pp. 20 ff., 59 f.

⁸⁵ Frank: *Economic Survey*, v, 299 f.; Cary: *op. cit.*, p. 745.

⁸⁶ Lot: *op. cit.*, pp. 55 f., 58 f.

even orphans were subjected to taxation to pay for military campaigns.⁸⁷ In the Republic and the early Empire, however, there was a degree of restraint. Tiberius sought to keep down governmental expenses, for he held that a shepherd ought only ". . . to shear his flock, not skin it."⁸⁸ As money became scarce and less stable in the third century, increasing dependence was put on taxes in kind, *annona*.⁸⁹ Growth of bureaucratic machinery, reaching unprecedented heights in Diocletian's time, meant inevitably still heavier taxation. Constantine's new Eastern court added to the burden. Getting money to support bureaucracy, army, shows, and public construction became the chief task of government, for those who lived on public money outnumbered those who provided it.⁹⁰

Efficiency in gathering taxes was great. Had administrative ingenuity been directed equally energetically toward constructive ends and increasing the well-being and happiness of the people, the tale of Rome's grandeur might have been truly enhanced. Instead of the voice of contentment there was lamentation and despair. Lactantius (d. about 325 A.D.) drew a bleak picture: "Surveyors having been spread abroad, and occupied in a general and severe scrutiny, horrible scenes were exhibited, like the outrages of victorious enemies, and the wretched state of captives. Each spot of ground was measured, vines and fruit-trees numbered, lists taken of animals of every kind, and a capitation-roll made up. In cities, the common people, whether residing within or without the walls, were assembled, the market-places filled with crowds of families, all attended with their children and slaves, the noise of torture and scourges resounded, sons were hung on the rack to force discovery of the effects of their fathers, the most trusty slaves compelled by pain to bear witness against their masters, and wives to bear witness against their husbands. In default of all other evidence, men were tortured to speak against themselves; and no sooner did agony oblige them to acknowledge what they had not, but those imaginary effects were noted down in the lists. Neither youth, nor old age, nor sickness, afforded any exemption. The diseased and the infirm were carried in; the age of each was estimated; and, that the capitation-tax might be enlarged, years were added to the young and struck off from the old. General lamentation and sorrow prevailed."⁹¹ Libanius (314-393) alludes to the "intolerable tax," the misery of people as the tax year approached. Laborers were ". . . crushed beneath the burden"; the poorest cobbler could not escape. Small tradesmen and even courtesans were taxed by Constantine. The people were "in tears and

⁸⁷ Plutarch: *Camillus*, 2; *Livy*, v, 10.

⁸⁸ Suetonius: *Tiberius*, 32; Frank: *Economic Survey*, v, 36.

⁸⁹ Rostovtzeff: *op. cit.*, pp. 463 ff.

⁹⁰ Paul-Louis: *op. cit.*, pp. 231 f.

⁹¹ *The Ante-Nicene Fathers*, vii, 310.

grief"; the rack and whip extorted from the poor what they could not afford to pay. Children were sold, daughters made prostitutes, to secure money to pay taxes.⁹²

Impoverishment has been justly called the "salient trait" of the declining Empire.⁹³ The *curiales* of the cities, compelled to bear most of the increasing weight of government, while senators were exempt from municipal taxes, ultimately found their position so odious that they fled from it by any path open to them. The richer at times gained admission to the senatorial order; the poorer sometimes found refuge among the artisans, a form of servitude itself, but less onerous than curial membership; others found respite in practical serfdom on great estates, or in the life of the religious recluse. Flight of the curial class was a grave danger to the state; this was enhanced by the fact that the landed aristocracy was clever in evading its obligations. In the early fifth century the Emperor warned the *curiales* against seeking senatorial rank, and their position became so hedged in by restrictions that it has been described as a form of "hereditary servitude," or even worse, an *ergastulum*.⁹⁴ Majorian (457-461), desirous of alleviating suffering of the poor, remitted back taxes and re-instituted the *defensores*, whose duty it was to inform the Emperor about abuses and to defend the poor; but he could really do little to improve their situation. The rich, however, were often able by various devious methods—bribes, delaying payments, and having their agents refuse information—to evade their taxes. As the government grew weaker, the landed aristocracy still pursued its own interests. Dill concludes that Majorian ". . . found his own nobles and civil servants as dangerous enemies of the state as the Vandals."⁹⁵

ECONOMIC, SOCIAL, AND RELIGIOUS CHANGES

POPULATION AND SOCIAL CLASSES Rome's wars of expansion, though extensive, brought increased revenues up to a certain point; thereafter they became a losing game. Egypt was the last profitable accession. Augustus realized that Rome's expansion had reached its zenith.⁹⁶ The years of military expansion were also marked by increasing territory and population. The Empire's inhabitants have been estimated variously at 120,000,000 (Gibbon), 90,000,000 (Von Wietersheim), 60,000,000 to 65,000,000 (Delbrück), and, by Beloch's painstaking calculation, at 54,000,000 in an area of 3,339,500 square kilometers. Gibbon's figure may have been too generous, Beloch's too small; the tendency to-day is to place the Empire at from 70,000,000 to 100,000,000

⁹² Lot: *op. cit.*, pp. 174 f.

⁹³ Rostovtzeff: *op. cit.*, pp. 470 f..

⁹⁴ Dill: *Roman Society in the Last Century of the Western Empire*, pp. 249, 253 f., 259.

⁹⁵ *Ibid.*, pp. 231, 268, 276 ff.

⁹⁶ Frank: *Economic Survey*, v, 2; Paul-Louis: *op. cit.*, pp. 3 f.; Cary: *op. cit.*, pp. 247, 495.

in the time of Augustus. This population was widely dispersed: perhaps three-fourths of it was in the provinces; Italy may have had 15,000,000 or as little as 6,000,000; Rome herself, whose size was fantastically estimated by Vossius and Lipsius at 14,000,000 and 4,000,000, respectively, probably had approximately 1,000,000 inhabitants.⁹⁷ Despite her large numbers, heads of the state feared future depopulation, not without some reason: the wars had caused the loss of many men; and wealth, luxury, and a love of free, unburdened life were growing. Caesar "offered prizes for large families"; Augustus castigated the unmarried for rendering the state "barren and childless," increased penalties on them, and gave a cash bonus for each child.⁹⁸ Though these measures seem to have met with contempt, concentration of city populations increased at Rome and elsewhere until the third century; thereafter, cities declined, partly because of increasing celibacy, partly because of an exodus to the country, stimulated by growing burdens of taxation and various restraints which affected richer elements and artisans. Though statistics are not available from Constantine to Theodosius, it is believed that the population was less dense than at the beginning of the Empire and under the Antonines.⁹⁹

Significant social mutations came inevitably as Rome expanded beyond her peninsular frontiers. The Punic wars brought many Plebeian families to prominence in military and political life. In 179 B.C. nearly three-fourths of the Senate were of Plebeian origin. Strangers flowed in from foreign shores; slaves increased rapidly, and many of them ultimately gained freedom, wealth, and influence; the old aristocracy declined relatively and was either submerged or united with new elements to form a new elite. Old names lost their meaning in a social revolution that made knights and senators of those who had been cobblers, barbers, slaves. Toward the "new men" there was, of course, contempt and anger.¹⁰⁰ Catiline derides Cicero, a "new man." Horace, himself the son of a freedman, berates the wealthy freedman who "now ploughs a thousand acres," drives his ponies, and sits in front at the theater. What can't money do? Pliny rails at the "impudent," "obscure young men" in the courts of law.¹⁰¹ Rome never became a social democracy, however. Augustus established certain distinctions between free and freed: slaves were to have one name; slaves of the state, two; freedmen, three; while those born free "might have four names or more." Other restrictions made eligible for curule offices

⁹⁷ Beloch: *Die Bevölkerung der Griechisch-Römischen Welt*, pp. 38, 314, 507; Frank: *Economic Survey*, v, 218; Gibbon: *The Decline and Fall of the Roman Empire*, III, 34; Lot: *op. cit.*, pp. 66 f., 69 f., 72; Cary: *op. cit.*, pp. 486, 507.

⁹⁸ Dio, XLIII, 25; LVI, 1-2, 4-5; Suetonius: *Augustus*, 46.

⁹⁹ Paul-Louis: *op. cit.*, p. 228; Dio, LVI, 6, 10.

¹⁰⁰ Homo: *Political Institutions*, p. xiii; Friedländer: *Roman Life and Manners under the Early Empire*, I, 108 f.; Dill: *Nero to Aurelius*, p. 61.

¹⁰¹ *Letters*, II, 14; Appian: *Civil Wars*, II, 2; Horace: *Epode* IV.

only those whose forbears had held them, thus creating a hereditary nobility, to which, of course, names might be added by imperial favor.¹⁰²

The free population was composed of three main divisions: senators, equites, and commoners. The senators, representing prestige of blood, wealth, and the distinction of long service, constituted a small, firmly intrenched aristocracy. In contrast to the Senate, made hereditary by Augustus, the equites rose and fell according to wealth. The order once comprised all those who could equip themselves for cavalry service; ultimately it included all outside the senatorial aristocracy whose wealth amounted to 400,000 sesterces (about 20,000 dollars). The wealth of this equestrian bourgeoisie, "born of war and founded on violence," was based on tribute from conquered peoples, the profits of wholesale trade, and numerous other large-scale undertakings, private and public. Big business gained the social approval of those who scorned the petty gain of little men. Huge fortunes made them powerful friends and dangerous enemies. One publican boasted "I have more gold than three kings."¹⁰³ Cicero advised Lentulus not to fall afoul of their interests, and reminded him of Scaevola who had gained their enmity.¹⁰⁴ By ability to finance needy, ambitious men, they shaped directly and indirectly the destiny of self-government. Caesar's debt of £280,000 was a modest one. As the Republic neared its end, the equites held "the balance of power."¹⁰⁵

Senators and equites enjoyed wealth and social rank which set them off from the commoners, the bulk of the free population (comprising free workers, freedmen, idlers), soldiers who could not return to the simple, rural life, and petty farmers, forced from the land by the growth of great estates. Having citizens' rights, these were the object of solicitous vote-getters in the late Republic; since they constituted a potential danger to the privileged minority classes, they must be increasingly fed and occupied with circuses. Marius enrolled the proletariat extensively in his army, gaining support from those who had nothing to lose and much to gain.¹⁰⁶

The ranks of citizens swelled rapidly. Under the Republic and during the first centuries of the Empire, citizenship was highly prized. Full citizenship gave two kinds of rights: *jura publica* and *jura privata*, rights pertaining to voting, holding office, marriage, and acquiring and holding property. An inferior order of citizenship conferred certain civil rights, but entailed no right of

¹⁰² Friedländer: *op. cit.*, I, 98 f.; Paul-Louis: *op. cit.*, p. 229; Johnston: *The Private Life of the Romans*, p. 329.

¹⁰³ Paul-Louis: *op. cit.*, pp. 11, 122, 124; Cicero: *Offices*, I, 42; Friedländer: *op. cit.*, I, 107, 134; Cary: *op. cit.*, p. 263.

¹⁰⁴ *To His Friends*, I, 9.

¹⁰⁵ Johnston: *op. cit.*, p. 334; Paul-Louis: *op. cit.*, p. 125.

¹⁰⁶ Sallust: *Jugurtha*, 86; Fowler: *op. cit.*, pp. 26 ff.; Abbott: *op. cit.*, pp. 102 f., 132 f.; Johnston: *op. cit.*, pp. 370 f.

suffrage. To gain these boons, persons of low estate sought the influence of powerful friends, or friends of friends. Pliny thanks Trajan for granting "complete privileges of a Roman to the freedwomen of a lady" and making Harpocras, his physician, a citizen.¹⁰⁷ The inclusiveness of citizenship finally became the butt of witticisms. Clotho suggests waiting an "hour or two" till Roman citizens can be made "of the half dozen" still outside.¹⁰⁸ In 212 A.D. all free men in the Empire were given citizenship. Ultimately citizenship and its duties and taxes became a burden from which men sought escape. To join the army, to be a rustic laborer, to become a monk, even to cross frontiers and dwell among barbarians, became more desirable than to suffer under the restraints and tax loads imposed by the emperors and the bureaucracy they had created.¹⁰⁹

Slaves, though few in the early years of the Republic, increased as Rome extended her sway. A tax on manumissions (357 B.C.) suggests that they were already of some consequence; but not till after the wars of the third and second centuries did slavery become so general as to debase labor. While the number of slaves is unknown, there may have been 5,000,000 in Italy at the end of the Republic; 200,000 in Rome in Cicero's day, and 280,000 in the time of Augustus.¹¹⁰ This would be about one slave to two freemen; other estimates make the proportion about one in four. Since the wars of expansion provided the bulk of the slave supply, the market dwindled when they came to an end, and prices soared to fantastic figures. If £100 became a not uncommon price, it is easy to understand why doubts arose as to the economic value of slave labor, and that it played a constantly declining rôle. Columella advised the use of free labor rather than slaves, wherever possible.¹¹¹

In several ways slavery was injurious to the state. Inhuman treatment drove the ablest to revolt. Slave revolts commonly broke out where large, landed estates were most numerous, in Etruria, southern Italy, and in Sicily, and where the roughest, sturdiest types of men were employed. Though they were short-lived and failed to spread, the revolts in Etruria (196 B.C.), the Sicilian slave wars (140 B.C.), and the uprising under Spartacus (73 B.C.) were able for a time to defy Roman arms.¹¹² More important than armed revolts (for they could be

¹⁰⁷ *Letters*, x, 5-6.

¹⁰⁸ Seneca: *Apocolocyntosis*, 3.

¹⁰⁹ Chapot: *op. cit.*, p. 106; Paul-Louis: *op. cit.*, pp. 232 f.; Homo: *Primitive Italy*, pp. 223 f.

¹¹⁰ Beloch: *op. cit.*, p. 404; Marquardt: *Römische Staatsverwaltung*, II, 123; Friedländer: *op. cit.*, IV, 19; Wallon: *Histoire de l'Esclavage dans l'Antiquité*, II, 72; Cary: *op. cit.*, p. 134; Barrow: *Slavery in the Roman Empire*, pp. 20 f.; Paul-Louis: *op. cit.*, pp. 9 f., 135; Fowler: *op. cit.*, pp. 215 f., 225.

¹¹¹ Of Husbandry, I, 7; Seneca: *Epistle xxvii*, 6; Marquardt: *Das Privatleben der Römer*, pp. 166 ff., 173 f.; Paul-Louis: *op. cit.*, pp. 39, 131 f., 241 f., 244.

¹¹² Appian: *Civil Wars*, I, 116; Ilne: *op. cit.*, IV, 424 ff.; V, 138 ff.; Chapot: *op. cit.*, pp. 132 ff.; Paul-Louis: *op. cit.*, pp. 144 ff.

put down) were the demoralizing influences of slavery, which prepared, in part, the ultimate decay of Roman society. The inimical effect of slavery was not crased by emancipation; those rendered vicious by a term of slavery could carry into Roman life nothing better than the habits and character already molded by their servitude. Moreover, since the state exercised no control, masters gave freedom to slaves as it pleased them, regardless of their qualifications for the station of free men. The unwisdom of pouring such a nondescript, unselected stream of slaves into the ranks of citizens seems self-evident.¹¹³ In yet another way slavery was injurious: masters who knew no restraint save their own will in the punishment of slaves were themselves made vicious. Besides, being completely subject to the master's will, a large slave following might be used for political purposes, as was sometimes the case.¹¹⁴

By manumission and by purchase many slaves gained freedom; others won it by service in the army, as in Pompey's day. Manumissions may have reached three thousand a year in the third century. Despite taxes they became so extensive and indiscriminate that Augustus sought to stem the tide by new laws in 17 and 2 B.C.¹¹⁵ Many freedmen gained wealth; some of them rose to positions of honor and trust. Augustus employed them in state service; and in the time of Caligula and Nero, freedmen, such as Callistus, Narcissus, and Pallas, played an even more important rôle. Claudius Etruscus served ten emperors before he died at the age of eighty.¹¹⁶ But though freedmen rose rapidly in business and in state services, social ranks were closed against them. They might, as men of wealth, become members of the equites, but very seldom senators; and they could not legally marry into senatorial families. Their very success in business and other fields of endeavor doubtless inspired hatred and contempt toward them, such as Petronius, Martial, Juvenal, and others exhibited. "Freedman's wealth" became a byword, a term of reproach. Trimalchio boasts that he began with little, "left thirty millions," and "never listened to a philosopher."¹¹⁷

AGRICULTURE, INDUSTRY, AND BIG BUSINESS The early Romans were simple farmers who performed all the various labors on the land. Great leaders came from the soil and returned to it again. Rome's wars changed all that, taking men from their homes and occupations. Atilius Regulus must have expressed the wish of many a Roman when he asked to return from Africa (c. 254 B.C.) because his little farm was going to ruin.¹¹⁸ Conquest "enriched

¹¹³ Wallon: *op. cit.*, II, 435; Fowler: *op. cit.*, pp. 228 ff.; Dill: *Nero to Aurelius*, pp. 101 f.; MacDaniel: *Roman Private Life*, p. 40.

¹¹⁴ Fowler: *op. cit.*, pp. 223, 225, 227.

¹¹⁵ Appian: *Civil Wars*, v, 72; Wallon: *op. cit.*, II, 394 ff.; Marquardt: *Privatleben*, pp. 177 f.; Paul-Louis: *op. cit.*, pp. 43, 140; Beloch: *op. cit.*, pp. 403 f.; Cary: *op. cit.*, pp. 260, 490; Frank: *Roman Imperialism*, pp. 7, 288.

¹¹⁶ Barrow: *op. cit.*, pp. 202 ff.; Dill: *Nero to Aurelius*, pp. 103, 106 ff.

¹¹⁷ Petronius: *Satyricon*, 71.

¹¹⁸ Livy, summary XVIII.

the wealthy and impoverished the poor," says Sallust. Fathers of families abandoned fields and plows, Varro says, found their way to Rome, and became more adept at clapping the circus than doing useful work. Tiberius Gracchus lamented those "masters of the universe" who own no soil and have nothing but daylight and the air they breathe. Virgil echoed the sadness of those forced from "pleasing fields and native home"; not all were as fortunate as he who had his "grounds . . . restored," their former flocks to feed.¹¹⁹

Romans left the soil, but they could not take leave of its problems. Repeated attempts were made to restore men to the land. Sulla, Cæsar, and Augustus made some 370,000 assignments of land. Though designed to redistribute great estates, such efforts were less successful than desired, for many men, after long service in the army, preferred to sell their allotments or receive rents from others already occupying them. Buyers who had long purses were sufficiently numerous. Large-scale investors continued to prefer land investments for some time after the Punic War; owning an estate was thought to lend a distinction which other business could not confer.¹²⁰ Agriculture might be praised as suitable to free men, but they generally ceased to perform its toils. On great estates, because of the decline of free labor, slaves were indispensable and, in some respects, even preferable, since they were plentiful, cheap, easy to support, and would not be called for military service. Slave labor may have performed a valuable service to agriculture in the last pagan century, when free labor was not to be found; but Varro noted the inferiority of slaves and recommended "hired hands" where possible.¹²¹ Columella thought it difficult to get profitable returns from slave labor on the land, though agriculture was more dependent on it than ever before. He defended the view that the soil does not fail man, but man fails the soil; and lamented that husbandry is in want of both teachers and students.¹²² More scientific methods were gradually introduced, but it was hard to make grain crops profitable, since the chief market, Rome, was increasingly supplied from distant provinces.¹²³ Grain production declined, accordingly, being limited largely by local demands, and olive culture and vineyards became more important sources of income to farmers.

Pliny thought that large estates (*latifundia*) ruined Italy; others have shared his belief, but there is some difference of opinion. Frank, who discounts Pliny, thinks Italian agriculture was "still very prosperous in the seventies of the first century"; Paul-Louis, however, holds the words of Pliny and Sallust "pro-

¹¹⁹ *Pastoral* 1; Paul-Louis: *op. cit.*, pp. 171, 176 f.; Johnston: *op. cit.*, pp. 340 f., 355 f.

¹²⁰ Cicero: *Offices*, I, 42; Frank: *Roman Imperialism*, p. 287; Cary: *op. cit.*, p. 450.

¹²¹ On Agriculture, I, 17, 1-5; Fowler: *op. cit.*, pp. 220 ff.; Cary: *op. cit.*, p. 259; Johnston: *op. cit.*, pp. 329 f.

¹²² Bk. I, preface.

¹²³ Frank: *Economic Survey*, v, 139 f., 218 f.; Cary: *op. cit.*, p. 258.

foundly true.”¹²⁴ Though the early effects of large estates on agriculture may be disputed, the ultimate consequences are clear: slave labor first replaced that of free men; when slaves became scarce, expensive, and unprofitable, Rome resorted to the *colonus*, a system of labor halfway between slavery and freedom. Initially the *coloni* were free tenants who paid a money rental for the land; after the third-century invasions, however, they became permanently fixed upon the land; if it was sold, the *coloni* went with it. The *latifundia* of the declining Empire, tilled by serfs, were the “forerunners of the medieval manor.”¹²⁵

Large private estates, tilled by serfs, were ultimately a failure. Laborers could not be drawn to the soil in sufficient numbers; many fled from it, for its burdens exceeded the rewards; efforts to stem the tide by reduction of taxes were unavailing. Extensive taxable acreage went out of cultivation in the fourth and fifth centuries. Symmachus (c. 345-410), a large owner, complained that agriculture had become a costly luxury.¹²⁶ Government estates, developed partly from lands confiscated during the early Empire and increased extensively under Septimius Severus, were no better than private ones; indeed, the imperial estates may have been a great menace, and Severus’ land policy may have struck the Empire a “fatal blow.”¹²⁷

Though, according to tradition, eight guilds had been recognized in the days of Numa, they probably served religious, funerary, and social purposes primarily. As industrial life expanded, guilds increased but were not numerous until the second century B.C. Amid the social turmoil which marked the decline of the Republic, some guilds were involved in political movements and most of them were suppressed (64 B.C.); later, Caesar abolished all save those dating from the time of Numa.¹²⁸ The tendency to fear of organizations is reflected in Trajan’s reply to Pliny anent a “guild of fire-men”: other “means for extinguishing fires” should be found; for, no matter what the guild is called, men “banded together for a common end” will inevitably become a political organization.¹²⁹

Associations increased nevertheless, and flourished under the Antonines. In the reign of Alexander Severus, there were thirty-two guilds at Rome; and emperors began to see them as potentially valuable assets. Severus sought to or-

¹²⁴ Pliny: *Natural History*, xviii, 7; Paul-Louis: *op. cit.*, p. 171; Frank: *Economic Survey*, v, 171, 175.

¹²⁵ Cary: *op. cit.*, pp. 451, 744, 753; Paul-Louis: *op. cit.*, pp. 252, 256 f.; Lot: *op. cit.*, pp. 79 f., 108, 112 f.

¹²⁶ *Epistulae*, i, 5.

¹²⁷ Frank: *Economic Survey*, v, 84 f., 300; Paul-Louis: *op. cit.*, p. 272; Dill: *Last Century*, pp. 259 f.

¹²⁸ Plutarch: *Numa*, 17; Paul-Louis: *op. cit.*, pp. 49, 150 f.; Dill: *Nero to Aurelius*, pp. 253 ff.

¹²⁹ Pliny: *Letters*, x, 34.

ganize industrial associations and make them serviceable to the state.¹³⁰ From being merely tolerated in Gaul, the *collegia* became objects of approval in the third century, being useful in controlling the people and collecting taxes. This utilization of the guilds for support accompanied industrial collapse, which began in the third century. Ceramic production and glassware declined after 250 A.D., and Gaul and the Rhine region were bereft of most of their commerce and industry.¹³¹

As private industries declined, the state engaged more extensively in large-scale operations to equip its forces and supply its various needs, and resorted to more and more restrictions so that laborers might not escape from their occupations. Ultimately, the workaday world was completely enslaved by the government. Hundreds of thousands were reduced to compulsory labor; butchers, bakers, masons, boatmen, engravers, glass blowers, foundrymen, *coloni*, cobblers, and other artisans were knit into an intricate network of organizations, which became so burdensome that emperors on many occasions issued edicts (in 412, 450, and 455) requiring those who had fled from their guilds to return to them.¹³²

Increased population, wealth, and power did not make Rome a great industrial center. The wealthy depended on their country estates for much produce, and gave little impetus to industry of the city; their luxuries came chiefly from abroad. Other factors operated against great industrial development at Rome. Metal and fuel were not at hand; transportation was slow and expensive. Since many of her conquered peoples were more highly developed industrially, more manufactured goods came to Rome than she sent out. The small domestic shop where articles were made and sold was a more common feature of industrial life at Pompeii and Rome than the factory. Spinning and weaving continued to be done by household slaves. Public bakeries at Rome and the state establishments for equipping the armies, maintained by "privileges, exemptions, and compulsion," should scarcely be regarded as large-scale industry. Lack of machinery may have held specialization in check. Some towns came to have a practical monopoly of certain manufactures, however; iron at Virunum and Puteoli, brick at Rome, and copper, bronze, and silver plate at Capua seem to have approached the factory system.¹³³

Wages were doubtless low; but the matter is obscure. The penny a day (*denarius*, four *sesterces*), mentioned by Jesus, was probably considered a suffi-

¹³⁰ Rostovtzeff: *op. cit.*, p. 380; Paul-Louis: *op. cit.*, p. 264; Dill: *Nero to Aurelius*, pp. 256, 265.

¹³¹ Cary: *op. cit.*, pp. 751 f.; Chapot: *op. cit.*, pp. 317 f.

¹³² Paul-Louis: *op. cit.*, pp. 20 f., 232 f., 258 ff.; cf. Dill: *Last Century*, pp. 232 ff.; Cary: *op. cit.*, p. 753.

¹³³ Johnston: *op. cit.*, pp. 336 f.; Paul-Louis: *op. cit.*, pp. 184, 191; Lot: *op. cit.*, pp. 66 f., 74 f.; Frank: *Economic Survey*, v, 185, 187 f., 201, 216 ff., 222 f., 226, 229, 235.

cient wage. Owing to unemployment, even the small wage was an uncertain matter; without public largess laborers would have fared badly.¹³⁴ This aid fluctuated greatly from time to time. The difficulties of Rome's grain supply began early and increased with her expansion. The curule aediles distributed Spanish corn, so much to each street, about 202 B.C. In the time of Gracchus, relief was given by regulating prices and distributing free corn to citizens each month.¹³⁵ Though such regulation was criticized, and distributions were curtailed from time to time, even abolished in Sulla's day, controls and doles increased as the gulf widened between rich and poor. Three hundred and twenty thousand received free grain at the time of Caesar. Augustus distributed money at various times; grain was sometimes distributed free, and again at low cost.¹³⁶ Nerva created funds to provide maintenance for children of those in need. Such "alimentary institutions" were extended by Hadrian, Trajan, Antoninus Pius, and Marcus Aurelius. At the time of Septimius Severus about £480,000 were expended each year. From Caesar to Diocletian it is estimated that government had expended about £120,000,000 for doles of corn and bread alone.¹³⁷

Under the emperors Rome put on a magnificent appearance. Augustus boasted that he found a city of brick and left one of marble. "Material splendour" was Rome's "greatest glory" in the age of the Antonines. Ammianus enumerated her beauteous marvels: the temple of Jove, baths, amphitheater, Pantheon, Temple of Venus and Roma, Forum of Peace, Pompey's Theater, Odeum, stadium, and, most magnificent, the Forum of Trajan.¹³⁸ In contrast with public magnificence and the luxurious houses and estates of the wealthy the quarters of the working population continued to be poor, being commonly in tenements (*insulae*), built as cheaply as possible and rented for as much as could be secured. Already numerous at the end of the Republic, such flats grew with impoverished masses. In the early fourth century there were over forty-four thousand tenements, but something less than eighteen hundred individual homes. These drafty cells were heated only by a *brasero*, if at all; furniture was limited and exceedingly primitive; water was carried from public fountains; light was furnished by a cheap lamp, a "wick floating in oil."¹³⁹ Small wonder that Juvenal advised the poor to live in the country, avoiding falling houses,

¹³⁴ Frank: *Economic Survey*, v, 45; Davis: *Influence of Wealth in Imperial Rome*, p. 242; Rostovtzeff: *op. cit.*, pp. 178, 419 f.; Johnston: *op. cit.*, p. 345.

¹³⁵ *Livy*, xxx, 26; Appian: *Civil Wars*, I, 21; Rostovtzeff: "Frumentum," *Real-Encyclopädie*, vii, Pt. I, 171 et seq.; Mommsen: *op. cit.*, III, 76, 344.

¹³⁶ Suetonius: *Augustus*, 41; Frank: *Economic Survey*, v, 8 f.; Mommsen: *op. cit.*, IV, 110; Ihne: *op. cit.*, v, 431 f.; Showerman: *op. cit.*, p. 45.

¹³⁷ Paul-Louis: *op. cit.*, p. 239; Cary: *op. cit.*, pp. 636 f.

¹³⁸ Ammianus, xvi, 10, 13-5; Suetonius: *Augustus*, 28; Dio, lvi, 30; Dill: *Nero to Aurelius*, p. 4.

¹³⁹ Friedländer: *op. cit.*, I, 144 f.; IV, 26 f.; Lot: *op. cit.*, p. 73; Johnston: *op. cit.*, pp. 172 f., 407.

fires, and nocturnal alarms. Men sicken and die for lack of sleep! Who but the rich can sleep in Rome? ¹⁴⁰

As a consequence of successful wars which gave her a "monopoly of power," wealth flowed to Rome. With the advent of financial imperialism the equestrian order acquired great weight in public affairs, its power being felt throughout the Empire. Two classes of capitalists may be distinguished: *negotiatores* and *publicani*. The first, private bankers and agents, provided exchange, gave letters of credit, and handled all sorts of business for their clients, particularly making loans. Everyone seems to have been borrowing, lending money, or perhaps doing both. Indebtedness was never greater. Cicero thought the amount of debts ought not to be so great as to injure the state, but fought efforts to liquidate the obligations of debtors. His censure of Caesar, who abolished one-fourth of all debts, was severe.¹⁴¹ The *publicani* engaged in business for the state, making a profitable income out of collecting taxes in the provinces.¹⁴² Newly acquired provinces offered quick wealth, especially to the nimble-witted and unscrupulous; consequently the *publicani* became ardent expansionists; so, too, did provincial governors who, despite restraints imposed by the Senate, lined their pockets by draining the provinces. *Publicani* also played a considerable rôle in other undertakings, such as building, road construction, and supplying the army. Sulpicius let contracts for horses, six thousand togas, and thirty thousand tunics. Polybius thought the profits of contracting were widely distributed: one could "almost say that everyone is interested in these contracts and the work they involved."¹⁴³

The Senate had authority over the contracting companies, theoretically at least, and could grant them extensions of time or relieve them of obligations if necessary. That body's coöperation was therefore to be won. Cicero, though he well knew the hatred of provincials for Roman governors who bled them outrageously, defended the system and supported the Manilian Law, which was to give Pompey power. In his speech (66 B.C.) Cicero stressed the financial interests involved in the war against Mithridates. Surely the "interests and fortunes" of the "honourable and distinguished men who farm our revenues" ought "on personal grounds, to be your concern." For if our revenues are the sinews of the state, the ". . . class which farms those revenues is the mainstay of the other classes"; and if defeat and ruin be suffered in Asia, the result will be collapse and ruin in Rome.¹⁴⁴

¹⁴⁰ *Satire III*, 232 et seq.

¹⁴¹ *Offices*, II, 24; Rostovtzeff: *Social and Economic History*, p. 17; Homo: *Primitive Italy*, pp. 262 ff., 331 f., 341 ff.; Fowler: *op. cit.*, pp. 80 ff.; Lot: *op. cit.*, pp. 80 f.

¹⁴² Fowler: *op. cit.*, pp. 69 f.

¹⁴³ *Bk. VI*, 17.

¹⁴⁴ On the Manilian Law, 7. Cicero: *The Speeches*, trans. by H. G. Hodge. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

Even if governors desired to deal justly with provincials, it was doubtless difficult to resist the appeal of interested *publicani* and their powerful friends. Cicero interceded because those whose interests were affected besought him to do so as a matter of "paramount importance to them." To his son-in-law he urged especial concern for the best interests of a Bithynian company, partly because of his personal relation to the head of it, and also because of the class of men in it; besides, owing to its relation to the *publicani* in general, he considered it "a most important factor in the State." Moreover, he felt sure that Crassipes, if compliant, would "find the Bithynian partners neither forgetful nor ungrateful."¹⁴⁵

Though wealth flowed to Rome in consequence of successful wars, it brought no general well-being to the Roman people or to the state as a whole. Certain private individuals became extraordinarily wealthy, and passionately pursued greater wealth. Tax farmers and bankers did "incalculable harm" at home and abroad, for they put their great fortunes to little use, save for investments, chiefly abroad, and for ostentatious display. Provincial investments in land and mortgages determined the "chief economic drive during the Empire."¹⁴⁶ The "vast capital accumulated . . . was hardly ever used productively," either in the provinces or in Italy; "the new wealth" was chiefly held by a few "purse-proud parvenus"; "one of the most serious shortcomings of the Roman economic structure . . . was its failure to expand the basis of investment at home into manufacturing, trades, and production."¹⁴⁷ Rome became a great market, but only a one-sided one: her trade balance was unfavorable; everything came to her, but she produced little, "carried little and sold little."¹⁴⁸

OLD FAITHS AND NEW The transition from Republic to Empire was marked by disillusionment. Cato "wondered that when one soothsayer met another, he could help laughing."¹⁴⁹ Lucan's phrase, "dearer the victor's cause to the gods," suggests the distrust men felt toward the invisible powers. Cicero recognized that the "art and science of the augurs" had faded out, due to time's passage and human neglect.¹⁵⁰ Though he was a member of the Sacred College of Augurs, he ridiculed the notion of portents and superstitious fears; find out the true cause of anything, he believed, and there is no need to be terrified, no matter what comes to pass.¹⁵¹ For two generations prior to 11 B.C. such a high

¹⁴⁵ *To His Friends*, xiii, 9. Trans. by W. G. Williams. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁴⁶ Frank: *Economic Survey*, v, 295 ff.

¹⁴⁷ *Ibid.*, v, 29. Courtesy of The Johns Hopkins Press, Baltimore; Fowler: *op. cit.*, pp. 92 ff.

¹⁴⁸ Lot: *op. cit.*, pp. 70, 76 ff.

¹⁴⁹ Cicero: *On Divination*, ii, 24.

¹⁵⁰ Laws, ii, 13; Augustine: *City of God*, vi, 2; Lawton: *op. cit.*, p. 262.

¹⁵¹ *On Divination*, ii, 28; Lawton: *op. cit.*, p. 93.

office as the priesthood of Jupiter had not been filled; and many sacred edifices had fallen into ruin.¹⁵² Despite official efforts to restore old faiths, Ganymede mourns the death of religion: "No one now believes that the gods are gods. There is no fasting . . . the gods are gouty . . . because we are sceptics." In the old days women prayed for rain, and it fell "by the bucket," and all were wet as "drowned rats."¹⁵³ Now the fields are baked dry.

The hold of the old religion on the common people was not universally dissolved, however. The religion of Numa, the sense of piety toward the gods, which had been inculcated throughout centuries, persisted long in rural regions where factors of decline were less potent. Pagan rites of the state cult lived to defy "the penal edicts of Theodosius and Honorius." Priestly colleges still convened at the time of Theodosius; Christian rulers, to the time of Gratian, bore the title "Pontifex Maximus"; and pagan festivals like the Lupercalia were still honored, despite Christian bishops, at the close of the fifth century. Pope Gelasius eradicated this "last stain of idolatry," but he is said to have appeased the Senate and people by a "formal apology."¹⁵⁴

Numerous solvents promoted the decay of old beliefs. Increasing knowledge of Greek literature and philosophy, wherein doubts about the gods mingled with hostility and contempt, could not but undermine the old religion amongst the new intelligentsia.¹⁵⁵ The growing poverty of the thousands who crowded the city must also have been a stimulant to gnawing doubt. The old Roman had performed his part of a contract as a means to an end. If neither gods nor men show pity, wherefore should one have faith? For the proletarian in his cold, barren garret the rites of household gods became meaningless; the rites for the dead could have slight significance, for the poor "could no more afford a tomb . . . than a house."¹⁵⁶ On the other hand, great wealth and undisputed mastery over others may well have rendered men less attentive to gods on whom they once depended. A powerful disintegrating influence lay also in the prolific growth of foreign cults. Minds nurtured on superstition are a ready prey to new ones when the old are discredited. Intellectuals, schooled in reason, might throw all magic overboard; but ignorant, simple-minded folk were ready consumers of each strange novelty.

Certain new ceremonials were officially blessed: the *Ludi Tarentini* were approved (249 B.C.); games in honor of Apollo were introduced (212 B.C.) and became a fixed, annual festival in 208; Kybele, great mother of the gods, was introduced in 205 B.C., and the Megalesian Games in her honor grew

¹⁵² Suetonius: *Augustus*, 30; Dio, *liv*, 36.

¹⁵³ Petronius: *Satyricon*, 44. Trans. by M. Heseltine. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁵⁴ Gibbon: *op. cit.*, *iii*, 240 f.; Dill: *Nero to Aurelius*, p. 529; *Last Century*, p. 74.

¹⁵⁵ Dill: *Nero to Aurelius*, p. 530; Abbott: *op. cit.*, pp. 184 f.

¹⁵⁶ Fowler: *op. cit.*, pp. 319 f.

rapidly in popularity.¹⁵⁷ The worship of Isis and Serapis developed in the first half of the last pagan century and gained such a popular hold that efforts were made to destroy it. In ten years (58 to 48 B.C.) four edicts were launched against it, and the temples were ordered razed.¹⁵⁸ Mithraism, though known after Pompey's destruction of the pirates' power in Cilicia,¹⁵⁹ had little influence in Rome before the end of the first century A.D.; in the next century, however, its vogue increased greatly. Commodus participated in its rites.¹⁶⁰ During this period the worship of Isis and Mithra quite obscured old Roman deities and Greek as well, and provided the most serious competition for the rising cult of the Christians.¹⁶¹ Christianity, persecuted sporadically during its first three centuries, was officially recognized by Constantine and Licinius in 313.

Amid the decay of old gods and the kaleidoscopic scene of foreign infiltrations it is not remarkable to find the rise of man-worship, the identification of the great man and deity. It is an old popular notion that the great and powerful have traffic with the unseen, to other mortals denied. Even in life, Caesar accepted honors "too great" for mortals; at death, he was numbered among the gods, and it was alleged that a comet, seen for seven days running, was Caesar's soul in its celestial sphere. Two years later (42 B.C.) even greater honors were devised.¹⁶²

The notion that a people must return to its forsaken faith, in order to rehabilitate itself, is ancient. The Romans owed their Empire to the gods, it was said; because they have forgotten old deities, Italy is afflicted by many woes. For this, says Horace, ". . . you must suffer, O Roman, till you have set up again the temples, the falling shrines of the gods and their images foul with sooty smoke."¹⁶³ Immediately after the battle of Actium, Augustus began the reorganization of the state religion. Priestly colleges, well-nigh forgotten, were revived and temples restored. Certain temples were rebuilt by private persons; Augustus is credited with rebuilding eighty-two. The restoration was evidently an insurance policy on Rome's established greatness.¹⁶⁴

After the death of Lepidus, Augustus assumed the title of Pontifex Maximus, burned over two thousand religious books (by authors of little repute, it was said), preserving only a choice collection of Sibylline literature.¹⁶⁵ This

¹⁵⁷ Livy, xxv, 12; xxvi, 23; xxix, 10; Wissowa: *Religion und Kultus der Römer*, pp. 239 ff., 255, 263 ff.; Ausonius, vii, 23; Ihne: *op. cit.*, v, 122 f.

¹⁵⁸ Dio, xl, 47; xlii, 26; Wissowa: *op. cit.*, pp. 292 ff.

¹⁵⁹ Plutarch: *Pompey*, 24.

¹⁶⁰ Lampridius: *Commodus*, 9; Wissowa: *op. cit.*, pp. 307 ff.

¹⁶¹ Lawton: *op. cit.*, p. 235.

¹⁶² Suetonius: *Julius*, 76, 88; Plutarch: *Caesar*, 67; Dio, xliv, 6; xlvii, 19.

¹⁶³ Odes, iii, 6. From *Horace for English Readers*, translated by E. C. Wickham (The Clarendon Press).

¹⁶⁴ Suetonius: *Augustus*, 30; Dio, liii, 2; Wissowa: *op. cit.*, p. 67.

¹⁶⁵ Suetonius: *Augustus*, 31.

effort to stamp out knowledge of foreign cults proved a failure, as did the rehabilitation of morality and religion of the early Romans.¹⁶⁶ The most compelling aspect of the new religious order lay in the state cult of emperor-worship, carried on by the *seviri Augustales*. Developing steadily after the deification of Julius, this cult was naturally reinforced by contact with Oriental countries, such as Egypt, where deity and temporal potentate had long been identified. Emperor-worship became a loyalty test; other cults were tolerated, provided loyalty to the state was demonstrated by performance of imperial religious rites. As Pontifex Maximus the Emperor's authority was enhanced, for he controlled the filling of all priesthoods which previously had been chosen by the people, or in certain cases, coöpted. Into these reconstituted priesthoods, Augustus did not fail to put most of the chief men who supported his new régime.¹⁶⁷ The state cult continued and even waxed stronger when the official religion of the Empire became Christian, for the Emperor was worshiped, though no sacrifice was made to him. Through centralization of religion obedience was due to the Emperor as to God himself.

That Romans were burdened with superstitious beliefs since earliest times is clearly written in their histories.¹⁶⁸ They were now living in a new world; but superstitions still lived. Men might find it difficult to believe in God, but it was easy to fear the devil and read assurance in the stars. Augustus, the creator of the new age, regarded certain omens as infallible. Putting his shoes on wrong in the morning was a bad sign; rain, at the beginning of a journey, was a good one; a palm tree growing in a pavement and an oak that suddenly began to grow impressed him mightily.¹⁶⁹ Centuries later Ammianus said: "Many . . . who deny that there are higher powers in heaven, neither appear in public nor eat a meal nor think they can with due caution take a bath, until they have critically examined the calendar and learned where, for example, the planet Mercury is, or what degree of the constellation of the Crab the moon occupies in its course through the heavens." ¹⁷⁰

While there was much belief in magic, official and unofficial, some men flouted established practice by contemptuous unbelief. The impious Claudius Pulcher ignored an evil omen: when the sacred chickens wouldn't eat, he threw them into the sea, saying they might drink. He suffered defeat.¹⁷¹ Caesar never

¹⁶⁶ Lawton: *op. cit.*, p. 203.

¹⁶⁷ Wissowa: *op. cit.*, p. 67; Homo: *Political Institutions*, pp. 227, 278 f.; Johnston: *op. cit.*, p. 403; Thorndike: *op. cit.*, pp. 29 f.

¹⁶⁸ Livy, xxv, 1, 12; xxvi, 23; xxxix, 8-19; Suetonius: *Augustus*, 94; Tacitus: *Annals*, I, 28, 76; II, 17; XII, 64; XIV, 12, 22; xv, 7, 44, 47; Dio, xxxvii, 9; xxxix, 20, 61; xlvi, 40; L, 10; Lvi, 29; Plutarch: *Sertorius*, 11-2; *Caius Marius*, 17; *Aemilius Paulus*, 17.

¹⁶⁹ Suetonius: *Augustus*, 92.

¹⁷⁰ Ammianus Marcellinus, xxviii, 4, 24. Trans. by J. C. Rolfe. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁷¹ Suetonius: *Tiberius*, 2.

allowed regard for religious scruples to deter him from any undertaking. To a soothsayer who reported bad omens, he said: "They will be more favourable when I wish it; it should not be regarded as a portent, if a beast has no heart." Laughing at Spurinna, and saying the Ides of March were come without harm, he was reminded that they had come but not gone.¹⁷² Dio¹⁷³ noted that, despite many terrible omens in 31 B.C., the leaders disregarded them and continued preparations for war. Tacitus observed that, though there were many portents in the sky, which once would have broken up a public meeting, it did not deter Galba from going to his camp.¹⁷⁴ To a certain point Polybius held to a scientific principle: ". . . as for matters the efficient and final cause of which it is possible to discover we should not, I think, put them down to divine action." But beyond this, in respect to unusual events, ". . . impossible or difficult for a mere man to understand, . . ." we may ". . . naturally bow to popular opinion" in ascribing them to the gods or to chance.¹⁷⁵

Among Roman intellectuals diverse tendencies developed as a consequence of their contact with a larger world, various religions, and philosophies. Some expound and appear to accept the theory of an afterlife, in which evil is punished and good rewarded; others doubt Providence, punishment, and reward; still others appear confused, uncertain as to what to think. With elements of Pythagoreanism and Platonism, Roman patriotism is mingled. Virgil¹⁷⁶ tells of those who, having freed themselves from the stains of a former existence by a thousand years of purgation, await a re-embodiment. Among these spirits are the heroes of Troy and the great names of Roman history. To what extent this mixture of Hellenic theory and Roman pride proved potable is a proper matter of speculation. Cicero and other intellectuals found the theory of immortality of the soul more or less inviting, as is suggested by Scipio's dream.¹⁷⁷ Presumably many held the view seriously. Lucretius would scarcely contend with imaginary foes. He earnestly entreats men to be rational: "Why doubt . . . that the soul when driven forth out of the body . . . not only cannot continue through eternity, but is unable to hold together the smallest fraction of time?"¹⁷⁸ Others, like Caesar and Pliny, took no stock in any existence but the present. To Caesar ". . . death is a relief from woes, not a punishment"; it leaves no room ". . . for sorrow or for joy."¹⁷⁹ Tacitus is somewhat

¹⁷² Suetonius: *Julius*, 59, 77, 81. Trans. by J. C. Rolfe. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁷³ *Bk. L*, 11.

¹⁷⁴ *Histories*, I, 18.

¹⁷⁵ Polybius, xxxvi, 17. Trans. by W. R. Paton. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁷⁶ *Aeneid*, vi, 739-51.

¹⁷⁷ *The Republic*, vi, 9-26; cf. *On Old Age*, 23.

¹⁷⁸ *De Rerum Natura* (Munro), iii, 592 et seq.

¹⁷⁹ Sallust: *War with Catiline*, 51, 20.

uncertain about Providence and design: most men, he thinks, continue to believe that a man's future is fixed from very birth; he, himself, must suspend judgment as to whether fate or mere chance governs human affairs.¹⁸⁰

¹⁸⁰ *Annals*, iii, 18; vi, 22; xiv, 12; cf. Cicero: *De Natura Deorum*, i, 1-2; ii, 59.

FROM PROVINCIAL TO COSMOPOLITAN CULTURE

INTRODUCTION OF GREEK EDUCATION

THE old order changeth, giving way to a new. A metamorphosis of education, informal and formal, mental and physical, paralleled Rome's political, economic, and social changes and interacted with them. The central feature of this transition was the Hellenization of education which took place rapidly, despite opposition, as Rome moved from provincialism to cosmopolitanism. Already distinguishable about the beginning of the Punic War, the process was fairly complete by the middle of the first century B.C. The intervening period was marked by divergent stresses, antagonism to Hellenic culture on the part of some, enthusiastic acceptance of it and energetic efforts to further it, on the part of others. One and the same person might exemplify in himself the struggle between the old and new.

Cicero traced the mighty river of culture which flowed from Greece to Rome to the days of Demaratus who fled from Corinth to Tarquinii, married a Tarquinian wife, and educated his sons in all the arts of the Greek system. Servius, who later became king, was said to have been educated in the same way.¹ However that may be, through early contacts Romans gained some knowledge of Greek. The alphabet had been known at Cumae since about the eighth or early seventh century. For the learned, whose duty it was to consult Sibylline literature, Greek was indispensable. The rites of Ceres were taught the Romans by a Greek priestess, on whom, Cicero says, the Senate conferred citizenship.² Lucius Postumius, Roman envoy at Tarentum (282 B.C.), is said to have spoken Greek; and the ambassador of Pyrrhus to Rome (281 B.C.) is believed

¹ Cicero: *The Republic*, II, 19, 21.

² Cicero: *Balbus*, 24.

to have spoken to the Romans in Greek, perhaps without an interpreter.³ The First Punic War (264-241 B.C.) went far to extend the acquaintance. Fabius Pictor (c. 254 B.C.) and his contemporary, Cincius Alimentus, the first Roman historians, wrote in Greek, which must have been understood by many. A Roman consul (131 B.C.) was considered unusually conversant with Greek, and even knew various dialects used in Asia Minor.⁴

Though Greek was known to some extent in early times, literary study at Rome, according to Suetonius, was not pursued, "still less held in any esteem," for the people were devoted chiefly to war and had little time for liberal employments. The earliest teachers of grammar were Italian Greek poets, Livius and Ennius, who gave instruction in both Greek and Latin "at home and abroad."⁵ Andronicus, a Greek, taken as prisoner from Tarentum to Rome about 272 B.C., became the teacher of his master's sons and others, and continued active till about 207 B.C.⁶ Since materials in Latin were scarce, the talented Greek translated the *Odyssey* into Latin (about 250 B.C.); thus introducing a textbook which supplemented and ultimately replaced the Twelve Tables of the Law.

Quintus Ennius, an Italian (b. 239 B.C.) who had imbibed Greek culture, was brought by Porcius Cato to Rome (204 B.C.), where he gave instruction in both Latin and Greek. Knowing Greek, Oscan, and Latin, Ennius boasted he had three hearts.⁷ His talents as poet gained him the favor of the upper class, the friendship of the Scipios. Known as the father of Roman poetry, his importance for education is suggested by the fact that he is credited with bringing "to the Romans a full acceptance of Greek forms and taste."⁸

Suetonius regarded the beginnings of literary study under Andronicus and Ennius as quite "humble"; in his opinion the study of grammar was first introduced by Crates of Mallos, who came as ambassador to Rome in 169 B.C. or, as some think, about 159. During the performance of his duties and the delay occasioned by an accident, this learned Greek gave instruction in Greek literature, thus setting a pattern for Romans to follow.⁹ Since Crates probably did not know Latin, the popularity of his lectures may indicate the extent to which Greek was already understood. The advent of Crates marked the beginning of philological study.¹⁰ The foundations having been laid, grammatical studies "advanced in all directions." Suetonius names Lucius Aelius and Servius

³ Plutarch: *Pyrrhus*, 14; Wilkins: *Roman Education*, p. 19.

⁴ Duff: *A Literary History of Rome*, p. 114; Wilkins: *op. cit.*, p. 25.

⁵ Suetonius: *Grammarians*, 1.

⁶ Mommsen: *History of Rome*, III, 136; Schanz-Hosius: *Geschichte der Römischen Literatur*, I, 45 f.

⁷ Aulus Gellius, *The Attic Nights of*, XVII, 17; Schanz-Hosius: *op. cit.*, I, 86 f.

⁸ Lawton: *Classical Latin Literature*, p. 34.

⁹ Suetonius: *Grammarians*, 1-2.

¹⁰ Schanz-Hosius: *op. cit.*, I, 231; Wilkins: *op. cit.*, p. 22.

Clodius, statesmen and scholars, as leaders in the movement which became so popular that, at times, twenty schools were operating in Rome, and "grammar even made its way into the provinces."¹¹

The introduction of Greek linguistic and literary studies stimulated interest in rhetoric and philosophy as well. Though these areas of learning became more or less clearly differentiated later, the lines were not at the outset strictly drawn. Suetonius says that, though rhetoric was introduced with greater difficulty, "grammarians of early days taught rhetoric as well," and many men wrote "on both subjects."¹² Opilius, a freedman, taught philosophy first, then rhetoric and grammar. Philologus, a freedman, was known as "a rhetorician among grammarians and a grammarian among rhetoricians."¹³ In short, Greeks taught everything. In the time of Aemilius Paulus (c. 229-160 B.C.), grammarians, philosophers, rhetoricians, artists, and teachers of exercises and sports were Greeks.¹⁴ At Cato's death (149 B.C.) Greek rhetoric was widely known. A keen interest in rhetoric and philosophy is reflected in Plutarch's account of the arrival of Carneades and Diogenes at Rome in 155 B.C. So great was the charm of Carneades in particular that ". . . the most studious of the city's youth hastened to wait upon them, and became their devoted and admiring listeners." All other pleasures were forgot; youth seemed as if "possessed" by philosophy.¹⁵

The growing influence of Greek culture on the Romans is shown in the lives of many individuals. Marcellus, who died in 208 B.C., was "a lover of Greek learning," though he was so occupied with war that he was unable to gain a proficiency in it commensurate with his desire. Aemilius Paulus trained his sons in the old Roman discipline, but more ardently in the Greek. Even Greeks were amazed at his concern for their pastimes, for he sacrificed to their gods, attended their feasts and contests, and made liberal financial allowances for them. Perhaps the greatest tribute to the power of Hellenic culture over the Romans is found in Cato who, even though he was a bitter critic, learned Greek late in life, devoted himself to Demosthenes and Thucydides, and frequently embellished his works with Greek thoughts and tales.¹⁶

Despite growing favor, evidences of distrust, antagonism, and contempt for things Hellenic were numerous and persistent. Cato brought Ennius to Rome and learned Greek, but he was sharply critical and contemptuous of Hellenic ways. He laughed at Albinus for writing his history in Greek and having to apologize for errors, since it was not his native tongue. The teaching of Socrates

¹¹ Suetonius: *Grammarians*, 3.

¹² *Ibid.*, 4; *Rhetoricians*, 1.

¹³ Suetonius: *Grammarians*, 6, 10.

¹⁴ Plutarch: *Aemilius Paulus*, 6.

¹⁵ Plutarch: *Cato*, 22.

¹⁶ Plutarch: *Marcellus*, 1; *Aemilius Paulus*, 6, 28; *Cato*, 2-3.

was not spared; likewise the school of Isocrates, whose students practiced their art till they were old men, as if they expected to plead their causes in Hades. Cato distrusted Greek physicians as well as philosophers, and warned his son against them, being convinced that "Rome would lose her empire when she had become infected with Greek letters."¹⁷ When certain philosophers, Carneades and Diogenes, were pleading against a penalty imposed on the Athenian people, and had shown their great persuasive powers, Cato grew alarmed at their influence and declared, "We ought . . . to make up our minds one way or another, and vote on what the embassy proposes, in order that these men may return to their schools and lecture to the sons of Greece, while the youth of Rome give ear to their laws and magistrates, as heretofore."¹⁸ Marius (155-86 B.C.) took a similar view of the Greeks, declaring it ridiculous to study the literature of a subject people. Though after his second triumph he gave the public Greek spectacles, he himself merely came, sat down a moment, and went away. Of his ignorance of Greek letters he said: "I did not greatly care to become acquainted with them, since they had not taught their teachers virtue." Instead, he boasted that he had learned the old Roman lesson "to strike down the foe. . . ." ¹⁹

Disapproval of the Hellenizing tendency is shown in many ways. Calenus, ridiculing Cicero for his studiousness, calls him "Graeculus" and reproaches him for using "much more oil than wine. . . ." ²⁰ Cicero, too, though a zealous promoter of Greek learning, had a low opinion of the people whom he credited with a ". . . natural aptitude for deceit." ²¹ Defending Flaccus, he praised their literary abilities, but decried their untrustworthiness as witnesses: ". . . a scrupulous regard to truth in giving their evidence is not a virtue that that nation has ever cultivated; they are utterly ignorant [as to] what is the meaning of that quality, they know nothing of its authority or of its weight. . . . They never reply precisely to a question. They always answer an accuser more than he asks them." ²² Elsewhere he refers to the "idle and talkative," though studious, learned Greeks—"that most learned nation" which abounds in impertinence.²³ "For more than 600 years," says Dill, "the Roman who had borrowed his best culture, his polish and ideas from the Greek, was ready to sneer at the 'Greekling.' " ²⁴

¹⁷ Plutarch: *Cato*, 12, 23; Gellius, xi, 8.

¹⁸ Plutarch: *Cato*, 22. Trans. by B. Perrin. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁹ Sallust: *War with Jugurtha*, 85; Plutarch: *Caius Marius*, 2.

²⁰ *Dio's Roman History*, xlvi, 18.

²¹ *Letters to His Brother Quintus*, i, 2.

²² Cicero: *Flaccus*, 4.

²³ *On Oratory*, i, 22; ii, 4.

²⁴ *Roman Society from Nero to Marcus Aurelius*, p. 90.

Probably no phase of the Hellenizing process came in for greater criticism than physical culture, as may be seen from Cicero, Cornelius Nepos, Horace, Seneca, and a host of other authors. Scipio was criticized by his enemies for dressing unlike a Roman, being unsoldier-like, walking around in the gymnasium in a robe and slippers, and giving time to light reading and the palaestra.²⁵

Official efforts, put forth from time to time to stem the rising tide of Hellenism, testify both to its strength and the distrust felt by the Romans. In the consulship of Postumius (173 or perhaps 155 B.C.) the Epicurean philosophers, Alcaeus and Philiscus, were banished "because of the pleasures which they introduced."²⁶ In 161 B.C. the Senate passed a decree against "Latin speaking philosophers and rhetoricians."²⁷ Philosophy's servants continued to find rough sledding at Rome. Philosophers were apt to think independently and at times impudently; some of them were active politically. Helvidius, whom Vespasian banned and ordered put to death, denounced monarchy and praised democracy. Hostilianus and Demetrius were deported, in fact, "all the philosophers except Musonius," Dio says, because they took advantage of the name of philosophy to teach doctrines "inappropriate to the times."²⁸ Diogenes was flogged for denouncing Titus and Berenice, and Heras was beheaded for his "senseless yelpings."²⁹ Aulus Gellius says that philosophers were driven from Rome by a decree of the Senate (89) and were forbidden in all Italy; and that Epictetus left Rome for Nicopolis because of that decree.³⁰ Dio Chrysostom (c. 40-115), "golden mouthed" Greek rhetorician and philosopher, was also a victim of imperial displeasure. Antoninus (212) had a bitter hatred of the Aristotelians, burned their books, and abolished their common mess and other privileges at Alexandria.³¹

Criticism of the Greek influence continued long after Roman life had undergone a thorough transformation. The worst evils, regardless of their true source, were credited to the foreigner. Tacitus found the morality of the fathers forgotten, "utterly subverted by the introduction of a lax tone," "a degeneracy bred by foreign tastes."³² Petronius portrayed the teachers of rhetoric, Encolpius and Agamemnon, in unattractive colors: their erudition, a mixture of robbery, murder—almost every roguery imaginable. The rhetoric schools are

²⁵ Livy, xxix, 19; Dio, xvii, 62; Cicero: *Tusculan Disputations*, iv, 23; *Republic*, iv, 4; Nepos: *Epaminondas*, 1; Horace: *Odes*, iii, 24; Seneca: *Epistle lxxxviii*; *infra*, pp. 646 ff.

²⁶ *Athenaeus*, xii, 547.

²⁷ Gellius, xv, 11; Suetonius: *Rhetoricians*, 1.

²⁸ Bk. lxxv, 12-3; Suetonius: *Vespasian*, 15.

²⁹ Dio, lxxv, 15.

³⁰ Gellius, xv, 11; Suetonius: *Domitian*, 10; *Epictetus, The Discourses of*, pp. 76 f.

³¹ Dio, lxxviii, 7.

³² *Annals*, xiv, 20.

the ruin of eloquence.³³ Juvenal, master of acid phrase, contemptuous of a Grecian Rome, pilloried the Greeks as a nation of actors, all ready to flatter by smiling, weeping, chilling, or sweating sympathetically with their patrons; all ready to ply any trade whether of grammarian, rhetorician, geometrician, artist, trainer, dancer, augur, physician, or magician.³⁴

Long after the new education had gotten well under way, and even when it had triumphed, many Romans still clung to old educational practices and ideals. The persistence of the old is an index of the toughness of Roman character and the strength of their institutions; it is also a criticism of the new education, an expression of doubt, and again a definite conviction as to its inadequacy as a substitute for the old. Cato, typical of the best in old Rome, took personal charge of his son's education. The old, strenuous physical discipline of labor was prized both by Cato and Varro.³⁵ Aemilius Paulus trained his sons in the old discipline, though he valued and praised the new.³⁶ Augustus took care of his grandsons' education, physical and mental,³⁷ and in other ways prided himself on adherence to the old mores. Horace, though a product of the new learning, praised his father for attending him personally when he went to school.³⁸ Cicero, fine example of the effect of Hellenic learning on man's mental development, praised the old Roman training in law: Crassus was "proving himself in the law-courts" at an age when young men now are just winning applause as students of oratory.³⁹ Tacitus (c. 55-120 A.D.), discussing the question why there were many great orators in former ages, whereas in his own day there were only petty pleaders, declared that the excellence of the old was rooted in training at home and discipline in the realities of life, the boy being "taken by his father . . . and placed under the care of some orator who held a leading position at Rome." Nowadays, children are brought up at home by Greek servants; at school it is just as bad, ignorance meets ignorance, and the studies pursued defeat the object of genuine education.⁴⁰ Pliny, too, lauded the old training of the home, the camp, and the courts, and condemned the products of the rhetoric schools.⁴¹ Martial disparaged the long-winded orator, and begged him to drink his "extra clock" and quench at once his thirst and eloquence.⁴²

³³ Petronius: *Satyricon*, 1 *et seq.*

³⁴ *Satire* III, 58-125.

³⁵ Plutarch: *Cato*, 1-3, 20.

³⁶ Plutarch: *Aemilius Paulus*, 6.

³⁷ Suetonius: *Augustus*, 64.

³⁸ *Satires*, I, 6.

³⁹ *Offices*, II, 45, 47; *On Oratory*, I, 44.

⁴⁰ *A Dialogue on Oratory*, I, 28-30, 34-5.

⁴¹ *Letters*, II, 14; VIII, 14.

⁴² *Epigrams*, VI, 35.

INSTITUTIONS OF FORMAL EDUCATION

When Hellenic culture infiltrated Roman society, education, which previously had been chiefly an informal apprenticeship to life's duties, began to assume a formal, institutional aspect. The various types of institutions, largely borrowed from abroad, were fairly fixed by the last century B.C.; they continued on throughout the Empire, but suffered a marked deterioration in later centuries. From the lowest to the highest level, schooling proceeded from the *ludus* through Greek and Latin grammar schools, continued with the rhetoric school, and concluded with the university.⁴³

Elementary education had been in the hands of parents in early Roman days. To some extent, as Cato, Augustus, Horace, and others suggest, the father's care for it continued despite the development of formal, educational institutions. Generally, however, a slave-tutor (*paedagogus*) was given charge of the Roman boy about the age of seven. The custom had become common in the days of Augustus, who assigned special seats for them at the theater, next to the section allotted to their charges.⁴⁴ Epictetus says: "When we are children our parents deliver us to a paedagogue to take care on all occasions that we suffer no harm."⁴⁵ While his duty was primarily supervision of manners and morals, the *paedagogus* (usually a Greek) might give instruction at times in Greek. Quintilian says that *paedagogi* "should have had a thorough education," or if not, they should know it; nothing is worse than thinking one has real knowledge when one knows only "the alphabet," for such a person disdains "the drudgery of teaching."⁴⁶

Of the early elementary school (*ludus*) little is known. When, however, instruction in reading and writing had become a generally accepted necessity, such elementary institutions, taught by a *litterator* or *ludi magister*, became common.⁴⁷ *Litterator* meant a "dabbler in literature," one who had a "smattering of letters" in contrast to one thoroughly versed in letters. Though usage varied, Suetonius says that Romans commonly used *litteratus* and *litterator* as the Greeks did *grammaticus* and *grammatista*, the former of each pair of terms referring to a master, the latter to one moderately versed in literature. Augustine distinguishes carefully between elementary reading, writing, and ciphering, all which he detested, and those studies taught by the grammarians.⁴⁸

⁴³ Becker: *Gallus or Roman Scenes of the Time of Augustus*, p. 9.

⁴⁴ Suetonius: *Augustus*, 44.

⁴⁵ Fr. 97.

⁴⁶ Quintilian: *The Institutio Oratoria*, I, 1, 8.

⁴⁷ Livy, III, 44; V, 27; VI, 25; Plutarch: *Camillus*, 38; *Real-Encyclopädie*, S.S., II, Pt. I, 763; Marquardt: *Das Privatleben der Römer*, pp. 92 ff.; *supra*, p. 527.

⁴⁸ Suetonius: *Grammarians*, 4; Cellius, XVI, 6; XVIII, 9; Augustine: *Confessions*, I, 13.

According to Plutarch,⁴⁹ Spurius Carvilius, a freedman, was the first "to open an elementary school" about 231 B.C. Considering earlier references to *ludi*, the character of this school and the precise meaning of Plutarch's words are somewhat uncertain. If this was, indeed, the first elementary school to charge fees, it may represent a certain expansion of elementary education in a public way. Earlier teachers may have taught only the children of certain households, receiving gifts instead of regular fees, whereas Carvilius admitted all who brought a fixed fee.⁵⁰

Though *ludus* (sport, play, game) may have been employed, like the Greek *σχολή*, to attract rather than repel youth, the institution does not appear in attractive colors. Usually held in a *pergula*, an open porch or booth similar to that used for shops, it was exposed to the tumult of the street unless screened by a curtain. Juvenal calls school a "hole" that no blacksmith, no carder of wool, would use.⁵¹ There was little equipment; though numerous materials—maps, historical handbooks, chronological tables—existed after the Republic, it is doubtful whether they were used in school.⁵² Books became cheap, however, and pupils could have their own copies. The master occupied a small raised platform; the pupils sat upon the floor or on low wooden or stone seats, holding their writing tablets on their knees. One discounts satire; but, in general, the schools seem scarcely better than satirists painted them.

Elementary education became widespread under the Empire. Augustus made an exception of *praeceptores* and *medici*, allowing them to remain in Rome during a famine (10 A.D.) while other foreigners were expelled; he also educated many other children with his own.⁵³ When education was at its zenith in the third century, there were elementary schools in villages as well as cities, even in distant provinces.⁵⁴ Elementary teachers, however, did not share the privileges granted to certain learned classes after Nero.⁵⁵

Elementary schooling usually began about seven and continued till about twelve. Boys and girls may have attended school together. A schoolmaster of Capua is shown with a girl and a boy on either side, but this proves nothing regarding coinstruction. School began before the cocks began to crow. Artificial light was used. Palaemon must have "snuffed up the odour of as many lamps"

⁴⁹ Roman Questions, 59.

⁵⁰ Grasberger, *Erziehung und Unterricht im Klassischen Altertum*, II, 211, thinks Carvilius' school represents a "higher stage of literary and rhetorical instruction"; cf. Jullien: *Les Professeurs de Littérature dans l'Ancienne Rome*, pp. 26 ff.; Wilkins: *op. cit.*, p. 23.

⁵¹ Juvenal, VII, 222 et seq.; Grasberger: *op. cit.*, II, 208 ff.; Marquardt: *op. cit.*, p. 93; Jullien: *op. cit.*, pp. 114 ff.

⁵² Marquardt: *op. cit.*, pp. 109 f.; Sandys: *Companion to Latin Studies*, p. 230.

⁵³ Suetonius: *Augustus*, 42, 48.

⁵⁴ Rostovtzeff: *The Social and Economic History of the Roman Empire*, p. 375.

⁵⁵ *Real-Encyclopädie*, S.S., II, Pt. I, 764.

as he had scholars.⁵⁶ Discipline seems to have been harsh, but holidays were frequent. Regular festivals—*Quinquatrus*, *Saturnalia*, *Floralia*, *Cerealia*—market days (*nundinae*), and special triumphal days were probably free. A long vacation occurred in summer. The hot days of July having come, Martial bids the master let his "grim rod" keep holiday "till the Ides of October." Boys took the teacher their fees on the ides of eight months, the rest of the year supposedly being vacation time.⁵⁷

In the early schools the Law of the Twelve Tables was at once the content of reading lessons and a political catechism. Later, attention was given to the Laws, the Latinized *Odyssey*, and other literary works as they increased and found favor with teachers. In Cicero's boyhood, however, the Laws were still learned as "a required formula."⁵⁸ The new materials seem to have quite displaced the Law at the middle of the first century B.C., for Cicero says "no one learns it nowadays."

Since education was private and was frequently begun at home, the time of learning to read must have varied with the family and the tutor. Some thought reading should not begin before seven, which was probably a common practice. Quintilian, however, would begin earlier. Children must be occupied in some way. Why neglect what can be gained before seven, since the young child's memory is most retentive? This early training ought not be too laborious, however; studies should be an amusement and involve some competition; praise and rewards should draw the pupils on to learning. Children should learn the forms of letters and their names at the same time, "just as they do with men." Have letters of ivory for them to play with; thus learning and pleasure may go hand in hand.⁵⁹ In learning reading and writing, model sentences were used, hundreds of which have been preserved.⁶⁰

In teaching writing, Seneca says, the "fingers are held and guided," following the outline of the letters; next, they "imitate a copy" and thus form a style.⁶¹ Quintilian speaks of having children "trace" letters which others have made for them. As an improvement, when the child knows the shapes of letters, he recommends having them cut accurately upon a board, "so that the pen may be guided along the grooves" and not go astray.⁶² St. Jerome recommended this old practice for Paula: "When she begins with uncertain hand to use the

⁵⁶ Juvenal, vii, 225 et seq.; Martial, ix, 68; xii, 57.

⁵⁷ Horace: *Satires*, i, 6; Martial, x, 62; Marquardt: *op. cit.*, pp. 113 f.; Sandys: *op. cit.*, p. 232.

⁵⁸ Cicero: *Laws*, ii, 23; Grasberger: *op. cit.*, ii, 297.

⁵⁹ Quintilian, i, 1, 18, 25-6.

⁶⁰ Fowler: *Social Life at Rome in the Age of Cicero*, pp. 184 f.

⁶¹ *Epistle* xciv, 51.

⁶² Quintilian, i, 1, 27; v, 14, 31.

pen, either let another hand be put over hers to guide her baby fingers, or else have the letters marked on the tablet so that her writing may follow their outlines and keep to their limits without straying away."⁶³

In keeping with the Romans' practical bent, reckoning had a prominent place in schools. Unlike the Greeks, Cicero says, the Romans limited mathematical study to its practical aspects, "measuring and reckoning."⁶⁴ A special teacher (*calculator*) was employed; his instruction, at least in later times, was rated higher and was better paid than that of the teacher of letters. In teaching numbers an intricate system of finger-reckoning and the abacus were used. One type of abacus had stone counters, *calculi*; another, movable buttons or knobs, set in grooves.⁶⁵ Knowledge of calculation was needed in court as well as in the counting house. An orator was thought "deficient in education" if he hesitated in making calculations, or if he contradicted his spoken calculations by "an uncertain or inappropriate gesture with his fingers." Knowledge of geometry was also necessary in cases involving "boundaries and measurements."⁶⁶

Devotion to calculation was ridiculed by those who thought there was something better than knowing "how much." Places of business teach that "money is the first thing to seek," says Horace; the young and the old have this lesson on their lips. Romans learn in school "to divide the as by long sums into a hundred parts."⁶⁷ Mathematicians teach how to lay out estates, count, and adapt our fingers to avarice; it would be better, says Seneca, to learn that there is no value in such calculations, no use in wearing out bookkeepers keeping records of our wealth.⁶⁸ But learning that "one and one are two, two and two are four," was still part of Roman education in the youth of Augustine.⁶⁹

Though the division between the elementary and the grammar school and between the grammar school and the rhetoric school was not definitely fixed, the generally approved time-allotment was from age seven to twelve for the *ludus*; twelve to the assumption of the *toga virilis*, for the school of the *grammaticus*, Greek and Latin; and the school of the *rhetor*, after donning the toga of manhood.⁷⁰

Cato said that "the poetic art was not esteemed" in the old education, and anyone who turned to it was considered a "blockhead."⁷¹ Now, however, all

⁶³ Letter cvii, 4. *Select Letters of St. Jerome*, trans. by F. A. Wright. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁶⁴ *Tusculan Disputations*, I, 2; Grasberger: *op. cit.*, II, 325 ff.

⁶⁵ Marquardt: *op. cit.*, pp. 97 ff.

⁶⁶ *Quintilian*, I, 10, 35-6.

⁶⁷ *Art of Poetry*, Wickham's *Horace*, p. 356; *Epistles*, I, 1.

⁶⁸ *Epistle lxxxviii*, 10-1.

⁶⁹ *Confessions*, I, 13.

⁷⁰ Sandys: *op. cit.*, pp. 233 f. The age for putting on the dress of manhood varied widely from fourteen to seventeen.—Fowler: *op. cit.*, pp. 191 f.

⁷¹ *Gellius*, XI, 2.

that changed. The early Greek grammar masters concentrated on reading and criticizing Homer. Gradually this was supplemented by other authors. The practical wisdom of the bard of Aesera made him acceptable in Roman schools. Paraphrasing Aesop's fables was recommended by Quintilian. Tragedy, lyric poetry, and comedy also had a place. Menander was especially favored. Erotic elegies and hendecasyllables (a meter commonly used in lampoons) were to be passed by entirely, or used only for older students.⁷² Statius' father taught "the sons of Romulus" Homer, Hesiod, Pindar, Ibycus, Alcman, Stesichorus, Sappho, Battiades, Lycophron, Sophron, and Corinna.⁷³ A son's eulogy may have exaggerated; but Naples was strongly Greek.

For a time there was little at hand save Greek authors. The growth of Latin literature, however, soon made its study a matter of importance; consequently, grammar schools became more specialized in the early first century B.C., some being known as *grammatici Graeci*, others as *grammatici Latini*. Certain masters were able to teach both Greek and Latin literature. Gniphio (c. 116-66 B.C.) was well read in both tongues; Philologus, born at Athens, was famed as a "Latin grammarian." Stilo the Penman was reputedly the first Latin grammarian; after him, grammatical studies spread rapidly, many schools springing up at Rome and also in Roman provinces. Suetonius names many masters who gained prominence: in Gallia Togata, were Octavius Tencer, Pescennius Iaccus, and Oppius Chares; at Rome, Opilius, Gniphio, Marcus Andronicus, Orbilius, Philologus, Valerius Cato, Epicadus, Staberius Eros, Nicias, Lenaeus, Quintus Epirota, Verrius Flaccus, Crassicus, Aphrodisius, Hyginus, Melissus, Marcellus, Palaemon, and Probus.⁷⁴

Certain grammar-school masters were also authors. Nicanor wrote commentaries and a satire; Opilius, a number of books on "learned topics"; Gniphio, *On the Latin Language*; Andronicus, *Criticisms of the Annals of Ennius*; Cato, grammatical works and poems; Aphrodisius, a criticism of Verrius' *Orthography*; Melissus, *Trifles* and *Fabulae Togatae*, scenes of Roman life; and Probus, *Observations on Our Early Language*. Palaemon was author of a grammar⁷⁵ and was a versatile versifier. Some grammarians gained immortality through the fame of their pupils and associates. Stilo taught Cicero; Gniphio was Caesar's tutor, and Cicero attended his instruction in rhetoric. Orbilius lives as Horace's "flogger." Philologus taught Sallust; Eros was the teacher of Brutus and Cassius; and Lenaeus was the freedman and companion of Pompey. Hyginus, an intimate friend of Ovid, was given charge of the Palatine Library by Augustus.⁷⁶

⁷² Quintilian, I, 8, 6-7; 9, 2; Jullien: *op. cit.*, pp. 205 ff.; Marquardt: *op. cit.*, p. 105.

⁷³ Statius: *Silvae*, v, 3.

⁷⁴ Suetonius: *Grammarians*, 4-24.

⁷⁵ *Ibid.*, 24; Juvenal, vi, 452.

⁷⁶ Suetonius: *Grammarians*, 7, 9-10, 13, 15, 20; Augustus, 29.

The question naturally arose as to whether Latin or Greek literature should come first. Several factors contributed to placing Greek first: the pre-eminence of Greek literature; the fact that it was the mother of Latin letters; and the priority of Greek teachers. Though Pliny⁷⁷ intimated that beginning with Homer was like beginning to climb at the top of a ladder, Quintilian, veteran schoolmaster and outstanding authority of the first century A.D., favored beginning with Homer and Virgil. One should begin with Greek; Latin, the everyday tongue, would be learned anyway; besides, Latin learning was derived from Greek. Latin instruction should follow shortly the beginning of Greek, both studies being then continued simultaneously. The common practice of studying only Greek, as "in the majority of cases," Quintilian considered bad, for it occasioned errors of accent and encouraged mixing foreign idioms with native speech.⁷⁸

Latin masters used Andronicus' *Odyssey*. Horace did not regret learning it, but marveled that it should be praised as nearly perfect.⁷⁹ Virgil was linked with Homer by Quintilian. Some authors seem to have curried favor with the teachers; but Horace assures us that he would not "stoop" to canvassing schoolmasters; would not be so "senseless" as to want his works to be "lesson-books in cheap schools."⁸⁰ Virgil and other poets were reputedly introduced into schools by Epirota, "fond nurse of fledgling bards."⁸¹ Horace came into the schools, too, presumably without currying favor. Though Quintilian would not like to explain certain passages, Juvenal mentions the "discoloured Horace" and "begrimed Virgil" of boys at school.⁸² Quintilian considered Ennius, Accius, Pacuvius, Lucilius, Terence, and Caecilius valuable chiefly for "persons of riper years." Sallust's orations were read, but Quintilian warns against his style. Naevius, Afranius (known for his *Fabulae Togatae*), Lucan, Plautus, Statius, and others also gained a place. Quintilian thought one should not study poets alone; for vocabulary and subject matter all kinds of writers must be read.⁸³

The method of teaching varied with the master. Verrius Flaccus gained renown for his use of rivalry, arraying those of equal advancement against each other, and giving prizes to the most successful.⁸⁴ Quintilian advised masters not to teach over the heads of pupils, for "vessels with narrow mouths" cannot

⁷⁷ Letters, II, 14.

⁷⁸ Bk. I, 1, 12-4; 8, 5.

⁷⁹ Epistles, II, 1.

⁸⁰ Ibid., I, 19; Satires, I, 10.

⁸¹ Suetonius: *Grammarians*, 16.

⁸² Satire VII, 226.

⁸³ Bk. I, 4, 4; 8, 6, 11 et seq.; IV, 2, 45.

⁸⁴ Suetonius: *Grammarians*, 17.

take liquids poured in too fast. Beginners should imitate their comrades rather than the master. His own teachers had had the boys compete for headship of the class, the leader being allowed to declaim first during the succeeding month, when another might be able to gain priority.⁸⁵ Repetition and expressing the same thought in various ways were common. Fronto advised Marcus Aurelius to follow his own tested practice: "You must turn the same maxim twice or thrice. . . . And so turn longer ones two or three times diligently, boldly. . . . This exercise will be the greatest help to you in speech making; undoubtedly, too, the excerpting of some sentences from the *Jugurtha* or the *Catiline*." ⁸⁶ One must often use the blunt end of the stylus (i.e., erase and rewrite), says Horace, to write anything worth a second reading.⁸⁷

The teaching of literature, as Quintilian viewed it, involved practice in reading, attention to pronunciation, breathing, pauses, raising and lowering the voice, modulation, speed and vigor of speech. Orthography was not to be neglected. Proper attention must be given to the different qualities of poetry and prose. Poetry is song, but must not be read singsong. One must understand what he is trying to read. The teacher must be schooled in writing and speaking correctly and interpreting the poets; he must know music, astronomy, philosophy.⁸⁸ Given such a training, he can lead his pupils to understand grammatical and stylistic niceties, and any mythological, historical, musical, logical, ethical, geographical, and astronomical allusions and illustrations which a work may contain. Astronomy and other auxiliaries did not require thorough, detailed study. Quintilian did not recommend a complete, critical treatment of history, but only the "version which is generally received" or "rests upon good authority." ⁸⁹ Tacitus thought that, in respect to knowledge of the past, there was "too little solid work." ⁹⁰ Reading of authors was to be supplemented by oral and written paraphrases, more or less extensive, yet faithful to the author's meaning; and by writing aphorisms, moral essays, and delineation of character, based on subject matter already read.⁹¹

The place of prose in the grammar schools has been disputed, some writers holding that it was excluded, others that it was not. Becker ⁹² thinks prose writers were studied, and he names Cicero. Cicero, himself, referring to his

⁸⁵ Bk. 1, 1, 23-4; 2, 26-8.

⁸⁶ Fronto, *The Correspondence of Marcus Cornelius*, 1, 13 ff. Trans. by C. R. Haines. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁸⁷ *Satires*, 1, 10.

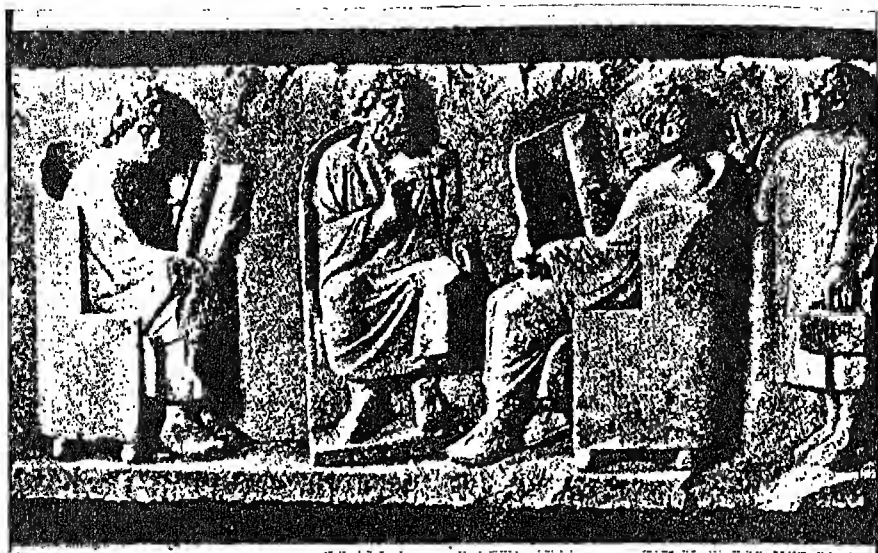
⁸⁸ Quintilian, 1, 4, 2-4; 7; 8, 1-3.

⁸⁹ *Ibid.*, 1, 8, 18.

⁹⁰ *On Oratory*, 30.

⁹¹ Quintilian, 1, 9.

⁹² *Op. cit.*, p. 192; Wilkins: *op. cit.*, pp. 56 f.; Jullien: *op. cit.*, pp. 211 f.



A ROMAN GRAMMAR SCHOOL

(From Paul Monroe's Slide Collection)

speech against Calventius Marius, wrote his brother that every schoolboy learns it "by rote as an exercise."⁹³ This might refer only to the rhetoric school, but such an interpretation is open to doubt. Cicero says that grammar includes study of poets and of history; and that the Romans, following Greek example, read and learned the poets by heart and regarded them as necessary for a free man's education. But Cicero adds that this pursuit of the poets is harmful, saps manliness, and that Plato was right in barring poets from his ideal state.⁹⁴

Greek and Latin grammar schools provided general intellectual culture. The rhetor aimed at training public speakers. When fully developed, rhetoric-school training supplanted the earlier, practical apprenticeship of youth in the courts—a substitution which Cicero, Pliny, and Tacitus⁹⁵ criticized. Like the grammar school, training in rhetoric also came from Greek sources, but it was introduced with more difficulty. In 161 B.C. the Senate issued a decree against "Latin speaking philosophers and rhetoricians," authorizing Marcus Pomponius, the praetor, to proceed "in whatever way seemed to him in accord with the interests of the State and his oath of office," so "that they should not remain in Rome."⁹⁶ Seventy years later the subject still struck fire. In 92 B.C.

⁹³ To Quintus, III, 1, 4⁹⁴ *Tusculan Disputations*, II, 11, 27; *On Oratory*, I, 42.⁹⁵ *On Oratory*, I, 34-5; Cicero: *On Oratory*, I, 44; *Offices*, II, 45-7; Pliny: *Letters*, II, 14; VIII, 14.⁹⁶ *Gellius*, xv, 11. Trans. by J. C. Rolfe. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.; Suetonius: *Rhetoricians*, 1.

"Latin rhetoricians" were officially censured by the edict of Crassus and Ahenobarbus. Neither Senate nor Censors appear to have had much effect. Gradually rhetoric came to be thought "useful and honourable," Suetonius says, many devoting themselves thereto for "defence and for glory."⁹⁷ Perhaps the decree of 92 B.C., ostensibly directed against Latin rhetoricians generally, was really aimed at Plotius Gallus, a teacher of Latin rhetoric who opposed Crassus and Ahenobarbus in politics.⁹⁸ Cicero, however, implies more than personal or political reasons for the decree; as a boy, he says, he desired to study Latin rhetoric under Plotius, the first Latin rhetorician, who was then famous, but was deterred by friends who thought training in Greek better.⁹⁹ According to the speech of Crassus, Latin rhetoricians were inferior; but he anticipated that the time would come when Latin eloquence might be preferable to the Greek.¹⁰⁰

Some teachers taught both grammar and rhetoric; others became famed specialists in oratory. Opilius taught philosophy, rhetoric, and then grammar. Gniphio taught grammar and also gave instruction in speaking and declaiming. Ateius, a grammarian, became a critic and taught declamation.¹⁰¹ Plotius, once a slave, gained fame as Latin rhetorician and drew throngs to his school; Cicero says "the most diligent students of the subject were trained under him," though he himself did not have that privilege.¹⁰² Marcus Antoninus (143-87 B.C.) was author of a work *On Rhetoric*.¹⁰³ Epidius taught Mark Antony and Augustus in his school of oratory. Clodius, a friend of Antony, was a teacher of Greek and Latin oratory. Silus won fame as a speaker, opened a lecture room, and gained notoriety as a pleader at court.¹⁰⁴

The division between grammar school and rhetoric school was not adhered to strictly. Quintilian says that some rhetoricians—the Latin more than the Greek—abandoned certain of their proper functions and devoted themselves to declamation, while grammarians undertook much outside their province. The two schools should recognize their proper limits. To the chief elements—speaking correctly and interpreting authors—which are the proper business of the grammar master, Quintilian added "certain rudiments of oratory" for those not ready for the rhetoric school. When is one ready? Age does not determine; "when he is fit," says Quintilian, and only then, should the boy go to the rhetoric master.¹⁰⁵

⁹⁷ *Rhetoricians*, 1.

⁹⁸ Gwynn: *Roman Education from Cicero to Quintilian*, p. 65.

⁹⁹ Suetonius: *Rhetoricians*, 2; *Quintilian*, II, 4, 42; III, 1, 19.

¹⁰⁰ Cicero: *On Oratory*, III, 24.

¹⁰¹ Suetonius: *Grammarians*, 6, 7, 10.

¹⁰² Suetonius: *Rhetoricians*, 2.

¹⁰³ Cicero: *Brutus*, 163; *Orator*, 18.

¹⁰⁴ Suetonius: *Rhetoricians*, 4-6.

¹⁰⁵ Bk. I, 9, 1 and 6; II, 1, 1-7.

Training in rhetoric, following Greek practice, fell into three divisions: *progymnasmata*, preliminary exercises; study of types of rhetoric; and declamation. *Progymnasmata* included narratives, fictitious, realistic, historical; critical treatment of the narrative, designed to confirm or refute it; praise of famous men and denunciation of evil.¹⁰⁶ Other exercises dealt with commonplaces, theses involving judgment and inventiveness of mind, and moral essays (*chriae*), in which pupils examined critically the sayings of the wise, or some notable action. Exercises in praise or denunciation of laws constituted one of the most important tasks of the rhetoric master.¹⁰⁷ The classifications of rhetoric, though disputed, were generally three in number: demonstrative, or laudatory; deliberative; and forensic, or judicial. All three types comprised five parts: invention (finding proper materials), arrangement, expression, memory, and delivery.¹⁰⁸

Declamation, the culmination of the work of the rhetor, dealt with preparation of compositions on concrete cases (*causae*), and general, abstract propositions (*proposita*). Cicero thought this discrimination by the teachers a "capital error," for ". . . all controversies must have relation to the force and nature of the general position. . . ." ¹⁰⁹ Later two classes of compositions were commonly designated: *suasoriae*, presenting a treatment of a certain course; and *controversiae*, defending or attacking a proposition. Jullien ¹¹⁰ calls *suasoriae* a training in deliberative eloquence; *controversiae*, a means of developing judicial oratory.

Seneca's *suasoriae* and *controversiae* furnish a fair idea of the questions treated by rhetoric schools.¹¹¹ It was, indeed, a test of inventiveness and language to reconstruct the situation of Agamemnon, deliberating whether to sacrifice Iphigenie; and of Hannibal, pondering whether to lead his army against Rome. Such puzzlers as these were also used: Young men, seeing fishermen drawing in nets, bargained with them and paid for the haul. The nets, being drawn up, contained not fish but gold. Both purchasers and fisherfolk claimed the haul. To whom did it belong? In another case, dealers in slaves, seeking to evade customs, dressed a slave in the *toga praetexta* with a *bullula* round his neck. Arrived at Rome, it was claimed that the slave was freed by the slave-dealers' action.¹¹² Was he free or not? Seneca observes, "We learn for school, not for life." Tacitus complains of the "subject-matter . . . so remote from real life," the "bombastic style" and "magniloquent phraseology" of the

¹⁰⁶ *Ibid.*, II, 4, 2, 18, 20.

¹⁰⁷ *Ibid.*, II, 4, 22-6, 33; Jullien: *op. cit.*, p. 317.

¹⁰⁸ *Quintilian*, III, 3, 1; 4, 12-5; Grasberger: *op. cit.*, III, 353 ff.

¹⁰⁹ *On Oratory*, II, 31.

¹¹⁰ *Op. cit.*, p. 318.

¹¹¹ *Senecae Rhetoris Suasoriae, Controversiae, Declamationumque Excerpta*.

¹¹² Suetonius: *Rhetoricians*, 1.

rhetoric schools.¹¹³ Juvenal suggests the sad consequences of continually hearing pupils parade the same hackneyed themes: "Served up again and again, the cabbage is the death of the unhappy master!"¹¹⁴

The rhetoric school completed formal education for many Roman youths, but philosophical study grew in favor despite opposition. Wealthy families frequently maintained philosophers in their households, thus gaining informally an acquaintance with various aspects of Greek thought. The movement was stimulated by sporadic visits of Greek philosophers. Carneades won popularity at Rome in the middle of the second century B.C. Cicero, as a youth, listened to Epicurean Phaedrus at Rome; later he heard Philo the Academic. A taste for philosophy, thus acquired, was further satisfied by study at Athens, Rhodes, Alexandria, and elsewhere. Cicero spent two years on rhetoric and philosophy at Athens, and also studied in Asia Minor and at Rhodes. He sent his son to Athens at the age of twenty.¹¹⁵ Caesar studied rhetoric at Rhodes; Horace and Ovid finished off their studies at Athens.

Western centers of oratory and philosophy also gained renown. In Strabo's day (c. 63 B.C.) elocution and philosophy flourished at Massilia, a veritable "school for the barbarians"; and some Romans preferred Massilia to Athens.¹¹⁶ Cicero, though he liked Athens, thought her philosophy "topsy-turvy."¹¹⁷ Rome, too, would one day have a university. Establishment of libraries, begun by Caesar, was extended under Augustus, Tiberius, and others. Vespasian founded a library in the Forum Vespasiani, probably in the Temple of Peace, erected 71-75 A.D.¹¹⁸ This library furnished the basis of the Athenaeum, established under Hadrian, which became the "rallying-place" for Greek and Roman sophists and poets—the center of university life in Rome.¹¹⁹ Literature, rhetoric, and law, together with mechanical, medical, and architectural science gained a place at the Athenaeum; but philosophy was somewhat neglected.

Cicero judged "all philosophy" "fruitful and profitable"; the part dealing with duties and living "consistently and virtuously" had no superior. To his son, whom he sent to Athens to garner philosophical treasures, he wrote: ". . . you have incurred a heavy responsibility both from Athens and Cratippus; and since you have gone to these as to a mart for good qualities, it would be most scandalous to return empty, disgracing the reputation both of the city and of the master."¹²⁰ Doubtless Marcus did not leave Athens quite "empty"; but

¹¹³ *On Oratory*, 35.

¹¹⁴ Juvenal, vii, 150 et seq.

¹¹⁵ Plutarch: Cicero, 3-4; Grasberger: *op. cit.*, iii, 453.

¹¹⁶ *The Geography of Strabo*, iv, 1, 5.

¹¹⁷ *Letters to Atticus*, v, 10.

¹¹⁸ Suetonius: *Julius*, 44; *Vespasian*, 9; Boyd: *Public Libraries and Library Culture in Ancient Rome*, p. 16.

¹¹⁹ Walden: *The Universities of Ancient Greece*, pp. 85, 267; Grasberger: *op. cit.*, iii, 442.

¹²⁰ Cicero: *Offices*, iii, 2.

neither did he profit so much, nor emulate the industry, honor, and fame of his father, as Cicero hoped he might. From his youth, Marcus needed the spur, not the curb.¹²¹ When, at twenty, he went with an allowance of about £800 to Athens for philosophy, he acquired some fame for idleness and luxury. In a repentant mood, real or pretended, young Marcus wrote Tiro, his father's secretary, telling of the rectification of his ways, his serious devotion to study, and his need of a secretary—Greek preferred—to spare him the burden of writing his notes on lectures!¹²²

Athens offered philosophy and frolic to well-to-do young Romans. The serious Horace, seeking truth in the groves of Academe, was poles apart from young Marcus. Many, however, combined study and pleasure. Gellius tells how young Romans spent the Saturnalia "very merrily yet temperately, not 'relaxing our minds' . . . for . . . to relax the mind is like losing it—but diverting our minds a little and relieving them by the delights of pleasant and improving conversation." Those who attended the same teachers dined together, each taking turn as host and providing prizes and laurel crowns for those who were able to answer the questions put to them. If one could not answer, the crown went to Saturn, god of the festival. Literary, historical, and sophistical questions mingled together, revealing the current devotion to erudition, clever phrase, and skillful argument: What early poet used the verb *verant*, signifying they speak the truth? "What you have not lost, that you have. You have not lost horns; therefore you have horns." "When I lie and admit that I lie, do I lie or speak the truth?"¹²³

University life at Athens continued "merrily" but scarcely "temperately" in the fourth century. Lawlessness, increasing elsewhere, was reflected in student life. Students organized corps in support of rival sophists and sought by forceful methods to gain new members among those just arriving in the city. Gregory Nazianzus (329–389) described the seizure and initiation of new students. Libanius (314–393) was captured and confined in a "cell not much larger than a winejar," where he remained until he took an oath of allegiance to his captors. A spread, at the initiate's expense, commonly concluded initiation. Fighting, feasting, drinking, contracting debts greater than they could pay, playing ball, attending the theater and the racecourse, and raiding peoples' houses seem to have been common elements of gayety at the center of learning. Libanius regarded it as a distinguishing virtue that he himself never gave way to ball-playing, carousing, and raiding homes while he was a student at Athens.¹²⁴ As for intellectual fare at Athens, Libanius gave it a low rating.

¹²¹ To Atticus, vi, 1.

¹²² *Letters to His Friends*, xvi, 21.

¹²³ Gellius, xv, 2; xviii, 2 and 13. Trans. by J. C. Rolfe. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹²⁴ Walden: *op. cit.*, p. 319.

The realization soon dawned that "it was nothing very wonderful that I had come to hear," for the teachers did not "differ much from boys." At Antioch, too, Libanius found students more interested in mimes, dancers, horses, drivers, fighting, and bathing than in his declamations. "On not a few occasions" he resorted to having the loafers seized by the necks and thrown out.¹²⁶

TEACHERS AND THEIR SELECTION

It is said, "One can always tell a teacher." Teachers of old Rome had some common traits; one of the commonest in early days was their slave origin. Suetonius¹²⁶ names a dozen or more grammarians who had been slaves. Palaemon was a "home-born slave" and learned weaving. Gniphio, though born free, was disowned. Melissus was born free, but was disowned and refused to return to freedom. Lucius Aelius and Servius Clodius, however, were knights. Lucius Plotus was freed because of his interest in letters, and became a rhetorician.¹²⁷

Some masters had bad reputations, according to Suetonius.¹²⁸ Palaemon, one of the most famous, was given to luxurious living and "every kind of vice." Servius Clodius stole one of his father-in-law's books, was disowned, and left the city. Marcus Andronicus was indolent and not fit to have a school. Quintus Epirota was dismissed for improper conduct. Marcus Epidius, a rhetorician, was a blackmailer.¹²⁹ Quintilian warns against the influence of bad teachers and insists that the master should "be free from the grosser vices."¹³⁰ Other masters merely lacked decorum. Gellius found two grammarians of no small renown disputing violently in a park whether *vir egregi* or *vir egregie* were the proper vocative.¹³¹ Cicero thought Dionysius (tutor for the boys) a "despicable cad," "an arch-chatter-box useless as a teacher," guilty of the highest ingratitude.¹³²

With schoolmasters, as among other men, their evil doubtless "lives after them." There were those, however, whose goodness, heroism, uprightness, devotion, and esteem survived them. Numerianus, an elementary teacher, was rewarded for daring exploits in Severus' behalf.¹³³ Fronto seemed to Marcus Aurclius the "glory of Roman eloquence," "a man of mark," "most delightful," "master most sweet."¹³⁴ Persius paid tender tribute to Cornutus who, when

¹²⁶ *Ibid.*, pp. 300 f., 304, 310, 319, 321 f.

¹²⁶ *Grammarians*, 6, 10-3, 15-20.

¹²⁷ *Ibid.*, 3, 7, 21, 23; *Rhetoricians*, 3.

¹²⁸ *Grammarians*, 3, 8, 16, 23.

¹²⁹ Suetonius: *Rhetoricians*, 4.

¹³⁰ Bk. I, 2, 4; II, 2, 5 and 15.

¹³¹ Bk. XIV, 5.

¹³² To Atticus, VIII, 4.

¹³³ Dio, LXXVI, 5.

¹³⁴ Fronto, I, 129 ff.

life's path was doubtful, led him to virtue and reason.¹³⁵ Much seems to have been expected of the teacher in the way of knowledge and molding of morals and manners.¹³⁶ The most careful masters, it seems, looked after everything, even their pupils' dress. Castricius, highly regarded by Hadrian for his character and knowledge was not unmindful of his pupils' attire: ". . . I should have preferred to see you in your togas, or if that was too much trouble, at least with girdles and mantles."¹³⁷

Whether good or bad masters were in the majority, one cannot say; in any case, it was necessary to select teachers with care. Pliny, seeking to establish a school at Como, urged Tacitus to look out for teachers among men of letters who might qualify and be willing to apply for the post.¹³⁸ Again, to find a tutor for his nephews, he promised to visit "all the several professors" and give an account of them, that a wise choice might be made.¹³⁹ When Corellia Hippula's son was ready for schooling outside the household, Pliny, though recognizing that eloquence, method, and discipline were not to be slighted, urged first attention to the teacher's morals "at this dangerous period of life," and recommended Julius Genitor, especially for his grave behavior and irreproachable morals—"too severe and rigid for the libertine manners of these times," perhaps.¹⁴⁰ Even though a good teacher were secured, one of the family might have much to do with the teaching. Cicero urged his brother not to worry about his son's education, for he himself would see to his application. The rhetoric master, Paeonius, is an "exceedingly well-trained and excellent fellow," but "my own system of instruction is somewhat more scholarly and argumentative."¹⁴¹

Boys differed then as now in respect to studiousness and conduct. Cicero's son needed the spur; his nephew, the curb.¹⁴² Boisterous, bellicose conduct was not uncommon. Juvenal thought it a hard assignment to watch so many charges: "Rufus and the rest are cudgelled each by his own pupils. . . ." ¹⁴³ Cassius beat Sulla's son, Faustus, because the boy had boasted of his father's absolute power; when questioned, Cassius threatened to do so again.¹⁴⁴ Teachers commonly had recourse to the rod. Libanius sometimes ordered "the loafer" thrown out; but, finding blows and stripes ineffective, he turned to "counsel

¹³⁵ Persius: *Satire* v, 30 et seq.

¹³⁶ Juvenal, vii, 197-243.

¹³⁷ Gellius, xiii, 22.

¹³⁸ *Letters*, iv, 13.

¹³⁹ *Ibid.*, ii, 18.

¹⁴⁰ *Ibid.*, iii, 3.

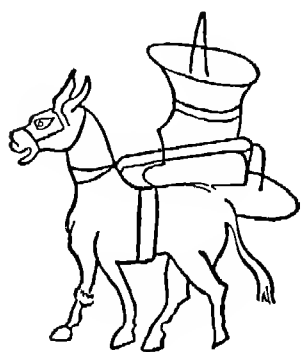
¹⁴¹ *To Quintus*, iii, 1, 4; 3.

¹⁴² *To Atticus*, vi, 1.

¹⁴³ *Satire* vii, 213-5, 240-1.

¹⁴⁴ Plutarch: *Brutus*, 9.

and exhortation."¹⁴⁵ At Rome, too, some could rule by milder measures. Gniphio was known for kindness and good nature. Verrius Flaccus used prizes as encouragement.¹⁴⁶ Quintilian disapproved of beating, as did Plutarch, con-



LABORA SEILIBUS QVOMODO EGOLABORAVI
FI PRODERITIBI

"GRIND ON, ASS, AS I HAVE DONE, AND MAY IT PROFIT YOU."

A BOY'S VIEW OF SCHOOL Palace of the Caesars
(From Paul Monroe's Slide Collection)

sidering it a "disgraceful form of punishment," "fit only for slaves," and "an insult." He blushes at "the shameful abuse which scoundrels sometimes make of their right to administer corporal punishment." A good disciplinarian should not have to depend on such methods, he thought.¹⁴⁷ But most teachers depended on harsh discipline, perhaps all the more because the contempt of Romans for foreigners must have been acquired early by their sons. The classical portrait of the Roman schoolmaster is that of "the flogger." "He who is not flogged is not educated" summed up pedagogical practice. Horace's dour Orbilius thrashed with rod and whip of leather.¹⁴⁸ Martial pillories the bawling, howling schoolmaster, whose "savagely howls and blows resound like thunder."¹⁴⁹ Martial would have the master rest his whip and rod until October.¹⁵⁰

¹⁴⁵ Walden: *op. cit.*, pp. 321 f., 324.

¹⁴⁶ Suetonius: *Grammarians*, 7, 17.

¹⁴⁷ Quintilian, 1, 3, 13-7; Plutarch: *The Education of Children*, 12.

¹⁴⁸ *Epistles*, 11, 1; Suetonius: *Grammarians*, 9.

¹⁴⁹ Bk. ix, 68; cf. Plautus: *The Two Bacchises*, 430 et seq.

¹⁵⁰ Bk. x, 62.

FROM PRIVATE TO IMPERIAL SUPPORT AND CONTROL

Carvilius is said to have been the first master to open an elementary school and teach for money.¹⁵¹ The school from which hostages were taken and brought back in chains by Caligula was, perhaps, of this kind.¹⁵² The pay of private teachers of letters, grammar, and rhetoric varied widely, but was commonly small and might be hard to collect.¹⁵³ Horace mentions centurions' sons, carrying "every Ides their fee of eight brass pieces [asses] each."¹⁵⁴ Every schoolboy worships Minerva "with a modest penny fee," says Juvenal.¹⁵⁵ Fees might be supplemented by gifts; some teachers taught for gifts alone. Gniphio received whatever his pupils offered. Some teachers died in misery. Pompilius Andronicus became poor and had to sell his book, *Criticisms of the Annals of Ennius*. Orbilius Pupillus had to live "under the tiles." Valerius Cato "could solve all questions," but "solvent could not be."¹⁵⁶ Juvenal bristles at the lot of teachers and literary folk. If one would earn a living by his tongue, he should go to Gaul or Africa. Juvenal remembers Quintilian, of course, but such a good fortune is "rarer than a white crow."¹⁵⁷ Even at Athens professors were "badly paid," though special privileges and allowances in kind improved their situation. Libanius, though he gave up charging fees for his own teaching, castigated both rich and poor students for failure to pay their teachers.¹⁵⁸

Though some teachers were poverty-stricken, others were highly rewarded, especially when grammar became popular and the city had numerous well-attended schools. Lucius Appuleius, hired by a wealthy equites to teach a large school, received four hundred sesterces a year.¹⁵⁹ Much depended on the patron, but the master's talent and reputation were important factors. Verrius Flaccus, famed for his method of stimulating pupils to work, became tutor at the Court of Augustus and received 100,000 sesterces a year. Palaemon, widely known for his Latin Grammar, made 400,000 sesterces a year from his school.¹⁶⁰ Sosibius, teacher of Britannicus, received 1,000,000 sesterces from Vitellius,¹⁶¹ but this tells nothing of regular fees.

Private venture schools were supplemented to some extent by others estab-

¹⁵¹ Plutarch: *Roman Questions*, 59.

¹⁵² Suetonius: *Caligula*, 45.

¹⁵³ Juvenal, vii, 228 et seq.

¹⁵⁴ *Satires*, i, 6; also read, "carrying their fee on the Ides of eight months."

¹⁵⁵ Juvenal, x, 114 et seq.

¹⁵⁶ Suetonius: *Grammarians*, 7-9, 11.

¹⁵⁷ Juvenal, vii, 148 et seq., 202.

¹⁵⁸ Walden: *op. cit.*, pp. 320 f.; Chapot: *Roman World*, p. 184.

¹⁵⁹ Suetonius: *Grammarians*, 3; Jullien: *op. cit.*, pp. 172 ff.; sesterce = $\frac{1}{4}$ denarius or $2\frac{1}{2}$ asses; the as weighed originally a pound (*libra*), later reduced to an ounce.

¹⁶⁰ Suetonius: *Grammarians*, 17, 23.

¹⁶¹ Tacitus: *Annals*, xi, 4.

lished through the influence of persons who sought to encourage education as a public good. Pliny proposed to help establish a school at his native Como, so that sons might be educated near home, under parental control and oversight, and at less cost. Such an institution, he believed, might become famous enough to draw students from a distance, if sufficient care were given to its management and the choice of masters. He, himself, though still without children, would pay one-third of any sum the town might raise for the support of such a school; and the larger the sum demanded, the better pleased he would be.¹⁶² Pliny's philanthropic proposal was probably not an isolated one.¹⁶³ Such schools, of course, did not make education public and free, in the commonly accepted meaning of to-day. There was neither compulsory education nor a system of schools supported by the state. Education had been and continued to be for the rich or well-to-do, not for the poor, though individual slaves and poor might in some cases be educated.¹⁶⁴

When support of schoolmasters was provided by heads of state, education assumed more of a public aspect. Governmental encouragement of education began near the end of the Republic, when Caesar conferred citizenship "on all teachers of the liberal arts," so as to draw them to the city.¹⁶⁵ Augustus paid Verrius Flaccus 100,000 sesterces to bring his school to the palace; when he drove foreigners from Rome, an exception was made on behalf of teachers and doctors.¹⁶⁶ Under one-man rule, education, like other phases of life, became more and more dependent on imperial will and public purse—in fact, a public philanthropy. Vespasian, though no pretender to learning, and despite his banishment of all philosophers except Musonius, established a salary of 100,000 sesterces (about \$5,000) for Greek and Latin rhetoricians, and relieved them and other learned folk of certain public duties. Quintilian was the first recipient; whether rhetoricians outside of Rome were thus paid is open to doubt.¹⁶⁷ Though these subsidies did not create a state "system" of education, they gave weighty support to a pattern of education which influenced Roman life throughout the Empire and, subsequently, western Europe.¹⁶⁸ Trajan built libraries, and was known as a "friend of learning in every department."¹⁶⁹ Hadrian developed the Athenaeum, subsidized teachers, endowed new chairs

¹⁶² *Letters*, iv, 13.

¹⁶³ Dill: *op. cit.*, p. 219.

¹⁶⁴ Rostovtzeff: *op. cit.*, p. 179; Wilkins: *op. cit.*, pp. 37 f.; Abbott: *Society and Politics in Ancient Rome*, pp. 173 f.; Johnston: *The Private Life of the Romans*, p. 92.

¹⁶⁵ Suetonius: *Julius*, 42; Mommsen: *op. cit.*, v, 453.

¹⁶⁶ Suetonius: *Grammarians*, 17; *Augustus*, 42.

¹⁶⁷ Suetonius: *Vespasian*, 18; *Dio*, lxxv, 12-3; Wilkins: *op. cit.*, pp. 93 f.; Walden: *op. cit.*, p. 81.

¹⁶⁸ Dill: *op. cit.*, p. 148.

¹⁶⁹ Aurelius Victor: *Roman Emperors*, 13, in Botsford's *The Story of Rome*, pp. 288 f.; *Dio*, lxxviii, 16.

of learning in the provinces, and made grants to municipal schools. At the request of Plotina he removed the restrictions which required heads of philosophical schools at Athens to be Roman citizens. His fondness of learning, Greek as well as Latin, earned him the title "Greekling."¹⁷⁰

Though imperial favor encouraged learning, it made the learned dependent on royal will. Teachers whom Hadrian thought "unfit for their profession" were given gifts and "then dismissed."¹⁷¹ Antoninus Pius founded an institution for destitute girls, *Faustinianae*, similar to those for poor children begun by Nerva and Trajan.¹⁷² "Rhetoricians and philosophers throughout all the provinces" were rewarded "with honours and money."¹⁷³ The number of sophists and grammarians was fixed according to the size of cities: in capital cities, five of each; in large cities, four of each; and in smaller cities, three. Under certain circumstances the number might be diminished, but not increased. Salaries were to be paid apparently by the municipalities, but if they were unable to do so, the imperial treasury was to supply the need.¹⁷⁴ Marcus Antoninus extended the work of Antoninus Pius, "established teachers at Athens in every branch of knowledge," and granted them annual salaries.¹⁷⁵ Several chairs were endowed, one or perhaps two, in each of the schools, Platonic, Peripatetic, Stoic, and Epicurean.¹⁷⁶ Theodotus, whom Marcus regarded as "a past master of political oratory and an ornament to rhetoric," was appointed to the chair of rhetoric at Athens at a salary of ten thousand drachmas.

Alexander Severus (222-235), broadening previous imperial policy somewhat, subsidized rhetoricians, grammarians, physicians, astrologers, engineers, and architects, "assigned lecture-rooms," and even "ordered rations" for free-born pupils who were poor.¹⁷⁷ Royal munificence soon ran into difficulties, however; following Alexander Severus, the fortunes of teachers declined for a time, and state support appears to have been cut off.¹⁷⁸ Diocletian brought a degree of improvement, accompanied by stricter regimentation. Monthly fees for various classes of teachers were fixed by decree: 50 *denarii* for each pupil of the *litterator*; 200 per pupil of a *grammaticus*; and 250 for pupils of rhetoricians.¹⁷⁹ Constantine's edicts (321, 326, and 333) continued the policy of granting privileges and salaries to public teachers and physicians: the law of 333 included their wives and sons as well; salaries and fees were to be paid;

¹⁷⁰ Spartianus: *Hadrian*, 1, 14; Dio, LXIX, 3; Walden: *op. cit.*, pp. 84 f.

¹⁷¹ Spartianus: *Hadrian*, 16.

¹⁷² Capitolinus: *Antoninus Pius*, 8; Dio, LXVIII, 5.

¹⁷³ Capitolinus: *Antoninus Pius*, 11.

¹⁷⁴ Walden: *op. cit.*, pp. 87 ff.

¹⁷⁵ Dio, LXXII, 31.

¹⁷⁶ Philostratus: *Lives of the Sophists*, II, 1; Walden: *op. cit.*, p. 92.

¹⁷⁷ Lampridius: *Severus Alexander*, 44.

¹⁷⁸ Walden: *op. cit.*, p. 105.

¹⁷⁹ Sandys: *op. cit.*, p. 231.

moreover, they were to be immune from all taxes, performance of civil duties, having strangers quartered upon them, legal processes, or any injustice. Anyone who molested them was to be punished by the judge.¹⁸⁰

Julian (363) asserted the prerogative of supervising the naming of professors¹⁸¹—a matter of importance to one seeking to restore paganism. His action, forbidding Christians to teach rhetoric and literature, was considered obnoxious by some pagans as well as Christians. Ammianus thought it was “inhumane” and should be “buried in eternal silence.”¹⁸² Though ineffectual, the decree was in harmony with the growing tendency toward strict imperial control of teaching. In 376 Gratian decreed the salaries that were to be paid by towns, but left localities free to make their own appointments. Fifty years later (425), Theodosius and Valentinian forbade the opening of schools without governmental permission. In 529 Justinian issued an edict that no one should teach philosophy or law at Athens and specified that law should only be taught at Rome, New Rome, and Berytos.¹⁸³

¹⁸⁰ Cubberley: *Readings in the History of Education*, p. 39.

¹⁸¹ Dill: *Roman Society in the Last Century of the Western Empire*, p. 401.

¹⁸² Ammianus Marcellinus, xxii, 10, 6.

¹⁸³ Procopius: *The Anecdota or Secret History*, xxvi, 1-7; Sandys: *op. cit.*, p. 236; Grasseberger: *op. cit.*, iii, 461.

POLITICS, SCHOOLS, AND THE REPUBLIC OF LETTERS

THE ORATOR AS IDEAL

The influx of Greek letters combined with the growth of Latin to effect a transformation in the Roman educational ideal. By 150 B.C. most Romans of the educated class were bilingual, and the earlier apprenticeship to farming, the army, and the court gave way to eloquence cultivated in schools. Cicero placed success won by intellect and "reasoning power" above that derived from physical excellence. Duty which is serviceable to society is preferred; and "well-directed action" always depends on "knowledge and prudence." Knowledge is "solitary and barren," if not joined with "service to mankind."¹ Thus, though letters were to occupy a central place in Roman education, the ideal of service to society was not to suffer. Plato convinced Cicero that those who rule should devote themselves to learning so that the state may be better governed; but studies should not encroach upon "public interest." Cicero knows that many hold literature in low esteem and think philosophical discussions unbecoming to statesmen, but he needs no further argument in favor of letters than that Cato studied Greek late in life and Publius Africanus took Panaetius the Stoic on his embassy to Egypt and Asia. Indeed, the Greeks by their learning "have rescued us from barbarism"; and we ought to be "willing exponents" of what we have gained from them.²

The combination of learning and statecraft became a phenomenon of marked importance, a phase of the individualism of the age. "When our empire over all nations was established," said Cicero, there was scarcely a youth, "ambitious of praise," who did not strive to learn the art of speaking.³ Aemilius

¹ Cicero: *Offices*, I, 44-5.

² Cicero: *Letters to His Brother Quintus*, I, 1, 9-10; *Academica*, II, 2.

³ *On Oratory*, I, 4, 8-10; Fowler: *Social Life at Rome in the Age of Cicero*, pp. 100 f.

Paulus, famed for military exploits, was a devotee of Greek learning; Sulla was well read in Greek and Latin; Brutus knew Greek philosophy well, and was particularly devoted to Plato.⁴ Sallust, though of Plebeian origin, had a good education under Ateius Philologus, served as tribune, became quaestor, and entered the Senate.⁵ Cicero and Caesar best exemplified the union of statecraft and attainments in the world of letters in the new age. Caesar studied under Apollonius at Rhodes, as did Cicero, and had the "greatest natural talent for political oratory," but he renounced first rank therein for sake of his career as commander and statesman. Cicero, though he early gave promise of being the best orator and felt that he could "with a certain degree of right" claim pre-eminence therein, asks: Whom, even of those who have given themselves wholly to oratory, can one rank above Caesar? ⁶

Imperial heads of state, even bad ones, had excellent literary training, and some of them were distinguished for learning. Augustus devoted himself to oratory and liberal studies, gave personal attention to his grandsons' education, wrote many works in prose, attempted poetry and tragedy, and established libraries.⁷ Tiberius was a constant visitor at the lecture halls of philosophers; Caligula gave attention to oratory; Nero's education was entrusted to Seneca about the age of eleven.⁸ Vespasian, though of obscure birth, knew Homer, and initiated imperial subsidies to teachers; Hadrian was interested in Greek and Latin letters and also in modeling and painting.⁹ Antoninus Pius was "a singularly gifted speaker and an elegant scholar."¹⁰ Marcus Aurelius was instructed in rhetoric by Fronto and Herodes, in philosophy by Rusticus and Apollonius. At the age of twelve he is said to have imitated the dress of philosophers and their ascetic mode of life.¹¹ Severus was schooled in Greek and Latin, studied at Athens when already in public life, and habitually engaged in discussions in Greek and Latin.¹² Antoninus, his successor, was educated by him and studied philosophy after he became emperor, but later "forgot his intellectual training."¹³ Severus Alexander was thoroughly trained in grammar, rhetoric, and philosophy, but used Greek better than Latin in orations. He was also accomplished in painting and music. Plato's *Republic*, Cicero's *Offices* and political treatises, Virgil, and Horace were his favorites.¹⁴

⁴ Plutarch: *Aemilius Paulus*, 6; *Brutus*, 2, 4; Sallust: *War with Jugurtha*, 95.

⁵ Suetonius: *Grammarians*, 10; Rolfe: *Sallust*, pp. ix et seq.

⁶ Suetonius: *Julius*, 55; Cicero: *Brutus*, 261; *Offices*, 1, 1; Plutarch: *Cicero*, 2; *Caesar*, 3.

⁷ Suetonius: *Augustus*, 29, 64, 84-5.

⁸ Suetonius: *Tiberius*, 11; *Caligula*, 53; *Nero*, 7; *Dio's Roman History*, I.XI, 32.

⁹ Suetonius: *Vespasian*, 2, 18, 23; *Dio*, LXIX, 3.

¹⁰ Capitolinus: *Antoninus Pius*, 2, 11.

¹¹ Capitolinus: *Marcus Antoninus*, 1-3; *Marcus Aurelius: The Meditations of the Emperor*, 1, 1-7; *Dio*, LXXII, 35-6.

¹² Spartianus: *Severus*, 1, 3; *Dio*, LXXVII, 17.

¹³ *Dio*, LXXVIII, 11.

¹⁴ Lampridius: *Severus Alexander*, 3, 27, 30-1.

At his best the orator was the fittest symbol of the new ideal. What was his natural character, what his learning? Dio thought Caesar embodied the ideal, for he combined "wonderful natural force" with "the most liberal education," which enabled him to understand readily, decide promptly, and arrange matters "most prudently."¹⁵ Cicero's *De Oratore* (55 B.C.) expounded his conception of the ideal orator and education. This extensive treatise shows that Cato the Elder's definition of the orator—a "good man versed in speaking"—had been considerably expanded. It is significant of the change that was taking place that Cato regarded agriculture, war, oratory, law, and medicine as the proper fields of education, whereas Varro included grammar, rhetoric, dialectic, arithmetic, geometry, astronomy, music, architecture, and medicine.¹⁶ The art of eloquence, Cicero says, is more vast and difficult and depends on more sciences than people imagine. There are many students and an abundance of masters, yet very few orators have been produced; the reason lies in the "incredible magnitude and difficulty" of oratory. In other arts less is required. The orator must have a logician's acuteness, a philosopher's wisdom, almost a poet's gift of language, an advocate's memory, a tragedian's voice, and the gestures of almost the best actor. They are good speakers who can express themselves accurately and perspicuously before a moderate audience; but he alone is eloquent who can admirably and nobly "amplify and adorn" any subject and know all the principles of oratory. Romans have been too busy in the forum and running for office to attain this high ideal; but Cicero judges the capacities of his countrymen such that the time may come when, with more leisure and devotion to study, a truly eloquent orator may appear.¹⁷

Cicero holds that "nature and genius" contribute most to speaking, for there must be natural acuteness in invention, retentive memory, ability to explain and adorn, good voice, strength of lungs, quickness of tongue, and a certain harmony of countenance and body. If one is not quick to learn, he can never thoroughly learn anything. One is improved by education, certainly, but those who are hesitant in speech, lack harmony of voice, and are awkward in bodily movements, can never rank amongst accomplished speakers. Those who lack certain natural endowments may achieve some honor and popularity; but the complete orator must be free from every fault, for he is to be the "high-priest" of the profession. Modesty and an inclination to embarrassment and timidity when beginning to speak are not improper or disadvantageous to the orator. Indeed, the better a man is qualified for speaking, the more he understands its difficulties and is likely to grow pale and tremble as he first begins to speak.¹⁸

¹⁵ Bk. XLIV, 38.

¹⁶ Sandys: *Companion to Latin Studies*, p. 229.

¹⁷ *On Oratory*, I, 5, 21, 28.

¹⁸ *Ibid.*, I, 25-6, 46; III, 36.

The necessity for such a plentitude of natural gifts is obvious when one considers that the true orator's domain is vast, including everything relating to intercourse between citizens, the affairs of mankind in general, public administration, all civil matters, natural and moral laws, which he must be able to deal with judiciously in his pleading, though he may not know them as philosophers do.¹⁹

Oratory is divided into five parts: knowing what to say; arrangement of material; choice of language; fixing everything in the memory; and a dignified, graceful delivery. Before the main subject is touched upon, the audience should be prepared by an exordium; the case should then be stated clearly; the controverted point should be established; one's position should be proved, the adversary's refuted; and, in conclusion, everything favorable to one's cause should be amplified and reinforced, while all favorable to the opposition should be proved weak or invalid.²⁰ Successful speaking, according to Antonius, rests upon three things: proof of the facts stated; conciliation of one's hearers; and evocation in them of "whatever feeling our cause may require." The feelings on which the orator plays are love, hatred, anger, envy, pity, hope, joy, fear, and anxiety. Humor and jesting, important assets in speaking, "cannot be taught by any rules."²¹ Since the orator weighs matters in the balance of "popular opinion," whereas philosophers require the goldsmith's scales, his highest attainment depends, in part, upon having a numerous audience.²² His language should be pure, correct Latin, intelligible, perspicuous, graceful, and suited to the subject.²³

Men do not become good speakers merely by speaking; indeed, "by speaking badly" they surely become bad speakers. To speak well it is necessary to write much. Writing is the best "teacher of oratory," for what is carefully considered, reduced to the best form and arrangement, and expressed in choicest language, will bring greatest applause when delivered. Even though one be compelled to speak at a moment's notice, what he says will retain something of the character of that which was previously written—will be better than if it had never been written. The imitation of excellent models is of first-rate importance.²⁴

The true orator's preparation must be broad, for there is no "pursuit of greater difficulty" or one that requires more learning. He must study the use of voice, breath, tongue, and indeed the whole body. Actors as well as orators are to be studied, to put one on guard against awkward habits. The memory, if naturally strong, can be improved by exercise; and certain treatises thereon are

¹⁹ *Ibid.*, II, 16.

²⁰ *Ibid.*, I, 31; II, 19.

²¹ *Ibid.*, II, 27, 51, 56, 60.

²² *Ibid.*, II, 38, 83.

²³ *Ibid.*, I, 32; III, 12-4.

²⁴ *Ibid.*, I, 33; II, 22.

recommended. If nature has given nothing, however, it cannot be called forth by practice.²⁵

Studies are numerous, since "no man can be an orator possessed of every praiseworthy accomplishment" unless he knows everything important and "all liberal arts."²⁶ Poets, historians, writers, and teachers of all liberal arts and sciences must be read and used in all sorts of exercises, including praise, interpretation, correction, censure, and refutation. One must argue both sides of every question. Civil law, law in general, Senate usages, Roman government, rights of Roman allies, treaties, conventions—everything pertaining to the state and all antiquity must be known. Roman civil law "is indispensable to those who would become accomplished orators," for, in Cicero's judgment, "all civil law, except our own," is "undigested," "almost ridiculous."²⁷ An intellectual grace, distilled from all kinds of refinements, should season every oration. Though knowledge of the reason and nature of all things is necessary for the greatest eloquence, understanding is not all-sufficient. Issue is taken with Socrates' doctrine that "*all men are sufficiently eloquent in that which they understand.*" Though plausible, it is not sound. No matter how perfectly a man understands a subject, if he does not know how to polish his expression, he cannot speak eloquently about it.²⁸

The relation of learning to life is carefully considered. The attainment of great knowledge is difficult, and there is danger that extensive studies may draw one away from practice in speaking before the people and in the forum. Language and learning suited to the "tumults of the city and forum" are wanted, rather than that which is "florid" and "adapted for parade" in schools. The orator's "highest power" lies in stirring men's minds to anger, hatred, grief, or in leading them from these emotions to gentleness and pity; to do these things he needs a thorough knowledge of "the nature of mankind," "the passions of humanity," and those forces which impel or restrain men's minds. To investigate these arcana is the philosophers' province, but what they discover belongs to oratory, whose practical business is to sway the mind and feelings.²⁹ The distinction between him that uses knowledge and him that seeks to discover it is important: ". . . all arts are handled in one manner by those who apply them to practice; in another by those who, taking delight in treating of the arts themselves, never intend to do anything else during the whole course of their lives."³⁰

²⁵ *Ibid.*, I, 34; II, 87-8; III, 22.

²⁶ *Ibid.*, I, 6.

²⁷ *Ibid.*, I, 44.

²⁸ *Ibid.*, I, 14, 18, 34.

²⁹ *Ibid.*, I, 12-3, 18.

³⁰ *Ibid.*, III, 23.

Cicero's ideal of liberal education is embodied in the complete orator—one well endowed by nature, enlarged by learning, and capable of using his natural talent and acquired learning effectively in public affairs. The true orator is more than a literary prodigy produced by grammarians; more than a glib speech-maker turned out by rhetoricians. Pericles was not taught "to bawl for hours by the water-clock." The "grandeur of the sciences" is diminished by "the distribution and separation of their parts,"³¹ i.e., by that specialization which knows nothing beyond its own borders. The complete orator is more than the philosopher. In a graceful figure Cicero suggests that learning flowed from a common eminence (Socrates) in two directions, like rivers from the Apennine divide; philosophers went, as it were, into the Ionian sea, and orators into barbarian, Tuscan waters, full of "rocks and dangers," wherein even Ulysses lost his way. The two must be united: if anyone would "call that philosopher, who instructs us fully in things and words, an orator," there is no objection; again, if anyone prefers to consider the orator, who has "wisdom united with eloquence, a philosopher," there is no reason to quarrel about the name.³²

After examining several schools of philosophy Cicero comes to judgment. The Epicurean, though it appears true to some, is unsuitable to the orator,³³ who must be a leader in government. Since Epicureans deny the propriety of a wise man's devoting himself to public affairs, let them retire to the gardens for their own pleasure. The Stoics, too, are dismissed; for to speak after their manner and accept their notions of good, evil, honor, ignominy, rewards, and punishments would prevent the orator from carrying through any public business by speaking.³⁴ Though these offer no fit pattern, there is some truth in their systems, and the true orator cannot avoid philosophy. Should statesmen debate property rights in the child of a hired female slave and let questions pertaining to the whole conduct of man lie neglected? ³⁵ If one be satisfied with modest eloquence, merely enough legal knowledge to see a case through the courts, and the ready rules of rhetoric masters, the would-be orator is reduced to a small domain indeed; but, if one would emulate Pericles or Demosthenes, he must have the powers of Carneades or of Aristotle.³⁶

Quintilian (c. 35-95), educated under the grammarian Palaemon and the rhetorician Domitius Afer, viewed the ideal orator as the embodiment of a liberal education. Though he had served in the courts and gained consular rank, the erudite character of his treatise on oratory suggests the schoolroom

³¹ *Ibid.*, III, 33-4.

³² *Ibid.*, III, 19, 35.

³³ Cicero: *De Finibus Bonorum et Malorum*, II, 22.

³⁴ Cicero: *On Oratory*, III, 18.

³⁵ Cicero: *De Finibus*, I, 4.

³⁶ Cicero: *On Oratory*, III, 19, 21.

and the study more than the forum. Quintilian acknowledged³⁷ that he devoted a vast amount of research to a practically unlimited field.

Oratory is already in decay, as Quintilian's lost work, *De Causis Corruptae Eloquentiae*, suggests. The *Institutio* blames the grammarians and rhetoricians, who do not adhere to their proper spheres. Besides this trespass there are numerous other ills. The earliest stages of education are too commonly taken for granted. Flogging is general, but it is disgraceful, fit only for slaves. Immorality of masters must have been common, considering Quintilian's injunction to be on guard against it. Pupils applaud each other effusively and are spiteful toward teachers who fail to praise their efforts. There is too much bellowing "with uplifted hand," which appeals to the "dingier" part of an audience, but does not reflect a proper education of the speaker.³⁸ There is much pedantic insistence on minutiae, and too much attention to such matters makes "mincemeat of the mind." Such tiresome pedantry arouses Quintilian's ire; and he is depressed when the thought strikes him that his readers may find him pedantic too. His book is heavy, technical; he fears it will be a bitter dose for his readers! The task is laborious, even to himself; but he steers "straight on," inspired by his patron Prince and the importance of doing a piece of work more thorough than any yet attempted.³⁹

Though oratory is more remote from the scene of struggle than it was in Cato's and Cicero's times, the ideal remains the same: the man of action. Oratory has revived courage and spurred on the soldier. The "art of rhetoric" "is realised in action." It aims to persuade to right action; if courts, senate, and assembly were filled with philosophers, there would be small need of eloquence.⁴⁰ "The man who can really play his part as a citizen and is capable of meeting the demands both of public and private business, the man who can guide a state by his counsels, give it a firm basis by his legislation and purge its vices by his decisions as a judge, is assuredly no other than the orator of our quest."⁴¹

The aim of education is to develop the perfect orator; nature and training must be joined, to that end.⁴² The orator must first of all be a good man, endowed with unusual gifts for speaking. Individual capacities vary, and all men profit to some extent by education; but rules are futile unless there is natural talent. Good voice, power of lungs, health, endurance, and grace are neces-

³⁷ *The Institutio Oratoria*, II, 12, 12.

³⁸ *Ibid.*, I, preface; 3, 13 et seq.; II, 1, 1-6; 2, 1-5, 9-13; 12, 9-10.

³⁹ *Ibid.*, I, 5, 14; 7, 33; II, 17, 24; III, 1, 5; IV, preface; XII, preface.

⁴⁰ *Ibid.*, II, 16, 7-8; 17, 25, and 28.

⁴¹ *Ibid.*, I, preface, 10. Quintilian's *Institutio*, trans. by H. E. Butler. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁴² *Ibid.*, II, 19, 1-3; XII, 1, 19.

sary and can be improved; if lacking, study cannot make up the deficit.⁴³ A good memory and powers of imitation are among the surest indications of educability. Play, too, is nature's index of a "lively disposition" and should be reasonably encouraged.⁴⁴ The good teacher will judge the natural bent of his pupils, even as a competent gymnast judges the types of contests for which a boy should be trained. Youth should exhibit a tendency to a profusion of capacities. It is easier to prune away excess than develop what is barren.⁴⁵

The minutiae of oratory are multitudinous; though the origin of rhetoric lay in nature, experience and education have developed it to a high degree. The parents should both be educated as highly as possible; the nurse should be of good character, speak correctly and, ideally, should be a philosopher. The *paedagogus* ought also to be educated; if not, he should be cognizant of his lack. The child should begin to learn as soon as he begins to speak.⁴⁶ Public schooling is preferred to that of the household, for the disadvantages of a private tutor outweigh those of public tuition. Private learning is that of a hermit; in a larger circle youths learn from others and face conditions more nearly like those that will confront them in public life.⁴⁷

After careful initiation in reading and writing, boys should go to grammar school, beginning with the Greek first.⁴⁸ This was a general practice. Echion's son makes "a hole in his Greek" and then begins to "relish Latin."⁴⁹ All kinds of writers are to be studied for a knowledge of words. One should read the best authors from the first, rather than select inferior ones because they are easier. From among the best, the simpler would come first; and passages should be memorized to improve style and vocabulary.⁵⁰ Music, astronomy, and philosophy must have a place, in so far as they are necessary to understand literary allusions.⁵¹ Besides speaking and learning to interpret authors, youths should have some practice in writing paraphrases, moral essays, and character sketches on themes taken from their reading, before they go to the rhetoric master.⁵² The Greek cycle of studies is approved; hence, geometry has a place. Quintilian uses the term in an inclusive sense, comprising arithmetic and astronomy. It has practical values, since the orator must speak on all subjects; as a discipline of the mind it sharpens the wits and cultivates the powers of percep-

⁴³ *Ibid.*, I, preface, 9, 26-7; I, 1, 1-3.

⁴⁴ *Ibid.*, I, 3, 1-3, 10-1.

⁴⁵ *Ibid.*, II, 4, 6-8; 8, 1-5.

⁴⁶ *Ibid.*, I, 1, 4-8, 15-9; 10, 4; III, 2, 1.

⁴⁷ *Ibid.*, I, 2.

⁴⁸ *Ibid.*, I, 4, 1.

⁴⁹ Petronius: *Satyricon*, 46.

⁵⁰ Quintilian, II, 5, 18-20; 7, 2-4.

⁵¹ *Ibid.*, I, 4, 4.

⁵² *Ibid.*, I, 9.

tion.⁵³ Music is to be included, but not "modern music," which is effeminate; the actor's art will also contribute to the future orator's delivery, but one must borrow with care.⁵⁴ Though Quintilian is disgusted by the mad devotion "to the cultivation of the body" that is so prevalent, he finds instruction in the gymnast's art and favors some use of physical training, since it can improve poise and develop ease of movement. Dancing should be employed (not too extensively), for it contributes to graceful bearing.⁵⁵

After the solid, fundamental arts of the grammar school, the boy is ready for the rhetoric master. The five parts of oratory—"invention, arrangement, expression, memory, and delivery or action"⁵⁶—receive extensive treatment. No slight detail is overlooked: even the orator's haircut and toga are touched upon; ⁵⁷ all knowledge should be pursued, and there would be plenty of time, if so much were not wasted on ceremonial calls, idle talk, attending shows, running from place to place, drinking, feasting, and striving after physical cultivation. Besides literature and technical aspects of rhetoric, civil law, morals, religion,⁵⁸ acquaintance with the noblest deeds and sayings of the past, and philosophy are necessary. The ideal orator should be qualified to claim the "genuine title" of philosopher, for the principles of philosophy properly belong to oratory, though they come from philosophers. Philosophy and oratory are so united, in practice and theory, that Cicero thought they might be found in the same man. Though the orator is nourished upon philosophy, Quintilian holds it unnecessary that he should be bound to any one school.⁵⁹ Notwithstanding the extensiveness of the field, Quintilian hopes none will be appalled at the burden and abandon hope. One should remember that man's mind has astonishing power and capacity for the execution of our desires. If one but rises "to the height of this conception," the way will be found not "impassable or even hard."⁶⁰ Such a man in whom nature, study, and practice have been combined will have the greatest facility in speaking, and will be ever ready for action: "He stands armed for battle, ever ready for the fray, and his eloquence will no more fail him in the courts than speech will fail him in domestic affairs and the daily concerns of life: and he will never shirk his burden for fear of failing to find words, provided he has time to study his case: for all other knowledge will always be his at command."⁶¹

⁵³ *Ibid.*, I, 10, 34-49.

⁵⁴ *Ibid.*, I, 10, 31; II, 1-14.

⁵⁵ *Ibid.*, I, 11, 15-9; II, 8, 7 and 15; XII, 11, 18.

⁵⁶ *Ibid.*, III, 3, 1; *supra*, p. 599.

⁵⁷ *Ibid.*, XII, 10, 47.

⁵⁸ *Ibid.*, XII, 3.

⁵⁹ *Ibid.*, I, preface, 11, 13, 18; XII, 2, 4-10, 26-7.

⁶⁰ *Ibid.*, XII, 11, 9-11.

⁶¹ *Ibid.*, XII, 9, 21. Quintilian's *Institutio*, trans. by H. E. Butler. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

Tacitus' reference to the general, who was so surprised by an assault that he was unable to address his troops or marshal them into line,⁶² suggests the old ideal of eloquence joined with action—an ideal that was honored more in word than in deed, however, after the first century B.C. The discrepancy between the eloquence of the forum and camp and that of the rhetoric school had been noted by Cicero.⁶³ As zeal for scholastic learning increased, the discrepancy grew greater, and the sturdier eloquence disappeared; literature, too, was deeply affected. The central theme of Tacitus' *Dialogus* is the decadence of oratory and the causes of this decay. The art of the rhetoric school came to be used "utterly without discretion" and was detrimental to state and individual.⁶⁴ Its chief use was to enable one to win fame as a lawyer in the criminal court. The "venal oratory" of the delator in the days of Nero brought men rich fees.⁶⁵ Cicero found Atticus' letters "sprinkled with the salt of refinement," in the phrase of the rhetoric school.⁶⁶ Ingenuity and refinement became the goal of the rhetoric master and public speaker. Romans were intoxicated by oratory; to be praised for eloquence was ardently desired. Pliny, writing to Arrianus about the trial of Marius Priscus which had called forth much good oratory, reported joyously that he had spoken nearly five hours, and the applause he received was equal to his fears experienced at the beginning of the speech.⁶⁷ Pleading had degenerated, however; youth rushed to the courts uninvited or uninvited, and, to get applause, were ready to pay flattering clappers so much per head. Under such conditions, says Pliny, "he that has the loudest commendations is the worst orator."⁶⁸

Divorced from life, speaking became an end in itself; the art of the orator became a popular form of entertainment. Merely to have heard a man speak became a matter of pride. Pliny had heard of Isaeus' coming to town, the advance accounts of his prowess, but reality outran report. Isaeus had the greatest "facility and copiousness," used "genuine Attic," let his audience select the subject, handled every point almost equally readily, and gave to his extemporaneous addresses the elegance of elaborate, finished compositions. Pliny regarded him as the "most eloquent" and "most happy" of mortals, and urged Nepos to come to Rome for the pleasure of hearing him and being able to say that he had heard him.⁶⁹

⁶² *Histories*, IV, 33.

⁶³ *On Oratory*, I, 18.

⁶⁴ Fowler: *op. cit.*, p. 196.

⁶⁵ *Ibid.*, p. 173; Dill: *Roman Society from Nero to Marcus Aurelius*, pp. 35 f.

⁶⁶ *Letters to Atticus*, I, 13.

⁶⁷ *Letters*, II, 11.

⁶⁸ *Ibid.*, II, 14.

⁶⁹ *Ibid.*, II, 3.

DIVORCE OF LIBERAL ARTS FROM LIFE

Economic and social divisions colored the conception of liberal education. Romans were conditioned by the existence of a slave class and a master class. Liberal studies were those worthy of a free man, which fitted him to perform the duties of his station. But wealth determined the extent of a free man's education; it supported leisure, without which extensive education was impossible. Without leisure one was not genuinely free. "He does not seem to me to be a free man," says Cicero, "who does not sometimes *do nothing*." ⁷⁰ Men of wealth, such as Cicero, Quintilian, and others of their class, found it easy and natural to believe that liberal studies should not aim at money-making. They were economically secure; free to cultivate the arts of the mind in leisure. The taking of fees was a difficult question for Quintilian: the noblest thing for the orator would be to defend clients without regard to fees; but he may be rewarded, since one good turn deserves another.⁷¹ For him whose economic status makes fees imperative, they are permissible; but they should be moderate—just enough to suffice for one's needs.

The conception of liberal education varied as Rome changed from a provincial to a cosmopolitan state; for when the Republic gave way to one-man rule, the political arena no longer offered a wide field to Roman citizens. Though in theory Cicero and Quintilian could combine the philosopher and orator in one man, Roman preference was for the man of action. Cicero was able to lose himself in study only after the arena of political action was closed to him, when there was "nothing else in which to find repose." ⁷² The divorce of liberal arts from life became more and more complete as public service through the agencies of self-government declined. Quintilian drew the orator as a fighting, public leader, yet his portrait was not of reality but an ideal, and he must constantly turn to Cicero's age to find anyone like the masterful figure he would conjure up. Under such conditions liberal studies became ends in themselves, a means to personal satisfaction; philosophy, a personal guide to virtue rather than a light to statecraft, as Plato and Aristotle had conceived it. Philosophers fixed their gaze on the distant goal of virtue; the outlines of the intermediate way-stations on the road grew dim and ultimately were obscured to view.

Asked to clarify his views on liberal studies, Seneca first defined them negatively: no study is to be included among the good which results in money-making. " 'Liberal studies' are so called . . . because they are studies worthy

⁷⁰ *On Oratory*, II, 6.

⁷¹ *Bk. XII*, 7, 8–12.

⁷² Cicero: *Letters to His Friends*, IV, 3 and 4; *To Atticus*, IV, 18; Plutarch: *Cicero*, 40.

of a free-born gentleman. But there is only one really liberal study,—that which gives a man his liberty. It is the study of wisdom, and that is lofty, brave, and great-souled. All other studies are puny and puerile.”⁷³ The scholar, engrossed with details of language, poetry, history, falls short of liberal education: for what does “pronouncing syllables, investigating words, memorizing plays, or making rules for the scansion of poetry” have to do with eliminating fear, desire, or controlling passion? ⁷⁴ Just as it is not the part of liberal education to discover whether Homer or Hesiod was the older poet, or to know whether Penelope was a “pattern of purity,” so too a knowledge of treble and bass, the rules of arithmetic and geometry, the distances of the stars, a knowledge of painting, wrestling, and the like are not liberal. Seneca is surfeited with books; the reading of many leads to distraction, cloyes the mind as numerous dishes do the appetite. One should read and reread “standard authors.”⁷⁵ Without philosophy the body is sickly; even though it be strong, its strength is that of a madman.⁷⁶ It is possible to gain wisdom without so-called liberal studies—grammar, music, geometry, arithmetic, astronomy, rhetoric, logic—for though virtue must be learned, “it is not learned by means of these studies.”⁷⁷ Such studies contribute much to our welfare in some respects, but “nothing at all as regards virtue.” Seneca grants, however, that they “prepare the soul for the reception of virtue.”⁷⁸ Those studies alone are really “liberal,” or more truly called “free,” whose “concern is virtue.”⁷⁹ The studies of philosophers, who have descended to hair-splitting niceties and knowledge of “non-knowledge,” fall short of being liberal. Zeno of Elea asserts that nothing exists, and so ends all difficulties! “You may sweep all these theories in with the superfluous troops of ‘liberal’ studies; the one class of men give me a knowledge that will be of no use to me, the other class do away with any hope of attaining knowledge.”⁸⁰

GROWTH AND ATROPHY OF LETTERS

Greece made Rome a Republic of Letters. Nevertheless, in Horace’s day, there still lingered “traces of the farmyard.”⁸¹ The transformation began significantly in the third century B.C., when classical meters gradually supplanted the rough Saturnian rhythm of native Latin. Thenceforward, for cen-

⁷³ Epistle LXXXVIII, 1–2. Seneca, *Epistulae Morales*, trans. by R. M. Gummere. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁷⁴ *Ibid.*, 3–4.

⁷⁵ Epistle II.

⁷⁶ Epistle xv.

⁷⁷ Epistle LXXXVIII, 32.

⁷⁸ *Ibid.*, 20.

⁷⁹ *Ibid.*, 23.

⁸⁰ *Ibid.*, 44–5. Seneca, *Epistulae Morales*, trans. by R. M. Gummere. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁸¹ Epistles, II, 1.

turies, there was "little or no trace of truly native poetry."⁸² Greece furnished textbooks and schoolmasters. From Andronicus' arrival at Rome (c. 272 B.C.) to the time of Augustus, Latin literature was like a child dependent on its mother. Translations and paraphrases from the Greek of Homer, Menander, and others formed the best part of the growing Latin book-shelf. Ennius drew from Homer; Afranius, from Menander. Terence (c. 185 B.C.) imitated Menander and Apollodorus. Criticized for having combined "Greek plays and written few Latin ones," he made no denial and was unrepentant.⁸³ Cicero found the themes for *The Republic* and *The Laws* in Plato; he, too, defended borrowing, holding it a "patriotic service" merely to translate Plato and Aristotle, and thus bring them to the knowledge of his countrymen, "as our poets have done with the plays."⁸⁴ Rome's borrowings were not in vain. If Virgil's indebtedness is truly "astonishing," he made the materials his own, by virtue of "graceful fitness in use," in an epic portrayal of a great nation's rise to power.⁸⁵ Perhaps in one field alone, as Quintilian implied, the Romans could properly claim originality. Horace, Juvenal, Persius, Seneca, and Petronius are sufficient warrant of their attainments in the realm of satire. Theirs was a natural talent for it, and times were propitious. Others might have said with Juvenal, "It is hard not to write satire."

In consequence of this cultural exchange, Latin developed and soon claimed equality with Greek as a world language.⁸⁶ Ovid recommended the two tongues, even for the art of love!⁸⁷ Varro (116-27 B.C.), like other literary folk, was much indebted to Greek authorities, but "preferred to derive Latin words from Latin sources, rather than to refer practically all to Greek origins."⁸⁸ The sense of nationality and independence toward foreign sources increased in Roman letters during the age of Augustus and was strong throughout the first century. Ultimately, however, the two cultures fused and the purely Roman element became less and less evident, till it was difficult to say whether a writer was more Greek or more Roman. Aulus Gellius (c. 130-180) represents "the all but complete fusion."⁸⁹ The union, of course, was never perfect. Rome became the center of a bilingual culture and swayed the nations by her power, but was herself enthralled. Marcus Aurelius ruled Rome: but his mind was ruled by Athens.

From Andronicus to Fronto, tutor of Aurelius, the rôle of teachers in de-

⁸² Lawton: *Classical Latin Literature*, p. 19.

⁸³ Terence: *The Self-Tormentor*, prologue.

⁸⁴ Cicero: *De Finibus*, I, 2-3.

⁸⁵ Lawton: *op. cit.*, p. 174.

⁸⁶ Cary: *History of Rome*, p. 587.

⁸⁷ *Art of Love*, II, 117 et seq.

⁸⁸ Kent: *Varro On the Latin Language*, I, xi.

⁸⁹ Lawton: *op. cit.*, p. 311; Cary: *op. cit.*, p. 580.

veloping Latin language and literature was of paramount importance—by reason of their influence on pupils who became eminent authors, and through their own contributions. The first teachers were also poets. Gniphio wrote *On the Latin Language* and was a teacher of Cicero. Praconinus taught Varro, author of a treatise *On the Latin Language* and numerous other works on grammar. Palaemon, first among grammarians at Rome,⁹⁰ taught Quintilian, and he, in turn, had Pliny the Younger as a pupil. As author of the most complete treatise on oratory, Quintilian encouraged an “effort to revive a better rhetorical taste.”⁹¹

Marcus Cornelius Fronto, who gained renown as an authority on linguistic questions, well illustrates the extreme trend of education toward minute scholarship. Gellius saw him as the center of a learned circle, possessed of marvelous erudition in the precise meaning of words.⁹² A host of followers “imitated his methods in oratory and language”;⁹³ his fame was still bright in the days of Jerome. Some three hundred years after his time, Sidonius⁹⁴ remembered the Frontonian school. Fronto’s correspondence with Marcus Aurelius reveals a “scrupulous anxious care” in choosing words—especially the old, the unexpected word, one which requires searching and which, once found, admits of no substitute. Even the right syllable claims attention; and the order of words is a weighty matter. Bookishness and nicety of scholarship had become the hallmark of Roman education. The gulf between schools and swirling life had widened. It is significant that Fronto criticized even Cicero, the best pattern of eloquence in a man of action, because he was “far from disposed to search out words with especial care. . . .” Education of the Frontonian school was less for life than for letters; but if life suffered, the world of letters profited, for he left Latin “a freer and more plastic instrument” than it had been, and “by minute accuracy” in using words and “careful definition of their meaning,” “gave precision and clarity” to it.⁹⁵

Aemilius Paulus began the practice of transporting libraries to Rome, along with other booty of Eastern wars, in 167 B.C. Lueullus gathered many books together and made his house a place of welcome for Greeks at Rome. Sulla seized the treatises of Aristotle and Theophrastus in the library of Apellicon.⁹⁶ Caesar planned libraries of Greek and Latin works and set Varro to gathering and classifying them; two public libraries were established by Augustus.⁹⁷

⁹⁰ Suetonius: *Grammarians*, 1, 7, 23.

⁹¹ Lawton: *op. cit.*, p. 285.

⁹² *The Attic Nights*, II, 26.

⁹³ Haines: *The Correspondence of Marcus Cornelius Fronto*, I, xxvi, xl.

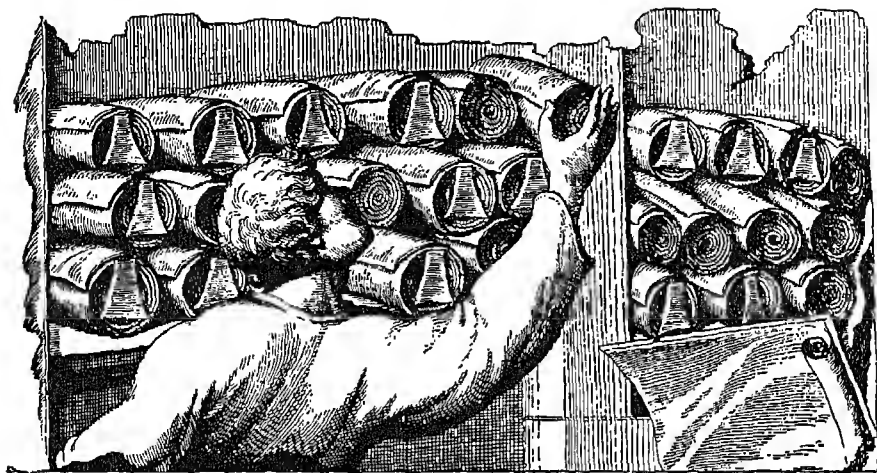
⁹⁴ *Letters*, I, 1.

⁹⁵ Fronto, I, xli, 5. Trans. by C. R. Haines, The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁹⁶ Plutarch: *Aemilius Paulus*, 28; *Lucillus*, 42; *Sulla*, 26.

⁹⁷ Suetonius: *Julius*, 44; *Augustus*, 29; *Dio*, XLIX, 43.

Domitian rehabilitated the libraries destroyed by fire, sought copies of lost works, and had scribes prepare new copies at Alexandria; Trajan also built libraries; in Hadrian's day there were twenty-nine public libraries in Rome,



ROLLS IN A ROMAN LIBRARY

(From J. W. Clark, *The Care of Books*, p. 35, Cambridge University Press)

besides smaller collections at public baths.⁹⁸ Elsewhere libraries were established by private philanthropy or imperial aid. Pliny gave 100,000 sesterces for a library at Comum; others were founded at Volsinii and Suessa Aurunca; private philanthropy provided a library of 23,000 books at Timgad.⁹⁹ The numerous libraries imply "a very large reading public," since they "cannot have been intended" for "literary men" or "the well-to-do." Men of wealth had excellent private collections: Lucullus' library was like a "hostelry of the Muses"; Trimalchio boasted of two libraries, Greek and Latin.¹⁰⁰

Education, though paid for privately, was generally inexpensive, since fees were low. The support of schools by the emperors was designed to aid the bourgeoisie, not the proletariat; children of the middle class were presumably able to get at least the rudiments of learning. "The average citizen," Abbott thinks, was probably literate;¹⁰¹ in the second century, Cary says, the "ratio of illiterates in the population was never lower"; books became cheap, costing

⁹⁸ Suetonius: *Domitian*, 20; Dio, LXVIII, 16; Abbott: *Society and Politics in Ancient Rome*, pp. 175 f.

⁹⁹ Pliny: *Letters*, I, 8; Frank: *An Economic Survey of Ancient Rome*, v, 102; Cary: *op. cit.*, p. 691.

¹⁰⁰ Abbott: *op. cit.*, p. 176; Plutarch: *Lucullus*, 42; Petronius: *Satyricon*, 48.

¹⁰¹ Abbott: *op. cit.*, p. 174.

probably not "more than twice what they do to-day."¹⁰² Martial's first poems cost thirty or forty cents; the *Xenia* about twenty.

The aesthetic judgment of the Roman populace has been questioned. Commenting on Rome's crudities, Polybius cites Lucius Anicius who put on a performance by the most celebrated artists from Greece, placed all the flute players and the chorus on the stage and "ordered them to play all together." After a brief interval, the artists were told that they were not doing well; they should show more "competitive spirit." Not till they understood what was wanted, divided themselves into opposing parties and "engaged in a pitched battle" was there tremendous applause.¹⁰³ Terence's *Hecyra* was first interrupted by a stormy scene, the audience being diverted by a rope dancer; again, Ambivius says, "the vaunting of pugilists, the gatherings of their claue, the din, the clamour of the ladies" drove him "from the boards." A fresh attempt was made; but, it being reported that there was to be a gladiatorial show, the people rushed in with an "uproar and clamour and a struggle for seats" too great to withstand.¹⁰⁴

The dramatists' art had difficulty in getting a hearing at Rome; its popularity was also to be brief. In Attius, whom Cicero knew as an old man, tragedy reached its zenith; with the demise of political freedom, it became "a mere literary exercise"; it might be written, but was seldom acted. The slave origin of actors and playwrights could only handicap a career, which, at best, seemed dubious in the eyes of Romans.¹⁰⁵ During the period of its greatest popularity the Roman government stood like adamant against the building of permanent theaters—too much like those of the Greeks whom they hated and distrusted. In 154 B.C. one of stone was begun, and then abandoned, because of anti-Hellenic sentiment. The first permanent theater was not erected until 55 B.C., when serious drama was in decline. Even then Pompey was censured for building it.¹⁰⁶ In a population of perhaps a million, at the time of Augustus, there were only three permanent theaters.¹⁰⁷

The experiences of Ambivius and Rome's enduring love of the brutalities of the amphitheater have often been cited as proof of her aesthetic shortcomings. It has been said, in fact, that the rise of gladiatorial sports was partially responsible for the decline of Hellenistic tragedy at Rome. The games and the mimes, with their singing and dancing, offered increasingly keen and successful com-

¹⁰² *Ibid.*, p. 175; Cary: *op. cit.*, p. 691; Rostovtzeff: *The Social and Economic History of the Roman Empire*, pp. 178 f.

¹⁰³ Polybius: *The Histories*, xxx, 22; Athenaeus, xiv, 615.

¹⁰⁴ Terence: *The Mother-in-Law*, prologues. Trans. by J. Sargeant. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁰⁵ Duff: *A Literary History of Rome*, pp. 231 f.; Lawton: *op. cit.*, pp. 38 f., 59.

¹⁰⁶ Tacitus: *Annals*, xiv, 20.

¹⁰⁷ Duff: *op. cit.*, pp. 157 f.; Fowler: *op. cit.*, pp. 309 f.

petition for the attention of the Roman populace.¹⁰⁸ Another critic, however, recalls the religious origin of gladiatorial games, observes that they were to the Roman what a bullfight is to the Spaniard, and questions their validity as a criterion for judging the aesthetic appreciation of the Romans. Moreover, he holds that the reaction of the Roman audience to the *Hecyra* showed good judgment rather than "an absence of literary taste."¹⁰⁹ There being no charge for admission, the success of plays really depended on their popularity, their appeal to all, rich and poor, and the quality of the actors. The triumph of the mime "over the tragic and comic actor" between the middle of the second and the middle of the first century B.C., Abbott believes, reflects the victory of realism over idealism and the transition from aristocracy to democracy.¹¹⁰ Certainly as schooling and literacy increased, and ever wider intellectual horizons opened to men and women, it is only reasonable to expect that more and more weight attached to the voice of the growing audience, whether of hearers or readers. Cicero, Quintilian, Pliny, and others show that great weight was given to the opinion of the collective group on various matters. Cicero's comments on the judgment of the Roman populace are significant: when applause comes from the highest, the middle, and the lowest ranks, he says, it amounts to a "judgment" rather than mere "applause."¹¹¹ Pliny, too, credited the collective judgment of the crowd, even though individual opinion might be defective. He noted that Pomponius Secundus, the best tragic poet Quintilian had seen, always appealed "to the people" and followed their judgment, as expressed by "silence or applause in the theatre," if a question arose about including any particular passage in a play.¹¹² Pliny recognized, however, that the interest of audiences in his day was less than "in the time of our ancestors," there being "little disposition in the public to attend assemblies" for the recital of poetic products. Still, "men of genius" persevere. Despite the apathy toward poetry, he feels, nonetheless, that "if ever polite literature flourished at Rome, it certainly does now."¹¹³ His was indeed an age of "polite" learning; but letters had lost the rugged qualities they once had known.

Back of the divorce of life from learning and the growing apathy in the Republic of Letters there were factors more potent than schools and schoolmasters. The arts of intellect flourish best under freedom. The teachers' position was always somewhat precarious; under the Republic it had been so, as rhetoricians and philosophers could witness; under one-man rule, the dependency of teachers grew apace. Even Quintilian bows before Domitian, "most righteous

¹⁰⁸ Lawton: *op. cit.*, pp. 23, 137.

¹⁰⁹ Abbott: *op. cit.*, pp. 165 ff., 176 f.

¹¹⁰ *Ibid.*, p. 170.

¹¹¹ *Philippic* 1, 15, 37.

¹¹² Pliny: *Letters*, VII, 17; *Quintilian*, x, 1, 98.

¹¹³ *Letters*, I, 10, 13.

of censors," declaring "there is no deity that looks with such favour upon learning. . . ." ¹¹⁴ Dio received a "complimentary acknowledgment" of his little book on the "dreams and portents" which gave Severus hope for supreme rule; and under its spell he had a vision in which the "Divine Power commanded . . . [him] to write history." ¹¹⁵

The collapse of the Republic and the growth of despotism had a deleterious effect on the minds of Romans and produced a progressive decay in education, a "rapid decline" of literature. Men of learning became dependent on imperial favor. "The patronage accorded by Augustus to men of letters," says Ramsay, "may have done something to arrest the decay of literature; but with . . . the accession of Tiberius the truth could no longer be concealed that the days of liberty were over, and the natural results followed in every department of life and thought. Deprived of the inspiration of reality, literature and oratory descended from the public to the private stage, and lost alike their meaning and their manliness." ¹¹⁶ Just as schoolboys more and more debated threadbare theses that had no contact with actual life, so literary folk applied themselves with utmost nicety to remote arcana. If, in Domitian's reign, Statius preoccupied himself with extravagant phrases and phantoms, he finds forgiveness at the hands of the modern critic who understands that "no one could fairly look for any manifestation of daring originality at such a period. Freedom of speech was stifled. Speech of any kind had to be prefaced with extravagant flattery to the throne." ¹¹⁷ Of certain prose works by contemporaries of Seneca, Lawton says, all reveal a "prudent effort to select subjects so remote, [and] colorless . . ." as not to be "displeasing even to the most jealous imperial censorship." The gravitas of Latin letters was ebbing away, "undermined by the loss of freedom and long capricious persecution"; "after Tacitus" no Latin author regained "the pedestal." ¹¹⁸ A revival of sorts did indeed take place in the second century under good emperors whose reigns were marked by unwonted orderliness; but after the middle of the third century the situation grew worse. "Books in the libraries rotted," says a careful scholar, appraising the age of Diocletian; though he created a degree of order, this "savior" denied "all the ideas that had made Rome worthy of rule." ¹¹⁹

There were voices of lament, bitterness, despair. One thinks of Lucan, Persius, Juvenal, Petronius, Tacitus, Seneca. Lucan, schooled with Persius under the Stoic Cornutus, experienced both the encouragement of imperial favor and

¹¹⁴ Bk. iv, preface, 3, 5.

¹¹⁵ Bk. LXXIII, 23.

¹¹⁶ Ramsay: *Juvenal and Persius*, p. xxvii. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹¹⁷ Slater: *Silvae of Statius*, introduction, pp. 16 f.

¹¹⁸ Lawton: *op. cit.*, pp. 253, 312.

¹¹⁹ Frank: *op. cit.*, v, 303.

its malignant blight. Though his writing is "pervaded," or even "poisoned," with "the rhetoric of the schools,"¹²⁰ he praised the Republic in the face of Nero, lamented the loss of liberty, and joined in a plot to slay the tyrant. His fate was doubtless a warning to others who might have been tempted to play his rôle. Persius flayed the decadence of Roman letters. Writers produce stuff that requires a lot of breath to recite, seek praise and enjoy it, regardless of its source or quality, and think it of importance if their utterances be pored over by a "hundred curly-headed urchins."¹²¹ There is no honesty of criticism as there was in the day of Lucilius, father of Roman satire. Nobody wants it, but Persius, at least, will give it: everyone has the "ears of an ass."¹²² The cause of decadence Persius finds in moral decay. All men are different, but all alike run after their own desires—games, love, dice, sleep, food—and "no two men offer the same prayers."¹²³ If Persius understands the relation of political to literary decadence, he does not speak out roundly about it. He does, of course, ridicule the Roman citizen who is made by "one twirl of the thumb," and thus is entitled to a measure of rotten corn.¹²⁴ The liberty he cries for is not political but moral in character—the freedom of the Stoic philosopher.

PHILOSOPHY IN RETREAT

Though the Romans were not gifted with philosophic originality, they began, with the advent of extensive, literary education, to taste philosophies from abroad, and proved diligent, capable students. As long as the Republic lasted, however, and the great arena of public affairs was open to citizens, philosophy took no deep hold upon them. Lucullus¹²⁵ sought in philosophy leisure and repose. When Cicero found no longer "scope either in the senate-house or in the forum" for oratory, he turned his attention and energy to philosophy, for "the times are evil."¹²⁶ But, though he turned to study as to a "haven of refuge," and thought all philosophy profitable, Cicero preferred the practical aspects of it, namely that which treats of "duties" and teaches how to live consistently and virtuously.¹²⁷ Greek philosophical subtleties were generally given short shrift by the Romans.¹²⁸ Cicero thought philosophy had a genuine service to perform: to enable men to rule the state more wisely. He was profoundly influenced by Plato's *Republic* and *Laws*. Virtue was not simply a personal

¹²⁰ Duff: *Lucan*, p. viii; Schanz-Hosius: *Geschichte der Römischen Literatur*, II, 492 ff.

¹²¹ Persius: *Satire* I, 13 et seq.

¹²² *Ibid.*, 114 et seq.

¹²³ *Satire* v, 52 et seq.

¹²⁴ *Ibid.*, 73 et seq.

¹²⁵ Plutarch: *Lucullus*, 1.

¹²⁶ *To His Friends*, IV, 3 and 4; Plutarch: *Cicero*, 40.

¹²⁷ *Offices*, III, 2; *To His Friends*, v, 15.

¹²⁸ Seneca: *Epistle* cxi.

possession; its existence depended on its use; and its "noblest use" lay in "the government of the State."¹²⁰ Both Cicero and Quintilian considered philosophy necessary for the education of the ideal orator, the man of action.

Through the demise of the Republic, philosophy lost that sociopolitical *raison d'être* which Cicero thought so important; there was no free political life which it could serve. What paths could philosophers pursue? They might espouse a philosophy of revolt and seek to change the social order; they might lead men to goals other than political and social. It is commonly held that Tiberius Gracchus had been influenced to some degree by Blossius, his Stoic teacher, and Diophanes, a rhetorician, to take the reformer's path; but, in general, philosophy never stirred Romans profoundly toward any serious efforts to improve the condition of the lower classes. As individuals the slave and the impoverished might claim its healing: a slave's epitaph announced, "I have learned the doctrines of Pythagoras";¹³⁰ and Epictetus,¹³¹ a slave, taught a philosophy of freedom.

In general, even Stoics, whose philosophy embraced all men, led no movement for social reform or political revolution.¹³² There was a moment, however, in the days of Nero and Domitian, when philosophy became something of a "revolutionary force," but it was aimed chiefly against "unworthy princes, rather than at the foundations of their power."¹³³ Helvidius Priscus, who with Flaccus and Lucan had been taught by Cornutus the Stoic, and was one of the Stoic circle of Thrasea,¹³⁴ cultivated the "favour of the rabble," denounced "royalty," praised "democracy," and banded "various men together, as if it were the function of philosophy to insult those in power, to stir up the multitudes, to overthrow the established order of things, and to bring about a revolution."¹³⁵

Such a movement, if really as revolutionary as Dio believed, was a deviation from the rule. Persius' criticism of his times, his charge that every evil comes from moral decay, and his appeal for the inner freedom of the Stoic, were in harmony with the tendency of intellectuals to find solace in flight from reality. Philosophers took leave of social problems and devoted themselves to the quest of personal well-being, personal happiness.¹³⁶ Whether one turns to the Stoic, the Epicurean, or the Cynic, the result for social matters is substantially the same. The Cynic sets himself above the established laws of the state, and

¹²⁰ *The Republic*, I, 2.

¹³⁰ Abbott: *op. cit.*, p. 186.

¹³¹ *The Discourses*, IV, 1.

¹³² Fowler: *op. cit.*, pp. 26 ff.

¹³³ Dill: *op. cit.*, p. 40.

¹³⁴ Tacitus: *Annals*, XVI, 21-2, 28 et seq.

¹³⁵ Dio, LXV, 12. Trans. by E. Cary. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹³⁶ Seneca: *Epistle* XIV.

adheres to the "law of virtue"; denies all its duties, that he may be a citizen of the world. Pleasure as an end is evil; virtue is the only good; its essence is self-rule. Peregrinus plans his self-destruction, to prove his triumph over death. To Epicureans pleasure and pain are the measures of what is to be sought, what avoided. Happiness of the individual is the supreme good. Man finds how he should act by consulting his own advantage.¹³⁷ Such egocentrism afforded no succor to a sick society.

Personal virtue is the end toward which Seneca, Musonius, and Epictetus point. The old faith in the gods decayed; Augustus restored only its external forms. Philosophy serves the purpose of religion, is a means of the soul's salvation. Life is mean, contemptible; the philosopher becomes a personal guide to a "higher life," a "pedagogue of the human race," who leads man to "perfect beauty," "to the stars"; "the gods are not disdainful . . . they open the door . . . they lend a hand as you climb."¹³⁸ Musonius finds the essence of Stoic moral teaching in this: "If thou doest good painfully, thy pain is transient, but the good will endure; if thou doest evil with pleasure, thy pleasure will be transient, but the evil will endure."¹³⁹ Epictetus holds that "man is not the master of man; but death is, and life, and pleasure, and pain. . . ."¹⁴⁰

Seneca, "millionaire philosopher," satiated with wealth and luxury, bids man give them up and lead a life of self-denial. Wealth is slavery; poverty is freedom from care.¹⁴¹ Greed and luxury caused man's transition from happiness to misery. Man was happy in a state of nature.¹⁴² His philosophy of moral discipline is for men of his own class; they are the ones enslaved by wealth and luxury; preachments of abstermiousness are meaningless, empty words to the underfed. Seneca's is a philosophy of disillusionment; his pessimism is unbounded. All men, high and low, are bad. There, in the populace, are as many vices as there are men. "Every place is full of crime and vice."¹⁴³ It must be so. Wicked we have been, are, and always will be.¹⁴⁴ There is lifelong conflict between spirit and matter; life is punishment; we die gradually every day; the greatest proof of the soul's exalted origin is that, if it judges its habitation strait and lowly, it fears not to take its departure. "He is truly great who not only has given himself the order to die, but has also found the means." Even gladiators, "abandoned and dangerous men"

¹³⁷ Diogenes Laërtius: *The Lives and Opinions of Eminent Philosophers*, vi, 5; Ueberweg: *History of Philosophy*, I, 92 f., 211.

¹³⁸ Seneca: *Epistle LXXIII*, 15-6; *LXXXIX*, 13.

¹³⁹ Ueberweg: *op. cit.*, I, 190.

¹⁴⁰ Bk. I, 29.

¹⁴¹ *Epistle xvii*.

¹⁴² *Epistle xc*, 4 et seq.

¹⁴³ Seneca: *On Anger*, II, 8-9.

¹⁴⁴ Seneca: *On Benefits*, I, 10.

as they are, can show others the way. "If you do not lack the courage, you will not lack the cleverness, to die."¹⁴⁵

To Marcus Aurelius Stoicism is pre-eminently a personal philosophy, but it has social meaning as well. Philosophy alone is able to guide man, keeping the spirit "free from violence and unharmed, superior to pains and pleasures. . . ." ¹⁴⁶ Aurelius settles the conflict between flesh and reason thus: let reason rule; "despise the flesh"; be not dissatisfied with the present nor fear the future.¹⁴⁷ Why should man fear change, dissolution? They are "according to nature, and nothing is evil which is according to nature"; considering changes that are implicit in the order of nature, one should despise all that is perishable, and not rate "life a thing of any value."¹⁴⁸ When all is done, be satisfied: "thou hast made thy voyage, thou hast come to the shore, quit the ship." Say not, "I have not finished the five acts, but only three . . . in life the three acts are the whole drama. . . ." ¹⁴⁹

Stoicism has certain social implications: Aurelius knows that his nature is social as well as rational; as a citizen he belongs to Rome; as a man, to the world.¹⁵⁰ From his first principle that one is "part of the whole which is governed by nature," it follows that he is "intimately related to the parts which are of the same kind . . ."; this being so, he will "do nothing unsocial," but rather turn all "efforts to the common interest, and divert them from the contrary." So motivated and directed, a citizen's life should be happy.¹⁵¹ The concept of the relation of individual to social good is well put; but it does not lead Aurelius to expect social reform. Do not look for Plato's *Republic*, "for who can change men's opinions?" And without that power, what is to be expected in the way of improvement? Better be content if one small thing goes well. What hope was there for a Rome whose most enlightened prince, committed to a belief in indomitable will and the philosophy of labor,¹⁵² with all the reins of power in his hands, could not see the way to translate his philosophy of social good will into action?

¹⁴⁵ *Epistle Lxx*, 22 et seq.; *Epistle cxx*, 15. Seneca, *Epistulae Morales*, trans. by R. M. Gummere. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁴⁶ *Meditations*, II, 17; Windelband: *History of Philosophy*, p. 213.

¹⁴⁷ *Meditations*, II, 2.

¹⁴⁸ *Ibid.*, II, 17; IV, 50; IX, 28.

¹⁴⁹ *Ibid.*, XII, 36.

¹⁵⁰ *Ibid.*, VI, 44.

¹⁵¹ *Ibid.*, X, 6.

¹⁵² *Ibid.*, V, 1, 10; IX, 29.

WOMAN'S SPHERE AND EDUCATION

EMANCIPATION, MARRIAGE, AND DIVORCE

Facing the fact of social decline, it is natural to ask whether it was caused by deterioration of human stock. Was Nature herself unkind to the Romans, robbing them of the enjoyment of that which they had been strong enough to win? Whatever may have happened ultimately to Roman stock, it seems probable that Nature was not at fault. Decadent tendencies were widespread in Roman society during the last two centuries B.C., but the human stock was evidently not "old or worn-out," judging from the strength of military force which continued victorious till the whole world within reach submitted to the Roman yoke. But if there is no sign of a natural weakening of physical stock, it is evident that great changes were in progress: Rome's wars were depleting man power; luxury was corroding and undermining the basic, social, educational institution, the family; marriage was declining, the birth rate falling.¹ Even in the days of Camillus, efforts were made to increase marriages by persuasion and by fines, for widows "were many because of the wars."² "Continuous military service" tended to weaken the marriage bond.³ In Cato's day the notion that one should get wealth and keep it, and not have too many children, was gaining headway. Pursuit of a life of freedom, without the burdens of a family, seems to have been a significant factor in the decline. Marriage among the Romans had been a union *de convenance* rather than of love. When the old pattern of the family fell into decay, and the practical benefits of marriage declined with the increasing independence of women, cynicism increased among Roman men. It is reflected in the speech on marriage, *liberorum creandorum*

¹ Mommsen: *History of Rome*, v, 393; Fowler: *Social Life at Rome in the Age of Cicero*, p. 353.

² Plutarch: *Camillus*, 2.

³ Cary: *History of Rome*, p. 264.

causa, credited to Metellus Numidicus, 102 B.C.: "If we could get on without a wife, Romans, we would all avoid that annoyance; but since nature has ordained that we can neither live very comfortably with them nor at all without them, we must take thought for our lasting well-being rather than for the pleasure of the moment." ⁴ Augustus strove (9 A.D.) to offset this celibate tendency by law. Declaring bachelors guilty of murder and sacrilege in not begetting children, and guilty of a crime against the state as well as themselves, he increased penalties against them and offered subsidies of 1,000 sesterces for each child.⁵ Despite threats and indictments, however, the enactments fell short of their aim.⁶

Fundamental changes were taking place in the status of women and in the nature of the marriage relationship, the effects of which were to decrease the prestige and power of men and to emancipate women from many of the bonds which previously restricted their freedom. In early Rome the father's power had been supreme, and the notion of a husband's importance lingered: "In wedlock mischief often follows if too great is the wife's dot. Each sex has its powers, but in authority paramount is the male."⁷ But Ausonius played on memories of a distant past. After the Punic wars woman had gained a certain moral and social equality, freedom from her husband, and possession of property, though political rights were still denied. Increased marital freedom for women is reflected in the growth of civil marriage (*matrimonium consensu*) which, though it existed even before the Twelve Tables, was not approved by Patrician families, among whom the religious marriage (*matrimonium confarreatio*) prevailed. After the Punic wars marriage "without manus" became the rule.⁸

Divorce had been difficult and exceedingly rare in the early Republic. The first reputedly occurred 519 years after the founding of the city, when Spurius Carvilius divorced his wife on the grounds of barrenness;⁹ now it became "an everyday occurrence."¹⁰ Matrimony was more and more exploited for ulterior ends. Antony married Fulvia, a woman who was not content with a man of private station, but wanted to "rule a ruler and command

⁴ Aulus Gellius, *The Attic Nights*, I, 6. Trans. by J. C. Rolfe. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.; a similar address was credited to Metellus Macedonicus, 131 B.C.—Suetonius: *Augustus*, 89.

⁵ Suetonius: *Augustus*, 46; Dio's *Roman History*, LVI, 1-10.

⁶ Tacitus: *Annals*, IV, 66; Dill: *Roman Society from Nero to Marcus Aurelius*, pp. 35 f.; Cary: *op. cit.*, p. 489.

⁷ Ausonius, XII, 7. Trans. by H. G. Evelyn White. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁸ Marquardt: *Das Privatleben der Römer*, pp. 63 f.; Mommsen: *op. cit.*, I, 112; Ihne: *History of Rome*, I, 565; Gibbon: *The Decline and Fall of the Roman Empire*, III, 686 f.; Dill: *op. cit.*, pp. 78-88; Abbott: *Society and Politics in Ancient Rome*, p. 41.

⁹ Gellius, IV, 3; XVII, 21, 44; Tertullian says 600 years.—*Apology*, VI, 3-6.

¹⁰ Mommsen: *op. cit.*, IV, 186.

a commander."¹¹ Greater freedom of marriage and divorce was conducive to the forming of alliances for wealth and power in the political world. The greatest men at the end of the Republic married like movie stars in our own day. Caesar had four wives; Pompey and Sulla, five each; Ovid, Octavian, and Pliny the Younger married three times.¹²

The wife had no property of her own under the old custom, nor had widows and fatherless maidens any control of property. Near the beginning of the second century B.C., however, by the use of "mock marriages," wives gained control of property and gradually escaped from the power of their husbands. Women got so much wealth in their hands, indeed, that it was declared a danger to the state, and the Voconian Law (169 B.C.) limited their inheritance to 100,000 sesterces. Doubtless women's wealth and growing influence lay back of Cato's caustic remark: ". . . we rule all other men, and our wives rule us."¹³

Certain Roman women of olden times had shown initiative and independence in a public way, as well as excellence in domestic virtues. With the relaxing of old customs their self-assertion increased. When the repeal of the Oppian Law against feminine luxuries was an issue (195 B.C.), women sought to influence the vote. Neither persuasion, modesty, nor the power of husbands, it was said, could keep them at home. The law was repealed; and they put on adornments then and there, and left the assembly dancing.¹⁴ Again, during the Civil War, when an edict was published requiring fourteen hundred of the richest women to make a valuation of their property and to submit to an assessment to help pay for the war, they protested against sharing "the penalty" when they "did not share the guilt," and against paying taxes when they had "no part in the honours."¹⁵ Notwithstanding the increase of their influence, women did not gain political status; had self-rule continued, they might possibly have done so. Under one-man rule all self-government atrophied. Women, to be sure, gained prominence occasionally by virtue of their connections with men of prominence. Agrippina, mother of Nero, was present when senators came to the palace, but was hidden by a screen; at one time, when she was about to mount the tribunal and preside with him, the scandal was forestalled.¹⁶ Elagabalus in-

¹¹ Plutarch: *Antony*, 10.

¹² Abbott: *op. cit.*, pp. 55 ff., 64; Friedländer: *Roman Life and Manners under the Early Empire*, I, 243; Cary: *op. cit.*, pp. 456 f.

¹³ Plutarch: *Cato*, 8; *Dio*, LVI, 10; Marquardt: *op. cit.*, p. 64; Mommsen: *op. cit.*, III, 122; Gibbon: *op. cit.*, III, 702; Fowler: *op. cit.*, p. 147.

¹⁴ *Dio*, XVIII, 17; *Livy*, XXXIV, 1-8.

¹⁵ Appian: *Civil Wars*, IV, 32-4.

¹⁶ Tacitus: *Annals*, XIII, 5.

vited his mother to the Senate; and he formed a "women's senate," which laid down regulations on precedence, the clothes to wear in public, and who should use chariots, horses, carriages, litters, and other modes of conveyance.¹⁷

Wealth brought idleness to women as it did to men. Fulvia "took no thought for spinning or housekeeping."¹⁸ If Augustus encouraged household industry by wearing clothing made by his sister, wife, or daughter,¹⁹ it was so exceptional as to call for comment. A host of slaves degraded labor, and there was little to be done by free women of the household. Baking at home declined when public bakeshops began to flourish. Columella observed that wives generally gave way to luxury and idleness, avoided the labor of making wool, and disdained homemade clothing, preferring that which was very expensive. On farms it was necessary to have stewardesses who performed the duties of the wife.²⁰

By expensive dress, gems, a grand equipage, and many slaves the "new woman" sought to impress and please. "Slimming," too, gained vogue. Mothers gave daughters "falling shoulders and straight bosoms to make 'em slim. If one of 'em is the least bit plump she's called a boxer and is docked of her rations. She's all right by nature but treatment makes her like a bulrush."²¹ Many "unnatural women," Favorinus says, sought to preserve "their beauty" by abortion and refusal to nurse their babes.²² That ground is made fruitful by cultivation and that the face may be improved by painting was not unknown to women of the new day. "Learn, O women," says Ovid, "what pains can enhance your looks, and how your beauty may be preserved."²³ Juvenal wonders whether to call it "a face or a sore" when all medicaments have been applied.²⁴

The growing disinclination to marriage, increased opportunities for busy idleness in social life and at public entertainments, ready divorce, the desire of some like old Cato to get wealth and keep it, and many other factors bore unfavorably on the life of children. Exposure of babes was an ancient practice, but those accepted by the family had been most carefully nurtured. Mothers then nursed their own children; and this practice doubtless continued amongst the poor. In rich families, however, Tacitus says, children were turned over at birth to silly Greek serving-maids and male slave-attendants, apt to be the

¹⁷ Lampridius: *Elagabalus*, 4.

¹⁸ Plutarch: *Antony*, 10.

¹⁹ Suetonius: *Augustus*, 73.

²⁰ *Of Husbandry*, xii, prefacc.

²¹ Terence: *The Eunuch*, 312 et seq. Trans. by J. Sargeant. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

²² *Gellius*, xii, 1.

²³ *On Painting the Face*, 1-2.

²⁴ *Satire vi*, 457-73.

"most worthless" members of the household. Though there were doubtless exceptions, the wet nurse took the place of the mother.²⁵ Favorinus' plea that mothers nurse their own children must have found scant approval on the part of upper-class women.

The growth of Rome was early marked by increasing lawlessness; and this affected women as it did men. A poison ring (c. 331 B.C.), involving 20 and then 170 women, caused the death of many; but so unusual was it at that date that people judged the whole thing a prodigy. A conspiracy was discovered (186 B.C.) which was associated with Bacchanalian rites, introduced from Etruria. Seven thousand men and women were allegedly drawn into this net of evil which spread through all Italy and aimed at controlling the state. The prominence credited to women in it—they were called "the source" of the "mischief"—reflects a growing restiveness and breaking with the old pattern of matronly sobriety. A few years later (180 B.C.) Hostilia was convicted of poisoning her husband, Piso.²⁶ In 154 B.C. two women were executed for poisoning their husbands.

Laxity of sex morals became noticeable. Polybius says that vicious tendencies, boy lovers, and courtesans were common, and Scipio was outstanding because of his "ambition to lead a virtuous life."²⁷ Men played the rôle of women; women sold their virtue. Dissoluteness in women doubtless evoked more comment, since moral standards had long been lower for men than for women. Sempronia, Sallust says, committed crimes of masculine daring, held nothing so cheap as her virtue and sought men even more than she was sought.²⁸ Princess Julia, said to have been "the most dissolute and shameless woman of her day," led Rome "into every form of brutalizing vice."²⁹ Though Augustus was "given to adultery," he made laws against it; but women avoided punishment under them by sacrificing the rank and privileges of matrons and registering as prostitutes.³⁰ In the time of Severus adultery became unusually common, further laws were enacted against it, and there were many indictments but few prosecutions. Dio says that three thousand cases were on the docket when he became consul.³¹

Though women were esteemed for domestic virtues, and were sometimes praised for courage, numerous casual remarks reveal a low estimate of their capacities. Lucretius considered "the male sex" in general "far superior in skill

²⁵ Tacitus: *A Dialogue on Oratory*, 29; Friedländer: *op. cit.*, I, 229; Johnston: *The Private Life of the Romans*, pp. 80 f.; Gibbon: *op. cit.*, III, 685.

²⁶ Livy, VIII, 18; xxxix, 8-19; xl, 37.

²⁷ *The Histories*, xxxi, 25.

²⁸ Sallust: *War with Catiline*, 13, 25.

²⁹ Lawton: *Classical Latin Literature*, pp. 203 f.

³⁰ Suetonius: *Augustus*, 34, 69; *Tiberius*, 35.

³¹ Dio, lxxvii, 16.

and more clever." ³² Livy expressed a common view in his reference to women, who he said were influenced by mere trifles. Elsewhere, describing the Romans' incompetence, delight in present ease, and failure to look to the future, he says that they sat idly quarreling just like women. ³³ Polybius noted casually "a woman's natural shortness of view." ³⁴ Dio recounted how one soon "demonstrated the weakness of the female sex, which quickly flies into a passion through lack of judgment, and quickly becomes terrified through cowardice." ³⁵ Cato's declaration, "All other men rule their wives; we rule all other men, and our wives rule us"—a mocking recognition of their power—was not spoken in praise of women but in contempt for their growing wealth and independence. More sincere, probably, was his remark that he regretted only three things in his whole life, one being that he had trusted his wife with a secret. ³⁶

It is not surprising, considering the prevalent notions of female inferiority and the rapid spread of crime and vulgar practices among women, that many bitter attacks were made upon them. Petronius viewed "women one and all" as "a set of vultures." ³⁷ Juvenal attributed almost every form of meanness and crime to them; "in the days of Saturn," humble fortunes, labor, chastity, and short slumbers preserved a general sobriety of conduct, but now no more. Wealth and luxury have made every crime familiar. Why be so mad as to take a wife, when ropes, windows, bridges, and other modes of exit are handy? Is there one woman in all the seats of all the theaters whose fidelity one can trust? The better the husband, the worse the wife. She will order everything, cause every quarrel, and have eight husbands in five autumns. To-day women are athletes and gladiators! What modesty can you expect from them? Man-nish women at the baths; the woman musician; the female intellectual who disputes grammatical niceties and quotes philosophers and poets; she who beats her maids for a misplaced curl; women who know everything that's taking place, and all that is rumored; those skillful with poison, and many others—all fall under his withering satire. Juvenal looks through a dark glass, indeed, and lumps all "new women" together indiscriminately; the intellectual is no better, apparently, than the poisoner, the tyrant, the libertine. ³⁸ Martial lacks the acidity of Juvenal, but his epigrams reveal the same evil tendencies of the day. Seneca, too, bares a scene of corruption, in which women are as guilty as men. The most famous founder of medicine had said that women never suffered baldness or gout, but now they are affected by both. Nature has not changed,

³² Lucretius: *De Rerum Natura*, v, 1354 et seq.

³³ Livy, III, 68; VI, 34.

³⁴ Bk. II, 4.

³⁵ Bk. XII, 4.

³⁶ Plutarch: *Cato*, 8.

³⁷ *Satyricon*, 42.

³⁸ *Satire* VI.

but she has been conquered. By matching men's indulgences, women reap the same harvests. They stay up as late, drink and vomit as much, vie with men in carousing and wrestling, and imitate them in their passions. Hence they are heirs to the ills of men.³⁹ Tertullian's attack on feminine weaknesses runs the gamut, but adds little; in fact, little could be added to the sweeping indictments of Juvenal and Seneca. Everything that "protected modesty or sobriety" has vanished. "Between matrons and harlots," he finds "not a vestige of distinction in dress left."⁴⁰

Every shield has two sides. Even in the worst days of the Republic and Empire, some women were distinguished for fidelity, nobility, culture, and refinement, and men honored them for their high qualities. Caesar honored his wife by a funeral oration; nobility, strength of character, and fidelity were credited to Porcia.⁴¹ Seneca thought the same standard of conduct should apply to husband and wife, and recorded the greatest fidelity and devotion on the part of Paulina.⁴² Women, he believed, have as great a talent for goodness and education as men. Helvia and Marcia are both portrayed in the fairest colors.⁴³ Pliny⁴⁴ praised Calpurnia for discernment, thrift, purity, affection, and her devoted interest in his literary pursuits. Even though the state of society generally grew worse, and immorality was prevalent, the tale of excellence in women continued. Much depends on the writer and what he sees. Symmachus (345-410) extolled the ancient Roman ideal of women. Salvian reported gross laxity of morals in the fifth century. Sidonius (431-489) praised Filimata for obedience, kindness, and capability in her family. Religious works, he thought, were most suitable for ladies, but piety was found mingled with breadth of learning in some women of his acquaintance. To a friend about to marry he offered the reassurance that a wife would not necessarily hinder his studies, but assist them; and he cited Marcia and Hortensius, Terentia and Tullius, Calpurnia and Pliny, Rusticana and Symmachus, Corinna and Ovid, Argentaria and Lucan, Cynthia and Propertius, and other couples as proof.⁴⁵

If the new day offered opportunity for license, it also gave many women a degree of enlightenment and a scope of useful activity in the world of affairs previously unknown.⁴⁶ A few women owned ships, perhaps by virtue of inheritance. Several women of the upper class were interested in the manufacture of brick; indeed, that business seems to have been dominated by women. Some women of lower classes and freedwomen assisted husbands in their shops;

³⁹ Seneca: *Epistle* xciv, 20-1.

⁴⁰ Tertullian: *Apology*, vi, 4-6.

⁴¹ Plutarch: *Caesar*, 5; *Brutus*, 13, 15.

⁴² *Epistle* xciv, 26; *civ*, 1-2; Tacitus: *Annals*, xv, 63.

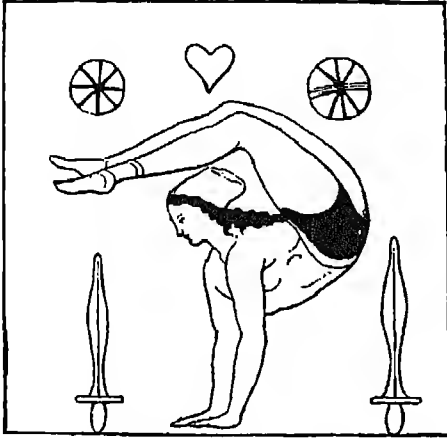
⁴³ Seneca: *To Helvia*, xvi, 3-5; xix, 2, 6; *To Marcia*, xvi.

⁴⁴ *Letters*, iv, 19.

⁴⁵ Sidonius: *Letters*, ii, 8-10.

⁴⁶ Abbott: *op. cit.*, pp. 95 ff.; Frank: *An Economic Survey of Ancient Rome*, v, 272.

others engaged in costuming, sewing, washing, weaving, selling fish, tending bar, managing estates. Cato devoted some attention to the duties and proper conduct of the wife of an overseer.⁴⁷ Many women, mostly Greek, were em-



A GIRL ACROBAT Naples Vase Painting

(T. Schreiber, *Atlas of Classical Antiquities*, LXXVIII, 5, Macmillan & Co., Ltd., London, 1895)

ployed as mimes and musicians after the first century B.C.; Eucharis is said to have initiated the use of musical monologues. Some women took part in public gymnastic contests, though this apparently aroused opposition, and an edict was issued against it.⁴⁸ Medical practice, mostly in foreigners' hands, was entered by women, chiefly Greeks, who probably combined midwifery, magic, and beauty treatments. Scantia Redempta was described on her tomb as a "leader in the science of medicine." Magic and science were mingled rather indiscriminately. Though standards were low and quackery abounded, Soranus, writing in the second century A.D., said women wishing to enter medical practice should have ability to write, good memory, health, even temper, discretion, and knowledge of dietetics, of pharmacy, and (to some extent) of surgery. That women doctors were generally recognized is implied by the reference to "physicians of either sex" in Justinian's Code.⁴⁹ Women did not gain the right to practice law, which was the most fully developed profession,⁵⁰ but that there was a movement in that direction is to be inferred from Ulpian's edict which prohibited their service as pleaders in courts. Valerius Maximus mentions two

⁴⁷ Cato: *On Agriculture*, 142 et seq.

⁴⁸ Dio, LXXVI, 16.

⁴⁹ Abbott: *op. cit.*, pp. 80 ff.; Friedländer: *op. cit.*, I, 171, 175, 182 ff.; Dill: *op. cit.*, pp. 92 f., 457 f.; Mommsen: *op. cit.*, III, 193 f.; Marquardt: *op. cit.*, pp. 771 ff.

⁵⁰ Mommsen: *op. cit.*, IV, 254.

women, however, who used the privilege of arguing their own defense, much to his disapproval.⁵¹ As for religious offices, some, such as the vestal service and the rites of Juno and other goddesses, had been open to women in early times. Women took part in the Bacchanalian conspiracy (186 B.C.), and the cult seems to have grown despite opposition. As new religions from the East overran Rome, women played an increasing rôle in their ceremonials.⁵²

WOMEN AND LETTERS

The education of women, which had been directed solely toward domestic employments, was gradually modified after the second century B.C. in conformity with the prevalent tendency toward literary and aesthetic culture.⁵³ This was true, of course, chiefly for girls in upper-class society. Some educated women became the center of intellectual circles and exerted great influence on public life. The power of Clodia over the coterie which she drew around her on the Palatine and at Baiac was enormous, and well merited the fear and hatred of those she opposed. Cornelia's influence on her sons' education and on public affairs made her one of Rome's most celebrated characters—credited with initiating the revolution at the end of the second century. Through her circle at Misenum she kept in touch with public affairs after her sons' death.⁵⁴ Livia, it was said, advised Augustus to pursue a policy of leniency and conciliation—a suggestion which he heeded.⁵⁵

There is no ground for thinking that all women ceased to be concerned with their families. Some continued to be home-centered bodies; others combined public and private interests; while many, doubtless, were led by influences of the new age to avoid domestic duties. Horace refers to the years that crawl for "minors burdened by a mother's irksome tutelage."⁵⁶ Agricola imbibed his education from his mother, Julia Procilla.⁵⁷ Quintilian thought both parents should be thoroughly educated, and cited Cornelia, Laelia, and Hortensia as educated women, urging that those less educated than they should not, on that account, give less attention to their sons' education.⁵⁸

The education of girls, like that of boys, began in the household. When families could afford it, a *paedagogus* had charge of each child; or an old slave woman might be assigned to the girl.⁵⁹ Since girls married early, usually be-

⁵¹ Abbott: *op. cit.*, pp. 84 f.

⁵² Livy, xxxix, 8-19; Friedländer: *op. cit.*, I, 255 ff.; Dill: *op. cit.*, p. 82.

⁵³ Dill: *op. cit.*, p. 79.

⁵⁴ Plutarch: Tiberius Gracchus, 1; Caius Gracchus, 19; Abbott: *op. cit.*, pp. 53 ff., 90 f.

⁵⁵ Dio, lv, 16-22.

⁵⁶ *Epistles*, I, 1.

⁵⁷ Tacitus: *Agricola*, 4.

⁵⁸ *The Institutio Oratoria*, I, 1, 6.

⁵⁹ Wilkins: *Roman Education*, p. 42.

tween thirteen and sixteen, their opportunity for schooling, whether inside or outside the family circle, was more limited than boys'. At twenty a woman was subject to Augustus' regulations directed against childlessness.⁶⁰ Due to the growing custom of having tutors and philosophers attached to the household, women could continue their education privately. Epirota taught his patron's married daughter.⁶¹ Some husbands took the responsibility for educating their wives. Pliny encouraged his wife's learning. The wife of his friend Pompeius Saturninus, he says, wrote so well as to simulate Terence and Plautus—which Pliny thought highly creditable to Pompeius, who had "so highly improved and refined" her genius, for she had been only a girl at marriage.⁶² Household education for girls seems to have continued to be the mode, at least for the best families. The *Faustinianae*, established by Antoninus Pius, and a similar institution, founded by Marcus Aurelius in honor of the younger Faustina, were for destitute girls.⁶³ In the early fifth century St. Jerome advised placing Paula's education in the hands of a "man of approved years, life and learning."⁶⁴

Opinions vary as to whether girls were educated in schools with boys. Friedländer holds that they were taught together at schools, though perhaps only "to a certain age." Marquardt's view is similar. Paul of Aegina said that reading and writing should be taught to both sexes together at six or seven years of age. A schoolmaster's tomb at Capua, showing a girl at one side of the master and a boy on the other, suggests, but does not prove, coinstruction. Jullien and Wilkins hold that there is no clear evidence of coeducation.⁶⁵ Coeducation may have been the rule in country places, but only the exception at the capital. Certain scattered, fragmentary allusions to girls' and boys' education have thus been divergently interpreted. Martial refers to the "bawling pedant," whom "generous youth and ripening maiden hate"; the "schoolmaster," he says, "girls and boys abhor. . . ." ⁶⁶ Ovid observes that even Menander is "wont to be read by boys and girls"; ⁶⁷ his own book alone has brought punishment upon its author.

The extent of women's education varied greatly. Learning appeared among the best and the worst. Sophonisba, beloved by Masinissa and Syphax, was noted for literary and musical talents, as well as physical beauty.⁶⁸ Pompey's Cornelia was well versed in literature, played the lyre, knew geometry, and

⁶⁰ Friedländer: *op. cit.*, I, 232.

⁶¹ Suetonius: *Grammarians*, 16.

⁶² Pliny: *Letters*, I, 16; IV, 19.

⁶³ Capitolinus: *Antoninus Pius*, 8; *Marcus Antoninus*, 26.

⁶⁴ *Letter cvii*, 4.

⁶⁵ Jullien: *Les Professeurs de Littérature dans l'Ancienne Rome*, pp. 147 ff.; Wilkins: *op. cit.*, pp. 42 f.; Friedländer: *op. cit.*, I, 230; Marquardt: *op. cit.*, p. 110.

⁶⁶ *Epigrams*, viii, 3; ix, 68.

⁶⁷ *Tristia*, II, 361-70.

⁶⁸ Dio, xvii, 50-1.

listened to "philosophical discourses with profit," yet was free from officiousness which such attainments were "apt to impart to young women."⁶⁰ Hortensia's oration before the triumvirs was still read for its own merit in Quintilian's day, not simply out of honor to her sex.⁷⁰ Sempronia was possessed of "no mean endowments" and was "well read in the literature of Greece and Rome."⁷¹ Ovid notes that ". . . there are learned women too, a scanty number; and others are not learned, but wish to be so."⁷² Fundania, though scarcely thirteen, according to Pliny,⁷³ had the wisdom of age and the sedateness of a matron. To her nurses, her *paedagogus*, and her teachers she was exemplary in behavior; at books she was intelligent and studious; in play she indulged sparingly and discreetly. Calpurnia was carefully educated, incomparably discerning and thrifty, had a turn for books, read Pliny's compositions and even learned them by heart, listened to his speeches, sang his verses and set them to the lyre.⁷⁴ Pliny felt sure she would always be everything he could desire. Polla Argentaria, wife of Lucan, was credited with intellect and virtue as well as youth, beauty, and wealth.⁷⁵

Dancing and music began to play some part in Roman education, along with letters. Disparaging remarks about them indicate something of their spread in Roman society. Music, "according to our ideas," says Nepos, is thought unfit for persons of importance, and dancing is even considered a vice; Cicero names dancers, butchers, cooks, and perfumers as examples of those who engage in "illiberal" occupations.⁷⁶ Scipio was distressed because free boys and girls were "going with lute and psaltery to the training schools of professional actors" and were learning songs and dances unfit for them. He himself has seen "more than fifty boys and girls" at "one of these dancing schools."⁷⁷ Sempronia could "play the lyre and dance more skilfully than an honest woman need. . . ." ⁷⁸ Seneca speaks of "those whose daughters dance upon the stage and wed with a dowry of a million sesterces. . . ." ⁷⁹

Despite contempt and opposition, music and dancing gained great vogue. Approval of them grew with longer acquaintance. Demetrius and Tigellius, famous musicians, had many women followers; boys and girls of the best fam-

⁶⁰ Plutarch: *Pompey*, 55.

⁷⁰ Quintilian, I, 1, 6.

⁷¹ Sallust: *Catiline*, 25.

⁷² *Art of Love*, II, 279 et seq. Trans. by J. H. Mozley. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁷³ *Letters*, V, 16.

⁷⁴ *Ibid.*, IV, 19.

⁷⁵ Statius: *Silvae*, II, 7; Duff: *Lucan*, p. viii.

⁷⁶ Nepos: *Epaminondas*, 1; Cicero: *Offices*, I, 42.

⁷⁷ Gwynn: *Roman Education from Cicero to Quintilian*, p. 55.

⁷⁸ Sallust: *Catiline*, 24-5.

⁷⁹ *To Helvia*, XII, 6.

ilies joined in singing a dirge in honor of Augustus.⁸⁰ Statius' stepdaughter was well educated and would soon marry, he thought, for with other excellencies she combined playing the lute, singing, and dancing. When Christian asceticism appeared in Roman society, dancing and music were among the arts prohibited. St. Jerome advised emphatically against "sporting in the dance." Paula must be deaf to musical instruments, such as the lyre, flute, and harp, and must not even know why they came into being.⁸¹

Though Romans were slow to take up philosophy, it gradually gained ground, and women turned to it; to have a philosopher in the household ultimately became the height of fashion. Cornelia, wife of Pompey, profited from philosophic study; and Caerellia, deeply interested in philosophy, copied the *De Finibus*. Julia Domna, wife of Septimius Severus, gathered a learned circle at court and devoted herself to science and philosophy; to her influence Philiscus reputedly owed his chair of rhetoric at Athens.⁸² Theophila seems to have known both Stoic and Epicurean systems; Plotinus had many women disciples of Neo-Platonism in the third century.⁸³

Certain writers praised the capacities of women and defended the view that they should be educated as were men; others were opposed. Quintilian wanted fathers and mothers both educated. Seneca's father opposed philosophic studies for his wife, because certain women did not "employ learning as a means to wisdom," but sought it for display. Nevertheless, owing to her turn of mind, she gained more than "might have been expected" and had "the foundations of all systematic knowledge."⁸⁴ Plutarch⁸⁵ praised women's bravery, thought the virtues of men and women were the same, and believed that women should be known not for their form but for their fame. In his *Advice to Bride and Groom* he recommended that they study philosophy, geometry, and astronomy together, which would be a safeguard against vanity, futility, and vulgarity in thought and conduct. Such studies would "divert women from all untoward conduct," and make them ashamed to be dancers, or to swallow beliefs in magic while under the charm of Plato or Xenophon.⁸⁶ Women have talent for education, according to Seneca; they have as much force, as much capacity for virtuous action as do men, he wrote to Marcia, while bidding her remember Cornelia, who lost twelve children. To Helvia he recommended philosophic studies as a refuge, despite the fact that his father had permitted

⁸⁰ Horace: *Satires*, I, 10; Suetonius: *Augustus*, 100.

⁸¹ Jerome: *Letter* cvii, 6, 8; Friedländer: *op. cit.*, I, 231.

⁸² Plutarch: *Pompey*, 55; Cicero: *Letters to Atticus*, XIII, 21 a; Dio, LXXVI, 15; Philostratus: *Lives of the Sophists*, II, 30.

⁸³ Martial, VII, 69; Friedländer: *op. cit.*, I, 254 f.

⁸⁴ Seneca: *To Helvia*, xvii, 4.

⁸⁵ *Bravery of Women*, introduction.

⁸⁶ Plutarch: *Advice to Bride and Groom*, 48.

her only "a mere smattering" of philosophy.⁸⁷ Musonius, too, defended philosophical study for women, as did Stoics generally, for virtues belong equally to men and women; and since "without philosophy no man can be rightly instructed, so neither can any woman."⁸⁸

Since rhetoric schools aimed to develop orators and pleaders, and women never gained the right to practice law, it is readily understood that they had little reason to strive for such professional learning. Had this professional domain not remained closed to them, the customary limitation of their education to letters and philosophy would probably have been altered, and there might have been more than isolated examples of women distinguished for oratorical attainments.

What contribution did Roman women make to the world of letters? A number of interesting references testify to their attainments. Hortensia's oration was still read for its own merit.⁸⁹ Ovid's daughter, gifted with "native wit," learned to write poetry under his teaching and criticism, and would only be surpassed by Sappho if she kept alive the sacred flame.⁹⁰ The wife of Saturninus simulated Terence and Plautus.⁹¹ Martial, though he wanted "a kind but simple wife," praised the poetry of Sulpicia, member of Messalla's coterie, who left a few elegies on her love of Cerinthus, which are judged "graceful in form and sincere in tone."⁹² Theophila, steeped in Attic learning and far above most women, was skilled in poetry like Sappho, and would make, says Martial, an excellent critic.⁹³ Such compliments, though fairly common, should, presumably, not be taken too seriously. Tacitus mentions memoirs of Agrippina, mother of Nero, which he had used.⁹⁴ The most extensive literary effort known to us is an account of a fourth-century pilgrimage to Palestine, written by Silvia, sister of a Roman prefect, or by Aetheria, an abbess of Spain. Though valuable as a unique chronicle by a female zealot of early Christian days, her record is said to be "monotonous and repetitious," and lacks literary skill. Abbott concludes a survey of the slender remains of literary contributions from the pens of Roman women with the observation that it shows "pretty clearly that women made no important contributions to Latin literature."⁹⁵

The effect of the "new learning" on women was viewed in various ways. In many instances learning in women deserved and called forth praise, even

⁸⁷ To Helvia, xvii, 3-5; To Marcia, xvi, 3.

⁸⁸ Laurie: *Historical Survey of Pre-Christian Education*, pp. 427 ff.

⁸⁹ Quintilian, i, 1, 6.

⁹⁰ *Tristia*, iii, 7.

⁹¹ Pliny: *Letters*, i, 16.

⁹² Abbott: *op. cit.*, p. 91; Martial, ii, 90; x, 35.

⁹³ Bk. vii, 69.

⁹⁴ *Annals*, iv, 53.

⁹⁵ Abbott: *op. cit.*, pp. 94 f.

though their contributions to Roman letters were slight, so far as can be judged to-day. Opposition to the new learning, keen even when men turned to it, was still greater when it was desired by women. The elder Seneca's objection to higher studies on the part of Helvia was by no means unique. The old, deep-set conviction of Romans that women's capacities were weak and inferior did not quickly or generally pass away. Theophila was "so little like the common female kind" in literary capacity that Martial praised her.⁹⁶ If we add to this notion of limited capacity the fact that a little learning would puff up many—women as well as men, and especially those who had had none before—and make them appear ridiculous, it is easy to understand that the result would be credited to the influence of education in general rather than to the character and extent of that which had been acquired; and to the nature of women in general rather than to the strength or weakness of particular persons. Juvenal's satire is at once a testimony to the increase of women's education and the contempt which many felt for those who paraded their accomplishments in an unpleasant manner. His temper, of course, is by no means judicial; he delights in the castigation of his day's ways; the intellectual woman as well as the vicious is condemned. He finds intolerable the woman who praises Virgil, forgives Dido, weighs the merits of Virgil and Homer; scatters the grammarians and rhetoricians, even the lawyers and auctioneers, or reduces them to speechlessness; defines propositions, lectures like a philosopher, hurls the crooked enthymeme, knows all history and even little-known poets; constantly delves into Palaemon, and will not even permit her women friends to make grammatical errors. She is a bore; a wife should have no special style; there should be something that she does not know; husbands should at least be allowed to make mistakes in grammar!⁹⁷ But Juvenal was fighting a losing battle. In fact, as Dill says, the battle had been "lost long before he wrote."⁹⁸ The place of women in learning, as in Roman life, had been altered; to war against it was not unlike attempting to sweep back the tides of ocean with a broom.

⁹⁶ Bk. VII, 69.

⁹⁷ *Juvenal*, VI, 434-56

⁹⁸ *Op. cit.*, p. 81.

GROWTH AND DECAY OF MILITARY DISCIPLINE

As Rome became a great military force, her army and navy—the instruments of empire—became for many Romans an epitome of life and education. This was true for an increasing number until the peak of power was reached; thereafter, it declined in significance, quantitatively and qualitatively, till finally the very name “Roman legion” became obsolete; fifty years after Justinian, it had “completely vanished” as “a form of military efficiency.”¹

Notwithstanding ultimate decay, the military ideal and discipline were remarkably persistent; even after the cessation of conquests had removed their chief *raison d'être*, the broad expanse of the *Campus Martius* was a place of serious preparation for war's fatigues, and many shunned the easier regimen of the Greek gymnasium which was thought less valuable as training for war. Cato (234–149 B.C.) is sometimes called the last of the old Romans. Certainly, by his own discipline and that of his sons,² he proved himself worthy of that name. But those who, like Marius (155–86 B.C.), came up from the soil, kept the old discipline alive quite as well as Cato.³ Varro's early regimen was simple and severe. Cicero, though less inclined to military life, trained for it, and served in one campaign.⁴ Military distinction, he knew, was still the chief path to public recognition. His son, trained to arms, gained Pompey's praise by his skill in horsemanship and use of the javelin.⁵ Caesar, educated both for the forum and the field, distinguished himself in sports and military exercises, such as swimming, horsemanship, use of arms, indifference to diet, and his powers of endurance.⁶ Octavius, notwithstanding all the divine prodigies associated

¹ Oman: *The Art of War in the Middle Ages*, p. 3.

² Plutarch: *Cato*, 1, 3–4, 20.

³ Plutarch: *Caius Marius*, 2, 34; Sallust: *War with Jugurtha*, 85.

⁴ Fowler: *Social Life at Rome in the Age of Cicero*, pp. 177, 194.

⁵ Cicero: *Offices*, II, 13.

⁶ Plutarch: *Caesar*, 2, 17, 49; Suetonius: *Julius*, 57.

with his birth, exercised in the *Campus Martius* like other youths of his day, and "was thoroughly trained in military service" as well as in government and the new studies.⁷ After he came to power, he held to the old ancestral discipline in his own household, and sought especially to prepare young men of senatorial families for war by giving them a tribunate and the command of a division and experience of camp life.⁸ From time to time, even centuries after Augustus, certain emperors zealously maintained the old ideal of military exercise by personal example. Thus, Hadrian is said to have kept "in training," constantly exercising at arms and throwing the javelin.⁹ In the middle of the fourth century, Constantius Augustus still kept up the old tradition, being skilled with the javelin, the bow, and in all exercises of the foot soldiers.¹⁰

The very fact that writers stressed so much the fidelity of certain leaders to the old discipline suggests the weakening of its hold upon others. Sallust's praise of the soldiers' rigorous discipline in duties of the camp and their "pleasure in handsome arms and war horses" is contrasted with the indulgence in "harlots and revelry."¹¹ Sybaris is weaned from "the sunny Campus," riding in "martial exercises," swimming in Tiber's stream, and using manly weapons.¹² As one turns the pages of imperial centuries, one becomes increasingly aware of the fact that, though there is elaborate praise of training citizens for war as a valuable asset for Rome,¹³ there are fewer and fewer examples of it in practice. Certain of the emperors were, indeed, noted for their prowess in military training and in sports such as hunting, valued for military reasons; but lack of military merit and slight attention to vigorous, physical hardening for war's labors became common. Domitian, for example, was not interested in arms, but was excellent at archery, in which he engaged for sport.¹⁴

In the day of Polybius, the Roman army was made up of four legions of citizen-soldiers, drawn from propertied classes. Toughened by labor on the land in peacetime, these men made excellent soldiers. The infantryman served sixteen years before he became forty-six, or, in time of danger, twenty years; the cavalryman served ten. Military service preceded the holding of any political office. The legion was placed at 4,200, or at 5,000 in time of danger; to each legion were added 300 cavalry.¹⁵ Foot soldiers were allowed two obols per diem; a centurion, four; and a cavalryman, one drachma. A foot soldier was entitled to two-thirds of an Attic medimnus of corn each month; a cavalryman had

⁷ Dio's *Roman History*, xlv, 2; Suetonius: *Augustus*, 94; Plutarch: *Cicero*, 44.

⁸ Suetonius: *Augustus*, 38, 64.

⁹ Spartianus: *Hadrian*, 26.

¹⁰ Ammianus Marcellinus, xxi, 16, 7.

¹¹ Sallust: *War with Catiline*, 7.

¹² Horace: *Odes*, i, 8.

¹³ Juvenal: *Satire* xiv, 70-2.

¹⁴ Suetonius: *Domitian*, 19.

¹⁵ Polybius: *The Histories*, vi, 19-20.

seven *medimni* of barley and two of wheat. The cost of food and clothing was subtracted from their pay. Allies were allowed free rations.¹⁶

To the time of Marius, Roman soldiers were still drawn from the propertied class; but the decline of small farmers, growth of slave labor, and the increase of the proletariat compelled a change in the method of recruitment. Marius turned to volunteers from all classes, and assured them that he was unwilling to live in luxury while treating his troops stingily.¹⁷ His immediate success insured the popularity of the new system, as long as sufficient rewards and satisfactory terms of service could be offered. In employment of the poor for pay lay the beginning of a standing army, for many of the proletariat who had nothing else to do were quite willing to remain in service. The way was also opened for political adventurers to gain power through the army, for poor men were ready to follow the most generous leader. In Caesar's time the soldiers' pay was perhaps equivalent to \$40 or \$50 per annum; even though small, it offered the soldier a more attractive life than that of laborers, whose status had been degraded by slavery.

At the time of Augustus an army of twenty legions, each consisting theoretically of 5,620 infantry, including 120 horse (save in time of great danger), was deemed sufficient to preserve the *Pax Romana*. Tiberius, according to Tacitus, had twenty-five legions; in the second century there were thirty. With the same number of auxiliaries, this would mean an army of 360,000 men.¹⁸ Since the days of Marius it had grown to be a professionalized, regular army, and was made up of men who had volunteered, serving twenty years in the legion and twenty-five years in the auxiliary corps. Regular pay, permanence of service, a share in spoils, a bonus at retirement, allotment of land, and Roman citizenship (an attraction to foreigners who might enter the service) were among the chief rewards. The marriage of soldiers to women of the localities where they were stationed was first tolerated, and later legalized by Septimius Severus.¹⁹

Citizens whose census was under 400 drachmas went into naval service, according to Polybius.²⁰ In 256 B.C., at Ecnomus, the Romans' 330 ships were manned by approximately 150,000—fighters and crews together. A few years before the battle of Actium there were altogether about 1,000 vessels in the hands of the contenders for power; and in eighteen years prior to 31 B.C. almost 1,000 are said to have been destroyed. To maintain the *Pax Romana* and insure the flow of goods to Rome, ten standing fleets, two Italian and eight provincial, were maintained up to near the end of the second century. The total strength

¹⁶ *Ibid.*, vi, 39; Attic *medimnus*, about 12 gallons.

¹⁷ Sallust: *Jugurtha*, 85; Frank: *Roman Imperialism*, pp. 269 f.

¹⁸ Showerman: *Rome and the Romans*, p. 457; for an account of auxiliaries, see Cheesman, *The Auxilia of the Roman Imperial Army*.

¹⁹ Chapot: *Roman World*, pp. 79 ff.

²⁰ Bk. vi, 19.

of these fleets is unknown, but the Rhine fleet, operating on the river and the North Sea, where the heaviest demands were then being made upon sea power, is said to have had 1,000 ships in 16 A.D. Service in the fighting forces of the sea during the early Empire was for twenty-five or twenty-six years.²¹ Human power propelled the Roman vessels, more or less aided by a sail or two. A trireme probably had about 170 at the oars, 20 sailors, and 10 men for combat; the quinquereme had about the same proportion, 310 oarsmen and 65 sailors and fighters. At the oars of their many-banked ships the Romans employed captured enemies, convicts, slaves, freedmen, some of their allies, and any others whom they could force into the laborious, killing toil.²²

Pay, in the early Empire, was 225 *denarii* for ordinary soldiers; 375 for urban cohorts; and 750 for the Praetorian Guard. The pension, on leaving the army, was 12,000 sesterces for legionnaires, and 20,000 for Praetorians. Later emperors increased the pay of soldiers beyond what the treasury could bear. Caracalla's father paid legionnaires 500 *denarii*. Severus Alexander adopted a popular epitome of political wisdom—"The soldier must have a full purse." Unfortunately, no policy of bribe or favor could save him when the soldiers decided to get rid of him. The army did in fact rule the Empire, when it could place the most liberal master on the throne. It forced Nerva to adopt Trajan, and placed Septimius Severus in the palace. One of Severus' gifts to the Praetorians was about £4,000,000. The game of "emperor-making" has been called "the chief proximate cause" of Rome's decline.²³ Ultimately money payments became impossible, and the government resorted to payment in kind.

A paid army, composed of the poorest and some of the worst elements and excluding the best—the senatorials—was doubtless a factor in destroying the military spirit that had marked the armies of the Republic. After the third century that spirit was little more than a memory. There being insufficient Roman volunteers in the late Empire, landed proprietors were compelled to furnish soldiers according to their holdings, just as they were levied upon for horses and pigs. These conscript soldiers came mostly from the *coloni*.²⁴ Opposition by landowners secured a degree of relief in that, in 397, they were authorized to pay 25 *solidi* in lieu of each man demanded by the army. Recruited by compulsion, branded like slaves upon their induction into the army, many sought to avoid service by self-mutilation and by desertion. Between 396 and 412 there were nine edicts regarding punishment of desertion and those who abetted the act. Such conscripts were allowed to marry; this circumstance was a source of

²¹ Sandys: *Companion to Latin Studies*, pp. 496 ff.

²² Showerman: *op. cit.*, pp. 481 ff.

²³ Cary: *History of Rome*, p. 779; Paul-Louis: *Ancient Rome at Work*, p. 222; Lot: *The End of the Ancient World*, p. 58.

²⁴ Dill: *Roman Society in the Last Century of the Western Empire*, pp. 235 f.

new soldier supply, since their children, born into the army, as it were, had no choice—at least after the time of Constantine—but to continue in the occupation of their fathers. The strength of the Roman legion, described by Vegetius as 6,000, fell in reality to about 1,500 men. His ideal and antiquarianism seem to have caused him to portray the army more in terms of the first than of the late fourth century.²⁵

Considering such difficulties of recruitment, with military service a badge of servitude which Romans sought by all possible means to avoid, it is not strange that late barbarian enemies began to enter the Roman army for pay. After all, they had shown themselves the best fighters! Why not pay the best? Six years after Adrianople (378) there were 40,000 Goths in the Eastern army. After the middle of the fourth century, the quality of Roman armies appears to have depended on the number of barbarians in their ranks. "Julian's army was entirely German," says Lot; it entered the fray in the "boar's head" array of the barbarian and followed numerous German military customs. The best commands came to be held by Germans. Lot concludes that in the time of Syagrius, "King of the Romans" (464-486), it was necessary for a commander to "speak German in order to be understood by the best 'Roman' soldiers of Gaul!" Ever since Augustus, of course, Germans had been in the armed services to some extent; after Constantine, the "Roman army" became little more than a band of armed men, paid for their service in the Roman name.²⁶

At the time of Polybius the youngest soldiers (*velites*) of the legion carried a sword, a javelin, and a small round shield (*parma*), and wore a plain helm. The *hastati* were equipped with a complete panoply, having a convex shield (*scutum*) four feet long and two and a half wide; a sword, suitable for thrusting; two heavy spears; a brass helm and greaves; and a breastplate of brass, or a coat of chain mail. The *principes* and *triarii* had the same armor, save that the latter carried long spears (*hastae*) instead of the *pila*. The cavalry was armed like that of Greece in Polybius' day.²⁷

With relatively minor modifications, the Roman legions of the Empire used equipment similar to that at the close of the Republic.²⁸ Since the days of Archimedes at Syracuse (214 B.C.) the Romans had good reason to know something of the value of missile weapons.²⁹ Though in siege they used the ram, the *ballista*, the smaller *onager*, and the catapult, their employment of slings and bows was apparently chiefly in the hands of their auxiliaries, such as

²⁵ Oman: *op. cit.*, pp. 8 f.; Lot: *op. cit.*, p. 105; Cary: *op. cit.*, p. 708.

²⁶ Lot: *op. cit.*, pp. 106, 231, 234 f.; Dill: *op. cit.*, pp. 235 f.

²⁷ Bk. vi, 21-3, 25; Couissin: *Les Armes Romaines*, *passim*.

²⁸ Parker: *The Roman Legions*, pp. 250 ff.; Gibbon: *The Decline and Fall of the Roman Empire*, I, 55 ff.

²⁹ Livy, xxiv, 34; Plutarch: *Marcellus*, 14-7.

the Balearic slingers and Syrian bowmen.³⁰ Vegetius says that, in his day, the legionnaires had ceased wearing helm and cuirass because of their weight in reviews and sham battles. The real reason, probably, was that it had been found impossible to resist barbarian cavalry with the organization and weapons of earlier days; hence, more and more use was being made of missile weapons. In the fifth century the Roman army's equipment was much like that of their former enemies—soldiers on horseback, fighting with lance and bow. The forces of Rieimer and Aetius who met the Huns at Chalons were thus armed.³¹

The discipline and courage of the Roman army at its best evoked the praise of many competent judges. Polybius says that the Romans had an excellent way of teaching young recruits to face danger boldly, namely, by calling forward before the troops the most courageous, who had voluntarily and deliberately risked danger, and publicly praising their heroic acts and distributing appropriate prizes, a spear, a cup, horse trappings—even a "crown of gold" to him who first scaled the wall in storming a city.³² The army's very name (*exercitus*), as Cicero says, suggests its discipline, its toil, the march, the bearing of heavy burdens—more than two weeks' provisions, stakes for entrenchment, shield, sword, and helm. "Look at the training of the legions, the double, the attack, the battle-cry, what an amount of toil it means! Hence comes the courage in battle that makes them ready to face wounds. Bring up a force of untrained soldiers of equal courage: they will seem like women. . . . Recruits have usually the advantage in age, but it is habit which teaches men to endure toil and despise wounds."³³

Josephus, writing a history of the "Jewish War," expressed his admiration for Roman military training, and described it thus: ". . . Their nation does not wait for the outbreak of war to give men their first lesson in arms; they do not sit with folded hands in peace time only to put them in motion in the hour of need. On the contrary, as though they had been born with weapons in hand, they never have a truce from training, never wait for emergencies to arise. Moreover, their peace manoeuvres are no less strenuous than veritable warfare; each soldier daily throws all his energy into his drill, as though he were in action. Hence that perfect ease with which they sustain the shock of battle: no confusion breaks their customary formation, no panic paralyses, no fatigue exhausts them; and as their opponents cannot match these qualities, victory is the invariable and certain consequence. Indeed, it would not be wrong to describe their manoeuvres as bloodless combats and their combats as sanguinary

³⁰ Showerman: *op. cit.*, pp. 458 f.

³¹ Oman: *op. cit.*, p. 11.

³² Bk. vi, 39.

³³ *Tusculan Disputations*, II, 15-6. Trans. by J. E. King. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

manoeuvres." ³⁴ The strenuous training prescribed by Scipio for naval and land forces during lulls between engagements at Carthage, as described by Polybius and Livy, supports Josephus' view that the Romans had "never a truce from training." ³⁵

Though Vegetius wrote ostensibly of his own times in his *Epitoma Rei Militaris*, the recruits' laborious training, which he depicted, ³⁶ was probably more closely pertinent to the army of centuries past. Strenuous exercise of all kinds is urged as necessary to toughen men to pain and toil; they must be inured to heat and cold, that they may not become sick from being unprepared for the hard uncertainties of war. Caesar is said to have had poor health in certain respects, but found a remedy for it in marches, simple diet, and sleeping in the open air. ³⁷ Soldiers should know a trade and be hardened by natural labor. They must be able to build fortifications, bridges, palisades, and dig ditches and tunnels. Dio says that Roman soldiers constantly practiced building pontoon bridges, just as they perfected themselves in all other military exercises. ³⁸ Polybius ³⁹ describes the Roman method of building palisades with stakes which the soldiers carried with them. In the school of arms described by Vegetius, the young Roman is made strong by wrestling, jumping ditches, throwing the spear, using shield, axe, sword, sling, and bow, and by bearing heavy burdens. The use of slings and bows was not extensive in Caesar's time, but became more important when Rome's armies learned that they must use missiles against their mounted foes. ⁴⁰ The soldier must be able to swim across rivers and endure a long march under heavy burdens. Judson estimates the day's march as from fourteen to nineteen miles; the weight carried by the infantryman may have ranged from thirty to forty-five pounds, depending on the amount of rations, exclusive of armor. ⁴¹ Throwing the javelin on horseback required special training; according to Pliny, his uncle wrote a treatise on the subject. ⁴² The foot soldier must be able to throw the javelin even on the run, since the running attack gave an advantageous impetus to the onslaught.

When the power of Rome had brought a more or less submissive peace to her realm, the greatest test of the Roman army came: Could it long remain strong, without the exercise, the incentive of real warfare, the anticipation of

³⁴ *The Jewish War*, III, 5, 1. Josephus, trans. by H. St. J. Thackeray and R. Marcus. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

³⁵ Polybius, x, 20; Livy, xxvi, 51.

³⁶ Bk. I.

³⁷ Plutarch: Caesar, 17.

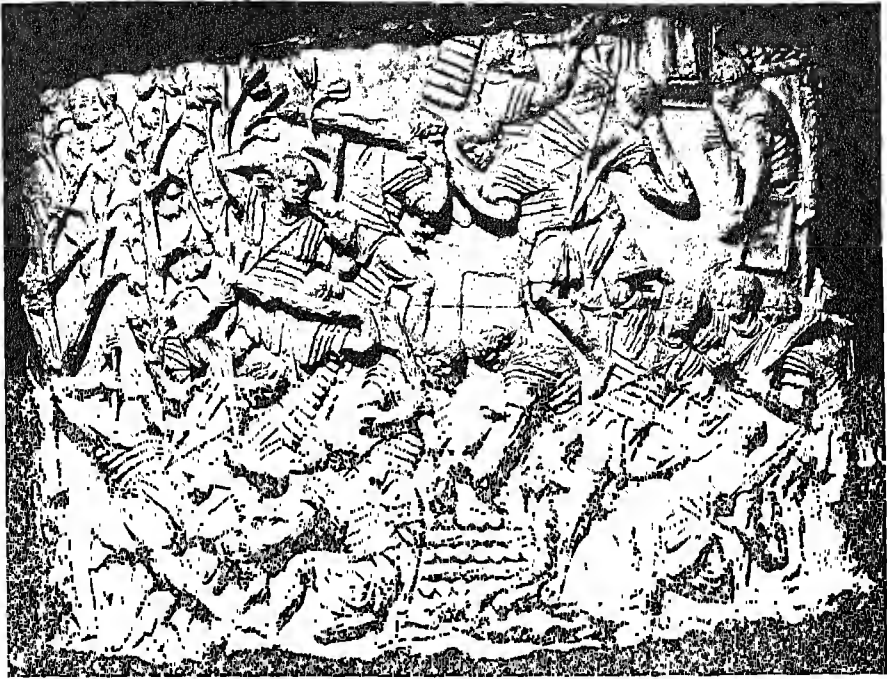
³⁸ Dio, lxxi, 3.

³⁹ Bk. xviii, 18.

⁴⁰ Judson: *Caesar's Army*, p. 58; Oman: *op. cit.*, pp. 9 f.

⁴¹ Judson: *op. cit.*, pp. 36, 63; Vegetius, I, 9.

⁴² *Letters*, III, 5.



ROMAN SOLDIERS FELLING TREES *Trajan's Column, Alinari Photo*
(Courtesy, The Metropolitan Museum of Art, New York)

new conquests? Considered from a short-time view, yes; from a long-time view, no. Vegetius knew full well that Rome had brought all others to her sway by the force of her armies. He also knew that a long peace rendered men, trained to the rigors of war, careless and inattentive thereto. Hence he laid down a pattern of peacetime activities.⁴³ The best leaders, of course, turned to various kinds of labor, and kept up constant drilling to keep men busy who otherwise would have been idle. Roads were built, e.g. from Theveste to Carthage; troops put up their own buildings; and much more work of a constructive character was carried on in north Africa. Vetus (58 A.D.) dug a canal between the Moselle and Saône. Corbulo dug a canal twenty-three miles long between the Meuse and the Rhine, "to keep his soldiers free from sloth. . . ." Curtius Rufus worked the troops in mines, which did not sit well with the warriors.⁴⁴ Less wise and energetic leaders, however, allowed their commands to become easygoing, knowing nothing of work or discipline. Corbulo sought to restore strict discipline among troops in Germany "which had for-

⁴³ *Epitoma Rei Militaris*, I, 1, 26-8; II, 23.

⁴⁴ Tacitus: *Annals*, XI, 20; Parker: *op. cit.*, pp. 224 f.

gotten the labours and toils of the soldier and delighted only in plunder."⁴⁵ The Eastern troops were probably always less well-disciplined than those of the West. Of the Syrian legions, Tacitus wrote: "His [Corbulo's] legions indeed, transferred as they had been from Syria and demoralised by a long peace, endured most impatiently the duties of a Roman camp. It was well known that that army contained veterans who had never been on piquet duty or on night guard, to whom the rampart and the fosse were new and strange sights, men without helmets or breast-plates, sleek money-making traders, who had served all their time in towns."⁴⁶

While regimentation of the soldiers through constant drilling and practice in all kinds of employments was a means to good behavior, the strictest discipline was also maintained by harsh punishment. Vegetius made clear that punishment must be severe.⁴⁷ It was "an inflexible maxim of Roman discipline," says Gibbon, "that a good soldier should dread his officers far more than the enemy."⁴⁸ Polybius was impressed with the strictness of discipline and severity of punishments in his day. A general could punish with death insubordination, mutiny, and desertion on the battlefield. Decimation might be resorted to in case of a legion or cohort which deserted. For insubordination, troops might be compelled to camp outside the protected area, where they would be first to meet the attack of enemies. Polybius describes the punishment by *bastinado*, meted out to those found guilty of negligence in guard duty, stealing anything from the camp, giving false testimony, self-abuse, or having already been punished three times for the same offense: "The tribune takes a cudgel and just touches the condemned man with it, after which all in the camp beat or stone him, in most cases dispatching him in the camp itself. But even those who manage to escape are not saved thereby: impossible! for they are not allowed to return to their homes, and none of the family would dare to receive such a man in his house. So that those who have once fallen into this misfortune are utterly ruined. The same punishment is inflicted on the *optio* and on the *praefect* of the squadron, if they do not give the proper orders at the right time to the patrols and the *praefect* of the next squadron. Thus, owing to the extreme severity and inevitableness of the penalty, the night watches of the Roman army are most scrupulously kept,"⁴⁹ Boasting of one's valor to gain distinction, leaving a covering force because of fear, and throwing

⁴⁵ Tacitus: *Annals*, xi, 18.

⁴⁶ *Annals*, xiii, 35. Trans. by A. J. Church and W. J. Brodribb. Courtesy of Macmillan & Co., Ltd., London, and The Macmillan Company, New York.

⁴⁷ Bk. iii, 10.

⁴⁸ *Op. cit.*, i, 53.

⁴⁹ Polybius, vi, 37. Trans. by W. R. Paton. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

away arms in battle, were regarded as disgraceful, and many would remain in a covering force and face certain death rather than risk punishment for leaving it. Others, having lost sword or shield in the fray, would risk life to recover the same rather than face the inevitable disgrace of returning without them.⁵⁰

Numerous changes occurred near the end of the Republic, which tended to undermine discipline. Even in the days of Cato the complaint was made that Scipio's generosity undermined the soldiers' simplicity and encouraged them to engage in "wanton pleasures" with pay in excess of their actual need.⁵¹ Leaders whose every expectation for future power depended on their personal hold upon their troops could scarcely enforce as harsh a discipline as those who had no ulterior ends. It is commonly accepted that discipline became laxer during the Civil War. Augustus sought to re-establish it.⁵²

With the establishment of one-man rule and the substitution of mercenaries for the citizen army, however, strict discipline was restored at least for a time. Suetonius informs us that Augustus "exacted the strictest discipline" and gives as instances that he was reluctant to allow even generals to visit their wives; sold a knight who had cut off the thumbs of two sons to render them unfit for military service; dismissed the tenth legion in disgrace for insubordination; decimated cohorts that gave way in battle, and fed the rest barley instead of wheat; and punished centurions, just like ordinary soldiers, with death, if they left their post.⁵³ Tiberius, too, demanded the "strictest discipline" and revived punishments that had fallen into disuse.⁵⁴

While, in general, discipline of the armed forces was doubtless better during the early Empire, it varied much from one régime to another. Pliny (c. 61-113) says that when he himself served in the army as a young man, "it was at a time when courage was suspected, and cowardice at a premium; when the generals were without authority, and the soldiers without awe; when there was neither command nor obedience; when our whole military system was relaxed, disordered, and actually turned upside down—in short, when it was better to forget than to remember its lessons."⁵⁵ Seneca, in sharp contrast, speaks of "those who are in the army" whose "camp discipline prohibits every luxury!"⁵⁶ Spartianus says, on the contrary, that discipline grew slack after Augustus, but a strong Emperor, Hadrian, "kept the soldiers in training just as if war were imminent," hardened them to fatigue, and gave them a personal example of mili-

⁵⁰ *Ibid.*

⁵¹ Plutarch: Cato, 3.

⁵² Judson: *op. cit.*, p. 38; Parker: *op. cit.*, p. 232.

⁵³ Suetonius: Augustus, 24.

⁵⁴ Suetonius: Tiberius, 19.

⁵⁵ Pliny: *Letters*, viii, 14. Trans. by W. Melmoth, rev. by W. M. L. Hutchinson. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁵⁶ *To Helvia*, xii, 2.

tary virtue and simplicity, even going to the extent of eating common soldiers' fare.⁵⁷

Though Pliny and Spartianus are doubtless right in pointing to weakening of discipline after the time of Augustus, it was on the whole restored during the reign of the Antonines. Marcus' military discipline is said to have seemed harsh.⁵⁸ After them, it became weaker and more uncertain than ever before.⁵⁹ Dio Cassius declared that (about 227) the troops were so marked by wantonness, arrogance, and freedom from reproof that those in Mesopotamia killed their leader; and the Praetorians found fault with him because he ruled the Pannonian troops with a strong hand, for they feared that they might be compelled to submit to a like discipline. So serious was the discontent and want of order that Alexander allowed Dio to spend the period of his consulship "somewhere outside of Rome," lest he be killed.⁶⁰ Following Alexander Severus, the third century was marked by constant turmoil, due to an undisciplined army's making and unmaking emperors. The fourth century often witnessed even worse conditions. Ammianus⁶¹ shows the abject fear felt by those leaders who had to pacify troops, angered because of the delay of provisions. To be chosen Emperor by such a lawless soldiery was indeed a "tragic fate" which men might accept as a "decree of death."⁶²

Closely related to the problems of recruiting and disciplining young men to the ways of military life was the development of a number of associations, *collegia*, for young men. Under the Empire encouragement was given to a youth organization, *Juventus*. The desire of Augustus to restore discipline and order to the army doubtless made him friendly to such a movement. These municipal *collegia iuvenum* existed independently and were ultimately to be found in numerous cities of the realm. Their purpose was to train young men for physical and military fitness, and doubtless also to look to their loyalty and religious conformity.⁶³ They flourished best under the Julio-Claudian emperors; and under the Flavians they appeared in the western provinces. After the Flavians, the recruitment of armed forces depended much upon Romanized populations of former hostile provinces, and Rome's sovereigns sought to foster physical fitness, military capacity and loyalty among young men, whether in Gaul, Germany, Spain, or Africa.⁶⁴ Though their purpose is clear, details of physical activi-

⁵⁷ Hadrian, 10.

⁵⁸ Capitolinus: *Marcus Antoninus*, 22.

⁵⁹ Chapot: *op. cit.*, p. 80.

⁶⁰ Dio, Lxxx, 4-5.

⁶¹ Bk. xiv, 10, 4.

⁶² Lot: *op. cit.*, p. 9.

⁶³ Rostovtzeff: *The Social and Economic History of the Roman Empire*, pp. 99, 500 f.; Della Corte: *Iuventvs*; Ziebarth: "Iuvenes," *Real-Encyclopädie*, x, Pt. II, 1357 *et seq.*

⁶⁴ Rostovtzeff: *op. cit.*, pp. 103, 122, 287, 378 f., 551, 610; Ziebarth: *op. cit.*, *loc. cit.*; Della Corte: *op. cit.*



ROMAN CAVALRY Trajan's Column, Alinari Photo
(Courtesy, The Metropolitan Museum of Art, New York)

ties are but little known. Probably they were not much different from those of the Greek *ephebi* and the *gymnasium*, though their membership was not so democratic as that in the *ephebi*. Certainly the exercises of young men on the *Campus Martius* in an earlier day found in these institutions systematic encouragement.

Horsemanship was probably one of the most popular exercises, for the cavalry was an aristocratic branch of military service since the early days of Rome; and the *Juventus* was not only made up of freeborn youth of the best families, but depended also on the patronage of the men of wealth and position. The origin of the game of *Troy*,⁶⁵ often associated with this military organization of youth and one of the most popular equestrian displays at Rome

⁶⁵ Della Corte: *op. cit.*, pp. 29 ff.; Büdinger: "Die Römischen Spiele und der Patriciat," *Sitzungsberichte der Philosophisch-Historischen Classe der Kaiserlichen Akademie der Wissenschaften*, Vol. cxxiii, *Abhandlung*, iii, 28 ff.; Gardiner: *Athletics of the Ancient World*, pp. 126 f.

in the days of the Empire, is uncertain. It may, indeed, have been very old. Virgil, following the archaizing tendency of his age, portrayed the assembly of boys on horseback, under Ascanius' direction: the throng of spectators; clearing the course; the gleaming troops; the sharp crack of the whiplash; the interweaving lines of the riders, wheeling in intricate circles,

Forming a picture of war, an image of actual battle.

Credited by Virgil to the time when the ramparts of Alba Longa were builded, the game was revived in the days of Rome's glory:

Still is the game called "Troy"; still "Trojan" the band of young troopers.⁶⁶

Modern scholars have associated the game with the Etruscan *Truia*, preserved in an inscription on a sixth century Etruscan vase.⁶⁷ Little is known of it, although the parades are often mentioned in imperial times. The earliest historical reference to *Troia* is apparently that of Sulla's day. According to Plutarch, he exhibited the game of Troy and appointed two leaders, one of whom proved unacceptable to the boys, who refused to obey him and demanded Cato the Younger as their leader.⁶⁸ Agrippa performed "Troy" in 40 B.C.⁶⁹ in conjunction with a two-day celebration of Circensian Games. Along with a multitude of other entertainments, when he celebrated his five triumphs, Caesar had the game of Troy performed by two troops, a younger and an older.⁷⁰ Suetonius says that Augustus gave frequent performances of the game of Troy "by older and younger boys, thinking it a time-honoured and worthy custom for the flower of the nobility to become known in this way."⁷¹ At the dedication of a temple to Mars (2 B.C.), the equestrian game of Troy was performed by sons of the best families.⁷² Tiberius as a youth at the age of puberty (*pubescens*) took part in the Troy game, being leader of the older group of boys;⁷³ Caligula, eccentric in many ways, exhibited the game of Troy along with panther-baiting between races at the circus.⁷⁴ Claudius exhibited the *Troia* along with races and beast hunts.⁷⁵ Nero, when but a "young, half-grown boy," participated in it at a circus performance with marked success.⁷⁶

That riding in the *Troia* involved some danger is evident from Suetonius'

⁶⁶ *Aeneid*, v, 548-603.

⁶⁷ Della Corte: *op. cit.*, p. 30.

⁶⁸ *Cato the Younger*, 3.

⁶⁹ Dio, XLVIII, 20.

⁷⁰ Suetonius: *Julius*, 39.

⁷¹ *Augustus*, 43. Trans. by J. C. Rolfe. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁷² Dio, LV, 10.

⁷³ Suetonius: *Tiberius*, 6.

⁷⁴ Suetonius: *Caligula*, 18.

⁷⁵ Suetonius: *Claudius*, 21.

⁷⁶ Suetonius: *Nero*, 7.

references to a protest made by Pollio to Augustus because his grandson had been injured, and also from the fact that Nonius Asprenas was lamed in the game. That it was not a serious part of training, but a public spectacle, is suggested by Suetonius, who says that Augustus gave up that sort of entertainment soon after because of the complaints.⁷⁷

⁷⁷ Suetonius: *Augustus*, 43.

ROMAN RECREATION

CONFLUENCE OF GREEK AND ROMAN PHYSICAL CULTURE

While the intellectual influence of Hellas was remaking the mind of the Romans, the cult of the body, which had made great progress in Hellenic cities, also began to penetrate Roman life. This infiltration of physical culture was slow, and the amalgamation of Greek and Roman elements was never fully consummated. Nevertheless, after Roman contact with the Greeks had once been established, it was inevitable that the old Roman physical education should undergo a marked change. The slow tempo and the imperfect character of such fusion as did take place were due in considerable degree to differences in the life of the two peoples. Chief of these were the eminently practical bent of the Romans, their continuous pursuit of war as an instrument of empire-building, and their lack of an ancient tradition of sports, such as the Greeks enshrined in the Homeric poems and in great athletic festivals. The contests which Virgil introduced into the *Aeneid* were more Greek than Roman. War at once destroyed the freedom of Italian cities, which might have developed competitive athletics, as had been done in Greece, and brutalized the Romans to such a degree that they preferred the bloody excitements of the arena to the milder entertainment of athletic competitions. Doubtless, too, the degenerate character of Greek athletic contests at the time of the Roman conquests and the evident military weakness of the Greeks inspired contempt among the conquerors for the practices of the conquered. Why should they hasten to approve that which seemed to have been of slight utility to its creators?

Physical culture in the early Republic served utilitarian ends almost entirely — was a discipline to labor on the land and service on the field of Mars. Such physical exercises and sports as formed a valuable, preliminary conditioner for these activities of adult life were approved and energetically practiced. Like Sparta, Rome subordinated natural play tendencies to military ends. To par-

ticipate in physical exercise beyond this aim, the practical-minded Romans had little inclination or leisure. Of themselves they instituted no competitive sports between cities, built no gymnasium or palaestra where men might train for such competitions. These came later, in some measure, with Greek influence; but competitions at Rome and in thoroughly Romanized cities were spectacles to be applauded, not contests for dignified Roman citizens to enter. It has been claimed that the difference between Greek and Roman views of sports is implied in the terms *ludi* and ἀγῶνες. Roman *ludi* were amusements, provided by "slaves or hirelings" for their betters; Greek ἀγῶνες were contests between free men.¹ Gibbon contrasted the Greek and Roman views thus: "The most eminent of the Greeks were actors, the Romans were merely spectators."² Butler held that ". . . in their love of sport, as in their love of art and of nature, the Romans followed but never rivalled the Greeks."³ A Roman citizen, whether of high or low degree, would have been disgraced by a public appearance in the lists. The injunction, "Die, Diagoras, for you are not destined to ascend to heaven" (addressed to him when he had seen his two sons triumph in one day at Olympia) would have meant little or nothing to a Roman. Cicero regarded the Greek love of physical contests with disapproval: "Such achievements the Greeks think glorious—too much so perhaps. . . ." ⁴ Elsewhere he said: "At this very day, [when philosophers speak in all the gymnasia, the Greeks] would still rather hear the discus than a philosopher; and as soon as it begins to sound, they all desert the philosopher in the middle of his discourse . . . to anoint themselves for exercise. . . ." ⁵

The Romans had had some opportunity to become acquainted with Greek contests from early days. Greek influence upon the Etruscans has been noted;⁶ likewise, in southern Italy, after the war with Pyrrhus, the Romans had ample opportunity to witness Greek contests in such cities as Tarentum and Paestum. Greek customs soon began to be accepted by prominent Romans. Scipio Africanus (c. 237–183 B.C.) introduced the Greek habit of shaving and frequented the palaestra. Aemilius Paulus (c. 229–160 B.C.) trained his sons after the Greek pattern, though he did not neglect the old ancestral discipline. Moreover, he gained favor with the Greeks by giving games and sacrificing to the gods, and is said to have compared the capacity for arranging games well with ability to marshal troops in battle.⁷ It was not until 186 B.C., however, according to

¹ Gardiner: *Athletics of the Ancient World*, p. 119.

² Gibbon: *The Decline and Fall of the Roman Empire*, III, 422.

³ Sport in *Classic Times*, p. 207.

⁴ *Tusculan Disputations*, I, 46. Trans. by J. E. King, The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁵ On *Oratory*, II, 5.

⁶ *Supra*, p. 482; Cicero: *The Republic*, II, 34, 39.

⁷ Plutarch: *Aemilius Paulus*, 6, 28; Polybius: *The Histories*, xxx, 14.

Livy, that "a contest of athletes," probably at wrestling or boxing, was first introduced in Rome.⁸ Antony played the rôle of gymnasiarch for the Athenians.⁹ Augustus exhibited contests of armed warriors in his sons' name at the Panathenian festival, was most attentive to the exercises of the ephebi at Capreae, and enjoined the Romans to use the Greek dress and language and the Greeks to use the Roman.¹⁰ In Varro's day (116-27 B.C.) "the citified gymnasia of the Greeks" had taken hold in Rome; Romans had abandoned sickle and plow, and had gone to the city. Every villa must have its own gymnasium, palaestra, dressing rooms, and other apartments.¹¹ Cicero's delighted concern over the palaestra and gymnasium at his own place and at his brother's, tends to support Varro's views as to how Greek ways were getting on, notwithstanding frequent disparaging references to Greek athletics made by Cicero elsewhere. To Atticus he writes (68 B.C.): Pick up "any articles of vertu fit for my Gymnasium" that can be found. Early in 67 B.C. he is enthusiastic about certain "figures of Hermes in Pentelic marble with bronze heads," and has raised 20,400 sesterces for statues of Megaric marble. As to the things intended for the gymnasium he says: "The more the merrier, the sooner the better." Again he writes that he is impatiently waiting for the statues, his "purse is long enough," and he wants to indulge this "little weakness." The same year, writing as he sits in the palaestra, he again urges Atticus to speed statues for beautifying the palaestra and gymnasium. Years later he informed Atticus that "in these days, when every honest man's life hangs in the balance, I set high store by the enjoyment of my Palatine palaestra for a summer. . . ." ¹² To his brother, Cicero writes with almost equal enthusiasm about the excellence of the statues, palaestra, pond, and other arrangements at Arcanum, one of Quintus' estates—it's all Cæsar could wish, or even someone "more fastidious." ¹³

Under the Empire many rulers exhibited a marked philhellenism, and this tendency, combined with open-handed generosity in expenditures, resulted in the building of numerous gymnasia, baths, and other aids to the enjoyment of new-found peace and leisure, not only at Rome but throughout the more populous parts of the realm. Agrippa built a sudatorium about 25 B.C., to which the name Laconian was given, because the Lacedaemonians "had a greater reputation at that time than anybody else for stripping and exercising after anointing themselves with oil." ¹⁴ Damascus was given a gymnasium by Herod.

⁸ Bk. xxxix, 22.

⁹ Plutarch: *Antony*, 33.

¹⁰ Suetonius: *Augustus*, 98; *Dio's Roman History*, LIV, 28.

¹¹ Varro: *On Agriculture*, II, introduction.

¹² *Letters to Atticus*, I, 6, 8-10; II, 4. Trans. by E. O. Winstedt. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹³ *Letters to His Brother Quintus*, III, 1 and 9.

¹⁴ *Dio*, LIII, 27.

Nero is said to have established the first permanent gymnasium at Rome (60 A.D.) and furnished oil to knights and senators "after the lax fashion of the Greeks."¹⁵ In the second century the popularity of gymnasia became still greater, and every city wanted as much as possible to spend on such public institutions. Trajan tells Pliny that the Greeks "have a foible for Gymnasia; hence, perhaps, the citizens of Nicaea have been somewhat too ambitious in planning one; but they must be contented with such a one as will be sufficient to answer their occasions."¹⁶ Every province, he goes on to say, has plenty of ingenious, skillful architects; and it is not necessary to send to Rome for them, for usually such specialists come from Greece to Rome.

The gymnasium and its activities came to occupy a most important place in the Hellenic-Roman world. It is said, indeed, that having a gymnasium distinguished the "metropolis" from other populous villages in Egypt. The most important city official was the gymnasiarch, who with numerous assistants supervised the games, provided oil, heated the baths, and attended to all matters pertaining thereto. Despite the fact that his office entailed heavy expenditures, the position was much sought after and was often "monopolized by certain families" which constituted "a sort of local nobility." In some cases endowments were provided, and donors may have become "permanent gymnasiarchs."¹⁷ The dignity of the office is suggested by the fact that Antony, when celebrating a victory, served as gymnasiarch for the Athenians, wearing "a Greek robe and white shoes," and carrying the wand of office.¹⁸

Changes in habits of bathing kept pace with other innovations at Rome. In olden times, the sturdy Romans bathed only their arms and legs daily, and had a complete bath but once a week. In the last century of the Republic, the daily bath had become the rule. As a bathing place the Tiber alone sufficed at first; but when the growing city was supplied by aqueducts with more abundant water, cold swimming pools (piscinæ) were built, the first in 312 B.C. All early bathing establishments were small and crude, compared with later standards. Scipio had at Linternum only a small bath, "buried in darkness according to the old style. . . ." ¹⁹ With the advent of great fortunes and the influx of Greek customs, however, the villas of the rich had spacious, luxurious baths with which palaestra and gymnasium were commonly associated. Cicero assures Atticus that he will have the bath heated in anticipation of his arrival.²⁰ Of this extravagance Seneca declared: "We think ourselves poor and mean if our

¹⁵ Tacitus: *Annals*, xiv, 47; Suetonius: *Nero*, 12; Chapot: *Roman World*, p. 227.

¹⁶ Pliny: *Letters*, x, 40. Trans. by W. Melmoth, rev. by W. M. L. Hutchinson. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁷ Chapot: *op. cit.*, p. 261.

¹⁸ Plutarch: *Antony*, 33.

¹⁹ Becker: *Gallus or Roman Scenes of the Time of Augustus*, p. 366.

²⁰ To Atticus. II. 2.

walls are not resplendent with large and costly mirrors; if our marbles from Alexandria are not set off by mosaics of Numidian stone, if their borders are not faced over on all sides with difficult patterns, arranged in many colours like paintings; if our vaulted ceilings are not buried in glass; if our swimming-pools are not lined with Thasian marble, once a rare and wonderful sight in any temple—pools into which we let down our bodies after they have been drained weak by abundant perspiration; and finally, if the water has not poured from silver spigots. I have so far been speaking of the ordinary bathing-establishments; what shall I say when I come to those of the freedmen? What a vast number of statues, of columns that support nothing, but are built for decoration, merely in order to spend money! And what masses of water that fall crashing from level to level! We have become so luxurious that we will have nothing but precious stones to walk upon.”²¹ Pliny describes the bath at his villa, Laurens, seventeen miles from Rome. From one apartment one enters “. . . the grand and spacious cooling-room belonging to the baths, from the opposite walls of which two basins curve outwards as though the wall were pressed into half-hoops; these are fully large enough, if you consider that the sea is close by. Contiguous to this is the anointing room, the furnace adjoining, and boiler-room; then come two other little bathing-rooms, which are fitted up in an elegant rather than costly manner: annexed to this, is a warm bath of extraordinary workmanship, wherein one may swim, and have a prospect at the same time of the sea. Not far from hence stands the tennis-court, which lies open to the warmth of the afternoon sun.”²²

Wealth, public and private, was turned to the erection of public bathing establishments, to some extent in the late Republic and in vast proportions under the Empire. Public baths (*balneum*, bathroom) began to appear after the Second Punic War; shortly before the close of the pagan era (33 B.C.) there were 170 of them in Rome.²³ Ultimately, it seems, every town of Italy had “at least one public bath.”²⁴ At Pompeii there were three. Pliny says that a small village near his country villa had “no less than three public baths,” which were very convenient if he had not time to prepare his own.²⁵

The building of fine public baths early engaged the attention of Roman emperors. Under Augustus, Agrippa erected the first great *thermae* near the

²¹ Epistle LXXVI, 6-7. Seneca, *Epistulae Morales*, trans. by R. M. Gummere. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

²² Pliny: *Letters*, II, 17. Trans. by W. Melmoth, rev. by W. M. L. Hutchinson. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.; *infra*, p. 672.

²³ Mau: “Bäder,” *Real-Encyclopädie*, II, Pt. II, 2747 et seq.; Marquardt: *Das Privatleben der Römer*, pp. 272, 274; Varro: *On the Latin Language*, IX, 68.

²⁴ Frank: *An Economic Survey of Ancient Rome*, V, 98.

²⁵ *Letters*, II, 17.

Pantheon, on the *Campus Martius*, which were dedicated in 25 B.C. but not actually used until 19 B.C., when the *Aqua Virgo* was ready to supply water.²⁶ These public *thermae* and their long line of successors—those built by Nero (64), Titus (81), Domitian (95), Caracalla (212–217), Alexander Severus, Diocletian (305–306), Constantine, and others—were after the Greek prototype, but they were much more extensive and had elaborate arrangements and paraphernalia of the *palacstra* and *gymnasium*, as well as bathing and swimming facilities of every kind. In fact the bath of Agrippa was called the *Laeonian gymnasium*.²⁷ Building baths, like giving games and other entertainments, was a popular way to win public approval: the more grandiose the baths, the greater the acclaim. The baths of Titus were fit for an emperor, and he bathed in them with commoners sometimes. Severus is said to have built a bath in every part of the city which had none.²⁸ The elaborate baths of Caracalla measured nearly a quarter of a mile on each side, Diocletian outdid even the stupendous structures of Severus and Caracalla. Sixteen hundred marble seats had been provided for bathers in the baths of Caracalla; Diocletian's are said to have had twice that number, and the *natatorium* was two hundred feet long. At Bath, England, there was a quadrangular pool eighty-three feet long and forty in width.²⁹

Public baths were built in far-flung areas of the Empire as well as in Italy and at Rome, as is evident from numerous classical references and from ruins which have been discovered in France, England, Germany, and elsewhere.³⁰ That the building and repair of baths in the provinces provided serious problems for imperial heads to ponder, is evident from Pliny's correspondence with Trajan. He recommends that the *Prusenses* be permitted to repair their "ancient and ruinous bath," which he has examined personally and thinks ought to be rebuilt. Trajan grants the request, provided, first, that it will not be too expensive for the people; and second, that no new taxes be levied and no tax money be diverted from other uses. Again Trajan writes to Pliny about the bath of the *Claudiopolitani*, which "they have placed, it seems, in a very improper situation. . . ." ³¹

Public baths were first of all established for the profit of entrepreneurs. Later they were built by the government, by philanthropically minded citizens, and by combined public and private means. In the course of time, the building and support of public baths is said to have become one of the commonest objects of private philanthropy. The exact, proper construction of the bath seemed to

²⁶ Baumeister: *Denkmäler des Klassischen Altertums*, III, 1510.

²⁷ Dio, III, 27.

²⁸ Suetonius: *Titus*, 8; Lampridius: *Severus Alexander*, 39.

²⁹ Becker: *op. cit.*, p. 376; Breasted: *Ancient Times*, p. 645.

³⁰ Marquardt: *op. cit.*, pp. 276 f.

³¹ Pliny: *Letters*, x, 23–4, 40.

Vitruvius important enough to justify devoting a special chapter to it.³² Though baths were everywhere available, they were generally not free. The cost of admission was, however, extremely small—a quarter of an as at Rome, Seneca informs us.³³ Men at Vipasca, Spain, paid half an as, and women a double amount. Children were admitted free at Rome, but not everywhere. All persons were presumably free to use the public baths, if they could pay the stipulated fee. Fronto says that “gymnasia, and baths, if public ones, are thrown open free to all, but if private, are kept under strong lock and key with a door-keeper to boot, and a fee is exacted from the bathers.”³⁴ In many instances endowment funds were provided, permitting the discontinuance of fees entirely. Such was the case at Bononia; and at Suessa Senonum, free baths were provided for everyone, even female slaves. Agrippa is said to have kept 170 baths open free to the public in 33 B.C.³⁵

The Roman bath was commonly equipped with many rooms, each serving a special purpose: the *apodyterium*, for undressing; the *frigidarium*, a cold bath; the *tepidarium*, a warm room; the *caldarium*, a hot bath; the *laconicum*, a hot room for sweating; the *unctorium*, for anointing the body; the *destrictarium*, where oil and sweat might be removed with the strigil.³⁶ Besides the usual facilities for recreation in the palaestra and swimming pool, a bowling alley, on which stone balls were rolled, was provided in the Stabian baths of Pompeii. The great public baths provided facilities not only for bathing, swimming, and various physical exercises and sports, but also other means of enjoyment. Foods, eating places, and even libraries were provided in them from the time of Agrippa to Constantine. Suetonius says that Augustus composed most of his “Epigrams” at the bath.³⁷ Indeed, the bath became the athletic club of the Romans.

Considering the Roman people's preoccupation with baths and their refinements, it is small matter for wonder that poets devoted their talents to their praise. Statius³⁸ pours out a stream of eloquence over the beauties of the baths of Claudius Etruscus. Even though one came from Baiae, even if he had bathed in Nero's baths, he would not scorn their loveliness. “If you do not bathe in

³² Vitruvius: *On Architecture*, v, 10.

³³ Epistle LXXXVI, 9; Becker: *op. cit.*, pp. 370 f.

³⁴ Fronto, *The Correspondence of Marcus Cornelius*, I, 271. Trans. by C. R. Haines. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

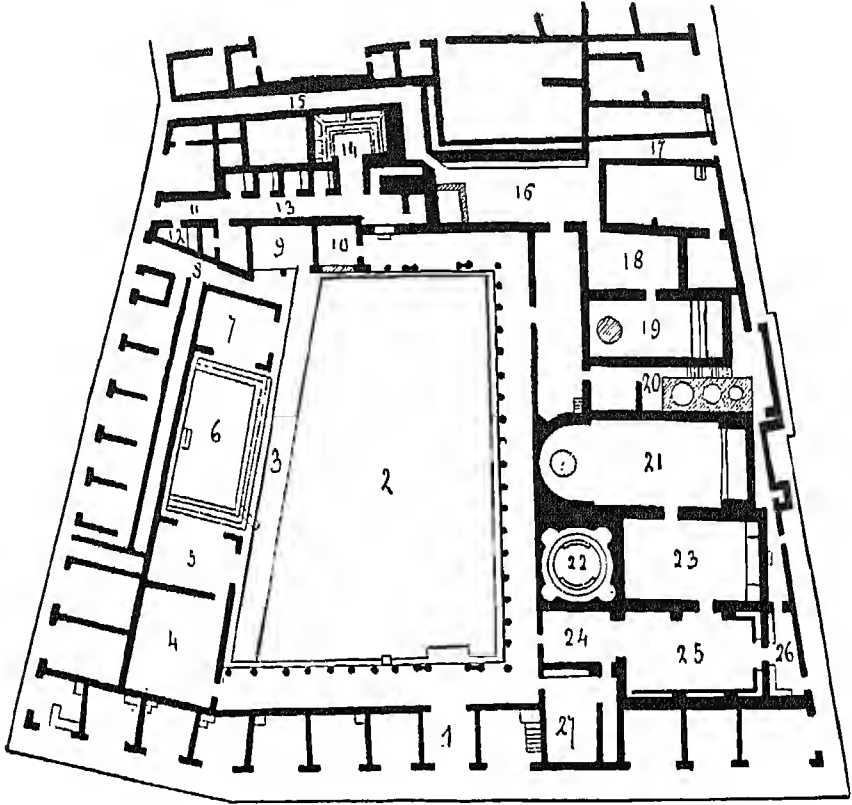
³⁵ Rostovtzeff: *The Social and Economic History of the Roman Empire*, p. 178; Frank: *op. cit.*, v, 104; Dill: *Roman Society from Nero to Marcus Aurelius*, p. 227; Johnston: *The Private Life of the Romans*, pp. 297 f.

³⁶ Mau: *op. cit.*, loc. cit., II, Pt. II, 2750 et seq.

³⁷ Augustus, 85; Becker: *op. cit.*, p. 390.

³⁸ Silvae, I, 5.

the warm baths of Etruscus," says Martial, "you will die unbathed, O-pianus."³⁹ Claudian praises the bath of Quintius, set by the dusty road for the traveler's refreshment.⁴⁰



THE STABIAN BATHS, POMPEII

Pauly's *Real-Encyclopädie*, II, 2751-4, designates certain areas as follows: 1, main entrance; 2, palaestra; 3, flag-paved alley; 9, room where stone balls were found, opening on the alley; 10, supervisor of the palaestra(?); 11, street entrance; 13, hall, off which is a lavatory, 14; 4, dressing-room; 5, 7, wash-rooms with shallow basins; 6, swimming pool; 8, side entrance; 15, 17, street entrances to women's bath; 16-19, bathing facilities for women—16, undressing-room, with a cold bath basin in corner; 18, tepidarium; 19, caldarium, with tub and wash basin; 21-25, men's baths—24, 25, undressing-rooms; 26, 27, anterooms, with benches for waiting servants; 20, heat plant; 21, caldarium with tub and wash basin; 22, frigidarium; 23, tepidarium.

The Roman's contempt for Greek gymnastics, dancing, and music is shown in many ways. Indications of disapproval appeared early and continued long; even when the old Roman system was quite devoid of vitality, criticism of the

³⁹ Epigrams, vi, 42.

⁴⁰ Claudian; *Shorter Poems*, 12.

new was vigorous though ineffective. Scipio aroused comment, because he gave time to the palaestra and walked about the gymnasium in a Greek robe and slippers.⁴¹ Cicero exclaims at the absurdity of the Greek "system of exercise for young men in gymnasiums! How far from rigorous is their system of military training for the cphēbi!"⁴² Elsewhere he notes that "very often the movements learned in the Palaestra are offensive. . . ." ⁴³ Horace recognizes that the "soldierly exercises of Rome are too fatiguing for one accustomed to Greek ways."⁴⁴ Again he speaks disparagingly of the Roman boy who cannot "sit a horse, and is afraid to hunt" but can "play with the Greek hoop."⁴⁵ Martial speaks contemptuously of the "wanton wrestling-grounds" of Lacedaemon.⁴⁶ Tacitus notes the "lax tone" at Rome, the youths' devotion to athletic sports; and he criticizes the Romans for stripping themselves and substituting boxing-gloves for "the arms of legitimate warfare."⁴⁷ Plutarch declares that the soldiers of Vitellius ridiculed those of Otho, calling them "actors, dancers, spectators at Pythian and Olympian games, men who had never known or seen a campaign or fighting" and "would not openly enter a conflict and battle of men."⁴⁸ The Greek habit of stripping for their athletic training and contests was a prolific source of criticism on the part of the Romans. Cicero quotes Ennius' line with approval, "Shame's beginning is the stripping of men's bodies openly," and declares that immoral practices had their origin in Greek gymnasia.⁴⁹ Again he refers approvingly to the old Roman practice, saying that "sons grown up to manhood do not bathe along with their fathers, nor sons-in-law with their fathers-in-law."⁵⁰

The advent of Greek dancing likewise called forth sharp disapproval from Romans. Cornelius Nepos notes that the Greeks approved of music and dancing, while Romans held music to be "unsuited to a personage of importance," and thought dancing a vice.⁵¹ Dancing is placed by Cicero among the illiberal occupations; one should not rashly "call a consul of the Roman people a dancer . . . for no man, one may almost say, ever dances when sober, unless perhaps he be a madman. . . ." ⁵² Even if one were offered a legacy, on the

⁴¹ *Livy*, xxix, 19.

⁴² *Republic*, iv, 4. Trans. by C. W. Keyes. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁴³ *Offices*, i, 36.

⁴⁴ *Satires*, ii, 2. From *Horace for English Readers*, translated by E. C. Wickham (The Clarendon Press).

⁴⁵ *Odes*, iii, 24.

⁴⁶ *Bk. iv*, 55.

⁴⁷ *Annals*, xiv, 20.

⁴⁸ Plutarch: *Otho*, 6. Trans. by B. Perrin. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁴⁹ *Tusculan Disputations*, iv, 33.

⁵⁰ *Offices*, i, 35; Plutarch: *Cato*, 20.

⁵¹ *Epaminondas*, 1.

⁵² Cicero: *Murena*, 6; *Offices*, i, 42.

condition that "he should dance openly by daylight in the forum," he should refuse it; or, if he promised to do so, then he should break his word rather than dance, unless perchance by dancing he should be able to make some contribution "to some great occasion of the state"—in which case "it would not be disgraceful even to dance. . . ." ⁵³

Notwithstanding there was much criticism of it, dancing grew in popularity. Scipio, although himself criticized for frequenting the palæstra, expressed alarm that Roman boys and girls were learning dances unfit for freeborn youth. Sempronia, it was said, could dance better than "an honest woman need." Statius recognizes the advantages of dancing and music as accomplishments for the girl about to marry.⁵⁴ Quintilian finds a limited justification for dancing in the training of the orator, though he does not want gestures of the speaker to be patterned on movements of the dance.⁵⁵ Columella laments that the Romans study dancing and other polite accomplishments but have neither students nor teachers of the science of agriculture.⁵⁶ As for dancing in public, Cicero could not have imagined that within a century Caligula, a ruler of the Roman state, would stoop even to that;⁵⁷ and that, in Nero's reign, dancing would become so polite and common as to completely eclipse the once-famed *gravitas* of the old Romans.

PHILOSOPHERS GLANCE AT PHYSICAL CULTURE

Roman philosophy was more marked by its borrowing from the Greeks than for its originality. In respect to philosophical views on physical culture the same was to some extent true; but, though their physical habits were greatly modified by the infiltration of Greek practices, Roman conceptions of physical education never came close to the Greek. It would scarcely be true to say that the Romans ever developed a philosophy of physical education, other than that which was implicit in their early vigorous life of the farm and the camp. The influence of this utilitarian outlook is constantly felt in their views of physical exercise.

Roman thought in respect to physical exercise is often marked by a negativism; the philosopher is busy decrying Greek principles, to which he traces many of the evils he finds at Rome. Cicero, as has been seen, has much of this negative criticism; but there are positive views, too, in his work that require notice.

⁵³ *Offices*, III, 24.

⁵⁴ Sallust: *War with Catiline*, 25; Friedländer: *Roman Life and Manners under the Early Empire*, I, 231; Gwynn: *Roman Education from Cicero to Quintilian*, p. 55.

⁵⁵ *The Institutio Oratoria*, I, 11, 15-9.

⁵⁶ *Of Husbandry*, I, preface.

⁵⁷ Suetonius: *Caligula*, 54.

Speaking of man's nature, Cicero lays hold of a fundamental principle of life, a principle which operates throughout the whole and in all the parts of his being. The whole figure of man and its several parts are adapted to man's nature, and it is necessary that the organs be healthy and vigorous. Basic in man's body is the principle of action, by which the parts and the whole function "in harmony with nature." There is in man, and also in every living creature, "a positive craving for constant activity. Perpetual repose is unendurable on any terms. This is a fact that may be readily detected in children of the tenderest age. . . . Nature reveals her plan . . . most clearly in childhood. Even infants, we notice, are incapable of keeping still. Children of a somewhat more advanced age delight in games involving considerable exertion, from which not even fear of punishment can restrain them. And this passion for activity grows as they grow older. The prospect of the most delightful dreams would not reconcile us to falling asleep for ever. . . ." ⁵⁸ Even the least ambitious and vigorous, even the idlers, constantly seek something to do: a game board, a spectacle to watch, someone to chat with—these are needed to occupy their time. Private business, public, political, and military affairs, and devotion to learning are the chief avenues through which man finds the exercise of his various drives to activity.

Cicero holds that, as man's bodily structure surpasses that of other animals, so his mind is equipped both with senses and also the "predominant factor of intellect, which commands the obedience of the whole of man's nature . . ."; and the "attributes of the body are not comparable in importance with the parts of the mind. . . ." ⁵⁹ This scale of values helps to explain Cicero's views of many matters. Successes won "by the use of our intellect and reasoning power are more gratifying than those which come from physical excellence." ⁶⁰ Again, he says, "mere corporeal pleasure is unworthy the excellency of man's nature . . . [and one] ought to be extremely observant of limits in its indulgence." Satisfaction of physical desires should always be with respect to "our health and our strength"; everything should contribute to and conform to the "excellency and dignity of our nature," and what pertains to voluptuousness, effeminacy, and immodesty should be avoided. Our appetites need to be "contracted and mitigated." "Sport and merriment" are not man's true end, but they have a proper place; we ought, therefore, "to use them as we do sleep and other kinds of repose, when we have dispatched our weighty and important affairs." The sports of the *Campus Martius* and hunting are, to Cicero's way

⁵⁸ Cicero: *De Finibus Bonorum et Malorum*, v, 12, 20. Trans. by H. Rackham. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁵⁹ *Ibid.*, v, 11-3.

⁶⁰ Abbott: *Society and Politics in Ancient Rome*, pp. 199 f.

of thinking, "creditable examples"⁶¹ of recreation and pleasure. Constantly the goal of utility is kept in mind: even the orator—his perfect man—will be able to play his part better if his gestures are strong and manly, not imitations of the theater and actors but rather of the camp and the palaestra.⁶²

The disciplinary doctrines of Stoicism appealed strongly to the Roman, whose whole life, until near the end of the Republic, had been a discipline of toil. As his had not been a life of pleasure, but one of painful struggle, a philosophy of severe discipline seemed eminently sound and sensible. Spartan contempt of pain was a significant object lesson. Cicero says that "pain seems to be the most active antagonist of virtue. . . ." The way to gain virtue is to conquer pain. Will the "wise and steadfast man" give way before pain, when Spartan boys cry not, though they be "mangled with painful blows"?⁶³ Lycurgus' training of boys to hardship, by hunting, running, and exposure to heat, cold, hunger, and thirst, evidently met with Cicero's approval.⁶⁴ Marcus Aurelius says that he learned from Diogenetus to desire a "plank bed and skin, and whatever else of the kind belongs to the Grecian discipline."⁶⁵

Old Roman practice, as well as Greek precedent and the teachings of Plato, to whom Cicero was strongly drawn, would seem to compel him to devote some attention to physical exercise in his works on the state. It is significant that the references are relatively slight, and pertain largely to public exhibitions and their control. The Republic is almost wholly devoid of references to physical exercise, but in brief space the Greek system is condemned. Cicero notes, of course, that Numa Pompilius established games as a part of his effort to reform and regulate the life of the Romans.⁶⁶ In the Laws, Cicero also provides that the aediles shall, among other duties, have charge "of the customary games." At public games in the theater, held without chariot racing or athletic games, the pleasure of the public is to be provided for in moderation by "song to the music of harp and flute," "combined with honour to the gods." Moderation is insisted on, for music has the power to rouse the languid, calm the excited, restrain desires, or give them "free rein." The public games in the circus are to include "contests of body with body"—that is, such athletic events as boxing, wrestling, and running—and horse racing.⁶⁷

Sallust's philosophy, not unlike that of Cicero, stresses the utility and propriety of physical exercise as a means to an end, not an end in itself: "I have

⁶¹ *Offices*, I, 29-30.

⁶² *On Oratory*, III, 59.

⁶³ *Tusculan Disputations*, V, 27.

⁶⁴ *Ibid.*, II, 14; V, 34.

⁶⁵ *The Meditations of the Emperor*, I, 6.

⁶⁶ *Republic*, II, 14; IV, 4.

⁶⁷ *Laws*, II, 9, 22; 15, 38; III, 3, 7.

no great admiration for mere athletic training or muscular prowess: but a man whose mind has sovereign control over a body neither weakened by self-indulgence nor debased by wealth to sloth and luxury may take his sport on the mountain or on the sea, and I will admire his body rejoicing in hard work and his limbs growing under his toil. . . ." ⁶⁸

Quintilian's view of physical activity differs little from that of Cicero, both in positive and negative aspects. He regards the tendency to "play in the young" as an index of vitality, likely to be associated with quickness of mind, whereas one who lacks "the impulse most natural to boys" is likely to be gloomy, depressed, and dull at study. ⁶⁹ Gymnastics can be of value in the education of the complete man—the orator. Justification for some attention to gymnastics is found in Greek authors like Plato and Socrates, and also in the priestly dances approved by the early Romans. Quintilian does not want the gestures of oratory to be modeled on the dance: "Such training should not extend beyond the years of boyhood, and even boys should not devote too much time to it." But "such boyish exercises should continue to exert a certain influence, and . . . something of the grace which we acquired as learners should attend us in after life. . . ." Probably no Roman went so far as did Quintilian in admitting dancing as a proper part of education. As for physical development in general, one must avoid, certainly, the extremes of those who spend their life rubbing in oil and drinking in wine and killing the mind by too much concern for the body. ⁷⁰ The elaborate attention that some in his day paid to the physical cult he regarded as nothing short of "insane." ⁷¹ Gymnastics have left, however, an excellent model of that which is proper—a pattern of all-round training, exemplified in Nicostratus who was trained so evenly and well in both boxing and wrestling that in the space of a few days he won the prize in both events—a model useful not only to the physical trainer, but worthy to be imitated by the teacher of oratory. ⁷²

The more completely that Greek practices swept the field, the more bitterly did some of the keenest Romans condemn them. Greek gymnastics, professional athleticism, and hot baths were all doubtless associated by many in a causal relationship with the moral degeneracy of Nero's day. Seneca wants to know "what 'liberal' element is there in these contemptible vomiters of our day, whose bodies are fed to fatness while their minds are thin and dull? Or do we really believe that the training which they give is 'liberal' for the young men of Rome, who used to be taught by our ancestors to stand straight and hurl a

⁶⁸ Butler: *op. cit.*, p. 201.

⁶⁹ Quintilian, I, 3, 10. Trans. by H. E. Butler. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁷⁰ *Ibid.*, I, 11, 15-9.

⁷¹ *Ibid.*, XII, 11, 18.

⁷² *Ibid.*, II, 8, 14.

spear, to wield a pike, to guide a horse, and to handle weapons? Our ancestors used to teach their children nothing that could be learned while lying down." ⁷³ Seneca excludes from "liberal studies wrestling and all knowledge . . . compounded of oil and mud. . . ." ⁷⁴ His professed concern is for moral rectitude. Even the old stress on strenuous physical exercises, though they were serviceable to the state, could not teach virtue. The new physical training, of course, frustrates the pursuit of virtue at every point. The hot baths which have replaced the cold plunge are enervating. If Hannibal's fiber was weakened by a brief relaxation, what can be said for the hot bath and the sweat room, "where they shut in the dry steam which is to draw your strength? Perspiration should flow only after toil." ⁷⁵

The mind's health should come first, that of the body second, says Seneca. Without the first, the strong man is only a madman. One should "limit the flesh as much as possible" and leave the spirit free. Much exercise wastes vital force, and much eating dulls the keen edge of the mind. To strive to develop big muscles, strong lungs, broad shoulders, is "foolish . . . and very unsuitable for a cultivated man." Even should one accept the goal of the athlete as worthy, one must recognize that, no matter how much he eats, how strong he becomes, he can never match a bull. ⁷⁶ There are some exercises that Seneca approves and recommends to Lucilius, judging them by a proper Roman standard—their utility. These are the "short and simple exercises" that "tire the body rapidly, and so save our time" ⁷⁷—such as walking, running, jumping (high and broad jump, the leaping dance of the *Salii*, or what he calls the "clothes-cleaner's jump"), swinging weights, riding in a litter, and vociferation. Such exercises are desirable, for the "mind must have a change" which relaxes but does not unnerve. Any one of these exercises, Seneca says, will suffice, but whichever is chosen, one must "come back soon from body to mind." ⁷⁸

ROMANS AT PLAY

LOVE OF PLAY SHOWN BY ROMANS Roman inclination to play has been frequently contrasted with that of the Greeks. The Romans are said to have played chiefly for the sake of health rather than the joy of playing. Certainly health and strength through engaging in games and exercises were commonly accepted goals; but it must not be forgotten that Greek sports, too,

⁷³ Epistle LXXXVIII, 19. Seneca, *Epistulae Morales*, trans. by R. M. Gummere. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁷⁴ *Ibid.*, 18.

⁷⁵ Epistle I.I, 5-6.

⁷⁶ Epistle xv, 2-3.

⁷⁷ Romans frequently want to "save time"; thus Pliny goes on horseback, gets "as much exercise" as possible and loses "less time."—*Letters*, ix, 36.

⁷⁸ Epistle xv, 4-8.

served utilitarian ends. It was only natural that, both in Greece and in Rome, when there was no longer need of physical excellence for state service, play became more of an end in itself. Health gymnastics were encouraged both in Greece and in Rome when individual happiness and welfare began to transcend the importance of service to the commonweal. As for love of watching contests, that too became characteristic of Greece as well as of Rome in the days of decadence. Doubtless the Roman's love of public exhibitions and gladiatorial combats, of which an extensive and imposing record has been preserved, has tended to obscure the less conspicuous evidence of individual delight in play. This circumstance, combined with the fact that Rome did not develop such a love of organized public athletic contests (ἀγῶνες) as did the Greeks, has led to an undervaluation of their inclination to play.⁷⁰

The Roman's love of play is variously displayed in hunting, running, ball games, swimming, wrestling, riding, and many other exercises. The exile's thoughts turn wistfully from Pontus to Italy in springtime, and he pictures the crowding festivals, horse races, play in light arms, play with ball and hoop, and well-oiled young men bathing in the waters of the Virgo. The time came, indeed, when, by Seneca's account, some Romans spent their whole life in play at chess, at ball-play, and basking themselves in the sun.⁸⁰ When not indulging in play of some kind himself, the wealthy Roman, who had put on the new life of luxury, loved to entertain his guests with acrobats, musicians, dancers, and other artists.⁸¹

Even the greatest and gravest Romans delighted in all manner of sports. Scaevola, Cato the Younger, and Maecenas indulged in ball-play.⁸² Caesar, when made a captive, joined in the "sports and exercises" of his captors with perfect readiness.⁸³ Augustus is said to have given up military exercises in the *Campus Martius* after the civil wars, and turned to "pass-ball," "balloon-ball," and then to riding, walking, running and jumping, sometimes to fishing, and even to little games with children.⁸⁴ Antoninus Pius enjoyed walking, hunting, fishing; Marcus Aurelius loved boxing, wrestling, running, hunting, fowling, and is said to have been skillful at playing ball.⁸⁵ Commodus is said to have equalled his most skillful instructors in the use of bow and javelin, and was inordinately fond of hunting wild animals.

Even when the fortunes of state declined, the Romans' love of sports lin-

⁷⁰ Cf. Showerman: *Rome and the Romans*, p. 375; Gardiner: *op. cit.*, p. 117.

⁸⁰ *On the Shortness of Life*, xiii, 1; Ovid: *Tristia*, iii, 12, 19 *et seq.*

⁸¹ Petronius: *Satyricon*, 53; Marquardt: *op. cit.*, pp. 302, 337 f.

⁸² Cicero: *On Oratory*, i, 36; Seneca: *Epistle civ*, 33; Horace: *Satires*, i, 5.

⁸³ Plutarch: *Caesar*, 2; Suetonius: *Julius*, 4.

⁸⁴ Suetonius: *Augustus*, 83.

⁸⁵ Capitolinus: *Antoninus Pius*, 11; *Marcus Antoninus*, 4.

gered. Though Ausonius' praises of Gratian, who had raised him to consulship, are doubtless not to be trusted as to detail, it is not likely that he invented all the excellencies in physical sports—running, wrestling, jumping, throwing the javelin, riding—which he attributed to his patron.⁸⁶ Sidonius, Janus-like, looking back upon Rome's declining years and forward to the Middle Ages, presents entrancing glimpses of Roman Gaul at play in the fifth century. By no means ruled by asceticism, so widely heralded in Christian sermons, Sidonius enjoys a cheerful life, recalls the games of childhood—running, jumping, swimming, hunting with horse and bow, hawking, fishing, riding, boating, ball, dice, backgammon—and makes clear that he is no mere observer of the sports of others.

The Roman passion for order is exemplified by the daily routine, in which games played a prominent part: after the morning's affairs, a siesta (at least for the more fortunately situated), exercises (more or less severe), bathing, and then eating—such was the usual order. In the routine of Martial's day, the eighth hour is given to sports and the bath.⁸⁷ The public baths, though open earlier, "at the sixth hour," glow "with Nero's heat."⁸⁸ Horace mentions the *Campus*, the "game of three," the baths, and then the meal—all part of the day's routine, though he is content to take it less seriously than others do. Pliny considers *Spurinna's* daily round—walking, riding in a chariot, exposing himself to the sun, playing ball vigorously, and bathing—ideal, for it has kept him hale and hearty to old age.⁸⁹ Severus, in time of peace, after laboring till noon, would ride, take gymnastic exercise (playing ball, running, wrestling), bathe and swim, and then eat luncheon. Toward evening he bathed again and dined.⁹⁰ For the lower classes, doubtless, there was less time for such a leisurely routine, even though public baths became everywhere available. For many, labor probably left little desire for exercise. For them, says Showerman, work "did not cease with the seventh hour, but continued after the siesta until the setting of the sun."⁹¹

The vigorous preparation for the bath comes in for frequent verbal ridicule. Petronius' satirical portrait of the life of the vulgar rich depicts a bald old man playing at ball (with plenty of assistants), then sweating in the bath, and finally at dinner.⁹² Martial declares that to "trifle with games in a square" is just idleness, and he commends Atticus, because,

⁸⁶ Ausonius: "Thanksgiving for His Consulship," 14.

⁸⁷ Bk. iv, 8; Becker: *op. cit.*, pp. 65 f., 398.

⁸⁸ Martial, x, 48.

⁸⁹ *Letters*, iii, 1; Horace: *Satires*, i, 6.

⁹⁰ Dio, lxxvii, 17; Lampridius: *Severus Alexander*, 30.

⁹¹ *Op. cit.*, pp. 139 f.

⁹² *Satyricon*, 27-8.

. . . you don't prepare for your bath with a ball—
 Whether bladder or feather or solid withal—
 Nor strike with blunt sword at some poor dummy image,
 Nor darting with speed snatch the ball from the scrimmage,
 Nor yet waste your time at the wrestler's toil
 With arms set akimbo all covered with oil.⁹³

In early days the open *Campus Martius* and the near-by Tiber sufficed for physical sports; and there, in later times, public gymnasias and baths catered to the desires of those who had taken on the habits of a cosmopolitan existence.⁹⁴ For many of the rich the private palaestra and bath rivaled, or even excelled, the public establishments in the elegance of their appointments.

Increased crowding of the city population, combined with concentration of wealth and the availability of plenty of land for country estates, led many Romans to seek refuge in the country, where they found recreation and relaxation for more or less extensive intervals. Cato, who had been a farmer in earnest when young, became a "fancy farmer" for "recreation and amusement" in his old age.⁹⁵ Writers delight in extolling life in the country, even though they probably would not relish a return to the land in any truly realistic sense. Cicero praises cultivation of the land as an amusement fit for old age.⁹⁶ Martial sighs for "country pleasures" and declares he wants only "some acres few to till," where he can take the "country's spoils" with line and net—while slaves till the garden with right good will! ⁹⁷ Juvenal declares that only the rich can sleep in town; for who can sleep in the wretched hired lodgings? The poor, especially, should long ago have migrated to the country, where one can get a house for what one pays for a dark hole in town. There on the land he can live with his hoe, irrigate his garden, and easily provide enough fare for "a hundred Pythagoreans." ⁹⁸

Some who fled to the country may have led a simple life; but many, perhaps most, could not easily lose their city habits. The routine of exercises, bath, and then dinner was followed there much the same as in town, though it could be varied by rambling, driving, or riding about the villa. The concern of Cicero and his brother for equipping the palaestras and gymnasias on their estates has been noted. Pliny's bath, ball-court (*sphaeristerium*), gymnasium, and other

⁹³ *Epigrams*, vii, 32. Trans. by J. A. Pott and P. A. Wright, Courtesy of E. P. Dutton & Co., Inc., New York.

⁹⁴ *The Geography of Strabo*, v, 3, 8.

⁹⁵ Plutarch: *Cato*, 24-5.

⁹⁶ *On Old Age*, 16.

⁹⁷ Bk. I, 55; III, 58.

⁹⁸ *Satire III*, 223 et seq.

recreational facilities at his estates left nothing to be desired.⁹⁹ His day's routine is: early rising, dictation, riding in his chariot, repose, walking, reading some Latin or Greek orations for the sake of digestion, walking again, then anointing, exercises, bath, and supper. Sometimes the order includes horseback riding in place of the chariot, and hunting—but he takes his tablets along when hunting, so that, though he catches nothing, he can at least bring something home!¹⁰⁰

GAMES, MENTAL AND PHYSICAL

Mental The play tendency in man finds an outlet in games, mental as well as physical. The people of Italy were no exception to the rule. Of mental games, various forms of gambling were most preferred in early as well as in later times. The ancient Romans at once gave evidence of the widespread character of gambling and probably enhanced the sport's attractiveness by attempting to discourage it by legal prohibition, though restraint was relaxed at the Saturnalia. Domitian is said to have enforced the prohibition, but enforcement must have been rare. Many modern Italian homes, it is said by a careful observer, are more likely to shelter a book on the winning numbers than a Bible.¹⁰¹ Young and old at Rome were inordinately fond of gambling. Gambling games are recommended to women by Ovid.¹⁰² In the city, the public games, especially chariot races, provided an admirable stimulus; but even he who lived in the country and could wear a single suit for ten seasons, would "stake a nut or two" at knucklebones.¹⁰³ Huge sums were squandered in high society. The recklessness of Augustus at the game board is reported by Suetonius.¹⁰⁴ Juvenal declares that men go to the gaming table not with mere purses but with whole treasure chests at their side. One may lose 100,000 sesterces, and not have a shirt to give a "shivering slave."¹⁰⁵

A favorite game, *micare digitis* (*mora*), in which two players sought to outsmart each other by guessing the number of fingers simultaneously extended, provided an ever-ready opportunity for wagers, and was also sometimes used to determine one's lot or future in the political or business world. Cicero suggests that two equally wise and valuable men, afloat on the sea with only one small plank between them, might decide who should get it by lot, or a game of odd

⁹⁹ *Letters*, II, 17; v, 6.

¹⁰⁰ *Ibid.*, ix, 36; cf. I, 6.

¹⁰¹ Johnston: *op. cit.*, p. 241; Becker: *op. cit.*, p. 501; McDaniel: *Roman Private Life*, p. 144.

¹⁰² *Art of Love*, III, 349 et seq.

¹⁰³ *Martial*, iv, 66.

¹⁰⁴ *Augustus*, 71.

¹⁰⁵ *Satire* I, 88 et seq.

and even. Augustus is said to have bidden a father and son to cast lots, or play *mora*, to determine which one should die. The popularity of the game gave rise to a proverbial description of an honest man as one "with whom you can safely play at odd and even in the dark."¹⁰⁶

Of board games there were various forms, two of which, *ludus latruncularum* and the *ludus duodecim scriptorum*, are more or less clear to us. Both games employed counters, *calculi*: the first, sometimes called "robbers," was somewhat similar to chess or draughts, being a contest between two parties of men, each divided into different classes (pawns and officers). *Duodecim scripta*, sometimes referred to as the game of tables (from *tabula*) was similar to backgammon, and was also played with counters upon a board divided into twenty-four places. The moves were determined by throws of dice, by which one progressed from the first to the twenty-fourth place.¹⁰⁷ Some game boards were made so that one side served for the *ludus latruncularum*, the other for *duodecim scripta*.¹⁰⁸ Such games were extraordinarily popular amusements in the houses of the wealthy. Trimalchio delays eating his dinner, but urges his guests to begin, while he finishes his game on an unusually exquisite board, using gold and silver coins for counters.¹⁰⁹ The Emperor Claudius was so fond of gaming that he wrote a book on it and fitted up a board in his carriage so that he could play while out driving.¹¹⁰ Numerous references to board games show that they were still popular in France in the fifth century. Sidonius has left an interesting portrait of Theodoric, King of the Goths, playing at "tables."¹¹¹

Physical Ball games enjoyed an undoubted popularity with the Romans. Some type of ball-play was the most common means of warming up before the bath. Martial¹¹² calls one an awkward rustic who is ignorant of how to play the game of three. An illuminating insight into the importance of ball in Roman life, and the influence which players might have, is gained from an inscription which asks ballplayers to support a certain candidate, A. Vettius Firmus, for the aedileship.¹¹³ Cicero, knowing that such a figure will be perfectly comprehended, likens the power of the state to a ball that is snatched from one by another.¹¹⁴ Other allusions show that Romans commonly recognized a certain parallelism between ball games and politics. Cornelius Lentulus, when an accounting for public money was demanded of him by Sulla in the

¹⁰⁶ Cicero: *Offices*, III, 19, 23; Suetonius: *Augustus*, 13.

¹⁰⁷ Marquardt: *op. cit.*, pp. 855 ff.; Gregory of Tours: *History of the Franks*, II, 596.

¹⁰⁸ Martial, XIV, 17.

¹⁰⁹ Petronius: *Satyricon*, 33.

¹¹⁰ Suetonius: *Claudius*, 33.

¹¹¹ Sidonius: *Letters*, I, 2, 7-8.

¹¹² Bk. XIV, 46.

¹¹³ Abbott: *op. cit.*, pp. 14 f.

¹¹⁴ Cicero: *Republic*, I, 44.

Senate, declared he would not give it, "but would offer his leg, as boys were accustomed to do when they were playing ball and made a miss."¹¹⁵ Seneca, though frequently contemptuous of ball-play and other forms of excessive devotion to physical exercise, makes a comparison between the giving of benefits and the throwing of a ball from one player to another.¹¹⁶

The greatest figures in Roman public life and in the world of letters were fond participants in ball games, which they carried on from their boyhood to man's estate. One player boasts on his epitaph that he had played ball with an emperor. Caesar, Augustus, Marcus Aurelius, and Alexander Severus played ball.¹¹⁷ Cicero says that Publius Mucius was skilled in the game.¹¹⁸ Stopping at Capua on the journey to Brundisium, Maecenas turns to a game of ball, but Virgil and Horace sleep, because ball-play is neither good for "sore eyes" nor for dyspepsia. Elsewhere, Horace notes the place of the "game of three" in the usual day's routine as a preparation for the bath; hunting hares and breaking horses are of course more soldierly and suited to the simple pattern of life, but for those who desire something less strenuous than the exercises of old Rome, he recommends "a game of ball," whose interest negatives the taste of toil.¹¹⁹ Cato the Younger unconcernedly passes off a political defeat in an election and goes to the *Campus Martius* to practice ball.¹²⁰

Even the old men indulged in ball-play for the sake of health. Galen's treatise on the "Small Ball" and his defense of ball-play for recreation and health testify to the extent and popularity of such exercises.¹²¹ Spurrina combated the effects of old age by "prolonged and violent" playing at ball.¹²² Cicero considers other amusements better for old age, however, than ball-play, swimming, and such sports—which are, in his opinion, more suited to the young.¹²³

To this preference for ball-play, there were no doubt exceptions, which serve to throw the general practice into clearer relief. Such was Cicero, apparently, who says that he has devoted as much time to studies as others would to ball-play.¹²⁴ There is a note of contempt in Seneca, who declares that many men spent their whole life at chess, ball, or "baking their bodies in the sun."¹²⁵

¹¹⁵ Plutarch: *Cicero*, 17.

¹¹⁶ On Benefits, II, 17, 3-5.

¹¹⁷ Suetonius: *Augustus*, 83; *Capitolinus: Marcus Antoninus*, 4; *Lampridius: Severus Alexander*, 30.

¹¹⁸ On Oratory, I, 50.

¹¹⁹ Satires, I, 5-6; II, 2.

¹²⁰ Plutarch: *Cato the Younger*, 50.

¹²¹ Galen: "De Parvae Pilae Exercitio," *Opera*, v, 899-910.

¹²² Pliny: *Letters*, III, 1.

¹²³ On Old Age, 16.

¹²⁴ *Archias*, 6.

¹²⁵ *Shortness of Life*, XIII, 1.

In the "short and simple" exercises recommended by Seneca for saving time, ball-play is not included.¹²⁰

Numerous literary allusions to ball-play attest the game's popularity. Fronto tells Appian that he who sends too great a gift offends as much as one who gives his partner in ball-play "too heavy a return."¹²⁷ Petronius¹²⁸ depicts the rich old man in red shirt and house shoes, playing busily with green balls, which are supplied to him and his companions by a slave, who stands with a bagful ready for replacement as soon as one is dropped to the ground. Martial's "Angler," seeking an invitation to dine, obsequiously chases through the dust after the balloon ball and politely hands it back, even though he has already bathed and dressed. In a hot game of *trigon* he catches everything, right and left, and scores his catches to the one he courts. The gift of a warm Spartan *endromis* is praised, for, even in December, it will defy rain and cold when one plays *trigon*, *harpastum*, or bats the *follis* to and fro.¹²⁰

Games of ball were played in the open air in the *Campus Martius*,¹³⁰ and doubtless also by boys in the streets. When baths and gymnasia were established, a special court, *sphaeristerium*, was an important feature, but other exercises were practiced therein also. Pliny's *sphaeristerium* is open to the warm sun, and is large enough for several different games to be played at once, each with its own group of observers.¹³¹

Ball-play permits of many variations, and many were known to the Romans. One might simply throw up the ball and catch it, playing alone or with a companion. Games in which several balls were employed simultaneously suggest jugglery, something like that depicted in Egypt, rather than competitive ball games which were so common. The use of glass balls undoubtedly refers to the juggler's art.¹³² Contests in which the ball was thrown or struck against the ground or against a wall—resembling modern handball—were known, but the exact manner of play is obscure. It appears that the old Romans "practised a bowling game that anticipated the play at *boccia*," commonly known to-day. Bats or racquets seem to have been practically unknown.¹³³ Though numerous passages in Latin works have been translated "tennis," it seems misleading, to say the least; some of the games, however, may be considered the forerunners of modern tennis.¹³⁴

¹²⁰ *Epistle* xv, 4-8.

¹²⁷ Fronto, I, 277.

¹²⁸ *Satyricon*, 27.

¹²⁰ Martial, iv, 19; xii, 82.

¹³⁰ Strabo, v, 3, 8.

¹³¹ Letters, II, 17; v, 6; Becker: *op. cit.*, pp. 93, 406 f.

¹³² Marquardt: *op. cit.*, p. 844.

¹³³ McDaniel: *op. cit.*, p. 68; Johnston: *op. cit.*, p. 240.

¹³⁴ Dalton points out that the references in Sidonius' letters cannot properly relate to tennis as we know it, since no bat or racquet is mentioned.—*Letters of Sidonius*, I, cxii. Play

Literature abounds in references to ball-play, but the allusions are usually rather casual, and relatively little is known of the way games were played. Several different balls are distinguishable, however, and something of their use. Though several kinds of balls and ball games are mentioned, the distinction between the ball and the game is not always clear. Martial names four balls, *pila paganica* (stuffed with feathers, originally used in the country), *pila trigonalis* (used for the game of trigon), the *follis* (balloon, or bladder ball), fit for old men to play with, and *harpasta* (serimmage balls).¹³⁵ Becker holds that there were really only three types of balls, the *pila*, the small ball, varying in hardness for different kinds of games; the *follis*, a large inflated balloon ball; and the *paganica*. Marquardt is of the opinion, however, that there were as many as five different balls, varying in size and contents.¹³⁶ The game of three, trigon, was very popular, if one may safely judge from literary allusions to it. Three players stood at the corners of an equilateral triangle and threw balls to each other at will, so that a player might have to handle two balls at once. Three, or even six, balls might be kept in play. It may be that the three players were assisted by three persons who picked up balls that dropped to the ground, and by three others who counted the balls dropped. In such a game nimble use of the left hand as well as the right would obviously be a great advantage. Martial's references to "nimble left-handers" indicate that left-handed plays were a proof of expertness.¹³⁷

Marquardt distinguishes three different types of mass ball games, *sphaeromachiae*, but the differences in them are little known. In one play (*ἐπισκυρος*) two equal sides oppose each other, separated by a line marked with stones, each having a barrier at its back, beyond which it cannot go. The ball, lying on the stone barrier, is thrown as far as possible by the side which first gets possession of it; the opponents catch it and throw it back again as far as they can. The ablest throwers thus press their opponents farther and farther back, until they reach the barrier in their rear and thus lose the game. In another game (*φενύδα*) players are divided into two parties; one throws the ball, calling on a particular person of the opposing party to catch it, but throws in a different direction making it difficult to catch; failure to catch the ball loses the point.

with the *pila* has been translated as tennis and simply as ball-play. Pliny's *sphacristerium*, open to the sun, is called a "tennis-court" (Hutchinson: *Pliny*, II, 17) and "ball-court," Bk. V, 6. Watson makes Cicero—*On Oratory*, I, 16—speak of "those who play at tennis" (*qui pila ludunt*) and mentions Titius who was a "great tennis-player" (*qui, cum studioso pila luderet*).—*On Oratory*, II, 62; III, 23; cf. translation by E. W. Sutton and H. Rackham, Heinemann, London, 1942.

¹³⁵ Martial, XIV, 45-8.

¹³⁶ *Op. cit.*, p. 842; Becker: *op. cit.*, p. 399; cf. Mau: "Ballspiel," *Real-Encyclopädie*, II, Pt. II, 2832 et seq.; Ramsay and Lanciani: *A Manual of Roman Antiquities*, pp. 486 f.

¹³⁷ Bk. XIV, 46; VII, 72; Marquardt: *op. cit.*, pp. 844 f.; Becker: *op. cit.*, pp. 402 f.; Johnston: *op. cit.*, p. 241.

This, some authorities believe, is the game referred to by Sidonius in his letter to Eripius.¹³⁸

The *harpastum* is but slightly known to us; various references give no clear impression of it, other than that it involved a vigorous, even violent scrimmage. Athenaeus explains that "great are the exertion and fatigue attendant upon contests of ball-playing, and violent twisting and turning of the neck."¹³⁹ Martial also refers to *harpasta*, used by him who "with empty labour makes big his neck . . ." and those who snatch the "scrimmage-ball" in the dust.¹⁴⁰ It may be that the game was simply to throw one ball, or perhaps more, up into the air and then scrimmage for the chance to catch it. Galen¹⁴¹ speaks of the vigorous exertion required in certain ball games, especially one in which players form sides, oppose each other and scrimmage for the ball. In this violent form of small ball-play there is plenty of all-sided exercise for head, neck, ribs, chest, abdomen, loins, and legs. One must be a good runner, dodger, and jumper; indeed the small ball game is the best exercise for the legs, Galen holds, as it is for all parts of the body.

Though it would appear that no sport equaled ball-play in popularity, exercises with the *halteres* and the fencing post (*palus*), running, jumping, wrestling, and boxing provided variety in the physical recreation of Romans. Horace mentions flinging the quoit through "the yielding air."¹⁴² Quintilian refers to throwing the spear and archery as exercises with which his readers were perfectly familiar.¹⁴³ Bathing, swimming, boating, hunting, and fishing provided exercise in less formal fashion.

Running and jumping were commonly practiced, both for utility and for recreation. Running "where the clear Virgo flows" is preferred by Martial to the various games played in every open square; and he also refers to one who hopes to conquer swift Athas in the foot race.¹⁴⁴ There were competitions in running, but such mild entertainment was no great attraction at Rome. Petrified remains of bodies of athletes, recently discovered under the ruins of Pompeii, are believed to have been runners who were exercising when the city was destroyed by the eruption of Mt. Vesuvius. Marcus Aurelius is said to have been fond of running.¹⁴⁵ Seneca recommended running as a good exercise for the studious. He also favored three types of jumping—the high, the broad

¹³⁸ Bk. v, 17; Marquardt: *op. cit.*, pp. 845 f.

¹³⁹ Bk. I, 15.

¹⁴⁰ Bk. iv, 19; xiv, 48.

¹⁴¹ *De Parvae Pilae Exercitio*, 2.

¹⁴² *Satires*, II, 2.

¹⁴³ Bk. ix, 4, 8-9.

¹⁴⁴ Bk. iv, 19; vii, 32.

¹⁴⁵ *Capitolinus: Marcus Antoninus*, 4.

jump, and leaping like the Salii, the priests of Mars—as good exercises for the scholar.¹⁴⁰

Walking, and riding on horseback, in carriages, and in litters, gave easy exercise to the old and infirm. Sometimes, however, even old men continued to exercise at games of ball, as did Spurinna. Augustus left off other exercises and turned to riding, walking, running, and leaping.¹⁴⁷ Riding in a litter is especially recommended by Seneca, because it shakes the body and does not interrupt study. Walking is also good.

Swinging the weights is recommended by Seneca to the studious, but he hates the fellow who swings them at Baiae and disturbs him with his puffing and grunting. Juvenal berates the woman who frequents the gymnasium and whose arms hang exhausted by swinging the heavy weights.¹⁴⁸

Thrusting at a post (*palus*) with a wooden sword was apparently a common exercise. Vegetius refers to its use by young recruits (*tirones*); and Martial refers to those who strike at a "poor dummy image" with a blunt sword.¹⁴⁹ Juvenal refers to women who smite ". . . a stump, piercing it through and through with a foil, lunging at it with a shield, and going through all the proper motions. . . ." ¹⁵⁰ Quintilian ¹⁵¹ also refers to training in fencing, which he associates with other contests of the wrestling school.

References to boxing abound in Latin literature. They shed little light on the science, indeed, but do reflect general interest in it and suggest that boxing was a common matter, understood and appreciated by the general public. Cicero's clever reference to Bestia, whom he had six times defended, as "that boxer's dummy on which I tried my lungs and voice," ¹⁵² would, he knew, be thoroughly appreciated by a Roman audience. Suetonius ¹⁵³ says that Marcus Pomponius Marcellus, a grammarian, had once been a boxer, and understood "head to the left," having a fighter's skill but no real talent. Quintilian says that the gymnast will turn his pupils into runners, boxers, or wrestlers, according to their different abilities, and will teach a pancratiast all the tricks of every branch of the science, and not merely how to use his fists and his heels.¹⁵⁴ Boxing was both a private exercise of the gymnasium and also a public spectacle. Martial praises Domitian for the revival of pugilism; Marcus Aurelius was fond of box-

¹⁴⁰ *Epistle* xv, 4.

¹⁴⁷ Suetonius: *Augustus*, 83; Pliny: *Letters*, III, 1.

¹⁴⁸ *Satire* vi, 419 et seq.; Seneca: *Epistle* xv, 4; *LVI*, 1.

¹⁴⁹ *Bk.* vii, 32; Vegetius: *Epitoma Rei Militaris*, I, 11.

¹⁵⁰ *Satire* vi, 246 et seq. Trans. by G. G. Ramsay. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁵¹ *Bk.* ix, 4, 8.

¹⁵² *Philippic* xiii, 12.

¹⁵³ *Grammarians*, 22.

¹⁵⁴ *Bk.* II, 8, 7, 13.

ing and wrestling, even though his interest in philosophy is said to have turned his attention from them.¹⁵⁵

Virgil gives great space to the boxing match between Dares and Entellus,¹⁵⁶ whose powerful blow fells the bull awarded him as the prize of victory. He portrays his boxing competitors wearing heavy gauntlets, which really belong to his own era rather than to the primitive age of which he was professedly writing. Those of Entellus were of sevenfold seasoned bull's hide, "stiffened in rigid coils, insewn with lead and with iron," so terrifying in appearance that Dares, his competitor, drew back in consternation, whereat Aeneas considerately provided gauntlets of similar character for both boxers. The cauliflower ear became a common sight to the Romans. Martial contrasts Atticus with other youths who attend the instructions of a battered-eared boxer.¹⁵⁷ The destructiveness of the formidable cestus is suggested by the lines of Lucilius:

This Victor, glorious in his Olive Wreath,
Had once Eyes, Eye-brows, Nose, and Ears, and Teeth:
But turning Caestus Champion, to his Cost,
These, and, still worsel his Heritage he lost.¹⁵⁸

Numerous literary references to wrestling testify to its common practice. Martial speaks of the "well-oiled" who "wrestle in the lists," and complains of wrestling masters who "waste the precious oil."¹⁵⁹ Suetonius tells us that there was bitter feeling toward Nero because, while people were suffering hunger at Rome, a ship came from Alexandria with a cargo of sand for the use of wrestlers at the court.¹⁶⁰ Quintilian's references¹⁶¹ to the contests of the wrestling school and the tricks of attack and defense were doubtless made to an audience which he knew would understand them perfectly. Men of high station continued to wrestle. Severus Alexander engaged in a mild form of wrestling for recreation, and was a "wrestler of the first rank," according to his biographer.¹⁶²

Swimming was common among the Romans from the earliest days, and numerous sources indicate its continued popularity. Cato taught his son to swim, and Augustus is said to have instructed his grandsons. Antoninus practiced swimming "even in rough water."¹⁶³ Cicero refers to his friend Trebatius as an enthusiastic swimmer; and Horace puts in Trebatius' mouth the advice

¹⁵⁵ Capitulinus: *Marcus Antoninus*, 4; *Martial*, viii, 80.

¹⁵⁶ *Aeneid*, v, 362-484.

¹⁵⁷ Bk. vii, 32.

¹⁵⁸ West: *Odes of Pindar*, p. lxi.

¹⁵⁹ Bk. iii, 58; iv, 19 (Pott and Wright).

¹⁶⁰ Suetonius: *Nero*, 45.

¹⁶¹ Bk. ix, 4, 8.

¹⁶² Lampridius: *Severus Alexander*, 27, 30.

¹⁶³ Plutarch: *Cato*, 20; Suetonius: *Augustus*, 64; *Dio*, lxxviii, 11.

that one must rub in oil and swim three times across the Tiber, if he would sleep well.¹⁰⁴ Literary allusions to swimming are numerous. Ovid's *Art of Love*¹⁰⁵ offers the advice that it is hard to swim against the current. Pliny¹⁰⁶ relates to Caninius a marvelous story about Hippo, in Africa, where people constantly diverted themselves with contests to see who could swim farthest into the sea. Martial, Statius, and others allude to the attractions of swimming at Baiae.¹⁰⁷

Roman history abounds with references to swimming, there being many instances of its utility in time of war. Vegetius speaks of its value to all soldiers.¹⁰⁸ One of the oldest tales was that of Horatius Cocles, who fought the Etruscans at the Tiber bridge and then swam to safety. When the Cimbri and Teutons invaded Gaul and defeated the Romans (105 B.C.), Sertorius, although wounded, swam with shield and breastplate across the Rhone against an adverse current, and escaped. Publius Scaevius, one of Caesar's forces, though severely wounded and having lost his shield, leaped into the water and escaped by swimming.¹⁰⁹ In the Civil War, Lucan¹⁷⁰ says, Caesar bade his men arm and cross the river by "hard swimming," without waiting to look for bridge or ford. Dio tells us that in a sea fight (36 B.C.) the excellent swimming and light equipment of Sextus' men enabled them to escape from damaged ships to others, and thus helped to counterbalance certain of Caesar's advantages. At the signing of a pact by Sextus, Caesar, and Antony (39 B.C.), it is said that joy so affected their men that many who were in small boats jumped into the sea, and others on land rushed into the water to meet them, and they embraced each other while swimming and diving.¹⁷¹ Caesar, driven from the Peninsula of Pharos into the sea, is said to have succeeded in swimming to one of his vessels, leaving his cloak in the water as a target for his assailants.¹⁷² Suetonius declares that he swam two hundred paces, "holding up his left hand all the way, so as not to wet some papers," and dragged his cloak in his teeth so that the enemy could not get it for a trophy.¹⁷³ Dio says that Roman soldiers in Hadrian's day "swam the Ister with their arms."¹⁷⁴ Ammianus tells of Roman soldiers fleeing from their enemies across the Tigris, lying on their broad, curved shields and steering them as best they could; elsewhere he mentions

¹⁰⁴ Cicero: *Letters to His Friends*, vii, 10; Horace: *Satires*, ii, 1.

¹⁰⁵ Bk. II, 181-2.

¹⁰⁶ *Letters*, ix, 33.

¹⁰⁷ *Epigrams*, vi, 43; *Silvae*, iii, 5.

¹⁰⁸ Bk. I, 10.

¹⁰⁹ Livy, ii, 10; Plutarch: *Sertorius*, 3; *Dio*, xxxvii, 53.

¹⁷⁰ *The Civil War*, iv, 148 et seq.

¹⁷¹ *Dio*, xlviii, 37; xlix, 3.

¹⁷² Florus: *Epitome of Roman History*, ii, 13.

¹⁷³ Suetonius: *Julius*, 64; *Dio*, xlii, 40; Plutarch: *Caesar*, 49.

¹⁷⁴ Bk. lxiix, 9.

some who were either lost in the river, "being unskilled in swimming," or were seized by Saracens or Persians if they succeeded in crossing the water. Julian's soldiers, fighting against the Germans on the Rhine (357 A.D.), swam on their shields, using them like canoes, and surprised and butchered the enemy on one of the islands.¹⁷⁵ According to Libanius "the Rhine" was "hidden by the bodies of those [enemies] drowned through their want of knowing how to swim. . . ." ¹⁷⁶

When public and private baths were built, they were commonly provided with pools, large enough for swimming, and with both cold and warm water. The first warm pool in Rome was said to have been built by Maecenas. In the great public baths, the pools were magnificent; in Diocletian's, the *natatorium* was two hundred feet long and one hundred wide. The use of baths and swimming pools was very extensive. Augustus' body is said to have been calloused from much use of the strigil. Some who had plenty of leisure resorted to the baths two or three times a day. Even greater extremes are reported: Commodus bathed seven times a day; on one occasion he shoved his praetorian prefect into a swimming pool, toga and all. Severus Alexander was in the habit of bathing in a swimming pool for about an hour after his exercise.¹⁷⁷ Public pools at resorts were noisy places, according to Seneca's bitter testimony, who found the splash of those plunging into the swimming tank at Baiae very annoying.¹⁷⁸

The luxuriousness of swimming pools built by men of wealth on their private estates was truly remarkable. Pliny's villa at Laurens had a "warm bath of extraordinary workmanship," wherein one might swim, having a view "at the same time of the sea." His Tuscan villa, at the foot of the Apennines, had a similar warm swimming pool in the court.¹⁷⁹ Elagabalus, his biographer says, would not swim in a pool unless it was perfumed with saffron or some other essence.¹⁸⁰

The handling of boats was a matter of practical importance for the Romans, and became also a means of recreation and amusement. Literary references are numerous. The boat race is one of the most exciting contests portrayed by Virgil.¹⁸¹ Cicero ¹⁸² turns to rowing to find a fitting illustration of the correct meaning of *inhibitio*. It is, he says, an "exclusively nautical word," and means

¹⁷⁵ Ammianus Marcellinus, xvi, 11, 9; xxiv, 6, 7; xxv, 8, 1-3.

¹⁷⁶ Julian the Emperor, pp. 141, 192.

¹⁷⁷ Dio, lv, 7; Suetonius: Augustus, 80; Lampridius: Commodus, 11; Severus Alexander, 30; Becker: *op. cit.*, pp. 93, 376; further information on baths, *supra*, pp. 649-53.

¹⁷⁸ Epistle lvi, 2.

¹⁷⁹ Letters, ii, 17; v, 6.

¹⁸⁰ Lampridius: Elagabalus, 19.

¹⁸¹ Aeneid, v, 114 et seq.

¹⁸² To Atticus, xiii, 21.

a vigorous motion to "back water," not simply resting on the oars, as he once thought. Seneca¹⁸³ remarks on the boatswain marking time in high-pitched tones to his crew; it's unpleasant, but he has steeled his nerves to bear it; in any case, it's not so bad as intermittent noises. Pliny¹⁸⁴ refers to sailing as one of the constant diversions of the people at Hippo. In the fourth and fifth centuries Ausonius and Sidonius refer to boating in Gaul, on the Moselle, and at Avitacum, near Clermont.¹⁸⁵

It has been said that Romans were "never keen sportsmen," but they caught some of the love of sport from the Greeks. Some believe that it was "probably a proof of Greek tastes," even in Sulla's time, if a man was given to laborious hunting.¹⁸⁶ The Romans were "not greatly addicted" to hunting, says Fowler.¹⁸⁷ There is some truth in this, doubtless; but another fact is not to be forgotten. Hunting is often both work and play to primitive people; Romans in their primitive simplicity were no exception. While actively at work upon their farms, or busily pushing forward the bounds of empire, there was no occasion for extensive and elaborate recreation. But when the Empire was consummated; when wealth flowed in, enabling men to purchase ease; when popular political activity atrophied, or was delegated to one man and his agents—then hunting, along with many other activities, seems to have become a popular way of employing superabundant leisure.

Hunting, traditional sport of fighting men and of kings, might well grow in popularity among the Romans when they rested from war's labors. The traditional Roman emphasis upon the serious, practical business of life, however, kept them from going to extremes in devoting time to sports, even though congenial. Sallust declares that a man who spends his whole life hunting is performing a "menial service" rather than taking "lawful exercise."¹⁸⁸ Three hundred years later an entirely different point of view was to find expression, for, as Rome declined and public life made fewer demands upon them, recreation might consume most of a man's time. Ausonius (c. 310-393) takes pride in the fact that his father-in-law spent his whole life "in hunting, and husbandry, and all the pleasures of a refined life, despising public affairs."¹⁸⁹ Such is the contrast in attitudes at the end of the Republic and in the age of imperial decline. To this extreme devotion to the chase and other pleasures, Christian asceticism brought some check, at least in principle. Paulinus Pellaeus regrets his youthful

¹⁸³ *Epistle* LVI.

¹⁸⁴ *Letters*, ix, 33.

¹⁸⁵ Ausonius, x, 200 et seq.; Sidonius, ii, 2, 19.

¹⁸⁶ *Ihne: History of Rome*, v, 445.

¹⁸⁷ *Social Life at Rome in the Age of Cicero*, p. 104.

¹⁸⁸ Butler: *op. cit.*, p. 201.

¹⁸⁹ Ausonius, iv, 8.

desire to have a fine horse, a speedy hound, and a goodly hawk; only Christ's mercy, he says, saved him from breaking his neck when riding.¹⁰⁰

The growth of a love of hunting and the stimulus given to it by Greek influence may be seen in several historical characters. Aemilius Paulus had his son, Scipio Aemilianus, taught all the elements of Greek education, including hunting; in this, as in other branches, it appears the teachers were Greek.¹⁰¹ After the battle of Pydna, while the army remained in Macedonia, Scipio was put in complete charge of all matters pertaining to hunting, for Lucius Aemilius believed "hunting was the best training" for the bodies and courage of his soldiers. It is said that Scipio developed a love for the chase that lasted all his life, and he gave the time to it that other men gave to politics.¹⁰²

Great concentration of wealth at Rome made large estates possible. These came to be supplied frequently with lakes for fishing, and hunting parks, not unlike those of Macedonian and Persian princes. Hortensius had a park on his estate near Laurentum, containing about fifty *jugera*, well stocked with all kinds of wild animals. Sulla is said to have devoted himself to hunting and fishing when he retired to his estate at Cumae.¹⁰³

Cicero¹⁰⁴ mentions hunting, along with the exercises of the *Campus Martius*, as a creditable form of amusement. As the Empire became established and leisure reigned, more and more evidence of love of hunting is found in persons of prominence and in literary allusions. Hadrian was an enthusiastic huntsman, killed lions "with his own hand," and is said to have been injured physically at the sport. When his favorite hunting horse died, he built him a tomb with an inscription on it.¹⁰⁵ Antoninus Pius delighted in hunting and fishing.¹⁰⁶ Marcus Aurelius compared to robbers the spider with its prey, the armed leader with his Sarmatian prisoners, the hunter with his captive bear and boar and hare, and the fisherman with his catch; yet he himself seems to have loved these sports. Capitolinus says that Marcus engaged in fowling and "hunted well"; Dio says that he "would strike down wild boars while on horseback. . . ." ¹⁰⁷ Perhaps his teacher had something to do with it. Fronto reminded him, in any case, that his ancestors for three generations back had mingled serious business with love of sport and other pleasures. When inaugurating his game preserve, Fronto advised him that he must be careful, if he struck a beast, to set the "horse at full gallop." Again he tells him of a hunting expedition and "doughty

¹⁰⁰ *The Eucharisticus*, 141 et seq.

¹⁰¹ Plutarch: *Aemilius Paulus*, 6.

¹⁰² Polybius, xxxi, 29.

¹⁰³ Appian: *Civil Wars*, I, 104; Fowler: *op. cit.*, p. 250.

¹⁰⁴ *Offices*, I, 29.

¹⁰⁵ Spartianus: *Hadrian*, 26; Dio, I, xix, 10.

¹⁰⁶ Capitolinus: *Antoninus Pius*, 11.

¹⁰⁷ *Meditations*, x, 10; Capitolinus: *Marcus Antoninus*, 4; Dio, lxxii, 36.

deeds," but admits that though they heard of boars being bagged, they themselves did not see any.¹⁹⁸ To praise emperors for their great prowess in the royal sport was, naturally, the height of propriety. Domitian is said to have been so skilled in archery that he was wont to shoot animals in such a way as to give them the appearance of having horns.¹⁹⁹ Ausonius quotes lines inscribed under a picture showing a lion, slain by Gratian with a single arrow: "The death which the lion suffers through so frail a reed is due, not to the weapon's power, but to the wielder's."²⁰⁰

Numerous literary allusions refer to the sports of field and stream. Horace portrays the thrill of hunting the boar with nets and hounds,²⁰¹ and his convincing portrait of country life and the joys of the sturdy chase testifies to the hold that hunting had on the hearts of Romans.²⁰² Unfortunately, he fears, some of the younger generation are "afraid to hunt."²⁰³ Virgil²⁰⁴ advises to feed the swift Spartan hounds and those of Molossis, that they may protect the flocks, hunt hare, wild boars, hinds, and wild asses, and drive great stags into the nets. Martial²⁰⁵ sings of country pleasures—the spoils of the hunter's net and snaring the leaping trout. To him who lives in the country, the field and woods offer boar, hares, and other field fare, and the streams supply fish.

Even bookish Pliny tells us that he has turned sportsman and has bagged three boars—but, while he watched the nets, he had tablets at hand and wrote, so that, if he caught nothing, he could at least take something home. He advises Tacitus to do the same thing next time he goes hunting. Minerva is in the hills, as well as Diana! His Tuscan villa is preferred to several others, because there his mind is exercised by study, and his body is kept in health by hunting. To Caninius he writes asking whether he is engaged in study, fishing, or hunting, and adds that he, too, longs for such amusements as the sick do for wine, baths, and springs.²⁰⁶

Fishing, like hunting, would be work rather than sport, if done for making a living. It was doubtless both to two different classes of people in old Roman days, as now. Though often considered a plebeian sport, it sometimes occupied members of the imperial household. Augustus sometimes fished. Rufius Crispinus, stepson to Nero, was ordered drowned by his slaves while he was en-

¹⁹⁸ *Fronto*, I, 173, 179; II, 9.

¹⁹⁹ Suetonius: *Domitian*, 19.

²⁰⁰ Ausonius, xix, 30. Trans. by H. G. Evelyn White. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

²⁰¹ *Odes*, I, 1.

²⁰² *Epode* II.

²⁰³ Horace: *Odes*, III, 24.

²⁰⁴ *Georgics*, III, 404 *et seq.*

²⁰⁵ Bk. I, 55; IV, 66.

²⁰⁶ Pliny: *Letters*, I, 6; II, 8; V, 6.



FISHING Leptis Magna Mosaic

(Courtesy, Bettmann Archive, New York)

gaged in fishing. Antoninus Pius delighted in fishing and hunting.²⁰⁷ Fishhooks were found by archaeologists at Pompeii.²⁰⁸ Fishing is spoken of by Pliny²⁰⁹ as one of the constant diversions of the people at Hippo. Some people, probably the poorest, got their living by fishing. To them it was not sport, but it occupied the hours devoted by others to such recreation. Plautus portrays the poverty-stricken fisherfolk:

These hooks that you see, and bamboo poles, are our means for attaining a living;

And every day from the city we come, to secure a subsistence, hither.

Instead of gymnastics and boyish games, this toil is our exercise only.²¹⁰

Riding horseback and in chariots was naturally an important accomplishment for those who were wealthy enough to equip themselves with horses for army service; and horsemanship was a means of recreation for those who could afford the expense when the business of war declined. Horace expresses a regret that some of the younger generation have not been taught "how to sit a horse";²¹¹ this, while doubtless true of those who preferred a sedentary exist-

²⁰⁷ Suetonius: *Augustus*, 83; *Nero*, 35; *Capitolinus: Antoninus Pius*, 11.

²⁰⁸ Showerman: *op. cit.*, p. 375.

²⁰⁹ *Letters*, ix, 33.

²¹⁰ Lawton: *Classical Latin Literature*, p. 45.

²¹¹ *Odes*, iii, 24.

ence, probably does not describe a tendency. Pliny's Tuscan villa had a spacious hippodrome, lined with bay, box, cypress, and plane trees. Sometimes he rides his horse about the farm, instead of taking exercise in the *allée*. Again, he rides in a chariot, or varies the day's program and rides horseback, getting as much exercise with less loss of time.²¹² Certain early leaders and later emperors are credited with extraordinary feats in riding. Caesar was especially skilled at horsemanship, even from boyhood, and would ride his horse at a full gallop while holding his hands behind his back. Antoninus, it is said, "would ride on horseback as much as a hundred miles."²¹³ Ausonius, with fulsome praise for him who made him Consul, says that Gratian would drop his reins, draw his bow, urge his horse on with the whip, and could likewise check him with it. Paulinus Pellaeus, grandson of Ausonius, regretfully remembered how, in his careless pagan youth, he loved to ride his racing horse at a gallop.²¹⁴

Certain instances of women, such as Cloelia and others, who performed feats of physical prowess in early Roman days were preserved in old traditions. In somewhat later times, women appeared more in public, but generally in an inactive rôle. With the coming of an increased degree of freedom for women, though they took advantage of the opportunity to witness public spectacles, there was generally little attention apparently to their physical recreation. Ball-play, however—at least the less violent forms, involving throwing up and catching—was apparently participated in by girls to some extent.²¹⁵ In the relatively few allusions to it, there is sometimes deprecation, contempt, and ridicule, much as there was for woman's intellectual efforts. Pliny²¹⁶ praises Fundania for being discreet and sparing in indulgence at her play. Ovid would have a woman know how to dance. She may walk profitably "in the Pompeian shade"; she may visit the arena, and should sit in a prominent seat at the theater. Gambling games he recommends also, for these "indolent nature has given to woman," but men play with balls, javelins, hoops, armor, horses.²¹⁷

Most exercises of the gymnasium were thought proper only for men, and were indecent for women. Martial's sixty-seventh epigram²¹⁸ is not commonly thought fit to put into English! Juvenal rails at the woman, so bold as to wrap herself in purple, use the wrestlers' oil, and smite the stump with a wooden sword—a woman truly fit "to blow a trumpet at the Floralia!" Perhaps she has even an ambition to appear in public competitions and is practicing for the arena! "See how she pants as she goes through her prescribed exercises; how she

²¹² Pliny: *Letters*, v, 6; ix, 15, 36.

²¹³ Plutarch: *Caesar*, 17; Suetonius: *Julius*, 57; Dio, lxxviii, 11.

²¹⁴ Eucharisticus, 141-54; Ausonius, xx, 14.

²¹⁵ Mau: "Ballspiel," loc. cit., II, Pt. II, 2832-4.

²¹⁶ *Letters*, v, 16.

²¹⁷ *Art of Love*, III, 349 et seq.

²¹⁸ Bk. VII.

bends under the weight of her helmet. . . ." ²¹⁰ The time did come, indeed, when women appeared in physical contests. They are said to have participated publicly in gymnastics on one occasion (200 A.D.) and vied fiercely with each other; it caused something of an uproar, however, and women, regardless of birth, were forbidden thereafter "to fight in single combat." ²²⁰

Some public baths provided special accommodations for women; others served only for men. Women of high station used the public institutions. The mother of Augustus is said to have gone to the public baths. At Pompeii, a smaller bath, not communicating with the larger, but having about the same arrangements, is believed to have been for women. In smaller towns, where the same institution served both men and women, certain hours were assigned to women, and others to the men. ²²¹ Following the new mores, many went to extremes. The emancipated woman, Juvenal ²²² declares, goes to the baths at night and exercises until exhausted. In later days, when laxity ruled at Rome, men and women bathed in common, a practice which Juvenal and Martial mention, and Quintilian condemns as indicative of adultery. ²²³ How general the custom became is debatable, but Hadrian is said to have ordered the sexes to bathe separately, and provided separate baths for them. Marcus Antoninus also sought to abolish the practice, as did Severus Alexander; Elagabalus, on the contrary, is said to have encouraged the evil by his personal example. ²²⁴

GAMES IN GAUL An interesting and significant testimony to the continuity of Roman life and culture is afforded by the portrait of life in Gaul, drawn by Sidonius in the fifth century. Born at Lyons about 431, he lived nearly sixty years, saw the Romans and Germans fight the Huns, and witnessed the withering of the last pretense of Roman emperors to imperial sway. A member of an old senatorial family, who had turned to the ecclesiastical profession, Sidonius exhibits none of the asceticism of the Christian movement; others might profess much self-denial, but not the Bishop. From his letters one gains glimpses of a life filled with numerous worldly pleasures—those that Romans had either carried to the provinces or had found there indigenous. In general, an air of quiet and peace pervades his pages—the peace of retirement, with slight indication of any stirring *Tun und Streben*. There is

²¹⁰ *Satire vi*, 246 et seq. Trans. by G. G. Ramsay. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.; cf. Martial: *De Spectaculis*, vi-vi B.

²²⁰ *Dio*, LXXVI, 16.

²²¹ Suetonius: Augustus, 94; Becker: *op. cit.*, p. 383; Mau: "Bäder," *loc. cit.*, II, Pt. II, 2750.

²²² *Satire vi*, 419 et seq.

²²³ Martial: *Epigrams*, III, 51; Quintilian, v, 9, 14; Ammianus, XXVIII, 4, 9.

²²⁴ *Dio*, LXIX, 8; Spartianus: Hadrian, 18; Capitolinus: Marcus Antoninus, 23; Lampridius: Severus Alexander, 24; Elagabalus, 31.

pleasantry and amusing jest; best of all there is no word of officials or taxes; no informers to report; nothing said worth an informer's trouble! ²²⁵ The days of youth were spent in sport, as serenely as Roman boys had done for centuries past. Faustinus and Sidonius "played ball and dice together, and vied in leaping, running, hunting, or swimming. . . ." ²²⁶ To his brother-in-law, Ecdicius, Sidonius recalls the youthful sports of ball-play, dice, hunting with horses, hawks and hounds, and with the bow. ²²⁷

Ball games are mentioned frequently by Sidonius. To Lupus he writes that Lampridius is delighted with a game of ball. ²²⁸ At his estate, Avitacum, near Clermont, is a greensward; and a grove near-by, in whose dense shade they play at ball when Ecdicius comes to visit. ²²⁹ Sidonius mentions games involving only two players; another in which two players oppose two others; ²³⁰ still a third makes use of many contestants. Sidonius admits himself an ardent player; the ball and book are his "twin companions." Religious services alternate with the ball game and other diversions. The annual church procession has ended; they are compelled to remain near-by to be on hand at the next Mass. The interval of waiting is filled with talk; then some turn to games, both sedentary and active. His description of the game played, while lively, gives but little insight into the manner of play. It is, however, a violent game, and involves two sides; there is much running, collision of the players, intercepting or parrying the ball; and the older players are soon exhausted. The rather vague description suggests the *harpastum*, to which reference has already been made. ²³¹ Properly speaking, Sidonius' descriptions do not seem to justify interpreting any of the games as "tennis." ²³²

Dice and the board game are often mentioned, and seem to hold a firm place in the affection of the clerical households. After a ball game, Ecdicius and Sidonius commonly resort to dice, and rest their legs. ²³³ Again, between the early morning church procession and the next Mass, at near-by Tierce, one group turns to dice, while others play ball. "Brother Domnicius" is most addicted to dice and the board game; and he rattles the bones, "as if he sounded a trumpet-call to play." ²³⁴ When visiting Ferreolus and Apollinaris, one hears the dice rattle and the players shout. ²³⁵ The board game, probably the duo-

²²⁵ *Sidonius*, v, 17, 5.

²²⁶ *Ibid.*, iv, 4, 1. From *The Letters of Sidonius*, translated by O. M. Dalton (The Clarendon Press).

²²⁷ *Ibid.*, iii, 3, 2-3.

²²⁸ *Ibid.*, viii, 11, 8.

²²⁹ *Ibid.*, ii, 2, 15.

²³⁰ *Ibid.*, ii, 9, 4.

²³¹ *Ibid.*, v, 17, 3-8.

²³² *Ibid.*, i, cxii.

²³³ *Ibid.*, ii, 2, 15.

²³⁴ *Ibid.*, v, 17, 6.

²³⁵ *Ibid.*, ii, 9, 4.

decim scripta of earlier days, suggests backgammon, and is played with dice and two differently colored sets of men.²³⁶ The description of Theodoric II at the board game is unique. Evidently the good Bishop of Clermont knew how to lose one game and win another:

"When inclined for the board-game, he is quick to gather up the dice, examines them with care, shakes the box with expert hand, throws rapidly, humorously apostrophizes them, and patiently waits the issue. Silent at a good throw, he makes merry over a bad, annoyed by neither fortune, and always the philosopher. He is too proud to ask or to refuse a revenge; he disdains to avail himself of one if offered; and if it is opposed will quietly go on playing. You effect recovery of your men without obstruction on his side; he recovers his without collusion upon yours. You see the strategist when he moves the pieces; his one thought is victory. Yet at play he puts off a little of his kingly rigour, inciting all to good fellowship and the freedom of the game: I think he is afraid of being feared. Vexation in the man whom he beats delights him; he will never believe that his opponents have not let him win unless their annoyance proves him really victor. You would be surprised how often the pleasure born of these little happenings may favour the march of great affairs. Petitions that some wrecked influence had left derelict come unexpectedly to port; I myself am gladly beaten by him when I have a favour to ask, since the loss of my game may mean the gaining of my cause." ²³⁷

Hunting is referred to many times. There is apparently plenty of game; the bow, spear, nets, and hounds are the chief means of taking it. Sidonius writes to Agricola, describing the habits of Theodoric II on the chase: the sighting of beast or bird; taking the bow from pages and stringing it; placing the arrow; and his accurate shots.²³⁸ From Namatius he asks news of his work and of his hunting, but warns him not to boast of his prowess in the chase: "It is useless to invite the boar to meet your spears, so long as you take the field alone with those exceedingly merciful hounds of yours; you just rouse the quarry, but not enough to make him run." ²³⁹

Fishing found favor also in fifth-century Gaul. On the estate Avitacum, the fisherman goes to the middle of the lake, lets out the seine, and suspends the lines for trout. One can watch these operations as one sits at the table.²⁴⁰ To Agricola he writes declining an invitation to visit him and go fishing, because

²³⁶ *Ibid.*, II, 216, 249.

²³⁷ *Ibid.*, I, 2, 7-8. From *The Letters of Sidonius*, translated by O. M. Dalton (The Clarendon Press).

²³⁸ *Ibid.*, I, 2, 5.

²³⁹ *Ibid.*, VIII, 6, 10-2. From *The Letters of Sidonius*, translated by O. M. Dalton (The Clarendon Press).

²⁴⁰ *Ibid.*, II, 2, 12.

of illness in the family. He would like to go; Agricola has a fine, fast boat, excellent steersman and oarsmen.²⁴¹

Boating is also a sport at Avitacum. In mid-lake is an islet with a turning post, round which boat racers were wont to turn, or come to grief.²⁴² On the Moselle, at an earlier date, Ausonius described the mimic battle of boats in midstream: "They circle in and out, and graze the sprouting blades of the cropped turf along the green banks. The husbandman, standing upon the rise of the green bank, watches the light-hearted owners as they leap about on stern or prow, the boyish crew straggling over the river's wide expanse, and never feels the day is slipping by, but puts their play before his business, while present pleasure shuts out whilom cares."²⁴³

The bath seems still as necessary to the Bishop of Clermont in the fifth century as it had been to worldly Romans of centuries past. He is filled with admiration for the baths at Octaviana.²⁴⁴ The estates of Ferreolus and Apollinaris both have permanent baths. On one occasion, however, after a ride to stir the appetite for dinner, an improvised bath was set up because the regular establishments were not in readiness. A deep pit (dug by servants), red-hot stones, a roof of hazel brush and goats' hair coverings, and water—these alone were needed to make a vapor bath in which, he says, whole hours were spent with lively talk and healthy perspiration. Then they revived themselves with fresh water.²⁴⁵ To Domitius, Sidonius writes, giving a description of his baths at Avitacum. They are on a wooded hill; logs slide down its slope to the furnace which heats them; they are so well lighted as to embarrass modest bathers. The apartments—hot bath, anointing room, cold bath, *piscina*, and other facilities—follow the usual pattern of Roman baths rather closely. The *frigidarium* challenges comparison with those of public institutions. Sidonius' description emphasizes the atmosphere of modesty and propriety, quite unlike what might be found elsewhere: on the walls are no nude figures which disgrace the artist; no absurd, painted actors; no fighters or wrestlers in indecent holds; only a few verses, which one may read once, but will not care to read again. Here are neither Parian, Carystian, or other foreign marbles, but the walls provide a satisfactory coolness which an ordinary, plain citizen may desire. It's hot outside; fords are dry; streams scarcely run; the little water in them boils!²⁴⁶

Hawking seems to have been unknown to Greek and to Roman, save as they

²⁴¹ *Ibid.*, II, 12, 1-2.

²⁴² *Ibid.*, II, 2, 19.

²⁴³ Ausonius, x, 200 et seq. Trans. by H. G. Evelyn White. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

²⁴⁴ Sidonius, VIII, 4, 1.

²⁴⁵ *Ibid.*, II, 9, 7-9.

²⁴⁶ *Ibid.*, II, 2, 1-8; cf. Ausonius, x, 337 et seq.; Statius, I, 5.

learned the art from barbarian neighbors and invaders. The Lombards, however, were skilled in training hawks, and introduced falconry into Italy, as did others in other provinces. Sidonius speaks of hawking as one of the skills in which Avitus is proficient, and names it as one of the youthful sports of Ecdicius.²⁴⁷ Paulinus Pellaeus, born in Macedonia and educated in Gaul, alludes to his weakness for "a shapely hawk" and other appurtenances of the chase.²⁴⁸

²⁴⁷ Bk. III, 3, 2; Gibbon: *op. cit.*, IV, 37 f.

²⁴⁸ *Eucharisticus*, 141 *et seq.*

HEALTH, EXERCISE, DIET, AND DOCTORS

Livy praised the site of Rome and her "healthful hills," and Strabo noted Italy's generally salubrious climate and hot and cold springs—nature's restoratives of health¹—but pestilence seems to have been a frequent visitor. Cicero, though he called Rome's location "healthful," with her hills enjoying the breezes and providing shade "to the valleys below," recognized the pestilential character of the region.² Horace commented on the Tiber's overflow, laying "low the king's monument and Vesta's shrine";³ and flooding was not uncommon. July and August, when the heat was greatest, were marked by highest mortality. Recurrence of epidemics had much to do with promoting certain religious practices. The growth of Apollo's worship was, partly at least, the result of an effort to control disease. A temple was vowed to the god (432 B.C.) because of an epidemic; again a great pestilence of unknown cause and of long duration (399 B.C.) led to consultation of the Sibylline books and supplications to Apollo and other deities for eight days.⁴ The Apollinarian Games, instituted 212 B.C., were designed to insure victory over Carthage, Livy says, rather than for reasons of health; but in 208 B.C., when a terrible pestilence swept city and country, supplications were made in every street of the city, and a law fixed the nones of July as the date for their perpetual performance.⁵

Despite numerous pestilences recorded in early times, Varro was of the opinion that Romans then had better health than in his day, for they worked on the land eight days and went to market on the ninth; they had then no need of "citified gymnasia of the Greeks"—of which, in his day, one was not enough—

¹ Livy, v, 54; *The Geography of Strabo*, vi, 4, 1.

² *The Republic*, ii, 6.

³ *Odes*, i, 2.

⁴ Livy, iv, 25; v, 13.

⁵ *Ibid.*, xxv, 12; xxvii, 23; Fowler: *The Roman Festivals of the Period of the Republic*, pp. 180 f.

and had their farms well tilled besides.⁶ Young and old were affected by the transition from an economy of scarcity to one of abundance and luxury. The change in dietetic habits was of fundamental importance. For children of the olden days there was no danger of overeating; in his day, however, Varro observed, it had been discovered to be bad for "immature children" to eat heavily and sleep too much.⁷ Seneca, too, assailed the Romans' manner of life, especially gluttonous eating, as the cause of numerous ills. In earlier days they toughened their bodies by hard labors, tiring themselves with running, hunting, and delving in the soil; they had appetite for plain food, and there was no need for medical instruments and pills. The Romans' elaborate diseases were produced by elaborate courses. "How many men are kept busy to humour a single belly!"⁸ Medicine then was extremely simple, for it really had very little to do; in Seneca's day it had become remarkably complex, for diseases were as numerous as men! Directly and indirectly, Latin writers frequently criticized their own society, commenting on the superior qualities of the barbarians of whom they were becoming increasingly aware. Ammianus related a common current report that certain primitive people, living in mountainous places, surpassed the Romans in health, strength, and longevity—believed to be "due to abstinence from a conglomeration of diet and from hot baths."⁹ Constantius, he said, unlike so many of his day, kept in sound health by moderation in eating and drinking.¹⁰

Considering the growth in number and complexity of illnesses, Plutarch had potentially a numerous audience in need of his words of *Advice about Keeping Well*. His wisdom, to be sure, was not novel. The science of dietetics, as Celsus said, had been developed by Greek physicians long before his time. He himself had written of foodstuffs extensively, so that those in health might know how to use them properly, and that those who were ill might suit their diet to their particular condition.¹¹ Plutarch's advice was certainly hard for wealthy Romans of fastidious tastes to follow. Guarding against excess in eating and drinking was the principal rule. One must judge by the stomach, not by the tongue, what to eat; one must be his own judge of food and drink, rather than depend on a physician to tell him.¹² Galen, in later years, gave a much more detailed and thorough account of the properties of foods and juices.¹³ Centuries thereafter, when the barbarians put on Roman ways, they learned something of the

⁶ *On Agriculture*, II, introduction, 2.

⁷ Aulus Gellius, *The Attic Nights* of, IV, 19.

⁸ *Epistle* xcvi, 24.

⁹ Ammianus Marcellinus, xxvii, 4, 14.

¹⁰ *Ibid.*, xxi, 16, 5.

¹¹ Celsus *de Medicina*, I, *Prooemium*, 9; II, 18–33.

¹² Plutarch: *Advice about Keeping Well*, 4, 26.

¹³ *Opera*, vi, 453–831.

rules of diet of the older Graeco-Roman culture. Anthimus, physician to Theodoric the Great, advised him, in his *De Observatione Ciborum*, to observe moderation in eating and drinking, as Plutarch and Galen had done before, and added guidance concerning the merits of digestible, well-prepared foods, eating of raw meat, how bread should be baked, the avoidance of doves, the necessary freshness of oysters and fish, the uses of barley gruel, goats' milk, unsalted butter, quince jelly, and cheese.¹⁴

A prudential philosophy appealed strongly to the Romans. Exercise was for many simply a means to health. In youth, naturally, play is a spontaneous expenditure of superfluous energy; it is only necessary to allow time for it. Martial bids the schoolmaster rest his rod during the heat of midsummer, for health is then a sufficient goal for children.¹⁵ Recreation for health is most stressed in the care of the sick and the old. Cicero says ". . . we must fight, as it were, against disease, and in like manner against old age. Regard must be paid to health; moderate exercises must be adopted; so much of meat and drink must be taken, that the strength may be recruited, not oppressed . . . our bodies, indeed, by weariness and exercise, become oppressed; but our minds are rendered buoyant by exercise."¹⁶

A great deal of varied, sometimes conflicting, advice on how to keep well by taking proper exercise might be had by anyone in ancient Rome. Much of it was positive; some, purely negative. Certain authors advised the country; others prescribed exercises that took no room and required no journey. Horace considered ball-play bad for sore eyes and dyspepsia,¹⁷ but Galen thought it one of the best forms of exercise.¹⁸ Cicero recommended the country for the old and infirm. Agriculture's mild activities warmed the body as well as, or better than, sun-bathing or sitting by the fire. Fowling and hunting were, he thought, a kind of leisure labor, which stimulated an appetite for country fare. Arms, horses, spears, clubs, balls, swimming, and running were fit for young men, but not for the old. Dice might be allowed to the old, but they could be happy without them.¹⁹

Juvenal, too, recommended the "country school" of relaxation, which, far from being for the rich only, was really cheaper than living in town! Most of the sick people in Rome, he said, "perish for want of sleep."²⁰ Only the rich could sleep in town, so mean were the conditions of the poorer sort. If one could forego the circus, he could readily get a little country spot for what a

¹⁴ Riesman: *Medicine in the Middle Ages*, p. 13.

¹⁵ *Epigrams*, x, 62.

¹⁶ *On Old Age*, 11.

¹⁷ *Satires*, I, 5.

¹⁸ "De Parvae Pilae Exercitio," *Opera*, v, 899 ff.

¹⁹ *On Old Age*, 16.

²⁰ *Satire* III, 223 et seq.

hole in town cost in one year. There, with a garden, a well, and some mild exercise of the hoc, one could produce food for a hundred Pythagoreans, and gain health for the gardener besides. Martial echoed the same thought:

Why do I seek my poor Nomentan home . . . ?

Because I cannot find a place in Rome

Where men as poor as I can sleep or rest.²¹

Sedentary occupations determined to some extent the types of exercise to be employed. Breathing, reading, talking, massage, exercise, the warm bath, and rubbing with oil by the fire were recommended by Plutarch for those devoted to scholarly pursuits.²² Seneca thought that short, simple exercises—running, jumping, weight-swinging, walking, riding, vociferation—were most conducive to the mental and physical well-being of the studious.²³ Sun baths became common as a means to relaxation and health. Seneca declared that some men spent their whole life in sun-bathing, ball-play, and board games (*latrunculi*).²⁴ Cicero recognized the use of sun-bathing, but preferred the warmth of body derived from agricultural labor.²⁵

Medical gymnastics of some kind was a necessity when men no longer had active labors to perform, whether in the camp or in the field. Though Romans had no high regard for athletic contests as such, they turned to them readily enough for the sake of health. Celsus advised those busy with public or private affairs to take some part of the day for physical care. For those tired out and troubled with poor digestion, exercise should be moderate; for those less fatigued and having better digestion, it should be more extensive and vigorous. All exercise should come before eating; it should be taken out of doors, rather than indoors; and in the sun, not in the shade. Drill, running, walking, ball-play, and reading out loud are recommended. Horseback riding, useful for certain diseases, is disadvantageous for others. Exercise should generally end with perspiration, but stop short of fatigue. The set regulations and immoderate exercises of the athletes should be avoided. Exercise should be followed by anointing, or a bath, and then rest.²⁶

Galen, who was at one time a physician at a gladiatorial school and later attended Marcus Aurelius, gave much thought to exercise for the sake of health. In the "Exhortation to the Study of the Arts" and the treatise on the "Small

²¹ *Epigrams*, xii, 57. Trans. by J. A. Pott and F. A. Wright. Courtesy of F. P. Dutton & Co., Inc., New York.

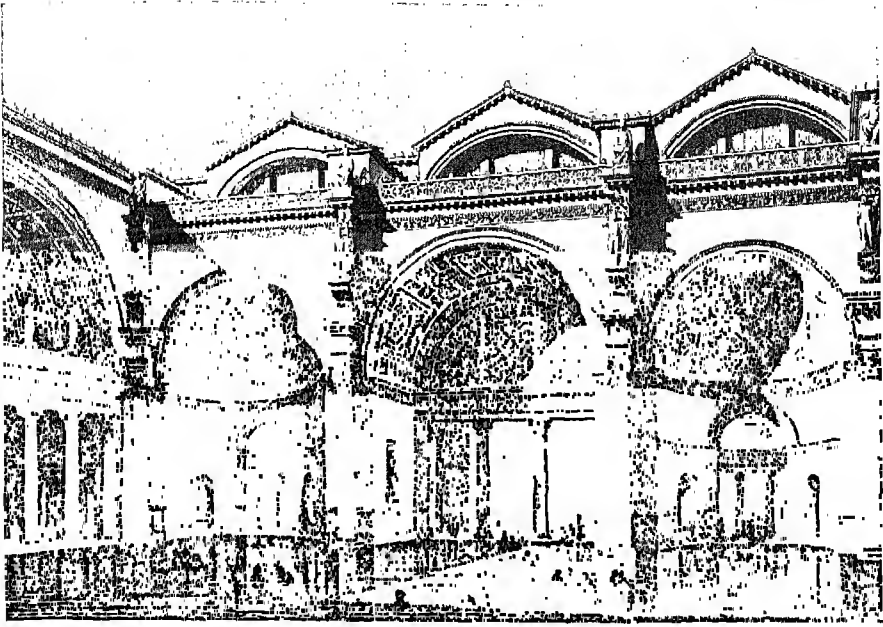
²² *Keeping Well*, 16-7.

²³ *Epistle* xv, 4-8.

²⁴ *On the Shortness of Life*, xiii, 1.

²⁵ *On Old Age*, 16.

²⁶ *Celsus*, I, 2, 5-8; IV, 26, 30.



FRIGIDARIUM, BATHS OF CARACALLA

(E. M. Viollet-le-Duc, *Entretiens sur l'Architecture*, Pl. vii)

Ball," he set forth his chief convictions regarding the evil effects of certain kinds of exercise and the benefits to be derived from others. Ball-play and hunting, he thought, were best, for they joined exercise of the mind and of the body, and not only one part of the body but all the extremities and the eyes as well. Ball games were preferred to hunting, however, since they required less expenditure of time and money and could be graduated according to the amount and violence of exercise needed. The worst effect of athletic contests was that they not infrequently resulted in maiming the participants; and when carried to extremes, as among the professionals, the mind itself was reduced to the level of the brute.²⁷

The use of baths as remedial agents was widely recommended. Celsus thought them useful both during and after certain kinds of fever, but close attention must be given to the time of bathing, extent of it, and avoidance of exposure. In certain forms of wasting disease (*tabes*) bathing might be employed, but in others avoided.²⁸ For the sick, Galen prescribed the use of the usual bath—the unheated room, the warm room, and the hot room. After

²⁷ Daresberg: *Oeuvres de Galien*, I, 31-46; Galen: *De Parvae Pilae Exercitio*, 1-2.

²⁸ Celsus, II, 17; III, 12-5, 22.

passing through these, the bather should go back to the *frigidarium*, take a cold bath, and be rubbed dry.²⁹

In numerous instances prominent men turned to physical exercises of some sort for the sake of health, or claimed that exercise was the reason of their well-being. Augustus gave up the exercise of the *Campus Martius* after the civil wars, and devoted himself to milder substitutes. He is said to have used moderation in bathing, but was sweated by a fire, or anointed, and then doused with water warmed by the sun. When he had rheumatism, and hot salt and sulphur baths were prescribed, he merely sat on a stool and plunged his hands and feet into the water.³⁰ Vespasian enjoyed excellent health, but did nothing to secure it except rubbing "his throat and the other parts of his body" while in the ball-court and fasting one day a month.³¹ Pliny kept his body well by hunting.³² Paulinus Pellaeus left off serious study and turned to active sports, such as hawking, hunting, and riding, in order to regain his health.³³

While some sought health by exercise and proper diet, others turned to doctors. Greek medicine, rooted in the observation of nature,³⁴ had become emancipated from the thrall of primitive magic, charms, incantations and the bonds of priestcraft, since the days of Hippocrates (460 B.C.). Medical science, extended by the works of Theophrastus, Celsus, Dioscorides, Galen, Aretaeus, and others, ultimately spread throughout the world.

Early medicine at Rome was a combination of primitive magic of the Italic peoples, the priestly lore of the Etruscans, and infiltrations of superstitions of Greek origin, which scientific medicine never succeeded in fully rooting out. It relied chiefly upon incantation, binding and loosing (magic enthrallment, or freeing, by laying on of hands), name and number magic, lustration, incubation (temple sleep and dream cures), votive gifts and curses, snake-healing, magic waters, wells, images and stones, sympathetic agency, and astrology.³⁵ Belief in magic cures is reflected in ancient fragments, such as this—a magic charm for "footache"—repeated "thrice nine times" while one spits and touches the ground:

Earth, take the pest to thee!
Health, tarry here with me! ³⁶

That some early cures were more realistic, however, is shown by the Twelve

²⁹ Galen: *Opera*, x, 706-26; Marquardt: *Das Privatleben der Römer*, pp. 279 f.

³⁰ Suetonius: *Augustus*, 82-3.

³¹ Suetonius: *Vespasian*, 20.

³² *Letters*, v, 6.

³³ *The Eucharisticus*, 113 et seq.

³⁴ Riesman: *op. cit.*, p. 9.

³⁵ Allbutt: *Greek Medicine in Rome*, chaps. 1-3.

³⁶ Lawton: *Classical Latin Literature*, p. 16.

Tables which refer to the use of gold in the teeth,³⁷ for which Romans were perhaps indebted to Etruscans, whose progress in various kinds of metal work was phenomenal.

The arrival of Greek medical science at Rome was by no means enthusiastically greeted, apparently; or, if so, it soon fell into contempt. Cato the Censor, like many of his countrymen, would have nothing to do with Greek physicians. Instead, he is said to have depended on cabbage, other herbs, duck, pigeon, and hare, spells and prayers, whose uses were set forth in his book of recipes; moreover, he is said to have boasted that he and his family had kept in excellent health. Pliny declared later, when the city was overrun with doctors, that for six hundred years the Romans had gotten along well without any physicians at all.³⁸ Opposition to Greek medical practitioners was doubtless due largely to their being foreigners. Many other novelties that came from Greece to Rome had aroused similar distrust and opposition, as has been noted. Pliny says Cato warned his son against the Greeks as a "most iniquitous and intractable race"; if they bestowed their literature on Rome, it would mar everything; and their physicians would wreak still speedier havoc. "I forbid you to have anything to do with physicians."³⁹ Cicero⁴⁰ listed medicine as an honorable profession for people of a certain social station, i.e. slaves or freedmen—not the native Roman. In general, these classes continued to supply most of the physicians of Rome. Pliny declares that but "very few of our fellow-citizens" have attempted it.⁴¹ Many foreigners became citizens, however, by virtue of their enfranchisement as members of the profession.

With the development of medicine and a vast, lucrative field for practitioners in such a city as Rome, there came specialization of various kinds. Besides surgeons and general practitioners, there were those who devoted themselves to the diseases of the eye, ear, skin, teeth, tumors, fevers, consumption, fractures, female diseases, obstetrics, and many others. Martial knows all the specialists to whom to go for any ailment, but for "a total wreck," well, "Who can mend me?"⁴² Professional folk were also divided into several schools—Empirics, Eclectics, Dogmatics, Methodists, Pneumaticists, Hydrotherapists, Vinotherapists, and plain quacks—some of which took the name of their founder.

There being plenty of wealth and no end of diseases, medical men at Rome began to win a rich harvest. Pliny speaks of "the rapacious bargains made with their patients while their fate is trembling in the balance, the tariffs framed

³⁷ Cicero: *Laws*, II, 24.

³⁸ *Natural History*, xxix, 5, 8; Plutarch: *Cato*, 23.

³⁹ Pliny: *Natural History*, xxix, 7.

⁴⁰ *Offices*, I, 42; Marquardt: *op. cit.*, pp. 772 ff.

⁴¹ *Natural History*, xxix, 8; Friedländer: *Roman Life and Manners under the Early Empire*, I, 167 f.

⁴² *Bk. x*, 56.

upon their agonies," and declares that only the competition of vast numbers of practitioners kept charges within some degree of moderation. Nevertheless, he informs us that Charmis charged 200,000 sesterces for one cure. Claudius fined the surgeon Alcon 10,000,000 sesterces, who, after returning from exile, soon made it back. Court physicians in the time of Augustus and Tiberius were paid 250,000 sesterces; Stertinius received 500,000, but thought he could have made out much better in private practice. Crinas, a native of Marseilles, is said to have joined medicine with astrology, and left a fortune of 10,000,000 sesterces, having spent almost that sum in rebuilding the walls of his native town.⁴³

An extraordinary refinement of knowledge was pretended by some physicians. One remedy was composed of fifty-four elements, not one in the same proportion, some being as small as one-sixtieth of a denarius. What gods taught men such trickery? Pliny asks. It's all "vain ostentation," a "monstrous system of puffing off the medical art."⁴⁴ To gain celebrity, novelties must be introduced, even at the cost of human lives. No doctor thought it proper to agree with another—hence the doleful discussion over the bed of the ailing patient. Anyone who had the gift of ready speech could easily make himself the arbiter of life and death. Extreme remedies were sometimes employed. Charmis proscribed warm baths, but also urged patients to plunge into cold water in the depth of winter.⁴⁵ Augustus is said to have been cured of his illness by the use of cold baths and cold potions, prescribed by Antonius Musa.⁴⁶ Aristides, the rhetorician, we are told, was ordered to bathe in an ice-cold river and run in the cold wind when he had a high fever.⁴⁷

How good were the doctors? Quality doubtless had as many degrees as there were physicians. Some were indubitably excellent; others, nothing but opinionated, quarreling quacks. Pliny deplored the disputes over the sickbed; Sidonius shows that wrangling still went on in the fifth century. Only by leaving town and going to the country could his family escape the doctors "who disagree across the bed, and by their ignorance and endless visits conscientiously kill off their patients."⁴⁸ The ill effects of doctors' disputes were allegedly augmented by the presence of their pupils. Martial⁴⁹ declares he was not seriously ill till Symmachus and his hundred pupils gathered round and "pawed" him with their chilly hands. Some are said to have held aloof from doctors. Tiberius

⁴³ Pliny: *Natural History*, xxix, 5, 8. Trans. by H. Rackham. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁴⁴ *Ibid.*, xxix, 8.

⁴⁵ *Ibid.*, xxix, 5.

⁴⁶ Dio's *Roman History*, liii, 30.

⁴⁷ Dill: *Roman Society from Nero to Marcus Aurelius*, p. 465.

⁴⁸ Sidonius: *Letters*, ii, 12, 2.

⁴⁹ Bk. v, 9.

took good care of his health, according to Suetonius,⁵⁰ without aid or advice from physicians. Plutarch thought it ridiculous that a man over sixty should get a physician to take his pulse.⁵¹ Presumably few, however, were hardy enough to take the advice of Marcus Aurelius: "If you are sick do not give doctors a chance to make an ado but let life go on merrily and well."⁵²

A new profession—grown rapidly to huge proportions, claiming a high degree of specialization and refinement of knowledge, and harboring doubtless a good many charlatans—provided an excellent theme for serious satire or pleasant railery. Many there were who enjoyed jibing at the doctors. Pliny cited a tomb inscription: "It was the multitude of physicians that killed me."⁵³ Martial ribbed the doctors who failed in their profession, and took new jobs—more or less closely related:

Diaulus, once a surgeon, is now an undertaker;
At last useful to the sick, the only way he's able.

Another doctor turned gladiator; before, he killed by "force of . . . physie"; now, by "physical force."⁵⁴ A man who, cheerful, dined one evening, was next morning dead—not from some terrible disease, but because before him in a dream there stood "the quack Hermocrates."⁵⁵ Ausonius tells the story of Doctor Eunomus, whose patient, Gaius, died. The physician met his patient's pallid ghost and, upon inquiry, was informed that it came from Dis, to summon doctors. Eunomus froze with fright. "Fear nothing," whispered the sprite, "I said, as all men say, that no man who is wise calls you a doctor."⁵⁶

Greek cities had public doctors by 500 B.C.; and Strabo reported that Masillia had teachers of medicine, as well as other arts and sciences, employed "not only by private persons, but by towns for common instruction."⁵⁷ A Peloponnesian, Archagathus, said to have been the first physician to come to Rome (218 B.C.), received the privileges of citizenship and opened a medical clinic, which was "provided for his practice at the public expense."⁵⁸ Though welcome for a time, his practices soon led to suspicion and disrepute. Nevertheless, doctors increased; and when they had established themselves extensively, Caesar began a policy of state encouragement of medical science, conferring citizenship on those who practiced it there.⁵⁹ Under the Empire, the practice of employing

⁵⁰ Tiberius, 68.

⁵¹ *Keeping Well*, 26.

⁵² Riesman: *op. cit.*, p. 366.

⁵³ *Natural History*, xxix, 5.

⁵⁴ Bk. viii, 74.

⁵⁵ *Ibid.*, vi, 53.

⁵⁶ Ausonius, xix, 4.

⁵⁷ Bk. iv, 1, 5.

⁵⁸ Pliny: *Natural History*, xxix, 6.

⁵⁹ Suetonius: *Julius*, 42.

court physicians, the provision of medical men for the armies and fleets, the development of communal medical service, and the demand for medical specialists at gladiatorial schools all combined to place physicians in an enviable position, both from a financial and professional point of view, if not a social one. In later imperial days certain physicians gained the title of *archiater* (ἀρχίατρος), chief doctor—such, for example, were Stertinius Xenophon, physician of Claudius, and Andromochus, Nero's doctor.⁶⁰ Severus Alexander had a *medicus palatinus*, with a regular salary, and six other doctors who received double and triple rations.⁶¹ That these court physicians were freed from all civil duties is shown by a decree of 326, which refers to this as a long-established privilege.⁶²

As noted, some sort of communal medical service was already known at Masillia in the time of Strabo. Augustus rewarded Antonius Musa handsomely for his services and decreed exemption from taxes not only for him but for the members of his profession in Rome, both for the present and the time to come.⁶³ This privilege was extended by Vespasian and Hadrian to provincial physicians. Antoninus Pius fixed the number of public doctors in Asia at ten for large cities, seven for smaller ones, and five for the smallest. These physicians were named and paid by local municipal authorities, and were freed from all civil burdens. They could be removed by the same authority. After the second century it seems to have been common for most cities to appoint communal doctors. In larger towns, at least, there were *collegia*, guilds of the profession. Some cities provided halls (*auditoria*) for the use of physicians as dispensaries, offices, and lecture rooms. Severus Alexander is said to have assigned lecture rooms for physicians (as well as for other teachers) and provided rations for such of their pupils as were poor, yet of free birth.⁶⁴ The teaching of medicine became widespread not only at Rome but in such provincial towns as Arles, Nîmes, Marseilles, Lyons, and Saragossa. In Valentinian's reign it was decreed (368 A.D.) that the city prefects should name fourteen chief physicians for each of fourteen regions, in addition to one each already provided for the Vestal Virgins and the *Porticus Xysti*, the Athletic Society. These doctors were paid from public funds, and they were to treat the poor free; but they might also take private practice for fees. When vacancies occurred, they were to be filled by a vote of the remaining colleagues, with the confirmation of the Emperor.⁶⁵

⁶⁰ Marquardt: *op. cit.*, p. 775.

⁶¹ Lampridius: *Severus Alexander*, 42.

⁶² Marquardt: *op. cit.*, p. 776.

⁶³ Dio, LIII, 30.

⁶⁴ Lampridius: *Severus Alexander*, 44.

⁶⁵ Marquardt: *op. cit.*, pp. 776 ff.; Friedländer: *op. cit.*, I, 169 f.; Gregory of Tours: *History of the Franks*, I, 416 f.

Besides encouragement of medical instruction, selection and public approval of head physicians, and the assignment of specified numbers of them to certain areas, there was apparently some effort at quarantine. Ammianus says that, since it "is natural in the capital of the world" for "cruel disorders" to gain such headway that "the healing art is powerless even to mitigate them, it has been provided, as a means of safety, that no one shall visit a friend suffering from such a disease. . . ." ⁶⁶

Under Theodoric the Great (c. 454-526) doctors took an oath and were honored with the title *comes archiatrorum*. Though Justinian's Code (529) directed district physicians to minister willingly to the poor and not keep their aid for the rich alone, Procopius informs us that by Justinian's withdrawal of maintenance allowances—previously granted by emperors for the encouragement of scientific endeavor—and by his absorption of the local resources of cities, doctors and teachers were really robbed of their support, and hence could no longer be provided. ⁶⁷

Although, due to the encouragement of Roman emperors, practitioners of medicine gained a preferred status throughout a vast territory, it cannot be said that medical science made proportional advancement. Only two major figures, Galen and Celsus, appeared in seven hundred years. After Galen there was a steady decline. At Alexandria at the end of the third century, scarcely "an eminent scientist" is mentioned after the time of "Galen, Soranus, and Julian." ⁶⁸

Though the scientific spirit of Greek medicine was regnant in the work of Celsus, Galen, and Aretaeus, the boundary between science and magic was doubtless often shadowy, even in the best days at Rome. With the gradual atrophy of critical intellectual life in the third and succeeding centuries, a general recrudescence of superstition and magic occurred, which ultimately engulfed the world of medical science. The resurgence of unscientific views and practices showed itself in Marcellus Empiricus (c. 410 A.D.) of Bordeaux; and, in some degree, the otherwise sound work of Alexander of Tralles (mid-sixth century) was marked by an admixture of superstitious belief. ⁶⁹

Though medicine has been called the chief science of the Merovingian Age, and though Latin translations of Hippocrates, Galen, Soranus, Oribasius, and others were available in the sixth century, the status of medical science was by no means high. Primitive belief and practices were infiltrating the medical

⁶⁶ Ammianus Marcellinus, xiv, 6, 23. Trans. by J. C. Rolfe. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁶⁷ Procopius: *The Anecdota or Secret History*, xxvi, 5-7; Grasberger: *Erziehung und Unterricht im Klassischen Altertum*, iii, 461; Gregory: *op. cit.*, i, 417; Riesman: *op. cit.*, p. 12.

⁶⁸ Fort: *Medical Economy during the Middle Ages*, pp. 61 f.; Riesman: *op. cit.*, p. 10.

⁶⁹ Allbutt: *op. cit.*, p. 39; Dill: *op. cit.*, pp. 459 f.

field, on the one hand, from Teutonic and perhaps also Celtic sources; they were pressing forward, too, under the aegis of religious authority of preachers and saints. According to Teutonic medicine, disease was explained by specific, wind-blown poisons—of which there were nine, and hence nine diseases—and also by various agencies such as worms and the elf-shot. The “possession” theory of disease causation, which emanated from Babylonia and spread through Rome, was accepted by Christians as a rule.⁷⁰

Thus, the medical science of Hippocrates and Galen had to contend against two pseudo sciences. One of them, accepted and practiced by Christian saints, was indeed a formidable rival; for, as Dalton says, “Every deceased saint of repute was a rival . . . [as] were many living holy persons qualifying for sainthood by austere lives.”⁷¹ Bishop Claudius of Turin and others are credited with protesting against saint cures, but “the practice became universal,” and there was “one or more saints for nearly every disease.”⁷² With the growth of Christian and Gnostic sects, says Fort, the healing art declined as a science “in exact proportion as Christianity or Gnosticism progressed”; and when Christianity became dominant, “under the colossal support of secular power, with the new system of religion came remedial adaptations, absurd, irrational, and no longer dependent on the fragile imperfections of human reason, but elevated to celestial or divine manipulation.”⁷³

⁷⁰ Gregory: *op. cit.*, I, 415 ff.; Riesman: *op. cit.*, pp. 12, 15.

⁷¹ Gregory: *op. cit.*, I, 418. From Gregory of Tours: *The History of the Franks*, translated by O. M. Dalton (The Clarendon Press).

⁷² Riesman: *op. cit.*, p. 20.

⁷³ Fort: *op. cit.*, pp. 61 f.

IDLE QUEST FOR HAPPINESS

WEALTH AND LUXURY

During the last centuries of the Republic vast changes in respect to private wealth took place in Italy and especially in Rome. At the time of the war in Spain (215 B.C.), when the treasury was exhausted, wealthy men subsidized the state's military operations with loans.¹ The gulf widened rapidly between rich and poor in the next hundred years. The last century of the old era saw the rise of millionaires, the concentration of wealth in few hands. Some fortunes were extremely large. Crassus had land alone valued at 50,000,000 denarii; in 91 B.C., 2,000 citizens probably possessed the wealth of Rome; whether more or fewer, it is certain that a very small, wealthy class was set off sharply from the many (320,000) who were on the grain dole at the middle of the first century. Wealth continued to increase, and was doubtless vaster in the second century A.D. than ever before; but by that time there were fewer great fortunes, the concentration in Rome was less, and many of the greatest holdings were in Asia Minor and Greece.²

As fortunes grew, luxury and an idle quest for happiness supplanted the simple life and vigorous activities of an earlier day. A pattern of luxury, as well as the wealth to pay for it, came from Eastern lands. Booty, brought from Asia Minor by Scipio in 189 B.C., seems to have been the initial source of luxury at Rome. Besides luxury goods—fancy tables, couches, tapestries, gems—there came musicians and dancers to entertain one's leisure, and cooks to satisfy the palate with hitherto unknown dishes.³ At the end of the Republic, with great wealth in hand and an unprecedented era of peace and security, extravagant luxury increased rapidly in the houses of the few.

¹ Livy, xxiii, 48-9.

² Abbott: *Society and Politics in Ancient Rome*, pp. 132 f.; Cary: *History of Rome*, pp. 454 f., 672 f.; Johnston: *The Private Life of the Romans*, p. 222.

³ Pliny: *Natural History*, xxxiii, 53; Livy, xxxvii, 59; xxxix, 6.

That the great wealth was badly used is the inevitable conclusion to be drawn from Roman writers of the late Republic and the Empire, even when generous allowance is made for exaggeration. It was an age of selfish individualism and spendthrift luxury, and many saw and condemned the growing evil. Polybius commented on the display of public and private wealth after Macedonia fell under Roman sway; observed the effect of it on morality; and noted Cato's indignation that pretty boys should bring more than fields, and caviar more than tillers of the land.⁴ Many were not aggrieved at wealth, but at the rapid conquest of it by those who had been poor. In Sulla's day, though the old ways were changing, older Romans disapproved both of those who rose swiftly from poverty to riches and those who wasted an inheritance.⁵ Many, however, recalling Sulla's victory, hoped to become senators, to feast, and live like kings; and young men of the poorer sort, who had once labored in the fields, were led by public and private doles to prefer the idleness of the city.⁶ Those who became freedmen, got wealth, and put on airs aroused contempt. Seneca pours his scorn upon Sabinus who has the "bank-account and the brains of a freedman" and purchases slaves—one to know Homer, one for Hesiod, and others to know each of the lyric poets—to give himself a reputation for learning.⁷

Rome's misfortunes, many thought, arose from war and increase of wealth. Rome at first was poor, says Sallust, but grew in population, territory, and riches; prosperity gave rise to envy, and wars followed with her neighbors.⁸ In early days private wealth was small, says Horace, and the common wealth was large; but now our "piles of royal magnificence" will soon leave no acres for the plow.⁹ Ovid joins in: A small hut and river sedge for bedding sufficed our ancestors; senators fed their flocks; the praetor left the plow and came to judgment. Now riches have grown, and frantic lust for wealth drives us on for more and more. Only money counts to-day.¹⁰ In primitive days, Lucretius says, skins were the object of desire; but now gold and purple harass life with care and weary men with conflict. This constant struggle, this failure to learn the limits of true happiness, has ". . . carried life into deep waters" and ". . . stirred up from their depths great tides of war."¹¹ Tiberius, urged to do something to restrain extravagant tendencies, declared that "victories over the foreigner taught us how to waste the substance of others . . ."; now we have learned how "to squander our own."¹²

⁴ *The Histories*, xxxi, 25.

⁵ Plutarch: *Sulla*, 1.

⁶ Sallust: *War with Catiline*, 37.

⁷ *Epistle xxvii*, 5-6.

⁸ *Catiline*, 6.

⁹ *Odes*, II, 15.

¹⁰ *Fasti*, I, 191-218.

¹¹ Lucretius (Jackson), V, 1434 et seq.

¹² Tacitus: *Annals*, III, 52-5.

In this age of fatted selfishness, materialism was the keynote of Roman life. Money, the ready measure of wealth, became a god; conspicuous parade of it gave social standing. Staberius would have his heirs record the amount of money he left behind, or exhibit one hundred pairs of gladiators, give a great feast, and distribute a whole African corn harvest! Riches are beautiful. Everything bows to them.¹³ Again, Horace says, "Money is shameless. It grows and grows . . ." but more is always wanted. Let us be rid of gold and gems, the occasion of all offense, ". . . if we are truly tired of our wickedness."¹⁴ Some men, though wild spendthrifts, appear to have been possessed of the madness of a miser. Caligula, it was said, had such a mania for the mere feeling of money that he poured it out, walked over the coins barefoot, and wallowed in them.¹⁵ No god was revered more than money. "How little you know about the age you live in," says Ovid, "if you fancy that honey is sweeter than cash in hand!"¹⁶ Juvenal concurs. Everything is forgiven, even the stigma of the slave's prison, if one has big moneybags. The first question is about a man's wealth, the last about character. Gaming and adultery are shameful in men of moderate wealth, but the rich who indulge themselves are brave fellows and fine men.¹⁷

Poverty is "the one great shame," "the worst of moral vices," says Horace.¹⁸ According to Ovid, ". . . the poor man everywhere lies low."¹⁹ Juvenal's portrait of his age emphasizes the evil, seamy side, but it is corroborated by many sources. Knowing the vice and weakness of Roman society of the late first century at first hand, and viewing them realistically, he declares ". . . it is hard not to write satire"; "Honesty is praised and starves."²⁰ In Rome everything is expensive—a house, a dinner, a toga; we live in "pretentious poverty." The poor should long since have left the city en masse. It is difficult for those hard pressed by poverty to emerge and be something. Grim symbol of the direst poverty of all is Juvenal's newly arrived dead man who shudders at the ferryman, for in his mouth is no copper for the fare.²¹

Juvenal lashes bitterly at the misery and poverty of the city. Seneca, with more detachment, advocates "contentment in poverty," and warns that a "mob of slaves avails not"—but he himself is rich, entertains lavishly, and has a "retinuc . . . all but imperial."²² Unlike either of them, Martial witnesses the

¹³ Horace: *Satires*, II, 3.

¹⁴ *Odes*, III, 24.

¹⁵ Suetonius: *Caligula*, 42.

¹⁶ *Fasti*, I, 191-218. Trans. by J. G. Frazer. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁷ Juvenal: *Satire* I, 106-116; III, 137-63; XI, 176-8.

¹⁸ *Satires*, II, 3; *Odes*, III, 24.

¹⁹ *Fasti*, I, 191-218.

²⁰ Juvenal, I, 30. 74; Ramsay: *Juvenal and Persius*, xxxiii-xxxiv.

²¹ Juvenal, III, 264-7.

²² Lawton: *Classical Latin Literature*, p. 244.

same characteristics of Roman life, wisecracks his way about the city, and offers hints to those who vainly hope to get on there. If one would be a plader, he must remember that some, though indeed eloquent, cannot pay their rent. If literary talents others would exploit, they should take warning from Virgils and "threadbare Ovids" wandering in the streets. If one thinks to find a generous patron, he must remember that "all have starved excepting three or four." If one really succeeds in making a go of it in Rome, it's "luck alone" if one's an honest fellow. One who came to the city gates, already starving, turned back "again to starve at home," on hearing of the dole in Rome.²³

The last centuries of the Republic were marked by a great increase of crime, and many public men sought to protect themselves by using armed slaves and gladiators. Varro,²⁴ speaking of an attempted murder, calls it a cause of lament, but no surprise, that such things are taking place in Rome. Crookedness assumed many forms. Complaisance made friends, but truthfulness was the source of unpopularity.²⁵ One entering public life met "shamelessness, bribery and rapacity" rather than "modesty, incorruptibility and honesty"; public morals were destroyed by "extravagance and avarice"; lust for power and money nourished other evils that spread like a plague and changed the very nature of the state itself.²⁶ The growth of crime is reflected in the establishment of a network of special courts for trying magistrates who misused public moneys, murderers, traitors, forgers, and various other criminals. The destruction of life under Claudius, Caligula, Nero, and others was so great that Vespasian had to recruit "the aristocracy from Italy and the provinces."²⁷ Gone were the days when, in Juvenal's phrase, one cell sufficed to hold the nation's criminals.

Extravagance ran riot; public persons set a grand example to all who could and would imitate them. Such habits, already developing in the late Republic, were more extensively indulged in the early Empire. Cicero wrote Atticus of the games and feasting at Praeneste: "Eight days of games! Picture their dinners and their extravagant goings on."²⁸ Caesar fed the public on twenty thousand dining couches, and gave gladiatorial and naval combats in honor of his daughter.²⁹ Augustus gambled lavishly. To Tiberius he wrote of gambling all day and keeping the game board warm. He lost 20,000 sesterces, but would have gained 50,000 if he had collected everything won; but he preferred to be

²³ *Epigrams*, III, 14, 38.

²⁴ *On Agriculture*, I, 69.

²⁵ Terence: *Lady of Andros*, act 1.

²⁶ Sallust: *Catiline*, 3, 5, 10, 12-3.

²⁷ Dill: *Roman Society from Nero to Marcus Aurelius*, p. 71; Showerman: *Rome and the Romans*, pp. 184 f.

²⁸ *Letters to Atticus*, XII, 2.

²⁹ Plutarch: *Caesar*, 55.

thought generous, which would exalt him "to immortal glory." To his daughter he sent 250 denarii, the sum he gave to all his guests if they wished to play at dice or at odd and even.³⁰ Caligula tried to outdo everybody in extravagance, threw money to the crowds for several days, bathed in hot and cold perfumed oils, drank pearls dissolved in vinegar, and laid loaves and meats of gold before his guests. Galleys with ten banks of oars, gem-set sterns, and colored sails were provided with spacious baths, banquet halls, colonnades, and even vines and fruit trees, so that he might sail and feast at pleasure.³¹ Nero is said to have played dice at 400,000 sesterces a point, fished with a net of gold, never traveled with less than one thousand carriages, had mules shod with silver, and never wore the same clothes twice. On Tiridates he spent 800,000 sesterces a day, and gave him over 100,000,000 when he departed. His friends, too, gave great dinners, on one of which 4,000,000 sesterces were spent.³² No less spend-thrifts were Otho and Vitellius in their day. Domitian depleted the treasury by reckless expenditure, and resorted to property seizures on various pretexts.³³

Private extravagance kept pace with public. Those unsatisfied by facilities for gayety at home visited resorts at Baiae and Canopus.³⁴ Private magnificence was exhibited chiefly in elaborate town and country houses, luxurious feasts, and rich personal adornments and equipage. Even Marius had "an expensive house," more luxurious and effeminate than befitted one risen from poverty and schooled in the hard discipline of warfare.³⁵ Lucullus purchased a house for 2,500,000 drachmas, previously sold for 75,000. A town house of Crassus cost over £60,000. Even Cicero, though not one of the richest by any means and often in debt, had a town house costing 750,000 denarii and quite a handful of country places.³⁶

Were men happier in many houses than in one? What profit is it to have so many bedchambers, asks Seneca? "You sleep in one."³⁷ Lucretius pictures the mad race from town to country and back again. A man who is bored at home often leaves his great mansion, and then at once comes back again, finding that he is no happier elsewhere. He rushes off to his countryseat, driving at headlong speed, as if going to a fire; there he yawns the moment he reaches the door, or falls heavily asleep, seeking forgetfulness, or else hastens back to town.³⁸

If life in the city was cumbered with an army of slaves, entertainers, dancers,

³⁰ Suetonius: *Augustus*, 71.

³¹ Suetonius: *Caligula*, 37.

³² Suetonius: *Nero*, 27, 30.

³³ Suetonius: *Domitian*, 12; *Dio's Roman History*, LXVII, 5.

³⁴ Seneca: *Epistle* 1.1.

³⁵ Plutarch: *Caius Marius*, 34.

³⁶ Cary, *op. cit.*, p. 455, credits him with "at least twelve"; Fowler, *Social Life at Rome in the Age of Cicero*, p. 251, says "in all six," besides certain properties owned temporarily.

³⁷ *Epistle* LXXXIX.

³⁸ Lucretius, III, 1060 et seq.

and musicians, traveling to the country for rest was by no means an easy matter, for carriages and baggage must be taken, also a retinue of slaves, and perhaps even a bodyguard of gladiators. Once in the country, relaxation might be found. Only the dead wear togas in the country, says Juvenal. Cicero complains, however, that his house at Formiae is like a public hall, and wishes he could get away to more secluded Arpinum.³⁹ Upon the country villa, which was for ostentatious display rather than a productive concern such as Varro described in his work on agriculture, a gentleman usually spent a great deal of care and money. Cicero⁴⁰ tells of his efforts to secure proper appointments at one of his country places. Pliny⁴¹ dwells at length on the attractions of his Tuscan villa, lying under the Apennines: the salubrious climate and stirring breezes; the wooded, natural amphitheater, with abundant hunting; the commodious house, its surrounding gardens, terraces, walks, fountains, pavilions, baths, playing courts, riding course, and elaborate servants' establishments. All is peace and quiet, comfort, and rest for mind and body; here a man rejoices, for he can lay aside the heavy toga, no one comes to call him forth to business or to the harrowing pleasures of the city. Juvenal, full of biting condemnation of city luxuries, praises his "Tiburtine farm" and its simple fare: a fat kid, wild asparagus, chickens, fresh eggs, grapes, pears, apples, and wine from the native hills. Besides, there are neither fancy carvers, highly trained servants, nor Spanish girls to entertain with clattering castanets and vulgar dances.⁴²

With increased ease of life, professional cooks appeared in private families, and about 170 B.C. public bakeries began to do much of the work formerly done at home.⁴³ Feasting took the place of normal use of food for proper ends; informal drinking gave way to formal drinking bouts. Fantastic sums, relative to this tendency to extravagance among the rich, are reported by ancient authorities. Lucullus had a number of dining rooms in his house, each of which had a fixed figure for feasts served in it. Fifty thousand drachmas were spent on a dinner served to Cicero in the Apollo dining room. Service was high. Lucullus paid his cooks £1,600 for a single banquet. His fish pond was filled with sea water brought through the mountains.⁴⁴ Exotic dishes were most highly prized; the more the expense, the better the dinner. A mullet or sturgeon might cost £100. The rarity of dishes served gave standing to the host. Seven thousand birds and two thousand choicest fishes were served at one dinner; in one enormous platter were mixed pike livers, brains of pheasants and peacocks,

³⁹ To Atticus, II, 14.

⁴⁰ *Ibid.*, I, 6, 8-10.

⁴¹ *Letters*, v, 6.

⁴² *Satire XI*.

⁴³ Mommsen: *History of Rome*, III, 123.

⁴⁴ Plutarch: *Lucullus*, 41; Paul-Louis: *Ancient Rome at Work*, p. 129.

flamingo tongues, and lampreys' milt.⁴⁵ This, of course, was a feast to please a brother, and an emperor at that.

Banquets, though not universal, were of frequent occurrence. Varro⁴⁶ thought it fair to say that there was a banquet every day in Rome. Their number made prices soar. The tide of luxury, according to Tacitus,⁴⁷ reached its flood in the century between Actium and the time of Galba. At the end of this remarkable epoch, Seneca railed at those who combed the earth and the sea for delicate foods and kept an army of hunters, fishermen, and cooks busy trying to please their jaded palates. "Poor wretches, do you not know that your appetites are bigger than your bellies?" From the multitude of such complicated dishes come divers complex diseases which call in turn for various medical treatments.⁴⁸

In the Republic and under the Empire there was no lack of those who knew that something should be done to counteract the corrupting influence of mispent wealth. But, though efforts at restriction of luxury were put forth, Romans failed to become proper masters of their gain. The early laws did not strike at the root of the evil, but only sought to cut off branches. The Oppian Law (215 B.C.) struck at feminine luxury, but ineffectively, because there was little public support behind it. Cato became unpopular because he had all "apparel, equipages, jewellery, furniture and plate" over 1,500 drachmas assessed at ten times its value.⁴⁹ During fourscore years numerous other laws (161, 115, 89, 81 B.C.) aimed at restricting or prohibiting delicacies, wines, and the amount of silver plate one might possess. Weights and prices were also fixed, as was the amount that might be expended on ordinary dinners and feasts.⁵⁰ Favonius is credited with a rousing attack on luxury: "The leaders in gluttony and luxury declare that an entertainment is not elegant, unless, when you are eating with the greatest relish, your plate is removed and a better, richer dainty comes from the reserves. This to-day is thought the very flower of a feast among those with whom extravagance and fastidiousness take the place of elegance; who say that the whole of no bird ought to be eaten except a fig-pecker; who think that a dinner is mean and stingy unless so many of the other birds and fatted fowl are provided, that the guests may be satisfied with the rumps and hinder parts; who believe that those who eat the upper parts of such birds and fowl have no refinement of taste. If luxury continues to increase in its present proportion, what remains but that men should bid some-

⁴⁵ Suetonius: *Vitellius*, 13.

⁴⁶ *On Agriculture*, III, 2, 16.

⁴⁷ *Annals*, III, 55.

⁴⁸ Seneca: *Epistle* LXXXIX, 22; xcvi, 24-9.

⁴⁹ Plutarch: *Cato*, 18.

⁵⁰ Mommsen: *op. cit.*, IV, 185 f.

one to eat their dinners for them, in order that they may not fatigue themselves by feeding, when the couch is more profusely adorned with gold, silver and purple for a few mortals than for the immortal gods?" ⁵¹

Few seem to have obeyed the laws; but Rufinus, an ancestor of Sulla, was expelled from the Senate because he had more than ten pounds of silver plate.⁵² Luxury, nevertheless, grew more and more extreme. Cicero, living in the midst of it, defended the interests of the wealthy *equites*, but knew full well that the state was depraved wherein "the richest" were rated "the best." ⁵³ The pseudo-Sallustian address to Cæsar advised the dictator that, if he wished to right affairs, he must rid Rome of money-hoarders, limit extravagant indulgence, and keep every man's expenditure within his income; for "it has become the custom for mere youths to think it a fine thing to waste their own substance and that of others, to refuse nothing to their own lust and the demands of their fellows. . . . If our youth continue . . . as at present, beyond doubt that eminent renown of yours will come to a speedy end, along with the city of Rome." ⁵⁴

The first century of one-man rule saw no improvement; instead, luxury grew worse. "All vice is at its acme," said Juvenal.⁵⁵ Some heads of the state, indeed, sought to restrain evil tendencies. Augustus prided himself on fasting one day, he said, as scrupulously as a Jew,⁵⁶ but he was extravagant in many respects. Tiberius sought to impose limitations on public games and the price of foods and other luxuries, and encouraged frugality at meals and closeness in money matters by his own example.⁵⁷ But Tacitus tells us that he was reluctant to take the lead in trying to restrict freedom of spending by more laws, since those of the past had all been ineffective; if remedies were to be found, they ". . . must be sought in our own hearts." ⁵⁸ It was not until the reign of Vespasian that extravagance really began to go out of vogue, for his own example was more influential than legal restraints. To this may be added that diminishing wealth at Rome at the end of the century was probably a factor leading to a degree of modesty in expenditures, and a somewhat improved use of wealth.⁵⁹ But this improvement was only relative and sporadic, as one may

⁵¹ Aulus Gellius, *The Attic Nights*, xv, 8. Trans. by J. C. Rolfe. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁵² Plutarch: Sulla, 1.

⁵³ *The Republic*, I, 34, 51.

⁵⁴ Sallust: Speech to Cæsar, 5-6. Trans. by J. C. Rolfe. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁵⁵ *Satire* I, 147-51.

⁵⁶ Suetonius: *Augustus*, 76.

⁵⁷ Suetonius: *Tiberius*, 34, 46-8.

⁵⁸ Tacitus: *Annals*, III, 54.

⁵⁹ *Ibid.*, III, 55; Suetonius: *Vespasian*, 11-2; Frank: *An Economic Survey of Ancient Rome*, v, 59 f.

infer from the tale of extravagant luxury and vice related by later writers.⁶⁰

Petronius' immortal *Satyricon* portrays the great age of money-making and spending. Petronius himself, an elegant, sophisticated idler, is said to have been an intimate of Nero, who sought his advice on matters of taste and elegance in luxurious living.⁶¹ Trimalchio, one of the "new rich," is a "millionaire of millionaires"; he does not even know the meaning of "poor man." He boasts of being "God-fearing, gallant, constant"—a freedman who began with little, left thirty millions, "never listened to a philosopher," and was made a Priest of Augustus.⁶² He has sought standing by buying land. Everything that makes his guests' mouths water comes from a new estate which he has not seen, but he thinks it is on the line between Terracina and Tarentum. He hopes to join up all his farms, so that, if he fancies going to Africa, he can do the trip on his own land! He does not despise learning; indeed, he has two libraries, one Greek, one Latin. His little son is already at learning and is to know law, for "law has bread and butter in it."⁶³ Before dinner he exercises vigorously at a game of ball, bathes, is rubbed down with blankets (not mere towels), and anointed. His wife, Fortunata, dances "the cancan better" than anyone else. He himself thinks acrobats and trumpeters furnish the best of all entertainments.⁶⁴

Ganymede provides vinegar at the feast. He regrets the passing of the good old life when one could play odd and even with a man in the dark, when there was sound religion and no new education. To-day men are dishonest, irreligious, and the gods gouty. No one cares if high food prices pinch the poor man, or whether he gets bread or not. The drought goes on; the famine has lasted a year already. The city fathers are in cahoots with the bakers. The little fellow gets on badly, the upper crust enjoys constant carnival. Ascylos also hits a sour note, the failure of justice: "Of what avail are laws where money rules alone . . . the knightly juror who sits listening to the case gives his vote as he is paid."⁶⁵ But the seamy side gets only fleeting attention from the author of the *Satyricon*. Even Echion, the ragman, sees a rosy future: all depends on how you look at it; if you lived elsewhere, you'd say roasted pigs were walking the streets here. Besides, there is going to be a finish-fight at the amphitheater, for Titus is bound to put on a good show.

⁶⁰ Ammianus Marcellinus, xiv, 6; xxviii, 4.

⁶¹ Tacitus: *Annals*, xvi, 18-9; Heselstine: *Petronius*, pp. vii et seq.; Dill: *op. cit.*, pp. 120 f.; Frank: *op. cit.*, v, 139.

⁶² Petronius: *Satyricon*, 71. Trans. by M. Heselstine, The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁶³ *Ibid.*, 46, 48.

⁶⁴ *Ibid.*, 27-8, 52-3.

⁶⁵ *Ibid.*, 14, 44. Trans. by M. Heselstine, The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

LEARNING THE WAYS OF IDLENESS

To be part of a crowd, to watch an exhibition of the skill and power of living beings, and to identify one's self more or less with the contestants is naturally satisfying to man. Primitive men put on shows; civilized nations modify, elaborate, and cultivate them, in one way and another, sometimes to an extraordinary degree. The extent to which exhibitions are developed depends upon numerous factors—a variable human nature, the status of the society which a people has established, notions held by them, and the like.

It has long been said that Romans had a marked, natural love of excitement, and that it was satisfied by the contests of the circus and the amphitheater. It should be remembered, however, that the practices of the late Republic and of the Empire were a result of growth and cultivation, a development which came from natural causes, but ultimately reached unnatural proportions. Romans of the earliest times had few entertainments; their descendants had an extraordinary array of them. Man tends naturally to activity, as Cicero said. The Romans' natural capacity remained fairly constant, doubtless, but the external circumstances of their life changed radically and made them the instruments of futile instead of useful activity. One of the most important factors in this metamorphosis was the concentration of wealth and power, which robbed the mass of men and women of their onetime useful employments by rendering them either impossible or unnecessary, and which enabled the few to rule the many by satisfying their lowest desires, filling their mouths, and diverting their minds. This transformation paralleled other changes in Roman life and education, which followed upon the transition from provincial to cosmopolitan culture. It was, if one considers life whole, a most portentous phase of the "new education."

The teachers of the way of idleness were numerous and of various sorts: political leaders, seeking power by ingratiating themselves with the masses; men in power, wishing to hold it; the inevitable, ubiquitous gossips who went to see, marveled, and spread abroad the delights to be experienced, the thrill of expectancy at not knowing what will happen, but that something will; literary folk who, transposing something of the present into the past, told the Roman people that their primitive ancestors from the very beginning had been participants in spectacular contests and had crowded round to see them. Virgil's vivid portrayal of contests is quite out of keeping with the primitive culture he ostensibly portrays. The shepherds on the hills of Rome and the peasants scattered on the surrounding plains had no time or effort to spend on such displays.

The receptivity of the Roman masses and their betters for this phase of the "new education" is evident on every side. The host of poor citizens, who no

longer had any real occupation or income (there may have been more than 300,000 unemployed before Caesar's day), were receptive both to state feeding and entertainment; on the other hand, those who had just become rich were anxious to put on shows to prove their title to men's acclaim. Martial's parvenu "cobbler Kinglet" exhibits gladiators, thus threatening to destroy all that he has won by his awl.⁶⁶ The young learn early the ways of their elders. Cicero takes his young son to the country at the time of the games, that he may turn his mind to other studies than the circus;⁶⁷ he hastens to reach Antium because Tullia wants to see the games.⁶⁸ Tacitus complains of the "passion for play actors, and the mania for gladiatorial shows and horseracing"—vices "taken on," as it were, "in the mother's womb."⁶⁹

The passion for games, with few exceptions, held the learned as well as the unlettered in its grip. There seems to be no barrier between fine, aesthetic development in literature and the enjoyment of the most cruel combats of the arena.⁷⁰ Many persons, certainly, had a love both of letters and of the games. Fronto, teacher of Marcus Aurelius, declares that, though ill, he has been "carried to the circus," for he is "again seized with a passion for the games. . . ." ⁷¹ Terence, however, is a rueful witness to the preference of the masses for gladiatorial shows.⁷² Polybius,⁷³ too, says that a Roman audience could not appreciate a good troop of actors until they turned their show into a sham battle. Romans would vacate the theater, Horace declared, if a play did not include "a bear or a boxing match." Many students of Roman letters would probably agree that, in the long run, the rise of gladiatorial sports to great importance at Rome combined with other events to hasten the decline of tragedy which had gained a degree of prominence between the days of Andronicus and Attius.⁷⁴

There were, of course, exceptions among the learned and great. Cicero's views are divided. He shows a certain scorn for the games; but he knows their value, and frequently expresses great concern about them. The extensive references in his correspondence with Atticus, Caelius, Quintus, and others, to gladiators, panthers, games, and their bearing on the political situation, show what a place circuses occupied in the minds of serious men. Public, political life and family interests compelled one, otherwise disinclined thereto, to take some notice of the public spectacles. Cicero's philosophy is a prudential one.

⁶⁶ Bk. III, 16; Johnston: *op. cit.*, pp. 341 f.

⁶⁷ Cicero: *Letters to His Brother Quintus*, III, 4.

⁶⁸ To Atticus, II, 8.

⁶⁹ A Dialogue on Oratory, 29.

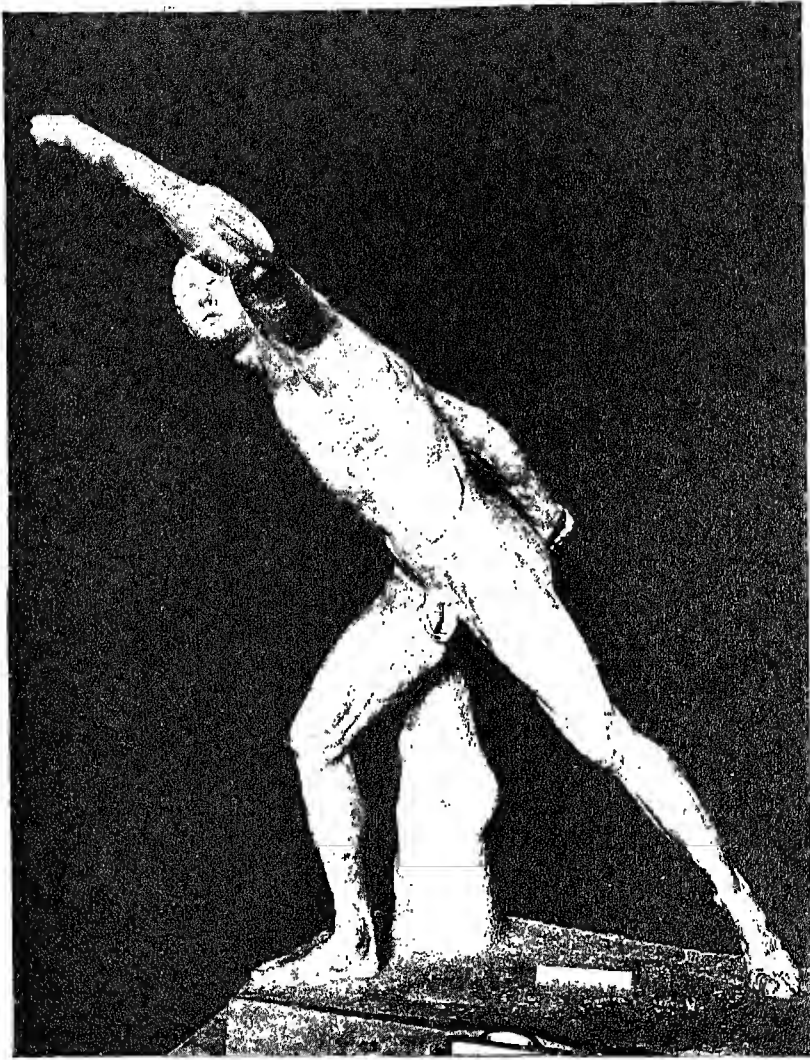
⁷⁰ Abbott: *op. cit.*, pp. 176 f.

⁷¹ Fronto, *The Correspondence of Marcus Cornelius*, I, 309.

⁷² Terence, II, 129 ff.

⁷³ Bk. XXX, 22.

⁷⁴ Lawton: *op. cit.*, p. 23.



BORGHESIAN GLADIATOR by Agasias
(Courtesy, The Metropolitan Museum of Art, New York)

He thinks Milo "beyond endurance, mad" for giving games that cost 1,000,000 sesterces, when they are not really required of him.⁷⁵ Of giving gladiatorial combats at funerals, he speaks disparagingly to Curio. The giving of them occasions no real admiration for the giver, for wealth alone, not worth, provides them; anyway, everybody is now sick of them. As for "Greek games," "You

⁷⁵ To Quintus, III, 8 and 9.

know what I think [of them]," he writes Atticus; he is not surprised that attendance was small at their opening. He advises Tiro, however, to see the gladiators on January 1 and return the following day.⁷⁶ When Tullia wants to see the games, Cicero hastens to be at Antium the day before they are to begin. He expresses great interest in Atticus' acquisition of a troop of gladiators, and wants day-by-day news of gladiatorial games. Again he writes Atticus that the games were magnificent and well received, but the *venationes* were postponed. While others were watching the games in the city, Cicero recuperates at Arpinum, enjoying the scenery of the river.⁷⁷

Being a gladiator is contemptible in Cicero's eyes, but he sees them from the standpoint of a politician. If these men cut their friends' throats for sport, what may they not be expected to do to their enemies when they get political power in their hands? ⁷⁸ Nevertheless, Cicero is much concerned by the punctilios of attending or not attending the games at Rome; even though he is not going, he hopes they will be well attended, and wants full details about their reception.⁷⁹ Everything depends, however, not on the merits or demerits of gladiatorial games *per se*, but on particular circumstances with which they are connected. When Caclius Rufus sends mere chitchat about gladiators to him at Athens, Cicero enquires tartly whether he thinks that is the purpose for which he has been commissioned.⁸⁰

Seldom is a voice raised in remonstrance against the inhumanity and brutality of public games. To Marius, Cicero writes, indeed, that he cannot understand what pleasure a cultivated man can find in seeing a human being torn by a beast, or a beast being pierced through by a hunting spear; and he reports that a "certain pity" was aroused in spectators by the elephants, a vague feeling that the big beasts were in some way akin to men. Cicero shows himself herein somewhat more sensitive than most of his compatriots; his view is comparable to that of Pliny later. It is chiefly the monotony that palls; to see them once is enough; ". . . I who was there to see, saw nothing new." He admires anyone who is strong-minded enough to stay away from the spectacles which "others unjustifiably admire."⁸¹ Pliny is happy that he himself is insensible to the pleasures of the circus; he quotes approvingly the sentiment of Junius Mauricius, who wished that gymnastic *ludi* might be abolished at Rome. Nevertheless, though not drawn to bloody sports personally, he congratulates Maximus politely for giving a gladiatorial spectacle in honor of his dead wife, for "greatness of soul" is to be seen in these smaller matters as well as in larger

⁷⁶ *Letters to His Friends*, II, 3; *xvi*, 20; *To Atticus*, *xvi*, 5.

⁷⁷ *To Atticus*, II, 8; *iv*, 43, 8, 15; *xiii*, 37; *To Quintus*, *iii*, 1, 1.

⁷⁸ *Philippic v*, 7; *vi*, 4; *vii*, 6.

⁷⁹ *To Atticus*, *xv*, 26.

⁸⁰ *To His Friends*, II, 8.

⁸¹ *Ibid.*, *vii*, 1.

oncs.⁸² Marcus Aurelius,⁸³ conspicuously differing from his imperial colleagues in his sensitivity about shedding the blood of his fellow men, allowed gladiators to fight only with blunt weapons. In the pancratium he saw little merit.

Rome was ruled by a class psychology, and upper-class Romans of refinement and education doubtless generally found it easy to explain their attendance at the games of the circus. Cicero recounts the distinction made by Pythagoras between those who went to games to seek profit or fame and those "free-born men" of the best type who came merely to see the spectacle, to see what was done and how.⁸⁴ The hold of games on the minds of people is suggested by the fact that constant allusions and explanations are based on the common knowledge of them. Cicero points to the master of gladiators who meditates constantly on improvement of the knowledge of his art; to explain the difference between *inhibere* and ἐποχή, he turns to charioteers, boxers, and boatmen.⁸⁵ Lucretius finds no better example of the lasting effect of deep impressions than the games. Even when absent from the spectacles, one's mind may still retain the impression of its latest lessons. Lucretius notes that men, having spent several successive days intently watching public games, have afterimages of the assembly and the splendor of the adornments hovering before their eyes. Even those who were determined to fight against the seductive influence of the arena might ultimately succumb, as did Alypius, friend of Augustine.⁸⁶

It is hard to think of Rome, with her marked social stratification, as a great happy family; there were forces, however, which tended toward unity in some degree, and among these the public festivals were of some importance. The games, though one of the most brutalizing aspects of Roman life, were in a superficial sense one of its most democratic features. Open to all citizens at the beginning, but excluding foreigners and slaves, the games ultimately drew men and women from every station and from every land in reach of Rome.⁸⁷ Here rich and poor shared something in common, even if all did not share alike. The arena and circus were a good sounding board for public opinion. A measure of the popularity of games and the representative character of the audience attending them, once the habit had become well established, is found in the fact that Cicero regarded the approval and disapproval of the assembled crowd as a judgment to which he attached great weight. On one occasion he wrote Atticus (61 B.C.) that both at games and gladiatorial spectacles he had received extraordinary demonstrations and no hisses or catcalls; which he con-

⁸² Pliny: *Letters*, iv, 22; vi, 34; ix, 6.

⁸³ *The Meditations of the Emperor*, xi, 2; *Dio*, lxxii, 29.

⁸⁴ *Tusculan Disputations*, v, 3.

⁸⁵ *On Oratory*, iii, 23; *To Atticus*, xiii, 21.

⁸⁶ *Confessions*, vi, 8; *Lucretius*, iv, 973 et seq.

⁸⁷ Fowler: *op. cit.*, p. 298; Friedländer: *Roman Life and Manners under the Early Empire*, II, 16.

sidered evidence that he retained his old influence and had gained some with "the sordid dregs of the populace. . . ." ⁸⁸ The amount of applause Caesar received when he refused the crown at the Lupercalia was a measure of public approval. ⁸⁹

Long experience in the school of observation made the Romans expert connoisseurs of combats. Petronius suggests the contempt felt for mediocre fighters: Norbanus produced only rotten tuppence-ha'penny gladiators, fit to be knocked over by a breath. Over the prospect of a good bloody show, the spirits of the knowing ones rise: "Just think, we are soon to be given a superb spectacle lasting three days; not simply a troupe of professional gladiators, but a large number of them freedmen. And our good Titus has a big imagination and is hot-blooded: it will be one thing or another, something real anyway. I know him very well, and he is all against half-measures. He will give you the finest blades, no running away, butchery done in the middle, where the whole audience can see it." ⁹⁰

Ultimately a sturdy folk, which once labored hard all day and went to bed at dark, learned to spend the day at the games and sometimes the night as well, watching the combats by torchlight. ⁹¹ Gibbon sums up the way in which Romans had learned a concern for shows when at their height: "The impatient crowd rushed at the dawn of day to secure their places, and there were many who passed a sleepless and anxious night in the adjacent porticos. From the morning to the evening, careless of the sun, or of the rain, the spectators, who sometimes amounted to the number of four hundred thousand, remained in eager attention; their eyes fixed on the horses and charioteers, their minds agitated with hope and fear, for the success of the colors which they espoused; and the happiness of Rome appeared to hang on the event of a race. The same immoderate ardor inspired their clamors, and their applause, as often as they were entertained with the hunting of wild beasts, and the various modes of theatrical representation." ⁹² At the seat of Empire, and in the provinces as well, the mob had learned the somewhat ungrammatical lesson that "'unting . . . bathing and gaming, these is life." ⁹³

But by no means least among the admiring throng of spectators were the political and military leaders, who came to the headship of affairs in the late Republic and were sole masters during the Empire. With but few exceptions they approved by their presence and their largess the giving of games, and culti-

⁸⁸ *To Atticus*, I, 16; *Philippic* I, 15; x, 3-4; *Publius Sextius*, 59.

⁸⁹ *Plutarch: Caesar*, 61.

⁹⁰ *Petronius: Satyricon*, 45. Trans. by M. Heseltine. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

⁹¹ *Suetonius: Domitian*, 4.

⁹² *The Decline and Fall of the Roman Empire*, III, 31.

⁹³ *Cary: op. cit.*, p. 687.

vated the natural appetite for thrills which, once fully developed, proved embarrassing even to imperial purses. By example, by lavish expenditure, by surrounding the whole business with impressive ceremonics, the emperors made the amphitheater and the circus, filled with thousands upon thousands of spectators, one of the most effective schools of the city. In the late Republic, leaders were already at work satisfying the natural appetite and developing it. Crassus (c. 115-53 B.C.) was unpopular because he was so exceptional as to give "no athletic contests" for the troops! Pompey, on the contrary, satisfied the crowd by dedicating a theater, giving gymnastic and musical contests and wild beast fights in which five hundred lions were slain. Among his novelties were elephants—"a most terrifying spectacle," says Plutarch—all of which won him "admiration and affection."⁹⁴ Caesar, at the time of his aedileship (65 B.C.), surpassed previous displays, and exhibited three hundred and twenty pairs of gladiators. After his triumphs he entertained lavishly with banquets and shows, and made gifts to his soldiers. Four celebrations were given on four different days in 46 and 45 B.C. Appian says that a combat of foot soldiers used one thousand on each side; and a cavalry contest, two hundred on each. There was a combat of forty elephants, divided into two groups, a naval fight with four thousand oarsmen, and one thousand fighters on each side.⁹⁵

Augustus carried on the old policy of entertainment so well established under the Republic, providing for many games out of his private resources, and allowing the continuance of those under the praetors and aediles. Gladiatorial contests, especially, became a matter of grave concern on the part of the emperors, and were more and more regulated by them. Augustus was advised to reduce expenditures on games and to limit horse races to Rome, aiming at economy, keeping the populace "from becoming deplorably crazed over such a sport," and also to ensure a plentiful supply of horses for the army.⁹⁶ The record of his expenditures and concern for games of all kinds is, however, more impressive than his restraint and economy. It was said that he excelled all predecessors in the number, variety, and splendor of public spectacles, giving them four times on his own account and twenty-three times on behalf of other magistrates. Gladiators in the forum, the circus, and the amphitheater; fights of wild beasts; athletic contests in the Campus Martius; naval combats on an artificial lake; chariot races; the game of Troy—all these were among his many exhibitions, provided at great expense for entertainment of the idle multitudes. According to the *Res Gestae*, Augustus gave ordinary *ludi* on twenty-seven occasions; *venationes* (animal hunts), on twenty-six; gladiatorial games, eight

⁹⁴ Plutarch: Crassus, 17; Pompey, 52-3; Dio, xxxix, 38, 1-5.

⁹⁵ Appian: *Civil Wars*, II, 102; Plutarch: Caesar, 5, 55; Dio, xliii, 19, 22-4.

⁹⁶ Dio, lxi, 30.

times; athletic games, three; a *naumachia* (with three thousand fighting seamen); the *Ludi Martiales*; and the *Ludi Saeculares*.⁹⁷

Tiberius, an exception to the all but universal imperial mode, is said to have given no public spectacles, and seldom was present at those given by others; moreover, he sought to limit the cost of the games and the number of gladiators that might engage.⁹⁸ Caligula, however, taught the Romans that one-man rule and imperial horseplay could cost them dearly, both in money and self-respect. Nevertheless, there were many who offered their lives for his and who vowed to fight as gladiators if he should recover from an illness. These were compelled to fulfill the vow. The wealthiest were killed and their property confiscated, but such lavish sums were spent on horses, gladiators, and the like, that the accumulations of the treasury were soon exhausted. Caligula gave several gladiatorial games, and he himself appeared as a Thracian gladiator, singer, and dancer, and drove in chariot races. Besides, he gave many games in the circus lasting all day long, with panther battles and the game of Troy alternating with the races, and also put on exhibitions in Gaul and in Sicily. The birthday of Drusilla was celebrated with an exhibition of her statue drawn by elephants, horse races, the destruction of five hundred bears and "as many Libyan beasts," competitions in the *pancratium*, feasting of the populace, and donations to senators and their wives. It was said that, in fact, Caligula was dominated by charioteers and gladiators. He himself was a partisan of the "Greens." To get money he sold those who survived gladiatorial combats; and compelled many men to fight as gladiators, singly and in companies. When a shortage of animals occurred and there were not enough to give to the beasts, he caused some of the mob standing by to be seized and thrown in instead.⁹⁹

Claudius gave each soldier 15,000 sesterces for his allegiance, and was lavish both in largesses to the public and in the provision of games. Besides naval exhibitions, which he gave at Pompey's theater and frequently at the circus built by Gaius, he gave gladiatorial combats in various places, an imitation of a siege in actual warfare, a naval battle between "Sicilian" and "Rhodian" fleets—each with twelve triremes—and a repetition of the secular games which he declared Augustus had exhibited too soon.¹⁰⁰

Nero's introduction to public life began with a donation to the soldiers in his name and games in the circus to win him favor. His career in profligate entertainment of the public outran all others, and he himself took part exten-

⁹⁷ *Res Gestae Divi Augusti*, iv, 22-3; Suetonius: *Augustus*, 43.

⁹⁸ Suetonius: *Tiberius*, 34, 47.

⁹⁹ Dio, lxx, 2, 5, 10, 13-4, 22; Suetonius: *Caligula*, 14, 18-20, 27, 54. As to the importance of factions into which charioteers were organized, "Greens," "Blues," "Reds," "Whites," "Golds," and "Purples," see p. 731.

¹⁰⁰ Suetonius: *Claudius*, 10, 21.

sively in public exhibitions. From his earliest years he had a passion for horses, talked constantly of the circus games, and soon wanted to drive, himself. He did, in fact, drive in many races, even a ten-horse team at Olympia. It is said that he never failed to take part in equestrian contests. He was dominated by a love of popular acclaim, and was so jealous of others who stirred the mob that he forbade magistrates and procurators in the provinces to exhibit gladiatorial or wild beast fights or give any other entertainment. Not satisfied with acclaim in music and in driving the chariot, Nero is said to have wanted to emulate Hercules, and had a lion in training so that he might kill it publicly in the arena. On one occasion Nero exhibited a wild beast hunt, and then piped water into the theater immediately and displayed a naval battle; after that, the water was drained out and a gladiatorial combat was put on. One of the most unique events in the world of entertainment was his inauguration of the Neronia, a quinquennial festival which included contests in music and gymnastics, in imitation of Greek contests. After his grand tour, filled with all sorts of triumphs, Nero entered Naples through a breached wall, like a conqueror in the Sacred Games. Later he came to Rome, riding in the chariot of Augustus and wearing the Olympic crown, and surrounded by 1,808 others which had been awarded him. Small wonder that the populace hailed him as Olympian Victor, Pythian Victor, Our Hercules, Our Apollo, "The only Victor of the Grand Tour."¹⁰¹

Under Vespasian Rome became somewhat more sober, yet he knew the use of games and often provided beast hunts, though it was said he did not "take much pleasure" in the armed combats of men.¹⁰² In Vitellius' brief reign Rome was a place of riot, massacres, spectacles, and feasting. His government is said to have been determined chiefly by the caprices of actors and charioteers. Vitellius himself, "never so absorbed in business as to forget his pleasures," wore the Blue uniform and curried the race horses.¹⁰³

Titus restored the popularity of one-man rule, which, by his time, was sadly in need of rehabilitation. Suetonius says that he took nothing from anyone, respected property, but was, nevertheless, "second to none" in liberality. To render himself more popular, Titus would give gladiatorial games, not according to his own wishes, but those of the onlookers. He himself showed a personal liking for Thracian fighters.¹⁰⁴ At the dedication of baths and amphitheaters, he put on a splendid gladiatorial show, staged a naval battle, and exhibited five thousand beasts in one day. The celebration is said to have lasted a hundred days. There were battles between cranes, elephants, and many other

¹⁰¹ Dio, LXII, 14-5, 20-1; LXIII, 1; Suetonius: Nero, 12, 22, 24-53; Tacitus: *Annals*, XII, 41; XIII, 31.

¹⁰² Suetonius: *Vespasian*, 2; Dio, LXV, 15.

¹⁰³ Tacitus: *Histories*, II, 67; Dio, LXIV, 5; Suetonius: *Vitellius*, 12.

¹⁰⁴ Suetonius: *Titus*, 7-8.

animals, of which a total of nine thousand were dispatched, women assisting. Men fought in single and group combats; and on the water there were gigantic contests between "Corcyreans" and "Corinthians," and between "Athenians" and "Syracusans." There were surprises for many, perhaps for everyone, for little wooden balls were thrown down into the crowd, each specifying some prize—a slave, horse, gold or silver vessel, food, or clothing—to be secured by exchanging the balls at proper places.¹⁰⁵

Domitian entertained the public lavishly with the usual two-horse and four-horse races, put on battles of infantry and horsemen, beast hunts, gladiatorial exhibitions at night by torchlight; and employed not only men but women also. His naval battles engaged almost regular fleets. Martial celebrated the animal hunts—the many tigers that have come "to-day, great Sire, to give delight to Rome."¹⁰⁶ At the secular games, performed according to the calculation of Augustus rather than that of Claudius, a hundred races were run in one day. Two new factions were added by him to the jockeys, the "Golds" and the "Purples."¹⁰⁷

The century-old custom of satisfying the idle multitudes with brutal, bloody spectacles was honored by the best of emperors, such as Trajan, Hadrian, Antoninus, and Marcus Aurelius. Though Hadrian refused all other circus games in his honor, he accepted those celebrating his birthday; on which occasion, it is said, he slaughtered two hundred lions and gave gifts to men and women. He frequently attended gladiatorial shows. In Athens he visited the public games, and exhibited a hunt with one thousand animals.¹⁰⁸

Antoninus Pius showed more restraint in games, even a degree of discouragement of the practice, but accepted the circus performances in celebration of his birthday. In 148 he gave elaborate games, exhibiting elephants, corocottae, rhinoceroses, crocodiles, hippopotami, even a hundred lions and tigers at a single show—in fact animals from everywhere. Though there is some evidence of his economy, and he is said to have limited the cost of gladiatorial shows, he was generous to the people, gave largess on nine occasions, and made a donation to his troops at his daughter's marriage.¹⁰⁹

Marcus Aurelius, though he had no love for them, allowed himself when young to be taken to beast hunts and spectacles. He himself says he learned from his teachers not to be a partisan of either "Greens" or "Blues," nor to take sides in gladiatorial games, nor even to breed fighting quails.¹¹⁰ His biographer says that he "limited gladiatorial shows in every way," yet elsewhere

¹⁰⁵ Dio, LXVI, 25.

¹⁰⁶ Bk. VIII, 26.

¹⁰⁷ Suetonius: Domitian, 4, 7; Dio, LXVII, 8.

¹⁰⁸ Spartianus: Hadrian, 8, 13, 19; Dio, LXIX, 8, 16.

¹⁰⁹ Capitolinus: Antoninus Pius, 5, 8, 10, 12.

¹¹⁰ *Meditations*, I, 5-6; Capitolinus: Marcus Antoninus, 4.

informs us that he was "so liberal" as to give a show of one hundred lions, all of which were dispatched with arrows.¹¹¹ Likewise, when he armed gladiators and took them away to war, he is said to have arranged that the wealthy folk at Rome should provide plenty of entertainment by games for the people. Aurelius gave customary gladiatorial spectacles at the death of his father and grandfather, and he would not interrupt public games when mourning for his little son.¹¹² Notwithstanding this participation in a long-established custom, he showed negligence and contempt for it, in some respects, for he was wont to read and sign documents during performances—to the displeasure of the audience. By giving games, Marcus seems to have been buying a certain degree of approval of the public, much as he purchased the good will of the soldiery by paying 20,000 sesterces to every man at his coming to power. Though credited with being sparing in largess, his coins show that he made such gifts to the public on seven occasions.¹¹³

Profligacy in respect to games became worse in the late second century. Verus, though he shared sway with Marcus Aurelius, was a horse of another color; he took an avid interest in the "Greens," and, when in Asia, gave much time to gladiatorial combats and hunting. Commodus, alleged by a common story to have been the illegitimate son of a gladiator, is said to have fought as Emperor before the people in almost a thousand gladiatorial combats, and to have slain thousands of wild animals with his own hands.¹¹⁴ A successful gladiator and beast-fighter, Commodus also adopted the Green uniform of the circus and made himself a laughingstock before his people; ultimately he became a terror, for he turned to murdering men—as a respite, as it were, from his sportive career—and was killed at last by those who had reason to fear him. The treasury, depleted by his extravagance, is said to have been replenished in some degree by Pertinax through the sale of articles used in connection with the fighting, chariotting career of Commodus.¹¹⁵

This pattern of education in brutality was not altered much during the third and fourth centuries, though a degree of restraint of the regal passion was sometimes necessitated by declining finances. Symmachus (c. 345-410), sometimes called the "last valiant defender of paganism," is said to have given games which cost a fortune when young Symmachus was praetor;¹¹⁶ and he showed as lively a concern about getting animals for his shows as one could have expected from the most ardent enthusiast of three centuries earlier. Even in the sixth century, despite Christian protest and momentous turns of fortune's

¹¹¹ Capitolinus: *Marcus Antoninus*, 11, 17.

¹¹² *Ibid.*, 6, 8, 21, 23.

¹¹³ *Ibid.*, 7, 15, 23.

¹¹⁴ Lampridius: *Commodus*, 11-2; Capitolinus: *Marcus Antoninus*, 8, 19; *Verus*, 6-7.

¹¹⁵ Dio, LXXIII, 14, 16-22; LXXIV, 5.

¹¹⁶ Dill: *Roman Society in the Last Century of the Western Empire*, p. 150.

wheel, there were still indications that the lessons assiduously taught for centuries had not been completely forgotten.

If the common herd was apt to learn, and if military men who became heads of the state were apt to teach, the noble and polite elements of Roman society were also ready to lend approval to bloody entertainments by their presence, and frequently (though it was held to be disgraceful by some) also by participating in them. A certain *Furius Leptinus*, of praetorian family, and *Quintus Calpenus*, a former senator, fought to the end at Caesar's games; but in 38 B.C., senators were excluded from the arena.¹¹⁷ Augustus set aside the first row at the games for senators; and he used knights in gladiatorial shows till a decree was issued against it. *Claudius* also provided special seats for senators at the *Circus Maximus*.¹¹⁸ *Caligula* held certain races in which the charioteers were all of senatorial order, and he compelled many knights to fight singly and in groups.¹¹⁹ In Nero's day men of the greatest families drove in the circus, slew animals, and fought each other in the arena—thus performing publicly those acts which once they had not been willing to watch in others. There were reactions, doubtless, sometimes even in the worst régimes: *Vitellius* is said to have won approval because he prohibited knights and senators from fighting as gladiators and taking part in other spectacles.¹²⁰ *Domitian* sought to safeguard rank. It appears that thereafter, till the madness of *Commodus*, senators and knights were not compelled to participate in public spectacles, yet many seem to have done so of their own accord.¹²¹

Modest domesticity, which women had known almost exclusively in early times, became less marked in the late Republic, and disappeared during the Empire. *Cicero's Tullia* wanted to see the games at Antium; *Ovid* advised women to visit the arena.¹²² Augustus, keen for reforming morals and manners (of others at least), excluded women entirely from contests of athletes, and decreed that they should view gladiators only from the upper seats, whereas previously men and women had sat together. Vestal Virgins were given a place by themselves.¹²³ Girls as well as boys had a part in singing the Secular Hymn at the celebration of the *Ludi Saeculares* in 17 B.C.¹²⁴ *Caligula* gave his sisters the privilege of watching the circus games from imperial seats.¹²⁵ *Claudius* is said to have forced knights and others, "together with women of similar rank," to appear on the stage, not because it pleased him to see them, but to punish

¹¹⁷ Suetonius: *Julius*, 39; *Dio*, XLIII, 23; Friedländer: *op. cit.*, II, 17.

¹¹⁸ Suetonius: *Augustus*, 43-4; *Claudius*, 21.

¹¹⁹ Suetonius: *Caligula*, 18; *Dio*, LIX, 10.

¹²⁰ *Dio*, LXII, 17; LXIV, 6.

¹²¹ Friedländer: *op. cit.*, II, 18.

¹²² *Art of Love*, III, 395 et seq.; *Cicero: To Atticus*, II, 8.

¹²³ Suetonius: *Augustus*, 44.

¹²⁴ Wickham: *Horace for English Readers*, p. 134.

¹²⁵ *Dio*, LIX, 3.

them for having done so in the time of Caligula.¹²⁶ The grandfather of Nero, while Consul (16 B.C.), put knights and matrons on the stage in a farce. At Nero's *Juvenales*, old men and matrons took part, and Vestal Virgins were invited to see the athletic contests, just as did the priestesses of Ceres at Olympia.¹²⁷ Dio says that Nero had men and women of the equestrian and senatorial orders appear in the orchestra, the circus, and the arena, just like people of "lowest esteem." "Some of them played the flute and danced in pantomimes or acted in tragedies and comedies or sang to the lyre; they drove horses, killed wild beasts and fought as gladiators, some willingly and some sore against their will."¹²⁸ In the time of Titus, women took part in the slaughter of beasts, though they were not of the social elite. Domitian had maidens take part in foot races; dwarfs and women were pitted in combat.¹²⁹ In the time of Severus, according to Dio, women took part in spectacles, vied "with one another most fiercely," and gave rise to ridicule, causing a general prohibition against women, regardless of rank, taking part in single combats.¹³⁰

THE ORIGIN AND GROWTH OF LUDI

MOTIVE FORCES Originally all games depend on a natural tendency to various kinds of physical activity, which varies in different people, but always exists in some degree. Among equals this drive is the natural basis for competitive sports. An active, virile people, the Romans enjoyed this natural impulse to a marked degree; but as Rome entered upon a career of conquest, the development of sports became, first of all, a means to military efficiency. When that was no longer necessary, games became primarily a source of personal enjoyment, health, and entertainment of spectators. Students of Roman life, ancient and modern, point almost without exception to the deep, pervasive love of frolics, holidays, music, and dancing on the part of the Italian people. Leisure and games were constantly associated with their festivals. One was the complement of the other; the leisure which followed from the cessation of other activities, on the day designated for the honor of the gods, was employed in games and other forms of amusements.¹³¹

Associated with this basic natural drive to physical activity, there was another causal factor in Roman festival games: the religious motive. All games, it seems, were at the outset associated with religious ceremonies of one kind or

¹²⁶ *Ibid.*, LX, 7.

¹²⁷ Suetonius: *Nero*, 4, 11-2.

¹²⁸ Dio, LXII, 17. Trans. by E. Cary. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.; Tacitus: *Annals*, xv, 32.

¹²⁹ Dio, LXVI, 25; LXVII, 8; Suetonius: *Domitian*, 4.

¹³⁰ Dio, LXXVI, 16.

¹³¹ Ihne: *History of Rome*, I, 568; Fowler: *op. cit.*, pp. 285 f.; Showerman: *op. cit.*, pp. 299 f.

another. Tertullian says that there were many published accounts in his day dealing with the relation between the origin of the games and pagan religious cults.¹³² Ultimately, of course, with the decay of the old mores, the religious associations and significance weakened, and were almost, if not wholly, lost.

But games, though at first associated with rites in honor of the gods, were no less intimately and realistically the concern of men. The Roman religion was of a practical, contractual nature, and games were often promised in advance to secure supernatural aid; again, they were an honor paid to the gods for having favored man's success in some past event. A game, vowed in connection with particular events, might become a regularly established festival, *ludus sollemnis*. Thus, Lucius Tarquinius is said to have celebrated games with unusual cost and glory—after having got more booty by taking Apiolae than was anticipated—and vowed “during a battle” the building of a temple to Jupiter.¹³³ This, according to traditional accounts, was the beginning of the *Ludi Romani*. Livy tells of a marvelous warning, on one occasion, that the city would be endangered unless the Great Games were repeated on a magnificent scale; and the Senate decreed the celebration.¹³⁴ Camillus vowed a celebration of the Great Games if Veii were captured.¹³⁵ The Capitoline Games were ordered in honor of Jupiter, when the city was restored after the Gauls' invasion.¹³⁶ At the close of the third century B.C., the consuls were ordered to celebrate certain games, which had been vowed, prior to setting out for war, in order that the gods might be favorably inclined to their efforts.¹³⁷ Scipio offered sacrifices and games to the deities for victory in Africa.¹³⁸ Augustus founded the Actian Festival in honor of his victory at Actium, 31 B.C.¹³⁹ Games might also be given simply to secure some desideratum of a personal nature, or as a gesture of politeness, as when Nero gave games and an animal hunt at the circus so that Claudius, his adoptive father, might have health.¹⁴⁰ Such instances of games given and promised for some return might be multiplied at great length.¹⁴¹

The *ludi* and *fasti* of the Romans were also associated with religious rites in celebration of the beginning and end of life, as were many games of the Greeks and various primitive peoples. Roman funerals, of the upper class at least, were

¹³² *De Spectaculis*, 5; Friedländer: *op. cit.*, II, 1; Sandys: *Companion to Latin Studies*, pp. 501 f.; Fowler: *op. cit.*, p. 285; Johnston: *op. cit.*, p. 244; McDaniel: *Roman Private Life*, pp. 147 f.

¹³³ Livy, I, 35; Cicero: *Republic*, II, 20; Sandys: *op. cit.*, p. 503; Fowler: *op. cit.*, p. 291.

¹³⁴ *Ibid.*, II, 36-7.

¹³⁵ *Ibid.*, V, 19; Plutarch: *Camillus*, 5.

¹³⁶ Livy, V, 50.

¹³⁷ *Ibid.*, XXX, 27.

¹³⁸ Appian: *Punic Wars*, 135.

¹³⁹ Dio, LI, 1, 18.

¹⁴⁰ Suetonius: *Nero*, 7; Dio, LXI, 33.

¹⁴¹ Livy, IV, 35; VI, 42; VII, 11, 15; Suetonius: *Augustus*, 23; *Ammianus*, XXI, 10, 2.

generally marked with much pomp and luxury;¹⁴² so, too, were birthdays. The provision of games and feasts was an item of great expense. For the wealthy the giving of games was a means of proving their financial claim to respect in a money-minded world and cultivating popular good will toward themselves.

Funeral games in honor of Anchises were credited to the very origin of Rome by Virgil: on the ninth morning, weather permitting, contests in the racing of galleys, running, darts, archery, boxing, were to be run off.¹⁴³ Down through the centuries funeral games were celebrated, sometimes in honor of private persons, more often for great men of state or their kin. The three sons of Lepidus, augur and twice consul, gave funeral games with twenty-two pairs of gladiators for three days in the forum.¹⁴⁴ When Sextus had been executed (35 B.C.), Caesar gave games in honor of the event, perhaps with mixed motives; again, in honor of his daughter's memory, Caesar shattered precedent by giving a gladiatorial exhibit and a feast.¹⁴⁵ Funeral games were held in Caesar's honor at his death, and a herald recited a Senate decree; at the dedication of his shrine, there were contests of all kinds, animals were slain, and the Troy game was exhibited.¹⁴⁶ Augustus gave gladiatorial games at the death of Agrippa.¹⁴⁷ Sejanus' overthrow and death was to be celebrated with annual horse races and beast hunts.¹⁴⁸ The tribunes gave voluntary games in honor of Augustus' death.¹⁴⁹ Caligula dedicated the shrine of Augustus with many attendant spectacles, and arranged annual funeral games in the circus in his mother's honor.¹⁵⁰ Claudius, though noted for moderation in some respects, honored Livia, his grandmother, with equestrian games and ordered her deification.¹⁵¹

Gladiatorial combats came to be common in connection with the *Ludi Novendiales*, games given on the ninth day after the burial of the dead. Livy says the practice began about the beginning of the wars with Carthage, when D. Junius Brutus exhibited gladiators (264 B.C.) in honor of his dead father.¹⁵² Cicero, as has been noted, disapproved of them in the instance of Milo, and one would judge, in general.¹⁵³ Pliny, however, is full of praise for Maximus because he promised to give gladiatorial games honoring his deceased wife.¹⁵⁴

¹⁴² Friedländer: *op. cit.*, II, 210 ff.

¹⁴³ *Aeneid*, v, 58-71.

¹⁴⁴ *Livy*, xxiii, 30.

¹⁴⁵ Suetonius: *Julius*, 26; *Dio*, xlix, 18.

¹⁴⁶ Suetonius: *Julius*, 84; *Dio*, li, 22.

¹⁴⁷ *Dio*, liv, 29.

¹⁴⁸ *Ibid.*, lviii, 12.

¹⁴⁹ Tacitus: *Annals*, I, 15.

¹⁵⁰ *Dio*, lix, 7; Suetonius: *Caligula*, 15.

¹⁵¹ *Dio*, lx, 5.

¹⁵² *Livy*, summary xvi; xxiii, 30; *Ausonius*, vii, 23.

¹⁵³ *To Quintus*, iii, 8 and 9.

¹⁵⁴ *Letters*, vi, 34.

Horace says that Staberius would have the heirs exhibit one hundred pairs of gladiators at his funeral feast.¹⁵⁵

The celebration of the beginning of the life process is a ubiquitous practice; in Rome, it was frequently carried to great extremes. Epicurus desired his birthday to be celebrated after his death; and so it was.¹⁵⁶ In the case of great folk, games had some place in such celebrations. The aediles gave circus games, and slaughtered wild beasts on Augustus' birthday (20 B.C.); Antony's son celebrated it with games (13 B.C.); and it seems to have continued as a regular annual performance, the Augustalia being first observed according to a decree in 11 B.C.¹⁵⁷ Tiberius was unwilling to accept many honors, but he permitted his birth date, which came at the time of the Plebeian Games, to be honored by the addition of a two-horse chariot race.¹⁵⁸ Claudius gave Circensian Games in honor of the birthdays of Drusus and Antonia, his father and mother, but is said to have refused such an honor for his own.¹⁵⁹ Nero welcomed a new daughter, Augusta, decreeing games and other rites in honor of her birth.¹⁶⁰ The birthday of Vitellius was celebrated magnificently with gladiatorial exhibitions.¹⁶¹ Also at the adoption of children, games were sometimes given in celebration of the event.¹⁶²

THE CHIEF FESTIVALS AND THEIR INCREASE The Romans commonly credited the earliest sacerdotal games to the time of Romulus and Numa. Livy says that games in honor of Neptunus Equestris took place at a festival, the Consualia, arranged by Romulus, at which the Romans acquired wives and doubled the city population.¹⁶³ Of the oldest festivals, the Equirria, in honor of Mars, was celebrated on February 27 and March 14; and the Consualia, a harvest festival, on August 21 and December 15. The Equirria occupied a place in the calendar just prior to the opening of a new year of military operations. To this Ovid alludes, saying: "And now two nights of the second month are left, and Mars urges on the swift steeds yoked to his chariot." ¹⁶⁴

It is commonly accepted that the origin of games at Rome goes back to borrowings from Etruria. The Romans themselves had a tradition that linked

¹⁵⁵ Satires, II, 3.

¹⁵⁶ Friedländer: *op. cit.*, III, 310.

¹⁵⁷ Dio, LIV, 8, 26, 34; LV, 6.

¹⁵⁸ Suetonius: Tiberius, 26; Dio, LVIII, 12.

¹⁵⁹ Dio, LX, 5.

¹⁶⁰ Tacitus: Annals, XV, 23.

¹⁶¹ Tacitus: Histories, II, 95.

¹⁶² Spartianus: Hadrian, 23.

¹⁶³ Livy, I, 9, 13; Cicero: Republic, II, 7; Plutarch: Romulus, 14; Tertullian: De Spectaculis, 5; Ausonius, VII, 23.

¹⁶⁴ Fasti, II, 856 et seq.; Fowler: *op. cit.*, p. 300; Sandys: *op. cit.*, p. 503.

both Greece and Etruria with the beginning of the *Ludi Romani*. According to tradition, Lucius Tarquinius, the son of Demaratus, a refugee from Corinth, and a Tarquinian mother, was chosen King and founded the Great Games. Livy says that the games were constituted of equestrian events and boxing, horses and boxers being brought from Etruria. Tarquin, moreover, by this account, was credited with laying out the Circus Maximus, where the games were thereafter held annually.¹⁰⁵

During the days of provincial simplicity, a few festivals, each lasting a day at a time, sufficed for the Roman people. But increased fears, uncertainties, and tensions of the Carthaginian wars appear to have been responsible, in some measure, for the introduction of many new celebrations; and the increase of wealth and leisure, arising from victory, occasioned a vast expansion both in the number of festivals and the days allotted to each.¹⁰⁶ The *Ludi Plebei*, of ancient but uncertain origin, paralleling in many ways the *Ludi Romani*, are believed to have been instituted between 293 and 220 B.C.; after the latter date they were celebrated as a public festival in the Circus Flaminius. The *Ludi Cereales* were also ancient, perhaps as old as the Plebeian Games, or a little less, but apparently were not fully established before 202.¹⁰⁷ The *Ludi Apollinares* were begun in 212 B.C., and in 208 became a regular, permanent festival.¹⁰⁸ The *Ludi Megalenses*, in honor of Magna Mater, were instituted in 204; the *Ludi Florales* were first celebrated in 240 or 238 B.C. at the dedication of the temple of Flora, and became a fixed festival in 173. The *Ludi Victoriae*, honoring Sulla's success at the Colline Gate, dated from 82 B.C.; and *Ludi Victoriae Caesaris* were first celebrated at the opening of the temple of Venus Genetrix in 46 B.C.¹⁰⁹

The days devoted to these festivals varied from time to time, and extraordinary games were often added. On the calendar of festivals, however, at the end of the Republic, the following assignments of time had been made: *Ludi Romani*, September 4-19 (sixteen, after Caesar's death); *Ludi Plebei*, November 4-17 (fourteen); *Ludi Cereales*, April 12-19 (eight); *Ludi Apollinares*, July 6-13 (eight); *Ludi Megalenses*, April 4-10 (seven); *Ludi Florales*, April 28-May 3 (six); Sulla's *Ludi Victoriae*, October 26-November 1 (seven); Caesar's *Ludi Victoriae*, July 20-30 (eleven). Of the sixty-six days (omitting the games for Caesar's victories) there were fourteen days given to races; two

¹⁰⁵ Livy, I, 35; Cicero: *Republic*, II, 34; Foll: *Etruria and Rome*, p. 76; *supra*, pp. 486 f.

¹⁰⁶ Ihne: *op. cit.*, II, 473; Fowler: *op. cit.*, pp. 298 f.

¹⁰⁷ Livy, xxx, 39.

¹⁰⁸ *Ibid.*, xxv, 12; xxvi, 23; xxvii, 23.

¹⁰⁹ Friedlaender: "Die Spiele," Marquardt, *Römische Staatsverwaltung*, III, 498 ff.; Fowler: *The Roman Festivals of the Period of the Republic*, pp. 69 f., 72 ff., 91 ff., 179 ff., 252; Sandys: *op. cit.*, pp. 504 f.

to judging race horses; two for sacrifice; and forty-eight for theatrical entertainment.¹⁷⁰

Ludi Saeculares,¹⁷¹ a three-day-and-night celebration, derived from Etruscan and Greek sources, and associated with penitence and purification for offenses against the gods, were first celebrated in 348 B.C., it is now believed;¹⁷² in 249 B.C., while the Romans were engaged in the Carthaginian struggle, they were repeated and were vowed every hundred years thereafter. A dispute arose, however, as to the correct time for repetition, and this, combined with other factors, made their recurrence irregular. Thus the next repetition came in 146 B.C., not in 149, and the games that would properly have fallen in 46 B.C. were omitted because of civil war. Augustus revived the festival in 17 B.C. Claudius, finding fault with Augustus' calculation, celebrated them in 47 A.D., the eight-hundredth centennial of Rome's founding; but Domitian, repeating them forty-one years later (88), kept to the reckoning of Augustus. Antoninus Pius again celebrated the *saeculum* in 148; Severus, in 204; and Philippus, in 248.¹⁷³

To the *ludi* of Republican days were added many new ones. After victory at Actium, Augustus founded Nicopolis near-by, and established a quadrennial festival, with musical, gymnastic, equestrian, and naval contests in honor of the event.¹⁷⁴ *Ludi Augustales* (19 B.C.) honored the return of Augustus to Rome, became a ten-day festival (October 3-12), and were still celebrated in the fourth century; *Ludi Natalicii*, first performed voluntarily for many years, were established permanently (8 B.C.) to honor his birthday with circus games.¹⁷⁵ Numerous other festivals celebrated the natal days of emperors, and became permanent if they were deified; nineteen of them were still commemorated in the middle of the fourth century. *Ludi Martiales*, instituted at the dedication of the Temple of Mars (2 B.C.), were still being held in the fourth century.¹⁷⁶ Annual circus games were first added (45 B.C.) to the *Parilia*, an ancient shepherds' festival of springtime, celebrated on April 21 as Rome's birthday. They were soon neglected, however, until Hadrian revived them; thence they continued till the fifth century.¹⁷⁷ The *Neronia*, a quinquennial

¹⁷⁰ Friedländer: *Roman Life and Manners*, II, 11.

¹⁷¹ A *saeculum*, a hundred years, or one hundred and ten by another account, was held to be the longest human life span.

¹⁷² Taylor: "New Light on the History of the Secular Games," *Am. Jour. Philol.*, LV, 101-20.

¹⁷³ Suetonius: *Augustus*, 31; *Claudius*, 21; *Vitellius*, 2; *Domitian*, 4; *Dio*, LIV, 18; *Tacitus: Annals*, XI, 11; Marquardt: *Römische Staatsverwaltung*, III, 385 ff.; Sandys: *op. cit.*, pp. 111 f., 507.

¹⁷⁴ Suetonius: *Augustus*, 18; *Dio*, LI, 1; *LIII*, 1.

¹⁷⁵ *Dio*, LIV, 10, 34; LV, 6; LVI, 29, 46; Suetonius: *Augustus*, 57.

¹⁷⁶ *Dio*, LV, 10.

¹⁷⁷ Plutarch: *Romulus*, 12; *Dio*, XLIII, 42; XLV, 6; Marquardt: *op. cit.*, III, 207 f.

festival in imitation of Greek contests, established by Nero (60), consisted of athletic, musical, and equestrian events.¹⁷⁸ Though neglected after his death, the Neronian festival was revived by Gordian III in 243. Domitian established the great Capitoline Games, a quinquennial festival in honor of Jupiter Capitolinus (86 A.D.), which included musical, gymnastic, and equestrian features.¹⁷⁹ Victories over the Persians, Goths, Parthians, and other peoples gave rise to *ludi* of some significance, but fleeting by comparison with the permanence of ancient festivals. Dio notes, for example, that the *Ludi Parthici* continued for a while after Trajan's death, but were later abolished.¹⁸⁰

Festival days increased during the Empire; those having games numbered 87 at the time of Tiberius; in the reign of Marcus Aurelius there were 135; and in the middle of the fourth century there were 175. This takes no account of those that were of a special character. At the latter date, ten days were given to gladiatorial combats, sixty-four to the circus, and one hundred and one to theatrical entertainment. Celebrations were often continued by artificial light; sometimes they lasted the entire night.¹⁸¹

To these generous assignments for festivals the Romans connived to add many more. According to an ancient, superstitious custom, games had to be repeated in case anything out of harmony with usual procedure occurred; in later times, to extend the holiday, such irregularities were committed purposely and a repetition was then demanded—even as often as ten times. This abuse became so great that Claudius decreed that, in case of a repetition, equestrian contests should last only one day; and he commonly prevented any repetition.¹⁸²

Special occasions frequently called forth unheard of prodigality in spectacles added to the regular calendar. Thus Titus dedicated the Colosseum, the Flavian Amphitheater, with a hundred days' display of sea battles, gladiatorial combats, and an exhibition of five thousand animals in a single day;¹⁸³ and Trajan, returning to Rome (107), celebrated his Dacian exploits for one hundred and twenty-three days, slaying over eleven thousand animals, and employing ten thousand gladiators.¹⁸⁴

Numerous *Ludi Privati*, given at funerals or in connection with various special events, were open only to particular elements of the population. The *Ludi Palatini*, given by Livia in honor of Augustus (14 A.D.), were probably

¹⁷⁸ Suetonius: Nero, 12; Tacitus: *Annals*, XIV, 20; Dio, LXII, 21.

¹⁷⁹ Suetonius: *Domitian*, 4.

¹⁸⁰ Dio, LXIX, 2.

¹⁸¹ Friedländer: *Roman Life and Manners*, II, 12 ff.

¹⁸² Dio, LX, 6.

¹⁸³ Suetonius: *Titus*, 7.

¹⁸⁴ Dio, LXVIII, 15.

open only to senators.¹⁸⁵ Also private or semiprivate, perhaps, were the Juvenalia, provided by Nero at the first shaving of his beard, though Dio speaks of the exhibition before the populace and the embarrassment it occasioned; and the various Circensian Games in which Caligula, Caracalla, Commodus, Elagabalus, and Nero took part.¹⁸⁶

Besides inaugurating numerous new celebrations and increasing the amount of time given to games in connection with the older religious festivals, the Romans brought under their aegis, or actually transferred to Rome, certain Greek festivals. Sulla took the Olympic festival to Rome (80 B.C.). The Augustalia at Naples (1 B.C.) were patterned after the Olympian festival of Greece. Domitian celebrated the Panathenaea with great magnificence.¹⁸⁷ Domitian's Capitoline Games were called Olympian, as were certain other festivals in various parts of the Empire.

THE ENDS AND THE MEANS Admission to public ludi was free, but the wealth to pay for them came indirectly from the people themselves. In early days of simplicity funds were provided from the treasury. Livy mentions games given by the Plebeian aediles (295 B.C.) out of fines levied on farmers of the pastures; again, in 209 B.C., games of a splendid character, considering the circumstances of the day, were given by the Plebeian aediles with money derived from fines.¹⁸⁸ To 217 B.C., 200,000 asses were allotted for the Ludi Romani; then, as times were troubled, an assignment of 333,333½ asses was made for them.¹⁸⁹ Only rarely was any subscription received from individual citizens, though this was done in 186 B.C.¹⁹⁰

The magnificence of games in the late Republic, and their increase already noted, encouraged, if it did not compel, a change in the method of support. If the allotment of public funds was inadequate to provide shows commensurate with an official's ambition to make a good display and please his followers, he supplemented it out of his private funds, or by contributions received from others more or less voluntarily. Gradually, the competition on the part of aediles, eager for higher office, grew to such proportions that it was recognized as pernicious, and some effort was made to restrain it: Livy mentions an act of the Senate (179 B.C.) which directed candidates not to solicit, order, or receive contributions for the games.¹⁹¹ The gesture was at best only of momentary effect; the practice grew, and aediles and others learned rather well

¹⁸⁵ *Ibid.*, LVI, 46.

¹⁸⁶ Suetonius: *Caligula*, 54; *Dio*, LXII, 19; LXXIII, 17; LXXVIII, 9-10; *Lampridius: Commodus*, 2; *Elagabalus*, 23; *Tacitus: Annals*, XIV, 14.

¹⁸⁷ *Dio*, LXVII, 1; *Gardiner: Greek Athletic Sports and Festivals*, pp. 165, 169.

¹⁸⁸ *Livy*, X, 23; XXVII, 6.

¹⁸⁹ *Ibid.*, XXII, 10.

¹⁹⁰ *Pliny: Natural History*, XXXIII, 48.

¹⁹¹ *Livy*, XL, 44.

how they might spend lavishly on games for their own benefit, squeezing the money out of Italian allies and provincial subjects: Cicero speaks of the "heavy and iniquitous tribute" levied upon Asia for games.¹⁰² He, himself, who had put on several shows while in office, including the *Ludi Romani*, was inclined to agree with Aristotle that such extravagant expenditures were a waste of wealth, pleasing only to the weakest and worst elements of society. Milo he thought mad, to give games costing 1,000,000 sesterces; nevertheless, "the very best men"—Crassus, Hortensius, Lentulus—had to provide them; Pompey's shows, he says, were the most luxurious Rome had ever seen.¹⁰³

What Cicero knew, however, was but a harbinger of more colossal things to come. Caesar was "unsparing" in his expenditures, says Plutarch, but really purchased very cheaply thereby "things of the highest value." Before he had any public office at all, he was 1,300 talents in debt; and, during his aedileship, he put on gladiatorial and other shows so magnificent that the memory of his predecessor's generosity was completely erased from the popular mind. As a result, the people were zealous to offer him new offices and honors; but some criticized him for spending so lavishly on games, and said he had raised the funds unjustly.¹⁰⁴

Though nothing like a complete picture of expenditure for games can be gained either for Republic or Empire, it is certain that costs mounted to ruinous heights, both as respects many individuals and the public treasury. Even in the middle of the first century, some public men resigned their offices because of the expense of giving *ludi*; many may have left public life for this reason.¹⁰⁵ One's rich friends, of course, might enable him to "stay." Trajan gave Hadrian 2,000,000 sesterces (about \$80,000) to aid in giving games during his praetorship; the father of Symmachus laid out about \$400,000 for games when the young man was praetor.¹⁰⁶ Justinian is said to have spent close to \$1,000,000 on games and other donations when Consul in 521; but there were few who could afford such honorary amusements. Expenses were ultimately so onerous that candidates had to be compelled to stand for office, and they faced the possibility of having to pay all the expenses of games if they sought to evade these public burdens.¹⁰⁷

As for extravagant public expenditure for games, though there is evidence that the evil was understood, it continued without more than momentary

¹⁰² To *Quintus*, I, 1, 9; Friedländer: *Roman Life and Manners*, II, 9; Ihne: *op. cit.*, IV, 154 f.

¹⁰³ Cicero: *Offices*, II, 16; To *Quintus*, III, 8 and 9.

¹⁰⁴ Plutarch: *Caesar*, 5; Dio, XLII, 24.

¹⁰⁵ Dio, LX, 27; Dill: *Nero to Aurelius*, 71.

¹⁰⁶ Spartianus: *Hadrian*, 3; Dill: *Last Century*, p. 150.

¹⁰⁷ Friedländer: *Roman Life and Manners*, II, 11.

abatment under the Empire. Augustus was advised by Maecenas that cities should not be allowed to waste their resources on a great number and variety of games. They ought to have spectacles, to be sure, but in moderation, and not to the extent of destroying the estates of private citizens and of strangers residing in them.¹⁹⁸ Despite such advice, Augustus left an impressive record of games given on his own account and for others. The victory games alone may have cost as much as 20,000,000 HS. Frank¹⁹⁹ estimates that "practically all the towns of Italy" spent "at least 6,000 sesterces" every year from the treasury; magistrates commonly spent more than that, making perhaps as much as 14,000 sesterces expended each year. In 51 A.D. the state expenditures had risen to 760,000 sesterces for the *Ludi Romani*; for the *Ludi Plebeii*, 600,000; and the *Ludi Apollinares*, which cost only 12,000 asses in 212 B.C., had risen to 380,000 sesterces. The *Ludi Augustales*, just recently established, cost only 10,000 sesterces. Appropriations from the treasury for games were about 2,000,000 HS in 51 A.D.²⁰⁰ Caligula, who came to power with two to three billion or more sesterces in the treasury, was in dire straits within a year or two because of lavish expenses for all kinds of shows.²⁰¹

Only occasionally were there serious, or temporarily successful, efforts at retrenchment. Tiberius was conspicuous because, in an age of reckless spending for such purposes, he never gave games himself, and sought to keep expenditures down by cutting the pay of actors and limiting definitely the number of pairs of gladiators that might be exhibited.²⁰² Claudius was somewhat restricted in his outlays for a time, since the treasury was empty, and his own wealth limited. Nevertheless, by confiscation of certain wealthy estates, he was able to make generous donations to the soldiers and to provide lavish games for the populace.²⁰³ Nerva, who succeeded two lavish spenders, abolished many horse races and other spectacles to cut down expenses; and Antoninus Pius regulated expenditures for games, establishing a maximum limit.²⁰⁴ The restraint of Antoninus and Marcus was sharply offset by the spendthrift career of Commodus; after him, Pertinax sought to recoup the depleted treasury by selling statues, arms, chariots, horses, and other accouterments that had been collected. The taxation and extortions of Caracalla's brief reign are reflected in Dio's bitter plaint: "... we constructed amphitheatres and race-courses wherever he spent the winter or expected to spend it . . . they were all

¹⁹⁸ Dio, I, II, 30.

¹⁹⁹ Op. cit., v, 14, 100 f. HS, sestertius, 2½ asses, ¼ denarius.

²⁰⁰ Ibid., v, 5; Friedlaender: "Die Spiele," loc. cit., III, 488.

²⁰¹ Suetonius: *Caligula*, 37; Dio, LIX, 2.

²⁰² Suetonius: *Tiberius*, 34, 47.

²⁰³ Suetonius: *Claudius*, 9, 21; Tacitus: *Annals*, XII, 41; Frank: op. cit., v, 42, n. 21.

²⁰⁴ Dio, LXVIII, 2, 3; Capitolinus: *Antoninus Pius*, 12.

promptly demolished, the sole reason for their being built . . . being, apparently, that we might become impoverished." ²⁰⁵

What was the use, the purpose, of this expenditure? Regardless of original ends, which may be only somewhat vaguely perceived, it is evident that in later historic times the exhibition of games became an important agency of social manipulation: a satisfaction of a sense of propriety to some, as conformance with established practice is apt to be; a sure way to win popularity and outright support of the public; a device to keep men occupied; a means of sounding public sentiment; an auditorium where the people could be informed more or less directly of things past and things to come; a place where one might see and be seen. A difference of some importance is to be noted between the earlier games and the later: the former generally were used to inspire, encourage, and solidify the people and lead them to action; the latter served chiefly to lull them to sleep, that they might not be too much concerned with matters of more moment. Romans who once gave commands, says Juvenal, now want just two things: "Bread and Games." ²⁰⁶ To amuse and distract the popular mind became a "prime political necessity." ²⁰⁷ Fronto praised Trajan's interest in actors, stage, amphitheater, and circus; for he knew that "the Roman People" were "held fast by two things" above all others—"the corn-dole and the shows." ²⁰⁸

How widely and well this general principle was comprehended may be judged from events cited and comments made by ancient authors. The importance of games to ambitious young men is revealed in Rufus Caелиus' complaint at the "sublime impudence" of someone bringing an accusation against him at the very moment when his games are at their height. ²⁰⁹ Cicero's letters to Atticus, his brother Quintus, Curio, and others show how well he understood the relation between politics and games. Though he advised Curio to win political distinction by his talents rather than by giving games, he himself gave them as a political necessity, and knew their value; indeed, he felt a certain propriety about giving them, for, as he said on one occasion, "it is a sad disgrace not to preside at the games." ²¹⁰ Nevertheless, when Rufus Caелиus, exceedingly grateful to Curio for beasts from Africa, asked Cicero repeatedly to secure animals from his provincial area, Cicero found it hard to bear, and wrote to Atticus: "[It will be] a blot on my escutcheon that the people of Cibra

²⁰⁵ Dio, LXXVIII, 9, 7; LXXIV, 5. Trans. by E. Cary. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

²⁰⁶ Satire x, 80.

²⁰⁷ Lot: *The End of the Ancient World*, p. 178; Friedländer: *Roman Life and Manners*, II, 1 f.

²⁰⁸ Fronto, II, 215-7.

²⁰⁹ Cicero: *To His Friends*, viii, 12.

²¹⁰ To Atticus, xv, 10, 12, 29; xvi, 4 and 5; *To His Friends*, II, 3.

should have a public hunt during my governorship.”²¹¹ Caesar, wiser than Crassus, who lost standing because he gave no athletic contests for his troops, broke all records with games and feasts to win popular support.²¹²

At the games of the circus was the most appropriate place to render honors to public men. Crowns were offered to Caesar at the Lupercales; as an honor, he was to “give the signal at all the games in the Circus,” and have a special day of his own at all gladiatorial combats in Rome and all Italy; later, he was honored by having his statue and a chariot in a procession at the circus games.²¹³

Games were given to influence public opinion, to honor individual men, to win public attention for them, and to court their favor. Even while very young, many began to cultivate popular opinion. Claudius sought to commend the baby Britannicus to the attention of soldiers and the people at the games; and Silanus was placed before the public eye by “triumphal distinctions” and “a magnificent gladiatorial show.”²¹⁴ Circus games were given to win popular favor for young Nero, and to tell the people by a token who was next to hold sway over them.²¹⁵ Galba began his career by celebrating the Floralia during his praetorship with an exhibition of elephants walking the rope.²¹⁶ Vespasian, though said to have had little enjoyment in combats of armed men, often gave beast hunts in order to win favor: while praetor, he sought the good will of Gains, and asked that “special games” be arranged because of the Emperor’s victory in Germany; to show regard for Barbillus, he allowed Ephesians to hold Sacred Games, an indulgence he granted no other city.²¹⁷ Permission to give Sacred Games was a privilege sometimes bestowed on a city as a mark of favor.²¹⁸

Augustus adopted the political devices of his Republican forerunners, and decided on entertaining the people as a part of public policy—one that was to last to the very end of the Empire. His celebration in honor of completing the Temple of Venus was intended to “win the favour of the populace.”²¹⁹ Though the emperors set out to rule by catering to the crowd, it was sometimes doubtful as to who were rulers and who were ruled, for with all power in their hands, they were nevertheless compelled to conciliate the public. Caligula, it was said, was “ruled” by charioteers, gladiators, and actors; his tactics and threats, and his expressed wish that the Roman people had just one neck,

²¹¹ *To Atticus*, vi, 1. Trans. by E. O. Winstedt. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.; *To His Friends*, viii, 4 and 8.

²¹² Plutarch: *Crassus*, 17; *Caesar*, 5, 55; Appian: *Civil Wars*, ii, 102; Dio, xliii, 19, 42.

²¹³ Plutarch: *Caesar*, 61; Dio, xliii, 14, 45; xliiv, 6.

²¹⁴ Suetonius: *Claudius*, 27; Tacitus: *Annals*, xii, 3.

²¹⁵ Tacitus: *Annals*, xii, 41.

²¹⁶ Suetonius: *Galba*, 6.

²¹⁷ Suetonius: *Vespasian*, 2; Dio, lxxv, 9, 15.

²¹⁸ Dio, li, 20.

²¹⁹ *Ibid.*, xlv, 6.

were unusual.²²⁰ Many rulers showed exceedingly great care about the impression they might make on the public mind. Tiberius attended games, though he did not like them, and threw out darts at a boar, hoping to hide his weakened condition from the public.²²¹ Augustus was fearful of letting Claudius view the games from the imperial box, lest something might occur to render both "him and us" ridiculous in the eyes of the people, who were very ready "to scoff at and deride such things"; and Claudius himself was zealous in showing by applause his respect for the games given by the magistrates.²²² Titus revealed his desire to please the public, telling them to ask what they wished, for he would give the games as they liked, not to suit himself.²²³ Hadrian sought to please the populace with Pyrrhic dances and by frequent attendance at gladiatorial shows; and he cultivated Athenian good will by visiting and judging their games.²²⁴ Though Commodus offended some, as did Caligula, he doubtless gained a certain popularity by his exploits in the arena. Justinian won popular favor at once by giving lavish beast hunts and chariot races. Barbarian kings, when they had conquered Rome, gave games and then doubtless truly conquered the hearts of Romans.²²⁵

²²⁰ *Ibid.*, LIX, 5, 13; Suetonius: *Caligula*, 26-7.

²²¹ Suetonius: *Tiberius*, 72.

²²² Suetonius: *Claudius*, 4, 12.

²²³ Suetonius: *Titus*, 8.

²²⁴ Spartianus: *Hadrian*, 13, 19; Dio, LIX, 16.

²²⁵ Lot: *op. cit.*, pp. 178, 255 f.

CIRCUS AND ARENA

CIRCUS GAMES¹

Certain limitations on games, unknown in the last mad years of the Republic, were instituted under the Empire. Augustus is said to have placed all festivals in charge of the praetors (22 B.C.), but games continued to be given in the early Empire by the old officials, the Roman and Megalesian under the curule aediles, and the Plebeian Games under the Plebeian aediles.¹ The emperors, of course, gave the public many special shows, particularly gladiatorial contests, which became practically an imperial monopoly.

Of all free public entertainments the greatest favorite was unquestionably the Circensian Games. While chariot races were the most important attraction of the circus, certain other equestrian events, notably the game of Troia, the *Pyrrhicha militaris*, and trick riding, were included. These were the most ancient as well as best loved, running back to the dim days of legendary Rome. Romulus, according to tradition, had held a horse race at which the Sabine girls, who came to look on, were seized as wives.² Circus games were generally accepted as of Etruscan origin. Livy credited the first design of the circus to Tarquin who sent for horses and boxers from Etruria.³ The racecourse on the low-lying level ground between the Aventine and the Palatine, commonly known as the Circus Maximus, was the largest in the city. A second Circus, the Flaminian, was built about 220 B.C.,⁴ and a third by Caligula and Nero. Outside the city there were three others: that of the *Fratres Arvales*, on the Via Portuensis; the Circus Maxentius, on the Via Appia, built in 309; and the third, more distant from the city, at Bovillae.⁵

¹ Dio's Roman History, LII, 30; LIV, 2; Homo: *Roman Political Institutions from City to State*, p. 312; Cary: *History of Rome*, p. 570.

² Livy, I, 9, 13; Florus: *Epitome of Roman History*, I, 1.

³ Bk. I, 35; Tacitus: *Annals*, XIV, 21; Dennis: *Cities and Cemeteries of Etruria*, II, 175.

⁴ Livy, summary XX.

⁵ Johnston: *The Private Life of the Romans*, pp. 254 f.

The vast number of people who could be accommodated in these circuses, all in easy reach of Rome, is a fair index of the popularity of the races. At Bovillae were places for about 8,000; the Circus of Maxentius would seat about 23,000. The Circus Maximus was enlarged from time to time, and figures varied accordingly: it would seat 260,000 at the time of Caesar, according to Pliny; and had a capacity of 385,000 in the fourth century.⁶ If this vast assembly of Rome's population suggests a degree of democratic unity, it is not well to stress the point too far; though citizens and even others entered without charge, care was taken to separate the classes from the masses. In 5 A.D. senators watched the circus separately; knights, too, sat apart from the populace, and this social distinction continued. Augustus is reported to have had a common soldier ousted from a seat which he had taken in the fourteen rows.⁷ Women attended as well as men, sat with them, and were among the most enthusiastic supporters.⁸ Much care was taken of the spectators' comfort. Caesar sheltered the audiences from the sun, and even covered the Forum and the Via Sacra from his house to the capitol with linen or silk.⁹

Devotion to the raccourse gained vogue rapidly during the first century of the Empire. When the Megalesian Games are beginning, says Juvenal, "all Rome" is at the circus, and if the Green (the favorite faction of the day) should lose, Rome would think it as serious as another battle of Cannae.¹⁰ To see the races once, Pliny thought, should suffice forever. Why should thousands of grown men, some even men of character, be so childish as to watch over and over again the same running horses and men standing in chariots?¹¹ But Pliny is a rare bird. Ammianus and Symmachus testify to the rapt attention still accorded the circus in the fourth century, and the strenuous efforts made by the rich to keep alive the splendid spectacles.¹² As he leaves Rome in 417, Namatianus cannot forget the cheers for the winning horse and driver in the Circus Maximus. Even Christians, despite their protests against worldly pleasures, were sometimes among the throng of spectators and even among the drivers. In the middle of the sixth century, Totila the Goth regaled the conquered with races.¹³

⁶ Pliny: *Natural History*, xxxvi, 24; Friedlaender: "Die Spiele," Marquardt, *Römische Staatsverwaltung*, III, 506; Johnston: *op. cit.*, pp. 262 f.; Fowler: *Social Life at Rome in the Age of Cicero*, p. 301.

⁷ Dio, LV, 22; Tacitus: *Annals*, xv, 32; Suetonius: *Augustus*, 14.

⁸ Ovid: *Art of Love*, III, 349 et seq.; *Thē Amores*, III, 2; Juvenal: *Satire XI*, 202; Friedländer: *Roman Life and Manners under the Early Empire*, II, 36.

⁹ Pliny: *Natural History*, XIX, 6; Dio, XLIII, 24.

¹⁰ *Satire XI*, 193 et seq.

¹¹ Pliny: *Letters*, IX, 6.

¹² Ammianus Marcellinus, xxviii, 4, 29; Symmachus: *Epistulae*, II, 78; Dill: *Roman Society in the Last Century of the Western Empire*, pp. 150 ff.

¹³ Friedländer: *Roman Life and Manners*, II, 29, 33; Showerman: *Rome and the Romans*, p. 321.

Many factors doubtless encouraged the increased devotion to the circus, but one of the most important was the lead taken by the omnipotent heads of state. Nero talked constantly of horses and chariots from his earliest years, appeared as a charioteer in public, and was so enamored of horseflesh that he decorated the most famous animals that had passed their prime, and gave them maintenance allowances. At the Olympic Games he is said to have driven a ten-horse team and was crowned victor, though he had fallen from his chariot.¹⁴ Vitellius wore the Blue uniform and hurried the horses; Domitian supported the circus enthusiastically, and added two new factions.¹⁵ Though Marcus Aurelius sought to keep aloof, his colleague, Verus, was a partisan of the "Greens," and built a tomb for one of their famous horses, the "Flyer."¹⁶ Commodus had racccourses built everywhere he went, was a follower of the Blue, and drove chariots in public.¹⁷ Sardanapalus was fond of driving the chariot, and was a wearer of the Green.¹⁸

Another important factor in fostering interest in the races was the organization of the drivers into different factions. Indeed, it appears that the colors of these factions rather than the race itself, or the horse, or the driver, were the objects of devotion on the part of the myriads that frequented the circus. Pliny thought that if in the middle of a race one color were to be exchanged with another, the applause of the partisans would likewise shift instantaneously; so great was the influence of "one cheap tunic."¹⁹ The importance of the factions was not so great at the end of the Republic, but it grew rapidly under the stimulus given by enthusiastic headline supporters, such as Caligula, Nero, Vitellius, Commodus, and others. When first heard of, there were but two colors, the Red and the White; to these were added the Green and the Blue. Domitian created two more, the Gold and the Purple, but these did not last long.²⁰ In the third century the factions seem to have had less significance than before, but the Greens and the Blues had still enough influence to stir their followers to violence in the first half of the sixth century. Justinian was scarcely able to cope effectively with the rioting of 532, partly, doubtless, because he and Theodora were both partisans. He may well have wished that he had been taught by some wise preceptor, as was Aurelius, to be an adherent of neither Green nor Blue.²¹

Though emperors of more or less dubious character took part in the sports

¹⁴ Dio, I.xi, 6; I.xii, 14-5, 20; I.xiii, 1; Suetonius: *Nero*, 22.

¹⁵ Suetonius: *Domitian*, 4, 7; Dio, I.xiv, 5.

¹⁶ Capitoline: *Verus*, 6.

¹⁷ Dio, I.xxiii, 9, 10; I.xxvii, 7; I.xxviii, 9, 10.

¹⁸ *Ibid.*, I.xxx, 14, 15.

¹⁹ Pliny: *Letters*, ix, 6.

²⁰ Suetonius: *Caligula*, 55; *Vitellius*, 7; Dio, I.xvii, 4.

²¹ *The Meditations of the Emperor*, 1, 5; Gibbon: *The Decline and Fall of the Roman Empire*, III, 422 ff.; Friedländer: *Roman Life and Manners*, II, 28 ff.

of the circus, and thereby won some popularity with the lower sort, Rome generally disapproved of men of high rank participating in such public contests. In earlier days of the Republic, of course, men of standing had exhibited their horses; but racing had now become a professional game. Though Suetonius says that Caligula gave some games in which charioteers were all of senatorial rank,²² they were almost always of foreign and slave extraction. Like their drivers, the horses, too, mostly came from abroad—Spain, Mauritania, Greece, Africa, and other provinces—and were selected for racing, fed and trained to that end by men who knew the racing game.²³ Games were provided for by men of wealth and high office, but they purchased the services of the factions, and dealt with the *domini factionum*, who attended to all detailed arrangements. These foreigners, slaves, and freedmen often gained wealth and fame, and their names were heralded abroad among the masses, as if they were truly as great as the greatest men Rome had ever known. Gambling flourished. Some of the charioteers had birds, daubed red or green according to their faction, ready to let loose to carry to gamblers the news of their victories as soon as they were won. Magic and superstition have since primitive times often been associated with games, and so it was at Rome. Many appear to have resorted to magic of various kinds, hoping to retard or accelerate appropriately the speed of the horses.²⁴

The victories and rewards of certain drivers reached astronomical figures. Great sacks of gold awaited the winner of the chariot race, says Martial.²⁵ The drivers began young and were soon able to retire. Euprepes won 782 crowns, but was murdered, it was said, because of his conspicuous renown and his support of the wrong faction.²⁶ Diocles, from Spain, was driving a four-horse chariot at eighteen; he retired at forty-two, having won 1,462 of 4,257 races, and a total purse of 35,863,120 sesterces—worth perhaps from \$1,500,000 to \$2,000,000.²⁷ Other famous drivers were Thallus, rival of Diocles; Crescens, a famed driver of the "Blues"; and Scorpis, often named by Martial.²⁸

A race began with the throwing of a white cloth by the *dator spectaculorum*, who presided in a box over the entrance opposite the triumphal gate. Below him, but unseen behind the doors of their stations, were the eager drivers and their nervous steeds. At the signal, the charioteers, numbering perhaps as many as a dozen, but often fewer, entered the racecourse, each from his individual

²² Suetonius: *Caligula*, 18.

²³ Varro: *On Agriculture*, II, 7, 15-6.

²⁴ Friedländer: *Roman Life and Manners*, II, 27, 34 f.; Fowler: *op. cit.*, p. 302; Davis: *A Day in Old Rome*, p. 387.

²⁵ *Epigrams*, x, 74.

²⁶ Dio, LXXVIII, 2.

²⁷ Friedländer: *Roman Life and Manners*, II, 24; Johnston: *op. cit.*, pp. 267 f.

²⁸ Bk. IV, 67; V, 25; X, 50, 53, 74.

stall to the right and the left of the *porta pompae*, the entrance gate for processions. Their teams, hitched to a light, low-slung chariot, might be of two, three, four, six, or even as many as ten horses; but the most common was the four-horse chariot. The drivers proceeded, at the signal, along one side of a centrally placed low barrier, the *spina*, made a rather sharp turn around the *meta* at the farther end of it, and returned on the other side to complete the lap. The winning color was the one which completed the prescribed number of laps and first crossed a chalk line,²⁰ fixed some little distance beyond the *meta*, clear of the space required by the turning racers. The winning chariot left by the triumphal gate, located at the end of the circus opposite the *carceres* whence the teams entered. Races were usually seven laps long, but Domitian reduced them to five, owing to a long program at his secular games.³⁰ To facilitate keeping count of the laps run, there were seven egg-shaped figures at one end of the *spina* and seven dolphins at the other; after a lap, one of each of these was taken down.³¹ Widely variant estimates have been made as to the distance covered in the usual seven-lap race. Johnston's estimate is approximately 2.7 miles, if run in the Circus Maxentius; the Circus Maximus was about a hundred yards longer than that of Maxentius.³² Success was determined partly by speed, but also by cleverness in deception of opponents and by skillful maneuvering, so as to spill them if need be, particularly at the dangerous turns. The number of races varied naturally with the period and the particular occasion. Twelve in a day were usual in the early Empire. Twenty-four were crowded into one day in Caligula's reign, and were common thereafter; and even more were reported.³³

GLADIATORIAL GAMES

Originating, as is commonly believed, in Etruria as rites in honor of the dead, gladiatorial contests first appeared at Rome in connection with the funeral of D. Junius Brutus' father in 264 B.C.³⁴ A few instances followed in the succeeding century, but in contrast with later times, they were all small. The games for Lepidus (216 B.C.) involved twenty-two pairs of fighters and lasted three days; those for Laevinus (200 B.C.) lasted four days, and there were twenty-five pairs of combatants. In honor of Licinius (183 B.C.) one hundred and twenty gladiators fought, and the celebration lasted three days. In 174 B.C. there were many gladiatorial games, but all were small, save those given by

²⁰ Pliny: *Natural History*, xxxv, 58.

³⁰ Aulus Gellius, *The Attic Nights*, III, 10; Suetonius: *Domitian*, 4.

³¹ Livy, xli, 27, 6; Dio, xlix, 43.

³² Johnston: *op. cit.*, p. 257.

³³ Friedlaender: "Die Spiele," *loc. cit.*, III, 515.

³⁴ Livy, summary xvi.

Flaminius in honor of his father, which lasted four days and engaged seventy-four swordsmen.³⁵ By the last century of the Republic such combats had become common; Caesar staged them in honor of his deceased daughter; even the parsimonious Tiberius gave games in honor of his father and grandfather.³⁶ According to Cicero, gladiatorial games were attended by all kinds of people; it was there that one could get a representative sampling of public opinion.³⁷

Gladiatorial games were first given privately; in 105 B.C., however, they were given officially by the consuls; and in 42 B.C., they even took the place of other circus games.³⁸ Under the Empire such entertainments became extraordinarily common—some being fixed, others given irregularly on special occasions—and were soon practically an imperial monopoly. Augustus (22 B.C.) forbade the praetors to give gladiatorial combats save when the Senate decreed them, and then not more than twice a year nor with more than 120 men.³⁹ Caligula (39 A.D.) revived the practice of having two praetors named by lot to give gladiatorial games; though Claudius (41) commanded the praetors not to give the customary games for his preservation, he ordered the quaestors to give a gladiatorial exhibition instead of paving certain roads.⁴⁰ Dolabella proposed that gladiatorial shows be exhibited each year at the expense of the quaestors, but Nero relieved them of this burdensome requirement.⁴¹ Domitian, in turn, revived the games by the quaestors, which had been given up for a time, and always attended them.⁴² Various other acts reveal the government's rather erratic effort to control gladiatorial games. Nero decreed (57) that magistrates and procurators in a provincial government should not exhibit gladiators and beasts and give other entertainments; about the same time the Senate authorized Syracuse to exceed the prescribed number of gladiators in their show.⁴³ Such was the petty business of that body under Nero. Severus Alexander aimed to divide the gladiatorial games so as to spread them over all the months of the year, but his intent was not realized.⁴⁴ Not until 404 do we hear of the last gladiatorial combats at the great Flavian amphitheater.

Growing popularity of gladiatorial combats and an understanding of their use in gaining personal popularity may be read in the acts of leading men of the late Republic and the Empire. In some instances heads of the state actually took part in the combats of the arena. In Cicero's day the purchase of gladia-

³⁵ *Ibid.*, XXIII, 30; XXXI, 50; XXXIX, 46; XLI, 28.

³⁶ Plutarch: *Caesar*, 55; Suetonius: *Tiberius*, 7.

³⁷ Publius Sextius, 50, 58.

³⁸ Dio, XLVII, 40; Friedlaender: "Die Spiele," *loc. cit.*, III, 555.

³⁹ Dio, LIV, 2.

⁴⁰ *Ibid.*, LIX, 14; LX, 5; Suetonius: *Claudius*, 24.

⁴¹ Tacitus: *Annals*, XI, 22; XIII, 5.

⁴² Suetonius: *Domitian*, 4.

⁴³ Tacitus: *Annals*, XIII, 31, 49.

⁴⁴ Lampridius: *Severus Alexander*, 43.

tors for political purposes had become a commonplace. Cicero relished the trick played by Milo on C. Cato, who had purchased a troop of fighters to act as a bodyguard; and to Atticus he wrote that Domitius' "popular gladiatorial games" would stand to his credit in the election. He felt a keen interest in Atticus' fine troop of gladiators who were "fighting splendidly," wanted to be kept informed about them, and was sure that, if Atticus wanted to hire them out, he could clear all expenses in just two shows. Again, he asked for "news day by day" of the gladiatorial games.⁴⁵ Caesar had a band of gladiators which still numbered 640 when the Senate issued a decree requiring a reduction. These he exhibited when aedile.⁴⁶ At Caesar's combined triumphs in 46 B.C. there were, among other spectacles, combats with one thousand foot soldiers on each side, and contests of cavalry with two hundred on each side.⁴⁷ Augustus gave gladiatorial shows eight times, employing ten thousand fighters, and used for them the Forum, Amphitheater, Circus, and the Saepta.⁴⁸ Drusus gloated over bloodshed; Caligula had twenty thousand gladiators in his training school, entertained the public with several gladiatorial games, and himself appeared as gladiator, using genuine weapons.⁴⁹ Caligula's intense preoccupation with gladiatorial contests and his unusual cruelties in connection with them must have attracted the closest attention of the audiences, even though they might feel revulsion at such extremes.⁵⁰ Claudius is said to have given gladiatorial games constantly, was especially well pleased when many men were destroyed, and enjoyed even the bloodiest spectacles at mealtime.⁵¹ Vitellius' birthday was celebrated with gladiatorial combats of unrivaled brilliance.⁵² Titus gained popularity by his gladiatorial shows, showed a personal liking for Thracian gladiators, and himself participated in a combat in heavy armor.⁵³ Domitian gave gladiatorial games nearly every year at his Alban estate.⁵⁴ Even excellent rulers, such as Trajan, took great delight in gladiatorial games; and Hadrian learned how to use the weapons of the gladiators.⁵⁵ Probably no ruler outdid Commodus in bloody sports; Dio says that he personally saw him slay animals and fight as a gladiator in the arena. At length, because of his extraordinary fondness for such performances, Commodus is said to have left the palace

⁴⁵ *Letters to His Brother Quintus*, II, 4; *Letters to Atticus*, IV, 4 a, 8, 16; XIII, 37.

⁴⁶ Suetonius: *Julius*, 10; Plutarch: *Caesar*, 5.

⁴⁷ Appian: *Civil Wars*, II, 102.

⁴⁸ Suetonius: *Augustus*, 43; Frank: *An Economic Survey of Ancient Rome*, v, 15; Johnston: *op. cit.*, pp. 271 f.

⁴⁹ Tacitus: *Annals*, I, 76; Suetonius: *Caligula*, 18, 54; Pliny: *Natural History*, XI, 54; "20 pairs of gladiators."—Bostock and Riley, *The Natural History of Pliny*, III, 51.

⁵⁰ Suetonius: *Caligula*, 26–7, 35; Dio, LIX, 10.

⁵¹ Dio, IX, 13, 17; LXXI, 30.

⁵² Tacitus: *Histories*, II, 95.

⁵³ Suetonius: *Titus*, 7–8; Dio, LXXV, 15.

⁵⁴ Dio, LXXVII, 1.

⁵⁵ *Ibid.*, LXXVIII, 10; Spartianus: *Hadrian*, 14.

to live at a gladiatorial school.⁵⁰ Kindred in spirit to Commodus were Antoninus and Geta, the sons of Severus, who made gladiators their closest friends.⁵⁷

The growth of a love of gladiatorial fights is reflected in the changing attitude respecting participation in them by men of rank, and even by women. Such participation was sometimes voluntary; again, men and women were forced into combats against their will. In the day of Caesar a Praetorian, Lepidus, and a Senator, Calpurnius, engaged in a public gladiatorial contest.⁵⁸ In 41 B.C. knights took part in slaying wild beasts in the circus at the *Ludi Apollinares*; shortly thereafter (38 B.C.) the Senate restrained one of its members from fighting, and sought to ban senators in general from fighting as gladiators.⁵⁹ A Senator, Quintus Vitellius, took part, however, in a combat at the dedication of Julius' shrine, 29 B.C.; and Augustus (11 A.D.) is said to have permitted knights to fight as gladiators, and even watched their contests, since it was impossible to enforce the law against them.⁶⁰ Tiberius again sought to discourage the practice, after one of the knights who had engaged in a combat was killed.⁶¹ Caligula, on the contrary, caused many men of prominence to perish in gladiatorial games; and Nero compelled four hundred senators and six hundred knights to engage in them.⁶²

Though Augustus would not allow women to view gladiatorial shows, save from the highest seats,⁶³ in the course of time they actually became contestants. Though a number of references to this development occur, it is impossible to say just how extensively women entered the arena. Statius speaks of women as a part of the pleasant, swiftly moving scene, the Emperor's Carnival: though by nature strangers to battle, "see how untiringly they essay the weapons of men."⁶⁴ Juvenal snarls at the women who are practicing the arts of the arena.⁶⁵ At the magnificent gladiatorial shows of Nero both men and women of the senatorial and equestrian orders went into the amphitheater; again, certain women, but not of any prominence, took part in slaughtering beasts at games given by Titus in 80 A.D.; and Domitian staged combats by women as well as by men.⁶⁶ The practice fluctuated from time to time, influenced, among other

⁵⁰ Dio, LXXIII, 17-9; LXXVIII, 6, 19; Friedländer: *Roman Life and Manners*, II, 17.

⁵⁷ Dio, LXXVII, 7.

⁵⁸ Suetonius: *Julius*, 39.

⁵⁹ Dio, XLVIII, 33, 43.

⁶⁰ *Ibid.*, LI, 22; LV, 33; LVI, 25.

⁶¹ *Ibid.*, LVII, 14.

⁶² *Ibid.*, LIX, 13; Suetonius: *Nero*, 12.

⁶³ Suetonius: *Augustus*, 44.

⁶⁴ *Silvae*, I, 6.

⁶⁵ *Satire VI*, 246 et seq.

⁶⁶ Tacitus: *Annals*, xv, 32; Dio, LXII, 17; LXVI, 25; LXVII, 8; Suetonius: *Domitian*, 4.

things, by the attitude of those at the head of the state. In 200, a law sought to prohibit women, regardless of their origin, from taking part in single combats of the arena.⁶⁷

Gladiatorial combats were first held in the forum and in the circus; but these were inadequately adapted to the purpose, and the growing popularity of such spectacles, in the late Republic, compelled the construction of new places of exhibition.⁶⁸ There was no amphitheater before Caesar's time, when Curio built one of wood. This remarkable structure was two large theaters, so built and poised that they could be turned on a pivot to face each other, thus forming an amphitheater. Due to cheap construction some of the wooden amphitheaters collapsed, as did that at Fidena (27 A.D.), in which fifty thousand were maimed or killed.⁶⁹ The first amphitheater of stone, built in 29 B.C. by Statilius Taurus, endured until the burning of Rome, when Nero constructed a new one of wood in the Campus Martius.⁷⁰ In 80 A.D., Titus finished the Flavian Amphitheater, or Colosseum, begun by Vespasian. This permanent edifice seated nearly ninety thousand spectators, and could accommodate the most stupendous shows imperial minds could imagine. Titus initiated the giant bowl with a spectacular hundred days of bloody battles.⁷¹

Gladiators came from several sources; they were, Cicero said, "either ruined men or barbarians."⁷² First of all they were prisoners taken in war—Germans, Thracians, Gauls, Sarmatians, and others from the frontier struggles—who sometimes were given a chance at life by fighting in combats. In the late fourth century Symmachus secured a troop of Saxon gladiators. Soldiers, direct from the wars, needed no training; ultimately, however, when wars produced only an inadequate supply, schools were established to train men for the arena. These had appeared by the time of Sulla. Those sent to such schools were, at first at least, criminals of the worst sort, judged guilty of murder, treason, arson, robbery, desecration of temples, mutiny in the army. At Athens, Apollonius says, adulterers, fornicators, burglars, kidnappers, and the like were armed and set to fight.⁷³ When war prisoners and genuine criminals failed to meet the demand, the innocent were easily taken on spurious charges. Little people of no social standing, friendless foreign provincials, Jews, and Christians were also thrown in for the Romans' holiday. Pollio wrote to Cicero about Fadius and others, who had been used as gladiators and thrown to the wild beasts by

⁶⁷ Dio, I, xxvi, 16.

⁶⁸ Dennis: *op. cit.*, I, 71; II, 175.

⁶⁹ Tacitus: *Annals*, IV, 62-3.

⁷⁰ *Ibid.*, XIII, 31; Dio, I, 23; Suetonius: *Augustus*, 29; Pliny: *Natural History*, xxxvi, 24.

⁷¹ Suetonius: *Vespasian*, 9; *Titus*, 7.

⁷² *Tusculan Disputations*, II, 17.

⁷³ Philostratus: *The Life of Apollonius of Tyana*, IV, 22; Tertullian: *De Spectaculis*, 12.

Balbus.⁷⁴ Hadrian instituted a mild measure of reform, to the effect that no one might sell a slave or maidservant to a trainer of gladiators without giving reasons for so doing.⁷⁵ As time went on a number of those of high station took to the arena. Gladiatorial combats became a usual form of training for young men "of good family," and some of them became professionals. Thirty of the equestrian order fought as gladiators at one time in Nero's shows.⁷⁶

Caesar, when planning to build a gladiatorial school, had his scouts keep a sharp lookout for good gladiators whom he might secure. His novices were trained in private houses of men of high rank, skilled at arms, whom he asked to give careful, individual attention to the exercise of their charges.⁷⁷ Cicero mentions a letter he wrote to Caesar, answering questions about Caesar's gladiators; the school at Capua, said to have had five thousand heavily armed gladiators in 49 B.C., was so vast that it occasioned public concern.⁷⁸

When emperors became the chief supporters of the games of the arena, they, too, established gladiatorial schools. At Pisaurum imperial gladiators were lent "through the kindness of the emperor."⁷⁹ Caligula and Domitian had schools of gladiators; Domitian, indeed, is said to have organized four imperial schools, with elaborate armories, armorers' workshops, mortuaries, and an extensive array of personnel to operate them. At the head was a procurator, a man of high rank, under whose direction were fencing masters, doctors, superintendents of various buildings, and bookkeepers.⁸⁰ The number of imperial gladiators naturally varied from time to time, but at Nero's death there were two thousand, and the same figure is mentioned at the celebration of a thousand years of Rome's existence.⁸¹

Supplying gladiators for the games became a profitable business. Cicero's friend, Atticus, was a man of many affairs, among which was training and hiring out gladiators. There were many schools, apparently, both public and private. One hears of Mamertine, Gallic, and Dacian schools, the *ludus magnus* and the *ludus matutinus*.⁸² For these institutions the best possible sites were selected. Ravenna, just such a place, was chosen by Roman governors for the training of gladiators; Praeneste, renowned for its climate, had an endowed gladiatorial school; and Capua, where the uprising of Spartacus occurred, was

⁷⁴ Cicero: *Letters to His Friends*, x, 32.

⁷⁵ Spartianus: *Hadrian*, 18.

⁷⁶ Dio, Lxi, 9; "Gladiatorial Combats a Usual Form of Exercise," *Am. Jour. Archaeol.*, v, 480.

⁷⁷ Suetonius: *Julius*, 26, 31.

⁷⁸ *Ibid.*, 10; Cicero: *To Atticus*, vii, 14; viii, 2.

⁷⁹ Frank: *op. cit.*, v, 101.

⁸⁰ Suetonius: *Domitian*, 4; Friedlaender: *Darstellungen aus der Sittengeschichte Roms*, ii, 376 ff.

⁸¹ Capitolinus: *The Three Gordians*, 33.

⁸² Wallon: *Histoire de l'Esclavage dans l'Antiquité*, ii, 137; Paul-Louis: *Ancient Rome at Work*, p. 139.

also famous for its training schools.⁸³ The physical health of gladiators was most carefully guarded by attendants and doctors.⁸⁴ Feeding, likewise, was a matter of grave concern, care being taken to provide the best diet for building muscles. *Sagina gladiatoria* was a food especially prepared for the fighters.⁸⁵ On the day preceding the combat an unusually elaborate meal was provided for those who were about to pay for what they had eaten.⁸⁶

At Pompeii the ruins of a gladiatorial school show a quadrangular space, 173 feet by 139 feet, surrounded by a colonnade. Rude drawings, representing aspects of gladiatorial life, and announcements of coming contests, with names of the chief contestants, are found upon the walls. Opening on the four sides of the portico are rows of little windowless rooms, about ten to twelve feet square. These prison-like quarters of the gladiators tell a mute story of one aspect of the strict discipline exercised over his dangerous charges by the head of the institution, who might resort to the scourge, burning with hot irons, and confinement in chains and stocks.⁸⁷

Hideous cruelties to gladiators were perpetrated under the Republic and even worse during the Empire. The lot of the gladiator became a synonym for the pitiable.⁸⁸ Balbus, we are told, buried Fadius up to the waist at the gladiatorial school, and burned him alive. When Fadius entreated him, saying that he was born a citizen of Rome, Balbus advised him to implore protection, then, of the people.⁸⁹ Nero's grandfather was reproved by Augustus because of the inhuman cruelty of his gladiatorial shows; Drusus gloated over bloodshed; Claudius enjoyed the cruelties of the arena, even wishing fighters to be slain so that he could see the expression on their faces.⁹⁰ It is said that, for trivial reasons, he compelled carpenters and other assistants around the arena to enter

⁸³ *The Geography of Strabo*, v, 1, 7; Plutarch: Crassus, 8; Dill: *Roman Society from Nero to Marcus Aurelius*, p. 239.

⁸⁴ Friedlaender: *Darstellungen*, II, 379 ff.

⁸⁵ Tacitus: *Historiae*, II, 88.

⁸⁶ Seneca: *Epistole* xxxvii, 2.

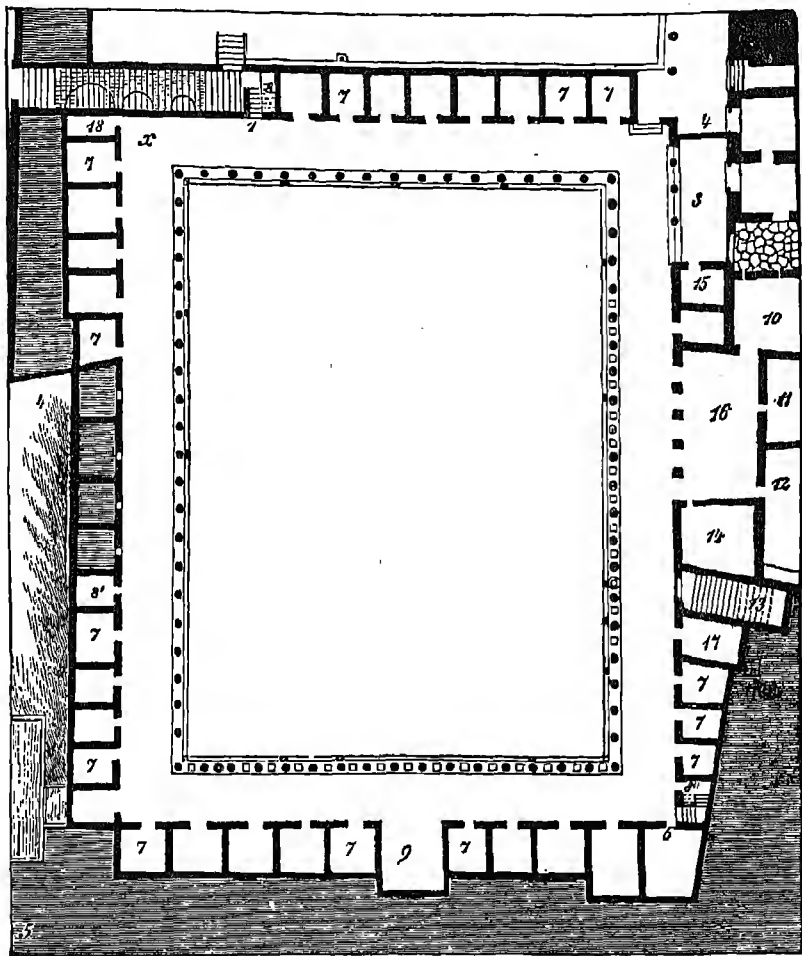
⁸⁷ Friedlaender: *Darstellungen*, II, 379; Dill: *Nero to Aurelius*, p. 242; cf. Overbeck: *Pompeii*, pp. 193 ff.; Mau: *Pompeii in Leben und Kunst*, pp. 164-70; Mazois: *Les Ruines de Pompeii*, III, 12 ff., and Plate II; Schreiber: *Atlas*, pp. 60 ff. The uses of certain areas, commonly given, despite some uncertainties, are indicated by numbers in the cut, next page: x, colonnade hall; 1, stairs, leading to *Forum triangulare*; 2, entrance from Stabian Street; 3, portico and passage to theaters; 4, partition wall, later construction, blocking original passage to the Large Theater; 5, space adjacent to the barracks; 6, room, containing remnants of costumes; 7, 8, rooms, ground and second story, for gladiators; 8', guard room; 9, exedra; 10, 11, 12 and 14, kitchen and storerooms; 13, stairway to quarters of the Lanista; 15, room, janitor or guard; 16, dining hall; 17, prison, with stocks; 18, stable. Schreiber gives 100, Overbeck 142, as the number of gladiators the cells may have housed. For photographs of barracks and neighboring structures, see Maiuri, *Pompeii*, pp. 23, 98.

⁸⁸ Athenaeus, IV, 155.

⁸⁹ Cicero: *To His Friends*, x, 32.

⁹⁰ Suetonius: *Nero*, 4; Claudius, 34; Tacitus: *Annals*, I, 76.

contests; and one of his own pages was made to fight in a toga. At one of Domitian's naval combats practically all participants perished, and many of the audience, too, because the monarch would not allow anyone to leave despite a heavy storm.⁹¹



A GLADIATORIAL SCHOOL, POMPEII

(T. Schreiber, *Atlas of Classical Antiquities*, xxx, 11, Macmillan & Co., Ltd., London, 1895)

The life of a gladiator had its horrors; it also had glamour and rewards. Imperial gifts, estates, houses, and honors sometimes fell to their lot; Bato, though killed in combat, was given a glamorous funeral at the Emperor's hands.⁹² Vic-

⁹¹ *Dio*, LXVII, 8.

⁹² *Ibid.*, LXXVIII, 6; Suetonius: Nero, 30.

torious gladiators, even though physically disfigured, were darlings of women.⁹³ In a day when everyone was a member of a *collegium*, such a privilege was not denied the fighting entertainers. Some won freedom by the sword, and received in token one of wood; the best of them gained good pay, the choicest care, fame, and even a sort of immortality by virtue of their monuments.⁹⁴ All, even the poorest, could not but have felt something of a thrill when, decked out in handsome apparel and gleaming, decorated weapons, they marched into the arena and gave the familiar salute: *morituri te salutamus*. Hope springs eternal: perhaps they may live to carry palms of victory! Moreover, the fact that among the audience not only ordinary people but even emperors were so keenly interested as to designate themselves followers of the Samnites, Thracians, or some other type of fighters; and the solemn circumstance that the gladiator was a member of a group, bound by oath to die bravely without show of emotion, gave an air of professional dignity and prestige to an otherwise fearful and sordid occupation.

Cicero praised gladiators and the excellence of their training. What one "of ordinary merit has ever uttered a groan or changed countenance?"⁹⁵ Who has disgraced himself either on his feet or in his fall? Seneca noted that certain gladiators were courageous enough to take their own lives, just like free men.⁹⁶ The Saxon gladiators who were to have entertained Symmachus cheated the audience by strangling themselves.⁹⁷ Physical training, under the eye of a competent *lanista*, was the best that could be provided. The "gladiator in the school well skill'd" appealed to Cicero as an example of constant, faithful practice.⁹⁸ If not steeled by a cool courage, a ready, brutal anger against his opponent inspired his thrusts.⁹⁹ Accepting their mode of life as normal, many anticipated their contests with zest. Epictetus says that gladiators of the imperial school complained if they were not matched for combat and brought into the arena. Triumphus, a fighter, is said to have been depressed because there were so few shows in the reign of Tiberius: "What a glorious period of life is wasting."¹⁰⁰

Types of fighters were numerous, and each used more or less special forms of armor. Some fought in pairs, the oldest and commonest form of combat; but mass fights, though naturally more expensive, were more exciting and hence popular, since they simulated more nearly actual battle. Samnites, probably

⁹³ Juvenal, vi, 103 et seq.

⁹⁴ Dill: Nero to Aurelius, p. 243.

⁹⁵ *Tusculan Disputations*, II, 17.

⁹⁶ *Epistle LXX*, 23-7.

⁹⁷ Lot: *The End of the Ancient World*, pp. 179 f.

⁹⁸ *On Oratory*, III, 23.

⁹⁹ Cicero: *Tusculan Disputations*, IV, 21.

¹⁰⁰ Epictetus, *The Discourses*, I, 29; Seneca: *On Providence*, IV, 4.

the oldest gladiatorial type, were armed with short, straight swords and a quadrangular shield which covered most of the body. The Campanians, it was said, took the armor of their Samnite enemies and used it for their gladiators.¹⁰¹ *Secutores* (pursuers), mentioned in the time of Caligula,¹⁰² in a match with the *retiarii* (netters) were armed with greaves, swords, and shields, and had helmets equipped with visors. The *retiarii* used large nets, with which they sought to ensnare their adversaries, and were lightly armed with tridents and daggers. *Laqueatores* used lassos in place of the nets. Thracians were heavily armed, used short, curved swords, and had small shields, round or square. Contests between light-armed Samnites and heavy-armed Thracians were much in favor. Whether the *Galli* or *myrmillones*, who fought mostly against *retiarii* and Thracians, were heavily or lightly armed is uncertain. The *essedarii*, fighters who used chariots and imitated warriors, described by Caesar, appear to have become popular in consequence of the wars waged in Britain. To whet appetites jaded by common forms of combat, variations were introduced, such as fights of blindfolded persons (*andabatae*) and men with two swords (*dimaechaeri*).¹⁰³

Gladiatorial troops were often a danger not only to individuals but to the state as well. Augustus had a narrow escape from a gladiatorial band.¹⁰⁴ Living together, eating and fighting together,¹⁰⁵ even a small handful of gladiators, being thoroughly trained as soldiers, could offer a hard fight for some of the regular army. Military guards, designed to prevent escape, were not always effective. Spartacus escaped from the school of Lentulus Batiatus at Capua and began a revolt that was finally put down only with great difficulty.¹⁰⁶ Cicero viewed Caesar's gladiators as a danger to the state, as did many others.¹⁰⁷ That the political significance of gladiatorial schools was not limited to the Republic is shown by the fact that sometimes they were even relied upon to strengthen the regular armed forces. Antony's gladiators, it was said, were still his most faithful soldiers when others forsook him.¹⁰⁸ Alfenus' troops defeated a band of gladiators; Otho increased his army with two thousand gladiators; and Vitellius gave gladiators to aid Claudius Julianus.¹⁰⁹

¹⁰¹ Livy, ix, 40.

¹⁰² Suetonius: *Caligula*, 35.

¹⁰³ *Ibid.*, 35; *Claudius*, 21; Cicero: *To His Friends*, vii, 10; Friedländer: *Roman Life and Manners*, iv, 171 ff.

¹⁰⁴ Suetonius: *Augustus*, 14.

¹⁰⁵ Seneca: *On Anger*, ii, 8.

¹⁰⁶ Appian: *Civil Wars*, i, 116; Plutarch: *Crassus*, 8-11; Tacitus: *Annals*, xv, 46.

¹⁰⁷ *To Atticus*, vii, 14; Suetonius: *Julius*, 10.

¹⁰⁸ *Dio*, li, 7.

¹⁰⁹ Tacitus: *Histories*, ii, 11, 23, 43; iii, 57.

VENATIONES

Men, fighting in pairs or in companies, on foot, on horse, or in chariots, competed for the interest of the citizenry of Rome with beast fights, *venationes*. In these spectacles beasts were pitted against other beasts, against trained beast fighters (*bestiarii*), and against untrained, defenseless men who were thrown to them. Like the gladiatorial combats, beast fights were staged at first in the circus, and were sometimes held there even after special structures had been erected. The *ludus matutinus*, one of the schools organized by Domitian to train men for the arena, was a training school for *bestiarii*, the *venationes* being commonly given in the morning. The men so employed were usually captives or condemned criminals, just as were the gladiators, as in the case of Caesar's games. To condemn men "to the lions" was not an infrequent sentence. Throwing provincials to the wild beasts of the arena sometimes caused revolt to rear its head, as was reported of the Isaurians.¹¹⁰ Women, but not of the prominent sort, it is said, took part in the *venationes* on some occasions.¹¹¹

Though hunting had no longer any serious purpose, beasts of all kinds were already being sought from all the distant reaches of the Empire, at the time of Caesar and Pompey, so as to provide ever fresh supplies to entertain the audiences of the capital. The strenuous effort to get animals for the shows can be glimpsed in the letters of Cicero. Caelius Rufus urged him repeatedly to send animals. Curio had generously sent him some from Africa. Cicero promised to do what he could, but prepared him for failure, for the animals object and have decided to emigrate to another province because they are constantly hunted!¹¹² In the late fourth century Symmachus bent all energies to secure animals from various places for his shows.¹¹³ Claudian praised Stilicho and called on hunters everywhere to corral wild beasts, whose blood must be spilled only in the arena, to honor his achievements.¹¹⁴ So extensive and continuous was the drain on animal life in the Mediterranean basin, that animals of some species became extinct.¹¹⁵

As early as 186 B.C. beasts made up a part of the games given by Nobilior. Nearly a century later (99 B.C.) lions were shown at Rome, and Sulla (93 B.C.) had a display of one hundred of them. Scaurus (58) is said to have exceeded previous efforts, showing crocodiles and hippopotami swimming in artificial bodies of water. At Pompey's games (55) elephants and lions were slaughtered;

¹¹⁰ *Amianus*, XIV, 2, 1.

¹¹¹ *Dio*, XLIII, 23; XLVI, 25.

¹¹² *To His Friends*, II, 11; VIII, 4, 8, 9.

¹¹³ *Epistulae*, II, 76, 77; IV, 58-60, 63; IX, 12, 132.

¹¹⁴ *On Stilicho's Consulship*, III, 261 *et seq.*

¹¹⁵ Fowler: *op. cit.*, p. 297.

five hundred of the latter were pitted against men, and eighteen elephants against men in heavy armor. Caesar staged beast fights in honor of Julia. At his great joint triumph (46 B.C.), the *venationes* lasted five days, camelopards were first shown at Rome, and forty men fought, mounted on elephants.¹¹⁶

The emperors soon put the records of the Republic to shame. Augustus gave beast shows twenty-six times.¹¹⁷ The shrine of Julius was dedicated (29 B.C.), and the birth of Augustus was celebrated (20 B.C.) with beast slaughters.¹¹⁸ When the Theater of Marcellus was dedicated (13 B.C.), six hundred African beasts were killed, and the son of Antony gave a beast slaughter on Augustus' birthday.¹¹⁹ At the celebration of the *Ludi Martiales* (12 A.D.), two hundred lions were killed in the circus when the games had to be repeated.¹²⁰ At the death of Sejanus, annual *venationes* and other games of the circus were decreed in his honor.¹²¹ Tiberius' effort to banish beast hunts from the city fared badly, for many people perished (27 A.D.) in the poorly constructed theaters that were put up outside.¹²² Caligula quickly made good for Tiberius' restraint, gave shows lasting all day, and again at night. In 37 A.D., when dedicating a shrine to Augustus, four hundred bears and the same number of Libyan beasts were slain; at a two-day celebration of Drusilla's birthday, five hundred bears were slain in one day and five hundred African beasts the next.¹²³ Caligula varied the performances of the circus by having panther fights between the races; Claudius, who was so fond of beast fights that he went to the arena at dawn, followed the same practice, panthers being pursued by praetorian cavalry, while Thessalian horsemen rode down wild bulls and threw them by their horns when the animals were tired out.¹²⁴ In 41 A.D., one contest with camels, twelve with horses, and the slaying of three hundred bears and the same number of Libyan beasts thrilled the audience.¹²⁵ Nero's grandfather gave beast fights at the circus and elsewhere in the city. Nero himself made men of high rank fight wild beasts and delighted the crowds by rapid shifts from beast fights to naval battles and gladiatorial combats, all staged on the same ground. At one of his spectacles horsemen rode down bulls, and Nero's bodyguard killed with javelins four hundred bears and three hundred

¹¹⁶ Dio, xxxix, 38; xliii, 22-3; Plutarch: *Pompey*, 52; Appian: *Civil Wars*, II, 102; Suetonius: *Julius*, 39.

¹¹⁷ *Res Gestae Divi Augusti*, IV, 22.

¹¹⁸ Dio, LI, 22; LIV, 8.

¹¹⁹ *Ibid.*, LIV, 26.

¹²⁰ *Ibid.*, LVI, 27.

¹²¹ *Ibid.*, LVIII, 12.

¹²² *Ibid.*, LVIII, 1; Tacitus: *Annals*, IV, 62-3.

¹²³ Dio, LIX, 7, 13.

¹²⁴ Suetonius: *Caligula*, 18; *Claudius*, 21, 34; Dio, LX, 23.

¹²⁵ Dio, LX, 7.

lions.¹²⁶ Vespasian was a lover of wild beast fights and gave them often; Titus dedicated the Flavian Amphitheater (80 A.D.) with a slaughter of nine thousand animals, both wild and tame, unique events being a fight between cranes and another of four elephants. Five thousand beasts were shown in one day alone.¹²⁷ Martial fancied that Indian hunters never saw so many tigers anywhere as did the citizens who gazed on Domitian's games.¹²⁸

The Christian era saw no decrease of *venationes*. Eleven thousand beasts were killed (103 A.D.) when Trajan celebrated his Dacian victory. Hadrian gave an animal hunt at Athens with one thousand animals, and entertained at Rome with hunts of great magnificence. At a birthday celebration, it was said, he slew two hundred lions.¹²⁹ Commodus, fancying himself a veritable Roman Hercules, killed beasts himself, in public and in private, and in one day shot one hundred bears from the balustrade of the amphitheater.¹³⁰ At the tenth anniversary of his rule, Severus put on a great beast fight: a cage resembling a boat suddenly fell apart in the arena, and forth came bears, lions, panthers, wild asses, ostriches, and bisons to the number of seven hundred, all of which were slain. Sixty boars fought together, and an elephant and an Indian corocotta were killed.¹³¹ Antoninus (212 A.D.), who was "for ever killing vast numbers of animals," slew one hundred boars in one day; and the false Antoninus had fifty-one tigers, an elephant, and various other beasts slain at his marriage with Cornelia Paula.¹³² At the secular games in honor of Rome's thousandth anniversary (248 A.D.) Philip showed elephants, elks, tigers, wild and tame lions, leopards, hyenas, hippopotami, giraffes, wild asses, wild horses, a rhinoceros, and "various other animals."¹³³

In the early sixth century the monotonous routine of beast shows still continued. Justin and Justinian gained their hold on the public by beast fights, races, and gladiatorial games, as had their predecessors for more than five hundred years. The last *venationes* at Rome, so far as known, were given in 523.¹³⁴

NAUMACHIAE

Naumachiae, sea battles, were staged from time to time to vary Rome's imperial entertainment, lakes being made by flooding the arena and by excava-

¹²⁶ Suetonius: *Nero*, 4, 12; *Dio*, LXI, 9; LXII, 15.

¹²⁷ *Dio*, LXV, 15; LXVI, 25; Suetonius: *Titus*, 7.

¹²⁸ *Bk. VIII*, 26.

¹²⁹ Spartianus: *Hadrian*, 19; *Dio*, LIX, 8.

¹³⁰ *Dio*, LXXIII, 17-8.

¹³¹ *Ibid.*, LXXVII, 1.

¹³² *Ibid.*, LXXVIII, 10; LXXX, 9.

¹³³ Capitolinus: *Gordians*, 33.

¹³⁴ Lot: *op. cit.*, pp. 255 f.; Showerman: *op. cit.*, p. 349.

tions. Besides elaborate infantry and cavalry displays, Caesar arranged the first great naval display on an artificial lake in the Campus Martius. In the contest of the "Tyrian" and "Egyptian" fleets, made up of two-, three- and four-banked ships, there were four thousand oarsmen and two thousand fighting men.¹³⁵ Augustus constructed a permanent basin, twelve hundred by eighteen hundred feet, located near the Tiber (2 B.C.), and put on a display of "Athenians" versus "Persians," which engaged three thousand men besides the oarsmen.¹³⁶ Other basins were built later. When Lake Fucinus and the River Liris were joined (52 A.D.), Claudius exhibited a famous sea combat between the "Rhodians" and "Sicilians," having three- and four-banked ships, fifty on each side, in which nineteen thousand men were engaged.¹³⁷ At Nero's *naumachia*, a battle between "Persians" and "Athenians," sea monsters swam in salt water.¹³⁸ In 80 A.D. Titus put on two sea fights, one between "Corcyreans" and "Corinthians," and another between "Syracusans" and "Athenians." Three thousand men fought, the Athenians defeated the Syracusans, landed their forces on an islet, and demonstrated the siege of a city.¹³⁹ Domitian staged a naval battle, remarkable for the fact that most of the participants and spectators perished.¹⁴⁰

Rome's multitudes had a variety of milder entertainments and exhibitions: among them were unusual, exotic animals (which were readily available after the conquest of Africa and Asia), abnormal men, trick horsemanship, the game of Troy, Pyrrhic dances, acrobatic and athletic contests. The arrival of the first hippopotamus and elephant stirred up considerable enthusiasm, judging by the tales of chroniclers. Augustus exhibited a snake fifty cubits long and everything else worth seeing that was brought to town.¹⁴¹ Caesar's camelopard, the first rhinoceros, and an Indian corocotta taxed Dio's descriptive powers at times.¹⁴² The people doubtless gawked at Augustus' little man (weight seventeen pounds, height scant two feet) with a big voice, gasped at the strong man with his thousand pounds of armor walking across the stage, and held their breath while they gazed at rope dancers and the human fly.¹⁴³

The game of Troy was a popular and frequent equestrian exhibition of the young nobility.¹⁴⁴ The popular Pyrrhic dance, too, was often shown. In

¹³⁵ Suetonius: *Julius*, 39; Appian: *Civil Wars*, II, 102; Dio, XLIII, 23; Plutarch: *Caesar*, 55.

¹³⁶ Suetonius: *Augustus*, 43; Frank: *op. cit.*, v, 15.

¹³⁷ Tacitus: *Annals*, XII, 56-7; Suetonius: *Claudius*, 21; Dio, LXXI, 33.

¹³⁸ Suetonius: *Nero*, 12; Dio, LXXI, 9.

¹³⁹ Dio, LXVI, 25; Suetonius: *Titus*, 7.

¹⁴⁰ Dio, LXVII, 8.

¹⁴¹ Suetonius: *Augustus*, 43.

¹⁴² Dio, XLIII, 23; LI, 22; LXXVII, 1.

¹⁴³ Suetonius: *Augustus*, 43; Pliny: *Natural History*, VII, 20.

¹⁴⁴ Plutarch: *Cato the Younger*, 3; Dio, XLVIII, 20; XLIX, 43; LIV, 26; LV, 10; Suetonius: *Tiberius*, 6; *Nero*, 7; Tacitus: *Annals*, XI, 11.

Caesar's triumphal games noble youth from Bithynia and Asia gave a Pyrrhic dance; Claudius staged performances of it (41 and 44 A.D.) by boys whom Caligula had sent for, and some of his own retinue later performed in Pyrrhic exhibitions.¹⁴⁵ Nero gave Pyrrhic dances representing various scenes.¹⁴⁶ In Hadrian's reign such military dances were frequently exhibited.¹⁴⁷

Acrobatic events and trick riding of *desultores* were often used to vary entertainment of the crowds between races at the circus. From Martial's pen we have a picture of the scene:

See how they leap, the acrobatic crowd,
And how the placid bull accepts the load.
One clasps his horns, one on his broad back stands
Brandishing shield and sword with careless hands.¹⁴⁸

ATHLETIC CONTESTS

Some Romans received the Greek gymnasium and its athletic exercises rather coldly. Pompey admitted he'd wasted oil and toil on them; and Mauricus wished they might be abolished at Rome;¹⁴⁹ nevertheless, both grew in favor rather rapidly, despite criticism heaped upon them by the most conservative. Boxing and wrestling, of course, had long been known in Italy, having been practiced in Etruria.¹⁵⁰ From thence boxers were brought to Rome as a part of the *Ludi Romani*.¹⁵¹

In 186 B.C., a year of many portentous occurrences, athletic contests were introduced from Greece as part of a ten-day spectacle.¹⁵² That boxing was gaining favor is suggested by the fact that in 167 B.C., when Greek flutists sought to give a performance in Rome, they were ordered to box instead, and gave great satisfaction to the audience. Pompey gave gymnastic and musical contests at the opening of his theater, 55 B.C.¹⁵³ At Caesar's triumphal games (46 B.C.) the athletic contests lasted for three days, being exhibited in a special stadium on the *Campus Martius*.¹⁵⁴

Many of the emperors took a keen interest in athletic performances. Augustus excluded women from a boxing match, but he was fond of watching boxers,

¹⁴⁵ Suetonius: *Julius*, 39; Dio, I.x, 7, 23.

¹⁴⁶ Suetonius: *Nero*, 12.

¹⁴⁷ Spartianus: *Hadrian*, 19.

¹⁴⁸ *Epigrams*, v, 31. Trans. by J. A. Pott and F. A. Wright. Courtesy of E. P. Dutton & Co., Inc., New York.

¹⁴⁹ Cicero: *To His Friends*, vii, 1; Pliny: *Letters*, iv, 22.

¹⁵⁰ Dennis: *op. cit.*, II, 323 f.; Randall-MacIver: *Etruscans*, p. 54.

¹⁵¹ Livy, I, 35.

¹⁵² *Ibid.*, xxxix, 22.

¹⁵³ Dio, xxxix, 38; Plutarch: *Pompey*, 52.

¹⁵⁴ Suetonius: *Julius*, 39.

the inexpert as well as professionals, and matched Roman pugilists with Greek. Augustus provided for athletic exhibitions on three occasions; ¹⁵⁵ the Actian Festival included gymnastic events. Caligula had athletes engage in the pancration at a celebration of Drusilla's birthday; both African and Campanian boxers, the best from both places, took part in an exhibition in the Saepta. ¹⁵⁶ Nero was much attracted to wrestling, practiced it constantly, and visited many contests in Greece. Some believed that he himself would soon compete with the athletes at Olympia, after his victories in the theater. ¹⁵⁷ Even in the face of the Gallic uprising, Nero is said to have gone calmly to the gymnasium, watched the wrestlers, and "vied in prowess with some athlete." ¹⁵⁸

The deepening influence of Greek contests showed itself in a number of festivals. Nero's quinquennial celebration, Neronia, imitated the Greek pattern, and had three divisions, one being devoted to gymnastic contests, which the Vestal Virgins were permitted to attend, as did Ceres' priestesses at Olympia. ¹⁵⁹ These were soon abandoned after Nero's death, but Gordian III revived them in 243, calling them the contests of Minerva. A more important festival, in honor of Jupiter Capitolinus, was established by Domitian in 86 A.D.; one of its three parts was devoted to athletic contests, such as wrestling, boxing, the pancration, long-distance running, and chariot races. Another event, the foot race of girls, did not long survive. ¹⁶⁰ That women continued to play some part in public gymnastic exhibitions is evident, however. ¹⁶¹ The importance attached to athletic contests at this time may be judged from the fact that Domitian built a permanent stadium therefor, seating over thirty thousand spectators. Of a few other festivals, partly or wholly athletic, established later, little is known save the name; none of them seem to have compared with the renown of the Capitoline Games. Antoninus Pius established a festival in honor of Hadrian; Games of Hercules, said to have been celebrated by Alexander Severus, ¹⁶² were instituted about the time of Caracalla. Aurelius established contests of the sun-god in 274. ¹⁶³

The philhellenism of many of the Roman emperors and their enthusiasm for Greek athletic festivals did much to spread the cult of the gymnasium, and placed the conquering athletes on a pedestal of fame. The patronage of the

¹⁵⁵ *Res Gestae*, IV, 22.

¹⁵⁶ *Dio*, LIX, 13; *Suetonius: Caligula*, 18.

¹⁵⁷ *Suetonius: Nero*, 53.

¹⁵⁸ *Dio*, LXIII, 26.

¹⁵⁹ *Suetonius: Nero*, 12; *Tacitus: Annals*, XIV, 20.

¹⁶⁰ *Suetonius: Domitian*, 4; *Dio*, LXVII, 8; *Friedländer: Roman Life and Manners*, IV, 264 ff.

¹⁶¹ *Dio*, LXXVI, 16.

¹⁶² *Lampridius: Severus Alexander*, 35.

¹⁶³ *Friedländer: Roman Life and Manners*, II, 121; *Sandys: Companion to Latin Studies*, p. 511.

Greekling Hadrian and the magnificent gifts of Herodes Atticus went far to give athletics an unwonted external grandeur. Professionalism flourished as never before.¹⁰⁴ Dio Chrysostom's portrait of the Isthmian festival; Galen's contempt for professional athletes, in his "Exhortation to the Study of the Arts"; Philostratos' account of the decline of athletics and the open sale of contests; and Lucian's appeal to the spirit of an athletic ideal of the Greeks long since dead—all testify to the extremes to which professionalized sports had gone. At Olympia, to be sure, a strict standard seems to have been maintained fairly successfully, and fines were imposed on wrongdoers as late as the second century A.D. Guilds of professional athletes (*xystoi*) were numerous; some took the name of Augustus, Claudius, and other emperors. One of the most famous was the Herculanei, once located at Sardis, but later established at Rome in the time of Trajan. To their petition for suitable housing Trajan gave a favorable response, assigning them a building equipped with a hall for their deliberations on professional questions (such as examinations, distribution of prizes, erection of statues, the regulation and government of the gymnasium), a gymnasium, and facilities for the safekeeping of records and relics.¹⁰⁵

The athletic contests of the professionals wore them out quickly; Fuscus, a runner, having won fifty-three races at Rome, and others elsewhere, died at the age of twenty-four.¹⁰⁶ Men began young and made great records. The stories told of their prowess are often fantastic; they breathe the spirit of professional contests in an age of record-breaking. Pliny notes that it was thought remarkable for Phcidippides to run 1,160 stadia in two days; but later the courier of Alexander the Great ran 1,305 stadia in one day; and now, says Pliny, there are men in the circus who keep running for 160 (128) miles; and a boy eight (eighteen?) years old has covered 75 (68) miles between morning (noonday) and evening.¹⁰⁷

"Pothunting" became the chief object of athletes. To discourage it and the boasting of the greatest victors, the title, "Successor of Hercules," was abolished, being last awarded in 37 A.D. Almost two centuries later (220? A.D.), Aurlius Helix, a renowned athlete, aspired to contend in wrestling and panceation at Olympia, having already been victorious in both contests at the Capitoline Games. The Eleans, however, refused him the privilege of contending at Olympia, being fearful that he might prove himself the "eighth from Hercules." ¹⁰⁸

¹⁰⁴ *Supra*, pp. 357 f.

¹⁰⁵ Krause: *Die Gymnastik und Agonistik der Hellenen*, I, 131.

¹⁰⁶ Darenberg: *Oeuvres de Galien*, I, 38; Friedländer: *Roman Life and Manners*, II, 21.

¹⁰⁷ Pliny: *Natural History*, VII, 20; Rackham's *Pliny*, II, 561, gives the parenthetical items

¹⁰⁸ Dio, I.XXX, 10.



A BOXER *Museo Delle Terme, Rome*
(Courtesy, Bettmann Archive, New York)

Athletic contests were increasingly brutalized, and the values of amateur participation in competitive play were lost sight of throughout the Graeco-Roman world. Boxing, wrestling, and the pancration, especially, were fraught with danger of bodily disfigurement and serious injury. Marcus Aurelius refers to injuries by tearing with the nails and dashing the head in athletic exercises; and, though he was himself fond of boxing and wrestling, he attached little value to the pancration.¹⁶⁹ Marcus, however, like a good Stoic, was urging the pursuit of virtue; and his strictures on dancing and the pancration cannot have represented the views of more than a very small minority; most Romans, certainly, would have found boxing and the pancration dull without a little blood. After all, athletic contests at Rome and in her dominions had to compete with gladiatorial combats and *venationes*.

Privileges of one kind and another and even very substantial rewards fell to the lot of those who made of athletics a life career. To be an athlete, in Egypt for example, meant being in a class with artists and intellectuals who enjoyed exemption from expensive public duties, magistracies, and liturgies.¹⁷⁰ Especially significant, both from the standpoint of the Empire and the athletes, were the maintenance allotments provided for certain victors. Allowances were given to winners of iselastie games—those in which victory gave the right of triumphal entry through a breached wall of their native town. Originally these were only the victors at Olympian, Isthmian, Nemean, and Pythian festivals; but with complete power in the hands of one man, such awards might be made to any victor; new games might be declared iselastic, and others of that class might be abolished. Maecenas urged economy on Augustus in respect to athletes, suggesting that not everyone should have maintenance for life just because he had won an athletic contest; only those victorious at Rome, or in the Olympian and Pythian games, he said, should receive maintenance. Augustus is credited, however, with increasing the privileges of athletes and establishing severe discipline in the wrestling places.¹⁷¹ An exchange of letters between Trajan and Pliny regarding allowances to iselastic victors is enlightening. Hadrian had abolished some iselastic games, and had decreed new ones. Victors in the new ones petitioned for the allowance between the day of their victory and the time when the contest was declared iselastic, on the ground that now they would be deprived of allowances for their victories in the iselastics that had been abolished. Moreover, the iselastic victors desired that their allowance should begin from the date of their victory, not on the day of their triumphal entry. To Pliny's report and request for directions, Trajan replied that the reward would not be due till the athlete made his entry; nor would

¹⁶⁹ *Meditations*, vi, 20; xi, 2.

¹⁷⁰ Chapot: *Roman World*, pp. 183, 266.

¹⁷¹ Suetonius: *Augustus*, 44-5; *Dio*, lxx, 30.

payments be made retroactively to victors who might win in games subsequently raised to iselastic status.¹⁷²

In Italy every town had some sort of show, varying in pretentiousness according to its size and prosperity and lasting from two to four or five days. More than ninety amphitheaters and sixty theaters have been discovered, many of them dating from before the Empire. An eminent authority has said that "practically all the towns of Italy" spent "at least 6,000 sesterces per year out of their treasuries," and the magistrates often much more. Legacies, left by men to towns, were commonly assigned for the provision of games.¹⁷³

Wherever Rome's sway extended, there the games of circus and arena were to be found, though less often in northern lands. Many provinces founded quinquennial games in honor of Augustus "in almost every one of their towns."¹⁷⁴ Strabo tells of the beauty of Nicopolis, its constant growth, its stadium and gymnasium, and the Actian Festival, which had been honored and encouraged by Caesar.¹⁷⁵ Caligula gave "Athenian games" at Syracuse and "miscellaneous games" at Lugdunum in Gaul.¹⁷⁶ In remote Galatia, with its hyphenated population of Celtic and Phrygian extraction, the games of the arena were as congenial as they were to the people of Rome itself; and gifts of rich men were commonly devoted to the provision of such entertainments. In the provinces the ancient games and pagan religion went hand in hand, the provincial high priest (*sacerdos provinciae*) presiding at the games.¹⁷⁷ During the first and second centuries of the Empire, it seems, "the passion for cruel excitement was as strong in the provincial towns as it was even at Rome."¹⁷⁸ Even the higher refinement that Athens once knew was not proof against the penetration of ruder pastimes. Gladiatorial games had been known in the Orient for centuries before the Empire's beginning, particularly at Alexandria and Antioch. But now Corinth, first of Greek cities, and then Athens became a center for such entertainments. The vulgarity and inhumanity of the Athenian spectacles stirred Apollonius' boundless contempt.¹⁷⁹ North Africa, Gaul, and Spain, however, saw the most extensive development of the games of the arena and circus. Gladiatorial combats were known at Arles as early as 63 B.C. They were still engaging the attention of her crowds in the sixth century A.D.¹⁸⁰

¹⁷² Pliny: *Letters*, x, 118, 119.

¹⁷³ Frank: *op. cit.*, v, 100; Friedlaender: *Darstellungen*, II, 422 ff.

¹⁷⁴ Suetonius: *Augustus*, 59.

¹⁷⁵ Bk. VII, 7, 6; Virgil: *Aeneid*, III, 280.

¹⁷⁶ Suetonius: *Caligula*, 20.

¹⁷⁷ Chapot: *op. cit.*, pp. 112 f., 199.

¹⁷⁸ Dill: *Nero to Aurelius*, p. 235.

¹⁷⁹ Philostratus: *Apollonius of Tyana*, IV, 21-2.

¹⁸⁰ Friedlaender: *Darstellungen*, II, 426.

PAGAN AND CHRISTIAN CRITICISM OF GAMES

Criticism of the spectacles of the circus and the arena found expression to some extent among pagans, Greek and Roman; it increased in volume and vigor under the spur of Christian fanaticism. Apollonius of Tyana, born just before the Christian era, criticized the Athenians for their gladiatorial fights and also for their "lascivious jigs" to which the old dances had given way.¹⁸¹ Demonax advised Athenians to "destroy the Altar of Pity," before deciding to enter into rivalry with Corinth for brilliance in gladiatorial games.¹⁸² Seneca's understanding of the evil was profound, his criticism severe. To banish sorrow by diverting attention through gladiatorial bouts or other entertainments is in vain. The incessant pursuit of spectacle after spectacle and the enjoyment of human blood cannot enable one to escape from himself.¹⁸³ In fact, there is nothing so injurious to good morals as attendance at games. "In the morning they throw men to the lions and the bears; at noon, they throw them to the spectators. The spectators demand that the slayer shall face the man who is to slay him in his turn; and they always reserve the latest conqueror for another butchering. The outcome of every fight is death. . . ." ¹⁸⁴ After witnessing combats which are nothing short of murder, one is always more greedy, cruel, voluptuous, and inhuman. To observe such evils is certain to react on the observer.

Christian critics recognized the games of the arena and circus as a great stronghold of paganism and subjected them to vigorous, continuous attack. Minucius Felix (second century) declared: "We, whose values rest on morals and on modesty, have good reason to abstain from the vicious delights of your processions and spectacles; we know the rites from which they originated and condemn their pernicious attractions. At the curule games, who would not shrink from the frenzy of the struggling mob? or the organized bloodshed of the gladiatorial shows?" ¹⁸⁵

Tertullian's theme is the same. As he takes pains to show, the games originated in rites honoring dead men. Gymnastic contests began "with their Castors and Herculeases and Mercuries." Horseback riding, originally in a primitive state, was no sin; but, "brought into the games, it passed from being God's gift into the service of demons." Gladiatorial combats originated as a *munus*

¹⁸¹ Philostratus: *Apollonius of Tyana*, iv, 21-2.

¹⁸² Lucian: *Demonax*, 57.

¹⁸³ Seneca: *To Helvia*, xvii, 1; *On Tranquillity of Mind*, ii, 13-5.

¹⁸⁴ Seneca: *Epistle vii, 2 et seq.* Seneca, *Epistulae Morales*, trans. by R. M. Gummere. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁸⁵ Minucius Felix: *Octavius*, xxxvii, 11. Trans. by G. H. Rendall. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

(a service) to the dead, founded on belief in the propitiation of "the souls of the dead" by "human blood." This "impiety" has now been turned into pleasure.¹⁸⁶ The stadium is mentioned in Scriptures, Tertullian admits, but what is done in it—giving a "blow, kick, cuff, all the recklessness of the fist, any and every disfigurement of the human face, God's image"—is unfit for men to witness. Running and throwing are idle feats, "idler still is leaping." "Wrestling is the devil's own trade."¹⁸⁷

Summing up the indictment, Tertullian declares: "Your public games . . . we renounce, as heartily as we do their origins. . . . We have nothing to do . . . with the madness of the circus, the shamelessness of the theatre, the savagery of the arena, the vanity of the gymnasium."¹⁸⁸ The pleasure of the Christian is that of the Greek philosopher—calmness of mind. If the Bible does not specifically condemn the circus, the theater, the spectacle, it does say, "Happy is the man . . . who has not gone to the gathering of the impious, who has not stood in the way of sinners, nor sat in the chair of pestilences."¹⁸⁹

Over against secular pleasures, Christian ascetics placed their own conception of spiritual joys. Thus Tertullian says: "What greater pleasure is there than disdain for pleasure, than contempt for the whole world, than true liberty, than a clean conscience, than life sufficient, than the absence of all fear of death? than to find yourself trampling underfoot the gods of the Gentiles, expelling demons, effecting cures, seeking revelations, living to God? These are the pleasures, the spectacles of Christians, holy, eternal, and free. Here find your games of the circus—watch the race of time, the seasons slipping by, count the circuits, look for the goal of the great consummation, battle for the companies of the churches, rouse up at the signal of God, stand erect at the angel's trump, triumph in the palms of martyrdom. If the literature of the stage delight you, we have sufficiency of books, of poems, of aphorisms, sufficiency of songs and voices, not fable, those of ours, but truth; not artifice but simplicity. Would you have fightings and wrestlings? Here they are—things of no small account and plenty of them. See impurity overthrown by chastity, perfidy slain by faith, cruelty crushed by pity, impudence thrown into the shade by modesty; and such are the contests among us, and in them we are crowned. Have you a mind for blood? You have the blood of Christ."¹⁹⁰ A host of parallels might be cited, showing the effort that was made to infuse the terms

¹⁸⁶ *De Spectaculis*, 9, 11–2. Trans. by T. R. Glover. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁸⁷ *Ibid.*, 18; 1 *Corinthians*, ix, 24.

¹⁸⁸ *Apology*, xxxviii, 4. Trans. by T. R. Glover. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

¹⁸⁹ Tertullian: *De Spectaculis*, 3; *Psalms*, i, 1.

¹⁹⁰ Tertullian: *De Spectaculis*, 29. Trans. by T. R. Glover. The Loeb Classical Library. Quoted by permission of Harvard University Press, Cambridge, Mass.

of the Graeco-Roman sporting world with ascetic, religious meaning. Wrestling the devil is held worthier than contending with a human antagonist. All of life is a combat. The Christian contender needs to keep the body spare, that the soul may be the stronger. To postpone baptism to the deathbed is likened to stripping for a contest when the audience is on the point of leaving. Women, as well as men, can compete in this ascetic discipline of the spirit; and they may even win the race.¹⁰¹

Christianity, though its preachers criticized the inhuman practices of the arena unceasingly, was at best only able gradually to alter the minds of men; it was not competent to effect a speedy metamorphosis. The insidious influence of the games drew even Christians and others who resolutely set their will against them, in spite of themselves, as Augustine says of Alypius.¹⁰² Judgments vary respecting the influence of emperors, nominally Christian, at least, upon the bloody sports of Rome. Gibbon speaks of the "piety of Christian princes" which suppressed gladiatorial games; Cary, however, believes that "the Christian emperors of the fourth century gave no heed to the strictures of the Church upon the cruelty of gladiatorial games. . . ." ¹⁰³ Indeed, little was done. If some emperors considered abolishing the games, most of them held to the contrary opinion and practice. Constantine censured the giving of spectacles in peacetime (326), and ordered that criminals be sentenced to mines instead of the arena; but this was not prohibition. Valentinian's law (365) forbade the condemning of Christians to gladiatorial schools.¹⁰⁴ The imperial gladiatorial schools were abolished in 399. Five years later Honorius abolished gladiatorial combats at Rome, in consequence of the killing by the audience of Telemachus, a monk who sought to interpose himself between men in a gladiatorial contest at the Flavian Amphitheater. Prudentius had pleaded in vain with Honorius to stop the games; but what reason had not effected was now accomplished by more spectacular means.

As long as the old society lasted, some vestige of the splendor of spectacles remained; but with its disintegration came the inevitable atrophy of its dearest pleasures. In the fourth century Ammianus reports with chagrin that though there was a scarcity of food in the city, and foreigners were driven "neck and crop" from the towns, three thousand dancing-girls and as many dancing-masters were allowed to remain. In the middle of the fourth century (359) he tells us that the circus still held Romans in its spell as did nothing else. "Their temple, their dwelling, their assembly, and the height of all their hopes is the

¹⁰¹ Sawhill: *The Use of Athletic Metaphors in the Biblical Homilies of St. John Chrysostom*, pp. 47 ff., 80 ff., 105 f., et passim.

¹⁰² Augustine: *Confessions*, vi, 8.

¹⁰³ Cary: *op. cit.*, p. 757; Gibbon: *op. cit.*, iii, 31.

¹⁰⁴ Friedländer: *Roman Life and Manners*, II, 80 f.; Lot: *op. cit.*, p. 178.

Circus Maximus.”¹⁰⁵ Namatianus still hears the cheers for the winning color ringing in his ears as he sails down the Tiber in 417. While Theodoric ruled (493-526), he held to the principle of bread and circuses for Rome’s hordes, and won the praise of Cassiodorus and other Christians. Justin spent more than \$1,000,000 (521) on games; and Justinian’s reign was seriously disturbed by the rivalries of circus factions in 532. Totila entertained with games the vanquished Romans when he captured the city in 549. Both circus games and beast fights were still of considerable moment in the sixth century. Though the last known venationes at the Colosseum occurred in 523, Justinian provided by law (536) that the consuls should give animal fights and other spectacles.¹⁰⁶ When the Germans were threatening the gates of Treves, the populace was still engrossed in the bloody shows of the arena. Procopius says that the German chiefs had coins struck with their own image, and presided like “gentlemen of leisure” at the games in the circus of Arles in 541.¹⁰⁷ Gregory of Tours says that Chilperic (died, 584) ordered amphitheaters to be erected at Paris and Soissons and gave “shows to the people.”¹⁰⁸ A reference to a beast being baited by dogs at the palace of Metz is faintly reminiscent of bloodier beast fights of earlier, more glamorous days.¹⁰⁹ By the close of the sixth century, however, the disintegration of the social order itself robbed the spectacles of the encouragement that had so long kept them alive.

¹⁰⁵ Ammianus, xiv, 6, 19; xxviii, 4, 29.

¹⁰⁶ Showerman: *op. cit.*, pp. 321, 349; Lot: *op. cit.*, p. 178; Gibbon: *op. cit.*, iii, 426 ff.; Thorndike: *The History of Medieval Europe*, p. 126.

¹⁰⁷ Procopius: *History of the Wars*, vii, 33; Dill: *Nero to Aurelius*, p. 234.

¹⁰⁸ Gregory of Tours: *History of the Franks*, v, 11.

¹⁰⁹ *Ibid.*, viii, 36.

BIBLIOGRAPHY

- Abbott, E. *A History of Greece*. 3 vols. Putnam's: New York, 1900-1906.
- Abbott, F. F. *The Common People of Ancient Rome*. Scribner's: New York, 1911.
- . *Society and Politics in Ancient Rome*. Scribner's: New York, 1909.
- Adamson, J. E. *The Theory of Education in Plato's "Republic."* Swan Sonnenschein: London, 1903.
- Aeschines, *The Speeches of*. (Trans. by C. D. Adams.) Heinemann: London, 1919. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Allbutt, T. C. *Greek Medicine in Rome*. Macmillan: London, 1921.
- Allier, R. *The Mind of the Savage*. Harcourt, Brace: New York, 1929.
- Ammianus Marcellinus. (Trans. by J. C. Rolfe.) 3 vols. Harvard University Press: Cambridge, 1935-1939.
- Anderson, L. F. "Some Facts Regarding Vocational Training among the Ancient Greeks and Romans." *Sch. Rev.* (Mar., 1912), xx, 191-201.
- Andrews, G. F. "Physical Education in India." *Jour. Health and Phys. Educ.* (Feb., 1933), iv, 10-2, 59.
- Ante-Nicene Fathers, The*. (Ed. by A. Roberts and J. Donaldson, and rev. by A. C. Coxe.) 9 vols. Christian Lit. Pub. Co.: Buffalo, 1885-1887.
- Apollodorus: *The Library*. (Trans. by J. G. Frazer.) 2 vols. Heinemann: London, 1921. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Apollonius of Rhodes: *The Tale of the Argonauts*. (Trans. by A. S. Way.) Dent: London, 1901.
- Appian's *Roman History*. (Trans. by H. White.) 4 vols. Heinemann: London, 1912-1913. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Areataeus, *The Cappadocian, The Extant Works of*. (Trans. by F. Adams.) Sydenham Society: London, 1856.

- 'Ārifī, M. *Gūi u Chaugān or Hālnāma*. (Trans. by R. S. Greenshields.) Luzac: London, 1932.
- Aristophanes. (Trans. by B. B. Rogers.) 3 vols. Heinemann: London, 1924. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Aristophanes: *The Frogs*. (Trans. by G. Murray.) Allen and Unwin: London, 1930.
- Aristotle, *The Works of*. (Trans. under the editorship of J. A. Smith and W. D. Ross.) 11 vols. Clarendon Press: Oxford, 1908-1931.
- Arrian. (Trans. by E. I. Robson.) 2 vols. Heinemann: London, 1929-1933. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Arrian: *The Cynegeticus*. (Trans. by W. Dansey.) Bohn: London, 1831.
- Athenaeus: *The Deipnosophists*. (Trans. by C. B. Gulick.) 7 vols. Harvard University Press: Cambridge, 1927-1941.
- Augustine, Saint: *The City of God*. (Trans. by J. Healey.) 2 vols. Grant: Edinburgh, 1909.
- Augustine's *Confessions*, Saint. (Trans. by W. Watts.) 2 vols. Heinemann: London, 1912. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Aurelius Antoninus, Marcus . . . *His Meditations*. (Trans. by M. Casaubon.) Dutton: New York, 1900.
- Aurelius Antoninus, *The Meditations of the Emperor Marcus*. (Trans. by G. Long.) Burt: New York, n.d.
- Ausonius [and] *The Eucharisticus* of Paulinus Pellaeus. (Trans. by H. G. Evelyn White.) 2 vols. Heinemann: London, 1919-1921. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Babylonian Talmud. (Trans. by M. L. Rodkinson.) 10 vols. New Talmud Pub. Co.: Boston, 1903.
- Babylonische Talmud, *Der*. (Ed. by L. Goldschmidt.) 9 vols. Calvary: Berlin, 1897-1935.
- Badminton Library of Sports and Pastimes, *The*. (Ed. by the Duke of Beaufort and A. E. T. Watson.) 26 vols. Longmans: London, 1886-1902.
- Baikie, J. *The Amarna Age*. Maemillan: New York, 1926.
- . *A History of Egypt from the Earliest Times to the End of the XVIIIth Dynasty*. Black: London, 1929.
- . *The Sea-Kings of Crete*. Black: London, 1913.
- Bailey, C. (Ed.) *The Legacy of Rome*. (Essays by C. Foligno, E. Barker, et al.) Clarendon Press: Oxford, 1923.
- Bakewell, C. M. *Souree Book in Ancient Philosophy*. Scribner's: New York, 1907.
- Ball, C. J. *Chinese and Sumerian*. Oxford Univ. Press: London, 1913.

- Ballin, H. "Gymnastics in the Bible." *Mind and Body* (Sept., 1895), II, 129-32.
- Barnes, H. E. *The History of Western Civilization*. 2 vols. Harcourt, Bracc: New York, 1935.
- Barrow, R. H. *Slavery in the Roman Empire*. Methuen: London, 1928.
- Barton, G. A. *Archaeology and the Bible*. Am. Sunday-Sch. Union: Philadelphia, 1925.
- Bauer, L. "Chinese Dances for Children." *Jour. Health and Phys. Educ.* (Sept., 1933), IV, 22-7, 53.
- Baumcister, A. *Denkmäler des Klassischen Altertums*. 3 vols. Oldenbourg: München, 1885-1888.
- Becker, W. A. *Charicles*. (Trans. by F. Metcalfe.) Appleton: New York, 1866.
- . *Gallus or Roman Scenes of the Time of Augustus*. (Trans. by F. Metcalfe.) Longmans: London, 1866.
- Bell, H. I. "Hellenic Culture in Egypt." *Jour. Egy. Archaeol.* (1922), VIII, 139-55.
- . "The Historical Value of Greek Papyri." *Jour. Egy. Archaeol.* (1920), VI, 234-46.
- Beloch, J. *Die Bevölkerung der Griechisch-Römischen Welt*. Duncker and Humblot: Leipzig, 1886.
- Bernard, T. *Hatha Yoga, The Report of a Personal Experience*. Columbia Univ. Press: New York, 1944.
- Bible, The Holy*. (Am. rev. ed.) Nelson: New York, 1901.
- Bible, The Holy*. (From the Vulgate.) Wildermann: New York, 1911.
- Biot, E. C. *Essai sur l'Histoire de l'Instruction Publique en Chine*. Duprat: Paris, 1847.
- Blackman, A. M. "On the Position of Women in the Ancient Egyptian Hierarchy." *Jour. Egy. Archaeol.* (1921), VII, 8-30.
- Blanco y Sanchez, D. R. *Bibliografía General de la Educación Física*. 2 vols. Hernando: Madrid, 1927.
- Blümner, H. *The Home Life of the Ancient Greeks*. (Trans. by A. Zimmern.) Cassell: London, 1895.
- Boeckh, A. *The Public Economy of Athens*. (Trans. by G. C. Lewis.) Parker: London, 1842.
- Bogeng, G. A. E. *Geschichte des Sports Aller Völker und Zeiten*. 2 vols. Seemann: Leipzig, 1926.
- Bondurant, A. L. *Ancient Athletics, Their Use and Abuse*. Banner Press: Emory Univ., n.d.

- Bosanquet, B. *The Education of the Young in the Republic of Plato*. Univ. Press: Cambridge, 1908.
- Botsford, G. W., and Botsford, L. S. *A Source-Book of Ancient History*. Macmillan: New York, 1927.
- . *The Story of Rome as Greeks and Romans Tell It*. Macmillan: New York, 1927.
- Botsford, G. W., and Robinson, C. A. *Hellenic History*. Rev. ed. Macmillan: New York, 1948.
- Botsford, G. W., and Sihler, E. G. *Hellenic Civilization*. Columbia Univ. Press: New York, 1915.
- Bourguet, E. *Les Ruines de Delphes*. Fontemoing: Paris, 1914.
- Bowra, C. M. "Xenophanes and the Olympic Games." *Am. Jour. Philol.* (1938), LIX, 257-79.
- Boyd, C. E. *Public Libraries and Literary Culture in Ancient Rome*. Chicago, 1916.
- Brav, A. "The Biblical Sanitary Code to Prevent the Spread of Contagious Diseases." *Am. Med.* (Sept., 1917), N.S. XII, 638-44.
- Breasted, J. H. *Ancient Times*. Ginn: Boston, 1916.
- . *Development of Religion and Thought in Ancient Egypt*. Scribner's: New York, 1912.
- . *A History of Egypt*. Scribner's: New York, 1912.
- Brink, D. B., and Smith, P. *Athletes of the Bible*. Assoc. Press: New York, 1914.
- Brown, G. *Melanesians and Polynesians*. Macmillan: London, 1910.
- Brown, J. M. *Polo*. Longmans: London, 1891.
- Browne, E. G. *A Year amongst the Persians*. Univ. Press: Cambridge, 1927.
- Brunn, H., and Arndt, P. J. *Denkmäler Griechischer und Römischer Sculptur*. Ser. 1 and 2. Bruckmann: Munich, 1888.
- Brunner-Traut, E. *Der Tanz im alten Ägypten. Ägyptologische Forschungen, Heft 6*. Glückstadt, Hamburg, New York, 1938.
- Bryant, A. A. "Boyhood and Youth in the Days of Aristophanes." *Harvard Studies in Class. Philol.* (1907), xviii, 73-122.
- Buckingham, J. S. *Travels in Assyria, Media, and Persia*. 2 vols. Colburn and Bentley: London, 1830.
- Büdinger, M. "Die Römischen Spiele und der Patriciat." *Sitzungsberichte der Philosophisch-historischen Classe der Kaiserlichen Akademie der Wissenschaften*, vol. cxxiii, Abh. iii.
- Bulley, M. H. *Ancient and Medieval Art*. Methuen: London, 1914.
- Burn, A. R. *Minoans, Philistines, and Greeks*. Knopf: New York, 1930.

- Burnet, J. *Aristotle on Education*. Univ. Press: Cambridge, 1905.
- Burns, C. D. *Greek Ideals*. Bell: London, 1917.
- Bury, J. B. *A History of Greece*. Macmillan: London, 1922.
- . *The Invasion of Europe by the Barbarians*. Macmillan: London, 1928.
- Busolt, G., and Swoboda, H. *Griechische Staatskunde*. 2 vols. C. H. Beck'sche Verlagsbuchhandlung: München, 1920-1926.
- Butcher, S. H. *Some Aspects of the Greek Genius*. Macmillan: London, 1893.
- Butler, A. J. *Sport in Classic Times*. Benn: London, 1930.
- Buttrec, J. M. *The Rhythm of the Redman*. Barnes: New York, 1930.
- Cambridge Ancient History, The*. (Ed. by J. B. Bury, S. A. Cook, et al.) 12 vols. Macmillan: New York, 1923-1939.
- Cambridge Medieval History, The*. (By J. B. Bury et al.) 8 vols. Univ. Press: Cambridge, 1911-1936.
- Capes, W. W. *University Life in Ancient Athens*. Harper: New York, 1877.
- Carcopino, J. *Daily Life in Ancient Rome*. (Trans. by E. O. Lorimer.) Yale Univ. Press: New Haven, 1940.
- Carpenter, R. *The Humanistic Value of Archaeology*. Harvard Univ. Press: Cambridge, 1933.
- Carus, P. *Chinese Life and Customs*. Open Court: Chicago, 1907.
- Cary, H. F. *Pindar in English Verse*. Moxon: London, 1833.
- Cary, M. *A History of Rome down to the Reign of Constantine*. Macmillan: London, 1938.
- Catlin, G. *Letters and Notes on the Manners, Customs, and Conditions of the North American Indians*. 2 vols. London, 1841.
- Cato, Marcus Porcius, *On Agriculture* [and] Marcus Terentius Varro: *On Agriculture*. (Trans. by W. D. Hooper, rev. by H. B. Ash.) Harvard University Press: Cambridge, 1934.
- Catullus and Tibullus, The Poems of*. (Trans. by W. K. Kelly.) Bell: London, 1897.
- Celsus de Medicina*. (Trans. by W. G. Spencer.) 3 vols. Harvard University Press: Cambridge, 1935-1938.
- Censorini de die Natali Liber*. (Ed. by O. Jahn.) Berolini, 1845.
- Chait, R. M. "Relics of a Royal Sport in China." *Internat. Studio: Associated with the Connoisseur* (Nov., 1928), xci, 33-6, 90.
- Chamberlain, A. F. *The Child: A Study in the Evolution of Man*. Scott: London, 1901.
- . *The Child and Childhood in Folk Thought*. Macmillan: New York, 1896.

- Chapot, V. *The Roman World*. (Trans. by E. A. Parker.) Knopf: New York, 1928.
- Cheesman, G. L. *The Auxilia of the Roman Imperial Army*. Clarendon Press: Oxford, 1914.
- Choris, L. *Voyage Pittoresque autour du Monde*. Paris, 1822.
- Chryssafis, J. "Aristotle on Kinesiology." *Jour. Health and Phys. Educ.* (Sept., 1930), 1, 14-7, 54-6.
- . "Aristotle on Physical Education." *Jour. Health and Phys. Educ.* (Jan. and Feb., 1930), 1, 3-8, 50; 14-7, 46-7.
- Cicero: *Brutus* (Trans. by G. L. Hendrickson.) [and] *Orator* (Trans. by H. M. Hubbell.) Harvard University Press: Cambridge, 1939.
- Cicero: *De Finibus Bonorum et Malorum*. (Trans. by H. Rackham.) Heinemann: London, 1914. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Cicero: *De Natura Deorum* [and] *Academica*. (Trans. by H. Rackham.) Heinemann: London, 1933. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Cicero: *De Oratore*. (Trans. by E. W. Sutton and H. Rackham.) 2 vols. Harvard University Press: Cambridge, 1942.
- Cicero: *De Re Publica* [and] *De Legibus*. (Trans. by C. W. Keyes.) Heinemann: London, 1928. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Cicero: *Letters to Atticus*. (Trans. by E. O. Winstedt.) 3 vols. Heinemann: London, 1912-1918. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Cicero: *The Letters to His Friends* [and] *Letters to Quintus*. (Trans. by W. G. Williams.) 3 vols. Heinemann: London, 1927-1929. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Cicero on Oratory and Orators; with His Letters to Quintus and Brutus. (Trans. by J. S. Watson.) Bell: London, 1891.
- Cicero, *The Orations of Marcus Tullius*. (Trans. by C. D. Yonge.) 3 vols. Bell: London, 1891-1917.
- Cicero: *Philippics*. (Trans. by W. C. A. Ker.) Heinemann: London, 1926. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Cicero: *The Speeches. Pro Lege Manilia, Pro Caccina, Pro Cluentio, Pro Rabirio, Perduellionis*. (Trans. by H. G. Hodge.) Heinemann: London, 1927. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Cicero's Three Books of Offices . . . On Old Age . . . On Friendship; Paradoxes; Scipio's Dream; [and] . . . Duties of a Magistrate. (Trans. by C. R. Edmonds.) Bell: London, 1887.

- Cicero: *Tusculan Disputations*. (Trans. by J. E. King.) Heinemann: London, 1927. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Clark, J. W. *The Care of Books*. Univ. Press: Cambridge, 1901.
- Claudian. (Trans. by M. Platnauer.) 2 vols. Heinemann: London, 1922. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Cole, P. R. *Later Roman Education in Ausonius, Capella and the Theodosian Code*. Teachers College: New York, 1909.
- Columella, L. Junius Moderatus. *Of Husbandry . . . and Concerning Trees*. (Trans. by M. C. Curtius.) London, 1745.
- Columella, L. Junius Moderatus, *On Agriculture*. (Trans. by H. B. Ash.) 3 vols. Harvard University Press: Cambridge, 1941-.
- Coomaraswamy, A. *The Dance of Siva*. Sunwise Turn: New York, 1918.
- Corlett, W. T. *The Medicine-man of the American Indian and His Cultural Background*. Thomas: Springfield, Ill., 1935.
- Costello, L. S. *The Rose Garden of Persia*. Slark: London, 1888.
- Couissin, P. *Les Armes Romaines*. Librairie Ancienne, Honoré Champion, Editeur: Paris, 1926.
- Cramer, F. *Geschichte der Erziehung und des Unterrichts im Alterthume*. 2 vols. Becker: Elberfeld, 1832-1838.
- Crosby, H. L. "The Quest of Health in Ancient Greece." *Univ. of Pa. Lectures* (1916-1917), IV, 309-27.
- Cubberley, E. P. *Readings in the History of Education*. Houghton Mifflin: Boston, 1920.
- Culin, S. *Games of the North American Indians*. 24th Ann. Rep. Bur. Am. Ethnol., 1902-1903. Govt. Printing Off.: Washington, 1907.
- Daremberg, C., and Saglio, E. *Dictionnaire des Antiquités Grecques et Romaines*. 5 vols. Hachette: Paris, 1877.
- Davids, T. W. R. *Buddhist India*. Putnam's: New York, 1903.
- Davidson, T. *Aristotle and Ancient Educational Ideals*. Scribner's: New York, 1901.
- . *The Education of the Greek People*. Appleton: New York, 1894.
- Davies, J. *Hesiod and Theognis*. Lippincott: Philadelphia, 1873.
- Davis, W. S. *A Day in Old Athens*. Allyn and Bacon: Boston, 1914.
- . *A Day in Old Rome*. Allyn and Bacon: Boston, 1925.
- . *The Influence of Wealth in Imperial Rome*. Macmillan: New York, 1910.
- DeClercq, L. *Catalogue Méthodique et Raisonné Antiquités Assyriennes*. 2 vols. Ernest Leroux: Paris, 1888-1903.

- Delitzsch, F. J. *Jewish Artisan Life in the Time of Jesus*. (Trans. by B. Pick.) Funk and Wagnalls: New York, 1883.
- Della Corte, M. *Invventvs. Fraioli*: Arpino, 1924.
- De Meun, J. *L'Art de Chevaleric*. (From *De Re Militari* of Vegetius.) Librairie de Firmin-Didot: Paris, 1897.
- Demosthenes against Meidias, Androtion, Aristocrates, Timocrates, Aristogeiton. (Trans. by J. H. Vince.) Harvard University Press: Cambridge, 1935.
- Demosthenes: *Olynthiacs, Philippics, Minor Public Speeches, Speech against Leptines*. (Trans. by J. H. Vince.) Heinemann: London, 1930. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Demosthenes: *Private Orations*. (Trans. by A. T. Murray.) 4 vols. Harvard University Press: Cambridge, 1936-.
- Demosthenes, *The Public Orations of*. (Trans. by A. W. Pickard-Cambridge.) 2 vols. Clarendon Press: Oxford, 1912.
- Dennis, G. *The Cities and Cemeteries of Etruria*. 2 vols. Murray: London, 1883.
- Diehl, C. *Excursions Archéologiques en Grèce*. Colin: Paris, 1890.
- Diels, H. "Ancient Long Jump." *Am. Jour. Archaeol.* (1900), iv, 539.
- Diem, C. *Asiatische Reiterspiele*. Deutscher Archiv-Verlag: Berlin, 1942.
- Dill, S. *Roman Society from Nero to Marcus Aurelius*. Macmillan: London, 1937.
- . *Roman Society in Gaul in the Merovingian Age*. Macmillan: London, 1926.
- . *Roman Society in the Last Century of the Western Empire*. Macmillan: London, 1906.
- Dio Chrysostom. (Trans. by J. W. Cohoon and H. L. Crosby.) 5 vols. Harvard University Press: Cambridge, 1932-.
- Diodorus of Sicily. (Trans. by C. H. Oldfather.) 12 vols. Harvard University Press: Cambridge, 1933-.
- Diogenes Laërtius: *The Lives and Opinions of Eminent Philosophers*. (Trans. by C. D. Yonge.) Bell: London, 1915.
- Dionysius of Halicarnassus, *The Roman Antiquities of*. (Trans. by E. Cary.) 7 vols. Harvard University Press: Cambridge, 1937-.
- Dio's *Roman History*. (Trans. by E. Cary.) 9 vols. Heinemann: London, 1914-1927. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Dobson, J. F. *Ancient Education and Its Meaning to Us*. Longmans: New York, 1932.
- Douglas, R. K. *China*. Putnam's: New York, 1904.
- Drever, J. *Greek Education*. Univ. Press: Cambridge, 1912.

- Duff, J. W. *A Literary History of Rome*. Unwin: London, 1923.
- Dumont, A. *Essai sur l'Éphébie Attique*. 2 vols. Firmin-Didot: Paris, 1875-1876.
- Dutt, M. N. *The Mahabharata, A Prose English Translation*. Elysium Press: Calcutta, 1895-1897.
- Dutt, R. C. *A History of Civilization in Ancient India*. Thacker: Calcutta, 1891.
- Eastman, C. A. *Indian Boyhood*. McClure, Phillips: New York, 1902.
- Edgar, C. C. "A Women's Club in Ancient Alexandria." *Jour. Egy. Archaeol.* (1917), IV, 253-4.
- Egger, J. B. *Begriff der Gymnastik bei den Alten Philosophen und Medicinern*. Freiburg in der Schweiz, 1903.
- Ellis, H. *The Dance of Life*. Houghton Mifflin: Boston, 1923.
- Elmer, R. P. *Archery*. Penn Pub. Co.: Philadelphia, 1926.
- Emmanuel, M. *The Antique Greek Dance*. (Trans. by H. J. Beauley.) John Lane: New York, 1916.
- Epicetetus, The Discourses of, With the Encheiridion and Fragments*. (Trans. by G. Long.) Burt: New York, n.d.
- Erman, A. *Aegypten und Aegyptisches Leben im Altertum*. (Rev. by H. Ranke.) Mohr: Tübingen, 1923.
- . *Life in Ancient Egypt*. (Trans. by H. M. Tirard.) Macmillan: London, 1894.
- Euler, C. *Encyklopädisches Handbuch des Gesanten Turnwescens und der Verwandten Gebiete*. 3 vols. Pichler's: Wien, 1894-1896.
- Eunapius: The Lives of the Sophists [and] Philostratus*. (Trans. by W. C. Wright.) Heinemann: London, 1922. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Euripides*. (Trans. by A. S. Way.) 4 vols. Heinemann: London, 1912. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Evans, A. *The Palace of Minos at Knossos*. 5 vols. Macmillan: London, 1921-1936.
- Evans, A. J. *Scripta Minoa*. Vol. I. Clarendon Press: Oxford, 1909.
- Evans, I. H. N. *Among Primitive Peoples in Borneo*. Lippincott: Philadelphia, 1922.
- Falke, J. von. *Greece and Rome; Their Life and Art*. (Trans. by W. H. Browne.) Holt: New York, 1882.
- Falkener, E. *Games Ancient and Oriental and How to Play Them*. Longmans: London, 1892.

- Fedde, F. *Der Fünfkampf der Hellenen*. Breslau, 1888.
- Feldman, W. M. *The Jewish Child*. Baillière Tindall, and Coxe: London, 1917.
- Fell, R. A. L. *Etruria and Rome*. Univ. Press: Cambridge, 1924.
- Felton, C. C. *Ancient and Modern Greece*. 2 vols. Ticknor and Fields: Boston, 1867.
- Ferrero, G., and Barbagallo, C. *A Short History of Rome*. 2 vols. Putnam's: New York, 1918-1919.
- Finegan, J. *Light from the Ancient Past; the Archaeological Background of the Hebrew-Christian Religion*. Princeton Univ. Press: Princeton, 1946.
- Firdausi, *The Shāhnāma of*. (Trans. by A. G. Warner and E. Warner.) 9 vols. Kegan Paul, Trench, Trübner: London, 1905-1925.
- Fletcher, A. C. *Indian Games and Dances with Native Songs*. Birchard: Boston, 1915.
- Florus, Lucius Annaeus, *Epitome of Roman History*. (Trans. by E. S. Forster.) (With J. C. Rolfe's *Cornelius Nepos*.) Heinemann: London, 1929. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Forbes, C. A. *Greek Physical Education*. Century: New York, 1929.
- Forrer, E. "Die Inschriften und Sprachen des Hatti-Reiches." *Zeitschrift der Deutschen Morgenländischen Gesellschaft* (1922), LXXVI, 174-269.
- Fort, G. F. *Medical Economy during the Middle Ages*. Bouton, Quaritch: New York, London, 1883.
- Fowler, W. W.: *The Roman Festivals of the Period of the Republic*. Macmillan: New York, 1925.
- . *Social Life at Rome in the Age of Cicero*. Macmillan: New York, 1909.
- Frank, T. *A History of Rome*. Holt: New York, 1926.
- . *Roman Imperialism*. Macmillan: New York, 1929.
- . *Rome and Italy of the Empire*. (Vol. v, *An Economic Survey of Ancient Rome*.) Johns Hopkins Press: Baltimore, 1940.
- Freeman, K. J. *Schools of Hellas*. Macmillan: London, 1922.
- Friedenwald, H. "The Relation of Jews and Judaism to the Medical Art." *Am. Med.* (Sept., 1917), N.S. XII, 615-21.
- Friedlaender, L. *Darstellungen aus der Sittengeschichte Roms in der Zeit von August bis zum Ausgang der Antonine*. 3 vols. Hirzel: Leipzig, 1888-1890.
- . "Die Spicle." In J. Marquardt, *Römische Staatsverwaltung*, III, 482-566. Hirzel: Leipzig, 1885.
- Friedländer, L. *Roman Life and Manners under the Early Empire*. (Trans. by L. A. Magnus et al.) 4 vols. Routledge: London, 1908-1913.

- Fronto, Marcus Cornelius, *The Correspondence of*. (Trans. by C. R. Haines.) 2 vols. Heinemann, Putnam's: London, New York, 1919-1920.
- Fuld, L. F. "Physical Education in Greece and Rome." *Am. Phys. Educ. Rev.* (Mar., 1907), XII, 1-13.
- Furness, W. H. *Home Life of Borneo Head-Hunters*. Lippincott: Philadelphia, 1902.
- Furtwängler, A., et al. *Griechische Vaschmalerei*. 6 vols. Bruckmann: München, 1904-1932.
- Galen, C. *Opera Omnia*. (Ed. by D. C. G. Kühn.) 20 vols. Cnobloch: Lipsiae, 1821-1833.
- Galen on the Natural Faculties. (Trans. by A. J. Brock.) Heinemann: London, 1916. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Galen, *Oeuvres Anatomiques, Physiologiques et Médicales de*. (Trans. by C. Daremberg.) 2 vols. Baillière: Paris, 1854-1856.
- Gann, T., and Thompson, J. E. *The History of the Maya*. Scribner's: New York, 1931.
- Gardiner, E. N. *Athletics of the Ancient World*. Clarendon Press: Oxford, 1930.
- . "Further Notes on the Greek Jump." *Jour. Hellenic Studies* (1904), XXIV, 179-94.
- . *Greek Athletic Sports and Festivals*. Macmillan: London, 1910.
- . "The Method of Deciding the Pentathlon." *Jour. Hellenic Studies* (1903), XXIII, 54-70.
- . "Notes on the Greek Foot-Race." *Jour. Hellenic Studies* (1903), XXIII, 261-91.
- . "The Pancration and Wrestling." *Jour. Hellenic Studies* (1906), XXVI, 4-22.
- . "Phayllus and His Record Jump." *Jour. Hellenic Studies* (1904), XXIV, 70-80.
- . "A School in Ptolemaic Egypt." *Class. Rev.* (1930), XLIV, 211-3.
- . "Wrestling." *Jour. Hellenic Studies* (1905), XXV, 14-31, 263-93.
- Gardner, E. A. *A Handbook of Greek Sculpture*. Macmillan: London, 1915.
- Gardner, P. "Boat-Races among the Greeks." *Jour. Hellenic Studies* (1881), II, 90-7.
- . "Boat-Races at Athens." *Jour. Hellenic Studies* (1881), II, 315-7.
- . *New Chapters in Greek History*. Putnam's: New York, 1892.
- . "A Stela Commemorating a Victory in a Boat-Race." *Jour. Hellenic Studies* (1890), XI, 146-50.

Gardner, P., and Jevons, F. B. *A Manual of Greek Antiquities*. Griffin: London, 1895.

Gellius, Aulus, *The Attic Nights of*. (Trans. by J. C. Rolfe.) 3 vols. Heinemann: London, 1927-1928. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)

Gerhard, F. W. E. *Auserlesene Griechische Vasenbilder*. 7 vols. Reimer: Berlin, 1840.

Gibbon, E. *The History of the Decline and Fall of the Roman Empire*. (With notes by H. H. Milman.) 5 vols. Porter and Coates: Philadelphia, n.d.

Giles, H. A. *Adversaria Sinica*. Kelly and Walsh: Shanghai, 1914.

———. "Football and Polo in China." *Nineteenth Century* (Mar., 1906), LIX, 508-13.

Giles, L. "The Awakening of China." *Nineteenth Century* (Oct., 1906), LX, 521-32.

Girard, P. *L'Éducation Athénienne*. Hachette: Paris, 1889.

"Gladiatorial Combats a Usual Form of Exercise." *Am. Jour. Archaeol.* (1901), v, 480.

Glötz, G. *The Aegean Civilization*. (Trans. by M. R. Dobie and E. M. Riley.) Knopf: New York, 1925.

———. *Ancient Greece at Work*. (Trans. by M. R. Dobie.) Kegan Paul, Trench, Trübner: London, 1926.

Gomperz, T. *Greek Thinkers: A History of Ancient Philosophy*. (Trans. by L. Magnus and G. G. Berry.) 4 vols. Scribner's: New York, 1901-1912.

Goodspeed, G. S. *A History of the Babylonians and Assyrians*. Scribner's: New York, 1902.

Graetz, H. *History of the Jews*. 7 vols. (Trans. in part by B. Löwy.) Jewish Pub. Society: Philadelphia, 1891-1898.

Grasberger, L. *Erziehung und Unterricht im Klassischen Altertum*. 3 vols. Stahel'schen Buch- und Kunsthandlung: Würzburg, 1864-1881.

Graves, F. P. *A History of Education*. 3 vols. Macmillan: New York, 1909-1913.

Gray, J. H. *China*. 2 vols. Macmillan: London, 1878.

———. "Physical Education in India." *Am. Phys. Educ. Rev.* (Oct., 1919), XXIV, 373-9.

Green, W. M. "Appropriations for the Games at Rome in 51 A.D." *Am. Jour. Philol.* (1930), LI, 249-50.

Greenshields, R. S. *The Ball and the Polo Stick or Book of Ecstasy*. (A trans. of *Gūi u Chaugān or Hāhāma* by Mahmud 'Arifi.) Luzac: London, 1932.

- Gregory of Tours: *The History of the Franks*. 2 vols. (Trans. by O. M. Dalton.) Clarendon Press: Oxford, 1927.
- Griffith, F. L. "The Teaching of Amenophis the Son of Kanakht." *Jour. Egy. Archaeol.* (1926), xii, 191-231.
- Griswold, H. D. *The Religion of the Rig Veda*. Oxford Univ. Press: London, 1923.
- Groos, K. *The Play of Man*. (Trans. by E. Baldwin.) Appleton: New York, 1901.
- Grote, G. *A History of Greece*. 4 vols. Am. Bk. Exchange: New York, 1881.
- Grove, L. *Dancing*. Longmans: London, 1907.
- Güdemann, M. "Education." *Jewish Encyclopedia*, v, 42-8.
- Gulick, C. B. *The Life of the Ancient Greeks*. Appleton: New York, 1902.
- Gutsch, C. *The Greek Games and Their Mythology*. Cambridge, 1900.
- Gwynn, A. *Roman Education from Cicero to Quintilian*. Clarendon Press: Oxford, 1926.
- Haddon, A. C. "A Few American String Figures and Tricks." *Am. Anthropologist* (1903), N.S. v, 213-23.
- Hall, H. R. *Aegean Archaeology*. Warner: London, 1915.
- . *The Oldest Civilization of Greece*. Nutt: London, 1901.
- Hambly, W. D. *Tribal Dancing and Social Development*. Witherby: London, 1926.
- Hambly, W. D., and Hose, C. *Origins of Education among Primitive Peoples*. Macmillan: London, 1926.
- Harper, R. F. *The Code of Hammurabi*. Univ. of Chicago Press: Chicago, 1904.
- Hartwig, P. *Die Griechischen Meisterschalen*. 2 vols. Spemann: Stuttgart, 1893.
- Harvey, F. J. *The Fighting Gladiators*. Phys. Training Pub. Co.: Exeter, Eng., 1903.
- Havell, E. B. *The History of Aryan Rule in India*. Harrap: London, 1918.
- Haynes, H. W. "Odysseus' Feat of Archery." *Am. Jour. Archaeol. and Hist. of Fine Arts* (1890), vi, 487.
- Heitland, W. E. *The Roman Republic*. 3 vols. Univ. Press: Cambridge, 1909.
- Heliodorus: An Aethiopian History*. (Trans. by T. Underdowne.) Nutt: London, 1895.
- Hermann, K. F. *Lehrbuch der Griechischen Privatalterthümer*. (Ed. by H. Blümner.) Mohr: Freiburg, 1882.

- Herodotus, *The History of*. (Trans. by G. Rawlinson.) 4 vols. Appleton: New York, 1893.
- Hesiod: *The Homeric Hymns and Homericæ*. (Trans. by H. G. Evelyn-White.) Heinemann: London, 1914. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Hippocrates. (Trans. by W. H. S. Jones and E. T. Withington.) 4 vols. Heinemann: London, 1923-1931. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Hirth, F. *The Ancient History of China*. Columbia Univ. Press: New York, 1911.
- Hirth, G. *Das Gesamte Turnwesen*. (Ed. by F. R. Gasch.) 4 vols. Lion: Hof, 1893-1895.
- Hitti, P. K. *History of the Arabs*. Macmillan: London, 1937.
- Hobhouse, W. *The Theory and Practice of Ancient Education*. Stechert: New York, 1910.
- Hoffman, W. J. *The Graphic Art of the Eskimos*. Ann. Rep. Smithsonian Institution, Pt. II. Washington, 1897.
- Hogarth, D. G. "The Zakro Sealings." *Jour. Hellenic Studies* (1902), xxii, 76-93.
- Hoh, G. *Physical Education in China*. Commercial Press: Shanghai, 1926.
- Holmes, J. H. *In Primitive New Guinea*. Putnam's: New York, 1924.
- Holmes, T. R. *The Roman Republic and the Founder of the Empire*. 3 vols. Clarendon Press: Oxford, 1923.
- Homer, *The Iliad of*. (Trans. by A. Lang, W. Leaf, and E. Myers.) Macmillan: London, 1923.
- Homer, *The Iliads of*. (Trans. by G. Chapman.) 2 vols. J. R. Smith: London, 1865.
- Homer, *The Odyssey of*. (Trans. by S. H. Butcher and A. Lang.) Macmillan: London, 1900.
- Homer, *The Odysseys of*. (Trans. by G. Chapman.) Reeves and Turner: London, 1897.
- Homo, L. *Primitive Italy and the Beginnings of Roman Imperialism*. (Trans. by V. G. Childe.) Kegan Paul, Trench, Trübner, London; Knopf, New York, 1926.
- . *Roman Political Institutions from City to State*. (Trans. by M. R. Dobie.) Knopf, New York; Kegan Paul, Trench, Trübner, London, 1929.
- Horace. (Trans. by A. F. Murison.) Longmans: London, 1931.
- Horace for English Readers. (Trans. by E. C. Wickham.) Clarendon Press: Oxford, 1903.

- Hose, C. *Natural Man: A Record from Borneo*. Macmillan: London, 1926.
- How, W. W., and Leigh, H. D. *A History of Rome to the Death of Caesar*. Longmans: London, 1917.
- Hrozný, B. *Die älteste Geschichte Vorderasiens und Indiens*. Melantrich: Prag, 1943.
- . *Kretas und Vorgriechenlands Inschriften, Geschichte und Kultur*. Kohlhammer: Stuttgart, Prague, 1943.
- Huart, C. *Ancient Persia and Iranian Civilization*. (Trans. by M. R. Dobie.) Knopf: New York, 1927.
- Hyde, W. W. "Athlete Reliefs from the Themistoclean Wall at Athens." *Art and Archaeol.* (Mar., 1923), xv, 117-24.
- . *Greek Religion and Its Survivals*. Marshall Jones: Boston, 1923.
- . *Olympic Victor Monuments and Greek Athletic Art*. Carnegie Institution: Washington, 1921.
- . "Our Debt to Greek Athletics." In *School Athletics in Modern Education*. Wingate Mem. Foundation: New York, 1931.
- . "The Pentathlon Jump." *Am. Jour. Philol.* (Oct., 1938), LIX, 405-17.
- Iamblichus' Life of Pythagoras*. (Trans. by T. Taylor.) London, 1818.
- Ihne, W. *The History of Rome*. 5 vols. Longmans: London, 1871-1882.
- Im Thurn, E. F. *Among the Indians of Guiana*. Kegan Paul, Trench: London, 1883.
- Isocrates. (Trans. by G. Norlin and L. Van Hook.) 3 vols. Heinemann: London, 1928-1945. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Jackson, A. V. W. (Ed.) *History of India*. 9 vols. Grolier Society: London, 1906-1907.
- . *Persia Past and Present*. Macmillan: New York, 1906.
- Jaeger, O. H. *Die Gymnastik der Hellenen*. Weychardt: Eszlingen, 1850.
- Jaeger, W. *Paidia: The Ideals of Greek Culture*. (Trans. by G. Highet.) 3 vols. Oxford Univ. Press: New York, 1943-1945.
- James, W. *The Principles of Psychology*. 2 vols. Holt: New York, 1890.
- Jardé, A. *The Formation of the Greek People*. Knopf: New York, 1926.
- Jastrow, M. *The Civilization of Babylonia and Assyria*. Lippincott: Philadelphia, 1915.
- Jerome, St., *Select Letters of*. (Trans. by F. A. Wright.) Heinemann: London, 1933. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Johns, C. H. W. *Babylonian and Assyrian Laws, Contracts and Letters*. Scribner's: New York, 1904.

- Johnston, H. W. *The Private Life of the Romans*. (Rev. by M. Johnston.) Scott, Foresman: Chicago, 1932.
- Johnstone, M. A. *Etruria Past and Present*. Methuen: London, 1930.
- Jordanes: *The Origin and Deeds of the Goths*. (Trans. by C. C. Mierow.) Princeton, 1908.
- Joseph, M. *Judaism as Creed and Life*. Macmillan: New York, 1910.
- Josephus. (Trans. by H. St. J. Thackeray and R. Marcus.) 9 vols. Harvard University Press: Cambridge, 1926-.
- Judson, H. P. *Caesar's Army: A Study of the Military Art of the Romans in the Last Days of the Republic*. Ginn: Boston, 1894.
- Julian the Emperor . . . Gregory Nazianzen's Two Invectives . . . Libanius' Monody with Julian's Extant Theosophical Works. (Trans. by C. W. King.) Bell: London, 1888.
- Jullien, E. *Les Professeurs de Littérature dans l'Ancienne Rome*. Ernest Leroux, Éditeur: Paris, 1885.
- Jüthner, J. "Gymnastik." *Real-Encyclopädie*, vii, Pt. II, 2030-85.
- . *Körperkultur im Altertum*. Fischer: Jena, 1928.
- . *Über Antike Turngeräthe*. Hölder: Wien, 1896.
- Juvenal and Persius. (Trans. by G. G. Ramsay.) Heinemann: London, 1928. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Karsten, R. *The Civilization of the South American Indians*. Knopf: New York, 1926.
- Keay, F. E. *Ancient Indian Education*. Oxford Univ. Press: London, 1918.
- Kees, H. *Der Opfertanz des Ägyptischen Königs*. J. C. Hinrichs'sche Buchhandlung: Leipzig, 1912.
- Keil, J., and Premerstein, A. *Bericht über eine Reise in Lydien und der südlichen Aiolis*, 1906. *Denkschriften der Kaiserlichen Akademie der Wissenschaften in Wien*, Band LIII. Wien, 1908.
- Keller, A. G. *Homeric Society*. Longmans: New York, 1902.
- Keller, R. M. "An Oriental Dance on an Attic Vase." *Bul. Fogg Mus. Art* (Nov., 1940), ix, 56-8.
- Kenyon, F. G. "A Rescript of Marcus Antonius." *Class. Rev.* (Dec., 1893), vii, 476-8.
- Kidd, D. *Savage Childhood: A Study of Kafir Children*. Black: London, 1906.
- King, L. W. *A History of Babylon*. Chatto and Windus: London, 1919.
- . *A History of Sumer and Akkad*. Chatto and Windus: London, 1923.

- Klebs, L. *Die Reliefs und Malereien des Neuen Reiches . . . Material zur Ägyptischen Kulturgeschichte. Teil 1: Szenen aus dem Leben des Volkes. Abhandlungen der Heidelberger Akademie der Wissenschaften, Nr. ix.* Carl Winters Universitätsbuchhandlung: Heidelberg, 1934.
- Klostermann, A. *Schulwesen im Alten Israel.* Deichert'sche Verlags Buchhandlung: Leipzig, 1908.
- Kluckhohn, C., and Wyman, L. C. *An Introduction to Navaho Chant Practice.* *Memoirs, Am. Anthropol. Assoc.*, no. 53, 1940.
- Knyghthode and Bataile. *A xvth Century Verse Paraphrase of Flavius Vegetius Renatus' "De Re Militari."* (Ed. by R. Dyboski and Z. M. Arend.) Oxford Univ. Press: London, 1935.
- Kober, A. E. *Bedrich Hrozný's Die älteste Geschichte Vorderasiens und Indiens, and Kretas und Vorgriechenlands Inschriften, Geschichte und Kultur.* *Am. Jour. Archaeol.* (Oct.-Dec., 1946), L, 493-5.
- Korrigan, P. *Causerie sur la Pêche Fluviale en Chine.* La Mission Catholique: Chang-Hai, 1909.
- Kraemer, C. J. "A Greek Element in Egyptian Dancing." *Am. Jour. Archaeol.* (1931), xxxv, 125-38.
- Krause, J. H. *Die Gymnastik und Agonistik der Hellenen.* 2 vols. Barth: Leipzig, 1841.
- . *Die Pythien, Nemeen und Isthmien.* Barth: Leipzig, 1841.
- . *Geschichte der Erziehung, des Unterrichts und der Bildung bei den Griechen, Etruskern und Römern.* Pfeffer: Halle, 1851.
- . *Olympia oder Darstellung der Grossen Olympischen Spiele.* Beck: Wien, 1838.
- . *Theagenes oder Wissenschaftliche Darstellung der Gymnastik, Agonistik und Festspiele der Hellenen.* Anton: Halle, 1835.
- Krishnayya, P. G. "The Yoga Asanas—An Important Phase of Physical Education Practiced in the Indigenous Schools and Seats of Learning in India from Time Immemorial." *Jour. Health and Phys. Edu.* (Feb., 1933), iv, 13-5, 55-6.
- Kuo, P. W. *The Chinese System of Public Education.* Teachers College: New York, 1915.
- Kyle, J. W. "The Maidens' Race on Attic Vases." *Am. Jour. Archaeol.* (1902), vi, 53.
- Laistner, M. L. W. *A Survey of Ancient History to the Death of Constantine.* Heath: Boston, 1929.
- Lamb, H. *Genghis Khan.* Garden City Pub. Co.: Garden City, 1927.
- Lane, E. W. *An Account of the Manners and Customs of the Modern Egyptians.* 2 vols. Murray: London, 1871.

- Lane, F. H. *Elementary Greek Education*. Bardeen: Syracuse, 1895.
- Lauffer, B. "The Early History of Polo." *Polo* (Apr., 1932), VII, 13-4, 43-4.
- Laurie, S. S. *Historical Survey of Pre-Christian Education*. Longmans: London, 1895.
- Law, B. C. *Ksatriya Clans in Buddhist India*. Thacker: Calcutta, 1922.
- Lawton, W. C. *Introduction to Classical Greek Literature*. Scribner's: New York, 1903.
- . *Introduction to Classical Latin Literature*. Scribner's: New York, 1904.
- . *The Soul of the Anthology*. Yale Univ. Press: New Haven, 1923.
- . *The Successors of Homer*. Macmillan: New York, 1898.
- . *Three Dramas of Euripides*. Houghton Mifflin: Boston, 1889.
- . "Womanhood in the Iliad." *Atl. Mo.* (June, 1893), LXXI, 784-801.
- Layard, A. H. *The Monuments of Nineveh*. 2 vols. Murray: London, 1853.
- . *Nineveh and Its Remains*. 2 vols. Murray: London, 1854.
- Lee, J. *Play in Education*. Macmillan: New York, 1922.
- Legge, J. *The Chinese Classics*. 8 vols. Trübner: London, 1861-1872.
- Legrain, L. "L'Art Sumérien au Temps de la Reine Shoubad." *Gazette des Beaux-Arts* (July, 1931), ser. 6, VI, 1-26.
- Leonard, F. E. *A Guide to the History of Physical Education*. (Ed. by R. T. McKenzie.) Lea, Febiger: Philadelphia, 1923.
- Letourneau, C. *L'Évolution de l'Éducation dans les Diverses Races Humaines*. Vigot: Paris, 1898.
- Levy-Brühl, L. *Das Denken der Naturvölker*. (Trans. by W. Jerusalem.) Braumüller: Wien, 1921.
- Lewis, I. B. *The Education of Girls in China*. Teachers College: New York, 1919.
- Lexová, I. *Ancient Egyptian Dances*. (Trans. by K. Haltmar.) Oriental Institute: Praha, 1935.
- Liu, S. "The Physical Education Movement in China." *Jour. Health and Phys. Educ.* (Apr., 1932), III, 17-21, 61-2.
- Livius, Titus, *The History of Rome*. (Trans. by D. Spillan and C. Edmonds.) 2 vols. Harper: New York, 1871.
- Livy. (Trans. by B. O. Foster et al.) 13 vols. Harvard University Press: Cambridge, 1919-.
- Loebker, G. *Die Gymnastik der Hellenen*. Deiters: Münster, 1835.
- Loftus, W. K. *Travels and Researches in Chaldæa and Susiana*. Robert Carter: New York, 1857.

- Longman, C. J., and Walrond, H. *Archery*. Longmans: London, 1894.
- Lot, F. *The End of the Ancient World and the Beginnings of the Middle Ages*. (Trans. by P. Leon and M. Leon.) Kegan Paul, Trench, Trübner: London, 1931.
- Lowell, A. "Songs of the Pueblo Indians." *Dial* (Sept., 1920), LXIX, 247-51.
- Lucan: *The Civil War*. (Trans. by J. D. Duff.) Heinemann: London, 1928. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Lucian of Samosata, *The Works of*. (Trans. by H. W. Fowler and F. G. Fowler.) 4 vols. Clarendon Press: Oxford, 1905.
- Lucreti Cari, T., *de Rerum Natura*. (Trans. by H. A. J. Munro.) 3 vols. Deighton Bell: Cambridge, 1886.
- Lucretius Carus, Titus, *on the Nature of Things*. (Trans. by T. Jackson.) Blakewell: Oxford, 1929.
- Lucretius: *De Rerum Natura*. (Trans. by W. H. D. Rouse.) Heinemann: London, 1924. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Lucretius *on the Nature of Things*. (Trans. by C. Bailey.) Clarendon Press: Oxford, 1910.
- Luehring, F. W. *Swimming Pool Standards*. Barnes: New York, 1939.
- Lyra Graeca. (Trans. by J. M. Edmonds.) 3 vols. Heinemann: London, 1922-1927. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Maccabees. In *The Holy Bible . . . and . . . Apocrypha*, by H. Wace. 2 vols. Murray: London, 1888.
- McCrindle, J. W. *Ancient India as Described by Megasthenes and Arrian*. Trübner: London, 1877.
- McDaniel, W. B. *Roman Private Life and Its Survivals*. Longmans: New York, 1927.
- Macdonell, A. A. *A History of Sanskrit Literature*. Heinemann: London, 1917.
- McDougall, W. *Outline of Psychology*. Scribner's: New York, 1929.
- Mace, A. C. "Hathor Dances." *Jour. Egy. Archaeol.* (1920), VI, 297.
- Mackay, D. "Mohenjo-Daro and the Ancient Civilization of the Indus Valley." *Ann. Rep. Bd. Regs. Smithsonian Institution*, 1932. Pt. 1, 429-44. Govt. Printing Off.: Washington, 1933.
- Mackay, E. *The Indus Civilization*. Lovat Dickson and Thompson: London, 1935.
- Mackay, E. J. H. *Further Excavations at Mohenjo-Daro*. 2 vols. Manager of Publications: Delhi, 1937-1938.
- Macrobius. (Ed. by F. Eyssenhardt.) Lipsiae, 1893.
- Maddox, J. L. *The Medicine Man*. Macmillan: New York, 1923.

- Mahaffy, J. P. *Greek Life and Thought*. Macmillan: New York, 1896.
- . *Old Greek Education*. Harper: New York, 1881.
- . *Social Life in Greece*. Macmillan: London, 1913.
- Maiuri, A. *Pompei*. La Libreria Dello Stato: Roma, 1931.
- Malinowski, B. *A Scientific Theory of Culture and Other Essays*. Univ. of N. C. Press: Chapel Hill, 1944.
- Manning, C. A. "Professionalism in Greek Athletics." *Class. Wkly.* (Dec. 17, 1917), XI, 74-8.
- Margolis, M. L., and Marx, A. *A History of the Jewish People*. Jewish Pub. Society of Am.: Philadelphia, 1927.
- Marquardt, J. *Das Privatleben der Römer*. Hirzel: Leipzig, 1886.
- . *Römische Staatsverwaltung*. 3 vols. Hirzel: Leipzig, 1881-1885.
- Marshall, J. *Mohenjo-Daro and the Indus Civilization*. 3 vols. Probsthain: London, 1931.
- Martial: Epigrams*. (Trans. by W. C. A. Ker.) 2 vols. Heinemann: London, 1919-1920. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Martial: The Twelve Books of Epigrams*. (Trans. by J. A. Pott and F. A. Wright.) Routledge, London; Dutton, New York, 1925.
- Martin, W. A. P. *The Awakening of China*. Doubleday: New York, 1910.
- . *The Chinese*. Harper: New York, 1881.
- . *The Lore of Cathay*. Revell: New York, 1912.
- Maspero, G. *The Dawn of Civilization: Egypt and Chaldaea*. (Trans. by M. L. McClure.) S.P.C.K.: London, 1901.
- Matthews, W. "The Mountain Chant." *5th Ann. Rep. Bur. Am. Ethnol.* (1883-1884), pp. 379-467. Govt. Printing Off.: Washington, 1887.
- . *The Night Chant*. *Memoirs, Am. Mus. Nat. Hist.*, vol. VI. New York, 1902.
- Mau, A. "Bäder." *Real-Encyclopädie*, II, Pt. II, 2743-58.
- . "Ballspiel." *Real-Encyclopädie*, II, Pt. II, 2832-4.
- . *Pompeji in Leben und Kunst*. Engelmann: Leipzig, 1908.
- Maximus Tyrius, *The Dissertations of*. (Trans. by T. Taylor.) 2 vols. Evans: London, 1804.
- Mazois, F. *Les Ruines de Pompeii*. 4 vols. Didot: Paris, 1824-1831.
- Means, P. A. *Ancient Civilizations of the Andes*. Scribner's: New York, 1931.
- Mehl, E. *Antike Schwimmkunst*. Heimeran: München, 1927.
- . "Über Antike Schwimmkunst und Wasserspringstile." *Die Leibesübungen* (Aug. 20, 1925), I, 377-82.

- Meissner, B. *Babylonien und Assyrien*. 2 vols. Carl Winters Universitätsbuchhandlung: Heidelberg, 1920-1925.
- Menander. (Trans. by F. G. Allinson.) Heinemann: London, 1921. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Milne, J. G. "Egyptian Nationalism under Greek and Roman Rule." *Jour. Egy. Archaeol.* (1928), xiv, 226-34.
- Minucius Felix. (Trans. by G. H. Rendall.) (With T. R. Glover's *Tertullian*.) Heinemann: London, 1931. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Modi, J. J. *Education among the Ancient Iranians*. Times Press: Bombay, 1905.
- Mohler, S. L. *The Cestus*. Univ. of Pa. Ph.D. Thesis. Philadelphia, 1926.
- Mommsen, A. *Feste der Stadt Athen im Altertum*. Teubner: Leipzig, 1898.
- Mommsen, T. *The History of Rome*. (Trans. by W. P. Dickson.) 5 vols. Scribner's: New York, 1903.
- Monroe, P. *Stereopticon Views in the History of Education*. New York, 1915.
- Montell, G. "T'ou Hu—The Ancient Chinese Pitch-pot Game." *Ethnos* (1940), v, 70-83.
- Montgomery, J. A. (Ed.) *Religions of the Past and Present*. Lippincott: Philadelphia, 1918.
- Mordell, P. *The Origin of Letters and Numerals According to the Sefer Yetzirah*. Mordell: Philadelphia, 1914.
- Morgan, L. H. *Ancient Society*. Holt: New York, 1907.
- Morley, S. G. "Chichen Itzá, an Ancient American Meecca." *Nat. Geog. Mag.* (1925), XLVII, 63-95.
- Mosso, A. *The Dawn of Mediterranean Civilization*. (Trans. by M. C. Harrison.) Unwin: London, 1910.
- . *The Palaces of Crete and Their Builders*. Unwin: London, 1907.
- Mourlot, F. *Essai sur l'Histoire de l'Augustalité dans l'Empire Romain*. Librairie, Émile Bouillon, Éditeur: Paris, 1895.
- Müller, C. O. *The History and Antiquities of the Doric Race*. 2 vols. (Trans. by H. Tufnell and G. C. Lewis.) Murray: London, 1839.
- Müller, F. M. (Ed.) *The Sacred Books of the East*. 50 vols. Clarendon Press: Oxford, 1879-1910.
- Müller, K. O. *Die Etrusker*. (Rev. by W. Deecke.) Heitz: Stuttgart, 1877.
- Myers, A. C. *The Boy George Washington . . . His Own Account of an Iroquois Indian Dance, 1748*. Author: Philadelphia, 1932.

- Myers, A. C. *William Penn: His Own Account of the Lenni Lenape or Delaware Indians*, 1683. Author: Moylan, Pa., 1937.
- Nepos, Cornelius. (Trans. by J. C. Rolfe.) (With E. S. Forster's *Florus: Epitome of Roman History*.) Heinemann: London, 1929. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Newberry, P. E. *Beni-Hasan*, Pts. I and II. *Archaeol. Survey of Egypt*, ed. by F. L. Griffith. Egypt Exploration Fund: London, 1893.
- Niebuhr, B. G. *Römische Geschichte*. Reimer: Berlin, 1853.
- Nilsson, M. P. *Griechische Feste von Religiöser Bedeutung mit Ausschluss der Attischen*. Teubner: Leipzig, 1906.
- Nizami of Ganja. *The Haft Paiker*. (Trans. by C. E. Wilson.) 2 vols. Probsthain: London, 1924.
- Nowack, W. *Lehrbuch der Hebräischen Archäologie*. 2 vols. Mohr: Freiburg, 1894.
- Oldfather, C. H. *The Greek Literary Texts from Greco-Roman Egypt*. Univ. of Wis. Studies, Soc. Sc. and Hist., no. 9. Madison, 1923.
- Olinstead, A. T. *History of Assyria*. Scribner's: New York, 1923.
- Oman, C. W. C. *The Art of War in the Middle Ages*. Blackwell: Oxford, 1885.
- . *A History of Greece*. Longmans: New York, 1910.
- Opler, M. E. *An Apache Way of Life*. Univ. of Chicago Press: Chicago, 1941.
- Oppian. (Trans. by A. W. Mair.) Heinemann: London, 1928. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Ouseley, W. *Travels in Various Countries of the East; More Particularly Persia*. 3 vols. Rodwell and Martin: London, 1819-1823.
- Overbeek, J. *Pompeji in Seinen Gebäuden, Alterthümern, und Kunstwerken*. Rev. by A. Mau. Engelmann: Leipzig, 1884.
- Ovid: *The Art of Love, and Other Poems*. (Trans. by J. H. Mozley.) Heinemann: London, 1929. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Ovid: *Heroides and Amores*. (Trans. by G. Showerman.) Heinemann: London, 1921. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Ovid: *Metamorphoses*. (Trans. by F. J. Miller.) 2 vols. Heinemann: London, 1916. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Ovid: *Tristia* [and] *Ex Ponto*. (Trans. by A. L. Wheeler.) Heinemann: London, 1924. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Ovid's *Fasti*. (Trans. by J. G. Frazer.) Heinemann: London, 1931. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)

- Ovid's *Metamorphoses*. (Trans. by Dryden et al.) 2 vols. Tonson and Draper: London, 1751.
- Parker, H. M. D. *The Roman Legions*. Clarendon Press: Oxford, 1928.
- Pater, W. *Greek Studies*. Macmillan: New York, 1901.
- Paterculus, Velleius, Compendium of Roman History* [and] *Res Gestae Divi Augusti*. (Trans. by F. W. Shipley.) Heinemann: London, 1924. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Paul-Louis. *Ancient Rome at Work*. (Trans. by E. B. F. Warcing.) Knopf: New York, 1927.
- Paulinus Pellacus: *The Eucharisticus* [and] *Ausonius*. (Trans. by H. G. Evelyn White.) Heinemann: London, 1921. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Paulys Real-Encyclopädie der Classischen Altertumswissenschaft*. (Ed. by G. Wissowa, W. Kroll, et al.) Ser. 1 and 2, 51 half vols.; supp., 7 vols. Metzlerscher Verlag: Stuttgart, 1894-1940.
- Pausanias's *Description of Greece*. (Trans. by J. G. Frazer.) 6 vols. Macmillan: London, 1898.
- Pavlov, I. P. *Conditioned Reflexes*. (Trans. and ed. by G. V. Anrep.) Oxford Univ. Press: London, 1927.
- . *Lectures on Conditioned Reflexes*. (Trans. by W. H. Gantt.) International Publishers: New York, 1928.
- Peet, T. E. *The Stone and Bronze Ages in Italy and Sicily*. Clarendon Press: Oxford, 1909.
- . "The Year's Work at Abydos." *Jour. Egy. Archaeol.* (1914), 1, 37-9.
- Peet, T. E., and Woolley, C. L. *The City of Akhenaten*. Egypt Exploration Society: London, 1923.
- Pelham, H. F. *Outlines of Roman History*. Putnam's: New York, 1900.
- Peritz, I. J. *Old Testament History*. Abingdon Press: New York, 1915.
- Perrot, G., and Chipiez, C. *Histoire de l'Art dans l'Antiquité*. 10 vols. Hachette: Paris, 1882-1914.
- Perry, W. C. *Greek and Roman Sculpture*. Longmans: London, 1882.
- Petersen, C. *Das Gymnasium der Griechen nach Seiner Baulichen Einrichtung*. Perthes-Besser, Mauke: Hamburg, 1858.
- Petrie, W. M., and Quibell, J. E. *Naqada and Ballas*. Quaritch: London, 1896.
- Petrie, W. M. F. *Egypt and Israel*. S.P.C.K.: London, 1912.
- Petrie, W. M. F., et al. *A History of Egypt*. 6 vols. Scribner's: New York, 1899-1901.

- Petronius. (Trans. by M. Heseltine.) (With Seneca's *Apocolocyntosis*.) Heinemann: London, 1925. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Philadelphus, A. "Three Statue-Bases Recently Discovered at Athens." *Jour. Hellenic Studies* (1922), XLII, 104-6.
- Philostratos: *Concerning Gymnastics*. (Trans. by T. Woody.) Reprinted from *The Research Quarterly* (May, 1936), VII, no. 2.
- Philostratos: *Über Gymnastik*. (Trans. by J. Jüthner.) Teubner: Leipzig, 1909.
- Philostratus: *Imagines* [and] *Callistratus: Descriptions*. (Trans. by A. Fairbanks.) Heinemann: London, 1931. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Philostratus: *The Life of Apollonius of Tyana*. (Trans. by F. C. Conybeare.) 2 vols. Heinemann: London, 1912. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Philostratus: *The Lives of the Sophists* [and] *Eunapius*. (Trans. by W. C. Wright.) Heinemann: London, 1922. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Pisan, Christine de. *The Book of Fayttes of Armes and of Chyualrye*. (Trans. by W. Caxton.) Oxford Univ. Press: London, 1932.
- Platner, S. B. *A Typographical Dictionary of Ancient Rome*. (Rev. by T. Ashby.) Oxford Univ. Press: London, 1929.
- Plato, *The Dialogues of*. (Trans. by B. Jowett.) 5 vols. Oxford Univ. Press: New York, 1892.
- Plato, *The Works of*. (Trans. by H. Cary, H. Davis, and G. Burges.) 6 vols. Bohn: London, 1849-1854.
- Plautus. (Trans. by P. Nixon.) 5 vols. Harvard University Press: Cambridge, 1916.
- Pliny: *Letters*. (Trans. by W. Melmoth; rev. by W. M. L. Hutchinson.) 2 vols. Heinemann: London, 1915. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Pliny: *Natural History*. (Trans. by H. Rackham.) 10 vols. Harvard University Press: Cambridge, 1938-.
- Pliny, *The Natural History of*. (Trans. by J. Bostock and H. T. Riley.) 6 vols. Bohn: London, 1855-1857.
- Plummer, E. M. "Athletic Games among the Homeric Heroes." *Am. Phys. Educ. Rev.* (Dec., 1897), II, 197-208.
- . "The Olympic Games in Ancient Times." *Am. Phys. Educ. Rev.* (Mar., June, 1898), III, 1-18, 93-106.
- . "Toys and Games for Children among the Ancient Hellenes." *Am. Phys. Educ. Rev.* (Sept., 1898), III, 157-69.

- Plutarch, The Roman Questions of.* (Trans. by H. J. Rose.) Clarendon Press: Oxford, 1924.
- Plutarch's Lives.* (Trans. by B. Perrin.) 11 vols. Heinemann: London, 1914-1926. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Plutarch's Lives and Writings.* (Ed. by A. H. Clough and W. W. Goodwin.) 10 vols. Little, Brown: Boston, 1909.
- Plutarch's Moralia.* (Trans. by F. C. Babbitt et al.) 14 vols. Harvard University Press: Cambridge, 1927-.
- Pollucis, Iulii, Onomasticon cum Annotationibus Interpretum.* 5 vols. Curavit Guilielmus Dindorfius: Lipsiae, 1824.
- Polybius: The Histories.* (Trans. by W. R. Paton.) 6 vols. Heinemann: London, 1922-1927. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Poulsen, F. Etruscan Tomb Paintings.* (Trans. by I. Andersen.) Clarendon Press: Oxford, 1922.
- Pratt, J. B. India and Its Faiths.* Houghton Mifflin: Boston, 1915.
- Preston, H. W., and Dodge, L. The Private Life of the Romans.* Sanborn: Chicago, 1923.
- Procopius.* (Trans. by H. B. Dewing.) 7 vols. Harvard University Press: Cambridge, 1914-1940.
- Pumpelly, R. Explorations in Turkestan, Expedition of 1904.* 2 vols. Carnegie Institution: Washington, 1908.
- Quintilian, The Institutio Oratoria of.* (Trans. by H. E. Butler.) 4 vols. Harvard University Press: Cambridge, 1921-1936.
- Radeliffe, W. Fishing from the Earliest Times.* Dutton: New York, 1921.
- Ragozin, Z. A. The Story of Media, Babylon, and Persia.* Putnam's: New York, 1898.
- Ramsay, W., and Lanciani, R. A. A Manual of Roman Antiquities.* Griffin: London, n.d.
- Randall-MacIver, D. The Etruscans.* Clarendon Press: Oxford, 1927.
- . *The Iron Age in Italy.* Clarendon Press: Oxford, 1927.
- . *Villanovans and Early Etruscans.* Clarendon Press: Oxford, 1924.
- Raum, O. F. Chaga Childhood.* Oxford Univ. Press: London, 1940.
- Rawlinson, G. The Five Great Monarchies of the Ancient Eastern World.* 3 vols. Dodd, Mead: New York, 1881.
- . *The Story of Ancient Egypt.* Putnam's: New York, 1888.
- Rawlinson, H. G. Intercourse between India and the Western World.* Univ. Press: Cambridge, 1926.

- Reed, V. Z. "The Ute Bear Dance." *Am. Anthropologist* (1896), O.S. ix, 237-44.
- Reid, A. *The Principles of Heredity*. Chapman and Hall: London, 1906.
- Reinach, S. *Orpheus*. (Trans. by F. Simmonds.) Liveright: New York, 1930.
- Renan, E. *History of the People of Israel*. 5 vols. Roberts: Boston, 1894-1895.
- Res Gestae Divi Augusti* [and the] *Roman History of Velleius Paterculus*. (Trans. by F. W. Shipley.) Heinemann: London, 1924. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Richardson, B. E. *Old Age among the Ancient Greeks*. Johns Hopkins Press: Baltimore, 1933.
- Richardson, R. B. "The Gymnasium at Eretria." *Am. Jour. Archaeol. and Hist. of Fine Arts* (1896), xi, 152-65.
- Richardson, R. B., and Hecrmance, T. W. "Inscriptions from the Gymnasium at Eretria." *Am. Jour. Archaeol. and Hist. of Fine Arts* (1896), xi, 173-95.
- Richter, W. *Die Spiele der Griechen und Römer*. Seemann: Leipzig, 1887.
- Ridington, W. R. *The Minoan-Mycenaean Background of Greek Athletics*. Author: Philadelphia, 1935.
- Riesman, D. *The Story of Medicine in the Middle Ages*. Hoeber: New York, 1935.
- Rig-Veda*. (Trans. by H. Grassmann.) 2 vols. Brockhaus: Leipzig, 1876-1877.
- Riley, E. B. *Among Papuan Head-Hunters*. Lippincott: Philadelphia, 1925.
- Ringwood, I. C. *Agonistic Features of Local Greek Festivals Chiefly from Inscriptional Evidence*. Columbia Univ. Ph.D. Thesis. Poughkeepsie, 1927.
- Rivers, W. H. R. *The History of Melanesian Society*. 2 vols. Univ. Press: Cambridge, 1914.
- Robinson, C. E. *A History of Greece*. Crowell: New York, 1929.
- Rogers, R. W. *A History of Babylonia and Assyria*. 2 vols. Abingdon Press: New York, 1915.
- Rostovtzeff, M. "Fruementum." *Real-Encyclopädie*, vii, Pt. 1, 126-87.
- . *A History of the Ancient World*. 2 vols. (Trans. by J. D. Duff.) Clarendon Press: Oxford, 1926-1927.
- . *The Social and Economic History of the Hellenistic World*. 3 vols. Clarendon Press: Oxford, 1941.
- . *The Social and Economic History of the Roman Empire*. Clarendon Press: Oxford, 1926.
- Sachs, C. *World History of the Dance*. (Trans. by B. Schönberg.) Norton: New York, 1937.

- St. John, J. A. *The History of the Manners and Customs of Ancient Greece*. 3 vols. Bentley: London, 1842.
- Sallust. (Trans. by J. C. Rolfe.) Heinemann: London, 1920. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Sandys, J. E. *A Companion to Latin Studies*. Univ. Press: Cambridge, 1925.
- Sawhill, J. A. *The Use of Athletic Metaphors in the Biblical Homilies of St. John Chrysostom*. Princeton Univ. Press: Princeton, 1928.
- Sayce, A. H. *The Ancient Empires of the East*. Scribner's: New York, 1884.
- . *Babylonians and Assyrians*. Scribner's: New York, 1900.
- . "The Early Geography of South-Eastern Asia Minor." *Jour. Hellenic Studies* (1923), XLIII, 44-9.
- . *The Early History of the Hebrews*. Macmillan: New York, 1897.
- Schäfer, H., and Andrae, W. *Die Kunst des Alten Orients*. Propyläen-Verlag: Berlin, 1925.
- Schanz, M. *Geschichte der Römischen Literatur*. (4th ed. by C. Hosius.) C. H. Beck'sche Verlagsbuchhandlung: München, 1927-1935.
- Schleyer, W. *Bäder und Badeanstalten*. Carl Scholtze: Leipzig, 1909.
- Schliemann, H. *Mycenae; a Narrative of Researches and Discoveries at Mycenae and Tiryns*. Scribner's: New York, 1880.
- Schmidt, R. *Fakire und Fakirtum im Alten und Modernen Indien*. Hermann Barsdorf: Berlin, 1908.
- Schoolcraft, H. R. *Archives of Aboriginal Knowledge*. 6 vols. Lippincott: Philadelphia, 1868.
- Schreiber, T. *Atlas of Classical Antiquities*. (Ed. by W. C. F. Anderson.) Macmillan: London, 1895.
- Schröder, B. *Der Sport im Altertum*. Hans Schoetz: Berlin, 1927.
- Schuchhardt, C. *Schliemann's Excavations*. (Trans. by E. Sellers.) Macmillan: London, 1891.
- Scott, E. *Dancing in All Ages*. Swan Sonnenschein: London, 1899.
- Scriptores Historiae Augustae, The*. (Trans. by D. Magie.) 3 vols. Heinemann: London, 1922-1932. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Sears, J. M. J. "A Greek Bath." *Am. Jour. Archaeol.* (1904), VIII, 216-26.
- Senart, É. *Caste in India*. (Trans. by E. D. Ross.) Methuen: London, 1930.
- Seneca ad Lucilium *Epistulae Morales*. (Trans. by R. M. Gummere.) 3 vols. Heinemann: London, 1917-1925. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)

- Seneca: *Apocolocyntosis*. (Trans. by W. H. D. Rouse.) (With M. Heseltine's *Petronius*.) Heinemann: London, 1925. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Seneca: *Moral Essays*. (Trans. by J. W. Basore.) 3 vols. Harvard University Press: Cambridge, 1928-1935.
- Senecae, M. *Annaci, Rhetoris Suasoriae, Controversiae, Declamationumque Excerpta*. (Ed. by A. Schott.) Amsterdam, 1628.
- Seymour, T. D. *Life in the Homeric Age*. Macmillan: New York, 1907.
- Showerman, G. *Rome and the Romans*. Macmillan: New York, 1931.
- Shryock, J. K. *The Origin and Development of the State Cult of Confucius*. Century: New York, 1932.
- Sidonius, *The Letters of*. (Trans. by O. M. Dalton.) 2 vols. Clarendon Press: Oxford, 1915.
- Simon, J. *L'Éducation et l'Instruction d'après la Bible et le Talmud*. Leipzig, 1879.
- Simpson, D. C. "The Hebrew Book of Proverbs and the Teaching of Amenophis." *Jour. Egy. Archaeol.* (1926), xii, 232-9.
- Sinclair, T. A. *A History of Classical Greek Literature*. Macmillan: New York, 1935.
- Sloley, R. W. "Primitive Methods of Measuring Time." *Jour. Egy. Archaeol.* (1931), xvii, 166-78.
- Smith, A. H. *Chinese Characteristics*. Revell: New York, 1894.
- . *Village Life in China*. Revell: New York, 1899.
- Smith, H. P. *Old Testament History*. Scribner's: New York, 1903.
- Smith, S. *Early History of Assyria*. 2 vols. Chatto and Windus: London, 1928-.
- Smith, V. A. *The Early History of India*. Clarendon Press: Oxford, 1914.
- Speiser, E. A. *Mesopotamian Origins*. Univ. of Pa. Press: Philadelphia, 1930.
- Spencer, F. C. *Education of the Pueblo Child*. Macmillan: New York, 1899.
- Spencer, W. B., and Gillen, F. J. *The Arunta: A Study of a Stone Age People*. 2 vols. Macmillan: London, 1927.
- . *The Native Tribes of Central Australia*. Macmillan: London, 1899.
- . *Northern Tribes of Central Australia*. Macmillan: London, 1904.
- Spiegelberg, W. "Note on the Feminine Character of the New Empire." *Jour. Egy. Archaeol.* (1929), xv, 199.
- Spiers, B. *The School System of the Talmud*. Stock: London, 1898.
- Springer, A. *Die Kunst des Altertums*. (12th ed.) 6 vols. Alfred Kröner Verlag: Leipzig, 1923-1929.

- Statius, *The Silvae* of. (Trans. by D. A. Slater.) Clarendon Press: Oxford, 1908.
- Staunton, G. *An Authentic Account of an Embassy from the King of Great Britain to the Emperor of China*. 2 vols. Nicol: London, 1798.
- Stevenson, M. C. "Zuñi Games." *Am. Anthropologist* (1903), N.S. v, 468-97.
- . *The Zuñi Indians*. 23d Ann. Rep. Bur. Am. Ethnol., 1901-1902. Govt. Printing Off.: Washington, 1904.
- Stobart, J. C. *The Glory That Was Greece*. Lippincott: Philadelphia, 1911.
- Strabo, *The Geography* of. (Trans. by H. C. Hamilton and W. Falconer.) 3 vols. Bell: London, 1903-1906.
- Strabo, *The Geography* of. (Trans. by H. L. Jones.) 8 vols. Heinemann: London, 1917-1932. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Suetonius. (Trans. by J. C. Rolfe.) 2 vols. Heinemann: London, 1914. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Swift, F. H. *Education in Ancient Israel*. Open Court: Chicago, 1919.
- Swindler, M. H. *Ancient Painting from the Earliest Times to the Period of Christian Art*. Yale Univ. Press: New Haven, 1929.
- Sykes, P. M. *Ten Thousand Miles in Persia or Eight Years in Iran*. Murray: London, 1902.
- Symmachii, Q. *Avrelii, Quae Supersunt*. (Ed. by O. Seeck.) Berolini, 1883.
- Symonds, J. A. *Studies of the Greek Poets*. 2 vols. Harper: New York, n.d.
- Tacitus, *Annals* of. (Trans. by A. J. Church and W. J. Brodribb.) Macmillan: London, 1921.
- Tacitus; *Dialogus*. (Trans. by W. Peterson.) *Agricola* [and] *Germania*. (Trans. by M. Hutton.) Heinemann: London, 1925. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Tacitus, *The Histories* of. (Trans. by G. G. Ramsay.) Murray: London, 1915.
- Tarbell, F. B. "The Palm of Victory." *Class. Philol.* (1908), III, 264-72.
- Tarn, W. W. *Hellenistic Military and Naval Developments*. Univ. Press: Cambridge, 1930.
- Taylor, J. W. "The Athenian Ephebic Oath." *Class. Jour.* (Apr., 1918), XIII, 495-501.
- Taylor, L. R. "New Light on the History of the Secular Games." *Am. Jour. Philol.* (1934), LV, 101-20.
- Terence. (Trans. by J. Sargeant.) 2 vols. Heinemann: London, 1912. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)

- Tertullian: Apology* [and] *De Spectaculis*. (Trans. by T. R. Glover.) (With G. H. Rendall's *Minucius Felix*.) Heinemann: London, 1931. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Theocritus, The Idylls of*. (Trans. by J. H. Hallard.) Rivingtons: London, 1913.
- Theodosianus, Codex*. (New ed. by J. D. Ritter.) 6 vols. Weidmann: Lipsiac, 1736-1743.
- Thomas, R. *Swimming*. Sampson Low: London, 1904.
- Thomas, W. I. *Sex and Society*. Univ. of Chicago Press: Chicago, 1907.
- Thomason, A. D. F. "Physical Education in India." *Mind and Body* (Mar., 1929), xxxv, 407-16.
- Thorndike, E. L. *Educational Psychology*. 3 vols. Teachers College: New York, 1913.
- Thorndike, L. *The History of Medieval Europe*. Houghton Mifflin: Boston, 1928.
- Thucydides. (Trans. by B. Jowett.) 2 vols. Clarendon Press: Oxford, 1900.
- Tixier's Travels on the Osage Prairies*. (Ed. by J. F. McDermott; trans. by A. J. Salvan.) Univ. of Okla. Press: Norman, 1940.
- Tod, M. N. "Teams of Ball-Players at Sparta." *Ann. Brit. Sch. Athens* (1903-1904), x, 63-77.
- Todd, A. J. *The Primitive Family as an Educational Agency*. Putnam's: New York, 1913.
- Trachtenberg, J. *Jewish Magic and Superstition: A Study in Folk Religion*. Behrman's Jewish Bk. House: New York, 1939.
- Tsountas, C., and Manatt, J. I. *The Mycenaean Age*. Houghton Mifflin: Boston, 1897.
- Tucker, T. G. *Life in Ancient Athens*. Macmillan: New York, 1929.
- . *Life in the Roman World of Nero and St. Paul*. Macmillan: New York, 1936.
- Twitmyer, E. B. *A Study of the Kneejerk*. Univ. of Pa.: Philadelphia, 1902.
- Tylor, E. B. *Anthropology*. Appleton: New York, 1899.
- . *On American Lot-Games, as Evidence of Asiatic Intercourse before the Time of Columbus*. Repr., *Internationales Archiv für Ethnographic*, supp. to vol. ix, 1896. Leiden, 1896.
- . *Primitive Culture*. 2 vols. Murray: London, 1913.
- Ueberweg, F. *History of Philosophy*. 2 vols. (Trans. by G. S. Morris.) Scribner's: New York, 1893.
- Ussing, J. L. *Darstellung des Erziehungs-und Unterrichtswesens bei den Griechen und Römern*. (Trans. by P. Friedrichsen.) Mentzel: Altona, 1870.

- Valerius Maximus. (Ed. by C. B. Hase.) 2 vols. Lemaire: Paris, 1822-1823.
- Van Aalst, J. A. *Chinese Music*. Statistical Dept., Inspectorate General of Customs: Shanghai, 1884.
- Van Hook, L. *Greek Life and Thought*. Columbia Univ. Press: New York, 1923.
- Varro, Marcus Terentius: *On Agriculture* [and] *Cato: On Agriculture*. (Trans. by W. D. Hooper; rev. by H. B. Ash.) Harvard University Press: Cambridge, 1934.
- Varro: *On the Latin Language*. (Trans. by R. G. Kent.) 2 vols. Harvard University Press: Cambridge, 1938.
- Vegeti, Flavi Renati, *Epitoma Rei Militaris*. (Ed. by C. Lang.) Lipsiae, 1885.
- Venkateswara, S. V. *Indian Culture through the Ages. Vol. I: Education and the Propagation of Culture*. Longmans: London, 1928.
- Venturi, L. *History of Art Criticism*. (Trans. by C. Marriott.) Dutton: New York, 1936.
- Viollet-le-Duc, E. M. *Entretiens sur l'Architecture*. A. Morel et Cie: Paris, 1863-1872.
- Virgil, *The Aeneid* of. (Trans. by H. H. Ballard.) Scribner's: New York, 1930.
- Virgil, *The Works* of. (Trans. by A. H. Bryce.) Bell: London, 1902.
- Vitruvius on Architecture. (Trans. by F. Granger.) 2 vols. Heinemann: London, 1931-1934. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Vlachos, N. P. *Hellas and Hellenism*. Ginn: New York, 1936.
- Vuillier, G. *A History of Dancing from the Earliest Ages to Our Own Times*. Appleton: New York, 1898.
- Walden, J. W. H. *The Universities of Ancient Greece*. Scribner's: New York, 1909.
- Wallon, H. A. *Histoire de l'Esclavage dans l'Antiquité*. 3 vols. Dezobry, E. Magdeleine, Libraires—Éditeurs: Paris, 1847.
- Ward, W. *Account of the Writings, Religion, and Manners of the Hindoos*. 4 vols. Mission Press: Serampore, 1811.
- Watson, J. B. *The Ways of Behaviorism*. Harper: New York, 1928.
- Way, A. S. *The Odes of Bacchylides*. Macmillan: London, 1929.
- . *The Odes of Pindar*. Macmillan: London, 1922.
- Webster, H. *Primitive Secret Societies*. Macmillan: New York, 1908.
- Weege, F. *Etruskische Malerei*. Niemeyer: Halle, 1921.
- West, G. *A Dissertation on the Olympick Games* [and a trans. of the] *Odes of Pindar*. Dodsley: London, 1749.

- Westaway, K. M. *The Educational Theory of Plutarch*. Univ. of London: London, 1922.
- Westermann, W. L. "Apprentice Contracts and the Apprentice System in Roman Egypt." *Class. Philol.* (1914), ix, 295-315.
- . "The Castanet Dancers of Arsinoë." *Jour. Egy. Archaeol.* (1924), x, 134-44.
- . "Entertainment in the Villages of Græco-Roman Egypt." *Jour. Egy. Archaeol.* (1932), xviii, 16-27.
- . "The Ptolemies and the Welfare of Their Subjects." *Ann. Hist. Rev.* (Jan., 1938), xliii, 270-87.
- . "Vocational Training in Antiquity." *Sch. Rev.* (1914), xxii, 601-10.
- Wheeler, B. I. *Alexander the Great*. Putnam's: New York, 1900.
- Whibley, L. *A Companion to Greek Studies*. Univ. Press: Cambridge, 1905.
- Wieson, J. *Geschichte und Methodik des Schulwesens im Talmudischen Alterthum*. Strasburg, 1892.
- Wietersheim, E. von. *Geschichte der Völkerwanderung*. 2 vols. Weigel: Leipzig, 1880-1881.
- Wilamowitz-Moellendorff, U. *Aristoteles und Athen*. 2 vols. Weidmannsche Buchhandlung: Berlin, 1893.
- Wilkins, A. S. *National Education in Greece*. Strahan: London, 1873.
- . *Roman Education*. Univ. Press: Cambridge, 1905.
- Wilkinson, J. G. *The Manners and Customs of the Ancient Egyptians*. 3 vols. Cassino: Boston, 1883.
- Williams, E. T. *China Yesterday and Today*. Crowell: New York, 1923.
- Williamson, A. *Journeys in North China*. 2 vols. Smith, Elder: London, 1870.
- Wilson, E. (Ed.) *Egyptian Literature*. Colonial Press: New York, 1902.
- Wilson, J. A. "Ceremonial Games of the New Kingdom." *Jour. Egy. Archaeol.* (1931), xvii, 211-20.
- Windelband, W. *A History of Philosophy*. (Trans. by J. H. Tufts.) Macmillan: New York, 1938.
- Wissowa, G. *Religion und Kultus der Römer*. C. H. Beck'sche Verlagsbuchhandlung: München, 1902.
- Wolff, C. *Öffentliche Bade- und Schwimmanstalten*. G. J. Göschen'sche Verlagshandlung, 1908.
- Woodworth, R. S. *Contemporary Schools of Psychology*. Ronald Press: New York, 1931.
- . *Experimental Psychology*. Holt: New York, 1938.

- Woodworth, R. S. *Psychology*. Holt: New York, 1929.
- Woody, T. "The Fair Sex in Greek Society." *Research Quarterly* (May, 1939), x, 57-71.
- . *A History of Women's Education in the United States*. 2 vols. Science Press: Lancaster, 1929.
- . "Professionalism and the Decay of Greek Athletics." Repr. from *Sch. and Soc.* (Apr. 23, 1938), XLVII, 521-8.
- Wright, F. A. *Greek Athletics*. Cape: London, 1925.
- . *Greek Social Life*. Dent, London; Dutton, New York, 1925.
- Wright, F. A., and Sinclair, T. A. *A History of the Later Latin Literature*. Routledge: London, 1931.
- Wright, W. C. *A Short History of Greek Literature*. American Book Co.: New York, 1907.
- Wyman, L. C., and Kluckhohn, C. *Navaho Classification of Their Song Ceremonials*. *Memoirs, Am. Anthropol. Assoc.*, no. 50, 1938.
- Xenophon: *Anabasis*. (Trans. by J. S. Watson.) Bell: London, 1915.
- Xenophon: *Memorabilia and Oeconomicus*. (Trans. by E. C. Marchant.) Heinemann: London, 1923. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Xenophon: *Scripta Minora*. (Trans. by E. C. Marchant.) Heinemann: London, 1925. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Xenophon: *Symposium and Apology*. (Trans. by O. J. Todd.) (With C. L. Brownson's *Anabasis*.) Heinemann: London, 1922. (Now handled by Harvard University Press, Cambridge.)
- Xenophon, *The Works of*. (Trans. by H. G. Dakyns.) 4 vols. Macmillan: London, 1890-1897.
- Xenophon's *Cyropædia, or Institution of Cyrus, and the Hellenics*. (Trans. by J. S. Watson and H. Dale.) Bell: London, 1891.
- Young, C. V. P. *How Men Have Lived*. Stratford: Boston, 1931.
- Zend-Avesta, *The*. (Trans. by J. Darmesteter and L. H. Mills.) 3 vols. Clarendon Press: Oxford, 1880-1887.
- Ziebarth, E. "Juvenes." *Real-Encyclopädie*, x, Pt. II, 1357-8.
- . "Schulen." *Real-Encyclopädie*, ser. 2, II, Pt. I, 758-68.

INDEX

- Abraham, 94
 Abydos, swimmer on coin, 213
 Academy, 310, 325
 Acliacan War, 536
 Achacans, 197, 198, 215, 216, 217, 220, 234, 276, 366, 394
 Achilles' childhood activities, 224; education, 222f.; games in honor of Patroclus, 225-30
 Aerobats, Cretan, 205ff.; in Rome, 660
 Actian festival, 717, 721, 752
 Actium, 634
 Activism, Aristotle on, 449ff.; Cicero on principle of, 656; in Mazdaism, 179; Plato on, 441; primitive, 20-43
 Adornment, 12
 Adria, 320
 Aegina, 468, 469
 Aemilius Paulus, 396, 507, 522, 573, 576, 597, 609, 647; and hunting, 674
 Aeschines, 290, 300, 318
 Aeschylus, 219, 303, 331, 332, 421
 Aesop, 303, 581
 Aesthetic judgment, Greek, 334f., 338, 431, 455, 467; Roman, 612
 Aestheticism, in athletics, 334f., 338
 Actolians, 233, 366, 368
 Afranius, 582
 Afterlife, ideas of, Brahmanic, 158; Egyptian, 54; Greek, 222, 418; Persian, 179; Roman, 569f.
 Agamemnon, 230, 586
 Agamemnon, teacher, 575
 Agelai, 250
 Agesilaus, 236, 248, 249, 250, 251, 254, 272, 337, 369, 372, 380, 383, 391
 Agni, 158, 178
 Agnodice, 292
 Agoge, 250, 253
 Agora, trade banished from the, 457, 459
 Agricola, 626, 680, 681
 Agriculture, Aristotle on, 455; Babylonian, 75, 76, 77, 78f.; Chinese, 112; Cretan, 200; dances to promote, 27f.; Egyptian, 48, 51; Greek, 219f., 275f., 281, 284, 290; Hindu, 160; Inca, 13; Mohenjo-Daro, 152; Onondaga, 12; Persian, 179, 180; primitive, 3, 4; Pueblo, 15; Roman, 476f., 496, 505, 515-20, 559ff.; Xenophon on, 463; Zuni, 11
 Agrippa, 644, 648, 650, 651, 652, 719; erects *thermae*, 650f.
 Agrippina, 551, 620, 630
 Agyrineseans, games of, 366
 Alienobarbus, 585
 Alhriman, 179
 Ajax, 222, 228, 229, 334
 Akkad, 4, 75, 85, 88
 Alcibiades, 305, 316, 385, 394
 Alcinous, 231, 232
 Aleman, 238, 239, 266, 271, 303, 581
 Alexander, 232, 280, 327, 334, 371, 477, 749; and, Persian power, 177, 178; polo, 189; in India, 157
 Alexander of Tralles, 693
 Alexander Severus, 553, 561, 589, 594, 597, 613, 622, 635, 642, 651, 661, 665, 670, 672, 678, 692, 716, 734, 745, 748
 Alexandria, gladiatorial games at, 752; medicine at, 693
 Alkira-kiwuna, 18
 Alphabet, at Cumae, 480, 526, 571; Hebrew, 108; in Greece, 298, 304; Phoenician, 201
 Alypius, 708, 755
 Ambivius, 611
 Amenemhat's Instructions, 57
 Amenhotep, 62
 Amenophis, Teaching of, 57; similar to Proverbs, 94
 Ammianus, 535, 563, 568, 595, 642, 671, 684, 693, 730, 755; on health of primitive folk, 684; on persistence of games and dancing in Rome, 755f.; on races, 730; on swimming, 671
 Amphiaras Vase, 229
 Amyclae, 234
 Anacharsis, 332
 Anacreon, 279

- Anaxagoras, 421
 Anaximenes, 421
 Anchises, 718
 Andronicus, 503, 527, 582, 692, 705; at Rome, 572, 608
 Andronicus, Pompilius, 592
 Angus, 162
 Animal ancestry of man, belief in, 26
 Animistic beliefs, 14f., 16f., 96f., 158, 178; and dancing, 15, 24, 26; Greek, 220; Roman, 529, 533
 Anthimus, *De Observatione Ciborum*, 685
 Anthippasia, 348
 Anti-militarism, Chinese, 120, 139
 Antioch, gladiatorial games at, 752; Libanius on, 589
 Antiochus IV, 95, 536
 Antiquity of civilization, 47, 75, 111, 198
 Antonia, 320
 Antoninus Pius, 552, 563, 594, 597, 627, 721; and, doctors, 692; exercises, 660; fishing, 676; hunting, 674; spectacles, 713, 725, 748
 Antonius Musa, 690, 692
 Antony, 357, 585, 619, 648, 649, 671, 719, 744; and gladiators, 742
 Apache "hoop and pole" game, religious character of, 34
 Aphrodisias, 581
 Apobates, 347
 Apollinarian Games, 514
 Apollinaris, 679, 681
 Apollo, 420, 514, 529, 533, 566, 683, 712; author of archery, 203
 Apollodorus, 608
 Apollonius, artist, 353
 Apollonius of Rhantes, 380, 385
 Apollonius of Rhodes, 597
 Apollonius of Tyana, concerning, games, 752, 753; source of gladiators, 737
 Appian, 666, 710
 Appius Claudius, 491, 527, 532
 Apprenticeship, and physical exercise, 20ff.; Athenian, 327ff.; Babylonian, 80, 81, 84f.; contracts, in Egypt, 58, 329; Egyptian, 57, 58, 62; Hebrew, 104; Persian, 182; the education of labor, 5, 516; to law, in Rome, 527f.; to war, 465, 520-6
 Aratus, 393, 394
 Archaeological investigations, Cretan, 198, 200, 203; Mohenjo-Daro, 152ff.
 Archery, Assyrian, 86, 88, 90; Chinese, 121, 122-6, 135, 136, 137f., 146; contests, sportive survivals of useful activity, 35; Cretan, 202, 203; Egyptian, 60, 61, 67; Hebrew, 100f.; Hindu, 169f.; Homeric, 230; Persian, 183, 185, 188; philosophy of, 123ff.; Spartan, 255
 Archilochus, 271, 331
 Archimedes, 636
 Architects, training of Egyptian, 57
 Architecture, 4, 13; Aegaeo-Cretan, 212f.; Babylonian, 77; Chinese, 111, 112; Egyptian, 48, 54, 57; Etruscan, 479, 490; Greek, 276, 467; Mohenjo-Daro, 152; of Roman baths, 651f.; Persian, 180; Pueblo children learn, 21f.; Roman, 479, 490, 506, 563f., 651f.
 Archytas, 296
 Arcopagus, 280, 283, 300, 325, 327
 Arctacus, 401, 688, 693; on diseases and exercises, 414f.
 Argives, 276, 394, 395
 Argos, 205, 216, 234
 Ariadne, dance of, 212
 'Arifi, 189
 Arilta, 18
 Aristides, 470, 690
 Aristophanes, 245, 246, 275, 282, 288, 326, 336, 347, 351, 352, 355, 372, 386, 390, 402, 424, 429, 469
 Aristotelian influence, 447
 Aristotle, 1, 57, 73, 198, 236, 237, 240, 241, 248, 249, 258, 267, 271, 272, 278, 283, 286, 290, 308, 318, 322, 327, 338, 340, 354, 372, 398, 401, 403, 418, 419, 431, 459, 463, 465, 470, 490, 601, 606, 608, 609, 724; concerning, agriculture, 455; artisans, 448; change, 452; children's play, 453; common meals, 448; diet, 453; education as play, 455; education as politics, 452-8; educational authoritarianism, 452; environment, 448; eugenics, 453; excess of children, 453; excessive athletics, 454; forms of government, 447f.; freedom, 450; functionalism, 449f.; good life and happiness, 449f., 457f.; gymnastic science, 457f.; happiness, 449f.; health and harmony of body, 457f.; irrational soul, 452f.; liberal employments, 454f.; marriage age, 453; menial work, 448, 454; military training, 448, 457; mind, 456; moral training, 453; music, 455f.; musical instruments, 456; nutrition and growth, 450; peace, 451; periods of education, 452, 453; physical training, 452ff., 456ff.; physiognomy, 454; Platonic reals, 447; politics, master science, 449; rational soul, 452f., 456; sensation, 450; size of city, 448; slavery, 448, 450f.; social planning, 452; studies, 455ff.; utilitarianism, 454f.; war, 450; woman's ability, education, and subjection, 450, 451, 453
 Arithmetic, at Athens, 303; in China, 118; in Egypt, 57; in Rome, 580
 Arles, games at, 752, 753; medicine at, 692
 Arrian, 159, 170, 462, 605
 Arrichion, 378, 379, 395

- Art, and Greek athletics, 334f., 336; Assyrian, 89, 90; Athenian, 295, 297, 299, 303, 304, 306, 342, 346, 350, 364, 367, 378, 387, 412, 444, 462, 467, 471; Babylonian, 79, 92, 93; Chinese, 113, 115, 143, 145, 147; Cretan, 202ff.; Egyptian, 47, 56, 67, 70; Etruscan, 480, 482, 485ff.; "geometric," 233, 273; nude, 336; Persian, 180
- Art of Using a Javelin on Horseback, 524, 638
- Artemis, 205
- Artisans, Aristotle on, 448; Babylonian, 80; Chinese, 112, 113; Egyptian, 50, 51; Etruscan, 477, 478; Greek, 327ff.; Hindu, 161; Plato on, 435, 440; Roman, 519f., 561f.
- Arunta, clothing, 11; food, 11; initiatory rites, 17ff.; Sacred Pole Ceremony, 18; skill on trail, 21
- Aryan, agriculture, 180; child care, 181; commerce, 180; government, 177f.; literature, 180; physical culture, 182-94; religion, 178ff.; sanitation, 180
- Aryan culture of India, 156-76; caste, 157ff.; dancing, a phase of, 173ff.; intellectual training, 162f.; physical culture, 163-76; religion, 158f.; source of, disputed, 156; traditional chronology, 157
- Aryan culture of Iran, 177-94
- Ascetic discipline of athlete and Christian contrasted, 754f.
- Asceticism, and physical well-being, 5; Christian, 6, 331, 335, 359, 428, 661, 673f., 678, 730, 754ff.; effect of Christian, on games, 755; in India, 164f.; not Greek ideal, 334, 417; Pythagorean, 425, 426, 428; reaction of naturalism against, 7
- Asclepiads, 402
- Asclepius, 222, 400, 402, 416
- Ashurbanipal, 89, 90
- Asoka, 157, 172
- Aspasia, 293
- Assyria, 4; occupations in, 80; warlike character and military affairs, 85ff.
- Astrology, Babylonian, 84; Egyptian, 57
- Astronomy, Hebrew, 108
- Asypalaca, school at, 299
- Atalanta, 205, 298, 462
- Athenaeus, 211, 266, 267, 305, 353, 484, 489, 490; on bull-play, 668
- Athenian, aesthetic achievement, 467; agriculture, worthy of freemen, 284, 290; Annual Commissioners, 341; apprenticeship of labor, 327ff.; Archonship, 277; Arcopagus, 283; aristocracy, 277, 280; army, 330; Assembly, 280; athletics, 281, 311f.; bathing, 308f.; baths, 402; blood tie, 310; boat races, 344, 351; children's games, 294ff.; citizens' induction, de-
- scribed by Aristotle, 318; citizenship, 279, 316, 317f.; citizen-soldier, decline of, 333, 352; Commissioners of Games, 341, 345; Commissioners of Public Worship, 340; conflict with Sparta, 280; contempt for utilitarianism, 327f.; Council of Five Hundred, 279, 280; Council of Four Hundred, 279; dancing, 296, 298, 309; debt-slavery, 281; democracy, 279f.; diet, 275f.; divergence from Sparta, 274; divorce, 292; economic rivalry, 468f.; economy, 275f., 281; education, 284-329, and sophists, 423ff., curriculum, 303ff., 318, effect of, 466ff., ephebic training, 315-27, harmony of physical and mental aspects of, 289, 300, 302f., idealized, 424, many-sided, 289, method of, 304f., music school in, 288, 289f., 298-305, 424, of childhood, 293ff., periods of, 285, state-centered, 287f., 318, 425, variation from Spartan, 288, variety in, 284f., views of, divergent, 285f.; enlightenment, 286, 326, 417-65, 469f.; entertainers, 293; Ephebic College, 315-27, and religion, 319ff., decline of physical aspects of, 325, 326, exercises of, 319ff., literary, philosophical studies in, 325; ephebic oath, 316, 318f.; exclusiveness, 287; family, 281, 289, 291ff.; festivals and sports, 339-51, Aiantea, 340, 344, Apaturia, 340, 343, Athenian Olympia, 340, 344, Bendiden, 340, 344, Brauronia, 341, Delphinia, 343f., Diisoteria, 340, 344, Diomea, 341, Dionysia, 340, 343, Eleusinia, 340, 341, Epitaphia, 340, 341, 343, Feast of Kronos, 340, Festival of Delos, 341, 344, Great Dionysia, 340, Great Panathenaea, 340, 341, 344-51, Hephaestia, 340, 341, Heraclaea, 340, 341, Lenaea, 340, Munychia, 340, 344, Oschophoria, 340, 341, Promethea, 340, Synoccia, 340, Thesaea, 340, 341, 342, Thesmophoria, 340; girls' education, 296f.; gymnasium, 289, 301, 309-15, facilities, 312ff., fees, 310, functionaries, 312, plan, 312ff., program, 311; gymnastic decline, 347, 351ff.; intolerance, 469f.; labor conditions, 283; law enforcement, 300; law, knowledge of, required, 318; letters, introduction of, 298; life and education, 273-329; localism, 277; luxury, 281, 283, 347; maritime power and democracy, 280; marriage, 281, 292; medicine, 293, 400-16; metics, 282; military training, 315-27, 330ff., decline of, 325, urged by philosophers, 317; monarchy, 277; music school, 288, 289, 298ff., 302ff.; navy, 330; "new education," criticized, 372; paidagogos, 301; palaestra, 288, 289, 298ff., 302f., 305ff., equipment, 307, exercises, 308, fees, 305; paternalism, 317;

Athenian (*continued*)

- philosophical study, 325; philosophy of physical training, 330, 332f., 351f., 410, 431ff., 436, 441ff., 452ff., 458ff., 465; physical education, 288, 289, 298ff., 305-27; political development, 276-81, 467ff.; poor relief, 282f.; population, 281f.; private schools, 290, 300f.; private wealth, significance of, 277; professionalism in sports, 281, 311f., 337, 351ff.; religion, and athletics, 314, 339-51, and education, 319ff.; school, discipline, 301f., fees, 300, 305, 310, 424, origins, 298f., regulations, 300, rooms and equipment, 301; slavery, 281f., 283, 290; social classes, 281, 286; stock, 273f.; teachers, 290, 300, 303, 326, 423ff.; tyranny, 277; utilitarian education, 289, 290; view of labor, 283, 290; wages, 282; wealth, measure of man, 283; woman's status and education, 287, 291-8
- Athens, ball-playing at, 588; chairs of rhetoric and philosophy at, 594; failure of political intelligence at, 467ff.; gladiatorial games at, 752; philosophy and law, banned at, 595; Romans studying at, 587; scholarship at, in Cicero's day, 588f.; School of Hellas, 418, 466; student life at, 588f.; teachers at, 587, 588; teachers' pay at, 592, 594; University of, 325f.; University of Mankind, 418, 425, 466
- Athletes, advice to, on exercise and overtraining, 406f.; boasting of, 358f.; vocational guidance of, 356f.
- Athletic, contests, Roman, 747-52; cult, criticized, by Diogenes, 361f., Euripides, 360f., Plato, 361, Xenophanes, 360, 420; discipline, Chinese, 140, Cretan, 207, 209f.; guilds, 357ff., 692, 749; ideal, in Pindar and Bacchylides, 373f.; privileges, 357f., 359, 749, 751; records, 749; rewards, 749, 751f.
- Athletics, brutalized, 751; commercialized, 356, 381, 386, 391; criticized by Christians, 753; death of, 359; degeneracy of, 646; Egyptian, 63f.; Greek, 225ff., 244ff., 254ff., 305-27, 330-99; nudism and, 336f.; professionalism in, 748ff., criticized, 359ff., 390f.; relation of Cretan to Greek, 214f.; Roman, 747-52
- Attica, agriculture in, 275f., 281, 284; climate of, 275; geography of, 274f.; natural resources of, 276; unification of, 276f.; wildlife in, 276
- Atticus, 605, 648, 649, 661, 670, 698, 705, 707, 708, 726, 735, 738
- Augustalia, 551
- Augustine, St., 577, 580, 755
- Augustus, 312, 358, 487, 491, 506, 507, 508, 512, 534, 544, 545, 547, 549, 550, 552, 555, 556, 557, 558, 559, 560, 563, 567, 568, 576, 577, 578, 581, 585, 587, 593, 597, 608, 609, 611, 613, 616, 619, 621, 622, 626, 627, 629, 633, 634, 636, 641, 642, 644, 645, 648, 650, 652, 664, 670, 692, 703, 708, 711, 712, 713, 715, 717, 719, 721, 722, 729, 730, 737, 744, 749; and, athletic games, 747f.; athletic privileges, 751; ball-play, 665; fishing, 675; gambling, 663, 698f.; games, 718, 725, 727, 728, 734, 735, 736, 742, 746; games in honor of, 752; liberality of, in games, 710; physical exercise of, 660, 669, 688, 690; swimming, 672
- Aurelian, 553
- Aurelius, Marcus, 358, 508, 545, 552, 563, 583, 589, 597, 608, 609, 617, 627, 657, 686, 705, 722; and, ball-play, 665; brutality of athletics, 751; contests of sun-god, 748; exercises, 660, 668, 669; games, 725, 731; gladiatorial contests, 708, 713f.; hunting, 674; illness and doctors, 691
- Ausonius, 619, 661, 675, 677, 692; concerning, boating, 681; doctors, 691; Cratian's equestrian skill, 674; hunting, 673
- Authoritarianism, Aristotle's, 452; Chinese, 115f.; Hebrew, 96f.; Hindu, 158ff.; Persian, 177f.; Plato's, 435, 440; Roman, 503f., 529, 531, 533, 567f., 594f., 612f.; slight, in Greece, 417f.; Xenophon's, 459ff.
- Aztecs, and *tlax-ti*, 35f.
- Babylonian, 4, 75, 76, 177
- Babylonian, agriculture, 75, 77, 78, 79; education, 82-94; government, 77f., 85; land tenure, 78; life and education, 75-94; medical science, 84; occupations, 80; physical education, 84-94; religion, 81f.; slaves, 78; social classes, 78; women's status and education, 80f.
- Babylonian Chronicle, 84
- Bacchylides, 363, 373
- Bahram Gur, hunting, 186, 190
- Baiac, resort, 699
- Ball-games, Egyptian, 65; Greek, 223, 268, 314, 411ff.; Hebrew, 101; Indian, 35f.; Roman, 664ff.
- Barbarians, in Roman government, 546
- Barley, in Crete, 200; in Egypt, Babylon, 75, 76; in Merv, Askabad, 111; in Molienjo-Daro, 153
- Baths and bathing, and health, 402, 406; Assyrian, 92; Athenian, 308f., 402; Buddhist, 164; Chinese, 148; common, 678; Cretan, 212f.; Egyptian, 68; Greek, 231, 308f., 311, 314, 326, 406; Hebrew, 101, 105, 106; Hindu, 164; improvement of, in Greece, 402; in Gaul, 681; in Mesopo-

- tumia, 91f.; of Mohenjo-Daro, 154f.; Persian, 194; Roman, 649ff.; Spartan, 253, 268
- Battiades, 581
- Bear Dance, Ute, 26f.
- Beauty aids, 150, 298, 464, 621
- Beauty contest, manly, 345, 349
- Behaviorist view of "instincts," 8
- Belistiche, 383
- Ben Azai, 107
- Berenice, 575
- Berytos, law at, 595
- Beth ha-Midrash, 108
- Bibasis, 245, 267
- Bilingualism at Rome, 596
- Blood tie, and idea of common humanity, 423; Athenian, 310; in Greek games, 379f.
- Blossius, 615
- "Blues," circus faction, 712, 713, 731, 732
- Boar-hunting, 203, 485
- Boating, Athenian, 344, 351; Chinese, 146
- Boats, Cretan, 200; Mesopotamian, 76, 91; primitive, 12f., 21; Roman, 634f.
- Bona Dea, 533
- Book of Changes, 115, 119
- Book of Filial Piety, 115
- Book of History, 112, 115, 119
- Book of Rites, 119, 122
- Bookkeeping, Egyptian, 57
- Book-learning, in Egypt, 55f.
- Books, Babylonian, 82ff., 91; Chinese, 112, 115, 119, 122; cost of, in Rome, 611; key to early oriental cultures, 6; number of, in certain libraries, 610
- Bori dancing, 31f.
- Bornicans, and gambling, 42; trained for war, 21
- Borsippa, center of learning, 84
- Botany, among Hebrews, 108
- Bouni, 250
- Bovillae, circus, 729, 730
- Bow and arrow, Chinese, 112; use of, taught early, 21 (see archery)
- "Boxer Vase," 209
- Boxing, Chinese, 140ff.; Cretan, 209f.
- Brahman, 158; duties and privileges of, 159, 160, 162, 164
- Brahmanism, 158, 159, 160, 162, 164; and Zoroastrianism, 178
- Brahmi script, 154, 157
- Brazilian Indian fertility rites, 28
- Bridges, 13
- Britain, tin from, 200
- Britannicus, 592
- Brutus, 581, 597
- Buddha, 157, 159, 164
- Buddhidharma, 140
- Buddhism, 114, 139, 157, 159
- Buddhist, monasteries, famed for learning, 163; monks and boxing, 141, 148; prohibition of games, 164
- Buffalo-dance, Mandan, 24ff.
- Bull-grappling, Cretan, 199, 205ff.; Egyptian, 65
- "Butting," 142
- Caesar, 391, 491, 496, 500, 508, 525, 540, 541, 543, 544, 547, 548, 550, 553, 556, 557, 560, 563, 564, 567, 568, 569, 581, 587, 593, 597, 598, 609, 620, 624, 632, 634, 638, 644, 698, 702, 705, 709, 715, 720, 730, 736, 737, 743, 752; and, ball-play, 665; doctors at Rome, 691; horsemanship, 677; spectacles, 710, 718, 724, 727, 734, 735, 738, 742, 744, 746, 747; sports, 660; swimming, 671
- Calcio, Florentine game, 188
- Calendar, Egyptian, 47
- California Indians, 10
- Caligula, 545, 551, 559, 592, 597, 644, 655, 697, 698, 715, 716, 723, 729, 733, 742; and spectacles, 711, 718, 725, 727f., 731, 732, 734, 735, 736, 738, 744, 747, 748, 752; extravagance of, 699
- Calpurnia, 624
- Camillus, 505, 514, 527, 531, 553, 618, 717
- Campania, 478, 479, 485
- Campanian gladiators, 742
- Campus Martius, 512, 522, 525, 632f., 660, 661, 662, 665, 666, 674, 710, 746, 747; Chinese, 135
- Cannae, 540
- Canoe craft, 12, 112
- Canons of Filial Duty, 118
- Canopus, 699
- Canuleian Law, 503
- Capitoline Games, 514, 531, 717, 722, 723, 748
- Capitolinus, 535, 674
- Capua, 478, 485, 543, 627; gladiatorial school, 738, 742
- Caracalla, 635, 651, 723; baths, 651; spectacles, 725f., 748
- Carneades, 574, 587, 601
- Carthaginian, treaty, 526; wars, 494, 495, 497, 499, 535f.
- Carvilius, Spurius, 578, 592, 619
- Cassiodorus, 756
- Castes, aspects and origin of, 4; in India, 4, 157f.; see, also, classes
- Castricius, on pupils' attire, 590
- Cat, trained for hunting, in Crete, 203, 205; in Egypt, 62
- Catharsis, 426, 455f.
- Catiline, 556, 583
- Catlin, on Indian games, 36-41; Mandan buffalo-dance, 24ff.; Mandan sham battle, 29f.; scalp dance, 31

- Cato, 476, 497, 499, 501, 502, 505, 506, 507, 508, 509, 512, 516, 517, 518, 519, 520, 521, 522, 530, 536, 537, 565, 572, 573, 574, 576, 577, 580, 596, 598, 602, 618, 620, 621, 623, 625, 632, 641, 696; as farmer, 662; on Greek medicine, 689; taught son swimming, 670; taxed luxury, 701
- Cato the Younger, 506, 522, 548, 644; and ball-play, 660, 665
- Cato, Valerius, 581, 592
- Cavalry, Assyrian, 86, 87f.; Athenian, 330, 347ff., 465; Egyptian, 60; Hindu, 165, 166, 167; Persian, 185; Roman, 633f., 643; Spartan, 264f.; Theban, 265
- Cavalry Commander, The, 463, 464
- Celsus, 686, 687, 688, 693; on dietetics, 684; on health gymnastics, 686
- Celtiberians, 497
- Celtic, disease theory, 694; gladiatorial contests, 484
- Century of Surnames, 118, 120
- Cerealism, 534
- Certainty, quest for, 14
- Chaeronea, 280, 333, 370
- Chalcidian alphabet, 480
- Chaldaea, 80, 84, 94, 97
- Chandragupta, 157, 159, 161, 170, 171, 172
- Change, Aristotle on, 452; inevitable in great state, 537; Lucretius on, 473; Plato's fear of, 445; political and educational at Rome, 571ff.; Spartan failure to prevent, 269; Xenophanes on, 421f.
- Chariot in warfare, Chinese, 121, 122, 136ff.; Cretan, 203, 205; Egyptian, 60; Etruscan, 487ff.; Hindu, 165, 166, 167, 168, 169, 170, 171; Homeric, 210, 227, 232; Mesopotamian, 86, 87, 88; Persian, 183
- Chariot racing, 245, 254, 346ff., 367, 372ff., 385, 487ff., 729ff.
- Charlemagne, 179
- Chastity, 52, 114, 249, 505
- Cherokees, war and ball games, 35
- Chicane (Languedoc game), 188
- Children, labor of, among Zuni, 14
- Children's games and playthings, aiming, 296; astragals, 510; axes, 510; bake pans, 156; balls, 64, 101, 156, 296, 510, 511; blindman's buff, 296, 511; board games, 510; boats, 64; bowls, 64; bows and arrows, 296; building houses, 511; carts, 510; carved animals, 296; catching, 296; cat's cradle, 36; chairs, 156; cockfighting, 296; crocodiles, 64; dancing, 296; dice, 142, 510; dolls, 64, 510; draughts, 223; driving pets, 511; duck and drake, 296; ducks, 64; fighting kites, 150; flowers, 510; flying a beetle with a thread, 296; game of pebbles, 296; gocarts, 296; "guess how many," 510; guess-who-hit-you, 296; half-moons, 510; handball, 150; hide-and-seek, 296, 511; hobbyhorses, 296, 510; hoops, 64, 296, 297, 510, 511; hopping, 296; jackstraws, 36; jumping, 296; jumping-jacks, 64; khalkismos, 296; "king game," 510f.; kites, 150, 296; knucklebones, 223, 296, 510; kottabos, 296; leapfrog, 296; marbles, 64, 156; miniature implements, 510; mora, 296; musical kites, 150; nuts, 510; "odd and even," 510; "pavement" game, 214; pigeons, 64; pigs, 64; play furniture, 64; polis, 296; rattles, 156, 296; riding stick-ponies, 511; running, 296; seesaw, 296, 511; shields, 296; shooting beams or pebbles, 296; shuttlecock, 150; sickles, 510; skipping rope, 296; skipping stones, 511; standing, or hopping, on a greased skin, 296; swings, 295, 296; swords, 296, 510; throwing, 296; tops, 64, 223, 296, 510, 511; tossing and spinning coins, 296, 510; tossing in a blanket, 296; tug of war, 296; wagons, 510; walking on stilts, 296, 510, 511; whips, 296; whirligigs, 296; whistles, 156
- Chilperic, 756
- Chinese, agriculture, 112; antiquity, 111; athletic discipline, 140; boxing, 140ff.; "butting," 142; children's games, 149f.; classes, 112; dancing, 122, 127-32; decline of education, 116; education, private and public, 118; examinations, 119; family, 117, 118; fishing, 149; foot binding, 150; footrace, 142ff.; girl's education, 119f., 150f.; gladiatorial contests, 139f.; golf, 146; government, 111, 112, 115ff.; guilds, 113; health gymnastics, 148f.; intellectual education, 116ff.; jiu-jitsu, 140; liberal education ideal, 118, 120f.; life and education, 111-51; literary education, 118ff.; *literati*, 112; literature, 115; masses, recreation of, 149f.; medical practice, 148; merchant class, 5, 112; metal industries, 113; music, 127ff.; occupations, 112f.; pacifism, 139; physical culture, 120-51; "pitch-pot," 146ff.; polo, 144f., 189; record keeping, 112; relationships, 115f.; religious, 114f., 120; religious influence on physical culture, 120; silk culture, 112; social end of education, 116ff.; warfare, 135ff.; water sports, 145f.; wrestling, 140; writing, 112; women, 113f., 119f.
- Chios, school at, 299
- Choctaw sports, 38
- Choregus, Athenian, 309, 310
- Christian, asceticism, versus harmony of mind and body, 6; criticism of games, 753ff.; influence on medicine, 694

- Christianity, and emperor worship, 568; effect of, on pagan games, 755f.; its competitors, at Rome, 567
- Christians, at races, 730; forbidden in Roman schools, 595
- Chugan, 188ff.
- Cicero, 325, 475, 481, 498, 500, 501, 503, 506, 507, 509, 510, 512, 516, 527, 528, 544, 547, 548, 549, 556, 557, 558, 564, 569, 575, 579, 580, 581, 583, 585, 589, 590, 596, 597, 606, 608, 611, 614, 615, 632, 649, 669, 670, 672, 683, 699, 700, 737; concerning, activism, 656ff., 704; agriculture for old age, 662; animals for venations, 743; athletic contests, 657; ball-play, 664, 665; Campus Martius, 656f.; dancing, 513, 628, 654; education of orator, 598ff.; Epicureans, 601; equites, 702; exercise for old age, 665, 685, 686; extravagance, 698; games and politics, 726; Greek gymnastics, 514, 647, 648, 654, 655, 657, 662; Greeks, 574; Greeks in Italy, 571; harmony with nature, 656; health, 685; his gymnasium, 648, 662; hunting, 674, 685; inadequacy of mere practice, 599f.; intellectual and physical excellence, 656; law's importance, 600; legal training, 576; liberal education, 598ff.; medical profession, 689; mora, 663; native capacities, 598ff.; orator and philosopher, 601, 604; parts of oratory, 599; patriotic duty, 499, 521; philosophy at Athens, 587; play as recreation, 656; poetry and history, 584; popular judgment, 612, 708; portents, 565; relation of education and life, 600f.; rhetoricians, 586; Roman army, 637; Spartan courage, 657; spectacles, 705ff., 715, 718, 724, 734f., 738, 741, 742; Stoics, 601; studies, 600; timidity in speaking, 598; tribute levied for games, 724; war, 499, 521, 526; wit, 599; writing before speaking, 599; criticized by Fronto for insufficient care in choosing words, 609; criticized for his studiousness, 574; sends Marcus to Athens, 587f.
- Cicero's assassination, 544; estates, 699, 700; interest in immortality, 569; lament at death of Republic, 547; philosophy of physical culture, 655ff.; refuge in philosophy, 614; view of reason, 521
- Cinadon, 235
- Cincius Alimentus, 572
- Circus games, 644, 718, 719, 721, 723, 729ff.; and barbarians, 730; attendance at, 730; course and the race, 732f.; criticized by Christians and pagans, 753f.; drivers, 732; Etruscan origin, 729; factions, 731f., 756; free, 730; gambling, 732; popularity of, 730ff.; rewards, 732; senators participate in, 732; steeds, 732; victories, 732; wealth and, 732
- Circus Maxentius, 729, 730, 733
- Circus Maximus, 488, 514, 729, 730, 733, 756
- City life and nomadic, 4
- City of God, 420
- City-state, and education, 419, 420
- Civil wars, Roman, 620, 641
- Classes, Athenian, 281, 286; Babylonian, 80ff., 85ff.; Chinese, 112; Egyptian, 49, 50f., 52, 55; functional aspect and origin of, 4f., 49; Hindu, 157ff.; Homeric, 217f.; Persian, 182; Roman, 491ff.; Spartan, 234ff.
- Classlessness, Buddhist, 159
- Claudian, 535, 546, 653, 743
- Claudius, 545, 551, 644, 690, 692, 698, 713, 715, 716, 719, 721, 722, 740, 746, 749; and, gambling, 664; spectacles, 711, 718, 725, 727, 728, 734, 735, 744, 747
- Claudius, Bishop of Turin, 694
- Claudius Etruscus, 559, 652
- Claudius Pulcher, 568
- Clay tablets, Babylonian, 82ff., 91; Cretan, 201
- Cleanliness, Athenian, 308f., 402; Buddhist, 164; Chinese, 148; Cretan, 212f.; Egyptian, 68; Hebrew, 106; Hindu, 164; Mohenjo-Daro, 154f.; Persian, 180, 193; Pythagorean, 428; Roman, 508, 512, 648ff., 661, 672, 678, 687f.
- Cleisthenes' reforms, 279
- Cleomenes, 236, 250, 269, 283
- Cleomenes III, 251
- Climate, Athenian, 274f.; Egyptian, 48; in India, 158; Italian, 476; Persian, 178, 180; relation of, to clothing, 11, 12
- Clodius, Servius, 573, 585, 589
- Cloelia, 512, 513, 677
- Clothing, primitive, 11f.; Roman, 505, 621; Spartan, 239, 251
- Cnidian school, 401
- Coeducation, 296; at Rome, questioned, 627
- Colleges, priestly, in Egypt, 57
- Colosseum, 737, 756
- Columella, 476, 477, 558, 560, 621; on agriculture and dancing, 655
- Commerce, Athenian, 275; Babylonian, 76f., 78; Cretan, 200; Roman, 538, 562
- Commercial education, Egyptian, 57, 58
- Commodus, 552, 567, 715, 723, 725; and, bathing, 672; spectacles, 714, 728, 731, 735, 736, 745; exercises of, 660
- Common man, Greek glimpse of, 423
- Communication, by road, 12f., 200, 552, 699; by water, import of, 12, 48, 76f., 153, 198, 200, 274f., 476

- Community, and the danec, 23
 Comparative study, aided by letters, 6
 Compositions, Chinese, 119; Roman, 586f.
 Compulsion, Plato on ineffectiveness of, in teaching, 302
 Concubinage, Babylonian, 80; Chinese, 114; Egyptian, 52; Persian, 181
 "Conditioning" process, 8
 Confarreatio, 504
 Confucian Analects, 115, 118, 121
 Confucian Hymn, 129
 Confucianism, 111, 114, 116f.
 Confucius, 45, 114, 116, 118, 119, 125, 128, 129, 132, 139; as fisherman, 149; cult of, 114f., 129; on hunting, 133, 134
 Conquest, bearing of, on class lines, 4; Dorian, 233ff.; ideal of, in Persia, 180, 183; Xenophon on, 464f.
 Conservatives, and educational change, in Athens, 421; in Rome, 573f.
 Constantine, 179, 398, 399, 546, 553, 554, 556, 567, 594, 636, 651, 652, 755
 Constitution of the Lacedaemonians, 459
 Consualia, 514, 719
 Contests, Greek love of athletic, 330ff., 363ff., 371
 Cooks, Athenian, 400; Roman, 700; Spartan, 252, 269
 Corinna, 293, 581, 624
 Corinth, 468, 469; games at, 388ff.; gladiatorial games at, 752, 753
 Cornelia, 508, 626, 627, 629
 Cornelius Nepos, 575
 Cornutus, 589, 613, 615
 Corporal punishment, 110, 120, 163, 301f.
 Cos, Aselepiads of, 402
 Cosmopolitan era, in Athenian education, 325ff., 466ff.; in Roman, 571-617
 Courts, Athenian, 277; Roman, 698
 Crassus, 543, 576, 585, 710, 724, 727; wealth and extravagance of, 695, 699
 Crates of Mallos, 572
 Creation Epic, 82, 83, 84
 Crescens, 732
 Cretan, acrobats, 205ff.; agriculture, 200; amusements, 213f.; archery, 203; architecture, 199, 212f.; art, 202, 205, 208, 233; boxing, 209f.; bronze age culture, 198, gives way to iron, 233; bull-grappling, 205ff.; cities, 198; commerce, 199, 200; decline, causes of, 199; domestic life, 199; folk, 197, 198; government, 199f.; hunting, 203ff.; import of, island position, 198; influence of institutions, 445, 447; intellectual advancement, 201f.; language, 201; life and education, 197-215; love of sports, 375; music and dancing, 211f.; naval power, 198; number system, 201; occupations, 199, 200; physical culture, 202-16; population, 200; religion, 199, 210f., 214, 215; sanitation, 212f.; schools, 201f.; script, 201; warfare, 202f.; water system, 212; wildlife, 203; women, 199; wrestling, 209f.
 Crime, in Rome, 698
 Crops, Babylonian, 75, 77; Chinese, 112; Egyptian, 48; Greek, 275; Italian, 476f., 515ff.
 Crypteia, 235, 253f.
 Culin, Games of the North American Indians, 34
 Cumae, 480, 526, 571
 Curetes, 201, 211
 Curio, 706, 726, 737, 743
 Curriculum, Athenian, 301ff., 307ff., 321ff.; Babylonian, 82ff.; Chinese, 117ff., 121f.; Egyptian, 55f.; Hebrew, 109f.; Hindu, 162ff.; Homeric, 222f.; Persian, 181f.; Roman, 527, 572ff., 577ff., 586ff., 598, 600f., 603f.; Spartan, 242-69
 Cynaegeticus, 262f., 462
 Cynicism, 615f.
 Cynics, 470
 Cynisca, 244, 245, 383
 Cyprus, 200
 Cyropaedia, 182, 184, 187f., 459ff.
 Cyrus, 76, 78, 97, 177, 179, 180, 187, 192, 459, 461; education of, 182, 184ff.
 Dacian War, 545
 Daicles, 384
 Dakota women, industry of, 13
 Danäans, 276
 Dance, buffalo, 24ff.; corn maiden, 27; death, 28, 33, 34, 175; delivery, 28; Khassia, 176; medicine, 31f. (see sports, etc.)
 Dancing, and mating, 28; and religion, 5, 9, 15, 23, 24, 102f., 127ff., 173ff., 211f., 245f., 265ff., 309, 513; Arunta, 19; Athenian, 296, 309, 311, 320; Chinese, 122, 127-32; Cretan, 211f.; Egyptian, 69ff.; Etruscan, 486, 488; Hebrew, 102ff., 107; Homeric, 223, 230, 231f.; Indian, 173ff.; masters of, esteemed, 132; means of socializing man, 23; Mesopotamian, 90, 92f.; natural tendency, 22f.; nautch, 176; Persian, 192f.; Quintilian on, 655, 658; related to social life, 9, 23; Roman, 513, 533, 628f., 654f., 659; Socrates learns, 336, 431; Spartan, 245f., 265ff.; temple, 175; war and, 28, 29, 72, 126f., 129, 266, 267, 345, 349, 489, 729, 746f.
 Dante, 475
 Darius, 177, 179, 183
 Dauuf, 52
 David, 97, 99, 100, 102, 103
 De Finibus, 629
 De Oratore, 503, 598

- Deborah, 96, 101
 Deer-hunting, 205
 Degrees, Chinese, 119
 Delators, 605
 Delawares and dice, 42
 Delian League, 280, 468
 Delos, festival of, 341
 Demaratus, 240, 571, 720
 Democracy, Aristotle on, 447; Athenian, 279; in Chinese education, 118; in Hebrew education, 108f.; in Roman spectacles, 730; in sports, 346, 369ff.; Plato's contempt for, 432, 434
 Democritus, 471; on causation, 422
 Demosthenes, 280, 290, 300, 319, 326, 573, 601
 Despotism, and decay of Roman letters, 612ff.
 Dhanur-Veda, "bow and science," 169
 Dharma Sastras, 161
 Diagoras, 339, 382, 388, 647
 Dinulos, 255
 Dictynna, 205, 210
 Diet, and health, 311, 400, 401, 403, 684; Anthimus on, 685; Arctaeus on, 414; Arunta, 11; Athenian, 275f.; athletes, 353f.; California Indians', 10f.; Celsus on, 684; Cicero on, 685; Cretan, 200, 209; Galen on, 412f.; 684; gladiators', 739; Hebrew, regulated, 107; Hindu, 164; Hippocrates on, 405ff.; Homeric, 219; Mesopotamian, 77, 88; Mohenjo-Daro, 153; Papuan, 11; Persian, 184; Peruvian, 11; Philostratus on, 410; Plutarch on, 408ff.; Pythagoras on, 427; Socrates on, 432; Spartan, 239, 241, 252; Zulfii, 11
 Dietetics, 307, 311, 401, 427
 Dike, 217, 221
 Dio, 475, 535, 537, 548, 569, 575, 598, 613, 615, 622, 623, 638, 642, 674, 722, 724, 725, 735, 746; on swimming, 671; on women at games, 715f.
 Dio Chrysostom, 361, 362, 390, 575, 749
 Diocles, 732
 Diocletian, 359, 544, 545, 546, 550, 553, 554, 563, 594, 613, 651; baths of, 672
 Diodorus, 61, 64, 83, 84, 159, 197, 201, 256, 366, 367, 475, 535; concerning, Egyptian education, 55, 74; Egyptian farmers and trades, 51, 58f.; wealth of Egyptian soldiers, 49
 Diogenes, 320
 Diogenion, 311, 324
 Diogenes, 361, 362, 390, 574, 575
 Dionysian festival, 320
 Dionysius, 478, 491, 526, 537
 Dionysius of Halicarnassus, 535
 Dipyron Vase, 229, 364
 Discipline, school, Athenian, 301f.; Chinese, 120; Egyptian, 58; Hebrew, 109f.; Hindu, 163; Roman, 579, 581, 590f., 602
 Disease, theory and control of, Babylonian, 81, 82; Celtic, 694; Christian, 694; Egyptian, 57; Greek, 400-16; Hebrew, 106f.; Hindu, 163ff.; primitive, 31f.; Roman, 683, 688, 693; Teutonic, 694
 Disintegration, Athenian, 467ff.; Roman, 539ff., 551-68, 755f.; Spartan, 234, 236, 249, 269ff.
 Disoteria, 320
 Divination, Babylonian and Assyrian, 84, 87; Etruscan, 481, 482, 533; primitive, 34f., 42f.; Roman, 533
 Divorce, Chinese, 114; Roman, 619f.
 Doctor, see physicians
 Doctrine of the Mean, 115, 118, 139; and hunting, 133f.
 Dogmatics, 689
 Dogs, hunting, Egyptian, 62; Spartan, 238, 261f., 675
 Dolabella, and games, 734
 Dole, Roman, 563, 696, 756
 Domenichino, 103
 Domesticated animals, Athenian, 276; Chinese, 111; Cretan, 200; Egyptian, 62; Etruscan, 476; Mohenjo-Daro, 153
 Domitian, 545, 550, 552, 610, 612, 613, 615, 633, 651, 663, 669, 675, 699, 715, 716, 721, 722, 723, 733, 740, 743, 745; and, archery, 675; spectacles, 713, 731, 734, 735, 736, 738, 741, 746, 748
 Domitius Afer, 601
 Domnicius, Brother, 679
 Dorian music, 435, 456
 Dorians, 198, 200, 202, 205, 216, 233, 363, 382; in the Peloponnesus, 233f.
 Douris, 299, 304
 Draco's code, 277
 Dravidian culture, 154
 Dromeus of Stymphalus, 353, 385
 Dromos, 256, 268
 Drona, 166, 172
 Drupada, 166
 Drusilla, 711, 744, 748
 Drusus, 540, 542, 549, 719, 735, 739
 Dual universe, belief in, 14f.
 Dwellings, Aristotle on location of, 403; Chinese, 111, 112; Egyptian, 48; Inca, 13; Mohenjo-Daro, 154; primitive, 4, 13; Roman, 506, 517, 563f., 699f.; Spartan, 239; Zulfii, 14
 Ea, 81
 Ecclesiastusae, 293
 Ecdicius, 679, 682
 Eclectics, 689
 Economic forces, in Rome's wars, 498, 500, 537f.

- Economic rivalry, and Greek disintegration, 468f.; of Carthage and Rome, debatable, 537f.
- Education, and social change in Athens, 420ff.; Athenian, 284-329, 420-65; Babylonian, 82ff.; Chinese, 116ff.; class stratification and, 5; Cretan, 201f.; Egyptian, 55ff.; equality of, in Plutarch, 408; Etruscan, 480f.; Hebrew, 108ff.; Hindu, 162f.; Homeric, 222; knowledge, and virtue, 117; many-sided, primitive, 3; means of social rehabilitation, 117; origins of, 10; Persian, 181f.; play and, 20ff., 29ff., 34ff., 442, 455, 579; power of, to alter social order, 424f.; practical, in Egypt, 55, 71, 74, in Rome, 515ff., 520ff., 527f.; primitive, 15-43; reconstruction of Greek, 420-65; Roman, 503-34, 571-645; Roman girl's, 626ff.; Spartan, 240-72; Spartan girl's, 244ff.
- Education, physical, *see* physical culture
- Educational theories, Aristotle's, 447-58; Cicero's, 514, 584, 587, 598ff., 647, 648, 654, 655, 656, 657, 662; Confucius', 115ff.; Plato's, 434-45, 447; Plutarch's, 407ff.; Quintilian's, 509f., 579, 581ff., 585, 591, 601ff., 629, 655, 658, 669, 670; Seneca's, 579, 586, 606ff., 629f., 658, 659, 668f.; Socrates', 426, 429ff.; Xenophon's, 447, 458-65
- Egypt, 4, 177, 198, 200, 201; early civilization in, 47; influence of Nile on, 47
- Egyptian, army, 63; bathing, 68; dancing, 69ff.; education, 55ff., 286; gods' wealth, 53; government, 49; gymnastics, 64ff.; neolithic culture, 3; physical education, 58-74; priests, 55ff.; professional education, 55ff., 71; racial origin, 47; religion, 48, 49, 50, 53f.; social classes, 49ff.; society, generally pacific, 59; sports and recreation, 61-9; swimming, 66f.
- Eirens, 250
- Elagabalus, 620, 723; bathing, 678; swimming, 672
- Eleans, 367, 368, 369, 375, 376, 379, 381, 382, 385, 391
- Elementary education, Athenian, 300ff.; Chinese, 118; Egyptian, 55; Hebrew, 109; Hindu, 162; Persian, 181; Roman, 526f., 577ff.
- Elephants, hunted in India, 172f.; in Hindu and Persian warfare, 169, 170, 171, 185
- Eleusinian festival, 320
- Elis, 366, 383, 396
- Ellis, on dancing, 23
- Eloquence, and man of action, 600f., 604f.
- Empire, Athenian, 274f., 279, 468; Cretan, 198ff.; Egyptian bid for, 59; geography a factor of, 198, 274f., 476; Persian, 177; Roman, 476, 494f., 501, 537f.
- Empirics, 689
- Engineering, Babylonian, 84; Cretan, 200, 212f.; Egyptian, 48f., 57; Etruscan, 479, 490; Mohenjo-Daro, 154f.; Roman, 501, 638f.
- Engwura, 18f.
- Enlil, 81
- Ennius, 508, 514, 572, 573, 582, 654
- Enquiry, stirred by natural phenomena, 14
- Environment, effect of, on man, 10
- Epaminondas, 234, 236, 280, 371, 466
- Ephêbic, college library, 324; education, 315-27, 465; oath, 316, 318f.
- Ephêbic officials, *akontistês*, 323, 324; *aphetês*, 323; *catapaltaphetês*, 323; *didaskalos*, 324; *epimeletês*, 324; *epistatai*, 312; *grammateus*, 322, 323; *gymnasiarch*, 310, 312, 350; *hegemôn*, 322, 323, 324; *hieronikês*, 324; *hoplomachos*, 322, 323; *hyperctês*, 323; *hypopaidotribai*, 322; *hypotaktês*, 324; *hypozakoros*, 323; *iatros*, 324; *kapsarios*, 324; *kestophylax*, 324; *kosmetês*, 312, 321f.; *lentiarios*, 324; *prostataes*, 323; *sophronistês*, 312, 321f.; *strategoi*, 321; *thyroros*, 324; *toxotes*, 323; *xystarches*, 312, 324
- Ephesos, gymnasium at, 312
- Ephorus, 484
- Epicadus, 581
- Epicrates, and ephêbic training, 317
- Epictetus, 575, 577, 615, 616, 741
- Epicurean philosophy, 615f.
- Epicurus, 719
- Epidius, 585, 589
- Epigenes, 332, 432
- Epirota, 582, 627
- Epitaphia, 320
- Epitoma Rei Militaris, 638
- Equirria, 719
- Equites, 538, 541, 549, 552, 557, 559
- Er, myth of, 437
- Erasistratos, 401
- Eratothencus, 427
- Erech, center of learning, 84
- Eretria, gymnasium in, 312
- Erinna, 293
- Eripius, 668
- Erman, on Egyptian esteem of education, 61
- Eteo-Cretans, 197f.
- Etruria, Greek influence on, 482, 647; mother of superstitions, 533
- Etrusca disciplina, 481
- Etruscan, aesthetic achievement, 480, 482, 485ff.; animal fights, 485; art, 480, 482, 485ff.; athletics, 486; banquets, 489f.; boxing, 486, 747; burials, 482; circus events, 486ff.; collapse, 479, 490; culture

- and education, 477-90; dancing, 486, 488ff.; discus, 486; divination, 481, 482, 533; education, 481; funeral games, 487; games, 482-90; gladiatorial contests, 484; gods, 481f., 533; horse races, 486; human sacrifice, 482; hunting, 485; influence on Roman culture, 479ff., 487, 488, 489, 490, 533; jumping, 486; language, 480; literature, 480; *ludi scaenici*, 483, 488, 529; luxury, 489f.; medicine, 688; military excellence, 479; music, 483, 486; mythical account of games, 482; origins, 478; political leadership, 479; Pyrrhic dance, 486, 489; religion, 481f., 533; source of Roman games, 719; sports and religion, 483; technology, 477, 479f.; tomb paintings, 482f., 486ff.; *Trinia*, 644; upper class life, 485ff.; woman's sphere, 489ff.; wrestling, 486, 747; writing, 480
- Eugenics, Aristotle on, 453; Pythagoras on, 426
- Eunus, 543
- Euphrates, and civilization, 47
- Euripides, 277, 303, 305, 326, 353, 360, 386, 417, 419, 420, 423, 470
- Europe, neolithic culture in, 3, 198f., 273, 477
- Euryleoneis, 245, 383
- Euryphon, 401
- Examinations, Chinese, 117, 118, 119, 122, 123; Chinese military, 135
- Exercise and health, Arctaeus on, 413ff.; Aristotle on, 453f., 456f.; Galen on, 410ff.; Hippocrates on, 403ff.; Philostratos on, 410; Plato on, 436f.; Socrates on, 432
- Exhibition sports and dancing, 9, 65ff., 70ff., 192f., 205ff., 330-99, 482ff., 719ff., 729-56
- "Exhortation to the Study of the Arts," 749
- Fabius Pictor, 572
- Family and education, Athenian, 291-8; Babylonian, 80f.; Chinese, 117, 118, 119; Cretan, 199; Egyptian, 51, 52; Hebrew, 96; Hindu, 162; Homeric, 223; Persian, 181; Roman, 503-9; Spartan, 249f.
- Farmers, 4; Athenian, 275f.; Babylonian, 78ff.; Chinese, 112; Egyptian, 51f.; Hindu, 157, 159, 160, 161; Persian, 179f., 182; Roman, 515-20
- Faustianus, 594, 627
- Favonius, on luxury, 701f.
- Favorinus, 621, 622
- Fear of the unknown, 8, 9
- Fees, in Athenian schools, 305, 310, 424; in Roman, 592f., 610
- Ferreolus, 679, 681
- Fertility cult, 19; and dancing, 23, 26, 27f.; and human stock, 28
- Festivals, Athenian, 330-62; Greek, 363-99; Roman, 716-56
- Firdausi, 180, 188, 189
- Fire dance, Navaho, 32f.
- Fire, in Chinese tradition, 112
- Fishing and fishing gear, 21; Chinese, 149; Cretan, 200, 209, 210; Egyptian, 62f.; Hebrew, 98; Homeric, 224f.; Mesopotamian, 88; Mohenjo-Daro, 156; Persian, 188; Roman, 512, 675f., 680f.
- Flaccus, Verrius, 581, 582, 591, 592, 593
- Flagellation, Spartan, 253
- Flaminian Circus, 720, 729
- Flamininus, 391, 398
- Flavian Amphitheater, 722, 737, 755
- Floralia, 727
- Florus, 497, 498, 535, 537, 540
- Food supply, and magic, 24ff.; and permanent settlement, 47; Arunta, 11; Athenian, 275f.; California Indian, 10f.; Chinese, 112; Cretan, 200; Egyptian, 48f.; Homeric, 219, 224f.; Mesopotamian, 77; Mohenjo-Daro, 153; Papuan, 11; Roman, 476, 506, 515ff., 539, 560f., 563; Spartan, 235, 249, 252
- Football, Chinese, 142ff., 150
- Formal and informal education, primitive, 15f.
- Four Classics for Girls, 120
- Fowling, in Egypt, 62; in Gaul, 673f., 681f.; in Mesopotamia, 90
- Fratres Arvales, 513, 533; circus of, 729
- Freedom in primitive life, 10
- Fronto, 583, 589, 597, 608, 609, 652, 726; on ball-play, 666; circus games, 705; hunting, 674
- Frontonian school, 609
- Fu Hi, 132
- Functionalism, in Aristotle, 449ff.; principle of, recognized, 401f.
- Funeral games, 230, 339, 363-99, 483, 484, 717ff.; Homeric, 225-30, 363ff.; archery, 230, armed combat, 229, boxing, 228, chariot race, 227, running, 229, spear throwing, 230, weight throwing, 229, wrestling, 228f.
- Funerary dances, 28, 33, 34, 72, 175
- Fuscus, 749
- Galba, 551, 569, 727
- Galen, 311, 324, 353, 357, 358, 359, 378, 386, 401, 402, 415, 668, 685, 688, 694; and, balance of mental and physical exercise, 410f.; ball-play, 411f., 413, 665, 686f.; bathing, 687; diet, 412, 584; diet, exercise, health, and medicine, 413; health exercises, 686f.; influence of environment, 413; Mental Affections, 412f.; professional athletics, 749; "Study of the Arts, Exhor-

- Galen (*continued*)
 tation to the," 686; trainer of gladiators, 410; works, 412, translation of, 693
- Galli gladiators, 742
- Gallicus, 358
- Samaliel, Simeon ben, 105
- Samaliel the Second, 105
- Game, wild, in Attica, 276; China, 134; Crete, 203, 205; Egypt, 62; Laconia, 261; Mesopotamia, 77, 89; Mohenjo-Daro, 153, 155; Persia, 187f.
- Games (see, also, children's games, parlor games, sports, and exercises), as education, 34-43; associated with religious rites, 34, 36, 206, 208, 210f., 225ff., 244ff., 261, 265ff., 339ff., 363ff., 483ff., 716ff.; Athenian, 294ff., 305ff., 311ff., 330-62; Chinese, 140ff.; Cretan, 213ff.; Egyptian, 63ff.; established by Numa, 657; gambling, 34, 36, 42f., 69, 213f., 663f., 698f.; gladiatorial, 106, 139f., 210, 229, 397, 611f., 718, 719, 722, 733-43; Hebrew, 109f.; Homeric, 223, 225ff.; in Gaul, 661, 678ff.; in India, 164f.; national Greek, 363-99; North American Indian, 34, 36ff.; of Hercules, 748; Persian, 188ff.; philosophy of Greek, 330-9; Roman, 509ff., 659-68, 704-56; source of, in man, 338; Spartan, 255ff.
- Gautama, 157, 165, 169, 175
- Gelasius, Pope, 566
- Cellius, Aulus, 575, 588, 589, 608, 609
- Cellius, Cnaceus, 475
- Gemara, 109
- Genitor, Julius, 590
- Geography, a factor in culture, 47f., 75f., 111ff., 152f., 198, 274f., 476
- "Geometric" art, 233, 273
- Geometry, in Egypt, 57
- Geranos, 354
- Germania, 320
- Gibbon, on Roman games and Christian influence, 709, 755
- Gilgamesh, 84
- Gladiatorial games, 106, 139f., 210, 229, 397, 484, 611f., 718, 719, 722, 733-43; amphitheaters for, 737; condemned by Hebrews, 106; criticized by Christians and pagans, 753ff.; effect of, on theatrical arts at Rome, 611f.; emperors and, 734ff.; end of, 734; forms of, 741f.; funeral aspects of, 733; how supplied with men, 737ff.; men of rank in, 734, 736, 738; number of, 733; origin of, 733; political significance of, 734f., 742; popularity of, 734ff.; private and public, 734; regulation of, 734; Roman, 397, 733-43; women and, 736f.
- Gladiators', character, 738ff.; courage, 741; diet and medical care, 692, 739; political usefulness, 734f., 742; revolt, 543, 742; schools, 738ff.
- Gniphio, 581, 585, 589, 591, 592, 609
- Gnosticism, and medicine, 694
- Gods, Babylonian, 81f.; Chinese, 112; Cretan, 206, 208, 210f.; effect of beliefs about, 15; Egyptian, 53f.; Etruscan, 481f.; Greek, 220, 221, 417ff.; Hebrew, 96f.; Hindu, 158; Mohenjo-Daro, 153f.; multiple view of, gives way to unitary, 4, 82, 97, 158, 418ff.; Roman, 529ff.
- Goethe, on nature, 15
- "Golden Age," 198, 199, 203, 205, 422
- "Golds," circus faction, 713, 731
- Golf, Chinese, 146
- Good and evil, conflict of, in Mazdaism, 179
- Good life, idea of the, 449ff., 457ff., 472
- Gordian III, 722, 748
- Gorgo, 246
- Government, Assyrian, 77f., 85f.; Athenian, 276ff.; Babylonian, 77f., 85f.; Chinese, 112ff.; Chinese philosophy of, and dancing, music, and sports, 122, 123ff., 128, 131, 132ff.; Cretan, 200; Egyptian, 49; Etruscan, 478f.; Hebrew, 95; Homeric, 217f.; Persian, 177ff.; primitive, 12; Roman, 491ff., 535-70; Spartan, 234ff.
- Gracchan Law, 539
- Gracchi, 497, 540, 541, 542, 544, 545, 549, 560, 563
- Grammar School, Roman, 577, 581ff.
- Gratian, 566, 595, 675; exercises, 661; horsemanship, 677
- Great Bath, Mohenjo-Daro, 154f.
- Great Learning, The, 115, 117, 118
- Great Roman Games, 487, 513, 514, 531, 534, 717, 720
- Greece, freed from Persian threat, 177; public doctors in, 691; social change in, 418ff.; under Roman sway, 539
- Greek, aestheticism and athletic ideal and practice, 334f., 338; athletic indebtedness to Crete, 214f.; athletics and nudism, 336f.; culture in Etruria, 480ff.; dietetic science, 400, 404ff., 412, 684ff.; education and the state, 419, 425-32, 435ff., 448ff., 458ff.; fatalism, 335f.; freedom lost, 391, 398; games, 223ff., 244, 255ff., 305ff., 330-99; gods, 220, 221, 339, 417ff.; grammar schools, at Rome, 577, 581ff.; heroic ideal, 331ff., 365, 374; historiography, 422; ideal of beauty, 467; influence in Roman culture and education, 501, 571-617, 626ff., 646ff., 683ff., 747ff.; lack of unity, 468f.; language, among Hebrews, 107, 108, in Italy, 480, 571f., literary and philological study of, at Rome, 572ff.; life and education, in retrospect,

- 466-72; love of contests, 222ff., 330ff., 363ff.; mean, in athletics, 337f.; medical gymnastics, 400-16; medical science, at Rome, 684-94; Middle Ages, 216; physical culture, 352ff., 575, 655, 747; primitive medical practice, 402; professionalism in athletics, 351-62; sports and religion, 338-51; sports at Rome, 646ff., 747ff.; spread of culture, 470f.; teachers at Rome, 572; traditions, 215, 233ff., 273f., 333f., 339ff., 363ff.
- Greek National Games, 363-99
- Greeks, antiquity of, in Peloponnesus, 215; criticized by Romans, 573ff.; freedom of, declared at Isthmian Games, 391, 398; longevity of the, 335f.
- "Greens," circus faction, 711, 713, 714, 730, 731
- Gregarious tendency in man, 8
- Gregory of Tours, on amphitheatres in Gaul, 756
- Groos, *The Play of Animals and The Play of Man*, 7
- Guilds, athletic, 357ff.; Babylonian, 84f., 94; Chinese, 113; Hindu, 161; Roman, 519f., 561f.
- Gymnasia, 192, 309-15, 648ff., 694
- Gymnasiarch, importance of, in Hellenized Roman world, 649
- Gymnast, 254, 307, 311, 401, 457; as vocational guide, 356f.
- Gymnastics, a science, 354f.; Aristotle on, 452ff., 456ff.; as military training, 244ff., 331, 436, 441; Cicero on, 514, 647, 648, 654, 655, 657, 662; infiltration of, among Hebrews, 105f.; medical, 400-16; Persian, 190ff.; Plato on, 436, 441; Quintilian on, 604, 658, 669; Socrates on, 431f.; Spartan, 244ff., 253ff.
- Gymnopaedia, 266
- Hadrian, 311, 319, 344, 357, 393, 394, 396, 398, 552, 563, 587, 590, 593, 594, 597, 610, 633, 641, 671, 721, 724, 728, 747, 748, 749, 751; and, common bathing, 678; doctors, 692; hunting, 674; spectacles, 713, 735, 738, 745
- Hafiz, 180
- Haltres, 377, 378, 385
- Hambly, on dancing, 23, 28, 31ff.
- Hammurabi, Code of, 80, 84, 88
- Han Lin Yuan, 119
- Han Ming Ti, and Confucian cult, 114
- Hannibal, 514, 525, 536, 537, 538, 586, 659
- Happiness, Aristotle on, 449ff.
- Harappa, 152
- Harmony of mind and body, concept of, in Chinese archery, 123ff.; in Greece and the West, 6; unknown in Egypt, 74
- Harmony of soul, Chinese, 127, 128, 129
- Haruspices, Etruscan, Roman, 482
- Hatchery, Egyptian, artificial, 58
- Hathor, dance of, 73
- Hawking, 673, 681f.
- Health, and, diet, 311, 400, 401, 403; early rising, 403; excessive physical training, 357, 360; housing, 403; physical exercise, 9, 338, 400-16; sanitation, 402, 403; sexual intercourse, 406; Chinese care of, 148; exercise, diet, and doctors, 683-94; gymnastics, 9, 148f., 324, 400-16, 457f., 660; Hebrew care of, 106f., 110; Hippocrates on, 403ff.; in Persian education, 182, 183; Indians', 20
- Hebrew, agriculturists, 96; asceticism, 106; Babylonian captivity, 95; economy, life and education, 94-110; fishing, 98; herds-men, 95; history, 94f.; literacy, 110; magic, 96, 97; medical practice, 106f.; moral, religious education, 96, 97f.; music and dancing, 102ff.; occupations, 98, 104; religion, 96f.; schools, 108ff.; trades taught, 104; warfare, 98ff.; woman and education, 96, 107f.
- Hebrews, Hellenic influence on, 105f.
- Hecateus, 422
- Hecyra, 611
- Heliaca, 278
- Hellas, freed from Persian threat, 177
- Hellen, 276, 366
- Hellenic culture, extension of, 280, 326ff., 470; Hebrews and, 105f.; in Rome, 501, 571-617, 626ff., 646ff., 683ff., 747ff.; traditions, 197, 215, 233ff., 273f., 333f., 339ff., 363ff.
- Hellenization of Roman education, 571-617
- Helos by the sea, 234
- Helots, 235f., 239, 243, 253, 254, 268, 271
- Helvia, 624, 629, 631
- Helvidius Priscus, 552, 575, 615
- Hephaestia, 312
- Heraclitus, 417
- Heracles, 225, 256, 257, 307, 333, 339, 353, 357, 366, 367, 368, 374, 375, 384, 388, 532, 712, 748, 749
- Heraclids, 233
- Heraea, 245, 383
- Herculani, 749
- Hercules, Games of, 748
- Heredity, Principles of, Reid, 7f.
- Hermaea, 309
- Hermippus, 484
- Herodikos, 401, 415
- Herodotus, 67, 73, 76, 80, 92, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 188, 194, 197, 235, 236, 239, 241, 255, 269, 271, 273, 299, 337, 339, 422, 478, 482, 483; concerning, Egyptian cleanliness, 68; gymnastics, 63f.;

- Herodotus (continued)
 priests, 52; land assignment of soldiers, 50;
 Nile's importance, 48; occupations in
 Egypt, 49; religiosity of Egyptians, 53
 Heroic ideal, Greek, 331ff., 365, 374
 Hesiod, 213, 216, 220, 283, 284, 291, 292,
 303, 417, 418, 419, 581, 607, 696
 Hetairai, 298
 Hiawatha, 12
 Hiero, 363, 382
 Hierocles, gymnast, 357
 Highways, 12f., 200, 552, 639
 Hillel, 106
 Himerius, 326
 Hindu society and culture, 156-76
 Hippagretai, 261, 264
 Hippias, 281
 Hippocrates, 357, 401, 402, 403, 415, 688,
 694; concerning athlete's exercise, 406f.;
 bathing, 406; diet, 405, 407; emetics, 406;
 running, 404, 405, 406; sexual inter-
 course, 406; walking, 404, 406; wrestling,
 405, 406; translations of, 693
 Hippodamia, 245, 367, 383
 Hippodamus, 452
 Historiography, and doubt, 422; Roman,
 475, 491, 535, 572, 573
 Historic art, origin of, 483f.
 Ho, father of Confucius, 135
 Holidays, Roman school, 579
 Homer, 197, 200, 211, 215, 216, 218, 219,
 223, 224, 225, 230, 232, 241, 242, 268,
 279, 286, 292, 298, 303, 304, 305, 326,
 332, 358, 365, 369, 373, 417, 419, 435,
 500, 520, 581, 582, 597, 607, 608, 631,
 696
 Homeric, agriculture, 219f.; animism, 220f.;
 children's games, 223; classes, 217f.; com-
 merce, 218f.; cosmology, 220; domestic
 animals, 219; education, 222-32; family
 life, 223; fatalism, 221; fishing, 219, 224;
 funeral games, 225-30; gods, 221; gov-
 ernment, 217f.; heroic ideal, 222f., 226;
 hunting, 219, 224; industry, 218, 219,
 220; law, 217, 221; life and education,
 216-32; literacy, 222; love of sport, 230;
 poems, 216, 345; religion, 220f.; slaves,
 218; sports and religion, 225; sports, aristo-
 cratic, 225ff.; sports of commoners, 232;
 violence, 216ff.; women, 218
 Honorius, 546, 566; abolishes gladiatorial
 games, 755
 Hoplomachy, 255, 484
 Horace, 496, 497, 502, 507, 511, 512, 516,
 550, 556, 567, 575, 576, 577, 580, 581,
 583, 587, 588, 591, 592, 597, 607, 608,
 626, 661, 668, 683, 697; concerning ball-
 game, 665, 685; effect of wealth, 696,
 698; games and dramatics, 705; gladia-
 torial contests, 719; Greek pastimes, 654;
 horsemanship, 676; hunting, 675; pov-
 erty, 698; soldierly exercises of Romans,
 654; swimming, 670f.
 Horatius, 512, 521, 671
 Horse, in China, 112; Crete, 200, 203;
 Egypt, 60, 61; Homeric world, 219; Italy,
 486; Mesopotamia, 86, 87, 88; Sparta,
 244f.
 Horsemanship, Chinese, 122; Etruscan,
 486ff.; Hindu, 165-71; Homeric, 230;
 Mesopotamian, 90f.; Persian, 183; Spar-
 tan women's, 244f.
 Hortensia, 626, 628, 630
 Hortensius, 624, 674, 724
 Housing, Aristotle on, 403 (see, also, dwell-
 ings)
 Huang Ti, 111, 112, 139, 140, 142, 148
 Humanity, concept of a common, 423
 Hunger, motive force, 24; native tendency,
 8
 Hunting, 4; apprenticeship, 20f.; Buddhist
 strictures on, 172; Chinese, 112, 132ff.,
 149; Cretan, 200, 203ff., 210; dances,
 24ff.; Egyptian, 61f.; Homeric, 224; in
 India, 172f.; learned through games, 35,
 36; magic, 15, 24ff.; measure of kingly
 quality, 187; Mesopotamian, 88ff.; parks,
 90, 188, 674; Persian, 183, 184ff.; Roman,
 663, 665, 673ff., 700; Spartan, 261ff.;
 taught by primitives, 21; training for war,
 185ff., 462f.
 Hyacinthia, 266
 Hydrotherapists, 689
 Hygiene, and dancing, 23f.; Babylonian, 92;
 Chinese, 140f., 148f.; Egyptian, 67f.;
 Greek, 400-16; Hebrew, 106f.; in India,
 154f., 164; Persian, 193f.; Roman, 683-94
 Hyginus, 581
 Hyksos rule, 59
 "Hymn to Apollo," 225
 Hyporchema, 266
 Hysmon, 415
 Iamblichus, 427
 Iberian script, and Cretan, 201
 Ibycus, 581
 Iccus, 354
 Iliad, 220, 226
 Ilium, 198
 Illumination of Bel, 84
 Imitation, learning by, 21f., 29ff., 35, 57
 Immortality, 54, 158, 569f.
 Implements, significance of improved, 5, 12
 Inca, dice games, 42; diet, 11; dwellings, 13;
 fertility dances, 27f.; games, 35; initiatory
 ceremonies, 19f.; roads, 13
 India, 4, 177, 198; Aryan culture in, 156-76;
 classes in, 5, 157ff.; dancing in, 173ff.;

- education in, 162ff.; Mohenjo-Daro and the Indus civilization, 152ff.; religion in, 153f., 158ff.; writing in, 154, 157
- Indian, American, California, 10; clothing, 11; Delaware, 20, 21; dwellings, 13; gambling, 42f.; games, 34ff.; string games, 41f.
- Indian nationalism, and revival of physical culture, 163
- Individual and society, at Athens, 274, 285, 287ff., 425-32, 434-65; Rome, 506f., 511f.
- Individualism, in Mazdaism, 179
- Indus River civilization, 152ff.
- Industries, Babylonian, 80; Chinese, 112f.; Cretan, 200; Hindu, 160f.; Mohenjo-Daro, 153; Roman, 505f., 561f.
- Infantry, Assyrian, 86, 88; Athenian, 330; Egyptian, 60f.; Hindu, 171; Persian, 185; Roman, 633, 638; Spartan, 265
- Informal and formal education among primitives, 15f.
- Informal education, Athenian, 293ff.; Babylonian and Assyrian, 84-94; Chinese, 118; Hebrew, 97-108; Homeric, 222ff.; Persian, 181; Roman, 503ff., 515f.
- Initiatory rites, 16; among Arunta, 17ff.; and dancing, 23, 24
- Instincts, divergent views of, 8
- Institutio Oratoria, 503, 602ff.
- Integration, failure of, in Etruria, 479; in Greece, 468ff.; Roman, 545f.
- Intelligence, and social direction, 422; failure of political, in Greece, 469, 471f.
- Invisible world, primitive interest in, 14f.
- Ionians, 366
- Iphitus of Elis, 368, 376, 379
- Iran, climate of, 178, 180; life and education, 177-94
- Iron, in Greece, 233; in Italy, 477
- Iroquois, love of dice, 42f.; war dance, 28f.
- Irrigation, Babylonian, 76; Egyptian, 49
- Isacus, 605
- Ischomachos, 332, 463
- Isis, 54, 567
- Islands of the Blest, 54
- Isocrates, 242, 286, 315, 316, 317, 326, 352, 360, 369, 470, 574; on Spartan culture, 241
- "Isthmian Discourse," 361
- Isthmian Games, 361, 362, 369, 388-93, 749; boat races, 389; popularity of, 389ff.; prizes, 392; regulations, 391; religious import of, 388; Romans at, 391, 536; *theoria* from other cities at, 391; traditional founding, 388; truce, 391; venality at, 356, 381, 391, 751, 752
- Italian, agricultural products, 476; cattle raising, 515; domestic animals, 476, 515; geography and empire, 476; Indo-Europeans, 477; "Mediterraneans," 477; natural resources, 476f.; primitive culture, 477, 479; stone age culture, 477; unification, 479, 491ff., 536; Villanovan culture, 477f.
- Italy, Greek influence in southern, 647
- Jen Hsiao, 119
- Jerome, St., 101, 535, 609, 629; on Paula's education, 627; on teaching writing, 579
- Jesus, 562, 754
- Jeu de Poie, 42
- Jinjitsu, 140, 190
- Job, 101, 102, 106
- Josephus, 98, 105; on Roman military training, 637f.
- Jugurtha, 521, 543, 583
- Jugurthine War, 542
- Julia Domna, 629
- Julian, 388, 391, 595, 636, 672, 693
- Jupiter, 514, 531, 532, 533, 534, 717, 722, 748
- "Justice of war," defended, 499
- Justin, and games, 745, 756
- Justinian, 546, 595, 625, 632, 693, 756; and games, 724, 728, 731, 745
- Juvenal, 559, 563, 576, 578, 582, 587, 590, 592, 608, 613, 621, 623, 624, 663, 698, 730; concerning country life, 700; games, 726; learned women, 631; rich and poor, 685f.; Roman wealth and poverty, 697; town and country life, 662, 685f.; vice, 702; women at games, 736; women's physical exercises, 669, 677f.
- Juvenalia, 723
- Juvenile Instructor, 118
- Juventus, 642; and Troia, 644
- Kassites, 76
- Kayan, clothing, 11; customs at death, 33; delivery dance, 28
- Khassia dance, 176
- "King's Eye," 178
- Kinship, human and sub-human, 26; Melanesian, Polynesian ideas of, 17
- Kiwais, death and burial among the, 33
- Knossos, 198, 199, 201, 202, 205, 209, 211, 215, 216, 233
- Knowledge and virtue, 117f.; Socrates on, 429, 434
- Kong Fu, and the Swedish system, 148f.
- Kshatriya, duty and privilege, 159, 160, 162, 167; training, 165f.
- Kwei Chunk Fu, on daughters, 114
- Kynosarges, 310
- Labor, apprenticeship, in Babylonia, 84f.; Egypt, 58f.; as physical exercise, 9, 163; children's, 14; contempt for, in Persia,

- Labor (continued)
 180; decline of respect for, among Hebrews, 109; division of, 13f.; education for, in Athens, 327ff.; on the land, in Italy, 515ff.
- Laboring class, 4, 5; Athenian, 281ff.; Babylonian, 80, 84f.; Chinese, 112; Egyptian, 50f.; Hindu, 159, 160f.; Roman, 515ff., 559ff.; Spartan, 235f.
- Laconian hunting-dogs, 238, 261f., 675
- Laconizing tendency, 458f.
- Lacrosse, described by Catlin, 38ff.
- Lactantius, 554
- Lakish, Resh, 105
- Lampadarch, 312
- Lampadedromia, 310
- Lampito, 245, 246
- Lampridius, 535, 679
- Lamprikos, 301
- Land, ownership and policies, Athenian, 277ff.; Babylonian, 78; Chinese, 112; Egyptian, 49, 53; Roman, 515, 541, 553, 559ff.; Spartan, 239
- Lanista, 485
- Lao Tse, 120
- Lartna, 18
- Latin, classics in Roman schools, 582; grammar schools at Rome, 580ff.; language, development of, 608f.
- Latin League, 491, 493, 495
- Latins, Umbrians, called Greek, 478
- Latium, 478, 479, 491, 493, 494, 497
- Law, Athenian, in education, 303, 318; Babylonian, 80, 84; Homeric, 217, 221; Lycurgus', 234ff., 240; Roman, 493, 504, 526ff., 539, 549, 552, 557, 579, 594f., 701, 702; Solon's, 278, 290, 299; study, banned at Athens, 595
- Laws of Manu, 159, 161, 162, 164, 167, 175
- Laws, Plato's, 432; social and educational ideas in, 439-45
- Leander, 231
- Learning, praised in Egypt, 52
- Lebanon, 200
- Legal training, decline of, at Rome, 528f.
- Leisure, Athenian, 290, 328, 418; Cicero on, 606; Egyptian, 55, 57, 418; Roman, 556ff., 695-716; significance of, 16; Spartan, 236f.
- Leisure class, decrease of physical activity in, 20; Egyptian, 49; Hindu, 158f.; luxury and ill health of, 400, 684f.; Roman, 556f.; Spartan, 236
- Lentulus Batiatius, gladiatorial school, 742
- Lentulus, on war policy, 499
- Leptinus and Calpenus, in gladiatorial combat, 736
- Letters and literature, Athenian, 298, 300, 304f., 363ff., 417ff.; Babylonian, Assyrian, 82ff., 91; Chinese, 112, 115, 117, 118, 119, 120; Cretan, 201; Egyptian, 47, 55ff.; Hebrew, 108; Hindu, 162f.; on polo, 188f.; Persian, 180, 181; reflect propitiatory practices, 15, 54; Roman, 526ff., 571-89, 596-617, 626-31
- Leucippus, 421; Order of the Universe, 422
- Lenctra, 234, 236, 248, 265
- Li Ki, 112, 116, 117f.
- Libanius, 326, 554, 590, 592, 672; on life at Athens, 588f.
- Liberal education, 598, 601, 606f., 609; and health, 400; Aristotle on, 290; Athenian, 289ff., 300, 418; Chinese, 118, 120ff., 132; Cicero on, 598ff.; conflict of, and professional training, 6f., 290f., 606f.; divorce of, from life, 606f., 609; Egyptian, credited by Aristotle, 57, 286, 418; Plato on, 290, 400, 435ff.; Quintilian on, 601ff., 606; Seneca on, 606f.; Varro on, 598
- Liberty of the Romans, 497
- Libraries, Babylonian, 82, 83; Roman, 581, 587, 593, 609f.
- Licinian Law, 541
- Life and education, unity of, in Homeric world, 222; in primitive society, 15ff.
- Life to come, Hindu concept of, 160; Homeric, 221; Persian, 179; Roman, 569f.
- Ligurians, 477, 478
- Ling's gymnastics and Kong Fu, 149
- Lion-hunting, Assyrian, 88ff.; Cretan, 205
- Literacy, Hebrew, 110; Homeric, 222; Roman, 610; Spartan, 241f.
- Literary education, and priests, 5; Athenian, 298ff.; Babylonian, 82ff.; Chinese, 116ff.; Egyptian, 55ff.; Hindu, 162f.; Roman, 526f., 571-617, 626-31; Spartan, 241ff.
- Literati, Chinese, 119f.
- Livy, 389, 390, 393, 394, 475, 476, 481, 483, 485, 487, 488, 491, 494, 497, 526, 527, 532, 535, 537, 547, 623, 638, 648, 683, 717, 718, 719, 720, 723, 729; on Apollo cult and health, 683
- Longevity, Greek, 335f.; of athletes, 358
- Loskiel, on Indian gambling, 42
- Lot-games, 42f.
- Lucan, 535, 565, 582, 613, 615, 624, 628; on swimming, 671
- Lucian, 300, 392; on athletic ideal, 332f.
- Lucilius, 502, 582, 614, 659, 670
- Lucretius, 473, 501, 531, 569, 622; on, effect of circus games, 708; Roman quest of pleasure, 699; war and wealth, 696
- Lucullus, 609, 610, 614; extravagance of, 699, 700
- Ludi, origin and growth of, 716-28; Apollinares, 720, 725; Augustales, 721, 725; Cereales, 720; Florales, 720; Magui, 487, 513; Martiales, 551, 711, 721, 744;

- Megalencscs, 720, 729, 730; *Natalicii*, 721; *Novendiales*, 718; *Palatini*, 722; *Parthicii*, 722; *Plebcii*, 720, 725, 729; *Privati*, 722; *Romani*, 534, 717, 720, 723, 724, 725, 729, 747; *Saculares*, 711, 721; *Tarentini*, 566; *Victorice*, 720; *Victorie* *Caesaris*, 720
Ludus castellorum, 510
Lupercalia, 534, 727
Luxury, Athenian, 281, 283, 347; Etruscan, 490; evils of, 428, 434, 683ff.; Roman, 695-704
Lyceum, 310, 325
Lycurgus, 234f., 236, 237, 238, 239, 240, 241, 243, 244, 246, 253, 254, 259, 261, 265, 269, 271, 276, 298, 348, 368, 372, 376, 459, 657
Lydia, 177
Lydians, 197, 478, 482
Lyons, medicine at, 692
Lysistrata, 293

Maccabees, 95
Macrobius, 485
Maccenas, and, ball-play, 660, 665; baths, 672; economy in athletics, 751; games, 725
Magi, 179, 181, 194
Magic, in medicine, Christian, 694; Egyptian, 68; Greek, 402; Persian, 181; primitive, 31ff.; Roman, 683, 688, 693f.
Magna Mater, 720
Mahabharata, 167
Majorian, 551, 555
Man, and happiness, 449ff.; measure of all things, 438f.; part of nature, 422f.; political animal, 450
Mandan, buffalo-dance, 15, 24ff.; game of *Tchung-kee*, 37f.; sham battle and scalp-dance, 29ff.
Manilian Law, 564
Manipulation, tendency to random mental and physical, 8
Mantincan gladiatorial combats, 484
Marcellus, 581
Marcellus Empiricus, 693
Marco Polo, in China, 113
Marcus, Cicero's son, 587, 588
Marcus Andronicus, 581, 589
Marcus Antoninus, 585, 594
Marcus Pomponius, 584
Marius, 498, 522, 523, 539, 540, 541, 542, 557, 574, 632, 634, 699
Marriage, Athenian, 291f.; Babylonian, 81; Chinese, 114, 118; Cretan, 199; Egyptian, 52; Hindu, 161f.; Persian, 181; Roman, 503f., 530, 552, 618ff.; Spartan, 239
Mars, 475, 491, 497, 513, 520, 533, 644, 646, 669, 719, 721
Martial, 496, 559, 576, 579, 591, 611, 623, 627, 630, 631, 653, 677, 678, 685, 705, 713, 732, 745, 747; concerning ball-play, 664, 666, 667, 668; country pleasures, 662, 675, 686; doctors, 689, 690, 691; Domitian's revival of boxing, 669; exercises, 668; games and day's routine, 661f.; poverty at Rome, 697f.; swimming, 671; wrestling grounds, 654, 670
Masillia, medicine at, 691, 692; philosophy at, 587
Massage, practiced in India, 164
Mataeo Indian cane-dance, 27f.
Mathematics, Babylonian, 84; Chinese, 118, 121, 122; Egyptian, 57, 73; Hebrew, 108; Hindu, 162; Roman, 502, 580, 598, 603
Mating tendency, 8, 9; and dancing, 23f.
Maturity, primitive, 21f.
Mauricus, on Greek athletics, 747
Mayan, hunting dances, 24; *pok-ta-pok*, 35
Mazdaism, 178ff.; and war, 179
Mean, Buddhist, 165; Chinese, 115, 118, 133f., 139; in Greek athletics and education, 337f.; in respect to diet, 408; theory of, 426, 428, 429, 448, 453, 455f.
Media, 177
Medical, ceremonies and magic, 13, 19, 31ff., 68, 181, 402, 683, 688, 693f.; decline, at end of Roman Empire, 693f.; gymnastics, 148f., 324, 400-16; practice, Hebrew, 106f.; quarantine, 107, 693; schools, Roman, 692f.; science and philosophy, Greek, 400-16; training and practice, Egyptian, 57, 67f.; treatises, Babylonian, 84
Medical profession, and dietetics, 403ff., 427, 684f.; and social status, 689; charlatans in, 691; decline of, 693f.; extreme remedies of, 690; oath of, 693; profitable, 689f.; quality of, 690f.; Roman, highly specialized, 689; services of, free for poor, 692, 693; various schools of the, 689
Medicine, at Rome, 688-94
Mediterranean race, 198, 477
Megalesian Games, 566
Megasthenes, 157, 159, 161, 164, 165, 170, 171, 172
Melancian, clothing, 11; kinship, 17
Melissus, 581, 589
Melitus, 429
Melleircns, 250
Memorization, as method, 58, 109, 118f., 163, 304, 527
Memory training, Hebrew, 109
Menander, 326, 371, 500, 581, 608, 627
Mencius, 119
Mental and physical education, balance of, Aristotle on, 453ff.; in Athenian practice,

- Mental and physical education (*continued*)
 289, 298-315; in China, 118, 121, 132, 146; Plato on, 441ff.; Socrates on, 431f.
- Mental discipline, Aristotle on, 455f.; Hcbrew, 109; Plato on, 437f.; Quintilian on, 603
- Mental education (see education)
- Merchants, Athenian, 281f.; Babylonian, 78; Chinese, 112; Cicero on, 502; Cretan, 200; emergence of, 5; Hindu, 159, 160; Plato's view of, 432, 440; Roman, 562, 564f.; Spartan, 236
- Mercury, 533
- Merneptah, 215
- Merodach, 77, 78, 81f.
- Mesopotamian, agriculture, 75, 77, 79; culture, rediscovered, 75; education of work and play, 84-94; government, 77; neolithic culture, 3; occupations, 80
- Metals, used by, Assyrians, 80; Athenians, 273, 276; Chinese, 113; Cretans, 198, 200, 202ff.; Dorians, 233; Egyptians, 48; Etruscans, 477, 479; Hindus, 161; Mohenjo-Daro, 153, 156; Romans, 519, 562
- Metellus Numidicus, 619
- Metempsychosis, Hindu concept of, 158; in Plato, 427, 569; in Pythagoras, 426; in Virgil, 569
- Method of teaching, alphabetic, 304; apprenticeship, 20ff., 441 (see, also, apprenticeship); imitation, 21f., 29ff., 35, 57, 579; individualized, 305; memorization, 58, 109, 118f., 163, 304; play as a, 437, 442, 455, 579; writing, 579f.
- Methodists, medical, 689
- Metz, beast baiting at, 756
- Micah, 97
- Militarism, and Persian sports, 188; Chinese opposition to, 120, 139; Persian, 177ff.
- Military displays, at Athens, 347f.; at Rome, 718, 729, 746
- Military training, Aristotle on, 451, 458; as physical culture, 9; Athenian, 315-27, 330ff.; Chinese, 120, 121, 122; Egyptian, 50ff.; Hindu, 165-72; Mandan, 29ff.; Persian, 182-8; Plato on, 436f., 442f.; Roman, 520-6, 632-45; Spartan, 244f., 248-72
- Millenary Classic, 118
- Milo of Crotona, 331
- Mind and body, balance of, in Greek education, 6, 289, 298-315, 431f., 441ff., 453ff.; opposed by Christian ascetics, 6 (see mental and physical education, balance of)
- Mind, Aristotle on, 456; enriched by letters, 6; injured by excessive physical exercise, 359f.; inseparable from body, 9, 16, 569
- Minerva, 481, 533, 592, 675, 748
- Minoan, collapse, and fusion with Hellenic culture, 215; life and culture, 197-215; trade, 199
- Minos, 199, 200, 210, 230
- Minucius Felix, on spectacles, 753
- Miriam, 96, 102
- Mishna, 109
- Mithraism, at Rome, 567
- Mithridates, 498, 564
- Mixolydian music, 456
- Mohammedanism, 179
- Mohammedans, in India, 157
- Mohenjo-Daro, and the Indus civilization, 152f.; agriculture, 152; antiquity of, 152; architecture, 152, 154f.; art, 153, 175; bath, 154f.; cereals, 153; dancing figure, 175; domesticated animals, 153; folk, 152; hunting and fishing, 155f.; industries, 153; religion, 153f.; script, 154; wildlife, 153, 155
- Monasticism, Buddhist, 141, 148, 163, 164; Chinese, 114
- Monogamy, 114
- Monotheism, Babylonian, 82; Christian, 754; Greek, 421; Hebrew, 96f.; Hindu, 158
- Mora, 663, 664
- Moral codes and education, Athenian, 287, 289, 294, 296; Chinese, 116ff.; Egyptian, 53f., 57f.; Hcbrew, 97f.; Hindu, 162; Homeric, 222; Persian, 181f.; Roman, 503-9, 575, 576, 577; Spartan, 239f.
- Morality, Egyptian standards of, 54
- Moses, 95, 97, 102, 106
- Mothaces, 250
- Mother Goddess, Cretan, 199, 206, 208, 210f., 214; in India, 154; in Rome, 531, 720
- Mother Matuta, 531
- "Mountain Chant," 32f.
- Mummus, 391, 398
- Musca, 309
- Music, Aristotle on, 455f.; Chinese, 122, 123, 124, 127ff.; Cretan, 211f.; Dorian, 456; Egyptian, 69f., 72; Hcbrew, 102ff., 107; Hindu, 175; Homeric, 223; Mesopotamian, 90, 92ff.; Mixolydian, 456; Persian, and the chase, 188; Phrygian, 456; Plato on, 435f.; Pythagoras on, 426; Spartan, 243, 267
- Music and dancing, Athenian, 301, 302, 303, 309; Chinese, 118, 121, 122, 126ff.; Cretan, 211f.; Egyptian, 69ff.; Etruscan, 483f.; Homeric, 231f.; in India, 173ff.; Roman, 628f., 654f.; Spartan, 245f., 265ff.
- Music school, Athenian, 298ff., 424
- Musonius, 501, 575, 593, 616, 630
- Myccnae, 198, 199, 201, 204, 205, 212, 216, 233

- Mycenaean Age, 215ff.; end of, 233
 Myron of Priene, 233
 Mythaeus, cook, deported from Sparta, 252

 Naevius, 582
 Nalanda University, 163
 Namatianus, on persistence of Roman circus games, 730, 756
 National Festivals of Greece, 363-99; Christian effect on, 398f.; failure and decline, 395ff.; influence of, on unification, 368ff., 398; phases of, 369f.; Roman influence on, 391, 396ff.; spread of, 395ff.
 Natural phenomena, and, enquiry, 14; religions, belief and practice, 16ff., 81f., 96f., 158, 178, 481, 529ff.
 Natural resources, Athenian, 274ff.; Babylonian, 77; Cretan, 200; Egyptian, 48; Mesopotamian, 77; Roman, 476f.
 Naturalism, influence of, on views of sport, 7f.
 Nausicaa, 223
 Nautch dancers, 176
 Navaho "Mountain Chant," 32f.
 Naval games, 722, 745f.
 Naval power, Athenian, 277, 280, 330; Cretan, 198, 202; Roman, 526, 634f., 638
 Nazianzus, Gregory, 588
 Nearehus, 173
 Nebuchadnezzar, 82
 "Negative Confession," 52, 54
Nei Zeh, Pattern of the Family, 118, 119, 122
 Nemean Games, 369, 392ff., 751; control, 393; events, 393, 394; funereal origin, 392; music, 394; popular, 393; Romans at, 394f.; rules, 395; truce, 395
 Neolithic culture, 3, 198f., 273, 477
 Nepos, 605, 628, 654
 Neptune, 481, 514, 533
 Nero, 389, 391, 545, 551, 553, 559, 578, 597, 605, 614, 615, 620, 630, 644, 649, 651, 652, 655, 658, 661, 670, 675, 692, 698, 703, 715, 716, 717, 719, 722, 723, 727, 729, 739; and spectacles, 711f., 731, 734, 736, 737, 738, 744, 746, 747, 748; extravagance of, 699
 Neronia, 721f., 748
 Nerva, 552, 553, 563, 594, 635; and games, 725
 Nestor, 226
 "New education," Athenian, 285, 288, 420, 465; Roman, 507, 571-617, 704ff.
 New Guinea, agricultural dances, 27
 Nicaea, gymnasium at, 649
 Nicanor, 581
 Niccratus, 305
 Nicostratus, 658
 Nile, influence of, on Egypt, 47, 48, 54
 Nimes, medicine at, 692
 Nimrod, 98
 Nineveh, 85, 177; library, 83
 Niuib, 81
 Ninus, 88, 89
 Nizami, 180
 Nobilior, and venationes, 743
 Nola, 478
 Nomadism, gives way to settled life, 4; of Hebrews, 95
 Nudism, and Greek sports, 336f.
 Numa, 516, 519, 520, 525, 530, 531, 533, 561, 566, 657, 719

 Oannes, 82
 Obedience, Athenian, 301; Chinese, 116, 136; Hebrew, 109f.; Hindu, 159f.; Persian, 181, 253; primitive, 18; Roman, 520, 523, 640f.; Spartan, 240; woman's, Aristotle on, 451; Xenophon on, 459, 460
 Occupations, Athenian, 283f., 287, 291, 292, 300, 301, 307; Babylonian, 80; Chinese, 112f.; Cretan, 199, 200; Egyptian, 49ff., 58f.; Etruscan, 476f.; Hebrew, 104f., 107f.; Hindu, 157, 159, 160f.; Mohenjo-daro, 153, 155f.; Persian, 179f., 182f.; primitive, 11, 12f., 121; Roman, 515ff., 520ff., 545f.; Spartan, 243f.
 Octavian, 544, 620
 Octavius Teucer, 581
 Odes, 115, 119
 Odes for Children, 118
 Odoacer, 546
 Odysseus, 217, 220, 223, 225, 228, 229, 231, 232
 Odyssey, 220, 503, 579
 Oeconomus, 463
 Officials, importance of educated, in China, 116, 117, 118, 124
 Oklasma, dance, 192
 Olympic festival, at Rome, 723
 Olympic Games, 215, 245, 363, 366ff., 374-86, 751; abolished, 375, 399; administration, 375f., 379f.; aristocracy and democracy in, 370f.; events of the, 377ff.; Hellanodicae, 376, 379ff., 384, 395; Hera cult at, 383; influence on other festivals, 386, 391, 395ff.; nudism at, 337; oaths, 380; political significance of, 369ff.; prizes, 383ff.; strict standard at, 749; training for, 380; venality at, 381f.; victors, injured by excessive training, 338, 454; women at, 382f.
 On the Art of Horsemanship, 463, 464
 Onomacritus, 418
 Onondagas, mythical patron of, 12
 Opheltas, 392
 Opilius, 573, 581, 585
 Opinion and knowledge, 429, 438f.

- Oppian Law, 701
 Oppius Chares, 581
 Orator, abilities and education of, 596-605
 Oratory, aim of, 596f., 602; decay of, 602, 605; difficulty of, 599f.; the parts of, 599, 604
 Orbilius, 581, 591
 Orbilius Pupillus, 592
 Oribasius, translated, 693
 Origin myths, and Indian games, 34
 Origins of education, 1ff., 10
 Ormazd, 178ff.
 Orosius, 475
 Orphism, 417f., 426, 427, 428
 Orsippus, first nude runner, 337
 Osage, skill in bowmanship, 21
 Ostia, Court of, 54; gifts of, 49, 53f.
 Ostia, port, 538
 Otho, 551, 654, 699; uses gladiators as soldiers, 742
 Ovid, 351, 387, 496, 497, 500, 510, 520, 581, 587, 608, 620, 621, 624, 627, 628, 630, 671, 697, 719; on riches, 696; on women's recreations, 663, 677, 715
 Ovinian Law, 493, 620
 Oxylyus, 366, 368

 Pacifism, in Chinese religion, 139; lack of, in Athenian life, 331
 Pacuvius, 582
 Paeonius, 590
 Pagan, criticism of spectacles, 753; worship restored by Augustus, 567f.
 Paidagogos, 301, 577
 Paidotribic, 254, 307, 311, 322, 401, 457f., 486
 Palace of Minos, 200, 202, 210
 Palacmon, 578, 581, 589, 592, 601, 609, 631
 Palacstra, Athenian, 298, 300, 305ff.
 Palatine Library, 581
 Paleolithic man, in Italy, 477
 Panathenaea, 312, 344-51, 370, 723; Augustus holds contest at, 648
 Panathenian Procession, 291, 350f.
 Pancratic contest, described, 378f.
 Pandora, 291
 Panctius, 596
 Papuans, as boat builders, 12, 21; foods of, 11
 Papyrus, 201
 Parentalia, 485
 Pariahs, 160
 Parilia, 721
 Paris, 223
 Parishads, 163
 Parlor games and minor amusements, backgammon, 42, 661, 664, 680; bean shooter, 36; board game, 76, 156, 213f., 656, 663, 664, 679, 680, 686, 698; bull-roarer, 36; "buzz," 36; caribou, 42; "carrying wood," 42; cat's cradle, 36; chess, 660, 664, 665; cockfighting, 42, 142, 144; "crow's feet," 42; dice, 36, 42f., 69, 76, 156, 164, 309, 614, 661, 679, 685, 699; draughts, 69, 664; drawing figures, 164; "dressing a skin," 42; gambling, 42, 663, 677, 697, 698; "game of the vase," 69; games of chance, 34, 36, 68f.; guessing games, 164; "hogan," 42; "hoop and pole," 34, 36; hoops, 64, 298, 654, 660, 677; jeu de l'oie, 42; khalkismos, 296; knucklebones, 663; kollabismos, 69; kottabos, 296; "lightning," 42; lot-games, 42; ludus duodecim scriptorum, 664, 679f.; ludus latruncularum, 664; "many stars," 42; marbles, 164; micarc digitis, 663, 664; mimicking actions, 164; "mocassins," 42; mora, 69, 90, 94; mingala, 69; "odd and even," 69, 309, 663f., 699, 703; "owl," 42; pachisi, 42; patolli, 42; "pavement" game, 214; pawns, 76; pebble game, 296; petteia, 296; "pitching a tent," 42; "plum-stones," 42; polis, 296; popgun, 36; "robbers," 664; shuttlecock, 36; skittles, 69; "snake-game," 69; somersaults, 64; spinning tops, 69; sticks, 36; string-games, 42; swinging, 36, 145, 150; tables, 42, 482, 664; teaching birds, 166; "threading a closed loop," 42; tipcut, 36; tops, 36; training cocks and quails, 166; tricks, 469; trictrac, 42; trumpet blowing, 164; "two hogans," 42; "war on bees," 36
 Parmenides, 334, 417
 Parthenia, 266
 Parthian War, 545
 Particularism, Attic, 276f.; Egyptian, gives way to central authority, 49; Roman progress from, to unity, 491ff.
 Patricians, 492, 493, 540, 549
 Patriotic sentiment, emergence of, 4; in Greek education, 238f., 287ff., 319, 419; in Roman education, 506ff., 521f.
 Patroclus, 223, 225, 226, 230, 256, 363, 383
 Paul of Aegina, on construction, 627
 Paula, 579, 627, 629
 Paulina, 624
 Paulinus Pellacus, 682; on love of riding, 677; on sports and health, 673f., 688
 Pausanias, 203, 230, 233, 245, 253, 256, 261, 299, 323, 326, 337, 351, 353, 355, 368, 375, 381, 382, 384, 385, 391, 393, 394, 395
 Pavlov, on "conditioning," 8
 Pax Romana, 352, 535, 545, 634
 Peace, aim of education, says Plato, 445; aim of war, says Aristotle, 451; held demoralizing by Romans, 499, 500; Mazdaism and the arts of, 179f.

- Pelasgians, 197, 273
 Pelcus, 222, 230, 288
 Peloponnesian War, 280, 281, 469
 Peloponnesus, Greek arrival in, 215
 Pelops, 367, 368, 374, 383
 Pen and ink, at Athens, 290; in Crete, 201
 Penates, 481
 Penelope, 223, 292, 607
 Penn, ou Delawarcs, 20, 21
 Penstoning of athletes, 358, 751f.
 Pentacosimedimni, 281
 Pentateuch, 108, 109
 Pergamos, gymnasium at, 312
 Pericles, 280, 281, 282, 287, 289, 293, 310, 316, 327, 344, 345, 467, 468, 601
 Perigrinus, 616
 Periodoneikes, 358
 Perioeci, 236, 239, 271
 Persia, threat of, to Greece, 4, 331, 468
 Persian, agriculture, 180; cavalry, 185; child care, 181; climate, 178, 180; commerce little developed, 180; concubinage, 181; dancing, 192f.; diet, 184; education, 181-94; fishing, 188; government, 177f.; hunting, 184ff.; literature, 180; military training, 182-90, 459ff.; moral and mental training, 181f.; people, 180f.; physical culture, 182-94; polo, 188ff.; religion, 178ff.; rise and fall, 177; sanitation, 180; women's position, 180f.; wrestling, 190ff.
 Persius, 589, 608, 613, 614, 615
 Pertinax, 552, 714, 725
 Peruvian corn-dance, 27
 Pescennius Iacchus, 581
 Petric, on Hebrew writing, 108
 Petronius, 559, 575, 608, 613, 623, 661; concerning, ball-play, 666; spectacles, 709; wealth and luxury, 703
 Phaeccians, dancing at court of, 231
 Phaedrus, 587
 Phaedrus, 335
 Phacstos, 200
 Phallic dances, 28
 Phayllus, 331, 377
 Phcidippides, 749
 Phcidon, 369, 375, 393
 Pheraulas, 461
 Phereclike, 337, 382
 Phidias, 252, 467
 Philip, and spectacles, 745
 Philip of Macedon, 87, 280, 317, 370, 373, 395, 536
 Philippeum, 370
 Philiscus, 575, 629
 Philo the Academic, 587
 Philologus, 573, 581
 Philology, 84
 Philopoemen, 257, 263, 269, 371, 394
 Philosophers, banned at Rome, 575, 584
 Philosophic class, to be trained for government, 437ff.
 Philosophical naturalism, 422f.
 Philosophy, and, athleticism, 420, medicine, 402f., personal virtue, 616; emergence of, in Greece, 417ff.; Hebrew study of, 108; in Athens, 325, banned, 595; in Babylon, 84; in orator's training, 601; in Rome, 552, 597; leading to the stars, 615; of Chinese, archery, 123ff., dancing, 126-31, football, 144, music, 123, 124, 127ff.; of education, quest for, in Greece, 6, 417-65; of Greek physical training, 330-9; of physical culture, Greek and Roman, compared, 655ff.; of war, Hindu, 167ff.; Persian, 179f.; Roman, 497ff.; Roman attitude toward, 575, 584, 614f.; source of, 14; Spartan, 238ff.
 Philostratos, 248, 256, 257, 258, 259, 307, 311, 312, 324, 331, 336, 337, 338, 353, 354, 355, 356, 358, 377, 380, 381, 385, 386, 391, 401; Concerning Gymnastics, 410; on decay of athletics, 749
 Phoenicians, and letters from Crete, 201
 Phoenix, 222, 223, 227
 Phrygian music, 456
 Physcon, 245, 383
 Physical cult, failure of, at Athens, 398, 467
 Physical culture, Aegaeo-Cretan, 202-15; and health, 338, 400-16, 685ff.; and primitive activities, 22, 163; Athenian, 298, 300, 305-29, 330ff., 351f., 467; Babylonian, 84-94; Chinese, 120-51; Cicero on, 655ff.; Cretan, 202-15; Egyptian, 58-74; Etruscan, 482ff.; evils of excessive, 357; Greek, at Rome, 646ff.; Hebrew, 98-106; Hindu, 163-76; historical phases of, 9; Homeric, 222-32; India's revival of, 163; Persian, 182-94; primitive, 7, 19ff.; purposeful, needed in complex industrial society, 22; Quintilian on, 658; Roman, 511ff., 515ff., 520ff., 632ff., 646-94; Sallust on, 657f.; Socrates on, 431f.; Spartan, 244-72; Spartan girl's, 244ff.; Western revival of, 6
 Physician, man his own best, 403
 Physicians, and health at Rome, 683-94; apprenticeship of, Egyptian, 57; at gladiatorial schools, 692; Greek, 400ff.; Hebrew, 106f.; schools and privileges of, at Rome, 691ff.
 Physiognomy, Aristotle on, 454
 Pictor, Quintus Fabius, 475
 Pindar, 224, 226, 243, 303, 334, 335, 339, 341, 352, 358, 363, 367, 373, 377, 384, 418, 466, 468, 581
 Piracy, in Homeric age, 217
 Pisirodus, 382

- Pisistratus, 276, 279, 281, 298, 344, 345, 349, 418
 Plave Trec Grove, Spartan fight at, 261, 268
 Planning, Aristotle on social, 452
 Plataea, Battle of, 3f., 177, 280, 467
 Plato, 62, 178, 241, 246, 248, 253, 259, 275, 287, 288, 289, 290, 300, 301, 302, 303, 304, 311, 312, 315, 317, 318, 323, 324, 326, 327, 328, 329, 335, 336, 337, 340, 356, 361, 371, 398, 400, 401, 403, 408, 409, 415, 419, 423, 424, 426, 429, 431, 433, 447, 449, 451, 470, 500, 584, 596, 597, 606, 608, 614, 617, 629, 657, 658; and, activism, 441; aristocratic bias, 432; artisans, 435, 440; authoritarianism, 435, 440; balance of mental and physical exercise, 410; businessmen, 432, 440; censorship of literature and music, 435; change, 445; communism, 427, 440; conflict of private and public interest, 434; Cretan archery in education, 203; democracy, 432, 434; dialectic, 439, 440; Ephobic College, 465; government, in the *Laws*, 439f.; gymnastic and music, 436, 441; human capacities, 434f.; injustice, human tendency toward, 437; justice, 434; liberal and illiberal education, 440; luxury, 434; mathematics and music, 427; peace as social aim, 445; philosophers' rule, 427, 437f., 439; physical, military training, 442ff.; play and education, 441; prenatal care, 441; religious orthodoxy, 440; slavery, 440; social classes, 434f.; Spartan system, 436f.; universals, 438f.; war, 434, 441; woman's abilities and education, 298, 438, 441, 443f.
 Plato, Xenophon, and Aristotle, 458f.
 Plato's *Laws* and *Republic*, 608, 614, 617
 Plautus, 582, 627, 630, 676
 Play, and, education, 7f., 120; random manipulation, 9; work, relation of, 20; as apprenticeship to life's tasks, among Pueblos, 21f. (see games, children's games)
 Playgrounds, Hebrew, 110
 Plebeian Games, 514
 Plebians, 492f., 495, 540, 549
 Pliny, 507, 523, 524, 528, 556, 558, 561, 569, 576, 582, 584, 605, 609, 620, 624, 627, 628, 638, 641, 642, 649, 651, 661; and, boating, 673; fishing, 676; games of circus, 707, 730, 731; gift to Como library, 610; girl's play, 677; gladiatorial combats, 718; his ball-court, 666; his bath at Laurents, 650, 672; horsemanship, 677; hunting, 675, 688; popular judgment of crowd, 612; routine in the country, 662f.; school at Como, 590, 593; state of Roman letters, 612; swimming, 671; Trajan, on isclastic games, 751; Tuscan villa, 700; village public baths, 650
 Pliny, *Natural History*, 206, 209, 476, 491, 560, 561, 691, 730; on, medical profession, 689, 690; running-records, 749
 Plotina, 594
 Plotinus, 629
 Plotius Gallus, 585
 Plutarch, 230, 234, 236, 239, 240, 241, 242, 244, 248, 254, 256, 258, 260, 264, 268, 270, 271, 316, 320, 331, 339, 392, 394, 401, 403, 462, 506, 513, 527, 531, 578, 591, 644, 654, 685, 686, 724; *Advice about Keeping Well*, 410, 684; *Advice to Bride and Groom*, 629; concerning, balance of mental and physical exercise, 410; bathing, 409; diet and dining, 408f.; emetics and physic, 409; equality of education, 408; excessive exercise, 408; health and doctors, 691; medicine as a liberal art, 408; physical culture of children, 407; Pompey's games, 710; scholar's exercise, 409; vociferation, 409
 Pneumaticists, 689
 Pok-ta-pok, associated with war and religion, 35f.
 Politica, method of the, 449
 Political intelligence, failure of, in Greece, 398
 Politics and education, in Athenian educational theory, 425-65; in China, 117f.; in Rome, 520-9, 596-607; in Sparta, 240-72
 Polity of the Athenians, 305, 352
 Pollio, 535, 644, 737
 Pollux, 245, 294
 Pollux and Amycus, boxing, 258
 Polo, Chinese, 144f.; Persian, 188ff.
 Polyandry, 114
 Polybius, 234, 236, 270, 271, 281, 309, 396, 397, 469, 497, 498, 507, 521, 524, 525, 526, 528, 529, 531, 535, 536, 537, 547, 564, 569, 611, 622, 623, 633, 634, 636, 637, 638, 640, 696; on Roman preference for games, 705
 Polydeuces, 257
 Polygamy, Egyptian, 52; Hebrew, 96; Persian, 181
 Polynesian clothing, 11
 Pompeian, athletics, 668; baths, 653; gladiatorial school, 739f.
 Pompey, 526, 527, 540, 541, 543, 547, 559, 563, 564, 567, 581, 611, 620, 627, 629, 632, 710, 711, 724; and Greek athletics, 747; and venationes, 743f.
 Pomponius Secundus, 612
 Pontifex Maximus, 533
 Porsena, 487
 Poseidonius, 484
 Postumia, 505
 "Pothunting," 335, 749
 Practical education, primitive, 14f. (see ap-

- prenticeship and artisans)
 Praeconinus, 609
 Praeneste, gladiatorial school, 738
 Prayers, to control phenomena, 15, 27
 Priests, Babylonian, 81ff.; Egyptian, 49, 50, 52, 55, 286; Etruscan, 481; functions of early, 5; Greek, 222, 418; Hindu, 159ff.; Persian, 179, 181f.; physical activity of, 5; Roman, 531ff.
 Primitive, architecture, 13, 14; children's games, 36, 41, 43; dancing, 19, 22-34, 38; life and education, 3, 15-43; physical sports and education, 19-43; religious belief, 9, 14f., 178; string-games, 41f.; traits, 4
 Priscus, Marius, 605
 Private, in conflict with public interest, in Plato's thought, 434; philanthropy, and Roman libraries, 610
 Privilege, safeguarded by Hindu caste rule, 160
 Prizes and rewards, athletic, 227, 346, 349, 383f., 388, 389, 392, 749, 751f.
 Probus, 581
 Procopius, 693; on Germans and games, 756
 Professional, acrobats and bull-grapplers, 205ff.; dancing, 23, 70ff., 175, 192f.
 Professional training, conflict of, and liberal education, 6f., 290f., 440, 454f., 606; in Egypt, 57, 71; in Rome, 596-605
 Professionalism, athletic, 255, 311f., 348, 351-62, 371, 372, 749; criticized by military leaders, 371; resisted at Sparta, 359
 Prometheus, gifts of, 219
 Property, of Babylonian women, 81; of Egyptian women, 52; of priests and nobility in Egypt, 49, 53; Roman law on, 504, 620; Roman women's, 619, 620
 Propitiation of spirit world, 9, 14f., 481, 539ff.
 Protagoras, 425, 438
 Protagoras, on harmony of physical and mental training, 302f.
 Proverbs, and Teaching of Amenophis, 94; Hebrew, 109
 Prudentius, asks end of spectacles, 755
 Psalms, 109
 Pthal-hotep, 52, 55
 Ptolemaia, 320
 Ptolemaion, 310, 311, 324, 325; Ephebic College library in, 325
 Puberty, ceremonies at, 20
 Publicani, 538, 539, 541, 564, 565
 Publius Mucius, and ball-play, 665
 Pueblo, apprenticeship, 21f.; beliefs, 16f.; games and divination, 34f.; magic practices, 15, 16f.
 Punans, clothing of, 11
 Punic wars, 495, 499
 Punishment, Pythagorean view of, 428
 Pupils, classified by Chinese, 123; limited by Hebrews, 110; variable capacity of, recognized, 109, 435, 437, 598, 602f.
 Purgation, theory of, 426, 455f.
 "Purples," circus faction, 713, 731
 Pyrrhic dance, 266, 267, 345, 349, 729, 746f.
 Pyrrhus, 494, 498, 571, 647
 Pythagoras, 418, 426, 427, 428, 615, 708
 Pythagorean, asceticism, 425, 426, 427, 428; community at Crotona, 426; development of boxing and wrestling, 427; education of women, 427, 438; emphasis on diet and physical exercise, 427; eugenics, 426; influence on Plato, 427; mathematical principle, 426; mean, 428; metempsychosis, 426; mysticism and science, 426; opposites, 427; view of man's punishment, 428; view of music, 426
 Pythian Games, 369, 386ff., 751; crown at, 388; famed for music, 387; religious import of, 386f.
 Quintilian, 503, 577, 589, 608, 609, 612, 615, 626, 628, 668; concerning, advantage of public schools, 603; age for grammar and rhetoric, 585; age to begin teaching, 579; aim of education, 602f.; bathing in common, 678; contests of the palaestra, 669, 670; corporal punishment, 591, 602; dancing, 655, 658; decadence of oratory, 602; discipline, 602; early beginning of study, 603; education of parents, nurse, and pedagogue, 603, 629; intricacy and difficulty of oratory, 603, 604; liberal education, 601, 603f.; memory, 579; mental discipline, 603; method, 582f.; native capacity, 602f.; orator and philosopher, 604; orator's education and public activity, 601, 604, 606; order of Greek and Latin authors and studies, 582, 603; parts of oratory, 604; physical culture, 604, 658; play, 509f., 579; playing, index of capacity, 603, 658; rhetorical training, 604; studies, 581, 583; teaching writing, 579; *De Causis Corruptae Eloquentiae*, 602; education of, 601; *Institutio Oratoria*, 602ff.; recipient of imperial salary, 592, 593
 Quintus, Cicero's brother, 648, 705, 726
 Quintus Epirota, 581, 589
 Rabbit club, learning use of, 35
 Racial and cultural origins, views of, Athenian, 273f.; Babylonian, 75f.; Chinese, 111f.; Cretan, 197f.; Dorian, 233f.; Egyptian, 47; Etruscan, 478f.; Hindu, 156f.; Italic, 477; Mohenjo-Daro, 152f.; Persian, 178
 Racquets, Indian, and war, 35

- Rain, by magic, 15, 27
 Rationalism, Greek, 417ff.; Hindu, 158f.; in Rome, 569, 614ff.
 Ravenna, gladiatorial school, 738
 Reading, in, Athens, 302, 303, 304; China, 118f.; Egypt, 57f.; India, 162; Persia, 182; Rome, 527, 579, 582, 603
 "Real Athlete, The," 361
 Realism, Platonic, 438f.; Aristotle's view of, 447
 Reconstruction in Greek education, 420-65
 Record keeping, 5f.; on cords, 112
 Recreation (see children's games, parlor games and minor amusements, sports and exercises)
 "Reds," circus faction, 731
 Regulations of Chou, 112
 Religion, and, Athenian education, 319ff.; dancing, 23, 24, 94, 175; Etruscan sports, 483; Greek sports, 225, 314, 338, 363ff., 418; Mayan games, 35f.; music, 94, 102f., 127ff.; Roman games, 716ff.; war, 35, 85, 102f., 179, 520, 531, 532, 533; Babylonian, 81f., 94; Brahmanic, 158ff.; Chinese, 120, 139; Cretan, 199, 210f.; Egyptian, 53f., 70; Greek, criticized, 419, 420, 421f., non-authoritarian, 221, 417ff.; Hebrew, 94, 96f.; Homeric, 220f.; monotheism in, 96, 97, 116, 419, 421; origin of, 9, 14f.; Persian, 178ff.; sports and funeral rites, 363ff.; sports and war, related, 35, 420
 Religious, magic remedies, 31ff., 68, 181, 402, 683, 694
 Remus, 491, 512, 520, 527
 Republic of Letters, at Rome, 596-617
 Republic, Plato's, 361, 432; socio-educational views in, 434, 439
 Rhea Silvia, 491
 Rhetoric schools, Roman, 573, 586f.
 Rhianus of Bene, 233
 Rhodes, Caesar and Cicero at, 597
 Rich and poor, at Athens, 277, 278, 281, 283, 290, 303; at Rome, 695ff., 704ff.
 Ricimer, 637
 River valley cultures, Indus, 152ff.; Nile, 47ff.; Tigris-Euphrates, 75ff.; Yellow, 111ff.
 Roads, 12f., 200, 552, 699 (see, too, communication)
 Roman, Achaean War, 536; aesthetic judgment, 612; agricultural rites, 530f.; agriculture, 476f., 515ff., and, slave labor, 560, 561, taxation, 561, wars' effect on, 539f., 549, 559ff.; amphitheaters and theaters, 752, 756; amusements and politics, 549; ancestral discipline, 507, 522, 576, 632f., 647; and material goods, 502; and philosophy, 501; animal husbandry, 476, 515; annona, 554; antibribery laws, 549; Apollo worship, 566; apprenticeship, to arms, 520-6, to labor, 515-20, and to law, 527ff.; army (see, also, military), 632-45, barbarians in service of, 636, bastinado, 640, cavalry, 633f., 643, children of soldiers, 635f., coloni, 635, conscription, 524, 635, daily march, 638, decline of, 635, described by Vegetius, 636, 637, 638, 640, desertion, 635, discipline, 524f., 633, 637, 640ff., early entrance on, duty, 633, emperor-making, 635, epitome of life and education for many, 632, infantry, 633, 638, labor, 638f., legions' strength, 633, 634, 636, length of service, 634, Marius', 634, marriage of soldiers, 634, 635f., missile weapons, 637, organization, 523f., 633f., pay, 633, 634, 635, peace and, 640, peace-time training, 637ff., physical culture, 632ff., 655, Pliny on, discipline, 641, Praetorian Guard, 635, professionalized, 542, 634, rations, 633f., Scipio's discipline of, at Carthage, 638, Seneca on, discipline, 641, siege weapons, 636f., social classes, 634, spoils, 634, 640, sports and exercises, 638, Tacitus on demoralization of, 640, velites, 636, weapons, 636f.; as creator, 500ff.; assimilation of Greek physical culture, 646ff.; Athenacum, 587, 593; athletic, contests, 710, 747-52, guilds and privileges, 751; Augurs, 565; Augustalia, 551; authoritarianism and decadence of letters, 612f.; ball games, 660, 661, 662, 664, 668; ballplayers and politics, 664; banquets, 700ff.; bathing habits, 508, 512, 649ff., 654, 661, 678; baths, 648-53, 661, 666, 672, 678, 687f.; bilingualism, 596, 608; boating, 672f.; books, cost of, 611; boxing, 669; bureaucracy, 545, 552, 554; calculator, 580; Campus Martius, 632f.; capitalism, 552, 564f.; Caracalla, baths of, 651; Carthaginian wars, 494, 495, 497, 499, 526, 535f., 537; cavalry, 523f., 633f., 643; Censors' decree against rhetoricians, 585; character and destiny, 496-502; children's, aid, 563, diet, 508; circus, and arena, 514, 729-56, factions, 711, 712, 713, 714; citizenship, 557f.; citizen-training, 511f.; civil wars, 541, 542ff., 550; class psychology, 708; classes, 556f.; climate, 476, 683; clothing, 505; coeducation, questioned, 627; coinage depreciated, 540, 553; collapse, 546; colonate, 561; Comitia Centuriata, 493; Comitia Curia, 492, 493; Comitia Tributa, 493; commerce, 476, 502, 538, 562; compulsory labor, 562; concentration of wealth, 549, 557, 565; conception of liberty, 497; confiscation of

estates, 553; conflict with Christians, 546f.; confluence of, and Greek physical culture, 646-55; connoisseurs of games, 709; conquest of Egypt, 536; conquest of Gaul, 543; conquests, effect of, 500, 539ff.; constitution, 527f.; contempt of Greek gymnastics, 513f., 525, 632, 647, 653f., 658; corn supply, 563; country estates, 699ff.; *crepundia*, 510; crime increase, 622f., 698; criminal courts, 698; criticism of Greek education, 573ff.; cults, in conflict with Christianity, 534; cultural debt to Greece, 500; *Curiales*, 555; daily routine and sports, 661, 662f.; debt to, Etruria, 479ff., 490, Greek letters, 607ff.; decline of, farms, 634; degeneration, traced to foreigners, 575f.; demoralization of young by luxury, 702; destiny, 497, 537; destruction of Corinth, 536, 539; dictatorship, 493; *dies lustricus*, 509, 510; diet, 506, 508; dietetics, 684; diminishing returns, 555; disapproval of Greek dancing and music, 653, 654f.; divination, 533, 565, 569; division, respecting Carthaginian War, 537; divorce, 619ff.; *dole*, 563, 606, 756; domestic, economy influenced by war, 539ff., life, 503-9, manufactures, 562; doom, foreseen by Scipio, 537; education (see, also, schools, and teachers, as authors), advanced, 577, age for each grade, 580, articulation of grammar and rhetoric in, 585, artisan's, 519f., bilingual, 596, cosmopolitan, 571ff., cost of, 610, criticized by Tacitus, 576, early, 503-34, elementary, 526f., 577ff., emperors, 597, farmer's, 515-20, for the state, 506, 511f., formalism in, 588, 589, 605, 609, Hellenization of, 503, 571ff., 626ff., heroic tales in, 521f., Homer in, 527, imperial control and regimentation of, 552, 594f., in family, 503-9, institutions, 573, 577-89, lacked system, 506f., 593, Laws' place in, 526ff., 579, local authority in, 595, method of, 579f., 582f., 586f., *Odyssey*, a part of, 527, 579, orator, ideal of, 596-605, periods of, 503, persistence of old, 576, philanthropy in, 590, 593, 610, philology in, 572, philosophical training in, 587f., pupil's view of, 591, rhetorical training in, 586f., soldier's, 520-6, 632-45, subsidized by government, 552, 593ff., verbalism in, 609, women's, 503ff., 626ff.; emperor worship, 567f.; emperors, and athletic sports and spectacles, 710-6, 747ff.; epidemics and religious cults, 683; equites, 537, 538, 702; evasion of taxes by rich, 555; exercise and health, 685f.; extravagance in baths, 649ff.; family life, 503-11, 618ff.,

626f.; farm activities and education, 496, 515ff.; father's power, 503f., 509; fetal board, 535; finance, 538, 539, 553, 564; fishing, 512, 675f.; fowling, 674; *Fratres Arvales*, 533; free medical care of poor, 692; freedmen, 556ff.; freedom, restricted, 544f.; frontier wars, 545; gambling, 663f., 698f.; games, of youth, 509, 510f.; games (spectacles), 703, and, Christians, 708, public opinion, 708f., religion, 752; as a phase of "new education," 704; criticized, 753ff.; democratic aspects of, 708; ended, 755f.; popularity of, with learned and ignorant, 705; Gaul, games in, 661, 678ff.; gift of Greek "freedom," 536; girls' education, 509, 512f., 626ff.; girls' physical feats, 512f.; gladiatorial, games, 711, 712, 713, 733-42, schools closed, 755; gladiators' revolt, 543; gods, 533f.; government, 491ff., 535-70; governors, hated by provincials, 564; Gracchan Law, 539; grain production declines, 560; *gravitas*, 509; Greek rule, 539; guilds, 519f., 561f.; *gymnasias*, 648ff., 683; health, concern for, 683-94, gymnastics, 660, 685ff.; heroic exploits and tales, 498, 521f.; historians, 475; hoarding of money, 553; horsemanship, 676f.; household tasks, 509; housing, 506, 563f.; hunting, 512, 673ff.; ideal, early, 502; imperial decline, after *Aurclius*, 545ff.; imperialism, 544-65, and, agriculture, 553, assassinations, 541, business, 553, marriage policy, 556; impoverishment, 555; industrial monopolies, 562; industries, 505f., 561f.; intellectuals, and superstitions, 569; internal weaknesses, 540ff.; Isis worship, 567; judgment of women, 622f., 624; *jura privata* and *jura publica*, 557; justice of war, 499; *juventus* and military training, 642ff.; lament over despotism, 613f.; land ownership and policy, 515, 541, 553, 560, 561; *lares* and *penates*, 533; *latifundia*, 560f.; Law, 493, 526; laws against extravagance, 702; learned women, 630; legal training, 527f., 576; legion, 632, 633; letters, 526, 596-617, decline of, 612, women and, 630f.; libraries, 581, 587, 593, 609f.; literacy, 610; literary debt to Greece, 500f.; literature, 500f., 596ff.; local government, under Empire, 549f.; love of play, 659-82; *ludi*, 716-28, administration of, 720, and, leisure, 716, politics, 723ff., 726ff., public opinion, 726ff., social control, 726ff., as birthday celebrations, 719, attendance at, 730, criticism of, 753ff., days allotted to, 720f., 722, democratic aspects of, 730, end of, 756, Etruscan origin of, 719f., 721, free,

Roman (continued)

- 723, 730, funeral aspects of, 717ff., in Italian towns, 725, music and athletic contests, 722, 747, popularity of, 730ff., public cost of, 723ff., 752, religious aspects, 716ff., repetition of, 722, side shows at, 746, spread of, 752, women at, 730; *Ludi Romani*, 717, 720; *ludi scaenici*, 529; *ludus* (school), 527, 577; *ludus sollemnis*, 717; luxury, 695-704, and, diseases, 683f., family life, 618, 623, decline of, 702; Macedonian conflict, 536; maldistribution of wealth, 541, 549, 557; manpower, decrease of, 618; manumission, 558f.; marriage, 503f., 530, 552, 556, 618ff.; materialism, 569, 607; medical development and public health service, 683-94; military (see, also, army), ideal, persistence of, 632, leaders and circus games, 709f., leaders' rise to power, 540f., service, effect of, 618, sports and exercises, importance of, 632, tradition, 406, 497ff., training, 511f., 520-6, 632-45, use of swimming, 670ff.; Mithra worship, 567; moral training, 507f.; Mother Matuta, 531; mothers as teachers, 507, 508; music and dancing, 513, 654f.; *natatorium*, 672; naval combats (*naumachiae*), 710, 711, 712, 713, 745ff.; navy, 634f.; *negotiatores*, 564; "new education," 507, 571-617, 704ff.; "newly rich" and learning, 703, 705; occupational control, 545f.; oligarchy, 540, 541; one-man rule, 544, 550f.; Oppian Law, 701; oratory, love of, 605; overseers, Cato on, 517ff.; *paedagogus*, 626; parents as teachers, 506, 507ff., 626f.; parlor games and gambling, 663f., 698f.; pastoral culture, 496; *Patricians*, 492f.; patriotism, 499; peace held demoralizing, 499; philhellenism, 536, 648, 747ff.; philosophers and imperial displeasure, 552; philosophy, dependent on Greek, 655, of physical culture, 655ff., of war, 497ff.; physical culture compared with Greek, 646f.; physical traits, 498; *pietas*, 509; *piscinae*, 649; *Plebeians*, 492f., 495; poison ring, 622; policy toward conquered, 495; political corruption, 547ff.; politics and wealth, 695; *Pontifex Maximus*, 567, 568; population, 495, 549, 555f., 696; poverty and riches, 699ff., 704ff.; power, at Constantinople, 546, over Etruscans, 495; practical bent, 500; *Praetorians*, 635; price regulation, 563; priests, 533; private and public baths, 650ff., 662; professional cooks, 700; proletariat, 549, 634; property law, 504, 620; provincial policy, unpopular, 539; public, bakeries, 562, 621, 700, extravagance, 698f., largess, 698, men and letters, 596ff., service, esteemed, 526; *publicani*, 538, 539; racial superiority, idea of, 497; reception of strange cults, 566f.; recreation and health, 685ff.; recreations, 646-82; religion, 501, 529-34, 565-70, 717, a phase of life and education, 529-34, and foreign cults, 566f., animism in, 529, 533, decay of faith in, 565ff., efforts to revive, 567f., Etruscan influence on, 529, 532, 533, state cult, 568, utilitarianism in, 529ff.; religious cults, music and dancing, 513; Republic of Letters, 596-617; Republican sympathizers punished, 552; Republic's birth, 492, decay and death, 544, 547-52; *Res Gestae*, 710f.; rhetoric schools, 577, 580, 584ff., controversies, 586, method, 586, program, 586, purpose, 584, Senate decree against, 584, 585, *suaoriae*, 586; rich and poor, 695ff., 704ff.; running, 668; saccular games, 711, 712, 713; *Salii*, 533; Samnite War, 494; satire, 608, 614, on learned women, 631; schoolmasters, as authors, 581, named, 581, 585, 589f.; schools (see, also, education), 526f., 577-617, calculation in, 580, Christians forbidden in, 595, conduct in, 590f., curriculum of, 579, 580, 581, 582, 583, 584, discipline of, 579, 581, 590f., 602, divorce of life and letters in, 605ff., 609, 612, fees in, 592f., 610, Greek authors read in, 527, 581, 582, holidays in, 579, Latin authors read in, 582, 583f., legal training held debased by, 528f., *ludus*, 527, 577f., method of teaching in, 579f., 582f., number of, 573, of grammaticus, 577, 581, of litterator, 577, of rhetor, 577, oratorical training in, 596-605, order of Greek and Latin in, 582, poetry in, 580f., private, 579, 590, private and public support of, 592ff., teacher supply for, 572, 589ff.; self-government decays, 547-52; Senate, decadent, 544; Senate's conservatism, 495, decree, against philosophers, 575, 584, against rhetoricians, 584; senatorial class, 557; Serapis worship, 567; sex morals, 622; Sibylline books, 533; simplicity, early, 505, 606; slave revolts, 543; slavery, 495f., 540, 541, 634, and, degradation of labor, 621, injury to the state, 558f., views of, 499; slaves, 556, as teachers, 589; social classes, 491f.; social mutation, 556f.; soldiers and "full purse policy," 635; spectacles, 704-56, and government, 544, participation in, by men of rank and women, prohibited, 715, 716, schools of idleness, 704-16; sports and physical training, 511f., 520ff., 632-45, 664-82; state cult, 533f., and Christianity, 568; studies, 509, 571-89, 596-617,

- 626ff.; sturdiness, and labor on the land, 516f.; Suovetaurilia, 530; superstitions, 514, 529, 530f., 565, 568f.; swimming, 512f., 670ff.; Tarantine War, 494, 495; taxation, 545, 553ff., 561, 562, of bachelors, 619; tax-farming, 552; teachers, as authors, Andronicus, *Criticisms of the Annals of Ennius*, 581, 592; Aphrodisius, *Criticism of Verrius' Orthography*, 581; Cniphio, *On the Latin Language*, 581, 609; Marcus Antoninus, *On Rhetoric*, 585; Melissus, *Fabulae Togatae and Trifles*, 581; Probus, *Observations on Our Early Language*, 581; Varro, *On the Latin Language*, 609; tenements, 563f.; territorial gains, 495, 536, 696; theatrical art, 611f.; toys, 510; transition from Republic to Empire, 535-65; translation and paraphrase of Greek authors, 608; triumvirate, 543; Troy game, 643ff., 710, 711; Twelve Tables, a part of education, 503, 526ff.; unemployed, 705; use of Greek, urged, 648; usury, 493; utilitarianism, 502, in religion, 529f.; venationes, 743ff.; virtues, 504f., 509; wages, 562f.; wars and agriculture, 539f., despotism, 540f., expansion, 493, 494, 495, 536, plunder, 498, 500, 537, wealth and luxury, 564, 695ff.; wealth and, idleness, 704ff., luxury, 695-704, politics, 695f.; woman's chronicle of a pilgrimage, 630; women, eulogized, 504f., in athletic contests, 748; women's, exercises, 677f., fashions, 621, sobriety, 504f., status, 503f., 618ff.; world, athletics in the, 357ff., 648f., 747f.; wrestling, 670
- Rome, and, Carthage, 535f., 537, Gauls, 494, 536, Isthmian Games, 536, Macedon, 537, Mamertines, 495, 498, 537; as empire-builder, 501, 537f.; athletic contests at, 648f., 747ff.; called Etruscan city, 478; Carvilius' school at, 578; early culture of, 491-534; Etruscan power ends at, 491; favorable geographical location of, 476; grammarians at, 572f.; Greek gymnasia at, 648f., 666, 683, 747; growth of dancing at, 655; health gymnastics at, 660; in Britain, 536, 545; increase of crime in, 622f., 698; material splendor of, 563; medicine at, 691ff.; pay of teachers at, 592f.; philosophers at, 573, 575, 587; rhetoricians at, 573; school age at, 578, 579; spectacles end at, 755f.; traditional views of, 475, 491; under barbarian rule, 546
- Romulus, 491, 499, 512, 514, 520, 527, 533, 534, 581, 719, 729
- Romulus and Remus, alleged education of, 520
- Romulus Augustulus, 546
- Romulus, Numa, and Sacred Games, 719
- Rumi, 192
- Running, and health, 404, 405; records, 749
- Rusticus, 597
- Rutulus, Gaius Marcius, 493
- Sacred Games, 727
- Sadi, 180, 181
- Saints and diseases, 694
- Salamis, 280
- Salian dance, compared to Persian, 193; Etruscan origin of, alleged, 489
- Salaria Carmina, 513
- Sallust, 513, 524, 529, 535, 540, 560, 581, 582, 597, 622, 633, 673; on physical exercise, 657f.; on Rome's poverty and wealth, 696
- Samnite, gladiatorial gear, 485; gladiators, 741f.
- Sanitation, Aristotle on, 403; Cretan, 212f.; Hebrew, 106, 107; of Mohenjo-Daro, 154f.; Persian, 180; Pythagorean, 428; Roman, 649ff.
- Saragossa, medicine at, 692
- Sardanapalus, and games, 731
- Sargon, 87, 88
- Sassanids, 185, 189
- Saturnalia, 534
- Saul, 99, 102, 103
- Scaevola, 557; and ball-play, 660
- Scalp dance, 29, 31
- Scalping, training in, 30f.
- Scantia Redempta, 625
- Scaurus, and venationes, 743
- Scholar class, Chinese, 112
- School age, Athenian, 300; Egyptian, 57; Hebrew, 110; Persian, 181; Roman, 580; Spartan, 246, 250
- School discipline (see discipline)
- School fees, Athenian, 300, 305, 310, 424; Roman, 592f., 610
- "School of the Prophets," 108
- Schoolcraft, on Indian gambling, 42; on Indian labor, 13
- Schools, Athenian, 298-327; Babylonian, 82ff.; Chinese, 111, 116f., 118, 129, 135f.; Egyptian, 57; Hebrew, 108ff.; Hindu, 162f.; Persian, 181; Roman, 577-617
- Science, medical, and religious superstition, 693f.; at Rome, 688-94; decline of, 693f.
- Science, origin and progress of, 14, 15
- Scipio, 498, 502, 521, 535, 536, 537, 569, 572, 575, 622, 628, 647, 649, 654, 695, 717; hunting, 674; imposes military training and discipline at Carthage, 526, 638; on Roman dancing, 655
- Scribes, Egyptian, 55ff., 61; Hebrew, 108
- Sea, impact of, on Athenian life, 274f.; on

Sea, impact of (*continued*)

Cretan culture, 195, 197ff.; on Roman life, 476f.

Sefer Yetzirah, 108

Sejanus, 718, 744

Self-control, Seneca on, 616f.; Socrates on, 429

Self-preservation, tendency to, 8

Semitic life and culture, 76, 94f.

Sempronia, 513, 622, 628, 655

Seneca, 575, 579, 580, 586, 608, 613, 623, 624, 628, 631, 641, 649, 652, 666, 673, 684, 741; concerning athletics, 658; ball-play, 665, 685; bathing at Baiae, 672; baths, 659; divorce of school from life, 586; exercises, 668f., 686; gambling, 686; gluttony and disease, 701; great books, 607; liberal studies, 606f., 658f.; luxury, 616; mental and physical health, 659; philosophy, 607; physical strength, 659; poverty, 697; Roman love of games, 660; specialism, 607; spectacles, 753; sun-bathing, 665, 686; teaching writing, 579; wealth, 616, 696, 697, 699; woman's educability, 629f.; disillusionment of, 616

Sennacherib, 87, 88

Serapis, 567

Servius, 478, 523, 525, 527, 571

Severus, Septimius, 553, 561, 563, 629, 634, 635, 721, 736

Sex-life, and dancing, 23, 28; Babylonian, 80; Chinese, 114; Egyptian, 52; Persian, 181; Roman, 618ff.; Spartan, 246, 249

Shamans, function of, 16

Shaving, Egyptian, 68

She I, *Meaning of the Ceremony of Archery*, 123ff.

Shield of Heracles, 213

Shorthand, in Egypt, 58

Shoubad's harp, 92

Sicilian, cookery, 400; revolts, 543, 558

Sicily, 476

Sidenai, 250

Sidonius, 609, 624, 661, 664, 668, 673, 678, 690; on, ball-play, 679; baths, 682; board games, 679f.; boating, 681; dicing, 679f.; fishing, 680f.; hunting, 680

Siege warfare, Assyrian, 87; Chinese, 139; Persian, 185; Roman, 501, 636ff.

Silk culture, 112

Silus, 585

Silvia's pilgrimage, 630

Simon ben Shetah, 109

Simonides, 240, 279, 292

Siva, 154, 175

Siyawush, 188, 189

Slavery, Aristotle on, 423, 448, 450f.; Athenian, 282; Babylonian, 78, 85; Egyptian, 50; emergence of, 4; Plato on, 440; Roman, 558

Slingers, Assyrian, 87; Egyptian, 61; Hebrew, 100; Hindu, 172

"Snow snake," learning to throw, 35

Social change, and education, 420ff.; Aristotle on, 452; Plato on, 445

Social status, and profession of medicine, at Rome, 689

Social utility, of letters, as seen by Romans, 596ff.; of philosophy, 614f.

Society and individual, at Athens, 425

Socrates, 283, 293, 303, 309, 310, 316, 328, 331, 332, 335, 336, 337, 338, 352, 390, 403, 429, 430, 434, 439, 449, 465, 470, 471, 513, 573, 601, 658; and individual, 426; criticized by Cicero, 600; on physical culture, 431; on training for war, 432; on woman's capacity, 298, 431

Soldier (see warrior class; also special references to army and military affairs in particular countries)

Solomon, 100

Solon, 275, 276, 279, 281, 283, 292, 300, 301, 303, 310, 318, 327, 334, 344, 347, 386, 389; laws, 278, 290, 299; on forces of social disintegration, 469; on use of athletic training for war, 332f.

Soplists, 423ff., 439

Sophocles, 331

Sophonisba, 627

Sophron, 581

Sophonistes, 254

Soranus, translated, 693

Sosibius, 592

Sparta, 233-72, 468, 469

Spartacist revolt, 543, 558

Spartacus, 543, 558, 738, 742

Spartan, adultery, unknown, 249; Apella, 237; army, 264f.; athletics, non-specialized, 254; babies, examination of, 239, 249; ball-play, 268; ban of common occupations, 239, 243; bathing, 253, 268; Bideoi, 254, 261; boxing, 257ff.; boys, classified in training, 250; brutality, 253f., 270; chariot racing, increase of, 254; child care at home, 249; children, and the state, 249; classes, 234ff.; clothing, 239, 251; conflict with Athens, 468; contempt for business and labor, 243f.; Crypteia, 253f.; culture, backwardness of, seen by Isocrates, 241, in seventh and eighth centuries, B.C., 238f.; dancing, 265ff.; decline, 234, 236, 249, 269ff.; diet, 239, 241, 252; discipline, credited to Cretan origin, 239; discus-throwing, 260; dual kingship, 237f.; education, 240-72, 372, criticized, 454, effect of, 372, 383, its success and failure, 269ff., 451, 454, 466, of boys and girls, 239, public, 250, purpose and character of, 240, 243, women's, 248; cphor-

- ate, 237f., 261; *Eunomia*, 238; failure to prevent change, 269, 270; flagellation before Artemis Orthia, 253; Gerousia, 237; girls at Olympia, 383; heroic ideal, 242ff.; hunting, 261ff., as military training, 263; hunting-dogs, 238, 262, 675; influence on Athenian physical training, 331; inspirers, 251; institutions, and their influence, 445, 447, 448, 451, 458f.; javelin-throwing, 260; land allotment, 239; life and education, 234-72; literacy, 241f.; marriage, 246, 249; mastery of Laconia and Messenia, 234; mental and moral training, 241ff.; money reform, 239; music and dances not allowed among Helots, 268; music and dancing, 243, 265ff.; Olympic victors, 256, 257; organized fighting, 260f.; *Paidonomos*, 251; paneraton, 258, 259ff.; physical training, of boys, 248ff., of girls, 244ff.; public meals, 239; races, 255f.; religious processions and training, 243, 245, 246; riding, 264f.; social and political institutions, 234-40, 269ff.; superstitious nature, 253; swimming, 268f.; transgression of Olympic truce, 379; virtues, useless in peace, 451; wildlife, 261; women, in service of state, 244; wrestling, 256f.; *Xenophon* on institutions, 182, 458f.
- Spartianus, 535, 641, 642
- Spartiates, 236
- Spearmen, Assyrian, 86; Egyptian, 61; Hebrew, 100; Homeric, 226; Roman, 636
- Specialization, bearing on education, 5; evils of athletic, 353f., 357; increase of, in settled communities, 4; primitive, slight, 4
- Spectacles, Roman, 704-56; men of rank and women in, 713, 715f.
- Spencer and Gillen, on Arunta rites, 17ff.
- Spirits, as moving forces, 14; evolution of views concerning, 4
- Sports, and, Cretan religion, 206, 211, religion in Homeric world, 225, training for war, 315-27, 330-5, wealth, in Greece, 371ff.; animistic significance of, 34; aristocratic, in Homer, 226-32, common, 232; as professional entertainment, 9, 65ff., 190ff., 351-62, 486f., 729-56; as survivals of former occupations, 22; democratic and aristocratic aspects of Greek national games, 370ff.; Greek philosophy of, 330-9; in Gaul, 678ff.; in the training of warriors, 5, 188ff.; source of, in man's nature, 7ff., 338
- Sports, and other physical exercises, acrobatics, 105, 193, 202, 431, 625, 660; *anthippasia*, 348; *apobates*, 347f.; archery, 35, 36, 118, 121, 122, 123ff., 135f., 144, 146, 203, 224, 226, 229, 230, 255, 393, 408, 485; armor, exercises and fighting in, 229, 318, 320, 321, 443, 484f., 522, 632, 633, 638, 648, 660, 677, 685; ball games, double-ball, 36, football, 36, 142ff., 146, 150, hand-and-football, 36, handball, 65, 666, *harpastum*, 666, 668, 679, hot ball, 36, pass-ball, 660, tossed-ball, 36, trapball, 164; ball-play, 35, 36, 38, 65, 164, 223, 244, 250, 255, 268, 269, 308, 314, 315, 326, 411f., 414, 511, 549, 588, 660, 661, 662, 664, 665, 666, 668, 669, 677, 679, 685, 686, 687, 703; battle-axe, use of, 60; beast fights, 485, 552, 705, 714, 743ff.; boar-hunting, 203, 485; boating, 146, 230, 661, 668, 672f., 146, 165, 170, 209f., 211, 226, 228, 230, 231, 232, 255, 257ff., 307, 308, 314, 315, 320, 332, 337, 343, 346, 348, 352, 353, 359, 360, 361, 377, 378, 380, 381, 382, 385, 388, 389, 391, 393, 394, 395, 399, 414, 427, 443, 469, 483, 486, 511, 522, 525, 648, 654, 657, 658, 660, 668, 669f., 705, 708, 747f., 750, 751; bull-fighting, 65, 106; bull-grappling, 199, 205ff., 211; "butting," 142; earriages, riding in, 669; catapult, use of, 318, 320, 323; chariotceering, 118, 121, 122, 137, 164, 199, 224, 226, 227, 232, 311, 320, 337, 341, 343, 345, 346, 349, 363, 367, 370, 372, 373, 374, 376, 382, 383, 385, 386, 387, 388, 393, 487, 488, 657, 661, 662, 663, 676, 677, 708, 712, 748; *ch'ui wan*, 146; circus, 106, 469, 486ff., 588, 729ff.; club-swinging, 64, 685; coasting on ribs of animals, 36; dances, agricultural, 27, *Bacchic*, 442, "ball," 40, 267f., ballet, 73, battle-axe, 126, *bibasis*, 267, *Bori*, 31f., *bryallicha*, 267, buffalo, 24ff., ceremonial, 131, choral, 266, 489, civil, 129, Corn Maidens', 27, cyclic, 320, death, 33f., 72, 73, 175, *dekkè*, 94, *dei-malea*, 267, *devil*, 23, *dipodia*, 267, *emeleiai*, 442, fire, 32f., *hsiang*, 118, 122, 126, "humanity," 127, *hypogypones*, 267, *ithymbi*, 267, *khassia*, 176, *ko*, 122, 126, maize, 27, "medicine," 36, *menes*, 267, *mimelic*, 267, peace, 265, *Phallic*, 28, profane, 23, 175, 265, *Pyrrhic*, 266, 267, 442, 489, "regulating," 126, religious, 27, 71, 72, 175, 265, *Salii*, 489, scalp, 30f., shield, 126, snake, 17, "split-feather," 126, sword, 94, *ta hsia*, 118, 126, "tail," 126, theatrical, 265, *tyrbasia*, 267, *Ute Bear Dance*, 26f., war, 28f., 60, 72, 129, 265, "whole-feather," 126, *wu*, 128;

Sports (continued)

- dancing, 19, 22-34, 38, 69ff., 76, 90, 93, 94, 102ff., 107, 118, 122, 126-32, 150, 165, 166, 173ff., 176, 192f., 211f., 223, 230, 231f., 242, 243, 244, 245, 246, 255, 265ff., 296, 298, 309, 310, 311, 336, 338, 340, 341, 345, 349, 350, 431, 442, 443, 444, 445, 454, 483, 486, 488f., 604, 628, 629, 653, 654f., 658, 659, 660, 677, 703, 716, 751; darts, 244; deer-hunting, 205, 485; discus, 105, 224, 226, 231, 244, 256, 260, 307, 308, 315, 361, 377, 385, 388, 393, 454, 486; elephants, riding, 164; equestrian contests, 345, 346, 347, 349, 372f., 376, 388, 389, 394, 487; fencing, 525, 669; fighting, 255, 260, 444; fishing, 22, 62, 63, 88, 90, 149, 155f., 188, 209, 224f., 660, 661, 668, 674, 675f., 680, 699; fist-fights, 61; fowling, 62, 660, 674, 685, 687; funeral games, 225f., 229, 230, 256, 363, 365, 484, 717f.; gered, 65; gladiatorial contests, 106, 210, 338, 549, 552, 611f., 660, 698, 714, 733-42, 752; Greek gymnastics, 653, 654, 658; *gui* and *chugan*, 190; gymnastic contests, 341, 345, 348, 349, 366, 372f., 376, 377, 388, 389, 393, 394, 625; *hulteres*, exercise with, 378, 486; *hawking*, 661, 681f.; *health gymnastics*, 148f., 400-16, 660, 686; *hoop exercises*, 34, 36, 64, 298, 660, 677; *hoplite contest*, 346; *hoplomachy*, 343; *Hormos*, 267; *horsemanship*, *races and riding*, 36, 38, 122, 164f., 224, 230, 238, 244f., 254, 255, 264f., 341, 343, 346, 347, 348, 360, 366, 370, 372, 373, 377, 383, 385, 386, 393, 441, 444f., 457, 463, 471, 486, 487, 511f., 522, 525, 632, 643, 644, 657, 660, 663, 669, 676, 677, 685, 680, 705; *hunting*, 20f., 22, 23, 35, 36, 61f., 88ff., 98, 132ff., 149, 155, 172, 183, 184, 185ff., 190, 199, 202, 203ff., 208, 219, 224, 255, 261ff., 311, 371, 408, 411, 427, 442, 460, 462, 483, 485, 511, 512, 521, 525, 633, 656f., 660, 661, 663, 665, 668, 673ff., 676, 679, 680, 684, 685, 687, 700, 714; *iselastic games*, 751f.; *javelin-throwing*, 60, 105, 183, 184, 242, 226, 229, 230, 244, 255, 256, 260, 307, 308, 315, 318, 320, 323, 343, 345, 349, 377, 385, 393, 408, 441, 443, 454, 460, 512, 521, 522, 525, 632, 633, 638, 660, 661, 668, 677; *juggling*, 36, 105, 298, 431, 666; *jumping*, 60, 61, 105, 224, 231, 244, 245, 256, 307, 308, 315, 377, 378, 385, 393, 414, 427, 454, 511, 525, 638, 659, 660, 661, 668, 669, 686; *jumps*, broad, 659, 668f., high, 659, 668, pole, 486; *kestrosphen-done*, 320; *knife-throwing*, 64; *lacrosse*, 36, 38ff.; *leapfrog*, 308; *lion-bull fights*, 485; *lion-hunting*, 205; *litter*, riding in, 659, 669; *mace*, use of, 60; *marching*, 320, 457; *mudballs*, fights with, 36; *naval sham battles*, 698, 745f.; *nebbot*, fighting with, 64f.; *palus*, 668, 669; *pancratation*, 244, 255, 258, 259, 260, 308, 314, 315, 320, 321, 332, 336, 343, 346, 349, 353, 360, 377, 378, 379, 380, 385, 388, 389, 391, 394, 443, 469, 748, 749, 751; *pantomimic gesticulation*, 427; *pentathlon*, 184, 190, 226, 256, 346, 354, 360, 376, 377, 381, 389, 394, 415; *physical culture*, 428, 431, 432, 443, 444, 445; *pike-throwing*, 511; *pirouetting*, 60; "pitch-pot," 146ff.; *plow-ing contests*, 164; *pok-ta-pok*, 35f.; *pole climbing*, 64; *polo*, 144f., 146, 150, 166, 188ff.; *quadrennial games*, 105; *quoits*, 36, 244, 361, 414, 668; *races*, archers', 443, ball-, 36, boat, 321, 344, 351, 389, carriage, 165, *diaulos*, 388, distance, 256, 431, 344, 346, 377, 382, 389, 394, 443, 444, 748, dog, 142, double stade-, 255, 256, 320f., 343, 346, 377, 394, 443, 444, elephant, 165, four stades, 394, horse course, 443, 444, in armor, 255, 256, 311, 343, 377, 388, 394, 443, 444, stade-, 255, 256, 320, 343, 346, 377, 389, 393, 394, 443, 444, torch, 255f., 310, 311, 321, 343, 344, 345, 350, 351, 377; *racquets*, 36, 65; *rams*, training, 166; *riding*, 144, 183, 190, 311, 320, 660, 661, 662, 669, 686, 687, 700; *ring-and-pin*, 36; *rope-climbing*, 308; *rowing*, 311, 320, 351; *running*, 19, 22, 36, 38, 101, 105, 165, 170, 190, 210, 224, 226, 229, 231, 244, 245, 247, 255, 256, 308, 320, 337, 338, 341, 342, 343, 352, 360, 361, 362, 363, 367, 371, 377, 383, 384, 388, 404, 405, 406, 414, 415, 427, 431, 454, 511, 521, 525, 657, 659, 660, 661, 668, 669, 684, 685, 686, 748, 749; *sacred games*, 258; *sand bags*, lifting and swinging, 64; *sham battle*, 29f., 61, 65; *shields*, use of, 60, 512; *shinny*, 36; *shooting*, 164, 457, 460; *shuffleboard*, 36; *single-sticks*, 61, 64, 65; *sling*, use of, 320, 323, 441; *snow snake*, 36; *solus*, hurling the, 229; *sparring*, 405; *spear*, use of, 226, 485, 685; *sphaeromachiae*, 667; *spike-throwing*, 64; *stilts*, 36; *stone-throwing*, 36, 255, 511, 525; *swimming*, 36, 66f., 68, 91, 101, 105, 145f., 194, 213, 230f., 244, 268f., 300, 306, 308, 311, 314, 320, 507, 512, 522, 525, 632, 633, 649f., 651, 652, 660, 661, 665, 668, 670ff., 685; *swordsmanship*, 139f., 165, 512, 662, 677; *swordstick combat*, 166; *Tchung-kee*, 37f.; *tennis*, 649, 666, 679; "three, game of," 661, 664, 665, 666; *tlax-tl*, 35f.; *Troy game*, 643,

- 644f.; tug-of-war, 145, 306, 308, 315; tumbling, 164, 414, 486; walking, 164, 255, 404, 405, 406, 407, 414, 659, 660, 661, 662, 669, 686; war games, 21, 29f., 35, 36, 61, 65; weights, lifting, throwing, swinging, 64, 105, 229, 659, 669, 686; "white man," 36; willows, fights with, 36; windmills, imitating, 164; wrestling, 22, 36, 38, 61, 64, 65f., 67, 74, 90, 93, 101, 105, 140, 165, 170, 190ff., 209, 226, 228f., 231, 244, 254, 255, 256, 257, 259, 305, 307, 308, 314, 315, 320, 321, 337, 338, 341, 343, 346, 348, 351, 353, 354, 356, 360, 361, 363, 367, 371, 377, 378, 380, 381, 385f., 388, 389, 391, 393, 394, 405, 406, 408, 411, 427, 432, 442, 443, 457, 466, 469, 486, 511, 525, 607, 624, 638, 648, 654, 657, 658, 659, 660, 661, 662, 668, 669, 670, 747, 748, 749, 751; Yoga, 165
- Spring and Autumn Annals, 115, 119
- Spurinna, 569, 669; exercises of, 661, 665
- Staberius Eros, 581
- Stabian Baths, 653
- "Stable for education," Egyptian military school, 60
- State and education, 244ff., 287f., 419, 425, 432, 435ff., 448ff., 458ff., 506
- State service and physical training, Athenian, 287f., 315-27, 351f., 361; Chinese, 121-6; Hindu, 159f., 165-72; Persian, 182ff.; Roman, 520-6, 632-45; Spartan, 241-72
- Statius, 582, 613, 629, 652; on dancing, 655; on swimming, 671; on women at gladiatorial games, 736
- Status of women, Athenian, 291ff.; Babylonian, 80f.; Chinese, 113f.; Egyptian, 52f.; Etruscan, 489; Hebrew, 96; Hindu, 161f.; Persian, 180f.; Roman, 503ff.; Spartan, 244ff.
- Stertinus, 690
- Stesichorus, 581
- Stilicho, 546, 743
- Stilo the Penman, 581
- Stoicism, 471, 615, 616, 617
- Strabo, 59, 65, 84, 157, 159, 161, 170, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 190, 193, 194, 197, 198, 264, 265, 365, 368, 369, 375, 390, 469, 476, 477, 485, 587, 683, 691, 692, 752; on Assyrian warriors, 86; on Egyptian dancing, 73
- String-games, Indian, 42
- Student life, at Athens, 587ff.
- Studies named, agriculture, 598; architecture, 587, 598; arithmetic, 57, 109, 118, 162, 182, 290, 303, 437, 442, 509, 577, 580, 598, 603, 607; art, 242, 573; astrology, 82, 83, 84; astronomy, 108, 438, 442, 583, 598, 603, 607, 629; behavior, 118, 296, 302, 303; botany, 108; carpentry, 328; carriage and posture, 308; chronology, 83, 108; dancing, 118, 122, 126-32, 150; dialectic, 598; divination, 84; drawing, 303, 455; embroidery, 298; engineering, 84; geography, 83, 84, 108, 298; geometry, 57, 320, 437f., 580, 598, 603f., 607, 629; grammar, 83, 84, 162, 320, 572f., 584, 585, 592, 597, 598, 607; Greek, 107, 108, 572, 573, 574, 596, 597, 603; history, 83, 109, 507, 583, 584, 607; languages, 109, 320, 527, 607; Latin, 597, 603; law, 82, 83, 107, 108, 109, 162, 289, 303, 311, 318, 441, 507, 527, 528, 587, 595, 598, 604; liberal studies, 597, 606f.; literature and letters, 57, 83, 108, 109, 119, 162, 163, 242, 300, 302, 303, 320, 326, 441, 460, 466, 527, 580f., 582, 583f., 587, 592, 595, 596, 607, 628, 629; logic, 607; manners, 509; mathematics, 57, 73, 83, 84, 108, 118, 121, 122; mechanical science, 587; medicine, 82, 83, 328, 587, 598; mensuration, 442, 580; military arts, 122, 137, 165f., 438, 441, 442, 598; military gymnastics, 435, 442, 457, 458; moral instruction, 98, 109, 604; music, 69, 70, 72, 74, 107, 108, 109, 118, 121, 122, 128f., 132, 175, 242f., 244, 267, 289, 296, 300, 302, 303, 304, 320, 372, 435f., 437, 438, 440, 441f., 455f., 460, 466, 583, 598, 603, 604, 607, 628, 629; mythology, 181, 296; natural history, 83; oratory, 585, 587; orthography, 583; painting, 303, 607; philology, 83, 84, 572; philosophy, 84, 108, 161, 162, 320, 325, 438, 573, 575, 583, 585, 587, 595, 597, 603, 604, 606, 607, 614f., 629f.; physical education, 121, 163, 166, 182, 242, 243, 244, 246, 248f., 253, 254, 289, 300, 302f., 308, 309f., 320, 325, 332, 351f., 359, 435, 436, 437, 438, 440, 441, 442, 455, 456f., 466, 573, 575, 604, 605; playing on musical glasses, 166; "polite" conversation, 118; psalms and prayers, 162; reading, 55, 56, 82, 108, 109, 118, 162, 175, 182, 241, 296, 302, 303, 304, 441, 455, 507, 509, 527, 577, 579, 581, 583, 603; religion, 82, 83, 98, 107, 109, 162, 604; rhetoric, 320, 573, 575f., 584f., 586f., 592, 594, 595, 597, 598, 604, 607; "rites," 121; rituals, 118; sciences, 109, 162, 298; sewing, 298; singing, 175, 303, 304, 309; speech, 118, 119, 509, 583, 596, 597, 598; spinning, 298, 509; surveying, 84; theology, 162; weaving, 298, 509; weights, measures, money, 107; word study, 162; writing, 55, 82, 108, 109, 118, 119, 121, 162, 175, 182, 241f., 296, 298f., 300.

- Studies named (*continued*)
 302, 303, 304, 308, 441, 455, 509, 527,
 577, 579f., 583, 603; writing composi-
 tions, 119
 "Successor of Hercules," abolished, 749
 Sudra, duty of, 159, 160
 Suetonius, 206, 357, 507, 535, 552, 572, 573,
 577, 581, 589, 644, 645, 652, 669, 670,
 671, 691, 712, 732
 Sugar cane, fertility dance, 27f.
 Sulla, 540, 541, 542, 543, 544, 560, 563,
 590, 597, 609, 620, 644, 664, 673, 696,
 702, 720, 723, 737; and venationes, 743;
 on hunting, 674
 Sulpicia, 630
 Sumerians, 4, 75f., 85, 88, 111, 152
 Surveying, in Babylon, 84
 Swaddling, Athenian, 293; Delaware Indian,
 20
 Swedish gymnastics, 149
 Swimming, Athenian, 300, 308, 311; Cre-
 tan, 213; Egyptian, 66f.; Hebrew, 101,
 105; Homeric, 230, 231; in Mesopotamia,
 91; Persian, 194; Roman, 672; Spartan,
 244, 268f.
 Swordsmanship, 139f., 165f., 512, 662
 Symbolism, of Chinese archery, 122ff.; of
 Chinese dancing, 126-31; of polo, 189
 Symmachus, 561, 624, 690, 724, 741; and,
 animals for shows, 743; Saxon gladiators,
 737; spectacles, 714; the races, 730
 Synod of Heracles, 357, 749
 Tacitus, 514, 528, 535, 537, 547, 569, 575,
 576, 583, 584, 586, 590, 613, 621, 630,
 634, 640, 675; concerning, decay of ora-
 tory, 605; gladiatorial shows, 705; lax tone
 in Roman sports, 654; luxury, 701f.;
 moral education of Roman family, 508
 Tags, 481
 Tahmurath, gifts to Persians, 185
 Talmud, on learning trades, 104
 Tamerlane, 190
 Tamo, health gymnastics, 148
 Tanaquil, 481, 527
 Taoism, 114, 139
 Tarquin, 478, 479, 487, 488, 491, 512, 514,
 720, 729
 Taurador Frescoes, 206
 Taxes, Chinese, 112; Egyptian, 51; Hebrew,
 97; Persian, 178; Roman, 552f., 561, 562
 Tchung-kee, described, 37f.
 Teachers, Athenian, 300f., 326, 423ff.;
 Chinese, 112, 115, military, 135, of music
 and dancing, 132; Egyptian, 55f.; He-
 brew, 109; Hindu, 162f.; Persian, 181f.;
 Roman, 581, 585, 589ff., 592, 596, 597,
 609, of dancing, 628, slave origin and
 character of, 589f.
 Technology, Athenian, 276, 283; Baby-
 lonian, 76ff.; Chinese, 112f.; Cretan, 200;
 Egyptian, 57, 58f.; Etruscan, 477, 479f.;
 Mohenjo-Daro, 153; Roman, 501, 519f.,
 523, 524, 552, 561f.
 Telemachus, 755
 Tello, library at, 83
 Tendencies, native in man, 8f.
 Terence, 500, 582, 608, 611, 627, 630, 705
 Tereus, 293
 Terminus, 533
 Terpander, 238, 239, 242
 Terremare settlements, 477, 478
 Tertullian, 535, 624, 717; on spectacles,
 753f.
 Teutonic disease theory, 694
 Thaletas of Crete, 238, 266
 Theagenes, 355, 380, 385
 Theater, Athenian, 288, 293, 419; Roman,
 611f.
 Theban leadership, 280, 331, 466
 Themis, 217, 221
 Themistocles, 280, 334, 351
 Theocritus, 245; portrayal of Pollux and
 Amycus, boxing, 258
 Theodora, 731
 Theodoric, 546, 685, 693; gambling, 664;
 games and doles, 756
 Theodosius, 359, 375, 393, 399, 534, 546,
 556, 566, 595
 Theodotus, 594
 Theognis, 202, 303, 337
 Theogony, 220
 Theophila, 629, 630, 631
 Theophrastus, 336, 609, 688
 Thersites, 218
 Theseia, 320
 Theseus, 206, 212, 276, 333, 339, 340, 343,
 344, 388, 390
 Thessalians, 233
 Thetes, 278, 281
 Thot, alleged inventor of writing, 55
 Thracian gladiators, 742
 Thucydides, 195, 198, 235, 241, 269, 275,
 289, 293, 316, 326, 331, 336, 337, 573
 Ti K'u, 111, 116
 Tiberius, 539, 549, 551, 554, 587, 597, 613,
 634, 641, 698, 719, 722, 741; and, doc-
 tors, 690f., games, 725, 728, 734, 736;
 effort to ban beast hunts, 744; on Roman
 luxury, 696, 702; parsimony of, in games,
 711
 Tigellius, 628
 Tiglathpileser, 88, 89
 Tigris, influence of, on early civilization, 47,
 75, 77
 Timocrates, 268
 Tiro, 588, 707
 Tiryns, 198, 202, 205, 216

- Titus, 552, 575, 703, 709, 716, 722, 745;
 and, baths, 651; games, 712, 728, 735,
 736, 737, 746
 Tools, importance of improved, 5, 12
 Torah, 109
 Totemism, Arunta, 18f.; Melanesian and
 Polynesian, 17; Pueblo, 16f.
 Totila the Goth, and games, 730, 756
 Traditions (see under various countries),
 effect of, 14; lengthening of, 6
 Trajan, 552, 558, 561, 563, 593, 594, 610,
 635, 639, 643, 649, 651, 722, 724, 726;
 and, athletic guilds, 749; games, 713, 735,
 745; isclastic games, 751
 Transportation, by road, 12f., 200, 552, 699;
 by water, 12, 48, 76f., 153, 198f., 200f.,
 274f., 476, 562
 Trebatius, 670
 Treves, games at, 756
 Trick games, Indian, 41f.
 Trimalchio, 559, 610, 664, 703
 Trimetrical Classic, 118, 120
 Troezen, education at, 300
 Trojan War, 216
 Troy game, 718, 729, 746
 "Truce of God," at Greek games, 369, 379,
 391, 395
 Ts'ang Kie, 112
 Tsao, Lady, 114, 119
 Tullia, 547, 705, 707, 715
 Tullus Hostilius, 525
 Tung Chung Shu, 116
 Twelve Tables, 619
 Tylor, on similarity of games of Hindustan
 and Mexico, 42
 Tyrrhenians, 197, 478, 490
 Tyrtacus, 238, 242, 299, 303, 332, 334

 Umbrians, 477, 482
 "University" of Athens, life at, 588f.
 Ur, 94
 Usirtasen, 60
 Ute Bear Dance, 26f.
 Utilitarian education, Aristotle's view of,
 448, 454; Athenian, 289ff., 327ff.; Chinese
 social philosophy of, 116f.; Cicero on,
 606; Egyptian, 55ff.; Plato on, 432, 435,
 440; Quintilian on, 606; Roman, 503ff.,
 515ff., 527f., 580, 600f.; Seneca on, 606f.
 Utilitarianism in religion, Egyptian, 54; He-
 brew, 97; Hindu, 159f.; Persian, 179;
 Roman, 529ff.
 Utopia, education in, 420-65

 Vaisyas, 5, 159, 160, 162
 Valentinian, and, doctors, 692; games, 755;
 permission needed to open schools, 595
 Valerius Maximus, 625
 Vaphio, 205, 212, 213; cups of, 203, 208
 Varazdates, 359, 399
 Variability of man's culture, 14
 Varro, 476, 480, 508, 515, 516, 519, 524,
 540, 549, 560, 576, 598, 608, 609, 632,
 648, 698, 700; on banquets, 701; on
 health, 683f.
 Vedas, 162, 178
 Veddas, and arts of hunting, 35
 Vedic Aryans, 152, 156
 Vegetius, on Roman army, 636, 637, 638,
 639, 640, 669, 671
 Venality, in athletic world, 355f., 381, 391,
 749
 Venationes, 710, 712, 713, 716, 718, 719,
 722, 743ff.; end of, 745, 756; Roman, con-
 trasted with Cretan and Spanish, 206;
 schools for beast fighters, 743; women in,
 716
 Verdadidad, 184f.
 Verbalism, in Roman schools, 609
 Verus, 392; and spectacles, 714, 731
 Vespasian, 545, 551, 575, 587, 593, 597,
 698, 702, 737; and, doctors, 692; excr-
 cises, 688; games, 712, 727, 745
 Veturia, 504
 Villanovan culture, 477f., 480
 Vinotherapists, 689
 Virgil, 496, 497, 500, 511, 521, 525, 560,
 569, 582, 597, 608, 631, 644, 646, 665,
 670, 672, 704; on games, 718; on hunt-
 ing, 675
 Virginia, 527
 Virtues, Chinese, 117f.; in Persian educa-
 tion, 179ff.; of Chinese women, 120;
 Roman, 501f., 504f., 508f., 512f.; Spartan,
 serviceable only in war, 271
 Vitellius, 551, 592, 654, 699, 719; against
 senators' participation in gladiatorial com-
 bats, 715; and spectacles, 712, 731, 735,
 742
 Vitruvius, on baths, 651f.; on influence of
 gladiatorial combats on architecture, 485;
 on the gymnasium, 312
 Vocational guidance of athletes, 356f.
 Vocational training, Athenian, 327ff.; Baby-
 lonian, 78, 80, 84f.; Chinese, 113; Egyp-
 tian, 57ff., 72; Hebrew, 99f., 104f.;
 Hindu, 165f.; Persian, 182; primitive, 21f.,
 29ff.; Roman, 515ff., 520ff., 527f.; Spar-
 tan opposition to, 243f.
 Vocations (see occupations)
 Vociferation, use of, 404, 409, 414, 686
 Voconian Law, 620
 Volumnia, 504

 Walking, and health, 404, 405, 406, 414
 War, advocated and opposed, at Rome, 499;
 Aristotle on, 448, 450, 451f., 457; chiv-
 alry in, amongst Kshatriyas, 169; dances,

War (continued)

28, 29ff., 35, 72, 126, 128, 129, 266, 267, 345, 349, 729, 746f.; games and religion, associated with, 35, 339ff., 369, 646, 716ff.; Greek disintegration and, 469f.; Hindu philosophy of, 166f.; Homer and training for, 286; hunting and, 88ff., 132f., 185ff., 203, 261ff., 462f., 485; injurious effect of, on Rome's internal life, 539f.; justice of, defended, 499; little retarded by religious doctrines, 139; Lucretius on, 696; Plato on, 434, 436f., 441, 442ff.; prisoners, Chinese treatment of, 139; relation of, to Roman sports, 520ff., 632ff., 646; religion and, 35, 85, 102f., 179, 319, 365, 497; Socrates on, 432; Xenophon on, 181-7, 458ff., 464f.

Warfare, Assyrian, 85ff.; Athenian, 280f., 315ff., 330ff.; Chinese, 122, 135-40; Cretan, 202f.; Egyptian, 59ff., 65; Etruscan, 478f., 490; Hebrew, 98ff.; Hindu, 165-72; Homeric, 225f.; Macedonian, 333; Persian, 177ff., 182ff.; primitive, 21, 28ff., 35f.; Roman, 494, 496ff., 520-6, 632-45; Spartan, 240-72

Warrior class, Babylonian, 79, 86; Chinese, 112; Egyptian, 49f.; emergence of, 5; Kshatriya, 158ff., 163; Persian, 179, 182; Spartan, 239, 240, 243

Washington, on Iroquois war dance, 28f.

Water sports and exercises, 66, 91f., 101, 145f., 165, 213, 268f., 288, 300, 308, 334, 351, 512f., 670ff., 722, 745f.

Waterways, importance of, for travel, 12, 48, 76f., 153, 198f., 200f., 274f., 476, 562

Wealth, a feature of early settled societies, 4; and the collapse of states, 271; Athenian, 275, 280f., 283, 346f., 355; Babylonian, 78, 81; Egyptian, held by priests and nobility, 49, 53; Greek sports and, 371ff., 386; horse racing and, 346, 347, 383; Roman, 537, 538, 556f., 564, 695ff., 704ff.; Spartan, 238, 239, 271

Weapons, hunting, Chinese, 133, 134; Cretan, 202, 205; Egyptian, 62f.; Hebrew, 98; in Mesopotamia, 88, 89, 90; Persian, 188; Spartan, 260

Weapons, war, Athenian, 273; Chinese, 135, 136ff.; Cretan, 202f.; Egyptian, 60f.; Greek, 260, 330; Hebrew, 100; Hindu, 161, 167ff.; Mesopotamian, 86ff.; Persian, 185

Wei, 149

Weights and measures, 160, 200

Wheat, in Babylon and Egypt, 75, 76; in Merv and Askabad, 111; in Mohenjo-Daro, 153

Whirling dervish dances, 192

"Whites," circus faction, 731

Wizards, function of, 16

Women, acrobats, 208; Aristotle on their subjection, 451, 453; at Olympia, 382f.; Athenian, 291ff.; Babylonian, 80f.; Chinese, 113f.; clothing of primitive, 11f.; Cretan, 199; crimes of, at Rome, 622f.; education of, 52, 71, 82, 96, 107f., 119f., 244ff., 291ff., 296ff., 489, 509, 512f., 527, 626ff.; Egyptian, 52f., 72; emancipated, at Rome, 623; Etruscan, 489; fashions of, 621; faults of, 161; gymnasts, 625; Hebrew, 96, 107f.; Hindu, 157f., 161f.; Homeric, 218; hunters, 205; idle, at Rome, 621; in business, at Rome, 624f.; in Hindu armies, 165; in medicine, 625; law practice of, at Rome, 625f., 630; learning and literature, at Rome, 626ff.; music and dancing, at Rome, 628f.; Musonius on education of, 630; occupations of, 5, 13f., 52f., 71f., 81, 96, 108, 113f., 161, 165, 181, 199, 223, 244ff., 292ff., 504ff., 624ff.; oppose taxation at Rome, 620; Persian, 180f.; Plato on, 435, 438; political status of, at Rome, 620; polo players in Persia, 190; primitive, 13f.; property held by, in Rome, 620; Roman, 503ff., 619ff.; Seneca on education of, 629f.; Spartan, 244ff.; subjection of, 161, 180, 451, 453, 503; Xenophon on their sphere and training, 464

Work and play, 20

Working class, Athenian, 281ff., 327ff.; Babylonian, 80; Chinese, 113; Egyptian, 50f.; emergence of, 4, 5; Persian, 182; Roman, 557f., 561f.; Spartan, 235f.

World community, and stoicism, 471

Wrestling, and health, 405, 406; Chinese, 140; Cretan, 209f.; Egyptian, 64, 65f., 74; Greek, 228f., 256f., 346, 368, 377ff.; Hebrew, 101; Homeric, 228f.; Persian, 190ff.; traditional origin of, 256

Writing, Aegaeo-Cretan, 201f.; Babylonian, 75, 82; bearing of, on education, 5f.; Brahmi, 154, 157; Chinese, 112, 116, 121; Egyptian, 47, 55, 57; Etruscan, 480; Hebrew, 108; Homeric, 222; Mohenjo-Daro, 154; Persian learning reduced to, 181; Roman, 526f., 579f., 583; teaching of, at Athens, 304

Wu 'Ti, 114; advised to rehabilitate the state by education, 116f.

Xenophanes, 359, 360, 377, 386, 417, 418, 420, 421

Xenophon, 235, 236, 239, 242, 249, 250, 251, 252, 254, 257, 261, 262, 263, 265, 270, 271, 279, 282, 292, 305, 315, 316, 317, 326, 327, 328, 331, 348, 352, 375, 383, 395, 403, 429, 432, 447, 470, 629; Aristotle and Plato, 458; as Laconizer,

- 458; concerning, agriculture, 463; authoritarian education, 459ff.; commoners' training, 461; Cyrus' education, 182, 184ff.; democracy, 458; diet, 460; Ephebic College, 465; civil influence of sophists, 462; horsemanship, 459, 463, 464f.; hunting, 459, 462f.; letters and music, 460; military training, 458ff., 464f.; national economy, 458f.; Nineveh, 85; obedience, 460; Persian training, 181-7, 192, 459ff.; wifely-ideal, 298, 464; views of, conservative, 426, 458ff.
- Xerxes, 177, 240
- Yahweh, 97
- Yellow River, 111
- Yin and Yang, 117
- Yo Fei, "eight graceful exercises," 150
- Yoga, 165
- Zend-Avesta, 178, 180, 181
- Zeno, 423, 471
- Zeno of Elea, 607
- Zeugitae, 281
- Zeus, 416, 419, 421, 467, 469
- Zeuxis, 335
- Zonas, 294
- Zoroastrianism, 178ff.; peace and war, 179f.
- Zu Hsing, The Conduct of the Scholar,
148
- Zuni, customs, 33; diet, 11; fertility cult of
27; work of men and women, 14